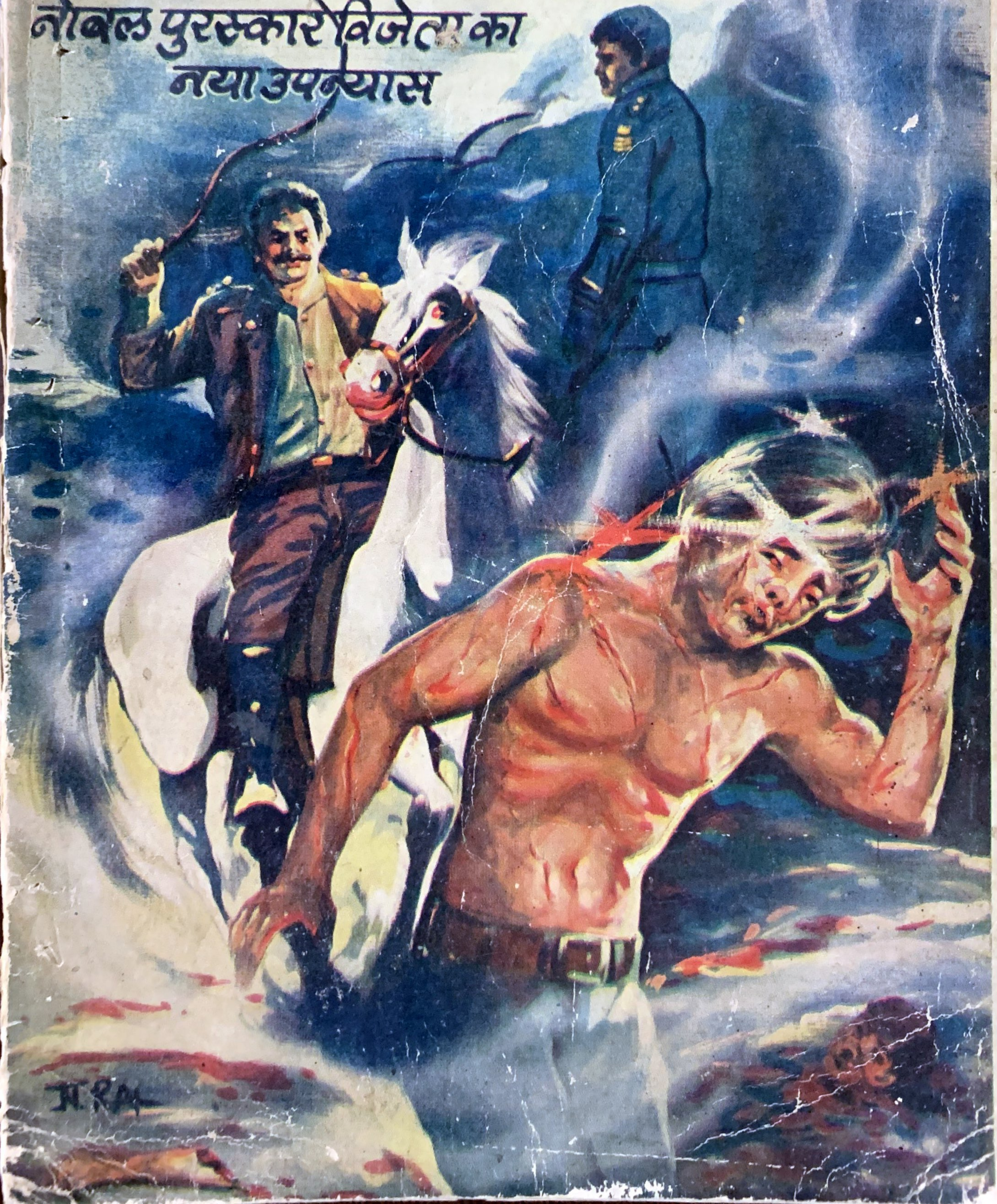
अलेक्जैन्डर सोल्झेनित्सीन

गुलाग द्वीप समूह



(23)

31-1-76

गुलाग द्वीपसमूह

नोबल पुरस्कार विजेता
का नया उपन्यास



इसी लेखक की हिन्दी में अन्य पुस्तकें :

कैंसर वार्ड—दो भागों में

मूल्य प्रत्येक भाग पांच रुपये

उद्‌देश्य की दृष्टि से

मूल्य तीन रुपये

अलेक्जैंडर सोल्झेनित्सीन

गुलाग द्वीपसमूह

अंग्रेजी रूपान्तर
टामस पी. व्हिट्नी

हिन्दी रूपान्तर
विजयश्री भारद्वाज

इस दुर्लभ किताब की मूलप्रति आदरणीय कश्मीर उप्पल सर जी ने उपलब्ध करायी है ताकि हनी शर्मा इसका PDF बनाकर इसे सर्वसुलभ कर सकें।

प्रकाशक :
नेशनल एकाडमी
६, अन्सारी मार्केट, दरियागंज,
दिल्ली-110006

प्रकाशक :
नेशनल एकाडमी
६, अंसारी मार्केट,
दरियागंज, दिल्ली-110006

प्रथम संस्करण : जनवरी 1975

मूल्य : सात रुपये

मुद्रक :
वार्ष्णेय प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

मैं इसे उन लोगों को

समर्पित करता हूं

जो यह सब बताने के लिए

जीवित नहीं रहे

और क्या वे मुझे कृपया क्षमा करेंगे

कि मैं सब कुछ देख न सका

सब कुछ याद न रख सका

कि इसकी समग्रता की कल्पना न कर सका

लेखक की टिप्पणी

अत्यधिक अनिच्छा से वर्षों तक मैं इस पहले से ही तैयार पुस्तक के प्रकाशन को रोकता रहा : मृत लोगों के प्रति मेरा जो उत्तरदायित्व है, उससे अधिक जीवित लोगों के प्रति उत्तरदायित्व का अनुभव करते हुए, मैंने इसके प्रकाशन को रोका। अब क्योंकि राज्य सुरक्षा संगठन ने इस पुस्तक की पांडुलिपि को पकड़ लिया है, अतः मेरे सामने इसके तुरन्त प्रकाशन के अलावा अन्य कोई चारा नहीं है।

इस पुस्तक में कोई भी काल्पनिक व्यक्ति नहीं है, कोई भी काल्पनिक घटना नहीं है। व्यक्तियों और स्थानों का नाम भी उसी प्रकार दिया गया है। यदि कहीं-कहीं पूरे नाम के स्थान पर नाम के आरम्भिक अक्षर भर दिए गए हैं, तो यह व्यक्तिगत कारणों से किया गया है। यदि कहीं कुछ नामों का उल्लेख नहीं है, तो इसका केवल यही कारण है कि मानव स्मृति इन नामों को संजो कर रखने में असफल रही है। लेकिन इस पुस्तक में घटनाओं का जिस रूप में वर्णन दिया गया है, वे ठीक उसी प्रकार घटित हुईं।

आवरण पृष्ठ के बारे में :—

इस पुस्तक का आवरण पृष्ठ स्वयं लेखक के विचारों के अनुसार बनाया गया है। लेखक के विचारों के लिए देखिए पृष्ठ २४९ व २५० —प्रकाशक

क्रम

भाग-२

प्रस्तावना

सन् १९४९ में मैंने और मेरे कुछ मित्रों ने विज्ञान अकादमी की पत्रिका नेचर (प्रकृति) में एक विशेष रूप से ध्यान देने योग्य समाचार देखा। इस पत्रिका ने अत्यधिक छोटे टाइप में यह समाचार दिया था कि कोलिमा नदी पर खुदाई के दौरान ज़मीन के भीतर एक बर्फ की पर्त मिली जो वास्तव में बर्फ के रूप में जमी हुई एक छोटी सी नदी थी—और इसके भीतर हजारों वर्ष पुराने प्रागैतिहासिक जीवों के नमूने बर्फ में जमे हुए मिले। पत्रिका के विज्ञान संवाददाता ने समाचार दिया था कि बर्फ की इस पर्त में जमी मछली या सलामेंडर एकदम ताज़ी स्थिति में सुरक्षित थीं और खुदाई के समय जो लोग मौजूद थे उन्होंने जीवों के इन प्रागैतिहासिक नमूनों को अपने भीतर छिपाये रखने वाली बर्फ की पर्त को एकदम तोड़ डाला और बड़े स्वाद के साथ इन मछलियों को वहां खा गए।

इस बात में संदेह नहीं कि पत्रिका ने अपने छोटे से पाठ्यवृन्द को इस आशय के समाचार से आश्चर्यचकित कर दिया कि बर्फ में जम जाने की स्थित में कितने लम्बे अरसे तक मछली के मांस को सुरक्षित रखा जा सकता है। लेकिन इस पत्रिका के पाठकों में बहुत थोड़े से ही ऐसे लोग थे, जो इस असावधानी से दी गई रिपोर्ट के सच्चे और वीरतापूर्ण अर्थ को समझ सकते थे।

जहां तक हमारा सम्बन्ध था, तुरन्त यह बात हमारी समझ में आ गई। हम लोग सूक्ष्मतम विवरण तक इस समस्त चित्र को स्पष्ट रूप से देख सके: वहां मौजूद लोगों ने किस प्रकार पागलपन की सीमा को छूती हुई जल्दबाज़ी से बर्फ की ऊपरी पर्त को तोड़ा होगा; उन्होंने किस प्रकार मत्स्य विज्ञान के उच्च दावों की परवाह न करते हुए, स्वयं सबसे पहले हाथ मारने के लिए किस प्रकार एक दूसरे को धकियाया होगा; किस प्रकार उन्होंने इस प्रागैतिहासिक मछलियों के मांस को नोच निकाला होगा और अलाव की आंच पर उसकी बर्फ जैसी ठण्डक को दूर करके वे किस प्रकार इन मछलियों को सफाचट कर गए होंगे।

हम यह बात इसलिए समझ पाये, क्योंकि हम भी वैसे ही लोग थे, जैसे इस घटना के समय घटनास्थल पर मौजूद थे। हम लोग भी उस शक्तिशाली ज़ेक (रूस की जेलों में कैदियों के लिए प्रयुक्त शब्द) जाति के ही सदस्य थे, जो इस पूरे संसार में अपना दूसरा

उदाहरण नहीं रखती और जिसके सदस्य एकमात्र ऐसे लोग हैं जो बड़े स्वाद से प्रागैतिहासिक मछली को खा सकते थे।

और कोलिमा सबसे बड़ा और सबसे प्रसिद्ध द्वीप है, यह उस आश्चर्यजनिक देश गुलाग की भयंकरता का चरमबिन्दु है, जो यद्यपि भौगोलिक दृष्टि से एक द्वीपसमूह में विभाजित है, लेकिन मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक महाद्वीप के रूप में साकार हो चुका है—यह प्रायः अदृश्य, प्रायः अगोचर देश है, जिसमें ज़ेक जाति के लोग रहते हैं।

और यह द्वीपसमूह उस देश के भीतर आड़ी तिरछी रेखाओं में विचित्र नमूने बनाता हुआ फैला हुआ था, जिसके बीच यह स्वयं स्थित था, यह एक ऐसा विशाल पैबन्द था, जो इसके नगरों को काटता था, इसकी सड़कों के ऊपर मंडराता रहता था। लेकिन इसके बावजूद ऐसे अनेक लोग थे, जिन्हें इसके अस्तित्व का आभास तक नहीं था और ऐसे बहुत से लोग भी थे, जिन्होंने इसके बारे में कुछ अस्पष्ट बातें सुनी थीं। और केवल वे लोग ही पूर्ण सत्य, पूरी सच्चाई जानते थे, जो वहां रह चुके थे।

लेकिन वे लोग मौन रहते थे, चुप्पी साधे रहते थे, मानो द्वीपसमूह के द्वीपों ने उनकी बोलने की शक्ति छीन ली हो।

हमारे इतिहास के एक अप्रत्याशित मोड़ के कारण सत्य का एक अंश, समग्रता का एक मामूली-सा अंश प्रकट हुआ, इसे प्रकट होने दिया गया। लेकिन आज वही हाथ, जो एक समय हमारी हथकड़ियों के पेच कसते थे, आज सुलह-सफाई के लिए अपनी हथेलियों को आगे बढ़ाते हैं : "नहीं, नहीं ! अतीत को जीवित न करो ! गड़े मुर्दों को न उखाड़ो ! अतीत का उल्लेख करने पर आप अपनी एक आंख से वंचित हो जाएंगे।"

हां, इस आशय की एक कहावत है, लेकिन उसमें आगे यह भी कहा गया है : "यदि अतीत को भूल जाओगे, तो तुम्हें अपनी दोनों आंखों से हाथ धोना पड़ेगा।"

अनेक दशक बीते जा रहे हैं और अतीत के घाव और ज़ख्म सदा के लिए सूखते जा रहे हैं। इस अवधि में इस द्वीपसमूह के कुछ द्वीप थरथराये और अन्तर्धान हो गये और विस्मृति का बर्फानी समुद्र इनके ऊपर छा गया है। और भविष्य में एक दिन किसी बर्फ की पर्त के नीचे जमा हुआ यह द्वीपसमूह, इसकी हवा, इसका वातावरण और इसके निवासियों की हड्डियां, उसी प्रकार हमारे वंशजों के हाथ लगेंगी जिस प्रकार वे असम्भावित मछलियां लग गई थीं।

मैं इस द्वीपसमूह का इतिहास लिखने का दुस्साहस नहीं कर सकता। मुझे इस द्वीपसमूह सम्बन्धी दस्तावेजों को पढ़ने का कभी भी अवसर नहीं मिला। और क्या सचमुच कभी किसी व्यक्ति को इन्हें पढ़ने का मौका मिलेगा ? जो लोग इन स्मृतियों को ताज़ा नहीं करना चाहते, जो इन घटनाओं के बारे में अब सोचना नहीं चाहते, उन्हें समस्त दस्तावेजों को, एक-एक दस्तावेज़ को नष्ट करने का पर्याप्त समय मिल चुका है—और और समय भी मिलेगा।

मैंने अपने भीतर उन ११ वर्षों को पूरी तरह आत्मसात कर लिया है, समेट लिया है, जो मैंने वहां बिताये और मैं उन वर्षों को कोई शर्म की बात नहीं मानता और न ही कोई ऐसा भयावह स्वप्न ही जिसको कोसना पड़े : मैं तो उस भयावह दानवी संसार से प्रायः प्यार करने लगा हूं और अब, घटनाक्रम के एक सुखद मोड़ के बाद, मुझे अनेक हाल की रिपोर्टें और पत्र भी प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार सम्भवतः मैं उस मछली की हड्डियों और मांस का कुछ विवरण दे सकूंगा—जो संयोगवश आज भी जीवित है।

कोई एक व्यक्ति कभी भी यह पुस्तक नहीं लिख सकता था। द्वीपसमूह से मैं स्वयं अपने साथ जो कुछ वापस लाने में सफल हुआ—अपनी पीठ पर अवशेष चमड़ी के रूप में, वहां सहे कष्टों के रूप में, वहां देखी और सुनी बातों के रूप में, मैं जो कुछ भी वापस ला पाया उसके अलावा मुझे २२७ साक्षियों ने रिपोर्टों, संस्मरणों और पत्रों के रूप में इस पुस्तक के लिए सामग्री दी और यहां इन साक्षियों के नाम देने का इरादा भी था।

मैं इन लोगों के प्रति व्यक्तिगत आभार भर प्रदर्शित नहीं करता, क्योंकि यह पुस्तक हमारा उन लोगों की स्मृति में निर्मित एक सामूहिक स्मारक है, जिन्हें यातनाएं दी गईं और अन्ततः मार डाला गया।

इन साक्षियों में मैं विशेष रूप से उन लोगों का उल्लेख करना चाहता हूं, जिन्होंने समकालीन पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों और उन पुस्तकों से भी जिन्हें बहुत समय पहले ही पुस्तकालयों से हटा लिया गया और नष्ट कर दिया गया, सम्बन्धित लोगों के जीवन सम्बन्धी विवरण एकत्र करने में कठोर परिश्रम किया और इस प्रकार मुझे इस कार्य में सहायता पहुंचाई। कभी-कभी किसी ऐसी पुस्तक की एकमात्र शेष और सुरक्षित प्रति को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक परिश्रम की आवश्यकता हुई। इससे भी अधिक मैं उन लोगों के प्रति अपना सम्मान और आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने बहुत कठिन दौरों में इस पुस्तक की पांडुलिपि को छिपा कर रखने और इसकी और प्रतियां तैयार करने में मुझे मदद दी।

लेकिन अभी वह समय नहीं आया है, जब मैं उनके नामों का उल्लेख कर सकूं, उनके नामों का उल्लेख करने का साहस बटोर सकूं।

सोलोवेतस्की द्वीप के पुराने कैदी दमित्री पेत्रोविच वितकोवस्की को इस पुस्तक का सम्पादन करना था! उन्होंने उस द्वीपसमूह में अपना आधा जीवनकाल बिताया था—वस्तुतः उनके संस्मरणों का शीर्षक "आधा जीवन काल" है—और इसके परिणामस्वरूप असमय में उन्हें पक्षाघात हो गया और अपनी वाक्शक्ति से पूरी तरह वंचित हो जाने के बाद भी, वे कुछ तैयार अध्यायों को पढ़ सके और स्वयं यह देख सके कि प्रत्येक बात को कहा जाएगा।

और यदि अभी भी लम्बे अरसे तक मेरे देश में स्वतंत्रता का उदय नहीं होता, तो इस पुस्तक को पढ़ना और दूसरों को देना अत्यन्त खतरनाक होगा और इस कारण से मैं इस पुस्तक के भावी पाठकों को, उन लोगों की ओर से जो आज जीवित नहीं हैं, सलाम

करता हूं।

जब मैंने १९५८ में इस पुस्तक का लेखन आरम्भ किया, तब मुझे शिविरों सम्बन्धी संस्मरणों अथवा साहित्य के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। सन् १९६७ से पहले के वर्षों में मैंने जो कार्य किया, उसके दौरान मुझे धीरे-धीरे वरलाम शलामोव की कोलिमा की कहानियां और दमित्री वितकोवस्की, वाई० जिन्झबर्ग और ओ० एडामोवा—स्लीओज़बर्ग के संस्मरणों की जानकारी मिली, जिनका मैं इस पुस्तक में ऐसे साहित्यिक तथ्यों के रूप में उल्लेख करता हूं, जो सबको ज्ञात हैं (अथवा वे एक दिन वस्तुतः सबको ज्ञात होंगे)।

अपना ऐसा कोई इरादा न होने के बावजूद और अपनी इच्छा के विरुद्ध कुछ लोगों ने इस पुस्तक के लिए बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध कराई और अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों और आंकड़ों को सुरक्षित रखने में सहायता देने के साथ-साथ उन्होंने उस वातावरण को भी जीवित रखा, जिसमें वे रहे, जिसमें उन्होंने सांस लिया। एम० आई सुद्राब्स-लातसिस, एन० वाई० क्राइलेंको, जो वर्षों तक प्रमुख सरकारी वकील रहे, उनके उत्तराधिकारी ए० वाई० वाइशिस्की और वे न्यायविद्, जिन्होंने उनके सह-अपराधियों के रूप में काम किया। इन लोगों के मध्य आई० एल० एवरबाख का विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है।

इस पुस्तक के लिए ३६ सोवियत लेखकों ने भी, जिनके शीर्ष पर मैक्सिम गोर्की हैं, इस पुस्तक के लिए सामग्री उपलब्ध कराई। इन लेखकों ने श्वेत सागर नहर के बारे में एक निन्दनीय पुस्तक लिखी, जो सोवियत साहित्य में ऐसी पहली पुस्तक है, जिसमें गुलामों के श्रम को गरिमापूर्ण बताया गया।

भाग १

जेल उद्योग



"तानाशाही के युग में, सब ओर शत्रुओं से घिरे होने पर, हम लोगों ने कभी-कभी अनावश्यक रियायत दिखाई और अनावश्यक कोमलता का प्रदर्शन किया।"
क्राइलेंको,
प्रोमपार्टी के मुकदमे के समय भाषण

अध्याय १



गिरफ्तारी

लोग इस गुप्त द्वीपसमूह में कैसे पहुंचते हैं ? प्रति घण्टे हवाई जहाज़ वहां पहुंचते रहते हैं, जहाज़ों की दिशा इसकी ओर निर्देशित रहती है और रेलगाड़ियां इसकी ओर आगे बढ़ती रहती हैं—लेकिन इनके ऊपर कहीं भी इस आशय का कोई चिह्न, कोई संकेत नहीं होता कि इनका गन्तव्य क्या है। रेलवे स्टेशनों की टिकट बेचने वाली खिड़कियों पर तैनात कर्मचारी या सोवियत और विदेशी पर्यटकों को यात्रा सम्बन्धी सूचना देने वाले कार्यालयों के कर्मचारी उस समय आश्चर्य में पड़ जायेंगे, यदि आप वहां जाने के लिए उनसे टिकट मांग बैठें। वे इसके बारे में कुछ नहीं जानते और उन्होंने इस सम्पूर्ण द्वीपसमूह अथवा इसके असंख्य द्वीपों में से किसी एक का नाम भी नहीं सुना है।

जो लोग इस द्वीपसमूह के प्रशासन के लिए जाते हैं, वे आंतरिक मामलों के मन्त्रालय के प्रशिक्षण स्कूलों की मार्फत वहां पहुंचते हैं।

जो लोग सन्तरी का काम करने के लिए जाते हैं, वे अनिवार्य भरती के माध्यम से सेना के लिए अनिवार्य भरती करने वाले केन्द्रों की मार्फत वहां पहुंचते हैं।

और जो लोग, मेरे प्रिय पाठको आपकी या मेरी तरह वहां जाते हैं अर्थात जो लोग वहां मरने के लिए पहुंचते हैं, वे केवल और अनिवार्य रूप से गिरफ्तारी की मार्फत ही वहां पहुंच सकते हैं।

गिरफ्तारी ! क्या यह कहने की आवश्यकता होगी कि यह आपके जीवन का एक नया मोड़ होता है, यह आपके जीवन की एक अन्तराय बिन्दु होता है, यह आकाश से गिरने वाली एक ऐसी बिजली होता है, जो सीधे आपसे ही आकर टकरा गई हो ? कि यह एक ऐसा बर्दाश्त न कर पाने योग्य आध्यात्मिक भूचाल होता है, जिसका हर व्यक्ति सामना नहीं कर पाता, जिसके परिणामस्वरूप लोग अक्सर पागल हो उठते हैं ?

ब्रह्मांड के उतने ही अलग-अलग केन्द्र हैं, जितने जीव इसके भीतर निवास करते हैं। हममें से प्रत्येक व्यक्ति, ब्रह्मांड का केन्द्र बिन्दु है और जब वे लोग आपके कान में फुसफुसा कर यह कहते हैं कि "तुम्हें गिरफ्तार कर लिया गया है" तो वह ब्रह्मांड ध्वस्त हो जाता है, टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाता है।

यदि आप गिरफ्तार हो जाते हैं, तो क्या इस प्रलय से अन्य कोई भी वस्तु सुरक्षित रह सकती है ?

लेकिन अन्धकार से भरा मस्तिष्क हमारे ब्रह्माण्ड में होने वाली इस उथल-पुथल को

समझने में, आत्मसात करने में अक्षम होता है और अत्यधिक परिष्कृत व्यक्ति और मूर्खता की सीमा तक सीधे-सादे लोग भी, अपने जीवन के अनुभव का लाभ उठाते हुए, केवल यही कह भर पाते हैं : "मुझे ? क्यों,किस लिए ?" और यद्यपि यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसे लाखों, लाखों बार दोहराया जा चुका है, लेकिन अभी इसका उत्तर मिलना शेष है।

गिरफ्तारी एक स्थिति से दूसरी स्थिति में तत्क्षण प्रवेश की ऐसी स्थिति है, जो सब कुछ ध्वस्त कर देती है, आपके समस्त अतीत को आपके जीवन से निष्कासित कर देती है और उसे आमूल बदल डालती है।

हम लोग बड़ी प्रसन्नता से—अथवा दुखपूर्वक अपने थकान भरे रास्ते पर—आगे बढ़ते हैं, अपने जीवन की लम्बी और घुमावदार सड़कों पर आगे बढ़ते हैं, गली-सड़ी लकड़ी, पिटी-पिटाई मिट्टी, ईंट, कंक्रीट और लोहे की रेलिंगों की दीवारों और बाड़ों के बराबर से गुजरते हैं। हमने कभी एक क्षण के लिए भी यह नहीं सोचा कि इन दीवारों के पीछे क्या छिपा है ? हमने अपनी कल्पना और सूझ-बूझ से कभी भी इन्हें बेधने, इनके भीतर पैठने की कोशिश नहीं की। और यहीं गुलाम देश का समारम्भ होता है, बिल्कुल हमारे बराबर हम से बस दो गज़ दूरी पर यह देश शुरू हो जाता है। इतना ही नहीं, हम इन बाड़ों और दीवारों के बीच बहुत सटा कर लगाये गए और बड़ी सावधानी से छिपाये गये दरवाज़ों और फाटकों की विशाल संख्या को भी देखने में असफल रहे। ये फाटक, ये दरवाजे, हमारे लिए ही तैयार किए गए थे। हममें से प्रत्येक के लिए ! और अचानक एक नियतिपूर्ण दरवाजा तेज़ी से खुलता है और चार श्वेत पुरुष हाथ, जो किसी भी प्रकार के शारीरिक श्रम से परिचित नहीं हैं, लेकिन इसके बावजूद सशक्त और कठोर हैं, हमें टांग, बांह, कालर, टोपी, कान किसी भी चीज़ से पकड़ कर दबोच लेते हैं और हमें एक बोरे की तरह भीतर घसीट लेते हैं और हमारी पीठ पीछे का दरवाजा, हमारे पूर्व जीवन का दरवाजा, झटके से सदा सर्वदा के लिए बन्द कर दिया जाता है।

बस, यही होता है। आप गिरफ्तार हो चुके होते हैं !

और आपके पास एक मेमने की मिनमिनाहट के स्वर में इससे बेहतर अन्य कुछ कहने को नहीं होता : "मुझे ? क्यों, किसलिए ?"

गिरफ्तारी यही होती है, यह चकाचौंध करने वाली चमक और एक ऐसा प्रहार होती है, जो एक ही क्षण में वर्तमान को अतीत में बदल देता है और असम्भवता को सर्वशक्तिमान वास्तविकता का रूप दे डालता है।

बस, यही होता है। और गिरफ्तारी के बाद के पहले घण्टे में और न ही पहले दिन आपकी समझ में अन्य कोई बात आती है।

बस, केवल यही हो सकता है कि आप अपनी अत्यन्त निराशापूर्ण स्थिति में मृगमरीचिका के भ्रम में पड़ कर यह सोचें : "यह गलती से हुआ है, वे लोग इसमें सुधार कर लेंगे ?"

और वह प्रत्येक वस्तु, जो अब तक गिरफ्तारी की परम्परागत, यहां तक कि साहित्यिक कल्पना में दिखाई पड़ती थी, वह धीरे-धीरे साकार होने लगेगी, स्वरूप धारण करने लगेगी और यह कार्य आपकी अव्यवस्थित स्मृति में नहीं बल्कि उस रूप में होगा जो आपका परिवार और आपके पड़ौसी याद रखेंगे। रात के समय दरवाजे की घण्टी की तीखी आवाज़ या दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक। रात को भी न सोने वाले राज्य सुरक्षा के कार्यकर्ताओं

के धूल मिट्टी भरे फौजी बूटों का अत्यन्त धृष्टता से आपके घर में प्रवेश। उनके पीछे-पीछे भय-भीत और आतंकित नागरिक गवाह। (और यह नागरिक गवाह क्या काम करता है? जो व्यक्ति ऐसी कारवाई का शिकार बनता है, वह किसी गवाह के बारे में सोचने का साहस तक नहीं कर पाता और राज्य सुरक्षा विभाग का कार्यकर्ता उसे याद तक नहीं रखता। लेकिन नियमों में गवाह को साथ रखने की व्यवस्था है। अतः यह ज़रूरी है कि वह रात भर वहां बैठा रहे और सुबह दस्तखत करे।[1] गवाह के लिए भी, जिसे उसके बिस्तर से घसीट कर बाहर निकाल लिया जाता है, यह यातना है—हर रोज़, हर रात उसे अपने घर से निकल कर अपने पड़ौसियों और परिचितों की गिरफ्तारी में सहायता देने के लिए चलना पड़ता है।)

गिरफ्तारी की परम्परागत तस्वीर, गिरफ्तार व्यक्ति के लिए कांपते हुए हाथों से आवश्यक सामान इकट्ठा करने की भी है—जैसे एक जोड़ा अतिरिक्त अण्डरवीयर, साबुन की टिक्की, खाने के लिए कुछ चीजें; और यह बात समझ में नहीं आती कि किस चीज़ की ज़रूरत होगी, क्या चीजें ले जाने की अनुमति है, कौन से कपड़े पहनने में सर्वोत्तम रहते हैं और इन सब बातों के अलावा राज्य सुरक्षा के आदमी आपको टोकते रहते हैं और जल्दी करने के लिए कहते रहते हैं:

"तुम्हें किसी चीज की ज़रूरत नहीं है। वहां वे तुम्हें अच्छा भोजन देंगे। वहां मकान काफी गर्म रहता है।" (यह सब झूठ है। वे आपको भयभीत करने और जल्दी करने के लिए ही ये सब बातें कहते हैं।)

गिरफ्तारी की परम्परागत तस्वीर यह भी है कि बाद में क्या होता है, उस समय क्या होता है जब गिरफ्तारी का शिकार बने व्यक्ति को उसके घर से जेल पहुंचा दिया जाता है। यह एक पूरी तरह से अपरिचित, अजनबी, पाशविक और कुचल डालने वाली शक्ति होती है, जो घण्टों तक आपके घर के ऊपर छाई रहती है। तलाशी लेने वाले लोग चीज़ों को तोड़ डालते हैं, फाड़ डालते हैं, दीवार पर लगी चीज़ों तक को नोंच फेंकते हैं, अलमारियों और मेजों की दराजों से सब चीजें निकाल कर कमरे के फर्श पर ढेर लगा देते हैं, हर चीज़ को झकझोरते हैं, फेंकते हैं और चिथड़े कर डालते हैं—और इस प्रकार फर्श पर चीज़ों की चट्टान लगा देते हैं—और इसके बाद फौजी बूटों के नीचें कुचल कर चूर-चूर होने वाली चीज़ों की आवाज़ भी सुनाई पड़ती रहती है। और एक तलाशी में कुछ भी पवित्र नहीं होता। रेल इन्जनों के इन्जीनियर आइनोशिन की गिरफ्तारी के दौरान उनके कमरे में एक छोटा सा ताबूत रखा हुआ था, जिसमें उनके हाल में मृत बच्चे का शव था। "न्यायविदों" ने बच्चे के शव को ताबूत से निकाल कर फर्श पर पटक दिया और इसकी तलाशी ली। ये लोग बीमार लोगों को उनके बिस्तरों से बाहर घसीट लेते हैं और रोगी के शरीर पर बंधी पट्टियों तक को यह देखने के लिए खोल डालते हैं कि उनके नीचे क्या छिपा है।[2]

ऐसा कोई भी मूर्खतापूर्ण कार्य नहीं है अथवा किसी भी कार्य को इतना मूर्खतापूर्ण नही माना जाता कि तलाशी के सम्बन्ध में उसका निषेध कर दिया जाए। उदाहरण के लिए उन्होंने पुरानी वस्तुओं के विशेषज्ञ चेतवेरुखिन से "जारशाही के ज़माने के कुछ अध्यादेशों के कुछ पृष्ठ" ज़ब्त कर लिए—ये अध्यादेश नेपोलियन के साथ युद्ध की समाप्ति, पवित्र संधि १८३० की हैज़े की महामारी के दौरान सार्वजनिक रूप से चर्चों में प्रार्थनाएं करने के बारे में थे। तिब्बत के मामलों के हमारे महान् विशेषज्ञ, वोस्त्रीकोव से उन्होंने तिब्बती भाषा की बहुमूल्य प्राचीन पांडुलिपियां ज़ब्त कर लीं। और इस मृत विद्वान् के शिष्यों को इन पांडु-

लिपियों को के० जी० बी० से फिर प्राप्त करने में ३० वर्ष का समय लगा। जब पूर्वविद्याविद् नेवस्की को गिरफ्तार किया गया तो उनसे तानगुत पाडुलिपियां छीन ली गईं—और २५ वर्ष बाद इस मृत विद्वान् को, जो उस समय गिरफ्तारी का शिकार बन गया था, इन पांडुलिपियों की लिपि को पढ़ने में सफलता के लिए मरणोपरांत लेनिन पुरस्कार दिया गया। कारजेर से उन्होंने येनीसेई ओसत्याक जाति की प्राचीन वस्तुएं और दस्तावेज़ ज़ब्त कर लिए और अपनी जाति के लोगों के लिए उन्होंने जो वर्णमाला और शब्दावली तैयार की थी, उसके प्रयोग का निषेध कर दिया और इस प्रकार एक छोटी सी जाति किसी भी प्रकार की लिखित भाषा से वंचित रह गई। सभ्य लोगों की भाषा में, इन सब लोगों का विवरण देने में बड़ा लम्बा समय लगेगा। लेकिन इस सम्बन्ध में एक कहावत है, जो तलाशी के विषय पर अच्छा प्रकाश डालती है : "वे लोग एक ऐसी चीज़ की तलाश करते हैं, जो वहां कभी नहीं थी।" ये लोग जो कुछ भी जब्त करते हैं, उसे उठा ले जाते हैं। लेकिन कभी-कभी चीज़ों को ढोने के लिए वे स्वयं गिरफ्तार व्यक्ति को बाध्य करते हैं। इस प्रकार इन लोगों ने नीना अलैक्सांद्रोवना पालचिन्सकाया को अपने सदा व्यस्त और सक्रिय रहने वाले पति के कागज़पत्रों से भरा थैला अपने कन्धे पर ढोने के लिए बाध्य किया। उनके स्वर्गीय पति रूस के महान् इन्जीनियर थे और ये कागज़पत्र सदा-सर्वदा के लिए अन्तर्धान हो गए।

किसी व्यक्ति की गिरफ्तारी के बाद उसके घर में जो लोग रह जाते हैं, उन्हें एक ध्वस्त और बर्बाद जीवन के परिणामों को लम्बे समय तक भुगतना पड़ता है। और इसके अलावा कैदी के लिए खाने की चीज़ों के पार्सल पहुंचाने के प्रयास भी भयावह होते हैं। कैदी के घर वाले जहां कहीं जाते हैं, विभिन्न जेलों और पुलिस स्टेशनों की जिन खिड़कियों को खटखटाते हैं, वहां उन्हें अत्यन्त तीखी और अभद्रतापूर्ण आवाज़ में यही जवाब मिलता है : "इस नाम का यहां कोई आदमी नहीं है।" "यह नाम हमने कभी नहीं सुना।" हां, और लेनिनग्राद के सबसे बुरे दिनों में जेलों की इन खिड़कियों तक पहुंचने के लिए कभी समाप्त न होने वाली कतारों में लगातार पांच दिन तक खड़ा होना पड़ता था। और छह महीने या एक साल के बाद ही गिरफ्तार व्यक्ति का कुछ अता-पता चलता था। अथवा यह उत्तर मिल जाता था : "पत्र व्यवहार के अधिकार से वंचित।" और इसका अर्थ होता है सदा-सर्वदा के लिए। "पत्र-व्यवहार का अधिकार नहीं है"—और इसका प्राय: सदा यही अर्थ होता : "गोली से उड़ा दिया गया है।"[१]

इस प्रकार हम अपनी गिरफ्तारी की तस्वीर अपनी आंखों के सामने खींचते हैं।

रात्रि के समय जिस प्रकार की गिरफ्तारी का यहां विवरण दिया गया है, वास्तव में राज्य सुरक्षा के आदमी उसे बहुत पसन्द करते हैं, क्योंकि इसके महत्वपूर्ण लाभ हैं। फ्लैट में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति दरवाजे पर होने वाली पहली दस्तक से ही भयभीत हो उठता है। गिरफ्तार व्यक्ति को उसके बिस्तर की गरमाहट से घसीट कर बाहर निकाल लिया जाता है। वह स्तम्भित सा होता है। आधा सोया हुआ, असहाय और इस स्थिति में उसकी मूल्यांकन की शक्ति पूरी तरह जागृत नहीं होती। रात की गिरफ्तारी के समय संख्या की दृष्टि से भी राज्य सुरक्षा के आदमियों की श्रेष्ठता होती है। वे कई लोग एक साथ होते हैं उनके पास हथियार होते हैं और उनका सामना केवल एक ऐसे व्यक्ति से होता है, जिसने उस समय तक अपनी पतलून के बटन तक भी बन्द नहीं किए होते। गिरफ्तारी और तलाशी के दौरान इस बात की प्राय: कोई संभावना नहीं है कि दरवाजे पर उसके समर्थक इकट्ठा हो जाएं।

बिना किसी जल्दबाजी के एक-एक करके एक-के-बाद एक फ्लैट पर दस्तक देकर आज एक को, कल दूसरे को, फिर तीसरे और उसके बाद चौथे को बारी-बारी से गिरफ्तार करके अथवा गिरफ्तारी का यह तरीका अपनाकर राज्य सुरक्षा के कर्मचारियों का अधिकतम कार्यकुशलता से इस्तेमाल किया जा सकता है और इस प्रकार किसी शहर की पुलिस की संख्या से कई गुना नागरिकों को गिरफ्तार किया जा सकता है।

इसके अलावा रात के समय गिरफ्तारी का यह भी लाभ है कि पास के फ्लैटों और मकानों और नगर की दूसरी सड़कों पर रहने वाले लोग भी यह नहीं देख सकते कि पिछली रात कितने लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया था। वे गिरफ्तारियां, जो एकदम समीप के पड़ौसियों को भयभीत कर देती हैं, दूर रहने वाले लोगों के लिए कोई महत्व नहीं रखतीं। उन्हें लगता है, मानो गिरफ्तारी हुई ही न हो। कोलतार की उसी संकरी सड़क पर, जिस पर रात के समय [कैदियों को ले जाने वाली] ब्लैक मारिया [नाम की मोटरगाड़ियां] चलती हैं, दिन के समय किशोरों के झुंड हाथ में झंडे और फूल लिए बड़ी प्रसन्नता से निर्द्वन्द्वतापूर्वक गीत गाते हुए चलते हैं।

लेकिन जो लोग लोगों को पकड़ कर ले जाते हैं, जिन लोगों का काम केवल गिरफ्तारी करना होता है, उनके लिए यह आतंक ऊबा डालने वाली सीमा तक एकरस होता है। और इन लोगों को इस बात की कहीं व्यापक सूझ-बूझ होती है कि गिरफ्तारियां किस प्रकार की जानी चाहिएं। ये लोग एक व्यापक सिद्धांत के अनुसार कार्य करते हैं, और अज्ञान के आधार पर इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। गिरफ्तारी का विज्ञान सामान्य दण्ड विज्ञान के पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग होता है और इसे एक ठोस समाज विज्ञान के आधार पर खड़ा किया जाता है। गिरफ्तारियों को विभिन्न मानदण्डों के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। रात के समय और दिन के समय; घर पर, काम के स्थान पर, यात्रा के दौरान; पहली बार गिरफ्तारी और दूसरी या इससे अधिक बार गिरफ्तारी; व्यक्ति अथवा समूह की गिरफ्तारी। गिरफ्तारियों में इस दृष्टि से भी अन्तर होता है कि किस सीमा तक अचानक गिरफ्तारी की जानी चाहिए; कितने प्रतिरोध की आशा की जा सकती है (यद्यपि लाखों मामलों में किसी भी प्रतिरोध की अपेक्षा नहीं थी और वास्तव में कोई प्रतिरोध हुआ भी नहीं)। गिरफ्तारियां इस दृष्टि से भी भिन्न कोटियों में रखी जाती हैं कि गिरफ्तारी के बाद कितनी गहराई से तलाशी की जरूरत होगी।[4] इसके साथ ही इस आशय के भी निर्देश होते हैं कि ज़ब्त सम्पत्ति की सूची तैयार की जाएगी अथवा नहीं अथवा कमरे या फ्लैट को सील कर दिया जाएगा या नहीं। पति के बाद पत्नी को गिरफ्तार किया जाएगा और बच्चों को अनाथालय में भेजा जाएगा या नहीं अथवा परिवार के शेष सदस्यों को निष्कासन में भेजा जाएगा या नहीं अथवा क्या परिवार के वृद्ध लोगों को भी श्रम शिविर में भेजा जाएगा अथवा नहीं।

नहीं, नहीं : गिरफ्तारियां बड़ी विविध होती हैं। इनके अनेक स्वरूप होते हैं। सन् १९२६ में हंगरी की इरमां मेनदेल ने कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की मार्फत बोलशोई नाट्यशाला के दो पहली पंक्ति के टिकट प्राप्त किए थे। उन दिनों पूछताछ अधिकारी क्लेगेल से इस स्त्री का प्रणय चल रहा था और इरमां मेनदेल ने क्लेगेल को उसके साथ नाटक देखने के लिए आमंत्रित किया। पूरे नाटक के दौरान वे बड़े प्यार से बैठे रहे और नाटक समाप्त होने के बाद वह उसे सीधा लूबयांका जेल ले गया। और यदि १९२७ के फूलों भरे जून के महीने में,

आपने कुज़नेतस्की मोस्त में गदराये हुए गालों और लाल बालों वाली सुन्दरी अन्ना स्क्रिप-निकोवा को अपनी पोशाक बनाने के लिए गहरे नीले रंग का कपड़ा खरीदने के बाद एक घोड़ागाड़ी में एक शहरी नवयुवक के साथ चढ़ते हुए देखा होगा तो आप इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि यह दो प्रेमियों का मिलन नहीं था और कोचवान इस बात को अच्छी तरह से जानता था और उसने अपनी दबी हुई गुर्राहट से यह बात प्रकट भी की थी (राज्य सुरक्षा के आदमी घोड़ा गाड़ी का किराया नहीं देते)। यह गिरफ्तारी थी। एक क्षण बाद ही वे लूबयांका की ओर मुड़ जाएंगे और इसके फाटकों के काले भयावह मुख में प्रवेश कर जाएंगे। और यदि २२ बसन्त बाद नौसेना के कैप्टेन (द्वितीय श्रेणी) बोरिस बुर्कोवस्की सफेद कोट पहने और कीमती यूडीकोलोन की महक उड़ाते हुए एक युवती के लिये केक खरीदते हुए दिखाई पड़े, तो आप इस बात से आश्वस्त न हो जाइए कि यह केक उस युवती तक पहुंच जाएगा। वहां न पहुंच कर कैप्टेन की तलाशी लेने वाले आदमियों के चाकू इस केक को काटेंगे और बाद में यह केक कैप्टेन के पास उसकी जेल की पहली कोठरी में पहुंचा दिया जायेगा। कोई भी व्यक्ति यह बात निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि दिन के समय गिरफ्तारी, यात्रा के समय गिरफ्तारी अथवा भीड़ के बीचों-बीच गिरफ्तारी की हमारे देश में उपेक्षा हुई। वास्तव में यह काम बड़ी सफाई से किया गया—और सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि गिरफ्तारी का शिकार बने लोगों ने राज्य सुरक्षा के आदमियों के साथ सहयोग करते हुए अत्यधिक गरिमापूर्ण आचरण किया और इस प्रकार उन्होंने जीवित लोगों को, गिरफ्तार व्यक्ति को मौत के मुंह में जाते हुए देखने का साक्षी नहीं बनने दिया।

प्रत्येक व्यक्ति को उसके घर पर, दरवाजे पर आरम्भिक दस्तक के बाद गिरफ्तार नहीं किया जा सकता (वैसे यदि दरवाजे पर दस्तक भी होती है, तो हो सकता है कि इमारत का मैनेजर हो या डाकिया हो)। और प्रत्येक व्यक्ति को उसके काम के स्थान से भी गिरफ्तारी नहीं किया जा सकता। यदि जिस व्यक्ति को गिरफ्तार करना है, वह जबर्दस्त है तो यह बेह-तर होगा कि उसे उसके सामान्य पर्यावरण के बाहर, उसके मेलजोल के लोगों से दूर गिर-फ्तार किया जाए। उसके परिवार और सहयोगियों से, उन लोगों से दूर गिरफ्तार किया जाए, जिनके विचार उसके समान हैं और छिपने के स्थानों से भी दूर गिरफ्तार करना जरूरी है। यह भी ज़रूरी है कि उसे किसी भी वस्तु को नष्ट करने, छिपाने अथवा किसी दूसरे को देने का मौका न मिले। सेना अथवा पार्टी के विशिष्ट व्यक्तियों को पहले कोई नया काम सौंपा जाता था या नई नियुक्ति की जाती थी। उन्हें एक निजी रेल डिब्बे में सवार कर दिया जाता और फिर रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया जाता। किसी अन्य अनजाने, सामान्य नश्वर व्यक्ति को, जो अपने चारों ओर फैली हुई गिरफ्तारी की महामारी से भयंकर रूप से आतंकित हो चुका था और एक हफ्ते से अपने अधिकारी की तीखी नज़रों के कारण निराशा के गर्त में गिरा हुआ था, अचानक पार्टी की स्थानीय शाखा में बुलाया जाता है और वहां बड़े उत्साह और हर्ष के साथ उसे सोची स्वास्थ्य केन्द्र में छुट्टियां बिताने का अनुमति पत्र दे दिया जाता है। अब यह खरगोश इस उदारता से अभिभूत हो उठता है और तुरन्त इस निष्कर्ष पर पहुंच जाता है कि उसकी आशंकाएं निर्मूल थीं। आभार प्रदर्शित करने के बाद, वह बड़ी तेज़ी से घर पहुंचता है। विजय के उत्साह से भर कर यात्रा की तैयारी में जुट जाता है। गाड़ी छूटने में दो ही घण्टे का तो समय रह गया है और वह अपनी पत्नी को सामान बांधने में सुस्ती दिखाने के लिए बुरा भला कहता है। वह कुछ समय पहले ही स्टेशन पहुंच जाता है। और वहां

प्रतीक्षालय में या स्टेशन की बार (शराब की दुकान) पर कोई असाधारण रूप प्रसन्नमुख युवक उसे मिलता है : "अरे, प्योत्र आइवानिच मुझे नहीं पहचानते ?" प्योत्र आइवानिच को पहचानने में कठिनाई होती है। वह याद नहीं कर पाता कि यह युवक कौन हो सकता है ? "नहीं, बात यह है, ठीक-ठीक तो नहीं, पर..." लेकिन यह युवक अपनी मित्रता का प्रदर्शन करने से नहीं अघाता। वह अपने मित्र के प्रति अपार स्नेह का प्रदर्शन करता है "अरे, छोड़ो। यह कैसे हो सकता है ? मुझे ही तुम्हें याद दिलाना पड़ेगा"...और वह बड़े सम्मानपूर्वक प्योत्र आइवानिच की पत्नी को झुककर सलाम करता है..."आप हमें क्षमा करेंगी। बस मैं एक मिनट के लिए उन्हें अपने साथ ले जा रहा हूं।" पत्नी सहमत को जाती है, और पति विश्वास के साथ उस व्यक्ति के साथ चल पड़ता है और यह युवक उसकी बांह पकड़ कर उसे सदा-सर्वदा के लिए या दस वर्ष के लिये वहां से निकाल ले जाता है।

स्टेशन पर भीड़ की भरमार है—अब कोई भी व्यक्ति कुछ भी नहीं देखता, कुछ भी असाधारण नहीं देख पाता...ओ, यात्रा प्रेमी नागरिको ! यह न भूलिये कि प्रत्येक स्टेशन पर जी० पी० यू० की एक शाखा होती है और जेल की अनेक कोठरियां भी।

अचानक किसी जान-पहचान के आदमी के इस प्रकार मिल जाने की घटना इतनी यकायक होती है कि केवल एक ऐसा व्यक्ति ही इससे बच निकल सकता है, जिसके भाग्य में किसी शिविर में समय गुजारना न बदा हो। उदाहरण के लिये आप यह न सोच लीजिये कि यदि आप अलेक्जेंडर डी० नाम के मास्को स्थित अमरीकी दूतावास के एक कर्मचारी हैं, तो आपको दिन दहाड़े गोर्की मार्ग पर केन्द्रीय तारघर के बराबर गिरफ्तार नहीं किया जा सकता आपका अपरिचित मित्र भीड़ को चीरता हुआ आपकी ओर बढ़ता है और आपको अपनी बांहों में समेट लेता है : "अरे, अरे तुम यहां !" वह बस यही कहता है और वह अपनी मौजूदगी को छिपाने का कोई प्रयास नहीं करता। "वाह दोस्त ! अरसे बाद मिले ! इधर आओ, जरा इस भीड़ से अलग खड़े हों।" उसी क्षण एक पोबेदा कार पटरी के बराबर आकर लगती है...और कई दिन बाद तास समाचार एजेन्सी अत्यन्त क्रोध से सब समाचार पत्रों को वक्तव्य जारी करती है कि सोवियत सरकार के जानकार सूत्रों को अलैक्जेन्डर डी० के गायब हो जाने की कोई जानकारी नहीं है। लेकिन इसमें असाधारण और नई बात क्या है ? हमारे लड़कों ने मास्को में ही नहीं, बल्कि ब्रुसेल्स में भी ऐसी गिरफ्तारियां की हैं और यह कारवाई झोरा ब्लेदनोव की गिरफ्तारी के समय हुई।

आपको राज्य सुरक्षा संगठनों के साथ भी निष्पक्षता बरतनी होगी : ऐसे युग में जब सार्वजनिक भाषण, नाट्यशालाओं में खेले जाने वाले नाटक और स्त्रियों के फैशन इतने विविध हो उठे हैं, तो गिरफ्तारियां भी अत्यधिक विविध किस्म की हो सकती हैं। वे लोग किसी कारखाने के बरामदे में आपके पास की जांच हो जाने के बाद आपको एक ओर ले जाते हैं—और आप गिरफ्तार कर लिये जाते हैं। वे १०२ डिग्री बुखार में आपको सैनिक अस्पताल से उठा ले जाते हैं, जैसा उन्होंने एन्स बर्नसटीन के साथ किया और डाक्टर आपकी गिरफ्तारी के बारे में चूं तक नहीं करेगा—जरा करे तो ! वे लोग आपको आपरेशन की मेज से घसीट ले जा सकते हैं—जिस प्रकार वे १९३६ में स्कूल इन्सपेक्टर एन०एम० वोरोबएव को पेट के फोड़े के आपरेशन के बीच से ही घसीट ले गए थे -- और आपको जेल की कोठरी में ले जाकर पटक सकते हैं; जैसाकि उन्होंने उसके साथ किया, अर्ध-जीवित अवस्था में खून से लथपथ, (जैसाकि आज कारपुनिच को याद है)। अथवा नाद्या लेवीतस्काया की

तरह आप अपनी मां को दी गई सज़ा के बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश करें और वे आपको ही सज़ा सुना दें; लेकिन इसका परिणाम एक मुकाबला होता है—किसी दूसरे कैदी से आपका सामना कराया जाता है और स्वयं आपको गिरफ्तार कर लिया जाता है! आपको बढ़िया माल बेचने वाले स्टोर गास्त्रोनोम में आमंत्रित किया जाता है। आपको विशेष आर्डर पर माल देने वाले विभाग में बुला लिया जाता है और गिरफ्तार कर लिया जाता है। आपको एक ऐसा तीर्थयात्री गिरफ्तार कर लेता है, जिसे आप "ईसा मसीह के नाम पर" रात भर के लिए आसरा देते हैं। आपको एक मीटरमैन गिरफ्तार कर लेता है, जो आपकी बिजली के मीटर को पढ़ने आया था। आपको एक ऐसा साइकिल सवार गिरफ्तार कर लेता है, जो सड़क पर आपसे आ टकराया हो। रेलवे का एक कंडक्टर भी, एक टैक्सी ड्राइवर, बचत बैंक का खजान्ची और सिनेमाघर का मैनेजर भी आपको गिरफ्तार कर लेता है। इनमें से कोई भी आपको गिरफ्तार कर सकता है और आप गहरे लाल रंग के उस छिपे हुए पहचान पत्र को उस समय देख पाते हैं, जब बहुत विलम्ब हो चुका होता है।

कभी-कभी गिरफ्तारियां एक खेल सी दिखाई पड़ती हैं—इनके लिए अत्यन्त अनावश्यक कल्पनाशीलता से काम लिया जाता है। इनमें खूब अच्छी तरह से खिलाये-पिलाये लोगों की शक्ति लगाई जाती है। आखिरकार इस सबकी ज़रूरत नहीं है, गिरफ्तारी का शिकार बनने वाला आदमी किसी भी हालत में इसका प्रतिरोध नहीं करेगा। क्या इन सब तैयारियों का यह कारण है कि सुरक्षा संगठनों के आदमी अपने रोजगार और अपनी बड़ी संख्या का औचित्य सिद्ध करना चाहते हैं? आखिरकार यह पर्याप्त दिखाई पड़ता है कि जिन खरगोशों को गिरफ्तार करने का निश्चय किया जा चुका है, उन सबको नोटिस भेज दिये जाएं और वे सब बड़ी आज्ञाकारिता से निश्चित समय पर राज्य सुरक्षा संगठन के लोहे के फाटकों के बाहर अपने हाथों में बंडल लिए हाजिर हो जाएंगे—अपने लिए निर्धारित जेल की कोठरी के फर्श पर थोड़ी सी जगह घेर लेने के लिए। और वास्तव में सामूहिक खेतों के किसानों को इसी तरह गिरफ्तार किया गया था। रात के समय दूर गांव में एक झोंपड़ी पर कौन जाना चाहेगा, जहां पहुंचने के लिए अच्छी सड़कें भी नहीं हैं। इन लोगों को ग्राम सोवियत के दफ्तर में बुला भेजा जाता है और वहां गिरफ्तार कर लिया जाता है। शारीरिक श्रम करने वाले मजदूरों को उनके दफ्तर में बुला कर गिरफ्तार कर लिया जाता है।

यह भी सही है कि प्रत्येक मशीन का ऐसा समय आता है जब वह और अधिक भार नहीं उठा पाती, जिस सीमा के बाहर वह काम नहीं कर पाती। अत्यधिक भार से ग्रस्त १९४५ और १९४६ के वर्षों में, जब रेलगाड़ियां भर-भर कर लोग यूरोप से आए तो उन्हें तुरन्त सीधे गुलाग में गर्त कर दिया गया। गिरफ्तारी की समस्त अतिशय नाटकीयता को ठुकरा दिया गया और गिरफ्तारी के समस्त सिद्धांत को गहरा धक्का पहुंचा। गिरफ्तारी के विधि-विधान के समस्त रीति-रिवाजों को ठुकरा दिया गया, तहस-नहस कर दिया गया और हज़ारों लोगों को बस हाज़री लेकर गिरफ्तार कर लिया गया: राज्य सुरक्षा संगठन के आदमी लम्बी-लम्बी सूचियां लेकर खड़े रहते। ट्रेन में ठसाठस भरे लोगों के नाम पढ़-पढ़कर सुनाते। एक रेल गाड़ी से उतार कर दूसरी रेलगाड़ी में सवार करते और गिरफ्तारी की कारवाई पूरी हो जाती।

अनेक दशकों से हमारे देश में राजनीतिक गिरफ्तारियों की विशेषता यह रही कि जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया वे किसी भी प्रकार से दोषी नहीं थे और इस कारण

से वे किसी भी प्रकार का प्रतिरोध करने के लिए तैयार नहीं थे। नाश की ओर अग्रसर होने की भावना सर्वव्यापी हो चुकी थी। सब लोगों के मन में यह विचार घर कर चुका था कि कोई भी जी० पी० यू०, एन० के० वी० डी० के पंजों की पहुंच के बाहर नहीं है (और प्रसंगवश यह कहा जा सकता है कि हमारी आंतरिक पासपोर्ट प्रणाली को ध्यान में रखते हुए यह सोचना सही भी था। और गिरफ्तारियों की महामारी के ज्वर के दौर में भी, जब लोग काम पर जाते समय हर रोज़ अपने परिवार से अलविदा ले लेते थे, क्योंकि उन्हें इस बात का निश्चय नहीं था कि रात को वे अपने घर वापस आ सकेंगे या नहीं, प्रायः किसी भी व्यक्ति ने भाग निकलने की कोशिश नहीं की और केवल कुछ गिने-चुने मामलों में ही आत्महत्याएं हुईं। और वस्तुतः इसी बात की आवश्यकता थी। एक विनम्र भेड़, भेड़िए के लिए वरदान होती है।

यह विनम्रता गिरफ्तारियों की महामारी के तौर-तरीके और कार्य-प्रणाली के प्रति अज्ञान के कारण ही थी। अधिकांशतया सुरक्षा संगठनों के समक्ष ऐसे कोई गहन कारण नहीं थे, जिनके आधार पर वे यह निर्णय ले पाते कि किसे गिरफ्तार किया जाना चाहिये और किसे नहीं। इन लोगों को निर्धारित काम सौंपा जाता। यह कहा जाता कि इन लोगों को कितने लोगों को गिरफ्तार करना होगा। अब गिरफ्तारी के इस कोटे को एक व्यवस्थित ढंग से अथवा पूरी तरह मनमाने ढंग से पूरा किया जा सकता था। सन् १९३७ में एक स्त्री एन० के० वी० डी० की नोवोचेरकास्क शाखा के कार्यालय के स्वागत कक्ष में आई। वह यह पूछने के लिए आई थी कि उसकी पड़ौसिन को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसके दुधमुंहे बच्चे के बारे में क्या किया जाना चाहिए। उन्होंने उत्तर दिया : "बैठ जाओ, हम अभी पता लगाते हैं।" वह वहां दो घन्टे बैठी रही—इसके बाद उन लोगों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और जेल की कोठरी में बन्द कर दिया। आखिरकार इन लोगों के सामने गिरफ्तारी की संख्या का एक निश्चित लक्ष्य था और उसे जल्दी से जल्दी पूरा किया जाना था। और ऐसे आदमी उस समय उपलब्ध नहीं थे, जिन्हें गिरफ्तारी के लिए शहर में भेजा जाता और जब यह स्त्री अपने आप उनके हाथों में पहुंच चुकी थी, तो वे यह मौका अपने हाथ से कैसे निकलने देते।

दूसरी ओर एन० के० वी० डी० के आदमी लतवियावासी आन्द्रेई पावेल को ओरशा के नजदीक गिरफ्तार करने के लिये पहुंचे। लेकिन पावेल ने दरवाजा नहीं खोला। वह खिड़की से बाहर कूद गया और भाग निकला तथा सीधा साइबेरिया के लिए रवाना हो गया। यद्यपि इसके बाद भी वह स्वयं अपने असली नाम के अनुसार ही रहता रहा और उसके कागज़पत्रों से यह स्पष्ट था कि वह ओरशा से आया है, पर उसे कभी भी गिरफ्तार नहीं किया गया और न ही राज्य सुरक्षा संगठनों ने उसे बुलाया ही और न ही किसी प्रकार का संदेह उसके ऊपर किया गया। राज्य सुरक्षा संगठनों को जिन लोगों की तलाश रहती है, आखिरकार वे तीन श्रेणियों के अन्तर्गत आते हैं : अखिल संघ, गणतंत्रीय और प्रांतीय। और गिरफ्तारी की महामारियों के दौर में जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया, उनमें से आधे लोगों की तलाश केवल प्रान्त तक ही सीमित रहती है। किसी ऐसे व्यक्ति की गिरफ्तारी, जिसे किसी पड़ोसी की शिकायत पर गिरफ्तार किया जा रहा हो, ऐसी चीज़ थी जिसके लिए ज्यादा भटकने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उसके स्थान पर आसानी से किसी दूसरे पड़ोसी को गिरफ्तार किया जा सकता था। आन्द्रेयी पावेल जैसे लोग भी थे,

जिन्होंने स्वयं को अपने फ्लैट में एक जाल में फंसते हुए देखा और तुरन्त भाग निकलने का साहस दिखाया, उन्हें कभी पकड़ा नहीं जा सका और उनके ऊपर कोई भी अभियोग नहीं लगाया जा सका, जबकि जिन लोगों ने न्याय प्राप्त करने के लिए डटे रहने का निश्चय किया उन सबको कैद की सज़ा मिली। और एक बहुत बड़े बहुमत ने—प्रायः सब लोगों ने—इसी प्रकार आचरण किया : बिना किसी भावना के, पूरी तरह असहाय स्थिति में, अपने विनाश के अन्तिम क्षण की प्रतीक्षा करते हुए इन लोगों ने स्वयं को सुरक्षा संगठनों के आदमियों के हाथों में सौंप दिया।

यह बात सच है कि एन० के० वी० डी० एक ऐसे व्यक्ति के रिश्तेदारों से यह गारंटी लेती थी, जो भाग निकला हो, कि वे अपना इलाका छोड़ कर नहीं जाएंगे और वास्तव में जो व्यक्ति भाग निकला था, उसका स्थान लेने के लिए उसके रिश्तेदारों के खिलाफ कोई मामला गढ़ लेना बड़ा आसान था।

सार्वभौम निर्दोषिता के परिणामस्वरूप कोई भी कारवाई करने की सार्वभौम असफलता मौजूद रही। हर व्यक्ति यह सोचता कि शायद वे लोग उसे गिरफ्तार न करें ? हो सकता है कि यह दौर गुजर जाए ? ए० आई० लादिचेन्स्की सुदूर कोलोग्रिव में स्कूल के प्रधानाध्यापक थे। सन् १९३७ में एक खुले बाजार में एक किसान उनके पास आया और एक तीसरे व्यक्ति का संदेश उन्हें दिया : "अलैक्सांद्र आइवानिच, शहर छोड़कर भाग निकलो, तुम्हारा नाम सूची में है।" लेकिन वे वहीं रुके रहे : आखिरकार पूरे स्कूल का भार मेरे कन्धों पर है और सुरक्षा संगठन के लोगों के बच्चे भी मेरे विद्यार्थी हैं। वे मुझे कैसे गिरफ्तार कर सकते हैं (कई दिन बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया)। १४ वर्ष की उम्र में प्रत्येक व्यक्ति में वान्या लेवीतस्की की तरह बातों को समझने की सूझ-बूझ नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति इस उम्र में इतना भाग्यशाली नहीं होता कि इन बातों को समझ पाता : "हर ईमानदार आदमी को निश्चय ही जेल जाना होगा। आजकल मेरे पिता जेल काट रहे हैं और जब मैं बड़ा हो जाऊंगा वे लोग मुझे भी जेल में डाल देंगे।" (उन लोगों ने उसे २३ वर्ष का होने पर जेल भेज दिया।) अधिकांश लोग चुपचाप बैठ जाते हैं और आशा करने का साहस करते हैं। अब क्योंकि आप दोषी नहीं हैं, तो वे आपको कैसे गिरफ्तार कर सकते हैं ? यह एक गलती है। जब वे लोग आपको कालर पकड़ कर घसीटते हैं, तब भी आप अपने मन में यही दोहराते रहते हैं : "यह एक गलती है ! ये लोग मामले को सुलझा देंगे और मुझे रिहा कर देंगे।" अन्य लोगों को एक साथ, पूरे समूह के रूप में गिरफ्तार कर लिया जाता है और यह बहुत उलझन में डालने वाला तथ्य है। लेकिन अन्य मामलों में कहीं-न-कहीं कोई काला दाग होता है, "हो सकता है कि वह दोषी हो..." लेकिन जहां तक स्वयं आपका सम्बन्ध है, स्पष्ट है कि आप निर्दोष हैं। आप अभी भी यह विश्वास करते रहते हैं कि सुरक्षा संगठन मानवीय भावना और विवेक के अनुसार काम करने वाली संस्थाएं हैं : वे सच्चाई का पता लगा लेंगे और आपको रिहा कर देंगे।

तो आपको भागने की क्या जरूरत ? और गिरफ्तारी के समय आप प्रतिरोध कैसे कर सकते हैं ? आखिरकार यह करके आप अपनी स्थिति को और बिगाड़ देंगे; आप इस कारवाई से उन लोगों के लिए गलती को ठीक करने, सच्चाई का पता लगाने का काम और कठिन बना देंगे और इस प्रकार आप केवल प्रतिरोध करने से दूर ही नहीं रहते; बल्कि आप पंजों के बल चल कर बहुत आहिस्ता से सीढ़ियों से नीचे उतरते हैं, जैसाकि आपको हुक्म

दिया जाता है, ताकि आपके पड़ौसी आपकी पदचाप न सुन सकें।[5]

तो यह कौन सा निश्चित और सही क्षण होता है, जब किसी व्यक्ति को प्रतिरोध करना चाहिए? क्या उस समय जब आपकी पेटी छीन ली जाती है? क्या उस समय जब आपको एक कोने में दीवार की तरफ मुंह करके खड़ा होने का हुक्म दिया जाता है? क्या उस समय जब आप अपने घर की चौखट को पार करते हैं? एक गिरफ्तारी प्रसंगवश होने वाली असंगतियों और ऐसी वस्तुओं की शृंखला होती, जिनका कोई महत्व नहीं होता और इनमें से किसी एक के बारे में अलग से तर्क करने की कोई तुक नहीं है—विशेषकर उस समय जब गिरफ्तार व्यक्ति के विचार केवल इस बड़े प्रश्न से ही पूरी तरह उलझे रहते हैं: "क्यों? किसलिए?"—और इसके बावजूद यह संयोगवश होने वाली असंगतियां ही अपने समग्र रूप में अनिवार्यत: गिरफ्तारी का रूप धारण करती हैं।

तुरन्त गिरफ्तार हुए किसी व्यक्ति के विचार प्राय: किसी भी बात पर केन्द्रित हो सकते हैं। केवल इन्हीं विचारों का विवरण अनेक पुस्तकें तैयार कर सकता है। ऐसी भावनाएं मन में आती हैं, जिनका कभी आभास भी नहीं था। जब १९२१ में १९ वर्षीय एवजेनिया दोयारेंको को गिरफ्तार किया गया और चेका के तीन युवक कर्मचारी उसके बिस्तर और उसकी अलमारी की दराजों में उसके अधोवस्त्रों को टटोल रहे थे, उसे ज़रा भी चिन्ता नहीं हुई। वहां ऐसा कुछ भी नहीं था कि वे ढूंढ़ निकालते। लेकिन तभी उन्होंने उसकी व्यक्तिगत डायरी को छुआ और वह अपनी व्यक्तिगत डायरी को किसी भी व्यक्ति को, स्वयं अपनी मां को भी दिखलाने के लिए तैयार नहीं थी। और इन शत्रुभाव रखने वाले युवक अजनबियों द्वारा उन शब्दों को पढ़ना, जो उसने लिखे थे, उसके लिए लूबयांका में सलाखों के पीछे और कोठरियों के भीतर बिताये गये समय से कहीं अधिक आघातजनक था। अनेक लोगों के बारे में यह बात सच है कि गिरफ्तारी के कारण उनकी व्यक्तिगत भावनाओं और अनुरक्तियों पर जो भयंकर आघात होता है, वह उनके राजनीतिक विश्वासों अथवा जेल जाने के उनके भय से कहीं अधिक प्रबल होता है। एक ऐसा व्यक्ति जो अपने विरुद्ध की जाने वाली हिंसा के लिए आन्तरिक रूप से तैयार नहीं है, उस व्यक्ति की तुलना में सदा कमजोर होता है, जो हिंसा करता है।

कुछ मेधावी और साहसी व्यक्ति होते हैं, जो तत्क्षण स्थिति को समझ जाते हैं। विज्ञान अकादमी की भूगर्भ विज्ञान संस्था के निदेशक ग्रीगोरएव ने गिरफ्तारी से पहले अपने घर को मजबूती से बन्द कर लिया और वे दो घंटे तक अपने कागज़ पत्र जलाते रहे और इसके बाद ही उन्हें गिरफ्तार किया जा सका। यह घटना १९४८ की है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि गिरफ्तार व्यक्ति के मन में जो प्रमुख भाव उत्पन्न होता है, वह राहत और यहां तक कि सुख तक का होता है। यह मानव स्वभाव का एक दूसरा पहलू है। यह क्रांति से पहले भी हुआ: एकातेरीनोदर के स्कूल की अध्यापिका सेरद्यूकोवा ने, जो अलेक्सान्द्र उल्यानोव के मामले से सम्बन्धित थीं, उस समय केवल राहत का ही अनुभव किया, जब उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन यह भावना गिरफ्तारी की महामारियों के दौर में हजारों गुना और अधिक प्रबल थी, जब आपके चारों ओर लोग गिरफ्तार हो रहे थे। ये गिरफ्तार लोग स्वयं आप जैसे थे, लेकिन अभी तक राज्य सुरक्षा संगठन के आदमी आपको गिरफ्तार करने के लिए नहीं आए थे; किसी कारण से वे विलम्ब कर रहे थे। आखिरकार इस प्रकार की निरन्तर मौजूद आशंका से पस्त होना, इस प्रकार की यातना

भोगना किसी भी गिरफ्तारी से बुरा है और केवल एक सीमित साहस वाले व्यक्ति के लिए ही यह भयावह नहीं है। वासली व्लासोव ने, जो एक निर्भीक कम्युनिस्ट थे और जिनका उल्लेख हम आगे अनेक बार करेंगे, अपने उन सहायकों के सुझाव को स्वीकार नहीं किया कि उन्हें भाग निकलना चाहिए, जो पार्टी के सदस्य नहीं थे। वे निरन्तर बड़ी व्यग्रता से गिरफ्तारी की प्रतीक्षा करते रहे, क्योंकि १९३७ में कादी जिले की कम्युनिस्ट पार्टी के समस्त नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था और वे व्लासोव की गिरफ्तारी में निरन्तर विलम्ब करते रहे। वे सीधे प्रहार को बर्दाश्त करने के लिए तैयार थे। उन्होंने इसे बर्दाश्त भी किया और इसके बाद उन्होंने राहत का अनुभव किया और अपनी गिरफ्तारी के बाद के आरम्भिक दिनों में उन्हें बहुत अच्छा लग रहा था। उनकी भावनाएं बहुत ऊंचे स्तर पर थीं। सन् १९३४ में पादरी इराकली, अलमा-अता में अपने कुछ विश्वासी अनुयायियों से मिलने गए, जो वहां निष्कासन में रह रहे थे। उनकी अनुपस्थिति में वे लोग उन्हें गिरफ्तार करने के लिए तीन बार उनके मास्को स्थित फ्लैट पर पहुंचे। जब पादरी इराक्ली वापस लौटे, तो उनके अनुयायी उन्हें स्टेशन पर ही मिले और उन्हें अपने घर नहीं जाने दिया और ८ वर्ष तक उन्हें विभिन्न लोगों के घरों में छिपाये रखा। इस परेशानी से भरी जिन्दगी से यह पादरी महोदय इतने दुःखी हो उठे थे कि जब १९४२ में अन्ततः इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तो वे भाव-विभोर होकर ईश्वर का गुणगान करने लगे।

इस अध्याय में हम केवल जन-समुदायों की ही चर्चा कर रहे हैं। हम उन असहाय खरगोशों की चर्चा कर रहे हैं, जिन्हें न जाने क्यों गिरफ्तार किया गया। लेकिन इस पुस्तक में हम उन लोगों पर भी विचार करेंगे, जो क्रांति के बाद के दौर में भी सच्चे अर्थों में राजनीतिक बने रहे। समाजवादी लोकतंत्री पार्टी की सदस्या और एक विद्यार्थी वेरा राइवाकोवा स्वतंत्र रहते हुए यह सपने देखा करती थीं कि किसी प्रकार उन्हें गिरफ्तार करके सुज़दाल के नजरबन्दी केन्द्र में भेज दिया जाए। केवल उसी स्थान पर उन्हें अपने पुराने साथियों से मिलने की आशा थी—क्योंकि उनमें से एक भी अब आज़ाद नहीं था। और केवल वहीं वे अपना विश्व दृष्टिकोण निर्धारित कर सकती थीं। समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की सदस्या येकातेरीना ओलीतस्काया स्वयं को १९२४ में गिरफ्तारी के योग्य नहीं समझती थीं। आखिरकार रूस के सर्वोत्तम लोगों ने जेल काटी है और वे अभी कम उम्र थीं और उन्होंने रूस की सेवा के लिए कुछ भी नहीं किया था। लेकिन स्वयं स्वतन्त्रता उसे बहिष्कृत कर रही थी और इस प्रकार ये दोनों जेल गईं—गर्व से, प्रसन्नता से।

"प्रतिरोध! तुमने प्रतिरोध क्यों नहीं किया?" जो लोग आराम का जीवन बिताते रहे, आज वे उन लोगों को ताना देते हुए यह बात कहते हैं, जिन्होंने यातनाएं भोगी हैं। हां, शुरू से ही प्रतिरोध होना चाहिए था, गिरफ्तारी के क्षण से ही यह हो जाना चाहिए था।

लेकिन यह शुरू नहीं हुआ।

और इस प्रकार वे आपको अपने साथ ले चलते हैं। दिन दहाड़े गिरफ्तारी के समय सदा वह संक्षिप्त और विलक्षण क्षण आता जब वे आपको अपने साथ ले चलते, या तो यह बहुत ही सामान्य तरीके से होता और उस कायरतापूर्ण समझौते के आधार पर भी जो आप उन लोगों से करते या बिलकुल खुल्लमखुल्ला उनकी पिस्तौलें बाहर निकली हुई होतीं और आपको उन सैकड़ों लोगों की भीड़ के बीच से पकड़ कर ले जाया जाता, जो आपकी ही तरह

निर्दोष थे, जो आपकी तरह ही अपने विनाश की प्रतीक्षा कर रहे थे। आपके मुंह में कपड़ा नहीं ठूंसा जाता। आप सचमुच चिल्ला सकते थे, आपको सचमुच चिल्लाना चाहिए था—आपको यह चिल्ला-चिल्ला कर कहना चाहिए था कि आपको गिरफ्तार किया जा रहा है! कि ये बहुरूपिये धूर्त, आपको अपने जाल में फंसा रहे हैं! कि झूठ अभियोगों के आधार पर गिरफ्तारियां की जा रही हैं! कि लाखों लोगों के खिलाफ चुपचाप बदले की कारवाई की जा रही है। यदि एक दिन के दौरान पूरे नगर में, अनेक स्थानों पर, लोगों के चिल्ला-चिल्ला कर यह कहने की घटनाएं होतीं, तो क्या हमारे साथी नागरिक इस सम्बन्ध में कुछ सोचना शुरू न करते? और क्या इस स्थिति में गिरफ्तारी कितनी आसान न रह जाती?

सन् १९२७ में, जब विनम्रता ने इस सीमा तक हमारे मस्तिष्क को मुलायम नहीं बना दिया था, चेका के दो आदमियों ने सेरपूखोव चौक में एक स्त्री को दिन के समय-गिरफ्तार करने की कोशिश की। उसने बिजली का एक खम्भा पकड़ लिया और चीखने-चिल्लाने लगी और इन लोगों की चुपचाप उनके साथ चलने की बात नहीं मानी। एक भीड़ इकट्ठा हो गई। (इस तरह की औरतों की ज़रूरत थी। यह भी ज़रूरी था कि ऐसी भीड़ होतीं। सब राहगीर अपनी आंखें बन्द करके आगे नहीं निकल जाते)। इस स्थिति में चेका के वे फुर्तीले युवक हतप्रभ रह गए। वे लोगों की आंख के सामने काम नहीं कर सकते। वे अपनी कार में सवार होकर भाग निकले। (इस स्त्री को उसी क्षण रेलवे स्टेशन पहुंच जाना चाहिए था और वहां से कहीं और रवाना हो जाना चाहिए था। लेकिन वह रात गुजारने के लिए अपने घर लौट गई और रात को ही वे लोग उसे लूबयांका ले गए।)

लेकिन होता यह है कि आपके सूखे हुए होंठों से ज़रा भी आवाज़ नहीं निकलती और आपके पास से गुजरने वाली भीड़, बचकानेपन से यह विश्वास करती रहती है कि आप और आपके जल्लाद एक दूसरे के दोस्त हैं और टहलने निकले हैं।

स्वयं मुझे भी चिल्ला-चिल्ला कर प्रतिवाद करने का मौका मिला।

मेरी गिरफ्तारी के ग्यारहवें दिन, स्मर्श [एक खुफिया संगठन, जिसे विदेशी जासूसों के खिलाफ कारवाई का काम सौंपा गया था] के तीन मूर्ख, जो युद्ध के समय लूट के माल से भरे चार सूटकेसों के भार के प्रति अधिक चिंतित थे और मेरे प्रति कम (ये लोग इस लंबी यात्रा के दौरान स्वयं मेरे ऊपर निर्भर रहे) मुझे मास्को में बाइलोरूस रेलवे स्टेशन पर लाए। इन लोगों को एक विशेष काफिला कहा जाता था - दूसरे शब्दों में इसे एक विशेष गारद कहा जा सकता है—लेकिन वास्तविकता यह थी कि इनकी स्वचालित पिस्तौलें लूट के माल से भरे अत्यधिक भारी बक्सों को घसीटने में बाधक बन रही थीं। इन लोगों ने और स्मर्श संगठन के उनके बड़े अफसरों ने जर्मनी में दूसरे बाइलोरूसी मोर्चे पर जो माल लूटा था, उसे इस बहाने से वापस अपने घर ला रहे थे कि वे विशेष गारद के रूप में एक कैदी को मास्को पहुंचा रहे हैं। मैंने स्वयं एक पांचवां सूटकेस उठा रखा था। मुझे यह सूटकेस उठाने की कोई खास खुशी नहीं थी, क्योंकि इसमें मेरी डायरियां और साहित्यिक रचनाएं थीं, जिन्हें मेरे खिलाफ प्रमाणों के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था।

इन तीनों में से किसी को भी मास्को शहर के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और मुझे ही जेल का सबसे छोटा रास्ता चुनना था। मुझे स्वयं इन लोगों को लूबयांका तक ले जाना था, जहां वे पहले कभी नहीं गए थे। (और वास्तव में मैं गलती से यह समझता रहा कि लूबयांका में विदेश मंत्रालय है)।

मैंने एक दिन सेना मुख्यालय की विदेशी जासूसों के खिलाफ काम करने वाली शाखा की जेल में बिताया और तीन दिन का समय मोर्चे पर मुख्यालय में एक ऐसी ही जेल में, जहां जेल की कोठरी के अन्य कैदियों ने मुझे बताया कि पूछताछ करने वाले अधिकारी किस प्रकार कैदियों को धोखे में डालते हैं, किस प्रकार धमकियां देते हैं और किस प्रकार मारपीट करते हैं। उन्होंने मुझे इस तथ्य की भी जानकारी दी कि एक बार गिरफ्तार हो जाने पर किसी भी व्यक्ति को कभी भी रिहा नहीं किया जाता। और अनिवार्य रूप से दस्सा मिलता है यानी दस साल की कैद की सजा। और तभी अचानक मानो कोई चमत्कार हुआ हो। मैं जेल की कोठरी से बाहर निकल आया और एक स्वतंत्र व्यक्ति की तरह स्वतन्त्र लोगों के बीच चार दिन तक यात्रा करता रहा। यद्यपि मैं इससे पहले पाखाने की बाल्टी के बराबर गले सड़े फूस के ऊपर करवटें बदल चुका था, मेरी आंखें लम्बे अरसे तक नींद से वंचित और मारपीट से घायल व्यक्तियों को देख चुकी थीं। मेरे कान सत्य को सुन चुके थे और मेरी जिह्वा जेल की खिचड़ी का स्वाद चख चुकी थी। तो फिर भी मैं मौन क्यों रहा? जब अन्तिम क्षणों में खुले स्थानों पर था, मैंने धोखे में डाले गए जन समुदाय को सच्चाई बताने की कोशिश क्यों नहीं की?

मैं पोलैंड के ब्रोदनिका नगर में भी चुप रहा—हो सकता है कि इस कारण से कि वे लोग रूसी भाषा नहीं समझते। मैंने बियालीस्तोक की सड़कों पर भी एक शब्द अपनी ज़बान से नहीं निकाला—हो सकता है कि इस कारण से क्योंकि इस मामले का पोलैंड के लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं था। मैंने वोलकोवस्क रेलवे स्टेशन पर भी चूं नहीं की—क्योंकि वहां बहुत कम लोग मौजूद थे। मैं मिन्स्क स्टेशन पर उन्हीं लुटेरों के बराबर इस प्रकार चलता रहा मानो कोई भी गड़बड़ नहीं है—लेकिन यह स्टेशन अभी भी ध्वस्त अवस्था में पड़ा था। और अब मैं स्मर्श के आदमियों को मास्को की सर्किल लाईन के बाइलोरूसी—रेडियल जमीदोज़ स्टेशन के ऊपरी गोलाकार हिस्से से ले जा रहा था, इसका सफेद छत वाला गुम्बद और तेज़ बिजली की रोशनी तथा हमारे सामने दो बराबर-बराबर लगे एक्सेलेटर [स्वचालित सीढ़ियां] थे जिनके ऊपर मास्को निवासियों की जबर्दस्त भीड़ मौजूद थी और ये सीढ़ियां लोगों को निरन्तर नीचे से ऊपर पहुंचाती जा रही थीं। ऐसा लगता था कि मानो ये सब लोग केवल मुझे ही देख रहे हों। ये लोग कभी समाप्त न होने वाली कतारों में, अज्ञान की गहराइयों से निकलते हुए चले आ रहे थे—प्रकाश से जगमगाते गुम्बद के नीचे से ये लोग अनन्त रूप से मेरी ओर बढ़े आ रहे थे, सत्य का एक शब्द सुनने के लिए—तो मैं चुप क्यों रहा?

प्रत्येक व्यक्ति के पास भ्रांति पर आधारित ऐसे एक दर्जन छोटे-छोटे कारण मौजूद होते हैं कि उनके लिए स्वयं अपनी कुर्बानी देना उचित क्यों नहीं था।

कुछ लोगों को अभी भी यह आशा थी कि उनके मामले उनके हक में निपट जाएंगे और वे चिल्ला कर अपने रिहा होने की गुंजाइश को खत्म नहीं करना चाहते थे। (आखिरकार हमें दूसरी दुनिया यानी स्वतन्त्र दुनिया से कोई खबर नहीं मिलती और हम यह अनुभव नहीं कर पाते कि हमारी गिरफ्तारी के क्षण ही हमारे भाग्य का सबसे बुरे सम्भव तरीके से निपटारा हो चुका है, और हम इसे और अधिक बुरा नहीं बना सकते।) कुछ अन्य लोग अभी तक ऐसी प्रौढ़ संकल्पनाएं प्राप्त नहीं कर पाते, जिनके आधार पर भीड़ को संबोधित किया जाना चाहिए। वस्तुतः केवल एक क्रांतिकारी के होंठों पर ही वे नारे होते हैं, जो

चिल्ला-चिल्ला कर व्यक्त किए जाने को व्यग्र रहते हैं। और किसी भी मामले से दूर रहने वाले शान्तिप्रिय औसत आदमी को ये नारे कहां प्राप्त हो सकते हैं? इसे मालूम ही नहीं होता कि वह चिल्लाकर क्या कहे। और फिर, यह भी तो होता है कि वह एक ऐसा व्यक्ति हो जिसका मन भावनाओं से भरा होता है, जिसकी आंखें आवश्यकता से अधिक देख चुकी होती हैं। अब वह किस प्रकार इस पूरे सागर को, कुछ असम्बद्ध चिल्लाहट भरे शब्दों में कैसे प्रकट कर डाले।

जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं एक और कारण से भी चुप रहा। मास्को के उन एक्सेलेटरों, उन स्वचालित सीढ़ियों पर नगर के निवासियों की जो भीड़ थी, वह मेरे लिए छोटी थी, बहुत छोटी थी! यहां मेरे शब्द केवल दो सौ लोग या दो सौ के दुगने लोग ही सुन सकते थे, लेकिन इस स्थिति में बीस करोड़ लोगों का क्या होता? अस्पष्ट रूप से मेरे मन में यह कल्पना थी कि एक दिन मैं चिल्ला कर अपनी आवाज़ बीस करोड़ लोगों के कानों तक पहुंचाऊंगा।

लेकिन फिलहाल मैंने अपना मुंह नहीं खोला और वह स्वचालित सीढ़ी मुझे सतत रूप से दूसरी छिपी दुनिया की ओर घसीट ले गई।

और जब मैं ओखोतनी रियाद पहुंचा, मैं निरन्तर चुप ही रहा।

मैंने मेट्रोपोल होटल में भी एक शब्द भी मुंह से नहीं निकाला।

मैंने लूबयांका चौक के कब्रिस्तान पर भी अपनी बांहें हिला कर प्रतिवाद नहीं किया।



सम्भवत: मेरी गिरफ्तारी सबसे अधिक आसान किस्म की गिरफ्तारी थी, इस गिरफ्तारी के द्वारा मुझे अपने निकट सम्बन्धियों के सानिध्य से घसीट कर अलग नहीं किया था, मुझे अत्यधिक वांछित पारिवारिक जीवन से तोड़ कर अलग नहीं कर दिया गया था। यूरोप की एक सर्द फरवरी में मुझे बाल्टिक समुद्र पर स्थित हमारे एक संकरे मोर्चे से बुलाया गया था, जहां हमने अपने-अपने नज़रिये से, जर्मनों को घेर रखा था या जर्मनों ने हमें घेर रखा था, और इस गिरफ्तारी से मैं अपने परिचित तोपखाने की टुकड़ी और पिछले तीन महीने के युद्ध के दृश्यों से ही वंचित हुआ था, अलग हुआ था।

ब्रिगेड कमाण्डर ने मुझे अपने मुख्यालय बुलाया और मुझसे अपनी पिस्तौल सौंपने को कहा; मैंने किसी बुरे इरादे का संदेह किए बिना ही अपनी पिस्तौल उसके हवाले कर दी और तभी एक कोने में तनावग्रस्त और स्थिर खड़े स्टाफ अफसरों के बीच से अचानक खुफिया विभाग के दो अफसर बड़ी तेज़ी से आगे बढ़े, कुछ लम्बे डग भर कर, कमरे को पार किया और उनके चार हाथों ने एक साथ मेरी टोपी पर लगे सितारे, मेरे कन्धे पर लगे सितारों, मेरी अफसरों की पेटी और मेरा नक्शा रखने का डिब्बा नोचकर अलग फेंक दिया और बड़े नाटकीय ढंग से चिल्ला कर बोले:

"तुम्हें गिरफ्तार कर लिया गया है!"

एड़ी से चोटी तक क्रोध से जलते हुए मैं केवल यह शब्द कह सका:

"मुझे? किसलिए?"

और यद्यपि सामान्यतया इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिलता, पर यह आश्चर्य का

विषय है कि मुझे इस प्रश्न का उत्तर मिला। यह स्मरणीय है, क्योंकि यह हमारे सामान्य तरीके के विपरीत है। स्मर्श के आदमी मेरे सितारों आदि को नोचकर फेंकने का काम मुश्किल से ही कर पाये थे और उन्होंने राजनीतिक विषयों पर लिखी मेरी टिप्पणियां नक्शे के डिब्बे के साथ अपने कब्जे में ली ही थीं और मुझे बाहर के दरवाजे की ओर यथासम्भव तेज़ी से धकेलने में लग गए थे। जर्मनों की तेज़ गोलाबारी भी उन्हें यह करने के लिए और प्रेरित कर रही थी, जिसके परिणामस्वरूप खिड़कियों के शीशे जोर जोर से खड़खड़ाते रहे थे। तभी मैंने सुना कि मुझे कड़ी आवाज़ में संबोधित किया जा रहा है—हां, सचमुच ! जो लोग पीछे छूट गए थे, उन्हें मुझसे दूर करने वाली शून्य जैसी दूरी के उस पार से गिरफ्तार शब्द के भारी आघात के परिणामस्वरूप उत्पन्न अंतराल के उस पार से, उस निषेध रेखा के पार से, जिसको लांघने का साहस आवाज़ तक नहीं कर सकती, अविश्वासनीय और अकल्पनीय रूप से ब्रिगेड कमाण्डर के ये जादू भरे शब्द सुनाई पड़े :

"सोल्झेनित्सीन। इधर वापस आओ।"

एक तेज़ी से झटका देकर मैंने स्वयं को स्मर्श के आदमियों के हाथों से छुड़ा लिया और तेज़ी से पीछे घूम कर ब्रिगेड़ कमाण्डर के सामने खड़ा हो गया। मेरा उनसे कोई अच्छा परिचय नहीं था। उन्होंने कभी भी सामान्य बातचीत करने की कृपा नहीं दिखाई थी। मेरे लिए उनके चेहरे का अर्थ एक आदेश था, एक हुक्म था, क्रोध की अभिव्यक्ति था। लेकिन अब यह बड़े विचारशील तरीके से प्रकाशमान हो रहा था। क्या इस गन्दे काम में अनिच्छा से हिस्सा लेने की शर्म के कारण यह हुआ था ? क्या यह एक पूरे जीवनकाल के दयनीय रूप से अधीनस्थ रहने की स्थिति से भावनाओं के आवेग के कारण ऊपर उठने का अवसर था ? दस दिन पहले मैंने अगुआ तोपखाने को उस क्षेत्र से सही सलामत बाहर निकाल लिया था, जहां ब्रिगेड कमाण्डर की तोपखाना बटालियन की १२ भारी तोपें शत्रु की गोलाबारी की मार के भीतर आ गई थीं और आज उन्हें इस कारण से मुझे त्यागना पड़ रहा था क्योंकि एक मोहर लगा हुआ कागज़ भेजा गया है ?

"तुम्हारा" उन्होंने बहुत कोशिश करते हुए पूछा, "पहले यूक्रेनी मोर्चे पर कोई मित्र है ?"

"इसकी इजाजत नहीं है ! आपको इसका अधिकार नहीं है !" खुफिया विभाग के कैप्टेन और मेजर ने कर्नल के ऊपर चिल्लाते हुए कहा : कमरे के कोने में स्टाफ अफसरों की टोली भयभीत होकर एक दूसरे के पास और सिमट आई थी, मानो वे ब्रिगेड कमाण्डर की अविश्वसनीय विवेकहीनता में हिस्सा बटाने में भयभीत थे (इन लोगों के बीच मौजूद राजनीतिक अफसर उनके विरुद्ध सामग्री पेश करने के लिए पहले ही तैयारी में लग गए थे)। लेकिन मैं पहले ही समझ चुका था : गिरफ्तारी के क्षण ही यह बात मेरी समझ में आ गई थी कि मुझे अपने स्कूल के मित्र से पत्र-व्यवहार के कारण गिरफ्तार किया गया है और यह समझ गया था कि मुझे इस ओर से ही खतरे की आशंका करनी चाहिए।

ज़खर जार्जीएविच त्रावकिन बस यहीं रुक सकते थे। लेकिन नहीं ! इस कारवाई में अपने हिस्से से स्वयं को मुक्त करने के लिए और अपनी आत्मा के समक्ष सिर ऊंचा करके खड़ा रहने के लिये, वे अपनी मेज़ के पीछे उठ खड़े हुए—मेरे भूतपूर्व जीवन में वे कभी भी मेरी मौजूदगी में कुर्सी से उठकर खड़े नहीं हुए थे—और उन्होंने उस निषेध रेखा को चीरते हुए, जो हम दोनों को एक दूसरे से अलग कर चुकी थी मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाया।

यद्यपि वे उस स्थिति में कभी भी मेरी ओर इस प्रकार हाथ न बढ़ाते, यदि मैं स्वतन्त्र होता। और मेरा हाथ दबाते हुए, जबकि स्टाफ अफसरों की टोली मूक आतंक से भयभीत खड़ी थी, उन्होंने अपने स्वभावतः कठोर रहने वाले मुख पर बड़ी संजीदगी प्रदर्शित करते हुये निर्भीक रूप से ये शब्द कहे :

"मैं तुम्हारे सुख की कामना करता हूं कैप्टेन !"

अब मैं केवल कैप्टेन नहीं रहा था, बल्कि जनता के शत्रु के रूप में भी मेरा भण्डा-फोड़ किया जा चुका था (हम लोगों के मध्य, हमारे देश में गिरफ्तारी के क्षण से ही प्रत्येक व्यक्ति को पूरी तरह से अपराधी मान लिया जाता है। यह समझ लिया जाता है कि उसका भण्डा फूट चुका है)। और उन्होंने एक शत्रु के सुख की कामना की थी?[६]

खिड़कियों के शीशे फिर जोर से खड़खड़ाये। कोई दो सौ गज़ दूर जर्मन तोपखाने के गोलों ने जमीन के टुकड़े कर दिये और यह स्मरण हो आया कि यह बात पीछे, मोर्चे के पीछे, सम्भव नहीं थी, निर्धारित अस्तित्व की सामान्य परिस्थितियों में यह नहीं हो सकता था, यह केवल यहीं, मृत्यु की उग्र सांसों के नीचे ही हो सकता था। यह उस स्थान पर हो सकता था जहां मृत्यु केवल समीप ही नहीं थी, बल्कि जिसके समक्ष सब लोग बराबर थे।

यह पुस्तक स्वयं मेरे जीवन के संस्मरणों से सम्बन्धित नहीं है। अतः मैं अपनी गिरफ्तारी के सच्चे दिलचस्प विवरणों को यहां नहीं दोहराऊंगा और मेरी यह गिरफ्तारी अन्य किसी गिरफ्तारी जैसी नहीं थी। उसी रात को स्मर्श के अफसरों ने अपनी यह अन्तिम आशा त्याग दी कि वे नक्शे पर इस बात का पता लगा सकते हैं कि हम लोग कहां हैं—वे नक्शा पढ़ने में कभी भी कामयाब नहीं हुए थे, स्थिति यही थी। तो उन्होंने बड़ी विनम्रता से नक्शा मेरे हाथ में थमा दिया और मुझसे बोले कि मैं ड्राइवर को यह बताऊं कि सेना मुख्यालय के उनके खुफिया विभाग में पहुंचने के लिये किस रास्ते से आगे बढ़े। इस प्रकार मैं स्वयं को और उन्हें भी उस जेल तक ले गया और मेरे इस कार्य के प्रति आभार स्वरूप उन्होंने मुझे तुरन्त जेल की एक सामान्य कोठरी में नहीं, बल्कि सजा वाली कोठरी में बन्द कर दिया। और मुझे सचमुच जर्मनी के एक किसान के घर की एक बड़ी अलमारी का विवरण देना चाहिए, जिसे सजा की एक अस्थाई कोठरी के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था।

यह एक मानव शरीर के बराबर लम्बी थी और इसमें तीन लोग जरा फंस कर और चार लोग मुश्किल से लेट सकते थे। अब हुआ यह कि इस कोठरी में पहुंचने वाला मैं चौथा व्यक्ति था और अर्ध रात्रि के बाद मुझे इसके भीतर धकेल दिया गया था। वहां लेटे हुए तीन व्यक्तियों ने बड़ी उनींदी आंखों से मेरी ओर मिट्टी के तेल की धुआं छोड़ती लालटेन की रोशनी में देखा और एक ओर को हट गए और मेरे लिए एक करवट से लेटने के लिए जगह छोड़ दी। मैं आधा उनके बीच और आधा उनके ऊपर लेट गया और धीरे-धीरे मेरे शरीर के भार ने मुझे नीचे फर्श तक पहुंचा दिया और इस प्रकार भूसे से ढके फर्श पर चार ओवरकोट और आठ फौजी बूट लेटे हुए थे और इन बूटों का रुख दरवाजे की ओर था। ये लोग सोते रहे और मैं जागता रहा। सिर्फ आधा दिन पहले, मैं एक कैप्टेन के रूप में जितना अधिक आत्म-विश्वास से भरा हुआ था, अब मेरे लिए इस अलमारी से फर्श पर इस तरह ठसाठस लेटना उतना ही अधिक कष्टप्रद हो रहा था। बीच में एक या दो बार वे लोग एक करवट लेटे-लेटे सुन्न हो जाने के कारण उठे और हम सबने एक साथ करवट बदली; क्योंकि एक व्यक्ति के लिए करवट बदलना सम्भव नहीं था।

सुबह होते-होते वे लोग जगे, जमुहाई ली, गुर्राये, अपनी टांगों को समेटा और अलग-अलग कोनों में जा बैठे और फिर हमारा परिचय शुरू हुआ।

"तुम्हें किसलिए यहां डाला गया है ?"

स्मर्श की विषाक्त छत के नीचे मेरे मन में पहले ही चिन्ता भरा सतर्कता भरा भाव आ गया था और मैंने आश्चर्यचकित होने का स्वांग रचा : "मैं कुछ नहीं जानता। क्या ये हरामजादे आपको कुछ बताते हैं ?"

लेकिन मेरे इन साथियों ने—जो काले मुलायम हेलमेटधारी टैंक चालाक थे—कुछ भी नहीं छिपाया। ये लोग ईमानदार और साफ दिल वाले सैनिक थे—ये ऐसे लोग थे, जिनसे मैं युद्ध के इन वर्षों में प्यार करने लगा था, क्योंकि मैं स्वयं अधिक जटिल और बुरा था। ये तीनों अफसर रह चुके थे। इनके कन्धों पर लगे सितारों को भी बहुत भयंकर रूप से नोंच कर फेंक दिया गया था और कुछ स्थानों पर सूती धागे उखड़े हुए दिखाई पड़ रहे थे। लड़ाई के मैदान में पहने जाने वाली कमीज़ों के ऊपर उन स्थानों पर हल्के रंग के निशान दिखाई पड़ रहे थे, जहां ये लोग अपने अच्छे काम के लिए प्राप्त तमगे आदि लगाते होंगे और उनके चेहरों और बांहों पर काले और लाल रंग के घावों के निशान भी थे। चमड़ी के जल जाने और घाव आने के परिणामस्वरूप ये दाग रह गए थे। दुर्भाग्यवश इनकी टैंक यूनिट उस गांव में मरम्मत के लिए आई थी, जहां ४८ वीं सेना के स्मर्श खुफिया विभाग का मुख्यालय था। परसों की लड़ाई से अभी सराबोर होने के कारण, कल उन्होंने काफी शराब पी ली थी और गांव के बाहर ये लोग उस स्नान घर में जा घुसे, जहां उन्होंने दो हट्टी-कट्टी लड़कियों को नहाने के लिए जाते हुए देखा था। ये लड़कियां, जिन्होंने आधे कपड़े ही पहन रखे थे, लड़खड़ा कर चल रहे और शराब के नशे में धुत्त इन सैनिकों से बच निकलीं। लेकिन इनमें से एक, आगे चलकर पता चला, सेना के खुफिया विभाग के अध्यक्ष की सम्पत्ति थी। किसी मामूली आदमी की नहीं।

हां ! तीन सप्ताह से जर्मनी के भीतर लड़ाई चल रही थी। और हम सब लोग यह अच्छी तरह से जानते थे कि जर्मन लड़कियों के साथ बलात्कार किया जा सकता था और इसके बाद उन्हें गोली से उड़ाया जा सकता था। इसे युद्ध के समय का एक विशेष अधिकार समझा जाता था। लेकिन यदि वे पोलैंड की या हमारी रूसी विस्थापित लड़कियां होतीं, तो उन्हें नंगी अवस्था में बगीचे में चारों ओर दौड़ाया जा सकता था और उनके नितम्बों पर हाथ मारा जा सकता था—लेकिन इससे अधिक कुछ नहीं। बस इतना ही मनोरंजन किया जा सकता था। लेकिन अब क्योंकि यह लड़की खुफिया विभाग के अध्यक्ष की "युद्धकालीन पत्नी" थी; अत: युद्ध के मोर्चे से बहुत पीछे रहने वाले किसी सार्जेन्ट ने युद्ध के मोर्चे की अग्रिम पंक्तियों पर लड़ने वाले तीन अफसरों के कन्धों पर लगे सितारे ही नहीं फेंके, जो उन्हें मोर्चे के मुख्यालय से प्राप्त हुए थे, बल्कि उन तमगों को भी नोंच फेंका, जो सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल ने इन अफसरों को वीरता के लिए प्रदान किये थे। और अब ये योद्धा, जिन्होंने यह पूरी लड़ाई लड़ी थी और जिन्होंने निःसंदेह शत्रु की खंदकों की अनेक पंक्तियों को रौंद डाला था, उस फौजी अदालत के समक्ष पेश होने की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिस अदालत के सदस्य इस गांव के कहीं आस-पास आने का साहस भी न कर पाते, यदि इन अफसरों के टैंकों ने शत्रु को इस तरह रौंद न डाला होता।

हमने मिट्टी के तेल की लालटेन बुझा दी, जो इस अलमारी की कोठरी में मौजद सब

हवा को सफाचट कर चुकी थी। दरवाजे में डाक टिकट के आकार का एक छेद बनाया गया था, जिसका इस्तेमाल कैदियों पर नजर रखने के लिए किया जाता था। और इस छेद से बरामदे से रोशनी भी आती थी। मानो इस बात से भयभीत होकर कि दिन के समय इस सजा की कोठरी में हमारे पास बहुत जगह हो जाएगी, उन्होंने एक पांचवें आदमी को भी भीतर धकेल दिया। इस व्यक्ति ने लाल सेना का एक नया कोट पहन रखा था और उसकी टोपी भी नई थी। और जब वह दरवाजे में बने छेद के सामने आया, तो हम एक ताजगी भरा चेहरा, ऊपर को उठी नाक और लाल गाल देख सके।

"तुम कहां से आए हो भाई? तुम कौन हो?"

"दूसरी तरफ से।" उसने तेज़ी से उत्तर दिया। एक जासूस हूं।"

"अरे, तुम मज़ाक कर रहे हो?" हम आश्चर्यचकित रह गए। (कोई व्यक्ति जासूस हो और उसे स्वीकार भी करे—शीनिन और तूर भाईयों ने जासूसों के बारे में कभी भी ऐसी कोई कहानी नहीं लिखी?)

"लड़ाई के ज़माने में मज़ाक करने की गुंजाइश नहीं होती!" इस जवान लड़के ने उचित रूप से लम्बा सांस लेते हुए कहा। "और इसके अलावा आप युद्धबंदी बनने से बच कर कैसे स्वदेश लौट सकते हैं! ज़रा आप ही मुझे बताएं।"

उसने हमें बताना शुरू किया कि कुछ दिन पहले जर्मनों ने उसे अग्रिम मोर्चों के पार भेजकर किस प्रकार जासूस का काम करने के लिए तैनात किया और उसे पुल उड़ाने का काम भी सौंपा। इस पर वह सीधा सबसे पास के बटालियन मुख्यालय में स्वयं को अधिकारियों के हवाले करने जा पहुंचा। लेकिन थके हारे और नींद से वंचित बटालियन कमाण्डर ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। उसे उसके जासूस होने की कहानी पर विश्वास नहीं हुआ। और उसने उसे नर्स के पास दवा लेने के लिए भेज दिया। और तभी नए विचार हमारे सामने आए, नई स्थितियां हमारे समक्ष उजागर होने लगीं।

"शौच के लिये बाहर चलो! अपने हाथ पीठ के पीछे रखो!" एक मास्टर सार्जेंट ने दरवाजा खोलते हुये बड़ी कड़ी आवाज़ में कहा। उसका शरीर ऐसा था कि इसका उपयोग एक सौ बाईस मिलीमीटर की तोप को चलाने में किया जा सकता था।

इस किसान के घर के अहाते के चारों ओर मशीनगन वालों को तैनात कर दिया गया था। ये मशीनगनें उस रास्ते पर सधी हुई थीं, जिस पर हमें चलने को कहा गया था और जो खलियान के पीछे जाता था। मैं क्रोध से फटा जा रहा था कि एक मामूली सा मास्टर सार्जेंट हम अफसरों को हुक्म देने का साहस कर रहा है! "अपने हाथ पीठ के पीछे रखो!" टैंक अफसरों ने अपने हाथ पीठ के पीछे कर लिए और मैंने भी उन्हीं का अनुसरण किया।

खलियान के पीछे एक छोटा सा चौक था, जिसमें चलने के कारण बर्फ जगह-जगह से उखड़ गई थी, लेकिन अभी तक पिघली नहीं थी। इस छोटे से चौक में प्रायः सर्वत्र लोगों ने शौच किया था, यहां सब जगह पाखाना इस तरह फैला हुआ था कि अपने दो पांव टिकाने भर के लिए साफ जगह ढूंढ निकालना मुश्किल था। इसके बावजूद हम पांचों इधर-उधर फैल गए और किसी न किसी तरह जमीन पर बैठे। दो मशीनगनर अपनी मशीनगनों का मुंह हमारी ओर किए हुए थे और मुश्किल से एक मिनट ही बीता होगा कि मास्टर सार्जेंट हमें उठ खड़े होने का हुक्म देने लगा।

"जल्दी करो, जल्दी करो ! हमारे यहां इतना वक्त नहीं लगाया जाता !"

मेरे पास ही एक टैंक अफसर बैठा हुआ था। वह रोस्तोव का रहने वाला था। वह लम्बा-ऊंचा और उदासीन सा दिखाई पड़ने वाला सीनियर लेफ्टिनेंट था। उसके चेहरे पर धातु के बुरादे या धुएं की हल्की सी काली परत जमी थी। लेकिन इसके बावजूद उसके गाल पर लगा लाल घाव स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था।

"हमारे यहां से तुम्हारा क्या तात्पर्य है", उसने बड़ी शांति से यह दर्शाते हुए पूछा कि वह उस सज़ा की कोठरी में वापस लौटने की जल्दबाजी में नहीं है, जिसमें अभी भी मिट्टी के तेल की दुर्गन्ध भरी थी।

"स्मर्श खुफिया विभाग में !" मास्टर सार्जेंट ने बड़े गर्व से और आवश्यकता से अधिक ऊंची आवाज से तापक से जवाब दिया। (शत्रु के जासूसों के खिलाफ कारवाई करने के लिए बनाये गये इस खुफिया विभाग के लोगों ने बड़े कुरुचिपूर्ण ढंग से "स्मर्श" शब्द गढ़ा था। उन्होंने "जासूसों को मार डालो" शब्दों के आरम्भिक अक्षर लेकर स्मर्श शब्द तैयार किया था। वे सोचते थे कि इस शब्द के प्रयोग से लोग भयभीत होते हैं।)

"और हमारे यहां लोग यह धीरे-धीरे करते हैं," सीनियर लेफ्टिनेंट ने बड़े विचारशील तरीके से उत्तर दिया। उसने अपनी फौजी टोपी पीछे की ओर खिसका ली थी और उसके अभी तक बिना कटे बाल दिखाई पड़ रहे थे। उसका ओक वृक्ष जैसा युद्ध की कष्टसाध्य और कठोर परिस्थितियों से गुज़रा पृष्ठ भाग, सुखद ठण्डी हवा की दिशा में उठा हुआ था।

"हमारे यहां से तुम्हारा क्या तात्पर्य है !" मास्टर सार्जेंट ने उससे कहीं अधिक ऊंची आवाज में भौंकते हुए कहा, जितनी ऊंची आवाज की उसे ज़रूरत थी।

"लाल सेना में", सीनियर लेफ्टिनेंट ने बड़ी शांति से अपनी एड़ियों के बल बैठते हुए यह उत्तर दिया और उसकी नज़र तोप के उस टेलर या पिछले हिस्से को तोलती हुई दिखाई पड़ रही थी, जो वहां मौजूद नहीं था।

ये हैं जेल के मेरे पहले अनुभव।

अध्याय २



हमारी गन्दे पानी की निकासी की प्रणाली का इतिहास

जब आज लोग व्यक्ति पूजा के दौर की बुराइयों की निन्दा करते हैं, तो वे केवल उन्हीं वर्षों पर अटके रहते हैं, जो हमारे गलों में फंस चुके हैं। ये वर्ष हैं—१९३७ और १९३८। और स्मृति को इस प्रकार ढाल दिया जाता है कि मानो इससे पहले और इसके बाद कभी भी गिरफ्तारियां नहीं की गयीं और केवल इन्हीं दो वर्षों में गिरफ्तारियां हुईं।

यद्यपि मेरे पास कोई निश्चित आंकड़े नहीं हैं। लेकिन यह कहते समय कि १९३७ और १९३८ की लहर न तो एकमात्र लहर थी और न ही मुख्य लहर, बल्कि यह संभवत: तीन सर्वाधिक विशाल लहरों में केवल एक लहर थी, जिसने हमारी जेलों के गन्दे नालों के गदले, बदबू भरे पाइपों को फटन की सीमा तक पहुंचा दिया था, तो मुझे कोई गलती कर बैठने का भय और आशंका नहीं रहती।

इससे पहले १९२९ और १९३० की लहर आई थी। सचमुच यह धारा ओब नदी के समान विशाल थी और यह अपने साथ केवल एक करोड़ पचास लाख किसानों को, हो सकता है इससे भी अधिक को, बहा ले गयी और उन्हें दलदल भरे चीड़ के जंगलों और टुण्ड्रा के भयानक बर्फानी ठण्डक से जमे इलाकों में पहुंचा दिया। लेकिन किसान मूक लोग होते हैं, उनके पास साहित्यिक अभिव्यक्ति, साहित्यिक आवाज़ नहीं होती और न ही वे शिकायतें अथवा संस्मरण लिखते हैं। किसी भी पूछताछ अधिकारी ने उनसे झूठी स्वीकारोक्तियां कराने के लिए रात-रात भर खून पसीना एक नहीं किया और न ही उन लोगों ने किसानों के विरुद्ध औपचारिक अभियोग लगाने का ही कष्ट उठाया – बस, ग्राम सोवियत से एक आदेश भर जारी करा देना पर्याप्त समझा गया। यह लहर आगे बढ़ती रही, स्थायी रूप से बर्फ से जमे रहने वाले इलाके में जाकर लुप्त हो गई और हमारे सर्वाधिक सक्रिय मस्तिष्क भी इसके बारे में मुश्किल से ही कुछ याद कर पाते हैं। ऐसा लगता है कि मानो इसने रूस के अन्त:करण, रूस की आत्मा पर ज़रा सा धब्बा भी नहीं छोड़ा, इसका स्पर्श तक नहीं किया। और इसके बावजूद स्तालिन ने (और आपने तथा मैंने भी) इससे अधिक अन्य कोई जघन्य अपराध नहीं किया।

और इसके बाद १९४४ और १९४६ की लहर आयी। इसका आकार येनीसेई नदी के समान विशाल था। जब उन लोगों ने पूरी की पूरी जातियों को गन्दे नालों के पाइपों में धकेल दिया और इसमें उन लाखों लाख अन्य लोग शामिल नहीं हैं, जो (हमारे

कारण) युद्धबंदी बने, अथवा जिन्हें कद करके जर्मनी ले जाया गया और फिर बाद में वे लोग स्वदेश वापस लौटे। (स्तालिन का घावों को ठीक करने का यही तरीका था ताकि खुरण्ड जल्दी बँध जाए और इस प्रकार समस्त राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था को आराम करने, राहत की सांस लेने और अपनी शक्ति संचय करने का समय न मिल सके।) लेकिन इस लहर की लपेट में भी जो लोग आये थे। वे अपेक्षाकृत सीधे-सादे थे और उन्होंने अपने संस्मरण नहीं लिखे।

लेकिन १९३७ की लहर प्रभावशाली लोगों, पार्टी के भूतपूर्व सदस्यों, हां, शिक्षित लोगों को द्वीप समूह में बहा ले गयी और इनके चारों ओर ऐसे अनेक लोग थे, जो घायल हो चुके थे और नगरों में ही रह रहे थे...और इनमें से कितने अधिक लोगों के हाथ में कलम थी! और आज ये सब लोग लिख रहे हैं, बोल रहे हैं, पुरानी बातों को याद कर रहे हैं: "उन्नीस सौ सैंतीस!" जनता के दुख की विशाल वोलगा।

लेकिन आप क्रीमिया के एक तातार को, किसी कालमीक को, किसी चेचेन को "उन्नीस सौ सैंतीस" कहें, तो वह अपने कन्धे भर हिला देगा। और लेनिनग्राद के लिए १९३७ का क्या महत्व है, जबकि इससे पहले १९३५ की लहर आ चुकी थी? और दूसरी बार सजा काटने वाले लोगों के लिए, अथवा बाल्टिक देशों के लिए क्या १९४८ और १९४९ के वर्ष अधिक भयानक, अधिक कठोर नहीं थे! और यदि शैली और भूगोल की कड़ाई से पाबन्दी करने वाले लोग, रूस की कुछ नदियों की उपेक्षा कर जाने का अभियोग लगायें और अभी तक कुछ लहरों का नामकरण न करने का दोष मुझे दें, तो मैं यही प्रार्थना करूँगा कि कृपया मुझे पर्याप्त कागज़ दीजिए! इतनी अधिक लहरें आयी थीं कि रूस की समस्त नदियों के नाम का उपयोग किया जा सकता है!

यह बात सब लोग जानते हैं कि इस्तेमाल न होने की स्थिति में कोई भी अंग बेकार हो जाता है। इस प्रकार यदि हम यह जानते हैं कि सोवियत सुरक्षा संगठन अथवा सुरक्षा के ये अंग (और वे स्वयं को इसी बुराई से भरे शब्द से संबोधित करना पसन्द करते हैं) जिन्हें अन्य समस्त जीवित वस्तुओं से ऊपर समझा जाता है और, इनकी प्रशंसा की जाती है, यदि नष्ट नहीं हुए, यदि इनका बाल तक बांका नहीं हुआ, बल्कि ये निरन्तर पुष्ट होते गए, शक्तिशाली होते गए तो यह निष्कर्ष निकालना बड़ा आसान है कि इन्हें निरन्तर व्यायाम का अवसर मिलता रहा।

गन्दे नालों के पाइपों के भीतर से प्रवाह निरन्तर जारी रहा। कभी-कभी प्रस्तावित दबाव से भी ऊंचा और कभी नीचा दबाव रहा। लेकिन जेल के गन्दे नाले कभी भी खाली नहीं रहे। जिस खून, पसीने और पेशाब के बीच हमें मारपीट कर और नाना प्रकार की यातनाएं दे-दे कर लुगदी बना डाला गया, वह इन गन्दे नालों में निरन्तर प्राणवान तरीके से प्रवाहित होता रहा। गन्दे नालों की इस प्रणाली का इतिहास कभी समाप्त न होने वाले ज्वार-भाटा का इतिहास है, बाढ़ के बाद भाटा और भाटे के बाद फिर ज्वार, फिर बाढ़; निरन्तर जारी लहरों का क्रम, कुछ बड़ी, कुछ छोटी; समस्त दिशाओं से बहकर आने वाले चश्मे और छोटी-छोटी नदियां; बूंद-बूंद करके अपने पानी को गन्दे नालों में पहुंचाने वाली धाराएं; और केवल व्यक्तिगत रूप से संचित छोटी-छोटी बूंदे सब इन नालों में प्रवाहित हुई हैं।

आगे इसी क्रम से जो विवरण दिया गया है, उसमें लाखों गिरफ्तार व्यक्तियों को

अपने भीतर समेट लेने वाली लहरों पर भी उतना ही ध्यान दिया गया है, जितना कुछ मामूली से मुट्ठी भर लोगों की मामूली सी धारा को। पर यह विवरण एकदम अपूर्ण है, छोटा है, कृपणता से भरा है और अतीत को बेधने की मेरी अपनी क्षमता के कारण सीमित है। आवश्यकता इस बात की है कि इस उत्पीड़न के दौर के जो लोग जीवित हैं और जिन्हें सम्बन्धित सामग्री की जानकारी है, वे इस सम्बन्ध में आगे काम करें।



यह सूची, यह विवरण तैयार करने की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि समारम्भ कहां से किया जाए। यह कठिनाई आंशिक रूप से इस कारण से है कि आप जितना पीछे हटते जाते हैं, जितना अधिक अतीत के दशकों में पीछे पहुंचते जाते हैं, प्रत्यक्षदर्शियों की संख्या उतनी ही कम होती जाती है और इस प्रकार सही और उपयोगी जानकारी का प्रकाश समाप्त होता हुआ दिखायी पड़ता है और अन्धकार फैलता हुआ। और लिखित सामग्री या तो उपलब्ध ही नहीं है अथवा इसे ताले कुंजी में रखा गया है। इसके अलावा यह भी पूरी तरह से उचित नहीं है कि गृह युद्ध के विशेष रूप से पाशविकतापूर्ण वर्षों और शांति काल के आरम्भिक वर्षों को एक ही कोटि में रखा जाए, जब दया की अपेक्षा की जा सकती है।

लेकिन किसी प्रकार का गृह युद्ध होने से पहले, यह देखा जा सकता है कि रूस, अपनी आबादी के स्वरूप के कारण, किसी भी प्रकार के समाजवाद के लिए उपयुक्त नहीं था। यह पूरी तरह से दूषित था, तानाशाही के पहले प्रहार कैडेटों अर्थात् कांस्टीट्यूशनल डेमोक्रेटिक पार्टी संवैधानिक लोकतंत्री दल—के सदस्यों पर हुआ (ज़ार के शासनकाल में इस पार्टी के सदस्यों को सर्वाधिक खतरनाक क्रान्तिकारी समझा जाता था और सर्वहारा वर्ग की सरकार के अधीन इन लोगों को प्रतिक्रियावादियों का सबसे अधिक खतरनाक गिरोह बताया जाने लगा।) नवम्बर १९१७ के अन्त में, संविधान सभा की पहली निर्धारित बैठक में, जो बैठक अन्त तक नहीं हो सकी, कैडेट पार्टी को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया और इसके सदस्यों की गिरफ्तारी शुरू हो गयी। लगभग इसी समय "संविधान सभा के लिए संधि" नामक संगठन से जो लोग संबंधित थे और "सैनिकों के विश्वविद्यालयों" में जिन विद्यार्थियों ने अपने नाम लिखा रखे थे, उन्हें जेलों में ठूंस दिया गया।

क्रान्ति की दृष्टि और भावना से परिचित होने के कारण यह अनुमान लगाना आसान है कि इन महीनों में पेत्रोग्राद में क्रैस्ती और मास्को से बुत्यर्की जैसी केन्द्रीय जेलें और ऐसी ही अनेक प्रान्तीय जेलें अमीर लोगों, प्रमुख सार्वजनिक व्यक्तियों, जनरलों और अफसरों, और उन मन्त्रालयों तथा सरकारी संगठनों के अधिकारियों से भरी पड़ी थीं, जिन्होंने नए शासकों का हुक्म मानने से इनकार कर दिया था। चेका की पहली कार-वाइयों में अखिल रूस कर्मचारी संघ की समिति के समस्त सदस्यों की गिरफ्तारी शामिल थी।

दिसम्बर १९१७ में एन० के० वी० डी० ने अपने जो पहले परिपत्र जारी किए, उनमें से एक परिपत्र में कहा गया था : "अधिकारियों द्वारा तोड़फोड़ की कारवाई के कारण.. विभिन्न स्थानों पर अधिकतम पहल करें, जिनमें सम्पत्ति को जब्त करना, लोगों

को बाध्य करना और गिरफ्तार करना भी शामिल है।"[1]

और यद्यपि १९१७ के अन्त में वी० आई० लेनिन ने "कठोर रूप से क्रान्तिकारी व्यवस्था स्थापित करने के उद्देश्य से, शराबियों, गुण्डों, क्रान्ति विरोधियों और अन्य व्यक्तियों की ओर से अराजकता फैलाने के प्रयासों को निर्दयतापूर्वक कुचल डालने"[2] का आदेश दिया। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उन्होंने यह पूर्व कल्पना कर ली थी कि अक्तूबर क्रान्ति को शराबियों और गुण्डों से प्रमुख खतरा है और क्रान्ति विरोधी कहीं तीसरे स्थान पर ही आते हैं—इसके बावजूद उन्होंने इस समस्या को अधिक विस्तार से प्रस्तुत किया। "प्रतियोगिता का आयोजन किस प्रकार करें" (७ और १० जनवरी १९१८) शीर्षक अपने निबन्ध में वी० आई० लेनिन ने "रूस की भूमि को हर प्रकार के हानिप्रद कीड़ों-मकौड़ों से मुक्त कराने" के समान और संयुक्त उद्देश्य की घोषणा की।[3] और कीड़ों-मकोड़ों के अन्तर्गत उन्होंने केवल समस्त वर्ग शत्रुओं को ही शामिल नहीं किया बल्कि "अपने काम में हीला-हवाला करने वाले मज़दूरों" को भी शामिल किया—उदाहरण के लिए पेत्रोग्राड की पार्टी की शाखा के छापेखाने के कम्पोजीटर। (समय यह भी कराता है। आज हमारे लिए यह समझ पाना बड़ा कठिन है कि किस प्रकार वे श्रमिक जो अभी हाल में ही तानाशाह बने थे, तुरन्त उस काम में हीला-हवाला करने लगे जो वे स्वयं अपने लिए कर रहे थे।) और इतना ही नहीं : "बड़े नगर के किस मौहल्ले में, किस कारखाने में, किस गांव में......, ऐसे तोड़-फोड़ करने वाले लोग नहीं हैं, जो स्वयं को बुद्धिवादी कहते हैं?"[4] यह सच है कि लेनिन ने कीड़े-मकोड़ों के सफाए के लिए, जिन स्वरूपों की कल्पना इस निबन्ध में की थी, वे अत्यन्त विविध थे : कुछ स्थानों पर इन्हें गिरफ्तार करना था, तो कुछ अन्य स्थानों पर इन्हें पाखानों की सफाई में लगाना था, तो कुछ अन्य में, "जेलों की सज़ा की कोठरियों में अपना निर्धारित समय गुजारने के बाद, इन लोगों को पीले टिकट दे देने थे;" कुछ अन्य मामलों में परजीवियों को यानी दूसरों की मेहनत पर जीने वाले लोगों को गोली से उड़ाया जाना था अन्यत्र आपको जेल में डाला जा सकता था "अथवा कठोरतम किस्म के बलात् श्रम की सजा"[5] दी जा सकती थी। यद्यपि उन्होंने उन बुनियादी दिशाओं की परिकल्पना की ओर सुझाव दिया, जिनकी व्यवस्था की जा सकती थी। पर व्लादिमिर इलिच ने प्रस्ताव किया कि "कम्यूनों और समुदायों को" इन कीड़े-मकोड़ों के सफाये के सर्वोत्तम तरीके की खोज में एक दूसरे से होड़ करनी चाहिए।

आज हमारे लिये इस बात का ठीक-ठीक अनुसंधान करना संभव नहीं है कि कीड़ों-मकोड़ों की व्यापक परिभाषा के अन्तर्गत कौन-कौन लोग आते थे; रूस की आबादी अत्यन्त विविध थी और इसके भीतर छोटे-छोटे विशेष समूह थे, जिन्हें पूरी तरह फालतू समझा गया और आज हम इन्हें भुला चुके हैं। प्रान्तों में स्थानीय जेमस्तवो नामक स्थानीय संगठनों के अन्तर्गत रहने वाले लोग भी उसी प्रकार कीड़े-मकोड़े थे, जिस प्रकार स्वयं अपने घरों के मालिक। व्यायामशालाओं के शिक्षकों में भी कीड़े-मकोड़ों की संख्या कम नहीं थी। चर्च की मोहल्ला परिषदों के सदस्य तो प्राय: पूरी तरह से कीड़े-मकोड़ों के अन्तर्गत आते थे और चर्च में जो लोग ईश्वर का गुणानुवाद करते हुए गीत गाते थे वे कीड़े-मकोड़ों के अलावा क्या हो सकते थे? सब पादरी कीड़े-मकोड़े थे—और ईसाई संन्यासी और संन्यासिनियां तो कहीं अधिक इस कोटि में आती थीं और तोल्सतोए के वे सब अनुयायी भी जिन्होंने सोवियत सरकार की सेवा का वचन देते समय, उदाहरण के लिए रेलों पर काम

करते समय, इस शपथपत्र पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया कि वे हाथ में बन्दूक लेकर सोवियत सरकार की रक्षा करेंगे और इस प्रकार यह प्रकट कर दिया वे भी कीड़े-मकोड़े हैं। (आगे चलकर हम इनमें से कुछ लोगों पर मुकदमा चलता हुआ देखेंगे।) रेलगाड़ियां विशेष रूप से महत्वपूर्ण थीं, क्योंकि रेल कर्मचारियों की वर्दियों के नीचे वस्तुतः बहुत से कीड़े-मकोड़े छिपे हुए थे और इन्हें बीन-बीन कर निकालना था और कुछ को कुचल डालने की जरूरत थी। और तार विभाग के कर्मचारी भी इसी कारण से, अधिकांशतया बड़े बुरे किस्म के कीड़े-मकोड़े थे, जिनके मन में सोवियतों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं थी। आप विकझेल अर्थात् रेल कर्मचारी संघ की अखिल रूस कार्यकारिणी के बारे में भी एक भी अच्छा शब्द नहीं कह सकते थे और इसी प्रकार अन्य मजदूर संघों के बारे में भी, जिनमें अक्सर श्रम जीवी वर्ग के प्रति शत्रु भाव रखने वाले कीड़े-मकोड़ों की भरमार रहती थी।

हमने ऊपर जिन समूहों का उल्लेख किया है, उनके सदस्यों की संख्या बहुत बड़ी है— इसके सफाये के लिए अनेक वर्षों का समय खपाया जा सकता है।

इसके अलावा अभिशप्त बुद्धिवादियों की कितनी विभिन्न किस्में थी—उद्विग्न विद्यार्थी और सनकियों, सत्यान्वेषियों और धार्मिक आस्था रखने वाले पवित्र मूर्खों की एक किस्म थी, जिन्हें स्वयं पीटर महान् तक ने रूस में पूरी तरह समाप्त कर डालने का निरर्थक प्रयास किया और जो सदा एक सुव्यवस्थित तथा कठोर शासन के लिए बाधा होते हैं।

इस स्वास्थ्यप्रद शुद्धि अभियान को उस समय तक चलाना सम्भव नहीं था, विशेषकर युद्ध की परिस्थितियों में, जब तक वे लोग पुरानी पड़ चुकी प्रक्रियाओं और सामान्य न्यायिक कार्यविधियां अपनाते रहते। और इस प्रकार पूरी तरह से एक नया तरीका अपनाया गया : न्यायिक व्यवस्था की परिधि के बाहर प्रतिशोध, और क्रान्ति की प्रहरी चेका ने बड़े आत्म-बलिदानी ढंग से इस निरर्थक कार्य को अपने हाथ में लिया। मानव इतिहास में चेका ही एक मात्र ऐसा दण्ड डेने वाला संगठन है, जिसमें एक ही व्यक्ति के हाथ में जांच करने, गिरफ्तारी करने, कैदी से पूछताछ करने, मुकदमा चलाने, मुकदमे की सुनवाई करने और निर्णय को लागू करने का अधिकार केन्द्रित था।

सन् १९१८ में क्रान्ति की सांस्कृतिक विजय की गति को और भी तेज करने के लिए उन लोगों ने गिरजाघरों को तहस-नहस करने और सन्तों के अवशेषों को गिरजाघरों से निकाल बाहर फैंकने तथा गिरजाघरों की प्लेट को उठा ले जाने का अभियान भी शुरू किया। इस प्रकार लूटे जा रहे गिरजाघरों और ईसाई साधुओं के मठों की रक्षा करने के लिए लोकप्रिय दंगे शुरू हो गए। इधर-उधर खतरे की घंटियां बजने लगीं और आर्थोडाक्स चर्च के सच्चे अनुयायी बाहर सड़कों पर निकल आते और कुछ लोग तो अपने हाथों में मोटे-मोटे डण्डे लिए रहते थे। स्वाभाविक था कि इस स्थिति में गिरजाघरों की रक्षा करने वाले इन व्यक्तियों में से कुछ को तत्काल वहीं मार डाला जाए और अन्य को गिरफ्तार कर लिया जाए।

आज १९१८ और १९२० की अवधि पर विचार करते समय हम कठिनाइयों में फंस जाते हैं : क्या हमें जेल की लहरों में उन लोगों को भी वर्गीकृत करना चाहिए, जिन्हें जेल की कोठरियों में पहुँचने से पहले ही मार डाला गया? और हमें उन लोगों को किस श्रेणी के अन्तर्गत रखना चाहिए, जिन्हें गरीब लोगों की समितियां ग्राम सोवियत की

इमारत के पीछे अथवा किसी मकान के पिछवाड़े ले जातीं और उन्हें वहीं तत्काल समाप्त कर दिया जाता। क्या उन षड्यंत्रों में हिस्सा लेने वाले लोग, जिन षड्यंत्रों का प्रत्येक प्रान्त में पता चल रहा था (रियाज़न में दो; कोस्त्रोमा, विशनी वोलोचेक और वेलिभ में एक-एक; कीव में कई; मास्को में कई; सरातोव, चेरनिगोव, अस्त्राखान, सेलीजर, स्मोलेंस्क, बोगरूइस्क, तामबोव घुड़सवार पलटन, चेम्बर, वेलाकिए लुकी, एम्तिसलावल आदि में एक-एक) क्या उसमें शामिल लोगों को द्वीपसमूह की भूमि पर पांव रखने में भी सफलता मिली अथवा नहीं—और क्या वे इस कारण से हमारे अनुसंधान के विषय से सम्बन्ध नहीं रखते? अब प्रसिद्ध विद्रोहों (यारोस्लावल, मूरोम, राइबिन्स्क, अर्जामास) के दमन की यदि हम उपेक्षा भी कर दें, तो भी हम अनेक घटनाओं के बारे में केवल उनके नामों तक ही जानकारी रखते हैं—उदाहरण के लिए जून १९१८ में कोलपीनों में मृत्यु-दण्ड देने की कारवाई। इस कारवाई में जिन लोगों को मौत के घाट उतारा गया, वे क्या थे? वे कौन थे? और उन्हें किस कोटि के अन्तर्गत रखा जाना चाहिए?

इसके अलावा इस सम्बन्ध में भी कम कठिनाई नहीं है कि हमें उन हजारों बंधकों को जेलों में पहुंचने वाली लहरों के अन्तर्गत रखना चाहिए अथवा गृहयुद्ध के लेखे जोखे के, जिनके ऊपर व्यक्तिगत रूप से कोई अभियोग नहीं था। ये ऐसे शान्तिप्रिय नागरिक थे, जिनके नामों तक का उल्लेख नहीं किया गया था। बस, इन्हें पकड़ कर इसलिए गोली से उड़ा दिया जाता था, ताकि एक सैनिक शत्रु को आतंकित किया जा सके अथवा उससे प्रतिशोध लिया जा सके। यह कार्रवाई विद्रोह करने वाली जनता के खिलाफ भी की गई। ३० अगस्त १९१८ के बाद एन० के० वी० डी० ने स्थानीय संगठनों को यह आदेश दिया कि "वे तुरन्त सब दक्षिणपंथी समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के सदस्यों को गिरफ्तार करें और बुर्जुआ वर्ग और सैनिक अफसरों के वर्ग से पर्याप्त बड़ी संख्या में बंधक हिरासत में ले लें।"[६] (यह कारवाई ज़ारशाही के जमाने जैसी थी। उदाहरण के लिए, अलेक्सान्द्र उल्यानोव की टोली द्वारा ज़ार की हत्या करने के प्रयास के बाद केवल इस टोली के सदस्यों को ही नहीं, बल्कि रूस भर के विद्यार्थियों और काफी बड़ी संख्या में स्थानीय संस्थाओं के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया था।) प्रतिरक्षा परिषद् के १५ फरवरी १९१९ के एक अध्यादेश के द्वारा—स्पष्ट है कि इस परिषद की अध्यक्षता लेनिन ने की—चेका और एन० के० वी० डी० को उन स्थानों से किसानों को बन्धक बनाने का हुक्म दिया गया, जिन इलाकों में रेल की पटरियों से बर्फ हटाने का काम "संतोषजनक तरीके से नहीं चल रहा था" और यह आदेश दिया गया कि "रेल पटरियों से बर्फ नहीं हटाया जाता तो इन बन्धकों को गोली से उड़ा दिया जाए।"[७] (१९२० के अन्त में जनवादी कमीसार परिषद् के अध्यादेश से समाजवादी लोकतंत्री पार्टी के सदस्यों को भी बंधक के रूप में गिरफ्तार करने की अनुमति दे दी गई।)

यदि हम स्वयं को साधारण गिरफ्तारियों तक भी सीमित रखें तो हम यह देख सकते हैं कि सन् १९१८ की बसन्त ऋतु तक समाजवादी देशद्रोहियों की एक प्रबल धारा प्रवाहित होने लगी थी और यह धारा इसी प्रबलता से अनेक वर्षों तक प्रवाहित रही। ये सब पार्टियां—समाजवादी क्रान्तिकारी मेनशेविक, अराजकतावादी, लोकप्रिय समाजवादी—अनेक दशकों से क्रान्तिकारी होने का नाटक भर रचती आ रही थीं; इन लोगों ने केवल एक मुखौटे के रूप ही समाजवाद को ओढ़ रखा था और इसी कारण से कठोर श्रम के

लिए भेजा गया, और उस समय भी इन लोगों का क्रान्तिकारी होने का नाटक जारी रहा। केवल क्रान्ति के उग्र दौर में ही इन समाजवादी देशद्रोहियों के बुर्जुआ सार और स्वरूप को बेनकाब किया जा सका। इन लोगों की गिरफ्तारी शुरू करने से अधिक स्वाभाविक बात और क्या हो सकती थी। कैडेट पार्टी को कानूनी घोषित करने, संविधान सभा को भंग करने, प्रियोब्राझेंस्की और अन्य स्थानों पर तैनात रेजीमेंटों से हथियार रखवा लेने के तुरन्त बाद उन लोगों ने बड़े मामूली तरीके से, आरम्भ में चुपचाप, समाजवादी क्रान्तिकारी और मेनशेविक पार्टियों के सदस्यों को गिरफ्तार करना शुरू किया। १४ जून १९१८ के बाद, जिस दिन इन पार्टियों के सदस्यों को समस्त सोवियतों से निकाल दिया गया था, गिरफ्तारियों का क्रम अधिक तेज़ और अधिक समन्वित तरीके से शुरू हुआ। ६ जुलाई के बाद से इन लोगों ने इसी तरीके से वामपंथी समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के सदस्यों के साथ व्यवहार किया। यद्यपि इस पार्टी के सदस्य अधिक चालाक थे और अधिक समय तक यह नाटक करते रहने में सफल हुए थे कि वे सर्वहारा वर्ग की एकमात्र सच्ची पार्टी के साथी और सहयोगी हैं। बस, इसके बाद कहीं भी मजदूरों का विरोध प्रदर्शन होता, कोई गड़बड़ होती, किसी भी कारखाने या छोटे कस्बे में गड़बड़ या हड़ताल होती (और १९१८ की गर्मियों में ऐसी अनेक घटनायें हुई और मार्च १९२१ में इन घटनाओं ने पेत्रोग्राद, मास्को और फिर क्रोंस्टाट को हिला दिया और नई धार्मिक नीति के सभारम्भ को बाध्य किया) और— रियासतों, आश्वासनों और मजदूरों की न्यायोचित मांगों को पूरा करने के लिए शासकों द्वारा की जाने वाली कारवाइयों के साथ चेका चुपचाप मेनशेविकों और समाजवादी क्रांतिकारियों को रात के समय गिरफ्तार करने लगती और इन्हें ही इन सब घटनाओं के लिये पूरी तरह से दोषी ठहराया जाता। सन् १९१८ की गर्मियों में और १९१९ के अप्रैल और अक्टूबर महीनों में उन्होंने अराजकतावादियों को अन्धाधुन्ध जेलों में भरना शुरू किया। सन् १९१९ में उन्होंने समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी की केन्द्रीय समिति के उन सब सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया, जो उनके हाथ लगे और १९२२ में उन पर मुकदमे चलाये जाने के समय तक उन्हें बुत्यर्की में कैद रखा गया। उसी वर्ष एक प्रमुख चेकिस्ट लातसिस ने मेनशेविकों के बारे में लिखा: "ऐसे लोग हमारे मार्ग में केवल रुकावट भर नहीं हैं। यही कारण है कि हम उन्हें इस प्रकार अपने रास्ते से हटा देते हैं, ताकि वे फिर कभी हमारे पाँव तले न आ सकें...हम उन्हें एक अलग-थलग, एकांत और सुखद स्थान बुत्यर्की में पहुंचा देते हैं और हम उस समय तक उन लोगों को वहाँ रखेंगे, जब तक पूंजी और श्रम का संघर्ष अन्तिम रूप से समाप्त नहीं हो जाता।"[८] सन् १९१९ में भी गैर-पार्टी कार्यकर्ता काँग्रेस के प्रतिनिधियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया और इसके परिणामस्वरूप यह अधिवेशन कभी नहीं हो सका।[९]

सन् १९१९ में विदेशों से वापस लौटने वाले रूसियों के ऊपर संदेह अपना प्रभाव दिखाने लगा था। (क्यों? इन लोगों को किस कथित अभिप्राय के लिए भेजा गया था?) इस प्रकार फ्राँस स्थित रूस की अभियान फौज के अफसरों को स्वदेश वापस लौटते ही गिरफ्तार कर लिया गया था।

सन् १९१९ में ही 'राष्ट्रीय केन्द्र' और 'सैनिक षड्यंत्र' जैसे वास्तविक अथवा नकली षड्यंत्रों के सम्बन्ध में भी बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ हुई। मास्को, पेत्रोग्राद और अन्य नगरों में सूचियों के आधार पर लोगों को गोली से उड़ाया गया--दूसरे शब्दों में,

स्वतंत्र लोगों को बस गिरफ्तार कर लिया गया और तुरन्त गोली से उड़ा दिया गया और बुद्धिवादी वर्ग के उन तत्वों को जिन्हें कैडेट पार्टी के समीप समझा जाता था अन्धाधुन्ध गिरफ्तार किया गया और जेलों में ठूंस दिया गया। ("कैडेट पार्टी के समीप" का क्या अर्थ है ? इन्हें राजतंत्रवादी और समाजवादी नहीं कहा जा सकता : दूसरे शब्दों में समस्त वैज्ञानिक क्षेत्रों, समस्त विश्वविद्यालयी क्षेत्रों, सब कलात्मक क्षेत्रों, हाँ, समस्त साहित्यिक क्षेत्रों और वस्तुत: इन्जीनियरी क्षेत्रों से सम्बन्धित लोगों को भी इस कोटि के अन्तर्गत माना गया। अतिवादी लेखकों को छोड़ कर, समाजवाद के धार्मिक सिद्धान्त के प्रतिपादकों और सिद्धान्तकारों को छोड़कर बुद्धिवादी वर्ग के शेष सब लोग, ८० प्रतिशत लोग "कैडेट पार्टी के समीप" मान लिए गए।) उदाहरण के लिए इसी कोटि में लेनिन ने लेखक कोरोलेंको को रखा और उसे "एक दयनीय क्षुद्र बुर्जुआ, एक ऐसा बुर्जुआ, जो बुर्जुआ पूर्वाग्रहों से ग्रस्त है"[१०] बताया। उन्होंने इसे "अनुचित" नहीं समझा कि ऐसी "प्रतिभाएं" कुछ सप्ताह का समय जेल में बितायें।[११] गोर्की के प्रतिवादों से हमें उन विभिन्न समूहों की जानकारी मिलती है, जिन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। १५ अगस्त १९१९ को लेनिन ने उन्हें उत्तर दिया : "हमें इस बात का ज्ञान है कि कुछ गलतियाँ हुई हैं।" लेकिन : "जरा सोचिए, कैसा दुर्भाग्य है।" कैसा अन्याय है !"[१२] और उन्होंने गोर्की को सलाह दी "वे तुच्छ बुद्धिवादियों के ऊपर तरस खाने में अपनी शक्ति का अपव्यय न करें।"[१३]

जनवरी १९१९ से खाने की चीजों को वसूल करने का काम शुरू किया गया और खाने की चीजें वसूल करने वाली टुकड़ियाँ बनाई गईं। गाँवों से सर्वत्र इन टुकड़ियों को प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, कभी-कभी हठ पर आधारित और निष्क्रिय, कभी-कभी हिंसापूर्ण। इस विरोध को कुचलने के परिणामस्वरूप अगले दो वर्षों में गिरफ्तारियों की जबर्दस्त बाढ़ आ गई, जिसमें वे लोग शामिल नहीं हैं जिन्हें तत्काल वहीं गोली से उड़ा दिया गया था।

मैं जानबूझ कर चेका, विशेष शाखाओं, और क्रांतिकारी न्यायअधिकरणों के दमनचक्र के उस बड़े हिस्से की उपेक्षा कर रहा हूँ, जिसका समारम्भ अग्रिम पंक्ति के निरन्तर आगे बढ़ते जाने और नगरों तथा प्रान्तों पर कब्जा होते जाने के बाद हुआ था। और एन० के० वी० डी० के ३० अगस्त, १९१८ के निर्देश में यह आदेश दिया गया कि यह व्यवस्था करने के प्रयास किए जाएं कि "जो लोग श्वेत रक्षक दल में किसी भी रूप में शामिल थे, उन्हें बिना किसी शर्त के गोली से उड़ा दिया जाए।" लेकिन कभी-कभी यह स्पष्ट नहीं हुआ कि रेखा कहां खींची जाए। उदाहरण के लिए १९२० की गर्मियों में सर्वत्र गृहयुद्ध पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ था। लेकिन यह दोन नदी के क्षेत्र में समाप्त हो चुका था; इसके बावजूद वहां से अफसरों को, सब अफसरों को हटाया गया, रोस्तोव से भी और नोवोचेरकास्क से भी हटाकर आर्चएंजेल्ज भेज दिया गया और वहाँ से उन्हें आगे सोलोवेतस्की द्वीपों में पहुँचा दिया गया और कहा जाता है कि इन कैदियों को ले जाने वाले अनेक जहाजों को श्वेत सागर और कैस्पियन सागर में डुबो दिया गया। अब हम इन लोगों को गृह-युद्ध के दौरान मार डाले गये लोगों की श्रेणी में रखें अथवा शान्तिकालीन पुनर्निर्माण के समारम्भ के दौर का शिकार बनने वाले लोगों की श्रेणी में ? इसी वर्ष नोवोचेरकास्क में उन लोगों ने एक अफसर की गर्भवती पत्नी को इसलिए गोली से उड़ा दिया क्योंकि उसने अपने पति को छिपा लिया था। इस स्त्री को किस श्रेणी के

अन्तर्गत रखा जाना चाहिए ?

मई, १९२० में केन्द्रीय समिति का "अग्रिम पंक्तियों के पीछे तोड़फोड़ की गतिविधि सम्बन्धी" विख्यात आदेश जारी किया गया। हमें अनुभव से इस बात का ज्ञान है कि ऐसा प्रत्येक आदेश व्यापक पैमाने पर गिरफ्तारियों की एक नई लहर को जन्म देता है; यह ऐसी एक लहर का बाह्य चिन्ह होता है।

इन समस्त लहरों के आयोजन में एक विशेष कठिनाई—और एक विशेष लाभ भी—यह रही कि १९२२ से पहले किसी भी प्रकार की दंडसंहिता अथवा फौजदारी कानून की किसी भी प्रकार की प्रणाली का पूरी तरह अभाव था। जो लोग सफाये का अभियान चला रहे थे और गन्दे नालों की प्रणाली की व्यवस्था कर रहे थे, केवल उनकी क्रान्तिकारी न्याय-भावना (जो कभी भी गलत नहीं होती थी) उन्हें इस कार्य में प्रेरित करती थी कि किन लोगों को गिरफ्तार किया जाए और उन लोगों के साथ क्या व्यवहार किया जाए।

इस सर्वेक्षण में हम आदतन अपराध करने वाले लोगों (उगोलोवनिकी) और गैर-राजनीतिक अपराधियों (बाइतोविकी) की गिरफ्तारी की एक के बाद एक आने वाली लहरों की जांच नहीं करेंगे। इस कारण से हम केवल यही पुर्नस्मरण उल्लेख करेंगे कि उस युग में जब सरकार, समस्त संस्थाओं और स्वयं कानूनों का भी पुर्नगठन किया जा रहा था, उस समय देशव्यापी गरीबी और आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण चोरियों, डकैतियों, लोगों पर हमलों, रिश्वतों और मुनाफाखोरी (सट्टेबाजी) में वृद्धि होना स्वाभाविक था। यद्यपि यह अपराध गणराज्य के अस्तित्व को कम खतरा उत्पन्न करते थे, पर इनके दमन की भी आवश्यकता थी और इन कैदियों की लहरों ने भी क्रान्ति विरोधियों की लहरों को और अधिक बड़ा बनाने में सहायता दी। और इसके अलावा शुद्ध राजनीतिक किस्म की सट्टेबाजी भी चल रही थी, जिसका उल्लेख जनवादी कमीसार परिषद् के उस आदेश में किया गया था, जिस पर स्वयं लेनिन ने २२ जुलाई, १९१८ को हस्ताक्षर किए। "जो लोग ऐसी खाने की चीजों को बेचने, अथवा खरीदने, अथवा बिक्री के लिए अपने पास रखने के दोषी पाये जाएँगे, जिन्हें राज्य के एकाधिकार के अन्तर्गत रख लिया गया है (एक किसान व्यापारिक दृष्टि से बिक्री के लिए अपने पास अनाज रखता है। आखिरकार उसका व्यापार ही क्या है ?)...उन्हें कम से कम १० वर्ष की कैद की सजा दी जाएगी और इसके साथ ही उन्हें अत्यधिक कठोर किस्म का श्रम भी करना होगा और उनकी समस्त सम्पत्ति को जब्त कर लिया जाएगा।"

इन गर्मियों के बाद से गांवों को, जिनके ऊपर पहले ही अधिकतम भार पड़ चुका था निरन्तर एक के बाद एक वर्ष अपनी फसल बिना किसी मुआवजे के राज्य को देनी पड़ी। इसके परिणामस्वरूप किसान विद्रोह हुए और विद्रोहों के परिणामस्वरूप इन विद्रोहों का दमन और नई गिरफ्तारियों का क्रम शुरू हुआ।[१४] सन् १९२० में हमें "साइबेरिया किसान संघ" के सदस्यों के मुकदमों का पता चला (अथवा हम यह जानकारी प्राप्त करने में असफल रहे) और १९२० के अन्त में तामबोव के किसानों के विद्रोह का दमन शुरू हुआ। इन लोगों के ऊपर मुकदमा नहीं चलाया गया।

लेकिन तामबोव के गांवों के लोगों को उनके घरों से उजाड़कर दूसरे सुदूर स्थानों पर भेजने का काम अधिकांशतया जून १९२१ में हुआ। पूरे प्रान्त भर में उन किसानों के

परिवारों के लिए यातना शिविर बनाए गए, जिन्होंने विद्रोह में हिस्सा लिया था। खुले खेतों को कांटेदार तारों की बाड़ लगाकर घेर लिया गया और प्रत्येक ऐसे किसान के परिवार को जिस पर विद्रोही होने का संदेह था, ऐसे कांटेदार तारों के बाड़ों के भीतर तीन सप्ताह तक कैद रखा गया। यदि इस अवधि में इस परिवार का पुरुष अपने परिवार के लोगों की स्वतंत्रता की कीमत अपने सिर से चुकाने के लिए वापस नहीं लौटा, तो परिवार को निष्कासन में भेज दिया गया।[१५]

इससे भी पहले मार्च, १९२१ में, क्रोंस्टाट के विद्रोही नौसैनिकों को, उन नौसैनिकों को छोड़कर जिन्हें पहले ही गोली से उड़ाया जा चुका था, पीटर और पाल के किले के त्रूवेस्तकोई गुम्बद में कुछ समय कैद रखकर गुलाग आर्कीपलेगो के द्वीपों में भेज दिया गया।

उसी वर्ष, सन् १९२१ में, चेका के ८ जनवरी के आदेश संख्या १० के अन्तर्गत "बुर्जुआ वर्ग के दमन को तेज़ करने" की कारवाई शुरू हुई। अब जबकि गृहयुद्ध समाप्त हो चुका था, दमन को कम नहीं बल्कि तीव्र करने की आवश्यकता थी। वोलोशिन ने अपनी अनेक कविताओं में हमारे सामने यह तस्वीर पेश की है कि यह कार्य क्रीमिया में कैसे हुआ।

१९२१ की गर्मियों में अकाल राहत आयोग के सदस्यों को जिनमें कुस्कोवा, प्रोकोपोविच, किश्किन और अन्य लोग शामिल थे, गिरफ्तार कर लिया गया। इन लोगों ने रूस के कल्पनातीत अकाल का मुकाबला करने का प्रयास किया था। वास्तविक मामला यह था कि इन लोगों को भूख से मर रहे रूसियों को भोजन देने का काम नहीं सौंपा जा सकता था, इस काम के लिए इन्हें योग्य नहीं माना गया था और इस कारण से इन्हें भूखों मर रहे लोगों को भोजन देने की अनुमति नहीं दी जा सकती थी। इस आयोग के अध्यक्ष, मरणोन्मुख कोरोलेंको ने, जिन्हें क्षमादान दे दिया गया था, इस आयोग को इस प्रकार समाप्त कर डालने की कारवाई को "गन्दी राजनीतिक चाल, सरकार की एक गन्दी राजनीतिक चाल का सबसे बुरा उदाहरण बताया।"[१६]

इसी वर्ष विद्यार्थियों को गिरफ्तार करने (उदाहरण के लिए तिमिरयायेव अकादमी ने एवजेनिया दोयारेंको की टोली की गिरफ्तारी) का काम शुरू हुआ और इन विद्यार्थियों को "प्रणाली की आलोचना करने के लिए गिरफ्तार किया गया (यह आलोचना सार्वजनिक रूप से नहीं बल्कि आपसी वार्तालाप में भी करना पर्याप्त था)। स्पष्ट है कि ऐसे मामले बहुत अधिक नहीं थे, क्योंकि उक्त टोली के सदस्यों से स्वयं मेनझिन्स्की और यगोदा ने पूछताछ की।

सन् १९२१ में ही सब गैर-बोलशेविक पार्टियों की गिरफ्तारी को व्यापक और सिलसिलेवार बनाया गया। वास्तव में विजयी पार्टी को छोड़कर रूस की अन्य समस्त राजनीतिक पार्टियों को दफना दिया गया। (ओह, किसी दूसरे की कब्र मत खोदो!) और इन पार्टियों को भंग करने की कारवाई किसी भी रूप में प्रभावहीन न हो पाये, अतः यह आवश्यक समझा गया कि इनके सदस्य भी अन्तर्धान हो जाएं और उनके भौतिक शरीर भी।

भूतपूर्व रूसी राज्य का एक भी ऐसा नागरिक, जो कभी भी बोलशेविक पार्टी के अलावा अन्य किसी भी पार्टी का सदस्य रहा था, इस नियति से बच नहीं सकता था।

वह निश्चित रूप से अपने विनाश की ओर आगे बढ़ रहा था; केवल माइस्की और वाइशिस्की जैसे व्यक्तियों को छोड़कर जो विध्वस्त मार्ग को पार करके स्वयं बोलशेविकों में जा मिले। यह हो सकता है कि पहले समूह में उसे गिरफ्तार न किया जाए। वह जीवित रह सकता है, और उसका जीवित रहना इस बात पर निर्भर करेगा कि उसे १९२२, १९३२ अथवा १९३७ तक में कितना खतरनाक समझा गया। लेकिन इन सब लोगों की सूचियां संभाल कर रखी गयी थीं। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति की बारी आयेगी और आयी; प्रत्येक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया अथवा बड़ी विनम्रतापूर्वक उसे पूछताछ के लिए बुलाया गया, जहां उससे केवल एक सवाल पूछा गया : क्या वह अमुक पार्टी का, अमुक समय से, अमुक समय तक सदस्य रहा ? (शत्रुतापूर्ण कारवाई के बारे में भी कुछ प्रश्न होते थे, लेकिन पहला प्रश्न ही सब कुछ निर्णय करता था, आज जैसा अनेक दशक बाद हमारे ऊपर स्पष्ट हो गया है।) इसके बाद उसकी नियति का स्वरूप बदल सकता था। कुछ लोगों को तुरन्त ज़ारशाही के जमाने की प्रसिद्ध केन्द्रीय जेलों में डाल दिया गया – सौभाग्यवश ज़ारशाही के जमाने की सब केन्द्रीय जेलों को बहुत अच्छी हालत में रखा गया है– और कुछ समाजवादी तो उन्हीं जेल की कोठरियों में और उन्हीं जेलरों के हाथों में जा पहुंचे, जिन कोठरियों में और जिन जेलरों के हाथों में वे ज़ारशाही जमाने में थे और इस प्रकार उनके जीवन का अन्त हुआ। कुछ अन्य को निष्कासन में जाने का अवसर दिया गया—ओह, बहुत लम्बे अरसे के लिए नहीं, बस केवल दो या तीन साल के लिए। और कुछ और लोग इससे भी सस्ते छूटे : इन लोगों को एक सूची दी गई (कुछ नगरों का निषेध था) और यह कहा गया कि वे स्वयं अपने नए निवास स्थान का चुनाव करें। और क्या वे भविष्य में कृपा करके उसी स्थान पर रहेंगे और जी॰ पी॰ यू॰ के अगले आदेश की प्रतीक्षा करेंगे।

यह समस्त कारवाई अनेक वर्षों तक चली, क्योंकि यह बात बुनियादी महत्व की थी। इसे चुपचाप और लोगों की नजरों से बचा कर किया जाय। यह आवश्यक था कि मास्को, पेत्रोग्राद, बन्दरगाहों, औद्योगिक केन्द्रों और आगे चल कर बाहरी प्रान्तों से बोलशेविकों को छोड़कर अन्य हर प्रकार के समाजवादियों को पूरी निष्ठापूर्वक हटा दिया जाय। यह सोलीटेयर का शानदार खेल था, जिसके नियमों की जानकारी समकालीनों को नहीं थी और जिसकी रूपरेखा को हम आज ही समझ सकते हैं। किसी व्यक्ति के दूरदर्शी मस्तिष्क ने, किसी व्यक्ति के कुशल हाथों ने इसकी योजना तैयार की और इसे क्रियान्वित करने में एक मिनट का भी समय व्यर्थ नहीं गंवाया। इन लोगों ने ताश के एक ऐसे पत्ते को उठाकर बड़े धीरे से एक दूसरी ढेरी पर रख दिया, जबकि यह ताश पहली ढेरी में तीन वर्ष का समय बिता चुका था। और इस प्रकार एक ऐसे व्यक्ति को निष्कासन में भेज दिया गया, जो किसी केन्द्रीय जेल में क़ैद था—और इसे निष्कासित भी एक सुदूर स्थान पर किया गया। एक ऐसे व्यक्ति को भी जिसने अदालत के निर्णय के बिना सजा भुगती हो, निष्कासित कर दिया गया। लेकिन उसे इसी कोटि के दूसरे दण्डित लोगों से अलग भेजा गया। और ऐसे भी मामले हैं, जिनमें कुछ लोगों को निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान पर निष्कासित किया जाता रहा। और फिर अन्त में वापस केन्द्रीय जेल में बुला लिया गया लेकिन इस बार उसकी वापसी एक भिन्न केन्द्रीय जेल में होती। सब्र, आश्चर्य में डाल देने वाला सब्र ही उस व्यक्ति की प्रमुख विशेषता थी, जो ताश का यह अद्भुत सोलीटेयर खेल खेल रहा था। और बिना किसी शोर के, बिना किसी चीख पुकार के अन्य समस्त पार्टियों के सदस्य धीरे-धीरे

नज़र से अलग हो गए, उनके उन समस्त स्थानों और लोगों से सम्बन्ध कट गए, जिनसे स्वयं उनका अपना और उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियों का सम्बन्ध रहा था, और इस प्रकार—अनदेखे और क्रूरतापूर्ण तरीके से—उन लोगों का पूरी तरह से सफाया किया गया, जिन लोगों ने विद्यार्थियों की सभाओं में अत्याचार के विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट किया था और ज़ारशाही के जमाने में बड़े गर्व से अपनी हथकड़ियों और बेड़ियों को खनखनाया था।[१७]

बड़े सोलीटेयर खेल में अधिकांश पुराने राजनीतिक कैदियों, कठोर श्रम सहित कारावास से जीवित बचे कैदियों को समाप्त कर दिया गया, क्योंकि ज़ारशाही के जमाने की अदालतों ने मुख्यतया समाजवादी क्रांतिकारी और अराजकतावादी पार्टियों के सदस्यों को ही कठोर दण्ड दिए थे—समाजवादी लोकतंत्री पार्टी के सदस्यों को नहीं। वस्तुत: उक्त राजनीतिक पार्टियों के सदस्य ही ज़ारशाही की कठोर श्रम वाली राजनीतिक जेलों में भरे पड़े थे।

पर कैदियों अथवा अन्य लोगों को समाप्त कर डालने की प्राथमिकताओं के बारे में न्याय था। सन् १९२० में इन सब लोगों को यह मौका दिया गया कि वे लिखित रूप में अपनी पार्टियों और अपनी-अपनी पार्टियों की विचारधाराओं का त्याग और निन्दा करें। कुछ लोगों ने इनकार कर दिया—और जैसाकि स्वाभाविक था, सबसे पहले इन्हें समाप्त किया गया। अन्य ने अपनी पार्टियों से सम्बन्ध तोड़ने के बारे में कागज पत्रों पर हस्ताक्षर किये और इस प्रकार अपने जीवनकाल को कुछ वर्ष और लम्बा बना लिया। लेकिन अनिवार्य रूप से उनकी बारी भी आयी और इनके सिर भी, अनिवार्य रूप से. धड़ से जुदा कर दिए गये।

सन् १९२२ की बसन्त ऋतु में क्रान्ति विरोध, तोड़-फोड़ और सट्टेबाजी के विरुद्ध संघर्ष के असाधारण आयोग अर्थात् चेका ने, जिसे हाल में जी० पी० यू० नाम दे दिया गया था, चर्च के मामलों में हस्तक्षेप करने का निश्चय किया। चेका का आह्वान "चर्च क्रान्ति" के लिए किया गया था—अर्थात् इसे यह काम सौंपा गया था कि यह चर्च के वर्तमान नेतृत्व को समाप्त करके इसके स्थान पर ऐसे लोगों की नियुक्ति करे, जिनका एक कान ईश्वर की ओर और दूसरा लूबयांका की ओर लगा हो। तथाकथित "जीवन्त चर्च" के लोग इस योजना के अनुसार ही काम करते हुए दिखायी पड़ते थे, लेकिन बाहरी सहायता के बिना वे चर्च की व्यवस्था पर अपना नियंत्रण कायम नहीं कर सकते थे। इस कारण से पैट्रियार्क (चर्च का सबसे बड़ा पादरी) इखोन को गिरफ्तार कर लिया गया और दो बड़े जबर्दस्त मुकदमे चलाये गये और इनके बाद मास्को में उन लोगों को गोली से उड़ा दिया गया, जिन लोगों ने पैट्रियार्क की अपील का प्रचार किया था और पेत्रोग्राद में मैट्रोपोलिटन (बड़ा पादरी) वेनियामिन को गोली से उड़ा दिया गया, जिन्होंने "जीवन्त चर्च" की टोली को पादरियों के समस्त अधिकार सौंप देने के मार्ग में बाधा डालने का प्रयास किया था। कुछ स्थानों पर प्रान्तीय केन्द्रों में और प्रशासनिक जिलों तक में मैट्रोपोलिटनों और बिशपों को गिरफ्तार कर लिया गया और जैसाकि सदा होता था, बड़ी मछली के पीछे, छोटी-छोटी मछलियों का सफाया किया गया, इस कोटि के अन्तर्गत आर्च प्रीस्ट, ईसाई सन्यासी और चर्च के अन्य पदाधिकारी आते थे। इन गिरफ्तारियों की सूचना समाचारपत्रों तक में प्रकाशित नहीं की जाती थी। उन लोगों ने ऐसे सब धर्मावलम्बियों

को भी गिरफ्तार कर लिया, जो "जीवन्त चर्च" के "नवीनीकरण" आन्दोलन में सहायता देने की शपथ नहीं लेते थे।

हर वर्ष जिन लोगों को गिरफ्तार किया जाता था, उनमें पादरियों और धर्म में आस्था रखने वाले लोगों की संख्या मौजूद रहती थी और पादरियों के सफेद लम्बे बाल जेल की प्रत्येक कोठरी और सोलोवेतस्की द्वीपों को जाने वाली कैदियों की हर रेल गाड़ी में चमकते हुए दिखायी पड़ते थे।

१९२० के बाद आरम्भिक वर्षों से, थियोसोफिस्टों, रहस्यवादियों, अध्यात्म में विश्वास रखने वालों की भी गिरफ्तारियां की गयीं। (काउंट पालेन की टोली मृत आत्माओं से सम्पर्क करने के अपने प्रयासों का विधिवत् विवरण रखती थी।) बर्दयाएव से सम्बन्धित धार्मिक संस्थाओं और दार्शनिकों को भी गिरफ्तार किया गया। तथाकथित "पूर्वी कैथोलिकों-व्लादिमिर सोलोवएव के अनुयायियों को गिरफ्तार कर लिया गया और रास्ते में ही समाप्त कर डाला और यही हाल ए० आई० अब्रीकोसोवा की टोली का हुआ। और, हां, सामान्य रोमन कैथोलिकों—पोलैंड के कैथोलिक पादरियों आदि को—गिरफ्तार किया गया और यह कारवाई सामान्य घटनाक्रम के अनुसार की गयी।

पर १९२० और १९३० के बाद के वर्षों में देश में धर्म को समूल नष्ट कर डालने का काम जी० पी० यू०, एन० के० वी० डी० के सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से था और इसे आर्थोडाक्स चर्च के अनुयाइयों को बड़े पैमाने पर गिरफ्तार करके ही पूरा किया जा सकता था। ईसाई साधुओं और सन्तनियों को, जिनके काले वस्त्र प्राचीन रूसी जीवन का एक विशिष्ट अंग थे, तुरन्त गिरफ्तार कर लिया गया और निष्कासन में भेज दिया गया। उन लोगों ने चर्च के कार्यों में सक्रिय सामान्य लोगों को भी गिरफ्तार किया और सजाएं दीं। ये वृत्त निरन्तर बड़े होते गये और सामान्य धार्मिक अनुयाइयों की गिरफ्तारी के कारण, वृद्ध लोगों, विशेषकर स्त्रियों की गिरफ्तारी के कारण ये वृत्त निरन्तर बड़े होते गए। स्त्रियां अपने धर्म में गहरायी से आस्था रखती थीं और वर्षों तक यह दृश्य देखने को मिलता रहा कि कैदियों को द्वीपों में आगे भेजने से पहले रखे जाने वाली संक्रमण जेलों और शिविरों में इन श्रद्धालु स्त्रियों को "सन्तनियां" कह कर पुकारा जाता था।

यह सच है कि इन लोगों को यह कह कर गिरफ्तार नहीं किया जाता था और यह कह कर सजा नहीं दी जाती थी कि वे धर्म में विश्वास करती हैं, बल्कि इसलिए कि वे खुले रूप से अपने धार्मिक विश्वासों की घोषणा करती थी और इन्हीं विश्वासों के अनुरूप अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण करती थीं। जैसाकि तान्या खोदकेविच ने लिखा :

तुम स्वतन्त्रतापूर्वक प्रार्थना कर सकते हो।

पर स्वर केवल इतना ऊंचा हो कि सिर्फ ईश्वर सुन सके। (ऐसी कविताएं लिखने के लिए तान्या खोदकेविच को दस वर्ष की कैद की सजा दी गयी।) एक ऐसे व्यक्ति को जो इस बात से आश्वस्त होता था कि उसे आध्यात्मिक सत्य का ज्ञान है, इस बात को स्वयं अपने बच्चों से छिपानी पड़ती थी। १९२० के बाद के वर्षों में बच्चों की धार्मिक शिक्षा को दण्ड संहिता की धारा ५८-१० के अन्तर्गत राजनीतिक अपराध घोषित कर दिया गया था—दूसरे शब्दों में, इसे क्रान्ति विरोधी मिथ्या कहा जाता था। यह सच है कि अभी भी व्यक्ति को अपने मुकदमे के समय अपने धर्म का त्याग और निन्दा करने की अनुमति थी : यह अक्सर नहीं होता था, लेकिन फिर भी यह होता था कि पिता अपने धर्म का त्याग

और निन्दा करे और इस प्रकार अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए अपने घर पर ही रह जाए और माता कठोर कारावास की यातना भोगने के लिए सोलोवेतस्की द्वीपों में पहुंचा दी जाए। (इन वर्षों में स्त्रियों ने प्रबल धार्मिक आस्था का परिचय दिया।) धार्मिक कार्यों के लिए दण्डित सब व्यक्तियों को दस्सा यानी दस वर्ष की सजा मिलती थी। उस समय सजा की यह सबसे लम्बी अवधि थी।

(उन वर्षों में विशेषकर १९२७ में, शुद्ध समाज के लिए इसकी स्थापना हो रही थी, बड़े नगरों में छेड़े गए सफाई अभियानों में, उन लोगों ने "सन्तनियों" के साथ वेश्याओं को भी सोलोवेतस्की द्वीपों में भेज दिया था। पापपूर्ण सांसारिक जीवन से प्रेम करने वाली इन स्त्रियों को दण्डसंहिता की एक कम कठोर धारा के अन्तर्गत तीन वर्ष की ही सजा दी जाती थी। कैदियों को ले जाने वाली रेलगाड़ियों और मोटरगाड़ियों, संक्रमण जेलों और सोलोवेतस्की द्वीपों में ऐसी परिस्थितियां नहीं थीं कि वेश्याओं को प्रशासकों और काफिलों के सन्तरियों के बीच अपने व्यापार के संचालन से रोका जा सके। और तीन वर्ष बाद वे माल से भरे संदूक लेकर, उन्हीं स्थानों पर वापस लौट आती थीं, जहां से उन्हें भेजा गया था। पर धार्मिक कैदियों को अपनी सजा की अवधि पूरी कर लेने के बाद भी, अपने बच्चों और अपने घरों, यहां तक कि अपने इलाकों तक में वापस लौटने की अनुमति नहीं थी।)

सन् १९२० के बाद के आरम्भिक वर्षों में भी ऐसी लहर दिखाई पड़ी थी, जो पूरी तरह से कुछ जातियों से सम्बन्धित थी—सबसे पहले जो लहर आई, वे रूसी पैमाने के अनुसार अपनी आबादी को देखते हुए बहुत बड़ी नहीं थी : अजरबेजान के मुसावातिस; आर्मीनिया के दशनाक, जार्जिया के मेनशेविक और तुर्कमेनिया के बासमाची, जो मध्य एशिया में सोवियत सत्ता का प्रतिरोध कर रहे थे, इस लहर में शामिल हुए। (मध्य एशिया में आरंभ में जिन सोवियतों की स्थापना हुई, उनके प्रायः सब सदस्य रूसी जाति के थे और इस प्रकार इन्हें स्थानीय जातियों के लोग रूसी साम्राज्य की बाहरी चौकियां भर मानते थे।) सन् १९२६ में "हेहालूत्ज" नामक यहूदी समाज के सब सदस्यों को निष्कासित कर दिया गया— इसका कारण यह था कि इस समाज के सदस्य सर्वशक्तिमान अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के उद्रेक के अनुसार आचरण करने में असफल रहे थे।

आगामी पीढ़ियों के मन में १९२० के बाद के वर्षों की तस्वीर एक पूर्ण असीमित स्वतंत्रता जैसी कोई तस्वीर है। इस पुस्तक में हमें ऐसे लोगों का परिचय मिलेगा, जिन्होंने इन वर्षों को भिन्न रूप में देखा। जो विद्यार्थी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य नहीं थे उन्होंने इस अवधि में "उच्च शिक्षा संस्थाओं की स्वायत्तता", सफाया करने के अधिकार, और पाठ्यक्रम से आवश्यकता से अधिक राजनीतिक रिचारधारा का पाठ पढ़ाने को निकाल देने की मांग की। इसका जवाब गिरफ्तारियां ही था। इन गिरफ्तारियों को छुट्टियों में तेज़ किया गया— उदाहरण के लिए १ मई १९२४ को बहुत बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां हुईं। सन् १९२५ में लेनिनग्राद के लगभग सौ विद्यार्थियों को सोतसियालिस्ती चेस्की वेस्तनिक पढ़ने के लिए तीन वर्ष की राजनीतिक कैद की सजा दी गई— उक्त पत्रिका विदेशों में रहने वाले मेनशेविकों की ओर से प्रकाशित होती थी। उन विद्यार्थियों को प्लीखानोव के साहित्य का अध्ययन करने के लिए भी यह दण्ड दिया गया था। (अपनी युवावस्था में स्वयं प्लीखानोव को कज़ान के बड़े गिरजाघर के सामने सरकार के खिलाफ बोलने के अभियोग पर बहुत हल्की सज़ा मिली थी।) सन् १९२५ में उन लोगों ने पहले (युवक) ट्राटस्की-

वादियों को गिरफ्तार करना शुरु कर दिया था (लाल सेना के दो बचकाने जवानों ने, रूसी परम्परा को ध्यान में रखते हुए, गिरफ्तार ट्राटस्कीवादियों के लिए चन्दा इकट्ठा करना शुरू कर दिया—और इन्हें भी राजनीतिक हिरासत में ले लिया गया।)

हां, यह भी स्पष्ट है कि शोषण करने वाले वर्गों को भी नहीं बखशा गया था। १६२० से आरम्भ पूरे दशक में उन भूतपूर्व अफसरों की तलाश जारी रही, जो किसी प्रकार जीवित रह गए थे : "श्वेत" (वे लोग जिन्हें गृहयुद्ध के दौरान गोली से नहीं उड़ाया जा सका था); "श्वेत-लाल" जो दोनों पक्षों की ओर से लड़े थे; "ज़ारवादी लाल", ज़ारशाही के वे अफसर, जो लाल सेना में मिल गए थे, लेकिन पूरी अवधि तक लाल सेना के साथ नहीं रहे अथवा वे अफसर जिनके सेना की सेवा सम्बन्धी विवरण में कुछ अवधियों के बारे में जानकारी नहीं थी और ऐसे दस्तावेज़ भी उपलब्ध नहीं थे, जिनके आधार पर इन अवधियों में उनके कार्यों का पता चल सके। इन लोगों को सचमुच भयंकर यातनाएं दी गईं और तुरन्त सज़ा नहीं सुनाई गई। इन्हें ही सोलीटेयर के खेल के दौर से गुजरना पड़ा : अनन्त पुष्टियां, वे कैसा काम कर सकते हैं और कैसा नहीं इस बारे में पाबन्दियां और वे कहां रह सकते हैं कहां नहीं इस बारे में पाबन्दियां। इन लोगों को गिरफ्तार किया गया, रिहा किया गया और फिर गिरफ्तार किया गया। और केवल धीरे-धीरे ही ये लोग शिविरों की ओर आगे बढ़े, जहां से वे कभी वापस नहीं लौटे।

पर इन अफसरों को गुलाग द्वीप समूह भेजने से समस्या समाप्त नहीं हुई, बल्कि इस समस्या को और गति मिल गई। आखिरकार इन लोगों की माताएं, पत्नियां और बच्चे भी तो अभी तक आज़ाद थे। कभी भी ग़लत न होने वाले सामाजिक विश्लेषण से यह देख पाना बड़ा आसान था कि अपने परिवारों के मुखियाओं के गिरफ्तार हो जाने के बाद ये लोग कैसी मन स्थिति में थे। और इस प्रकार उन लोगों ने गिरफ्तार अफसरों के परिवारों के सब सदस्यों की गिरफ्तारी का भी काम पूरा किया! और एक लहर शुरू हो गई।

सन् १६२० के बाद के वर्षों में उन कज्ज़ाकों को क्षमादान दिया गया, जिन्होंने गृहयुद्ध में हिस्सा लिया था। इनमें से बहुत से लोग लेमनोस द्वीप से कुबान वापस लौटे, जहां इन्हें जमीन दी गई। आगे चल कर इन सबको गिरफ्तार कर लिया गया।

और वस्तुतः सब भूतपूर्व सरकारी अधिकारी और कर्मचारी छिप गए थे और उन्हें भी गिरफ्तार करना आवश्यक था। ये लोग बहुत होशियारी से छिप गए थे और बड़ी चालाकी से इन लोगों ने अपने भेष बदल लिए थे। इन लोगों ने इस स्थिति का लाभ उठाया था कि उस समय तक देश के भीतर यात्रा करने के लिए किसी पासपोर्ट प्रणाली की व्यवस्था नहीं थी और पूरे गणराज्य में काम प्राप्त करने के लिए काम के विवरण सम्बन्धी एक ही पुस्तिका देने की प्रणाली भी शुरू नहीं हुई थी—और ये लोग सोवियत संस्थाओं में घुस आने में सफल हुए थे। ऐसे मामलों में जबान से गलती से कोई शब्द निकल जाने, संयोगवश पहचान लिये जाने और पड़ौसियों द्वारा लगाये गये आरोप ने युद्ध स्तर पर जासूसी के कार्य में लगे लोगों को सहायता पहुंचाई। (कभी-कभी शुद्ध संयोगवश कोई व्यक्ति पहचान लिया जाता था। हर काम को बड़ी तरकीब से करने का रुझान वाले मोवा नामक किसी व्यक्ति ने अपने घर पर भूतपूर्व प्रान्तीय न्यायिक अधिकारियों की सूची अपने घर पर रख रखी थी। सन् १६२५ में संयोगवश यह सूची मिल गई और इस सूची

में जिन लोगों के नाम थे, उन सबको गिरफ्तार कर लिया गया और गोली से उड़ा दिया गया)।

और इस प्रकार एक के बाद एक लहर आती गई। इन लहरों में "सामाजिक उद्गम को छिपाने" और "भूतपूर्व सामाजिक उद्गम" दोनों के लिए जिन लोगों को सजाएं दी गईं, उनकी लहर भी शामिल थी। इन अभिव्यक्तियों की बड़ी व्याख्या की गई थी। उन लोगों ने अभिजात के वंशों के लोगों को उनके सामाजिक उदगम के कारण गिरफ्तार किया। उन लोगों ने अभिजात्य परिवारों के सदस्यों को भी गिरफ्तार किया। अन्ततः सीधा-सादा अन्तर करने में असफल रहने पर, उन लोगों ने "व्यक्तिगत अभिजात्य" की श्रेणी के अन्तर्गत आने वाले लोगों को भी गिरफ्तार कर लिया। इस श्रेणी में ऐसा प्रत्येक व्यक्ति आता था, जिसने किसी विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त की हो। और एक बार गिरफ्तार हो जाने के बाद, प्रत्यावर्तन सम्भव नहीं था। जो हो चुका है, आप उसे मिटा नहीं सकते? क्रान्ति का प्रहरी कभी गलती नहीं करता!

(नहीं। प्रत्यावर्तन के, वापसी के कुछ तरीके थे? वापस लौटने वाली लहरें बहुत मामूली और छिटपुट थीं। लेकिन इसके बावजूद यदाकदा ये उलटी लहरें आईं। इनमें से पहली लहर का यहां तुरन्त उल्लेख करना उपयोगी होगा। अभिजात्य परिवारों की पत्नियों और पुत्रियों और अफसरों के परिवारों में अक्सर ऐसी स्त्रियां थीं, जिनमें अत्यन्त उच्च कोटि के व्यक्तिगत गुण थे और वे देखने में भी सुन्दर थीं। इनमें से कुछ वापस लौटने वाली लहर में बच निकलने में सफल हुईं! इनमें से वे स्त्रियां थीं जिन्होंने यह स्मरण रखा कि हमें केवल एक बार ही जीवन प्राप्त होता है और स्वयं हमारे अपने जीवन से अधिक मूल्यवान अन्य कुछ नहीं है। इन स्त्रियों ने चेका—जी० पी० यू० के मुखबिरों, सहयोगियों अथवा किसी भी रूप में काम करने के लिए अपनी सेवाएं अर्पित कीं—और जिन्हें पसन्द किया गया, उन्हें स्वीकार कर लिया गया। ये स्त्रियां ही सबसे अधिक सफल मुखबिर सिद्ध हुईं। इन स्त्रियों ने जी० पी० यू० की बहुत मदद की, क्योंकि "भूतपूर्व" लोग उन पर भरोसा करते थे। यहां हम अन्तिम राजकुमारी व्याजेमस्काया के नाम का उल्लेख कर सकते हैं, जो क्रान्ति के बाद की सबसे अधिक मुखबिर सिद्ध हुई (और इसी प्रकार सोलोवेतस्की द्वीपों में उनका पुत्र भी सफल मुखबिर बना)। और कोनकोर्दिया निकोलोएवना आई ओ सी स्पष्टतया अत्यधिक मेधावी और सुन्दर स्त्री थी: उसका पति एक अफसर था और स्वयं उसकी आंख के सामने उसके पति को गोली से उड़ा दिया गया था और स्वयं उसे सोलोवेतस्की द्वीपों में निष्कासित कर दिया गया था। लेकिन वह किसी प्रकार क्षमायाचना कर वापस लौटने में सफल हुई और उसने बड़ी लूबयांका जेल के समीप एक दुकान खोली, जहां इस जेल के महत्वपूर्ण अधिकारी आना बेहद पसन्द करते थे। पर स्वयं उसे भी १९३७ में यगोदा के अधीनस्थ अधिकारियों और अपने ग्राहकों सहित गिरफ्तार कर लिया गया।)

यह विवरण देना बड़ा विचित्र लगता है। लेकिन एक मूर्खतापूर्ण परम्परा के परिणामस्वरूप पुराने रूस का राजनीतिक रैडक्रास कायम रह सका। इसकी तीन शाखाएं थी: मास्को शाखा (वाइ० पेशकोवा-वीनावेर); खारकोव शाखा (सान्दोर निरस्काया) और पेत्रोग्राद शाखा। मास्को शाखा ने सोवियत अधिकारियों को अप्रसन्न नहीं किया और वह १९३७ तक कायम रह सकी। पेत्रोग्राद की शाखा ने (वृद्ध नारोदनिक शेवत्सोव, अपंग गार्टमन और कोचेरोवस्की) असह्य रूप से विवेकहीन रवैया अपनाया। राजनीतिक

मामलों में स्वयं को फंसाया, शलूसेलबर्ग जेल के नोवोरुस्की जैसे भूतपूर्व कदियों से समर्थन प्राप्त करने की कोशिश की (नोवोरुस्की को लेनिन के भाई अलैकसान्द्र उल्यानोव के साथ उसी मामले में सज़ा दी गयी थी) और केवल समाजवादियों को ही नहीं, बल्कि क्रान्ति विरोधियों को भी सहायता दी। सन् १६२६ में इस शाखा को बन्द कर दिया गया और इसके नेताओं को निष्कासन में भेज दिया गया।

वर्ष बीतते जाते हैं और एक ऐसी प्रत्येक वस्तु और घटना जो हमारी स्मृति में फिर ताजा नहीं की जाती, सदा के लिए लुप्त हो जाती है। धूमिल अतीत में, हम १६२७ के वर्ष को उस समय तक काट-छांट से बचे नई आर्थिक नीति के चिन्तामुक्त और खाते-पीते वर्ष के रूप में देखते हैं। पर वास्तव में यह तनाव से भरा वर्ष था; समाचारपत्रों की सुर्खियों के विस्फोट ने इसे झकझोर दिया और उस समय इस वर्ष को विश्व क्रांति के लिए छेड़े जाने वाले युद्ध का द्वार बताया गया। वारसा में सोवियत राजदूत की हत्या ने, जिसके विवरण से उस वर्ष के जून महीने में अखबारों के अनेक कालम भरे रहते थे, मायाकोवस्की को इस विषय पर चार हिला डालने वाली कविताएं लिखने को प्रेरित किया।

लेकिन यहां आपका दुर्भाग्य सामने आया : पोलैंड ने क्षमायाचना की; गोइकोव के एकाकी हत्यारे को वहां गिरफ्तार कर लिया गया—और अब इस स्थिति में कवि मायाकोवस्की का यह उद्बोधन किसकी ओर निर्देशित किया जा सकता था।[१९]

एकजुट होकर
निर्माण के द्वारा,
साहसपूर्वक
और दमन के माध्यम से

उस गिरोह की गर्दन
तोड़ डालो, जो पागल हो उठा है।

किसका दमन करना था? किसकी गर्दन तोड़ डालनी थी? और यह वही अवसर है जब तथाकथित वोइकोव लहर शुरू हुई। जैसाकि कोई गड़बड़ या तनाव होने पर होता था, उन लोगों ने भूतपूर्व महत्वपूर्ण लोगों को गिरफ्तार करना शुरू किया : अराजकतावादियों, समाजवादी क्रान्तिकारियों, मेनशेविकों और बुद्धिवादियों को गिरफ्तार किया गया। वास्तव में, इन लोगों के अलावा आखिरकार शहरों में और किसे गिरफ्तार किया जा सकता था? श्रमजीवी वर्ग को तो नहीं?

लेकिन पुराने "कैडेट पार्टी के समीप" के बुद्धिवादी वर्ग को १६१६ से ही लक्ष्य बनाया जा चुका था और उसके प्रायः सब सदस्यों को पकड़ लिया गया था। लेकिन क्या अब वह समय नहीं आ गया था जब बुद्धिवादी वर्ग के उस हिस्से को झकझोर दिया जाए, जो स्वयं को प्रगतिशील समझता था? क्या विद्यार्थियों को भी एक भरपूर झटका देना जरूरी नहीं था? एक बार फिर कवि मायाकोवस्की मदद के लिए आ पहुंचे :

सोचिए
कोमसोमोल के बारे में
अनेक सप्ताहों तक, अनेक दिनों तक
देखिए,

अपनी कतारों पर नज़र रखिए
सावधानी से अपने साथियों को परखिए

क्या ये सब
सचमुच
कोमसोमोल हैं ? युवक कम्युनिस्ट हैं ?
अथवा वे लोग
केवल
इसका नाटक भर कर रहे हैं ?

एक सुविधाजनक विश्व दृष्टिकोण, एक सुविधाजनक न्यायिक शब्द को जन्म देता है : सामाजिक रोकथाम की कारवाई। इसे लागू और स्वीकार किया गया और तुरन्त सब लोग इसे समझ गए। (श्वेत सागर नहर के निर्माण कार्य का एक बड़ा अधिकारी लज़ार कोगन बहुत जल्दी ही यह विचार व्यक्त कर उठा : "मैं मानता हूं कि व्यक्तिगत रूप से तुम किसी भी अपराध के दोषी नहीं हो। लेकिन, एक शिक्षित व्यक्ति के नाते तुम्हें यह समझना होगा कि सामाजिक रोकथाम की कारवाई व्यापक रूप से की जा रही थी;") और वास्तव में उन अविश्वसनीय सहयात्रियों, उन समस्त अस्थिर बुद्धिवादियों को कब गिरफ्तार किया जा सकता था, यदि विश्व क्रान्ति के युद्ध के समारम्भ के अवसर पर नहीं ? एक बड़ी लड़ाई छिड़ जाने पर, वस्तुतः बहुत विलम्ब हो चुका होता।

और इस प्रकार मास्को में उन लोगों ने बहुत तरीके से, सिलसिलेवार एक-एक मोहल्ले और गली में तलाशी शुरू की। आखिर सब जगह किसी न किसी को गिरफ्तार करना ही था। नारा था : "हम मेज़ पर अपनी मुट्ठी इतनी जोर से मारेंगे कि संसार आतंक से काँप उठेगा !" अब ब्लैकमारिया नाम की गाड़ियां, मामूली यात्री कारें, बन्द ट्रक, खुली घोड़ा-गाड़ियां दिन के समय भी लूबयांका और बुत्यर्की जेलों की ओर बढ़ने लगीं। इनके दरवाज़ों पर भीड़ का जमाव हो चुका था, भीतर अहाते में भी रास्ता नहीं मिलता था। जिन लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका था, उन्हें गाड़ियों से उतार कर भीतर जेल में पहुंचाने और रजिस्टरों में उनका नाम दर्ज करने का समय नहीं मिल रहा था। (और यही स्थिति अन्य नगरों में भी थी, उन दिनों रोस्तोव-आन-दि-दोन में जेल में इतनी भीड़ थी कि खण्ड ३३ की एक कोठरी के फर्श तक पर नए आए कैदी बोईको को बैठने तक के लिए जगह नहीं मिल पाई।)

इस लहर का एक विशिष्ट उदाहरण, कई दर्जन युवक युवतियों ने एक संगीत-संध्या का आयोजन किया। इसके लिए पहले से ही जी० पी० यू० से अनुमति प्राप्त नहीं कर ली गई थी। ये लोग संगीत सुनते रहे और चाय पीते रहे। इन लोगों ने स्वयं अपने पैसों से चन्दा करके चाय मंगवाई थी और यह पूरी तरह स्पष्ट मान लिया गया था कि संगीत का आयोजन क्रान्ति विरोधी भावनाओं को छिपाने का पर्दा था और पैसा चाय के लिए नहीं, बल्कि मरणोन्मुख विश्व बुर्जुआ वर्ग को जीवित रखने के लिए इकट्ठा किया जा रहा था। और इन सबको गिरफ्तार कर लिया गया और इन्हें ३ से १० वर्ष तक की कैद की सज़ा सुनाई गई—अन्ना स्क्रिपनिकोवा को ५ वर्ष की सज़ा मिली, जबकि आइवन निकोलाएविच वारेन्तसोव और अन्य संगठनकर्त्ताओं को, जिन्होंने स्वीकारोक्ति करने से इनकार कर दिया था, गोली से उड़ा दिया।

और उसी वर्ष, पेरिस में कहीं, लाइसी शिक्षा संस्था के उन स्नातकों ने जो रूस में प्रवासी रूसियों के रूप में रह रहे थे, परम्परागत पुश्किन छुट्टी मनाने का आयोजन किया। इसका समाचार अखबारों में छपा। स्पष्ट था कि भयंकर रूप से घायल साम्राज्यवाद ने इस षड्यन्त्र का आयोजन किया था और इसके परिणामस्वरूप लाइसी शिक्षा संस्था के जो स्नातक सोवियत संघ में मौजूद थे उन सबको गिरफ्तार कर लिया गया और इसी प्रकार तथाकथित "कानून के विद्यार्थियों" को भी गिरफ्तार किया गया। (क्रांति से पहले के रूस के एक ऐसे ही अन्य विशेष स्कूल के स्नातक इस श्रेणी में रखे गए।)

केवल एस० एल० ओ० एन०—अर्थात् सोलोवेतस्की विशेष उद्देश्य शिविर के आकार ने ही वोइकोव लहर के अन्तर्गत गिरफ्तारियों को फिलहाल सीमित रखा। लेकिन अब तक गुलाग द्वीपसमूह का विषाक्त जीवन शुरू हो चुका था। और यह जल्दी ही राष्ट्र के सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होने जा रहा था।

एक नया स्वाद प्राप्त हो चुका था और एक नई भूख निरन्तर बढ़ने लगी थी। बहुत पहले ही समय आ चुका था कि तकनीकी बुद्धिवादी वर्ग को कुचल डाला जाए, जो स्वयं को आवश्यकता से अधिक अनिवार्य मानने लगा था और अब तक संकेत मात्र से दिए गए निर्देशों को समझने की आदत डालने में असमर्थ रहा था।

दूसरे शब्दों में, हमने कभी भी इंजीनियरों पर भरोसा नहीं किया और क्रान्ति के बाद के आरम्भिक वर्षों से ही हमने इस बात का ध्यान रखा कि भूतपूर्व पूंजीवादी मालिकों के इन पिच्छलग्गुओं और नौकरों पर श्रमिक स्वस्थ संदेह की नजर रखें। वैसे पुनर्निर्माण की अवधि में हमने उन्हें अपने उद्योगों में काम करने दिया, जबकि वर्गप्रहार की समस्त शक्ति शेष बुद्धिवर्ग के ऊपर आजमाई गई। लेकिन जैसे-जैसे हमारा आर्थिक नेतृत्व प्रौढ़ होता गया—सर्वोच्च आर्थिक परिषद् और गोस्पलान अर्थात् राज्य योजना आयोग की योजनाओं की जैसे-जैसे संख्या बढ़ती गई और जैसे-जैसे ये योजनाएं एक दूसरे के विपरीत सिद्ध होती गईं, उतना ही अधिक पुराने इंजीनियरों का सोवियत अर्थ-व्यवस्था को नष्ट करने का इरादा, उनकी निष्ठाहीनता, धूर्तता, लालच और चालाकी स्पष्ट होती गई। क्रान्ति के प्रहरी ने और अधिक सतर्क होकर निगरानी शुरू की, क्रांति के प्रहरी ने अपनी आंखों को सिकोड़ कर इन पर नज़र रखने का प्रयास शुरू किया और जहाँ कहीं इस प्रकार शांति के प्रहरी ने अपनी नज़र डाली, उसे तोड़ फोड़ करने वालों का गिरोह तुरन्त दिखाई पड़ गया।

सन् १९२७ से यह चिकित्सा-क्रम पूरी गति से आगे बढ़ा और तुरन्त सर्वहारा वर्ग के समक्ष हमारी आर्थिक असफलताओं और कमियों के कारण स्पष्ट हो गए। रेल विभाग के जनवादी कमीसार कार्यालय में तोड़फोड़ चल रही थी—यही कारण था कि रेलगाड़ी में सवार होना बड़ा मुश्किल था, यही कारण था कि आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई में बाधा पड़ रही थी। मास्को की बिजली की सप्लाई की व्यवस्था में जो तोड़-फोड़ हो रही थी—और इस कारण से बिजली की सप्लाई में बाधा पड़ रही थी। तेल उद्योग में भी तोड़फोड़ चल रही थी, अतः मिट्टी के तेल की कमी हो गई थी। कपड़ा उद्योग में भी तोड़फोड़ हो रही थी, अतः एक श्रमजीवी को पहनने के लिए कुछ भी नहीं मिल पा रहा था। कोयला उद्योग में तो बहुत बड़े पैमाने पर तोड़फोड़ चल रही

थी—अतः आँच के लिए कोयला नहीं था ! धातु शोधन, प्रतिरक्षा, मशीन, जहाज निर्माण, रसायन, खनन, सोना और प्लेटिनम उद्योगों में तथा सिंचाई व्यवस्था में सर्वत्र तोड़फोड़ के रूप में मवाद से भरे फोड़े दिखाई पड़ रहे थे ! स्लाइड रूलधारी शत्रु अर्थात् इंजीनियर सर्वत्र दिखाई पड़ रहे थे। जी० पी० यू० इन "तोड़फोड़ करने वालों" को पकड़ने और जेलों में घसीट ले जाने के कार्य में पूरी तरह लग गई थी और उसे बड़े परिश्रम से यह काम करना पड़ रहा था। राजधानियों में और प्रान्तों में, जी० पी० यू० के कालेजियमों और सर्वहारा अदालतों में भरपूर काम चल रहा था। वे इस गन्दगी की सफाई में लगे थे और हर रोज़ श्रमिकों को अखबारों से नए कुकृत्यों की जानकारी मिलती थी (और कभी-कभी उन्हें यह जानकारी प्राप्त भी नहीं होती थी।) उन्हें पालचिन्स्की, वानमेक और वेलिचको[20] और उन अनेक नामहीन लोगों के बारे में जानकारी मिलती रही। प्रत्येक उद्योग, प्रत्येक कारखाने और प्रत्येक दस्तकारी केन्द्र में तोड़फोड़ करने वाले मिले और जैसे ही उन लोगों की तलाश शुरू की गई सर्वत्र तोड़फोड़ करने वाले दिखाई पड़ने लगे। (हाँ, जी०पी०यू० की सहायता से ही देखने पर यह काम हुआ।)यदि क्रान्ति से पहले के किसी इंजीनियर का अभी तक एक देशद्रोही के रूप में भण्डाफोड़ नहीं किया जा सका था, तो भी उस पर इस बात का संदेह तो निश्चय ही किया जा सकता था।

और ये पुराने इंजीनियर कितने पहुंचे हुए धूर्त थे ! इन लोगों ने तोड़फोड़ के कैसे अजीबोगरीब तरीके निकाले थे ! रेल विभाग के जनवादी कमीसार कार्यालय के निकोलाई कार्लोविच वॉन मेक नई अर्थव्यवस्था के विकास के प्रति जबर्दस्त निष्ठा का नाटक रचता रहा और घंटों तक समाजवाद के निर्माण के सदर्भ में उठने वाली आर्थिक समस्याओं पर भाषण करता। उसे दूसरे लोगों को सलाह देना भी बेहद पसन्द था। उसकी एक अत्यन्त धूर्ततापूर्ण और हानिप्रद सलाह यह थी कि उसने मालगाड़ियों के आकार को बढ़ाने का प्रस्ताव किया और औसत से भारी भार को ढोने की चिन्ता नहीं की। जी० पी० यू० ने वॉन मेक का भण्डाफोड़ किया और उसे गोली से उड़ा दिया गया। उसका लक्ष्य पटरियों को घिस डालने और पटरियों के आधार को कमजोर बना डालना था। इसी प्रकार वह माल डिब्बों और रेल इंजनों को भी घिस डालना चाहता था, ताकि विदेशी सैनिक हस्तक्षेप की स्थिति में गणराज्य के पास रेलें ही न रह जायें ! जब, कुछ समय बाद ही, रेल विभाग के नए जनवादी कमीसार, कामरेड कगानोविच ने आदेश दिया कि माल डिब्बों में ढोये जाने वाले औसत भार को बढ़ाया जाना चाहिए और इस भार को दुगना ही नहीं बल्कि तिगुना तक कर दिया जाना चाहिए (और इस अनुसंधान के लिए कगा-नोविच को हमारे अन्य नेताओं के साथ लेनिन पदक प्राप्त हुआ)—तो जिन विद्वेषपूर्ण इंजीनियरों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया, उन्हें रेलों की भारवहन क्षमता को सीमित बनाने का दोषी बताया गया। इन लोगों ने यह आवाज़ उठाई थी कि इतना अधिक भार ढोना सम्भव नहीं है और इसके परिणामस्वरूप रेल इंजन और माल डिब्बे नाकारा हो जायेंगे और इस आपत्ति के परिणामस्वरूप इन लोगों को समाजवादी परिवहन व्यवस्था की सम्भावनाओं में विश्वास की कमी के कारण, उचित रूप से ही गोली से उड़ा दिया गया।

समाजवादी परिवहन व्यवस्था की भारवहन क्षमता पर सीमा लगाने वाले इन लोगों का अनेक वर्षों तक पीछा किया गया। अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रों में ऐसे सीमा

बांधने वाले लोगों ने अपने फारमूलों और गणनाओं का हवाला दिया और यह बात समझने से इंकार कर दिया कि पुल और खराद मशीनें काम करने वालों के उत्साह के अनुरूप चल सकती हैं। (ये वे वर्ष थे जब जन-समुदाय के मनोविज्ञान के समस्त मानदण्डों को एकदम उलट दिया गया था : "जल्दबाज़ी से बर्बादी होती है" जैसी जनोक्तियों में बुद्धिमता का जो सार प्रकट होता है, उसका मजाक उड़ाया गया और इस प्राचीन कहावत को एकदम उलट दिया गया कि "जितनी धीमी गति से आप चलते हैं, आप उतनी ही अधिक लम्बी यात्रा कर सकते हैं।") यदाकदा यदि कोई बात पुराने इंजीनियरों की गिरफ्तारी को स्थगित कर देती, तो यह थी कि इनके स्थान पर नियुक्ति के लिए नए इंजीनियरों की टोली प्राप्त नहीं होती थी। इझेवस्क के सेनाओं के उपयोग का माल बनाने वाले कारखानों के मुख्य इंजीनियर निकोलाई आइवानोविच लादिझेंस्की को पहले "सीमाएं बांधने वाले सिद्धांतों" और "सुरक्षा सम्बन्धी कारकों में अन्धविश्वास" के आरोप पर गिरफ्तार कर लिया गया। (इन आरोपों का यह अर्थ था कि उन्होंने कारखानों के विस्तार के लिए ओर्झोनिकिजे द्वारा मंजूर धनराशि को अपर्याप्त बताया था)।[२१] इसके बाद उन लोगों ने इस इंजीनियर को उसके घर में ही नजरबन्द कर दिया और फिर स्वयं अपने पुराने पद पर काम के लिए जाने का आदेश दिया। उसके बिना कारखाने नहीं चल पा रहे थे। लादिझेंस्की ने काम को फिर व्यवस्थित किया लेकिन कारखानों के विस्तार के लिए पहले की तरह ही अपर्याप्त धन उपलब्ध था और उन्हें एक बार फिर जेल में डाल दिया गया। इस बार उनके ऊपर "धन के अनुचित उपयोग" का आरोप लगाया गया था : स्वीकृत धनराशि अपर्याप्त थी, उन्होंने अपने आरोप में कहा, क्योंकि मुख्य इंजीनियर ने अकार्यकुशलता से उसका इस्तेमाल किया। लादिझेंस्की की शिविर में एक वर्ष तक लकड़ी के लट्ठे ढोने के बाद मृत्यु हो गई।

इस प्रकार कुछ वर्षों में ही उन्होंने पुराने रूसी इंजीनियरों की कमर तोड़ डाली जो देश का गौरव थे, जो गारिन-माइखेलोवस्की, चेखोव और जाम्यातिन जैसे लेखकों की रचनाओं के प्रिय वीरनायक थे।

वस्तुतः यह समझना होगा कि अन्य सब लहरों की तरह इस लहर में भी दूसरे लोगों को भी गिरफ्तार किया गया। उदाहरण के लिए उन लोगों को, जो इन गिरफ्तार व्यक्तियों के सगे सम्बन्धी थे तथा इनसे किसी रूप में सम्बन्धित थे। मैं क्रान्ति के प्रहरी के दैदिप्यमान कान्स्य प्रतिमा सदृश मुख पर धब्बा लगाने से हिचकिचाता हूं, लेकिन मेरे सामने कोई चारा नहीं है : उन लोगों ने, उन व्यक्तियों को भी गिरफ्तार किया, जिन्होंने मुखबिर बनने से, दूसरे लोगों के ऊपर झूठे अभियोग लगाने से इनकार किया। यहां हम पाठक को यह बताना चाहेंगे कि उसे सदा यह बात ध्यान रखनी चाहिए, विशेषकर क्रान्ति के बाद के पहले दशक के सम्बन्ध में, कि वह पूरी तरह से गुप्त लहर थी जो कभी भी सार्वजनिक रूप से प्रकट नहीं हुई : उस समय तक लोगों का गर्व कायम था और उनमें से अनेक यह नहीं समझ पाते थे कि नैतिकता एक सापेक्ष वस्तु है, उसका केवल एक अत्यन्त संकीर्ण वर्ग सम्बन्धी अर्थ होता है, और उन्हें जो काम देने का प्रस्ताव किया गया, उसे उन्होंने ठुकरा देने का साहस दिखाया। और इन सब लोगों को अत्यन्त क्रूरतापूर्वक दण्ड दिया गया। वस्तुतः इस दौर में युवती मागदालेना इझुवोवा से यह अपेक्षा थी कि वह इंजीनियरों की एक टोली के बीच मुखबिर का काम करेगी। लेकिन उसने केवल यह कार्य करने से इन-

कार करने का साहस नहीं दिखाया, बल्कि अपने अभिभावक को भी यह बात बता दी (उसे स्वयं अपने अभिभावक के विरुद्ध भी मुखबरी करनी थी)। इसके बावजूद, उन्हें जल्दी ही गिरफ्तार कर लिया गया और पूछताछ के दौरान उन्होंने प्रत्येक अभियोग की स्वीकारोक्ति कर ली। गर्भवती इभ्रूवोवा को गिरफ्तार कर लिया गया और उसके ऊपर "संघर्ष के संचालन सम्बन्धी रहस्यों को प्रकट करने", का अभियोग लगाया गया और उसे गोली से उड़ा देने की सजा सुना दी गई—लेकिन आगे चल कर वह किसी प्रकार मृत्युदण्ड को २५ वर्ष की कैद की सज़ा में बदलवाने में सफल हुई। उसी वर्ष अर्थात् १९२७ में, यद्यपि यह घटना एकदम भिन्न पर्यावरण में खारकोव के प्रमुख कम्युनिस्टों के मध्य हुई और इस घटना के अन्तर्गत नादेझदा वितालएवना सुरोवेत्स ने यूक्रेन सरकार के सदस्यों के विरुद्ध मुखबरी और जासूसी करने से इनकार कर दिया। यह इनकार करने पर जी० पी० यू० ने उसे गिरफ्तार कर लिया और चौथाई शताब्दी बाद ही वह कोलिमा के शिविर से वापस आ सकी। और उस समय उसके प्राण मुश्किल से ही उसके शरीर में अटके हुए थे। और जो लोग जीवित नहीं बचे—उनके बारे में हमें कुछ भी मालूम नहीं है।

(१९३० के बाद के वर्षों में आज्ञा न मानने वाले इन लोगों की लहर शून्य हो गई अब यह स्थिति आ चुकी थी कि यदि वे आपसे मुखबरी करने को कहते तो आप के सामने यह करने के अलावा अन्य कोई चारा नहीं था—आखिरकार आप छिपेंगे कहां—"सबसे कमजोर लोग मौत के मुंह में पहुँच जाते हैं।" "यदि मैं यह नहीं करता तो कोई दूसरा करेगा।" "तो बेहतर है कि किसी दूसरे के स्थान पर मैं ही यह कार्य करूं।" इस बीच स्वयंसेवकों की कमी नहीं रही थी। आप उनसे बच कर नहीं निकल सकते थे। यह कार्य लाभप्रद था और प्रशंसनीय भी।)

सन् १९२८ में मास्को में साख्ती का बड़ा मुकदमा शुरू हुआ -इसे इस दृष्टि से बड़ा कहा जा सकता है, क्योंकि इसका प्रचार बड़े पैमाने पर किया गया था। इसमें प्रतिवादियों ने आश्चर्य में डाल देने वाली स्वीकारोक्तियां की थीं और अपने ऊपर भयंकर आरोप लगाये थे, अपनी भयंकर निन्दा की थी। (यद्यपि तब भी सब प्रतिवादियों ने यह नहीं किया था)। दो वर्ष बाद सितम्बर १९३० में अकाल का संगठन करने वाले लोगों के ऊपर बड़ी चीखो पुकार के मध्य मुकदमा चलाया गया। (ये ही वे लोग हैं! ये ही वे लोग हैं!) खाद्य उद्योग में ४८ तोड़फोड़ करने वाले पकड़े गए थे। सन् १९३० के अन्त में प्रोमपार्ती के ऊपर, इससे भी अधिक शोरगुल और प्रचार के बीच मुकदमा चलाया गया। इस मुकदमे का पूर्वाभ्यास बड़ी बारीकी से किया गया था। और जरा सी भी खामी नहीं छोड़ी गई थी। इस मुकदमे के प्रत्येक प्रतिवादी ने गन्दे से गन्दे, निन्दनीय से निन्दनीय कार्य का दोष अपने ऊपर लिया—और तब, एक स्मारक के उद्घाटन की तरह, श्रमिकों की आंखों के समक्ष बड़ी शान के साथ उन समस्त लोगों को एक ही शृंखला में बांध कर पेश किया गया, जिनके ऊपर पहले अभियोग लगाये गए थे। इन सबको मिल्यूकोव, रियाबूशिंस्की, देतेरदिंग और पोइनकेयर के साथ अभियोग लगाये गये थे।

जैसे-जैसे हमारी समझ में अपनी न्याय व्यवस्था के तौर-तरीके आते गए, हमने अनुभव किया कि सार्वजनिक रूप से जो मुकदमे चलाये गये थे, वे नीचे फैली हुई विशाल सुरंग का सतही आभास भर देते थे और अधिकांश खुदाई का काम सतह से नीचे ही हुआ था। इन मुकदमों में गिरफ्तार लोगों में से बहुत थोड़े से ही लोगों को अदालत में पेश

किया गया था— इन मुकदमों में केवल उन्हीं लोगों को ही नहीं पेश किया गया, जो स्वय अपने ऊपर अभियोग लगाने के लिए अस्वाभाविक तरीके से सहमत हो जाते थे, बल्कि उन लोगों को भी जो आसानी से अथवा हल्की सज़ा पाकर बच निकलने की आशा रखते थे। उन अधिकांश इंजीनियरो को, जिनमें पूछताछ अधिकारियों के मूर्खतापूर्ण अभियोग को ठुकरा देने और गलत साबित कर देने का साहस और बुद्धिमत्ता थी, चुपचाप गोली से उड़ा दिया गया। जिन लोगों ने अपने अपराधों की स्वीकारोक्तियां नहीं कीं, उन सबको भी जी० पी० यू० के कालेजियम ने १० वर्ष की कैद की सज़ा सुनाई।

ज़मीन के भीतर छिपे पाइपों के बीच लहरों का प्रवाह जारी रहा। ये लहरें सतह पर प्रस्फुटित जीवन को बनाए रखने के लिए, गन्दगी की निकासी का माध्यम बन रहीं थीं।

ठीक इसी क्षण गन्दगी की निकासी के लिए सार्वभौम रूप से प्रत्येक व्यक्ति पर जिम्मेदारी डालने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। जो लोग स्वयं शरीरत: इन गन्दे नालों के भीतर नहीं जा गिरे थे, जिन्हें अभी तक इन गन्दे नालों के पाइपों के माध्यम से गुलाग द्वीपसमूह नहीं पहुंचा दिया गया था, उन्हें ऊपर सतह पर जुलूसों में हिस्सा लेना था, हाथ में झण्डे लेकर मुकदमों की प्रशंसा के गीत गाने थे और न्यायिक प्रतिशोध के ऊपर प्रसन्नता प्रकट करनी थी (और यह अत्यधिक दूरदर्शिता की बात थी! अनेक दशक गुजर जायेंगे, इतिहास की आंखें खुल जायेंगी, लेकिन पूछताछ करने वाले अफसर, और सरकारी वकील आपसे या मुझसे मेरे साथी नागरिक अधिक दोषी नहीं ठहराये जाएंगे। आज हमारे धड़ पर हमारा प्रशंसनीय सफेद बालों से मण्डित जो सिर मौजूद है, उसका यही कारण है कि हमने अपने युग में बड़ी योग्यता से इन कारवाइयों के हक में वोट दिया।)

स्तालिन ने इस सम्बन्ध में पहला प्रयास अकाल का आयोजन करने वाले लोगों पर मुकदमे के सम्बन्ध में किया और यह मुकदमा सफल क्यों न होता, जबकि सस्य श्यामला रूस में प्रत्येक व्यक्ति भूख से मर रहा था और प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्यचकित होकर यही सवाल पूछ रहा था : "हमारी प्यारी रोटी आखिरकार कहां चली गई?" अत: अदालत के निर्णय से पहले ही, श्रमिकों और कर्मचारियों ने अत्यधिक क्रोध से भर कर अपना मत प्रकट करते हुए यह मांग की कि जिन बदमाशों पर मुकदमा चलाया जा रहा है, उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिए। और प्रोमपार्ती के मुकदमे के समय तक तो, प्राय: हर जगह बैठकें होने लगी थीं, प्रदर्शन होने लगे थे (इनमें स्कूल के बच्चे भी शामिल हुए)। समाचारपत्रों ने इसे करोड़ों लोगों का अभियान बताया और अदालत की खिड़कियों के बाहर केवल यही आवाज़ प्रतिध्वनित हो रही थी : "मृत्यु! मृत्यु! मृत्यु!"

हमारे इतिहास के इस मोड़ पर कुछ एकाकी प्रतिवाद सुनाई पड़े अथवा कुछ गिने चुने लोगों ने इन प्रदर्शनों में हिस्सा लिया और सर्वव्यापी सहमति के भयंकर शोर के बीच "नहीं" कहने के लिए अत्यधिक असाधारण वीरता की आवश्यकता थी। आज यह इसकी तुलना में अकल्पनीय रूप से आसान है! (इसके बावजूद आज भी लोग अक्सर ऐसी कारवाइयों के "विरुद्ध" अपना मत नहीं देते।) आज हमें इस सम्बन्ध में जो कुछ जानकारी है, उससे यही स्पष्ट होता है कि प्रतिवाद करने वाले, 'नहीं' की आवाज़ उठाने वाले लोग वही साहसविहीन, निरर्थक बुद्धिवादी ही थे। लेनिनग्राद, पोलीटेक्नीक संस्था की बैठक में

प्रोफेसर दमित्री अपोली नारएविच रोभांस्की ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया (वे वैसे भी मृत्युदण्ड के प्रबल विरोधी थे; आप जानते ही हैं कि विज्ञान की भाषा में मृत्युदण्ड को कभी भी न उलटी जाने योग्य अर्थात् अपरिवर्तनीय क्रिया बताया जाता है), और उन्हें वहीं तत्काल गिरफ्तार कर लिया गया। छात्रा दीमा ओलीतस्की ने भी मतदान में हिस्सा नहीं लिया और उसे तुरन्त वहीं गिरफ्तार कर लिया गया। इस प्रकार इन समस्त प्रतिवादों को उनके मूल में ही कुचल डाला गया।

जहां तक हमें जानकारी है, सफेद मूंछों वाले श्रमजीवी वर्ग ने इन मृत्युदण्डों को अपनी सहमति दी। जहां तक हमें जानकारी है, अत्यन्त उत्साहपूर्ण कोमसोमोल [युवक कम्युनिस्ट पार्टी] की शाखाओं से लेकर पार्टी के नेताओं तक और वीरनायकों जैसी ख्याति प्राप्त सेना के कमाण्डरों तक, समस्त हरावल इन मृत्युदण्डों को अपनी सहमति देने के लिए अत्यन्त तत्परता से एकमत हो जाता था। प्रसिद्ध क्रान्तिकारियों, सिद्धान्तकारों और पैगम्बरों ने, स्वयं अपने निन्दनीय विनाश से सात वर्ष पूर्व, भीड़ के उद्घोष में अपना स्वर मिलाया और उन्हें उस समय यह आभास नहीं था कि स्वयं उनका समय समीप आ गया है, कि जल्दी ही स्वयं उनके नाम भी "विष्टा !" "गन्दगी !" की तीखी आवाज़ों के बीच घसीटे जाएंगे।

वास्तव में इन इंजीनियरों के विनाश का काम जल्दी ही समाप्त हो गया। सन् १९३१ के आरम्भ में आईओसिफ विसारियोनोविच ने निर्माण के लिए अपनी "छह शर्तों" का उल्लेख किया। और निरंकुश विसारियोनोविच ने अपनी पांचवी शर्त में इस बात का उल्लेख किया : हमें पुराने तकनीकी बुद्धिजीवी वर्ग के विनाश की नीति से, अब इस बुद्धिवादी वर्ग के प्रति चिन्ता और इसके उपयोग की नीति में प्रवेश करना चाहिए।

इसके प्रति चिन्ता ! इस बीच हमारे न्यायोचित आक्रोश को क्या हो गया ? हमारे वे सब भयंकर अभियोग कहां चले गये ? वास्तव में इन्हीं दिनों चीनी मिट्टी का सामान वाले उद्योग में तोड़फोड़ करने वालों के ऊपर मुकदमा चल रहा था। (ये लोग वहां भी अपने गन्दे कारनामों में लगे थे !) सब प्रतिवादियों ने एक स्वर से दूसरे के ऊपर अभियोग लगाया और प्रत्येक अभियोग की स्वीकारोक्ति की— और तभी अचानक वे सब एक स्वर में चिल्ला उठे : "हम निर्दोष हैं !" और उन्हें गिरफ्तार कर दिया गया !

(इस वर्ष एक वापस लौटने वाली छोटी-सी लहर भी आयी : कुछ ऐसे इंजीनियरों को, जिन्हें सज़ा सुना दी गयी थी अथवा जिनसे पूछताछ चल रही थी उन्हें रिहा कर दिया गया। इस प्रकार डी० ए० रोभांस्की वापस लौट आया। क्या हमें यह नहीं कहना चाहिए कि वे स्तालिन से द्वन्द्व युद्ध में जीत गए थे ? और यदि लोग अपने नागरिक उत्तरदायित्वों के उपयोग में वीरता से काम लेते तो यह अध्याय अथवा यह पूरी पुस्तक लिखने का ही कोई कारण नहीं था, कोई आवश्यकता नहीं थी)।

इसी वर्ष स्तालिन लम्बे अरसे से धराशायी मेनशेविकों को अपने खुर के नीचे कुचल रहा था। (मार्च १९३१ में "मेनशेविकों के अखिल संघ कार्यालय" के सदस्यों पर सार्वजनिक मुकदमा चलाया गया। और ग्रोमन, सुखानोव[२२], और याकुबोविच के अलावा कुछ छिटपुट और अघोषित गिरफ्तारियां भी हुईं।)

और तभी अचानक स्तालिन ने "पुनर्विचार" किया।

श्वेत सागर के तट पर रहने वाले लोग ज्वार के सम्बन्ध में कहते हैं कि पानी

पुनर्विचार करता है। अर्थात् यह विचार पानी के उतरने अथवा भाटा शुरू होने से पहले क्षण होता है। वास्तव में स्तालिन की गन्दी आत्मा की तुलना श्वेत सागर के पानी से करना अनुचित होगा। और संभवतः यह भी हो सकता है कि उसने कभी भी किसी भी बात पर पुनर्विचार नहीं किया। और न ही भाटा आया। लेकिन इस वर्ष एक और चमत्कार हुआ। सन् १९३१ में, प्रोमपार्टी के मुकदमे के बाद, श्रमजीवी किसान पार्टी के ऊपर जबर्दस्त प्रचार के साथ मुकदमा चलाने की तैयारियां की जा रही थीं—यह मुकदमा इस आधार पर चलाया जाना था कि गांवों के बुद्धिवादी वर्ग में, जिनमें उपभोक्ता और कृषि सहकारी समितियों के नेता और अधिक विकसित किसानों का ऊपरी वर्ग शामिल था, बड़े पैमासे पर गुप्त गतिविधियां करने के लिए संगठन बन रहे थे (जबकि वास्तव में यह कभी नहीं हुआ) और इस संगठन का उद्देश्य सर्वहारा वर्ग की तानाशाही का तख्ता उलट देना था। प्रोमपार्टी के मुकदमे के दौरान इस श्रमजीवी किसान पार्टी—टी० के० पी०—का उल्लेख किया गया था मानो यह पहले से ही जानीमानी पार्टी हो और इसके सदस्य हिरासत में लिये जा चुके हैं। जी० पी० यू० के पूछताछ अधिकारी बड़ी सतर्कता से और कोई भी खामी छोड़े बिना काम कर रहे थे। हजारों प्रतिवादी पहले ही टी० के० पी० का सदस्य होने और इसकी अपराधपूर्ण योजनाओं में हिस्सा लेने की पूरी स्वीकारोक्ति कर चुके थे और जी० पी० यू० ने यह वचन दिया था कि वह इस पार्टी के दो लाख "सदस्यों" को गिरफ्तार करेगी। यह बताया गया था कि पार्टी का "अध्यक्ष" कृषि अर्थशास्त्री अलैक्सान्द्र वासिलएविच चायानोव है; भावी, "प्रधानमंत्री" एन० डी० कोन्द्रातएव है। एल० एन० युरोवस्की; माकारोव और तिमिरयाजेव अकादमी का प्रोफेसर इलैक्सेई दोयारेंको भी इसमें शामिल हैं (जिसे भावी कृषि मंत्री बताया गया)।[२३]

तभी अचानक, एक खूबसूरत रात को, स्तालिन ने पुनर्विचार किया। क्यों ? सम्भवतः हमें कभी भी इस बात की जानकारी नहीं मिलेगी। क्या वह सम्भवतः अपनी आत्मा को बचा लेना चाहता था ? नहीं इसका अभी समय नहीं आया था, ऐसा ही लगता है। क्या उसकी विनोद भावना उभर आयी थी—क्या यह इतना अधिक संघातिक, नीरस इतना कड़वे स्वाद का था ? लेकिन कोई भी व्यक्ति कभी भी स्तालिन के ऊपर यह आरोप लगाने का दुस्साहस नहीं कर सकता कि उसमें विनोद भावना थी ! सबसे अधिक संभावित बात यही दिखायी पड़ती है कि स्तालिन ने यह गणना कर ली थी कि वे दो लाख लोग ही नहीं, बल्कि पूरा देहात बहुत जल्दी ही अकाल की भेंट चढ़ जायेगा, तो इन्हें मारने का कष्ट उठाने की क्या जरूरत है ! और तत्क्षण टी० के० पी० के इस मुकदमे को रद्द कर दिया गया। जिन सब लोगों ने स्वीकारोक्तियाँ की थीं, उन्हें बताया गया कि वे अपनी स्वीकारोक्तियों को अस्वीकार कर सकते हैं (हम इन लोगों के आनन्द की कल्पना कर सकते हैं।) और इतने बड़े पैमाने पर लोगों की गिरफ्तारी और उन्हें दण्ड दिए जाने के स्थान पर कोन्द्रान्तएव और चायानोव की एक छोटी सी टोली को ही गिरफ्तार किया गया और उस पर मुकदमा चलाया गया।[२४] (सन् १९४१ में भयंकर यातना का लक्ष्य बने वावीलोव के ऊपर यह अभियोग लगाया गया था कि टी० के० पी० का अस्तित्व है, और वह उसका अध्यक्ष था)।

एक पैराग्राफ के ऊपर दूसरे पैराग्राफ का ढेर लगता जाता है एक वर्ष के बाद दूसरा वर्ष आता जाता है, पर इसके बावजूद हमारे पास वह तरीका नहीं है, जिसके द्वारा

हम प्रत्येक घटना का सिलसिलेवार विवरण दे सकें। (लेकिन जी० पी० यू० ने बड़े प्रभावशाली ढंग से अपना काम किया। जी० पी० यू० किसी भी बात की उपेक्षा नहीं करती!) लेकिन हमें सदा यह याद रखना चाहिए :

० धर्म में श्रद्धा रखने वाले लोगों को वस्तुतः निरन्तर गिरफ्तार किया जा रहा था। (यद्यपि कुछ विशेष तारीखें और अवधियां ऐसी होती थीं कि बड़ी संख्या में गिरफ्तारियां की जाती थीं। सन् १९२९ में क्रिसमस के पहले दिन लेनिनग्राद में "धर्म के विरुद्ध संघर्ष की रात" मनायी गयी। जब उन्होंने बड़ी संख्या में धार्मिक बुद्धिवादियों को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें केवल अगले दिन सुबह तक ही हिरासत में नहीं रखा। और हम इसे निश्चय ही "क्रिसमस की कहानी" नहीं कह सकते। इसके बाद फरवरी १९३२ में लेनिनग्राद में ही एक साथ अनेक गिरजाघरों को बन्द कर दिया गया और बड़े पैमाने पर पादरियों की गिरफ्तारी की गयी। इसके अलावा भी अनेक तारीखें और स्थान हैं, लेकिन हमें किसी भी व्यक्ति ने इनकी सूचना नहीं दी है।)

० आर्थोडाक्स चर्च के अलावा ईसाई धर्म के अन्य सम्प्रदायों पर भी प्रहार किया गया, जिनमें वे सम्प्रदाय भी शामिल थे, जो साम्यवाद के प्रति सहानुभूति रखते थे। (इस प्रकार १९२९ में उन लोगों ने सोची और खोस्ता के बीच के प्रत्येक कम्यून के एक एक सदस्य को गिरफ्तार किया। ये कम्यून हर वस्तु का संचालन करते थे—उत्पादन और वितरण दोनों का काम इनके हाथ में था—और यह काम साम्यवादी आधार पर होता था और यह कार्य उचित ढंग से और ईमानदारी से किया जाता था। यह काम जिस तरीके से किया जा रहा था; उसे देश के शेष भाग में सौ वर्ष में भी नहीं किया जा सकेगा। लेकिन इन लोगों को आवश्यकता से अधिक साक्षर माना गया; इन लोगों ने धार्मिक साहित्य का अच्छा अध्ययन किया था और अनीश्वरवाद उनका दर्शन नहीं था। इसमें ईसाई धर्म के बैपिस्ट सम्प्रदाय और तोलसतोय के विश्वासों के साथ-साथ योग का भी समावेश कर दिया गया था। यह दिखायी पड़ा कि ऐसा एक कम्यून निश्चय ही अपराधपूर्ण होगा और यह कभी भी लोगों को सुखी नहीं कर सकता)।

० १९२० के बाद के वर्षों में तोलसतोयवादियों के बड़े समूह को अलताई पहाड़ियों की तराई में निष्कासित कर दिया गया और वहां उन लोगों ने बैपिस्ट सम्प्रदाय के लोगों के साथ मिलकर सामूहिक बस्तियां बसाईं। जब कुज़नेतस्क औद्योगिक क्षेत्र का निर्माण शुरू हुआ, तब इन बस्तियों ने इस उद्योग क्षेत्र के लिए खाने पीने की चीजें भेजीं। इसके बाद गिरफ्तारियां शुरू हो गईं। पहले अध्यापकों को (ये लोग सरकारी कार्यक्रम के अनुसार शिक्षा नहीं दे रहे थे) गिरफ्तार किया गया और बच्चे उन कारों के पीछे चिल्लाते हुए दौड़े जिनमें उनके अध्यापकों को गिरफ्तार करके ले जाया जा रहा था। और इसके बाद कम्यून नेताओं को पकड़ लिया गया।

० सोलीटेयर का जबर्दस्त खेल, जिसे सबसे पहले समाजवादियों के साथ खेला गया था, निरन्तर जारी रहा, बेरोकटोक—वस्तुतः।

० सन् १९२९ में ही उन इतिहासकारों को भी गिरफ्तार कर लिया गया, जिन्हें समय रहते विदेश नहीं भेजा जा सका था : प्लातोनोव, तार्ले, ल्यूवावस्की, गोत्य, लिखाचेव, इसमेलोव और प्रसिद्ध साहित्यिक विद्वान् एम० एम० बाख्तिन।

० देश के एक छोर से दूसरे छोर तक विभिन्न जातियों को गिरफ्तार कर द्वीपसमूह

भेजा जा रहा था। याकुत जाति के लोगों को सन् १९२८ के विद्रोह के बाद गिरफ्तार कर लिया गया था। गुरजात-मंगोले लोगों को १९२९ के विद्रोह के बाद जेलों में भरा गया—और लोग कहते हैं कि लगभग ३५,००० को गोली से उड़ा दिया गया था, यह एक ऐसी संख्या है, जिसकी पुष्टि करना असम्भव है। कज्ज़ाकों को उस समय जेलों में ठूंसा गया, जब बुदेनी की घुड़सवार पलटन ने बड़ी वीरता से १९३० और १९३१ में इनके विद्रोहों को कुचल डाला। सन् १९३० के आरम्भ में यूक्रेन स्वतंत्रता संघ के सदस्यों पर मुकदमा चलाया गया (प्रोफेसर एफ्रेमोव, चेखोवस्की, नाइकोवस्की, आदि) और हमारे देश में सार्वजनिक और गुप्त के बीच जो अनुपात रहता है, उसकी जानकारी के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इनके बाद कितने और लोगों को गिरफ्तार किया गया ? कितने लोगों को चुपचाप गिरफ्तार कर लिया गया ?

इसके बाद वह समय आया—यह सच है कि यह समय धीरे-धीरे लेकिन निश्चय-पूर्वक आया — जब शासक पार्टी के सदस्यों को भी जेल जाने का मौका मिला ? पहले—१९२७ से १९२९ तक—यह प्रश्न "श्रमिकों के विरोध" का था। अर्थात् दूसरे शब्दों में यह ट्राटस्कीवादियों का मामला था, जिन्होंने अपने लिए इतने अधिक असफल नेता का चुनाव कर लिया था। आरम्भ में इनकी संख्या सैंकड़ों में थी; जल्दी ही इसे हज़ारों में बदल जाना था। लेकिन पहला कदम ही सबसे मुश्किल कदम होता है ! इन ट्राटस्कीवादियों ने दूसरी पार्टियों के सदस्यों की गिरफ्तारी को जिस सहमति से देखा था, उसी सहमति के भाव से अब पार्टी के शेष सदस्यों ने ट्राटस्कीवादियों को गिरफ्तार होते हुए देखा। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति की बारी आएगी। आगे चल कर उस "दक्षिणपंथी विरोध" का मामला सामने आएगा, जिसका अस्तित्व ही नहीं था और धीरे-धीरे उस भयंकर पशु की तरह जिसकी कभी भूख ही नहीं मिटती कम्युनिस्ट पार्टी भी अपने एक-एक अंग को, दुम से शुरू करके, पूरे शरीर को ही, सिर तक समस्त शरीर को निगल जाएगी, आत्मसात कर जाएगी।

सन् १९२८ से वह समय शुरू हुआ, जब बुर्जुआ वर्ग के पीछे चलने वाले उन हाल के लोगों को जबावदेही के लिए पेश किया गया, जिन्हें नई आर्थिक नीति के समर्थक कहा जाता है। सामान्य तरीका यह था कि उनके ऊपर निरन्तर बढ़ते जाने वाले कर लगाये जाएं और अन्ततः इन करों की राशि इतनी अधिक बढ़ा दी जाए कि ये असहाय हो उठें। अब एक क्षण ऐसा आएगा, जब वे और आगे कर चुकाने की स्थिति में नहीं होंगे, तब उन्हें तुरन्त दिवालिया होने के अभियोग पर गिरफ्तार कर लिया जाएगा और उनकी समस्त सम्पत्ति को ज़ब्त कर लिया जाएगा। (छोटा-मोटा धन्धा करने वाले लोगों को भी, जैसे नाइयों, दर्जियों और यहां तक कि प्राइमस स्टोवों की मरम्मत करने वालों तक से उनके लाइसेंस छीन लिए गए और उन्हें अपना व्यापार चलाने की अनुमति नहीं दी गई)।

नई आर्थिक नीति से सम्बन्धित आदमियों की गिरफ्तारी की लहर के पीछे एक आर्थिक उद्देश्य था। राज्य को सम्पत्ति और सोने की आवश्यकता थी और उस समय तक कोलिमा जैसे शिविरों की स्थापना नहीं हुई थी। सोने का प्रसिद्ध ज्वर १९२९ के अन्त में शुरू हुआ था। इस ज्वर ने केवल उन्हीं व्यक्तियों को नहीं ग्रस लिया, जो सोने की तलाश में थे, बल्कि उन लोगों को भी, जिनसे यह छीना जा रहा था। इस नई "स्वर्ण" लहर की एक विशेषता यह थी कि जी० पी० यू० इन खरगोशों के ऊपर वस्तुतः कोई अभियोग

नहीं लगा रही थी, बल्कि बल प्रयोग के द्वारा उनका सोना छीन लेना चाहती थी। इस प्रकार जेलें खचाखच भर गईं, पूछताछ अधिकारी थकान से पस्त हो गए, लेकिन संक्रमण जेलों, कैदियों को ले जाने वाली रेलगाड़ियों और शिविरों में अपेक्षाकृत कम कैदी ही पहुंचे।

"स्वर्ण" लहर में किन लोगों को गिरफ्तार किया गया? उन सब लोगों को गिरफ्तार किया गया, जो किसी न किसी समय, १५ वर्ष पहले भी किसी निजी व्यापार में लगे थे, जिन्होंने कोई खुदरा व्यापार किया था, अथवा किसी दस्तकारी या धन्धे से पैसा कमाया था और इस कारण से, जी० पी० यू० के निष्कर्षों के अनुसार, सोना संचय करने की स्थिति में थे। लेकिन हुआ यह कि अक्सर इनके पास सोना ही नहीं होता था। इन लोगों ने अपना धन, मकानों अथवा सिक्योरिटियों में लगा दिया था, जो समाप्त हो गई थीं अथवा जिन्हें क्रान्ति ने छीन लिया था और अब उनके पास कुछ भी नहीं बचा था। वस्तुत: दांत के डाक्टरों, सर्राफों और घड़ीसाजों की गिरफ्तारी से उन्हें बहुत आशा जगी थी। अभियोग के द्वारा अत्यधिक अप्रत्याशित स्थानों पर सोने की मौजूदगी का पता चल सकता था; खराद पर काम करने वाले एक पुराने मजदूर को न जाने कहां से ज़ार-शाही के जमाने के सोने के पांच-पांच रूबल के साठ सिक्के मिल गए थे और वह उन्हें दबाये बैठा था। पीटर्सबर्ग के एक तातार ने कहीं सोना छिपा रखा था। ये घटनाएं हुईं अथवा नहीं इनकी जानकारी केवल जेलों की दीवारों के भीतर ही मिल सकती थी। अमुक व्यक्ति ने सोना छिपा रखा है, यह आरोप लगने पर उस व्यक्ति को उसका सर्वहारा परिवार में जन्म अथवा क्रान्तिकारी सेवाएं कुछ भी नहीं बचा सकता था। सबको गिरफ्तार कर लिया गया, सबको जी० पी० यू० की जेलों की कोठरियों में इतनी बड़ी संख्या में भर दिया गया, जितनी बड़ी संख्या में गिरफ्तारी उस समय तक सम्भव नहीं समझी गई थी—लेकिन इससे भलाई ही हुई : इस प्रकार वे तेज़ी से सोना उगल सकते थे! स्थिति यहां तक उलझ गई, चारों ओर इतनी गड़बड़ फैली कि पुरुषों और स्त्रियों को जेल की एक ही कोठरी में कैद रखा गया और उन्हें एक दूसरे की उपस्थिति में कोठरी में रखी पाखाने की बाल्टी का इस्तेमाल करना पड़ा—इन भद्रताओं की कौन चिन्ता करता है? हमें अपना सोना दो, जहरीले सपोलिए! पूछताछ अधिकारी अभियोगों का विवरण तैयार नहीं करते थे, क्योंकि किसी को भी उनके कागजों की ज़रूरत नहीं थी। और सज़ा सुनाई गई अथवा नहीं इस बात में भी प्राय: कोई दिलचस्पी नहीं थी। केवल एक बात महत्वपूर्ण थी : अपना सोना हमें दो, जहरीले सपोलियो! राज्य को सोने की ज़रूरत है और तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं है। पूछताछ अधिकारियों में अब न तो बोलने की शक्ति रह गई थी और न ही धमकियां और यातनाएं देने की। बस, उन्होंने एक सर्वव्यापी तरीका अपना रखा था—कैदियों को केवल नमकीन भोजन दो और पीने के लिए पानी मत दो। जो व्यक्ति सोना उगलता था, उसे पानी मिलता था! ताजे पानी के एक प्याले के लिए सोने का एक टुकड़ा।

प्राणहीन धातु के लिए लोग अपने प्राण देते हैं।

यह लहर आने से पहले की और बाद की लहरों से भिन्न थी। यद्यपि इसके अन्तर्गत जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया था, उनमें से आधे से कम के हाथों में ही अपने भाग्य का निपटारा था। यदि सचमुच आपके पास सोना नहीं था, तो आपकी स्थिति पूरी तरह निराशाजनक थी। आपको मारा-पीटा जायेगा, आपके शरीर को जलाया

जाएगा, यातनाएं दी जाएंगी और मृत्यु के मुँह में पहुँचने की सीमा तक आपको भाप भरी कोठरी में बन्द रखा जाएगा अथवा यह तभी बन्द होगा, जब वे किसी प्रकार आप पर विश्वास कर लें। यदि आपके पास सोना है, तो आप स्वयं यह निर्णय कर सकते हैं कि आप कितनी यातना सहने को तैयार हैं। आप अपनी सहनशक्ति की सीमा और स्वयं अपने जीवन मरण का निर्णय कर सकते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह स्थिति सरल नहीं, बल्कि अधिक कठिन थी, क्योंकि यदि आप गलती कर बैठते हैं, तो जीवन भर आप की आत्मा इसके लिए आपको दोष देती रहेगी। वस्तुतः ऐसा प्रत्येक व्यक्ति, जिसने संस्था के नियमों को अच्छी तरह से समझ लिया हो, आसानी से अपना सोना दे देगा—और यही आसान रास्ता था। लेकिन बहुत तत्परता से भी सोना देना गलत था। वे इस बात पर भरोसा नहीं करेंगे कि आपने सारा सोना दे डाला है और वे आपको जेल में ही बन्द रखेंगे। लेकिन आपके लिए यह भी गलत होगा कि आप आवश्यकता से अधिक समय तक इन्तजार करते रहें। इसका परिणाम आपकी मृत्यु हो सकता है अथवा वे नोचतापूर्वक आपको कैद की सज़ा सुना सकते हैं। एक तातार ने समस्त यातनाएं सहीं! वह कहता रहा कि उसके पास सोना नहीं है! उन्होंने उसकी पत्नी को भी गिरफ्तार कर लिया और उसे यातनाएं दीं। लेकिन तातार अपनी इसी बात पर अड़ा रहा—सोना नहीं है! इसके बाद उन लोगों ने उसकी पुत्री को गिरफ्तार कर लिया। अब तातार इसे बर्दाश्त नहीं कर सका। उसने एक लाख रूबल उगल दिए। बस, उन लोगों ने उसके परिवार को तो छोड़ दिया, लेकिन उसे जेल की सज़ा सुना दी। लुटेरों के बारे में जो भद्दी से भद्दी जासूसी कहानियां और नाटक हैं, उन्हें सचमुच विशाल राष्ट्रीय पैमाने पर वास्तविक जीवन में खेला गया।

चौथा दशक शुरू होने से पहले पासपोर्ट प्रणाली चालू करने के परिणामस्वरूप शिविरों को काफी बड़ी संख्या में नए कैदी मिले। जिस प्रकार पीटर प्रथम ने सामाजिक ढांचे को सरल बनाया था, पुराने रूस की वर्ग प्रणाली की सब सिलवटों को निकाल दिया था, उसी प्रकार हमारी समाजवादी पासपोर्ट प्रणाली ने, विशेष रूप से बीच के कीड़े-मकोड़ों को झाड़ू लगा कर, एक ओर कर दिया। इसने आबादी के उस चालाक और बेघर हिस्से पर भी प्रहार किया, जो किसी भी वस्तु से नहीं बंधा था। आरम्भिक चरणों में लोगों ने इन पासपोर्टों के बारे में अनेक गलतियां कीं—जिन लोगों ने अपने निवास के भूतपूर्व स्थानों पर अपने नाम दर्ज नहीं कराये थे और जिन लोगों ने अपने निवास के भूतपूर्व स्थानों को छोड़ने की बात को दर्ज नहीं कराया था, उन्हें द्वीपसमूह भेज दिया गया, चाहे एक वर्ष के लिए ही सही।

और इस प्रकार लहरें तेजी से आती रहीं, झाग उठाती हुई, आगे बढ़ती रहीं। लेकिन इन सब लहरों के ऊपर, १९२९-१९३० में सम्पत्ति से वंचित किये गए कुलकों की विशाल लहर हर-हरा कर आई, जिसने करोड़ों कुलकों को आत्मसात कर लिया। यह कल्पनातीत रूप से विशाल लहर थी और इसे अत्यधिक विकसित सोवियत पूछताछ जेलों के विशाल जाल तक में समेटा नहीं जा सकता था। (और ये जेलें पहले ही "स्वर्ण" लहर से भरी पड़ी थीं)। इस लहर ने, जेलों को एक ओर छोड़ दिया। यह सीधे संक्रमण जेलों और शिविरों में पहुंची, कैदियों को शिविरों में पहुंचाने वाली रेलगाड़ियों और उनके माध्यम से सीधे गुलाग देश में जा पहुंची। आकार मात्र की दृष्टि से यह पीछे न

हटने वाली ज्वार की लहर (यह सचमुच एक महासागर थी) उस हर सीमा को पार कर चुकी थी, जिसकी कल्पना किसी विशाल देश की दंड प्रणाली के अन्तर्गत की जा सकती थी। रूस के पूरे इतिहास में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं है, जिसकी इससे तुलना की जा सके। यह एक समस्त जाति को बलपूर्वक अन्यत्र बसाने का उदाहरण था, यह एक जातीय विनाश की मिसाल थी। लेकिन जी० पी० यू० गुलाग की धाराओं ने इतनी चतुरता से इसकी व्यवस्था की कि शहरों को इस लहर का ज्ञान तक न होता, यदि उनके ऊपर तीन वर्ष का एक विचित्र अकाल न आ टूटता—यह एक ऐसा अकाल था, जो बिना किसी सूखे के, बिना किसी युद्ध के पड़ा था।

यह लहर अपने से पहले की उन समस्त लहरों से भी भिन्न थी, क्योंकि किसी भी व्यक्ति ने सबसे पहले परिवार के मुखिया को गिरफ्तार करने और बाद में यह सोचने का झंझट मोल नहीं लिया कि अब परिवार के सदस्यों का क्या किया जाए। इसके विपरीत इस लहर में उन्होंने पूरे के पूरे घरों को, पूरे के पूरे परिवारों को एक साथ समेट लिया; और अत्यधिक सतर्कता से इस बात पर नज़र रखी कि एक भी बच्चा, चाहे वह १४ वर्ष का हो, १० का हो या ६ साल का भी इससे बचने न पाये : प्रत्येक को, अन्तिम व्यक्ति को उसी मार्ग से आगे बढ़ना था, उसी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए विनाश के गर्त में गिरना था। (कम से कम आधुनिक इतिहास में यह अपने किस्म का पहला प्रयोग था। आगे चलकर हिटलर ने यहूदियों पर इसे आजमाया और फिर स्वयं स्तालिन ने उन जातियों पर, जो उसके प्रति वफादार नहीं थीं अथवा जिनकी वफादारी पर उसे विश्वास नहीं था।)

इस लहर में उन कुलकों की संख्या प्रायः नगण्य थी, जिनके नाम पर इस लहर का नामकरण किया गया था। इस नामकरण का उद्देश्य लोगों की आंखों पर पर्दा डालना था। रूसी भाषा में कुलक वह कंजूस और बेईमान देहाती व्यापारी होता है, जो अपने श्रम से नहीं, बल्कि किसी दूसरे के श्रम से, ब्याज की अत्याधिक ऊंची दर पर सूदखोरी और दलाल के रूप में काम करते हुए अमीर बन जाता है। प्रत्येक स्थान पर क्रान्ति से पहले भी, इन कुलकों को आप अंगुलियों पर गिन सकते थे। और क्रान्ति ने इनकी गतिविधि के आधार को ही पूरी तरह नष्ट कर डाला था। आगे चलकर, १९१७ के बाद, अर्थ परिवर्तन के द्वारा कुलक नाम का प्रयोग (सरकारी कागज-पत्रों और प्रचार साहित्य में और वहां से सामान्य शब्दावली में) उन सब लोगों के लिए किया जाने लगा, जो किसी भी रूप में मजदूरों को अपने यहां मजदूरी देकर काम पर लगाते थे चाहे उन्होंने यह काम एकदम अस्थाई रूप से बहुत थोड़े समय के लिए उस समय किया हो, जब स्वयं उनके परिवार में पर्याप्त सदस्य काम करने के लिए उपलब्ध नहीं थे। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि क्रान्ति के बाद ऐसे किसी भी काम के लिए उचित से कम मजदूरी देना असम्भव था—गरीबों की समितियां और ग्राम सोवियत, भूमिहीन खेत मजदूरों के हितों की निगरानी करती थीं। ज़रा कोई व्यक्ति किसी भूमिहीन खेत मज़दूर को ठगने की कोशिश तो करे! वास्तव में, आज भी सोवियत संघ में उचित मज़दूरी देकर श्रमिकों को अपने यहां काम पर लगाने की अनुमति है।

लेकिन इस भयावह शब्द कुलक के अर्थ का विस्तार निरन्तर बिना किसी ढीलढाल के होता रहा और १९३० तक सब अच्छे किसानों को इसी नाम से पुकारा जाने लगा—

ऐसे सब मजदूरों को जो अपनी खेती-बाड़ी का काम अच्छे ढंग से करते थे, जो लगन और मेहनत से काम करते थे, अथवा वे लोग भी जिनके दृढ़ विश्वास थे। कुलक शब्द का प्रयोग किसान समुदाय की शक्ति को नष्ट करने के लिए किया गया। हमें याद रखना चाहिए, हमें अपनी आंखें खोल लेनी चाहिएं। भूमि सम्बन्धी महान् आदेशों को जारी हुए केवल एक दर्जन वर्ष ही बीते थे और यह वह आदेश था, जिसके बिना किसान लोग बोलशेविकों के पीछे चलने से इनकार कर देते और जिसके बिना अक्तूबर क्रान्ति विफल हो जाती। भूमि का वितरण परिवार के सदस्यों की संख्या के अनुसार समान रूप से किया गया। लाल सेना की सेवा से वापस लौटे किसानों को अभी केवल ९ वर्ष ही हुए थे और वे उस ज़मीन पर खेती में जुट गए थे, जो उन्होंने गृह-युद्ध के दौरान हथिया ली थी। तभी अचानक कुलक और गरीब किसान पैदा हो गए। यह कैसे हो सकता है? कभी कभी यह अन्तर किसानों के पास आरम्भ में मौजूद पशुधन और खेती के औजारों के अन्तर के परिणामस्वरूप हुआ; कभी-कभी परिवार के सदस्यों में कितने बड़े-छोटे लोग हैं, इस पर भी इसका परिणाम निर्भर रहा। लेकिन क्या अधिकांश मामलों में यह कठोर श्रम और लगन के कारण नहीं हुआ? और अब इन किसानों को, जिनके अनाज ने १९२८ में रूस का पेट भरा था, स्थानीय निकम्मे लोगों और बाहर से भेजे गए लोगों ने अत्यन्त जल्दबाज़ी में उखाड़ फेंका। पागल पशुओं की तरह "मानवीयता" की समस्त संकल्पनाओं और सहृदयता का त्याग कर, उन समस्त मानवीय सिद्धान्तों को ठुकरा कर, जिन्हें एक हजार वर्ष की अवधि में मनुष्य ने विकसित किया था, इन लोगों ने सर्वोत्तम किसानों और उनके परिवारों के सदस्यों को गिरफ्तार करना और अपनी समस्त सम्पत्ति से वंचित कर प्रायः नंगे ही उत्तर के बियाबान इलाकों में, भयानक शीतग्रस्त इलाकों और दलदल भरे जंगलों में हांकना शुरू कर दिया।

इतने बड़े पैमाने पर लोगों को उनके घरों से निकाल फेंकने के आगे चल कर बुरे प्रभाव अनिवार्य थे। यह भी आवश्यक हो गया था कि गांवों को उन किसानों से भी मुक्त कर दिया जाये, जिन्होंने सामूहिक खेतों में शामिल होने के प्रति अनिच्छा दिखाई थी, अथवा जिन्होंने सामूहिक जीवन के प्रति रुझान का अभाव प्रदर्शित किया था, क्योंकि यह एक ऐसा जीवन था, जिसे उन्होंने कभी भी अपनी आँखों से नहीं देखा था, जिसके बारे में वे कुछ भी नहीं जानते थे और जिस पर वे संदेह करते थे। (और अब हम जानते हैं कि उनके संदेह कितने ठोस आधार पर आधारित थे) उन्हें संदेह था कि सामूहिक जीवन का अर्थ, बलात् श्रम का जीवन और लोफरों के नेतृत्व में अकाल होगा। इसके अलावा उन किसानों से भी छुटकारा पाना ज़रूरी था, जिनमें से कुछ किसी भी रूप में समृद्ध नहीं थे, लेकिन जिन्होंने अपने साहस, शारीरिक शक्ति, निश्चय की दृढ़ता, बैठकों में निर्भिकतापूर्वक विचार प्रकट करने और अपनी न्यायप्रियता के कारण अपने साथी ग्रामवासियों में लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी और अपनी इस स्वतन्त्र प्रवृत्ति के कारण जो सामूहिक खेतों के नेतृत्व के लिए खतरा बन गए थे।[२५] इनके अलावा, प्रत्येक गांव में ऐसे लोग भी थे, जो किसी न किसी तरीके से स्थानीय आन्दोलनकारियों के मार्ग में व्यक्तिगत रूप से बाधक बने थे। अब इन लोगों से ईर्ष्या, अपमान आदि का पुराना हिसाब साफ करने का आदर्श समय आ गया था। एक वर्ग के रूप में इन नए बलि के बकरों के लिए एक नया शब्द तैयार करने की ज़रूरत थी—और यह शब्द पैदा हो चुका था। इस

समय तक इस शब्द का कोई "सामाजिक" अथवा "आर्थिक" अर्थ नहीं था। लेकिन इसकी ध्वनि बड़ी शानदार थी : "पोदकुलाचनिक—एक ऐसा व्यक्ति जो कुलकों को सहायता पहुँचाता है।" दूसरे शब्दों में, मैं आपको शत्रु का सहयोगी मानता हूँ। और यह बात आपको समाप्त कर देती है! फटे चिथड़ों में लिपटे अत्यन्त दयनीय भूमिहीन खेत मजदूर को भी बड़ी आसानी से पोदकुलाचनिक बताया जा सकता था।[२६]

और इस प्रकार इन दो शब्दों ने उस प्रत्येक वस्तु को अपनी परिधि में समेट लिया, जो गांव का सार थी, इसकी शक्ति थी, इसकी विनोद भावना की प्रखरता थी, कठोर परिश्रम के प्रति इसका प्रेम थी, इसकी प्रतिरोध शक्ति थी और इसकी आत्मा थी। इन्हें जड़ से उखाड़ फेंका गया—और गांवों का सामूहीकरण पूरा हो गया।

लेकिन सामूहीकृत गांवों से और नई लहरें शुरू हुईं : इनमें से एक लहर खेती में तोड़फोड़ करने वालों की थी। सर्वत्र इन लोगों को तोड़फोड़ करने वाले कृषि विज्ञानियों का पता चलने लगा, जो इस वर्ष तक जीवन पर्यन्त ईमानदारी से काम करते आए थे और अब उन्होंने खास उद्देश्य की पूर्ति के लिए रूस के खेतों में खर-पतवार बो दी थी। (वस्तुतः मास्को संस्था के निर्देशों पर, जिसका अब पूरी तरह भण्डाफोड़ हो चुका है, यह काम किया गया; वस्तुतः ये श्रमजीवी किसान पार्टी, टी० के० पी० के गिरफ्तार न हुए दो लाख सदस्य थे, जिनका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है)। कुछ कृषि विज्ञानी लाइसेंकों के अत्यन्त गहन निर्देशों को लागू करने में असफल रहे और एक ऐसी ही लहर में, १९३१ में, आलू की खेती के तथाकथित राजा लोर्ख को कज़ाकिस्तान में निष्कासित कर दिया गया। अन्य कृषि विज्ञानियों ने लाइसेंकों के निर्देशों का अत्यन्त सूक्ष्मता से पालन किया और इस प्रकार इन निर्देशों की व्यर्थता और मूर्खता प्रकट हुई। (सन् १९३४ में पस्कोव के कृषि विज्ञानियों ने बर्फ पर फ्लैक्स घास बोई—यह काम ठीक उसी प्रकार किया गया, जैसाकि लाइसेंकों ने आदेश दिया था। बीज फूल उठे, इन पर फफूंद लग गई और नष्ट हो गए। बड़े-बड़े खेत एक वर्ष तक खाली पड़े रहे। लाइसेंको यह नहीं कह सकता था कि बर्फ कुलक है अथवा वह स्वयं एक गधा है। उसने कृषि विज्ञानियों को कुलक बताया और उनके ऊपर अपनी टेक्नालॉजी को विकृत बनाने का अभियोग लगाया। और कृषि विज्ञानियों को साइबेरिया भेज दिया गया।) इतना ही नहीं प्रायः प्रत्येक मशीन और ट्रेक्टर केन्द्र में ट्रेक्टरों की मरम्मत के काम में तोड़फोड़ का अनुसंधान हुआ—और इस प्रकार सामूहिक खेतों के आरम्भिक वर्षों की असफलताओं का स्पष्टीकरण दिया गया।

"फसल को क्षति" सम्बन्धी एक लहर भी आई (इस क्षति की गणना उन मनमाने फसल सम्बन्धी आंकड़ों के तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा की गई थी, जिनकी घोषणा पिछली वसन्त ऋतु में "फसल निर्धारण आयोग" ने की थी)।

"रोटी बनाने के काम में आने वाले अनाज को राज्य को देने के उत्तरदायित्व को पूरा करने में असफल रहने" के परिणामस्वरूप भी एक लहर आई—जिले की कम्युनिस्ट पार्टी की समिति ने यह दायित्व अपने ऊपर लिया था और सामूहिक खेत ने उसे पूरा नहीं किया : जेल जाओ!

अनाज की बाल तोड़ लेने की भी लहर आई। खेत में रात के समय अनाज की इन बालों को तोड़ लिया जाता था—यह एकदम नए किस्म की खेती सम्बन्धी गतिविधि

थी, फसल काटने का एक नया तरीका था ! यह करते हुए जिन लोगों को पकड़ा गया, उनकी लहर छोटी नहीं थी—इसमें हजारों किसान शामिल थे, जिनमें से बहुत से वयस्क भी नहीं थे, बल्कि छोटे लड़के-लड़कियां ही थे और ऐसे बच्चे भी थे, जिनके बड़ों ने उन्हें रात के समय खेतों से बालियां तोड़ लाने के लिए भेजा था, क्योंकि उन्हें इस बात की कोई आशा नहीं थी कि सामूहिक खेत उन्हें अपने दिन के श्रम के एवज में कुछ देगा। इस कटु और अनुत्पादक व्यवसाय के लिए (यह उस अत्यन्त गरीबी का उदाहरण था। ज़ारशाही के ज़माने में सामन्तों के गुलामों के रूप में काम करने वाले किसानों की भी कभी यह हालत नहीं हुई थी) अदालतों ने जबर्दस्त सजाएं सुनाईं : उस जुर्म के लिए दस वर्ष की सजा, जिसे ७ अगस्त, १६३२ के कुख्यात कानून के अन्तर्गत समाजवादी सम्पत्ति की खतरनाक चोरी बताया गया था—इसे कैदियों की भाषा में "सात बटा आठ" का कानून कहा जाता था।

इस "सात बटा आठ" के कानून ने एक और बड़ी तथा भिन्न लहर को जन्म दिया। यह लहर पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत चलाये गये निर्माण कार्यों, परिवहन, व्यापार और उद्योग के क्षेत्र से शुरू हुई थी। एन० के० वी० डी० को बड़ी चोरियों के मामले सौंपे गये। इस बात का भी स्मरण रखना चाहिए कि अगले १५ वर्ष तक सन् १६४७ तक, विशेषकर युद्ध के वर्षों में यह लहर निरन्तर जारी रही। (सन् १६४७ में इस मूल कानून को और अधिक व्यापक और कठोर बनाया गया।)

अब हम आखिरकार सांस ले सकते हैं ! अब आखिरकार समस्त बड़ी-बड़ी लहरों का अन्त आ रहा है ! कामरेड मोलोतोव ने १७ मई १६३३ को कहा : "हम व्यापक दमन को अपना कार्य नहीं मानते।" वाह आखिरकार ! रात के समय का भय अब बीत चुका है। लेकिन वह कुत्ता बाहर क्यों भौंक रहा है ? जाओ उन्हें पकड़ लाओ। जाओ उन्हें पकड़ लाओ !

और अब हम यहां पहुंच चुके हैं। लेनिनग्राद से कीरोव लहर शुरू हो चुकी है। जब तक यह लहर जारी रही, इतने जबर्दस्त तनाव को स्वीकार किया गया कि प्रत्येक जिले की कार्य समिति में, प्रत्येक नगर में एन० के० वी० डी० का विशेष स्टाफ नियुक्त किया गया और एक "तेज" न्यायिक प्रक्रिया लागू की गई। (इससे पहले भी, धीमा होने की इसकी ख्याति नहीं थी।) और अपील करने का अधिकार नहीं था। (इससे पहले भी कभी कोई अपील नहीं हुई।) यह भी विश्वास किया जाता है कि १६३४-१६३५ में चौथाई लेनिनग्राद की शुद्धि कर दी गई थी, इसे साफ कर दिया गया था। जिन लोगों के पास एकदम सही आंकड़े हैं, जो उन्हें प्रकाशित करने के लिए तैयार हैं वे आगे आएं और इस अनुमान को गलत सिद्ध करें। (निश्चय ही, इस लहर ने केवल लेनिनग्राद को ही अपने भीतर नहीं समेटा था, इसका पूरे देश पर जो प्रभाव हुआ था, वह अव्यवस्थापूर्ण होने के साथ-साथ निरन्तरतापूर्ण भी था : असैनिक सेवाओं से उन सब लोगों को बर्खास्त कर दिया गया, जिनके पिता पादरी रह चुके थे, और इसी प्रकार समस्त भूतपूर्व अभिजातवंशी स्त्रियों और उन लोगों को भी जिनके रिश्तेदार विदेशों में थे, बर्खास्त कर दिया गया।

ऐसी विशालकाय और प्रबल लहरों के मध्य कुछ मामूली, अपरिवर्तनीय छोटी-छोटी लहरें सदा खो जाती थीं; इनके बारे में बहुत कम सुनने को मिलता था, लेकिन ये भी निरन्तर प्रवाहित रहती थीं :

० शूट्ज़बूंडलर थे, जो विएना में वर्ग संघर्ष की लड़ाइयों में हार गये थे और विश्व

सर्वहारा की पितृभूमि में शरण लेने आए थे।

o एस्पेरांतिस्त थे—मुट्ठी भर लोगों की एक टोली, जिन्हें स्तालिन ने उन वर्षों में रौंद डालने का निश्चय किया, जिन वर्षों में हिटलर भी यही काम कर रहा था।

o स्वतन्त्र दर्शन समाज के अब तक सर्वनाश से बचे लोग भी थे—जिन्हें गैर कानूनी दार्शनिक क्षेत्रों से सम्बन्धित माना जाता था।

ऐसे अध्यापक भी थे, जो शिक्षा की प्रयोगशाला की टोली नामक प्रणाली से सहमत नहीं थे। (उदाहरण के लिए १९३३ में रोस्तोव जी० पी० यू० ने नताल्या आईवानोवना बुगायेंको को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन उससे चल रही पूछताछ के तीसरे महीने में अचानक एक सरकारी आदेश में यह घोषणा की गई कि यह प्रणाली दोषपूर्ण थी और उसे छोड़ दिया गया।)

o राजनीतिक रैडक्रास के कर्मचारी भी थे और येकाटेरीना पेशकोवाके प्रयासों से यह रैडक्रास अपना अस्तित्व कायम रखने की कोशिश कर रहा था।

o उत्तर काकेशस की पहाड़ी जातियां भी थीं, जिन्हें १९ ५ के विद्रोह के लिए गिरफ्तार किया गया था। और गैर रूसी जातियों के लोग किसी न किसी क्षेत्र से निरन्तर गिरफ्तार होकर द्वीपसमूह पहुंचते रहे। (वोलगा नहर निर्माण क्षेत्र में चार राष्ट्रीय भाषाओं : तातार, तुर्की, उज़बेक और कज़्ज़ाक में समाचारपत्र प्रकाशित किए जाते थे। और स्वाभाविक है कि इन्हें पढ़ने वाले पाठक वहां मौजूद थे।)

o एक बार फिर धर्म में विश्वास रखने वालों की बारी आई थी और इस लहर में वे शामिल थे, जो रविवार के दिन काम करने को राज़ी नहीं होते थे। (अधिकारियों ने पांच और छह दिन काम के सप्ताह शुरू किये थे।) इसके अलावा सामूहिक खेतों के वे किसान थे, जिन्हें इस कारण से तोड़फोड़ की कारवाई के अन्तर्गत गिरफ्तार किया गया, क्योंकि उन्होंने धार्मिक उत्सवों पर काम करने से इन्कार किया, जैसाकि वे अपनी-अपनी खेती के जमाने से करते आ रहे थे।

o और सदा की तरह वे लोग भी थे जिन्होंने एन० के० वी० डी० का जासूस और मुखबिर बनने से इन्कार किया। (इन लोगों में वे पादरी भी थे, जो अपने समक्ष धर्म में आस्था रखने वाले लोगों द्वारा अपने पापों की स्वीकारोक्तियों की गोपनीयता का उल्लंघन करने से इन्कार करते थे। सुरक्षा संगठनों के लोग बहुत जल्दी यह समझ गये थे कि यदि पादरियों से इन स्वीकारोक्तियों का विवरण मिल सके तो ये बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं—उन्हें धर्म का एकमात्र यही उपयोग दिखाई पड़ा।)

o और आर्थोडाक्स चर्च के अलावा अन्य ईसाई सम्प्रदायों के सदस्यों को तो और भी बड़े पैमाने पर गिरफ्तार किया गया।

o और समाजवादियों के साथ सोलीटेयर का शानदार खेल निरन्तर जारी रहा।

और अन्त में वह कोटि आती है, जिसका मैंने अभी तक उल्लेख नहीं किया है। यह निरन्तर प्रवाहित रहने वाली एक लहर है : धारा १०, जिसे के० आर० ए० (क्रांति विरोधी आंदोलन) और ए० एस० ए० (सोवियत विरोधी आंदोलन) भी कहा जाता था। संभवतः धारा १० की लहर सर्वाधिक स्थाई थी। यह कभी भी नहीं रुकती थी और जब कभी कोई और लहर आती थी, उदाहरण के लिए १९३३, १९४५ और १९४९ में आने वाली लहरें, तो यह लहर और बड़ी हो जाती थी, यह और फूल उठती थी।[२७]



यह बड़ा विचित्र विरोधाभास दिखाई पड़ता है कि सर्वव्यापी और सतत जागृत सुरक्षा संगठनों का प्रायः प्रत्येक कार्य, अनेक वर्षों की अवधि में, १९२६ की दंड संहिता के असामान्य खण्ड के १४० अनुच्छेदों में से केवल एक अनुच्छेद पर ही पूरी तरह से आधारित रहा। एक समय तुर्गनेव ने रूसी भाषा की प्रशंसा के लिए अथवा नेकरासोव ने मातृभूमि रूस की प्रशंसा के लिए जितने विशेषण और प्रशंसनीय शब्द एकत्र किए थे, उससे कहीं अधिक विशेषण इस अनुच्छेद की प्रशंसा के लिए जुटाये जा सकते हैं : महान्, शक्तिशाली, भरपूर, अत्यधिक मजबूत, विविध, अत्यन्त व्यापक अनुच्छेद-५८, जिसने अपने अनुभागों की निश्चित शब्दावली में संसार के सार को ही संचित नहीं कर दिया था बल्कि इसके और अधिक व्यापक बनाई गई द्वन्द्वात्मक व्याख्या में इसे महान् विस्तार दिया गया था।

हमारे मध्य ऐसा कौन-सा व्यक्ति होगा, जिसने इसकी समस्त वस्तुओं को अपनी परिधि में समेट लेने वाले आलिंगन का अनुभव न किया हो ? समग्र सत्य यह है कि ऐसा एक भी कदम, विचार, कार्य अथवा कार्य का अभाव इस आकाश के तले नहीं है, जिसे अनुच्छेद ५८ के जबर्दस्त प्रहार के द्वारा दण्डित न किया जा सकता हो।

स्वयं इस अनुच्छेद को ऐसी व्यापक शब्दावली में अभिव्यक्त करना संभव नहीं था। लेकिन मोटे तौर पर इसकी इस प्रकार व्याख्या की जा सकी।

अनुच्छेद ५८ दंड संहिता के उस खण्ड में नहीं है, जिसका सम्बन्ध राजनीतिक अपराधों से है और कहीं भी इसे "राजनीतिक" कहकर वर्गीकृत नहीं किया गया। न ही इसे सार्वजनिक व्यवस्था और संगठित गुंडागर्दी जैसे अपराधों सहित, "राज्य के विरुद्ध अपराधों" के खण्ड के अन्तर्गत रखा गया। इस प्रकार दंड संहिता अपने अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले किसी भी व्यक्ति को राजनीतिक अपराधी नहीं बताती। सब लोग सीधे सादे ढंग से अपराधी भर होते हैं।

अनुच्छेद ५८ में १४ धाराएं हैं।

धारा १ में हमें पता चलता है कि कोई भी ऐसा कार्य (और, दंड संहिता के अनुच्छेद ६ के अनुसार, किसी कार्य का अभाव) जिसका उद्देश्य राज्य की सत्ता को कमजोर बनाना हो, क्रांति विरोधी समझा जाएगा।

मोटे तौर पर व्याख्या करने से यह स्पष्ट होता है कि यदि शिविर का कोई कैदी भुखमरी की स्थिति में अथवा थकान से बुरी तरह पस्त हो जाने पर काम करने से इन्कार करता है तो वह इस धारा के अन्तर्गत दण्डनीय है। काम न करके वह राज्य की सत्ता को कमजोर बनाता है। और इसके लिए मृत्युदण्ड का विधान है। (युद्ध के दौरान काम से हीला-हवाला करने वाले लोगों को भी मृत्यु दण्ड देने की व्यवस्था है।)

सन् १९३४ से, जब हमें एक बार फिर मातृभूमि शब्द वापस दे दिया गया, ऐसे उप-अनुभाग दण्ड संहिता में ऐसी जोड़ी गईं, उप-धाराएं जिनका सम्बन्ध मातृभूमि के प्रति विश्वासघात या द्रोह से था—१ क, १ ख, १ ग, १ घ। इन उप-धाराओं के अनुसार, सोवियत संघ की सैनिक शक्ति के विरुद्ध किए गये समस्त कार्यों के लिये मृत्युदण्ड दिया जा सकता था (१ ख), अथवा १० वर्ष की कैद की सजा दी जा सकती थी (१ क), लेकिन हल्की सजा उसी स्थिति में दी जाती थी, जब अपराध की भयंकरता को कम करने वाली

परिस्थितियां मौजूद हों और यह केवल गैर-सैनिकों को ही दी जा सकती थीं।

मोटे तौर पर इसकी इस प्रकार व्याख्या की जा सकती है : जब हमारे सैनिकों को स्वयं को युद्धबन्दी बनने देने के अभियोग पर केवल १० वर्ष की कैद की सजा दी गई (क्योंकि इस कार्य को सोवियत सैनिक शक्ति के लिए हानिप्रद समझा गया) यह कारवाई गैर-कानूनी होने की सीमा तक मानवीय भावना से भरी हुई थी। स्तालिनवादी दण्ड संहिता के अनुसार इन सबको स्वदेश लौटने पर गोली से उड़ा दिया जाना चाहिए था।

(यहां मोटे तौर पर व्याख्या का एक और उदाहरण है। मुझे १९४६ की गर्मियों में बुत्यर्की जेल में हुई एक घटना की याद है। कोई पोलैंड निवासी लेमबर्ग में उस समय पैदा हुआ था, जिस समय यह नगर आस्ट्रोहंगेरियन साम्राज्य का अंग था। दूसरा महायुद्ध शुरू होने तक वह अपने इसी जन्म के नगर में रहता रहा, जो अब पोलैंड में आ गया था। इसके बाद वह आस्ट्रिया चला गया, जहां उसने नौकरी कर ली और १९४५ में रूसियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया। इस समय तक आस्ट्रिया का लेमबर्ग, यूक्रेन का एलवोव बन चुका था। और इस कारण से उसे यूक्रेन की दण्ड संहिता ५४-१ क के अन्तर्गत दस साल की कैद की सजा दे दी गई : अर्थात् उसे अपनी मातृभूमि यूक्रेन के साथ विश्वासघात या द्रोह करने के लिए यह सजा दी गई। और पूछताछ के दौरान यह बेचारा यह सिद्ध नहीं कर सका कि जब वह विएना गया उसका उद्देश्य यूक्रेन के साथ विश्वासघात करना नहीं था ! और इस प्रकार इस व्यक्ति को देशद्रोही बनाया गया।)

देशद्रोह अथवा मातृभूमि के साथ विश्वासघात सम्बन्धी धारा को एक और महत्वपूर्ण तरीके से व्यापक बनाया जाता है। यह करने के लिए इसे "दण्ड संहिता के अनुच्छेद १९ की मार्फत"—'अपराध के इरादे' की मार्फत लागू किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि देशद्रोह नहीं हुआ; लेकिन पूछताछ अधिकारी ने देशद्रोह करने के इरादे की कल्पना कर ली—और यह कल्पना उसी प्रकार सम्बन्धित व्यक्ति को पूरी सजा देने का औचित्य सिद्ध कर देती, जिस प्रकार वास्तविक देशद्रोह के लिए दण्ड दिया जाता। यह सच है कि अनुच्छेद १९ में यह कहा गया है कि इरादे के लिए कोई सजा नहीं दी जानी चाहिए, केवल तैयारी के लिए सजा दी जानी चाहिए। लेकिन द्वन्द्वात्मक पठन और व्याख्या के आधार पर कोई भी व्यक्ति इरादे को तैयारी के रूप में समझ सकता है और "तैयारी के लिए वही सजा दी जाती है जो स्वयं अपराध के लिए" (दण्ड संहिता)। सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि "हम इरादे और स्वयं अपराध के बीच कोई अन्तर नहीं करते और यह सोवियत कानून की बुर्जुआ कानून पर श्रेष्ठता का उदाहरण है।"[२८]

धारा २ में सशस्त्र विद्रोह, राजधानी अथवा प्रान्तों में सत्ता पर अधिकार करने, विशेष रूप से बल प्रयोग के द्वारा सोवियत संघ के किसी हिस्से को उससे अलग करने के उद्देश्य से यह कार्य करने का उल्लेख है। इसके लिए मृत्यु दण्ड तक दिया जा सकता है (जैसीाक बाद की प्रत्येक धारा में व्यवस्था है)।

विस्तार करके इसका वह अर्थ कर दिया गया, जिसे स्पष्ट रूप से स्वयं इस धारा में नहीं कहा जा सकता था; लेकिन जिसके सम्बन्ध में यह अपेक्षा थी कि क्रान्तिकारी न्याय भावना स्वयं इसका सुझाव देगी। यह धारा सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ में शामिल किसी भी राष्ट्रीय गणराज्य के इससे अलग होने के प्रत्येक प्रयास पर लागू की जा सकती थी। "बल प्रयोग" शब्द के सम्बन्ध में यह नहीं बताया गया था कि इसे कौन प्रयोग करता

है। यदि किसी गणराज्य की समस्त आबादी सोवियत संघ से अलग होना चाहती है, लेकिन मास्को के शासक इसका विरोध करते हैं, तो इसे बलप्रयोग द्वारा सोवियत संघ से अलग होने का प्रयास कहा जाएगा। इस प्रकार एस्तोनिया, लतविया, लिथुवानिया, यूक्रेन और तुर्किस्तान के समस्त राष्ट्रवादियों को इस धारा के अन्तर्गत १० और २५ वर्ष की कैद की सज़ा बड़ी आसानी से दी गई।

धारा ३ "सोवियत संघ के युद्धरत किसी भी विदेशी शक्ति को किसी भी रूप में अथवा किसी भी प्रकार सहायता देने" के बारे में है।

इस धारा के अन्तर्गत ऐसे किसी भी नागरिक को दण्डित करना सम्भव था, जो शत्रु द्वारा अधिकृत क्षेत्र में रहा हो—चाहे उसने किसी जर्मन सैनिक के जूते की एड़ी में एक कील ठोकी हो अथवा उसे कुछ मूलियां बेची हों। और इस अनुभाग को किसी भी ऐसी स्त्री नागरिक पर लागू किया जा सकता था, जिसने नृत्य के द्वारा अथवा उसके साथ रात बिताकर शत्रु के किसी सैनिक की युद्ध की इच्छा और भावना को ऊंचा उठाने में सहायता दी हो। प्रत्येक व्यक्ति को इस धारा के अन्तर्गत वस्तुतः सज़ा नहीं दी गई—क्योंकि शत्रु द्वारा अधिकृत प्रदेशों में रहने वाले लोगों की संख्या अत्यधिक विशाल थी। लेकिन ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो शत्रु द्वारा अधिकृत प्रदेश में रहा हो, इसके अन्तर्गत दण्डित किया जा सकता था।

धारा ४ में अन्तर्राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग को सहायता पहुंचाने का उल्लेख है (कितना विचित्र है यह विचार)।

आप आश्चर्य में रह जाते हैं कि आखिर इस अनुभाग का संकेत किन लोगों की ओर है! पर इसके बावजूद यदि व्यापक रूप से व्याख्या की जाए और इस कार्य के क्रान्तिकारी अन्तःकरण की सहायता ली जाए तो ऐसी श्रेणियों के लोगों को ढूंढ निकालना आसान था। ऐसे समस्त प्रवासी रूसी जो १९२० से पहले देश छोड़कर चले गये थे अर्थात् वे लोग भी, जो इस दण्ड संहिता के लिखे जाने से अनेक वर्ष पहले स्वदेश छोड़कर चले गए थे और जिन्हें चौथाई शताब्दी बाद—१९४४ और १९४५ में—हमारी सेनाओं ने यूरोप में पकड़ लिया। इन सबको अनुच्छेद ५८ धारा ४ के अन्तर्गत दण्डित किया गया। १० वर्ष की कैद की सज़ा अथवा मृत्यु दण्ड। ये लोग अन्तर्राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग को सहायता देने के अलावा विदेशों में अन्य क्या करते रहे होंगे? (ऊपर हम कुछ युवक-युवतियों की संगीत संध्या का जो उदाहरण दे चुके हैं, उसमें भी हमने देखा है कि अन्तर्राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग को स्वयं सोवियत संघ के भीतर से ही सहायता पहुंचाई जा सकती है।) इसके अलावा सब समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के सदस्यों, सब मेनशेविकों (जिन्हें ध्यान में रखकर यह धारा तैयार की गयी थी) और आगे चलकर राज्य योजना आयोग और सर्वोच्च आर्थिक परिषद् के इंजीनियरों द्वारा भी यह सहायता पहुंचाई जा सकती थी।

धारा ५ किसी विदेशी राज्य को सोवियत संघ के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने के लिए भड़काने के बारे में है।

सन् १९४० और १९४१ में इस धारा को स्तालिन और उसके राजनयिक और सैनिक अधिकारियों के विरुद्ध लागू करने का मौका खो दिया गया। इन लोगों के अन्धेपन और पागलपन ने यही कार्य किया था। यदि इन लोगों ने नहीं तो किन लोगों ने रूस को ज़ारशाही के रूस की १९०४ अथवा १९१५ की पराजयों से भी कहीं अधिक शर्मनाक,

अकल्पनीय और अतुलनीय रूप से बुरी पराजयों के गर्त में धकेला ? ये ऐसी पराजय थीं, जिन्हें रूस ने १३वीं शताब्दी के बाद से नहीं जाना था।

धारा ६ जासूसी से सम्बन्धित थी।

इस धारा की व्याख्या इतने व्यापक ढंग से की गई थी कि यदि आप इस धारा के अन्तर्गत दण्डित लोगों की गणना करें, तो आप इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि स्तालिन के शासनकाल में हमारे लोग अपनी जीविका खेती या उद्योग के माध्यम से नहीं, बल्कि विदेशियों की ओर से जासूसी करने और विदेशी जासूसी संगठनों की ओर से प्राप्त धन से ही अपनी जीविका चला रहे थे। जासूसी अपनी सादगी के कारण बड़ी सुविधाजनक थी, यह बात एक अविकसित अपराधी और विद्वान न्यायविद्, पत्रकार और जनमत सबकी समझ में आती थी।[२९]

धारा ६ की व्याख्या की व्यापकता इस तथ्य में भी निहित थी कि इसके अन्तर्गत लोगों को वास्तविक जासूसी के लिए ही नहीं, बल्कि निम्नलिखित अभियोगों पर भी सजाएं दी गई :

जासूसी का संदेह अथवा अप्रमाणित जासूसी का कार्य—जिसके लिए भरपूर सजा दी जाती थी।

जासूसी का संदेह वाले लोगों से सम्पर्क तक होने पर सज़ा दी जाती थी।

दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि आपकी पत्नी की एक परिचित ने उसी दर्जिन से अपनी पोशाक सिलवाई, (जो दर्जिन वास्तव में एन० के० वी० डी० की जासूस थी) और इसी दर्जिन से किसी विदेशी राजनयज्ञ की पत्नी भी अपनी पोशाक सिलवाती थी।

अनुच्छेद ५८ की धारा ६ की जासूसी के संदेह और जासूसी के संदेह वाले लोगों से किसी भी प्रकार के सम्पर्क सम्बन्धी व्यवस्थाएं कैदी के ऊपर बुरी तरह चिपक जाती थीं। इनके अन्तर्गत दण्डित व्यक्ति को बड़ी कठोरता से कैद रखा जाता था और उसकी निरन्तर निगरानी होती थी (आखिरकार एक जासूसी संगठन किसी शिविर में कैद अपने पिच्छलग्गू की सहायता के लिए वहां तक अपने पंजे फैला सकता है।) और ऐसे कैदियों को केवल सशस्त्र सन्तरियों के पहरे में ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता था। मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि दण्ड संहिता के वे सब अनुच्छेद, जिनके साथ कुछ अक्षर जुड़े हुए थे—जो वास्तव में दण्ड संहिता के अनुच्छेद नहीं थे, बल्कि बड़े अक्षरों का भयावह सम्मिश्रण थे (और हमें इस अध्याय में इनका और परिचय प्राप्त होगा)—इन अनुच्छेदों में हमेशा पहेली के लक्षण दिखाई पड़ते थे, ये सदा समझ के बाहर दिखाई पड़ते थे और यह समझ में नहीं आता था कि ये अनुच्छेद ५८ की धाराएं हैं अथवा स्वतंत्र और अत्यधिक खतरनाक अनुच्छेद। अनेक शिविरों में इन अक्षरों वाले अनुच्छेदों के अन्तर्गत दण्डित कैदियों के ऊपर साधारण अनुच्छेद-'५८ के अन्तर्गत दण्डित लोगों से कहीं अधिक कठोर पाबंदियां लगाई जातीं थीं।

धारा-७ उद्योग, परिवहन, व्यापार और मुद्रा के प्रचार में तोड़-फोड़ के बारे में थी।

१९३० के बाद के वर्षों में बड़ी संख्या में लोगों को गिरफ्तार करने के लिए इस धारा का व्यापक रूप से उपयोग किया गया—यह कार्य अत्यधिक सरलीकृत और व्यापक रूप से समझे जाने वाले आसान शब्द तोड़फोड़ के अन्तर्गत किया गया। वास्तव में, धारा-७

के अन्तर्गत वर्णित प्रत्येक वस्तु अत्यन्त स्पष्ट रूप से प्रतिदिन तोड़फोड़ का लक्ष्य बनती थी। इस प्रकार क्या इसके लिए किसी न किसी को दोषी होना था ? शताब्दियों से लोग निर्माण और सृजन करते आ रहे थे। उन्होंने सदा यह कार्य बड़े सम्मानपूर्वक बड़ी ईमानदारी से, यहां तक कि गुलाम-किसानों के मालिक सामंतों और अभिजात वंशों के लिए किया। लेकिन रूरिक के जमाने से किसी भी व्यक्ति ने तोड़फोड़ की कारवाई का नाम भी नहीं सुना था। लेकिन अब जबकि पहली बार देश की समस्त सम्पदा का स्वामित्व स्वयं जन-सामान्य के हाथों में आ गया था, देश के लाखों सर्वोत्तम पुत्र तोड़फोड़ की कारवाई में न जाने क्यों जुट गए। (धारा-७ में खेती में तोड़फोड़ की कारवाई के लिए किसी सज़ा की व्यवस्था नहीं थी। लेकिन अब क्योंकि तर्कसम्मत तरीके से यह समझाना बड़ा कठिन था कि खेतों में खर-पतवार की बाड़ क्यों आ गई है, उपज में कमी क्यों हो रही है, मशीनें क्यों टूट जाती हैं, अतः द्वन्द्वात्मक संवेदनशीलता ने खेती को भी इसके अन्तर्गत कर दिया।)

धारा-८ आतंक से सम्बन्धित थी (यह ऊपर से होने वाले आतंक के बारे में नहीं थी, जिसके लिए सोवियत दण्ड संहिता में "वैधानिकता का आधार प्रस्तुत करने"[३०] की व्यवस्था थी, बल्कि यह नीचे से होने वाले आतंक पर लागू थी।)

आतंक को बहुत ही व्यापक अर्थों में लिया गया था। यह गवर्नरों की घोड़ा गाड़ियों के नीचे बम रखने की बात नहीं थी, बल्कि यह उस स्थिति में भी लागू की जा सकती थी, यदि आप अपने किसी व्यक्तिगत शत्रु के मुंह पर घूंसा दे मारें और वह पार्टी, युवक कम्युनिस्ट पार्टी अथवा पुलिस का कार्यकर्ता हो तो आपके ऊपर आतंक फैलाने का अभियोग लगाया जाएगा। एक आंदोलनकारी कार्यकर्ता की हत्या को एक साधारण व्यक्ति की हत्या से कहीं अधिक गंभीर अपराध समझा जाता था (जैसाकि ईसा पूर्व १८वीं शताब्दी में हमूराबी की दण्ड संहिता में होता था)। यदि कोई पति अपनी पत्नी के प्रेमी को मार डाले, तो यह उसके लिए अत्यन्त सौभाग्य का विषय होगा कि यह व्यक्ति पार्टी का सदस्य न निकले। इस स्थिति में उसे अनुच्छेद-१३६ के अन्तर्गत एक सामान्य अपराधी के रूप में सजा दी जाएगी और एक ऐसे अपराधी को "सामाजिक सहयोगी" माना जाएगा और उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए सशस्त्र सन्तरियों की ज़रूरत नहीं होगी। यदि यह प्रेमी पार्टी का सदस्य निकल आया, तो पति जनता का शत्रु बन जाएगा और अनुच्छेद-५८ की धारा-८ के अन्तर्गत दण्डित किया जाएगा।

और इस संकल्पना का एक और अधिक महत्वपूर्ण विस्तार उस समय होता था, जब उस अनुच्छेद १९ के अन्तर्गत धारा ८ की व्याख्या की जाती थी। अनुच्छेद-१९ में इरादे को तैयारी के अर्थ में लिया जाता था, और इसमें किसी शराब घर के पास किसी कार्यकर्ता को दी गई धमकी ही शामिल नहीं थी ("जरा ठहर, अभी तुझे बताता हूं !") बल्कि हाट-बाजार में किसी किसान स्त्री द्वारा चिड़चिड़ेपन से कुछ कह डालने पर भी इसे लागू किया जा सकता था ("अरे, तेरा सत्यानाश हो !")। इन दोनों कार्यों को आतंक फैलाने का इरादा बताया जाता और इस कारण से इस अनुच्छेद को उसकी समग्र कठोरता से लागू करने का आधार तैयार हो जाता।[३१]

धारा-९ विस्फोट अथवा आगजनी के द्वारा विनाश अथवा हानि पहुंचाने के बारे में थी। (और यह कार्य सदा क्रान्ति विरोधी उद्देश्यों से किया गया समझा जाता था), और इसके लिए एक संक्षिप्त अभिव्यक्ति "ध्यान बटाने की कारवाई" का इस्तेमाल किया जाता

था, जिसे दूसरे शब्दों में तोड़फोड़ की कारवाई ही कहा जा सकता था।

इस धारा का विस्तार इस तथ्य पर आधारित था कि क्रान्ति विरोधी उद्देश्य को पूछताछ अधिकारी समझ सकता था, जो सर्वोत्तम रूप से यह जानता था कि अपराधी के मन में क्या बात है। और प्रत्येक मानवीय गलती, असफलता, काम के समय गलती अथवा उत्पादन की प्रक्रिया में गलती अक्षम्य होती थी और इस कारण से इसे "ध्यान बटाने की कारवाई" समझा जाता था।

लेकिन अनुच्छेद ५८ में ऐसी कोई दूसरी धारा नहीं थी, जिसकी व्याख्या धारा १० की तरह इतनी अधिक व्यापकता और इतने अधिक उत्साहपूर्ण क्रान्तिकारी अन्त:करण के द्वारा की जाती हो। इसकी परिभाषा इस प्रकार थी : "प्रचार अथवा आंदोलन, सोवियत सत्ता का तख्ता उलटने, इसे क्षति पहुंचाने अथवा कमजोर बनाने की अपील सहित प्रचार अथवा आंदोलन...और, इसी प्रकार, ऐसे ही कथ्य अथवा विषय वस्तु वाली साहित्यिक सामग्री का प्रचार अथवा तैयारी अथवा मौजूदगी।" शान्तिकाल में इस धारा के अन्तर्गत न्यूनतम सजा की व्यवस्था की गई थी (इससे कम नहीं ! इससे हल्की नहीं !); लेकिन अधिकतम सजा की अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं की गई थी।

अपने प्रजाजनों के एक शब्द से मुकाबला होने की स्थिति में एक महान् शक्ति की निर्भीकता का यही स्वरूप था।

इस प्रसिद्ध धारा के प्रसिद्ध विस्तारों का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है : "अपील करते हुए आंदोलन" करने के अभियोग की व्यापकता को और बढ़ाकर दो मित्रों के बीच, यहां तक कि पति-पत्नी के बीच हुए वार्तालाप और एक निजी पत्र को भी शामिल किया जा सकता था। "अपील" शब्द का अर्थ व्यक्तिगत सलाह किया जा सकता था। और हम इसलिए "किया जा सकता था" का प्रयोग करते हैं, क्योंकि वास्तव में यही किया गया।

"सरकार को क्षति पहुंचाने और कमजोर बनाने" के अन्तर्गत ऐसा प्रत्येक विचार रखा जा सकता था, जो विचार उस दिन के समाचारपत्र में अभिव्यक्त विचारों के अनुरूप न हो अथवा जो अपनी उग्रता की दृष्टि से इन विचारों के स्तर का न हो। आखिरकार ऐसी कोई भी वस्तु जो मजबूत नहीं बनाती, कमजोर करेगी : वस्तुत: ऐसी कोई भी वस्तु जो पूरी तरह से शासकों के विचारों से मेल नहीं खाती, पूरी तरह से उनके अनुरूप नहीं होती क्षति पहुंचायेगी।

और आज जो हमारे स्वर में स्वर मिलाकर नहीं गाता
विरुद्ध है
हमारे
—मायाकोवस्की

"साहित्यिक सामग्री को तैयार करने" के अन्तर्गत प्रत्येक पत्र, टिप्पणी, अथवा व्यक्तिगत डायरी को रखा जाता था। उस स्थिति में भी जब केवल मूल दस्तावेज़ ही मौजूद हो।

और इसी प्रकार बड़ी प्रसन्नता से इसका विस्तार करके इसमें विचार तक को शामिल कर लिया गया था। चाहे यह विचार केवल मन में हो, इसे जोर से प्रकट किया गया हो अथवा कागज पर लिखा गया हो। एक भी ऐसा उदाहरण देना सम्भव नहीं था, जिसे धारा-१०

के अन्तर्गत न रखा गया हो।

धारा-११ एक विशेष प्रकार की धारा थी; इसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था, बल्कि पहले की किसी भी धारा में वर्णित किसी भी अपराध को यह और भयंकर बनाती थी : यदि किसी संगठन ने कोई कारवाई की हो अथवा यदि अपराधी किसी संगठन में शामिल हुआ हो।

व्यवहार में इस धारा को इतना व्यापक बना दिया गया था कि किसी भी प्रकार के संगठन की मौजूदगी की आवश्यकता नहीं रह जाती थी। मैंने स्वयं इस धारा के अत्यधिक सूक्ष्म उपयोग को देखा। हम दो मित्रों ने गुप्त रूप से विचारों का विनिमय किया था—दूसरे शब्दों में हम लोग एक संगठन की शुरूआत थे, दूसरे शब्दों में यह एक संगठन था!

धारा-१२ का सम्बन्ध बड़ी घनिष्ठतापूर्वक हमारे नागरिकों के अन्त:करण से था : इसमें ऊपर वर्णित किसी भी प्रकार के कार्यों की शिकायत करने में असफल रहने वाले लोगों को दण्डित करने की व्यवस्था थी और दूसरे व्यक्तियों पर अभियोग लगाने में असफल रहने के इस जघन्य पाप के दण्ड की कोई अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं की गई थी।

यह धारा अपने आपमें अन्य प्रत्येक वस्तु का ऐसा आश्चर्यजनक विस्तार थी कि और अधिक विस्तार की आवश्यकता ही नहीं रह जाती थी। वह जानता था और उसने नहीं बताया। इस बात का पर्याय बन गया था कि "उसने स्वयं यह किया!"

धारा-१३, जो सम्भवत: लम्बे अरसे से पुरानी पड़ चुकी है, ज़ारशाही की खुफिया पुलिस ओखराना[३२] में सेवा से सम्बन्धित है। (बाद में एक ऐसी ही सेवा को, इसके विपरीत, देशभक्ति का पर्याय मान लिया गया।)

धारा-१४ में "वर्णित कर्तव्यों को पूरा करने में जानबूझ कर असफल रहने अथवा जान बूझकर असावधानी से इन कर्तव्यों को पूरा करने" के लिए सज़ाओं की व्यवस्था थी। संक्षेप में इसे "तोड़फोड़" अथवा "आर्थिक प्रतिक्रान्ति" कहा जाता था—और इसकी सज़ाओं में, वस्तुत:, मृत्युदण्ड शामिल था।

केवल पूछताछ अधिकारी ही अपनी क्रान्तिकारी न्याय भावना से परामर्श के बाद ही यह बता सकता था कि क्या काम जान बूझकर किया गया और क्या काम अनजाने में हुआ। यह धारा उन किसानों पर लागू की गई थी, जो अनाज आदि खाने की चीजें राज्य को पहुंचाने में असफल रहे। यह उन सामूहिक खेतों के किसानों पर भी लागू हुई, जो निर्धारित न्यूनतम "श्रम दिवसों" को कार्य नहीं कर सके; यह उन शिविरों के कैदियों पर भी लागू हुई, जो अपने निर्धारित काम को पूरा करने में असफल रहे। और युद्ध के बाद यह एक विशेष टकराहट के द्वारा रूस के चोरों के, जिन्हें ब्लातन्ये अथवा ब्लातारी कहा जाता था, संगठित गुप्त समाज के उन सदस्यों पर भी लागू हुई, जो शिविरों से भाग निकलते थे। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि अर्थ विस्तार के द्वारा किसी चोर के किसी शिविर से भाग निकलने के कार्य को, शिविर प्रणाली को क्षति पहुंचाने का कार्य भी कहा जा सकता था।

यह अनुच्छेद-५८ के विशाल छतनार पंखे की अन्तिम कड़ी थी। यह एक ऐसा विशाल पंखा था, जिसने अपने भीतर समस्त मानव अस्तित्व को समेट लिया था।

दण्ड संहिता के इस महान् अनुच्छेद की समीक्षा पूरी कर लेने के बाद, अब हमें आगे किसी भी बात पर आश्चर्यचकित रह जाने की विशेष गुंजाइश नहीं रहेगी। जहां कहीं

कानून है, वहां अपराध को ढूंढ निकाला जा सकता है।



अनुच्छेद-५८ की दमिश्क की तलवार सी धार को सबसे पहले १९२७ में, इसे तैयार करने के तुरन्त बाद ही, आजमाया गया। और अगले दशक की समस्त लहरों ने इस तलवार को सान पर चढ़ा दिया। और १९३७-१९३८ की अवधि में कानून के प्रबल प्रहार ने बड़े आनंद और कुशलतापूर्वक इस तलवार का प्रयोग जन-सामान्य पर किया।

यहां यह उल्लेखनीय है कि १९३७ की कारवाई मनमाने ढंग से या संयोगवश नहीं हुई थी। काफी समय पहले ही अच्छी तरह से इसकी तैयारी कर ली गई थी और उस वर्ष की पहली छमाही में अनेक सोवियत जेलों को फिर सुसज्जित और तैयार किया गया था। कोठरियों से चारपाइयां निकाल दी गई थीं और इनके स्थान पर एक या दो मंजिले तख्ते लगा दिए गये थे। इस प्रकार कैदियों के एक के ऊपर एक लेटने की व्यवस्था की गई थी।[33] पुराने कैदियों का दावा है कि उन्हें इस बात का अच्छी तरह स्मरण है कि पहला प्रहार सामूहिक गिरफ्तारियों के रूप में हुआ, और अगस्त महीने की एक ही रात को पूरे देश में एक साथ कारवाई की गई। (लेकिन, अपने देश के आलसीपन और भद्दे ढंग से काम करने से परिचित होने के कारण, मैं वास्तव में, इस बात पर विश्वास नहीं करता।) उस शरद् ऋतु में जब लोग बड़े विश्वास से अक्तूबर क्रान्ति की २०वीं वर्षगांठ के अवसर पर, बड़े पैमाने पर राष्ट्रव्यापी क्षमादान की अपेक्षा कर रहे थे, मजाकिये स्तालिन ने दण्ड संहिता में अब तक अनसुनी १५ और २० वर्ष की कैद की सजा जोड़ दी थी।[34]

जो व्यापक रूप से लिखा जा चुका है यहां मुश्किल से ही उसकी पुनरावृत्ति करने की आवश्यकता है, और १९३७ के वर्ष के बारे में अनेक बार भविष्य में भी लिखा जायेगा : कि पार्टी के ऊपर की कोटि के नेताओं के ऊपर कुचल डालने वाला प्रहार किया गया और इसी प्रकार सरकार, सेना और स्वयं जी० पी० यू० (एन० के० वी० डी०) पर भी यह प्रहार हुआ।[35] सोवियत संघ में मुश्किल से ही ऐसा कोई प्रान्त होगा, जिसमें पार्टी समिति का प्रथम सचिव अथवा प्रान्तीय कार्य समिति का अध्यक्ष जीवित बचा हो। स्तालिन ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अधिक उपयोगी लोगों को चुन लिया था।

ओलगा चावचावाजे हमें बताती हैं कि तिबलिसी में यह कारवाई किस रूप में हुई। सन् १९३८ में नगर की कार्य समिति के अध्यक्ष, उसके प्रथम उपाध्यक्ष, विभागीय अध्यक्षों, उनके सहायकों, सब मुख्य लेखाकारों और समस्त मुख्य अर्थ-शास्त्रियों को गिरफ्तार कर लिया गया। उनके स्थान पर नए लोगों को नियुक्त किया गया। बस, दो महीने का समय बीता और फिर गिरफ्तारियां शुरू हो गई : अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, ग्यारहों विभागीय अध्यक्षों, सब मुख्यलेखाकारों और सब अर्थशास्त्रियों को गिरफ्तार कर लिया गया। केवल साधारण लेखाकार, स्टेनोग्राफर, कोयला लाने वाली स्त्रियों और संदेशवाहकों...को ही आजाद छोड़ा गया।

पार्टी के सामान्य सदस्यों की गिरफ्तारी में स्पष्टतया एक गुप्त विषय मौजूद रहता था! जिसका अभियोगपत्र अथवा अदालत के निर्णयों में कहीं भी प्रत्यक्ष रूप से उल्लेख नहीं होता था : कि गिरफ्तारियां प्रमुख रूप से पार्टी के उन्हीं सदस्यों के बीच की जानी

चाहिएं, जो १९२४ से पहले पार्टी में शामिल हुए थे। यह कार्य लेनिनग्राद में विशेष तत्परता से किया गया, क्योंकि वहां मौजूद पार्टी के सब सदस्यों ने नए विपक्ष के "कार्यक्रम" पर हस्ताक्षर किए थे। (और ये लोग हस्ताक्षर करने से कैसे इनकार कर सकते थे? ये लोग लेनिनग्राद की अपनी प्रांतीय पार्टी समिति पर "विश्वास" करने से कैसे इनकार कर सकते थे?)

उन वर्षों का एक स्मरण चिह्न यहां प्रस्तुत है, जिससे यह जानकारी मिलती है कि वास्तव में यह कारवाई किस प्रकार हुई। मास्को प्रान्त में जिला पार्टी सम्मेलन चल रहा था, इसकी अध्यक्षता जिला पार्टी समिति का नया सचिव कर रहा था, जिसकी नियुक्ति हाल में गिरफ्तार सचिव के स्थान पर हुई थी! सम्मेलन की समाप्ति पर कामरेड स्तालिन के प्रति आभार प्रकट करना और उनकी प्रशंसा में एक प्रस्ताव पारित करना अनिवार्य था। सचमुच, प्रत्येक व्यक्ति उठ खड़ा हुआ (ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार सम्मेलन की पूरी अवधि में, स्तालिन के नाम मात्र के उल्लेख से प्रत्येक व्यक्ति एकदम उठ खड़ा होता था)। छोटा सा कक्ष "जबर्दस्त करतल ध्वनि से गूंज उठा, जो निरन्तर तेज़ होती गई।" तीन मिनट तक, चार मिनट तक, पांच मिनट तक, "जबर्दस्त करतल ध्वनि जारी रही"। लेकिन लोगों की हथेलियां दुखने लगी थीं और बांहों में तो पहले ही दर्द शुरू हो गया था। और अधिक उम्र के लोगों का तो थक जाने के कारण सांस फूल गया था। जो लोग सचमुच स्तालिन की पूजा करते थे, उनके लिये भी यह असह्य रूप से मूर्खतापूर्ण कार्य होता जा रहा था। लेकिन, सबसे पहले रुकने की कौन हिम्मत कर सकता था? जिला पार्टी समिति का सचिव यह कर सकता था। वह मंच पर खड़ा था और उसी ने स्तालिन की प्रशंसा में करतल ध्वनि करने का प्रस्ताव किया था। लेकिन वह नया आदमी था। उसने उस व्यक्ति का स्थान लिया था, जिसे गिरफ्तार कर लिया गया था। वह भयभीत था! आखिरकार एन० के० वी० डी० के आदमी सभा कक्ष में खड़े हुये करतल ध्वनि कर रहे थे और यह नज़र लगाए हुये थे कि सबसे पहले कौन रुकता है! और इस अनजाने, छोटे से सभा कक्ष में सर्वोच्च नेता की जानकारी के बिना ही करतल ध्वनि ६, ७, ८ मिनट तक चलती रही! ये लोग मारे गए थे। इन लोगों का अन्त आ चुका था। ये लोग दिल का दौरा पड़कर गिर जाने तक, करतल ध्वनि बन्द नहीं कर सकते थे! खचाखच भरे कक्ष के पिछले हिस्से में खड़े लोग कुछ धोखाधड़ी कर सकते थे, वे कम बार ताली बजा सकते थे, कम तेज़ी से और कम तत्परता से ताली बजा सकते थे। लेकिन वहां सामने मंच पर खड़े लोगों की तो कल्पना कीजिए? स्थानीय कागज कारखाने का निदेशक, जो एक स्वतंत्र वृत्ति का कठोर मनोबल वाला आदमी था, मंच पर खड़ा था। इस स्थिति के मिथ्यापन और असम्भवता को जानते हुए भी वह तालियां बजाता जा रहा था। ९ मिनट १० मिनट! उसने बड़े कष्ट से जिला पार्टी के सचिव की ओर देखा। लेकिन सचिव महोदय रुकने का साहस ही नहीं कर पा रहे थे। शुद्ध पागलपन! हर व्यक्ति पागलपन से ग्रस्त! अपने चेहरों पर प्रकट रूप से उत्साह का प्रदर्शन करते हुए, एक दूसरे की ओर इस धूमिल आशा से देखते हुए जिले के नेता निरन्तर उस समय तक तालियां बजाते रहे, जब तक वे नीचे नहीं गिर पड़े। जब तक उन्हें स्ट्रेचरों पर उठा कर सभा कक्ष से बाहर नहीं ले जाया गया! और इसके बाद भी वे लोग, जो अपने पांवों पर खड़े थे, तालियां बजाना बन्द करने को तैयार नहीं थे...तब, ११ मिनट बाद, कागज कारखाने के निदेशक ने अपने चेहरे पर गम्भीरता का भाव धारण किया और अपनी

कुर्सी पर बैठ गया। और, देखिये, एक चमत्कार हुआ! वह सार्वभौम, अगम्य, अवर्णनीय उत्साह कहां अन्तर्धान हो गया? एक-एक व्यक्ति प्रत्येक व्यक्ति तत्क्षण रुक गया और अपने स्थान पर बैठ गया। वे बच गये थे? उन्हें बचा लिया गया था। गिलहरी बड़ी चालाक निकली थी। वह तेज़ी से घूम रहे पहिये से बाहर कूद भागी थी।

इस प्रकार वे लोग यह पता लगाते थे कि स्वतंत्र वृत्ति के लोग कौन हैं। और वे इस प्रकार इन लोगों को समाप्त करने का काम करते थे। उसी रात को कागज कारखाने के निदेशक को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बड़ी आसानी से किसी दूसरे बहाने से उसे १० वर्ष की कैद की सज़ा सुना दी। लेकिन जब उसने फार्म संख्या २०६ पर हस्ताक्षर कर दिये, जो पूछताछ के दौरान अन्तिम फार्म होता था तो, पूछताछ अधिकारी ने उसे स्मरण दिलाते हुए कहा :

"भविष्य में कभी भी सबसे पहले तालियां बजाना बन्द न करना!"[३६]

(और हमसे क्या अपेक्षा की जाती है? हमसे किस प्रकार रुकने की अपेक्षा की जाती है?)

यही डार्विन का प्राकृतिक चुनाव का सिद्धान्त है। और इसी से यह पता चलता है कि लोगों को मूर्खता के नीचे कैसे रौंदा जा सकता है।

लेकिन आज एक नया झूठ, एक नई झूठी कहानी गढ़ी जा रही है। सन् १९३७ के बारे में जो कुछ छपता है, जो संस्मरण प्रकाशित होते हैं, उनमें बिना किसी अपवाद के कम्युनिस्ट नेताओं के दुर्भाग्य का विवरण रहता है। वे लोग निरन्तर हमें आश्वस्त करते रहे हैं, और हमने अनजाने ही इसे स्वीकार भी कर लिया है कि १९३७ और १९३८ का इतिहास मुख्यतया बड़े कम्युनिस्टों की गिरफ्तारियों का इतिहास है, अन्य किसी की गिरफ्तारी का नहीं। लेकिन उस समय जिन लाखों लोगों को गिरफ्तार किया गया, उनमें पार्टी और राज्य के महत्वपूर्ण अधिकारियों की संख्या किसी भी रूप में १० प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती। लेनिनग्राद की जेलों के बाहर लगी लम्बी लाइनों में कैदियों को भोजन देने के लिए जिन रिश्तेदारों की कतारें लगी होती थीं, उनमें अधिकांशतः नीची श्रेणी की स्त्रियां होती थीं। ये स्त्रियां दूध बेचने वाली स्त्रियों की श्रेणी की होती थीं।

इस शक्तिशाली लहर में जिन विशाल जन-समुदायों को गिरफ्तार किया गया था और अर्ध-मृतावस्था में उन्हें गुलाग द्वीपसमूह में ढो कर पहुंचाया गया था, वे इतनी आश्चर्यजनक विविधता से भरे थे कि जो व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टि से इसकी तार्किकता का निष्कर्ष निकालना चाहेगा, वह उत्तर पाने के लिये लम्बे अरसे तक अपना सिर धुनता रहेगा। (इस सफाये की कारवाई के समकालीनों के लिये यह और भी समझ के बाहर थी।)

इन वर्षों में गिरफ्तारियों का अन्तर्निहित वास्तविक कानून, निर्धारित कोटे, मानदण्ड और योजनाबद्ध तरीके से तैयार किए गए आबंटन भर थे। प्रत्येक नगर, प्रत्येक जिले, प्रत्येक सैनिक यूनिट को एक निश्चित अवधि में गिरफ्तारियों का एक निश्चित कोटा पूरा करना था। इसके बाद प्रत्येक वस्तु सुरक्षा संगठनों के कर्मचारियों की सूझबूझ और चालाकी पर निर्भर करती थी।

चेका का एक भूतपूर्व सदस्य अलैक्सान्द्र कालगानोव बताता है कि ताशकन्द में एक तार पहुंचा : "२०० भेजो!" वे अभी हाल में ही गिरफ्तारियों का एक अभियान पूरा कर चुके थे और ऐसा लग रहा था कि "अब और किसी को गिरफ्तार करना सम्भव नहीं है।"

हां, यह सच है कि वे अभी हाल में ही जिलों से गिरफ्तार करके पचास और आदमियों को लाये थे। और तभी उनके मस्तिष्क में एक विचार कौंधा! वे उन समस्त गैर-राजनीतिक अपराधियों को, जो पुलिस की हिरासत में हैं, अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत गिरफ्तार लोगों की कोटि में रखेंगे। बस कहने की देर थी, काम पूरा हो गया। लेकिन इसके बावजूद, अभी कोटा पूरा नहीं हुआ था। पर तभी पुलिस ने यह सूचना दी कि खानाबदोशों की एक टोली ने बड़ी नासमझी से नगर के चौक में पड़ाव डाल लिया है। पुलिस ने यह भी सलाह मांगी थी कि इनके बारे में क्या किया जाए। अब किसी और व्यक्ति के मस्तिष्क में एक और मेधावी विचार कौंधा! खानाबदोशों के पड़ाव को घेर लिया गया। और १७ से ६० वर्ष के सब खानाबदोश पुरुषों को अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया। उन लोगों का कोटा पूरा हो गया था!

एक भिन्न तरीके से भी यह हो सकता था: पुलिस के प्रमुख अधिकारी ज़ाबोलोवस्की के अनुसार, ओसेतिया की चेका को यह कोटा सौंपा गया था कि गणराज्य में गोली से उड़ाये जाने के लिए पांच सौ लोगों को गिरफ्तार किया जाना चाहिए। स्थानीय चेका ने यह अनुरोध किया कि इस संख्या में वृद्धि की जानी चाहिये। और उन्हें गोली से उड़ाये जाने के लिए २५० और लोगों को गिरफ्तार करने की अनुमति दे दी गई।

इस प्रकार का निर्देश देने वाले तार बहुत साधारण कूट भाषा में साधारण तार प्रणाली के माध्यम से ही भेजे जाते थे। तेमर्‌युक में एक स्त्री तार कर्मचारी ने अपनी अत्यन्त पवित्र अबोधता से एन० के० वी० डी० को यह संदेश भेजा कि अगले दिन क्रासनोदर को साबुन की दो सौ चालीस पेटियां भेज दी जानी चाहिएं। अगले रोज़ सुबह उसने बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियों की बात सुनी और उसकी समझ में इस संदेश का अर्थ आ गया! उसने अपनी एक लड़की मित्र को यह बताया कि उसे कैसा तार मिला था--और इस कारण उसे तुरन्त गिरफ्तार कर लिया गया।

(क्या शुद्ध संयोग से ही मनुष्यों के लिए कूट भाषा में साबुन की पेटी का प्रयोग किया गया? अथवा वे लोग साबुन बनाने के तरीके से परिचित थे?)

वस्तुतः कुछ विशेष नमूनों को पहचाना जा सकता है।

गिरफ्तार लोगों में ये लोग थे:

विदेशों में काम करने वाले स्वयं हमारे वास्तविक जासूस। (अक्सर ये लोग कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के सर्वाधिक निष्ठावान सदस्य और चेका के सदस्य होते थे और इनमें बहुत सी सुन्दर स्त्रियां भी थीं। इन लोगों को मातृभूमि में वापस बुला लिया गया और सीमा पर ही गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद, उदाहरण के लिए, उनका सामना कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के भूतपूर्व अध्यक्ष मीरोव-कोरोना से कराया गया, जिसने इस बात की पुष्टि की कि वह स्वयं एक विदेशी जासूस संगठन की ओर से काम कर रहा था—जिसका यह अभिप्राय था कि उसके अधीन काम करने वाले सब लोग स्वतः अपराधी थे। और वे जितने अधिक निष्ठावान थे, उनके लिए यह स्थिति उतनी ही भयंकर थी।)

चीनी पूर्वी रेलवे लाइन के सोवियत कर्मचारियों को एक-एक करके जापानी जासूस बताकर गिरफ्तार कर लिया गया, जिनमें कर्मचारियों की पत्नियां और दादियां भी शामिल थीं। लेकिन हमें यह स्वीकार करना होगा कि ये गिरफ्तारियां कई वर्ष पहले ही शुरू हो गई थीं।

सुदूर पूर्व के कोरियावासियों को कज़ाकिस्तान में निष्कासित कर दिया गया था—यह जाति के आधार पर सामूहिक रूप से गिरफ्तारी का पहला प्रयोग था।

लेनिनग्राद में रहने वाले स्तोनियावासियों को केवल इस आधार पर गिरफ्तार कर लिया गया कि उनके पारिवारिक नाम स्तोनिया के लोगों जैसे थे। और इनके ऊपर कम्युनिस्ट विरोधी स्तोनियाई जासूस होने का अभियोग लगाया गया।

लतविया के सब राइफलमैन और लतविया के सब चेका कर्मचारी गिरफ्तार कर लिए गए। हां, वस्तुत:, उन्हीं लतवियावासियों को गिरफ्तार किया गया, जिन्हें क्रांति की दाई बाताया गया था, जो कुछ ही समय पहले चेका अर्थात् खुफिया पुलिस के अत्यधिक महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण कर्मचारियों में गिने जाते थे। और उनके साथ ही बुर्जुआ लतविया के उन कम्युनिस्टों को भी गिरफ्तार कर लिया गया, जिनका १९२१ में विनिमय कराया गया था—और इस प्रकार उन्हें लतविया की जेलों में दो और तीन वर्ष की भयावह कैद से मुक्ति दिला दी गई थी। (लेनिनग्राद में एर्जेन संस्था के लतविया विभाग, लतविया सांस्कृतिक भवन, एस्तोनियन क्लब, लतविया तकनीकी संस्था और लतवियाई और एस्तोनियाई समाचारपत्रों को बन्द कर दिया गया।)

व्यापक पैमाने पर गिरफ्तारियों के मध्य सोलीटेयर के शानदार खेल को अन्ततः समाप्त कर दिया गया। जिन्हें अब तक गिरफ्तार नहीं किया जा सका था, उन्हें भी पकड़ लिया गया। अब इस बात को गुप्त रखने का कोई कारण नहीं था। अब इस पूरे खेल का अन्त घोषित करने का समय आ गया था। इस प्रकार अब समाजवादियों को एक साथ "निष्कासन" (उदाहरण के लिए, ऊफा "निष्कासन" और सरातोव "निष्कासन") में भेज दिया गया और इन सबको एक साथ सजाएं सुनाई गईं और इनके झुण्ड के झुण्ड, भेड़ बकरियों की तरह द्वीपसमूह के कसाईखाने में भेज दिए गए।

कहीं भी इस बात का विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया था कि अन्य समूहों की तुलना में बुद्धिवादियों की गिरफ्तारी अधिक बड़े पैमाने पर की जानी चाहिए। पर जिस प्रकार पहले की लहरों में इसकी उपेक्षा नहीं की गई थी, उसी प्रकार इस बार भी बुद्धिवादियों की उपेक्षा नहीं हुई। किसी विद्यार्थी का यह अभियोग लगाना (और अब "विद्यार्थी" और "अभियोग लगाना" शब्दों का यह खास प्रयोग विचित्र नहीं लगता था) कि अमुक उच्च शिक्षा संस्था में अमुक प्राध्यापक लेनिन और मार्क्स के उदाहरण तो बार-बार देता रहता है; लेकिन स्तालिन के उद्धरण नहीं देता। इस बात के लिए पर्याप्त था कि भविष्य में वह प्राध्यापक संस्था में दिखाई न पड़े। और यदि वह किसी के भी उद्धरण न दे? लेनिनग्राद के सब प्राच्यविद्याविद्, जिनमें अधेड़ उम्र के और युवा पीढ़ी के विद्वान भी शामिल थे, गिरफ्तार कर लिए गए। उत्तरी इलाकों की अध्ययन सम्बन्धी संस्था के सब कर्मचारियों को, एन० के० वी० डी० के जासूसों और मुखबिरों को छोड़कर, गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने स्कूल के अध्यापकों को भी नहीं छोड़ा। स्वर्दलोवस्क में एक मामले में माध्यमिक स्कूल के ३० अध्यापकों और पेरेल के प्रान्तीय शिक्षा विभाग के अध्यक्ष को फंसा लिया गया।[३७] इन लोगों के विरुद्ध एक यह भयंकर अभियोग भी लगाया गया था कि उन लोगों ने स्कूल की इमारत को जला डालने के लिए नव वर्ष का वृक्ष लगाने की व्यवस्था की थी। और जिस निश्चितता से घड़ी का पेंडुलम इधर-उधर घूमता है, उसी निश्चितता से इन्जीनियरों के ऊपर भी प्रहार किया गया—अब "बुर्जुआ" इन्जीनियर शेष नहीं रह गए थे, सोवियत इन्जी-

नियरों की एक पूरी पीढ़ी तैयार हो चुकी थी।

खानों के सर्वेक्षक निकोलाई मेरकुरएविच मिकोव ने यह अनुमान लगाया था की दो सुरंगें आगे जाकर आपस में मिल जाएंगी, लेकिन भूगर्भ स्थित चट्टानों की अनियमितता के कारण यह संभव नहीं हो सका और मिकोव को अनुच्छेद ५८-७ के अन्तर्गत २० वर्ष की कैद की सजा सुना दी गई।

६ भूगर्भ विज्ञानियों को (कोतोविच की टोली) अनुच्छेद ५८-७ के अन्तर्गत "खनिज टिन के भूगर्भ भण्डारों को जर्मनों के आने की प्रत्याशा में जानबूझ कर छिपाये रखने के लिए" १० वर्ष की कैद की सज़ा दी गई। (दूसरे शब्दों में, ये भूगर्भविज्ञानी खनिज टिन के इन भण्डारों का पता लगाने में असफल रहे थे।)

प्रमुख धाराओं के पीछे-पीछे एक विशेष लहर आई—इसे पत्नियों और परिवार के सदस्यों की लहर कहा जा सकता है। इनमें पार्टी के महत्वपूर्ण नेताओं की पत्नियों और कुछ विशेष स्थानों पर, उदाहरण के लिए लेनिनग्राद में, उन सब लोगों की पत्नियों को गिरफ्तार कर लिया, जिन्हें "पत्र-व्यवहार के अधिकार के बिना १० वर्ष की कैद की सजा" दी गई थी—दूसरे शब्दों में, जो लोग अब जीवित लोगों की श्रेणी में नहीं रह गए थे। नियमत: परिवार के सदस्यों को ८ वर्ष की कैद की सज़ा दी जाती थी। (ठीक है, इसके बावजूद यह सज़ा अपनी सम्पत्ति से वंचित कुलकों को दी गई सज़ा से कम थी और उक्त गिरफ्तार व्यक्तियों के बच्चों को द्वीपसमूह नहीं भेजा गया था।) बलि के बकरों के ढेर! बलि के बकरों की पहाड़ियां! नगर पर एन० के० वी० डी० का प्रत्यक्ष प्रहार : उदाहरण के लिए एक लहर में जी० पी० मातवेएवा ने केवल अपने पति को ही नहीं बल्कि अपने तीनों भाइयों को भी गिरफ्तार होते देखा और उन सबको अलग-अलग मामलों में गिरफ्तार किया गया। (इन चार में से तीन कभी वापस नहीं लौटे।)

एक बिजली कर्मचारी के क्षेत्र में बिजली की लाइन का एक तार टूट गया। अनुच्छेद ५८-७—२० वर्ष।

पर्म का एक श्रमिक नोविकोव कामा नदी के पुल को उड़ा देने की योजना बनाने के अभियोग पर गिरफ्तार कर लिया गया।

इसी पर्म नगर में दिन के समय यूझाकोव को गिरफ्तार कर लिया गया और रात के समय वे उसकी पत्नी को भी पकड़ ले गए। उन लोगों ने यूझाकोव की पत्नी के समक्ष नामों की एक सूची पेश की और कहा कि उसे इस आशय की स्वीकारोक्ति पर हस्ताक्षर करने चाहिएं कि इन सब लोगों ने मेनशेविकों और समाजवादी क्रांतिकारियों की एक बैठक में उसके घर पर हिस्सा लिया था। वस्तुत: उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया था। उन लोगों ने इस स्त्री को यह वचन दिया कि यदि वह इस प्रकार की स्वीकारोक्ति करती है, तो उसे अपने तीन बच्चों के पास वापस लौटने दिया जाएगा। उसने इस पर हस्ताक्षर कर दिए और इस प्रकार एक सूची में जिन लोगों के नाम थे, उन्हें समाप्त कर डाला, पर इसके बावजूद वह स्वयं भी जेल में ही रही।

नादेझदा युदेनिच को अपने पारिवारिक नाम के कारण गिरफ्तार कर लिया गया था। यह सच है कि ९ महीने बाद वे लोग इस निर्णय पर पहुंचे कि वह श्वेत रक्षकों के इस नाम के जनरल की रिश्तेदार नहीं थी और उसे रिहा कर दिया।। (यह मामूली सी बात ही तो है : इस बीच चिन्ता के मारे बस उसकी मां की मृत्यु हो गई थी)।

'अक्तूबर में लेनिन' शीर्षक फिलम स्ताराया रूसा में दिखाई गई थी। किसी व्यक्ति ने इस फिलम में इस वाक्यांश को बड़े गौर से सुना : "पार्लचिस्की को याद रखना चाहिए !" पार्लचिस्की ज़ार के शीतकालीन महल की रक्षा कर रहा था। लेकिन हमारे यहां पार्लचिस्काया नाम की एक नर्स है ! उसे गिरफ्तार करो ! उन लोगों ने उसे गिरफ्तार भी कर लिया। और यह पता चला कि वह सचमुच पार्लचिस्की की पत्नी थी, जो पार्लचिस्की को गोली से उड़ाए जाने के बाद प्रान्तों में जा छिपी थी।

सन् १९३० में छोटे-छोटे लड़कों के रूप में पावेल, आइवन और इस्तीपान वोरुशको नामक तीन भाई पोलैंड से सोवियत संघ अपने माता-पिता के साथ रहने के लिए आए थे। अब युवकों के रूप में इन लोगों को जासूसी के संदेह पर गिरपतार कर लिया गया और १० वर्ष की सजा दी गई।

क्रासनोदर की एक स्त्री ट्राम-ड्राइवर बहुत रात गए अपने ट्राम डिपो से पैदल ही वापस लौट रही थी। दुर्भाग्यवश नगर के बाहरी हिस्से में उसने कुछ ऐसे लोगों को देख लिया, जो एक ऐसी ट्रक को निकालने के प्रयास में लगे थे, जो कहीं फंस गई थी। यह ट्रक लाशों से भरी पड़ी थी—लाशों के हाथ और पांव ऊपर ढके हुये कपड़े से बाहर झांक रहे थे। उन लोगों ने उसका नाम लिख लिया और अगले दिन उस स्त्री को गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ अधिकारी ने उससे पूछा कि पिछली रात उसने क्या देखा था। उसने पूरी सच्चाई से बात बता दी। (डार्विन का प्राकृतिक चुनाव !) सोवियत विरोधी आन्दोलन—१० वर्ष।

पानी के नलों की मरम्मत आदि करने वाला एक व्यक्ति उस समय अपने कमरे में लगे लाउडस्पीकर को बन्द कर देता था, जब स्तालिन को प्राप्त कभी समाप्त न होने वाले पत्र रेडियो से प्रसारित किये जाते थे।[३८] उसके एकदम बराबर रहने वाले पड़ौसी ने उसके ऊपर अभियोग लगाया। (वह पड़ौसी आज कहां है, कहां है ?) इस व्यक्ति को "सामाजिक दृष्टि से खतरनाक तत्व" घोषित किया गया—८ साल की सज़ा।

एक अर्ध-साक्षर स्टोव बनाने वाला अपने खाली समय में अपना नाम लिखकर बड़े आनन्द का अनुभव करता था। इससे उसका आत्म-सम्मान बढ़ता था। उसके पास कोरा कागज़ नहीं था, अतः वह पुराने अखबारों पर अपना नाम लिखता रहता था। उसके पड़ौसियों ने सामूहिक शौचालय के थैले में उसका एक समाचारपत्र देखा, जिसमें पिता और शिक्षक अर्थात् स्तालिन की तस्वीर के ऊपर रोशनाई से बड़े-बड़े अक्षरों में इस स्टोव बनाने वाले का नाम लिखा था। सोवियत विरोधी आंदोलन—१० वर्ष।

स्तालिन और उसके घनिष्ठ सहयोगी अपने चित्रों से बड़ा प्रेम करते थे। और समाचारपत्रों में इनकी भरमार रहती थी। इनकी लाखों प्रतियां वितरित की जाती थीं। मक्खियां इन चित्रों की पवित्रता की ओर विशेष ध्यान नहीं देती थीं और इस कागज़ का उपयोग न कर पाना सचमुच बड़ी दयनीय बात थी—और न जाने कितने अभागे लोगों को इसी कारण से जेल काटनी पड़ी !

एक महामारी की तरह गिरफ्तारियां सड़कों और मकानों पर छा गई थीं। जिस प्रकार लोग अनजाने ही किसी महामारी की छूत एक दूसरे को लगाते हैं और यह कार्य केवल हाथ मिलाने, सांस लेने, किसी व्यक्ति को कोई चीज़ देने आदि जैसे निर्दोष तरीकों से हो जाता है, उसी प्रकार इन लोगों ने अनिवार्य गिरफ्तारी की छूत एक दूसरे को हाथ मिलाकर एक निःश्वास के द्वारा और सड़क पर संयोगवश मुलाकात के द्वारा लगाई। यदि कल आपके

भाग्य में यह स्वीकारोक्ति करना बदा है कि आपने नगर की पानी की सप्लाई में ज़हर मिलाने के लिए एक गुप्त टोली का गठन किया था और आज मैं आपसे सड़क पर हाथ मिलाता हूं, तो इसका अर्थ यह है कि मेरे भी दिन पूरे हो गए हैं।

सात वर्ष पहले नगर ने यह देखा था कि देहात में कैसा भयंकर नरसंहार हुआ है और नगरवासी इसे बड़ी स्वाभाविक बात भी मान रहे थे। अब हो सकता है कि गांवों के लोगों ने शहर में नरसंहार होते हुए देखा हो। लेकिन स्वयं गांव एक जबर्दस्त अन्धकार से ग्रस्त थे और उन्हें स्वयं अपने नरसंहार के अन्तिम स्पर्शों का अनुभव भी हो रहा था।

सर्वेक्षक (!) सौनिन को ढोरों प्लेग फैलने (!) पर १५ वर्ष की सज़ा दी गई। यह सज़ा बुरी फसल के लिए भी दी गई थी (!) (और जिले के सब नेताओं को इसी कारण से गोली से उड़ा दिया गया था)।

एक जिला पार्टी समिति का सचिव खेतों की जुताई के काम को तेज़ करने के लिये, स्वयं खेतों पर पहुंचा और एक वृद्ध किसान ने उससे पूछा कि क्या उसे इस बात की जानकारी है कि सात वर्षों से सामूहिक खेतों के किसानों को अपने "श्रम दिनों" के बदले एक औंस अनाज भी नहीं मिला है—उन्हें केवल भूसा ही दिया गया और वह भी बेहद कम। यह सवाल पूछने के लिये उसे सोवियत विरोधी आंदोलन का अपराधी ठहराया गया और १० वर्ष की सज़ा दी गई।

एक अन्य किसान का भी यही हाल हुआ। इस किसान के छह बच्चे थे। अब क्योंकि उसे छह बच्चों का पेट पालना था; अतः वह पूरी लगन से सामूहिक खेत के काम में जुट गया और यह आशा करता रहा कि उसे अपने श्रम के लिए कुछ मिलेगा। और उसे मिला भी—उन लोगों ने उसे एक पदक प्रदान किया। एक विशेष सभा में यह पदक प्रदान किया गया और भाषण हुए। अपना उत्तर देते समय यह किसान भावना के प्रवाह में बह गया। वह बोला, "काश! मुझे इस पदक के बदले एक बोरी आटा मिल पाता! क्या मुझे यह नहीं मिल सकता!" भेड़ियों जैसी हंसी सभा कक्ष में गूंज उठी और यह नव-पुरस्कृत वीर नायक निष्कासन में भेज दिया गया और उसके साथ ही उन छह बच्चों को भी जिनके भरण पोषण के लिए वह इतना चिंतित था।

क्या हम इन सब बातों के लिए संक्षेप में यह कह सकते हैं कि उन लोगों ने निर्दोष लोगों को गिरफ्तार किया। लेकिन उक्त विवरण में हम यह कहना भूल गए कि सर्वहारा क्रांति ने दोषी होने की मूल कल्पना को ही बदल दिया था और १९३० के बाद के आरम्भिक वर्षों में इसे दक्षिणपंथी अवसरवाद बताया गया।[३९] अतः हम इन घिसी पिटी और पुरानी पड़ चुकी संकलपनाओं पर दोषी और निर्दोष होने जैसी बातों पर विचार तक नहीं कर सकते।



सन् १९३९ की प्रत्यावर्तित लहर सुरक्षा संगठनों के इतिहास में एक अकल्पित घटना थी। उन लोगों के नाम पर एक धब्बा था। लेकिन वास्तव में यह वापस लौटने वाली लहर बड़ी नहीं थी। इसमें वे एक या दो प्रतिशत लोग थे, जिन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था लेकिन अभी तक सज़ा नहीं सुनाई गई थी, जिन्हें अभी तक सुदूर स्थानों को नहीं भेजा गया था और

जो अभी तक नष्ट होने से बचे हुए थ। यह वापसी की लहर बड़ी नहीं थी। फिर भी इसका बड़ा प्रभावशाली उपयोग किया गया। यह ठीक ऐसी बात थी, जैसे आप किसी व्यक्ति को एक रूबल की रेजगारी में सिर्फ एक कोपेक दे दें। लेकिन उस गन्दे येझोव के ऊपर सब दोष मढ़ने के लिये यह आवश्यक था। यह कारवाई खुफिया पुलिस के नये अध्यक्ष बेरिया के हाथ मजबूत बनाने के लिये जरूरी थी और सर्वोच्च नेता को और अधिक दैदिप्यमान बनाने के लिए भी इसकी जरूरत थी। इस कोपेक की सहायता से उन्होंने अत्यन्त कुशलतापूर्वक रूबल को परास्त कर दिया। आखिरकार, यदि "उन लोगों ने उलझे हुए मसलों को सुलझा दिया और कुछ लोगों को रिहा कर दिया (और समाचारपत्रों तक ने बड़ी सफाई से उन व्यक्तियों के मामलों के बारे में लिखा, जिनके खिलाफ झूठी बातें कही गई थीं) तो इसका यह अर्थ होता है कि शेष गिरफ्तार व्यक्ति सचमुच धूर्त थे, बदमाश थे! और जो लोग वापस लौटे, उन्होंने अपना मुंह बन्द रखना ही बेहतर समझा। उन लोगों ने इस आशय के वचन पर हस्ताक्षर किए थे कि वे अपना मुंह नहीं खोलेंगे। वे आतंक से स्तम्भित हो चुके थे उनमें बोलने की शक्ति नहीं रह गई थी। और बहुत कम लोग ऐसे थे, जिन्हें द्वीपसमूह के रहस्यों की कुछ जानकारी हो। इस प्रकार पहले की तरह ही घटनाक्रम आगे बढ़ता रहा : रात के समय ब्लैक मारिया गाड़ियां और दिन के समय प्रदर्शन।

लेकिन असल बात तो यह है कि उन लोगों ने जल्दी ही उस कोपेक को भी वापस ले लिया—यह कार्य उसी असीम अनुच्छेद-५८ के माध्यम से, उन्हीं वर्षों में और उन्हीं धाराओं के आधार पर किया गया। किस व्यक्ति ने १९४० में उन गिरफ्तार पत्नियों की लहर को देखा, जिन्हें केवल इसलिए गिरफ्तार कर लिया गया था कि उन्होंने अपने पतियों के ऊपर अभियोग नहीं लगाए थे, उनकी झूठी शिकायतें नहीं की थीं? और तामबोव में आज किसे याद है कि शान्ति के उस वर्ष में उन लोगों ने "आधुनिक" सिनेमा थियेटर में जॉज़ आर्केस्ट्रा [वाद्यवृन्द] के सब कलाकारों को इसलिए गिरफ्तार कर लिया था, क्योंकि उन्हें जनता के शत्रु के रूप में पहचान लिया गया था? और किस व्यक्ति ने १९३९ में उन ३०,००० चेकोस्लोवाकिया वासियों को देखा, जो जर्मन अधिकृत चेकोस्लोवाकिया से भाग कर अपने स्लाव जाति के भाइयों के पास सोवियत संघ आ गए थे? इस बात की गारंटी देना असम्भव था कि क्या इनमें से एक भी आदमी जासूस नहीं है। उन लोगों ने इन सबको सुदूर उत्तर के शिविरों में भेज दिया। (और इन्हीं शिविरों के लोगों से युद्ध के दौरान "चेकोस्लोवाक फौजी टुकड़ी" तैयार हुई।) और क्या सन् १९३९ में ही यह नहीं हुआ था कि हमने पश्चिम यूक्रेन और पश्चिम बाइलोरूस के लोगों की ओर अपना सहायता का हाथ बढ़ाया था और १९४० में हमने यही कार्य बाल्टिक राज्यों और मोलदाविया के लोगों की सहायता के लिए किया था। हमने इस बात को देखा और समझा कि हमारे इन भाइयों को अपनी शुद्धि की, अपने सफाए की अत्यन्त आवश्यकता थी और इन लोगों के मध्य से भी सामाजिक रोग निरोध की लहरें शुरू हुईं। उन लोगों ने ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया, जो आवश्यकता से अधिक स्वतंत्र वृत्ति के थे, आवश्यकता से अधिक प्रभावशाली थे और इनके साथ उन लोगों को भी पकड़ लिया गया, जो आवश्यकता से अधिक समृद्ध थे, आवश्यकता से अधिक बुद्धिमान थे और जिन्हें आवश्यकता से अधिक प्रमुखता प्राप्त थी। उन लोगों ने, विशेषकर, बहुत से पोलैंड निवासियों को पोलैंड के भूतपूर्व प्रान्तों से गिरफ्तार किया। (उसी समय दुर्भाग्यवश कातीन भर गई और इसके बाद उत्तर के शिविर भी सिकोरस्की और एंडर्स की भावी सेना के लिए

आवश्यक बलि के बकरों से भर गए।) उन्होंने सर्वत्र अफसरों को गिरफ्तार किया। इस प्रकार जन-सामान्य को झकझोर दिया, उनका मुंह बन्द कर दिया गया और किसी सम्भावित प्रतिरोध के लिए उन्हें नेतृत्व से वंचित कर दिया गया। इस प्रकार बुद्धिमत्ता का समावेश हुआ, और भूतपूर्व सम्बन्धों तथा भूतपूर्व मित्रताओं को नष्ट कर डाला गया।

फिनलैंड ने हमें अपना स्थल डमरूमध्य सौंप दिया पर इसमें आबादी के नाम पर एक भी व्यक्ति मौजूद नहीं था। इसके बावजूद फिन जाति के रक्त वाले समस्त व्यक्तियों को १९४० में सोवियत कारेलिया और लेनिनग्राद से हटाकर बसाया गया। हमने इस छोटी-सी लहर को नहीं देखा—हमारे मध्य फिन जाति का रक्त नहीं है।

फिनलैंड के युद्ध में हमने अपने युद्धबंदियों को मातृभूमि से विश्वासघात करने वाले लोग बताकर दण्डित करने का पहला प्रयोग किया। यह मानव इतिहास में अपने किस्म का पहला प्रयोग था; और क्या आप इस पर विश्वास कर सकते हैं—हमने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया, हम इसे देख ही नहीं पाये!

यह पूर्वाभ्यास मात्र था—उसी क्षण हमारे खिलाफ युद्ध छिड़ गया। और इसके साथ ही [illegible]न बड़े पैमाने पर हमें पीछे हटना पड़ा। यह आवश्यक हो गया था कि पश्चिमी गण-राज्यों से जिस किसी भी व्यक्ति को तेजी से निकाला जा सकता है, उन्हें निकाल लिया जाए क्योंकि इन गणराज्यों को शत्रु की दया पर छोड़कर हम पीछे हट रहे थे। इस जल्दबाज़ी में पूरी की पूरी सैनिक यूनिटें, रेजीमेंट, विमानभेदी तोपों की टुकड़ियां और तोपखाना टुकड़ियां लिथुवानिया में जैसी की तैसी रह गईं। लेकिन इसके बावजूद वे अविश्वासनीय लिथुवानियावासियों के कई हजार परिवारों को वहां से निकाल लाने में सफल रहे (आगे चलकर चार हजार लिथुवानियावासियों को क्रासनोयारस्क शिविर में चोरों द्वारा लूट लिये जाने के लिए, चोरों की दया पर छोड़ दिया गया)। २३ जून से उन लोगों ने लतविया और इस्तोनिया में गिरफ्तारियां तेज़ कीं। लेकिन उनके पांव तले धरती जल रही थी और उन्हें बहुत तेज़ी से वहां से भाग निकलने को बाध्य होना पड़ा। वे लोग ब्रेस्ट जैसे पूरे के पूरे किलों में रहने वाले लोगों को अपने साथ लाना भूल गये। लेकिन एलवोव, रोवनो, तालिन्न और अनेक पश्चिमी जेलों की कोठरियों में कैद राजनीतिक कैदियों को स्वयं उनकी कोठरियों और जेल के अहातों में गोली से उड़ाना वे नहीं भूले। तार्तू जेल में उन लोगों ने १९२ कैदियों को गोली से उड़ा दिया और उनकी लाशों को एक कुंए में फेंक दिया।

आप इस बात की कल्पना कैसे कर सकते हैं? आप कुछ नहीं जानते। आपकी जेल की कोठरी का दरवाजा खुलता है और वे आपको गोली मार देते हैं। आप मृत्यु की पीड़ा से छटपटा कर चिल्लाते हैं। लेकिन आपकी चीखों को सुनने के लिए वहां कोई मौजूद नहीं है। जेलों की दीवारों के अलावा आपकी चीखें अन्य किसी के कान में नहीं पहुंचती। पर कुछ लोग कहते हैं कि ऐसे लोग भी थे, जिन्हें पूरी तरह से नहीं मारा जा सका। और हो सकता है कि हमें किसी दिन इसके बारे में कोई पुस्तक पढ़ने को मिले।

अग्रिम मोर्चों के पीछे, युद्धकाल की गिरफ्तारी की पहली लहर उन लोगों की थी, जो अफवाह और घबराहट फैला रहे थे। यह भाषा एक विशेष आदेश की थी। यह आदेश दण्ड संहिता की व्यवस्थाओं से अलग था और इसे युद्ध के आरम्भिक दिनों में जारी किया गया था।[४०] यह आजमाइश के तौरपर थोड़ा सा खून निकाल देने की कारवाई थी, ताकि तनाव की सामान्य स्थिति कायम रखी जा सके। इस आदेश के अन्तर्गत उन लोगों ने प्रत्येक

को १० वर्ष की कैद की सज़ा सुना दी। लेकिन इसे अनुच्छेद-५८ का अंग नहीं समझा गया और इस कारण जो युद्धकालीन शिवरों में जीवित बचे, उन्हें १९४५ में क्षमादान दिया गया।

इसके अलावा उन लोगों की भी लहर थी, जो अपने रेडियो सेट या रेडियो सेटों के हिस्से-पुर्जे पुलिस को सौंपने में असफल रहे थे। किसी भी व्यक्ति के पास एक रेडियो ट्यूब का मिलना (और यह ट्यूब किसी की शिकायत पर ही मिल सकती थी। १० वर्ष की कैद की सज़ा का आधार बनता था।)

इसके बाद जर्मनों की गिरफ्तारियों की लहर आई—वोलगा नदी के तट पर रहने वाले जर्मन, यूक्रेन और उत्तर काकेशस में अपनी बस्तियां बसा कर रहने वाले जर्मन और वे सब सामान्य जर्मन, जो कहीं भी सोवियत संघ में रहते थे। उनकी गिरफ्तारी का निर्णायक तत्व उनका रक्त था और गृह-युद्ध के वीर नायकों और योद्धाओं तक को तथा पार्टी के उन पुराने सदस्यों तक को निष्कासन में भेज दिया गया, जो जर्मन जाति के थे।[४१]

सार रूप में, जर्मनों का निष्कासन कुलकों को उनकी सम्पत्ति से वंचित करने के समान था। लेकिन इस दृष्टि से यह कम कठोर था, कि जर्मनों को अपना अधिक सामान साथ ले जाने दिया गया और उन्हें इतने भयंकर और सांघातिक क्षेत्रों में निष्कासित नहीं किया गया। कुलकों के निष्कासन की तरह ही जर्मनों को निष्कासन में भेजने का भी कोई न्यायिक आधार नहीं था। दण्ड संहिता अपने आपमें एक वस्तु होती है और लाखों लोगों का निष्कासन बिल्कुल दूसरी बात। यह एक बादशाह का व्यक्तिगत आदेश था। इसके अलावा यह उसका एक पूरी जाति के निष्कासन का पहला प्रयोग था और सैद्धांतिक दृष्टिकोण से उसे यह अत्यन्त दिलचस्प लगा।

सन् १९४१ की गर्मियों के अन्त तक नाजियों के घेरों में फंसे लोगों की लहर निरन्तर आगे बढ़ती रही और यह शरद् ऋतु तक और बड़ी हो गई। ये लोग अपने देश की रक्षा के लिए लड़ने वाले लोग थे, ये वही योद्धा थे, जिन्हें नगरों ने फूलों के गुलदस्ते भेंट कर कुछ महीने पहले ही मोर्चों पर लड़ने के लिए विदाई दी थी। ये वही लोग थे, जिन्होंने जर्मनों के टैंकों के भयंकर हमलों का मुकाबला किया था और जो व्यापक गड़बड़ी और अपने किसी भी दोष के बिना शत्रु की कैद में नहीं, बल्कि शत्रु के अस्थायी घेरे में अलग-थलग पड़ गई यूनिटों के रूप में कुछ समय के लिए फंस गये थे और बाद में इस घेरे को तोड़कर बाहर निकल आए थे। अपनी वापसी पर भाइयों जैसा आलिंगन मिलने के स्थान पर, जैसाकि संसार में अन्य किसी भी सेना के साथ होता, आराम के लिए, समय दिए जाने अपने परिवारों से मिलने के लिये छुट्टी देने और फिर अपनी यूनिटों में वापस लौटने का मौका देने के स्थान पर, इन लोगों को केवल संदेह पर गिरफ्तार कर लिया गया, इनके हथियार छीन लिए गए, इन्हें सब अधिकारों से वंचित कर दिया गया और इन्हें छोटी-छोटी टोलियों में पहचान केन्द्रों और जांच केन्द्रों में ले जाया गया, जहां विशेष शाखाओं के अफसरों ने इन लोगों से पूछताछ की। इन लोगों के प्रत्येक शब्द पर ही संदेह नहीं किया, बल्कि स्वयं उनकी पहचान के बारे में भी अविश्वास प्रकट किया। पहचान के लिए जिरह की जाती थी, दूसरे लोगों से सामना कराया जाता था, एक दूसरे के बयान का सहारा लिया जाता था। आगे चलकर जर्मनों के घेरे में फंसे कुछ सैनिकों को उनके अपने

पहले नाम, रैंक और जिम्मेदारियां फिर प्राप्त हो गईं और वे सैनिक यूनिटों को वापस लौट गये। अन्य, आरम्भ में जिनकी संख्या छोटी थी, मातृभूमि के साथ विश्वासघात करने के अपराध से संबंधित ५८-१ ख के अन्तर्गत मातृभूमि के साथ विश्वासघात करने वालों के रूप में घोषित लोगों की लहर का पहला अंग बने। लेकिन आरम्भ में, अन्तिम रूप से दण्ड को मानक स्तर निर्धारित होने तक, इन लोगों को १० वर्ष से कम की सजा मिलती रही।

इस प्रकार सक्रिय सेना का सफाया होता रहा। इसके अलावा सुदूरपूर्व और मंगोलिया में एक विशाल निष्क्रिय सेना भी मौजूद थी और यह विशेष शाखाओं का गरिमापूर्ण उत्तरदायित्व था कि वे इस सेना को जंग न लगने दें। कोई विशेष काम न होने के कारण खालखिन-गोल और खासान के योद्धाओं ने अपनी जबान चलानी शुरू कर दी, विशेषकर उस समय जब उन्हें देगत्यारेव स्वचालित पिस्तौल और रेजीमेंटल मोर्टारों का मुआइना करने का अवसर मिला। तब तक इन दोनों हथियारों को सोवियत सैनिकों तक से गुप्त रखा गया था। ऐसे हथियारों को अपने हाथ में पाकर, वे यह नहीं समझ पा रहे थे कि हम पश्चिम के मोर्चों पर क्यों पीछे हट रहे हैं? समस्त साइबेरिया और यूराल पर्वत श्रृंखला उनके और रूस के यूरोपीय हिस्से के बीच थी। अतः उनके लिए यह समझ पाना आसान नहीं था कि हर रोज ७० मील पीछे हटकर हम शत्रु को अपने घेरे में फंसाने के कुतुज़ोव के तरीके की ही पुनरावृति कर रहे हैं। उनकी सूझबूझ को केवल पूर्वी सेना में गिरफ्तारियों की लहर के द्वारा ही बढ़ाया जा सकता था। और जब यह शुरू हुआ, तो ओठ कड़ाई से बन्द हो गए और विश्वास वज्र के समान कठोर हो उठा।

यह भी स्पष्ट था कि एक लहर को ऊंचे स्थानों पर पहुंचना था—इस लहर को उन लोगों को अपनी लपेट में लेना था, जिन्हें सेनाओं के पीछे हटने का दोष दिया जा सकता था। (आखिरकार महान् समरनीतिज्ञ को दोषी कैसे कहा जा सकता था!) यह एक छोटी सी लहर थी, इसकी लपेट में कोई पचास लोग आए। यह जनरलों की लहर थी। ये जनरल १६४१ की गर्मियों तक मास्को की जेलों में पहुंच गए और अक्तूबर १६४१ में उन्हें कैदियों को ले जाने वाली रेलगाड़ी में लाद दिया गया। अधिकांश जनरल वायुसेना के थे। इन लोगों में वायुसेना के कमाण्डर स्मुश्केविच और जनरल पीतुखिन भी थे, जिन्होंने ये उद्‌गार प्रकट किए बताते हैं: "अगर मुझे मालूम होता, तो मैं सबसे पहले अपने प्रिय पिता पर बमबारी करता और फिर खुशी से जेल चला जाता!" और ऐसे दूसरे लोग भी थे।

मास्को के बाहर विजय ने एक नई लहर को जन्म दिया: अपराधी मास्को निवासी। घटना के बाद स्थिति पर नजर डालने से यह स्पष्ट हुआ कि जो मास्को निवासी भाग नहीं निकले थे और जिन्हें वहां से हटाया नहीं जा सका था, बल्कि जो निर्भयतापूर्वक शत्रु के घेरे के बावजूद राजधानी में बने हुए थे, जबकि सरकारी अधिकारी राजधानी छोड़कर भाग गए थे, सरकारी सत्ता को हानि पहुंचाने के संदेह का लक्ष्य बन गए थे (अनुच्छेद-५८ धारा-१०); अथवा उनके ऊपर जर्मनों की प्रतीक्षा में मास्को में रुके रहने का दोष लगाया जा सकता था (अनुच्छेद-५८ धारा १-क और इसके साथ ही धारा १६ को भी लागूकिया जा सकता था। इन धाराओं के अन्तर्गत जो लहर चालू हुई उससे १६४५ तक मास्को और लेनिनग्राद के पूछताछ अधिकारियों को निरन्तर बलि के बकरे मिलते रहे)।

यह कहने की कोई खास आवश्यकता नहीं है कि युद्ध की पूरी अवधि में अनुच्छेद-५८ धारा-१० अर्थात् सोवियत विरोधी आन्दोलन का आतंक मोर्चों के ऊपर और मोर्चों के इलाकों में पूरी तरह से छाया रहा। अनुच्छेद-५८ धारा-१० के अन्तर्गत शत्रु के घेरे के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रों से हटाये गए उन लोगों को दण्डित किया गया, जिन्होंने सेनाओं के पीछे हटने के भयानक किस्से बताये थे (समाचारपत्रों से यह स्पष्ट था कि सोवियत सेनाएं इस योजना के अनुसार पीछे हट रही थीं); इसी धारा के अन्तर्गत मोर्चों के पीछे के हिस्सों के उन निवासियों को दण्डित किया गया, जो ये प्रवाद फैलाने की अफवाहें फैला रहे थे कि राशन की मात्रा बहुत कम है; मोर्चे पर लड़ने वाले सैनिकों को भी इसके अन्तर्गत दण्डित किया गया, जो यह प्रवाद और अफवाह फैला रहे थे कि जर्मनों के पास बढ़िया हथियार और साज़-सामान हैं। और सर्वत्र उन लोगों पर भी यह धारा लागू की गई, जिन्हें १९४२ में यह प्रवाद और अफवाह फैलाने का दोषी पाया गया कि शत्रु के घेरे में फंसे लेनिनग्राद में लोग भूख से मर रहे हैं।

उसी वर्ष केर्च (एक लाख बीस हज़ार कैदी) और खारकोव (इससे भी अधिक कैदी) की भयानक असफलताओं के बाद और काकेशस तथा वोलगा तक दक्षिण में बेहद पीछे हट जाने के दौरान अफसरों और सैनिकों की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण लहर चालू हुई। इस लहर के अफसरों और सैनिकों को गिरफ्तार किया गया, जो मौत के मुंह में जाने तक अपने स्थानों पर मौजूद नहीं रहे और जिन्होंने बिना अनुमति के पीछे हटना पसन्द किया। ये वे आदमी थे, जिन्हें स्तालिन के अमर आदेश संख्या-२२७ में ऐसे लोग बताया गया, जिन्हें मातृभूमि कभी क्षमा नहीं करेगी, क्योंकि इन लोगों ने मातृभूमि को बेहद अपमानित कराया। लेकिन यह लहर कभी भी गुलाग द्वीपसमूह नहीं पहुंची। सेना की डिवीजनों के न्यायाधिकरणों द्वारा बड़ी तेज़ी से इनके मामलों की सुनवाई के बाद, इन लोगों को दण्डित बटालियनों में संगठित किया गया और अग्रिम मोर्चों के रक्त रंजित रेत में फेंक दिया गया, जहां ये बिना किसी निशान के लुप्त हो गए। इस प्रकार स्तालिनग्राद की विजय की नींव को सुदृढ़ बनाया गया, लेकिन इसे रूस के सामान्य इतिहास में कोई स्थान नहीं मिला और यह केवल गन्दे पानी की निकासी की प्रणाली के निजी इतिहास में में ही मौजूद है।

(हम यहां लहरों को पहचानने की कोशिश कर रहे हैं जो बाहर से गुलाग द्वीपसमूह पहुंची। आखिरकार एक जलाशय से दूसरे जलाशय के भीतर निरन्तर पानी का पुनरप्रवाह भी तो जारी रहता था। और यह कार्य शिविरों में सज़ा सुनाए जाने की प्रणाली के अन्तर्गत हुआ, जो युद्ध के वर्षों में व्यापक रूप से की जा रही थी। लेकिन हम इस अध्याय में इन लहरों पर विचार नहीं कर रहे हैं।)

ईमानदारी का तकाजा है कि हम युद्धकाल में वापसी की लहरों का भी उल्लेख और स्मरण करें: ऊपर जिन चेकोस्लोवाकियावासियों और पोलैंड निवासियों का उल्लेख किया गया है, उन्हें रिहा कर दिया गया और इसी प्रकार उन सामान्य अपराधियों को भी रिहा किया गया, जिन्होंने मोर्चों पर सेवाएं की थीं।

सन् १९४३ के बाद से, जब युद्ध का रुख हमारे पक्ष में हुआ, शत्रु द्वारा अधिकृत क्षेत्रों और यूरोप से लाखों लोगों की लहर आई और जो १९४६ तक निरन्तर बड़ी होती गई। इसकी दो मुख्य धाराएं थीं:

• वे नागरिक जो जर्मनों के अधिकार के अन्तर्गत अथ वा जर्मनों के मध्य रहे थे—उन्हें 'क' अक्षर के अधीन दस्सा थमा दिया गया अर्थात् अनुच्छेद-५८ धारा १-क के अन्तर्गत १० वर्ष कैद की सज़ा सुनाई गई।

• वे सैनिक जो युद्धबंदी बना लिए गए थे—इन्हें अक्षर 'ख' के अन्तर्गत दस्सा दिया गया अर्थात् अनुच्छेद-५८ धारा-१ ख के अधीन १० वर्ष की कैद की सजा दी गई।

स्पष्ट है कि जर्मनों द्वारा अधिकृत इलाकों के लोग जीवित रहना चाहते थे और इस कारण से वे अपने हाथ बांधे नहीं रह सकते थे। इस प्रकार सिद्धांत रूप में उन्होंने अपनी दिन प्रतिदिन की रोटी के अर्जन के साथ-साथ भविष्य में दण्ड भी अर्जित किया—यदि उन्हें मातृभूमि से विश्वासघात करने के लिए नहीं तो कम से कम शत्रु को सहायता और सहयोग देने के लिए दण्ड दिया गया। व्यवहार में बस इतना काफी होता था कि किसी व्यक्ति के पासपोर्ट पर एक ऐसी संख्या दिखाई पड़ जाए, जिससे यह पता चलता हो कि यह व्यक्ति शत्रु द्वारा अधिकृत क्षेत्र में रहा है। आर्थिक दृष्टि से ऐसे सब लोगों को गिरफ्तार करना असंगत होता, क्योंकि इसके परिणामस्वरूप बहुत विशाल क्षेत्र आबादी विहीन हो जाता। सामान्य चेतना को और प्रखर बनाने के लिए यह आवश्यक था कि एक निश्चित प्रतिशत को गिरफ्तार किया जाय—इसमें दोषी, अर्ध-दोषी, चौथाई दोषी लोगों के साथ उन लोगों को भी गिरफ्तार किया जाए, जिन्होंने उन्हीं पेड़ की शाखाओं पर अपने मोजे आदि सुखाने के लिए डाल दिए थे, जिन पर जर्मन अपने कपड़े सुखाते थे।

आखिरकार एक लाख लोगों का एक प्रतिशत भी पूरे एक दर्जन शिविर को भरने के लिए पर्याप्त होता है।

और आपको अपने मन से यह विचार भी निकाल देना चाहिए कि जर्मनों द्वारा अधिकृत क्षेत्र में किसी सच्चे जर्मन विरोधी गुप्त संगठन में सम्मानित रूप से हिस्सा लेना आपको इस लहर के अन्तर्गत गिरफ्तारी से निश्चयपूर्वक बचा सकता है। एक से अधिक मामलों में यह बात प्रमाणित हुई। उदाहरण के लिए, कीव की युवा कम्युनिस्ट पार्टी कोमसोमोल के एक सदस्य का मामला है, जिसे गुप्त संगठन ने जर्मन अधिकार के दौरान कीव पुलिस में काम करने के लिए भेजा ताकि जर्मनों की गतिविधि के बारे में भीतरी जानकारी मिल सके। यह लड़का कोमसोमोल को बड़ी ईमानदारी से सब खबरें भेजता रहा। लेकिन जब हमारी सेनायें वहां पहुंची, तो उसे १० वर्ष की कैद की सज़ा सुना दी गई, क्योंकि पुलिस में काम करते समय वह शत्रु की भावना को ग्रहण करने और शत्रु के कुछ आदेशों को लागू करने में असफल रहा था।

जो लोग यूरोप में थे, उन्हें सबसे अधिक कठोर सज़ायें दी गईं। यद्यपि जर्मन उन्हें गुलामों की तरह काम करने के लिए बलपूर्वक यूरोप ले गए थे। इनकी गिरफ्तारी का कारण यह था कि ये लोग यूरोप के जीवन का आभास पा चुके थे और अपने देश में इसकी चर्चा कर सकते थे। और उनके किस्से, जो हमारे कानों को बड़े असुखद लगते थे (कुछ सूझबूझ वाले लेखकों की यात्रा सम्बन्धी टिप्पणियों में उपयोग को छोड़कर), युद्ध के बाद के विनाश और अत्यन्त अव्यवस्था के वर्षों में ये बातें विशेष रूप से असुखद लगती थीं; क्यों कि आखिरकार प्रत्येक व्यक्ति यह रिपोर्ट नहीं दे पाता था कि यूरोप में बेहद बुरा हाल है और वहां रहना प्रायः असम्भव है।

यही कारण था कि उन्होंने अधिकांश युद्धबंदियों को दण्डित किया (उन्हें दण्ड देने

का एकमात्र कारण यह नहीं था कि उन्होंने स्वयं को युद्धबंदी बनने दिया), विशेषकर उन युद्धबंदियों को सजायें दी गयीं, जिन्होंने जर्मनों के किसी मृत्यु शिविर से अधिक पश्चिम के जीवन की झांकी देख ली हो।[42] यह बात इस तथ्य से प्रकट हो जाती है कि जर्मनों द्वारा हिरासत में लिए गये लोगों को भी वैसे ही कठोर दण्ड मिले जैसे युद्धबंदियों को दिए गये। उदाहरण के लिए, युद्ध के आरम्भिक दिनों में हमारा एक विध्वंसक जहाज़ स्वीडन की समुद्री सीमा के भीतर रेत में धंस गया। इस विध्वंसक जहाज के सैनिक और अफसर, युद्ध की शेष अवधि में स्वतन्त्रतापूर्वक स्वीडन में रहते रहे और यहां उन्होंने इतना सुखपूर्ण और धन-धान्यपूर्ण जीवन बिताया जितना उससे पहले कभी नहीं बिताया था और न ही कभी भविष्य में बिता पायेंगे। सोवियत संघ पीछे हट रहा था, हमला कर रहा था और भूख से मर रहा था। जबकि ये बदमाश अपने तटस्थ पेट को अन्धाधुन्ध भरे जा रहे थे। युद्ध के बाद स्वीडन ने हमें इन अफसरों और नौसैनिकों को विध्वंसक जहाज़ सहित वापिस लौटा दिया। इन लोगों ने मातृभूमि के साथ विश्वासघात किया, इसमें क्या सन्देह था—लेकिन न जाने क्यों यह मामला आगे नहीं बढ़ सका। उन लोगों ने इन्हें अपनी इच्छानुसार विभिन्न स्थानों को जाने दिया। आगे चलकर इन्हें पूंजीवादी स्वीडन में स्वतन्त्रता और खाने-पीने की इतनी सुन्दर व्यवस्था की आकर्षक कहानियां सुनाने के लिए सोवियत विरोधी आंदोलन के अपराध पर सज़ाएं दी गईं। (इन लोगों को कादेन्को की टोली कहा जाता है।)[43]

जर्मनों द्वारा अधिकृत क्षेत्रों से उत्पन्न होने वाली बड़ी लहर के भीतर और उसके बाद एक के बाद एक बहुत तेज़ और सुगठित लहरें आयीं। इन लहरों के अन्तर्गत कुछ विशेष जातियों को गिरफ्तार किया गया :

- सन् १९४३ में काल्मीक, चेचेन, इंगुश और बलकार जातियों के लोगों को।
- १९४४ में क्रीमिया के तातारों को।

इन जातियों को शाश्वत निष्कासन में इतनी तत्परता और तेज़ी से नहीं भेजा जा सकता था, यदि राज्य सुरक्षा संगठनों की सहायता के लिए नियमित सेना की यूनिटों और सैनिक ट्रकों को न लगाया जाता। सैनिक यूनिटें बड़ी बहादुरी से इन जातियों के पूरे के पूरे गांवों और बस्तियों को घेर लेतीं और एक छाताधारी सेना के हमले को तेज़ी से २४ घण्टों के भीतर उन लोगों ने स्वयं को रेलवे स्टेशनों पर रेल गाड़ियों में भरा हुआ पाया, जो शताब्दियों से इन गांवों में रहते आ रहे थे और इन रेलगाड़ियों ने उन्हें साइबेरिया, कज़ाकिस्तान मध्य एशिया और उत्तरी रूस के इलाकों में पहुंचा दिया। एक दिन के भीतर ही उनकी भूमि और उनकी सम्पत्ति को उनके "उत्तराधिकारियों" को सौंप दिया गया।

सोवियत संघ में रहने वाले जर्मनों का जो हाल युद्ध के आरम्भ में हुआ था, वही अब इन जातियों का हुआ : इन्हें केवल अपने रक्त के आधार पर ही निष्कासित किया गया। प्रश्नावलियां भरने की कोई आवश्यकता नहीं थी; पार्टी के सदस्य, श्रमवीर और अभी तक समाप्त न हुए युद्ध के वीर योद्धाओं को भी अपनी जातियों के अन्य लोगों की तरह ही निष्कासन में भेज दिया गया।

वस्तुतः युद्ध के अन्तिम वर्षों में जर्मन युद्ध अपराधियों की भी एक लहर आई, जिन्हें जर्मन युद्धबंदियों के शिविरों से चुना गया था और अदालत के निर्णय के द्वारा गुलाग के अधिकार क्षेत्र में पहुंचा दिया गया था।

सन् १९४५ में बड़ी संख्या में जापानी युद्धबंदियों को साइबेरिया और मध्य एशिया

से तत्काल आवश्यक निर्माण कार्यों में भेज दिया गया, यद्यपि जापान से युद्ध तीन सप्ताह भी नहीं चला था। और जापानी युद्धबंदियों के शिविरों में भी इसी प्रकार गुलाग भेजे जाने के लिए युद्धबंदियों को चुना गया।[४४] सन् १९४४ के अन्त में, जब हमारी सेना बालकन क्षेत्र में प्रविष्ट हुई और विशेषकर १९४५ में जब यह मध्य यूरोप पहुंची, प्रवासी रूसियों की एक लहर गुलाग पहुंचने लगी। इनमें अधिकांश वृद्ध पुरुष थे, जो क्रांति के समय स्वदेश छोड़कर चले गए थे। लेकिन युवक भी थे, जो रूस के बाहर ही पले और बड़े हुए थे। उन लोगों ने अक्सर आदमियों को गिरफ्तार किया और गुलाग पहुंचा दिया तथा स्त्रियों तथा छोटे-छोटे बच्चों को जहां के तहां छोड़ आये। यह सच है कि उन लोगों ने प्रत्येक प्रवासी रूसी को गिरफ्तार नहीं किया। लेकिन उन लोगों ने उन सब लोगों को अवश्य गिरफ्तार किया, जिन्होंने पिछले २५ वर्ष की अवधि में मामूली से मामूली राजनीतिक विचार भी प्रकट किये थे, अथवा जिन्होंने ऐसे ही विचार इससे पहले अथवा क्रांति के दौरान प्रकट किए थे। उन लोगों ने ऐसे प्रवासी रूसियों को हाथ नहीं लगाया, जो पूरी तरह से राजनीतिक दृष्टि से निष्क्रिय और चेतनाहीन जीवन बिता रहे थे। ये प्रमुख लहरें बुलगारिया, युगोस्लाविया और चेकोस्लोवाकिया से आईं, पर आस्ट्रिया और जर्मनी से भी कुछ लहरें पहुंचीं। पूर्व यूरोप के अन्य देशों में मुश्किल से कोई रूसी मौजूद था।

मानो सन् १९४५ के जवाब में मन्चूरिया में भी प्रवासियों की एक लहर आ पहुंची। (इनमें से कुछ को तुरन्त गिरफ्तार नहीं किया गया। पूरे के पूरे परिवारों को स्वतन्त्र व्यक्तियों के रूप में स्वदेश वापस लौटने के लिए प्रोत्साहित किया गया। लेकिन रूस पहुंचते ही उन्हें अलग कर दिया गया और निष्कासन में भेज दिया गया अथवा बन्दी बना लिया गया।)

सन् १९४५ और १९४६ के वर्षों में सोवियत सरकार के सच्चे शत्रुओं की एक बड़ी लहर आखिरकार द्वीपसमूह पहुंची। (ये ब्लासोव के आदमी थे, क्रासनोव कज्जाक और हिटलर के अधीन बनाई गई राष्ट्रीय इकाइयों के मुसलमान थे।) इनमें से कुछ लोगों ने अपने विश्वासों के अनुसार कार्य किया था। तो अन्य अनिच्छा से इसमें शामिल हुए थे।

इन लोगों के साथ-साथ सोवियत सरकार की पकड़ से भाग निकलने वाले कम से कम एक लाख भगोड़ों को भी गिरफ्तार किया गया—इन लोगों में प्राय: प्रत्येक उम्र के असैनिक थे, जिनमें स्त्री पुरुष दोनों शामिल थे और जिन्हें मित्र राष्ट्रों के प्रदेश में संरक्षण प्राप्त करने का सौभाग्य मिला था। लेकिन जिन्हें १९४६-४७ में धोखे के द्वारा मित्र राष्ट्रों ने सोवियत सरकार के हवाले कर दिया।

एक निश्चित संख्या में पोलैंड निवासी गृह सेना के सदस्य, माइकोलोजीक के अनुयायी हमारी जेलों के रास्ते गुलाग पहुंचे।

रूमानिया और हंगरी के कुछ निवासी भी गुलाग पहुंचे।

युद्ध के अन्त में और इसके कई वर्ष बाद यूक्रेन के राष्ट्रवादी ("बन्देरोवस्ती") काफी बड़ी संख्या में निरन्तर गुलाग पहुंचते रहे।

युद्ध के बाद लाखों लोगों के जेल और शिविर जाने के वातावरण में कुछ ही लोगों ने इन छोटी-छोटी लहरों पर ध्यान दिया।

० विदेशियों की दोस्त लड़कियां (१९४६-१९४७ में)—दूसरे शब्दों में वे सोवियत लड़कियां, जो विदेशियों के साथ जाती थीं। उन लोगों ने इन लड़कियों को अनुच्छेद ७-३५ के

अन्तर्गत सामाजिक रूप से खतरनाक तत्व करार देकर जेल भेज दिया।

० स्पेनी बच्चे—ये वही बच्चे थे जिन्हें स्पेन के गृह युद्ध के दौरान उनके घरों से सोवियत संघ ले आया गया था और जो दूसरे महायुद्ध के बाद वयस्क हो चुके थे। यद्यपि इनकी शिक्षा दीक्षा हमारे आवासी स्कूलों में हुई थी, लेकिन ये हमारे देश के जीवन में अच्छी तरह खप नहीं पा रहे थे। अनेक "घर" वापस लौटने को व्याकुल रहते थे। इन्हें भी अनुच्छेद ७-३५ के अन्तर्गत सामाजिक रूप से खतरनाक तत्व करार दिया गया। और इनमें जो लड़के, विशेष रूप से अड़ियल थे, उन्हें अनुच्छेद-५८ धारा-६ के अन्तर्गत अमरीका की ओर से जासूसी करने के अभियोग पर दण्डित किया गया।

(सन् १९४७ में पादरियों की वापसी की जो छोटी-सी लहर आई उसको भुलाना उचित नहीं होगा। हां, यह एक चमत्कार था! ३० वर्षों में पहली बार उन लोगों ने पादरियों को रिहा किया। उन लोगों ने शिविरों में पादरियों को तलाश करने का सिर दर्द मोल नहीं लिया, बल्कि यह तरीका अपनाया गया कि यदि कुछ स्वतन्त्र लोग किसी पादरी को जानते थे और वे उसका नाम और शिविरों का पता ठिकाना बता सकते थे, तो इस पादरी को स्वतन्त्र कर दिया जाता था, ताकि चर्च को मजबूत बनाया जा सके; क्योंकि इन दिनों चर्च को फिर जीवित किया जा रहा था।)



हम एक बार फिर अपने पाठकों को यह स्मरण दिलाना चाहेंगे कि जिन समस्त लहरों ने गुलाग द्वीपसमूह को उर्वर बनाया, इस अध्याय में उन सबका उल्लेख करने का प्रयास नहीं किया गया है—केवल उन्हीं लहरों का उल्लेख किया गया है, जिन्हें राजनीतिक रंग दिया गया था। और शरीर क्रिया विज्ञान के पाठ्यक्रम में जैसा होता है, रक्त के प्रवाह का विस्तृत विवरण देने के बाद हम एक बार फिर आरम्भ करके लसीका तन्त्र का विस्तृत विवरण दे सकते हैं। हम फिर समारम्भ कर सकते हैं और १९१८ और १९५३ के बीच गैर राजनीतिक अपराधियों और आदतन अपराध करने वालों की लहर का विवरण दे सकते हैं। और यह विवरण भी बहुत लम्बा होगा। इससे वे अनेक आदेश प्रकाश में आएंगे जिन्हें आज आंशिक रूप से भुला दिया गया है (यद्यपि इन्हें कभी भी रद्द नहीं किया गया) और जिनके अन्तर्गत गुलाग द्वीपसमूह की कभी शान्त न होने वाली भूख के लिए प्रचुर मात्रा में मानव सामग्री जुटाई गई। एक अध्यादेश गैर-हाज़िरी के बारे में था। एक अन्य आदेश बुरे किस्म का माल बनाने के बारे में था। एक अन्य सोमोगान अर्थात् अवैध शराब बनाने के बारे में था। इसका सर्वोच्च शिखर १९२२ में पहुंचा—लेकिन इसके अन्तर्गत गिरफ्तारियां इस पूरे दशक में चली रहीं। इसके अलावा निर्धारित श्रम दिवसों को पूरा करने में असफल रहने वाले सामूहिक खेतों के किसानों को दण्ड देने सम्बन्धी आदेश भी था। और अप्रैल १९४३ में रेल विभाग में सैनिक अनुशासन लागू करने का आदेश आया—यह आदेश युद्ध के आरम्भ में जारी नहीं किया गया था, बल्कि उस समय जारी किया गया था, जबकि युद्ध का रुख हमारे हक में हो गया था।

पीटर महान् की प्राचीन परम्परा के अनुरूप इन आदेशों ने हमारे कानून के सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व का जामा धारण किया। लेकिन इन आदेशों को जारी करते समय

...मारी समस्त पूर्व कानून व्यवस्था और प्रणाली के स्वरूप को ध्यान में नहीं रखा गया। विद्वान् न्यायविदों से यह अपेक्षा थी कि वे कानून की विभिन्न शाखाओं में समन्वय स्थापित करेंगे, लेकिन वे इस सम्बन्ध में विशेष रूप से सक्रिय नहीं थे और उन्हें इस कार्य में कोई खास सफलता भी नहीं मिली थी।

आदेशों के इस निरन्तर प्रवाह ने देश में कानून के उल्लंघनों और अपराधों का बड़ा विचित्र स्वरूप उपस्थित किया। कोई भी व्यक्ति बड़ी आसानी से यह देख-समझ सकता था कि चोरी, हत्या, अवैध शराब निकालना, बलात्कार आदि अपराध कभी अकस्मात और छिटपुट तरीके से नहीं होते अथवा ये देश के विभिन्न हिस्सों में मनुष्य की कमजोरी, कामुकता अथवा अपनी भावनाओं के उद्रेक पर अंकुश रखने में असफल रहने के कारण नहीं होते। नहीं, बिल्कुल नहीं। इसके स्थान पर यह दिखाई पड़ता था कि अपराधों में आश्चर्य-चकित सीमा तक एकरूपता और एकरसता है। एक दौर में समस्त सोवियत संघ में केवल बलात्कार का ही क्रम शुरू हो जाएगा अथवा केवल हत्या का अथवा केवल अवैध शराब निकालने का और ये सब अपराध बारी-बारी से होंगे—ये कार्य सरकार के अद्यतन आदेश के प्रति पूर्ण संवेदनशीलता दिखाते हुए शुरू होंगे। यह दिखाई पड़ता था कि प्रत्येक अपराध अथवा कानून का उल्लंघन अद्यतन आदेश के हाथों में खेल रहा है और अपना कार्य पूरा कर लेने के बाद यह उतनी ही तेजी से अन्तर्धान भी हो जाता है। उसी क्षण वह अपराध शुरू हो जाता है, जिसकी एक नए बुद्धिमता पूर्ण कानून में अभी हाल में पूर्व कल्पना की गई थी और इस कानून के अन्तर्गत जिसके लिए अधिक कठोर सजा की व्यवस्था की गई थी। बस, यह अपराध सर्वत्र एक साथ विस्फोटित होने लगेगा।

रेल विभाग में सैनिक अनुशासन लागू करने के आदेश के परिणामस्वरूप, सैनिक अदालतों के समक्ष स्त्रियों और किशोरों की भीड़ लग गई, जो युद्धकाल में रेल विभाग का अधिकांश काम करते थे और सैनिक अनुशासन का प्रशिक्षण प्राप्त न होने के कारण विलम्बों और उल्लंघनों के अभियोग में फंस गये थे। निर्धारित श्रम दिवसों को पूरा करने में असफल रहने के बारे में जो आदेश जारी किया गया था, उससे उन लोगों को गांवों से हटा देने और शिविरों में पहुंचा देने का काम बड़ा आसान हो गया, जो सामूहिक किसान अपने श्रम के बदले खेत के बहीखातों में केवल "श्रम दिवस" के अंकों को भर देने मात्र से संतुष्ट नहीं हो जाते थे और इसके बदले अनाज आदि चाहते थे। पहले इनके ऊपर मुकदमा चलाने की जरूरत थी और दण्ड संहिता की "आर्थिक प्रति-क्रांति" सम्बन्धी धारा के अन्तर्गत यह मुकदमा चलाया जा सकता था। अब यह पर्याप्त था कि जिला कार्य समिति द्वारा पुष्ट सामूहिक खेतों सम्बन्धी आदेश को पेश कर दिया जाए। और इसके बावजूद इन सामूहिक किसानों को यद्यपि निष्कासन में भेज दिया गया था, पर इन्हें कम से कम यह जानकर राहत प्राप्त हुई होगी कि इन्हें जनता के शत्रुओं की श्रेणी में नहीं रखा गया है। "श्रम दिवसों" की निर्धारित संख्या विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग थी, काकेशस के लोगों के लिए यह सबसे सरल थी—एक वर्ष में ७५ "श्रम दिवस"; इसके बावजूद अनेक लोगों को क्रास-नोयारस्क प्रान्त में ८ वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया गया।

जैसाकि हम कह चुके हैं कि हम गैर-राजनीतिक अपराधियों और सामान्य अपराधियों की लहरों के विस्तृत और गहरे अध्ययन में नहीं जायेंगे। लेकिन १९४७ के वर्ष पर पहुंचकर हम स्तालिन के अत्यन्त शानदार आदेशों में से एक आदेश के बारे में मौन नहीं

रह सकते। हम पहले ही "सात बटा आठ" के प्रसिद्ध कानून का उल्लेख कर चुके हैं, जिसके आधार पर उन लोगों ने मनमाने ढंग से जिसे चाहा उसे गिरफ्तार किया और उन सबको १० वर्ष की कैद की सज़ा सुनाई गई।[४६] इन लोगों को अनाज की एक बाली, एक ककड़ी, दो छोटे आलू, लकड़ी का एक छोटा-सा टुकड़ा अथवा धागे की छोटी-सी गोली चुरा लेने पर यह सज़ा दी जाती थी।

लेकिन स्तालिन यह समझता था कि समय बदल गया है, समय की आवश्यकतायें बदल गई हैं और एक भयानक युद्ध के आरम्भ में जिस दस्से (१० साल की सज़ा) को पर्याप्त समझा जाता था, अब उसे विश्व व्यापी ऐतिहासिक विजय के बाद अपर्याप्त समझा जाने लगा। और इस प्रकार एक बार फिर, दण्ड संहिता की पूरी उपेक्षा करते हुए और इस तथ्य को भी पूरी तरह नजरअंदाज करते हुए कि चोरियों और डकैतियों के बारे में अनेक अनुच्छेद और आदेश पहले से ही मौजूद हैं, ४ जून १९४७ को एक नया आदेश जारी किया गया, जिसने पहले के ऐसे समस्त कानूनों और आदेशों को मात चढ़ा दी। ऐसी कारवाइयों से आश्चर्यचकित न होने वाले कैदियों ने तुरन्त इस आदेश का नामकरण किया और इसे "चार बटा छह" कहा जाने लगा।

नये आदेश के सबसे बड़े लाभ इसके नएपन में निहित थे। इस आदेश के जारी होने के क्षण से ही यह निश्चय था कि इसमें जिन अपराधों का उल्लेख किया गया है, वे सर्वत्र होने लगेंगे और इस प्रकार नव दण्डित कैदियों की एक भरपूर लहर आ जाएगी। लेकिन जेल की दृष्टि से इससे एक और लाभ प्राप्त हुआ। यदि एक छोटी-सी लड़की को खेत से अनाज की कुछ बालियां तोड़ लाने के लिए भेजा गया हो और वह अपने साथ अपनी दो सहेलियों को भी ले गई हो ("एक संगठित गिरोह") अथवा बारह वर्ष की उम्र के कुछ बच्चे कुछ ककड़ियां या सेब तोड़ लाए हों, तो उन्हें शिविरों में २० वर्ष की कैद की सज़ा काटने का दण्ड दिया जा सकता था। कारखानों में होने वाले अपराधों के बारे में अधिकतम सज़ा की अवधि बढ़ाकर २५ वर्ष कर दी गई। (इस सज़ा को चौथाई शताब्दी कहा जाता था और इसे मृत्युदण्ड के स्थान पर कुछ दिन पहले ही लागू किया गया था। मृत्युदण्ड को एक मानवीय कारवाई के परिणामस्वरूप समाप्त कर दिया गया था।)[४७] और इस प्रकार अन्ततः, कानून की एक प्राचीन कमी को दूर कर दिया गया। पहले यह होता था कि राजनीतिक अपराधों के बारे में शिकायत न करने पर सम्बन्धित व्यक्ति को स्वयं अपराधी समझा जाता था। लेकिन अब राज्य की अथवा सामूहिक खेत की सम्पत्ति की चोरी की सूचना देने में असफल रहने पर शिविरों में तीन वर्ष की कैद की सज़ा दी जा सकती थी अथवा ७ वर्ष के लिए निष्कासित किया जा सकता था।

इस आदेश के बाद के वर्षों में, गांवों और शहरों से गुलाग के द्वीपों में कमर तोड़ मेहनत के लिए कैदियों की पूरी की पूरी डिवीजनें भेजी गईं। इन लोगों ने गुलाग के उन मूल निवासियों का स्थान लिया, जो वहां मौत के मुंह में चले गये थे। यह सच है कि पुलिस अदालतों और सामान्य अदालतों में ही इस आदेश के अन्तर्गत अभियुक्तों पर मुकदमे चलाये गये और कैदियों की यह लहर राज्य सुरक्षा संगठन की धाराओं में व्यवधान उपस्थित नहीं कर सकी, जो इन लहरों के बिना ही, युद्ध के बाद के वर्षों में अपनी भार वहन क्षमता के छोर पर पहुंच चुके थे।

स्तालिन की इस नई नीति का, जिससे यह प्रकट हो गया था कि फासिस्टवाद के

ऊपर विजय के बाद और अधिक लोगों को और अधिक तत्परता से और पहले की तुलना में और अधिक लम्बी अवधियों के लिए जेल भेजना जरूरी है, राजनीतिक कैदियों पर ही तुरन्त प्रभाव पड़ा।

सन् १९४८-१९४९ का वर्ष, जो सोवियत सार्वजनिक जीवन में अत्याचार और निगरानी की उग्रता के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा, एक ऐसे दुख और व्यंग्य से भरे कार्य के लिए भी उल्लेखनीय है, जो स्तालिनवादी न्याय विरोध तक में आज तक दिखाई नहीं पड़ा था—इस कारवाई के अन्तर्गत एक से अधिक बार जेल भेजने का काम शुरू हुआ।

गुलाग द्वीपसमूह की भाषा में उन अभागे कैदियों को, जिन्हें १९३७ में गिरफ्तार किया गया था और जो आज भी जीवित थे, दोहरी सजा भुगतने वाला कहा जाने लगा। ये वे लोग थे जो किसी प्रकार उन दस असम्भव वर्षों, असह्य वर्षों में जीवित रहे और जिन्होंने १९४७-१९४८ में अपनी सज़ा की अवधि पूरी कर स्वतन्त्रता का अधिकार अर्जित किया और बेहद सकपकाते हुए स्वतन्त्र भूमि पर कदम रखा...ये लोग पूरी तरह से जर्जर और टूटा हुआ स्वास्थ्य लेकर शिविरों से लौटे और यह आशा करने लगे कि उनके जीवन के जो गिने चुने वर्ष शेष रह गये हैं, उन्हें किसी प्रकार शांति से बिता सकें। लेकिन किसी प्रकार की पाशविकतापूर्ण कल्पना ने (अथवा हठधर्मिता पर आधारित द्वेषभाव या कभी शान्त न होने वाली प्रतिशोध भावना) से प्रेरित होकर विजयी महान् जनरल स्तालिन ने एक बार फिर उन सब अपंग लोगों को, बिना किसी नये अभियोग के, गिरफ्तार करने का हुक्म सुना दिया। आर्थिक और राजनीतिक दोनों दृष्टियों से यह अलाभप्रद था कि मांस का रस निकालने वाली मशीन में स्वयं इसकी थोथी गन्दगी को, इसके फोक को फिर वापस भर दिया जाये। लेकिन स्तालिन ने यह आदेश जारी किया। यह एक ऐसा मामला था, जिसमें एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व ने ऐतिहासिक आवश्यकता के प्रति केवल मन की तरंग में आकर आचरण किया।

अतः यह आवश्यक हो गया कि इन सबको फिर पकड़ लिया जाए, यद्यपि इन्हें स्वयं को नये स्थानों अथवा नये परिवारों में स्थापित करने का मौका तक नहीं मिल पाया था। इन्हें प्रायः उसी थकानभरी उदासीनता से गिरफ्तार कर लिया गया था, जिस उदासीनता से भरकर ये लोग वापस लौटे थे। ये लोग पहले से ही उस प्रक्रिया से परिचित थे, उस रास्ते को जानते थे, जिसे उन्हें फिर तय करना है। उन लोगों ने यह नहीं पूछा "किस लिए ?" और इन लोगों ने अपने परिवारों से यह नहीं कहा : "मैं वापस आऊंगा।" इन लोगों ने अपने रद्दी से रद्दी, फटे से फटे कपड़े पहने, शिविरों में तम्बाकू रखने की जो छोटी-छोटी थैलियां उन्होंने सी ली थीं उनमें थोड़ा-सा मखोर का तम्बाकू भरा और अपने ऊपर लगाये गये अभियोगों पर स्वीकृति सूचक हस्ताक्षर करने के लिए चल पड़े। (और केवल एक प्रश्न पूछा गया : "क्या तुम भी जेल में थे ?" "हां।" "ठीक है दस वर्ष की सजा और काटो।")

तभी निरंकुश शासक ने यह निश्चय किया कि केवल उन लोगों को ही गिरफ्तार करना पर्याप्त नहीं है, जो १९३७ की गिरफ्तारी के बाद जिन्दा रहे ! आखिरकार उसके कट्टर शत्रुओं के बच्चों का क्या होगा ? इन्हें भी जेलों में डालना जरूरी है। ये बच्चे बड़े हो रहे थे और इनके मन में प्रतिशोध का विचार उठ सकता है (हो सकता है कि निरंकुश शासक

ने उस रात बहुत भारी भोजन कर लिया हो और उसे इन बच्चों के बारे में कोई भयानक स्वप्न दिखाई पड़ गया हो।) उन लोगों ने सूचियां देखनी शुरू कीं, इधर-उधर नजर दौड़ाई और बच्चों को गिरफ्तार किया—लेकिन बहुत अधिक को नहीं। उन लोगों ने सेना के उन कमाण्डरों के बच्चों को गिरफ्तार किया, जिन कमाण्डरों का सफाया किया जा चुका था। लेकिन ट्राटस्कीवादियों के सब बच्चों को गिरफ्तार नहीं किया गया और इस प्रकार बदला लेने की भावना से प्रेरित बच्चों की लहर आई। (इन बच्चों में १७ वर्षीया लेना कोसाराएवा और ३५ वर्षीया एलेना राकोवस्काया भी थी।)

यूरोप में हुई जबर्दस्त उथल पुथल के बाद सन् १९४८ तक स्तालिन एक बार फिर अपने आपको जबर्दस्त मोचबन्दी के पीछे छिपा लेने और सिर के ऊपर की छत को अपने और अधिक समीप खींच लेने में सफल हुआ : इस संकीर्ण स्थान के भीतर उसने फिर सन १९३७ के तनाव को जन्म दिया।

और इस प्रकार १९४८, १९४९ और १९५० में ये धारायें प्रवाहित हुईं :

० कथित जासूस (१० वर्ष पहले ये जर्मन और जापानी जासूस थे और अब वे ब्रिटेन और अमरीका के जासूस बन गए थे।)

० धर्म में आस्था रखने वाले (इस लहर में अधिकांशतया आर्थोडाक्स चर्च के अलावा दूसरे ईसाई सम्प्रदायों के अनुयाई गिरफ्तार हुए।)

० स्वर्गीय वावीलोव और मेनडेल के प्रजनन विज्ञानी और पौध विज्ञानी शिष्य जिन्हें पहले गिरफ्तार नहीं किया गया था।

० सीधे सादे विचारशील लोग (और विशेषकर विद्यार्थी) जिन्हें पश्चिम से डरा धमका कर पर्याप्त विमुख नहीं किया जा सका था। इन लोगों के ऊपर निम्नलिखित अभियोग लगाना आम बात थी :

० वी० ए० टी०—अमरीकी टैक्नालोजी की प्रशंसा;
० वी० ए० डी०—अमरीकी लोकतन्त्र की प्रशंसा; और
० पी० ज़ैड०—पश्चिम के प्रति रुझान।

ये लहरें सन् १९३७ की लहरों से भिन्न नहीं थीं, लेकिन सजाएं भिन्न सुनाई गई थीं। अब मानक दण्ड पहले की तरह पुराना १० रूबल का सिक्का नहीं था, बल्कि यह नया स्तालिनवादी पच्चीसा था। अब तो दस्सा केवल बच्चों के लिए ही, बाल अपराधियों के लिए ही था।

राज्य के रहस्यों को प्रकट करने के बारे में, जो नया आदेश जारी किया गया था, उसके फलस्वरूप भी एक पर्याप्त बड़ी लहर आई थी। (राज्य के रहस्यों में ऐसी बातें शामिल थीं : पूरे जिले की उपज; महामारियों के बारे में कोई भी आंकड़ा; किसी भी वर्कशाप अथवा छोटे कारखाने में बनाये जाने वाले माल की किस्म; एक असैनिक हवाई अड्डे, नगरपालिका की बसों आदि के मार्ग का उल्लेख अथवा किसी शिविर में कैद किसी कैदी के पारिवारिक नाम का उल्लेख।) इस आदेश के उल्लंघन पर १५ वर्ष की कैद की सज़ा दी जाती थी।

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक जातियों को भी भुलाया नहीं गया था। यूक्रेन के राष्ट्रीय-वादियों, "बन्देरोवस्ती", की लहर निरन्तर जारी रही, यद्यपि इन्हें उन जंगलों में गिरफ्तार किया गया था, जहां इन्होंने लड़ाई लड़ी थी। इसके साथ ही पश्चिम यूक्रेन के गांवों के सब

लोगों को शिविरों अथवा निष्कासन में १० वर्ष और पांच वर्ष की सज़ा दी गई—संभवत: उन्हें यह दण्ड विद्रोहियों से सम्बन्ध होने के सन्देह पर दिया गया : किसी ने विद्रोहियों को एक रात गुजारने की जगह दी; किसी ने उन्हें एक समय भोजन दिया; किसी ने उनकी जानकारी पुलिस को नहीं दी। सन् १९५० में शुरू होकर लगभग एक वर्ष तक बन्देरोवस्ती की पत्नियों की लहर जारी रही। इन सबको अपने पतियों पर अभियोग न लगाने और इस प्रकार अपने पतियों को अधिक तेज़ी से समाप्त करने में सहायता न देने के लिए १०-१० वर्ष की कैद की सज़ा दी गई।

इस समय तक लिथुवानिया और इस्तोनिया में प्रतिरोध समाप्त हो चुका था। लेकिन १९४९ में नये "सामाजिक रोग निरोध" की नई लहरें आईं, ताकि खेतों के समूहीकरण का काम जारी रह सके। वे लोग शहरों के निवासियों और किसानों की पूरी की पूरी रेलगाड़ियों को बाल्टिक गणराज्यों के तीन गणराज्यों से भरकर साइबेरिया में निष्कासन के लिये ले गये। (इन गणराज्यों में ऐतिहासिक लयात्मकता भंग हो गई थी : इन लोगों को देश के शेष भाग के उस व्यापक अनुभव को बहुत संक्षिप्त अवधि में ग्रहण करना पड़ा।)

सन् १९४८ में एक और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक जाति निष्कासन में पहुंची। यह लहर एज़ोव समुद्र के आस-पास रहने वाले यूनानियों, कूबान और सूखूमी जाति के लोगों की थी। इन लोगों ने युद्ध के दौरान ऐसा कोई कार्य नहीं किया था, जिससे महान् पिता नाराज हो सकता हो। लेकिन अब उसने यूनान में अपने असफल रहने का बदला इन लोगों से लिया, अथवा यह कारवाई दिखाई ऐसी ही पड़ रही थी। यह लहर भी स्पष्ट रूप से स्तालिन के पागलपन का ही परिणाम थी। अधिकांश यूनानी मध्य एशिया में निष्कासित किए गये; जिन लोगों ने असंतोष प्रकट किया, उन्हें राजनीतिक जेलों में ठूंस दिया गया।

सन् १९५० के आसपास मार्कोस की सेना के उन यूनानी विद्रोहियों को भी गुलाग द्वीपसमूह पहुंचा दिया गया, जिन्हें बुलगारिया ने हमें सौंप दिया था। लगता था कि यह कारवाई भी यूनान में हारी हुई बाजी का बदला लेने के लिये अथवा पहले ही निष्कासन में भेजे गये यूनानियों का संतुलन कायम करने के लिए की गई।

स्तालिन के जीवन के अन्तिम वर्षों में यहूदियों की एक लहर विशेष रूप से दिखाई पड़ी। (सन् १९५० से इन लोगों को धीरे-धीरे करके सार्वभौमवादी बताकर पकड़ा गया। और यही कारण था कि डाक्टरों का मामला जालसाजी से तैयार किया गया। ऐसा लगता था कि स्तालिन यहूदियों का बड़े पैमाने पर सफाया करने की योजना बना रहा था।)[४८]

लेकिन यह उसके जीवन की सफल न होने वाली पहली योजना बनी। ईश्वर ने उससे कहा कि वह अपना अस्थिपंजर छोड़कर दूसरी दुनिया में चले—स्पष्ट है कि यह कार्य ईश्वर ने मानवीय हाथों की सहायता से किया।

इससे पहले जो विवरण दिया गया है, उससे यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि करोड़ों लोगों को उनके घरों से उजाड़कर गुलाग द्वीपसमूह में बसाने का कार्य, निरन्तर कायम और भावनाहीन योजना तथा कभी कमजोर न पड़ने वाली लगन के आधार पर किया गया।

हमारे देश में खाली जेलें कभी नहीं रहीं, केवल ऐसी जेलें थीं, जो एकदम भरी थीं अथवा ऐसी जेलें, जो बेहद, बेहद भीड़ से भरी थीं।

और यह कार्य उस समय हो रहा था, जब आप अपनी इच्छा के अनुसार परमाणु के नामिक के रहस्यों का अध्ययन करने, सार्त्र पर हीडेगर के प्रभाव का अनुसंधान करने अथवा

पिकासो के चित्रों की अनुकृतियों को इकट्ठा करने में लगे हुए थे। जब आप स्वास्थ्यप्रद स्थानों में छुट्टियां मनाने के लिए रेलों के सुरक्षित सोने के डिब्बों में सवार होकर जा रहे थे अथवा हाल में ही आप मास्को के पास देहाती इलाके में अपना मकान पूरा कर चुके थे—ब्लैक-मारिया गाड़ियां निरन्तर सड़कों पर दौड़ रही थीं और राज्य सुरक्षा संगठनों के आदमी दरवाजों पर दस्तक दे रहे थे, दरवाजे की घंटियां बजा रहे थे।

और मैं समझता हूं कि यह विवरण यह भी प्रमाणित करता है कि राज्य सुरक्षा संगठन के कर्मचारी सदा अपना वेतन भरपूर काम करके अर्जित करते रहे।

अध्याय ३



पूछताछ

यदि चेखोव के नाटकों के उन बुद्धिवादियों को जो अपना सारा समय यह अनुमान लगाने में बिताते थे कि अगले २०, ३० अथवा ४० वर्ष बाद क्या होगा, यह बताया जाता कि ४० वर्ष बाद रूस में यातनाएं देकर पूछताछ का काम शुरू किया जायगा; कि कैदियों की खोपड़ियों को लोहे के शिकंजों के भीतर कस दिया जायेगा[१]; कि एक मनुष्य को तेजाब के चौबच्चे में डाल दिया जाएगा[२]; कि उन्हें चींटियों और खटमलों से कटवाने के लिए एक पुलिन्दे की तरह नंगा डाल दिया जाएगा; कि एक प्राइमस स्टोव पर तपाकर लोहे की एक मोटी छड़ को उनकी गुदा में ठूंस दिया जाएगा (' गुप्त निशान''); कि एक पुरुष के गुप्तांगों को फौजी बूट के पंजे के नीचे धीरे-धीरे कुचल डाला जायेगा; और सर्वाधिक सौभाग्यपूर्ण परिस्थितियों में कैदियों को एक सप्ताह तक सोने न देकर, प्यासा मारकर और पीटते-पीटते लुगदी बना डाल कर यातनाएं दी जाएंगी, तो चेखोव का एक भी नाटक पूरा नहीं हो सकता था, क्योंकि इनके सब नायक पागलखाने पहुंच गए होते।

हां, केवल चेखोव के नायक ही नहीं, बल्कि इस शताब्दी के आरम्भ में कौन सा सामान्य रूसी, रूसी समाजवादी लोकतन्त्री श्रमिक पार्टी का कौन सा सदस्य, अपने उज्ज्वल भविष्य के विरुद्ध इतनी प्रवादपूर्ण और मिथ्या बातों को सहन कर सकता था, इन पर विश्वास कर सकता था? १७ वीं शताब्दी में जार अलैक्सेई माइखेलोविच के शासनकाल में जिसे स्वीकार किया गया, जिसे पीटर महान् के शासन काल में बर्बरता कहा गया, १८ वीं शताब्दी के मध्य में बीरोन के ज़माने में जो कारवाई १० या २० लोगों के विरुद्ध की जा सकती थी, जो कार्य कैथेरीन महान् के शासनकाल में पूरी तरह से असम्भव हो गये थे, उन सबको गरिमापूर्ण अब २० वीं शताब्दी के महानतम दौर में अमल में लाया गया—यह कार्य समाजवादी सिद्धान्तों पर आधारित समाज में और उस युग में हुए जब हवाई जहाज उड़ रहे थे, रेडियो की ईजाद हो चुकी थी और बोलने वाली फिल्में आम बात बन चुकी थीं—और यह कार्य किसी एक गुप्त स्थान पर किसी एक बदमाश ने नहीं किए, बल्कि विशेष रूप से प्रशिक्षित उन हजारों नर-पशुओं ने किए, जो करोड़ों असहाय बलि के बकरों के ऊपर पांव रखकर खड़े हुए थे।

क्या आदिम पूर्वजों के समान आचरण का यह विस्फोट ही, जिसे आज बहुत घुमा फिराकर "व्यक्ति पूजा" कहा जाता है, भयावह था? अथवा यह बात और भी भयावह थी कि

इन्हीं वर्षों में, स्वयं १९३७ में, हमने पुश्किन का शताब्दी समारोह मनाया ? और हम लो॰ अत्यन्त बेशर्मी के चेखोव से उन्हीं नाटकों को मंचित करते रहे, यद्यपि हमें इन नाटकों के नायकों द्वारा उठाए गए प्रश्नों के उत्तर मिल चुके थे ? क्या यह और भी भयावह नहीं है कि आज ३० वर्ष बाद हमसे यह कहा जा रहा है; "इसके बारे में बात न करो !"? यदि हम करोड़ों लोगों की यातनाओं और अपार कष्टों का स्मरण करते हैं, तो हमें बताया जाता है कि इससे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य विकृत हो जाएगा ! यदि हम पूरी दृढ़ता से अपनी नैतिकता के सार का अनुसंधान करना चाहते हैं, तो हमें बताया जाता है कि इससे हमारी भौतिक प्रगति अन्धकारपूर्ण हो जाएगी ! हमें तो केवल धमन भट्टियों, अब तक निर्मित इस्पात कारखानों और नहरों के बारे में ही बात करनी चाहिए...नहीं बेहतर होगा कि नहरों की चर्चा भी न करें...तो शायद हमें कोलिमा में निकाले जाने वाले सोने की चर्चा करने की अनुमति है ? नहीं, सम्भवतः हमें इसकी भी चर्चा नहीं करनी चाहिए...ठीक है, हम उस समय तक किसी भी बात की चर्चा कर सकते हैं जब तक हम यह चर्चा कुशलता पूर्वक करें, जब तक यह चर्चा गरिमापूर्ण हो...

यह समझ पाना सचमुच बड़ा कठिन है कि हम पुराने जमाने में कैथोलिक चर्च द्वारा धार्मिक अन्ध विश्वासों के आधार पर लोगों को यातनाएं देने की निन्दा क्यों करते हैं ? क्या यह सच नहीं है कि उक्त घटनाओं के बावजूद सर्वशक्तिमान परमेश्वर की बड़े शानदार तरीके से आराधना की जाती थी ? यह समझ पाना बड़ा कठिन है कि हम पुराने सामन्तों के किसान गुलामों की प्रथा की इतनी कड़ी आलोचना क्यों करते हैं। आखिरकार किसी ने किसानों को हर रोज़ काम करने से न तो रोका था और न ही इसके लिए बाध्य किया था। और वे लोग क्रिसमस पर भक्ति गीत गा सकते थे और ट्रिनिटी-दिवस पर लड़कियां मालाएं बनाती थीं...



आज जो लिखित और मौखिक आख्यान १९३७ के वर्ष को असाधारण स्वरूप प्रदान करता है, उसे मन गढ़ंत अभियोगों और यातनाओं की सृष्टि के संदर्भ में ही देखा जाता है। लेकिन यह सच नहीं है, यह गलत है। इन समस्त वर्षों और दशकों में अनुच्छेद ५८ के अन्तर्गत पूछताछ का काम कभी भी सच्चाई को जानने के लिए नहीं किया गया, बल्कि यह एक अनिवार्य गन्दी प्रक्रिया को अमल में लाने का कार्य भर था : एक ऐसे व्यक्ति को पकड़ लिया जाता था। जो कुछ ही समय पहले स्वतन्त्र था, जो अपने ऊपर गर्व करता था और कभी भी इस विपत्ति में फंस जाने के लिए तैयार नहीं था और उसे पकड़ कर एक ऐसे संकरे पाइप में ठूंस दिया जाता था, जहां उसके शरीर को पाइप के भीतर लगी लोहे की तेज़ कीलें चीर डालती थीं, जहां वह सांस नहीं ले पाता था और वह छटपटाहट से भर कर बस यही कामना करता था कि किस प्रकार दूसरे छोर पर पहुंच जाए। और दूसरे छोर पर जब वह बाहर निकलता, तो वह गुलाग द्वीपसमूह का पूरी तरह से तैयार मूल निवासी बन जाता, वह सचमुच उस क्षेत्र में पहुंच जाता, जिसके लिए उसे इतने अधिक प्रयास से तैयार किया गया था (वह मूर्ख प्रतिरोध करता रहा ! वह यहां तक सोचता रहा कि इस पाइप से बाहर निकलने का कोई न कोई रास्ता होगा।)

इन घटनाओं के बारे में कुछ भी न लिखे जाने को जितना अधिक समय बीतता जाता है, जीवित लोगों की इधर-उधर छितराई हुइ साक्षी को एकत्र कर पाना उतना ही कठिन होता जाता है। लेकिन वे लोग हमें बताते हैं कि राज्य सुरक्षा संगठनों की स्थापना के आरम्भिक वर्षों में भी जालसाजी से मामले तैयार किए गए, ताकि इन संगठनों की निरन्तर जारी रहने वाली इस उपयोगी कारवाई को अनिवार्य समझा जा सके। अन्यथा, शत्रुओं की संख्या में कमी होने पर इन संगठनों के दुर्दिन आते और इन्हें अन्तर्धान होने के लिए बाध्य कर दिया जाता। जैसाकि कोसीरेव से मामले के स्पष्ट होता है[३], चेका की स्थिति १६१६ के आरम्भ में भी बड़ी डांवाड़ोल थी। सन् १६१८ के समाचारपत्रों को पढ़ते समय मैंने एक ऐसे भंयकर षड्यन्त्र के बारे में सरकारी रिपोर्ट पढ़ी, जिसका हाल में ही पता पता चला था : १० लोगों का एक गिरोह यह चाहता था कि (ऐसा लगता था कि वे केवल चाहते भर थे!) एक तोप को एक अनाथालय की छत पर घसीट ले जाए (आइए देखें यह छत कितनी ऊंची थी?) और क्रेमलिन के ऊपर गोलाबारी करें। ये लोग १० थे (जिनमें शायद औरतें और बच्चे भी हों) और इस बात की कोई सूचना नहीं दी गई थी कि कितनी तोपें वहां ले जाने का इरादा था और यह भी नहीं बताया गया था कि इन तोपों को कहां से प्राप्त किया जाना था। इस बात का भी उल्लेख नहीं किया गया था कि ये तोपें किस आकार की होंगी? और इन्हें किस प्रकार सीढ़ियों से चढ़ा कर ऊपर छज्जे पर पहुंचाया जाएगा। यह भी नहीं बताया गया था कि इन्हें किस प्रकार ढालू छत के ऊपर लगाया जायेगा ताकि ये गोला दागने के समय पीछे हटकर नीचे न जा गिरें! इस बात की भी जानकारी नहीं थी कि यह घटना कैसे हो पाई जबकि पीटर्सबर्ग की पुलिस, फरवरी की क्रान्ति को कुचल डालने के लिए लड़ाई लड़ते समय छतों के ऊपर मशीनगन से भारी कोई हथियार नहीं ले जा सकी? इसके बावजूद यह अत्यधिक काल्पनिक बात, जो १६३७ की जालसाजियों से भी बढ़ चढ़ कर थी, विश्वासयोग्य मानी गई, लोगों ने उस षड्यन्त्र के समाचार को पढ़ा और उस पर विश्वास किया। स्पष्ट है कि एक ऐसा भी समय आएगा जब यह प्रमाणित हो जाएगा कि १६२१ का गुमिलएव का मामला भी पूरी तरह से जालसाजी से तैयार किया गया था।[४]

इसी वर्ष, सन् १६२१ में ही रियाजन की चेका ने स्थानीय बुद्धिवादियों के "एक षड्यन्त्र" का झूठा मामला तैयार किया। पर उस समय तक साहसी लोगों की विरोधपूर्ण आवाज़ मास्को तक पहुंच सकती थी और इस मामले को जहां का तहां छोड़ दिया गया। इसी वर्ष प्राकृतिक शक्तियों के उपयोग सम्बन्धी आयोग की सात्रोपेलाइत समिति के सब सदस्यों को गोली से उड़ा दिया गया। उस युग के रूसी वैज्ञानिकों के रवैये और मनस्थिति से परिचित होने के कारण, और इन वर्षों के अत्यधिक उग्रतापूर्ण आचरण के धूएं की दीवार के पीछे छिपे न होने के कारण हम पुरातत्व सम्बन्धी खुदाई के बिना ही इस मामले की प्रमाणिकता के बारे में निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

सन् १६२१ के बारे में वाई० दोयारेंको को निम्नलिखित बातें याद हैं: हाल में गिरफ्तार लोगों के लिए लुबयांका में एक विशेष स्वागत कोठरी, जिसमें ४०-५० फट्टेदार बिस्तर लगे थे और औरतों को पूरी रात भर एक के बाद एक लाया जा रहा था। इनमें से किसी भी स्त्री को यह जानकारी नहीं थी कि उसका अपराध क्या है और लोगों के मन में बस यही भावना थी कि उन्हें अकारण ही गिरफ्तार किया जा रहा है। पूरी कोठरी में केवल एक स्त्री ही यह जानती थी कि वह वहां क्यों मौजूद है। वह समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी

की सदस्या थी। यगोदा का सबसे पहला सवाल यह होता था : "ठीक है, तुम यहां क्यों लाए गए हो ?" दूसरे शब्दों में, मुझे बताओ और एक झूठा मामला तैयार करने में मेरी मदद करो ! और लोग ऐसा बताते हैं कि १९३० में रियाजन जी० पी० यू० ने भी ठीक यही किया। सब लोग यही सोचते थे कि उन्हें अकारण ही गिरफ्तार किया जा रहा है। अभियोग लगाने के लिए अन्य कुछ न होने के कारण उन लोगों ने आई० डी० टी—व के ऊपर झूठा नाम इस्तेमाल करने का अभियोग लगाया। (यद्यपि उसका नाम पूरी तरह से सही और सच्चा था, लेकिन उन लोगों ने उसे एक विशेष बोर्ड-ओ० एस० ओ०—के द्वारा अनुच्छेद ५८-१० के अन्तर्गत तीन वर्ष की कैद की सज़ा दिला दी।) कहां से पूछताछ शुरू करें यह जानकारी न होने पर पूछताछ अधिकारी ने सवाल किया ? : "तुम क्या काम करते थे ?" उत्तर : "मैं योजनाकार था।" पूछताछ अधिकारी : "मुझे एक ऐसा वक्तव्य लिख कर दो, जिसमें कारखाने में आयोजन और यह काम कैसे किया जाता है यह भी बताओ। इसके बाद मैं तुम्हें बताऊंगा कि तुम्हें क्यों गिरफ्तार किया गया है ?" (पूछताछ अधिकारी बस यही आशा लगाए था कि आयोजन सम्बन्धी विवरण से वह कोई न कोई बात ऐसी ढूंढ लिकालेगा जिस के आधार पर अभियोग लगाया जा सके।)

सन् १९१२ में कोवनो किले के बारे में मामला इस प्रकार चला : अब क्योंकि इस किले का सैनिक उपयोग नहीं रह गया था अत: इसे नष्ट करने का निश्चय किया गया तभी इस किले के अधिकारियों ने अत्यधिक चिन्तित होकर "रात के समय हमले" का आयोजन किया ताकि इस की उपयोगिता को प्रमाणित किया जा सके और वे लोग अपने पदों पर तैनात रह सकें।

प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि अभियुक्त के दोषी होने के बारे में आरम्भ से ही अत्यधिक लचकीला सैद्धांतिक दृष्टिकोण अपनाया जाता था लाल-आतंक के उपयोग के बारे में अपने निर्देशों में चेका के एक अधिकारी एम० आई० लातसिस ने लिखा : "पूछताछ के समय इस बात का प्रमाण और साक्षी ढूंढने की कोशिश न करो कि अभियुक्त ने सोवियत सत्ता के विरुद्ध विचारों की अभिव्यक्ति या कार्य के द्वारा कोई कार्य किया। पहले सवाल ये होने चाहिएं : अभियुक्त किस वर्ग का है, वह किस परिवार में पैदा हुआ है, उसकी शिक्षा क्या है और उसका पालन पोषण किन परिस्थितियों में हुआ है ? (यही आप की साप्रो-पेलाइट समिति का हर्ष हैं !) यही वे प्रश्न हैं, जिनके आधार पर अभियुक्त के भाग्य का निपटारा होना चाहिए।" १३ नवम्बर १९२० को जेरझिन्स्की ने चेका को एक पत्र लिखकर यह सूचना दी कि "चेका में अक्सर प्रवादपूर्ण बातों को हरी झण्डी दिखा दी जाती है।"

इतने दशकों के बाद क्या उन्होंने हमें यह पाठ नहीं पढ़ा दिया है कि लोग वहां से वापस नहीं लौटते। सन् १९३९ की छोटी संक्षिप्त और जानबूझ कर शुरू की गई वापसी की लहर को छोड़ कर हम एक अत्यन्त बिरला उदाहरण, अत्यन्त अलग-थलग किससे सुनते हैं कि किसी व्यक्ति को पूछताछ के परिणामस्वरूप रिहा कर दिया गया। और ऐसे सब मामलों में सम्बन्धित व्यक्ति को या तो जल्दी ही फिर जेल में डाल दिया गया अथवा उसे इस कारण से रिहा किया गया ताकि उसके ऊपर कड़ी नजर रखी जा सके। इसी प्रकार इस परम्परा का जन्म हुआ कि सुरक्षा संगठन कभी गलती नहीं करते। तो उन लोगों का क्या होगा जो निर्दोष थे ?

अपने परिभाषा शब्दकोष में डाल ने निम्नलिखित अन्तरों को स्पष्ट किया है : "एक

आरम्भिक जांच, पूछताछ से इसलिए भिन्न होती है कि यह जांच यह निर्धारित करने के लिए की जाती है कि क्या पूछताछ करने का आधार मौजूद है अथवा नहीं।"

ओह, पवित्र सरलता ! सुरक्षा संगठनों में आरम्भिक जांच जैसी कोई बात सुनी ही नहीं है ! अथवा कोई आरम्भिक संदेह अथवा किसी मुखबिर द्वारा लगाया गया अभियोग, अथवा कोई गुमनाम पत्र भेजकर लगाया गया अभियोग,[५] अभियुक्त को गिरफ्तार कराने के लिए काफी था और इसके बाद औपचारिक रूप से अभियोग लगाने का काम स्वयं अनिवार्य रूप से हो जाता था। पूछताछ के लिए जो समय निर्धारित किया जाता था उसका उपयोग अपराध के रहस्य का पता लगाने के लिए नहीं बल्कि ६५ प्रतिशत मामलों में प्रतिवादी को पस्त कर डालने, जर्जर बना डालने, कमजोर बना डालने और पूरी तरह बहुत ऊंचे स्तर पर नामों की सूचियां तैयार कर ली जाती हैं, असहाय बना डालने के लिए किया जाता है ताकि वह यह सोचने लगे कि यह चाहने लगे, कि किसी भी कीमत पर पूछताछ का यह भयावह क्रम समाप्त हो।

सन् १६१६ में पूछताछ अधिकारी का पूछताछ करने का मुख्य तरीका मेज पर रिवाल्वर रख कर कैदी को डराने धमकाने का होता था। इस प्रकार उन लोगों ने केवल राजनीतिक अपराधों के बारे में ही नहीं बल्कि साधारण अभद्र आचरण अथवा उल्लंघनों के लिये भी यही तरीका अपनाया। मुख्य ईंधन समिति (१६२१) के सदस्यों के मुकदमे के दौरान अभियुक्त माकरोवस्काया ने यह शिकायत की कि पूछताछ के दौरान उसे कोकेन खिला दी गई थी। सरकारी वकील ने यह जवाब दिया कि "यदि वह यह कहती कि उसके साथ अभद्रता का व्यवहार किया गया था, कि उन लोगों ने उसे गोली मार देने की धमकी दी थी तो किसी प्रकार इस पर विश्वास किया जा सकता था।"[६] भयावह रिवाल्वर मेज़ पर पड़ी रहती और यदाकदा इसका निशाना आपकी ओर साधा जाता और पूछताछ अधिकारी यह सोच-सोच कर स्वयं को थका डालने के लिए तैयार नहीं था कि आप किस अपराध के दोषी हैं बल्कि यह चिल्लाता "चलो, बोलो ! तुम जानते हो, तुम्हें क्या करना चाहिए।" सन् १६२७ में पूछताछ अधिकारी खाइकिन बस यही बात स्क्रिपनिकोवा से पूछता रहा। यही बात उन लोगों ने १६२६ में वितकोवस्की से पूछी। और २५ वर्ष बाद कुछ भी नहीं बदला। सन् १६५२ में अन्ना स्क्रिपनिकोवा अपनी ५ वीं सज़ा काट रही थी और ओरझोनिकिजे राज्य सुरक्षा प्रशासन के पूछताछ विभाग का मुखिया सिवाकोव उनसे बोला : "जेल का डाक्टर यह कहता है कि तुम्हारा रक्तचाप २४०।१२० है। यह बहुत नीचा रक्तचाप है, कुतिया कहीं की ! हम रक्तचाप को ३४० डिग्री तक ऊपर पहुंचायेंगे ताकि तुम्हारा दम ही निकल जाए, सांपिनी कहीं की, और तुम्हारे शरीर पर मारपीट का कोई निशान भी नहीं होगा; तुम्हें मारा पीटा नहीं जायेगा, तुम्हारी कोई भी हड्डी टूटी हुई नहीं मिलेगी। बस, हम तुम्हें सोने नहीं देंगे।" उस समय स्क्रिपनीकोवा की उम्र ५० वर्ष से अधिक थी। और जब पूरी रात पूछताछ के दौर में बिताकर वे अपनी जेल की कोठरी में वापस लौटती और दिन के समय अपनी पलक तक झपकती तो जेलर उनके ऊपर बरस पड़ता : "अपनी आंखों को खोलो अन्यथा मैं तुम्हें उस खटिया से घसीट कर इधर फेंकूंगा और तुम्हें दीवार के साथ बांध कर खड़ा कर दूंगा।"

सन् १६२१ तक में पूछताछ का काम रात को ही होता था। उस समय वे लोग कैदी के चेहरे पर मोटरगाड़ियों की तेज रोशनी फेंकते थे (रियाजन चेका-स्तेलमाख)। और सन् १६५६ में लूबयांका में (बेरता गान्दल की साक्षी के अनुसार) वे लोग पहले जेल की कोठरी में बर्फ़ की ठण्डी हवा भर देते थे और फिर बदबूदार गरम हवा

कोठरी में छोड़ दी जाती थी। इसके अलावा एक ऐसी कोठरी भी थी जिसमें हवा जाने का कोई रास्ता न था और दरवाजों पर कार्क की परत लगी हुई थी और इस कोठरी को अत्यधिक गरम करके कैदियों को खोल दिया जाता था। (कवि कुल्यूएव और बेरतागान्दाल को एक ऐसी ही कोठरी में बन्द किया गया था)। सन् १६१८ के यारोस्लावल विद्रोह में हिस्सा लेने वाले वासिली अलैक्सांद्रोविच कासयानोव ने बताया कि किस प्रकार उस समय तक ऐसी कोठरी को तपाया जाता था जब तक आपके शरीर के रोम छिद्रों से खून नहीं बहने लगता था। जब वे लोग दरवाजे में बने छेद में से यह देख लेते थे तो कैदी को स्ट्रेचर पर डालकर अपनी स्वीकारोक्ति पर हस्ताक्षर करने के लिए उठा ले जाया जाता था। "स्वर्ण" युग के "गर्म" और "नमकीन" तरीकों की व्यापक रूप से जानकारी है। और १६२६ में जार्जिया में उन लोगों ने पूछताछ के दौरान कैदियों के हाथ जलाने के लिए जलती हुई सिगरेटों का इस्तेमाल किया। मेतेखी जेल में वे लोग कैदियों को गन्दगी से भरे चौबचे में अन्धेरे में धकेल देते थे।

यहां एक बहुत सीधासादा सम्बन्ध दिखाई पड़ता है। जब एक बार यह तय हो जाता कि किसी भी कीमत पर अभियोग लगाने होंगे तो इस स्थिति में हर बात के बावजूद धमकियां, हिंसा और यातनाएं अनिवार्य हो जातीं। और अभियोग जितने अधिक काल्पनिक होते, जितने अधिक विचित्र होते, पूछताछ को उतना ही अधिक भयंकर बनाना पड़ता ताकि कैदी से आवश्यक स्वीकारोक्ति बलपूर्वक करायी जा सके। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि मामले सदा जालसाजी से तैयार किए जाते थे, इनके साथ हिंसा और यातनाओं का चोली-दामन का सम्बन्ध अपने आप सिद्ध हो जाता है। यह केवल १६३७ में हुआ हो ऐसी बात नहीं है। यह एक पुरानी और सामान्य प्रक्रिया थी। और यही कारण है कि भूतपूर्व कैदियों के इन संस्मरणों को पढ़ना आज विचित्र लगता है कि "सन १६३८ से यातनाएं देने की अनुमति दी गई।"[7] ऐसी किसी भी प्रकार की आध्यात्मिक अथवा नैतिक बाधाएं नहीं थीं जो सुरक्षा संगठनों के कर्मचारियों को यातनाएं देने से रोक पातीं। युद्ध के बाद के आरम्भिक वर्षों में चेका की साप्ताहिक पत्रिका लाल तलवार और लाल आतंक में मार्क्सवादी दृष्टिकोण से यातनाएं देने की ग्राह्यता पर खुलकर बहस होती थी। बाद के घटनाक्रम को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि इस बहस के परिणामस्वरूप सकारात्मक निष्कर्ष ही निकाले गए, चाहे यह कार्य सार्वभौम रूप से न हुआ हो।

यह कहना अधिक सही है कि यदि सन् १६३८ से पहले यातना देने के लिए किसी प्रकार की औपचारिक कारवाई की आवश्यकता होती थी, और पूछताछ के लिए प्राप्त प्रत्येक मामले में अलग से अनुमति लेनी पड़ती थी (यद्यपि ऐसी अनुमति प्राप्त करना बड़ा आसान था), तो सन् १६३७-१६३८ में असाधारण परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए (गुलाग द्वीपसमूह के लिए लाखों की निर्धारित संख्या में व्यक्तिगत पूछताछ के निश्चित प्रकार और अवधि के भीतर लोगों को यातनाएं देकर तैयार करना आवश्यक था जबकि यह कार्य कुलकों और अन्य राष्ट्रीय अल्पसंख्यक जातियों की सामूहिक गिरफ्तारियों की लहर के दौर में नहीं हुआ) पूछताछ अधिकारियों को हिंसा का प्रयोग करने और यातनाएं देने की खुली छूट दे दी गई। वे अपनी इच्छा के अनुसार जिस सीमा तक चाहें कैदियों को यातनाएं दे सकते थे। उनके लिए काम का जो कोटा निर्धारित होता था और जितना समय इन मामलों को पूरा करने के लिए दिया जाता था उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वे मनमानी यातनाएं दे सकते थे। किस प्रकार की यातनाएं दी जा सकती हैं इसका नियमन नहीं हुआ था और हर प्रकार के नए-नए प्रयोगों की अनुमति थी चाहे इनका स्वरूप कैसा भी

निन्दनीय क्यों न हो।

सन् १९३९ में इस प्रकार मनमाने ढंग से यातनाएं देने की अनुमति को वापस ले लिया गया और एक बार फिर यातनाएं देने के लिए लिखित अनुमति प्राप्त करना आवश्यक हो गया और सम्भवत: इतनी आसानी से अनुमति दी भी नहीं जाती थी। (वस्तुत:, केवल धमकियां, ब्लैकमेल, धोखाधड़ी, निरन्तर जगाये रखकर कैदी को पस्त कर डालना और सज़ा की कोठरियों में बन्द कर देने पर कभी भी पाबंदी नहीं थी।) इसके बाद युद्ध के अन्त के समय से और युद्ध के बाद के समस्त वर्षों में आदेश के द्वारा यह निर्धारित कर दिया गया था कि किन कोटियों के कैदियों के ऊपर व्यापक रूप से यातनाओं की आजमाइश की जा सकती है। कैदियों की इन कोटियों में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक जातियां, विशेषकर यूक्रेनी और लिथुवानिया की जातियां शामिल थीं। जहां कहीं किसी गुप्त संगठन की मौजूदगी अथवा संदेह होता था और जिसे पूरी तरह से ढूंढ़ निकालने की आवश्यकता होती थी उसके सदस्यों को मनमानी यातनाएं दी जा सकती थीं। ऐसे मामले में गिरफ्तार लोगों से अन्य सब सम्बन्धित लोगों के नामों का पता लगाना ज़रूरी होता था। उदाहरण के लिए प्रानुस के पुत्र रोमुलड़ास स्काइरिस की टोली में लगभग पचास लिथुवानियावासी थे। सन् १९४५ में इन लोगों के ऊपर सोवियत विरोधी इश्तहार चिपकाने का अभियोग लगाया गया। अब क्योंकि उस समय लिथुवानिया में पर्याप्त जेलें नहीं थीं, उन लोगों ने इन कैदियों को आर्चएंजेल प्रान्त में वेल्स्क के पास एक शिविर में भेज दिया। वहां कुछ लोगों को यातनाएं दी गईं और कुछ अन्य अत्यधिक काम और पूछताछ की दोहरी मार को बर्दाश्त नहीं कर पाये, और इसके परिणामस्वरूप उन पचास के पचास लोगों ने, स्वीकारोक्ति की। कुछ समय बाद लिथुवानिया से यह समाचार आया कि इश्तहार चिपकाने वाले सच्चे अपराधियों को पकड़ लिया गया है और पहले जिस टोली को गिरफ्तार किया गया था उसमें से एक का भी इश्तहार चिपकाने में हाथ नहीं था। सन् १९५० में कूईबाइशेव की संक्रमण जेल में मेरी मुलाकात नेप्रोपेत्रोवस्क से आए एक यूक्रेनी से हुई, जिसके अपने "सम्पर्क के लोगों" के नामों का पता लगाने के लिये अनेक प्रकार से यातनाएं दी गयी थीं यातनाओं के इस दौर में उसे एक ऐसी सज़ा की कोठरी में भी बन्द किया गया जिसमें केवल खड़े रहने भर के लिए जगह थी। उन लोगों ने इस कोठरी के भीतर एक बांस और खड़ा कर दिया, जिसके सहारे वह नींद ले सके—एक दिन में चार घंटे नींद निकालने की अनुमति थी। युद्ध के बाद, उन्होंने विज्ञान अकादमी की वैकल्पिक सदस्य लेविना को इसलिए यातनाएं दीं कि उसका उन लोगों से परिचय था जिनसे एलिलूएव दम्पत्ति का भी परिचय था।

इस "अनुसंधान" का श्रेय भी सन् १९३७ को देना गलत होगा कि अभियुक्त की व्यक्तिगत स्वीकारोक्ति को अन्य किसी भी प्रमाण अथवा तथ्यों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण मान लिया गया था। सन् १९२० के बाद के वर्षों में इस संकल्पना का प्रतिपादन किया जा चुका था और १९३७ तो केवल एक ऐसा वर्ष था जब वाइशिंस्की की अत्यन्त मेधावी शिक्षाएं अपना असली स्वरूप धारण करने लगीं। यह उल्लेखनीय है कि उस समय भी केवल पूछताछ अधिकारियों और सरकारी वकीलों को ही वाइशिंस्की शिक्षाओं का लाभ मिलता था—यह उनका हौसला बनाए रखने और अपने काम पर बिना किसी हिचक के डटे रहने के लिए किया जाता था। देश के शेष लोगों को २० वर्ष बाद उस समय इसकी जानकारी मिली जब यह शिक्षा ग्राह्य नहीं रह गई थी और समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों में बड़े

मामूली से तरीके से इसका उल्लेख किया गया था। और इन लेखों में इस विषय की इस रूप में चर्चा की गई थी मानो लम्बे अरसे से सब लोग इसके बारे में जानते हों।

अब यह स्पष्ट हुआ कि उस भयंकर वर्ष में आन्द्रेई जानुआरएविच (हमारे मन में इसका उच्चारण "जागरएविच" [अर्थात् चीता] करने का भाव उठता है) वाईशिस्की ने सर्वाधिक लचीली द्वन्द्वात्मकता का लाभ उठाते हुए (यह ऐसी द्वन्द्वात्मकता थी जो आज न तो सोवियत नागरिकों को और न ही इलेक्ट्रोनिक यंत्रों को प्राप्त है क्योंकि उनके लिए हां का अर्थ हां और नहीं का अर्थ नहीं है) एक रिपोर्ट में यह कहा, जो कुछ खास क्षेत्रों में बहुत प्रसिद्ध हो गई है कि एक नश्वर व्यक्ति के लिए पूर्ण सत्य का प्रतिपादन कर पाना सम्भव नहीं है। वह केवल सापेक्ष सत्य का ही निर्धारण कर सकता है। वाईशिस्की यहीं नहीं रुके बल्कि उन्होंने एक कदम और आगे लिया और यह एक ऐसा कदम था जो पिछले दो हजार वर्षों में न्यायविद उठाने का साहस नहीं कर पाये थे : कि पूछताछ और मुकदमे के माध्यम से जिस सत्य की स्थापना की जाती है वह पूर्ण नहीं हो सकता, केवल सापेक्ष हो सकता है। इस प्रकार हम किसी व्यक्ति को गोली से उड़ाये जाने की सजा देने के आदेश पर हस्ताक्षर करते हैं। पर हमें कभी भी इस बात का पूर्ण निश्चय नहीं हो पाता, कि दण्डित व्यक्ति दोषी है, बल्कि मोटे तौर पर, एक दृष्टि से कुछ प्रमेयों के आधार पर ही हम यह निष्कर्ष निकाल पाते हैं कि दण्डित व्यक्ति दोषी था।[८] इसके बाद सर्वाधिक व्यावहारिक निष्कर्ष निकाला गया था : कि पूर्ण प्रमाण प्राप्त करने का प्रयास करना निरर्थक है क्योंकि प्रमाण सदा सापेक्ष होता है—अथवा ऐसे गवाह प्राप्त करना भी निरर्थक है जो किसी भी हालत में बदलें नहीं क्योंकि वे विभिन्न अवसरों पर विभिन्न बातें कह सकते हैं। अपराधी होने के प्रमाण सापेक्ष थे, मोटे तौर पर लगभग की शब्दावली में थे और पूछताछ अधिकारी इनका अनुसंधान कर सकता था चाहे कोई भी प्रमाण और कोई भी गवाह मौजूद क्यों न हो। और वह यह कार्य अपने दफ्तर से बाहर निकले बिना ही कर सकता था। वह यह कार्य "अपने निष्कर्षों को केवल अपनी बुद्धि के आधार पर ही नहीं बल्कि अपनी पार्टी की संवेदनशीलता, अपनी नैतिक शक्तियों के आधार पर भी कर सकता था" (दूसरे शब्दों में यह एक ऐसे व्यक्ति की श्रेष्ठता थी जो खूब डटकर सोया था, जिसे खूब अच्छा भोजन मिला था और जिसे मारा-पीटा नहीं गया था) "और वह अपने चरित्र" के आधार पर भी यह कार्य कर सकता था (अर्थात् क्रूरता बरतने की अपनी इच्छा के अनुसार वह यह काम कर सकता था)। वस्तुतः काम करने का यह तरीका लात्सिस के निर्देशों से कहीं अधिक शानदार था। लेकिन सार रूप में यह दोनों समान थे।

केवल एक दृष्टि से ही वाईशिस्की के तर्क की निरन्तरता असफल रही। और उसे द्वन्द्वात्मक तार्किकता से पीछे हटना पड़ा : न जाने क्यों, जल्लाद की गोली जिसे इस्तेमाल करने का वाईशिस्की आदेश देता था सापेक्ष नहीं थी बल्कि पूर्ण थी......

इस प्रकार उच्च या विकसित सोवियत न्याय प्रणाली के निष्कर्ष एक चक्र में आगे बढ़ते हुए बर्बर अथवा मध्य युगीन स्तरों पर पहुंच गए थे। मध्ययुग के यातना देने वाले जल्लादों की तरह ही हमारे पूछताछ अधिकारी, सरकारी वकील और न्यायाधीश अभियुक्त की स्वीकारोक्ति को अपराध का सबसे बड़ा प्रमाण मानने पर सहमत हो गए थे।[९] पर सरल मन मस्तिष्क वाले मध्य युगों में वांछित स्वीकारोक्तियां कराने के लिए बड़े नाटकीय और दृश्यवत तरीकों का इस्तेमाल किया जाता था : रैक अर्थात् अभियुक्त के शरीर को

अधिक से अधिक खींचने के लिए बनाई गई मशीन, और इसी प्रकार का एक पहिया, कीलें जड़ा हुआ तख्ता, जलते हुए अंगारे आदि। २०वीं शताब्दी में हमारा अत्यधिक विकसित चिकित्सा सम्बन्धी ज्ञान और जेलों के व्यापक अनुभव का लाभ उठाते हुए (और किसी व्यक्ति ने बड़े गम्भीरता से डाक्टर की उपाधि के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले एक प्रबन्ध अथवा थीसेस में इसे अपना विषय चुना और इसका पृष्ठपोषण किया), लोग यह अनुभव करने लगे कि ऐसे प्रभावशाली उपकरणों को एकत्र करना व्यर्थ है और जब बड़े पैमाने पर स्वीकारोक्तियों की आवश्यकता हो तो ये उपकरण बड़े असुविधाजनक बन सकते हैं। और इसके अलावा...

इसके अलावा, स्पष्ट रूप से एक और परिस्थिति भी थी। सदा की तरह स्तालिन कभी भी अन्तिम बात नहीं कहता था और उसके अधीनस्थ अधिकारियों को यह अनुमान लगाना पड़ता था कि वह क्या चाहता है। इस प्रकार वह एक गीदड़ की तरह अपने लिए भाग निकलने का एक रास्ता रख छोड़ता था ताकि वह यदि चाहे तो अपना कदम वापस ले सके और "सफलता के कारण संतुलन खो देने" के बारे में लिख सके। आखिरकार मानव इतिहास में पहली बार करोड़ों लोगों को जानबूझ कर यातनाएं देने का अभियान चलाया जा रहा था और अपनी समस्त शक्ति और सत्ता के बावजूद स्तालिन को अपनी सफलता का पूर्ण निश्चय नहीं था। इतने बड़े पैमाने पर जिस बात से मनुष्यों का सम्बन्ध था, प्रयोग के प्रभाव उससे भिन्न हो सकते थे, जिन्हें बहुत कम लोगों पर आजमा कर प्राप्त किया जा सकता था। कोई अकल्पित विस्फोट हो सकता था, भूगर्भ की किसी खामी के कारण धरती खिसक सकती थी अथवा संसार भर में इन बातों का भण्डा फोड़ सकता था। चाहे कुछ भी होता, स्तालिन को एकदम निर्दोष और अबोध बना रहना था, उसे अपने पवित्र बाने को देवदूतों की तरह पवित्र रखना था।

इस प्रकार हमें यह निष्कर्ष निकालने के लिए बाध्य होना पड़ता है कि पूछताछ अधिकारियों के मार्गदर्शन के लिए यातनाओं और कष्ट पहुंचाने के तरीकों की कोई मुद्रित सूची तैयार नहीं की गई थी। बस, अपेक्षा केवल इस बात की थी कि प्रत्येक पूछताछ विभाग एक निश्चित अवधि में, एक निश्चित संख्या में खरगोशों को, ऐसे खरगोशों को जो स्वीकारोक्तियां कर चुके हों, अदालत के हवाले कर दे। और इस बात को बहुत सीधे सादे ढंग से, केवल मौखिक रूप से लेकिन अक्सर दोहराया गया था कि जब तक ये तरीके महान् उद्देश्य की पूर्ति करते हों इन्हें अच्छा समझा जाएगा; कि किसी भी पूछताछ अधिकारी को किसी अभियुक्त की मृत्यु के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जाएगा और जेल के डाक्टर को पूछताछ की प्रक्रिया में यथासम्भव कम से कम हस्तक्षेप करना चाहिए। इस बात की पूरी संभावना है कि वे लोग बड़े भाईचारे से अपने अनुभवों का आदान प्रदान करते थे; "वे लोग सर्वाधिक सफल कार्यकर्ताओं से सीखते थे।" इसके अलावा "भौतिक पुरस्कार" भी दिए जाते थे—रात के समय काम करने के लिए अधिक वेतन, अधिक तेज़ी से काम करने के लिए बोनस—और इस आशय की निश्चित चेतावनियां भी रहती थीं कि जो पूछताछ अधिकारी अपने काम को पूरा नहीं कर पायेंगे उन्हें...इस प्रकार किसी प्रान्त की एन० के० वी० डी० के प्रशासन का अध्यक्ष, कोई गड़बड़ हो जाने पर, स्तालिन को यह दर्शा सकता था कि उसके हाथ बिलकुल साफ हैं : उसने अभियुक्तों को यातनाएं देने के लिए कोई प्रत्यक्ष आदेश जारी नहीं किया था! लेकिन साथ ही उसने इस बात की पूरी व्यवस्था कर ली थी कि

यातनाएं अवश्य दी जाएंगी।

इस बात को समझते हुए कि उनके वरिष्ठ अधिकारी आत्मरक्षा के लिए सावधानियां बरत रहे हैं, मध्यम दर्जे के कुछ पूछताछ अधिकारी—वे पूछताछ अधिकारी नहीं, जो पागलों की उन्मत्तता से शराब पीते थे—अपेक्षाकृत कम कठोर तरीकों से शुरू करते थे और जब वे इन तरीकों को और अधिक कठोर बनाते जाते थे तो भी उनका यह प्रयास रहता था कि अभियुक्त के शरीर पर मारपीट या हिंसा का कोई स्पष्ट चिह्न दिखाई न पड़े। कोई आंत बाहर न लटक आए, कोई टांग उखड़ न जाए, रीढ़ की हड्डी टूट न जाए और सारा शरीर चोटों के निशान से न भर जाए।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि विभिन्न प्रान्तों के प्रशासनों में सन् १९३७ में यातना के तरीकों में अधिक एकरूपता नहीं थी—कैदी को जबरदस्ती सोने से रोकने को छोड़कर—अथवा एक ही प्रशासन के विभिन्न पूछताछ अधिकारी भी अलग-अलग तरीके अपनाते थे।[१०]

पर उनमें एक समानता थी कि वे तथाकथित हल्के तरीकों को तरजीह देते थे (हम अभी देखेंगे कि हल्के तरीके क्या थे)। यह बात निश्चयपूर्वक दिखाई पड़ती थी। वस्तुतः मानव संतुलन की वास्तविक सीमाएं अत्यधिक सीमित होती हैं और वस्तुतः यह आवश्यक नहीं होता कि एक सामान्य मनुष्य को एकदम पागल कर डालने के लिए रैक अथवा जलते अंगारों की आवश्यकता हो।

आइए हम कुछ ऐसे सबसे अधिक सरल और सीधे सादे तरीकों का विवरण प्रस्तुत करें जो कैदी के शरीर पर कोई भी निशान छोड़े बिना उसकी संकल्प शक्ति और चरित्र को नष्ट कर डालते हैं।

हम सबसे पहले मनोवैज्ञानिक तरीकों पर विचार करेंगे। इन तरीकों का उन खरगोशों पर अत्यधिक विशाल और यहां तक कि विनाशकारी प्रभाव होता है जो स्वयं को जेल की यातनाओं के लिए तैयार नहीं कर पाये थे। और यह एक ऐसे व्यक्ति के लिए भी आसान नहीं है, जिसकी आस्थाएं प्रबल हैं।

१—सबसे पहले : रात। इसका क्या कारण है कि मानव आत्माओं को तोड़ डालने का समस्त कार्य रात के समय ही किया जाता था? इसका क्या कारण था कि अपने एकदम आरम्भिक वर्षों से ही संगठनों ने रात का समय ही चुना था? इस कारण से क्योंकि नींद से जगाया गया कैदी, चाहे अभी तक उसे नींद के अभाव के माध्यम से यातना भी न दी गई हो, अपने दिन के समय के सामान्य संतुलन और सूझबूझ से वंचित रहता है। वह आसानी से यातनाओं के द्वारा तोड़ा जा सकता है।

२—अत्यधिक निष्ठा और कैदी की भलाई के प्रति चिन्ता प्रदर्शित करने का तरीका भी सबसे सरल है। कैदी को इस तरीके से स्वीकारोक्ति करने के लिए सहमत किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि बिल्ली और चूहे का खेल खेलने की क्या जरूरत है? आखिरकार कुछ समय उन लोगों के बीच बिताने के बाद जो पूछताछ का सामना कर चुके थे, कैदी स्वयं यह देख चुका था कि स्थिति क्या है? और इस प्रकार पूछताछ अधिकारी कैदी से बड़े आलस्य से और मित्रतापूर्ण तरीके से यह कहता है : "देखो, चाहे कुछ भी हो तुम्हें सजा काटनी ही पड़ेगी। अगर तुम प्रतिरोध करोगे, तो यहीं जेल में टूट जाओगे, तुम्हारा स्वास्थ्य बर्बाद हो जाएगा। लेकिन तुम अगर शिविर में चले जाते हो,

तो वहां तुम्हें शुद्ध हवा और भूख मिलेगी...तो स्वीकारोक्ति पर हस्ताक्षर क्यों नहीं कर देते ?" बड़ी तर्कपूर्ण बात है। और जो लोग इस बात से सहमत हो जाते हैं और हस्ताक्षर कर देते हैं वे चतुर सिद्ध होते हैं, यदि...यदि मामला केवल उनसे ही सम्बन्धित हो लेकिन ऐसा शायद ही कभी होता है। संघर्ष अनिवार्य है।

कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य को फुसलाने के लिए एक और तरीका विशेष रूप से उचित समझा जाता है। "यदि देश में आवश्यक वस्तुओं की कमी है और यहां तक की इनका अकाल है, तो तुम्हें एक बोलशेविक होने के नाते यह निर्धारित करना होगा : क्या तुम यह स्वीकार कर सकते हो कि इसके लिए पूरी पार्टी को दोष दिया जा सकता है ? अथवा क्या पूरी सोवियत सरकार को दोषी ठहराया जा सकता है ?" नहीं कभी नहीं !" फ्लैक्स डिपो के निदेशक ने तत्परता से उत्तर दिया। "तो साहस दिखाओ, और यह दोष अपने ऊपर लो !" और उसने यही किया।

३—गाली गलौच की भाषा का प्रयोग एक चतुरतापूर्ण तरीका नहीं है लेकिन इस का उन लोगों के ऊपर बड़ा भयंकर प्रभाव हो सकता है, जिनका अच्छे ढंग से पालन पोषण हुआ हो, जिनकी परिष्कृत अभिरुचि हो, जिनके विचार अच्छे हों। मुझे पादरियों के दो मामलों की जानकारी है, जिन्होंने केवल भद्दी गालियों के समक्ष ही घुटने टेक दिए। एक पादरी ने सन् १९४४ में बुत्यर्की जेल में यह किया। एक स्त्री पूछताछ अधिकारी यह गालियां बक रही थी। इससे पहले जब वह हमारी कोठरी में वापस आया था तो यह कहते हुए नहीं अघाता था कि वह स्त्री पूछताछ अधिकारी कितनी विनम्र थी। लेकिन एक बार वह अत्यधिक उदासी से भरा हुआ वापस लौटा और बहुत देर तक वह हमें यह बताने को तैयार नहीं हुआ कि इस स्त्री अधिकारी ने अपनी एक टांग पर दूसरी टांग रख कर किस प्रकार गालियां बकनी शुरू कीं (मुझे खेद है कि मैं यहां उसकी एक छोटी से छोटी गाली का भी उल्लेख नहीं कर सकता।)

४—कभी कभी मनोवैज्ञानिक भिन्नता प्रभावशाली सिद्ध होती थी : उदाहरण के लिए पूछताछ अधिकारी द्वारा अपने स्वर में एकदम परिवर्तन कर डालना। पूछताछ की कुछ अथवा पूरी अवधि में पूछताछ अधिकारी अत्यधिक मित्रतापूर्ण बना रहेगा, कैदी को उसके पहले नाम से और पारिवारिक नाम से पुकारेगा और उसकी हर सहायता करने का वचन देता रहेगा। तभी अचानक वह एक पेपरवेट उठा लेगा और चिल्लाकर कहेगा : "तू, चूहा कहीं का ! मैं तेरी खोपड़ी में ९ ग्राम सीसा भर दूंगा !" और वह अभियुक्त की ओर आगे बढ़ेगा, उसके दोनों हाथ इस प्रकार आगे बढ़े होंगे मानो वह कैदी के बाल पकड़ कर उसे दबोच लेगा और उसके नाखून सुइयों की तरह दिखाई पड़ रहे होंगे (स्त्री कैदियों पर यह तरीका बहुत सफल रहा।)

अथवा इसका एक भिन्न रूप भी था : दो पूछताछ अधिकारी बारी-बारी से काम करेंगे। एक चिल्लायेगा, धमकियां देगा। दूसरा मित्रतापूर्ण प्राय: भद्रतापूर्ण व्यवहार करेगा। अभियुक्त पूछताछ अधिकारी के दफ्तर में प्रवेश करते समय इसी कल्पना से कांपता रहेगा कि इस बार उसका सामना कौन से अधिकारी से होगा ? कैदी भद्र आचरण करने वाले अधिकारी को खुश करने के लिए हर सम्भव प्रयास करेगा। यहां तक कि ऐसी बातों पर हस्ताक्षर करेगा, ऐसी बातों की स्वीकारोक्तियां करेगा जो कभी नहीं हुई थीं।

५—कैदी को आरम्भ में ही अपमानित करना एक दूसरा तरीका था। रोस्तोव-आन-

दी दोन की जी०पी०यू० (मकान संख्या ३३) की प्रसिद्ध जमीन दोज कोठरियों में, जिनमें भूतपूर्व गोदाम (जो जमीन के भीतर बना हुआ था) के ऊपर के गलियारे में मोटे कांच के टुकड़ों सदृश लैन्स लगे हुए थे और इनसे ही प्रकाश प्राप्त होता था। प्रमुख बरामदे में कैदियों को घंटों तक जमीन पर अपना मुंह करके लेटे रहने का हुक्म दिया जाता था। उन्हें अपना सिर ऊंचा उठाने और जरासी भी आवाज़ करने की सख्त मनाही थी। वे प्रार्थना करने वाले मुसलमानों की तरह जमीन पर लेटे रहते थे जब तक कोई सन्तरी आकर उनका कन्धा नहीं छूता था और उन्हें पूछताछ के लिए नहीं ले जाता था। एक दूसरा मामला : लूबयांका में अलेक्सांद्रा ओ—वा ने वह बयान देने से इनकार कर दिया जो उससे देने को कहा जा रहा था। उसे लेफोरतोवो जेल भेज दिया गया। इस जेल के कैदियों को दर्ज करने वाले दफ्तर में एक स्त्री जेलर ने उसे अपने सब कपड़े उतार देने का हुक्म दिया। उससे यह कहा गया था कि उसका डाक्टरी मुआइना किया जायेगा। जैसे ही उसने कपड़े उतारे वह स्त्री जेलर उन्हें उठा ले गई और अलैक्सेन्द्रा ओ—वा को एक "खोखे" में नंगा ही बन्द कर दिया। इस के बाद पुरुष जेलरों ने इस खोखे के दरवाजे में बने छेद से झांकना और उसके अंगों की बनावट के बारे में टीका टिप्पणी करना शुरू कर दिया। वे इसके साथ-साथ अमानुषिक अट्टहास भी करते जा रहे थे। यदि किसी व्यक्ति को भूतपूर्व कैदियों से विधिवत् पूछताछ करने का अवसर मिले तो यह निश्चय है कि ऐसे अनेक उदाहरण सामने आ जाएंगे। इन सबका केवल एक उद्देश्य था : कैदी का मनोबल तोड़ डालना और उसे अपमानित करना।

६—कैदी को अत्यधिक भ्रांति में, उलझन में डालने के लिए कोई भी तरीका अपनाया जा सकता था। मास्को प्रान्त के क्रासनोगोरस्क के एफ आई वी—एफ से इस प्रकार पूछताछ की गई। (इसकी जानकारी आई० ए० पी—एव ने दी।) पूछताछ के दौरान स्त्री पूछताछ अधिकारी ने उसकी आंखों के सामने ही धीरे-धीरे स्वयं अपने वस्त्र उतारने शुरू कर दिए और यह करते समय वह कैदी से लगातार सवाल पूछे जा रही थी, मानो कुछ भी असाधारण बात न हो रही हो। वह कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाती रही और उसके पास भी आई तथा कैदी से स्वीकारोक्ति कराने का प्रयास करती रही। हो सकता है कि इस प्रकार के आचरण से इस स्त्री पूछताछ अधिकारी की कोई व्यक्तिगत सनक पूरी होती हो। लेकिन यह भी हो सकता है कि बहुत ही सूक्ष्म योजना बना कर यह काम किया जा रहा हो, अभियुक्त को इस कदर उलझन में डाल देने का प्रयास किया गया हो कि वह घबरा जाए और स्वीकारोक्ति पर हस्ताक्षर कर दे। और स्वयं इस स्त्री को कोई खतरा नहीं था। उसके पास अपनी पिस्तौल थी और सन्तरी को बुलाने के लिए घंटी भी लगी हुई थी।

७—डराने धमकाने का काम व्यापक पैमाने पर होता था और इसके बड़े विविध स्वरूप थे। अक्सर इसके साथ प्रलोभन और वचन भी दिये जाते थे जो निश्चय ही झूठे होते थे। सन् १९२४ में : "अगर तुम स्वीकारोक्ति नहीं करते तो तुम सोलोवेतस्की द्वीपों में जाओगे। जो कोई स्वीकारोक्ति करता है उसे छोड़ दिया जाता है।" सन् १९४४ में : "तुम्हें किस शिविर में भेजा जायेगा यह हमारे ऊपर निर्भर करता है। शिविर अलग-अलग किस्म के होते हैं। अब हमारे पास ऐसे भी शिविर हैं जिनमें बहुत कठोर परिश्रम कराया जाता है। अगर तुम हठधर्मिता से काम लेते हो, अड़ियल बने रहते हो तो तुम्हें खानों में भेजा जाएगा और वहां तुम २५ वर्ष तक हथकड़ियों में काम करोगे!" डराने धमकाने का

एक दूसरा तरीका यह था कि कैदी को यह धमकी दी जाती थी कि वह जिस जेल में है उससे भी कहीं अधिक बुरी जेल में उसे भेज दिया जाएगा। "अगर तुम अड़ियल बने रहते हो, तो हम तुम्हें लेफोरतोवो भेज देंगे" (अगर आप लूबयांका में हैं) या "सुखानोवका जेल में भेज देंगे" (अगर आप लेफोरतोवो में हैं))" वे आपसे बात करने का दूसरा तरीका भी निकाल सकते थे। जहां आप उस समय मौजूद थे, आप वहां की परिस्थितियों के आदी हो चुके थे, आपको वहां की परिस्थितियां अब इतनी बुरी नहीं लग रहीं थीं और अन्यत्र न जाने किन यातनाओं का सामना करना पड़े ! हां, दूसरे स्थान पर पहुंचाने के लिए आप को भयानक परिस्थितियों में यात्रा भी करनी होगी...तो क्या आपको घुटने टेक देने चाहिएं, स्वीकारोक्ति कर लेनी चाहिए।

डराने धमकाने का तरीका उन लोगों पर बहुत खूबसूरती से कामयाब रहता था, जिन्हें अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया था बल्कि बोलशोईदोन अर्थात् बड़ी इमारत में हाजिर होने के लिए सरकारी तौर पर सम्मन भेजे गये थे। ऐसे स्त्री-पुरुष को अभी तक बहुत कुछ खोने को शेष था। ऐसा प्रत्येक स्त्री-पुरुष हर बात से भयभीत रहता था—कि वह उसे शायद आज वापस न लौटने दें, कि वह उसकी सारी चीजों या मकान को ही ज़ब्त न कर लें। इन खतरों से बचने के लिए वह किसी भी प्रकार की गवाही देने और किसी भी प्रकार की बात पर सहमत हो जाने के लिए तैयार हो सकता है। यह भी स्पष्ट है कि ऐसी मुसीबत में फंसी कोई भी स्त्री दण्डसंहिता की व्यवस्थाओं से अपरिचित होगी। पूछ-ताछ शुरू करते समय वह उसके सामने एक कागज रख देंगे, जिसके ऊपर दंडसंहिता की किसी व्यवस्था का झूठा उल्लेख होगा : "मुझे यह चेतावनी दे दी गई है कि झूठा बयान देने पर...मुझे पांच वर्ष की कैद की सज़ा मिल सकती है।" (वास्तव में अनुच्छेद ९५ के अन्तर्गत २ वर्ष की कैद की सजा की व्यवस्था है।) "बयान देने से इनकार करने की पांच साल की सज़ा..." (वास्तव में, अनुच्छेद ९२ के अधीन यह तीन महीने तक की कैद की सज़ा हो सकती है।) इस प्रकार पूछताछ अधिकारी के बुनियादी तरीकों में से एक तरीका सामने आ जाता है और यह बार-बार विभिन्न रूपों में सामने आता रहता है।

८—झूठ। हम मेमनों को झूठ बोलने की मनाही है लेकिन पूछताछ अधिकारी मन-माना झूठ बोल सकता है। कानून के उक्त अनुच्छेद उसके ऊपर लागू नहीं होते। हम उस पैमाने से भी वंचित हो जाते हैं, जिसके आधार पर हम मूल्यांकन कर सकते हैं : उसे झूठ बोल कर मिलता क्या है ? वह हमारे सामने जितने दस्तावेज़ चाहे पेश कर सकता है, जिनके ऊपर हमारे रिश्तेदारों और मित्रों के जाली दस्तखत हों—और इसे पूछताछ का चतुरता-पूर्ण तरीका ही बताया जाएगा।

गिरफ्तार व्यक्ति के उन रिश्तेदारों पर जिन्हें गवाही देने के लिए बुलाया जाता है प्रलोभन और झूठ के द्वारा दबाव डालना एक बुनियादी बात थी। "अगर तुम हमें यह बात नहीं बताते" (प्रत्येक प्रश्न के सम्बन्ध में यह कहा जाता था, "तो उसका और बुरा हाल होगा....तुम उसे पूरी तरह से नष्ट कर डालोगे।" (किसी माता के लिए यह सुनना कितना भयानक होगा।") "कागज पर हस्ताक्षर करना" (और रिश्तेदारों के सामने कागज़ बढ़ा दिया जाता) "एकमात्र ऐसा तरीका है कि तुम उसे बचा सकते हो" (उसे समाप्त कर सकते हो।)

९—गिरफ्तार व्यक्ति जिन लोगों से प्यार करता है उनको हानि पहुंचाने की

धमकियां देना बड़ा कारगर साबित होता है। डराने धमकाने का यह सबसे प्रभावशाली तरीका था। इस तरीके से एक पूर्ण रूप से निर्भीक व्यक्ति को भी घुटने टेकने के लिए बाध्य किया जा सकता था क्योंकि अपने प्रियजनों को यातनाओं से बचाने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता था। (ओह, यह कहावत इतनी दूरदर्शितापूर्ण थी : "एक आदमी का परिवार उसका शत्रु होता है।") उस तातार का स्मरण कीजिए, जिसने यातनाएं सहीं—स्वयं अपनी और अपनी पत्नी की यातनाओं को भी बर्दाशत किया—लेकिन वह अपनी पुत्री की यातनाओं को बर्दाशत नहीं कर सका। सन् १९३० में एक स्त्री पूछ-ताछ अधिकारी रीमालिस यह धमकी देती थी : "हम तुम्हारी पुत्री को गिरफ्तार कर लेंगे और उसे आतशक के रोगियों के साथ एक कोठरी में बन्द कर देंगे।" और यह धमकी एक औरत देती थी !

वे लोग आपके प्रत्येक प्रियजन को गिरफ्तार कर लेने की धमकी देते थे। कभी-कभी इसका बड़ा ठोस प्रभाव होता था। आपकी पत्नी को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है लेकिन उसका भाग्य आपके ऊपर निर्भर करता है। वह बराबर के कमरे में उससे पूछताछ कर रहे हैं, ज़रा सुनिए ! और दीवार के उस पार आपको सचमुच एक रोती हुई और चीखती हुई स्त्री की आवाज़ सुनाई पड़ती है। (आखिरकार रोने और चिल्लाने की सब आवाजें समान होती हैं; आप एक दीवार के पीछे से इन्हें सुन रहे हैं; और आप अत्यधिक तनाव की स्थिति में हैं, आवाज़ को पहचानने का विशेषज्ञ बनने की बात आपके बूते के बाहर है। कभी-कभी वे एक "विशिष्ट पत्नी" जैसी आवाज़ का रिकार्ड बजाते हैं। रिकार्ड बजाते समय यह ध्यान रखा जाता है कि कैदी की पत्नी की आवाज़ पतली है, भारी है, तीखी है। और उसके अनुसार ही रिकार्ड बजाया जाता है—यह श्रम को बचाने का तरीका है और सचमुच उसका सुझाव किसी प्रतिभावान शोधकर्ता ने दिया होगा।)" और कभी-कभी बिना ये जालसाजियां किए ही वे आपको कांच की दीवार से पीछे आपकी पत्नी को चुपचाप दुख से सिर झुकाये हुए जाते हुए दिखाते हैं। हां ! स्वयं आपकी पत्नी राज्य सुरक्षा संगठन के बरामदों में ! आपने अपने अड़ियलपन से उसे भी नष्ट कर डाला है ! उसे गिरफ्तार किया जा चुका है ! (वास्तव में यह हो सकता है कि उसे किसी महत्वहीन प्रश्न का जवाब देने के लिए बुलाया गया हो और ठीक उस समय बरामदे में भेज दिया गया हो, जब आपको वहां यह दृश्य देखने के लिए पहले ही पहुंचाया जा चुका हो और आपकी पत्नी को बरामदे में भेजते समय यह निर्देश दिया गया हो : "अपना सिर ऊपर मत उठाना, अन्यथा तुम्हें भी यहीं बन्द कर दिया जाएगा।") अथवा वे आपको पढ़ने के लिए एक पत्र देते हैं और लेख एकदम आपकी पत्नी जैसा है। "मैं तुम्हारा त्याग करती हूं ! उन लोगों ने मुझे तुम्हारे गन्दे कार्यों के बारे में जो जानकारी दी है उसके बाद मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है।" (और अब क्योंकि हमारे देश में ऐसी पत्नियां मौजूद हैं, और ऐसे पत्रों का भी अस्तित्व है अतः आप अपने मन में यह सोचने के लिए विवश हो जाते हैं : क्या सचमुच वह ऐसी ही पत्नी है ?)

पूछताछ अधिकारी गोल्डमन (सन् १९४४ में) अन्य लोगों के विरुद्ध वी० ए० कोरनेएवा से यह धमकी देकर बयान उपलब्ध करने की कोशिश कर रहा था : "हम तुम्हारा मकान ज़ब्त कर लेंगे और तुम्हारी बुढ़िया मां को उठाकर सड़क पर फेंक देंगे।" गहरी आस्था और दृढ़ विश्वास वाली कोरनेएवा को अपने लिए कोई चिन्ता और भय नहीं था।

वे यातनाएं भोगने को तैयार थीं, लेकिन हमारे कानूनों की जो स्थिति है, गोल्डमन की धमकियां बड़ी वास्तविक थीं और कोरनेएवा अपने प्रियजनों के कष्टों की कल्पना से कांप उठी थीं। जब अगले दिन सुबह, पूरी रात भर पूछताछ के बाद और गोल्डमन द्वारा तैयार बयानों को ठुकराने के बाद, गोल्डमन ने बयान का चौथा मसौदा तैयार करना शुरू किया तो उसमें केवल कोरनेएवा के ऊपर ही अभियोग लगाया गया था, तो उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से, आध्यात्मिक विजय की भावना से हस्ताक्षर कर दिए। जब हमारे ऊपर झूठा अभियोग लगाया जाता है, तब हम अपनी निर्दोषिता को प्रमाणित करने के लिए मूलभूत मानवीय भावनाओं के ऊपर निर्भर करने में असफल हो जाते हैं। हम वहां और कर भी क्या सकते हैं? जब हम स्वयं अपने ऊपर सब दोष लेने में सफल हो जाते हैं तो हम बहुत प्रसन्न तक हो उठते हैं।[१२]

जिस प्रकार प्रकृति में कठोर सीमाओं वाला कोई वर्गीकरण नहीं होता, उसी प्रकार मनोवैज्ञानिक तरीकों को भौतिक तरीकों से एकदम अलग कर देना असम्भव है। उदाहरण के लिए, हम निम्नलिखित मनोरंजन को किस कोटि के अन्तर्गत वर्गीकृत कर सकते हैं।

१० —ध्वनी प्रभाव : अभियुक्त को २०-२५ फुट दूर खड़ा किया जाता है और उसे निरन्तर अधिक ज़ोर से बोलने और फिर उन्हीं बातों को दोहराने के लिए बाध्य किया जाता है। जो व्यक्ति पूरी तरह से पहले ही पस्त हो चुका हो, उसके लिए यह काम आसान नहीं है। अथवा गत्ते को लपेट कर दो भौंपू बना लिए जाते हैं और दो पूछताछ अधिकारी कैदी के अत्यन्त समीप आकर इन भौंपुओं को उसके दोनों कानों के पास ले जाकर बेहद जोर से चिल्लाते हैं : "स्वीकारोक्ति कर, तू चूहे!" कैदी बहरा हो जाता है; कभी-कभी तो सदासर्वदा के लिए वह अपनी श्रवण शक्ति खो बैठता है। लेकिन यह तरीका अधिक उपयोगी नहीं है। वास्तविकता यह है कि पूछताछ अधिकारी अपने नीरस काम में कुछ न कुछ तबदीली चाहते हैं और इस कारण से नए से नए तरीके सोचने में एक दूसरे से होड़ करते हैं।

११—गुदगुदी करना : यह भी एक प्रकार का मनोरंजन है। कैदी की बाहें और टांगें बांध दी जाती हैं अथवा इन्हें पकड़ लिया जाता है और उसकी नाक के भीतर एक पंख डालकर गुदगुदी लगाई जाती है। कैदी छटपटाता है, उसे ऐसा लगता है मानो कोई उसके मस्तिष्क को ही बेध रहा है।

१२—कैदी की चमड़ी जलती हुई सिगरेट से जला दी जाती है (ऊपर इस बात का उल्लेख किया जा चुका है।)

१३—प्रकाश प्रभाव : एक अत्यन्त छोटी सफेद दीवारों वाली कोठरी या "बाक्स" के भीतर कैदी को रखा जाता है और उसके ऊपर अत्यधिक तेज़ रोशनी डाली जाती है—इस रोशनी को कभी भी बुझाया नहीं जाता। (यह वही बिजली होती है, जो स्कूल के बच्चे और गृहणियां कम खर्ची करके बचाते हैं!) आपकी पलकें सूज जाती हैं और यह बेहद कष्टप्रद होता है। और फिर पूछताछ अधिकारी के कमरे में तेज़ सर्च-लाइट की रोशनी आपकी आंखों पर डाली जाती है।

१४—एक और कल्पनाशील चालाकी होती है : १ मई, १९३३ की पूर्व रात्रि को खबारोवस्क जी पी यू में चेबोतारएव से १२ घंटे तक—रात भर कोई पूछताछ नहीं की गई, बल्कि उसे पूछताछ के लिए ले जाने का नाटक रात भर चलता रहा। "ए सुनो, अपने हाथ

पीठ के पीछे करो !" वे उसे कोठरी के बाहर ले जाते, तेज़ी से सीढ़ियों पर चढ़ाते और पूछताछ अधिकारी के दफ्तर में पहुंचा देते। सन्तरी चले जाते ! लेकिन पूछताछ अधिकारी, कोई प्रश्न पूछे बिना ही और कभी-कभी चेबोतारएव को बैठने की अनुमति देने से पहले ही, टेलीफोन उठा लेता : "१०७ नम्बर कोठरी से आये कैदी को वापस ले जाओ !" और सन्तरी आकर उसे वापस ले जाते और जेल की कोठरी में पहुंचा देते। वह जैसे ही अपने तख्ते पर लेटता कोठरी का ताला खुलता : "चेबोतारएव ! पूछताछ के लिए चलो। अपने हाथ पीठ के पीछे करो !" और जब वह वहां पहुंचता : "१०७ नम्बर कोठरी से आये कैदी को वापस ले जाओ !"

इस प्रकार पूछताछ अधिकारी के दफ्तर में पूछताछ शुरू होने से बहुत पहले से ही कैदी के ऊपर दबाव डालना शुरू कर दिया जाता था।

१५—जेल का समारम्भ बाक्स से होता था अर्थात् कपड़े रखने की किसी अलमारी अथवा सामान पैक करने के किसी बक्स जैसी कोई चीज़ होती थी और कैदी को उसमें बन्द कर दिया जाता था। एक ऐसा व्यक्ति जो अभी हाल तक आज़ाद था, जो अपनी गिरफ्तारी के कारण बड़े मानसिक उद्वेलन में फंसा हुआ था, जो अपनी ओर से स्पष्टीकरण देने, तर्क करने और संघर्ष करने के लिए तैयार था, जेल में कदम रखते ही एक बक्स में बन्द कर दिया जाता था, जिसके भीतर कभी-कभी एक लैम्प और बैठने की जगह भी होती थी। लेकिन कभी-कभी इस बक्स में एकदम अंधेरा होता था और यह इतना छोटा होता था कि कैदी मुश्किल से खड़ा भर रह सकता था और उस समय भी इसका दरवाज़ा उसकी पीठ से सटा रहता था। और इस प्रकार उसे कई घंटे तक अथवा आधे दिन अथवा पूरे दिन बन्द रखा जाता था। इन घंटों में उसे किसी भी बात की जानकारी नहीं होती थी, वह पूरी तरह अन्धकार में होता था। क्या शेष जीवन भर उसे इसी प्रकार बन्द रखा जाएगा ? अपने समस्त जीवन में उसका सामना कभी भी ऐसी किसी परिस्थिति से नहीं हुआ था और वह उसके परिणाम का अनुमान नहीं लगा सकता था। ये आरम्भिक घंटे उस दौर में गुजरते, जब उसके हृदय में उठा हुआ जबरदस्त तूफान उसके समस्त शरीर में अग्नि प्रज्वलित किए रहता था। इस स्थिति में कुछ लोग एकदम निराश हो उठते थे—और यही वह अवसर होता था, जब उनसे पहली बार पूछताछ की जाती थी। कुछ अन्य क्रोधित हो उठते थे—और यह भी अधिकारियों के लिए अच्छी ही बात होती थी, क्योंकि इस स्थिति में कैदी एकदम शुरू में ही पूछताछ अधिकारी को अपमानित कर सकते थे और कई गलती कर सकते थे और इस स्थिति में उनके विरुद्ध एकदम मनगढ़ंत मामला तैयार करना और अधिक आसान हो जाता था।

१६—जब ये बक्से पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होते थे तो एक दूसरा तरीका अपनाया जाता था। नोवोचेरकास्क की एन० के० वी० डी० में एलेना स्त्रूतिनस्काया को बरामदे में एक स्टूलपर छह दिन तक इस प्रकार बैठाकर रखा गया कि वह किसी भी चीज़ का सहारा न ले सके, सो न सके, नीचे गिर न सके और इससे उठ न सके। छह दिन ! इस तरह छह घंटे बैठने का प्रयास करके तो देखिए।

इसी प्रकार तरीके को बदलकर, कैदी को एक ऐसी ऊंची कुर्सी पर बैठने के लिए बाध्य किया जा सकता है, जैसी कुर्सी प्रयोगशालाओं में इस्तेमाल की जाती है, ताकि उसके पांव फर्श तक न पहुंच सकें। इस स्थिति में बैठने से पांव बहुत जल्दी सुन्न हो जाते हैं। कैदी को

८ से १० घंटे तक इसी प्रकार बैठने को बाध्य किया जाता है।

अथवा, स्वयं पूछताछ के दौरान, जब कैदी पूछताछ अधिकारी की नजर के सामने होता है, उसे इस प्रकार बैठने को बाध्य किया जा सकता है : कुर्सी के अगले हिस्से में जहां तक सम्भव हो आगे से आगे बैठे ("और आगे बैठो ! और आगे आओ !") ताकि पूछताछ की पूरी अवधि में उसके ऊपर अत्यधिक कष्टपूर्ण दबाव पड़ता रहे। उसे घंटों तक हिलने-डुलने नहीं दिया जाता। क्या बस यही होता है ? हां, बस यही होता है। ज़रा स्वयं यह करके तो देखिए !

१७—स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, एक बक्स के स्थान पर एक गहरे गड्ढे का इस्तेमाल किया जा सकता है, जिस प्रकार दूसरे महायुद्ध की अवधि में गोरोखोवेत्स के सैनिक शिविरों में किया गया था। कैदी को १० फुट गहरे और साढ़े छह फुट व्यास वाले एक गड्ढे में धकेल दिया जाता और वह खुले आकाश के नीचे, वर्षा में, धूप में, हर स्थिति में पड़ा रहता और कई दिन तक यह गड्ढा उसकी जेल की कोठरी और पाखाने दोनों का काम करता। और उसे साढ़े दस औंस रोटी और पानी एक डोरी से बांधकर नीचे पहुंचा दिया जाता। गिरफ्तारी के तुरन्त बाद स्वयं को इस स्थिति में फंसे होने की कल्पना कीजिए, जब आप क्रोध से उबलते होते हैं।

लाल सेना की समस्त विशेष शाखाओं को दिए गए समान आदेशों के कारण अथवा परिस्थितियों की समानताओं के कारण व्यापक रूप से यह तरीका अपनाया गया। इस प्रकार, ३६वीं मोटरों वाली पैदल डिवीजन में, जिसने खालखिनगोल की लड़ाई में हिस्सा लिया था और १६४१ में मंगोलिया के रेगिस्तान में पड़ाव डाला था, हाल में गिरफ्तार एक कैदी को विशेष शाखा के अध्यक्ष सामुलएव ने बिना कुछ कहे एक कुदाल थमा दी और उसे ठीक कब्र के आकार का एक गड्ढा खोदने का हुक्म दिया। (यह शारीरिक और मनोवैज्ञानिक तरीकों को मिलाने का उदाहरण है।) जब कैदी अपनी पीठ तक गहरा गड्ढा खोद लेता तो वे लोग उसे इस गड्ढे में बैठ जाने का हुक्म देते : इस प्रकार गड्ढे के बाहर उसका सिर दिखाई नहीं पड़ता। एक सन्तरी को ऐसे अनेक गड्ढों पर नजर रखने के लिए तैनात कर दिया जाता और ऐसा लगता कि उसके चारों ओर सिर्फ खाली स्थान ही है।[13] वे अभियुक्त को इस रेगिस्तान में, मगोलिया की कड़ी धूप से किसी भी प्रकार के बचाव के बिना बैठाये रखते और रात की भयंकर सर्दी से रक्षा के लिए भी कैदी को कपड़ा नहीं दिया जाता। लेकिन यातना नहीं दी जाती—यातनाएं देने पर शक्ति क्यों खर्च की जाए ? कैदी को राशन में हर रोज़ साढ़े तीन औंस रोटी और एक गिलास पानी मिलता था। विशाल आकार वाले लेफ्टिनेंट चुलपेनएव ने, जो एक बाक्सर थे और जिनकी उम्र केवल २१ वर्ष थी, इस प्रकार एक महीने का समय कैद में बिताया। १० दिन के भीतर उनके सारे शरीर में भयंकर रूप से जूं पड़ गई थीं। १५ दिन बाद उन्हें पहली बार पूछताछ के लिए बुलाया गया था।

१८—अभियुक्त को अपने घुटनों के बल खड़े रहने के लिए भी बाध्य किया जा सकता था—यह काम लाक्षणिक अर्थों में नहीं होता था, बल्कि शब्दशः उसे घुटनों के बल खड़ा होना पड़ता था, वह अपनी एड़ियों का सहारा नहीं ले सकता था और उसे अपनी पीठ एकदम सीधी रखनी पड़ती थी। लोगों को इस प्रकार पूछताछ अधिकारी के कमरे में अथवा बरामदे में १२ घंटे, अथवा २४ घंटे, अथवा ४८ घंटे तक घुटनों के बल खड़े रहने के लिए

बाध्य किया जा सकता था। (पूछताछ अधिकारी स्वयं अपने घर जा सकता था, सो सकता था, मन चाहे तरीके से मनोरंजन कर सकता था) यह एक बड़ी संगठित प्रणाली थी, घुटनों के बल खड़े कैदियों की निगरानी होती थी और सन्तरी पारियों में काम करते थे।)[14] किस प्रकार के कैदियों पर किस व्यवहार का सबसे अधिक असर पड़ता था? ऐसे कैदी जो पहले ही टूट चुके हों, जिनके मन में अधिकारियों की इच्छा के अनुसार स्वीकारोक्ति करने की भावना आ चुकी हो। स्त्रियों के ऊपर भी यह तरीका कारगर रहता था। आइवानोव—राजुमनिक ने इसके एक भिन्न स्वरूप की जानकारी दी है: युवक लोर्दकीपानीजे को इस प्रकार घुटनों के बल बैठाकर, पूछताछ अधिकारी ने उसके मुंह पर पेशाब कर दिया। और फिर क्या हुआ? अन्य किसी भी यातना के समक्ष न झुकने वाला लोर्दकीपानीजे इस व्यवहार से टूट गया। इससे यह प्रकट होता है कि गर्वीले लोगों पर भी यह तरीका काम करता है!...

१९—इसके अलावा कैदी को बस एक स्थान पर खड़ा कर देने का भी तरीका है। यह भी व्यवस्था की जा सकती है कि पूछताछ के दौरान ही अभियुक्त को खड़ा रखा जाए, क्योंकि इस तरीके से भी कैदी थक जाता है और वह स्वीकारोक्ति के लिए तैयार हो जाता है। एक दूसरे तरीके से भी यह काम किया जा सकता है—कैदी को पूछताछ के दौरान बैठने दिया जाता है, लेकिन पूछताछ के बीच की अवधि में उसे खड़ा रखा जाता है। (उसकी कड़ी निगरानी रखी जाती है और सन्तरी इस बात का ध्यान रखता है कि वह दीवार का सहारा न ले, और यदि कैदी सो जाता है और गिर पड़ता है तो उसे कसकर ठोकर जमाई जाती है और सीधा खड़ा कर दिया जाता है।) कभी-कभी एक दिन खड़ा रहने से ही व्यक्ति की ताकत खत्म हो जाती है और वह किसी भी बात की स्वीकारोक्ति करने या कोई भी बयान देने को तैयार हो जाता है।

२०—इन सब यातनाओं के दौर में, जिनमें कैदी को तीन, चार और पांच दिन तक खड़ा रखना भी शामिल है, पानी एकदम नहीं दिया जाता।

सर्वाधिक स्वाभाविक बात यह होती है कि मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दोनों तरीकों को मिला दिया जाए। ऊपर जिन तरीकों का उल्लेख किया गया है, उन सबको भी एक साथ मिलाया जाता है। और...

२१—कैदी को सोने नहीं दिया जाता। यह एक ऐसा तरीका है, जिसे मध्य युगों के जल्लाद नहीं समझ पाये। वे बात नहीं समझ पाये कि वह दायरा कितना सीमित है, जिसके भीतर मनुष्य अपने व्यक्तित्व को कायम रख सकता है। नींद का अभाव (हां, खड़ा रखना, प्यासा रखना, तेज रोशनी मुंह पर डालना, डराना-धमकाना और यह आशंका कि आगे चलकर न जाने क्या-क्या यातनाएं दी जाएंगी, जब नींद के अभाव से मिल जाते हैं, तब स्थिति भयंकर हो उठती हो) इन परिस्थितियों में तर्क करने की क्षमता को प्राय. समाप्त कर डालता है, संकल्प शक्ति डोल जाती है और मनुष्य अपना पूर्व व्यक्तित्व खो बैठता है, वह सच्चे अर्थों में "मैं" नहीं रह जाता। (जैसाकि चेखोव के "मैं सोना चाहती हूं" नाटक में हुआ, लेकिन वहां यह कहीं अधिक आसान था, क्योंकि बेहोश हो जाने पर, चेतना खो देने पर वह लड़की लेट सकती थी और सो सकती थी, और इन परिस्थितियों में एक मिनट नींद भी मस्तिष्क को फिर सक्रिय और ताजा बना देती है।) नींद से वंचित व्यक्ति अर्द्ध-चेतना से, अथवा चेतनाहीनता से काम करता है, और इस प्रकार इस स्थिति में दिए गए

उसके बयान को उसके विरुद्ध इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।[15]

वे लोग कहा करते थे : "तुमने अपने बयान में सच्चाई नहीं बरती है और इस कारण से तुम्हें सोने की अनुमति नहीं दी जाएगी।" यदाकदा एक संशोधित संस्करण के रूप में कैदी को खड़ा रखने के स्थान पर उसे एक मुलायम सोफे पर बैठा दिया जाता और इस सोफे का मुलायम स्पर्श उसे सो जाने के लिए और अधिक प्रेरित करता। (ड्यूटी पर तैनात जेलर उसी सोफे पर कैदी के बराबर बैठता और जैसे ही कैदी की आंख लगती उसे ठोकर मारकर जगा देता।) इस प्रकार यातनाएं दिए जाने वाले कैदी ने—जो कई दिन तक खटमलों से भरे एक बक्स में बन्द रहा था—इन शब्दों में अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है : "खटमलों द्वारा अत्यधिक खून पी लेने के कारण खून के अभाव से उत्पन्न अत्यधिक शारीरिक ठंडक। आंख की पुतलियों का इस सीमा तक सूख जाना, मानो कोई उनके सामने तपती हुई लोहे की सलाख लिए खड़ा हो। प्यास से सूजी हुई जिह्वा, जिसके ऊपर इस तरह कांटे खड़े हो गए हों, मानो किसी साही के कांटे हों। थूक निगलने की निरन्तर कोशिशों के कारण गले का चिर जाना।"[16]

नींद का अभाव यातना का एक भयंकर प्रकार था। इससे अभियुक्त के शरीर पर कोई प्रकट चिन्ह दिखाई नहीं पड़ते थे और यदि अचानक कोई जांच भी हो तो शिकायत का आधार नहीं मिल सकता था। यद्यपि अचानक ऐसी किसी जांच की बात कभी किसी से नहीं सुनी।[17]

"उन लोगों ने आपको सोने नहीं दिया? ठीक है, आखिरकार, आप वहां छुट्टियां मनाने तो नहीं गए थे। सुरक्षा अधिकारी भी तो जगे रहते थे! (वे लोग दिन के समय अपनी नींद पूरी कर सकते थे) यह कहा जा सकता है कि कैदी को सोने न देने का तरीका सुरक्षा संगठनों का सार्वभौम तरीका बन गया था। यातना के अनेक तरीकों में से एक तरीका होने से शुरू होकर यह राज्य सुरक्षा की प्रणाली का एक अविभाज्य अंग बन गया; यह सबसे सस्ता तरीका था और इसके लिए सन्तरियों को तैनात करने की ज़रूरत नहीं थी। सब पूछताछ जेलों में कैदियों को सुबह का बिगुल बजने के समय से लेकर रात को सोने का हुक्म होने तक एक मिनट के लिए भी आंख झपकने की इजाज़त नहीं थी। (सुखानोवका और उन अन्य जेलों में जिन्हें केवल पूछताछ के लिए ही इस्तेमाल किया जाता था। दिन के समय कैदियों के सोने के तख्तों को दीवार के सहारे खड़ा कर दिया जाता था; कुछ अन्य जेलों में कैदियों को लेट जाने और यहां तक कि बैठे समय अपनी आंखें बन्द करने तक की मनाही थी।)" अब क्योंकि पूछताछ का प्रमुख कार्य रात के समय ही होता था, कैदी को नींद से वंचित करना अपने आप हो जाता था : जिस किसी से पूछताछ चलती थी, उसे कम से कम पांच दिन और पांच रात सोने का अवसर नहीं मिलता था। (शनिवार और रविवार की रातों को स्वयं पूछताछ अधिकारी भी कुछ अधिक आराम करने की कोशिश करते थे।)

२२—उक्त तरीके को कई पूछताछ अधिकारियों को बारी-बारी से तैनात करके और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता था। आपको केवल सोने की मनाही ही नहीं थी, बल्कि तीन या चार दिन तक पूछताछ अधिकारियों की एक टोली बारी-बारी से आपसे लगातार पूछताछ करती रहती थी।

२३—खटमलों भरे बक्स का हम ऊपर भी उल्लेख कर चुके हैं। लकड़ी के तख्तों से बनी बन्द अंधियारी अलमारी में सैकड़ों, शायद हजारों खटमल होते और इन खटमलों

को निरन्तर अपनी संतति बढ़ाने की सुविधा थी। सन्तरी कैदी का कोट या कमीज उतार लेते और भूखे खटमल तुरन्त उसके ऊपर टूट पड़ते। वे दीवारों से चलकर अथवा छत से उसके ऊपर गिरकर उसका खून चूसने लगते। शुरू में कैदी इन खटमलों से डटकर लड़ता, इन्हें अपने शरीर पर ही कुचल डालता अथवा दीवारों पर ही मसल देता और यह क्रम उस समय तक चलता रहता, जब तक खटमलों के गन्दे खून की बदबू से स्वयं उसका अपना दम न घुटने लगता। घंटों तक यही लड़ाई चलती और अन्ततः कैदी पस्त हो जाता और बिना किसी प्रतिवाद के वह खटमलों को अपना खून पीने देता।

२४—सज़ा की कोठरियां : जेल की सामान्य कोठरियों की हालत चाहे कितनी भी बुरी क्यों न थी, पर सज़ा की कोठरियों का हाल इनसे भी बुरा था। और सज़ा की कोठरी से वापस लौटने पर सामान्य कोठरी स्वर्ग जैसी दिखाई पड़ती थी। सज़ा की कोठरी में मनुष्य को विधिवत् भूखों मारकर और अक्सर अत्यधिक ठण्ड में रखकर जर्जर बना डाला जाता था। (सुखानोवका जेल में सज़ा की गर्म कोठरियां भी थीं)। उदाहरण के लिए लेफोरतोवो जेल की सज़ा की कोठरियां ज़रा भी गर्म नहीं की जाती थीं। केवल बरामदों में ही ताप देने वाले रेडियेटर होते थे और इस "गरम या तपाये गए" बरामदे में सन्तरी लोग फैल्ट के जूतों और रूई भरे कोटों में आराम से टहलते रहते थे। कैदी को नीचे पहनने के कपड़ों को छोड़कर अपने सब कपड़े उतार देने पड़ते थे। कभी-कभी तो बनियान तक उतरवा ली जाती थी और कैदी केवल एक जांघिए में ही रह जाता था। और बिना हिले-डुले उसे सज़ा की इस कोठरी में तीन से लेकर पांच दिन तक का समय गुजारना पड़ता था। (अत्यधिक छोटी होने के कारण वह इसमें विशेष हिल-डुल भी नहीं सकता था) उसे केवल तीसरे दिन ही गर्म खिचड़ी मिलती थी। पहले कुछ मिनटों में आप इस बात से आश्वस्त होने लगते थे कि आप इस कोठरी में एक घंटा भी जीवित नहीं रह पायेंगे। लेकिन न जाने कैसा चमत्कार होता और एक मनुष्य पांच दिन तक इस कोठरी में बैठा रहता। हां, यह हो सकता है कि इन पांच दिनों में कोई ऐसी बीमारी उसके पल्ले पड़ जाती, जो शेष जीवन भर उसका पीछा न छोड़ती।

सज़ा की कोठरियों के अनेक पहलू थे—जैसे, उदाहरण के लिए, सीलन और पानी। युद्ध के बाद चेरनोवस्की जेल में माशा जी० को दो घंटे तक टखनों तक बर्फ की तरह ठण्डे पानी में नंगे पांव खड़ा रखा गया—स्वीकारोक्ति करो! (यह लड़की १८ वर्ष की थी और उसे अपने पांवों की कितनी अधिक चिन्ता थी! आखिरकार इन्हीं पांवों के साथ उसे अभी बहुत लम्बी जिन्दगी बितानी थी।)

२५—जब किसी कैदी को एक एल्कोव (दीवार में बना बड़ा मेहराबदार आला) में बन्द कर दिया जाये तो क्या हम उसे सज़ा की कोठरी का एक भिन्न प्रकार कहेंगे? सन् १९३७ तक में उन्होंने खबारोवस्क जी० पी० यू० की जेल में एस० ए० चेबोतारएव को यातनाएं दीं। उन्होंने उसे कंकरीट के एक आले में इस प्रकार नंगा बन्द कर दिया कि वह अपने घुटने तक नहीं मोड़ सकता था और न ही सीधा खड़ा होकर अपनी बांहों को हिला-डुला सकता था और न ही अपने सिर को घुमा सकता था। और यहीं इस यातना का अन्त नहीं था। उन लोगों ने उसकी खोपड़ी के ऊपर ठंडा पानी टपकाना शुरू किया—यातना देने का एक प्राचीन तरीका—और यह पानी विभिन्न धाराओं में उसके शरीर पर बहने लगा। उन लोगों ने जैसाकि स्पष्ट था, उसे इस बात की सूचना नहीं दी कि यह क्रम

केवल २४ घंटे जारी रहेगा। उसके लिए अपनी चेतना खो देना, बेहोश हो जाना अत्यधिक भयावह था और अगले दिन जब उसे बाहर निकाला गया तो वह प्रायः मर चुका था। अस्पताल की चारपाई पर उसे होश आया। उसे अमोनिया की स्प्रिट और कैफीन देकर और शरीर पर मालिश करके होश में लाया गया था। कुछ समय तक उसे यह याद नहीं आ पाया कि वह कहां था अथवा क्या हुआ था। पूरे एक महीने तक वह पूछताछ के लिए निरर्थक रहा। (हम संभवतः यह मान लेने का साहस कर सकते हैं कि कंकरीट का यह शिकंजा और ऊपर से पानी टपकाने का यह उपकरण केवल चेबोतारएव के लिए ही तैयार नहीं किया गया था। सन् १९४९ में नेत्रोपेत्रोवस्क के मेरे एक परिचित को भी किसी प्रकार इस शिकंजे में कस दिया गया था। पर ऊपर से पानी टपकाने वाला उपकरण इस्तेमाल नहीं किया गया था। खबारोवस्क और नेत्रोपेत्रोवस्क को मिलाने वाली लाईन और १६ वर्ष की अवधि में क्या कुछ अन्य स्थान ऐसे नहीं रहे होंगे, जहां इस तरीके का इस्तेमाल किया गया हो?)

२६—भूखा मारने की बात का उल्लेख दूसरे तरीकों के संदर्भ में किया जा चुका है। यह भी कोई असाधारण तरीका नहीं था। कैदी को भूखा मारकर उससे स्वीकारोक्ति कराना। वास्तव में रात को पूछताछ की तरह ही भूखा मारने की तकनीक अभियुक्तों पर दबाव डालने की समस्त प्रणाली का एक अविभाज्य अंग थी। जेलों में रोटी का अत्यन्त कम राशन, जो १९३३ के शान्ति के वर्ष में केवल साढ़े दस औंस था और जिसे १९४५ में लूब-यांका में एक पौंड कर दिया गया था, तथा परिवार से खाने की चीजों के पार्सल प्राप्त करने की अनुमति देना अथवा यह अनुमति न देना और जेल की दुकानों से खाने की चीजें ले पाना अथवा न ले पाना ऐसे तरीके थे, जिन्हें प्रायः सब कैदियों पर आजमाया जाता था। लेकिन भूख को अत्यधिक भड़का देने का तरीका भी था: उदाहरण के लिए, चुलपेनएव को एक महीने तक केवल साढ़े तीन औंस रोटी ही प्रतिदिन दी गई, इसके बाद—जब उसे गड्ढे से निकालकर लाया गया—पूछताछ अधिकारी सोकोल ने उसके सामने गाढ़े शोरबे का एक कटोरा और आधी सफेद डबल रोटी के टुकड़े को त्रिकोनाकार छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर रख दिया। (कोई व्यक्ति यह सवाल उठा सकता है कि इस बात का क्या महत्व है कि रोटी को किस तरीके से काटा गया था। लेकिन चुलपेनएव आज भी इस बात पर जोर देगा कि रोटी बड़े आकर्षक ढंग से काटी गई थी।) पर उसे खाने के लिए एक कण भी नहीं मिला। यह तरीका कितना पुराना है, कितना मध्य युगीन है, कितना आदिम है! इसके बारे में केवल नई बात यही थी कि इसे एक समाजवादी समाज में अमल में लाया गया था! अन्य लोग भी ऐसी ही चालाकियों, ऐसे ही तरीकों के बारे में बताते हैं। इन तरीकों को अक्सर आजमाया गया। लेकिन हम चेबोतारएव से सम्बन्धित एक और मामले का उल्लेख करेंगे, क्योंकि इसमें अनेक तरीकों को एक साथ मिला दिया गया था। उन लोगों ने उसे पूछताछ अधिकारी के दफ्तर में ७२ घंटे तक रखा और उसे यदि किसी बात की अनुमति मिली तो वह केवल शौचालय जाने की। इसके अलावा उसे न तो कुछ खाने को दिया गया और न ही पीने को—यद्यपि एकदम उसके पास ही एक बर्तन में पानी रखा था। उसे सोने भी नहीं दिया गया। इस दफ्तर में एक साथ तीन पूछताछ अफसर मौजूद थे, जो बारी-बारी से काम करते थे। इनमें से एक कुछ चुपचाप लिखता रहता था—चुपचाप, कैदी को कुछ भी कहे सुने बिना। दूसरा सोफे पर सोता रहता था और तीसरा कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाता

रहता था और जैसे ही चेबोतारएव की आंख बन्द होती वह उसे पीटकर जगा देता। इसके बाद ये अफसर अपनी भूमिका बदल लेते। (हो सकता है कि स्वयं इन अफसरों को भी अब तक स्वीकारोक्ति न करा पाने के कारण दण्डित किया जा रहा हो)। और तभी अचानक वे चेबोतारएव के लिए भोजन लाए : यूक्रेनी शोरबा, टिकिया, तले हुए आलू और बढ़िया कांच के बर्तन में लाल शराब। अब क्योंकि चेबोतारएव जीवन भर शराब से घृणा करते रहे थे, अत: उन्होंने शराब पीने से इन्कार कर दिया और पूछताछ अधिकारी उन्हें शराब पीने के लिए बाध्य करने को अधिक कड़ाई नहीं बरत सका, क्योंकि कड़ाई बरतने से सारा खेल ही बिगड़ जाता। जब चेबोतारएव भोजन कर चुके तो वे लोग उनसे बोले : "अब देखिए, यह वह बयान है, जो आपने दो गवाहों के सामने दिया है। इस पर हस्ताक्षर करो। दूसरे शब्दों में उन्हें उस बयान पर हस्ताक्षर करने थे जो एक पूछताछ अधिकारी ने, एक दूसरे अफसर की मौजूदगी में चुपचाप लिखकर तैयार किया था, जबकि यह दूसरा अफसर सो रहा था और तीसरा अफसर बड़े सक्रिय रूप से अपने काम में लगा था। इस बयान के पहले ही पृष्ठ पर चेबोतारएव को यह जानकारी मिली कि जापान के सब प्रमुख जनरलों से उनकी बड़ी घनिष्ठता थी और इन सबने उन्हें जासूसी का कोई न कोई काम सौंपा था। चेबोतारएव ने इन पूरे के पूरे पृष्ठों पर कांटे लगाने शुरू कर दिये। उन अफसरों ने उन्हें बेहद मारा-पीटा और कमरे से बाहर फेंक दिया। चीनी पूर्वी रेल के एक और कर्मचारी ब्लाजीनिन के साथ भी यही व्यवहार किया गया, जिसे चेबोतारएव के साथ ही गिरफ्तार किया गया था। लेकिन ब्लाजिनिन ने शराब पी ली थी और सुखद नशे की झोंक में उसने स्वीकारोक्ति पर हस्ताक्षर कर दिए थे—और इसके परिणामस्वरूप उसे गोली से उड़ा दिया गया था। (लम्बे अरसे से भूखों मर रहे एक व्यक्ति पर शराब के छोटे से गिलास का भी बहुत असर हो सकता है और शराब का एक बड़ा जार उड़ा जाने पर तो आप परिणाम की कल्पना स्वयं कर सकते हैं।)

२७—मारपीट : मारपीट इस किस्म की होती थी, ताकि शरीर पर कोई चिन्ह न रहे। वे रबड़ के चाबुक इस्तेमाल करते थे। इसी प्रकार लकड़ी की थपकियां और रेत भरी छोटी-छोटी थैलियां भी इस्तेमाल की जाती थीं। जब वे किसी हड्डी पर जोर से प्रहार करते तो भयंकर दर्द होता—उदाहरण के लिए पूछताछ अधिकारी द्वारा अपने फौजी बूट से पांव की सामने की हड्डी पर ठोकर जमा देना, जहां हड्डी के ऊपर मामूली सी खाल ही होती है। उन लोगों ने ब्रिगेड कमाण्डर कारपुनिच—ब्रावेन की लगातार २१ दिन तक पिटाई की। और आज कारपुनिव-ब्रावेन कहते हैं : "आज ३० वर्ष बाद भी मेरी सब हड्डियां दर्द करती हैं—मेरा सिर भी दर्द करता है।" स्वयं अपने अनुभव और अन्य लोगों के किस्सों के आधार पर वे यातनाएं देने के ५२ तरीकों की गणना करते हैं। एक तरीका यह है : वे कैदी के हाथ को एक विशेष किस्म के जम्बूर में कस लेते हैं, ताकि कैदी की हथेली सीधी मेज़ पर रहे—और वे एक फुटे के पतले सिरे से अंगुलियों के जोड़ों पर बार-बार प्रहार करते हैं। कैदी चिल्लाता है! क्या हमें उस तरीके का विशेष रूप से उल्लेख करने की आवश्यकता है, जिसके द्वारा वे कैदी के दांत उखाड़ फेंकते हैं! उन्होंने इस प्रकार कारपुनिच के आठ दांत उखाड़ फेंके।[१८]

जैसाकि प्रत्येक व्यक्ति जानता है, पेट पर कसकर मुक्का जमा देने से कोई निशान नहीं पड़ता पर कैदी की सांस रुक जाती है। लेफोरतोवो जेल का कर्नल सीदोरोव, युद्ध के

बाद की अवधि में, पुरुष कैदियों के लटकते हुए गुप्तांगों पर अपने फौजी जूते से "पैनेल्टी किक"—(जिस प्रकार फुटबाल में पैनेल्टी कार्नर की किक लगाई जाती है) लगाना बहुत पसन्द करता था। फुटबाल के जिन खिलाड़ियों के पेडू में किसी न किसी समय खेल के दौरान गेंद लगी हो वे अच्छी तरह से जानते हैं कि इस प्रहार का क्या अर्थ होता है। इस दर्द की तुलना अन्य किसी दर्द से नहीं की जा सकती और कैदी का बेहोश हो जाना तो मामूली सी बात है।[१९]

२८—नोवोरोसिस्क एन० के० वी० डी० के जल्लादों ने तो कैदियों के नाखून उखाड़ लेने वाली मशीन की ईजाद की थी। आगे चलकर हम यह देखेंगे कि संक्रमण जेलों में ऐसे अनेक कैदी मिले, जिन्हें नोवोरोसिस्क में अपने नाखूनों से वंचित होना पड़ा था।

२९—और कैदी को स्ट्रेट जैकेट नामक शिकंजे में कस देने को आप क्या कहेंगे।

३०—और कैदी की पीठ तोड़ डालने के बारे में क्या कहा जा सकता है? (जैसाकि खबारोवस्क जी० पी० यू० की जेल में १९३७ में किया जाता था।)

३१—अथवा लगाम लगाना (इसे "हंस की उड़ान" कहा जाता था)। यह सुखानोव जेल का तरीका था—इसका इस्तेमाल आर्चएजिल में भी किया गया, जहां पूछताछ अफसर इवकोव ने १९४० में इसका इस्तेमाल किया। एक अत्यधिक खुरदरे तौलिये जैसे कपड़े के लम्बे टुकड़े को कैदी के जबड़ों के बीच में लगाम की तरह डाल दिया जाता और कपड़े के दोनों किनारों को कैदी के कन्धे के ऊपर से निकालकर उसकी एड़ियों पर बांध दिया जाता। ज़रा अपने पेट के बल एक पहिए की तरह लेटने की कोशिश करके देखिए, जिसमें आपकी रीढ़ की हड्डी ही टूटी जा रही हो—और आपको दो दिन तक पानी और भोजन के बिना इस स्थिति में रखा जाए![२०]

क्या यह ज़रूरी है कि हम इस सूची को निरन्तर आगे बढ़ाते जाएं? क्या अब बहुत कुछ बताने को शेष रह गया है? निकम्मे, अच्छा भोजन पाने वाले और भावनाहीन लोग किस चीज़ की ईजाद नहीं कर सकते?

मेरे भाई! उन लोगों को बुरा भला न कहो, जिन्होंने स्वयं को किसी ऐसी ही परिस्थिति में पाकर, कमजोरी दिखाई और उससे अधिक की स्वीकारोक्ति की जितनी उन्हें करनी चाहिए थी...उनके ऊपर पत्थर फेंकने वाला पहला व्यक्ति मत बनो।



लेकिन यहां वास्तविक बात यह सामने आती है! अधिकांश लोगों से वांछित बयान प्राप्त करने के लिए न तो इन तरीकों की और न ही "हल्के से हल्के" तरीकों की जरूरत है... उन मेमनों को लोहे के जम्बूरों में जकड़ने की, लोहे के जबड़ों में दबोच लेने की ज़रूरत नहीं है, जो इन भयंकर परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं और जिनके मन में अपने घरों की ऊष्मा में वापस लौटने की उत्कट अभिलाषा रहती है। शक्तियों और परिस्थितियों के बीच का पारस्परिक सम्बन्ध अत्यधिक असमान है।

एक पूछताछ अधिकारी के कमरे में जब हमारे बीते हुए जीवन पर नई रोशनी फेंकी जाती है तो यह कितना खतरों से भरा हुआ दिखाई पड़ने लगता है, एक अफ्रीकी जंगल की तरह। और हम इसे अत्यधिक सीधा सादा जीवन समझते रहे!

आप अर्थात् "क" और आपका मित्र "ख" एक दूसरे को वर्षों से जानते हैं और आपका एक दूसरे पर गहरा विश्वास है। जब आप मिलते थे, तो आप बड़े छोटे सब राजनीतिक मामलों पर बड़े साहस से स्पष्ट बात करते थे कोई भी अन्य वहां मौजूद नहीं होता था। वहां ऐसा कोई भी व्यक्ति मौजूद नहीं होता था जो आपकी बात सुन सके और आपने एक दूसरे पर अभियोग भी नहीं लगाये हैं, कतई नहीं।

लेकिन अब कुछ कारणों से, आपको यानी "क" को, संदिग्ध समझा जाने लगा, आप उन लोगों का लक्ष्य बन गए। आपको कान पकड़कर झुण्ड से बाहर निकाल लिया गया और गिरफ्तार कर लिया गया। और कुछ कारण से—हो सकता है किसी अन्य व्यक्ति के अभियोग के बिना यह न हुआ हो और अपने प्रियजनों के भविष्य के बारे में चिंतित हुए बिना और कुछ समय तक नींद से वंचित रहे बिना, और कुछ समय सज़ा की कोठरी में बिताये बिना—आपने स्वयं अपने जीवन को समाप्त मान लिया। लेकिन इसके साथ ही आपने यह निश्चय कर लिया कि आप किसी भी कीमत पर किसी अन्य को धोखा नहीं देंगे।

अतः आपने चार बयानों में स्वीकारोक्ति की और उन पर हस्ताक्षर कर दिए—स्वयं को सोवियत सत्ता का कट्टर शत्रु घोषित किया—क्योंकि आप नेता के बारे में मजाक भरे किस्से सुनाते थे, क्योंकि आप यह समझते थे कि चुनावों में उम्मीदवारों का वास्तविक चुनाव होना चाहिए, क्योंकि आप वोट डालने वाले कमरे में केवल इस इरादे से गए कि आप केवल एक उम्मीदवार का नाम काटेंगे और आप यह करते भी पर इस कारण से इस कार्य में असफल रहे, क्योंकि वहां रखी गई दवात में रोशनाई नहीं थी और इस कारण से कि आपके रेडियो में १६ मीटर का बैंड है और इस मीटर बैंड पर आपने पश्चिम के प्रसारणों को आंशिक रूप से सुनने का प्रयास किया, यद्यपि इन प्रसारणों को न सुनने देने के लिए बाधा डालने का प्रबन्ध किया गया था। आपको दस्सा मिलेगा, यह व्यवस्था हो चुकी थी; इसके बावजूद आपकी पत्नी सही सलामत थी और अभी तक आपको निमोनिया भी नहीं हुआ था। आपने किसी अन्य को फंसाया नहीं था और आपको लग रहा था कि आपने अच्छे ढंग से सब मामलों को सुलझा लिया है। आप अपनी कोठरी के सब कैदियों को यह बता चुके थे कि आपकी राय में आपसे पूछताछ का काम प्रायः पूरा हो चुका है और जल्दी ही यह समाप्त हो जाएगा।

लेकिन देखिए, यह क्या हुआ! पूछताछ अधिकारी अपने हस्तलेख को प्रशंसा के भाव से देखते हुए, बहुत धीरे-धीरे और बहुत परिश्रम से पांचवा बयान तैयार करने लगता है। प्रश्न : आपकी "ख" से मित्रता थी? उत्तर : हां। प्रश्न : क्या आप राजनीति के बारे में उससे स्पष्ट चर्चा करते थे? उत्तर : नहीं, नहीं, मैं उस पर विश्वास नहीं करता था। प्रश्न : लेकिन तुम अक्सर मिलते थे? उत्तर : बहुत अक्सर तो नहीं। प्रश्न : इसका क्या अर्थ है बहुत अक्सर तो नहीं? तुम्हारे पड़ौसियों के बयानों के अनुसार, वह अमुक दिन तुम्हारे घर पर था और अमुक-अमुक दिन उससे पहले महीने में भी वह तुम्हारे घर आया था। क्या वह आया था? उत्तर : हो सकता है। प्रश्न : और यह देखा गया कि इन अवसरों पर भी सदा की तरह, तुम लोगों ने शराब नहीं पी, तुम लोगों ने कोई शोरगुल नहीं मचाया। तुम लोग बहुत आहिस्ता-आहिस्ता बातचीत करते रहे और बरामदे तक में तुम लोगों की आवाज सुनाई नहीं पड़ती थी? (ठीक है, दोस्तो, शराब पीओ, बोतलें तोड़ो! अधिक से अधिक चिल्लाकर गाली-गलौच करो! इस आधार पर तुम्हें विश्वसनीय और

भरोसे योग्य समझा जाएगा।) उत्तर : तो इससे क्या हुआ ? प्रश्न : और तुम उसके घर भी जाते थे। और तुमने उससे टेलीफोन पर यह कहा : "हमने कितनी दिलचस्प शाम बिताई।" इसके बाद उन लोगों ने तुम्हें सड़क के चौराहे पर देखा। तुम लोग वहां ठण्ड में आधा घंटे तक खड़े रहे। और तुम दोनों के चेहरे बड़े गम्भीर थे और तुम्हारे मुख पर बड़े असंतोषजनक भाव थे; वास्तव में उन लोगों ने तुम्हारी इस मुलाकात के फोटो तक लिए। (मेरे दोस्तो, यह है जासूसों के तकनीकी साधनों की मिसाल, जासूसों की टेक्नोलॉजी की मिसाल !) तो तुम लोगों ने अपनी इन मुलाकातों में क्या बातचीत की ?

यह सब क्या है ? तुमने किस विषय पर बातचीत की ? यह प्रश्न किसी निश्चित उत्तर की अपेक्षा करता है ? तुम्हारे मन में सबसे पहले यह विचार आता है कि तुम यह कह दो कि अब मुझे इन मुलाकातों में हुई बातचीत के बारे में कुछ भी याद नहीं है। क्या तुम हर बातचीत को याद रखने के लिए बाध्य हो ? ठीक है ! तुम अपना पहला वार्तालाप भूल गए और दूसरा भी ? और तीसरा भी ? और तुम्हें अपनी दिलचस्प शाम की भी कोई याद नहीं है ? और उस दिन चौराहे पर जो बातें हुई वे भी ? और "ग" से तुम्हारी जो बातचीत हुई ? और "घ" से तुमने क्या कहा ? नहीं, तुम जरा सोचो : "मैं भूल गया हूं" इससे काम नहीं चलेगा; तुम अधिक समय तक इस बात पर कायम नहीं रह सकोगे। और तुम्हारा मन-मस्तिष्क अभी भी आघात की स्थिति में है। गिरफ्तारी के बाद आघात और भय अभी भी तुम्हारे ऊपर छाया हुआ है और नींद के अभाव तथा भूख की पीड़ा ने तुम्हारे विचार-क्रम को अस्पष्ट बना दिया है, उलझा दिया है : आप इस स्थिति में कैसे चतुरता से काम लें ताकि इसमें परिस्थितियों के अनुसार बात विश्वास योग्य लगे और तुम पूछताछ अधिकारी की चालाकी न चलने दो।

तुमने किस बारे में, किस विषय पर बातचीत की ? यह बहुत अच्छा होता कि अगर बातचीत हाकी के बारे में होती—यह बात, मेरे मित्रो, सब मामलों में सबसे कम कष्टदायक होती है ! अथवा स्त्रियों के बारे में, अथवा विज्ञान तक के बारे में। इस प्रकार तुम यह दोहरा सकते हो कि वार्तालाप किस प्रकार चला (विज्ञान भी हाकी से बहुत दूर नहीं है, लेकिन हमारे जमाने में विज्ञान सम्बन्धी हर बात वर्गीकृत जानकारी के अन्तर्गत आती है। और वे तुम्हें राज्य के गोपनीय रहस्यों को प्रकट करने सम्बन्धी आदेश के उल्लंघन के आरोप पर गिरफ्तार कर सकते हैं।) लेकिन यदि तुमने सचमुच नगर में हाल में हुई गिरफ्तारियों के बारे में बातचीत की हो तो क्या होगा ? अथवा सामूहिक खेतों के बारे में चर्चा चली हो ? (सचमुच, यह चर्चा आलोचनात्मक भी हो सकती थी, क्योंकि इन खेतों के बारे में कौन व्यक्ति एक भी भला शब्द कह सकता था ?) अथवा काम के अनुसार वेतन की दर में कमी करने के बारे में बातचीत हुई हो ? यह तथ्य बना रहता है कि चौराहे पर खड़े होकर तुम आध घंटे तक गुर्राते रहे—तुम वहां आखिर किस बारे में बातचीत कर रहे थे ?

हो सकता है कि "ख" को पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया हो। पूछताछ अफसर आपको आश्वस्त करता है कि "ख" को गिरफ्तार किया जा चुका है और वह पहले ही तुम्हारे विरुद्ध बयान दे चुका है। और वे लोग बहुत जल्दी ही "ख" से तुम्हारा सामना कराने के लिए उसे यहां ला रहे हैं। हो सकता है कि वह अपने घर पर बहुत शांतिपूर्वक बैठा हो, लेकिन वे उसे पूछताछ के लिए कभी भी बुला सकते हैं और उस स्थिति में वे

उससे इस बात का पता लगा लेंगे कि उस चौराहे पर आध घंटे तुम किस बात के ऊपर गुर्राते रहे, अपना क्रोध प्रकट करते रहे।

अब तुम्हारी समझ में यह बात आती है कि आप लोगों को क्या करना चाहिए था। लेकिन अब बहुत विलम्ब हो चुका है। जीवन का जो यथार्थ है, उसे ध्यान में रखते हुए आपको और उसे हर बार मुलाकात के बाद अलग होते समय इस सम्बन्ध में सहमति कर लेनी चाहिए थी और इस बात को याद रखना चाहिए था कि यदि आपसे कभी यह पूछा जाएगा कि अमुक दिन आपने किस विषय पर चर्चा की तो आप क्या कहेंगे। उस स्थिति में, पूछताछ के बावजूद, आपका बयान और उसका बयान एक सा होगा। लेकिन आप लोगों ने ऐसी कोई सहमति नहीं की। दुर्भाग्यवश आप लोग यह नहीं समझ पाये कि आप लोग कैसे भयावह जंगल में रह रहे हैं।

क्या आपको यह कह देना चाहिए कि आप मछली के शिकार पर निकलने की बात सोच रहे थे? लेकिन यह हो सकता है कि "ख" यह कह दे कि मछली के शिकार के बारे में कभी कोई चर्चा नहीं हुई, कि आप लोग पत्राचार स्कूल के पाठ्यक्रमों की चर्चा कर रहे थे। उस मामले में, जांच और पूछताछ की कारवाई को कुछ कम कठोर के बजाय आप अपने गले में पड़ा हुआ फंदा और कस देंगे : आप लोग किस विषय पर बात कर रहे थे, किस विषय पर, किस बारे में?

और यह विचार आपके मन में कौंध ही आता है—यह विचार अत्यधिक बुद्धिमतापूर्ण है अथवा जानलेवा?—कि तुम प्रायः वे ही बातें कहो जो तुम्हारे बीच हुई थीं। प्रायः वास्तविकता का बयान करो। बस, इस बातचीत के जो तीखे प्रसंग हों, जो खतरनाक अंग हों, उन्हें छोड़ जाओ या उनकी प्रखरता और भयंकरता को कम कर दो। आखिरकार लोग यही तो कहते हैं कि जब आप झूठ बोलें तो आपको सत्य के अधिक से अधिक समीप रहने का प्रयास करना चाहिए। और हो सकता है "ख" भी यह अनुमान लगा ले कि क्या होने जा रहा है और प्रायः वही बातें कहे जो आप बताते हैं और इस प्रकार आपका बयान कुछ मामलों में उसके बयान से मेल खायेगा और वे आगे आपको परेशान नहीं करेंगे।

अनेक वर्ष बाद यह बात आपकी समझ में आयेगी कि सचमुच यह विचार बुद्धिमतापूर्ण नहीं था। और आप यह महसूस करेंगे कि एक ऐसे असम्भावित रूप से निरर्थक व्यक्ति की भूमिका निभाना अधिक चतुरतापूर्ण होता, जो अपने जीवन के एक दिन के बारे में भी याद नहीं रख सकता, चाहे यह करते समय आपके समक्ष मारपीट की जोखिम क्यों न मौजूद हो। लेकिन आपको तीन दिन तक सोने नहीं दिया गया है। आपमें स्वयं अपने विचारक्रम को समझने की भी शक्ति नहीं रह गई है और आप यह दर्शाने की स्थिति में नहीं रह गए हैं कि आप किसी भी बात से विचलित नहीं हैं। और आपको परिस्थिति पर विचार करने के लिए एक मिनट का भी समय नहीं मिलता। अचानक दो पूछताछ अधिकारी आपके सिर पर सवार हो जाते हैं (क्योंकि वे एक दूसरे से मिलना पसन्द करते हैं): तुम किस विषय पर बातचीत कर रहे थे? किस बारे में? किस बारे में?

और आप बयान देते हैं : हम लोग सामूहिक खेतों के बारे में बातचीत कर रहे थे—हम यह बात कर रहे थे कि सामूहिक खेतों में अब तक सब कुछ एकदम ठीक नहीं हो पाया है, लेकिन जल्दी ही ठीक हो जाएगा। हम काम के अनुसार मजदूरी की दरों को घटा देने के बारे में बातचीत कर रहे थे......और आपने इन विषयों पर अपने क्या विचार

व्यक्त किए ? क्या आप इस बात से प्रसन्न थे कि काम के अनुसार मजदूरी की दरों में कमी कर दी गई है ? लेकिन लोगों की बातचीत का सामान्य तरीका यह नहीं है— यह बहुत अधिक असंभावित है। और इस वार्तालाप को पूरी तरह विश्वासयोग्य बनाने के लिए आप इस बात पर सहमत हो जाते हैं कि आपने कुछ नाममात्र की शिकायत की और कहा कि वे लोग काम के अनुसार वेतन के बारे में कुछ अधिक कड़ाई बरत रहे हैं।

पूछताछ अधिकारी आपके इस बयान को स्वयं लिखता है, और वह आपके विचारों का अपनी भाषा में अनुवाद कर देता है : इस मुलाकात में हमने वेतन और मजदूरी के क्षेत्र में पार्टी और सरकार की नीति के विरुद्ध प्रवाद फैलाने वाली बातें कहीं।

और किसी दिन "ख" तुम्हारे ऊपर यह अभियोग लगायेगा : "ओह, बकवादी कहीं के, मैंने तो उन लोगों से कह दिया था कि हम मछली के शिकार की योजना बना रहे थे।"

लेकिन आपने पूछताछ अधिकारी से अधिक चालाकी बरतने की कोशिश की थी, आपका तीक्ष्ण और सूक्ष्म मस्तिष्क है। आप एक बुद्धिवादी हैं। और आपने स्वयं अपने साथ भी चालाकी खेली। आपने स्वयं अपने आपको ही कठिनाई में डाला...

अपराध और दण्ड उपन्यास में पोरफिरी पेत्रोविच, रासकोलनिकोव से एक आश्चर्यजनक सीमा तक चतुरतापूर्ण बात कहता है कि केवल एक ऐसा ही व्यक्ति, जो स्वयं इन परिस्थितियों से गुजरा हो, उसकी चालाकी पकड़ सकता था—इस कथन का यह अभिप्राय है : "आप जैसे बुद्धिवादियों के समक्ष मुझे अपने बयान का मसौदा तैयार करने की जरूरत नहीं है। आप स्वयं इसे तैयार कर लेंगे और अन्तिम रूप में मेरे समक्ष रख देंगे।" हां, यही होता है ! एक बुद्धिवादी, चेखोव के "मेलफैक्टर" जैसी आनन्दपूर्ण असम्बद्धता से उत्तर नहीं दे सकता। वह पूरे किस्से को, उन बातों को, जिनका अभियोग उसके ऊपर लगाया जा रहा है, एक तर्क संगत तरीके से पेश करने की कोशिश करेगा, चाहे इस किस्से में कितना भी अधिक झूठ क्यों न हो।

लेकिन पूछताछ करने वाला जल्लाद, तार्किकता में दिलचस्पी नहीं रखता; वह तो केवल दो या तीन वाक्यांश पकड़ लेना चाहता है। वह जानता है कि उसे किस चीज की ज़रूरत है और जहां तक हमारा सम्बन्ध है—हम किसी भी बात के लिए तैयार नहीं हैं।

बचपन से ही हमें स्वयं अपने पेशे के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण दिया जाता है। हमें अपने नागरिक कर्तव्यों; सैनिक सेवा; शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने, अच्छा आचरण करने, यहां तक कि सुन्दरता को प्रशंसा के भाव से देखने (वैसे इस अन्तिम बात के लिए इतना अधिक नहीं !) हमें तैयार किया जाता है। लेकिन न तो हमारी शिक्षा और न ही हमारा पालन-पोषण और न ही हमारा अनुभव हमें अपने जीवन के महानतम संघर्ष के लिए जरा भी तैयार नहीं करता : बिना किसी कारण के गिरफ्तार हो जाने पर और बिना किसी कारण के पूछताछ किए जाने पर हमें क्या करना चाहिए ? यह हमें कोई नहीं बताता। उपन्यासों में, नाटकों में, फिल्मों में (इनके लेखकों को भी गुलाग का जाम इसकी अन्तिम बूंद तक पीने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए !) यह दर्शाया जाता है कि पूछताछ अधिकारियों के दफ्तरों में हमारी मुलाकात सत्य और मानवीयता के वीर संरक्षकों से, हमारे स्नेही पिताओं के रूप में होती है। संसार के प्रायः प्रत्येक विषय पर हमें भाषण दिए जाते हैं—और हमें इन भाषणों को सुनने के लिए भेड़-बकरियों की तरह बटोरकर ले जाया जाता है। लेकिन कोई भी व्यक्ति हमें दण्ड संहिता के यथार्थ और विस्तृत महत्व के बारे में नहीं

बतायेगा; और स्वयं दण्ड संहितायें हमारे पुस्तकालयों में खुले रूप से उपलब्ध नहीं हैं और न ही इन्हें अखबार बेचने वाली दुकानों पर बेचा जाता है; और न ही ये कभी लापरवाह युवकों के हाथों में पहुंचती ही हैं।

यह सचमुच परियों जैसी कहानी दिखाई पड़ती है कि इस संसार में कहीं, इस पृथ्वी के किसी छोर पर कहीं, कोई अभियुक्त अपनी सहायता के लिए किसी वकील की सेवाएं प्राप्त कर सकता है। इसका अर्थ अपने पास एक ऐसे व्यक्ति की मौजूदगी है, आपके जीवन की सबसे कठिन घड़ी में एक ऐसे स्पष्ट विचारों वाले साथी की मौजूदगी है, जो कानून जानता है।

हमारे पूछताछ के तरीके का सिद्धांत यह है कि अभियुक्त को कानून के ज्ञान से पूरी तरह वंचित कर दिया जाए।

एक अभियोग-पत्र पेश किया जाता है और प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि इसे किस प्रकार पेश किया जाता है : "इस पर हस्ताक्षर करो।" "यह सच नहीं है।" "हस्ताक्षर करो।" "लेकिन मैं किसी भी बात का दोषी नहीं हूं!" यह पता चलता है कि आपके ऊपर रूस गणराज्य की दंड संहिता के अनुच्छेद ५८-१०, खण्ड-२, और अनुच्छेद १०-११ के अन्तर्गत अभियोग लगाया जा रहा है। "हस्ताक्षर करो!" "लेकिन इन धाराओं में क्या कहा गया है? मुझे दंड संहिता पढ़ने के लिए दीजिए।" "मेरे पास भी दंड संहिता नहीं है! हस्ताक्षर करो!" "लेकिन मैं दंड संहिता देखना चाहता हूं।" "इसे देखने का तुम्हारा कोई मतलब नहीं है। यह दण्ड संहिता तुम्हारे लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए तैयार का गई है। तुम्हें इसकी जरूरत नहीं है। मैं तुम्हें बताता हूं कि इसमें क्या कहा गया है : इन धाराओं में एकदम उन्हीं बातों का विवरण दिया गया है, जिनके तुम दोषी हो। और यह भी समझ लो, अब, इस क्षण तुम्हारे हस्ताक्षर का यह अर्थ नहीं है कि तुम अभियोगपत्र में वर्णित अभियोगों पर सहमत हो। बस, इतना काफा है कि तुमने इसे पढ़ लिया है, इसे तुम्हें दिखा दिया गया है।"

अचानक, अक्षरों का एक नया सम्मिश्रण यू० पी० के०, कागज के टुकड़े पर चमक उठता है। तुम्हारे मन में सतर्कता का भाव जगता है। यू० पी० के० और यू० के० के बीच क्या अन्तर है—यू० के० का अर्थ तो दंड संहिता है? यदि सौभाग्यवश तुम यह सवाल उस समय उठाते हो जब पूछताछ अधिकारी प्रसन्नचित्त है, तो वह तुम्हें समझायेगा : यू० पी० के० दंड प्रक्रिया संहिता है। और क्या है? इसका यह अर्थ हुआ कि केवल एक नहीं दो अलग-अलग दंड संहिताएं हैं और आपको इन दंड संहिताओं के अस्तित्व तक की जानकारी नहीं है, जबकि इनकी व्यवस्थाओं के अन्तर्गत आपको रौंदा जा रहा है।

उस समय को १० वर्ष बीत चुके हैं; फिर १५। मेरी जवानी की कब्र के ऊपर घास की मोटी परत उग चुकी है। मैं अपनी सजा की अवधि पूरी कर चुका हूं और "बाह्य निष्कासन" को भी भोग चुका हूं। और कहीं भी—न तो शिविरों के "सांस्कृतिक शिक्षा" अनुभागों में, न ही जिला पुस्तकालयों और न ही मध्यम दर्जे के नगरों में मैंने अपनी आंखों से न तो सोवियत कानून संहिता को देखा, न ही इसे अपने हाथों में लिया, न ही इसे खरीद पाया, न ही इसे प्राप्त कर सका और न ही इसके बारे में पूछ सका।[२१] मुझे उन सैकड़ों ऐसे कैदियों की जानकारी है, जो पूछताछ के दौर से गुजरे और जिनके ऊपर मुकदमे चलाये गए, और वह भी एक से अधिक बार, ऐसे भी कैदी हैं, जिन्होंने शिविरों में और निष्कासन में

अपनी सजाओं की अवधियां पूरी कीं, पर उनमें से एक ने भी कभी भी दंड संहिता को नहीं देखा अथवा इसे अपने हाथ में नहीं लिया।

जब ये दोनों संहिताएं ३५ वर्ष पुरानी हो चुकी हैं और इनके स्थान पर जब नई संहिताएं लागू होने का समय आया तो मैं इन्हें देख सका मैं पाकेट बुक अथवा अल्पमोली संस्करण में यू० के० अर्थात दंड संहिता और यू० पी० के० अर्थात् दण्ड प्रक्रिया संहिता की जुड़वां बहनों को देख सका। यह मास्को के भूगर्भ रेलवे स्टेशन के बुक स्टाल पर मौजूद थीं। (अब क्योंकि ये दंड संहिताएं पुरानी पड़ चुकी थीं, अत: इन्हें सामान्य लोगों के लिए जारी कर दिया गया था)।

आज मैं इन दण्ड संहिताओं को अत्यधिक भावना से भरकर पढ़ता हूं। उदाहरण के लिए दंड प्रक्रिया संहिता में लिखा है: "अनुच्छेद १३६ : पूछताछ अधिकारी को किसी अभियुक्त से दबाव डालकर और धमकियां देकर किसी भी प्रकार का बयान दिलवाने अथवा स्वीकारोक्ति कराने का अधिकार नहीं है।" (इससे स्पष्ट हो जाता है कि उन लोगों ने इस संभावना की पूर्व-कल्पना कर ली थी।)

"अनुच्छेद १११ : पूछताछ अधिकारी की यह जिम्मेदारी है कि वह सब सम्बन्धित तथ्यों को पूरी तरह से स्पष्ट करे, ऐसे तथ्यों को भी जिनके आधार पर अभियुक्त रिहा हो सकता हो और उन्हें भी जिनके आधार पर अभियुक्त का अपराध कम गम्भीर बन सकता हो।"

लेकिन वह मैं ही था, जिसने अक्तूबर में सोवियत सत्ता की स्थापना में सहायता दी! वह मैं ही था जिसने कोलचाक को गोली से उड़ाया था! मैंने ही कुलकों को उनकी सम्पत्ति से वंचित करने के अभियान में हिस्सा लिया था। मैंने ही उत्पादन की लागत में कमी के द्वारा राज्य को एक करोड़ रूबल बचाने में सहायता दी थी! मैं युद्ध में दो बार घायल हुआ था! मुझे तीन पदक और अलंकरण मिले थे।

"तुम्हारे ऊपर इन बातों के लिए मुकदमा नहीं चलाया जा रहा है!" इतिहास... पूछताछ अधिकारी के बाहर निकले हुए दांत "तुमने अपने जीवन में जो कुछ अच्छा काम किया हो, उसका इस मामले से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"अनुच्छेद १३६ : अभियुक्त को स्वयं अपने लेख में अपना बयान लिखने का अधिकार है, और पूछताछ अधिकारी द्वारा लिखे गए बयान में संशोधन करने की मांग करने का भी अधिकार है।"

काश! समय रहते हमें इसकी जानकारी होती! लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा: यदि वास्तविकता यही थी तो हम सदा पूछताछ अधिकारी से व्यर्थ ही यह याचना करते रहते थे कि "मेरे गलती पर आधारित वक्तव्यों" जैसी अभिव्यक्ति के स्थान पर वह "मेरी घृणा योग्य, प्रवादपूर्ण जालसाजियां" न लिखे अथवा वह "मेरे जंग खाये हुए फिनलैंड में बने चाकू" के स्थान पर "हमारा गुप्त शस्त्र भण्डार" न लिखे।

काश! प्रतिवादियों को, अभियुक्तों को पहले जेल-विज्ञान की कुछ शिक्षा मिल पाती! काश! पहले पूर्वाभ्यास के तौर पर ही पूछताछ होती और केवल बाद में ही यथार्थ रूप में...आखिरकार उन लोगों ने १९४८ में दूसरी बार सजा काटने वाले लोगों के साथ यह पूछताछ का नाटक नहीं खेला: इसमें वे कामयाब नहीं हो सकते थे। लेकिन नए लोगों को कोई अनुभव नहीं था! कोई ज्ञान नहीं था! और ऐसा भी कोई व्यक्ति नहीं था, जिससे

सलाह ली जा सके।

अभियुक्त का एकाकीपन। अन्यायपूर्ण पूछताछ की सफलता में यह एक और सहायक तत्व था! पूरे संगठन की शक्ति एकाकी और निषेध से ग्रस्त संकल्प शक्ति के विरुद्ध लग जाती थी। अपनी गिरफ्तारी के क्षण से लेकर पूछताछ की समस्त आघातपूर्ण अवधि में कैदी को, आदर्श स्थिति में पूरी तरह अलग रखा जाता था। अपनी जेल की कोठरी में, जेल के बरामदे में, सीढ़ियों पर, दफ्तरों में कहीं भी उसे अपने जैसे दूसरे लोगों से न मिलने देने की कोशिश रहती थी। ताकि उसे किसी भी प्रकार की सहानुभूति, सलाह और यहां तक कि किसी मुस्कराहट अथवा नज़र के द्वारा भी किसी भी प्रकार का समर्थन प्राप्त न हो सके। सुरक्षा संगठन उसके भविष्य को पूरी तरह से मिटा डालने और उसके वर्तमान को विकृत कर डालने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखते थे। उसे यह बात बताई जाती थी और इस पर विश्वास करने को तैयार किया जाता था कि उसके सब मित्रों और परिवार के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसके अपराधी होने के प्रमाण मिल चुके हैं। कैदी और उसके प्रियजनों को नष्ट कर डालने की अपनी शक्ति को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा कर दर्शाना उनकी आदत थी। और वे क्षमादान देने के अपने काल्पनिक अधिकार को भी इसी प्रकार बढ़ा-चढ़ाकर दर्शाते थे (इन संगठनों को ऐसा कोई अधिकार प्राप्त नहीं था।) वे लोग यह नाटक करते थे कि कैदी के "पश्चाताप" की निष्ठा और उसकी सज़ा में कमी अथवा शिविर की कठोरता में कमी के बीच कोई सम्बन्ध है। (ऐसा कोई सम्बन्ध कभी मौजूद नहीं रहा)। कैदी जब आघात की स्थिति में ही रहता था और भयंकर यातना के दौर से गुजरता था और इसके परिणामस्वरूप प्रायः अपना मानसिक संतुलन खो बैठता था, तब वे लोग जल्दी से जल्दी उससे ऐसे प्रमाण और बयान करा लेने की कोशिश करते थे, जो अनिवार्य रूप से हानिप्रद होते थे और इन बयानों के माध्यम से यथासम्भव अधिक से अधिक संख्या में पूरी तरह निर्दोष लोगों को फंसाने की कोशिश करते थे। इन परिस्थितियों में कुछ प्रतिवादी इतने अधिक निराश हो उठते थे कि वे अपने बयानों को पढ़वाकर सुनना तक नहीं चाहते थे। वे उन्हें सुनना बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। बस वे केवल यही कहते थे कि उनसे दस्तखत भरकरा लिए जाएं, जहां चाहें वहां दस्तखत करा लें और इस भयंकर परिस्थिति से उसे छुट्टी दें। यह सब समाप्त हो जाने के बाद भी, कैदी को तन्हाई से निकालकर जेल की बड़ी कोठरी में पहुंचाया जाता, जहां वह अत्यधिक निराशा से भरकर उस समय एक-एक करके अपनी गलतियों को समझना और गिनना शुरू करता, जब बहुत विलम्ब हो चुका होता।

ऐसे द्वन्द्व युद्ध में गलती न करना कैसे सम्भव था? कौन व्यक्ति गलती करने से बच सकता था?

हमने कहा है कि "आदर्श रूप में उसे अलग रखा जाता है।" पर सन् १९३७ की आवश्यकता से अधिक कैदियों की भीड़ से भरी जेलों में और इसी प्रकार १९४५ में भी एक नए गिरफ्तार प्रतिवादी को एकदम अलग-थलग तनहाई में रखने का आदर्श प्राप्त कर पाना सम्भव नहीं था। प्रायः गिरफ्तारी के पहले घण्टे से ही कैदी आवश्यकता से अधिक भीड़ भरी साधारण कोठरी में अपने को पाता था।

लेकिन इस व्यवस्था की अपनी अच्छाइयां भी थीं, जो इसकी बुराइयों की कमी को कहीं अधिक पूरा कर देती थीं। बहुत बड़ी संख्या में कैदियों से खचाखच भरी जेल की कोठ-

रियां एक व्यक्ति को तनहाई में किसी "बक्स" में ठूंस देने का काम पूरा करती थीं और ये अपने आपमें उच्च कोटि की यातना का स्वरूप भी ग्रहण करती थीं...और इस दृष्टि से यह यातना विशेष रूप से उपयोगी थी, क्योंकि निरन्तर अनेक दिनों और सप्ताहों तक जारी रहती थी और यह यातना देने के लिए पूछताछ अधिकारियों को कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ता था। स्वयं कैदी ही कैदियों को यातना देते थे। जेलर इतने अधिक कैदियों को एक कोठरी में ठूंस देते थे कि प्रत्येक को फर्श पर बैठने तक की जगह नहीं मिल पाती थी; कुछ कैदी दूसरे के पांवों पर बैठते थे, लोग दूसरे लोगों के ऊपर से चलते थे और कभी-कभी तो हिलडुल तक नहीं पाते थे। इस प्रकार सन् १९४५ में किशिनेव के० पी० जेड० अर्थात् आरम्भिक हिरासत की कोठरियों में उन्होंने एक ऐसी कोठरी में १८ कैदियों को ठूंस दिया जो केवल एक कैदी को तनहाई में रखने के लिये बनाई गई थी; सन् १९३७ में लुगांस्क में एक ऐसी ही कोठरी में १५ कैदियों को भरा गया।[२२] और सन् १९३८ में आइवानोव-राजुमनिक ने बुत्यर्की जेल की २५ कैदियों के लिए बनी एक सामान्य कोठरी में १४० कैदियों को देखा—शौचालय की व्यवस्था कर पाना असम्भव हो रहा था और बारी-बारी से कैदियों को दिन में केवल एक बार शौचालय ले जाया जाता था और कभी-कभी तो कुछ कैदियों का नम्बर रात को आता था। और यही बात कैदियों को जेल की कोठरी के बाहर खुले में टहलने के लिए ले जाने के बारे में भी सही थी।[२३] आइवानोव-राजुमनिक में भी लूबयांका जेल के "स्वागत-कुत्ताघर" में यह गणना की कि एक वर्ग गज़ ज़मीन पर तीन व्यक्ति एक साथ कई सप्ताह तक बैठे रहते थे। (प्रयोग के तौर पर तीन लोगों को इतनी जगह में बैठाने की कोशिश करके तो देखिये!)[२४] इस "कुत्ताघर" में न तो रोशनदान थे और न ही खिड़की। और कैदियों के शरीर के ताप और सांस ने तापमाप को ४०-४५ डिग्री सेंटीग्रेड अथवा १०४-११३ डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ा दिया था। और प्रत्येक व्यक्ति अपने जाड़े के कपड़ों को अपने नीचे रख कर केवल जांघिया पहन कर ही बैठा रहता था। उनके नंगे शरीर एक दूसरे से टकराते रहते थे और उन्हें एक दूसरे के पसीने से एग्ज़ीमा होता रहता था। वे लोग कई सप्ताहों तक इसी तरह बैठे रहते थे। और उन्हें न तो ताजा हवा और न ही पानी दिया जाता था। उन्हें केवल खिचड़ी और चाय सुबह के समय मिलती थी।[२५]

और इसके साथ ही शौचालय के अन्य सब प्रकारों का स्थान केवल पाखाने की बाल्टी ही ले ले तो आप स्थिति की कल्पना कर सकते हैं (अथवा यदि बाहर शौचालय ले जाने के बीच की अवधि में कोठरी के भीतर पाखाने की बाल्टी भी न हो, जैसाकि साइबेरिया की अनेक जेलों में होता था।) और अगर चार आदमी एक ही कटोरे में दूसरे के घुटनों पर बैठ कर खाना खायें और यदि किसी एक कैदी को पूछताछ के लिए बाहर निकाल ले जाया जाये और किसी अन्य को मारपीट के बाद, नींद के अभाव की भयंकर स्थिति में बेहद पस्त हालत में भीतर धकेल दिया जाये और यदि इस प्रकार पूरी तरह टूटे हुए व्यक्ति की मौजूदगी पूछताछ अधिकारियों की धमकियों से कहीं अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो और यदि, उस समय, मृत्यु और किसी भी शिविर में कैद की सज़ा किसी ऐसे कैदी को अधिक आसान दिखाई पड़े, जिसे अपनी वर्तमान स्थिति में महीनों तक बिना किसी बुलाहट के पड़े रहने दिया गया हो—तो सम्भवतः सिद्धान्त रूप में आदर्श मानी जाने वाली तनहाई में कैद की कमी निश्चय ही पूरी समझी जाएगी। और लोगों की ऐसी खिचड़ी में आप सदा यह निर्णय नहीं कर पाएंगे कि किससे स्पष्टरूप से बात कर सकते हैं; और आपको सदा ऐसा कोई

व्यक्ति नहीं मिल पायेगा जिससे सलाह ले सकें। और आप यातनाओं और मारपीट में उस समय विश्वास नहीं करेंगे जब पूछताछ अधिकारी आपको इसकी धमकियां देगा, बल्कि दूसरे कैदियों पर इन यातनाओं और मारपीट के चिह्नों को देखकर आप पहले से ही इस बात से आश्वस्त हो चुके होंगे।

जो लोग यातना भोग चुके होंगे, उनसे आपको यह पता चल चुका होगा कि वे लोग आपके गले में नमकीन पानी का फुहारा छोड़ेंगे और इसके बाद आपको दिन भर प्यास से छटपटाने के लिए एक बक्स में बन्द कर देंगे। (कारपूनिच)। अथवा वे एक मनुष्य की पीठ की चमड़ी को तेज औज़ार से खुर्च देंगे और जब खून बहने लगेगा तो इस पर तारपीन का तेल पोत देंगे। (ब्रिगेड कमाण्डर रूदोल्फ पिन्तसोव को इन दोनों तरीकों से यातनाएं दी गईं। इसके अलावा उन लोगों ने उनके नाखूनों में सूइयां गाड़ दीं और उनके पेट में उस समय तक पानी भरते गए जब तक पेट फटने की स्थिति में नहीं पहुंच गया—उनसे यह स्वीकारोक्ति करने की मांग की जा रही थी कि उन्होंने नवम्बर की परेड के दौरान अपनी टैंक ब्रिगेड को सरकार के विरुद्ध इस्तेमाल करना चाहा था।)[२६] और विदेशों से सांस्कृतिक सम्बन्धों की अखिल रूस सोसाइटी के कला अनुभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष अलेक्सान्द्रोव से, जिनकी रीढ़ की हड्डी का एक हिस्सा टूटा हुआ है और जिसके परिणामस्वरूप वे एक ओर झुक कर चलते हैं और अपने आंसुओं को रोक नहीं पाते और निरन्तर रोते रहते हैं, आपको यह जानकारी मिल सकती है कि स्वयं अबाकुमोव किस प्रकार १९४८ में मार पीट कर सकता था।

हां, हां, राज्य सुरक्षा मंत्री अबाकुमोव स्वयं कैदियों को मारने पीटने के इस निम्न स्तर के श्रम से कभी भी पीछे नहीं हटा। (वह अपनी सेनाओं का स्वयं नेतृत्व करने वाले सुवोरोव के समान था!) कभी-कभी अपने हाथ में रबड़ का चाबुक उठा लेने से वह चूकता नहीं था। और उसका सहायक मंत्री र्‌यूमिन तो उससे भी अधिक तत्पर रहता था। उसने सुखानोवका जेल में "जनरलों" के पूछताछ दफ्तर में यह कार्य किया। इस कार्यालय की दीवारों पर अखरोट की नकली लकड़ी लगी हुई थी, खिड़कियों और दरवाजों पर रेशमी पर्दे थे और फर्श पर एक बहुत बड़ा फारसी कालीन बिछा हुआ था। इस सुन्दरता को नष्ट होने से बचाने के लिए, खून से अत्यन्त गन्दा हुआ एक मोटा कपड़ा कालीन के ऊपर उस समय बिछा दिया जाता था जब किसी कैदी को पिटाई के लिए वहां लाया जाता था। जब र्‌यूमिन स्वयं पिटाई करता था, तो उसकी सहायता के लिए कोई मामूली सन्तरी नहीं, बल्कि एक कर्नल मौजूद रहता था। "और इस प्रकार", र्‌यूमिन ने रबड़ के चाबुक को अपने हाथ में घुमाते हुए विनम्रता से कहा, "तुम नींद के अभाव का मुकाबला बड़े सम्मान के साथ करने में कामयाब रहे हो।" उसके हाथ में चार सेंटीमीटर मोटा रबड़ का चाबुक था। (अलैक्जेंडर डी० ने बड़ी चतुरता से एक महीने तक खड़े रह कर ही थोड़ी बहुत नींद निकाल कर एक महीने तक "निद्रा के अभाव" का मुकाबला किया था।) "तो अब हम चाबुक का इस्तेमाल करेंगे। कैदी चाबुक लगाये जाने के दो या तीन दौर से अधिक बर्दाश्त नहीं कर पाता। अपनी पतलून नीचे उतारो और इस कपड़े पर लेट जाओ।" कर्नल कैदी की पीठ पर बैठ गया। अलैक्जेण्डर डी० चाबुक के प्रहारों को गिनने जा रहा था। उसे अभी तक यह मालूम नहीं था कि जब लम्बे अरसे तक भुखमरी के परिणामस्वरूप नितम्बों के ऊपर का मांस नदारद हो जाता है तो सियाटिक नाड़ी पर रबड़ के चाबुक का एक प्रहार क्या

मायने रखता है। जिस स्थान पर चाबुक पड़ता है, वहां उसका असर महसूस नहीं होता—प्रहार का विस्फोट मस्तिष्क में होता है। पहले प्रहार के बाद ही कैदी दर्द से पागल हो उठता है और कालीन में अपने नाखून गड़ा कर उन्हें तोड़ डालता है। र्‍यूमिन ने चाबुक बरसाने शुरू किए। वह ठीक स्थान पर बहुत सधे हुए वार करने की कोशिश कर रहा था। अलैक्जेंडर डी० की पीठ पर कर्नल बैठा हुआ था—कन्धों पर तीन बड़े सितारों वाले अफसर के लिये, सर्व-शक्तिमान र्‍यूमिन की सहायता करने का यह कार्य उचित ही था! (इस पिटाई के बाद कैदी स्वयं नहीं चल सकता था और जैसा कि स्पष्ट है उसे उठाकर भी नहीं ले जाया जाता था। वे लोग उसे फर्श पर घसीटते हुए ले जाते थे। उसके नितम्बों के रूप में जो कुछ शेष बचा होता था, वह जल्दी ही इतना अधिक सूज जाता था कि वह अपनी पतलून के बटन भी बन्द नहीं कर पाता था और इसके बावजूद नितम्बों पर मार के निशान प्रायः नहीं होते थे। इस पिटाई के परिणामस्वरूप उन्हें भयंकर रूप से दस्त आने लगे और तनहाई की कोठरी में पाखाने की बाल्टी पर बैठे हुए अलैक्जेंडर डी० जोर-जोर से रो उठें। दूसरी और फिर तीसरी बार भी इसी प्रकार उनके ऊपर चाबुक बरसाये गये। उनकी चमड़ी फट गई और र्‍यूमिन उन्मत्त हो उठा और उनके पेट पर चाबुक बरसाने लगा; जिसके परिणामस्वरूप आंत के ऊपर चमड़ी फट गई और उन्हें बहुत जबर्दस्त हर्निया हो गया। अलैक्जेंडर डी० की आंतें बाहर निकल आईं। कैदी को बुत्यर्की अस्पताल में पेरीटोनाइटिस के रोगी के रूप में पहुंचा दिया गया और इस बीच अलैक्जेंडर डी० से झूठी स्वीकारोक्ति का गन्दा काम कराने के प्रयास स्थगित रहे।)

इसी प्रकार वे आपको भी यातनाएं दे सकते हैं! इसके बाद जब हम किशीनेव के पूछताछ अधिकारी दानिलोव को अंगीठी की आग कुरेदने वाला लोहा पादरी विक्टर शिपोवालनिकोव के सिर पर मारते हुए और पादरी के लम्बे बाल खींचते हुए देखते हैं, तो हमें यह एक पिता सदृश सीधे सादे आचरण का उदाहरण दिखाई पड़ता है। (किसी पादरी को इस प्रकार घसीटना बड़ा आसान है; चर्च के मामलों में सक्रिय लोगों को उनकी दाढ़ी पकड़ कर दफ्तर के कमरे एक कोने से दूसरे कोने तक घसीटना भी इसी प्रकार सामान्य बात है। रिचर्ड ओहोला को—फिनलैंड में जन्मा एक लाल रक्षक जिसने सिडनी रीली नामक अंग्रेज जासूस की गिरफ्तारी में हिस्सा लिया था और जो क्रोन्सटाट के विद्रोह के दमन के समय एक कम्पनी का कमाण्डर था—उसकी बड़ी-बड़ी मूंछों के एक सिरे को जम्बूर से पकड़कर ऊपर उठाया गया और फिर बाद में मूंछ के दूसरे सिरे को जम्बूर से पकड़कर उसे अधर में लटका दिया गया और इस प्रकार उसे दस मिनट तक लटका रहने दिया गया।

लेकिन वे आपके साथ सबसे भयंकर व्यवहार यह कर सकते हैं: कमर के नीचे आपको बिल्कुल नंगा कर सकते हैं, आपको पीठ के बल फर्श पर लेटा सकते हैं, आपकी दोनों टांगें अधिक से अधिक चौड़ा सकते हैं और उनके ऊपर सहायकों को बैठा सकते हैं (ये सहायक सार्जेंटों की शानदार टुकड़ियों के सदस्य होंगे।) और ये सहायक ही आपकी बांहें भी दबोचे रहेंगे और फिर पूछताछ अधिकारी (और स्त्री पूछताछ अधिकारी भी इस काम से पीछे नहीं हटीं जरा भी नहीं हिचकिचाई) आपकी टांगों के बीच खड़ा होगा और अपने फौजी बूट के पंजे से (अथवा स्त्री अधिकारी अपने जूते से) धीरे-धीरे निरन्तर दबाव बढ़ाते हुए, आपके उन अंगों को फर्श पर कुचलना शुरू करेगा, जिनके बल पर एक दिन आप पुरुष बने थे। वह आपकी आंखों में आंखें डाले रहेगा और अपने प्रश्नों को दोहराता रहेगा अथवा वह

विश्वासघात करने को कहता रहेगा, जिसकी सलाह वह आपको अब तक देता रहा है। यदि वह बहुत तेज़ी से अथवा और अधिक शक्ति से आपके गुप्तांगो को नहीं कुचलता, तो बस आपके पास यह चिल्ला उठने के लिये केवल १५ सेकेण्ड का समय और होगा कि आप हर बात की स्वीकारोक्ति करने को तैयार हैं; कि आप उन बीस लोगों को गिरफ्तार होते देखने के लिये तैयार हैं, जिन्हें गिरफ्तार करवाने के लिये पूछताछ अधिकारी आपसे अभियोग लगाने को कहता रहा है; अथवा आप समाचारपत्रों में उन समस्त चीजों पर कीचड़ उछालने को तैयार हैं, जिन्हें आप आज तक पवित्र मानते आये हैं...

और काश ईश्वर आपके कार्यों पर निर्णय दे, मनुष्य नहीं...

"इससे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है। तुम्हें हर बात की स्वीकारोक्ति करनी होगी!" वे कैदी फुसफुसाहट के स्वर में आपको सलाह देते हैं, जिन्हें जेल की कोठरी में कैदियों के खिलाफ जासूसी करने और उनका मनोबल तोड़ने के लिये नियुक्त किया जाता है।

"यह एक सीधी-सादी बात है: अपने स्वास्थ्य की रक्षा करो!" सामान्य सूझ-बूझ वाले लोग कहते हैं।

"आपके नये दांत नहीं निकल सकते", जो लोग पहले ही अपने दांत तुड़वा चुके है, पूछताछ अफसरों की मार पीट से दांतों से वंचित हो चुके हैं, आपकी ओर सिर हिलाते हुए कहते हैं।

"चाहे कुछ भी हो वे आपको सजा ज़रूर देंगे, चाहे आप स्वीकारोक्ति करें अथवा नहीं।" जो लोग इन बातों की तह में पहुंच चुके हैं, निष्कर्ष निकालते हुए कहते हैं।

"जो लोग हस्ताक्षर नहीं करते, उन्हें गोली से उड़ा दिया जाता है।" कोने में बैठा हुआ कोई अन्य व्यक्ति भविष्यवाणी करता है। "केवल बदला लेने के लिये! ताकि इस बारे में कोई बात प्रकट न हो जाये कि वे लोग किस तरह से पूछताछ करते हैं।"

"अगर आप पूछताछ अफसर के कमरे में ही मर जाते हैं, तो वे आपके रिश्तेदारों को बता देंगे कि आपको शिविर में जेल काटने के लिए भेज दिया गया है। लेकिन आपको पत्रव्यवहार करने का अधिकार नहीं है। और इसके बाद वे लोग तुम्हारी तलाश करने की कोशिश तो करें।"

अगर आप एक कट्टर कम्युनिस्ट हैं, तो एक दूसरा कट्टर कम्युनिस्ट आपके पास खिसक आएगा। और इधर-उधर शत्रुतापूर्ण संदेह से नजर डालते हुए आपके कान में कहेगा, ताकि वे लोग सुन न पायें, जिन्हें कम्युनिस्ट तौर तरीकों की दीक्षा नहीं मिली है।

"सोवियत पूछताछ प्रणाली का समर्थन करना हमारा कर्त्तव्य है। यह युद्ध की स्थिति है। इसका दोष स्वयं हमारे ऊपर है। हम अत्यधिक कोमल हृदय बने रहे; और अब देखो देश में यह गन्दगी कितनी अधिक बढ़ गई है। एक भयंकर गुप्त युद्ध चल रहा है। यहां भी हम शत्रु से घिरे हैं। ज़रा इन लोगों की बात सुनो। ये लोग क्या-क्या कहते रहते हैं! पार्टी को अपने कार्यों के बारे में इनमें से प्रत्येक व्यक्ति को सफाई देने की जरूरत नहीं है—यह कार्य क्यों और किसलिये किये जाते हैं, इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये पार्टी बाध्य नहीं है। यदि वे लोग हमसे दस्तखत करने के लिये कहते हैं, तो हमें कर देने चाहिएं।"

और एक दूसरा कट्टर कम्युनिस्ट आपके बराबर आ बैठता है:

"मैंने ३५ लोगों के खिलाफ अभियोगों पर हस्ताक्षर किए, अपने सब परिचितों के खिलाफ अभियोग लगाये। और मैं आपको भी सलाह देता हूं: आप अपने पीछे जितने

अधिक लोगों को घसीट सकते हों घसीटें। इसी तरीके से यह स्पष्ट हो पायेगा कि यह पूरा कार्य एकदम मूर्खतापूर्ण है और उन्हें सब लोगों को रिहा करना होगा?"

लेकिन वास्तव में सुरक्षा संगठनों को इसी बात की जरूरत है। कट्टर कम्युनिस्टों की निष्ठा और एन० के० वी० डी० के उद्देश्य स्वभावतः एक दूसरे के अनुरूप हैं। वास्तव में एन० के० वी० डी० को नामों की एक लम्बी सूची चाहिए। उन्हें इसी प्रकार नामों में वृद्धि होते रहने की अपेक्षा है। यही उनके कार्य के उच्च स्तर का प्रमाण हैं और ये नाम ही उन नए जंगलों का काम करते हैं, जिनमें अन्य लोगों को फंसाने के लिये जाल बिछाये जा सकते हैं। "तुम्हारे सह-अपराधी, ऐसे दूसरे लोग जो तुम्हारे विचारों से सहमत हैं!" वे निरन्तर प्रत्येक व्यक्ति से यही कहते रहते हैं, यही मांग करते रहते हैं। उन लोगों का कहना है कि आर० रालोव ने कार्डिनल रिचलू को अपना सह-अपराधी बताया और वस्तुतः रालोव के बयानों में कार्डिनल का इसी रूप में उल्लेख किया गया था। और इस बात से उस समय तक किसी भी व्यक्ति को आश्चर्य नहीं हुआ, जब तक १९५६ में रालोव को अभियोग मुक्त कर पुनः प्रतिष्ठित करने की कारवाई के समय उससे ये सवाल पूछे गये।

जहां तक कट्टर कम्युनिस्टों का सम्बन्ध है, एक ऐसे शुद्धि अभियान, एक ऐसे सफाये के अभियान के लिये स्तालिन की आवश्यकता थी। लेकिन इसी प्रकार एक ऐसी पार्टी की भी जरूरत थी : सत्तारूढ़ लोगों में से अधिकांश ने स्वयं अपनी गिरफ्तारी के क्षण तक, दूसरे लोगों को गिरफ्तार करने में अत्यधिक क्रूरता का प्रदर्शन किया। और अत्यधिक आज्ञाकारिता से अपने वरिष्ठ अधिकारियों को ऐसे ही निर्देशों के अनुसार नष्ट कर डाला और एक दिन पहले के किसी भी मित्र अथवा सहयोगी को प्रतिशोध की कारवाई, सफाये की कारवाई के लिये सौंप दिया। और सब बड़े बोलशेविक, आज जिनका मुख बलिदानियों की आभा से मंडित है, अन्य बोलशेविकों को गोली से उड़वाने का माध्यम बने। (और यहां हम इस बात को ध्यान में नहीं रख रहे हैं कि गैर-कम्युनिस्टों को मौत के मुंह में पहुंचाने के लिए सब बोलशेविक ही सबसे पहले जल्लाद के रूप में सामने आए थे।) संभवतः यह दर्शाने के लिए कि उन की समस्त विचारधारा कितनी महत्वहीन है, सन् १९३७ की जरूरत थी—यह वही विचारधारा थी, जिसके बारे में वे बड़े उत्साह से शेखियां बघारते थे, जिसके नाम पर इन लोगों ने रूस को एकदम उलटा कर डाला, इसकी बुनियादों को नष्ट कर दिया और ऐसी प्रत्येक वस्तु को जिसे पवित्र समझा जाता था, पांवों तले रौंद डाला। और उन्होंने यह व्यवहार उस रूस के साथ किया, जिसने कभी स्वयं उनसे ऐसा प्रतिशोध नहीं लिया था, ऐसे प्रतिशोध की धमकी तक नहीं दी थी। सन् १९१८ से १९४६ तक जो लोग बोलशेविकों का शिकार बने, उन्होंने कभी भी वैसा निंदनीय आचरण नहीं किया, जैसा उन प्रमुख बोलशेविकों ने उस समय किया जब उनके ऊपर गाज गिरा। यदि आप १९३६ से १९३८ तक हुई गिरफ्तारियों और मुकदमों के समस्त इतिहास का विस्तार से अध्ययन करें, तो आपके मन में प्रमुखतः स्तालिन और उसके सहयोगियों के प्रति घृणा भाव उत्पन्न नहीं होता, बल्कि अत्यधिक अपमानजनक और वितृष्णा उत्पन्न करने वाले प्रतिवादियों के प्रति होता है—अपने पूर्व गर्व और दृढ़ता के स्थान पर उन्होंने जिस आध्यात्मिक पतन का प्रदर्शन किया, उसे देखकर मतली आती है।

तो इसका क्या जवाब है? आप उस समय कैसे डटे रह सकते हैं, जब आप कमजोर हो चुके हों और पीड़ा आपके ऊपर हावी हो चुकी हो? जब वे लोग जिन्हें आप प्यार करते

हैं, जीवित हों, जब आप इन परिस्थितियों के मुकाबले के लिए तैयार न हों ? आपको स्वयं को दृढ़ बनाने के लिए, संकल्प शक्ति से पूर्ण बनाने के लिये पूछताछ अधिकारी और उन लोगों द्वारा बिछाये गये जाल के अलावा अन्य किस बात की आवश्यकता हो सकती है ?

जिस क्षण आप जेल में कदम रखें, आपको अपने समस्त सुखद अतीत को दृढ़ता से पीछे छोड़ देना चाहिए, भुला देना चाहिये। जेल की ड्योढ़ी पर ही आपको स्वयं से कहना चाहिये : "मेरा जीवन समाप्त हो चुका है। हां, समय से कुछ पूर्व ही यह समाप्त हो गया है। लेकिन अब इस बारे में कुछ नहीं किया जा सकता। अब मैं कभी आज़ाद होकर वापस न लौट सकूंगा। मुझे अब मौत के मुंह में ही जाना है—तत्काल अथवा कुछ विलम्ब से।" सच्चाई यह है कि कुछ विलम्ब से इस निष्कर्ष पर पहुंचना और अधिक कष्टपूर्ण होगा। अतः जितना जल्दी आप इस निष्कर्ष पर पहुंच जाएं उतना बेहतर। "अब मेरे पास किसी भी प्रकार की सम्पत्ति नहीं है। मेरे लिए, वे लोग, जिन्हें मैं प्यार करता हूं मर चुके हैं और उनके लिये मैं मर चुका हूं। आज के बाद, मेरा शरीर मेरे लिये व्यर्थ है, मेरे लिये अपरिचित बन चुका है। केवल मेरी आत्मा और मेरी मनोभावना ही मेरे लिए मूल्यवान है, महत्वपूर्ण है।"

ऐसे कैदी का सामना होने पर पूछताछ की व्यवस्था कांपने लगेगी।

केवल वही व्यक्ति, जिसने सब कुछ त्याग दिया हो, यह विजय प्राप्त कर सकता है।

लेकिन कोई व्यक्ति अपने शरीर को पत्थर कैसे बना सकता है ?

ठीक है, उन लोगों ने बर्दयाएव से सम्बन्धित लोगों को मुकदमे के लिये कठपुतलियों में बदल दिया। लेकिन वे बर्दयाएव को कठपुतली बनाने में सफल नहीं हुए। वे उसके ऊपर खुले तौर पर मुकदमा चलाना चाहते थे। उन लोगों ने उसे दो बार गिरफ्तार किया और (१९२२ में) स्वयं जेरझिस्की ने रात भर उससे पूछताछ की। वहां कामेनेव भी मौजूद था। (इसका यह अर्थ होता है कि वह भी विचारधारा सम्बन्धी संघर्ष में चेका का इस्तेमाल करने को बुरा नहीं मानता था)। लेकिन बर्दयाएव ने स्वयं को अपमानित नहीं किया उसने क्षमा याचना नहीं की, दया की भीख नहीं मांगी। उसने उन धार्मिक और नैतिक सिद्धान्तों को बड़ी दृढ़ता से प्रस्तुत किया, जिनके बल पर उसने रूस में स्थापित राजनीतिक सत्ता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। और वे लोग केवल इसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे कि बर्दयाएव मुकदमे के लिये निरर्थक होगा, बल्कि उन्होंने उसे रिहा भी कर दिया।

एक मनुष्य के पास एक विचार होता है।

एन० स्तोलयारोवा को एक ऐसी वृद्धा का स्मरण है, जो १९३७ में बुत्यर्की जेल में उसके बराबर के तख्ते पर ही लेटी रहती थी। वे हर रात को वृद्धा से पूछताछ करते थे, दो वर्ष पहले आर्थोडाक्स चर्च के एक भूतपूर्व मैट्रोपॉलिटन ने, जो निष्कासन से भाग निकले थे, मास्को से गुजरते समय एक रात उसके घर पर बिताई थी। "लेकिन वे भूतपूर्व मैट्रोपॉलिटन नहीं, बल्कि मैट्रोपालिटन थे। यह सच है कि मुझे उनका स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।" "तो ठीक है ! मास्को से रवाना होते समय वह किसके पास गया।" "मुझे मालूम है, लेकिन मैं तुम्हें नहीं बताऊंगी।" (मैट्रोपालिटन महोदय अपने कुछ श्रद्धालु अनुयाइयों की सहायता से फिनलैंड भाग निकले थे।) आरम्भ में पूछताछ अधिकारी बारी-बारी से पूछताछ करते रहे और इसके बाद उन लोगों ने टोली बना कर पूछताछ शुरू की। ये लोग इस छोटे से कद की वृद्धा को घूंसे दिखाते और वह यही उत्तर देती : "तुम मेरा

कुछ नहीं बिगाड़ सकते, तुम चाहो तो मेरे टुकड़े-टुकड़े कर सकते हो। आखिरकार तुम लोग अपने बड़े अफसरों से भयभीत हो, तुम लोग एक दूसरे से डरते हो और तुम मुझे मार डालने तक से भयभीत हो। (मार डालने पर उनके लिये रेल विभाग में गुप्त रूप से काम करने वाले ऐसे लोगों का पता लगा पाना सम्भव न होता, जिन्होंने कार्डिनल को भाग निकलने में मदद दी थी।) लेकिन मुझे किसी बात का भय नहीं है। मुझे इस बात से अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि इसी क्षण ईश्वर मेरे कार्यों पर निर्णय दे।"

सन् १९३७ में भी ऐसे लोग थे। ऐसे लोग मौजूद थे, जो अपनी चीज़ों की गठरी बटोरने के लिये अपनी जेल की कोठरी में वापस नहीं लौटे। जिन्होंने मृत्यु का आलिंगन करना अधिक पसन्द किया। जिन्होंने किसी भी अन्य व्यक्ति पर अभियोग लगाने वाले बयान पर हस्ताक्षर नहीं किये।

कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि रूसी क्रान्तिकारियों के इतिहास ने हमारे समक्ष इससे बेहतर उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। लेकिन इनकी तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि हमारे एक भी क्रान्तिकारी को यह कभी भी पता नहीं चला कि वास्तव में एक अच्छी पूछ-ताछ क्या होती है, जिसके अन्तर्गत ५२ विभिन्न तरीकों में से एक या इससे अधिक तरीकों का चुनाव किया जा सकता है।

शेषकोवस्की ने रादिशेव को यातनाएं नहीं दीं और तत्कालीन रिवाज के अनुसार, रादिशेव को यह बात अच्छी तरह से मालूम थी कि उसका चाहे कुछ भी क्यों न हो, उसके पुत्र शाही अंगरक्षक सेना में अफसरों के रूप में काम करेंगे, और उनका जीवन समय से पूर्व ही समाप्त नहीं कर दिया जाएगा। न ही कोई व्यक्ति रादिशेव की पारिवारिक जायदाद और सम्पत्ति को ज़ब्त करेगा। इसके बावजूद, दो सप्ताह की संक्षिप्त पूछताछ के दौरान इस अत्यधिक विख्यात व्यक्ति ने अपनी आस्थाओं को त्याग दिया और अपनी पुस्तक को भी और दया की भीख मांगने लगा।

निकोलस प्रथम में इतनी कल्पनाशीलता नहीं थी कि वह दिसम्बर विद्रोह के नेताओं और उनके साथियों की पत्नियों को गिरफ्तार करता, बराबर के कमरे में उन्हें चीखने-चिल्लाने के लिये बाध्य करता अथवा स्वयं दिसम्बर के विद्रोह के नेताओं को यातनाएं देता। लेकिन उसे इस बात की जरूरत भी नहीं थी। स्वयं राइलेएव तक ने "सब सवालों का पूरा और स्पष्ट उत्तर दिया तथा किसी भी बात को नहीं छिपाया।" यहां तक कि पेस्तेल तक टूट गया और उसने अपने साथियों के नाम बता दिये (जो अब तक स्वतंत्र थे), जिन्हें रुस्काया प्रावदा को जमीन में दबा देने का काम सौंपा गया था और वह जगह भी बता दी जहां इसे दबाया गया था।[२७] लोग बहुत कम थे, जिन्होंने लुनिन की तरह जांच आयोग के प्रति उदासीनता और घृणाभाव प्रदर्शित किया। अधिकांश नेताओं ने बड़ा बुरा व्यवहार किया और एक दूसरे को अधिक गहराई से फंसाते गये। इनमें से बहुतों ने बेहद नीचे गिर कर क्षमायाचना की! जवालिशिन ने सारा दोष राइलेएव के मत्थे मढ़ा। वाइ० पी० ओबोलेंस्की और एस० पी० त्रुबेतरस्कोई, ग्रीबोएदोव के ऊपर अभियोग लगाने की प्रतीक्षा न कर सके—ये ऐसे अभियोग थे जिन पर निकोलस प्रथम तक ने विश्वास नहीं किया था।

बाकुनिन ने अपनी स्वीकारोक्तियों में निकोलस प्रथम के समक्ष अत्यधिक गिरावट से प्रलाप किया और इस प्रकार मृत्युदण्ड से बच गया। क्या यह आत्मा की हीनता थी? अथवा यह क्रान्तिकारी चालाकी थी?

कोई भी व्यक्ति यह सोचेगा कि जिन लोगों ने अलैक्जेंडर द्वितीय की हत्या करने का निश्चय किया, वे लोग निश्चय ही उच्चकोटि के निःस्वार्थ भाव और निष्ठा वाले लोग होंगे। आखिरकार वे जानते थे कि वे क्या जोखिम उठाने जा रहे हैं! ग्रिनएवितस्की भी ज़ार की तरह ही मौत के मुंह में चला गया। लेकिन राइसाकोव जीवित रहा और उसे पूछ-ताछ के लिये गिरफ्तार कर लिया गया। और उसी दिन वह षड्यंत्र में शामिल लोगों के नाम गा उठा और अपने साथियों के गुप्त स्थानों का पता बता दिया। अपने युवा जीवन की रक्षा की व्यग्रता में उसने सरकार को वह सब जानकारी भी दी, जिस जानकारी की सरकार आशा भी नहीं कर सकती थी। वह पश्चाताप से प्रायः मरा जा रहा था; उसने "अराजकतावादियों के समस्त रहस्यों का भण्डाफोड़ करने" का प्रस्ताव किया।

पिछली शताब्दी के अन्त में और इस शताब्दी के आरम्भ में ज़ारशाही के जमाने के पूछताछ अफसर ऐसे प्रश्न को तुरन्त वापस ले लेते थे, यदि कैदी इस प्रश्न को अनुचित या उसके व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित कहे। लेकिन सन् १९३८ में क्रेस्ती जेल में, पुराने ज़माने में राजनीतिक कारणों से कठोर कारावास भोगने वाला जेलेंस्की उस समय अपनी जेल की कोठरी में फूट-फूट कर रोने लगा, जब एक छोटे लड़के की तरह उसकी पतलून उतार कर उसके नितम्बों पर डण्डे बरसाये गये।" ज़ारशाही के जमाने में पूछताछ करने वाला अफसर, मुझे अभद्रता से संबोधित तक करने का साहस नहीं कर सकता था।"

अथवा, उदाहरण के लिए, हमें हाल में प्रकाशित जानकारी[२८] से यह पता चलता है कि ज़ार की पुलिस ने लेनिन की "हमारे मंत्री क्या सोच रहे हैं?" शीर्षक पांडुलिपि तो पकड़ ली, लेकिन इसके लेखक को पकड़ पाने में असफल रहे:

"पूछताछ के दौरान ज़ार की पुलिस को, जैसी की आशा की जा सकती थी, विद्यार्थी वानेएव से बहुत कम जानकारी मिली। उसने पुलिस को केवल यही बताया कि उसके घर पर जो पांडुलिपियां मिली थीं, उन्हें कई दिन पहले एक आदमी एक लिफाफे में बन्द कर के लाया था और वह उस आदमी का नाम बताने को तैयार नहीं है। अतः अब पूछताछ अधिकारी के सामने यही एकमात्र विकल्प रह गया था कि विशेषज्ञों द्वारा विश्लेषण के लिए इन पांडुलिपियों को भेज दे।" विशेषज्ञ किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाए। उन्हें कुछ भी पता नहीं चल सका (लेखक का "एकमात्र विकल्प" से क्या अभिप्राय था? टखनों तक बर्फ जैसे ठण्डे पानी से क्या अभिप्राय था? अथवा अत्यधिक खारी पानी को मुंह में डालने से क्या मतलब था? अथवा र्यूमनका चाबुक क्या था?) इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इस लेख का लेखक—पेरेसबेतोव स्वयं कई वर्ष की कैद की सजा काट चुका था और वह बड़ी आसानी से उन "विकल्पों" की फहरिस्त गिना सकता था जो पूछताछ अधिकारी को सुलभ थे। और इन विकल्पों का इस्तेमाल लेनिन के "हमारे मन्त्री क्या सोच रहे हैं?" शीर्षक लेख के रखवाले के विरुद्ध किया जा सकता था।

जैसा कि एस० पी० मेलगुनोव याद करते हैं: "ज़ारशाही की जेल क्या थी? यह एक अत्यन्त सुखद स्मृति से भरी जेल थी, यह एक ऐसी जेल थी जिसे आज के राजनीतिक कैदी प्रसन्नता के भाव से ही याद करेंगे।"[२९]

लेकिन यह गलत संकल्पनाओं का मामला है। पैमाना बिलकुल भिन्न है। जिस प्रकार गोगोल के युग के गाड़ीवान एक जेट विमान की तेज़ गति की कल्पना नहीं कर सकते थे, उसी प्रकार वे लोग पूछताछ के उन तरीकों की सच्ची संभावनाओं की कल्पना नहीं कर

सकते, जो स्वयं गुलाग द्वीपसमूह के कैदियों को कुचल डालने वाले भयंकर तरीकों के दौर से नहीं गुजरे हैं।

हमने २४ मई १६५६ के इजवेस्तिया में पढ़ा कि यूलिया रूमीयांतसेवा को उस समय एक नाज़ी शिविर की आंतरिक जेल में बन्द कर दिया गया था, जब नाज़ियों ने उनके पति के बारे में पता लगाना चाहा, जो किसी शिविर से भाग निकला था। वे अपने पति के बारे में जानती थीं, लेकिन उन्होंने बताने से इनकार कर दिया। एक ऐसे पाठक के लिये जो सच्ची परिस्थितियां नहीं जानता यह वीरता का आदर्श उदाहरण है। लेकिन एक ऐसे पाठक के लिए जिसने अतीत में गुलाग का कटु अनुभव प्राप्त किया है यह कार्य कुशलतारहित पूछताछ के तरीके का आदर्श उदाहरण है : यूलिया की यातनाएं सहते-सहते मृत्यु नहीं हुई और उसे यातनाओं के द्वारा पागल भी नहीं बना दिया गया। बस, एक महीने बाद ही रिहा कर दिया गया—वे आज भी जीवित हैं और स्वस्थ भी।



चट्टान की तरह दृढ़ता से खड़े रहने के इन सब विचारों से मैं फरवरी १६४५ में प्रायः अपरिचित था। मैं केवल इस पृथ्वी से अपने सुखद सम्बन्धों को एकदम काट फेंकने के लिए गैर-तैयार ही नहीं था, बल्कि बहुत समय तक मैं इस कारण से क्रोधित भी था, क्योंकि मेरी गिरफ्तारी के समय मुझसे कोई सौ फेबर पेंसिलें छीन ली गई थीं। बाद में अपनी लम्बी गिरफ्तारी के बाद अपनी पूछताछ पर नज़र डालने पर मुझे गर्व करने का कोई कारण दिखाई नहीं पड़ता। मैं और अधिक दृढ़ता से डटा रह सकता था; और इस बात की भी संभावना थी कि मैं अधिक कुशलतापूर्वक व्यवहार कर सकता था। लेकिन गिरफ्तारी के बाद के पहले सप्ताह, मानसिक शून्यता और अत्यधिक निराशा से भरे सप्ताह थे। आज मैं इन स्मृतियों के कारण अत्यधिक मानसिक कष्ट का अनुभव नहीं करता, तो इसका कारण यह है कि, मैं किसी और को गिरफ्तार कराने का माध्यम नहीं बना और इसके लिए मैं ईश्वर को धन्यवाद करता हूं। लेकिन मैं इसके अत्यन्त समीप पहुंच गया था।

यद्यपि हम लोग मोर्चों पर लड़ने वाले अफसर थे, लेकिन निकोलाई वी० और मैं इस मामले में बच्चों जैसी मूर्खता के कारण फंस कर जेल में पहुंच गए। वह और मैं युद्ध के दौरान एक दूसरे को पत्र भेजते रहे थे। मोर्चे के दो क्षेत्रों से हम पत्र भेजते थे और यद्यपि यह अच्छी तरह से जानते थे कि डाक का युद्धकालीन सेंसर होता है, लेकिन इसके बावजूद हम पर्याप्त स्पष्ट शब्दावली में अपना राजनीतिक क्रोध प्रकट करते रहे और बुद्धिमानों में सबसे अधिक बुद्धिमान के बारे में अपमानजनक बातें कहते रहे और उसे हमने अत्यधिक स्पष्ट रूप से पाखन अर्थात् चोरों का मुखिया कहा (जब आगे चलकर विभिन्न जेलों में मैंने अपने मामले के बारे में बताया, तो हमारे इस बचकानेपन पर सब कैदी हंसे और उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। दूसरे कैदियों ने मुझसे कहा कि हम दोनों जैसे और गधे इस संसार में नहीं हो सकते। और मैं स्वयं भी इस बात से आश्वस्त हो गया था तभी अचानक एक दिन लेनिन के बड़े भाई अलेक्सान्द्र उल्यानोव के मुकदमे सम्बन्धी कुछ दस्तावेजों को पढ़ते समय मुझे पता चला कि वे और उनके सहयोगी एकदम ठीक इसी तरीके

से पकड़े गए थे—असावधानी से पत्रों के विनिमय के माध्यम से। और यही एक मात्र कारण था कि अलैक्जेंडर तृतीय १ मार्च १८८७ को नहीं मरा।)[30]

मेरे पूछताछ अफसर आई० आई० एज़ेपोव के दफ्तर का कमरा बहुत ऊंची छत वाला था। वह काफी बड़ा और रोशनीदार था। इसमें एक बहुत बड़ी खिड़की भी थी। (रूसिया बीमा कम्पनी ने इस इमारत का निर्माण यातना देने की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नहीं किया था)। कमरे की १७ फुट ऊंचाई का भरपूर उपयोग करने के लिए सर्वशक्तिमान शासक का विशाल १३ फुट ऊंचा चित्र दीवार पर लगा हुआ था और इसकी तरफ मुंह करके मैं (धूल का एक ज़र्रा—इससे अधिक मैं कुछ नहीं था) खड़ा रहता था और अपनी घृणा प्रकट करता रहता था। कभी-कभी पूछताछ अफसर इस चित्र के सामने खड़ा हो जाता और बड़े नाटकीय ढंग से यह घोषणा करता : "हम उनके लिए अपने प्राण तक न्यौछावर करने को तैयार हैं! हम उनके लिए आगे बढ़ते हुए टैंकों के सामने लेट जाने को तैयार हैं!" इस चित्र की किसी मन्दिर की वेदी जैसी भव्यता के समक्ष खड़े होकर, मेरा शुद्ध लेनिनवाद के किसी स्वरूप के बारे में कुछ बुदबुदाना दयनीय लगता था, और मैं स्वयं एक ऐसा मिथ्या प्रवाद फैलाने वाला व्यक्ति लगने लगता था, जिसे मत्युदण्ड देना सर्वथा उचित है।

हमारे पत्रों की विषय वस्तु, उस समय के मानकों को ध्यान में रखते हुए, हम दोनों को मृत्युदण्ड दिलाने के लिए आवश्यकता से अधिक पर्याप्त थी। अत: मेरे पूछताछ अधिकारी को किसी भी बात की ईजाद करने की आवश्यकता नहीं थी। बस, उसने उन सब लोगों को इस जाल में फंसाने का प्रयास किया, जिन्हें कभी भी मैंने कोई पत्र लिखा था अथवा जिन लोगों से मुझे कोई पत्र प्राप्त हुआ था। स्वयं अपनी उम्र के मित्रों को भेजे गए पत्रों में मैंने बड़ी उग्रता से अपने विचारों को प्रकट किया था और विद्रोहपूर्ण विचारों को अभिव्यक्त करने में अत्यधिक लापरवाही बरती थी, लेकिन न जाने क्यों मेरे मित्र मेरे साथ पत्रव्यवहार करते रहे थे और मेरे पत्रों के उत्तर में वे जो पत्र भेजते उनमें भी कुछ संदेहपूर्ण वाक्य मौजूद रहते थे।[31] और तब ऐज़ेपोव ने, पोरफिरी पेत्रोविच की तरह कहा कि मैं इन सब बातों का स्पष्ट और क्रमबद्ध तरीके से स्पष्टीकरण दूं : यदि हमने उन पत्रों में जिनका सेंसर होने का ज्ञान हमें था, अपने विचारों को इस तरीके से अभिव्यक्त किया है, तो हम मुलाकात के समय एक दूसरे को क्या-क्या न कहते होंगे? मैं उसे इस बात से आश्वस्त न कर सका कि मेरा यह समस्त क्रोध प्रदर्शन और उग्रता केवल पत्रों तक ही सीमित थी। और उस समय, अत्यधिक उलझन में पड़े हुए, मुझे अपने मित्रों से मुलाकात के बारे में कुछ विश्वसनीय तानाबाना बुनने का प्रयास करना पड़ा—ये वे मुलाकातें थीं, जिनका मेरे पत्रों में उल्लेख हुआ था। मैं जो कुछ कहता था, उसका मेरे पत्रों में मेल खाना ज़रूरी था और यह भी आवश्यक था कि मैं इस ढंग से बातें कहूं जो राजनीतिक मामलों की परिधि को छूती हों पर इसके बावजूद दण्ड संहिता की व्यवस्थाओं के अन्तर्गत न आती हों। इतना ही नहीं ये स्पष्टीकरण बहुत तेज़ी से दिये जाने थे, प्राय : एक सांस में मुझे सब कुछ कह डालना था, ताकि मैं इस अनुभवी पूचताछ अधिकारी को अपने बचकानेपन, विनम्रता और पूर्ण ईमानदारी से आश्वस्त कर सकूं। खास बात यह थी कि मैं अपने इस आलसी पूछताछ अधिकारी को उस सीमा तक उत्तेजित न कर दूं कि वह अभिशप्त सामग्री को देखने लगे, जिसे मैं अपने अभिशप्त सूटकेस में भर कर अपने साथ लाया था—इसमें मेरी

"युद्ध डायरी" की कापियां थीं, जिन्हें मैंने सख्त, हल्के रंग की पेंसिल में सुई की नोक से पतले हस्तलेख में लिखा था, और जिसके कुछ अंश पहले ही मिट चुके थे। ये डायरियां ऐसी थीं, जिनके आधार पर मैं लेखक होने का दावा करता था। मुझे मनुष्य की आश्चर्यजनक स्मृति की क्षमताओं पर विश्वास नहीं था और युद्ध के पूरे वर्षों में मैंने वह प्रत्येक बात लिखने का प्रास किया था, जो मैंने देखी थी। इन बातों को लिखना अर्धविनाश ही होता : मैंने उन सब बातों को भी लिख डाला था, जो मैंने दूसरे लोगों से सुनी थीं। लेकिन वे विचार और किस्से जो अग्रिम मोर्चों पर बड़े स्वाभाविक दिखाई पड़ते थे, इन पीछे के इलाकों में द्रोहपूर्ण दिखाई पड़ने लगे और इनसे यह स्पष्ट होने लगा कि मेरे मोर्चों के अनेक साथी उनके आधार पर जेल पहुंच सकते हैं। अतः उस पूछताछ अधिकारी को अपनी "युद्ध डायरी" की छानबीन करने से रोकने के लिए और मोर्चों पर जूझने वाले स्वतन्त्र लोगों की एक समस्त जाति को ही खोज निकालने से रोकने के लिए, मैंने उतना पश्चाताप प्रकट किया जितना आवश्यक था और अपनी राजनीतिक गलतिओं को ठुकराने और सत्य को पहचानने का नाटक किया। तलवार की धार पर इस प्रकार संतुलन बनाए रखने के प्रयास से मैं पूरी तरह पस्त हो गया, और केवल मुझे उस समय कुछ राहत मिली कि किसी अन्य को सामना कराये जाने के लिए नहीं लाया जा रहा है और इस बात के स्पष्ट संकेत दिखाई पड़ने लगे कि पूछताछ का काम समाप्ति की ओर है!...बस, चौथे महीने में उन सब कापियों को जिन पर मेरी "युद्ध डायरी" लिखी थी, लूबयांका की भट्टी की नारकीय ज्वाला में झोंक दिया गया, जहां वे आग की लपट के रूप में भभक उठीं—रूस में नष्ट होने वाले उपन्यासों की कड़ी में एक और उपन्यास की यह प्रज्वलित चिता थी—और सबसे ऊंची चिमनी से काजल की काली तितलियों के रूप में उड़कर बाहर निकल गई।

हम लोग उस चिमनी की छाया तले घूमा करते थे। हमें कसरत के लिए जिस चौक में निकाला जाता था, वह विशाल लूबयांका की छठी मंजिल की छत पर कंकरीट की दीवारों के बीच घिरा हुआ था और एक संदूक जैसा दिखाई पड़ता था। हमारे चारों ओर मनुष्य की तिगुनी ऊंचाई तक दीवारें उठी हुई थीं। हम स्वयं अपने कानों से मास्को की आवाजें सुन सकते थे—सड़क पर गुज़रने वाली मोटर-गाड़ियों के हार्नों की आवाज़ हमें सुनाई पड़ती थी। लेकिन हम देख केवल इस चिमनी को ही सकते थे, और सातवीं मन्जिल के टावर पर तैनात सन्तरी को भी। हां ईश्वर द्वारा निर्मित आकाश के उस अंश को भी हम देख पाते थे, जिसका दुर्भाग्य लूबयांका के ऊपर तैरते रहना था।

जरा उस काजल की कल्पना कीजिए! युद्ध के बाद के पहले मई के महीने में यह निरंतर आकाश से बरसती रही। उस चौक में थोड़ी सी देर टहलने के दौरान ही हमारे ऊपर इतनी अधिक काजल गिरती थी कि हम इस निष्कर्ष पर पहुंच गए थे कि लूबयांका में निश्चय ही अनन्त वर्षों से इक्ट्ठा की गई फाइलों को जलाया जा रहा है। मेरी विनष्ट डायरी तो इस काजल का एक क्षणिक उद्रेक भर थी। मुझे मार्च की उस ठंडी, पर धूप भरी सुबह का स्मरण है, जब मैं पूछताछ अफसर के दफ्तर में बैठा हुआ था। वह सदा की तरह अपने भद्दे सवाल पूछ रहा था और मेरे उत्तर लिख रहा था औरलिखते समय मेरे शब्दों को विकृत बनाता जाता था। खिड़की के शीशे पर जमे पाले को सूर्य की किरणें वेध रही थीं और यह वही खिड़की थी, जिससे कूद जाने की इच्छा अनेक बार मेरे मन में

आई थी, ताकि मैं कम से कम अपनी मृत्यु के क्षण में मास्को के आकाश को चीरता हुआ कौंध उठूं और पांच मन्ज़िल नीचे पटरी पर जा गिरूं। ठीक उसी तरह, जिस तरह मेरे बचपन में, मेरा एक अज्ञात पूववर्ती रोस्तोव-आन-दी-दोन के मकान नम्बर-३३ से कूद पड़ा था। खिड़की के शीशे पर जिन स्थानों से पाले की परत पिघलकर बह गई थी, वहां से मास्को के मकानों की छतें दिखाई पड़ रही थीं। एक के बाद एक छत, और इन छतों के ऊपर चिमनियों से धूएं के छोटे-छोटे गुब्बार निकल रहे थे। लेकिन मैं उस दिशा में नज़र गड़ाये नहीं था, बल्कि मेरी नज़र पाण्डुलिपियों के एक बड़े ढेर पर केन्द्रित थी—ये किसी अन्य व्यक्ति की पाण्डुलिपियां थीं—और उन्होंने पूछताछ अधिकारी के अर्ध-रिक्त कक्ष के फर्श का बीच का पूरा हिस्सा, ३६ वर्ग गज़ हिस्सा घेर रखा था। ये वे पाण्डुलिपियां थीं, जिन्हें कुछ देर पहले ही वहां लाकर पटक दिया गया था और जिनकी अभी तक कोई जांच नहीं हो पाई थी। ये पाण्डुलिपियां, कापियों, फाइलों, घर की बनी कोरे कागज़ की किताबों, बंधे-अनबंधे पुलिन्दों और कागज़ के अलग-अलग फैले हुए तावों पर लिखी गई थीं। ये पाण्डुलिपियां किसी दफनाई गई मानव भावना की कब्र के ऊपर बनाए गए मिट्टी के छोटे से ढेर के रूप में दिखाई पड़ रही थीं। इस ढेर का ऊपरी सिरा पूछताछ अफसर की मेज से ऊपर उठ चुका था और इसने मुझे पूछताछ अफसर की नज़र से प्रायः पूरी तरह छिपा लिया था। और मेरे मन में उस अज्ञात व्यक्ति के प्रति एक भाई जैसी करुणा की पीड़ा उत्पन्न हुई, जिसे गत रात गिरफ्तार कर लिया गया था, और उसके घर की तलाशी से इन पाण्डु-लिपियों को उठा लाया गया था, और १३ फुट ऊंचे स्तालिन के चित्र के पांवों पर, यातना कक्ष के फर्श पर अलस सुबह लाकर पटक दिया गया था। मैं वहां बैठा-बैठा यही सोच रहा था : ये लोग किसके असाधारण जीवन को यातनाएं देने, टुकड़े-टुकड़े कर डालने और अन्ततः जला डालने के लिए यहां घसीट लाए हैं ?

उस इमारत में न जाने कितने विचार और रचनाएं लुप्त हो चुकी हैं—एक पूरी संस्कृति को ही नष्ट कर डाला गया है ? ओह, काजल, काजल—लूबयांका की चिमनियों से निकलने वाली काजल और सबसे अधिज कष्टप्रद बात तो यह है कि हमारे वंशज हमारी पीढ़ी को उससे कहीं अधिक मूर्ख, कम प्रतिभावान और कम मुखर समझेंगी, जितनी वह वास्तव में थी।



एक सीधी रेखा खीचने के लिए हमें दो बिन्दुओं की आवश्यकता होती है।

सन् १९२० में, एहरिनबर्ग के अनुसार, चेका ने उनसे यह प्रश्न पूछा :

"तुम यह बात प्रमाणित करो और हमें आश्वस्त करो कि तुम रैंगेल के जासूस नहीं हो।"

और सन् १९५० में, एम० जी० बी० के एक प्रमुख कर्नल, फोमा फोमिच झेलेजनोव ने अपने कैदियों से कहा : "हम कैदी के अपराध को उसके समक्ष सिद्ध करने के लिए अपना खून पसीना एक करने को तैयार नहीं हैं। स्वयं उसे यह प्रमाणित करना होगा कि उसका कोई शत्रुतापूर्ण इरादा नहीं था।"

और इस आदमखोरों जैसी अपरिष्कृत सीधी रेखा के समानान्तर असंख्य लोगों के संस्मरण मौजूद हैं।

मनुष्य जाति अपराधों की छानबीन और पूछताछ के जिस तरीके से परिचित थी, उसे किस प्रकार और किस सीमा तक तीव्र ओर सरल बना दिया गया ! सुरक्षा संगठनों ने स्वयं को प्रमाण जुटाने के भार से, उत्तरदायित्व से पूरी तरह मुक्त कर दिया ! कांपता हुआ भय से विवर्ण और जाल में फंसा हुआ खरगोश, जिसे कभी भी व्यक्ति को पत्र लिखने, फोन करने स्वतन्त्रता से अपने साथ कुछ भी लाने से ही वंचित नहीं कर दिया गया था, बल्कि जिसे नींद, भोजन, कागज़, पेंसिल और यहां तक कि बटनों तक से वंचित कर दिया गया था, एक दफ्तर के कमरे में एक नंगे स्टूल पर बैठा दिया गया था। उसे यह प्रयास करना था, स्वयं ऐसे तथ्य जुटाने थे तथा उस लोफर पूछताछ अधिकारी को इस बात का प्रमाण देना था कि उसका कोई शत्रुतापूर्ण इरादा नहीं था। यदि वह ऐसा कोई प्रमाण न ढूंढ पाये (और कहां ऐसा प्रमाण प्राप्त कर सकता था ?) तो केवल इस असफलता के आधार पर ही वह पूछताछ अधिकारी को अपने अपराधी होने का प्रमाण उपलब्ध करा देता था !

मुझे एक वृद्ध महोदय के मामले की जानकारी है, जो जर्मनी में कैद कर लिए गए थे। लेकिन उसके बावजूद उन्होंने, नंगे स्टूल पर बैठे हुए और ठंड से ठिठुरती हुई अपनी अंगुलियों के संकेत से उस राक्षस को आश्वस्त कर दिया था जो पूछताछ का काम कर रहा था कि उन्होंने मातृभूमि से विश्वासघात नहीं किया और यहां तक कि उनका यह कार्य करने का कोई इरादा भी नहीं था ! और फिर क्या हुआ ? क्या उन लोगों ने उन्हें आज़ाद कर दिया ? नहीं, बिलकुल नहीं—आखिरकार उन वृद्ध महोदय ने मुझे यह बात बुत्यर्की जेल में बताई थी; मास्को के मध्य पेरस्कोई मार्ग पर नहीं। इसी अवसर पर दूसरा पूछताछ अधिकारी भी आ पहुंचा और ये लोग उस वृद्ध व्यक्ति के साथ पुरानी बातों की चर्चा करते रहे और इस प्रकार पूरी शाम बीत गई। इसके बाद इन दोनों पूछताछ अधिकारियों ने गवाहों के रूप में इस आशय के हलफनामे पेश किए कि उस रोज शाम की बातचीत के दौरान, भूख से पीड़ित और नींद से वंचित उस वृद्ध ने सोवियत विरोधी मिथ्या में अपना समय बिताया ! इन बातों को बड़ी सरलता से, बड़े अबोध तरीके से कहा गया था—लेकिन इन्हें अबोध तरीके से सुना नहीं गया था। इसके बाद इस वृद्ध को एक तीसरे पूछताछ अधिकारी के हवाले कर दिया गया, जिसने मातृभूमि से विश्वासघात के अभियोग को तो रद्द कर दिया, लेकिन पूछताछ के दौरान सोवियत विरोधी आंदोलन के अभियोग पर वही दस्सा थमा दिया।

इस तथ्य के कारण कि पूछताछ में सच्चाई की तह में पहुंचने का कोई प्रयास नहीं किया जाता था, कठिन मामलों में पूछताछ का काम इन अफसरों के लिए जल्लादों के रूप में अपने कर्त्तव्य का निर्वाह और आसान मामलों में वेतन प्राप्त करने का आधार बन गया था।

और सदा आसान मामले मौजूद रहते थे, सन् १९३७ के उस कुख्यात वर्ष में भी। उदाहरण के लिये, बोरोदकोव के ऊपर यह अभियोग लगाया गया था कि १६ वर्ष पहले वह विदेश यात्रा के पासपोर्ट के बिना अपने माता-पिता से मिलने गया था। (उसके पिता और मां छह मील दूर रहते थे, लेकिन राजनयज्ञों ने अपने हस्ताक्षर के द्वारा बाइलोरूस के उस हिस्से को पोलैंड को दे दिया था और सन् १९२१ में लोग इस बात के अभ्यस्त नहीं हुए थे और अपनी इच्छा के अनुसार बिना पासपोर्ट के आते जाते रहते थे।) पूछताछ में केवल आधा

घण्टा लगा : प्रश्न : 'क्या तुम वहां गये थे ?' उत्तर : "मैं गया था। प्रश्न : 'कैसे ?' उत्तर : 'स्पष्ट है—घोड़े पर सवार होकर'। निष्कर्ष : के० आर० डी०[32] अर्थात् क्रांति विरोधी गतिविधियों के लिये १० वर्ष की सज़ा।

लेकिन इस प्रकार की गति में स्ताखानोववादी गतिशीलता की गन्ध आती है और यह ऐसी गतिशीलता थी, जिसका अनुसरण नीली टोपी वालों अर्थात् सुरक्षा संगठनों के अधिकारियों ने कभी नहीं किया। दण्ड प्रक्रिया संहिता के अनुसार प्रत्येक पूछताछ में दो महीने का समय लगना चाहिये था और अगर इसमें कोई कठिनाई होती तो प्रत्येक अफसर को यह अनुमति थी कि वह सरकारी वकील से एक-एक महीना करके कई बार इस अवधि को बढ़वा ले। (और वास्तव में सरकारी वकील अवधि बढ़ाने से कभी भी इनकार नहीं करता था।) इस प्रकार किसी भी व्यक्ति के लिए अपने स्वास्थ्य को जोखिम में डालना मूर्खतापूर्ण होता। इन स्थानों का लाभ न उठाना और यदि कारखानों में प्रयुक्त शब्दावली का प्रयोग करें तो अपने कार्य के मानदण्ड को ऊंचा न उठाना मूर्खतापूर्ण होता। प्रत्येक पूछताछ के आरम्भिक प्रहार के सप्ताह में तीखी आवाज़ और घूंसों के प्रदर्शन से धमकियां दे देकर काम करने के बाद और इस प्रकार अपनी संकल्प शक्ति और चरित्र का व्यय करने के बाद (जैसाकि वाईशिस्की कहता था) पूछताछ अधिकारियों के हित में यह बात होती थी कि वे प्रत्येक मामले के शेष हिस्से को यथासम्भव लम्बा खींचते जाएं। इस प्रकार अधिक पुराने, नियन्त्रण में आये हुए मामले मौजूद रहते थे और नये मामलों की संख्या बहुत कम रहती थी। किसी राजनीतिक मामले में पूछताछ का काम दो महीने में पूरा कर लेने को अभद्रता समझा जाता था।

स्वयं राज्य प्रणाली में विश्वास की कमी और कठोरता मौजूद थी। इन पूछताछ अधिकारियों को तरजीह देकर चुना जाता था, लेकिन विश्वास इनके ऊपर भी नहीं किया जाता था। इस बात की पूरी सम्भावना दिखाई पड़ती है कि जब ये पूछताछ अफसर अपने दफ्तर आते थे तो इनकी तलाशी होती थी और जब ये बाहर जाते थे तब भी इनकी तलाशी ली जाती थी और यह तो जाहिर ही है कि कैदियों की पूछताछ के लिए भेजे जाते समय और वापस लौटते समय तलाशी ली जाती थी। लेखा-जोखा रखने वाले लोगों के विवरणों को साफ रखने के लिये पूछताछ अधिकारी अन्य क्या कर सकते थे ? वे लोग किसी प्रतिवादी को, किसी कैदी को बुलाते, उसे एक कोने में बिठा देते, उससे कोई भयावह प्रश्न पूछते और इसके बाद उसके बारे में एकदम भूल जाते तथा स्वयं लम्बे अरसे तक अखबार पढ़ते रहते, राजनीतिक विचार परिवर्तन के लिये किसी पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करते अथवा स्वयं अपने व्यक्तिगत पत्र लिखते, अथवा एक दूसरे से मुलाकात के लिये चल पड़ते और सन्तरियों को अपने स्थान पर पहरा देने वाले कुत्तों के रूप में छोड़ जाते। वे लोग सोफे पर बैठ कर शांतिपूर्वक ठंडी हवा का सेवन करते और उस सहयोगी से गप्पें लड़ाते जो वहां मुलाकात के लिये आ पहुंचा हो और तभी अचानक मानो पूछताछ अधिकारी नींद से जाग उठते और अभियुक्त की ओर क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखते हुये धमकी भरे स्वर में कहते :

"यहां एक चूहा मौजूद है ! तुम्हारे लिये सचमुच यहां एक सच्चा चूहा मौजूद है ! ठीक है, ठीक है, हम लोग इसे नौ ग्राम सीसा (रायफल की गोली के लिए प्रयुक्त शब्द) देने में कंजूसी नहीं बरतेंगे !"

मेरा पूछताछ अफसर अक्सर टेलीफोन का भी इस्तेमाल करता था। उदाहरण के

लिये, वह अपने घर टेलीफोन करता और अपनी पत्नी से कहता—और उसकी चमक भरी आंखें मेरी ओर लगी होतीं—कि वह पूरी रातभर काम में लगा रहेगा और सुबह से पहले घर वापस नहीं लौटेगा। (स्पष्ट है कि मेरा दिल डूब जाता। इस बात का यह अर्थ होता कि वह पूरी रात भर मुझे सतायेगा!) लेकिन तभी, इसके तुरन्त बाद वह अपनी प्रेमिका को टेलीफोन मिलाता और अत्यधिक मीठे स्वर में उसके साथ रात बिताने की व्यवस्था करता। (तो मैं इस रात कुछ नींद निकाल सकूंगा! मैं बड़ी राहत का अनुभव करता।)

इस प्रकार इस प्रणाली की पूर्ण दोषमुक्तता को, उन लोगों की कमजोरियां कम कठोर बना देती थीं, जो इस प्रणाली का संचालन करते थे।

कुछ अधिक जिज्ञासा भरे पूछताछ अफसर जीवन सम्बन्धी अपने ज्ञान को और अधिक व्यापक बनाने के लिए "निरर्थक" पूछताछ करने के तरीके में बड़ा आनन्द लेते थे। वे लोग कैदी से मोर्चे की स्थिति के बारे में सवाल पूछ सकते थे। (वे लोग उन जर्मन टैंकों के बारे में पूछते, जिनके नीचे लेट जाने का उन्होंने कभी समय नहीं निकाला था।) अथवा वे यूरोप के देशों और समुद्र पार के उन देशों के रीति रिवाजों के बारे में पूछते, जहां वह कैदी हो आया था: उन देशों में बिकने वाले सामान आदि के बारे में पूछते और विशेषकर विदेशों के वेश्यालयों के बारे में। वे विदेशों में स्त्रियों के साथ कैदियों के प्रणय प्रसंगों के बारे में बहुत दिलचस्पी दिखाते थे।

दण्ड प्रक्रिया संहिता में यह व्यवस्था थी कि सरकारी वकील निरन्तर इस बात की समीक्षा करेगा कि पूछताछ का काम किस प्रकार चल रहा है और यह देखेगा कि पूछताछ की कारवाई उचित रूप से ही हो। लेकिन हमारे ज़माने में किसी भी व्यक्ति ने सरकारी वकील को उससे पहले कभी नहीं देखा, जब कैदी को तथाकथित "सरकारी वकील द्वारा पूछताछ" के लिए बुलाया जाता। इसका यह अभिप्राय होता था कि पूछताछ का काम अब समाप्त होने जा रहा है। मुझे भी एक ऐसी ही "पूछताछ" के लिये बुलाया गया। लैफ्टीनेंट कर्नल कोतोव, जो एक शान्त, हृष्ट-पुष्ट, अवैयक्तिक दिखाई पड़ने वाला, सुनहरे बालों वाला व्यक्ति था और जो न तो बुरा ही था और न ही अच्छा और जिसे बुनियादी तौर पर एक शून्य कहा जा सकता है, अपनी मेज़ पर बैठा हुआ था और जमुहाई लेते हुये उसने पहली बार मेरे मामले की फाइल का मुआयना किया। उसने स्वयं को इस फाइल में दर्ज बातों से परिचित कराने के लिये केवल १५ मिनट का समय लगाया और इस बीच में उसे देखता रहा। (अब क्योंकि यह "पूछताछ" प्रायः अनिवार्य थी और इसका भी विवरण लिखा जाना था, अतः इस बात की आवश्यकता नहीं थी कि इस फाइल का किसी पहले अवसर पर अध्ययन किया जाये जब इसके अध्ययन का उल्लेख करना सम्भव न होता। और इस प्रकार इस सरकारी वकील को इस मामले के विवरणों को कई घण्टों तक याद भी रखना पड़ता।) अन्त में उसने अपनी अनिच्छापूर्ण आंखों को ऊपर उठाया और दीवार की ओर देखने लगा और बड़े आलसीपन से बोला कि क्या मैं अपने बयानों में कुछ और जोड़ना चाहता हूं?

कानून की व्यवस्था के अनुसार उसे मुझसे यह पूछना था कि मुझे पूछताछ के संचालन के बारे में कोई शिकायत है अथवा नहीं और क्या मेरे बयान कराने में दबाव डाला गया है अथवा क्या कानूनी अधिकारों का कोई उल्लंघन हुआ है। लेकिन बहुत समय पहले ही सरकारी वकीलों ने यह प्रश्न पूछना बन्द कर दिया था। और यदि वे यह प्रश्न पूछते भी तो क्या होता? आखिरकार, उस मंत्रालय की इस पूरी इमारत का अस्तित्व, जिसमें हजारों

कमरे थे, और इस मन्त्रालय की उन अन्य पांच हजार इमारतों का अस्तित्व, जिनका इस्तेमाल पूछताछ के लिये किया जाता था और सोवियतसंघ भर में फैले कैदियों को ढोने वाले रेल के डिब्बों, गुफाओं और खंदकों का अस्तित्व कानूनी अधिकारों के उल्लंघन पर ही आधारित था। और इस समस्त प्रक्रिया को उलट डालना लैफ्टीनेंट कर्नल कोतोव और मेरे बूते की बात नहीं थी।

वास्तविकता यह थी कि प्रत्येक सरकारी वकील चाहे वह किसी भी रैंक का क्यों न हो उसी राज्य सुरक्षा संगठन की सहमति से अपने पद पर कायम रह सकता था, जिसके ऊपर नजर रखने का काम उसे दिया गया था।

इस सरकारी वकील की मुरझाई हुई मन:स्थिति, संघर्षशीलता की कमी और उन अनन्त मूर्खतापूर्ण मामलों से उत्पन्न थकान का संक्रमण स्वयं मेरे भीतर भी होने लगा था। अत: मैंने उसके समक्ष सच्चाई के सम्बन्ध में प्रश्न नहीं उठाए। मैंने केवल यही अनुरोध किया कि एक अत्यन्त स्पष्ट मूर्खता को सुधार लिया जाये: हम दो मित्रों को एक ही मामले में फंसाया गया था, लेकिन हमारा पूछताछ का काम विभिन्न स्थानों पर हुआ था, मेरा मास्को में और मेरे मित्र का मोर्चे पर। इस प्रकार मेरे मामले की पूछताछ केवल एक व्यक्ति के मामले के रूप में ही हुई थी, फिर मेरे ऊपर धारा-११ के अन्तर्गत अर्थात् एक समूह अथवा संगठन के रूप में काम करने का अभियोग लगाया गया था। मैं जितनी अधिक खुशामद और फुसफुसाहट के स्वर में अपना अनुरोध प्रकट कर सकता था, मैंने किया और उसे धारा-११ के अन्तर्गत इस अतिरिक्त अभियोग को रद्द करने की प्रार्थना की।

वह पांच मिनट तक फाइल के पन्ने टटोलता रहा और इसके बाद उसने एक लम्बा सांस खींचा, अपनी दोनों बांहें फैलाईं और बोला:

"इसमें कहने को है ही क्या? एक व्यक्ति एक व्यक्ति होता है और दो व्यक्ति... लोग होते हैं।"

लेकिन एक व्यक्ति और आधा व्यक्ति—क्या यह एक संगठन हो सकता है?

और उसने बटन दबाया और वे लोग मुझे ले जाने के लिये आ गये।

इसके कुछ ही समय बाद, मई के अन्तिम दिनों में काफी शाम गये उसी दफ्तर के कमरे में जिसकी संगमरमर की कार्निस पर मूर्ति समान कांसे की घड़ी रखी हुई थी, मेरे पूछताछ अधिकारी ने मुझे "२०६" प्रक्रिया के लिये बुलाया। दण्ड प्रक्रिया संहिता की व्यवस्थाओं के अनुसार अन्तिम रूप से हस्ताक्षर करने से पहले प्रतिवादी अर्थात् कैदी अपने मामले पर नज़र डाल सकता था। इस बात में जरा सा भी संदेह न होने के कारण मैं हस्ताक्षर कर दूंगा, पूछताछ अधिकारी मेज पर बैठा हुआ अभियोग पत्र का निष्कर्ष लिख रहा था।

मैंने इस मोटी फाइल को खोला और इसके पहले पृष्ठ पर छपे एक आश्चर्यजनक वक्तव्य को पढ़ा। इसमें कहा गया था कि पूछताछ के दौरान मुझे यह अधिकार था कि मैं पूछताछ के अनुचित रूप से संचालन के विरुद्ध लिखित शिकायतें कर सकूं और पूछताछ अधिकारी को मेरी इन शिकायतों को मेरे मुकदमे की फाइल में अनिवार्य रूप से नत्थी करना होगा! यह पूछताछ के दौरान किया जा सकता था! पूछताछ के अन्त में नहीं।

आगे चलकर जिन हजारों लोगों के साथ मैंने जेलों और शिविरों में समय बिताया, उनमें से एक को भी इस अधिकार का ज्ञान नहीं था।

मैंने और पृष्ठ उलटे। मैंने स्वयं अपने पत्रों के फोटो चित्र देखे। अज्ञात टिप्पणी-

कारों (जैसे कैप्टेन लीविन) ने इनके अर्थों को पूरी तरह से विकृत करके प्रकट किया था। मैंने उस अतिशयोक्तिपूर्ण झूठ को भी देखा, जिसमें कैप्टेन ऐजेपोव ने मेरे सावधानी से दिये गये बयान को लपेट लिया था। और, अन्ततः, पर यह कम महत्वपूर्ण नहीं है, मैंने उस मूर्खतापूर्ण प्रयास को भी देखा, जिसके द्वारा मुझे, एक व्यक्ति को, एक "समूह" के रूप में दर्शा कर अभियोग लगाया गया था!

"मैं इस पर हस्ताक्षर नहीं करूंगा।" मैंने अधिक दृढ़ता के बिना ही कहा। "आपने अनुचित तरीके से पूछताछ का संचालन किया है।"

"ठीकहै, तो हम एक बार फिर शुरू से इसे आरम्भ करते हैं!" बड़े दुष्टतापूर्ण तरीके से उसने अपने होंठों को सिकोड़ा। "हम तुम्हें उस स्थान पर भेज देंगे, जहां हम पोलीजेई लोगों को रखते हैं।"

इसके बाद उसने इस तरीके से अपना हाथ आगे बढ़ाया, मानो वह फाइल मुझसे ले लेना चाहता है। (और इस क्षण मैंने इस फाइल को कसकर पकड़ लिया)।

लूबयांका की पांचवीं मंजिल की खिड़कियों के बाहर कहीं सुनहरी सूर्यास्त अपनी छटा बिखेर रहा था। कहीं यह मई का महीना था। दफ्तर की खिड़कियां, बाहर सड़क पर खुलने वाली सब खिड़कियों की तरह, मजबूती से बन्द थीं और सर्दियों के बाद भी, इन्हें अभी तक खोला नहीं गया था; ताकि ताजा हवा और नई वनस्पति की सुगन्ध इन गुप्त कमरों में न घुस आये। कार्निस पर रखी कांसे की घड़ी, जिसके ऊपर से सूर्य की अन्तिम किरणों अन्तर्धान हो गई थीं, शान्तिपूर्वक टिक-टिक करती हुई आगे बढ़ती जा रही थी।

एक बार फिर शुरू से? मुझे ऐसा लगा कि एक बार फिर शुरू से आरम्भ करने से मर जाना कहीं अधिक आसान होगा। आखिरकार मुझे आगे किसी न किसी प्रकार का जीवन दिखाई पड़ रहा था। (काश! मुझे मालूम होता कि यह किस प्रकार का जीवन है!) और वह जगह कैसी है, जहां वे लोग पोलीजेई लोगों को रखते हैं? और मोटी बात यह थी कि उसे नाराज़ करना कोई अच्छी बात नहीं थी। इससे उस स्वर पर प्रभाव पड़ेगा, जिसमें वह अभियोगपत्र का निष्कर्ष लिखेगा।

और इस प्रकार मैंने हस्ताक्षर किये। मैंने इस पर धारा-११ सहित हस्ताक्षर किये, जिसके महत्व की मुझे उस समय जानकारी नहीं थी। उन लोगों ने मुझे यही बताया था कि इससे मेरी सजा की अवधि में वृद्धि नहीं होगी। लेकिन इस धारा-११ के कारण ही मुझे आगे चलकर कठोर श्रम शिविर में भेज दिया गया। इसी धारा-११ के कारण मुझे "मुक्ति के बाद" भी, कोई अतिरिक्त सजा सुनाये बिना ही, शाश्वत निष्कासन में, सदा सर्वदा के लिये निष्कासन में भेज दिया गया।

हो सकता है कि यह सब कुछ अच्छा ही हुआ हो। इन दोनों अनुभवों के बिना मैं यह पुस्तक नहीं लिख पाता।

मेरे पूछताछ अफसर ने मेरे खिलाफ नींद से वंचित रखने, झूठ और धमकियों के अलावा अन्य तरीकों का इस्तेमाल नहीं किया और इन सब तरीकों को पूरी तरह कानूनी समझा जाता था। इस प्रकार, "२०६" प्रक्रिया के दौरान उसे इस बात की आवश्यकता नहीं थी कि वह मेरी ओर इस आशय का वक्तव्य बढ़ाता और मुझसे हस्ताक्षर करने को कहता कि मैं पूछताछ के दौरान हुई बातों का कहीं उल्लेख नहीं करूंगा, इसके बारे में किसी को नहीं बताऊंगा जैसाकि वे पूछताछ अधिकारी करते थे जो सब बातों को उलझा डालते थे और

स्वयं को सुरक्षित रखना चाहते थे। इस वक्तव्य में कहा जाता : कि मैं अधो हस्ताक्षरित, दण्डनीय अपराध के लिये दण्ड दिये जाने की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुये, शपथपूर्वक यह वचन देता हूं कि मैं किसी भी व्यक्ति को उन तरीकों के बारे में नहीं बताऊंगा, जिनका इस्तेमाल पूछताछ के दौरान किया गया। (कौन जानता है कि यह दण्ड संहिता के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत आता है।)

एन० के० वी० डी० के अनेक प्रान्तीय प्रशासनों में यह कार्य एक निश्चित अवसर पर किया जाता था। कैदी के समक्ष ओ० एस० ओ० के निर्णय के साथ पूछताछ के तरीकों के बारे में कुछ न कहने सम्बन्धी टाइप किया हुआ वक्तव्य भी रख दिया जाता था। और बाद में शिविर से रिहा होने वाले कैदी के समक्ष भी एक ऐसा ही कागज रखा जाता था, जिसमें कैदी यह गारण्टी देता था कि वह शिविर के मामलों के बारे में कभी किसी व्यक्ति को कोई बात नहीं बतायेगा।

और इस प्रकार ? आज्ञाकारिता की हमारी आदत, हमारी झुकी हुई (अथवा टूटी हुई) रीढ़ की हड्डी, हमें उस गुंडागर्दी से भरे तरीके को ठुकरा देने अथवा इस पर क्रोध तक प्रकट करने की अनुमति नहीं देती थी, जिसके द्वारा वे लोग अपने बचाव की पूर्ण व्यवस्था करते थे।

हम लोग स्वतन्त्रता का मूल्यांकन करने का पैमाना खो चुके हैं। हमारे पास ऐसा कोई साधन नहीं है, जिसके आधार पर हम यह निर्णय कर सकें कि स्वतंत्रता कहां शुरू होती है और कहां इसका अन्त होता है। हम एशियाई जाति के लोग हैं। हमारा उत्पीड़न करने वाले लोग निरन्तर आगे बढ़ते जाते हैं और हमसे किसी भी बात को प्रकट न करने के अनन्त वचन लेते जाते हैं—उनमें से कोई भी व्यक्ति इतना आलसी नहीं है कि ऐसे वचन न मांगे।

हमें इस बात का भी निश्चय नहीं है कि क्या हमें स्वयं अपने जीवन की घटनाओं के बारे में कुछ कहने का, बात करने का अधिकार है।

अध्याय ४



नीली टोपी वाले

महान् रात्रिकालीन संस्था के दमनचक्रों में जब हमारी आत्माओं को कुचला जाता, तो हमारी आत्माएं स्तम्भित हो उठतीं और हमारी चमड़ी एक भिखमंगे के चिथड़ों की तरह हमारे शरीर पर लटकने लगती। उस समय हम इतने अधिक कष्ट में होते, स्वयं अपनी पीड़ा में इस सीमा तक डूबे होते कि हम उन पीली रातों में काम करने वाले जल्लादों को अन्तर्भेदी दृष्टि से बेध नहीं पाते, जो हमें यातनाएं देते थे। आन्तरिक पीड़ा और दुख का ऊफान हमारी आंखों को धूमिल बना देता। अन्यथा हम स्वयं अपनी यातनाओं के कितने प्रबल इतिहासकार बन सकते थे! यह बात निश्चित है कि हमें यातनाएं देने वाले जल्लाद कभी भी अपने कारनामों और अपने जीवन का वास्तविक विवरण स्वयं प्रस्तुत नहीं करेंगे। फिर भी प्रत्येक भूतपूर्व कैदी को स्वयं से की गई पूछताछ का विस्तार से स्मरण रहता है। वह यह भूल नहीं पाता कि उन्होंने उसे किस प्रकार कुचला और किस प्रकार शिकंजे में कसकर उससे गन्दी से गन्दी स्वीकारोक्तियां कराईं—लेकिन अक्सर उसे उन जल्लादों के नाम तक याद नहीं रहते, उनके बारे में मनुष्यों के रूप में सोचना तो दूर। यही बात स्वयं मेरे ऊपर लागू होती है। मैं अन्य बहुत सी बातों का स्मरण कर पाता हूं—और उन बहुत सी बातों का भी जो दिलचस्प हैं—मैं अपने साथ जेल की कोठरियों में बन्द कैदियों के बारे में अधिक और राज्य सुरक्षा के कैप्टेन येजेपोव के बारे में कम सोच पाता हूं, जिसके साथ मैंने आमने-सामने कोई कम समय नहीं बिताया। हम दोनों लम्बी अवधियों तक अकेले ही उसके दफ्तर में होते थे।

लेकिन एक ऐसी वस्तु है, जो हम सब अत्यधिक सटीक रूप से एक व्यापक संस्मरण के रूप में याद रखते हैं: अत्यधिक दूषित और गन्दे लोग—एक ऐसा स्थान, जो पूरी तरह से सड़ांध से भरा हो। और जब, अनेक दशकों के बाद, हम अपने साथ हुए व्यवहार पर अत्यधिक आपत्ति भरे क्रोध के दौर से गुजर चुके होते हैं, हमारे शान्त मनों में इन क्षुद्र, विद्वेषपूर्ण, दम्भी और सम्भवतः उलझे हुए विचारों वाले लोगों की तस्वीर कायम रहती है।

अलैक्जेंडर द्वितीय के बारे में एक बड़ा दिलचस्प किस्सा बताया जाता है। यह वह ज़ार था, जो क्रान्तिकारियों से घिरा हुआ था और जिन्होंने उसकी हत्या करने के सात प्रयास किए थे। एक बार अलैक्जेंडर द्वितीय शपालेरनाया स्थित आरम्भिक हिरासत भवन—इसे लूबयांका से भी बड़ी जेलखाना माना जाता था—के निरीक्षण के लिए गया और जेलरों को यह आदेश दिया कि वे स्वयं उसे ही अर्थात् स्वयं ज़ार को तनहाई की कोठरी संख्या-२२७ में

बन्द कर दें। वह इस कोठरी के भीतर दो घंटे से अधिक समय तक बन्द रहा और इस प्रकार उसने यह अनुमान लगाने की कोशिश की कि जिन लोगों को उसने तनहाई की इन कोठरियों में कैद कराया है, उनकी मन:स्थिति क्या होती होगी।

यह स्वीकार करना होगा कि किसी राजा के लिए यह नैतिक महत्वाकांक्षाओं के एक प्रमाण के अलावा कुछ नहीं है। यह एक ऐसे राजा का उदाहरण है, जिसने मामले पर आध्यात्मिक दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता अनुभव की और इस सम्बन्ध में प्रयास भी किया।

लेकिन हमारे किसी भी पूछताछ अधिकारी, अबाकुमोव और बेरिया तक, किसी भी अधिकारी के बारे में यह कल्पना कर पाना असम्भव है कि वह एक घंटे के लिए भी स्वयं को कैदी की स्थिति में रखना पसन्द करेगा, अथवा तनहाई की कोठरी में अनिवार्य रूप से बठने और चिन्तन करने की बात सोचेगा।

इन लोगों को जिस काम के लिए नियुक्त किया जाता है, उसमें इनका शिक्षित होना और व्यापक सांस्कृतिक और उदार विचारों वाला व्यक्ति होना ज़रूरी नहीं है—पर वास्तव में वे न तो शिक्षित हैं और न ही सुसंस्कृत। उन्हें जिस काम के लिए नियुक्त किया गया है, उसमें उन्हें तर्कसंगत तरीके से सोचने की आवश्यकता नहीं होती—और वे तर्कसंगत तरीके से सोचते भी नहीं हैं। उन्हें जिस काम के लिए नियुक्त किया गया है, उसमें यही अपेक्षा की जाती है कि वे आदेशों का अक्षरश: पालन करें और दूसरों के कष्टों के प्रति पूरी तरह उदासीन रहें—और वे यही करते हैं और वे ऐसे ही लोग हैं। हम लोग, जो उनके हाथों से गुज़र चुके हैं, उस समय अपना दम घुटता हुआ महसूस करते हैं, जब इन लोगों की फौज के बारे में सोचते हैं, एक ऐसी फौज के बारे में सोचते हैं जो सार्वभौम मानव आदर्शों से पूरी तरह वंचित कर दी गई है।

हो सकता है कि अन्य लोगों को इस बात की जानकारी न हो पर पूछताछ अधिकारी यह अच्छी तरह से जानते थे कि मामले बिल्कुल झूठे हैं। अपने विभाग की बैठकों के अलावा वे लोग एक दूसरे से अथवा स्वयं अपने से कभी भी गम्भीरतापूर्वक यह नहीं कह सकते थे कि वे अपराधियों का भण्डाफोड़ कर रहे हैं। इसके बावजूद वे हमारे झूठे बयानों के रूप में एक के बाद एक पन्ना रंगते गए, ताकि हम अनिश्चित काल तक जेलों और शिविरों में सड़ते रहें। इस प्रकार इसके सार रूप में हमारे समक्ष ब्लातनी अर्थात् रूसी चोरों के गुप्त संसार का यह आदर्श वाक्य आता है : "आज तुम; कल मैं।"

वे जानते थे कि सारे मुकदमे झूठे हैं, इसके बावजूद वे निरन्तर, वर्षों तक यही काम करते रहे। वे यह सब कैसे कर पाये? या तो उन लोगों ने स्वयं को इन बातों पर विचार ही न करने दिया (और यह अपने आपमें एक मनुष्य का विनाश है) और बस, यह स्वीकार कर लिया कि यह सब कुछ इसी तरीके से होना है और हुक्म देने वाले लोग सदा सही होते हैं......

लेकिन क्या नाज़ियों ने भी इसी प्रकार तर्क नहीं दिया?

अथवा यह प्रगतिशील सिद्धान्त अर्थात् वज्र समान विचारधारा का मामला था। भयंकर ओरोतूकान में एक पूछताछ अधिकारी—जिसे १९३८ में दण्ड स्वरूप नियुक्ति के लिए कोलिमा भेजा गया था—उस समय अत्यधिक भावुक हो उठा, जब क्रीवोई-रोग औद्योगिक क्षेत्र के भूतपूर्व निदेशक एम० लुरये उस अभियोग पत्र पर तत्परता से हस्ताक्षर

करने के लिए राज़ी हो गए, जिसके आधार पर उन्हें दूसरी बार शिविर में सजा काटने के लिए भेजा जा रहा था और उसने इस प्रकार पूछताछ से बचे समय का उपयोग यह कहने के लिए किया : "क्या आप यह समझते हैं कि हमें लोगों को स्वीकारोक्ति के लिए राज़ी करने में कोई संतोष प्राप्त होता है ? हमसे पार्टी जो चाहती है, वह हमें करना पड़ता है। आप पार्टी के पुराने सदस्य हैं। आप ही बताइए कि अगर आप मेरी जगह होते तो क्या करते ?"

"स्पष्ट है कि लुरये प्राय: उससे सहमत हो गए और हो सकता है कि वे स्वयं भी इसी तरीके से सोच रहे हों और इसी कारण से उन्होंने इतनी तत्परता से अभियोग पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए हों आखिरकार यह तर्क बहुत आश्वस्त कर देता है।

पर अक्सर यह दूसरों के कष्टों के प्रति चिन्ता न करने का ही मामला होता है। नीली टोपी वाले ये अधिकारी कैदियों को पूरी तरह कुचल डालने वाली इस व्यवस्था की कार्यप्रणाली से अच्छी तरह परिचित थे और उससे प्यार करते थे। सन् १९४४ में भीदा शिविरों में, पूछताछ अधिकारी मीरोनेनको ने दमनचक्र का लक्ष्य बने बाबिच से अपनी दोष-रहित तार्किकता पर गर्व करते हुए कहा : "पूछताछ और मुकदमा केवल न्यायिक प्रक्रिया भर हैं। इनमें केवल न्यायिक तथ्यों का मिलान भर होता है। इनसे तुम्हारे भाग्य के निपटारे में कोई अन्तर नहीं पड़ सकता, जिसका पहले ही निर्णय लिया जा चुका है। यदि तुम्हें गोली से उड़ाना आवश्यक है, तो तुम्हें गोली से उड़ाया जायेगा, चाहे तुम पूरी तरह से निर्दोष हो। यदि तुम्हें रिहा करना आवश्यक है,' तो इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता कि तुम कितने अधिक दोषी हो। तुम्हें दोषमुक्त कर दिया जाएगा और रिहा कर दिया जायेगा।' पश्चिम कज़ाकिस्तान प्रान्तीय राज्य सुरक्षा प्रशासन के प्रथम पूछताछ विभाग के अध्यक्ष कुशनारएव ने भी इसी प्रकार एडोल्फ सिविलको से यही बात कही। "आखिर-कार अगर तुम लेनिनग्राद के रहने वाले हो तो हम तुम्हें किसी हालत में रिहा नहीं कर सकते !" (दूसरे शब्दों में अगर तुम कम्युनिस्ट पार्टी के पुराने सदस्य हो।)

"बस, आप एक आदमी हमारे हवाले कर दीजिए— और हम एक मुकदमा तैयार कर देंगे।" उनमें से अनेक लोग मज़ाक में यह बात कहते थे और सचमुच यह उनका नारा ही था। हम लोग जिसे यातनाएं देना समझते हैं, उसे वे अच्छा काम मानते हैं। पूछताछ अधिकारी निकोलाई ग्राबिशचेंको (वोलगा नहर योजना) की पत्नी ने अत्यन्त भावविभोर होकर अपनी पड़ोसिनों से कहा, "कोल्या बहुत अच्छा कार्यकर्ता है। एक कैदी लम्बे अरसे से स्वीकारोक्ति नहीं कर रहा था—और उन लोगों ने उसे कोल्या को सौंप दिया। कोल्या ने बस एक रात उससे बातचीत की और उस कैदी ने स्वीकारोक्ति कर ली।"

इन लोगों को क्या चीज़ इस बात की प्रेरणा देती थी कि वे इतनी तत्परता से अपने काम में जुट जाएं और अत्यधिक उत्साह से सत्य का पता लगाने में अपनी ताकत न लगाकर, उन कैदियों की संख्या का बड़ा योग तैयार करने में लगायें जिनसे स्वीकारोक्तियां करा ली गईं और जिन्हें सज़ा दे दी गई ? क्योंकि उनके लिए यह सर्वाधिक आरामदेह बात थी कि वे दूसरों से भिन्न न हों। और अब क्योंकि इन लोगों का अर्थ आराम की जिन्दगी, अति-रिक्त वेतन, पुरस्कार, पदक, पदोन्नति और स्वयं सुरक्षा संगठनों का विस्तार और समृद्धि होता था; अत: उन्हें यह करना ही था। यदि वे बड़े-बड़े योग तैयार कर पाते तो इच्छा होने पर काम में कोताही कर सकते थे; इधर-उधर घूम सकते थे अथवा रातें बाहर बिताकर आनन्द मना सकते थे। और वे लोग करते भी यही थे। छोटा योग होने पर उन्हें ठोकर

मारकर निकाल दिया जाता था। वे अपनी आरामदेह जीविका से वंचित हो जाते थे; क्योंकि स्तालिन को कभी भी इस बात से आश्वस्त नहीं किया जा सकता था कि किसी भी जिले, नगर अथवा सैनिक यूनिट में अचानक यह स्थिति आ जाए कि स्तालिन के शत्रुओं का अस्तित्व ही न रहे।

यही कारण था कि उनके मन में दया भाव नहीं आता था, बल्कि उन द्वेषपूर्ण सीमा तक अड़ियल कैदियों के प्रति आक्रोश और क्रोध का विस्फोट होता था, जो उनके योगों का एक आंकड़ा बनने का विरोध करते थे, जो नींद के अभाव के समक्ष अथवा सजा की कोठरी में बन्द रहने के बाद अथवा भूखे रहकर भी स्वीकारोक्ति करने को तैयार नहीं होते थे। स्वीकारोक्ति करने से इनकार करके ऐसे लोग पूछताछ अधिकारी के व्यक्तिगत सम्मान को क्षति पहुंचाने का प्रयास करते थे। उसे लगता था कि मानो ये कैदी उसे नष्ट कर डालना चाहते हैं। ऐसी परिस्थितियों में हर कारवाई, हर तरीका उचित था! यदि युद्ध ही होना है, तो यह युद्ध ही होगा! हम तुम्हारे हलक में नली ठूंस देंगे—अब नमकीन पानी पियो!

अपने काम के स्वरूप और स्वयं अपनी इच्छा से भी मानव अस्तित्व के उच्च स्तर से पूरी तरह दूर और वंचित रहने के कारण, नीली संस्था के ये सेवक अपने क्षुद्र स्तर पर कहीं अधिक उग्रता और लालच से जीवन यापन करते थे। और इस क्षुद्र स्तर की दो सर्वाधिक प्रबल भावनाओं से वे आक्रांत हो जाते थे, उनसे पूरी तरह संचालित होते थे। ये दो भावनाएं भूख और काम-वासना को छोड़कर अत्यन्त प्रबल भावनाएं होती हैं: सत्ता की अदम्य कामना और लाभ की प्रबल इच्छा। (यह विशेषरूप से सत्ता की भूख होती थी। हाल के दशकों में यह धन के लालच से भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।)

सत्ता वह विष है, जिसका मनुष्य को हजारों वर्षों से ज्ञान है। काश! यह हो पाता कि किसी भी व्यक्ति को दूसरों के ऊपर कभी भी भौतिक सत्ता प्राप्त न हो पाती! लेकिन उस मनुष्य के लिये जिसका उस शक्ति में विश्वास है, जिसका हम सबके ऊपर प्रभुत्व है, और जो मनुष्य इस कारण से स्वयं अपनी सीमाओं के प्रति जागरूक होता है, सत्ता अनिवार्यतः सांघातिक नहीं होती। लेकिन उन लोगों के लिए जिन्हें इस उच्च शक्ति के अस्तित्व का ज्ञान नहीं है, यह विनाशकारी विष होती है। उन लोगों के लिए इस विष को प्रभावहीन बनाने वाली कोई औषधि नहीं होती।

याद रखिए तोल्सतोय ने सत्ता के बारे में क्या कहा है? आइवन इलिच ने एक ऐसा सरकारी पद स्वीकार कर लिया था, जिसके माध्यम से उसके हाथ में अपनी इच्छानुसार किसी भी व्यक्ति को मरवा डालने की सत्ता आ गई थी! बिना किसी अपवाद के सब लोग उसकी मुट्ठी में थे और किसी भी व्यक्ति को, सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति को भी उसके सामने एक अभियुक्त के रूप में पेश किया जा सकता था। (और यही स्थिति हमारे नीली टोपी वाले लड़कों की है! इस विवरण में और कुछ जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।) अपने हाथ में यह सत्ता होने का ज्ञान (और "इसे दयापूर्वक प्रयोग में लाने की संभावनाएं"—इस प्रकार तोल्सतोय इस स्थिति के साथ एक शर्त जोड़ते हैं, लेकिन यह बात किसी भी रूप में हमारे लड़कों के ऊपर लागू नहीं होती) आइवन इलिच के लिए उस पद पर काम करने की प्रमुख दिलचस्पी और प्रमुख आकर्षण था।

पर आकर्षण सही शब्द नहीं है—यह नशा है! आखिरकार इससे नशा ही तो होता

है। आप अभी युवक ही हैं—अभी भी, क्या हम जोर देकर यह कहेंगे कि अभी आप एकदम युवा ही हैं। कुछ समय पहले ही आपके माता-पिता को इस बात की अत्यधिक चिन्ता रहती थी कि आपके बारे में क्या करें और आपको किस काम में लगायें। आप इतने अधिक मूर्ख थे कि आप पढ़ने लिखने को तैयार नहीं थे। लेकिन इसके बाद किसी प्रकार आपने उस स्कूल में तीन वर्ष का प्रशिक्षण पा लिया—और इसके बाद आपके जीवन का इतना शानदार समारम्भ हुआ, आप सचमुच हवा में उड़ चले! आपकी स्थिति किस प्रकार एकदम बदल उठी! आपके बात करने का तरीका, आपकी नजर, आपका सिर हिलाने का तरीका सब कुछ किस प्रकार बदल उठा! विज्ञान संस्था की विद्वत परिषद् का अधिवेशन चल रहा है। आप सभा कक्ष में प्रवेश करते हैं, प्रत्येक व्यक्ति आपको देखता है और कांपने लगता है। आप अध्यक्ष महोदय की कुर्सी पर आसीन नहीं होते। यह सिर दर्द संस्था के प्रमुख वैज्ञानिक का है। आप एक ओर बैठ जाते हैं, लेकिन हर व्यक्ति यह समझता है कि यहां सबसे बड़े आप हैं। आप विशेष अनुभाग से आये हैं। और आप वहां केवल पांच मिनट बैठकर ही जा सकते हैं, आपको प्रोफेसरों की तुलना में यह बड़ा लाभ प्राप्त है। आपको कहीं अधिक महत्वपूर्ण कार्य से बुलाया जा सकता है—लेकिन बाद में जब आप विद्वत् परिषद् के निर्णय पर विचार करेंगे, तो आप अपनी त्यौरियां चढ़ायेंगे अथवा इससे भी बेहतर स्थिति में अपने होंठों को सिकोड़ते हुए प्रमुख वैज्ञानिक से कहेंगे: "तुम यह नहीं कर सकते। इस मामले से विशेष बातें सम्बन्धित हैं।" बस, इतना काफी है! और यह काम नहीं किया जाएगा। अथवा आप एक ओसोबिस्ट हैं अर्थात् सेना में नियुक्त राज्य सुरक्षा के प्रतिनिधि हैं—स्मर्श नामक जासूसी संगठन के सदस्य हैं और केवल एक लैफ्टिनेंट हैं; लेकिन शानदार व्यक्तित्व वाला वृद्ध कर्नल, सैनिक टुकड़ी का कमाण्डर, उस समय उठ खड़ा होता है, जब आप कमरे में प्रवेश करते हैं और आपकी खुशामद करने की कोशिश करता है, आपके दिल बहलाव का प्रयास करता है, वह अपने सेनाध्यक्ष के साथ अकेले प्याला पीने जाने का साहस भी नहीं कर सकता, आपको निमंत्रित करके ही वह यह करेगा। आपके कन्धों पर केवल दो छोटे-छोटे सितारे लगे हैं। इस बात का कोई महत्व नहीं है; यह बात तो बड़ी दिलचस्प है, आनंददायक है। आखिरकार आपके सितारों का भिन्न भार है और इन्हें साधारण अफसरों के सितारों से एकदम भिन्न पैमाने से नापा जाता है। (उदाहरण के लिये कुछ विशेष कार्यों पर भेजे जाते समय आप मेजर के पद के सूचक सितारे और चिन्ह लगा सकते हैं और इस बात को वेश बदलकर जाने की बात समझा जाता है। यह एक परम्परा है।) आप जहां नियुक्त होते हैं, उस सैनिक टुकड़ी में अथवा कारखाने में अथवा जिले में आपकी सत्ता सब लोगों के ऊपर सम्बन्धित टुकड़ी के सैनिक कमाण्डर अथवा कारखाने के निदेशक अथवा जिला कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव से भी ऊपर होती है। ये लोग लोगों के सैनिक अथवा अधिकृत कर्तव्यों, वेतनों, ख्यातियों पर नियंत्रण रखते हैं, लेकिन आपका नियंत्रण लोगों की स्वतंत्रता पर होता है। और कोई भी व्यक्ति सभाओं में आपके बारे में एक शब्द भी मुंह से निकालने का साहस नहीं कर सकता। कोई भी व्यक्ति कभी भी आपके बारे में समाचारपत्र में एक शब्द भी लिखने का साहस नहीं कर सकता—केवल कोई बुरी बात ही नहीं, बल्कि कोई अच्छी बात कहने और लिखने का साहस नहीं कर सकता! उनमें यह साहस है ही नहीं। आपके नाम का, अत्यधिक तत्परता से संरक्षित किसी देवता के नाम की तरह, उल्लेख तक नहीं किया जा सकता। आप वहां मौजूद हैं, प्रत्येक व्यक्ति आपकी मौजूदगी के महत्व का अनुभव करता

है; फिर भी सब यही आचरण करते हैं, मानो आपका अस्तित्व ही नहीं है। जिस क्षण से आप अपनी सेवा की उस स्वर्गिक नीली टोपी को धारण कर लेते हैं, आपका दर्जा सार्वजनिक रूप से स्वीकार की जाने वाली सत्ता से ऊंचा हो जाता है। कोई भी व्यक्ति इस बात की जांच करने का साहस नहीं कर सकता कि आप क्या करते हैं। लेकिन ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं है, जो आपकी जांच से मुक्त हो। और इस कारण से, तथाकथित साधारण नागरिकों से व्यवहार में, जो आपके लिए लकड़ी के टुकड़ों से अधिक कुछ नहीं हैं, आपके लिए अपने मुख पर एक अस्पष्ट और अत्यधिक गहन मुद्रा और भाव बनाए रखना सर्वथा उचित है। आखिरकार केवल आप ही ऐसे व्यक्ति हैं और अन्य कोई नहीं—जिसे विशेष कारणों की जानकारी है। और इस कारण से आप सदा सही होते हैं।

बस, आपको केवल एक बात कभी नहीं भुलानी चाहिए। यदि आपको सुरक्षा संगठनों में एक छोटी सी कड़ी बनने का सौभाग्य प्राप्त न होता, तो आप भी इसी प्रकार एक निरर्थक लकड़ी का टुकड़ा भर होते—ये संगठन ऐसे लचकीले और अत्यधिक कड़ाई से एकता के सूत्र में गठित जीवी की तरह हैं, जो एक देश में उसी तरह व्याप्त हैं, जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में एक कृमि होता है। अब सब कुछ आपका है! प्रत्येक वस्तु आपके उपभोग के लिए है! बस सुरक्षा संगठनों के प्रति सच्चे बने रहो! वे सदा तुम्हारी रक्षा करेंगे! वे ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को निगल जाने में आपकी मदद करेंगे, जो आपके मार्ग में बाधक बनने का प्रयास करता है! वे आपके मार्ग से प्रत्येक बाधा को हटा देने में आपकी मदद करेंगे! लेकिन—सुरक्षा संगठनों के प्रति सच्चे बने रहो! वे आपको जो भी हुक्म दें उसे पूरा करो! आपको क्या-क्या और कैसे काम करना चाहिए, इसके बारे में भी वे आपकी ओर से सोच-विचार करेंगे : आज आप एक विशेष यूनिट में काम करते हैं; कल आप एक पूछताछ अधिकारी की हत्थेदार कुर्सी पर विराजमान होंगे; और इसके बाद सम्भवतः एक लोक गायक के रूप में सेलीजर झील के इलाके की यात्रा पर निकल पड़ें,[4] और हो सकता है कि आंशिक रूप से यह कार्य आपके तनावग्रस्त स्नायुओं को राहत देने के लिए किया जाए। और इसके बाद आपको एक ऐसे नगर से, जहां आप बहुत ख्याति प्राप्त कर चुके हों, देश के एकदम दूसरे छोर पर चर्च के मामलों के सर्वाधिकारी, सर्वसत्ता सम्पन्न अधिकारी के रूप में भेज दिया जाए।[5] अथवा आप सोवियत लेखक संघ के कार्यभारी सचिव भी बन सकते हैं।[6] किसी भी बात पर आश्चर्य न करें। लोगों की सच्ची नियुक्तियों और उनके सच्चे पदों की जानकारी केवल सुरक्षा संगठनों को ही होती है। शेष नाटकमात्र है। कोई सम्मानित कलाकार अथवा कोई अन्य व्यक्ति, अथवा समाजवादी कृषि का कोई वीर नायक, आज यहां है और कल वहां। उसें फूंक मारकर उड़ाया जा सकता है।[7]

एक पूछताछ अधिकारी को अपने कर्तव्यों के निर्वाह में सचमुच कुछ काम करना पड़ता है; उसे दिन के समय, और रात को भी आना पडता है; घंटों तक बैठें रहना पड़ता है—लेकिन "प्रमाण" जुटाने के लिए अपना सिर नहीं पटकना पड़ता। (इसके लिए स्वयं कैदी को ही सिर पटकने की जरूरत है।) इसके अलावा पूछताछ अधिकारी को यह भी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है कि कैदी दोषी है अथवा नहीं। उसे तो केवल सुरक्षा संगठनों के निर्देशों के अनुसार काम करना आवश्यक है। और इसके अलावा हर चीज सही होगी, सही हो जाएगी। पूछताछ अधिकारी अपनी इच्छा के अनुसार पूछताछ की अवधियों को जितने आनंद से बिताना चाहे, बिता सकता है। और यह जरूरी नहीं है कि वह इस काम से स्वयं

को आवश्यकता से अधिक थका डाले। और पूछताछ के काम से अपनी कुछ भलाई कर लेना भी उसके लिए बेहतर होगा—कम से कम वह स्वयं अपना मनोरंजन तो कर सकता है। वह लम्बे अरसे तक बैठा रहता है और अचानक उसके मन में कैदी को अभियोग स्वीकार करने के लिए "राज़ी कर लेने का" एक नया तरीका कौंध उठता है। यूरेका, मैंने नए तरीके का अनुसंधान कर लिया है! और वह अपने मित्रों को टेलीफोन करता है, वह दूसरे अधिकारियों के कमरों में जाकर उन्हें इसके बारे में बताता है। वाह, क्या मज़ा आएगा! दोस्तो, हम इसे किस पर आजमाएंगे! आखिरकार लगातार एक की बात करते रहना, एक ही तरीके से बात करते रहना, कितना नीरस होता है। वे कांपते हुए हाथ, वे याचना भरी आंखें, वह कायरतापूर्ण विनम्रता—वे लोग सचमुच ऊबा देने वाले हैं! उनमें से एक भी प्रतिरोध कर सकता! "मुझे सचमुच सशक्त विरोधी पसन्द हैं! उनकी पीठ तोड़ डालने में कितना आनंद आता है!" लेनिनग्राद के पूछताछ अधिकारी शितोव ने जी० जी—व से अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा :

यदि आपका विरोधी इतना सशक्त हो कि वह घुटने टेकने से इन्कार कर दे, आपके सब तरीके असफल हो जायें और आप क्रोध से पागल हो उठें? तो आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता नहीं है, क्रोध का विस्फोट, क्रोध को उग्रतम रूप से प्रकट करना, अत्यन्त संतोषदायक होता है। आप अपने क्रोध को निर्बाध चलने दीजिए; इसकी कोई सीमा न बांधिए, अपने आपको न रोकिए! यही वह अवसर होता है, जब पूछताछ अफसर अभियुक्त के खुले हुए मुंह में थूक देते हैं! उसके चेहरे को लबालब भरे पीकदान में घुसेड़ देते हैं![८] यह वही क्रोध की स्थिति होती है, जिसमें वे पादरियों को उनके लम्बे बाल पकड़कर घसीटते हैं! अथवा घुटनों के बल बैठे हुए कैदी के चेहरे पर पेशाब कर देते हैं! और इतना भयंकर क्रोध प्रकट करने के बाद आप स्वयं को ईमानदारी से काम करने वाला आदमी समझते हैं।

अथवा आप किसी "विदेशी की लड़की मित्र"[९] से पूछताछ कर रहे हैं, तो आप उसे गालियां देते हैं और फिर कहते हैं: "अच्छा ज़रा यह तो बताओ, क्या किसी अमरीका का—खास किस्म का होता है? क्या यही बात है? क्या रूस में तुम्हारे लिए काफी नहीं थे?" और तभी अचानक आपके मन में एक विचार आता है : हो सकता है कि इस लड़की ने उन विदेशियों से कोई नई बात, कोई नया तरीका सीख लिया हो? यह ऐसा मौका है, जिसे हाथ से नहीं निकलने देना चाहिए। यह तो विदेशों में नियुक्ति की तरह हाथ से न निकलने देने योग्य अवसर है? और आप बड़ी तत्परता से उस लड़की से सवाल पूछने लगते हैं: कैसे? किस प्रकार, किस आसन में? और बताओ! विस्तार से बताओ! कुछ भी मत छिपाओ। हर बात, छोटी से छोटी बात भी बताओ! (आप स्वयं इस जानकारी का इस्तेमाल कर सकते हैं और आप अपने साथियों को भी यह बता सकते हैं!) लड़की का शर्म से बुरा हाल है और वह रो-रोकर मरी जा रही है। "इसका मामले से कोई भी सम्बन्ध नहीं है।" वह प्रतिवाद करती है। "नहीं, इसका मामले से सम्बन्ध है। बोलो सब कुछ बताओ!" यह है आपकी असीम शक्ति! वह आपको पूरा विवरण देती है, सब कुछ विस्तार से बताती है। यदि आप चाहें तो वह आपके लिए एक तस्वीर भी बना सकती है। यदि आप चाहें तो वह स्वयं अपने शरीर से इसका प्रदर्शन कर सकती है। उसके सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं है। आपके हाथ में सजा की कोठरी है और जेल की सजा की

अवधि भी।

और यदि आपने किसी कैदी से पूछताछ के दौरान प्रश्नोत्तर लिखने के लिए किसी स्टेनोग्राफर[10] को भेजने को कहा हो और वे किसी खूबसूरत लड़की स्टेनोग्राफर को भेज दें, तो आप उस आदमी के सामने ही जिससे पूछताछ की जा रही हो इस लड़की के ब्लाउज के भीतर अपना हाथ डाल सकते हैं।[11] आखिरकार कैदी मनुष्य नहीं है और उसकी मौजूदगी में लज्जा का अनुभव करने का कोई कारण नहीं है।

वास्तव में आपको किसी भी व्यक्ति के समक्ष लज्जा का अनुभव करने की ज़रूरत नहीं है और यदि आपको लड़कियां पसन्द हैं—और किसे पसन्द नहीं होतीं!—और फिर भी आप अपनी स्थिति का फायदा न उठायें तो आप सचमुच बेवकूफ ही होंगे। कुछ लड़कियां आपकी और आपकी शक्ति और सत्ता के कारण आकर्षित होंगी और अन्य भय के कारण। तो कहीं आपकी मुलाकात किसी लड़की से होती है और वह आपको पसन्द आ जाती है। वह आपकी हो जाएगी। किसी भी बात का भय न करो; वह आपके चंगुल से बचकर नहीं निकल सकती। किसी दूसरे आदमी की पत्नी पर आपकी नजर पड़ जाती है, वह आपको भा जाती है! वह आपकी हो जाएगी! क्योंकि, आखिरकार, पति को रास्ते से हटा देने की कोई भी समस्या नहीं है।[12] नहीं, सचमुच कोई समस्या नहीं है। नीली टोपी वाला होने का क्या अर्थ होता है, इसका अनुभव केवल नीली टोपी वाला बनकर ही किया जा सकता है! आप जिस बात पर भी नज़र डालते हैं वह आपकी हो जाती है। जिस किसी मकान पर आप नज़र डालते हैं वह आपको मिल जाता। कोई भी औरत आपकी हो जाती है। किसी भी शत्रु को आपके रास्ते से सदा सर्वदा के लिए हटाया जा सकता है। आपके पांव के नीचे की धरती पर आपका ही अधिकार है; सिर के ऊपर आकाश भी आपका ही है—आखिरकार इसका रंग भी तो आपकी नीले आसमानी रंग की टोपी जैसा ही हैं!

वे लोग अपने लिए अधिक से अधिक लाभ बटोरने के लिए पागल रहते थे, निरन्तर तत्पर रहते थे। आखिरकार, किसी भी निगरानी के अभाव में, ऐसी शक्ति का अनिवार्य प्रयोग स्वयं को अमीर बनाने के लिए ही तो किया जाता था। इससे दूर रहना तभी सम्भव था कि कोई पूछताछ अफसर सन्तों की तरह पवित्र हो!

यदि हम विभिन्न व्यक्तियों की गिरफ्तारी के पीछे छिपी प्रेरणा का अनुसंधान करने में सफल हो जाएं, तो हमें यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य होगा कि सामान्य गिरफ्तारियों पर लागू होने वाले नियमों के आधार पर, ७५ प्रतिशत मामलों में इस बात का निर्धारण कि किस-किस व्यक्ति को गिरफ्तार किया जाना चाहिए, मनुष्य के लालच और बदले की भावना के आधार पर ही होता था; और इस ७५ प्रतिशत में से आधे लोग ऐसे होते थे, जिनकी गिरफ्तारी के परिणामस्वरूप स्थानीय एन० के० वी० डी० के अफसरों को भौतिक लाभ प्राप्त होता था (और, हां, सरकारी वकील को भी लाभ मिलना जरूरी था, क्योंकि जहां तक लाभ का सम्बन्ध है, मैं पूछताछ अधिकारी और सरकारी वकील में कोई अन्तर नहीं करता।)

उदाहरण के लिए, वी० जी० व्लासोव की गुलाग द्वीपसमूह की १९ वर्ष की यात्रा का समारम्भ किस प्रकार हुआ? जिला उपभोक्ता सहकारियों का अध्यक्ष होने के नाते, उसने स्थानीय पार्टी संगठन के कार्यकर्ताओं को कपड़े की बिक्री की व्यवस्था की। (यह कपड़ा इस किस्म का था कि इसे आज कोई छूना भी पसन्द नहीं करेगा। इस तथ्य से कोई भी

चिंतित नहीं था कि यह बिक्री जन-सामान्य के लिए खुली नहीं है। लेकिन सरकारी वकील की पत्नी को कपड़ा नहीं मिल सका : वह उस समय वहां नहीं थी; सरकारी वकील रूसोव स्वयं दुकान पर नहीं जाना चाहता था; और व्लासोव ने यह कहने की दूरदर्शिता नहीं दिखाई : "कोई बात नहीं, मैं कुछ कपड़ा आपके लिए अलग रख दूंगा।" (वास्तव में, व्लासोव का चरित्र ऐसा था कि वह किसी भी स्थिति में यह नहीं कह सकता था)। इसके अलावा सरकारी वकील रूसोव ने अपने एक मित्र को उस कक्ष में रात्रि के भोजन के लिए आमंत्रित किया था, जो पार्टी के उच्च कार्यकर्ताओं के लिए ही सुरक्षित था — १९३० के बाद के वर्षों में ऐसे सुरक्षित कक्षों की व्यवस्था थी। सरकारी वकील का यह मित्र इतने ऊंचे पद पर नहीं था कि उसे इस कक्ष में भोजन के लिए जाने दिया जा सकता और भोजन कक्ष के मैनेजर ने उसके लिए भोजन परोसने से इन्कार कर दिया। सरकारी वकील ने व्लासोव से कहा कि वह मैनेजर को सजा दे। लेकिन व्लासोव ने यह करने से इन्कार कर दिया। व्लासोव ने जिला एन० के० वी० डी० के अफसरों को भी इसी प्रकार अपमानित कर डाला। और इस प्रकार उसका नाम दक्षिणपंथी विरोधियों की सूची में जोड़ दिया गया।

नीली टोपी वालों की प्रेरणा और कार्य कभी-कभी इतने क्षुद्र होते हैं कि उन पर अत्यन्त आश्चर्य होता है। सुरक्षा अफसर सेनचेंको ने नक्शा रखने का एक डिब्बा और डाक भेजने वाला एक डिब्बा एक गिरफ्तार अफसर से ले लिया और स्वयं इस गिरफ्तार अफसर की मौजूदगी में ही इनका इस्तेमाल करने लगा और इसी प्रकार सामान की सूची में हेरफेर करके उसने एक दूसरे कैदी से एक जोड़ा विदेशी दस्ताने भी हासिल कर लिये। (जब सेनाएं शत्रु के प्रदेश में आगे बढ़ती थीं, तो नीली टोपी वालों को इस कारण से विशेष खीझ होती थी कि उनको लूट का माल बटोरने में कुछ प्रतीक्षा करनी पड़ती थी और उनका नम्बर दूसरे स्थान पर आता था और इस प्रकार वे मनमाना चुनाव नहीं कर पाते थे।) ४९वीं सेना के जिस जासूसी विरोधी संगठन के अफसर ने मुझे गिरफ्तार किया था, उसकी आंख मेरे सिगरेट के डिब्बे पर लगी हुई थी—और यह सचमुच एक सिगरेट का डिब्बा ही नहीं था, बल्कि जर्मन सेना का एक छोटा सा बक्स था और इसका अत्यधिक आकर्षक लाल रंग था और इस मामूली सी चीज़ के लिये, इस तुच्छ वस्तु के लिये इस अफसर ने बड़ा लम्बा चौड़ा जाल बिछाया : पहले तो उसने इस बक्स को सामान की उस सूची में दर्ज नहीं किया, जो सामान मुझसे जब्त किया गया था। ("तुम इसे अपने पास रख सकते हो।") बाद में उसने एक बार फिर मेरी तलाशी लेने का हुक्म दिया, जबकि वह यह अच्छी तरह से जानता था कि मेरी जेब में केवल सिगरेट का यही डिब्बा मिलेगा। "अच्छा! यह क्या है? इसे ले जाओ!" और मेरी आपत्ति उठाने पर वह क्रोध से बोला : "इसे सजा की कोठरी में डाल दो!" (ज़ारशाही के ज़माने में पुलिस का कौन सा अफसर पितृभूमि की रक्षा करने वाले एक अफसर से इस तरह से आचरण करने का साहस कर सकता था?)

प्रत्येक पूछताछ अधिकारी को सिगरेटों का एक निश्चित कोटा मिलता था। ये सिगरेटें उन्हें स्वीकारोक्ति करने की इच्छा दिखाने वाले कैदियों को प्रोत्साहित करने और कैदियों के बीच मौजूद मुखबिरों को पुरस्कृत करने के लिये दी जाती थीं। कुछ अधिकारी ये सब सिगरेट स्वयं ही हजम कर जाते थे।

पूछताछ में कितना समय लगाया गया था, इसके बारे में भी वे धोखाधड़ी करते थे। उन्हें रात के समय काम का अधिक वेतन मिलता था। और हम यह देखा करते थे कि वे

रात के समय कितने घण्टे पूछताछ चली, इसका विवरण हमेशा बढ़ा-चढ़ा कर लिखते थे, इसमें अधिक घण्टों का उल्लेख किया जाता था, जबकि वास्तव में इतने समय पूछताछ नहीं होती थी।

पूछताछ अफसर फ्योदोरोव (रेशेती स्टेशन, पोस्ट बाक्स संख्या-२३५) ने एक स्वतंत्र व्यक्ति कोज़ूखिन के घर की तलाशी लेते समय एक कलाईघड़ी चुरा ली। लेनिनग्राद के घेरे के समय पूछताछ अफसर निकोलाई फ्योदोविच क्रुभकोव ने के० आई० स्त्राखोविच, जो कैद में थे और जिनसे पूछताछ चल रही थी, की पत्नी एलिज़ावेता विक्तोरोवना स्त्राखोविच से कहा: "मुझे लिहाफ की ज़रूरत है। एक ले आओ!" जब उसने यह उत्तर दिया: "हमारे सब गर्म कपड़े उस कमरे में बन्द हैं, जिसे उन्होंने मोहरबन्द कर दिया है।" तो वह उसके घर पहुंचा और ताले पर लगी राज्य सुरक्षा की मोहर को तोड़े बिना, दरवाजे के पूरे हेंडिल और ताले को पेंच निकाल कर अलग खोल लिया। (एम० जी० बी० इस प्रकार काम करती है, उसने बड़ी प्रसन्नता से कहा।) और वह कमरे के भीतर घुस गया तथा गर्म कपड़े बटोरने लगा। और साथ ही कुछ बढ़िया कांच का सामान भी अपनी जेब में डाल लिया। एलिजावेता भी जितना सामान बटोर सकती थी, बटोरने लगीं। लेकिन उसने उन्हें रोक दिया।[13] "तुम्हारे लिये इतना काफी है।"—और वह स्वयं सामान बटोरता रहा।

ऐसे अनन्त मामले हैं। इन मामलों के बारे में कम से कम एक हजार "श्वेत पत्र" जारी किए जा सकते हैं (और इन्हें सन् १९१८ से शुरू करना होगा)।

बस, आवश्यकता केवल इतनी होगी कि भूतपूर्व कैदियों और उनकी पत्नियों से विधिवत् जानकारी हासिल की जाये। हो सकता है कि ऐसे नीली टोपी वाले अफसर थे और हैं जिन्होंने कभी कोई चीज नहीं चुराई अथवा नाजायज़ तरीके से किसी चीज़ को नहीं हथियाया—लेकिन मेरे लिये ऐसे किसी अफसर की कल्पना कर पाना असम्भव है। मेरी समझ में बस यह बात आती ही नहीं: कि नीली टोपी वालों के जीवन दर्शन को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि यदि उन्हें कोई चीज़ पसन्द आ गई तो उसे प्राप्त करने से उन्हें किस प्रकार रोका जा सकता था? बहुत समय पहले, १९३० के बाद के आरम्भिक वर्षों में, जब हम सब लोग लाल युवक मोर्चे की जर्मन वर्दियों में इधर-उधर कवायद करते हुए, कूच करते हुए घूमते रहते थे और पहली पंच वर्षीय योजना को लागू करने में लगे थे, वे लोग कोनकोर्दिया आईओसी के घर पर उस प्रकार अपनी शाम बिताते थे, जिस प्रकार पश्चिम के अभिजातवंशी लोग ऐसे ही फैशनेबुल सैलूनों में अपनी शाम बिताते थे और उनकी स्त्री मित्र अपने विदेशी कपड़ों का प्रदर्शन करने में लगी रहती थी। उन्हें ये कपड़े कहां से मिलते थे?

उन लोगों के पारिवारिक नामों पर तो ज़रा गौर कीजिये—इन नामों पर नजर डालते ही यह विचार मन में उठता है कि इन नामों के कारण ही इन लोगों को इन संगठनों में भरती किया गया। उदाहरण के लिये, केमेरोवो प्रान्त के राज्य सुरक्षा प्रशासन में इन नामों वाले अफसर थे: त्रुतनेव अर्थात् "बर्र" नाम का एक सरकारी वकील; पूछताछ अनुभाग का प्रमुख अफसर मेजर शकुर्किन अथात् "स्वार्थी"; उसका सहायक अफसर, लैफ्टिनेंट बलानदिन अर्थात् "संकट-ग्रस्त"; और एक पूछताछ अफसर स्कोरोखवातोव अर्थात् "झपट्टा मारने वाला"। अब आप ही बताइये कि क्या इनसे अधिक उपयुक्त नामों की ईजाद कोई व्यक्ति कर सकता है? और ये सब लोग एक साथ वहां मौजूद थे! (शायद वोलकोपई-

लोव—अर्थात् "भेड़िये की खाल कमाने वाला"—अथवा ग्रेबिशचेंको—अर्थात् "लुटेरा" का फिर उल्लेख करने की जरूरत नहीं है) क्या हम यह मान लें कि लोगों के पारिवारिक नामों के माध्यम से कुछ भी अभिव्यक्ति नहीं होता और एक ही स्थान पर ऐसे नामों का एकत्र हो जाने का भी कोई अर्थ नहीं होता?

एक बार फिर कैदी की स्मृति धोखा दे जाती है। आई० कोरनेएव राज्य सुरक्षा संगठन के उस कर्नल का नाम भूल गये हैं, जो कोनकोर्दिया आइओसी का भी दोस्त था। (ये दोनों इस स्त्री को जानते थे, यह बात आगे चलकर स्पष्ट हुई)। यह कर्नल व्लादिमिर हिरासत जेल में कोरनेएव के साथ ही कैद था। यह कर्नल सत्ता और व्यक्तिगत लाभ की प्रबल इच्छा का जीता जागता उदाहरण था। सन् १९४५ के आरम्भ में, "युद्ध कालीन लूट" की अवधि के सर्वोच्च दौर में, उसने सुरक्षा संगठनों के उस अनुभाग में अपनी नियुक्ति करा ली, जिसका अध्यक्ष स्वयं अबाकुमोव था और जिस अनुभाग का काम लूटपाट के ऊपर नजर रखना समझा जाता था—दूसरे शब्दों में, इन लोगों ने स्वयं अपने लिये अधिक से अधिक माल लूटने की कोशिश की, राज्य के लिये नहीं। (और इस काम में उन्हें जबर्दस्त कामयाबी भी हासिल हुई।) हमारे इस 'वीर नायक' ने इतना सामान लूटा कि कई माल के डिब्बे भर गये और वह देहाती इलाकों में कई मकान बनाने में कामयाब हुआ। इनमें से एक मकान क्लिन में है। युद्ध के बाद उसने इतने बड़े पैमाने पर काम करना शुरू कर दिया कि जब वह नोवोसीबिर्स्क स्टेशन पर पहुंचा तो उसने हुक्म दिया कि स्टेशन के रेस्टोरेंट से सब ग्राहकों को बाहर निकाल दिया जाये। इसके बाद उसने सब लड़कियों और स्त्रियों को पकड़वा कर मंगवा लिया और उन्हें एकदम नग्न अवस्था में रेस्टोरेंट की मेजों पर चढ़कर नाचने के लिए बाध्य किया, ताकि उसका और शराबखोरी के उसके साथियों का मनोरंजन हो सके। इस कारवाई के बाद भी उसका कुछ न बिगड़ता, लेकिन उसने एक अत्यन्त महत्व-पूर्ण नियम का उल्लंघन किया। क्रुभकोव की तरह ही उसने स्वयं अपने लोगों, अपने संगठन के लोगों के विरुद्ध काम किया। क्रुभकोव ने सुरक्षा संगठनों को धोखा दिया था। और सम्भवतः इस कर्नल ने इससे भी बुरा काम किया। उसने ये शर्तें लगाईं कि वह किस-किस व्यक्ति की पत्नी को अपने साथ सुला सकता है और इनमें केवल सामान्य लोगों की ही पत्नियां नहीं थीं, बल्कि सुरक्षा पुलिस के उसके अपने सहयोगियों की पत्नियां भी थीं। और इसके लिये उसे क्षमा नहीं किया गया! उसे अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत एक राजनीतिक जेल में सज़ा काटने का दण्ड सुनाया गया और वह इस बात पर क्रोध प्रकट करते हुए कि उन लोगों ने उसे गिरफ्तार करने का दुस्साहस कैसे दिखाया सज़ा काटता रहा। उसे इस बात पर जरा भी संदेह नहीं था कि वे लोग उसके बारे में अपना निर्णय बदल देंगे। (और सम्भवतः उन्होंने बदल भी दिया हो।)

यह भयंकर नियति—स्वयं जेलों में डाल दिया जाना—नीली टोपी वालों के लिये कोई दुर्लभ या असम्भव बात नहीं थी। ऐसी कोई पक्की व्यवस्था नहीं थी, जिसके द्वारा इससे बचा जा सकता हो। पर न जाने क्यों ये लोग अतीत से सबक सीखने में बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन न कर सके। इसका कारण भी यही हो सकता है कि शायद उनमें तर्क करने की उच्च शक्ति मौजूद नहीं थी! उनकी नीचे दर्जे की बुद्धि उन्हें यही बताती: यह यदाकदा ही होता है, बहुत थोड़े से लोग ही पकड़े जाते हैं; इससे मैं बच सकता हूं; मेरे दोस्त मुझे धोखा नहीं देंगे।

सचमुच दोस्तों ने सदा यह प्रयास किया कि अपने आदमियों को कठिनाईमें न फंसने दें। इन लोगों के बीच एक दूसरे से सहयोग करने का मूक समभौता था। ये लोग कम से कम मित्रों के लिये तो अच्छी परिस्थिति उपलब्ध करा ही देते थे। (उदाहरण के लिए मारफीनो विशेष जेल में कर्नल आइ० वी० वोरोबएव के साथ यही हुआ और वी० एन० इलिन के साथ भी जिसने लूबयांका में आठ वर्ष से अधिक समय बिताया।) इन लोगों की जातीय भावना का धन्यवाद किया जाना चाहिये कि जिन लोगों को व्यक्तिगत खामियों के परिणाम स्वरूप गिरफ्तार किया गया, उनका जेलों में बुरा हाल नहीं हुआ। और यही कारण था कि वे अपने सेवाकाल में रोज़मर्रा के काम में सज़ा से पूरी तरह मुक्ति की अपनी भावना का औचित्य सिद्ध कर पाते थे। लेकिन ऐसे अनेक मामलों का भी ज्ञान है, जिनमें शिविरों के सुरक्षा अफसरों को अपनी सज़ा काटने के लिये साधारण शिविरों में भेज दिया गया था। ऐसे उदाहरण भी हैं कि कैदियों के रूप में इन सुरक्षा पुलिस के अफसरों का सामना उन कैदियों से हुआ, जो किसी समय पूरी तरह उनके शिकंजे में थे और इस सामने के परिणामस्वरूप इन भूतपूर्व पुलिस अफसरों का बुरा हाल हुआ। उदाहरण के लिए, सुरक्षा अफसर मुन्शिन का उल्लेख किया जा सकता है। वह अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत कैद लोगों से विशेष रूप से घृणा करता था और आदतन चोरी करने वाले ब्लातन्ये के सहयोग से शिविर में रहता था। लेकिन अन्ततः इन्हीं चोरों ने उसका बुरा हाल किया। पर हमारे पास वे साधन नहीं हैं, जिनके द्वारा हम ऐसे मामलों के बारे में और अधिक विवरण प्राप्त कर सकें और इनका स्पष्टीकरण दे सकें।

लेकिन जो गेबिस्ती--राज्य सुरक्षा अफसर—किसी लहर के अन्तर्गत गिरफ्तार होते थे, उनके समक्ष गम्भीर खतरा रहता था। (इन लोगों की भी अपनी लहरें आई थीं!) एक लहर एक स्वाभाविक विनाशकारी घटना होती है और यह स्वयं सुरक्षा संगठनों से कहीं अधिक शक्तिशाली होती है। इस स्थिति में कोई भी अफसर किसी दूसरे की सहायता करने को तैयार नहीं होता क्योंकि उसे स्वयं भंवर में फंस जाने का भय लगा रहता है।

इस बात की संभावना रहती थी कि यदि आपको अच्छी जानकारी रहती और आप में चेका के कर्मचारी की तीव्र संवेदनशीलता होती तो आप अन्तिम क्षण में भी भंवर में फंसने से बच सकते थे और आप यह कार्य यह सिद्ध करके कर सकते थे कि आपका उन लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं रहा, जो इस लहर का शिकार बने। इस सम्बन्ध में कैप्टेन साएंको का उदाहरण दिया जा सकता है, जिसने प्यार के कारण चीनी पूर्वी रेल विभाग की एक भूतपूर्व कर्मचारी कोखांस्काया से विवाह करने की कमजोरी दिखाई (कैप्टेन साएंको खोरकोव का वह बढ़ई नहीं है, जो १९१८-१९१९ में चेका में रहा और जिसने अपनी पिस्तौल से कैदियों को मौत के घाट उतारने, अपने भाले से कैदियों के शरीर को क्षतविक्षत कर डालने, पांव की हड्डियों को तोड़ डालने, अत्यधिक वज़न डाल कर सिरों को कुचल डालने और लोहे की तपती हुई छड़ों से लोगों को दाग देने के लिये नाम कमाया।[१४] हो सकता है कि यह कैप्टेन उसका कोई रिश्तेदार हो।) अचानक कैप्टेन साएंको को इस बात का पता चल गया लहर शुरू होते ही इस बात की जानकारी मिल गई कि चीनी पूर्वी रेल विभाग के सब कर्मचारियों को गिरफ्तार किया जायेगा। उस समय वह आर्चएंजेल जी० पी० यू० के सुरक्षा कार्य विभाग का अध्यक्ष था, उसने क्या किया? उसने स्वयं अपनी प्रिय पत्नी को गिरफ्तार कर लिया? और उसे चीनी पूर्वी रेल विभाग की भूतपूर्व कर्मचारी होने के आधार पर नहीं,

बल्कि एक ऐसे झूठे मामले के आधार पर गिरफ्तार किया गया जो पति महोदय ने स्वयं तैयार किया था। इस प्रकार उसने केवल स्वयं को बचा ही नहीं लिया, बल्कि उसकी पदोन्नति भी हुई और वह तोमस्क प्रान्त की एन० के० वी० डी० का अध्यक्ष बन गया।[१५]

इन लहरों का समारम्भ सुरक्षा संगठनों के अपने नवीकरण के गुप्त कानून के अन्तर्गत होता था—यह एक छोटा और समय-समय पर दिया जाने वाला बलिदान होता था, ताकि शेष लोग यह स्वांग रच सकें कि वे एकदम शुद्ध हो गये हैं। सुरक्षा संगठनों में उससे कहीं अधिक तेज़ी से कर्मचारियों को बदलने की आवश्यकता होती थी, जितनी गति से मानव विकास की सामान्य गति और वृद्धावस्था के कारण अवकाश प्राप्ति के द्वारा की जा सकती थी। जो अदम्य प्रेरणा एक बड़ी मछली को नदी की धारा के विपरीत तैरने और इस प्रकार कम गहरे पानी में पहुंच कर नष्ट हो जाने के लिये बाध्य करती है, और उसका स्थान छोटी-छोटी मछलियों के समूह ले लेते हैं, उसी प्रकार गेबिस्ती अर्थात् राज्य सुरक्षा अफसरों के कुछ "समूहों" को भी अपना बलिदान देने के लिये बाध्य होना पड़ता था। यह नियम किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति के समक्ष आसानी से स्पष्ट हो सकता था। लेकिन ये नीली टोपी वाले अपने अस्तित्व के तथ्य को स्वीकार करने और इसके निवारण की व्यवस्था करने के लिये तैयार नहीं थे। इसके बावजूद उनके भाग्य में बदा वह अनिवार्य क्षण भी आता, सुरक्षा संगठनों के बादशाह, सुरक्षा संगठनों के इक्के और यहां तक कि स्वयं मंत्री तक अपनी तलवार के नीचे अपनी गर्दन रख देते थे।

यगोदा स्वयं अपने साथ गेबिस्ती के एक समूह को ले गया था। इस बात में संदेह नहीं है कि ऐसे अनेक लोग, जिनके गरिमापूर्ण नामों को हम श्वेत सागर नहर पर विचार के समय प्रशंसा के भाव से देखेंगे, इसी लहर की भेंट चढ़े और इसके बाद इन लोगों के नाम उस सूची से काट दिये गये, जिस सूची में शामिल लोगों की प्रशंसा में कविताएं लिखी जा सकती हैं।

इसके कुछ ही समय बाद, एक दूसरा समूह कम समय तक सिंहासनरूढ़ रहने वाले येझोव के साथ ही समाप्त हो गया। इस लहर में सन् १९३७ के कुछ सर्वोत्तम पुलिस अफसर गायब हो गये, जो मनमाने आचरण के लिए प्रसिद्ध थे। (लेकिन इसके बावजूद हमें इनकी संख्या को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाने के खतरे से सावधान रहना चाहिए। इस लहर में सब सर्वोत्तम अफसर शामिल नहीं थे।) पूछताछ के दौरान स्वयं येझोव को मारा-पीटा गया था। वह दयनीय हो उठा था। और गिरफ्तारियों की इस लहर के दौरान गुलाग द्वीपसमूह अनाथ हो गया था। उदाहरण के लिए येझोव के साथ गुलाग के वित्त प्रशासन के अध्यक्ष, गुलाग के चिकित्सा प्रशासन के अध्यक्ष, गुलाग के सन्तरी सेवा के अध्यक्ष,[१६] और यहां तक कि गुलाग के सुरक्षा कार्यविभाग के अध्यक्ष तक को गिरफ्तार कर लिया गया था। सुरक्षा कार्य विभाग का अध्यक्ष शिविर के "संरक्षकों" के काम की निगरानी करता था।

और इसके बाद बेरिया की टोली की बारी आई।

इससे पहले, अलग से, लालची और गर्वोन्मत अबाकुमोव का पतन हो चुका था।

किसी दिन,—यदि पुरालेख संग्रहालयों को नष्ट नहीं कर दिया गया—सुरक्षा संगठनों के इतिहासकार विधिवत्, एक-एक करके समस्त प्रसिद्ध नामों का उल्लेख करेंगे।

अत: मैं र्‍यूमिन और अबाकुमोव के बारे में वह किस्सा संक्षेप से लिखना चाहूंगा, जिसकी मुझे संयोगवश ही जानकारी मिली। मैंने उन लोगों के बारे में अपने उपन्यास दि फर्स्ट-

सकिल में जो कुछ लिखा है, उसकी पुनरावृत्ति नहीं करूंगा।

अबाकुमोव ने र्‌यूमिन को बहुत ऊंचा उठा दिया था और वह उसके बहुत समीप था। सन् १९५२ के अन्त में, वह एक डाक्टर प्रोफेसर एतिंजर के बारे में एक सनसनीखेज रिपोर्ट लेकर पहुंचा कि इस डाक्टर ने इस बात की स्वीकारोक्ति की है कि उसने झदानोव और शचेरबाकोव की चिकित्सा के दौरान उनकी हत्या के उद्देश्य से गलत चिकित्सा की। अबाकुमोव ने इस पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। वह इस पूरी जालसाज़ी से परिचित था और वह इस निर्णय पर पहुंचा कि अब र्‌यूमिन ज़रूरत से ज्यादा आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है। (लेकिन र्‌यूमिन को इस बात का बेहतर ज्ञान था कि आखिर स्तालिन क्या चाहता है।) इस बात की पुष्टि के लिये उन लोगों ने उसी शाम एतिंजर से फिर पूछ-ताछ करने की व्यवस्था की। लेकिन इन दोनों ने एतिंजर के बयानों के भिन्न-भिन्न निष्कर्ष निकाले। अबाकुमोव ने निष्कर्ष निकाला और निर्णय दिया कि "डाक्टरों के मामले" जैसी कोई बात नहीं है और र्‌यूमिन का निष्कर्ष था कि यह मामला मौजूद है। और अगले दिन सुबह इसकी पुष्टि के लिये एक और प्रयास किया जाना था, लेकिन रात्रिकालीन संस्था के चमत्कारपूर्ण गुणों के कारण एतिंजर उसी रात मर गया। अगले दिन सुबह, र्‌यूमिन ने अबाकुमोव की उपेक्षा करते हुए और उसकी जानकारी के बिना ही, केन्द्रीय समिति को टेलीफोन किया और स्तालिन से भेंट करने का समय मांगा! (मेरी राय में यह उसका सर्वाधिक निर्णायक कदम नहीं था। र्‌यूमिन का निर्णायक कदम, जिसके बाद स्वयं उसकी जान जोखिम में फंस गई थी, अबाकुमोव से सहमत न होना था—और सम्भवत: उसी रात एतिंजर को मरवा डाल कर भी उसने निर्णायक कदम उठाया था। उन अहतों के रहस्यों की जानकारी किसे है! क्या र्‌यूमिन का स्तालिन से सम्पर्क इससे पहले ही हो चुका था?) स्तालिन ने र्‌यूमिन को मुलाकात का समय दिया, "डाक्टरों के मामले" को गतिशील बनाया और अबाकुमोव को गिरफ्तार करवा लिया। इस क्षण से यह दिखाई पड़ता था कि र्‌यूमिन ने "डाक्टरों के मामले" का संचालन बेरिया से स्वतंत्र रह कर और बेरिया की इच्छा के विपरीत किया! स्तालिन की मृत्यु से पहले इस बात के लक्षण दिखाई पड़ने लगे थे कि बेरिया खतरे में है और सम्भवत: स्वयं बेरिया ने ही स्तालिन को मरवा डालने की व्यवस्था की। नई सरकार ने जो पहले कदम उठाये उनमें "डाक्टरों के मामले" को भी रद्द कर दिया गया। उसी समय र्‌यूमिन को गिरफ्तार कर लिया गया (उस समय तक बेरिया सत्ता में बना हुआ था), लेकिन अबाकुमोव को रिहा नहीं किया गया! लूबयांका जेल में नया आदेश लागू किया गया। और इस जेल के अस्तित्व की समस्त अवधि में पहली बार एक सरकारी वकील डी० तेरेखोव ने इसकी ड्योढी को लांघा। कैदी र्‌यूमिन घबराया हुआ था और बहुत खुशामद के स्वर में बोला: "मैं दोषी नहीं हूं। मुझे अकारण ही गिरफ्तार किया गया है।" उसने यह मांग की कि उससे पूछताछ की जाये। जैसी कि उसकी आदत थी, वह उस समय भी एक मिठाई का टुकड़ा चूस रहा था और जब सरकारी वकील तेरेखोव ने इसके लिये उसे भला बुरा कहा तो उसने उस मिठाई के टुकड़े को अपनी हथेली पर थूक दिया! "मुझे इसके लिए क्षमा करें।" जैसाकि हम पहले ही बता चुके हैं, अबाकुमोव जोर-जोर से हंसने लगा: "सब बेकार की बातें हैं!" तेरेखोव ने उसे वह दस्तावेज दिखाया, जिसमें उसे यह अधिकार दिया गया था कि वह राज्य सुरक्षा मन्त्रालय की आन्तरिक जेल का निरीक्षण कर सकता है। अबाकुमोव ने इस कागज को झटके से एक तरफ हटाते हुए कहा: "तुम जालसाजी से

ऐसे ५०० कागज़ तैयार कर सकते हो !" अपने संगठन के प्रति "प्रबल भक्ति" रखने के कारण, उसे इस बात पर इतना क्रोध नहीं था कि वह जेल में डाल दिया गया है, बल्कि सुरक्षा संगठनों की सत्ता का जिस प्रकार उल्लंघन हो रहा था, उससे वह क्रोधित और दुखी था, क्योंकि उसकी राय में सुरक्षा संगठन संसार में किसी भी वस्तु के अधीन नहीं हो सकते ! जुलाई १९५३ में र्‌यूमिन के ऊपर मास्को में मुकद्दमा चलाया गया और उसे गोली से उड़ा दिया गया। और अबाकुमोव जेल में ही रहा ! पूछताछ के एक दौर में उसने तेरेखोव से कहा : "तुम्हारी आंखें बेहद सुन्दर हैं। तुम्हें गोली से उड़ाते समय मुझे दुख होगा।" मेरे मामले में हाथ मत डालो। समय रहते इससे अलग हट जाओ।" एक और अवसर पर तेरेखोव ने उसे अपने कमरे में बुलाया और उसे वह अखबार दिया जिसमें बेरिया का भण्डाफोड़ होने की घोषणा की गई थी। उस समय सचमुच व्यापकतम उथल-पुथल हो रही थी। अबाकुमोव ने इसे पढ़ा और अपने चेहरे पर किसी भी प्रकार का भाव प्रकट किए बिना ही, पन्ना उलटा और खेलों सम्बन्धी समाचार पढ़ने लगा ! एक अन्य अवसर पर, पूछताछ के दौरान एक उच्च सुरक्षा पुलिस अधिकारी की मौजूदगी में, जो अधिकारी हाल तक उसके अधीन रहा था, अबाकुमोव ने पूछा : "तुमने इस बात की कैसे अनुमति दी कि बेरिया के मामले की पूछताछ एम० जी० बी० न करे और यह काम सरकारी वकील के दफ्तर को सौंप दिया जाए ?" (स्वयं उसके अधिकार क्षेत्र में जो कुछ रहा था उसका इस प्रकार हाथ से निकल जाना उसे बार-बार कचोट रहा था।) वह आगे बोला। "क्या तुम सचमुच इस बात पर विश्वास करते हो कि वे लोग मेरे ऊपर, राज्य सुरक्षा मंत्री के ऊपर मुकदमा चलायेंगे ?" इसका उत्तर था "हां !" और वह जवाब में बोला : "तो आप अपना बड़ा टोप (शोक के अवसरों पर पहने जाने वाला टोप) पहन सकते हैं ! सुरक्षा संगठन समाप्त हो गए हैं !" (वास्तव में वह आवश्यकता से अधिक निराश हो उठा था, क्योंकि वह अशिक्षित संदेशवाहक भर जो था।) लेकिन जब वह लूबयांका में था, तो उसे मुकदमा चलाये जाने का भय नहीं था, बल्कि जहर देकर मार दिये जाने का भय था। (इससे भी यह स्पष्ट होता है कि वह सुरक्षा संगठनों का कैसा सच्चा सपूत था !) वह जेल का खाना खाने से इनकार करने लगा और केवल उन्हीं अण्डों पर गुज़ारा करता, जिन्हें वह जेल की दुकान से खरीदता था। (इस मामले में उसने केवल तकनीकी कल्पना की कमी का ही प्रदर्शन किया। वह सोचता था कि अण्डों में जहर नहीं मिलाया जा सकता।) लूबयांका के जबर्दस्त पुस्तकालय से वह जो पुस्तकें लेता था, वे पुस्तकें, चाहे आप विश्वास करें अथवा नहीं, केवल स्तालिन द्वारा लिखित पुस्तकें ही होती थीं। (जबकि स्तालिन ने ही उसे जेल में डाला था।) लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि वह यह कार्य दिखावे भर के लिए करता था। यह निष्कर्ष निकालकर उसने यह नहीं किया कि अन्ततः स्तालिन के अनुयाइयों का ही सत्ता पर अधिकार होगा। वह दो वर्ष तक जेल में रहा। उन लोगों ने उसे रिहा क्यों नहीं किया ? यह बचकाना सवाल नहीं है। मानवता के विरुद्ध उसने जो अपराध किये थे, उन्हें देखते हुए वह सिर तक रक्त में डूबा हुआ था। लेकिन ये अपराध करने वाला वह अकेला नहीं था ! और अन्य सब लोग सही सलामत बच निकले। यहां भी एक रहस्य छिपा हुआ है : इस आशय की एक अस्पष्ट अफवाह है कि अपने ज़माने में उसने स्वयं व्यक्तिगत रूप से ख्रुश्चेव के बड़े बेटे की पत्नी, ख्रुश्चेव की बहू ल्यूबा सेदिख को मारा पीटा था। ख्रुश्चेव के इस बड़े बेटे को स्तालिन के ज़माने में एक दण्डित बटालियन में रखा गया था और उसके परिणामस्वरूप वह मौत के मुंह

में चला गया था। और इस प्रकार यह अफवाह हमें बताती है कि स्तालिन के जमाने में गिरफ्तार होने के बावजूद ख्रुश्चेव के शासनकाल में उसके ऊपर लेनिनग्राद में मुकदमा चलाया गया और उसे १८ दिसम्बर १९५४ को गोली से उड़ा दिया गया।[१८] लेकिन ऐसा कोई कारण नहीं था, जिस पर अबाकुमोव इस प्रकार उदासीन होता : उसकी मृत्यु के बाद भी सुरक्षा संगठन नष्ट नहीं हुए।



एक कहावत है : यदि आप भेड़िए के पक्ष में कुछ कहें, तो उसके विरोध में भी कुछ कहना ज़रूरी है।

हमारे देशवासियों के मध्य भेड़िये की यह जाति कहां से उत्पन्न हो गई ? क्या यह स्वयं हमारे मूल से ही उत्पन्न हुई ? क्या स्वयं हमारे रक्त ने ही इसे जन्म दिया ?

हां, यह हमारी ही है।

अत: यह आवश्यक है कि हम लोग न्यायप्रिय लोगों के रूप में इधर-उधर शेखी बघारते हुए न घूमें और प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से यह प्रश्न भी पूछना चाहिए : "यदि मेरे जीवन ने एक भिन्न मोड़ ले लिया होता, तो क्या मैं स्वयं भी एक ऐसा जल्लाद नहीं बन जाता ?"

यदि कोई व्यक्ति ईमानदारी से उत्तर दे तो यह एक भयंकर प्रश्न है।

मुझे सन् १९३८ की बसन्त ऋतु में विश्वविद्यालय में तीसरे वर्ष का स्मरण है। युवक कम्युनिस्ट पार्टी कोमसोमोल के हम युवक सदस्यों को जिले की कोमसोमोल समिति के समक्ष एक नहीं बल्कि दो बार पेश होने के लिए बुलाया गया। हमारी सहमति प्राप्त करने की चिन्ता किए बिना ही उन लोगों ने अर्जी के फार्म हमारे सामने रख दिए। आप लोग पर्याप्त भौतिकी, गणित और रसायन शास्त्र पढ़ चुके हैं। आपके देश के लिए यह अधिक महत्वपूर्ण है कि आप एन० के० वी० डी० के स्कूल में भर्ती हों। (सदा ऐसा ही होता है। किसी व्यक्ति को आपकी आवश्यकता नहीं होती; सदा आपकी मातृभूमि को ही आपकी आवश्यकता होती है। और सदा कोई न कोई अधिकारी ही आपकी मातृभूमि की ओर से बोलता है और यह अधिकारी ही यह जानता है कि मातृभूमि को किस बात की आवश्यकता है।)

एक वर्ष पहले, जिला समिति ने युवक विद्यार्थियों के मध्य वायु सेना के स्कूलों में भर्ती का अभियान चलाया था। हम इस बार भी इससे बच निकले थे, क्योंकि हम विश्वविद्यालय छोड़कर नहीं जाना चाहते थे—लेकिन उस बार हमने भर्ती के अभियान का इतनी दृढ़ता से बचाव नहीं किया था, जितना इस बार किया।

२५ वर्ष बाद हम यह सोच सकते हैं : हां, ठीक है, हमें उस समय भी इस बात की जानकारी थी कि वे लोग किस तरह गिरफ्तारियां कर रहे हैं और हम इस तथ्य से भी परिचित थे कि वे लोग कैदियों को जेलों में यातनाएं दे रहे हैं और हम इस बात से भी परिचित थे कि एन० के० वी० डी० में भर्ती करके वे हमें किस गन्दगी में घसीट लेना चाहते हैं। लेकिन यह कथन ज़रा भी सही नहीं होगा ? आखिरकार ब्लैकमारिया नामक गाड़ियां केवल रात के समय ही सड़कों पर चलती थीं और हम वे ही युवक थे, जो दिन के समय

हाथों में झण्डे लेकर सड़कों पर प्रदर्शन करते थे, नारे लगाते थे। हमें उन गिरफ्तारियों के बारे में कोई भी जानकारी कैसे हो सकती थी और हम उन गिरफ्तारियों के बारे में सोचते भी क्यों ? सब प्रान्तीय नेताओं को हटा दिया गया था, लेकिन जहां तक हमारा सम्बन्ध था इस बात का कोई महत्व नहीं था। दो या तीन प्रोफेसरों को भी गिरफ्तार कर लिया गया था, लेकिन आखिरकार ये लोग नृत्यों में हमारे साथ सम्मलित होने वाले हमारे दोस्त नहीं थे। और इसके परिणामस्वरूप शायद परीक्षाएं पास करना अधिक आसान हो गया था। हम २० वर्षीय युवक, उन लोगों की कतारों में मार्च करते थे, जिनका जन्म क्रांति के वर्ष में हुआ था और क्योंकि हम लोगों की उम्र उतनी ही थी जितनी की क्रांति की। अतः हमारे समक्ष उज्जवलतम भविष्य खुला पड़ा था।

हमारे लिए आन्तरिक प्रेरणा के उस स्रोत का ठीक-ठीक पता लगा पाना बड़ा कठिन होगा, जो किसी तार्किकता पर आधारित नहीं थी, लेकिन जिसने हमें एन० के० वी० डी० के स्कूलों में भर्ती होने से इन्कार करने की प्रेरणा दी। यह निश्चय है कि हमें यह प्रेरणा ऐतिहासिक भौतिकवाद पर होने वाले भाषणों से प्राप्त नहीं हुई थी : इन भाषणों में यह स्पष्ट किया जाता था कि आन्तरिक शत्रु के विरुद्ध संघर्ष एक निर्णायक युद्ध है, युद्ध का मोर्चा है, और इसमें हिस्सा लेना सम्मान की बात है। हमारा निर्णय स्वयं हमारे भौतिक हितों के भी विपरीत था : उस समय हम जिस प्रान्तीय विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे थे, उसकी पढ़ाई पूरी करने के बाद हमें अधिक से अधिक किसी सुदूर क्षेत्र में किसी ग्रामीण स्कूल में अत्यन्त कम वेतन पर अध्यापक का काम मिल सकता था। एन० के० वी० डी० का स्कूल हमारे समक्ष विशेष राशन और दुगना यहां तक कि तिगुना वेतन उपलब्ध कराने का प्रलोभन प्रस्तुत कर रहा था। शब्दों के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति देना संभव नहीं था—और यदि हम शब्दों को खोज भी निकालते तो भी भय के कारण हम एक-दूसरे के समक्ष उन शब्दों का उच्चारण नहीं कर सकते थे। हमारे मस्तिष्क ने इसका प्रतिरोध नहीं किया, बल्कि हमारे हृदय की गहराई में छिपी हुई किसी वस्तु ने इसका निषेध किया, नकार किया। चारों ओर से लोग चिल्ला-चिल्लाकर यह सलाह दे सकते थे : "तुम्हें अवश्य भर्ती होना चाहिए।" और स्वयं आपका अपना मस्तिष्क भी यह कह सकता था : "तुम्हें अवश्य भर्ती होना चाहिए।" लेकिन आपके हृदय के भीतर जुगुप्सा का एक भाव उठता, इस विचार का निषेध करने वाली भावना उठती। मैं भर्ती नहीं होना चाहता, इस विचार से मुझे मतली आने लगती है। आप जो चाहें मेरे साथ व्यवहार कर सकते हैं, लेकिन मैं ऐसे किसी काम में हिस्सा लेने को तैयार नहीं हूं।

इस अन्तः प्रेरणा का जन्म बहुत समय पहले, संभवतः लेरमोनतोव के जमाने में हुआ था। यह भावना रूसी जीवन के उन दशकों में उत्पन्न हुई थी, जब किसी भी भद्र पुरुष के लिए पुलिस की सेवा से अधिक बुरी और गन्दी सेवा दूसरी नहीं थी और यह बात बहुत स्पष्ट रूप में कही जा सकती थी। नहीं, इस भावना का उदय इससे भी पहले हुआ था। अनजाने में ही हमें तांबे के उन मामूली से सिक्कों ने बचा लिया था, जो हमारे पुरखों के पास सोने के सिक्के खर्च करने के बाद बच रहे थे, यह वह जमाना था, जब नैतिकता को सापेक्ष नहीं समझा जाता था और जब भले और बुरे का अन्तर अत्यन्त सरल रूप में मनुष्य अपने हृदय से करता था।

इसके बावजूद हम लोगों में से कुछ को उस समय भर्ती कर लिया गया और मैं

सोचता हूं कि यदि वे लोग हमारे ऊपर सचमुच दबाव डालते तो वे हममें से प्रत्येक युवक के प्रतिरोध को समाप्त कर सकते थे। अतः मैं यह कल्पना करना चाहूंगा : कि यदि मैं उस समय भर्ती हो जाता तो युद्ध शुरू होने तक मैं एन० के० वी० डी० के अफसर के रूप में काम कर रहा होता। मैं अपनी नीली टोपी के ऊपर एन० के० वी० डी० के एक अफसर का तमगा लगाये होता और मैं क्या बन चुका होता ? वस्तुतः आजकल मैं स्वयं को यह कहकर आश्वस्त कर सकता हूं कि मेरा हृदय इन बातों को बर्दाश्त नहीं कर सकता था, कि मैं इन बातों के प्रति आपत्ति उठाता और किसी न किसी क्षण में यह काम करने से पूरी तरह इन्कार कर देता। लेकिन बाद में, जेल में एक लकड़ी के तख्ते पर लेटे हुए, मैंने एक अफसर के रूप में अपने कार्यकाल पर नजर डाली और मैं भयभीत हो उठा।

गणित का अध्ययन करते-करते पूरी तरह पस्त हो गए एक विद्यार्थी से मैं रातों-रात अफसर नहीं बन गया था। अफसर बनने से पहले मैंने आधे वर्ष का समय एक मामूली पददलित सैनिक के रूप में बिताया था। और कोई व्यक्ति यह सोच सकता है कि मेरे दिमाग में यह बात आई होगी कि ऐसे लोगों के आदेशों का पालन करना जो आपकी आज्ञाकारिता के योग्य नहीं है, कैसा लगता होगा और इतना ही नहीं भूखे रहकर इस प्रकार आज्ञा का पालन करना कैसा लगता होगा ? इसके बाद आधे वर्ष तक उन लोगों ने मुझे उम्मीदवार अफसरों के स्कूल में जबर्दस्त प्रशिक्षण के दौर में प्रायः टुकड़े-टुकड़े कर डाला। इस प्रकार मुझे सदा सर्वदा के लिए एक सामान्य सैनिक की कटुता को समझ लेना चाहिए था और मुझे यह स्मरण रखना चाहिए था कि स्वयं मेरी चमड़ी किस प्रकार ठण्डक में जम जाती थी और किस प्रकार मुझे भयंकर कष्ट उठाने पड़े। लेकिन क्या कभी मैंने यह आत्मसात किया, इसका स्मरण रखा ? एकदम नहीं। संतोष दिलाने के लिए उन लोगों ने मेरे कन्धे की पट्टियों पर दो छोटे-छोटे सितारे लगा दिए और इसके बाद तीसरा और फिर चौथा सितारा लगा दिया गया। और मैं यह पूरी तरह से भूल गया कि मैं इस मंजिल पर किस तरह पहुंचा हूं ?

काश ! मैं अपने विद्यार्थी जीवन के स्वतन्त्र जीवन के प्रेम को कायम रख पाता ? लेकिन आप जानते हैं, हमें यह कभी भी प्राप्त नहीं था। इसके स्थान पर हम लोग कतारें बनाकर खड़े हो जाने और कूच करने से प्रेम करते थे।

मुझे यह अच्छी तरह याद है कि उम्मीदवार अफसरों के स्कूल में प्रशिक्षण पूरा करने के तुरन्त बाद मुझे अत्यन्त सरलता और सादगी से भरी प्रसन्नता का अनुभव हुआ। यह प्रसन्नता सेना का एक आदमी होने की थी, जिसे बातों पर, मसलों पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता नहीं थी। यह प्रसन्नता उस जीवन में पूरी तरह डूब जाने की थी, जिसे अन्य प्रत्येक व्यक्ति जी रहा था, जिसे हमारे सैनिक पर्यावरण में स्वीकार किया जाता था। यह प्रसन्नता उन आध्यात्मिक सूक्ष्मताओं में से कुछ को भुला देने की थी, जिनकी हमें बचपन से ही शिक्षा दी गई थी।

उस स्कूल में हम लोग निरन्तर भूखे रहते थे और निरन्तर हमारी नजर इस बात पर रहती थी कि हम कहां से खाने के लिए कुछ और प्राप्त कर सकते हैं। और हम बड़ी ईर्ष्या से भरकर यह देखते रहते थे कि इस मामले में हम लोगों में से सबसे अधिक चतुर कौन है। लेकिन हममें से अधिकांश लोग इस बात से डरते रहते थे कि हम अपना प्रशिक्षण पूरा करने और अफसर के तमगे हासिल करने के समय तक यहां मौजूद नहीं रह सकेंगे।

(परीक्षा में जो प्रशिक्षार्थी असफल रहे उन्हें स्तालिनग्राद के मोर्चे पर भेज दिया गया।) और उन लोगों ने हमें जवान जानवरों की तरह प्रशिक्षण दिया, हमें इस सीमा तक क्रोधान्ध बना दिया कि आगे चलकर हम किसी अन्य पर अपना यह क्रोध उतारेंगे। हमें कभी भी पर्याप्त नींद नहीं मिल पाती थी, क्योंकि प्रशिक्षण के निर्धारित समय के बाद भी हमें दण्ड के रूप में एक हवलदार की निगरानी में अकेले ही परेड करने के लिए भेज दिया जाता था। अथवा पूरी टुकड़ी को रात के समय पंक्तिबद्ध खड़ा कर दिया जाता और इसका कारण केवल यही होता कि हममें से किसी एक प्रशिक्षार्थी के बूट साफ नहीं थे। यह है वह हरामजादा! और वह अपने बूटों को चमकाता रहेगा और जब तक वह इन्हें चमकाने में सफल नहीं होता आपको निरन्तर वहीं पंक्तिबद्ध खड़ा रहना होगा।

अफसर के सितारों और तमगों की प्राप्ति की प्रबल आकांक्षा से भरकर हम लोगों ने शेर की तरह चलने का अभ्यास किया और हमारी आवाज़ में जबर्दस्त कड़क आ गई।

इसके बाद हमारे कन्धों पर अफसरों के सितारे लगा दिए गए। और इसके एक महीने बाद ही, अग्रिम मोर्चे के पीछे अपनी तोपखाना टुकड़ी को तैयार करते समय, मैंने बेरबेनएव नामक एक लापरवाह सैनिक को यह हुक्म सुनाया कि वह ड्यूटी के बाद मेरे उद्दण्ड और आज्ञा न पालन करने वाले सार्जेंट मेतलिन की निगरानी में सज़ा के तौर पर ड्रिल करेगा। (और यह आप जानते हैं कि मैं इन बातों को इस क्षण से पहले एकदम भूल गया था। सचमुच मैं वर्षों तक इसे भूला रहा! केवल अभी, एक कागज़ के ताव के सामने बैठे हुए मुझे अचानक इसका स्मरण आया।) एक वयोवृद्ध कर्नल, जो सेना का निरीक्षक था, संयोगवश वहां मौजूद था। उसने मुझे भीतर बुलाया और बहुत शर्मिन्दा किया। और मैंने (और वह भी विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद) इस आधार पर अपने कार्य का औचित्य ठहराने की कोशिश की कि मुझे स्कूल में यही प्रशिक्षण दिया गया था। दूसरे शब्दों में मेरा यह कहने का अभिप्राय था: अब जबकि हम सेना में भर्ती हो चुके हैं हम मानवीय दृष्टिकोण कैसे अपना सकते हैं?

(और सुरक्षा संगठनों में तो इससे भी कहीं अधिक होता है।)

मनुष्य के हृदय के भीतर गर्व विष वृक्ष की तरह अधिक तेज़ी से पनपता है।

मैं अपने मातहत काम करने वाले सैनिकों और अफसरों को इस प्रकार हुक्म देता था, मानो मैं अपने किसी भी हुक्म के बारे में कोई भी शंका अथवा टीका टिप्पणी सुनने को तैयार नहीं हूं। क्योंकि मैं इस बात से आश्वस्त रहता था कि मुझसे अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण आदेश कोई नहीं दे सकता। मोर्चे तक पर, जहां कोई भी व्यक्ति यह सोच सकता था कि मृत्यु हम सबको समान बना देती थी, मेरे अधिकारों और शक्ति ने मुझे इस बात से आश्वस्त कर दिया कि मैं एक बेहतर किस्म का आदमी हूं। अपनी कुर्सी पर बैठकर मैं उनकी बात सुनता और वे सावधान की मुद्रा में मेरे सामने खड़े रहते। मैं उन्हें बीच में टोकता, आगे बोलने न देता। और अपना हुक्म सुना देता। मैं पिता और दादा की उम्र के सैनिकों को पिटे-पिटाये और निम्न किस्म के संबोधनों से संबोधित करता—जबकि वे, जैसाकि निश्चित था, मुझे बड़े औपचारिक ढंग से संबोधित करते। मैं उन लोगों को गोलाबारी के समय भी तारों की मरम्मत करने के लिए भेजता ताकि मेरे वरिष्ठ अधिकारी मुझे भला बुरा न कहें। (इस तरीके से आन्द्रेयाशिन की मृत्यु हो गई थी।) मैं एक अफसर का बढ़िया राशन खाता, जिसमें मक्खन और रोल्स होते और एक क्षण के लिए भी मेरे मन में यह विचार नहीं

आता कि मुझे यह खाने का अधिकार क्यों है, जबकि सामान्य सैनिकों को यह नहीं मिलता। हां, वस्तुत: मुझे एक व्यक्तिगत नौकर भी प्राप्त था—जिसे भद्र शब्दावली में अर्दली कहा जाता था। जिसे मैं निरन्तर दौड़ाता रहता था और जिसे मैं स्वयं अपनी खिदमत करने और सैनिकों से अलग अपना भोजन तैयार करने का हुक्म देता रहता था। (आखिरकार लूबयांका के पूछताछ अधिकारियों को अर्दली प्राप्त नहीं है—चाहे और कुछ भी हो आप अर्दली रखने का दोष उनके ऊपर नहीं लगा सकते।) जहां कहीं मेरी तोपखाना टुकड़ी पड़ाव डालती, मैं अपने सैनिकों को इस बात के लिए बाध्य करता कि वे कमर तोड़ मेहनत करके मेरे लिए एक खन्दक खोदते और इसके ऊपर भारी से भारी धरनें रखते, ताकि मैं अधिक से अधिक आराम से और सुरक्षा से रह सकूं। और हां, मेरी तोपखाना टुकड़ी का एक गारद घर भी होता था। जंगलों में किस किस्म का गारद घर हो सकता है? सचमुच यह एक गड्ढा ही होता था। यद्यपि यह गोरोखोवेत्स डिवीजन के शिविरों के उन गड्ढों से बेहतर था, जिनका मैं विवरण दे चुका हूं। क्योंकि इस गड्ढे के ऊपर वह छत होती थी और इसके भीतर जो व्यक्ति बन्द रहता था, उसे एक सैनिक का राशन मिलता था। व्जुश-कोव को वहां इसलिए बन्द कर दिया गया था, क्योंकि उसने अपना घोड़ा खो दिया था और पोपकोव को यह सज़ा इसलिए मिली थी, क्योंकि उसने अपनी कारबाईन को ठीक ढंग से नहीं रखा था। हां, ज़रा ठहरिये मुझे और अधिक स्मरण आ रहा है। इन लोगों ने मुझे जर्मन चमड़े से—मनुष्य के नहीं बल्कि किसी जर्मन कार की सीट के चमड़े से—नक्शा रखने का एक डिब्बा तैयार करके दिया था। लेकिन इसे लटकाने के लिए मेरे पास कोई पेटी नहीं थी और मैं इस बात से बड़ा दुखी था। तभी उन लोगों की नज़र किसी कमीसार के ऊपर पड़ी। यह स्थानीय जिला पार्टी समिति से सम्बन्धित था। और उसके पास एक सही किस्म की पेटी थी, जिसे नकशे के डिब्बे में लगाया जा सकता था और मेरे सैनिकों ने उससे यह पेटी ले ली: हम सेना में हैं; हमारी वरिष्ठता ऊंची है! (सुरक्षा अफसर सेनचेनको का स्मरण कीजिए, जिसने एक नक्शा रखने का डिब्बा और एक डाक का डिब्बा चुरा लिया था?) अन्त में, मुझे वह गहरे लाल रंग का डिब्बा पसन्द आ गया। मुझे यह भी याद आया कि मेरे सैनिकों ने किस तरह इसे प्राप्त किया। और इसे मुझे दे दिया।

कन्धों पर सितारे लग जाने के बाद मनुष्य यही बन जाता है और दादियों के धार्मिक उपदेश कहां अन्तर्धान हो जाते हैं! और बाल कम्युनिस्ट पार्टियों में बच्चों को भविष्य की पवित्र समानता के जो दिवा-स्वप्न दिखाये जाते हैं, वे कहां अन्तर्धान हो जाते हैं।

और जिस क्षण मेरे जीवन को एकदम उलट दिया गया था और ब्रिगेड कमाण्ड पोस्ट पर स्मर्श के अफसरों ने जब मेरे कन्धों पर लगे उन अभिशप्त सितारों को नोच फेंका था और मेरी पेटी छीन ली थी तथा मुझे धक्के देकर अपनी मोटरगाड़ी की ओर ले गये थे, मुझे भयंकरतम चिन्ता इस बात की हुई थी कि अपनी इस अपमानित स्थिति में मैं किस प्रकार टेलीफोन आपरेटर के कमरे को पार करूंगा। सामान्य सैनिकों को मुझे इस हालत में नहीं देखना चाहिए!

अपनी गिरफ्तारी से अगले दिन मेरा प्रायश्चित का कूच शुरू हुआ। हाल में जिस व्यक्ति को पकड़ा जाता था, उसे सेना का विदेशी जासूसों के विरुद्ध कारवाई करने वाला केन्द्र मोर्चे के जासूसी विरोधी मुख्यालय में भेज देता था। वे लोग हमें ओसतेरोद से ब्रोद-निका तक पैदल ही ले गए।

जिस समय वे लोग मुझे सज़ा की कोठरी से निकालकर बाहर लाये, उस समय तक सात कैदी साढ़े तीन जोड़ों में मेरी ओर पीठ किए हुए खड़े थे। इनमें से छह ने रूसी सेना के घिसे-घिसाये ओवरकोट पहन रखे थे। ये ओवरकोट काफी पुराने थे और इनकी पीठ पर कभी न मिटने वाले सफेद रंग के "एस० यू०" अर्थात् "सोवियत यूनियन" लिखा हुआ था। मैं इस चिन्ह से परिचित था, क्योंकि मैंने अनेक बार इस चिन्ह को उन रूसी युद्ध-बंदियों की पीठ पर देखा था, जो उस सेना की ओर बहुत उदासी और दोषभावना से भर कर आगे बढ़ते थे, जो उन्हें "स्वतन्त्र" कराने के लिए आ रही थी। इन्हें शत्रु की कैद से स्वतन्त्र करा दिया गया था लेकिन इस मुक्ति में सामान्य सुख नहीं था, दोनों पक्षों की प्रसन्नता नहीं थी। स्वयं इनके देशवासी सैनिक, जर्मनों से कहीं अधिक कठोरता से उनके ऊपर गुर्रा रहे थे। और ये लोग जैसे ही मोर्चों की अग्रिम पंक्ति को पार करते, इन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता और जेल में डाल दिया जाता।

सातवां कैदी एक जर्मन नागरिक था, जिसने काले रंग का बढ़िया सूट, काला ओवरकोट पहन रखा था और काला टोप लगा रखा था। उसकी उम्र पचास से अधिक थी। वह लम्बा-ऊंचा और भद्र दिखाई पड़ता था और उसके श्वेत मुख से यह प्रकट होता था कि उसका पालन-पोषण भद्र पुरुषों के भोजन पर ही हुआ है।

मेरे कतार में आ खड़े होने से चौथा जोड़ा भी पूरा हो गया और हमारे संतरियों के मुखिया तातार सार्जेंट ने मुझे इशारे से अपना मोहरबन्द सूटकेस उठाने को कहा, जो एक ओर रखा हुआ था। इस सूटकेस में मेरी अफसर की वर्दी और सामान तथा वे सब कागज़पत्र थे, जिन्हें मेरी गिरफ्तारी के समय प्रमाणस्वरूप ज़ब्त कर लिया गया था।

वह क्या कहता है, मैं अपना सूटकेस उठाऊं? वह एक सार्जेंट, मुझसे, एक अफसर से अपना सूटकेस उठाकर चलने को कहता है? यह सूटकेस बड़ा और भारी है? नए नियमों के बावजूद? जबकि मेरे बराबर छह सामान्य सैनिक खाली हाथ ही चल रहे होंगे? और इनमें एक विजित देश का प्रतिनिधि भी है?

मैंने अपने इन जटिल विचारों को पूरी तरह सार्जेंट के समक्ष नहीं रखा। बस, मैंने इतना ही कहा: "मैं एक अफसर हूं। इस सूटकेस को जर्मन उठायेगा।"

मेरे इन शब्दों को सुनकर एक भी कैदी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा: पीछे मुड़कर देखने का निषेध था। केवल चौथे जोड़े में मेरे बराबर खड़े हुए एक "एस० यू०" ने आश्चर्य से मेरी ओर देखा। (जब उसे गिरफ्तार किया गया था, तब हमारी सेना ऐसी नहीं थी।)

लेकिन जासूसी विरोधी संगठन के सार्जेंट को इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ। यद्यपि उसकी नजर में मैं अब अफसर नहीं था, फिर भी उसे और मुझे जिन विचारों का पाठ पढ़ाया गया था, वे समान थे। उसने उस निर्दोष जर्मन को इशारा किया और उसे सूटकेस उठाकर चलने का हुक्म दिया। यह अच्छा ही था कि यह जर्मन हमारा वार्तालाप नहीं समझ पाया था।

शेष लोगों ने अपने हाथ अपनी पीठ के पीछे बांध लिये। भूतपूर्व युद्धबंदियों के पास एक झोला तक नहीं था। वे लोग खाली हाथ ही मातृभूमि को छोड़कर गये थे और ठीक खाली हाथ ही वापस लौटे थे। इस प्रकार हमारी यह छोटी-सी टुकड़ी आगे बढ़ी। पंक्तिबद्ध चार जोड़े। हमने अपने पहरेदारों से कोई बात नहीं की। और इस बात का बड़ा कड़ा निषेध था कि हम चलते समय, पड़ाव पर, अथवा रात को रुकने के स्थान पर, कहीं भी आपस में

बात न करें। अभियुक्त कैदियों के रूप में हमें इस प्रकार चलने को कहा जाता, मानो हमें कुछ अदृश्य दीवार बनाकर अलग-अलग कर दिया गया हो, मानो हममें से प्रत्येक अपनी तनहाई की कोठरी में घोट दिया गया हो।

आरम्भिक बसन्त का मौसम बड़ा परिवर्तनशील था। कभी-कभी हवा में बहुत हल्का कुहरा दिखाई पड़ता और पक्की सड़क पर भी हमारे बूटों के तले कीचड़ की चप-चप की आवाज़ सुनाई पड़ती। कभी-कभी आसमान एकदम साफ हो जाता और कोमल पीला सूर्य दिखाई पड़ने लगता। सूर्य को अभी भी अपने ताप पर भरोसा न दिखाई पड़ता, यद्यपि यह उन पहाड़ियों को कुछ ताप देता, जिनका बर्फ पिघलना शुरू हो चुका था और हमें बड़ी स्पष्टता से उस संसार के दर्शन कराता जिससे हम विदा लेने जा रहे थे। कभी-कभी बड़ी तेज़ हवा आती और वह काले बादलों से बर्फ के उस टुकड़े को तोड़कर अलग कर देती, जो पूरी तरह सफेद नहीं था, जो हमारे चेहरों, हमारी पीठों और पांवों पर बर्फानी ठंडक से बरसता, हमारे ओवरकोटों और पांव ढकने के कपड़ों के भीतर रिस कर पहुंच जाता।

मेरे आगे छह पीठ थीं। निरन्तर कायम रहने वाली छह पीठ। मेरे पास "एस० यू०" के भयंकर निशानों को परखने और इन पर गहराई से विचार करने के लिए बेहद समय था और इसी प्रकार मैं जर्मन के ओवरकोट के चमकदार काले कपड़े को भी परखता रह सकता था। मेरे पास अपने अतीत के जीवन पर पुनर्विचार करने और अपने वर्तमान जीवन की थाह लेने के लिये आवश्यकता से अधिक समय था लेकिन मैं यह करने में सफल न हो सका। मेरे सिर के ऊपर मोटे डण्डे से प्रहार किया गया था—लेकिन अभी भी पूरी स्थिति मेरी पकड़ के बाहर थी।

छह पीठ! इन पीठों की गति में न तो सहमति थी और न ही निन्दा।

जर्मन बहुत जल्दी ही थक गया। वह सूटकेस को कभी इस हाथ में लेता, तो कभी उस हाथ में। वह कलेजा थाम लेता और संतरियों को यह इशारा करता कि वह अब और आगे सूटकेस को नहीं ढो सकेगा। इसी क्षण उसके बराबर चलने वाले युद्ध बंदी ने अपनी इच्छा से उसके हाथ से सूटकेस ले लिया और चपचाप चलने लगा। इस युद्धबंदी ने, ईश्वर जाने जर्मनों की कैद में क्या अनुभव किया था (शायद इसे वहां दयाभाव भी देखने को मिला हो।)

इसके बाद अन्य युद्धबंदी बारी-बारी से सूटकेस उठाते रहे और उन्होंने भी यह काम बिना किसी हुक्म से किया और फिर यह सूटकेस जर्मन के हाथ में पहुंच जाता।

मुझे छोड़कर सबने बारी-बारी से सूटकेस उठाया।

और किसी ने भी मुझे एक शब्द भी नहीं कहा।

एक स्थान पर हमें खाली घोड़ा गाड़ियों की एक लम्बी कतार दिखाई पड़ी। इन गाड़ियों के ड्राइवरों ने बड़ी दिलचस्पी से हमें देखा और इनमें से कुछ तो अपनी घोड़ा गाड़ियों पर खड़े हो गए और हमें घूर-घूरकर देखने लगे। मैं तुरन्त समझ गया कि इनकी नजरें और इनका द्वेषभाव मेरे ही ऊपर केन्द्रित है। मैं दूसरों से एकदम अलग दिखाई पड़ रहा था : मेरा कोट नया और लम्बा था, और इसे मेरे लिए ही काटकर सिया गया था। मेरे कन्धे की पट्टियों को, जिनके ऊपर सितारे लगाये जाते हैं, अभी तक नोचकर नहीं फेंका गया था। और बादलों से छनकर आने वाली सूरज की रोशनी में मेरे बटन, जिन्हें अभी तक काटा नहीं गया था, घटिया सोने की तरह चमक रहे थे। यह समझ लेना बड़ा आसान

था कि मैं एक अफसर था। मेरे वस्त्रों आदि के नएपन से भी यह स्पष्ट था कि मुझे अभी हाल में गिरफ्तार किया गया है। सम्भवत: ऊंचाई से नीचे गिरने के कारण ही, उनके मन में मेरे प्रति यह जिज्ञासा जगी और उन्हें आनन्द प्राप्त हुआ। और उनके हावभाव से यह लग रहा था कि वे इसे उचित समझ रहे थे, लेकिन यह बात उनके राजनीतिक उपदेशों के मिथ्या पाठ से भरे दिमाग में नहीं घुस रही थी कि स्वयं उनके एक कम्पनी कमाण्डर को भी इस तरह गिरफ्तार किया जा सकता है। अत: उन्होंने सर्वसम्मति से यही निर्णय किया कि मैं अवश्य दूसरी ओर से आया हुआ अर्थात् शत्रु का जासूस हूंगा।

"अहा! यह हरामजादा, व्लासोव का अनुयाई पकड़ा गया! इस चूहे को गोली मार देनी चाहिए!" मोर्चे के पीछे रहने वाले लोग, जो क्रोध प्रदर्शित करते हैं, उसी क्रोध का उन्होंने बड़ी उग्रता से प्रकट किया। (अत्यधिक उग्र देशभक्ति का उद्रेक सदा मोर्चों के पीछे ही होता है), और उन्होंने काफी बड़ी संख्या में अपनी बातों में मां-बहन की गालियां भी जोड़ीं।

वे लोग मुझे किसी प्रकार का एक अन्तर्राष्ट्रीय जासूस समझ रहे थे, जिसे आखिरकार पकड़ ही लिया गया—और अब इसके परिणामस्वरूप मोर्चों पर हमारी सेनाएं अधिक तेज़ी से आगे बढ़ेंगी और युद्ध जल्दी समाप्त हो जाएगा।

मैं उन्हें किस प्रकार उत्तर दे सकता था? मुझे एक शब्द भी अपने मुंह से निकालने की मनाही थी और यदि मैं कुछ बोलता भी तो इन लोगों को समझाने के लिए, इनमें से प्रत्येक व्यक्ति को समझाने के लिए, मुझे अपने पूरे जीवन का ही स्पष्टीकरण प्रस्तुत करना पड़ता। इन लोगों को यह समझाने के लिए मैं क्या कर सकता था कि मैं एक जासूस नहीं हूं, तोड़फोड़ की कारवाई करने वाला जासूस नहीं हूं; कि मैं उनका मित्र हूं; कि उन लोगों की उदासीनता के कारण ही मेरा यह हाल हुआ है? मैं मुस्कुराया। सन्तरियों के पहरे में जाने वाले कैदियों की एक छोटी सी टुकड़ी के बीच से मैं उनकी ओर देखते हुए मुस्कुराया! लेकिन मेरे चमकते हुए दांत उन्हें सबसे बुरे किस्म का उपहास लगे और वे लोग पहले से भी कहीं अधिक उग्रता से मुझे घूंसे दिखाने लगे और मेरे ऊपर गालियों की बौछार करने लगे।

मैं इस गर्व से भरकर मुस्कुराया कि मुझे चोरी करने के लिए नहीं, देशद्रोह के लिए नहीं, सेना से भाग निकलने के लिए नहीं गिरफ्तार किया गया है, बल्कि इसलिए गिरफ्तार किया गया है कि मैंने अपनी तर्कशक्ति के आधार पर यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि स्तालिन के क्या भयंकर और निन्दीय रहस्य हैं। मैं इस विचार पर मुस्कुराया कि मैं अपने रूसी जीवन-क्रम में कुछ मामूली परिवर्तन चाहता हूं। और मैं ये परिवर्तन लाने में शायद कामयाब भी हो सकता हूं।

लेकिन इस पूरी अवधि में मेरा सूटकेस दूसरे लोग ढो रहे थे।

और मुझे इस बात का जरा भी खेद नहीं था! और यदि मेरे बराबर चलने वाला कैदी, जिसके गड्ढे में धंसे हुए गालों के ऊपर दो हफ्ते की मुलायम दाढ़ी उगी हुई थी और जिसकी आंखें कष्टों और वास्तविक स्थिति के ज्ञान से लबालब भरी थीं, अत्यधिक स्पष्ट रूसी भाषा में इस बात के लिए मेरी भर्त्सना करता कि मैंने सन्तरियों से मदद की याचना करके कैदियों के सम्मान को धक्का पहुंचाया है और मुझे दम्भपूर्ण व्यवहार के लिए, स्वयं को शेष लोगों से बड़ा समझने के लिए भी भला बुरा कहता, तो मेरी समझ में उसकी बात न आती! मैं यह समझ ही नहीं पाता कि आखिर वह क्या कहना चाह रहा था। मैं

एक अफसर था !

यदि रास्ते में हम लोगों में से सात को मारना होता और आठवें को यह गारद बचा पाती, तो मुझे क्या कोई भी बात चीख-चीखकर यह कहने से रोक सकती थी : "सार्जेंट ! मुझे बचाओ, मैं एक अफसर हूं !"

और उस समय भी अफसर की यह स्थिति होती है, जब उसके कन्धे की पट्टियां नीले रंग की नहीं होतीं !

और यदि ये नीले रंग की हों ? यदि उसे यह विश्वास करने का पाठ पढ़ाया जा चुका हो कि अन्य अफसरों के मध्य वह सर्वोपरि है ? और उसे यह भी बताया जा चुका हो कि वह अन्य लोगों से अधिक जानता है और उसे अन्य लोगों स अधिक जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं और इसके परिणामस्वरूप यह उसका कर्तव्य है कि वह एक कैदी को, अपनी टांगों के बीच अपना सिर रखने के लिए बाध्य करे और उसे एक पाइप के भीतर धकेल दे......

तो वह अफसर यह क्यों न करे ?

मैं स्वयं को निःस्वार्थ निष्ठा का श्रेय देता था। लेकिन इस बीच मुझे एक जल्लाद बनने के लिए पूरी तरह तैयार किया जा चुका था। और यदि मैं येझोव के अधीन एन० के० वी० डी० के किसी स्कूल में भर्ती हो जाता, तो हो सकता था कि बेरिया के समय तक मैं एन० के० वी० डी० का एक पक्का अफसर बन गया होता।

अत: जो पाठक इस पुस्तक को एक राजनीतिक रहस्योदघाटन की जानकारी देने वाली पुस्तक के रूप में पढ़ना चाहता हो, उसे तत्क्षण इसे बन्द कर देना चाहिए।

काश ! ये बातें इतनी सरल होतीं ! काश, कहीं कुछ बुरे लोग गुप्त रूप से कुछ बुरे काम करते होते, और उन्हें शेष लोगों से अलग करके नष्ट कर डालना ही पर्याप्त होता। लेकिन अच्छे और बुरे को विभाजित करने वाली रेखा, प्रत्येक मनुष्य के हृदय के बीच से गुजरती है। और ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा, जो स्वयं अपने हृदय के एक टुकड़े को नष्ट कर डालने के लिए तैयार हो ?

किसी भी हृदय के जीवनकाल में यह रेखा निरन्तर अपना स्थान बदलती रहती है; कभी अत्यधिक प्रबल बुराई इसे एक ओर समेट ले जाती है और कभी-कभी यह इतनी सिमट जाती है कि अच्छाई को प्रस्फुटित होने के लिए पर्याप्त स्थान मिल जाता है। एक ही मनुष्य, विभिन्न उम्रों में, विभिन्न परिस्थितियों के अन्तर्गत पूरी तरह से भिन्न मनुष्य बन जाता है। कभी-कभी वह प्राय: शैतान बन उठता है, तो कभी वह संतत्व की प्राप्ति कर लेता है। लेकिन उसका नाम नहीं बदलता, और हम इस नाम के साथ समग्रता को जोड़ते हैं, अच्छाई और बुराई दोनों को जोड़ते हैं।

सुकरात ने हमें शिक्षा दी थी : स्वयं अपने आपको जानो !

जब हम उस गड्ढे के किनारे पर जा खड़े होते हैं, जिसमें हम उन लोगों को धकेलने जा रहे हैं, जिन्होंने हमें नुकसान पहुंचाया, तो हम रुक जाते हैं, हमारी वाणी अवरुद्ध हो जाती है : आखिरकार घटनाक्रम ने ही तो, परिस्थितियों ने ही तो, यह कराया कि वे जल्लाद का काम कर रहे हैं और हम नहीं।

यदि मालयुता स्कुरातोव हमें बुलाता, तो शायद हम भी इसी प्रकार अच्छा काम कर पाते !

कहावत है कि अच्छाई और बुराई के बीच का अन्तर बाल के बराबर भी नहीं है।

जिस क्षण से हमारे समाज के समक्ष यह तथ्य प्रस्तुत किया गया कि कानून के विरुद्ध कारवाई की गई और लोगों को यातनाएं दी गईं, उन लोगों ने सर्वत्र स्पष्टीकरण देना, अपनी बातें लिखना और विरोध प्रकट करना शुरू कर दिया : उन लोगों में अच्छे लोग भी थे—उनका अभिप्राय एन० के० वी० डी०—एम० जी० बी० से था।

हम जानते हैं कि वे लोग किन "अच्छे" लोगों के बारे में बात कर रहे हैं : ये वही लोग थे, जिन्होंने पुराने बोलशेविकों से फुसफुसाहट के स्वर में कहा : "कमजोर मत पड़ो!" अथवा उनके पास चुपचाप एक सैंडविच पहुंचा दी। और किन लोगों ने शेष लोगों को जहां पाया वहीं ठुकराया। लेकिन क्या कुछ ऐसे लोग भी नहीं थे, जो पार्टी से भी ऊपर उठे, जो एक सामान्य और मानवीय दृष्टि से अच्छे थे?

मोटे तौर पर यही कहा जा सकता है कि उन लोगों को वहां नहीं होना चाहिए था। सुरक्षा संगठन ऐसे लोगों को भर्ती नहीं करते थे। भर्ती के समय ही ऐसे लोगों को अलग कर दिया जाता था। और ऐसे लोगों ने बच निकलने के लिए बहुत चतुरता का परिचय दिया।[१६] जो कोई गलती से भर्ती हो गया, उसने स्वयं को या तो अपने पर्यावरण के अनुसार ढाल लिया अथवा उसे बाहर निकाल फेंका गया, अथवा अलग कर दिया गया अथवा वह स्वयं पटरी पर कट मरा। इसके बावजूद...क्या वहां अच्छे लोग नहीं बचे थे?

किशिनेव के सुरक्षा संगठन का एक युवक लेफ्टिनेंट पादरी विक्टर शिपोबालनिकोव के पास उनकी गिरफ्तारी से पूरे एक महीने पहले पहुंचा : "यहां से भाग निकलिए, यहां से चले जाइए, वे लोग आपको गिरफ्तार करने की योजना बना रहे हैं!" (क्या उसने स्वयं अपने आप यह किया अथवा उसकी मां ने उसे पादरी को चेतावनी देने के लिए भेजा?) गिरफ्तारी के बाद, इस युवक को ही पादरी विक्टर को हिरासत से ले जाने का काम सौंपा गया और वह पादरी के लिए दुख प्रकट करता रहा : "आप यहां से भाग क्यों नहीं निकले?"

अथवा एक और उदाहरण है। मेरी कम्पनी में लेफ्टिनेंट ओवसियानिकोव नाम का एक प्लाटून कमाण्डर था। मोर्चे पर उससे अधिक समीप मेरे लिए अन्य कोई नहीं था। युद्ध की आधी अवधि में हम लोग साथ-साथ खाना खाते थे। दुश्मन की गोलाबारी के दौरान भी, हम गोलों के विस्फोट के बीच खाना खाते रहते थे, ताकि हमारा शोरबा ठण्डा न हो जाए। वह शुद्धात्मा वाला एक किसान लड़का था और जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण इतना साफ-सुथरा था कि न तो उम्मीदवार अफसरों के स्कूल के प्रशिक्षण में और न ही उसके अफसर बन जाने की बात ने उसे किसी भी सीमा तक बदलने में, बुरा बना डालने में सफलता प्राप्त की। वह शक्तिभर मेरे कठोर तरीकों को कम कठोर बनाने का प्रयास करता रहता था। एक अफसर के रूप में अपने पूरे कार्यकाल में उसने केवल एक बात का ध्यान रखा : अपने सैनिकों के जीवन और शक्ति को बनाए रखना और इन सैनिकों में बहुत से अब जवान नहीं रह गए थे। यह पहला व्यक्ति था, जिसने मुझे यह बताया कि रूस के गांवों का उस समय क्या हाल था और सामूहिक खेत कैसे थे? वह इन सब बातों की चर्चा बिना किसी आक्रोश, बिना किसी प्रतिवाद के अत्यधिक सीधे-सादे तरीके से स्पष्ट रूप से करता था—जिस प्रकार किसी जंगली तालाब में किसी पेड़ की छाया प्रतिबिम्बित होती है, और इस छाया में उस पेड़ की सब शाखाएं यहां तक कि छोटी से छोटी शाखा भी दिखाई पड़ती है, उसी प्रकार मुझे उसकी बातों के विवरण में गांवों का दृश्य दिखाई पड़ता

था। उसे मेरी गिरफ्तारी से गहरा आघात पहुंचा था। उसने मुझे युद्ध में वीरता प्रदर्शित करने के बारे में प्राप्त उच्चतम प्रशंसा की सूचना भिजवाई और इस पर डिवीजन के कमाण्डर के हस्ताक्षर करवाये। सेना से सेवा निवृत्त होने के बाद भी वह मेरे रिश्तेदारों के माध्यम से निरन्तर मेरी सहायता करने का प्रयास करता रहा। और याद रखिए यह बात १९४७ की है और यह वर्ष १९३७ से अधिक भिन्न नहीं। पूछताछ के दौरान मुझे इस लेफ्टिनेंट के प्रति बड़ा भय रहता था। मुझे इस बात का बड़ा भय था कि वे लोग मेरी "युद्ध डायरी" न पढ़ लें, जिसमें वे किस्से लिखे हुए थे, जो उसने मुझे सुनाये थे। जब १९५७ में मुझे अभियोग मुक्त कर पुन: प्रतिष्ठित किया गया, तो मैंने उससे मिलने की बहुत कोशिश की। मुझे उसके गांव का पता याद था और मैंने उसे एक बार पत्र लिखा और फिर दूसरा पत्र भेजा, लेकिन मुझे कोई उत्तर नहीं मिला। मुझे एक सूत्र प्राप्त हुआ, जिसके माध्यम से मैं उस तक पहुंच सकता था—कि उसने यारोस्लावल की शिक्षक शिक्षण संस्था से स्नातक परीक्षा पास की है। जब मैंने इस संस्था से पूछताछ की तो उन्होंने उत्तर दिया : "उसे राज्य सुरक्षा संगठनों में काम के लिए भेज दिया गया था।" बहुत खूब ! यह और भी अधिक दिलचस्प बात है ! मैंने उसे उसके शहर के पते पर पत्र भेजा, लेकिन कोई उत्तर नहीं आया। अनेक वर्ष गुजर गए और मेरा उपन्यास आइवन डेनिसोविच प्रकाशित हुआ। मैंने सोचा कि अब वह मुझसे सम्पर्क करेगा। नहीं ! तीन वर्ष बाद मैंने यारोस्लावल के अपने एक परिचित से अनुरोध किया कि वह स्वयं जाकर व्यक्तिगत रूप से उसे मेरा पत्र दे। मेरे इस परिचित ने मेरे कहने के अनुसार ही काम किया और मुझे उत्तर भेजा : "स्पष्ट है कि उसने आइवन डेनिसोविच नहीं पढ़ा था।" और सच भी है, वे लोग इस बात की जानकारी क्यों हासिल करें कि सजा सुनाये जाने के बाद कैदियों के साथ क्या व्यवहार होता है ? पर इस बार ओवसियानिकोव चुप नहीं रह सका। उसने लिखा : "संस्था में प्रशिक्षण पूरा करने के बाद उन लोगों ने मुझे सुरक्षा संगठनों में काम दिया और मुझे लगा कि मैं यहां भी सेना की तरह सफल रहूंगा।" (सफल रहूंगा कहने से उसका क्या अभिप्राय है ?) "मैं यह नहीं कह सकता कि अपने इस नए जीवन में मैंने बहुत अच्छी उन्नति की है। कुछ ऐसी बातें हैं, जिन्हें मैं पसन्द नहीं करता था। लेकिन मैं बहुत मेहनत से काम करता हूं और, यदि मैं गलती पर नहीं हूं, मैं अपने कामरेडों को धोखा नहीं दूंगा।" (और यही औचित्य है—कामरेडों को धोखा न देना !) उसने इन शब्दों से अपना पत्र समाप्त किया : "अब मैं भविष्य के बारे में कुछ नहीं सोचता।"

और यही अन्त है। सम्भवत: उसे मेरे पूर्व पत्र नहीं मिले। स्पष्ट है, कि वह मुझसे मिलना नहीं चाहता। (अगर हमारी मुलाकात हो पाती, तो मैं सोचता हूं यह अध्याय कहीं बेहतर होता।) स्तालिन के जीवन के अन्तिम वर्षों में वह पूछताछ अधिकारी बन चुका था—ये वही वर्ष थे, जब उन लोगों ने प्रत्येक व्यक्ति को २५ वर्ष की कैद की सजा सुनाई थी। उसकी आत्मा में हर बात की किस प्रकार पुर्नव्यवस्था हो गई थी ? किस प्रकार प्रत्येक वस्तु मिट गई थी ? लेकिन एक समय पूरी तरह नि:स्वार्थ निष्ठावान और वसन्त के पानी की तरह निर्मल लड़के का स्मरण करके क्या मैं यह विश्वास कर सकता हूं कि उसके भीतर प्रत्येक वस्तु अब सुधार की सीमा को पार करके पूरी तरह बदल चुकी है, कि अब उसके भीतर कोई भी जीवन्त भावना शेष नहीं रह गई है ?

जब पूछताछ अधिकारी गोल्डमन ने वेरा कोरनेएवा को "२०६" नम्बर का फार्म हस्ताक्षर करने को दिया, जिसमें यह वचन दिया जाता है कि कैदी पूछताछ के दौरान हुई

किसी भी बात को प्रकट नहीं करेगा, तो वेरा कोरनेएवा ने अपने अधिकारों का सम्बल लेना शुरू कर दिया और वे विस्तार से अपने मामले का अध्ययन करने लगीं। इस मामले में उनकी "धार्मिक टोली" के सब १७ सदस्य फंसाये गये थे। गोल्डमन अत्यन्त क्रोधित हो उठा, लेकिन उसके सामने वेरा को फाइल का अध्ययन करने देने के अलावा अन्य कोई चारा नहीं था। जितनी देर वे इस फाइल का अध्ययन करें, स्वयं ऊब से बचने के लिए गोल्डमन, वेरा को दफ्तर के एक बड़े कमरे में ले गया, जहां आधे दर्जन कर्मचारी बैठे हुए थे। वह वेरा को वहीं छोड़कर बाहर चला गया। आरम्भ में वे चुपचाप फाइल पढ़ती रहीं, लेकिन इसके बाद बातचीत शुरू हो गई—संभवतः दूसरे लोग भी ऊबे हुए थे—और तभी वेरा ने बड़े ऊंचे स्वर में एक धार्मिक उपदेश शुरू कर दिया। (वे किस प्रकार के राजनीतिक विचार प्रकट कर सकती थीं, यह समझने के लिए वेरा को पूरी तरह जानना ज़रूरी था। वे बड़े प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्त्री थीं, उनका मस्तिष्क बड़ा सजग था और ईश्वर ने उन्हें अच्छी वक्तृत्व शक्ति दी थी। यद्यपि अपने स्वतंत्र जीवन में वे केवल खराद आपरेटर, घुड़साल की नौकरानी और एक गृहणी के रूप में ही कार्य करती रहीं थीं।) वे लोग अत्यन्त प्रभावित होकर उनका उपदेश सुनते रहे और बीच-बीच में कुछ बातों का स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए सवाल भी पूछते जाते थे। वेरा की बातें उनके समक्ष परिस्थिति का एक अप्रत्याशित पहलू प्रस्तुत कर रही थीं। दूसरे कमरों से भी कर्मचारी आने लगे और यह कमरा एकदम भर गया। यद्यपि ये लोग केवल टाइपिस्ट, स्टेनोग्राफर और फाइल क्लर्क ही थे, पूछताछ अधिकारी नहीं फिर भी सन् १९४६ में सुरक्षा संगठन ही उनका पर्यावरण था। वेरा ने स्वगत भाषण के रूप में जो-जो बातें कहीं उनका उसी रूप में उल्लेख कर पाना असम्भव है। पर वे प्रायः हर बात की चर्चा करने में सफल रहीं, जिसमें मातृभूमि के साथ विश्वासघात करने वालों का प्रश्न भी शामिल था। पितृभूमि के लिए १८१२ में जो युद्ध हुआ था उसमें देशद्रोही क्यों नहीं थे, जबकि उस युग में गुलाम-किसानों का अस्तित्व था? उस समय देशद्रोहियों का होना स्वाभाविक बात होती। लेकिन वे अधिकांशतः धार्मिक विश्वास और धर्म में आस्था रखने वाले लोगों के बारे में ही बोलती रहीं। उन्होंने कहा कि पहले हर वस्तु का आधार उन्मुक्त वासनाएं थीं—"चोरी की चीजों को चुराओ"—और उन परिस्थितियों में धर्म में आस्था रखने वाले लोग आपके मार्ग में सचमुच बाधक थे। लेकिन आज, जब आप निर्माण करना चाहते हैं और संसार में उन्नति करना चाहते हैं तो आप अपने सर्वोत्तम नागरिकों को यातनाएं क्यों देते हैं? ये लोग आपकी सर्वाधिक मूल्यवान निधि हैं: आखिरकार धर्म में आस्था रखने वालों पर निगरानी रखने की जरूरत नहीं है। वे चोरी नहीं करते, वे अपने काम से जी नहीं चुराते। क्या आप यह समझते हैं कि स्वयं अपना स्वार्थ साधन करने वाले और ईर्ष्या से भरे लोगों के आधार पर आप एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना कर सकते हैं? देश में प्रत्येक वस्तु टुकड़े-टुकड़े होती जा रही है। आप अपने सर्वोत्तम नागरिकों के हृदय में क्यों थूकते हैं? चर्च और राज्य को उचित रूप से अलग-अलग रखो और चर्च के कार्यों में हस्तक्षेप न करो। इससे आपको कोई क्षति नहीं पहुंचेगी। क्या आप भौतिकतावादी हैं? यदि यह सच है, तो शिक्षा पर आस्था रखो—जैसाकि वे लोग कहते हैं, इस संभावना पर विश्वास रखो कि शिक्षा धार्मिक आस्था को अन्तर्धान कर देगी। लेकिन लोगों को गिरफ्तार करने की क्या ज़रूरत है? तभी वहां गोल्डमन आ पहुंचा और बड़ी अभद्रता से हस्ताक्षेप करने लगा। लेकिन तभी वहां मौजूद लोग चिल्ला उठे: "अरे, चुप रहो!

चुप रहो ! औरत, अपनी बात आगे जारी रखो।" (और वे वेराकोरनेएवा को अन्य किस संबोधन से पुकार सकते थे ? नागरिका ? कामरेड ? इन सम्बोधनों का निषेध था और ये लोग सोवियत जीवन की परम्पराओं के बन्धन में बंधे थे। लेकिन "औरत"—ईसा मसीह ने भी इसी प्रकार संबोधन किया था, और आप इस प्रकार के संबोधन में गलती नहीं कर सकते।) और वेरा ने अपने पूछताछ अधिकारी की मौजूदगी में अपना भाषण जारी रखा।

इस प्रकार एम० जी० बी० के दफ्तर में वे लोग कोरनेएवा की बातें सुनते रहे—और एक महत्वहीन कैदी के शब्दों ने इन लोगों के हृदय को इतनी गहराई से क्यों छू लिया था ?

मैंने पहले जिस डी० तेरेखोव का उल्लेख किया था, उसे आज भी उस पहले कैदी का स्मरण था, जिसे उसने मृत्युदण्ड सुनाया था। "मैं उसके लिए दुखी था।" तेरेखोव की स्मृति में कोई ऐसी बात चिपकी हुई है, जो उसके हृदय से उपजी थी। (लेकिन इस पहले कैदी के बाद, वह अनेक कैदियों को भूल गया और उसने फिर उनकी गिनती भी नहीं रखी।)[२०]

लेनिनग्राद के बड़े घर के जेलर चाहे कितने भी कठोर और संवेदनाहीन क्यों न थे, हृदय के नाभिक का गहनतम नाभिक को—क्योंकि एक नाभिक का भी अपना नाभिक होता है—अपना अस्तित्व कायम रखना पड़ता है, क्यों नहीं क्या ? एन० पी०—वा को उस समय का स्मरण है, जब उसे एक उदासीन, और मौन स्त्री सन्तरी पूछताछ के लिए ले जा रही थी और ऐसा लगता था कि इस स्त्री सन्तरी की आंखें कुछ भी नहीं देख पातीं—तभी अचानक बड़े-घर के बराबर ही बम फटने लगे और ऐसा लगा कि मानो अगले क्षण एकदम उनके सिर के ऊपर ही बम आ गिरेगा। भयभीत स्त्री सन्तरी ने अपनी कैदी को अपनी बांहों में भर लिया, वह मानवीय साथ और सहानुभूति के लिए अधीर हो उठी थी। इसके बाद बम-बारी रुक गई। और उस स्त्री सन्तरी की आंखें फिर पूर्ववत् हो गईं। "अपने हाथ पीठ के पीछे रखो ! आगे बढ़ो।"

वैसे इस बात में कोई महत्वपूर्ण तत्व निहित नहीं है—मृत्यु के क्षण में मानवीय बन जाना बहुत बड़ी बात नहीं है। इसी प्रकार, स्वयं अपने बच्चों से प्यार करना भलाई का प्रमाण नहीं है। (लोग अक्सर धूर्तों को यह कहकर क्षमा करने का प्रयास करते हैं : "वह एक अच्छा गृहस्थ है !") सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष आई० टी० गोल्याकोव की प्रशंसा की जाती है : उन्हें अपने बगीचे में क्यारियां खोदना पसन्द है, उन्हें पुस्तकों से प्रेम है, वे पुरानी और दुर्लभ पुस्तकों की दुकानों पर पुस्तकें ढूंढने जाते हैं, वे तोलसतोय, कोरोलेंको और चेखोव की रचनाओं से परिचित हैं। ठीक है, उसने इनसे क्या सीखा ? कितने हजार लोगों को उसने मौत के मुंह में पहुंचाया ? अथवा, उदाहरण के लिए वह कर्नल, जो कौन-कोर्दिया आई ओ सी का मित्र था, और जो व्लादिमिर की हिरासत जेल में वृद्ध यहूदियों की एक टोली को बर्फ से भरे तहखाने में बन्द कर देने की स्मृति से हंसते-हंसते पागल हो गया था, अपने समस्त व्यभिचारपूर्ण जीवन में एक बात से भयभीत रहता था : कि उसकी पत्नी को कहीं इन बातों का पता न चल जाये। उसकी पत्नी उसके ऊपर विश्वास करती थी और उसे गरिमापूर्ण व्यक्ति मानती थी और अपने प्रति उसकी यह आस्था इस कर्नल की मूल्यवान निधि थी। लेकिन क्या हम यह स्वीकार करने का साहस कर सकते हैं कि इसके आधार पर उसके हृदय में भलाई और सद्भावनाओं को प्राप्त किया जा सकता है ?

और इसका कारण क्या है कि लगभग दो सौ वर्ष से सुरक्षा संगठनों का प्रिय रंग

आकाश का ही रंग रहा है। लेरमोनतोव के जीवनकाल में भी इनकी वर्दियों का यही रंग था। "और तुम, नीली वर्दियों वाले!" इसके बाद नीली टोपियां, कन्धे के नीले रंग के फीते, नीले तमगे आये और उन्हें यह आदेश दिया गया कि इन वर्दियों में अधिक नीला रंग दिखाई न पड़े। और टोपियों पर लगने वाली नीले रंग की चौड़ी पट्टी को लोगों के आभार से छिपा लिया गया और सिर तथा कन्धों पर नीले रंग की प्रत्येक वस्तु को अधिक संकरा और छोटा बना दिया गया—यह क्रम उस समय तक जारी रहा, जब तक नीले रंग की गोट ही शेष न रह गई...लेकिन इसका रंग नीला ही बना रहा।

क्या यह केवल एक नाटक या स्वांग भर है?

अथवा क्या कालेपन को भी, आकाश के रंग में हिस्सा बटाना आवश्यक है?

यह सोचना बहुत खूबसूरत बात होगी। लेकिन, उदाहरण के लिए, हमें यह भी पता चलता है कि यगोदा ने पवित्र सत्ता के सम्बन्ध में क्या-क्या किया...गोर्की के आस-पास के लोगों में से एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार, जो उस समय यगोदा के बहुत नजदीक था, मास्को के पास यगोदा के विशाल भवन के स्नानागार के पास के एक खोखे में ईसाई सन्तों के स्मरणचिह्न इस प्रकार रखे जाते थे, ताकि यगोदा और उसके साथी, अपने वस्त्र उतारने के बाद रिवाल्वर के निशाने का अभ्यास करने के लिए इन्हें लक्ष्यों के रूप में इस्तेमाल कर सकें और स्नान से पहले इस प्रकार निशानेबाजी का अभ्यास कर सकें।

हम इस बात को कैसे समझ सकते हैं? बुरे काम करने वाले व्यक्ति के कार्य के रूप में? यह किस प्रकार का आचरण है? क्या सचमुच ऐसे लोगों का अस्तित्व है?

हम यह कहना अधिक पसन्द करेंगे कि ऐसे लोगों का अस्तित्व नहीं हो सकता, कि ऐसे लोग नहीं हैं। बच्चों के लिए लिखी जाने वाली किसी कहानी में बुराई करने वाले लोगों के चित्रण की अनुमति हो सकती है, ताकि बालकों को सरल तरीके से समझाया जा सके। लेकिन अतीत का महान् विश्व साहित्य, शेक्सपीयर, शीलर, डीकेन्स—बुरे काम करने वाले लोगों की तस्वीरों को बढ़ा चढ़ाकर दर्शाते समय, उन्हें काले से काले रंगों में रंग देता है, तो यह हमारे समसामयिक प्रेक्षण को कुछ उपहासपूर्ण और भदेस दिखाई पड़ता है। जिस रूप में इन पुराने बुरे लोगों को चित्रित किया जाता है, उसमें ही कठिनाई निहित है। वे लोग स्वयं को बुरा स्वीकार करते हैं और वे यह जानते हैं कि उनकी आत्माएं कालिमापूर्ण हैं और वे तर्क देते हैं: "यदि मैं बुराई न करूंगा तो मैं जीवित नहीं रह सकता। अत: मैं अपने पिता को अपने भाई के विरुद्ध भड़काऊंगा! मैं उस समय तक अपने षड्यन्त्रों का शिकार बने व्यक्ति के कष्टों का आनन्द लेता रहूंगा, जब तक मैं इस आनन्द से उन्मत्त न हो उठूं!" इयागो अत्यन्त सूक्ष्म तरीके से अपने उद्देश्यों का उल्लेख करता है और उन्हें कालिमापूर्ण और घृणा से उत्पन्न बताता है।

लेकिन नहीं; यह इस प्रकार नहीं होता! बुराई करने के लिए यह आवश्यक है कि एक मनुष्य पहले यह विश्वास करे कि वह जो कुछ कर रहा है, वह अच्छा है, अथवा वह यह विश्वास करे कि नैसर्गिक कानून के अनुरूप यह अच्छा समझा जाने वाला काम है। सौभाग्यवश, मनुष्य के स्वभाव का यह एक अंग होता है कि वह अपने कार्यों का औचित्य तलाश करता है।

मैकबेथ का आत्म-औचित्य कमजोर था—और उसकी आत्मा उसे खा गई। हां, इयागो भी एक छोटा सा मेमना भर था। शेक्सपीयर के बुरे पात्रों की कल्पनाशीलता

और आध्यात्मिक शक्ति बस एक दर्जन लाशों पर जाकर रुक जाती थी। क्योंकि उनकी अपनी कोई विचारधारा नहीं थी।

विचारधारा—विचारधारा से ही बुराई को लम्बे अरसे से वांछित औचित्य प्राप्त होता है और वही बुराई करने वाले को आवश्यक दृढ़ता और संकल्प शक्ति प्रदान करती है। सामाजिक सिद्धांत ही उसे स्वयं अपनी और दूसरों की नजरों में बुरे कार्यों को भला दर्शाने में मदद देती है, ताकि उसे इन बुरे कार्यों के परिणामस्वरूप भर्त्सना और अभिशाप न सुनने पड़ें, बल्कि प्रशंसा और सम्मान ही प्रप्त हो। इसी प्रकार पुराने जमाने में चर्च के उपदेशों के विरुद्ध आचरण करने वाले लोगों के ऊपर अत्याचार करने वाले लोगों ने अपनी संकल्प शक्ति को दृढ़ बनाया था : उन्होंने यह कार्य ईसाई धर्म के नाम पर किया था; विदेशों के विजेताओं ने अपनी मातृभूमि की महानता को गुणगान करते हुए अपनी विजय का औचित्य सिद्ध किया था, उपनिवेश बसाने वालों ने सभ्यता के प्रसार के नाम पर; नाजियों ने जाति के नाम पर; और जेकोबिन- वादियों ने (आरम्भिक और बाद के दोनों जेकोबिनवादियों ने) समानता, भ्रातृत्व और भावी पीढ़ियों के सुख के नाम पर यही कार्य किया था।

धन्य है विचारधारा कि २०वीं शताब्दी को इतने बड़े पैमाने पर बुराई देखने का मौका मिला, जिसकी बलि चढ़े लोगों की संख्या करोड़ों में की जा सकती है। इस बात से न तो इनकार किया जा सकता है, न ही इसकी उपेक्षा की जा सकती है, और न ही कुचला जा सकता है। तो हम यह जोर देकर कहने का साहस कैसे कर सकते हैं कि बुराई करनेवाले लोगों का अस्तित्व ही नहीं है? और वह कौन था, जिसने इन करोड़ों लोगों को मौत के मुंह में पहुंचाया? बुरे काम करने वालों के अभाव में गुलाग द्वीपसमूह की स्थापना नहीं हो सकती थी, वह अस्तित्व में नहीं आ सकता था।

सन १९१८ और १९२० के बीच यह अफवाह जारी थी कि यूरीतस्की के अधीन पेत्रोग्राद की चेका ने और दीच के अधीन ओडेसा की चेका ने उन सब लोगों को गोली से नहीं उड़ाया, जिन्हें मृत्युदण्ड सुनाया गया था, बल्कि उनमें से कुछ को शहर के चिड़ियाघरों के जानवरों के पिंजड़ों में जिन्दा ही फेंक दिया था। मुझे नहीं मालूम कि यह बात सच है अथवा प्रवाद, अथवा, यदि कुछ ऐसे मामले हुए तो इनकी संख्या क्या थी। लेकिन मैं इस सम्बन्ध में प्रमाणों की तलाश करने के लिए भी नहीं निकलूंगा। नीली टोपी वालों के तरीके का अनुसरण करते हुए, मैं यह कहूंगा कि वे लोग हमारे समक्ष यह सिद्ध करें कि यह बात असम्भव थी। अन्यथा उन्हें अकाल के उन वर्षों में चिड़ियाघरों के जानवरों के लिए किस प्रकार मांस प्राप्त हुआ? इसे श्रमजीवी वर्ग से दूर ले जाओ? इन शत्रुओं को तो किसी न किसी प्रकार मरना ही था, तो इनकी मृत्यु गण राज्य के चिड़ियाघरों की अर्थ-व्यवस्था को सहायता क्यों न पहुंचाये और इस प्रकार हमारे भविष्य में पदार्पण करने में सहायक क्यों न बने? क्या परिस्थितियों की अनिवार्यताओं को देखते हुए यह उपयोगी नहीं था।

यह एक ऐसी रेखा है, जिसे शेक्सपीयर के बुरे काम करने वाले पात्र पार नहीं कर सकते थे। लेकिन विचारधारा की शक्तिसे सम्पन्न बुरा काम करने वाला इसे पार कर सकता है, और इसके बावजूद उसकी आंखें सूखी और स्वच्छ रहती हैं।

भौतिकी को एक ऐसी घटना का परिचय प्राप्त है, जो केवल कुछ सीमाओं के भीतर ही हो सकती है।- जो घटना उस समय तक अस्तित्व में नहीं आती, जब तक एक ऐसा

कार्य नहीं होता, जब तक वह सीमा पार नहीं कर ली जाती, जिसका ज्ञान प्रकृति को है और जो यह घटना करने के लिए आवश्यक है। आप लिथियम के एक नमूने पर चाहे कितना भी तेज़ पीला प्रकाश डालें, लीथियम से इलेक्ट्रानों की धारा नहीं निकलेगी। लेकिन जैसे ही हल्की नीले रंग की रोशनी इस पर पड़ने लगती है, इलेक्ट्रानों की धारा प्रभावित हो उठती है। (इस प्रकार प्रकाश-विद्युत प्रभाव की ड्योढ़ी पार कर ली जाती है।) आप ऑक्सीजन को शून्य तापमान से १०० डिग्री सेंटीग्रेड नीचे तक ठंडा करते जायें और इस पर जितना चाहें दबाव डालें इसका कोई असर नहीं होता, यह गैस ही बनी रहती है। लेकिन जैसे ही शून्य से नीचे १८३ डिग्री पहुंचती है, आक्सीजन तरल बन जाती है और पानी की तरह बहने लगती है।

स्पष्टतः इसी प्रकार बुरे कामों की भी एक सीमा रेखा, एक ड्योढ़ी होती है। हां, एक मनुष्य जीवनपर्यन्त हिचकिचाता रहता है और अच्छे और बुरे के बीच झूलता रहता है। वह फिसलता है, पीछे हटता है, ऊपर चढ़ता है, पश्चताप करता है, और वस्तुएं फिर कालिमापूर्ण होने लगती हैं। लेकिन जब तक बुराई की ड्योढ़ी पार नहीं की जाती, प्रत्यावर्तन की भावना बनी रहती है, और वह व्यक्ति हमारी आशा की परिधि में, बना रहता है। लेकिन जब, बुरे कार्यों की उग्रता से माध्यम से, स्वयं अपनी चरम सीमा अथवा उस व्यक्ति की सत्ता की सर्वोपरिता के परिणामस्वरूप, वह उस ड्योढ़ी को पार कर लेता है, तो मानवता पीछे छूट जाती है, और सम्भवतः, प्रत्यावर्तन की भी कोई सम्भावना नहीं रह जाती।



अत्यन्त प्राचीन समय से न्याय दो अंशों में विभाजित संकल्पना रहा है : अच्छाई की विजय होती है और बुराई को दण्ड मिलता है।

यह हमारा सौभाग्य ही है कि हम एक ऐसे युग में जीवित रहे जहां अच्छाई, यद्यपि विजयी नहीं होती, पर इसके बावजूद इसे सदा हमला करने वाले कुत्तों की यातनाओं का भी कष्ट नहीं भोगना पड़ता। मारपीट कर कृशकाय बना दी गई, और रुग्ण अच्छाई को अपने फटे पुराने चिथड़ों में भीतर आने और एक कोने में चुपचाप उस समय तक बैठे रहने की अनुमति मिल गई है, जब तक वह अपनी आवाज़ नहीं उठाती।

पर कोई भी व्यक्ति बुराई के बारे में एक भी शब्द कहने का साहस नहीं करता। हां, उन लोगों ने अच्छाई का मजाक उड़ाया। लेकिन इसमें कोई बुराई नहीं थी। हां, इतने लाख लोगों को मौत के मुंह में पहुंचा दिया गया, लेकिन इसके लिए किसी को दोष नहीं दिया जा सकता। और अगर कोई यह बोल उठता है : "उन लोगों के बारे में क्या होगा जो..." तो सब दिशाओं से, और आरम्भ में उलाहना भरे तथा मित्रतापूर्ण स्वर में यह उत्तर मिलेगा : "आप क्या बात कर रहे हैं, कामरेड! पुराने घावों को कुरेदने से क्या फायदा?"[११] इसके बाद, एक मजबूत डण्डा लेकर वे आपके ऊपर टूट पड़ते हैं : "जबान बन्द करो। क्या अभी तक तुम्हारा जी नहीं भरा? तुम सोचते हो कि तुम्हें अभियोगमुक्त करके पुनः प्रतिष्ठित कर दिया गया है!"

उसी अवधि में, सन १९६६ तक, ८६,००० नाज़ी अपराधियों को पश्चिम जर्मनी

में सजाएं सुनाई जा चुकी हैं ।[२१] और आज भी हमारा क्रोध शान्त नहीं हुआ है । आज भी हम इस विषय के बारे में अखबारों के पन्ने पर पन्ने रंगने और रेडियो से घण्टों प्रसारण करने से नहीं अघाते । हम अपना काम खत्म करने के बाद विरोध सभाओं में हिस्सा लेने के लिए और अपना मत देने के लिए रुके रहते हैं : "बहुत थोड़े लोगों को सज़ा मिली ! ८६,००० बहुत कम हैं । और २० वर्ष का समय भी बहुत थोड़ा है ! यह क्रम निरन्तर जारी रहना चाहिए ।"

और इसी अवधि में, स्वयं हमारे देश में (सर्वोच्च न्यायालय के सैनिक कालेजियम की रिर्पोटों के अनुसार) लगभग दस आदमियों को सज़ा सुनाई गई है ।

ओडर और राइन नदियों के पार क्या होता है, उससे हम सब लोग अत्यन्त उत्तेजित हो उठते हैं । लेकिन मास्को के आस-पास और सोची के समीप हरी बाड़ के पीछे क्या होता है ? और यह तथ्य भी हमें उत्तेजित नहीं करता कि हमारे पतियों और पिताओं के हत्यारे कारों में सवार होकर हमारी सड़कों से गुजरते हैं और हम उनके लिए रास्ता छोड़ देते हैं । यह बात हमें प्रभावित नही करती, हमें नहीं छूती । यह कहना "अतीत की स्मृतियों को कुरेदना होगा ।"

इस बीच यदि हम ८६,००० पश्चिम जर्मनों को अपनी शब्दावली में अनूदित करें और इस आंकड़े के आधार पर हम दोनों देशों की आबादियों को ध्यान में रखते हुए तुलनात्मक संख्यायें निकालें, तो हमारे देश के लिए यह संख्या ढाई लाख बैठती है ।।

लेकिन पूरी चौथाई शताब्दी में हम एक भी अपराधी को नहीं पकड़ सके । हम किसी के ऊपर मुकदमा नहीं चला सके । हम उन लोगों के भावों को कुरेदने से भयभीत हैं । और इन सब लोगों के प्रतीक के रूप में, सुखी और मूर्ख मोलोतोव ग्रानोवस्की मार्ग पर ३ नम्बर की कोठी में रहता है । यह वही आदमी है, जिसने आज तक कुछ नहीं सीखा । आज भी वह बड़ी शान से अपने मकान के सामने की पटरी को पार कर, अपनी लम्बी चौड़ी मोटर गाड़ी में सवार होता है, यद्यपि वह हमारे रक्त में पूरी तरह डूबा हुआ है ।

यह एक ऐसी पहेली है, जिसे हम लोग, इस युग के लोग नहीं सुलझा पायेंगे । जर्मनी को अपने देश के बुरे काम करने वालों को दण्ड देने की अनुमति है, लेकिन रूस को नहीं है ? हमारे शरीर के भीतर जो नासूर रिस-रिस कर सड़ांध फैला रहा है, यदि उसे काटकर अलग फेंकने का हमें अवसर नहीं मिलता, तो हमें भविष्य में किस विनाशकारी स्थिति का सामना करना पड़ेगा ? रूस इस स्थिति में संसार को क्या उपदेश कर सकता है ?

जर्मनी में चलने वाले मुकदमों में समय-समय पर एक आश्चर्यजनक घटना होती है । अभियुक्त अपना सिर अपने हाथों में दबोच लेता है । वह अपनी सफाई पेश करने से इनकार करता है और उसके बाद अदालत से कोई भी रियायत नहीं मांगता । वह कहता है कि उसके अपराधों के इस प्रकार प्रस्तुतीकरण ने, एक बार फिर उसके सामने वे दृश्य उपस्थित कर दिये हैं, जिन्होंने उसके भीतर आत्मजुगुप्सा भर दी है और अब वह जीवित नहीं रहना चाहता ।

यह किसी भी मुकदमे की सर्वोच्च परिणति, महानतम सफलता हो सकती है, कि बुराई की इतनी प्रबल भर्त्सना की जाए कि स्वयं अपराधी भी जुगुप्सा से भर उठे ।

एक ऐसा देश जिसने अदालत के मंच से ८६,००० बार बुराई की भर्त्सना की है,

और अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में इसकी सहित्य में, अपने युवकों के समक्ष, अपने बच्चों के समक्ष, निरन्तर एक के बाद एक वर्ष तक, कदम कदम पर निन्दा और भर्त्सना की है, पवित्र हो उठता है।

हम क्या करें ? एक दिन हमारे वंशज हमारी इन अनेक पीढ़ियों को, निकम्मे और कुछ भी न कर सकने वाले लोगों की पीढ़ियां बतायेंगे। सबसे पहले हमने उन लोगों को करोड़ों की संख्या में अपना सफाया करने की विनम्रतापूर्वक अनुमति दी और इसके बाद हमने इन हत्यारों की उनकी समृद्धिपूर्ण वृद्धावस्था में बड़ी निष्ठापूर्ण चिन्ता से देखभाल की।

यदि इन लोगों की समझ में रूस की पश्चाताप और प्रायश्चित की महान् परम्परा नहीं आती और वह उन्हें मूर्खतापूर्ण दिखाई पड़ती है, तो हम क्या करें ? उन लोगों ने दूसरे लोगों के साथ जो व्यवहार किया, दूसरे लोगों पर जो अत्याचार किए, उसका शतांश सुनकर भी यदि वे ऐसे पाशविक भय से कांप उठते हैं कि उनके मन में न्याय भावना शेष नहीं रह जाती, तो हम क्या करें ? यदि वे लोग उस फसल का भरपूर लाभ उठाना चाहते हैं, जो उन्होंने मौत के मुंह में पहुंचे लोगों के रक्त से सींच कर प्राप्त की है, तो हम क्या करें ?

यह स्पष्ट है कि जिन लोगों ने १९३७ के दमनचक्र का संचालन किया था, आज वे जवान नहीं हैं। उनकी उम्र ५० से ८० वर्ष के बीच होगी। वे अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्ष अत्यन्त समृद्धि में, स्वास्थ्यकर भोजन और आराम से भरे रहन-सहन के बीच बिता चुके हैं। अतः इन लोगों से समान प्रतिशोध लेना सम्भव नहीं है।

लेकिन हमें उदारता बरतनी चाहिए। हम इन्हें गोली से नहीं उड़ायेंगे। हम इनके हलक में खारा पानी नहीं उड़ेलेंगे। हम इन्हें खटमलों से भरे संदूकों में बन्द नहीं करेंगे और न ही इनके मुंह में रस्सियां डालकर इन्हें "हंस उड़ान" का आस्वादन कराएंगे, न ही इन्हें एक सप्ताह तक नींद के बिना खड़ा रखेंगे; न ही इन्हें फौजी बूटों से ठोकरें जमायेंगे; न ही इन्हें रबड़ के चाबुकों से पीटेंगे, न ही इनकी खोपड़ियों को लोहे के शिकंजों में कसेंगे, न ही इन्हें जेल की ऐसी कोठरी में धकेलेंगे, जहां इन्हें सामान के पुलिन्दों की तरह एक दूसरे के ऊपर पड़ा रहना पड़े—हम उनमें से एक भी काम नहीं करेंगे, जो उन्होंने किए थे। लेकिन अपने देश के प्रति और अपने बच्चों के प्रति हमारा यह कर्तव्य है कि हम इन लोगों को ढूंढ निकालें और इन सबके ऊपर मुकदमा चलायें। इनमें से प्रत्येक को ऊंचे स्वर में यह घोषणा करने के लिये बाध्य किया जाएगा : "हां, मैं एक जल्लाद और हत्यारा था।"

यदि केवल ढाई लाख बार ही हमारे देश में इन शब्दों की प्रतिध्वनि हुई (यदि हम पश्चिम जर्मनी से पीछे नहीं रहना चाहते तो यह उचित अनुपात होगा) तो यह, सम्भवतः, पर्याप्त होगा ?

२० वीं शताब्दी में इस बात के बीच स्पष्ट अन्तर न कर पाना अकल्पनीय लगता है कि क्या जघन्य अत्याचार होता है, जिसके लिए मुकदमा चलाया जाना चाहिए और क्या ऐसा "अतीत" होता है, जिसे "कुरेदना नहीं चाहिए"।

हमें सार्वजनिक रूप से इस विचार की भर्त्सना करनी होगी कि कुछ लोगों को दूसरे लोगों का दमन करने का अधिकार होता है। बुराई के विषय में मौन रह कर, इसे अपने भीतर इतनी गहराई से दफना कर कि बाहर इसका कोई चिह्न न दिखाई पड़े, हम इसका बीज बो रहे हैं और यह भविष्य में हजार गुनी होकर फिर उपजेगी। जब हम

बुरे काम करने वालों को न तो दण्ड देते हैं और न ही उनकी भर्त्सना करते हैं, तब हम केवल उनकी क्षुद्र वृद्धावस्था की ही रक्षा नहीं करते, बल्कि नई पीढ़ियों के मूल से न्याय को जड़ से उखाड़ कर फेंक देते हैं। नई पीढ़ी के लोग इसी कारण से "उदासीन" होते जा रहे हैं, "विचारधारा की महिमा का पाठ पढ़ा की कमजोरी" के कारण नहीं। युवक-युवतियां यह विश्वास करने लगे हैं कि इस पृथ्वी पर बुरे कामों का कभी दण्ड नहीं मिलता, कि बुरे काम सदा समृद्धि का आधार बनते हैं।

ऐसे देश में रहना असह्य और भयावह होगा।

अध्याय ५



पहली कोठरी, पहला प्यार

इस अध्याय के शीर्षक को आप क्या कहेंगे ? जेल की कोठरी और प्यार, दोनों एक साथ कैसे हो सकते हैं ? सम्भवत: इसका सम्बन्ध जर्मनों के घेरे में फंसे हुए लेनिनग्राद से ही हो सकता है—और आपको बड़े घर में कैद कर दिया गया हो। इस स्थिति में इस शीर्षक को अच्छी तरह समझा जा सकता है। यही कारण है कि आप आज भी जीवित हैं—क्योंकि उन लोगों ने आपको बड़े घर में बन्द कर दिया था। उन दिनों यह लेनिनग्राद में सर्वोत्तम स्थान था—केवल पूछताछ अधिकारियों के लिए ही नहीं, जो वहां रहते थे और जिनके दफ्तर तहखानों में पहुंचा दिए गए थे ताकि गोलाबारी से उन्हें हानि न पहुंचे। मज़ाक छोड़िए। पर यह सच है कि उन दिनों लेनिनग्राद में कोई भी व्यक्ति मुंह हाथ तक नहीं धो पाता था और प्रत्येक व्यक्ति का चेहरा धुएं और काजल की परत से ढका रहता था। लेकिन बड़े घर में कैदियों को हर दसवें दिन गरम पानी के फव्वारे के नीचे स्नान करने का मौका मिलता था। हां यह सही है कि जेल के केवल बरामदे ही गरम रखे जाते थे—जेलरों के लिए। कोठरियों को गरम नहीं किया जाता था, लेकिन आखिरकार कोठरियों में पानी के नल थे, जिनमें पानी रहता था और शौचालय की भी व्यवस्था थी और लेनिनग्राद में अन्य किस स्थान पर आपको यह सुविधा प्राप्त हो सकती थी ? और रोटी का राशन भी जेल से बाहर की तरह ही था—मुश्किल से ४॥ औंस। इसके अलावा, दिन में एक बार घोड़े के गोश्त का शोरबा मिलता था। घोड़ों को शोरबा बनाने के लिए ही मारा जाता था ! और दिन में एक बार बहुत पतली खिचड़ी भी मिलती थी !

यह एक ऐसा मामला था कि कोई बिल्ली किसी कुत्ते के जीवन से ईर्ष्या करे ! लेकिन सज़ा की कोठरियों को क्या कहेंगे ? और "सर्वोच्च कारवाई" का क्या होगा—सर्वोच्च कारवाई अर्थात् मृत्युदण्ड ? नहीं, इस अध्याय का शीर्षक इस बारे में नहीं है।

एकदम नहीं।

हम बैठ जाते हैं, अपनी आंखें आधी बन्द कर लेते हैं और उन सबको याद करने की कोशिश करते है। सज़ा की अवधि में आपको कितनी कोठरियों में कैद रखा गया ! इनकी गणना करना भी कठिन है और प्रत्येक कोठरी में बहुत से लोग होते थे, बहुत सारे लोग। किसी कोठरी में दो आदमी हो सकते थे तो किसी अन्य में १५०। आपको केवल ५ मिनट के लिए किसी एक कोठरी में रखा गया, तो पूरी गर्मियों भर किसी दूसरी कोठरी में।

लेकिन प्रत्येक मामले में, उन सब कोठरियों में जिनमें आप रह चुके हों, आपकी

जेल की पहली कोठरी विशेष महत्व की होती है, जहां आपकी मुलाकात पहली बार अपने ही जैसे लोगों से होती है, जिन्हें आपकी तरह ही दुर्भाग्य का सामना करना पड़ रहा है। आप जीवनपर्यन्त अत्यधिक भावना से भरकर इसका स्मरण करेंगे और यह ऐसा भाव होता है, जो आपके मन में प्रथम प्रेम के समय ही उत्पन्न होता है। और वे लोग, जिन्होंने उन दिनों आपके साथ पत्थर की कोठरी के नंगे फर्श पर हिस्सा बटाया, एक ही हवा में सांस लिया और यह उस समय हुआ जब आप अपने समस्त जीवन पर पुनरविचार कर रहे थे, आप उनका स्मरण समय-समय पर स्वयं अपने परिवार के लोगों की तरह ही करेंगे।

हां, उन दिनों वे आपका एकमात्र परिवार थे।

पहली पूछताछ में आपको जो अनुभव होता है, उसकी तुलना आपके समस्त पूर्व जीवन और बाद के जीवन की किसी भी घटना से नहीं की जा सकती। इस बात में संदेह नहीं है कि आपके जेल में पहुंचने से पहले भी हजारों वर्षों से जेलों का अस्तित्व है और आपके जेल से रिहा हो जाने के बाद भी इनका अस्तित्व कायम रहेगा - ये जेलें उससे कहीं अधिक लम्बी अवधि तक कायम रहेंगी, जितनी लम्बी अवधि के लिए आप इनके अस्तित्व की कल्पना करना चाहेंगे—लेकिन वह कोठरी, जिसमें आपसे पहली पूछताछ की गई हो, विलक्षण होती है और उसका दूसरा उदाहरण नहीं मिल सकता।

हो सकता है कि यह एक मनुष्य के लिए भयंकर स्थान हो। जूओं से भरी, खटमलों से अप्लावित कोठरी, जिनमें खिड़कियां नहीं हैं, रोशनदान नहीं हैं, लेटने के लिए तख्ता नहीं है, और जिसका फर्श गन्दा है, और जो एक सन्दूक की तरह है, जिसे के० पी० जैड०[1] अर्थात् आरम्भिक हिरासत की कोठरी के नाम से ग्राम सोवियत में, पुलिस स्टेशन में, रेलवे स्टेशन पर अथवा किसी बन्दरगाह पर पुकारा जाता है। (के०पी०जैड० और डी०पी०जैड० अर्थात् आरम्भिक हिरासत घर हमारे देश में सर्वत्र बहुत बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। इनमें बड़ी संख्या में कैदी भरे रहते हैं।) और हो सकता है कि यह आर्चएंजेल जेल की "तनहाई की कोठरी" हो, जहां कांच के ऊपर लाल रंग का सीसा पोत दिया हो, ताकि आपके पास ईश्वर के पंगु प्रकाश की जो किरणें पहुंच पायें, वे भी लाल रंग की ही हों और जहां रात दिन १५ वाट का बल्ब जलता रहता हो। अथवा यह चोइबालसन की "तनहाई की कोठरी" हो, जिसमें आपको लगातार ६ महीने तक बन्द रखा गया हो, जिसमें ७ वर्ग गज फर्श पर १४ कैदियों को इस प्रकार ठूंस दिया गया हो कि आप केवल एक साथ मिलकर ही अपनी टांगें फैला सकते हों। अथवा यह लेफोरतोवो की "मनोवैज्ञानिक" कोठरियों में से कोई कोठरी हो सकती है, जैसे १११ नम्बर की कोठरी, जिसकी दीवारों को काले रंग से पोत दिया गया है और जिसमें रात दिन २५ वाट का बल्ब जलता रहता है; लेकिन जो अन्य सब दृष्टियों से लेफोरतोवो जेल की अन्य कोठरियों के ही समान है : तारकोल का फर्श; इमारत को तपाने के लिए केवल बरामदे में ही वाल्व की व्यवस्था, जहां इसका लाभ केवल सन्तरियों को ही मिलता हो; और, सबसे अधिक, पड़ौस में स्थित केन्द्रीय विमान और जलगतिकी संस्था की वायु सुरंग से निरन्तर आने वाली भयकर आवाज—एक ऐसी गर्जना जिसे आप अनायास होने वाली गरजना स्वीकार नहीं कर पायेंगे, एक ऐसी गर्जना जो किसी कटोरी अथवा प्याले को इस तरह थरथरा देती है कि इसमें रखा शोरबा मेज के नीचे ढुलकने लगता है, एक ऐसी गर्जना जिसने बातचीत को निरर्थक बना दिया है और जिसके दौरान जो व्यक्ति चाहे अपनी भरपूर आवाज में गाना गा सकता है और इस गाने का एक भी

शब्द संतरियों के कान तक नहीं पहुंचेगा। और जब यह गर्जना बन्द होती, तो इतनी राहत और आराम मिलता, जिसे स्वयं स्वतन्त्रता से भी श्रेष्ठ कहा जा सकता है।

आपको गन्दे फर्श, काली दीवारों, अथवा पाखाने की बाल्टी की बदबू से प्यार नहीं होता था—बल्कि उन साथी कैदियों से जिनके साथ आप जेलरों के आदेश पर काम करते थे, और उस बात से भी जो आपके हृदय और इन कैदियों के हृदय की धड़कनों के बीच मौजूद थी और यदाकदा उनके आश्चर्यचकित कर डालने वाले शब्दों से भी प्यार होता था। और अपने भीतर विचारों के उस पुनरजन्म से भी जो अब तक आपकी पहुंच के बाहर रहे थे।

और जेल की इस पहली कोठरी में पहुंचने तक जीवित बने रहने के लिए आपको कितनी कीमत चुकानी पड़ी थी! आपको एक गड्ढे में रखा गया था अथवा एक सन्दूक में, अथवा एक तहखाने में। किसी भी व्यक्ति ने आपसे एक भी मानवीय शब्द नहीं कहा था। किसी भी व्यक्ति ने मानवीयता से भरकर आपके ऊपर एक नज़र भी नहीं डाली थी। उन्होंने यदि कुछ किया तो केवल आपके दिल दिमाग पर प्रहार—लोहे की चोंचों से आपके दिल दिमाग को कुरेदने का काम और जब आप रो उठते अथवा कराह उठते, तो वे हंसने लगते।

एक सप्ताह अथवा एक महीने तक आप पूरी तरह से अलग-थलग पड़े रहे, आप शत्रुओं के बीच फंसे रहे, और आपने तार्किकता, विवेक और जीवन को भी अलविदा कर दी। और आपने रेडियेटर से इस प्रकार नीचे गिर कर "स्वयं अपनी हत्या" करने का भी प्रयास किया कि आपका दिमाग ताप वाल्व के तीखे किनारे से जा टकराये और फट जाए।[२] लेकिन तभी अचानक एक बार फिर आप जीवित हो उठे और आपको अपने मित्रों के पास ले आया गया। और आपकी तार्किकता, आपका विवेक आपके पास लौट आया।

आपकी जेल की पहली कोठरी यही होती है!

आप इसी कोठरी की प्रतीक्षा करते रहे। आप अपनी स्वतन्त्रता की तरह ही बड़ी व्यग्रता से इसके सपने देखते रहे। इस बीच, वे लोग आपको कभी किसी दीवार की दरार में घुसेड़ देते, ज़मीन के किसी छेद में ठूंस देते, लेफोरतोवो से उठाकर किसी कुख्यात और भयावह सुखानोवका जेल में फेंक देते।

एम० जी० बी० की समस्त जेलों में सुखानोवका जेल सबसे अधिक भयानक थी। कैदियों को डराने-धमकाने और आतंकित करने के लिए इसके नाम का इस्तेमाल किया जाता था। पूछताछ अधिकारी धमकी के स्वर में इसका नाम लेते थे। और आपको उन लोगों से कोई भी जानकारी हासिल करने का अवसर नहीं मिलेगा जो वहां रह चुके थे: वे लोग या तो पागल हो चुके थे और केवल असम्बद्ध अर्थहीन बातें ही करते थे अथवा मौत के मुंह में पहुंच चुके थे।

पहले जमाने में सुखानोवका ईसाई सन्तों का मठ था और इसका निर्माण कैथेरीन महान् के शासनकाल में हुआ था। इसमें दो इमारतें थीं। एक इमारत में कैदी अपनी सज़ा काटते थे और दूसरी इमारत में ६८ कोठरियां थीं, जिनमें पहले संन्यासी रहा करते थे और अब इनका इस्तेमाल पूछताछ के लिए किया जा रहा था। एक ब्लैक मारिया गाड़ी में वहां पहुंचने के लिए केवल दो घण्टे का समय लगता था और केवल मुट्ठी भर लोग ही यह जानते थे कि यह जेल लेनिन की गोर्की स्थित एस्टेट से कुछ मील ही दूर है और ज़िनैदा वोल्कोन्स्काया की भूतपूर्व जमींदारी के पास। इसके चारों ओर का देहाती इलाका बड़ा खूबसूरत

था।

यहां के लोग नए आए कैदी को ऐसी सजा की कोठरी में खड़ा रखकर भयभीत कर डालते थे, जो इतनी संकरी होती थी कि जब कैदी खड़ा नहीं रह पाता था तो वह नीचे की ओर फिसल भर सकता था और उसके मुड़े हुए घुटने दीवार से टकराते रहते थे। दूसरा विकल्प नहीं था। कैदियों के प्रतिरोध को तोड़ डालने के लिए, उन्हें एक दिन से अधिक समय तक इस प्रकार खड़ा और बन्द रखा जाता था। लेकिन यहां का भोजन बहुत अच्छा था। एम० जी० बी० की किसी भी दूसरी जेल में ऐसा भोजन नहीं मिलता था, क्योंकि इसे स्थापत्यविदों के रेस्ट हाउस से मंगाया जाता था। सुखानोवका में गन्दा खाना तैयार करने के लिए अलग रसोईघर की व्यवस्था नहीं की गई थी। पर यह होता था कि जितना भोजन एक स्थापत्यविद् को दिया जाता था—इसमें तले हुए आलू और गोश्त की टिक्कियां होती थीं—उसे १२ कैदियों में बांटा जाता था। इसके परिणामस्वरूप कैदी केवल भूखे ही नहीं बल्कि अत्यन्त नाराज़ भी रहते थे।

कोठरियां दो-दो कैदियों के लिए बनाई गई थीं, लेकिन जिन कैदियों से पूछताछ चलती थी, उन्हें अक्सर अलग-अलग रखा जाता था। ये कोठरियां ५ फुट चौड़ी और ६॥ फुट लम्बी होती थीं।[१] दो छोटे-छोटे गोल स्टूल पत्थर के फर्श में कटे हुए पेड़ के ठूठ की तरह जमा दिये गए थे। और रात के समय, यदि सन्तरी बेलनाकार ताला खोलता, तो प्रत्येक ठूठ के ऊपर दीवार से एक तख्ता गिरता और वहां ७ घण्टे तक इसी रूप में पड़ा रहता (दूसरे शब्दों में, यह पूछताछ के घण्टों में होता, क्योंकि सुखानोवका में दिन के समय कभी पूछताछ नहीं होती थी) और भूसा भरा एक छोटा सा गद्दा भी नीचे आ गिरता, जो केवल एक बच्चे के लेटने के लिए ही पर्याप्त होता। दिन के समय स्टूल एकदम खाली रहता। इस पर कोई भी न बैठता। पर कैदी को स्टूल पर बैठने की मनाही थी। इसके अलावा एक मेज़, चार सीधे खड़े पाइपों पर टिकी रहती थी, जो इस्तरी करने के तख्ते जैसी दिखाई पड़ती थी। खिड़की में बना "फोरतोचका"—रोशनदान के रूप में इस्तेमाल के लिए एक छोटा तख्ता जिसे खोला और बन्द किया जा सकता था—सदा बन्द रहता था। लेकिन सुबह १० मिनट के लिए सन्तरी इसे खोलता था। एक छोटी सी खिड़की में कांच लगा रहता था, पर इस कांच को तोड़ा नहीं जा सकता था। कोठरी के बाहर व्यायाम के लिए कोई समय निर्धारित नहीं होता था इसका अवसर कभी नहीं मिलता था। केवल सुबह ६ बजे कैदियों को शौच के लिए ले जाया जाता था अर्थात् ऐसे समय जब कैदी को हाजत नहीं होती थी। शाम के समय शौचालय जाने की अनुमति नहीं थी। ७ कोठरियों के प्रत्येक खण्ड में दो सन्तरी नियुक्त रहते थे ताकि कोठरी के किवाड़ में बने छेद से कैदियों के ऊपर निरन्तर नज़र रखी जा सके। छेद से झांकने के बीच केवल इतना ही समय लगता था, जितना सन्तरी को दो दरवाजों को पार करके तीसरे दरवाजे पर पहुंचने में लगता है। और मौन, स्तब्ध, सुखानोवका का यही उद्देश्य था : कैदी को एक क्षण के लिए भी सोने न देना एक भी क्षण एकांत का अवसर न देना। आपके ऊपर निरन्तर नजर रखी जाती थी और आप पूरी तरह से उनकी मुट्ठी में होते थे।

यदि इन परिस्थितियों में आप पागल होने से बचे रहे और एकाकीपन के समस्त संघर्षों का सामना कर सके तथा दृढ़तापूर्वक डटे रह सके तो आपने सचमुच जेल की पहली कोठरी में पहुंचने का श्रेय अर्जित कर लिया। लेकिन आपके लिए यह बेहतर होता कि इस

सुखद घड़ी को देखने के लिए आप जीवित न रहते और आप एक विजेता के रूप में तहखाने में ही दम तोड़ देते, किसी भी कागज़ पर हस्ताक्षर किये बिना।

यह पहला अवसर होता था, जब आप उन लोगों को देख पाते थे, जो आपके शत्रु नहीं थे। यह पहला अवसर होता था, जब आप ऐसे लोगों को देखते जो जीवित थे।[४] जो आपके ही रास्ते पर चल रहे थे और जिनके साथ आप अपने आपको मिला सकते थे और सुखद शब्द "हम" का प्रयोग कर सकते थे।

हां, वही शब्द जिससे हो सकता है कि आपने स्वतन्त्र रहते समय घृणा की हो, जब उन लोगों ने इसका इस्तेमाल आपके अलग व्यक्तित्व की उपेक्षा करते हुए किया हो ("हम सब लोग, एक व्यक्ति की तरह!" अथवा: "हम अत्यधिक क्रोधित हैं!" अथवा: "हम मांग करते हैं!" अथवा: "हम शपथ लेते हैं!") और यही शब्द आपके समक्ष एक मीठे शब्द के रूप में आता है: संसार में आप अकेले नहीं हैं! बुद्धिमान, आध्यात्मिक लोग और मनुष्य अभी भी मौजूद हैं।



मैं चार दिन से पूछताछ अधिकारी से जूझ रहा था कि संतरी आया और ताला खोलने लगा। लगता था कि यह मेरी अत्यधिक प्रकाशवान, आंखों को चौंधिया देने वाली रोशनी से जगमगाती कोठरी में मेरे सोने के लिए लेट जाने की ही प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने उसके आने की आवाज़ सुन ली थी, लेकिन उसके यह कहने से पहले कि "उठो! पूछताछ के लिए चलो!" मैं एक सैकंड के ३०० वें हिस्से तक अपने तकिए पर सिर रखकर और लेटा रहना चाहता था, सोने का नाटक करता रहना चाहता था। लेकिन चिरपरिचित आदेश के स्थान पर, सन्तरी ने हुक्म सुनाया, "उठो! अपना बिस्तर उठाओ!"

मेरी समझ में कोई बात नहीं आ रही थी और मैं इस कारण से भी दुःखी था कि यह मेरा सबसे अधिक मूल्यवान समय था। पर मैंने अपने पांव के ऊपर कपड़े लपेटे, जूते पहने, ओवरकोट और सर्दियों की टोपी पहनी और सरकार द्वारा दिये गये गद्दे को लपेट कर बगल में दबा लिया। संतरी पंजों के बल चल रहा था और वह लगातार मुझे इशारे से यह कहता जा रहा था कि मैं जरा सी भी आहट न करूं, कब्र की तरह निःस्तब्ध बरामदे से ले जाते समय वह निरन्तर इसी प्रकार इशारा करता रहा। वह मुझे लूबयांका की चौथी मंजिल पर इसी प्रकार ले गया और सेक्शन सुपरवाइजर की मेज़ से आगे बढ़ गया, कोठरियों के बाहर लगे चमकदार नम्बरों और कोठरियों के भीतर झांकने के छेदों के ऊपर लगे गहरे हरे रंग के ढक्कनों से आगे ले गया और उसने कोठरी नम्बर ६७ का ताला खोला। मैं इसके भीतर चला गया और उसने तुरन्त दरवाजा बन्द कर ताला लगा दिया।

यद्यपि सो जाने का हुक्म हुए अभी मुश्किल से १५ मिनट ही हुए होंगे लेकिन जब मैं भीतर पहुंचा तो कोठरी नम्बर ६१ के सब कैदी अपनी धातु की चारपाइयों पर कम्बलों के ऊपर सिर रख कर सो रहे थे, क्योंकि कैदियों को सोने के लिए जो समय दिया जाता था वह इतना अनिश्चित, अविश्वसनीय और संक्षिप्त होता था कि कैदी एक क्षण भी गंवाना नहीं चाहते थे।[५]

दरवाजा खुलने की आहट होने पर, तीनों कैदी चौंके और उन्होंने एक क्षण के लिए

अपना सिर ऊपर उठाया। वे लोग भी यह जानने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि उनमें से किस को पछताछ के लिए बाहर ले जाया जाएगा।

और वे तीन ऊपर उठे हुए सिर, बढ़ी हुई दाढ़ी और मुरझाये हुए पीले चेहरों वाले वे तीन सिर मुझे इतने मानवीत, इतने प्रिय लगे कि मैं वहां अपने गद्दे को बगल में दबाए हुए खड़ा रह गया और मैं सुख से भरकर मुस्कराया और वे भी मुस्कराये और यह कैसी विस्मृति से भरी दृष्टि थी—कैद के केवल एक सप्ताह बाद!

"क्या तुम अब तक स्वतन्त्र थे?" उन लोगों ने मुझसे पूछा (एक नए कैदी से हमेशा यही सवाल पूछा जाता था।)

"नहीं," मैंने उत्तर दिया। और किसी भी कोठरी में नए आने वाले कैदी का अक्सर यही पहला जवाब होता था।

वे सोच रहे थे कि शायद मुझे अभी हाल में गिरफ्तार किया गया था, जिसका यह अर्थ था कि मैं अब तक स्वतन्त्र था। और मैं, ९६ घण्टे की पूछताछ के बाद मुश्किल से ही यह सोच पा रहा था कि मैं हाल तक "स्वतन्त्र" था। क्या मैं अब तक एक अनुभवी कैदी नहीं बन चुका था? इसके बावजूद मैं हाल तक स्वतन्त्र था। बिना दाढ़ी वाला वृद्ध, जिसकी भवें काली और बड़ी जीवन्त थीं, मुझसे सैनिक और राजनीतिक समाचार पूछने लगा था। बड़े आश्चर्य का विषय था! यद्यपि फरवरी के महीने का अन्तिम दौर चल रहा था, लेकिन इन लोगों को याल्टा सम्मेलन की कोई जानकारी नहीं थी। न ही ये लोग पूर्वी प्रशा के घेरे के बारे में जानते थे, और न ही इन्हें यह पता था कि जनवरी के मध्य में हमने वारसा के निचले हिस्से पर आक्रमण किया था और न ही ये लोग मित्र राष्ट्रों के दिसम्बर में पीछे हट जाने के कष्टप्रद समाचार से परिचित थे। नियमों के अनुसार, उन लोगों को जिनसे पूछताछ चल रही हो बाहरी दुनिया के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं होनी चाहिए और यहां सचमुच इन लोगों को ऐसी कोई जानकारी नहीं थी।

मैं इन लोगों को ये सब बातें बताने में आधी रात गुजारने के लिए तैयार था। मैं बड़े गर्व से इन्हें ये सब बातें बताना चाहता था, मानो स्वयं मेरे कारण से ही ये सब विजय प्राप्त हुई हों; हमारी सेनाएं आगे बढ़ पाई हों। लेकिन तभी ड्यूटी पर तैनात सन्तरी मेरी चारपाई लाया और मुझे इसे बिना किसी आहट के खोलकर लगाना था। इस काम में लगभग मेरी उम्र के एक युवक ने मुझे सहायता दी। यह भी एक सैनिक था। वायु सेना का उसका कोट और टोपी उसकी चारपाई पर रखे हुए थे। उस वृद्ध के बोलने से पहले ही, इस युवक ने मुझसे युद्ध सम्बन्धी समाचारों के बारे में नहीं, बल्कि मेरे पास तम्बाकू है या नहीं इस बारे में जानकारी मांगी। मैं अपने नए मित्रों के प्रति बहुत स्पष्ट आचरण कर रहा था, यद्यपि मुझे इन लोगों के पास आए कुछ ही मिनट बीते थे और हमने कोई खास बातें भी नहीं की थीं। लेकिन मुझे अपने इस समवयस्क और मोर्चे पर लड़ने वाले सैनिक के बारे में कुछ अजनबीपन का अनुभव हुआ और जहां तक उसका सम्बन्ध था, मैं तुरन्त और सदा के लिए उदासीनता से भर उठा।

(अभी तक मैंने "नासेदका" अर्थात् "कैदियों के खिलाफ जासूसी करने वाले मुखबिर" शब्द नहीं सुना था और मैं यह भी नहीं जानता कि प्रत्येक कोठरी में ऐसा एक मुखबिर अवश्य होता है। और मुझे अभी तक सब बातों पर विचार करने और इस निष्कर्ष पर पहुंचने का समय नहीं मिला था कि मैं जार्जी क्रामारेंको नामक इस युवक को पसन्द नहीं करता।

लेकिन मेरे भीतर एक आध्यात्मिक संकेत, एक भावनात्मक संकेत उत्पन्न हो गया था और इस संकेत ने उससे सदा सर्वदा के लिए मेरा सम्पर्क समाप्त कर दिया था। अगर यह अपने किस्म की एकमात्र घटना होती, तो मैं यहां इसका उल्लेख करने की जहमत न उठाता। लेकिन जल्दी ही, और आश्चर्य से भरकर भी, मैंने यह अनुभव किया कि एक जन्मजात गुण के रूप में मेरा यह आन्तरिक संकेत मुझे अवांछित तत्वों की जानकारी देने का काम कर रहा है। अनेक वर्ष बीत गए और मैं जेलों की कोठरियों के तख्तों पर लेटता रहा, कैदियों की कतारों में चलता रहा और अन्य सैकड़ों लोगों के साथ कैदियों की कार्य टुकड़ियों में काम करता रहा। और सदा यह गुप्त संकेत, जिसके लिए मुझे कोई श्रेय नहीं दिया जा सकता, उससे पहले ही काम करने लगता था कि मैं यह स्मरण करूं कि मेरे भीतर ऐसा कोई तत्व मौजूद है, जो मुझे यह संकेत देता है। यह संकेत किसी भी मानवीय चेहरे और आंखों पर पहली नज़र डालने, किसी आवाज़ को पहली बार सुनने के तुरन्त बाद शुरू हो जाता था। और इसके आधार पर ही मैं उस व्यक्ति के सामने अपना पूरा हृदय खोल देता अथवा इसकी एक झलकी मात्र दिखाता अथवा स्वयं को उससे एकदम दूर हटा लेता। यह संकेत निरन्तर इतना अधिक सफल रहा कि राज्य सुरक्षा अधिकारियों के मेरे खिलाफ मुखबिरों का इस्तेमाल करने के सब प्रयास मुझे उसी प्रकार महत्वहीन दिखाई पड़ने लगे, जिस प्रकार डांस के द्वारा परेशान किए जाने के प्रयास : आखिरकार एक ऐसा आदमी, जिसने देशद्रोही बनने का काम अपने ऊपर ले लिया हो उसके चेहरे से, उसकी आवाज़ से, यह बात प्रकट हो जाती है और यद्यपि इनमें से कुछ दूसरों की तुलना में अधिक बेहतर स्वांग कर लेते थे, लेकिन सदा इन लोगों के हाव-भाव से संदिग्धता टपकती थी। दूसरी ओर इस गुप्त संकेत ने मुझे उन लोगों को पहचानने में सहायता दी, जिन्हें मैं अपने परिचय के क्षण से ही अपनी समस्त मूल्यवान गहराइयों और रहस्यों की जानकारी दे सकता था—ऐसे रहस्यों की जिनके प्रकट होने पर अनेक सिर धड़ से अलग हो उठते हैं। इस प्रकार मैं कैद के ८ वर्ष, निष्कासन के ३ वर्ष और गुप्त रूप से लेखन के ६ वर्ष बिता सका, जो अपने आपमें किसी भी प्रकार कम खतरनाक नहीं थे। इन १७ वर्षों की अवधि में मैंने दर्जनों लोगों को बड़ी विवेकहीनता से अपने बारे में पूरी जानकारी दी—लेकिन एक बार भी मेरा कदम गलत सिद्ध नहीं हुआ। (मैंने इस गुण के बारे में कहीं कुछ भी नहीं पढ़ा है और मैं यहां इसका उल्लेख उन लोगों के लिये कर रहा हूं, जिनकी दिलचस्पी मनोविज्ञान में है। मुझे ऐसा लगा कि ऐसे आध्यात्मिक संकेत हम लोगों में से अनेक के भीतर मौजूद रहते हैं। लेकिन एक अत्यधिक तकनीकी और तर्क पर आधारित युग में रहने के कारण, हम इस चमत्कार की उपेक्षा करते हैं और क्षमता को विकसित नहीं होने देते।)

हमने खाट ठीक से लगा ली थी और अब मैं बातचीत के लिये तैयार था। हां, सचमुच, बातचीत फुसफुसाहट के स्वर में लेटे-लेटे ही की जा सकती थी, ताकि इस आरामदेह स्थान से सज़ा की कोठरी में न फेंक दिया जाये। लेकिन हमारी कोठरी के तीसरे साथी ने, जो अधेड़ उम्र का था और जिसके मशीन से कटे हुए बालों में उगी सफेद खूंटियां जल्दी ही पूरे सिर के सफेद हो उठने का संकेत दे रही थीं, मेरी ओर बड़े सन्तोष से देखते हुये उत्तरी क्षेत्र के निवासियों की विशिष्ट कठोरता से कहा : "कल बात होगी! रात सोने के लिए है।"

यह कार्य अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण था। किसी भी क्षण हममें से किसी भी आदमी को

पूछताछ के लिए बुलाया जा सकता था और वहां सुबह छह बजे तक रोककर रखा जा सकता था। इसके बाद पूछताछ अधिकारी तो नींद निकालने के लिये अपने घर चला जाएगा और हम लोगों को दिन के समय सोने की मनाही थी।

एक रात की व्यवधानहीन नींद संसार की समस्त वस्तुओं से अधिक महत्वपूर्ण थी !

एक और बात ने भी मुझे रोके रखा, जो तुरन्त मेरी समझ में नहीं आ रही थी। लेकिन मेरे इस किस्से के पहले शब्द से यह स्पष्ट हो गई थी, यद्यपि मैं उस समय इसके लिए कोई नाम नहीं सोच पाया था : हमारी गिरफ्तारी के बाद, हमारी दुनिया में प्रत्येक वस्तु एकदम बदल गई थी, हमारी समस्त संकल्पनाएं एकदम उल्टी हो गई थीं और मैं जिन अच्छी खबरों को इतने उत्साह से सुनाने लगा था, वे शायद हमारे लिए अच्छी खबरें नहीं थीं।

मेरी कोठरी के साथियों ने करवट ली, अपनी आंखों को अपने रूमालों से ढक लिया, ताकि २०० वाट के बल्ब की तेज़ रोशनी से बचा जा सके। अपनी बांहों के ऊपरी हिस्सों पर तौलिए लपेट लिए, क्योंकि कम्बलों से बाहर रहने के कारण बांहें एकदम ठिठुर गई थीं और बांहों के निचले हिस्सों को चुपचाप कम्बलों के नीचे छिपा लिया और सो गए।

और मैं वहां लेटा हुआ था। इन लोगों के बीच होने की खुशी से मैं अत्यधिक प्रसन्न था। एक घण्टे पहले भी मैं यह नहीं सोच पा रहा था कि मैं किसी दूसरे व्यक्ति के साथ रह सकूंगा। सिर के पिछले हिस्से में गोली लगने से अपने अन्त की मैं कल्पना कर रहा था—क्योंकि पूछताछ अधिकारी मुझे निरन्तर यही बात कहता रहा था—और मैं सोचता रहता था कि बिना किसी को देखे ही, बिना किसी से मिले ही इस प्रकार मेरा अन्त हो जाएगा। अभी भी पूछताछ मेरे ऊपर छाई हुई थी, लेकिन न जाने यह कितनी पीछे भी हट चुकी थी ! अगले दिन मैं उन्हें अपनी कहानी सुनाऊंगा (हां मैं अपने मामले के बारे में कोई बात नहीं करूंगा) और वे लोग मुझे अपनी-अपनी कहानियां सुनायेंगे। कल का दिन कितना दिलचस्प होगा, मेरे जीवन का एक सर्वोत्तम दिन) इस प्रकार, बहुत जल्दी और बहुत स्पष्टता से, मेरे अन्दर यह चेतना जगी कि जेल मेरे लिए एक अथाह गर्त नहीं है, बल्कि मेरे जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मोड़ है।)

कोठरी की हर चीज़ में मुझे दिलचस्पी थी ! मेरी नींद उड़ चुकी थी और जब कोई सन्तरी दरवाजे में बने छेद से न झांकता होता तो मैं चुपचाप कोठरी की हर चीज का अध्ययन करता। दीवार में छत के बराबर कोई तीन ईंटों की लम्बाई के बराबर एक छेद था। इसके ऊपर गहरे नीले रंग का कागज़ लगा हुआ था। वे लोग मुझे बता चुके थे कि यह एक खिड़की थी। हां, इस कोठरी में एक खिड़की थी। और इस पर लगा हुआ कागज़ हवाई हमले से बचाव के लिए रोशनी को बाहर नहीं जाने देता था। कल हो सकता है, दिन का प्रकाश तेज हो और दिन में किसी समय वे इस तेज़ रोशनी को बन्द कर दें। दिन के समय, दिन का प्रकाश प्राप्त करना कितना अधिक महत्वपूर्ण होता है।

कोठरी में एक मेज़ भी थी। इसके ऊपर एक अत्यधिक स्पष्ट स्थान पर, एक चायदानी, एक शतरंज और कुछ किताबें रखी हुई थीं। (मुझे अभी तक इस बात की जानकारी नहीं थी कि उन्हें इस प्रकार सजाकर क्यों रखा गया है। यह लूबयांका की कार्यप्रणाली का एक और उदाहरण था। दरवाजे में बने छेद से हर मिनट झांकने के दौर में सन्तरी से यह अपेक्षा की जाती थी कि जेल प्रशासन के उपहारों का कहीं दुरुपयोग तो नहीं किया जा रहा है, कि चायदानी का इस्तेमाल दीवार को तोड़ने के लिए तो नहीं किया जा रहा है; कि

कोई कैदी शतरंज के मोहरे निगलकर अपनी जीवन लीला और सोवियत संघ की अपनी नागरिकता की समाप्ति तो नहीं कर रहा है; कि कोई कैदी इस आशा से तो पुस्तकें नहीं जला रहा है कि इसके साथ ही पूरी जेल ही आग की लपटों की भेंट चढ़ जाएगी। कैदी के नज़र के चश्मे को इतना अधिक खतरनाक समझा जाता था कि रात के समय इसे मेज पर नहीं रखा जा सकता था। जेल के प्रशासक इसे अगले दिन सुबह तक के लिए उठा ले जाते थे।)

कितना आरामदेह जीवन है! शतरंज, पुस्तकें, स्प्रिंगदार चारपाई, अच्छा गद्दा, साफ चादर। पूरे युद्ध की अवधि में इस प्रकार सोने का मुझे स्मरण नहीं है। कोठरी का टूटा हुआ फर्श था। चारपाइयों के बीच की जगह में, खिड़की से दरवाजे तक का फासला चार कदमों में पूरा हो सकता था। सचमुच! यह केन्द्रीय राजनीतिक जेल एक आरामगाह थी।

और तोप के गोले भी यहां नहीं फट रहे थे। मुझे उनके धमाकों की याद थी : बहुत ऊपर आकाश में किसी के चीखने जैसी ऊंची आवाज़, फिर तेज़ सीटी और फिर गोले के जमीन पर गिरकर फटने का धमाका और छोटी मोर्टार तोपों के गोले कितनी नज़ाकत से सीटी बजाते हुए उड़ते थे। और उस तोप के चार धमाकों से हर वस्तु किस प्रकार कांप उठती थी, जिसे हम "डाक्टर गोएबेल्स के मोर्टार-राकेट" कहा करते थे। और मुझे वोर्म-डिट के पास के गीले बर्फ और कीचड़ की भी याद थी, जहां मुझे गिरफ्तार किया गया था और जहां आज भी हमारे सैनिक जर्मनों को हमारे घेरे से बाहर निकलने से रोकने के लिए तैनात हैं।

तो ठीक है, भाड़ में जाओ। यदि तुम यह नहीं चाहते कि मैं युद्ध में हिस्सा लूं, तो मैं हिस्सा नहीं लूंगा।



हमारे अनेक लुप्त मानव मूल्यों में एक और भी है : उन लोगों के उच्च कोटि के विचार जो हमसे पूर्व रूसी भाषा बोलते और लिखते थे। यह बड़ा विचित्र है कि क्रांति से पहले के हमारे साहित्य में उनका कोई उल्लेख नहीं किया गया है। अत्यन्त दुर्लभ अवसरों पर ही हमें उनके विचारों का परिचय मिलता है। हमें यह जानकारी मारीना स्वेताएवा अथवा "माता मारिया" (स्वेताएवा की पुस्तक "ब्लोक के संस्मरण") से मिलती है। इन लोगों का इतनी प्रबलता से उदात्तीकरण हुआ था कि वे अत्यधिक दृढ़ता से पृथ्वी पर अपना अस्तित्व कायम कर सके। समाजों के पतन से पहले, ऐसे ही बुद्धिमान, विचारशील लोगों का जन्म होता है। ये ऐसे लोग होते हैं, जिन्हें अन्य बातों से सरोकार नहीं होता। और आज इन लोगों का किस प्रकार मज़ाक उड़ाया जाता है! इन लोगों पर किस प्रकार छींटा-कशी की जाती है! मानो इन लोगों का सम्बन्ध ऐसे लोगों से था जिनके विचार अत्यधिक संकीर्ण थे, जो केवल अपनी ही भलाई सोचते थे। उदात्त विचारों वाले इन लोगों को केवल "कूड़ा करकट" के नाम से ही पुकारा गया क्योंकि ये लोग एक ऐसा फूल थे जो समय से पहले ही उग आया था और जिसने अत्यन्त मधुर सुगंध फैलाई थी। और इस कारण से इन्हें कुचल डाला गया।

ये लोग अपने व्यक्तिगत जीवन में विशेष रूप से असहाय थे : ये लोग न तो हवा के झोंके के साथ झुक सकते थे, न ही यह करने का स्वांग रच सकते थे और न ही रास्ते से हट सकते थे; इनके प्रत्येक शब्द में कोई राय, कोई प्रबल भावना, कोई प्रतिवाद प्रकट होता था। और ऐसे ही लोगों को टुकड़े-टुकड़े कर डाला गया, जिस प्रकार घास काटने की मशीन घास का सफाया कर देती है उसी प्रकार ये लोग भी दमनचक्र की बलि चढ़ गए।[1]

ये लोग भी जेल की इन्हीं कोठरियों से गुजरे। लेकिन कोठरी की दीवारों से अतीत के बारे में कोई भी जानकारी नहीं मिली—क्योंकि बहुत समय पहले ही दीवार के कागज़ को उखाड़ फेंका गया था और इनके ऊपर प्लास्टर किया जा चुका था। अनेक बार सफेदी की जा चुकी थी। (इसके विपरीत अब ये दीवारें छिपे हुए माइक्रोफ़ोनों की सहायता से हमारी बातें सुनने का प्रयास करती थीं।) कहीं भी इन कोठरियों के भूतपूर्व निवासियों के बारे में कोई भी जानकारी नहीं दी गई है, कोई भी बात नहीं लिखी गई है। इस बात का कोई ज्ञान नहीं है कि इन कोठरियों में क्या वार्तालाप हुए, किन विचारों को अपने मन में लेकर इन कोठरियों के भूतपूर्व निवासी गोली से उड़ाये जाने के लिए चल पड़े अथवा सोलोवेतस्की द्वीपों पर सजा काटने के लिए रवाना हो गए। और अब ऐसी कोई भी पुस्तक, जो हमारे साहित्य से भरे ४० माल डिब्बों के बराबर होती, संभवत: कभी भी नहीं लिखी जाएगी।

जो लोग आज भी जीवित हैं वे प्रायः हर प्रकार की मामूली-मामूली बातें बताते हैं : कि यहां लकड़ी के पलंग होते थे और गद्दों में भूसा भरा रहता था। कि सन् १६२० में, खिड़कियों पर टीन आदि लगाने से पहले खिड़कियों के शीशों पर ऊपर तक सफेद रोगन पुता रहता था। सन् १६२३ तक खिड़कियों पर टीन की चद्दरें आदि लगा दी गई थीं (यद्यपि हम सर्वसम्मति से इस बात का श्रेय सिर्फ बेरिया को देते हैं)। उन लोगों का कहना है कि १६२० के बाद के वर्षों में जेलों के अधिकारी उन कैदियों के प्रति बड़े उदार रहते थे, जो अपनी कोठरियों की दीवारों को "थपथपाकर" एक दूसरे को अपनी बात कहते थे। जारशाही के जमाने की जेलों की मूर्खतापूर्ण परम्परा को इस प्रकार आगे बढ़ाया गया था, क्योंकि उस समय यह समझा जाता था कि यदि कैदियों को दीवार थपथपाने से रोक दिया जाएगा, तो उनके पास समय काटने का कोई साधन नहीं रहेगा। और एक दूसरी बात : १६२० के बाद के वर्षों में सब जेल कर्मचारी लतविया निवासी थे, इन्हें लतविया की लाल सेना की टुकड़ियों आदि से भर्ती किया गया था और जेलों में कैदियों को भोजन पहुंचाने का काम लतविया की लम्बी तड़ंगी स्त्रियां ही करती थीं।

यह मामूली सा विवरण हैं, लेकिन ऐसा नहीं कि इस पर गहराई से विचार न किया जा सके।

स्वयं मुझे भी इस मुख्य सोवियत राजनीतिक जेल में पहुंचने की अत्यन्त आवश्यकता थी और मैं इस बात के लिए आभारी हूं कि मुझे इस जेल में पहुंचा दिया गया। मैंने बुखारिन के बारे में बहुत कुछ सोचा और मैंने उन घटनाओं की कल्पना करने की कोशिश की जो उस जेल में घटी थीं। लेकिन मेरे मन में यह भाव उत्पन्न हुआ कि हम केवल बचे-खुचे लोग ही हैं और इस कारण से हम किसी प्रांत की, "आन्तरिक" जेल में भी होते तो कोई विशेष अन्तर न पड़ता। इसके बावजूद इस जेल के कैदियों का दर्जा ऊंचा समझा जाता था।

और जेल की नई कोठरी में अपने साथियों के बीच ऊब जाने का कोई कारण नहीं था। ये ऐसे लोग थे जिनकी बातों को सुनना ज़रूरी था और इन लोगों के और अपने अनुभवों की तुलना उपयोगी थी।

जीवन्त भवों वाले वृद्ध महोदय का नाम अनातोली इलिच फास्तेंको था—और ६३ वर्ष की उम्र में भी वे किसी वृद्ध की तरह ऊबा डालने वाली बातें नहीं करते थे। लूबयांका जेल की हमारी कोठरी को उनकी मौजूदगी का अत्यन्त लाभ प्राप्त हो रहा था—यह लाभ रूस की जेलों की पुरानी परम्पराओं के संरक्षक और रूस की क्रांतियों के जीवित इतिहास के रूप में उनसे प्राप्त हो रहा था। उन्हें जो बातें याद थीं, उनके आधार पर वे उन समस्त बातों को सही परिप्रेक्ष्य में रखने में सफल होते थे, जो अतीत में हो चुकी थीं अथवा वर्तमान में हो रही थीं। ऐसे लोग केवल एक जेल की कोठरी में ही मूल्यवान नहीं होते। हमें अपने पूरे समाज में भी ऐसे लोगों की अत्यन्त आवश्यकता होती है।

जेल की इस कोठरी में ही हमने फास्तेंको का नाम सन् १९०५ की क्रांति सम्बन्धी एक पुस्तक में पढ़ा। वे इतने अधिक लम्बे अरसे से समाजवादी क्रांतिकारी थे कि ऐसा दिखाई पड़ने लगा था कि अब वे समाजवादी क्रांतिकारी नहीं रहे।

उन्हें सबसे पहले १९०४ में, जब वे युवक ही थे, जेल की सजा सुनाई गई। लेकिन १७ अक्तूबर १९०५ को घोषित "घोषणापत्र" में उन्हें तुरन्त रिहा कर दिया गया।[८]

क्षमादान के बारे में उन्होंने जो किस्सा सुनाया वह बड़ा दिलचस्प था। उन वर्षों में जेल की खिड़कियों पर टीन आदि नहीं लगी रहती थी और बेलाया सेरकोव जेल की कोठरियों से, जिस जेल में फास्तेंको को कैद रखा गया था, कैदी लोग बड़ी आसानी से अहाते और सड़क को देख सकते थे। वे सब नए आने वाले और वहां से जाने वाले कैदियों को देख सकते थे और अपनी इच्छानुसार जेल के बाहर घूमने वाले सामान्य नागरिकों को कुछ भी चिल्लाकर कह सकते और उनकी बात सुन सकते थे। १७ अक्तूबर को इन बाहरी लोगों ने तार से क्षमादान की जानकारी मिलने पर, कैदियों तक यह सूचना पहुंचा दी। खुशी के मारे राजनीतिक कैदी हर्षोन्मत हो उठे। इन लोगों ने खिड़कियों के शीशे तोड़ डाले, दरवाजों को चकनाचूर कर दिया और मांग की कि जेल का वार्डन उन्हें तुरन्त रिहा करे। और क्या किसी ने तत्काल फौजी बूटों से उनके मुंह पर ठोकरें जमाई? क्या उन्हें सजा की कोठरियों में बन्द किया गया? क्या किसी कैदी को स्वतन्त्रता और अन्य विशेषाधिकारों से वंचित किया गया? नहीं, सचमुच नहीं! अत्यधिक परेशान होकर वार्डन एक के बाद एक कोठरी में दौड़कर जाता और कैदियों से प्रार्थना करता : "भद्र लोगो! मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, मेहरबानी करके ज़रा सोचिए तो! मैं आप लोगों को तार से पहुंची जानकारी के आधार पर कैसे रिहा कर सकता हूं। मेरे पास यह अधिकार नहीं है। मुझे इसके लिए कीव में तैनात अपने बड़े अफसरों से सीधा आदेश प्राप्त करना होगा। मेहरबानी कीजिए, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं। आपको आज रात का समय यहीं बिताना होगा।" और वास्तव में इन लोगों को वहां एक और दिन अत्यन्त बर्बरता से कैद रखा गया।[९]

स्वतन्त्रत होते ही फास्तेंको और उनके साथियों ने क्रांति में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। सन् १९०६ में उन्हें ८ वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। जिसका अर्थ यह था कि वे चार वर्ष तक जेल में रहेंगे और ४ वर्ष निष्कासन में बितायेंगे। उन्होंने पहले ४ वर्ष का समय सेवास्तोकोल केन्द्रीय जेल में बिताया, जहां उनके कैद रहने की अवधि

में क्रांतिकारी पार्टियों के एक गठबन्धन ने कैदियों को जेल से भगाने का संगठित प्रयास किया : ये क्रांतिकारी पार्टियां थीं—समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी, अराजकतावादी पार्टी और समाजवादी लोकतन्त्रीय पार्टी। एक बम ने जेल की दीवार में इतना बड़ा छेद बना दिया कि एक घुड़सवार उसके बीच से आसानी से निकल सकता था और इस प्रकार दो दर्जन कैदी भाग निकले—इनमें वे सब लोग शामिल नहीं थे, जो भाग निकलना चाहते थे। बल्कि ऐसे कैदी थे जिनका चुनाव इससे पहले ही उनकी पार्टियों ने किया था और जेल के भीतर ही जिन्हें स्वयं जेल कर्मचारियों ने पिस्तौलें पहुंचा दी थीं। भाग निकलने के लिए जिन लोगों को चुना गया था, उनमें एक को छोड़कर सब कैदी भाग निकले थे : रूस की समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी ने अनातोली फास्तेंको का चुनाव इस कार्य के लिए किया था कि वे जेल से भागें नहीं, बल्कि सन्तरियों का ध्यान बटाने के लिये जेल के भीतर गड़बड़ मचायें।

दूसरी ओर, जब वे निष्कासन के दौरान येनीसेई क्षेत्र में पहुंचे तो वे वहां अधिक समय तक नहीं रहे। उन्होंने जो किस्से बताये (और बाद में उन लोगों की बातों से भी यह पता चला जो इस समय तक जीवित थे) उनका इस तथ्य से मिलान करने पर कि जारशाही के जमाने में हमारे क्रान्तिकारी सैकड़ों की संख्या में निष्कासन से भाग निकले थे और इनमें से निरन्तर अधिकाधिक लोग विदेश चले जाते थे, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जारशाही के जमाने के निष्कासन से जो कैदी नहीं भाग पाते थे, वे केवल आलसी ही होते थे, क्योंकि निष्कासन से भाग निकलना बड़ा आसान था। फास्तेंको "भाग निकले" इस कथन का केवल यही अभिप्राय है कि वे पासपोर्ट के बिना ही उस इलाके से चले गए, जहां उन्हें निष्कासित किया गया था। वे व्लादिवोस्तोक पहुंचे, जहां उन्हें अपने एक परिचित की सहायता से स्टीमर में सवार हो जाने की आशा थी। न जाने क्यों उन्हें इस काम में सफलता नहीं मिली। इसके बावजूद, यद्यपि अभी भी उनके पास पासपोर्ट नहीं था, वे बड़ी शान्ति से मातृभूमि रूस के दूसरे छोर पर रेलगाड़ी से पहुंचने में सफल हुए और इस प्रकार यूक्रेन जा पहुंचे। यूक्रेन में ही वे बोलशेविक पार्टी के गुप्त गतिविधियां करने वाले कार्यकर्ताओं में शामिल हुए थे और वहीं पहली बार उन्हें गिरफ्तार किया गया था। वहां उन्हें एक झूठा पासपोर्ट दे दिया गया और वे आस्ट्रिया की सीमा पार करने के लिए रवाना हो गए। यह तरीका इतना आम बन चुका था कि फास्तेंको स्वयं को पुलिस द्वारा पीछा किये जाने से इतना सुरक्षित समझ रहे थे कि उन्होंने आश्चर्यजनक सीमा तक लापरवाही दिखाई। सीमा पर पहुंचकर, वहां नियुक्त अधिकारी को अपना पासपोर्ट देकर अचानक उन्हें ध्यान आया कि पासपोर्ट में दर्ज अपना नया नाम उन्हें याद नहीं है। अब वे क्या करें ? कुल मिलाकर ४० यात्री थे और अधिकारी ने एक-एक यात्री को उसका नाम लेकर बुलाना शुरू कर दिया था। फास्तेंको ने एक तरकीब सोची। उन्होंने यह नाटक किया कि वे सो रहे हैं। वे ध्यान लगाकर यह सुनते रहे कि पासपोर्ट एक-एक करके सम्बन्धित लोगों को लौटाये जा रहे हैं, और उन्होंने यह देखा कि मकारोव नाम कई बार पुकारा गया है और किसी ने भी इस नाम के पुकारे जाने के बाद उत्तर नहीं दिया। लेकिन इस क्षण भी उन्हें इस बात का निश्चय नहीं था कि यही उनका नया नाम है। अन्ततः शाही शासन का रक्षक इस गुप्त क्रांतिकारी के पास पहुंचा और नीचे झुककर बड़ी विनम्रता से उनका कन्धा थपथपाया। मिस्टर मकारोव ! मिस्टर मकारोव ! श्रीमान्, यह आपका पासपोर्ट है, लीजिए !

फास्तेंको पेरिस के लिए रवाना हो गए। वहां उनका परिचय लेनिन और लुना-

चारस्की से हुआ और उन्होंने लोंगजूमो स्थित पार्टी स्कूल में प्रशासनिक कार्यों का दायित्व अपने हाथ में लिया। इन्हीं दिनों उन्होंने फ्रांसीसी भाषा का भी अध्ययन शुरू किया और इधर-उधर नजर डालने पर उनके मन में यह विचार आया कि उन्हें यात्रा करनी चाहिए और दुनिया देखनी चाहिए। युद्ध से पहले वे कनाडा गए और उन्होंने वहां कुछ समय काम किया। उन्होंने कुछ समय संयुक्त राज्य अमरीका में भी बिताया। उन्हें इन देशों के स्वतंत्र और आरामदेह, पर इसके बावजूद, ठोस आधार पर निर्मित जीवन को देखकर आश्चर्य हुआ और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यहां सर्वहारा क्रांति कभी नहीं होगी और उन्हें इसकी आवश्यकता भी नहीं थी।

इसके बाद रूस में चिर प्रतीक्षित क्रांति हुई। यह क्रान्ति आशा से कहीं अधिक पहले हुई और प्रत्येक व्यक्ति रूस वापस लौट आया और इसके बाद एक और क्रान्ति हुई। अब फास्तेंको के मन में इन क्रान्तियों के प्रति पहले जैसा प्रबल भावोद्रेक नहीं था। लेकिन वे वापस लौटे, उसी आवश्यकता से बाध्य होकर, जो उन पक्षियों को अपने मूल घोंसलों में वापस लौटने के लिए प्रेरित करती है, जो हर वर्ष दूसरे देशों की यात्रा पर निकल पड़ते हैं।[१०]

फास्तेंको के बारे में बहुत कुछ ऐसा था, जो अभी भी मेरी समझ में नहीं आ रहा था। मेरी नजर में, उनके बारे में प्रमुख बात संभवत: यह थी, और सबसे अधिक आश्चर्यजनक भी कि वे लेनिन से व्यक्तिगत रूप से परिचित थे। लेकिन इसके बावजूद वे अत्यन्त भावनाहीनता से लेनिन के नाम का उल्लेख करते थे। (उस समय मेरे ऐसे विचार थे कि यदि जेल की कोठरी में कोई व्यक्ति फास्तेंको को उनके नाम के आरम्भिक हिस्से से ही पुकारता और उनके पारिवारिक नाम को उसके साथ नहीं जोड़ता अर्थात् उन्हें केवल "इलिच" कहकर ही पुकारता और कहता "इलिच, क्या पाखाने की बाल्टी उठाने की तुम्हारी बारी है?" तो मुझे अत्यधिक आघात पहुंचता और मैं क्रोधित हो उठता, क्योंकि मुझे लेनिन के नाम के आरंभिक शब्द का "पाखाने की बाल्टी" के साथ एक ही वाक्य में इस्तेमाल करना ही किसी पवित्र वस्तु का अपमान करने के समान नहीं लगता था, बल्कि लेनिन के अलावा अन्य किसी भी व्यक्ति को "इलिच" कहकर पुकारना इसी प्रकार आघातजनक लगता था। इस बात में संदेह नहीं है कि इसी कारण से फास्तेंको ने मुझे ऐसी बहुत सी बातें नहीं बताईं, जो वे मुझे बताना चाहते थे। लेकिन इसके बावजूद वे मेरे विचार को समझते थे।

इसके बावजूद एक बार उन्होंने मुझे अत्यन्त स्पष्ट रूसी भाषा में यह कहा : "तुम्हें अपने मस्तिष्क में कोई स्थिर तस्वीर नहीं उतार लेनी चाहिए!" लेकिन मैं उनकी बात का अर्थ न समझ सका!

मेरे उत्साह को देखते हुए उन्होंने मुझसे अनेक बार जोर देकर यह कहा : "तुम गणितज्ञ हो; तुम्हारे लिए डेसकार्टेस की इस उक्ति को भुला देना गलती होगा।" "प्रत्येक वस्तु के बारे में शंका उठाओ, सवाल पूछो!" "प्रत्येक वस्तु के बारे में शंका उठाओ!" इस बात का क्या अर्थ था—"प्रत्येक वस्तु के बारे में?" नहीं, प्रत्येक वस्तु के बारे में नहीं! मुझे ऐसा लग रहा था, मानो मैं पर्याप्त बातों के प्रति शंका उठा चुका था और यह काफी था।

उन्होंने यह भी कहा : "जारशाही के जमाने के पुराने कठोर कारावास भोगने वाले राजनीतिक कैदियों में से मुश्किल से ही कोई जीवित है। मैं अन्तिम लोगों में से हूं। जारशाही के जमाने में कठोर कारावास भोगने वाले सब राजनीतिज्ञों को समाप्त कर दिया गया

है, और उन लोगों ने १९३० के बाद के वर्षों में हमारी पार्टी को भी भंग कर दिया।" "क्यों?" मैंने पूछा। "ताकि हम एक साथ मिलकर, सब बातों पर विचार न कर सकें।" और यद्यपि इन सीधे-सादे शब्दों को, अत्यन्त संयत स्वर में उच्चारित किया गया था। लेकिन यह आवश्यक था कि इन्हें आकाश से उद्घोषित किया जाता, इन्हें इतनी जोर से पुकारा जाता कि खिड़कियों के शीशे खड़खड़ा उठते। लेकिन मैंने इनका यही अर्थ समझा कि इन बातों से स्तालिन के दुष्कृत्यों में से एक और दुष्कृत्य का पता चलता है। यह एक कष्टदायक तथ्य था, लेकिन यह आधारहीन था।

एक बात पूरी तरह निश्चित है। वह प्रत्येक बात जो हमारे कान में पड़ती है, हमारी चेतना को नहीं बेधती। हमारे विचार और दृष्टिकोण से जो बात बहुत दूर होती है, वह या तो स्वयं कानों में ही लुप्त हो जाती है अथवा इससे कुछ आगे बढ़कर खो जाती है। लेकिन इसका लोभ अवश्य होता है। यद्यपि मुझे फास्तेंको के अनेक किस्सों का स्पष्ट स्मरण है, मैं उनके विचारों को अस्पष्टता से ही याद कर पाता हूं। उन्होंने मुझे उन अनेक पुस्तकों के नाम बताये थे और यह सलाह दी थी कि मैं आजाद होने पर इन पुस्तकों को अवश्य पढ़ूं। उनकी उम्र और स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उन्हें जेल से जीवित बाहर निकलने की आशा नहीं थी और उन्हें इस विचार से संतोष मिलता था कि एक न एक दिन मैं उनकी बातों को, उनके विचारों को समझूंगा। उन्होंने जिन पुस्तकों को पढ़ने का सुझाव दिया था, मैं उनकी सूची तैयार नहीं कर सकता था और इसके अलावा मुझे जेल के जीवन के बारे में बहुत सी बातों का स्मरण रखना था। लेकिन मुझे उन पुस्तकों के नाम आज भी याद हैं, जो उस समय मेरी रुचि के समीपतम थीं: गोर्की की 'अनटाइमली थाट्स' (उस समय मैं गोर्की को अत्यधिक सम्मान के भाव से देखता था, क्योंकि आखिरकार उन्होंने सर्वहारा होने की होड़ में रूस के अन्य सब प्राचीन लेखकों को पीछे छोड़ दिया था) और प्लीखानोव की पुस्तक "ए ईयर इन दी मदरलैंड"।

आज जब मैं उन बातों को पढ़ता हूं जो प्लीखानोव ने २८ अक्तूबर १९१७ को लिखी थीं, तो मेरे मन में वे सब विचार आ जाते हैं, जिनके बारे में स्वयं फास्तेंको सोचा करते थे:

"...मुझे पिछले दिनों की घटनाओं से इसलिए निराशा नहीं हुई है कि मैं रूस में श्रमजीवी वर्ग की विजय नहीं चाहता, बल्कि केवल इसलिए हुई है कि मैं अपनी आत्मा की समस्त शक्ति से इस सफलता के लिए प्रार्थना करता हूं...[हमें करनी भी चाहिए] एंगेल्स के इस विचार को याद रखिए कि श्रमजीवी वर्ग के लिए इससे अधिक बड़ी ऐतिहासिक त्रासदी अन्य नहीं हो सकती कि वह उस समय राजनीतिक सत्ता पर अधिकार कर ले, जब वह उसके लिए तैयार नहीं है। [इस प्रकार सत्ता पर अधिकार] उसे उन स्थानों से पीछे हटने के लिए बाध्य करेगा, जिन स्थानों पर वर्तमान वर्ष के फरवरी और मार्च महीनों में विजय प्राप्त कर ली गई है।"[११]

जब फास्तेंको रूस वापस लौटे, तो उनकी पहले जमाने की गुप्त गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए, उनके ऊपर एक महत्वपूर्ण पद स्वीकार करने के लिए दबाव डाला गया। लेकिन वे महत्वपूर्ण पद नहीं चाहते थे। इसके स्थान पर उन्होंने समाचारपत्र प्रावदा में एक मामूली सा पद स्वीकार कर लिया और इसके बाद इससे भी अधिक मामूली काम पर चले गए और इसके बाद वे मास्को नगर योजना कार्यालय में काम करने लगे। इस कार्यालय में

वे एक नगण्य पद पर काम कर रहे थे।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वयं एक ऐसा निरर्थक पद क्यों स्वीकार किया? उन्होंने मुझे यह बात इस प्रकार समझाई कि मैं इस बात के महत्व को समझ गया। "आप एक बुड्ढे कुत्ते को जंजीर में बंधकर रहना नहीं सिखा सकते।"

यह अनुभव करने के बाद कि वे कोई भी उपलब्धि नहीं कर सकते, अतः फास्तेंको ने बस यही प्रयास किया कि अत्यन्त मानवीय तरीके से किसी प्रकार जीवित रह सकें। वे एक अत्यन्त मामूली पेन्शन पर जीवित रहने के अभ्यस्त हो चुके थे—यह उस प्रकार की "व्यक्तिगत" पेन्शन नहीं थी, जिसे सरकार विशेष रूप से कुछ विशेष लोगों को देती है। यह पेन्शन स्वीकार करने का अर्थ उन लोगों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्वीकार करना होता, जिन्हें गोली से उड़ाया जा सकता था। और इस प्रकार वे १९५३ तक जीवित रह सकते थे। लेकिन दुर्भाग्यवश, उन लोगों ने उनकी इमारत के एक और निवासी को गिरफ्तार कर लिया। यह व्यभिचारी और निरन्तर शराब के नशे में धुत रहने वाला लेखक एल० एस—व था, जिसने कहीं शराब के नशे में यह शेखी बघारी कि उसके पास एक पिस्तौल है। पिस्तौल होने का अर्थ यह था कि उसे आतंकवाद के अभियोग पर अनिवार्य रूप से दण्डित किया जाए और समाजवादी लोकतंत्रीय पार्टी से पुराने सम्बन्धों के कारण फास्तेंको एक आतंककारी का जीता जागता उदाहरण थे। अतः पूछताछ अधिकारी ने आतंकवाद का अभियोग उनके ऊपर लगाया और इसके साथ ही उनके ऊपर फ्रांस और कनाडा की जासूसी सेवाओं और जारशाही के ज़माने में ओखराना अर्थात् खुफिया पुलिस में सेवा का भी अभियोग लगाया गया।[१२] और सन् १९४५ में अपना मोटा वेतन अर्जित करने के लिए मोटे पूछताछ अधिकारी ने बड़ी गम्भीरता से जारों के शासनकाल के पुलिस के प्रान्तीय प्रशासन की फाइलों को देखना शुरू किया और षड्यंत्रकारियों के छद्म नामों, कूट शब्दों और मिलने के गुप्त स्थानों तथा १९०३ में हुई बैठकों के बारे में अत्यधिक गम्भीर बयान तैयार किए।

गिरफ्तारी के १०वें दिन उनकी वृद्ध पत्नी ने (क्योंकि उनका कोई बच्चा नहीं था) अनातोली इलिच फास्तेंको को खाने की चीजों का एक छोटा सा पार्सल पहुंचाया, जिन्हें वे बड़ी मुश्किल से जुटा पाई थीं। १० दिन से पहले किसी भी प्रकार का पार्सल कैदी को देने की अनुमति नहीं थी। उस पार्सल में काली रोटी का एक टुकड़ा था, जिसका वज़न लगभग साढ़े १० औंस था (आखिरकार इस रोटी को खुले बाजार में खरीदा गया था, जहां एक पौंड रोटी का ५० रूबल देना पड़ता था) और इसमें एक दर्जन उबले और छिले हुए आलू थे, जिन्हें पार्सल के मुआयने के समय धारदार औजारों से छेद दिया गया था। इन पार्सलों को देखकर हृदय भर आता था, जो इस प्रकार छेद दिये जाने के कारण बुरी हालत में होते थे, लेकिन भेजने वाले की भावनाओं को देखते हुए जो अत्यन्त पवित्र थे।

इस व्यक्ति को ६३ वर्ष की ईमानदारी और शंकाओं का यह पुरस्कार मिला था।



हमारी कोठरी में चार चारपाइयां लगी थीं और इसके परिणामस्वरूप बीच में थोड़ी सी जगह रह गई थी और इस स्थान पर मेज़ रखी हुई थी। लेकिन मेरे इस कोठरी में पहुंचने के कई दिन बाद उन लोगों ने एक पांचवां कैदी और भेज दिया और उसके लिए तिरछी

करके खाट लगा दी।

सुबह उठने से एक घंटा पहले वे लोग इस नए कैदी को लाए थे—यह वह संक्षिप्त और सुखद अन्तिम घंटा होता था, जिसे कोई भी कैदी बर्बाद न करना चाहेगा और हममें से किसी ने भी अपना सिर नहीं उठाया। केवल क्मारेंको कूदकर उठ खड़ा हुआ, ताकि इस कैदी से कुछ तम्बाकू झटक सके और शायद इस तम्बाकू के साथ ही इस कैदी से पूछताछ अधिकारी के लिए कुछ मसाला भी प्राप्त हो जाए। वे लोग बहुत धीरे-धीरे फुसफुसाहट के स्वर में बात करने लगे और हम लोगों ने उनकी बात न सुनने का प्रयास किया। लेकिन नए आए कैदी की फुसफुसाहट को न सुन पाना असम्भव था। यह फुसफुसाहट भी इतनी ऊंची थी, इतनी अशान्त थी, इतनी तनावग्रस्त थी और हिचकियों के इतनी समीप थी कि हमने यह अनुभव किया कि हमारी कोठरी में कोई मामूली दुखी व्यक्ति नहीं आया है। यह नया कैदी यह पूछ रहा था कि क्या बहुत अधिक लोगों को गोली से उड़ा दिया जाता है? इसके बावजूद, अपना सिर घुमाये बिना ही मैंने इन लोगों से कहा कि और धीरे-धीरे बात करें।

सुबह उठने का भोंपू बजते ही हम सब लोग तत्काल कूदकर उठ खड़े हुए (क्योंकि इसके बाद भी बिस्तर पर लेटे रहने से सजा की कोठरी में बन्द किया जाता था) और हमने देखा कि हमारी कोठरी में सेना का एक जनरल मौजूद है, उससे कम हैसियत का आदमी नहीं। यह सच है कि उसने अपने पद के सूचक चिह्न आदि नहीं लगा रखे थे—और न ही कोई यह देख सकता था कि किस स्थान से उसके पद के सूचक चिह्न नोचकर फेंके गए हैं अथवा निकाल दिए गए हैं। लेकिन उसका कीमती कोट, उसका मुलायम ओवरकोट वस्तुतः उसकी समस्त आकृति और चेहरा हमें यह बता रहा था कि वह निःसंदेह एक जनरल है, वास्तव में वह एक विशिष्ट किस्म का जनरल है और यह भी निश्चित है कि वह पूरा जनरल है। उस जमाने के घिसे-पिटे मेजर जनरलों की तरह नहीं। वह छोटे कद का, गठे हुए शरीर वाला, बहुत चौड़े कन्धों वाला मोटा ताजा व्यक्ति था। उसका चेहरा विशेष रूप से मोटा था। लेकिन यह चर्बी जो उसे खूब अच्छा भोजन खाने के फलस्वरूप प्राप्त हुई थी, उसके चेहरे को अच्छे स्वभाव का आकर्षण प्रदान नहीं करती थी, बल्कि अत्यधिक महत्व और उच्चतम पदों से सम्बद्ध होने का आभास दिलाती थी। उसके चेहरे की सबसे बड़ी विशेषता ऊपरी हिस्से में निहित नहीं थी, बल्कि निचले हिस्से में निहित थी, जो एक बुलडाग के जबड़े जैसा दिखाई देता था। उसके चेहरे के इसी भाग में उसकी शारीरिक शक्ति केन्द्रित थी, और इसी प्रकार उसकी संकल्प शक्ति और रौब-दबदबा भी। इसके बल पर वह अधेड़ उम्र शुरू होने तक ही इतना ऊंचा पद प्राप्त करने में सफल हुआ था।

हम लोगों ने एक दूसरे को अपना परिचय दिया और यह पता चला कि एल० वी० ज—व उससे भी कहीं कम उम्र था, जितना वह दिखाई पड़ता था। इसी वर्ष वह ३६ वर्ष का हो जाएगा—"यदि वह मुझे गोली से नहीं उड़ाते।" इससे भी अधिक आश्चर्य उस समय हुआ जब यह बात प्रकट हुई कि वह सेना का जनरल नहीं था, कर्नल तक नहीं था, वह सेना से किसी भी प्रकार सम्बन्धित नहीं था—वह एक इंजीनियर था!

एक इंजीनियर? मैं इंजीनियरों के बीच ही बड़ा हुआ हूं और मुझे इस शताब्दी के तीसरे दशक के इंजीनियरों का बहुत अच्छी तरह से स्मरण है: उनकी प्रभावशाली बुद्धि, उनके स्वतंत्र और भद्र उपहास के तौर तरीके, उनके विचारों की कुशाग्रता और व्यापकता, वह प्रभावशाली सहजता, जिससे वह इंजीनियरों के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में काम करने

लगते थे और इसी प्रकार टेक्नालाजी के मामलों से लेकर सामाजिक चिन्ता के विषयों और कला तक में गहरी दिलचस्पी रखते थे। इसके अलावा ये लोग भद्र आचरण और सुरुचि का प्रतीक दिखाई पड़ते थे। इनका बात करने का तरीका बड़ा सुसंस्कृत होता था और इसमें अभद्र शब्दों के लिए कोई स्थान नहीं रहता था। इनमें से कोई इंजीनियर कोई संगीतवाद्य बजाता था अथवा किसी की रुचि चित्रकारी में होती थी और उनके चेहरों पर सदा आध्यात्मिकता की छाप रहती थी।

१९३० के बाद के आरम्भिक वर्षों में ही मेरा इस परिवेश से सम्पर्क टूट गया था। इसके बाद युद्ध शुरू हुआ और यहां मेरे सामने एक इंजीनियर खड़ा था, जो उन इंजीनियरों में से था, जिन्होंने उन लोगों का स्थान लिया था, जिन्हें समाप्त कर दिया गया था।

कोई भी व्यक्ति उसकी एक श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं कर सकता था। वह पहले के इंजीनियरों से अधिक शक्तिशाली था, अधिक मोटा था। उसके कन्धों और हाथों की शक्ति बनी हुई थी, यद्यपि काफी अरसे पहले ही इन्हें इस शक्ति की आवश्यकता नहीं रह गई थी। विनम्रता के अंकुश से मुक्त हो जाने के कारण, वह बड़ी कठोरता से देखता था और बड़े अवैयक्तिक तरीके से बोलता था। मानो वह किसी विरोधी विचार अथवा असहमति की संभावना की कल्पना तक नहीं कर पाता। उसका विकास पहले के उन इंजीनियरों से भिन्न रूप में हुआ था और उसने भिन्न तरीके से काम किया था।

उसके पिता ने अत्यधिक शाब्दिक अर्थों में जमीन की जुताई की थी। लेन्या ज—व उन अव्यवस्थित और अप्रबुद्ध किसान लड़कों में से था, जिनकी प्रतिभा की बर्बादी से बेलिंस्की और तोलसतोय इतने अधिक दुखी हुए थे। निश्चय ही वह कोई लोमोनोसेव नहीं था और वह केवल अपनी क्षमताओं के आधार पर ही अकादमी में प्रवेश नहीं पा सकता था, लेकिन उसमें प्रतिभा थी। यदि क्रांति न होती, तो वह जमीन ही जोतता रहता और वह समृद्ध बन सकता था, क्योंकि उसमें शक्ति थी और वह सक्रिय व्यक्ति था और यह भी संभव था कि वह उन्नति करके व्यापारी वर्ग का अंग बन जाता।

पर यह सोवियत युग था। अतः वह युवक कम्युनिस्ट पार्टी कोमसोमोल में भर्ती हुआ और कोमसोमोल में उसके काम ने उसकी अन्य प्रतिभाओं को पीछे छोड़ते हुए उसकी अनामिकता समाप्त कर दी, उसे इस निम्न दर्जे से ऊपर उठा लिया, उसे देहात से निकाल-कर एक राकेट की तरह श्रमिक स्कूल की मार्फत सीधे उद्योग अकादमी में पहुंचा दिया। वह सन् १९२९ में अकादमी में पहुंचा—यह वही समय था, जब उन पुराने इंजीनियरों को, बड़ी-बड़ी टोलियों में गुलाग द्वीपसमूह में पहुंचाया जा रहा था। सत्तारूढ़ लोगों के लिए यह बात तात्कालिक महत्व की थी कि वे अपने इंजीनियर तैयार करें—राजनीतिक दृष्टि से सजग, वफादार, शत-प्रतिशत वाले इंजीनियर, जिन्हें उत्पादन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण व्यक्ति बनना था, सोवियत व्यापारी बनना था। न कि ऐसे लोग जो स्वयं अपने हाथ से काम करते हैं। यह वह क्षण था, जब वे सर्वोच्च पद, जिन्हें अब तक अनिर्मित उद्योगों का संचालन करना था अभी तक खाली पड़े थे और उद्योग अकादमी की ज—व की कक्षा की नियति इन पदों पर आसीन होने की थी।

ज—व का जीवन विजय की एक शृंखला बना। यह एक ऐसी शृंखला बना, जो सीधी चोटी तक पहुंचती है। यह १९२९ से १९३३ तक के सब चीजों को पचा जाने वाले वर्ष थे, जब १९१८ से १९२० के वर्षों की तरह मामूली हथियारों से गृहयुद्ध नहीं चल रहा

था। यह वह समय नहीं था, जब घोड़ा गाड़ियों पर मशीनगनें लगाकर गृहयुद्ध का संचालन किया जा रहा था। बल्कि यह वह समय था जब पुलिस के कुत्तों का इस्तेमाल किया जा रहा था, जब अकाल से मरने वाले लोगों की लम्बी-लम्बी पंक्तियां इस आशा से रेलवे स्टेशनों की ओर बढ़ रही थीं कि वे किसी प्रकार नगरों में पहुंच जायें, क्योंकि इन्हीं नगरों में अनाज की बालियां पक रही थीं। लेकिन इन लोगों को टिकट देने से इन्कार कर दिया गया और ये अपने गांवों से बाहर न जा सके—और ये लोग स्टेशनों की बाड़ों के बाहर हाथ से बने घरेलू कपड़े के कोटों और पेड़ों की छाल के जूते पहने पूरी तरह से अपने को सत्ता के समक्ष समर्पित करने वाले मानव ढेरों के रूप में पड़े-पड़े दम तोड़ देते थे। इन्हीं वर्षों में ज़—व केवल इसी बात से अनभिज्ञ नहीं था कि शहर के निवासियों को रोटी का राशन मिलता है। यह अनभिज्ञता उस समय थी, जब एक शारीरिक श्रम करने वाले मज़दूर को पूरे महीने की मज़दूरी में ६० रूबल मिलते थे और ज़—व को ९०० रूबल मासिक की छात्रवृत्ति मिल रही थी। ज़—व का हृदय उन गांवों के इन कष्टों को देखकर दर्द से नहीं कराहा, जिनकी धूल वह अपने पांवों से पोंछ चुका था। उसका नया जीवन उसे भिन्न क्षेत्र में, विजेताओं और नेताओं के मध्य आकाश की ओर उठाकर ले जा रहा था।

उसे कभी भी एक मामूली और सर्वत्र मौजूद फोरमैन के रूप में काम नहीं करना पड़ा था। उसे तुरन्त एक ऐसे पद पर नियुक्त किया गया, जहां दर्जनों इंजीनियर और हजारों मज़दूर उसके अधीन काम करते थे। मास्को से बाहर एक विशाल निर्माण योजना का वह मुख्य इंजीनियर था। युद्ध के शुरू में ही उसे, जैसाकि स्पष्ट था, सैनिक सेवा से मुक्ति मिल गई थी, छूट मिल गई थी। अपने विभाग सहित उसे अलमा-अता में पीछे भेज दिया गया था और इस क्षेत्र में इली नदी सम्बन्धी और भी बड़ी निर्माण योजनाओं के ऊपर अफसरी करने का उसे मौका मिला। लेकिन वहां उसके मज़दूरों के रूप में कैदी लोग काम करते थे। उन कृष्णकाय और विवर्ण लोगों को देखकर उसके मन में कोई भाव नहीं जगा, कोई चिन्ता उत्पन्न नहीं हुई। यह दृश्य उसे परिस्थिति का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए भी प्रेरित नहीं कर सका, सब बातों को और अधिक गौर से देखने और समझने के लिए बाध्य नहीं कर सका। और ज़—व के लिए यह पर्याप्त था कि वह किसी निर्माण यूनिट, किसी विशेष कैम्प और किसी खास सुपरिन्टेन्डेन्ट को काम का निश्चित कोटा पूरा न करने के लिए सज़ा सुनाता रहे। और इसके बाद यह इन लोगों का सिर दर्द था कि वे स्वयं अपने साधनों से काम का निर्धारित कोटा पूरा करें। निर्धारित मानदण्ड के अनुसार काम पूरा करने के लिए उन्हें कितने घंटे काम करना पड़ेगा अथवा जीवित रहने के लिए कैदियों को कितने अधिक राशन की ज़रूरत होगी, ये ऐसे विवरण थे, जिनसे उसे कोई सरोकार नहीं था।

युद्ध के वर्षों में मोर्चों से बहुत पीछे बिताये गए वर्ष ज़—व के जीवन के सर्वोच्च वर्ष थे। यह युद्ध का शाश्वत और सार्वभौम पहलू है। यह अपने एक छोर पर जितने अधिक कष्टों को संचय करता है, दूसरे छोर पर उतने ही अधिक आनंद को जन्म देता है। ज़—व का केवल बुलडाग जैसा जबड़ा ही नहीं था, बल्कि तेज और पहल करने की क्षमता से सम्पन्न व्यापारी जैसी सूझबूझ भी थी। उसने अत्यन्त कुशलता से अर्थव्यवस्था की नई युद्धकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप अपने कार्य को ढाल लिया। विजय के लिए सब कुछ करना उचित है। कुछ भी लेनदेन करते रहो, युद्ध सब लेखाजोखा पूरा कर देगा। उसने केवल एक रियायत युद्ध को दी। वह सूट और नेकटाई के बिना ही इधर उधर घूमता और उसने खाकी रंग

के कपड़ों, बढ़िया चमड़े के फौजी बूटों और एक जनरल के कोट के पीछे स्वयं को छिपा लिया। इन्हीं वस्त्रों में वह आज हमारे सामने मौजूद था। उस समय यह बड़ी फैशनेबल बात थी और असामान्य भी नहीं। युद्ध में घायल लोग इस पर क्रोध प्रकट नहीं करते थे और न ही स्त्रियां ऐसे लोगों की ओर उलहानाभरी नज़रों से देखती थीं।

स्त्रियां अक्सर उसकी ओर एक भिन्न नजर से देखती थीं। वे उसके पास अच्छा भोजन प्राप्त करने के लिए, गर्माहट में रहने के लिए और अच्छा समय बिताने के लिए आती थीं। उसके हाथों से अपार धन गुजर रहा था, उसका बटुआ बड़े-बड़े नोटों से फटा पड़ता था और उसके लिए १० रूबल का नोट एक कोपेक के बराबर था और हजारों रूबलों का महत्व एक रूबल से अधिक नहीं था। ज़—व ने इन रूबलों को संचित नहीं किया, इन्हें खर्च करने में खेद प्रकट नहीं किया और न ही इनकी गिनती रखने का कष्ट उठाया। वह केवल उन्हीं स्त्रियों की संख्या की गणना रखता था, जो उसके हाथ से गुजर चुकी थीं, और विशेषकर वे जिनका उसने "उद्घाटन" किया था। यह गणना उसका प्रिय मनोरंजन थी। उसने हमें यह विश्वास दिलाया कि उसकी गिरफ्तारी के परिणामस्वरूप स्त्रियों की यह संख्या २९० को पार करके ही रुक गई और उसे इस बात का बड़ा दुख था कि वह इस संख्या को ३०० तक नहीं पहुंचा सका। यह युद्धकाल था और स्त्रियां अकेली और असहाय थीं। और, अपनी सत्ता और धन के अलावा, उसमें एक रासपुतिन के समान पुंसत्व था। अत: आप शायद उसकी बात पर विश्वास कर सकते हैं और वह एक के बाद एक किस्सा सुनाने के लिए तैयार रहता था। बस, कठिनाई केवल यह थी कि हमारे कान यह सब सुनने के लिए तैयार नहीं थे। यद्यपि इन अन्तिम वर्षों में उसके समक्ष कोई खतरा उत्पन्न नहीं हुआ था और उसने अत्यधिक तत्परता और तेज़ी से इन स्त्रियों पर हाथ डाला, गड़बड़ फैलाई, और इन्हें अलग फेंक दिया। वह एक ऐसे लालची भोजनभट्ट की तरह था, जो अन्धाधुन्ध खाने में जुट गया हो।

वह इस बात का आदी था कि उसके मार्ग में जो भी वस्तु आती है, वह उसकी इच्छा के अनुसार ढल जाती है और वह इस बात से आश्वस्त था कि जिस प्रकार एक शक्तिशाली जंगली सूअर धरती को खोद डालता है और उसे कोई भी वस्तु रोक नहीं सकती, उसी प्रकार वह भी मनमाना आचरण कर सकता है। (जब वह अत्यधिक क्रोधित और चिन्तित होता, तो वह एक शक्तिशाली जंगली सूअर की तरह कोठरी में इधर उधर चक्कर लगाता, मानो वह अपने रास्ते में आने वाले किसी विशाल ओक वृक्ष को भी तोड़ कर गिरा सकता है।) वह ऐसे पर्यावरण का आदी था, जहां सब नेता ठीक उसी जैसे आदमी थे, जहां आप सौदेबाजी कर सकते थे, उलझे हुए मसलों को सुलझा सकते थे और अपने दुष्टकृत्यों पर पर्दा डाल सकते थे! वह यह भूल गया था कि जिस व्यक्ति को जितनी अधिक सफलता मिलती है, वह उतनी ही अधिक ईर्ष्या को भी जगाता है। जैसाकि उसे पूछताछ के दौरान पता चला कि सन् १९३६ से ही उसके कार्यों का व्यौरा रखा जा रहा था और यह कार्य उस किस्से के आधार पर शुरू हुआ था, जो उसने किसी पार्टी में बेहद शराब पी लेने के बाद असावधानी से सुना दिया था। इसके बाद उस पर और अभियोग लगाए गए। और जासूसों ने उसके खिलाफ और प्रमाण बटोरे (आखिरकार आपको औरतों को रेस्टोरेंटों में ले जाना पड़ता है, जहां हर प्रकार के लोग आपको देखते हैं।) एक अन्य रिपोर्ट में यह बताया गया कि उसने १९४१ में मास्को से रवाना होने की कोई तत्परता नहीं दिखाई

और वह वहां जर्मनों की प्रतीक्षा में रुका रहना चहता था। वास्तव में वह उससे अधिक समय तक नहीं रुका, जितने समय किसी औरत के लिए रुका रहना आवश्यक था। ज—व ने अपने व्यापार को साफ सुथरा रखने की भरसक सावधानी बरती थी, लेकिन वह अनुच्छेद ५८ के अस्तित्व को प्रायः भूल गया था। इस सबके बावजूद वह तूफान की भेंट न चढ़ता, यदि वह आवश्यकता से अधिक आत्मविश्वास से भर कर एक सरकारी वकील के ग्राम आवास के लिए इमारती सामान देने से इनकार न करता। इसके परिणामस्वरूप उसका पुराना दबा हुआ मामला उठ खड़ा हुआ, और वह पूरे वेग से आगे बढ़ चला। (और यह इस बात का एक और उदाहरण है कि मामलों की शुरूआत नीली वर्दी वाले लोगों के भौतिक स्वार्थों के आधार पर होती है।)

संसार के बारे में ज—ब को कितनी व्यापक जानकारी थी, इसका मूल्यांकन केवल इस तथ्य के आधार पर किया जा सकता था कि उसे यह विश्वास था कि शायद कोई कनाडियन भाषा भी होती है। दो महीने तक हमारे साथ जेल की कोठरी में रहने की अवधि में उसने एक भी पुस्तक नहीं पढ़ी, किसी पुस्तक का एक पृष्ठ भी नही पढ़ा और यदि कभी वह एक पैराग्राफ पढ़ भी लेता, तो इसका कारण पूछताछ के बारे में अपने मन में उठने वाले बुरे विचार ही होते। उसकी बातचीत से यह स्पष्ट था कि उसने अपने स्वतन्त्र जीवन में भी बहुत कम पढ़ा है। वह पुश्किन को गन्दी कहानियों के हीरो के रूप में जानता था। तोल्सतोय उसके लिए सर्वोच्च सोवियत का एक सदस्य ही था!

दूसरी ओर वह शत प्रतिशत वफादार कम्युनिस्ट था! क्या वह सामाजिक चेतना से सम्पन्न वही सर्वहारा था, जिसको पालचिन्स्की और वानमेक तथा उनके अनुयाइयों का स्थान लेने के लिए पाल पोस कर बड़ा किया गया था? यह बात सचमुच बड़ी आश्चर्यजनक थी—वह सचमुच ऐसा कुछ नहीं था! एक बार हमने उससे पूरे युद्ध के बारे में बामचीत की। और मैंने कहा कि युद्ध के पहले क्षण से ही मेरे मन में इस बारे में कोई संदेह नहीं था कि हम जर्मनों को हरा देंगे। उसने बड़ी तेज तर्रार नजर से मेरी ओर देखा। वह मेरी बात पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। "अरे, छोड़ो तुम भी क्या बात कर रहे हो।" और इसके बाद उसने अपना सिर अपने हाथों में थाम लिया। "ओह, सा, शा, सा, शा, और मैं इस बात से पूरी तरह आश्वस्त था कि जर्मन जीत जाएंगे! मुझे इसी बात ने समाप्त कर दिया!" वास्तविकता यही है! वह "विजय के संगठनकर्त्ताओं" में से एक था। लेकिन वह निरन्तर जर्मनों की सफलता में विश्वास करता रहा और उनके आ पहुंचने की प्रतीक्षा करता रहा। इसका कारण यह नहीं था कि वह उनसे प्रेम करता था, बल्कि इसका सीधा सादा कारण यह था कि वह हमारी अर्थव्यवस्था की वास्तविकता से पूरी तरह परिचित था। (और वास्तव में मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी और इसके परिणामस्वरूप मैं इस पर विश्वास करता था।)

इस कोठरी के हम सब कैदियों को गहरी निराशा थी, हम सब बहुत हतोत्साहित थे। लेकिन ज—व की तरह कोई भी स्वयं को एकदम कुचला हुआ अनुभव नहीं करता था। कोई भी इस सीमा तक अपनी गिरफ्तारी को भयंकर दुर्भाग्य नहीं समझ रहा था। उसे हम लोगों से यह जानकारी मिली कि उसे १० वर्ष से अधिक की सजा नहीं दी जाएगी, कि शिविर में वह जो वर्ष गुजारेगा, उसमें वह सचमुच कार्य सुपरिन्टेन्डेंट बन सकेगा और उसे वास्तव में कठोर कष्ट और यातनाएं नहीं भोगनी होंगी और सचमुच हुआ भी यही।

से कभी भी वास्तविक कष्टों का सामना नहीं करना पड़ा। लेकिन इस बात से उसका ढाढस नहीं बंधता था। इतने शानदार जीवन के एकाएक समाप्त हो जाने से वह अत्यन्त दुखी था। आखिरकार पृथ्वी पर उसका यह एकमात्र जीवन था और अपने जीवन के ३६ वर्षों में उसने अन्य किसी व्यक्ति के जीवन को कोई महत्व नहीं दिया। और एक से अधिक अवसरों पर, मेज के सामने अपनी खाट पर बैठे हुए, अपने भारी सिर को अपनी छोटी और भारी भरकम बांह पर टिकाये हुए वह बड़ी शांति से गाना शुरू करता। वह अच्छे स्वर में अपना सुर अलापता और उसकी आंखें शून्य में देख रही होतीं और इनमें आंसू छलछला आते :

विस्मृत और परित्यक्त
अपने जीवन के आरम्भिक वर्षों से ही,
मुझे एक नन्हे से अनाथ के रूप में छोड़ दिया गया...

वह इससे आगे नहीं गा पाता। इन शब्दों पर पहुंचकर वह सुबक सुबक कर रोने लगता। उसकी प्रबल शारीरिक शक्ति जो जेल की कोठरी की दीवारों को तोड़ने में असमर्थ रही थी, स्वयं उसके भीतर घुटने लगती और आत्मकरुणा को जन्म देती।

उसके मन में अपनी पत्नी के प्रति भी करुणा का भाव उत्पन्न होता। हर दसवें दिन (क्योंकि इससे जल्दी इस बात की अनुमति नहीं थी) उसकी पत्नी, जो बहुत समय पहले ही उसके लिए अवांछित बन गई थी, विविध प्रकार की स्वादिष्ट खाने की चीजों के पार्सल लाती—अधिकतम सफेद रोटी, मक्खन, लाल शराब, हिरन का मांस और मछली। वह हममें से प्रत्येक को एक-एक सैंडविच देता और थोड़ा सा तम्बाकू तथा इसके बाद वह उन खाने की चीजों के ऊपर झुक जाता, जिन्हें वह अपने सामने बड़े करीने से सजा लेता था। वह इस प्रकार उन चीजों की गन्ध और रंग में आनन्द लेता। ये चीजें पुराने क्रान्तकारी फास्तेंको को अपनी पत्नी से प्राप्त होने वाले नीले पड़ चुके उबले हुए आलुओं से कितनी भिन्न होतीं। इसके बाद उसकी आंखों से फिर आंसू बहने लगते, दुगनी तेजी से आंसू बह निकलते। वह जोर-जोर से बोलता हुआ, अपनी पत्नी के आंसुओं का स्मरण करता। उन वर्षों का स्मरण करता, जिनमें उसकी पत्नी निरन्तर आंसू बहाती रही थी : इसका कारण कभी पति की जेब में प्राप्त अन्य स्त्रियों के प्रेमपत्र होते अथवा कभी अपने पति के ओवर कोट की जेब में किसी स्त्री की अण्डरवीयर मिल जाना इसका कारण बनता। इन अण्डरवियरों को बहुत जल्दबाजी में वह अपनी मोटरगाड़ी में अपनी जेब में ठूंस लेता और इसके बाद इन्हें भूल जाता। और जब वह इस आत्मकरुणा की आग में जलता, तो उसका बुरे काम में प्रवृत्त ऊर्जा का कवच टूट कर अलग गिर पड़ता और हमारे समक्ष एक बर्बाद लेकिन स्पष्ट रूप से एक अच्छा व्यक्ति आ खड़ा होता। मुझे इस बात का बड़ा आश्चर्य था कि वह इस प्रकार बिलख-बिलख कर रो सकता था। हमारी कोठरी का एक अन्य कैदी एक्टोनिया निवासी आर्नोल्ड सूसी एक बार मुझे समझाता हुआ बोला : "क्रूरता के साथ सदा भावुकता मौजूद रहती है। यह पूरकता का नियम है। उदाहरण के लिए, यह सम्मिश्रण, उनका एक राष्ट्रीय गुण बन गया था।"

दूसरी ओर हमारी कोठरी में सबसे अधिक प्रसन्न व्यक्ति फास्तेंको थे, क्योंकि अपनी बड़ी उम्र को ध्यान में रखते हुए शायद वे कभी भी यह आशा नहीं कर पाते होंगे कि वे शिविर से जीवित वापस लौट सकेंगे। अपनी बांह मेरे कन्धों पर रखते हुए वे कहते :

सत्य के लिए आवाज़ उठाना कुछ नहीं है !
सत्य के लिए आपको जेल में समय बिताना होगा !

इसके अलावा उन्होंने मुझे जारशाही के जमाने के कठोर कारावास भोगने वाले क्रान्तिकारियों का यह गीत भी सिखाया :

यदि हमें नष्ट होना है
खानों में, जेलों में, पानी से सराबोर होकर, तो
हमारा उद्देश्य कीर्ति प्राप्त करेगा;
भावी पीढ़ियों के मध्य ।

और मैं इस बात पर विश्वास करता हूं ! मैं कामना करता हूं कि ये पृष्ठ उनकी आस्था को सत्य प्रमाणित करने में सहायक बनें ।



बाहर की घटनाओं को ध्यान में रखते हुये मैं यह कह सकता हूं कि हम अपनी कोठरी में १६ घण्टे जागते रहते थे । लेकिन ये घंटे इतनी दिलचस्पी से भरे होते थे कि आज मुझे, उदाहरण के लिये, एक बस की इन्तजार में १६ मिनट इन्तजार करना अत्यन्त ऊबा देने वाली बात दिखाई पड़ती है । ऐसी कोई घटना सामने नहीं आती थी जिस पर विशेष ध्यान दिया जा सके, पर इसके बावजूद शाम होने तक मैं निराशा से भर कर यह निःश्वास छोड़ता कि दिन में पर्याप्त समय नहीं मिला और एक दिन और बीत गया । वहां जिन घटनाओं की जानकारी मिलती थी, वह बहुत मामूली थी, लेकिन अपने जीवन में पहली बार मुझे यह अवसर मिल रहा था कि मैं उन घटनाओं को एक आतशी शीशे के माध्यम से देख सकूं ।

पूरे दिन में सबसे अधिक कठिन घण्टे पहले दो घण्टे होते थे । ताले में चाबी घूमने की आहट होते ही (लूबयांका में कोठरी के किवाड़ में ऐसी व्यवस्था नहीं थी कि किवाड़ को बन्द रखते हुये एक छोटी सी खिड़की को खोला जा सके और उस खिड़की से ही कैदियों से बातचीत की जा सके और उन्हें आवश्यक चीजें दी जा सकें ।[13] और यह आवश्यक होता था कि कैदी को यह बताने के लिये, "उठने का समय हो गया है" पूरा दरवाजा खोलना पड़ता था) । हम लोग यह सुनते ही कूद कर खड़े हो जाते थे, अपने बिस्तरों को लपेट देते थे और इन पर अत्यधिक खालीपन और असहाय अवस्था का अनुभव करते हुये बैठे रहते थे । और इस समय भी बिजली का बल्ब जलता रहता था । सुबह छह बजे ही बलपूर्वक जगा दिये जाने की यह स्थिति—उस समय जब मस्तिष्क नींद के कारण आलस्य से भरा होता था, समस्त संसार वितृष्णा पैदा करने वाला दिखाई पड़ता था और यह अनुभव होता था कि हमारा समस्त जीवन नष्ट हो चुका है और जेल की कोठरी में स्वच्छ हवा तक नदारद रहती थी—उन लोगों के लिये विशेष रूप से हास्यास्पद होती थी, जिनसे पूरी रात पूछताछ की गई हो और जिन्हें कुछ देर पहले ही आंख बन्द करने का मौका मिला हो । इसके बावजूद आप दिन में किसी भी प्रकार नींद निकालने की कोशिश नहीं कर सकते ! यदि आप दिन में ऊंघने की कोशिश करें, दीवार का सहारा लेकर बैठें, अथवा मेज़ के ऊपर इस प्रकार झुककर ऊंघने की कोशिश करें कि आप शतरंज खेलने में व्यस्त हैं अथवा आप अपने घुटनों पर रखी हुई पुस्तक पढ़ रहे हैं, दरवाजे पर चाबी से चेतावनी के रूप में दस्तक दी जाती अथवा इसबुरी सेभी

स्थिति यह हो सकती थी कि बहुत आहिस्ता से दरवाजे का ताला खुले, और इस काम में लूबयांका के जेल कर्मचारी विशेष रूप से प्रशिक्षित थे, और एक दीवार को चीर कर निकल आने वाले भूत की तरह एक जूनियर सार्जेन्ट की तेज़ और मौन आकृति कोठरी में तीन डग भरकर आपको एक घूंसा जमा दे, और हो सकता है कि आपको घसीटकर बाहर ले जाये और सज़ा की कोठरी में पहुंचा दे! अथवा यह भी हो सकता है कि इसके बाद वे लोग पूरी कोठरी को ही पुस्तक पढ़ने के विशेषाधिकार से वंचित कर दें अथवा प्रत्येक कैदी को प्रतिदिन बाहर टहलने के लिये निकाले जाने की सुविधा से वंचित कर दें—यह एक क्रूर और अन्याय-पूर्ण सज़ा थी और जेल के नियमों की काली पंक्तियों में ऐसी ही अन्य सज़ाओं की भी व्यवस्था थी। इन्हें पढ़ने का कष्ट कीजिये! इनका विवरण जेल की प्रत्येक कोठरी में टंगा रहता था। यदि आपको पढ़ने के लिये चश्मे की ज़रूरत हो तो आप इन दो भूख मरे घण्टों में न तो कोई पुस्तक पढ़ सकेंगे और न ही इन पवित्र नियमों के विवरण को। हर रात कैदियों से उनके चश्मे वापस ले लिये जाते थे और सुबह के इन दो घण्टों में भी ये चश्मे आपके लिये "खतरनाक" होते थे, जिनमें कोई भी व्यक्ति आपके लिये कुछ भी नहीं लाता था और न ही कोई कोठरी में आता था। कोई भी किसी बारे में कोई सवाल नहीं करता था और न ही किसी को बुलाया जाता था, क्योंकि उस समय तक स्वयं पूछताछ अधिकारी मीठी नींद में सोये होते थे। और जेल के प्रशासक भी अपनी आंखें खोलनी शुरू करते थे, स्वयं को होश में लाना शुरू करते थे। केवल वेरतुखाई अर्थात् कोठरियों का दरवाजा खोलने वाले सन्तरी सक्रिय और फुर्तीले होते थे और वे हर मिनट बाद दरवाजे में बने छेद से झांक कर देखते रहते थे।[१४]

लेकिन इन दो घण्टों में एक काम पूरा किया जाता था: सुबह के समय शौचालय की यात्रा। जब सन्तरी हमें उठाता तो एक महत्वपूर्ण घोषणा भी करता था। वह यह कहता था कि हमारी कोठरी का कौन सा कैदी पाखाने की बाल्टी उठा कर ले जाएगा। (अधिक सुदूर स्थानों पर बनी साधारण जेलों में कैदियों को इस सम्बन्ध में पर्याप्त स्वतन्त्रता दी जाती थी कि वे इस बात का स्वयं निर्णय करें कि कौन सा कैदी यह काम करेगा। लेकिन प्रमुख राजनीतिक जेल में एक इतने महत्वपूर्ण कार्य के बारे में कोई जोखिम नहीं उठाई जा सकती थी।) इसके बाद आप एक कतार में खड़े हो जाते, पीठ के पीछे अपने हाथ बांध लेते और कतार में सबसे आगे पाखाने की बाल्टी का उत्तरदाई वाहक दो गैलन का टीन का डिब्बा, जिसके ऊपर ढक्कन रहता था, अपनी छाती के बराबर ऊंचा उठा कर चलता। शौचालय में पहुंच जाने पर फिर ताला बन्द कर दिया जाता और इससे पहले प्रत्येक कैदी को कागज का एक छोटा सा टुकड़ा थमा दिया जाता, जिसका आकार दो रेल टिकटों के बराबर होता। (लूबयांका में यह बात विशेष रूप से दिलचस्प नहीं थी। यह कागज कोरा और सफेद होता था और कुछ अधिक प्रलोभन से भरी जेलों में आपको किताबों के पन्ने फाड़ कर दिये जाते थे—और इन्हें पढ़ने में क्या आनन्द आता था! आप यह अनुमान लगाने में स्वयं को व्यस्त रख सकते थे कि यह किस पुस्तक का पृष्ठ होगा। दोनों ओर छपी सामग्री को आप पढ़ जाते, इसकी विषयवस्तु को आत्मसात कर लेते और लेखनशैली का मूल्यांकन करते—और जब कुछ शब्द बीच में ही कटे हुए होते तो यह करना और जरूरी था। आप अपने साथियों से इन कागजों की लेन देन भी कर सकते थे। कुछ स्थानों पर उन लोगों ने एक समय प्रगतिशील समझे जाने वाले ग्रानात विश्वकोश के पन्ने फाड़कर देने शुरू किये और कभी-कभी, यद्यपि

यह कहना बड़ा भयंकर लगता है, प्राचीन गौरव ग्रन्थों के पन्ने फाड़ कर दिये जाते। और इन गौरव ग्रंथों में मैं केवल साहित्य की गणना नहीं करता। इस प्रकार शौचालय की यात्रा ज्ञानार्जन का माध्यम भी बन गई।)

लेकिन इस पर आप हंस नहीं सकते। हम उस अपरिष्कृत आवश्यकता की चर्चा कर रहे हैं, जिसके बारे में साहित्य में उल्लेख करना अनुपयुक्त समझा जाता है। (यद्यपि वहां भी अमर कुशलता से यह कहा गया है : "वह व्यक्ति सौभाग्यशाली है, जो सुबह के समय...") जेल के दिन के इस प्रकट रूप से स्वाभाविक दिखाई पड़ने वाले समारम्भ में कैदी के लिए एक ऐसा जाल बिछाया जाता, जिसमें वह दिन भर फंसा रहता, जिसमें उसकी आत्मा और भावनाएं दिन भर छटपटाती रहतीं; क्योंकि सबसे अधिक आघात उन्हीं पर होता था। जेल में शारीरिक गतिविधि के अभाव, अत्यन्त कम भोजन और नींद के द्वारा स्नायुयों को राहत न मिल पाने के कारण, कोई भी व्यक्ति सोकर उठने के तुरन्त बाद प्रकृति से अपना हिसाब साफ नहीं कर सकता था। और वे आपको शौचालय में अधिक समय बैठने की भी अनुमति नहीं देते थे और आपको बेहद जल्दी वापस लाकर बन्द कर दिया जाता था और इस प्रकार आप शाम छह बजे तक अथवा कुछ अन्य जेलों में अगले दिन सुबह छह बजे तक बन्द रहते थे। और सुबह से ही आप इस सम्बन्ध में चिंतित और क्रोधित होने लगते, क्योंकि दिन के समय पूछताछ की अवधि आपके सामने खड़ी दिखाई पड़ती और आपको यह भी स्पष्ट दिखाई पड़ता कि आपको दिन के समय अपनी रोटी का राशन और पानी तथा पतली खिचड़ी भी खानी होगी और कोई भी व्यक्ति आपको दिन के समय उस गरिमापूर्ण स्थान का दर्शन नहीं करने देगा, जहां अपनी इच्छा के अनुसार जाने के महत्व को स्वतन्त्र रहने वाले लोग नहीं समझ सकते। मनुष्य को पस्त कर डालने वाली, यह नितांत शारीरिक आवश्यकता आपको सुबह शौचालय से वापस लौटने के बाद निरन्तर परेशान रखती। आप दिन भर, एक के बाद एक दिन, इससे परेशान रहते, इसके कारण आप बातचीत करने, पढ़ने, सोचने और जेल में प्राप्त मामूली से भोजन को खाने तक की इच्छा से वंचित हो जाते।

हमारी कोठरी के कैदी कभी-कभी इस बात पर चर्चा करते कि लूबयांका में जो व्यवस्थाएं हैं, और दूसरी जेलों में भी, वे किस प्रकार अस्तित्व में आईं, जान-बूझकर अत्यधिक क्रूरतापूर्वक विद्वेष भावना से प्रेरित होकर इन्हें लागू किया गया अथवा संयोगवश ही यह हुआ। मेरी राय में इसमें दोनों तत्व मौजूद हैं। सुबह उठने का समय, जैसाकि स्पष्ट है, विद्वेषपूर्ण इरादे से प्रेरित है, लेकिन शेष बातें आरम्भ में स्वाभाविक रूप से हुईं, और यही बात जीवन की अन्य अनेक वास्तविकताओं के बारे में भी सामान्यतया सही है और इसके बाद सत्तारूढ़ लोगों ने यह देखा और समझा कि ये व्यवस्थाएं कितनी उपयोगी हैं और इस कारण से इन्हें स्थाई बना दिया गया। कर्मचारियों के काम की पारी सुबह ८ बजे और रात ८ बजे बदलती है और किसी भी व्यक्ति के लिए पारी के अन्त में कैदियों को शौचालय ले जाना अधिक सुविधाजनक होता। (दिन में किसी समय कैदियों को शौचालय ले जाने के लिये अतिरिक्त परेशानी उठानी पड़ती और अतिरिक्त सावधानियां बरतनी पड़तीं और इससे किसी को भी लाभ नहीं मिलता।) यही बात चश्मों के बारे में भी सही है : सुबह छह बजे किसी व्यक्ति को चश्मे के बारे में क्यों चिन्ता करनी पड़े ? इन्हें पारी की समाप्ति के बाद वापस लौटाया जा सकता था।

अब हमें वे आवाजें सुनने को मिलतीं जिससे पता चलता कि चश्मों को वापस लाया जा रहा है, दरवाजे खोले जा रहे हैं। इससे हम यह अनुमान लगा सकते थे कि हमारे बराबर की कोठरी में कोई कैदी चश्मा लगाता है। (और क्या आपका साथी प्रतिवादी भी चश्मा नहीं लगाता ? लेकिन हम दीवार को थपथपा कर अपना संदेश दूसरी ओर पहुंचाने को तैयार नहीं थे। इसके लिए बड़ी कठोर सज़ा दी जाती थी।) एक क्षण बाद वे हमारी कोठरी में भी चश्मे पहुंचाएंगे। फास्तेंको चश्मे का इस्तेमाल केवल पढ़ने के लिए करते थे, लेकिन सूसी को इसकी हरदम ज़रूरत होती थी। चश्मा लगाने के बाद ही वह अपनी आंखों को भींच-भींच कर देखना बन्द करता था। सींग के फ्रेम वाले चश्मे और आंखों के ऊपर बनी सीधी रेखाओं के कारण उसका चेहरा कठोर और गम्भीरतापूर्ण बन जाता था। उसका चेहरा हमारे देश के एक ऐसे शिक्षित व्यक्ति के समान दिखाई पड़ने लगता था, जिसकी हम भली-भांति कल्पना कर सकते हैं। क्रांति से पहले पेत्रोग्राद विश्वविद्यालय के इतिहास और दर्शन संकाय में उन्होंने अध्ययन किया था और स्वतन्त्र एस्तोनिया में उन्होंने जो २० वर्ष का समय बिताया था, उसमें उन्होंने शुद्धतम रूसी भाषा और बोलचाल को सुरक्षित रखा था और एक मूल निवासी की तरह ही वे यह भाषा बोलते थे। आगे चल कर, तारतू में उन्होंने कानून का अध्ययन किया। एस्तोनियाई भाषा के अलावा वे अंग्रेजी और जर्मन भाषाएं भी बोलते थे और इन समस्त वर्षों में वे लन्दन से प्रकाशित इकानामिस्ट और जर्मनी से प्रकाशित वैज्ञानिक लेखों के "बेरिख्त" संक्षेप पढ़ते रहे थे। उन्होंने विभिन्न देशों के संविधानों और कानून संहिताओं का अध्ययन किया था और हमारी कोठरी में वे बड़ी योग्यता से और संयमपूर्वक यूरोप का प्रतिनिधित्व करते थे। वे एस्तोनिया के प्रमुख वकील थे और उन्हें "कूल्दसू" अर्थात् "सोने की जबान वाला" कहकर पुकारा जाता था।

बरामदे में नई गतिविधि शुरू हो गई थी। सलेटी रंग का ऊपरी वस्त्र पहने एक स्वतन्त्र मजदूर—जो हट्टा-कट्टा युवक था और जो निश्चय ही मोर्चे पर जाने से बच निकला था—राशन की पांच रोटियां और चीनी के दस टुकड़े एक ट्रे में रखकर लाया। हमारी कोठरी के मुखबिर ने इन रोटियों और चीनी के टुकड़ों के ऊपर मंडराना शुरू कर दिया। यद्यपि वह जानता था कि हम पर्चियां निकाल ही अन्ततः इनका बटवारा करेंगे—पर्चियां डालनी इसलिये ज़रूरी थीं, क्योंकि रोटी के विभिन्न हिस्से अपना महत्व रखते थे : उदाहरण के लिये रोटी का सबसे किनारे का टुकड़ा और उन छोटे टुकड़ों की संख्या, जिनके आधार पर रोटी का पूरा वज़न निर्धारित होता था। और इसी प्रकार यह भी बात महत्वपूर्ण थी कि रोटी के टुकड़ों पर ऊपर परत किस प्रकार चिपकी हुई है अथवा यह नदारद है और यही सही समझा जाता था कि भाग्य के भरोसे इस सम्बन्ध में निर्णय लिया जाये।[१५] लेकिन यह मुखबिर यह सोचता था कि उसे चाहे एक क्षण के लिये ही सही इन्हें अपने हाथों में लेकर देखना चाहिये, ताकि रोटी और चीनी के कुछ कण उसकी हथेलियों से चिपके रह जाएं।

यह खमीर रहित और गीली एक पौंड डबलरोटी, जो दलदल की तरह बड़ी गिलगिली होती थी और जिसमें आधा हिस्सा आलू का चूरा मिला होता था, हमारे जीवन की बैसाखी थी और इसका आगमन पूरे दिन की प्रमुखतम घटना भी। जीवन का समारम्भ हो चुका था ? दिन का समारम्भ हो गया था—रोटी के आगमन के साथ ही इसका समारम्भ होता था ! और प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष असंख्य समस्याएं होती थीं। क्या कल उसने अपनी रोटी के राशन का बुद्धिमत्ता से बटवारा किया था ? क्या उसे रोटी को धागे से काटना

चाहिए ? अथवा इसे अत्यधिक लालचीपन से तोड़ लेना चाहिए ? अथवा धीरे-धीरे शांति-पूर्वक छोटे-छोटे टुकड़ों को एक-एक करके चबाना चाहिए ? क्या उसे चाय की प्रतीक्षा करनी चाहिये अथवा तुरन्त रोटी का सफाया करने में जुट जाना चाहिए ? क्या उसे कुछ रोटी रात के भोजन के लिये उठा रखनी चाहिये ? अथवा तुरन्त उसे खा लेना चाहिये ? और रोटी का कितना हिस्सा खाना चाहिये, कितना रखना चाहिए ?

इन तुच्छ दुविधाओं के अलावा, कितने व्यापक विचार-विमर्श और तर्क होते (क्यों कि हमारी वाणी स्वतन्त्र हो जाती और रोटी को सामने देखकर हम एक बार फिर मनुष्य बन जाते)। इनका आधार हमारे हाथ में मौजूद एक पौंड की रोटी होती, जिसमें अनाज से अधिक पानी का अंश होता। (प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि फास्तेंको ने हमें बताया कि मास्को के श्रमिक भी इन दिनों ऐसी ही रोटी खा रहे हैं।) और मोटे तौर पर हम यह भी कह सकते हैं कि क्या इस रोटी में वास्तविक आटे की कोई मात्रा है ? और इसमें क्या-क्या चीजें मिलाई गई हैं ? (प्रत्येक कोठरी में कम से कम एक व्यक्ति ऐसा होता था, जो सब मिलावटों के बारे में जानता था। आखिरकार इन पिछले दशकों में ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा, जिसने इन रोटियों को न खाया हो ?) विचार-विमर्श और संस्मरणों का सिलसिला शुरू हो जाता। उन सफेद रोटियों की चर्चा चलती, जिन्हें इस शताब्दी के तीसरे दशक में लोगों ने तैयार किया था—बढ़िया गोल-मटोल रोटियां, जो भीतर से केक की तरह स्पंज जैसी होतीं; इनकी ऊपरी परत गहरे लाल और भूरे रंग की होती और निचले हिस्से पर चूल्हे की राख का कुछ न कुछ अंश लगा होता—और जो अब रोटी सदा सर्वदा के लिये अन्तर्धान हो चुकी थी। जिन लोगों का जन्म सन् १९३० में हुआ, वे कभी भी यह नहीं जान सकेंगे कि रोटी क्या होती है। मित्रो, यह एक निषिद्ध विषय है ! हम लोगों में भोजन के बारे में एक भी शब्द न कहने की सहमति थी।

एक बार फिर बरामदे में हलचल हुई—चाय आ रही थी। एक बार फिर एक और तगड़ा युवक चाय की बाल्टी लेकर आया। हमने बरामदे में अपनी चायदानी रख दी और वह सीधे बाल्टी से ही चाय इसमें उलटने लगा। बाल्टी में कोई टोंटी वगैरा नहीं थी और यह चाय चायदानी के भीतर, चायदानी के ऊपर और यहां तक कि फर्श पर भी गिरने लगी। और जबकि इस पूरे बरामदे के फर्श पर किसी पहली श्रेणी के होटल के बरामदे की तरह पालिश की गई थी।[१६]

और उन लोगों ने हमें बस यही दिया। हमें जो कुछ पकाया हुआ भोजन मिलता वह दोपहर १ बजे और तीसरे पहर ४ बजे दिया जाता। एक के तुरन्त बाद दूसरा भोजन। अब आप अगले २१ घण्टे इस भोजन की स्मृति में बिता सकते थे। (यह भी जेल की क्रूरता नहीं थी : यह जेल की रसोई में काम करने वाले कर्मचारियों से सम्बन्धित मामला था, जो जल्दी से जल्दी अपना काम निपटा कर चले जाना चाहते थे।)

सुबह ६ बजे जांच शुरू होती। इससे काफी समय पहले से ही हम बड़े जोर से तालों में चाबियां घुमाये जाने और दरवाजे पर तेज दस्तक की आवाजें सुनते रहते और इसके बाद इस पूरी मंजिल का एक ड्यूटी लैफ्टिनेंट हमारी कोठरी में प्रवेश करता। वह इतना सीधा तन कर भीतर आता, मानो सावधान की मुद्रा में खड़ा हुआ हो। वह दो कदम आगे बढ़ता और हमारी ओर बड़ी कड़ाई से देखता। हम तुरन्त उठ खड़े होते।) (हम यह स्मरण करने का साहस तक नहीं कर सकते थे कि एक जमाने में राजनीतिक कैदियों को जेल के

अफसरों के सामने उठकर खड़ा नहीं होना पड़ता था ।) हमारी गिनती करना कोई कठिन काम नहीं था—वह एक नजर में यह कर सकता था—लेकिन यह क्षण हमारे अधिकारों को कसौटी पर कसने का होता था। आखिरकार हमारे कुछ अधिकार थे, यद्यपि हमें उनके बारे में कोई वास्तविक जानकारी नहीं थी और उसका यह काम था कि इन अधिकारों की जानकारी को हमसे छिपाये रखे। लूबयांका के प्रशिक्षण की समस्त शक्ति पूरी तरह से यंत्रवत् आचरण करने में प्रकट होती थी : चेहरे पर किसी भी प्रकार का भाव न होना, किसी भी बात के प्रति जिज्ञासा का भाव न दर्शाना, एक भी फालतू शब्द न बोलना।

और हमें अपने किन अधिकारों की जानकारी थी ? अपने जूतों की मरम्मत करवाने की प्रार्थना ! डाक्टर से परामर्श का अनुरोध ! वास्तविकता यह थी कि वे यदि आपको डाक्टर के पास ले जाएं तो आप इसके परिणामों से प्रसन्न नहीं होंगे। वहां लूबयांका का यंत्रवत् आचरण आपको विशेष रूप से अखरेगा। डाक्टर यह नहीं पूछता : "तुम्हें क्या तकलीफ है ?" इसमें अनेक शब्द बोलने पड़ते हैं और इस पूरे वाक्य का उच्चारण किसी भी प्रकार के भाव का प्रदर्शन किये बिना नहीं किया जा सकता । वह अत्यन्त संक्षिप्त रूप से पूछता : "तकलीफ ?" और अगर आप अपनी बीमारी के बारे में विस्तार से कुछ कहने लगते, तो वह आपको बीच में ही टोक देता। हर बात बड़ी स्पष्ट थी। दांत दर्द ? इसे उखाड़ दो। आप संखिया ले सकते थे। दांत भरवाना है ? हम यहां यह नहीं करते। (इसके लिए डाक्टर से और मुलाकात की जरूरत होती और कुछ अधिक मानवीय वातावरण का निर्माण हो सकता था।)

जेल का डाक्टर पूछताछ अधिकारी और जल्लाद का दाहिना हाथ होता था। मारपीट में बेहोश हुआ कैदी केवल डाक्टर की आवाज़ सुनकर ही होश में आता : "आप पूछताछ जारी रख सकते हैं। नब्ज़ सामान्य है।" "सज़ा की कोठरी में पांच दिन और पांच रात का समय बिताने के बाद डाक्टर कैदी के ठण्ड से एकदम ठिठुरे हुए, और नंगे शरीर का मुआयना करता और कहता "आप पूछताछ जारी रख सकते हैं।" यदि किसी कैदी को पीटते-पीटते जान से मार डाला गया हो तो डाक्टर मृत्यु के प्रमाणपत्र पर हस्ताक्षर करते हुए यह लिख देता : "जिगर के रोग से मृत्यु" अथवा "हृदय रोग से मृत्यु।" डाक्टर को यह समाचार मिलता है कि किसी कोठरी में कोई कैदी मर रहा है और तुरन्त उसकी चिकित्सा की व्यवस्था की जानी चाहिए। पर डाक्टर आराम से वहां पहुंचता है, रोगी के पास पहुंचने की कोई तत्परता नहीं दिखाता। और जो डाक्टर भिन्न रूप से आचरण करता है, उसे जेल के डाक्टर के रूप में नहीं रखा जाता।[१७]

लेकिन हमारी कोठरी के मुखबिर को अपने अधिकारों के बारे में बेहतर जानकारी थी। (उसके अनुसार वह उससे पहले ११ महीने तक पूछताछ का सामना कर चुका था और उसे केवल दिन के समय ही पूछताछ के लिए ले जाया जाता था।) एक दिन वह बोला और उसने जेल के सबसे बड़े अफसर को मिलने का समय मांगा। क्या, लूबयांका के सबसे बड़े अफसर से ? हां ! उसका नाम लिख लिया गया। (और शाम के समय सोने का आदेश होने के बाद, जब पूछताछ अधिकारी अपने दफ्तरों में पहुंच चुके थे, उसे बुलाया गया। और वह कुछ माखोरका लेकर वापस लौटा।) यह तरीका बड़ा भद्दा था। लेकिन अभी तक वे किसी बेहतर तरीके के बारे में नहीं सोच पाये थे। दीवारों में सर्वत्र माइक्रोफोन लगाने पर बेहद खर्च होता और लगातार सब १११ कोठरियों में क्या वार्तालाप होता रहता

है, इसे सुनना भी असम्भव होता। यह काम कौन करता? मुखबिरों की नियुक्ति स... काम था और अभी काफी समय तक इसका इस्तेमाल होता रहेगा। लेकिन कमारेंको की हालत बुरी थी। वह हमारी बातें सुनने की लगातार फिराक में रहता था और कभी-कभी तो उसे इस काम में इतना जोर पड़ता था कि उसका सारा शरीर पसीने से भर जाता था और हम यह स्पष्ट देख पाते थे कि उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही कि हम किस विषय पर चर्चा कर रहे हैं।

और एक अधिकार भी था—प्रार्थनापत्र और याचिकाएं लिखकर भेजने का अधिकार (इस अधिकार ने समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता, संगठन बनाने की स्वतन्त्रता और अपनी पसन्द के उम्मीदवार को वोट देने की स्वतन्त्रता का स्थान ले लिया था, क्योंकि हम उस समय इन सब अधिकारों से वंचित कर दिये गये थे जब हमारी स्वतन्त्रता स्थिति समाप्त हुई थी)। महीने में दो बार सुबह की ड्यूटी पर तैनात अफसर पूछता: "कौन याचिका लिखना चाहता है?" और जो भी याचिका लिखना चाहता, उसका नाम दर्ज कर लिया जाता। दोपहर के समय वे आपको एक अलग बाक्स में ले जाते और वहां आपको बन्द कर देते। वहां आप अपनी इच्छा के अनुसार जिसे चाहते याचिका लिख सकते थे, जनता के पिता को, पार्टी की केन्द्रिय समिति को, सर्वोच्च सोवियत को, मन्त्री बेरिया को, मन्त्री अबाकुमोव को, सबसे बड़े सरकारी वकील को, मुख्य सैनिक वकील को, जेल प्रशासन को, पूछताछ विभाग को। आप अपनी गिरफ्तारी, अपने पूछताछ अधिकारी, यहां तक की जेल के सबसे बड़े अफसर के खिलाफ भी शिकायत लिख सकते थे! पर यह निश्चित था कि किसी भी स्थिति में आपकी याचिका का कोई प्रभाव नहीं होगा। इस याचिका को किसी भी फाइल में नत्थी नहीं किया जाएगा और यह फाइल जिस बड़े से बड़े अफसर के हाथ में पहुंचेगी, वह स्वयं आपका पूछताछ अधिकारी होगा। इसके अलावा आप इस याचिका में कही गई बातों को प्रमाणित करने की स्थिति में भी नहीं थे। वास्तव में, इस बात की अधिक संभावना थी की वह इसे पढ़ेगा भी नहीं, क्योंकि किसी भी व्यक्ति के लिए इसे पढ़ पाना सम्भव न होगा। सात सेंटीमीटर चौड़े और १० सेंटीमीटर लम्बे कागज़ के टुकड़े पर—दूसरे शब्दों में तीन इंच चौड़े और चार इंच लम्बे कागज़ के टुकड़े पर—उससे कुछ ज़रा से बड़े कागज़ पर जो आपको शौचालय में हर रोज सुबह दिया जाता था, बीच से टूटे हुए निब अथवा एकदम मुड़े हुए निब से यह याचिका लिखनी पड़ती और दवात के कपड़े के चिथड़े भरे होते और बेहद पानी डालकर इसे फीका कर दिया जाता और आप जब बड़ी मुश्किल से याचिका शब्द लिखने की कोशिश करते तो कागज़ पर रोशनाई फैल जाती और इस शब्द को भी स्पष्ट रूप से पढ़ पाना सम्भव न होता। इसके बाद जो कुछ भी लिखा जाता वह इस घटिया कागज़ पर लिखा जाता और रोशनाई कागज़ के दूसरी ओर तक पहुंच जाती।

हो सकता है कि इसके अलावा भी आपको कुछ और अधिकार प्राप्त हों, लेकिन ड्यूटी अफसर इनके बारे में चुप ही रहेगा। और इसके बावजूद आपकी अधिक हानि नहीं होगी; क्योंकि सच्चाई यही है कि यदि आपको इन अधिकारों के बारे में जानकारी भी मिल जाये तो भी कोई लाभ नहीं होगा।

जांच का समय आता और गुजर जाता। दिन का समारम्भ हो जाता। इमारत में पूछताछ अफसर आने लगते। जेलों की कोठरियों के ताले खोलने वाले संतरी

अत्यन्त गोपनीयता बरतते हुए हममें से किसी को बुलाते। संतरी कैदी को नाम के पहले अक्षर से ही पुकारता। वह कहता : "जिस कैदी का नाम" एस "से शुरू होता है, वह पूछताछ के लिए चले ?" और : "किसका नाम "एफ" से शुरू होता है ?" अथवा संभवतः "किसका नाम "एम" से शुरू होता है ?" और आपको इतना चालाक और तेज़ तर्रार बनना होगा कि आप तुरन्त यह पहचान जायें कि आपको ही बुलाया जा रहा है और आप स्वयं को एक बलि के बकरे की तरह समर्पित कर दें। यह प्रणाली जेल कर्मचारियों की ओर से किसी भी प्रकार की गलती रोकने के लिए शुरू की गई थी। वह किसी गलत कोठरी में जा कर कोई नाम पुकार सकता था और इस प्रकार यह जानकारी मिल सकती थी कि और कौन दूसरी कोठरी में बन्द हैं। यद्यपि हम लोग पूरी जेल से एकदम अलग-थलग कर दिये जाते थे; पर हमें अन्य कोठरियों से वंचित नहीं रखा जा सकता था; क्योंकि वे लोग एक-एक कोठरी में अधिक से अधिक कैदियों को भरना चाहते थे। अतः उन्हें बार-बार दूसरी कोठरियों में पहुंचाया जाता था। और प्रत्येक नवागंतुक अपने साथ, अपनी नई कोठरी में अपना पुराना संचित अनुभव भी लाता था। इस प्रकार हम लोगों को, जो चौथी मंजिल पर कैद थे, तहखाने में बनी कोठरियों के बारे में, पहली मंजिल के बाक्सों के बारे में, दूसरी मंजिल के अन्धेरे के बारे में जानकारी मिल जाती थी और यह भी पता चल जाता था कि दूसरी मंजिल पर औरतों को रखा गया है। हमें पांचवीं मंजिल की व्यवस्था के बारे में पता चल जाता था और हमें यह जानकारी भी मिल गई थी कि पांचवीं मंजिल पर सब से बड़ी कोठरी १११ नम्बर की है। मेरे इस जेल में पहुंचने से पहले बाल साहित्य के लेखक बोन्दारिन इसी कोठरी में कैद थे। और इससे पहले उन्हें स्त्रियों की मंजिल पर किसी पोलैंड निवासी संवाददाता के साथ रखा गया था। जो इससे पहले फील्ड मार्शल वानपौलस के साथ एक ही कोठरी में रह चुका था। और इस प्रकार हमें वानपौलस के बारे में पूरी जानकारी मिली।

पूछताछ के लिए बुलाये जाने की अवधि बीत चुकी थी और जो लोग कोठरी में मौजूद थे अथवा जिन्हें कोठरी में छोड़ दिया गया था, उनके सामने एक पूरा सुखद दिन पड़ा हुआ था। इसमें हमारे समक्ष अनेक अवसरों की संभावना थी। यह अवसर अनेक अवसरों से प्रकाशमान था और इसके ऊपर आवश्यकता से अधिक कर्तव्यों का अंधकार नहीं छाया हुआ था। हमसे जो काम लिये जाते, उनमें महीने में दो चार ब्लोटार्च से खाटों को कीटाणुओं से मुक्त किया जाना शामिल था। इस तरीके के अन्तर्गत इन लोहे की चारपाइयों पर इस ब्लोटार्च की आग की तेज़ लपट डाली जाती थी; ताकि सब कीटाणु नष्ट हो जाएं। (लूबयांका में कैदियों को किसी भी हालत में माचिस नहीं दी जाती थी। सिगरेट जलाने के लिए हमें दरवाजे में बना छेद खुलने पर बहुत सब्र के साथ अंगुली से इशारा करना पड़ता था और सन्तरी से माचिस मांगनी पड़ती थी। लेकिन बिना किसी हिचक के हमें भयंकर आग उगलने वाली ब्लोटार्च सौंप दी जाती थी।) और सप्ताह में एक बार हमें बरामदे में बाहर बुलाया जाता और एक भुथरी मशीन से हमारी दाढ़ी के बाल काट दिये जाते—इसे हमारा अधिकार बताया जाता था, लेकिन यह एक कर्तव्य जैसा कहीं अधिक दिखाई पड़ता था। इसके अलावा किसी कैदी को कोठरी के फर्श को साफ करने के काम पर भी लगाया जा सकता था। (ज—व हमेशा इस काम से बचता था, क्योंकि यह उसकी शान के खिलाफ था। वास्तव में किसी भी प्रकार का काम उसकी शान के खिलाफ था।) हम फर्श की सफाई

करते समय बहुत जल्दी थक जाते थे, हमारा सांस फूल जाता था, क्योंकि हमें बहुत कम भोजन मिलता था अन्यथा हम इस काम को एक विशेषाधिकार ही समझते थे। यह काम बहुत खुशनुमा और उत्साहपूर्ण होता था—अपने एक नंगे पांव से ब्रश को आगे तक धकेलना, तनकर सीधे खड़े रहना और फिर वापस घूमना और ब्रश को अपने पांव से कोठरी के दूसरे किनारे तक धकेलना और इसी प्रकार आगे-पीछे, आगे-पीछे ब्रश को घुमाते रहना। और इस प्रकार आप कुछ समय के लिए अपने सब कष्टों को भूल सकते थे। फर्श शीशे की तरह चमकने लगता ! वाह ! पोतेमकिन जेल !

इसके अलावा हमें अपनी पुरानी जेल की कोठरी, ६७ नम्बर की कोठरी में अधिक समय तक भीड़भाड़ में नहीं रखा गया। मार्च के मध्य में उन्होंने एक छठा कैदी हमारे पास भेज दिया और अब क्योंकि लूबयांका में सब कोठरियों में कैदियों के सोने के लिए तख्ते नहीं लगाये जा सके थे और न ही वे लोग आपको अभी तक फर्श पर सुलाते थे; अतः उन्होंने हम सब लोगों को एक सुन्दर कोठरी—५३ नम्बर की कोठरी में भेज दिया। (मैं यह सलाह दूंगा कि जो व्यक्ति अभी तक इस कोठरी में नहीं गया है, उसे एक बार अवश्य-अवश्य इसका दर्शन करना चाहिए।) यह कोई मामूली कोठरी नहीं थी। यह महल का एक बड़ा कक्ष था, जिसे बड़े प्रसिद्ध व्यक्तियों और यात्रियों के सोने के लिए सुरक्षित रखा गया था। रूसिया बीमा कम्पनी ने, कम खर्ची की बात को ध्यान में रखे बिना ही, इस खण्ड में छत की ऊंचाई साढ़े सोलह फुट कर दी थी।[१८] (मोर्चे के जासूसी विरोधी संगठन का प्रमुख, इस कक्ष में कितनी शान के साथ एक के ऊपर एक चार तख्ते लगाकर कितने अधिक कैदियों को रखने की व्यवस्था कर सकता था। वह सौ आदमियों को इसमें रख सकता था। इस काम में उसके असफल रहने का सवाल ही नहीं उठता था।) और खिड़की ! यह इतनी बड़ी थी कि इसकी सिल पर खड़े होकर भी सन्तरी मुश्किल से इसके "फोरतोचका" अर्थात् रोशनदान तक पहुंच पाता। इस खिड़की का एक हिस्सा ही एक सामान्य घर में एक अत्यन्त सुन्दर खिड़की का निर्माण कर सकता था। खिड़की के अधिकांश हिस्से पर लोहे की जो चद्दरें ठोक दी गई थीं, उन्हें देखकर ही हमें यह स्मरण आता था कि आखिरकार हम एक महल में नहीं हैं।

इसके बावजूद, जब आसमान साफ होता, लोहे की इस चादर के ऊपर से, लूबयांका के अहाते की किसी दीवार, छठी अथवा सातवीं मंजिल की किसी खिड़की के शीशे से परावर्तित होकर सूरज की कोई किरण, अत्यन्त धीमी किरण इस कोठरी में पहुंचती। हमारे लिये यह सूरज की सच्ची किरण होती—एक जीवंत और अत्यन्त प्रिय वस्तु ! हम अत्यन्त स्नेह से भरकर इस किरण को दीवार पर निरन्तर ऊपर उठते हुए देखते रहते और इसका प्रत्येक उतार-चढ़ाव अनेक अर्थों से भरा होता। बाहर शुद्ध हवा में हमें प्रतिदिन बाहर निकालने के समय की पूरी जानकारी मिलती, दोपहर के भोजन के पहले के अनेक आधे घंटों की गणना कर पाते और फिर दोपहर के भोजन से कुछ पहले ही यह किरण अन्तर्धान हो जाती।

और हमारे अधिकारों में टहलने के लिये बाहर निकलने, पुस्तक पढ़ने, अपने अतीत के बारे में एक दूसरे को बताने, दूसरों की बातें सुनने और समझने, बहस करने और अपना ज्ञान बढ़ाने के अधिकार शामिल थे ! और हमें दोपहर के भोजन से भी पुरस्कृत किया जाता, जिसमें दो चीजें खाने को मिलतीं ! यह इतनी बड़ी बात थी कि इस पर विश्वास करना मुश्किल था !

लूबयांका की पहली तीन मंजिलों पर टहलना बहुत बुरा था। कैदियों को एक सीलन भरे और दीवारों के बीच खन्दक की तरह फंसे अहाते में निकाला जाता—यह अहाता जेल की इमारतों की दीवारों से बना, एक संकरा लेकिन गहरा कुआं दिखाई पड़ता। लेकिन दूसरी ओर चौथी और पांचवीं मंजिलों के कैदियों को बहुत ऊंचाई पर ले जाया जाता—उन्हें पांचवीं मंजिल की छत पर टहलने के लिए ले जाया जाता। छत का फर्श कंकरीट का बना था। चारों ओर आदमी की ऊंचाई से तिगुनी ऊंची कंकरीट की दीवारें बनी थीं। हमारे साथ एक निहत्था संतरी होता। निगरानी टावर पर स्वचालित हथियार लिये एक सन्तरी खड़ा रहता। लेकिन यहां हवा वास्तविक थी, आसमान वास्तविक था! "अपने हाथ कमर के पीछे रखो! दो-दो आदमियों की लाइन बनाओ! बातचीत मत करो! कहीं न रुको!" यही आदेश हमें दिये जाते थे। लेकिन वे यह भूल गए थे कि हमें अपने सिर पीछे झुकाने की मनाही करते। और हम सचमुच यह करते थे। यहां आपको परावर्तित और घटिया किस्म की धूप नहीं मिलती थी, बल्कि वास्तविक धूप प्राप्त होती थी। आपको वास्तविक, सच्ची, और शाश्वत धूप का आनन्द मिलता था। और यदि वसन्त के बादल आकाश में छितराये होते, तो सुनहरी धूप इनसे छन-छन कर आपके ऊपर बरसती।

प्रत्येक व्यक्ति को वसन्त के आगमन से आनन्द मिलता है—और कैदी का आनंद तो दस गुना हो जाता है। आह, अप्रैल के महीने का आकाश! इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं जेल में हूं। स्पष्ट है कि वे मुझे गोली से उड़ाने नहीं आ रहे हैं। और अन्ततः मैं यहां अधिक बुद्धिमान् बन जाऊंगा। यहां मैं अनेक बातों के महत्व को समझने लगूंगा। आकाश! स्वर्ग! मैं अभी भी अपनी गलतियों में सुधार कर सकूंगा। और आकाश उन लोगों के लिए बल्कि तुम्हारे लिये, हे! स्वर्ग! यहीं आकर मेरी समझ में वे गलतियां आई हैं, और मैं उनमें सुधार करूंगा!

मानो, किसी गर्त से, मानो किसी अत्यन्त गहरे स्थान से, जेरझिंस्की चौक से, मोटर-गाड़ियों के भौंपुओं के सामान्य गीत की स्वरलहरियां निरन्तर हमारे कानों तक पहुंचती रहतीं। जो लोग इन भौंपुओं की आवाज़ की धुन के अनुसार वहां नीचे सड़क पर आगे बढ़ रहे थे, उनके लिये यह आवाज़ सृष्टि के बिगुल की ध्वनि के समान थी, लेकिन यहां से उनकी महत्वहीनता अत्यन्त स्पष्ट हो रही थी।

स्वच्छ हवा में टहलने के लिए केवल २० मिनट का समय मिलता था। लेकिन ये २० मिनट कितने महत्वपूर्ण थे। इस छोटी सी अवधि में एक व्यक्ति को न जाने क्या-क्या उपलब्धियां करने का अवसर मिलता था।

सबसे पहले, यह बात बड़ी दिलचस्प होती कि टहलने के लिये बाहर निकालने और फिर वापस जेल की कोठरी में पहुंचाने के समय आप यह अनुमान लगाने की कोशिश करें कि यह पूरी जेल किस प्रकार बनी है, किस प्रकार फैली हुई है और यह भी गणना करने की कोशिश करें कि ये छोटे-छोटे अधर में लटकते हुए आंगन कहां पर बने हैं, ताकि कभी बाद में, जेल से रिहा होकर स्वतंत्र जीवन बिताते समय, आप चौक में घूमते समय इन अहातों को पहचान सकें। इन अहातों में पहुंचने के लिये हमें कई बार मुड़ना पड़ता था और मैंने निम्न प्रणाली की ईजाद की: कोठरी से आरम्भ करके, मैं दाहिनी ओर के प्रत्येक मोड़ को "क" मोड़ कहता और बाईं ओर के प्रत्येक मोड़ को "ख" मोड़ मान लेता और वे चाहे हमें कितनी ही तेजी से इधर-उधर मोड़ते रहें, यह गणना की जा सकती थी। क्योंकि इस

प्रणाली के अन्तर्गत जल्दबाजी में मैं अपने दिमाग में कोई तस्वीर नहीं उतारना चाहता था, बल्कि यह निष्कर्ष निकाल लेना चाहता था कि हमें कितनी बार दाहिनी ओर और कितनी बार बाईं ओर मोड़ा जाता है। यदि इसके अलावा, हम सीढ़ियों की किसी खिड़की से बाहर देख सकें और हमारी नजर लूबयांका की इमारत पर बनी जलपरियों की पीठ पर पड़ जाए, जो खम्बेदार परकोटे के ऊपर आधी झुकी हुई दिखाई पड़ती थीं, और यह परकोटा स्वयं चौक के ऊपर बना था, तो आप यह भी निश्चय कर सकते थे कि मोड़ों की संख्या गिनते समय ये जलपरियां कहां दिखाई पड़ी थीं और इसके बाद कोठरी में वापस लौटकर आप अपने विचारों को व्यवस्थित कर सकते थे और यह पता लगा सकते थे कि आपकी कोठरी की खिड़की किस स्थान पर खुलती है।

और कोठरी के बाहर टहलने के समय आप अधिक से अधिक स्वच्छ हवा में सांस लेने का प्रयास करते।

और यहीं स्वच्छ आकाश के तले आपको अपने उज्ज्वल भावी जीवन तापरहित और त्रुटियों से मुक्त जीवन के बारे में सोचने को बाध्य होना पड़ता।

यही वह सर्वोत्तम स्थान होता, जहां आप सर्वाधिक खतरनाक विषयों पर बात कर सकते थे। इस बात का कोई महत्व नहीं था कि टहलने के दौरान बातचीत की मनाही है। बस, यह जानना काफी था कि बातचीत कैसे की जा सकती है। इस बात का ध्यान रखना पड़ता था कि कोई मुखबिर आपकी बात न सुन पाये और किसी माइक्रोफोन तक भी आपकी आवाज़ न पहुंच जाये।

टहलने के दौरान मैं सूसी के बराबर खड़ा होने का प्रयास करता। हम लोग कोठरी में भी बात करते थे। लेकिन हम लोग खास-खास विषयों पर यहीं बात करना चाहते थे। हम लोग बहुत जल्दबाजी में एक दूसरे के इतने समीप नहीं पहुंचे थे। उसमें कुछ समय लगा था। लेकिन वे अभी तक मुझे अपने बारे में बहुत कुछ बता चुके थे। मैंने उनसे एक योग्यता प्राप्त की थी, ऐसी वस्तुओं को सब्र से और सोद्देश्यता से स्वीकार करना, जिनका मेरी योजनाओं में कभी भी कोई स्थान नहीं रहा था और जिनका मेरे जीवन की सुनिश्चित दिशाओं से भी कोई सम्बन्ध नहीं रहा था। बचपन से ही न जाने कैसे मेरे मन में यह भाव मौजूद था कि मेरा लक्ष्य रूस की क्रान्ति के इतिहास का अध्ययन करना है और अन्य किसी वस्तु की मुझे कोई चिन्ता नहीं। क्रान्ति को समझने के लिए मैं मार्क्सवाद से अधिक अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता अनुभव नहीं करता था। मैंने ऐसी प्रत्येक वस्तु से स्वयं को काटकर अलग कर लिया था। ऐसी प्रत्येक वस्तु पर अपनी पीठ फेर ली थी, जिसका इससे सम्बन्ध नहीं था और अब भाग्य ने मुझे सूसी से मिला दिया था। उन्होंने एक पूरी तरह भिन्न हवा में सांस लिया था और वे बड़े भावावेश से स्वयं अपनी दिलचस्पियों, अपने प्रिय विषयों के बारे में बताते। उनके प्रिय विषय थे—एस्तोनिया और लोकतंत्र। यद्यपि मैंने कभी भी एस्तोनिया में दिलचस्पी तक लेने की बात के बारे में नहीं सोचा था, बुर्जुआ लोकतंत्र की बात तो दूर, पर मैं उनके उन २० स्वतंत्र वर्षों की वे प्रिय कहानियां सुनता रहा, जो २० वर्ष उन्होंने साधारण, श्रम से प्यार करने वाले और बड़े आदमियों के छोटे राष्ट्र एस्तोनिया में बिताये थे और जहां के लोग आहिस्ता-आहिस्ता लेकिन निश्चित रूप से अपना काम पूरा करते थे। मैंने उनसे एस्तोनिया के संविधान के सिद्धान्तों के बारे में सुना, इन सिद्धान्तों को यूरोप के सर्वोत्तम अनुभव से ग्रहण किया गया था और मुझे यह भी जानकारी मिली कि उनकी १००

सदस्यों वाली एक सदनी संसद् किस प्रकार कार्य करती थी। यद्यपि यह इस प्रकार क्यों काम करती थी, यह बात स्पष्ट नहीं थी, लेकिन मुझे यह सब सुनना बहुत अच्छा लगने लगा और मैं इन बातों को अपनी स्मृति में संचित करता रहा।[१६] मैं बड़ी तत्परता से उनके दुर्भाग्य-पूर्ण इतिहास के बारे में सुनता : छोटे से एस्तोनिया के ऊपर ट्यूशन और स्लाव जातियों के भयंकर प्रहार हो रहे थे। बारी-बारी से पूर्व और पश्चिम के उसके ऊपर प्रहार होते। इनका कोई अन्त दिखाई न पड़ता और आज भी कोई अन्त दिखाई नहीं पड़ रहा। और इसके अलावा इस संबंध में एक विख्यात (पूरी तरह से अज्ञात) कहानी है कि सन् १९१८ में किस प्रकार हम रूसियों ने एक झपट्टे में उन्हें आत्मसात कर लेना चाहा, लेकिन एस्तोनिया के लोगों ने यह बात नहीं मानी। और आगे चलकर किस प्रकार यूदेनिच ने फिन जाति की अपनी परम्परा के बारे में इतनी घृणापूर्ण बातें कहीं और स्वयं हम लोगों ने उन्हें "श्वेत रक्षक लुटेरे" नाम दिया। इसके बाद एस्तोनिया के विद्यार्थियों ने स्वयंसेवकों के रूप में अपने नाम दर्ज कराये। हमने एक बार फिर सन् १९४० में एस्तोनिया पर प्रहार किया और फिर १९४१ में और एक बार फिर १९४४ में। एस्तोनिया के कुछ पुत्रों को रूसी सेना में बलपूर्वक भर्ती कर लिया गया और कुछ को जर्मन सेना में। पर इसके बावजूद कुछ लोग जंगलों में भाग गये। तालिन के वयोवृद्ध बुद्धिवादियों ने यह विचार करना शुरू किया कि वे किस प्रकार इस लोहे के शिकंजे को तोड़कर बाहर निकल सकते हैं और किसी न किसी तरह इससे बाहर निकलकर स्वयं अपने लिये और स्वयं अपने द्वारा जीवित रह सकते हैं। इस स्थिति में हो सकता है कि उनका प्रधानमंत्री तीफ होता और शिक्षा मंत्री सूसी। लेकिन न तो चर्चिल ने और न ही रूजवेल्ट ने इन लोगों की चिन्ता की; लेकिन "चाचा जोई" [स्तालिन] ने यह चिन्ता दर्शाई और सोवियत सेनाओं के तालिन में प्रवेश करने की पहली रातों में ही, इन समस्त स्वप्नदर्शियों को उनके तालिन स्थित घरों में गिरफ्तार कर लिया गया। इनमें से १५ को मास्को की लूबयांका जेल की विभिन्न कोठरियों में बन्द कर दिया गया, पर एक कोठरी में एक से अधिक को नहीं रखा गया। और इनके ऊपर अनुच्छेद ५८-२ राष्ट्रीय आत्मनिर्णय की अपराधपूर्ण इच्छा के अन्तर्गत अभियोग लगाया गया।

जब कभी हम बाहर टहलने के बाद कोठरी में वापस लौटते तो हमें यही लगता कि हमें एक बार फिर गिरफ्तार कर लिया गया है। हमारा, इस विशिष्ट कोठरी की हवा में भी दम घुटता हुआ महसूस होता था। और टहलने के बाद वापस लौटने पर कुछ खाने को मिल जाता, तो बहुत अच्छा होता। लेकिन इसके बारे में कुछ न सोचना ही कहीं अधिक बेहतर था—हां कुछ भी न सोचना। उस समय स्थिति बहुत बुरी हो जाती जब कोई ऐसा कैदी चतुरताहीनता का प्रदर्शन करते हुए अपने उस भोजन के पार्सल का खजाना खोलकर बैठ जाता, जो उसे अपने घर से प्राप्त हुआ था और वह यह काम इस गलत अवसर पर करता और खाना खाने लगता। ठीक है, हम आत्मनियंत्रण का विकास करेंगे! यह भी बुरा था कि उस पुस्तक का लेखक जिसे आप पढ़ रहे हो, आपको इस सम्बन्ध में धोखा दे जाए : और बहुत अधिक विस्तार से, बारीकी से स्वादिष्ट व्यंजनों का वर्णन करने लगे। दूर हटो, गोगोल! दूर हटो, चेखव, तुम भी! इन दोनों ने अपनी पुस्तकों में आवश्यकता से अधिक भोजन की भरमार कर रखी है। "वह सचमुच कुछ भी खाना नहीं चाहता था, पर इसके बावजूद उसने थोड़ा सा हिरन का मांस खाया और कुछ बीयर पी।" कुतिया का बच्चा! कुछ आध्यात्मिक बातें पढ़ना बेहतर होता। कैदियों के लिए दोस्तोएवस्की की रचनाएं

पढ़ना बेहतर था। लेकिन दोस्तोएवस्की तक में आपको ऐसे अंश मिल सकते थे : "बच्चे भूखे ही रहे! कई दिनों तक उन लोगों को रोटी और सूअर के मांस के अलावा अन्य कुछ नहीं मिला।"

लूबयांका का पुस्तकालय जेल का प्रमुख श्रृंगार था। यह सच है कि लाइब्रेरियन को देखकर जुगुप्सा पैदा होती थी—यह सुनहरे बालों वाली प्रौढ़ा कुमारी थी और उसका शरीर एक घोड़े जैसा था। और वह स्वयं को अधिक बदसूरत बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास करती थी। उसका चेहरा इतना अधिक सफेद था कि एक गुड़िया के गतिहीन मुखौटे की तरह दिखाई पड़ता था; उसके होंठ बैंगनी थे और उसकी नोंची हुई भवें काले रंग की थीं। (आप कह सकते हैं कि यह उसका अपना सिरदर्द था। लेकिन बात यह है कि अगर वह सुन्दर होती, तो हमें और अच्छा लगता। हो सकता है कि लूबयांका के प्रमुख अधिकारी ने पहले ही इस बात का ध्यान रखा हो?) लेकिन यहां एक चमत्कार होता था : दस दिन में एक बार वह हमसे पुस्तकें वापस लेने आती और नई पुस्तकें भेजने का हमारा अनुरोध सुनती! वह अमानुषिक लूबयांका के यंत्रवत् तरीके से ही हमारी बातें सुनती और यह पता लगाना असम्भव था कि उसने उन लेखकों और पुस्तकों के नाम सुन लिये हैं अथवा नहीं, जिन्हें हम पढ़ना चाहते हैं अथवा क्या उसने हमारा एक शब्द भी सुना। वह हमारी कोठरी से चली जाती। लेकिन हम कई घंटों तक घबराहट भरी लेकिन सुखदभरी प्रत्याशा से भरे रहते। इन घंटों में उन सब पुस्तकों के एक-एक पन्ने को बड़ी बारीकी से देखा जाता, जिन्हें हमने वापस लौटाया था। इन पुस्तकों की इसलिए जांच की जाती थी कि कहीं हमने कुछ अक्षरों के नीचे गड्ढे तो नहीं कर दिये हैं अथवा छोटे-छोटे बिन्दु तो नहीं लगा दिये हैं—क्योंकि कैदियों ने एक दूसरे तक अपनी बात पहुंचाने के लिए ऐसे तरीके अपनाये थे—अथवा हमने अपने नाखून से उन अंशों के नीचे लाइनें तो नहीं खींच दी हैं, जो हमें पसन्द आये। पूरी तरह निर्दोष होने पर भी हम चिंतित रहते थे। वे लोग हमारे पास आकर यह कह सकते थे कि उन लोगों ने पिन से बनाये गये गड्ढे देखे हैं। वास्तव में उनकी कोई भी बात कैसे गलत हो सकती थी; और सदा की तरह, किसी सबूत की भी ज़रूरत नहीं थी। और केवल इसी आधार पर हमें तीन महीने तक पुस्तकों से वंचित रखा जा सकता था—हां, यह भी हो सकता था कि वे हमारी कोठरी के सब कैदियों को सज़ा की कोठरी में डाल दें। यह सचमुच अत्यधिक असह्य बात होती कि हमें जेल में बिताये जाने वाले सर्वोत्तम और सर्वाधिक प्रकाशमान महीनों में पुस्तकों से वंचित रहना पड़ता। शिविरों के गर्त में फेंक दिये जाने से पहले पुस्तकों से वंचित रहना पड़ता। वास्तव में, हम केवल भयभीत ही नहीं थे; हम सचमुच कांपते रहते थे, ठीक उसी तरह जिस प्रकार अपनी किशोरावस्था में एक प्रेमपत्र भेजने के बाद उसके उत्तर की प्रतीक्षा में हम कांपते रहते थे। क्या उत्तर आएगा? और इसमें क्या होगा?

अन्ततः पुस्तकें आतीं और हमारे अगले दस दिनों का स्वरूप निर्धारित कर देतीं। वे यह निश्चित करते कि क्या हम अगले दस दिन का अधिकांश समय पढ़ने में बितायेंगे—यदि वे कुछ निकम्मी किताबें तलाश करने में सफल होते तो हमारा अधिक समय बातचीत में ही गुजरता। वे ठीक उतनी ही पुस्तकें लाते जितने लोग कोठरी में कैद होते। यह गणना किसी रोटी काटने वाले कर्मचारी के लिए तो उपयुक्त थी, पर लाइब्रेरियन के लिए नहीं। एक व्यक्ति के लिए एक पुस्तक, छह आदमियों के लिए छह किताबें। जिन कोठरियों में सबसे

अधिक संख्या में कैदी होते, उनका सबसे अधिक मजा रहता।

कभी-कभी यह प्रौढ़ा कुमारी पुस्तकों के हमारे अनुरोध को बड़े चमत्कारी ढंग से पूरा करती। लेकिन जब वह इनके प्रति लापरवाही बरतती, तब भी परिणाम दिलचस्प हो सकता था। इसका कारण विशाल लूबयांका का विलक्षण पुस्तकालय था। संभवतः इसमें उन निजी पुस्तकालयों की पुस्तकें भरी पड़ी थीं, जिन्हें जब्त कर लिया गया था। जिन पुस्तक संग्रहकर्ताओं ने इन पुस्तकों को एकत्र किया था, वे पहले ही अपनी आत्माओं को ईश्वर को समर्पित कर चुके थे। लेकिन प्रमुख बात यह थी कि जब राज्य सुरक्षा संगठन अनेक दशकों से देश के पुस्तकालयों की जांच पड़ताल करने में लगे थे और इनकी अच्छी पुस्तकों को ज़ब्त करने में पूरी तरह सोए हुए थे, वे स्वयं अपने घर को टटोलना भूल गए थे। यहां, स्वयं उनके अड्डे में आप जाम्यातिन, पिलन्याक, पेंतेली मोन रोमानोव की रचनाएं और मेरेझकोवस्की के सम्पूर्ण वांगमय का कोई भी खण्ड प्राप्त कर सकते थे। (कुछ लोगों ने बड़ी बुद्धिमत्ता से यह विचार प्रकट किया कि वे लोग हमें इसलिए निषिद्ध पुस्तकें पढ़ने के लिए देते हैं, क्योंकि वे पहले ही हमें मरा हुआ मान चुके हैं। लेकिन मेरा अपना विचार है कि लूबयांका के पुस्तकालय के कर्मचारियों को इस बात का आभास तक नहीं था कि वे लोग हमें किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ने के लिए दे रहे हैं। वे लोग अत्यन्त आलसी और अज्ञानी थे।)

दोपहर के भोजन से पहले का अधिकांश समय हम पढ़ने में बिताते थे। लेकिन यदा-कदा यह होता कि कोई वाक्यांश आपको उद्वेलित कर देता और आप खिड़की से दरवाजे तक और दरवाजे से खिड़की तक का चक्कर लगाने लगते। और आप किसी को यह बताना चाहते कि आपने क्या पढ़ लिया है और इसका क्या अभिप्राय है। और इसके बाद बहस शुरू हो जाती। इस समय बहुत तीखे तर्क होते।

मैंने अक्सर यूरी वाई० से बहस की।



मार्च महीने की उस सुबह को जब वे लोग हम पांच कैदियों को ५३ नम्बर की महल जैसी कोठरी में ले गये थे, उन्होंने हमारी टोली में एक छठा कैदी भी शामिल कर दिया था।

उसने एक भूत की तरह कोठरी में प्रवेश किया था और फर्श पर उसके जूतों की आवाज़ नहीं हुई थी। वह कोठरी में घुसा और यह भरोसा न होने के कारण कि क्या वह अपने पांवों पर खड़ा रह सकेगा, उसने दरवाजे की चौखट का सहारा लिया। वह चौखट के सहारे खड़ा हो गया। कोठरी का बल्ब बुझा दिया गया था और सुबह का प्रकाश धुंधला था। पर इस नवागंतुक की आंखें विस्फारित नहीं थीं। वह आंख भींचकर देखता था और मौन था।

उसके सैनिक कोट और पतलून का कपड़ा यह बात स्पष्ट नहीं कर पा रहा था कि वह सोवियत, अथवा जर्मन, अथवा पोलैंड अथवा ब्रिटिश सेना का है। उसका चेहरा लम्बा था। इसमें रूसी होने की प्रायः कोई झलक नहीं थी। वह अत्यन्त दुबला था और वह बेहद दुबला ही नहीं था, बल्कि बेहद लम्बा भी था।

हमने रूसी भाषा में उससे बात करनी चाही—और वह चुप रहा। सूसी ने उसे जर्मन भाषा में संबोधित किया—वह फिर भी मौन रहा। फास्तेंको ने फ्रांसीसी और अंग्रेजी का इस्तेमाल किया—और वही परिणाम निकला। केवल बहुत धीरे-धीरे उसके अत्यन्त दुर्बल, पीले और अर्द्ध मृत चेहरे पर मुस्कराहट झलकी—मैंने अपने जीवन में इस किस्म की एकमात्र यही मुस्कराहट देखी है।

"लो...गो" उसने अत्यन्त क्षीण स्वर में कहा, मानो वह अभी-अभी होश में आ रहा हो अथवा वह पूरी रात भर गोली से उड़ाये जाने की प्रतीक्षा में बैठा रहा हो। और उसने अपना दुर्बल और अशक्त हाथ आगे बढ़ाया। इस हाथ में एक चिथड़े में बंधी छोटी सी गठरी थी। हमारी कोठरी का मुखबिर तुरन्त भांप गया कि इसमें क्या था : वह इसके ऊपर झपटा, उसने गठरी को दबोच लिया और उसने इसे मेज़ पर रख कर खोल डाला। इसमें आधा पौंड हल्का तम्बाकू था। उसने तुरन्त अपने लिए एक सिगरेट तैयार की जो आकार में सामान्य सिगरेट से चार गुनी थी।

इस प्रकार एक तहखाने के भीतर एक सन्दूक में तीन सप्ताह तक बन्द रहने के बाद यूरी निकोलाएविच वाई० हमारी कोठरी में आ पहुंचा था।

सन् १९२९ में चीनी पूर्वी रेलवे पर हुई घटनाओं के बाद से पूरे देश में यह गीत गाया जाने लगा था :

शत्रुओं को आतंकित करती इस्पाती छाती लिए,
सत्ताइसवीं पलटन पहरे पर खड़ी है।

इस २७वीं पैदल डिवीजन के तोपखाने का मुख्य अधिकारी ज़ारशाही के जमाने का अफसर निकोलाई वाई० था। यह डिवीजन गृहयुद्ध के जमाने में बनाई गई थी। (और मुझे इसके मुख्य अफसर का नाम इसलिये याद है, क्योंकि उसने तोपखाने के बारे में एक पाठ्यपुस्तक लिखी थी, जिसका मैंने तोपखाने के अफसर के रूप में अध्ययन किया था)। मालगाड़ी के एक डिब्बे में, जिसे गरम रखा जाता था और जिसे रहन-सहन के लिये एक क्वार्टर के रूप में बदल दिया गया था, तोपखाने का यह अफसर अपनी पत्नी सहित वोलगा और यूराल पर्वत श्रृंखला को निरन्तर पार करता रहा। कभी पूरब की ओर आगे बढ़ते हुये, तो कभी पश्चिम की ओर जाते हुए, उसने इन्हें पार किया। इसी माल डिब्बे में उसके पुत्र यूरी का १९१७ में जन्म हुआ था और इस प्रकार वह स्वयं क्रांति के जुड़वां भाई के रूप में अपने जीवन के पहले वर्ष बिताने वाला भाग्यशाली बना।

यह बहुत पुरानी बात है। इसके बाद उसके पिता लेनिनग्राद में बस गए। वे अकादमी से सम्बद्ध रहे। उनका रहन-सहन अच्छा था और वे बड़े आदमियों में आते जाते रहते थे और उनके पुत्र ने अफसर उम्मीदवारों के स्कूल से परीक्षा उत्तीर्ण की। फिनलैंड से हुए युद्ध के दौरान यूरी अपनी मातृभूमि की ओर से लड़ना चाहता था और उसके पिता के मित्रों ने उसे सेना के एक अफसर के सहायक के रूप में नियुक्त करा दिया। फिनलैंड के तोपखाने के शक्तिशाली अड्डों को ध्वस्त करने के लिये यूरी को अपने पेट के बल घिसट-घिसट कर आगे नहीं बढ़ना पड़ा, न ही वह शत्रु की टोह लेने जाने वाली टोलियों में शत्रु के जाल और घेरे में फंसा, न ही अचूक निशाना लगाने वाले शत्रु के स्नाइपरों की गोलियों की मार के तले उसे बर्फ में ठण्ड से सिकुड़ कर प्रायः बर्फ की तरह ही जम जाना पड़ा—और इसके बावजूद उसकी सेवाओं को पुरस्कृत किया गया। उसे कोई मामूली पदक नहीं मिला, बल्कि उसे आर्डर

आफ दि रेड बैनर अर्थात् लाल झण्डे का पदक दिया गया, जो उसकी फौजी कमीज़ पर सुशोभित हो उठा। इस प्रकार उसने फिनलैंड से हुए युद्ध को, इस युद्ध के औचित्य उसमें स्वयं अपने हिस्से के प्रति पूरी सजगता के साथ समाप्त किया।

लेकिन अगले युद्ध में उसके लिये परिस्थितियां इतनी आसान नहीं रहीं। वह जिस तोपखाना टुकड़ी का कमाण्डर था, उसे शत्रु ने लुगा के समीप घेर लिया था। इस टुकड़ी के सैनिक और अफसर इधर-उधर फैल गए और उन्हें शत्रु ने गिरफ्तार करके युद्धबंदियों के शिविरों में पहुंचा दिया। यूरी ने देखा कि वह बिलनियस के समीप अफसरों के लिये बनाए गये यातना शिविर में पहुंच गया है।

प्रत्येक जीवन में कोई न कोई ऐसी घटना होती है, जो पूर्ण व्यक्तित्व के लिए निर्णायक सिद्ध होती है—यह उस व्यक्ति की नियति, उसकी आस्थाओं, उसकी प्रिय वस्तुओं के लिए निर्णायक होती है। उस शिविर में बिताये दो वर्षों ने यूरी को सदा सर्वदा के लिए-झकझोर दिया। वह शिविर कैसा था, इसके बारे में शब्दों अथवा उपमाओं के द्वारा कुछ बता पाना कठिन है। वह एक ऐसा शिविर था, जिसमें मृत्यु अनिवार्य थी—और जो कोई मौत के मुंह में पहुंचने से बच जाता था, उसे कुछ निष्कर्षों पर पहुंचने के लिए बाध्य होना पड़ता था।

जो लोग जीवित बचे थे, उनमें आर्डनर थे—अर्थात् शिविर की आंतरिक पुलिस या पोलीजेई के सदस्य—जिन्हें स्वयं कैदियों से ही चुना जाता था। हां, यूरी आर्डनर नहीं बना। रसोइये भी किसी प्रकार जीवित बच निकले। अनुवादक भी जीवित रह सकते थे—क्योंकि इन लोगों की उन्हें जरूरत थी। यद्यपि यूरी असाधारण रूप से अच्छी जर्मन बोल सकता था, लेकिन उसने इस तथ्य को छिपाये रखा। वह यह समझता था कि इन परिस्थितियों में एक अनुवादक को अपने साथी कैदियों के साथ विश्वासघात करना होगा। कोई व्यक्ति कब्र खोदने का काम करके भी अपनी मृत्यु को स्थगित कर सकता था, लेकिन अधिक शक्तिशाली और अधिक परिश्रमी लोगों को यह काम मिल जाता था। यूरी ने घोषणा की कि वह एक कलाकार है। और वास्तव में घर पर उसे जो विविध शिक्षा प्राप्त हुई थी, उसमें उसे चित्रकारी भी सिखाई गई थी। यूरी अच्छे तैल चित्र बना लेता था और अपने पिता के चरण चिन्हों पर चलने की उसकी इच्छा ने ही उसे कला स्कूल में भर्ती होने से रोका था क्योंकि उसे अपने पिता पर बहुत गर्व था।

एक वयोवृद्ध कलाकार के साथ (मुझे खेद है कि मुझे इस कलाकार का नाम याद नहीं रहा) वह बैरकों में एक अलग कमरे में रहता था। और यहां यूरी ने कमांडेंट के स्टाफ के जर्मन अफसरों के लिये 'नीरो की दावत' और 'एल्ब के गायक' आदि चित्र बनाये। उसे इन चित्रों के बदले भोजन मिल जाता था। सुबह छह बजे से जिस अत्यन्त पतले शोरबे के लिए युद्धबंदी अफसर अपने खाने के डिब्बे लेकर खड़े हो जाते थे, वह जीवित रहने के लिये पर्याप्त नहीं था और इस प्रकार कतारों में खड़े रहते समय आर्डनर उन्हें डंडों से और रसोइए करछियों से पीटते थे। शाम के समय, यूरी अपने कमरे की खिड़कियों से केवल वही चित्र देखता, जिसको अभिव्यक्ति देकर मूर्त करने के लिये उसे एक चित्रकार की प्रतिमा प्राप्त हुई थी: कांटों से घिरे और दलदल भरे एक चरागाह के ऊपर संध्या समय का धुंधलका; बड़ी संख्या में छोटे-छोटे अलाव और इन अलावों के चारों ओर बैठे हुए वे पशु समान प्राणी, जो एक समय रूसी अफसर थे और आज मरे हुए घोड़ों की हड्डियां चबा रहे थे, आलू के छिलकों

की टिकियां बना रहे थे, घोड़े की लीद की सिगरटें पी रहे थे और जिनके शरीर जुओं से भरे पड़े थे। इनमें से सब अभी तक स्पष्ट भाषण की क्षमता से वंचित नहीं हुए थे, और अलाव की लाल छाया में यह दिखाई पड़ रहा था कि किस प्रकार उन चेहरों पर जो नीनडरटाल [नीनडरटाल की वह आदिम गुफा जहां से पाषाण युग के लोगों के अवशेष सबसे पहले प्राप्त हुए थे] की ओर बढ़ रहे हैं, अब एक दूसरे को समझने का भाव आ चुका है। चाहे यह कार्य विलम्ब से ही क्यों नहीं हुआ।

क्या हम जबान को बन्द रखें, क्या इस पर लगाम लगा दें! यूरी ने जिस जीवन की रक्षा की थी, अब वह स्वयं उसके अपने लिए मूल्यवान नहीं रह गया था। वह उन लोगों में से नहीं था, जो सब कुछ भुला देने के लिये आसानी से तैयार हो जाते हैं। नहीं, यदि उसे जीवित रहना है, तो वह कुछ निष्कर्ष निकालने के लिये बाध्य है।

अब तक उन्हें यह बात स्पष्ट हो चुकी थी कि इन परिस्थितियों की जिम्मेदारी केवल जर्मनों पर नहीं थी, अथवा इनके लिये केवल जर्मन ही उत्तरदायी नहीं थे; अनेक देशों के युद्ध बंदियों में केवल सोवियत संघ के युद्धबंदी ही इस प्रकार रहते थे और इस प्रकार मौत के मुंह में पहुंचते थे। किसी भी देश के युद्धबंदियों की सोवियत युद्धबंदियों से बुरी दशा नहीं थी। पोलेंड, यहां तक कि युगोस्लाविया के युद्धबंदी भी कहीं अधिक सह्य परिस्थितियों में रह रहे थे और जहां तक इंगलैंड और नार्वे के युद्धबंदियों का सवाल था, अन्तर्राष्ट्रीय रेड-क्रास ने उन्हें उनके घरों से प्राप्त, उनके देशों से प्राप्त पार्सल बहुत बड़ी संख्या में पहुंचाये थे। वे लोग जर्मनों द्वारा दिये जाने वाले राशन के लिये कतार बना कर खड़े होने की चिन्ता तक नहीं करते थे। जहां कहीं मित्र राष्ट्रों के युद्धबंदियों के शिविर सोवियत युद्धबंदियों के शिविरों के बराबर होते, उनके कैदी, दयावश, हमारे सैनिकों के बाड़ों में खाने की चीजों के बंडल फेंक देते थे और हमारे युद्धबंदी इन उपहारों पर इस प्रकार टूट पड़ते थे, जिस प्रकार कुत्तों का एक झुण्ड एक हड्डी पर टूट पड़ता है।

रूस के लोग समस्त युद्ध का भार अपने कन्धों पर ढो रहे थे—और स्वयं रूसियों की यह दुर्दशा थी। क्यों?

धीरे-धीरे, विभिन्न सूत्रों से स्पष्टीकरण प्राप्त होने लगे: यह स्पष्ट हुआ कि सोवियत संघ स्वयं को युद्धबंदियों सम्बन्धी हेग करार पर रूस के हस्ताक्षर के प्रति बाध्य नहीं मानता। इसका यह अर्थ होता था कि सोवियत संघ, युद्धबंदियों के साथ किए जाने वाले व्यवहार के प्रति अपना कोई दायित्व स्वीकार नहीं करता और उसने अपने उन सैनिकों की सुरक्षा के लिये भी कोई कारवाई नहीं की जो गिरफ्तार हो गए थे।[२०] सोवियत संघ अन्तर्राष्ट्रीय रैडक्रास को स्वीकार नहीं करता था। सोवियत संघ अपने एक दिन पहले के सैनिकों को भी स्वीकार नहीं करता था: युद्धबन्दी हो जाने के बाद सोवियत संघ का अपने सैनिकों का कोई भी सहायता देने का इरादा नहीं था।

और यूरी का हृदय, उस यूरी का हृदय जो अक्तूबर क्रान्ति का उत्साही जुडवां भाई था, भावनाहीन बन गया, उसका उत्साह समाप्त हो गया। अपने बैरक के कमरे में वह और उसका साथी वयोवृद्ध कलाकार निरन्तर झगड़ते और एक दूसरे से तर्क वितर्क करते। यूरी के लिये परिस्थितियों की वास्तविकता को स्वीकार करना बड़ा कठिन था। यूरी प्रतिरोध करता रहा। लेकिन यह वृद्ध निरन्तर उसके अज्ञान की परतों को कुरेदता गया। यह सब

क्या है? स्तालिन? लेकिन क्या सब दोष केवल स्तालिन के मत्थे मढ़ना, उन छोटी अंगुलियों के हाथों वाले स्तालिन को यह सब दोष देना सही होगा? जो व्यक्ति आधा निष्कर्ष निकालता है, वह निष्कर्ष निकालने में असफल ही रह जाता है। शेष लोगों का क्या होगा? वे लोग जो एकदम स्तालिन के नीचे आते हैं, जिनका दर्जा एकदम स्तालिन के नीचे है, और देश में सर्वत्र फैले हुए महत्वपूर्ण लोग—वे सब लोग, जिन्हें मातृभूमि ने अपनी ओर से बोलने का अधिकार दिया था?

उस स्थिति में कारवाई का क्या सही रास्ता हो सकता है, यदि हमारी मां हमें खानाबदोशों के हाथ बेच दे? नहीं, इससे भी बुरा हाल हो, और हमें कुत्तों के सामने फेंक दे? इस स्थिति में क्या वह सचमुच हमारी मां बनी रहेगी? यदि कोई पत्नी पतिता हो जाती है, तो क्या हम इसके बाद भी उसके प्रति वफादार रहने के दायित्व से बंधे रहते थे? एक ऐसी मातृभूमि, जो अपने सैनिकों के साथ विश्वासघात करती है—क्या वह सचमुच मातृभूमि है?

और यूरी के लिए हर वस्तु उलट गई थी, चारों ओर सब कुछ उलट-पुलट गया था? उसे अपने पिता पर गर्व था—और अब वह उन्हें बुरा-भला कहने लगा! अब पहली बार उसने यह सोचना शुरू किया कि सारे रूप में स्वयं उसके पिता ने उस सेना के प्रति अपनी शपथ के साथ विश्वासघात किया, जिस सेना में वे बड़े हुए थे—उन्होंने सेना के साथ विश्वासघात कर उस प्रणाली की स्थापना में सहायता दी, जिसने अब स्वयं अपने सैनिकों के साथ विश्वासघात किया। तो इस स्थिति में स्वयं यूरी किस प्रकार इस विश्वासघात करने वाली प्रणाली के प्रति अपनी शपथ के कारण उत्तरदायी है? अपनी शपथ के कारण निष्ठा के भाव से बंधा है?

जब सन् १९४३ की वसन्त ऋतु में बाइलोरूस की पहली "फौजों" के अफसर युद्धबन्दियों के शिविरों में पहुंचे और उन्होंने इन लोगों को भर्ती होने के लिए कहा तो कुछ युद्ध बंदियों ने भुखमरी से बचने के लिए हस्ताक्षर कर दिये। यूरी निष्ठा के आधार पर, विश्वास के आधार पर इन लोगों के साथ गया। उसके मन मस्तिष्क में सब बातें स्पष्ट हो चुकी थीं। लेकिन वह अधिक समय तक इस फौज में नहीं रह सका। जैसी कि कहावत है: "अगर वे अपनी खाल ही उतार लें, तो उनके लिये आंसू बहाने से क्या फायदा।" अब यूरी ने जर्मन भाषा के अपने अत्यन्त अच्छे ज्ञान को छिपाना बन्द कर दिया था। और जल्दी ही जर्मनी के एक प्रमुख अफसर ने जो कासेल के पास का निवासी था और जिसे युद्धकालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए तेज़ी से काम करना था और जिसे एक जासूसी स्कूल की स्थापना का काम सौंपा गया था, यूरी को अपना दाहिना हाथ ही बना लिया। और इस प्रकार यूरी का वह पतन शुरू हुआ जिसकी उसने कल्पना नहीं की थी। इसी कारण से सब बातें उलट गईं। यूरी अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए अत्यन्त व्यग्र हो उठा था और उन लोगों ने उससे जासूसों को ट्रेनिंग देने का काम लिया। जर्मनों की अपनी योजनाएं थीं। तो आखिर हम कहां विभाजन रेखा खींच सकते हैं? कौन सा कदम घातक होता है? यूरी जर्मन सेना में लैफ्टिनैंट बन गया। उसने जर्मन सैनिक अफसर की वर्दी में जर्मनी की यात्रा की, कुछ समय बर्लिन में बिताया, प्रवासी रूसियों से मुलाकात की और बुनिन, नाबोकोव, आल्दानोव, एम्फीत्रीतोव जैसे लेखकों की रचनाएं पढ़ीं, जिनकी रचनाओं पर स्वदेश में पाबन्दी थी। यूरी को यह आशा थी कि इन सबकी रचनाओं में, उदाहरण के लिए बुनिन की रचनाओं में हर पृष्ठ से वह रक्त टपकता हुआ दिखाई पड़ेगा, जो रूस के खुले हुए

घावों से बह रहा है। इन लोगों को क्या हो गया था ? ये लोग अपनी अकल्पनीय रूप से मूल्यवान स्वतन्त्रता का उपयोग किन कामों में कर रहे थे ? स्त्री के शरीर के लिये, आनंद के लिये सूर्यास्त और सुन्दर भावों का वर्णन प्रस्तुत करने के लिये, उन धूल धूसरित वर्षों के किस्से सुनाने के लिये, वे लोग इस प्रकार लिख रहे थे मानो रूस में कोई क्रान्ति ही न हुई हो अथवा यह इतनी जटिल हो कि वे इसका स्पष्टीकरण प्रस्तुत नहीं कर सकते। उन लोगों ने यह काम रूस के युवकों के लिये छोड़ दिया था कि वे इस बात का पता लगायें कि जीवन में सर्वोपरि क्या होता है ? और इस प्रकार यूरी इधर-उधर टक्कर खाता रहा, वह आगे बढ़ता और कुछ पीछे हटता, बहुत जल्दी में सब कुछ देख लेने, सब कुछ जान लेने के लिये वह उतावला था और इस बीच, रूस की प्राचीन परम्परा के अनुसार, वह अपनी भ्रान्तियों को निरन्तर अधिकाधिक मात्रा में वोदका में अधिकाधिक गहराई से डुबा देने की चेष्टा करता रहा।

इनका जासूसी स्कूल वास्तव में क्या था ? वास्तव में यह सच्चा जासूसी स्कूल नहीं था। छह महीने की अवधि में इन लोगों को पैराशूट से कूदने, विस्फोटक पदार्थों के इस्तेमाल और वायरलैस सैटों का इस्तेमाल ही सिखाया जा सकता है। जर्मन इन लोगों पर विशेष भरोसा नहीं करते थे। इन लोगों को अग्रिम मोर्चों के पार भेजने का काम अन्धेरे में सीटी बजाने के बराबर ही था और मौत के मुंह में धीरे-धीरे पहुंचने वाले निराशापूर्ण और परित्यक्त रूसी युद्धबंदियों के लिये, यूरी की राय में यह स्कूल भाग निकलने का अच्छा रास्ता थे। इसमें शामिल होने वाले युद्धबन्दियों को भरपेट भोजन मिलता, नई गरम वर्दी दी जाती और इसके अलावा उनकी जेबें सोवियत रूस के करेंसी नोटों से भर दी जातीं। विद्यार्थी (और उनके अध्यापक भी) यह नाटक करते कि मानो यह सब मूर्खतापूर्ण क्रियाकलाप पूरी तरह सच्चा हो—मानो वे लोग सचमुच सोवियत फौजों के पिछले इलाकों में जासूसी का काम करेंगे, निर्धारित लक्ष्यों को बारूद से उड़ा देंगे, वायरलैस के माध्यम से जर्मनों से सम्पर्क करेंगे और फिर जर्मन सेनाओं के पास वापस लौट आएंगे। लेकिन यथार्थ में यह स्कूल उनके लिये मौत और कैद से बच निकलने का एक माध्यम भर था। वे लोग जीवित रहना चाहते थे, लेकिन मोर्चे पर जूझने वाले अपने देशवासियों को गोली से उड़ा कर नहीं।[११] जर्मनों ने उन लोगों को सोवियत सेनाओं के पीछे पहुंचा दिया और इसके बाद अब वे स्वयं अपनी नैतिकता और अपनी आत्मा की आवाज़ के अनुसार स्वतन्त्रतापूर्वक काम कर सकते थे। उन सब लोगों ने अपने पास मौजूद बारूद और वायरलैस सैटों को फेंक दिया। इन लोगों में केवल एक ही बात में अन्तर था कि क्या स्वयं को तुरन्त अधिकारियों के हवाले कर दिया जाये जैसाकि चपटी नाक वाले "उस जासूस" ने किया था, जिससे मेरी मुलाकात सेना के जासूसी विरोधी संगठन के मुख्यालय में हुई थी, अथवा पहले खूब शराब पी जाये और अपने पास मौजूद पैसे को लुटाया जाये। इनमें से एक भी व्यक्ति ने दूसरी बार सीमा को पार कर जर्मन फौजों के पास पहुंचने का प्रयास नहीं किया।

अचानक, १९४५ के नये वर्ष के समारम्भ से कुछ पहले, एक चुस्त आदमी वापस लौटा और उसने यह सूचना दी कि उसे जो काम सौंपे गये थे उन्हें उसने पूरा कर दिया है। (जाइये और इस बात का पता लगा लीजिये ?) उसने सचमुच एक सनसनी फैला दी। इन जासूसी कार्यों के जर्मन अध्यक्ष को इस बात में ज़रा भी शक नहीं था कि रूस के जासूसी विरोधी संगठन स्मर्श ने उसे वापस भेजा है और उसने यह निश्चय किया कि इस कथित

जासूस को तुरन्त गोली से उड़ा दिया जाये। (निष्ठापूर्वक काम करने वाले जासूस का यही भाग्य होता है?) लेकिन यूरी ने इस बात पर जोर दिया कि उसे पुरस्कृत किया जाना चाहिये और उसे अन्य जासूसों के समक्ष उदाहरण के रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिये। इस वापस लौटे "जासूस" ने यूरी को अपने साथ वोदका पीने के लिए आमंत्रित किया और शराब के नशे में धुत्त हो जाने के बाद वह मेज़ पर झुका और बोला : "यूरी निकोलाएविच! यदि तुम तुरन्त हमारे पास लौट आते हो तो सोवियत सैनिक कमान ने तुम्हें क्षमा कर देने का वचन दिया है।"

यूरी कांप उठा। और वह हृदय जो अब तक कठोर हो चुका था, जिसने प्रत्येक वस्तु का त्याग कर दिया था, ऊष्मा से भर उठा। मातृभूमि? अभिशप्त, अन्यायपूर्ण लेकिन फिर भी मूल्यवान! क्षमा, क्षमा? और वह अपने परिवार के पास वापस लौट सकता था? और वह लेनिनग्राद में कामेन्नोओस्त्रोवस्की में घूम फिर सकता था? यह सब उसे प्राप्त हो सकता था, तो ठीक है? हम लोग रूसी हैं! यदि आप हमें क्षमा कर देंगे, तो हम वापस लौट आयेंगे और हम अच्छा आचरण करेंगे। ओह, इतना अच्छा आचरण! युद्धबन्दी शिविर को छोड़ने के बाद का डेढ़ वर्ष का समय उसे सुखी नहीं बना सका था। उसे पश्चाताप नहीं था, पर उसे भविष्य भी दिखाई नहीं पड़ता था और जब शराब पीते समय उसकी मुलाकात ऐसे ही पश्चाताप न करने वाले रूसियों से होती, तो उसे पता चलता कि वे यह अनुभव कर चुके हैं कि उनके पास अब कुछ नहीं है, उनके पांवों तले धरती नहीं है। यह वास्तविक जीवन नहीं था। जर्मन अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उन्हें ढालने का प्रयास कर रहे थे और जबकि जर्मनी स्पष्ट रूप से पराजित होता जा रहा था, यूरी के सामने इस स्थिति से उबरने का एक रास्ता आ गया था। जासूसी स्कूल के उसके प्रमुख अफसर ने, जो उसे बहुत पसन्द करता था, उसे बड़े विश्वास के साथ बताया कि यदि जर्मनी का पतन हो जाता है, तो वे दोनों स्पेन चले जाएंगे, जहां उसकी कुछ जमींदारी है। लेकिन यहां मेज़ पर उसका शराब के नशे में धुत्त देशवासी बैठा था और स्वयं अपनी जान को जोखिम में डाल कर उसे रूस वापस लौटने के लिए तैयार कर रहा था : "यूरी निकोलाएविच! सोवियत कमान आपके अनुभव और ज्ञान को बहुत महत्व देती है। वे लोग यह चाहते हैं कि आप उन्हें जर्मनी की जासूसी सेवा के संगठन के बारे में बतायें।"

दो सप्ताह तक यूरी भयंकर पशोपेश में फंसा रहा। लेकिन विस्तुला से आगे जब सोवियत सेनाओं ने आक्रमण किया तो उसने अपने स्कूल के आदमियों को पोलैंड के एक शान्त खेत पर पहुंचने का आदेश दिया और उन्हें वहां एक पंक्ति में खड़ा कर यह घोषणा की : "मैं सोवियत पक्ष से मिलने जा रहा हूं! आपमें से प्रत्येक व्यक्ति जो चाहे करने के लिये स्वतन्त्र है।" और मौत की विवशता से जासूस बने ये लोग, जिनके होंठों पर दूध मुश्किल से ही सूखा था और जो केवल एक घण्टा पहले ही जर्मन रीह (संसद्) के प्रति वफादारी का नाटक रच रहे थे, बड़े उत्साह से चिल्ला उठे : "शाबाश! हम भी चलेंगे!" (ये लोग कठोर श्रम वाले शिविरों और जेलों में अपना शेष जीवन बिताने के लिए "शाबाश" पुकार रहे थे।)

इस प्रकार सोवियत टैंकों के आने तक यह पूरा जासूसी स्कूल छिपा रहा और इसके बाद रूस के जासूसी विरोधी संगठन स्मर्श के अफसर पहुंचे। यूरी इसके बाद अपने आदमियों को फिर कभी नहीं देख सका। वे लोग यूरी को पकड़ ले गये और उसे इस स्कूल के

पूरे इतिहास, कार्यक्रमों और तोड़फोड़ के लक्ष्यों के बारे में सब कुछ बताने के लिए दस दिन का समय दिया गया। वह सचमुच यह सोच रहा था कि वे लोग उसके "अनुभव और ज्ञान" को बड़ा महत्व देते हैं। उन लोगों ने उसके अपने परिवार के पास वापस लौट जाने की बात भी शुरू कर दी थी।

केवल लूबयांका जेल में पहुंचने के बाद ही उसने यह अनुभव किया कि स्लामानका तक में वह अपने घर नेवा के कहीं अधिक समीप था। वह गोली से उड़ाये जाने की प्रतीक्षा में था अथवा यह तो निश्चित ही था कि उसे कम से कम २० वर्ष की कैद की सजा मिलेगी।

इस प्रकार अवर्णनीय ढंग से एक मनुष्य मातृभूमि के धुंधलके के समक्ष आत्मसमर्पण करता है। उसी प्रकार जिस प्रकार एक दांत उस समय तक दर्द करना बन्द नहीं करेगा, जब तक इस दांत की नस को ही समाप्त न कर दिया जाए। यही हमारे साथ होता है। संभवत: हम उस समय तक मातृभूमि के आह्वान पर आगे बढ़ने से नहीं रुकेंगे, जब तक हम संखिया ही न निगल लें। ओडिसी के कमल खाने वाले यह बात निश्चयपूर्वक जानते थे कि उनमें ज़हरीला कमल भी है...

कुल मिलाकर यूरी ने हमारी कोठरी में तीन सप्ताह का समय बिताया। इन सप्ताहों में हमारी बहस चलती रही। मैंने उससे कहा कि हमारी क्रांति गरिमापूर्ण और न्यायोचित थी; केवल सन् १९२९ में इसे जिस प्रकार विकृत बनाया गया, वह भयंकर बात थी। उसने बड़े दुख से मेरी ओर देखा और अपने साहसविहीन होंठों को सिकोड़ा। क्रांति करने का प्रयास करने से पहले, हमें इस देश के खटमलों का सर्वनाश कर देना चाहिए था! (यह बड़ा विचित्र था कि कभी-कभी वह और फास्तेंको दोनों समान निष्कर्षों पर पहुंचते, यद्यपि निष्कर्षों पर पहुंचने का समारम्भ भिन्न रूपों में होता।) मैंने कहा कि लम्बे अरसे से अब हमारे देश में प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य का संचालन ऐसे लोगों के हाथों में है, जिनके निर्विवाद रूप से महान् इरादे हैं और जो पूरी तरह से निष्ठावान हैं। उसका उत्तर था कि आरम्भ से ही इन सब लोगों को उसी कपड़े से काटकर तैयार किया गया था जिससे स्तालिन का निर्माण हुआ था। (हम इस बात पर सहमत थे कि स्तालिन गुण्डा था।) मैं गोर्की की प्रशंसा करते-करते उन्हें आसमान तक ऊंचा उठा देता था। वे कितने कुशल थे! उनके विचार कितने सही थे; वे कितने महान् साहित्यकार थे! और यूरी इन बातों को टाल जाता था। वह यह भी उत्तर देता कि गोर्की महत्वहीन और अत्यन्त ऊबा डालने वाले व्यक्तित्व वाला आदमी था। उसने स्वयं अपना आविष्कार किया। उसने अपने वीर नायकों का आविष्कार किया और आदि से अन्त तक उसकी पुस्तकें झूठे किस्सों पर आधारित थीं। लेव तोलसतोय हमारे साहित्य के राजा थे।

इन दैनिक तर्कों के परिणामस्वरूप, जो हमारी युवा अवस्था के कारण उग्र होते थे, हम दोनों सचमुच एक दूसरे के करीब नहीं आ सके। हम एक दूसरे के विचारों में अधिक बातों को अस्वीकार करते और कम बातों को स्वीकार।

वे उसे हमारी कोठरी से बाहर ले गए और उसके बाद मैंने जाने कितनी बार पता लगाने की कोशिश की, पर मुझे ऐसा एक भी आदमी नहीं मिला जो उसके साथ बुत्यर्की जेल में रहा हो और ऐसा भी कोई व्यक्ति नहीं मिला, जिसका उससे किसी संक्रमण जेल में सामना हुआ हो। इतना ही नहीं ब्लासोव के सामान्य सैनिक भी एकदम नदारद हो गए थे, मानो पृथ्वी के भीतर जा छिपे हों और इस बात की बहुत संभावना है कि आज भी

इनमें से बहुत से लोगों के पास वे दस्तावेज़ नहीं हैं, जिनके आधार पर वे उत्तर के बियावान इलाकों को छोड़कर देश के भीतरी हिस्सों में आ सकते हों। लेकिन यूरी वाई० कोई सामान्य सैनिक नहीं था।



अन्ततः हमारा लूबयांका का दोपहर का भोजन आ पहुंचा। इसके अपने पास पहुंचने से बहुत पहले से ही हम इसके आगमन की हर्षपूर्ण आवाज़ बरामदे में सुन सकते थे और तभी जैसाकि किसी रेस्टोरेंट में होता है। वे एक ट्रे भीतर लाए, जिसके ऊपर अलुमीनियम की दो तश्तरियां रखी थीं—कटोरे नहीं—और प्रत्येक कैदी के लिए एक-एक ट्रे थी। एक प्लेट में एक करछी शोरबा था और दूसरी में एक करछी पतली से पतली खिचड़ी। इस खिचड़ी में किसी भी प्रकार की चिकनाई नहीं थी।

अत्यन्त भावावेश के कारण आरम्भ में कैदी कुछ भी अपने गले से नीचे न उतार पाता। ऐसे कैदी भी आते थे, जो कई दिनों तक रोटी को हाथ भी नहीं लगाते थे, जो यह नहीं समझ पाते थे कि इस रोटी को कहां रखें। लेकिन धीरे-धीरे भूख लौटने लगती थी और इसके बाद पौष्टिक भोजन के अभाव के कारण उत्पन्न स्थिति का समारम्भ होता और यह प्रायः नियन्त्रण के बाहर निकल जाती। और यदि कोई इस पर काबू पा जाता, तो उसका पेट सिकुड़ जाता और यह पेट अपर्याप्त भोजन का आदी हो जाता। इस स्थिति में लूबयांका का अत्यन्त सूक्ष्म भोजन ठीक लगने लगता। इस स्थिति में पहुंचने के लिए कैदी को आत्म-नियन्त्रण की आवश्यकता होती और उसे स्वयं को यह देखने से रोकने की भी शिक्षा देनी पड़ती कि कौन-सा कैदी और चीजें भी खा रहा है। भोजन के बारे में जेलों में जो अत्यधिक खतरनाक बातें होती उन पर पाबन्दी लगाना जरूरी थी और जहां तक संभव होता प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं को ऊंचे मामलों ऊंची बातों पर ही ध्यान केन्द्रित रखने के लिए स्वयं को प्रेरित करना पड़ता। लूबयांका में यह काम इसलिए आसान हो गया था, क्योंकि हमें दोपहर के भोजन के बाद दो घण्टे आराम का समय मिलता था—यह भी एक ऐसी बात थी, जो किसी छुट्टी घर जैसी दिखाई पड़ती थी। यद्यपि इस पर आश्चर्य होता था। हम दरवाजे में बने छेद की ओर पीठ करके लेट जाते, दिखावे भर के लिए अपनी पुस्तकों को अपने सामने खोल लेते और ऊंघने लगते। सोने पर कड़ाई से पाबन्दी थी और सन्तरी यह देख सकते थे कि काफी समय से पुस्तकों के पन्ने नहीं उलटे जा रहे हैं। लेकिन सामान्यतया वे इस अवधि में दरवाजे पर दस्तक नहीं देते थे। (इस मानवीयतावाद का स्पष्टीकरण यह था कि जो कैदी इन घण्टों में आराम नहीं कर रहा होता था वह पूछताछ के कमरे में मौजूद रहता था। इस प्रकार उन लोगों के लिए जो अभी भी हठ कर रहे थे, जिन्होंने अब तक बयानों पर हस्ताक्षर नहीं किए थे, भिन्न स्थिति एकदम स्पष्ट थी : वे लोग आराम की अवधि समाप्त हो जाने के बाद ही कोठरी में वापस लौटते थे।

और भूख और कष्टों से तात्कालिक मुक्ति के लिए नींद सर्वोत्तम वस्तु थी। इससे शरीर शान्त हो जाता था और मस्तिष्क निरन्तर आपकी गलतियों के बारे में सोचना बन्द कर देता था।

इसके बाद वे रात्रि का भोजन लाते—एक करछी खिचड़ी। जीवन आपके ऊपर

अपने समस्त उपहार न्योछावर कर रहा था। इसके बाद, आपको सोने से पहले पांच या छह घण्टे तक कुछ भी खाने को नहीं मिलता था, लेकिन यह बात इतनी भयानक नहीं थी। शाम के समय कुछ भी न खाने का आदी बना जा सकता था। सेना चिकित्सा विज्ञान में बहुत समय पहले ही इसकी ईजाद हो चुकी थी। और रिजर्व रेजीमेंटों में सैनिकों को शाम के समय कुछ भी खाने को नहीं मिलता था।

इसके बाद शाम के समय शौचालय जाने का अवसर आता; जिसके लिए आप दिन भर कांपते रहे, प्रतीक्षा करते रहे, अचानक समस्त संसार कितना राहतपूर्ण, कितना आराम-देह बन गया! तत्क्षण समस्त महान् प्रश्न आपके समक्ष सरल हो उठे। आपको इनकी कुंजी मिल गई—क्या कभी आपने इसका अनुभव किया है?

ओह, लूबयांका की भारहीन संध्याएं! (प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि ये सभी भारहीन होतीं, यदि आपको रात के समय पूछताछ के लिए न जाना होता, आप इस पूछताछ की प्रतीक्षा में न होते।) एक भारहीन शरीर, शोरबे से केवल उस सीमा तक तृप्त ताकि आपकी आत्मा भूख से त्रस्त न हो। कितने हलके और स्वतन्त्र विचार! बस ऐसा लगता मानो हमें साइनाई पर्वत की सर्वोच्च चोटियों पर पहुंचा दिया गया हो और वहां आग की लपटों से हमारे समक्ष सत्य का उद्‌घाटन हो गया हो। क्या पुश्किन इसी बात का सपना नहीं देखते थे:

मैं सोचने और कष्ट भोगने के लिए जीवित रहना चाहता हूं!

और वहां हम कष्ट भोगते थे, हम सोच विचार करते थे और इसके अलावा हमारे जीवन में अन्य कुछ नहीं था। इस आदर्श को प्राप्त करना हमारे लिए कितना आसान रहा।

कुछ संध्याओं को मैं बहस में उलझ जाता। मैं सूसी के साथ शतरंज खेलना बन्द कर देता अथवा किताब को एक ओर उठाकर रख देता। इन अवसरों पर भी मेरे सबसे तेज झगड़े यूरी से होते, क्योंकि सब प्रश्न अत्यधिक विस्फोटक होते थे—उदाहरण के लिए युद्ध का अन्त किस प्रकार होगा। सन्तरी बिना किसी शब्द के और अपनी मुखाकृति में किसी भी परिवर्तन के बिना आएगा और खिड़की पर ब्लैक आउट के समय लगाये जाने वाला गहरे नीले रंग का पर्दा खींच देगा। और फिर, इस पर्दे के दूसरी तरफ, संध्याकालीन मास्को ऊपर सलाम भेजेगा। अब हम उसी प्रकार आकाश में सलामी के गोलों को फटते हुए नहीं देख सकेंगे, जिस प्रकार हम यूरोप के नक्शे को नहीं देख पाये। हम सब विवरणों को समझने, यह अनुमान लगाने की कोशिश करते कि किन नगरों पर अधिकार हो चुका है? यूरी को सलामी के इन धमाकों से विशेष रूप से कष्ट पहुंचता। वह प्रार्थना करता कि भाग्य उसकी गलतियों को सुधार दे। वह हमें आश्वस्त करते हुए कहता कि अभी युद्ध पूरा नहीं हुआ है और अब लाल सेना और एंगलो-अमरीकन सेनाओं के बीच लड़ाई छिड़ेगी: असली लड़ाई तो अभी शुरू होनी है। कोठरी में मौजूद अन्य लोग इस भविष्यवाणी में बड़ी गहरी दिलचस्पी लेते थे। उनकी दिलचस्पी लालचभरी होती थी। एक ऐसे संघर्ष का, एक ऐसे युद्ध का अन्त किस प्रकार होगा? यूरी दावा करता कि युद्ध में लाल सेना को आसानी से नष्ट कर दिया जाएगा। (क्या इसके परिणामस्वरूप हम मुक्त कर दिए जाएंगे अथवा हमें गोली से उड़ा दिया जाएगा?) मैंने इसका विरोध किया और हमारी तेज बहस शुरू हो गई। उसकी मान्यता थी कि हमारी सेना पस्त हो चुकी है, इसके सर्वोत्तम अफसर और जवान

मारे जा चुके हैं। उसके पास साज-सामान की बहुत कमी है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लाल सेना मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध अपने सदा जैसे संकल्प से युद्ध नहीं करेगी। लेकिन मैंने उन सैनिक टुकड़ियों के आधार पर इस बात का विरोध किया, जिनसे मैं परिचित था और कहा कि सेना उस सीमा तक पस्त नहीं हुई है और इसका अनुभव बढ़ा है, कि यह शक्तिशाली और नीचतापूर्ण दोनों बन चुकी हैं और यदि युद्ध होता है तो यह मित्र राष्ट्रों से जर्मनों की तुलना में कहीं अधिक डटकर संघर्ष करेगी। "कभी नहीं," यूरी अर्ध-फुसफुसाहट के स्वर में चिल्लाया। "और आर्देनीज का क्या होगा?" मैंने अर्ध-फुसफुसाहट में ही उत्तर दिया। फास्तेंको ने हम दोनों का मज़ाक उड़ाते हुए, हमें बीच में ही टोका और कहा कि हम लोग पश्चिम के देशों को नहीं समझते और कोई भी व्यक्ति मित्र राष्ट्रों की सेनाओं को न तो आज ही और न ही कल अथवा कभी भी हमारे विरुद्ध लड़ने के लिए बाध्य नहीं कर सकता।

वैसे हम शाम के समय एक दूसरे से अधिक तर्क नहीं करना चाहते थे, बल्कि ऐसी दिलचस्प बातें सुनने के इच्छुक रहते थे, जो हमें एक दूसरे के और अधिक समीप ले आएं और हम साथियों की तरह एक-दूसरे से बात कर सकें।

एक दिलचस्प विषय जेल की परम्पराओं के बारे में होता था। यह बात चलती थी कि पहले जेलें कैसी थीं। हमारे बीच फास्तेंको मौजूद थे और इस कारण से हमें पुरानी जेलों के किस्से सुनने का अवसर मिलता था। और वह भी एक भुक्तभोगी की जबानी। हमें सबसे अधिक आश्चर्य यह जानकर होता था कि पहले एक राजनीतिक कैदी होना एक सम्मान की बात थी और केवल उनके रिश्तेदार ही उनका पूरा साथ नहीं देते थे, उनके ऊपर अभियोग लगाने अथवा उनका त्याग करने को तैयार नहीं होते थे। बल्कि ऐसी लड़कियां भी उनसे मिलने आती थीं, जिनसे उनका कभी भी व्यक्तिगत परिचय नहीं रहा और राजनीतिक कैदियों से मुलाकात की अनुमति प्राप्त करने के लिए यह स्वांग रचती थीं कि वे इन कैदियों की मंगेतर हैं। और कुछ विशिष्ट अवसरों पर, त्योहारों पर, कैदियों को उपहार देने की उस समय सर्व-व्यापी परम्परा का क्या हुआ? रूस में पहले कोई भी व्यक्ति अपना लेन्टेन का उपवास उस समय तक समाप्त नहीं करता था, जब तक वह अज्ञात कैदियों के लिए जेल की रसोई में कुछ न कुछ भेंट न पहुंचा दे। ये लोग क्रिसमस के अवसर पर स्वादिष्ट भोजन में सूअर का मांस, टार्ट मछली और कुलीची अर्थात् रूस की ईस्टर के अवसर पर पकाई जाने वाली विशेष केक लाते थे। एक गरीब वृद्धा तो ईस्टर के एक दर्जन रंगीन अण्डे भी लाती थी। यह उपहार देकर उसे बड़ा अच्छा लगता था। और अब रूस की यह समस्त उदारता कहां अन्तर्धान हो गई? इसका स्थान राजनीतिक चेतना ने ले लिया। उन लोगों ने इतनी अधिक क्रूरता और कठोर व्यवस्था के द्वारा हमारे देशवासियों को आतंकित कर दिया और जो लोग कष्ट भोग रहे हैं उनके बारे में सोचने, उनकी कुछ सहायता करने के विचार मात्र को उनके दिल दिमाग से निकाल फेंका। आज कैदियों की सहायता के लिए ऐसा कोई काम करना मूर्खतापूर्ण दिखाई पड़ेगा। यदि आज यह प्रस्ताव हो कि कोई संस्था स्थानीय जेल में कैद लोगों के लिए त्योहार के अवसर पर कुछ उपहार इकट्ठे करें तो इसे सोवियत विरोधी विद्रोह ही समझा जाएगा। हम पाशविकता के मार्ग पर, पशुवत बना दिए जाने के मार्ग पर इतने आगे बढ़ चुके हैं!

और त्योहारों और छुट्टियों के अवसर पर मिलने वाले उपहारों के बारे में आप

क्या कहेंगे ? क्या यह केवल स्वादिष्ट भोजन तक ही सीमित थे ? सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि इन उपहारों को प्राप्त करके कैदियों के मन में यह स्नेहपूर्ण भाव जगता था कि स्वतन्त्र लोग उनके बारे में सोच रहे हैं और उनके बारे में चिन्तित हैं।

फास्तेंको ने हमें बताया कि सोवियत शासनकाल में भी एक राजनीतिक रैडक्रास था। हम लोगों के लिए ऐसे किसी रैडक्रास की कल्पना कर पाना बड़ा कठिन हो रहा था। इसका कारण यह नहीं था कि हम उनकी बात को झूठ समझते थे। बस कारण यही था कि हम ऐसी किसी संस्था की कल्पना नहीं कर पाते थे। उन्होंने हमें बताया कि वाइ० पी० पेशकोवा ने अपने व्यक्तिगत संरक्षण का लाभ उठाकर विदेश यात्रा की, वहां धन एकत्र किया (अपने देश में आप अधिक धन एकत्र नहीं कर सकते थे) और इस बात की व्यवस्था की कि उन राजनीतिक कैदियों के लिए रूस में बाहर से भोजन भेजा जाए जिनके रिश्तेदार नहीं हैं। सब राजनीतिक कैदियों के लिए ? और उन्होंने यहां हमें यह भी समझाया कि सब के० आर०—अर्थात् तथाकथित "क्रांति विरोधी"—इंजीनियर और पादरी, उदाहरण के लिए, ऐसे लोग थे, जिन्हें इसमें शामिल नहीं किया गया था, बल्कि भूतपूर्व राजनीतिक पार्टियों के सदस्यों को ही इसमें शामिल किया गया था। तो आप यह बात एकदम स्पष्ट रूप से क्यों नहीं कहते ? हां, और इसके बाद राजनीतिक रैडक्रास के अधिकांश सदस्यों को, पेशकोवा को छोड़कर, समाप्त कर दिया गया और कर्मचारियों को जेल में डाल दिया गया।

यह बात भी बड़ी दिलचस्प होती थी कि हम उन सन्ध्याओं को जब हमें पूछताछ के लिए नहीं बुलाया जाता था, जेल से निकल पाने की चर्चा करते थे। हां, वे कहते थे कि ऐसे कुछ आश्चर्यजनक उदाहरण थे, जब कुछ कैदियों को रिहा किया गया। एक दिन वे लोग ज -- व को हमारी कोठरी से बाहर ले गये, और वह भी "उसके सामान के साथ"—शायद उसे छोड़ देने के लिए ही यह कदम उठाया गया हो ? लेकिन इतनी जल्दी उसकी पूछताछ समाप्त नहीं हो सकती थी। १० दिन बाद वह वापस लौट आया। वे लोग उसे लेफोरतोवो घसीट ले गये थे। वहां पहुंचने पर उसने जैसाकि स्पष्ट था सब बयानों पर बहुत तेजी से हस्ताक्षर करने शुरू कर दिए। अत: वे लोग उसे हमारे पास वापस ले आये। "यदि अब वे लोग तुम्हें रिहा कर दें," हम लोग एक साथी कैदी से कहते, "क्योंकि आखिरकार तुम्हारा मामला बहुत गम्भीर नहीं है जैसाकि तुम स्वयं भी कहते हो, तो यह वचन दो कि तुम मेरी पत्नी से मिलने जाओगे और यह बताने के लिए कि तुम उससे मिल चुके हो तुम उससे अगले पार्सल में दो सेब रख देने को कहोगे...ठीक है, आजकल कहीं भी सेब नहीं मिलते। तो उससे तीन बाजिल रख देने को कहना। हो सकता है कि ये भी मास्को में उपलब्ध न हों। तो ठीक है बस चार आलू रखवा देना !" (इस प्रकार बातचीत चलती थी। और इसके बाद सचमुच वे लोग एन० को उसके सामान के साथ कोठरी से ले गए और एम० को अगले पार्सल में चार आलू मिले। यह सचमुच आश्चर्यजनक था। यह संयोग की बात नहीं हो सकती थी ! उन्होंने सचमुच उसे रिहा कर दिया ! और उसका मामला मुझसे कहीं अधिक गम्भीर था। तो हो सकता है कि जल्दी ही...लेकिन वास्तव में हुआ यह कि एम० की पत्नी पांच आलू लाई थी और इनमें से एक उसके थैले में ही कुचल गया और एन० किसी जहाज के डेक के नीचे बैठा हुआ कोलिमा की ओर जा रहा था।)

और इस प्रकार समय बीतता गया। हम लोग प्राय: हर विषय पर बात करते।

श्रौर किसी सुखद बात की कल्पना करते और यह सचमुच अत्यधिक सुखद और हर्षपूर्ण बात थी कि आप ऐसे दिलचस्प लोगों के बीच हों, जो उनसे अत्यन्त भिन्न थे, जिनके साथ अब तक आपने अपना जीवन बिताया था और जो आपके अनुभव के दायरे के भी बाहर थे, इस बीच शाम के समय होने वाली जांच यानी कैदियों की गिनती समाप्त हो गई थी और चश्मा लगाने वाले कैदियों से उनके चश्मे ले लिए गए थे और बिजली के बल्ब तीन बार टिमटिमा चुके थे। यह इस बात का संकेत था कि पांच मिनट बाद सोने का समय शुरू हो जाएगा।

जल्दी करो! जल्दी करो! एक कम्बल दबोचो! जिस प्रकार आपको मोर्चे पर इस बात का ज्ञान नहीं होता था कि किस क्षण चारों ओर, आपके आसपास गोले बरसने लगेंगे, उसी प्रकार यहां भी आपको यह मालूम नहीं होता था कि कब आपसे रात को पूछ-ताछ की जाएगी। और हम लोग कम्बल के ऊपर एक बांह निकालकर लेट जाते और अपने दिमागों में उठने वाले विचारों के तूफान को शान्त करने की कोशिश करते। बस, सो जाओ!

अप्रैल महीने की एक शाम को किसी क्षण, इस समय तक हम यूरी को विदा दे चुके थे, दरवाजे का ताला खुलने की आवाज हुई, हमारे दिल उमठ गए। वे किसे लेने आए हैं? अब सन्तरी फुसफुसाहट के स्वर में कहेगा: "एस" अक्षर से शुरू होने वाले नाम वाला। "जैड" अक्षर से शुरू होने वाले नाम वाला? लेकिन सन्तरी ने कुछ भी नहीं कहा। दर-वाजा बन्द हो गया। हमने अपने सिर ऊपर उठाए। दरवाजे पर एक नया कैदी खड़ा था। वह एक दुबला-पतला युवक था और उसने नीले रंग का सस्ता सूट और गहरे नीले रंग की टोपी पहन रखी थी। उसके पास कोई सामान नहीं था। वह बेहद उलझन में फंसा हुआ चारों ओर देख रहा था।

"इस कोठरी का नम्बर क्या है?" उसने भयभीत होकर पूछा।

"तरेपन।"

वह थोड़ा-सा कांप उठा।

"क्या तुम अभी तुरन्त गिरफ्तार हुए हो?" हमने पूछा।

"नहीं!" उसने बड़े कष्टप्रद ढंग से अपना सिर हिलाया।

"तुम्हें कब गिरफ्तार किया गया था?"

"कल सुबह।"

हमारी हंसी छूट पड़ी। उसका चेहरा बहुत सरल और अबोध दिखाई पड़ता था और उसकी भवें प्रायः सफेद थीं।

"किसलिए?"

(यह एक अनुचित प्रश्न था। हमें इस प्रश्न के उत्तर की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए थी?)

"ओह, मुझे नहीं मालूम...कोई खास बात तो नहीं है।"

सब कैदियों का यही उत्तर होता है। यहां प्रायः प्रत्येक को किसी खास बात के बिना ही गिरफ्तार करके भेजा जाता था। और हाल में गिरफ्तार कैदी को तो अपना मामला विशेष रूप से खास दिखाई नहीं पड़ता था।

"खैर, फिर भी कुछ तो बात होगी?"

"बात यह है कि मैंने एक घोषणा लिखी। रूस की जनता नाम घोषणा।"

"क्या...क्या ?"

(हममें से किसी भी व्यक्ति ने इस किस्म की "कोई खास बात तो नहीं है" का अनुभव इससे पहले प्राप्त नहीं किया था।)

"क्या वे लोग मुझे गोली से उड़ा देंगे ?" उसका चेहरा उतर गया था। वह अपनी टोपी के अगले हिस्से को अपने हाथ से खींचे जा रहा था और अभी तक उसने अपनी टोपी नहीं उतारी थी।

"नहीं, शायद नहीं", हमने उसे आश्वस्त किया। "आजकल किसी को भी गोली से नहीं उड़ाते। अब वे प्रायः प्रत्येक मामले में दस्सा देते हैं—दस साल की सजा।"

"क्या तुम मज़दूर हो ? अथवा लिखाई पढ़ाई का काम करने वाले कर्मचारी।" समाजवादी लोकतन्त्रीय पार्टी के सदस्य ने अपने वर्ग सिद्धांतों के प्रति अपनी सच्चाई प्रकट करते हुए पूछा।

"एक मजदूर।"

फास्तेंको ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाते हुए बड़े विजय के भाव से भरकर मुझसे कहा : "यह देखो, अलेक्सान्द्र आइसाएविच, श्रमजीवी वर्ग इसी मनःस्थिति में है।"

उसने सोने के लिए करवट बदल ली मानो उसने यह मान लिया हो कि अब और आगे बात की क्या तुक है और अन्य किसी बात को सुनने की भी क्या गुंजाइश है।

लेकिन वे गलती पर थे।

'आपका एक घोषणा से क्या मतलब है ? बस। वैसे ही ? बिना किसी कारण के ? किसके नाम से यह घोषणा जारी की गई ?"

"स्वयं अपने नाम से मैंने इसे जारी किया।"

"और तुम हो कौन ?"

यह नवागन्तुक उलझन से भरकर मुस्कराया : "सम्राट, माइखेल।"

मानो हमारे शरीरों में बिजली कौंध गई हो। हम एक बार फिर अपनी चारपाइयों पर उठ बैठे और उसे देखने लगे। नहीं, इस व्यक्ति का शर्मीला और दुबला चेहरा माइखेल रोमानोव जैसा नहीं था। और फिर इसकी उम्र भी तो...

"कल बात होगी, कल बात होगी। अब सोने का समय है, "सूसी ने बड़ी कड़ाई से कहा।

हम लोग इस बात से आश्वस्त होकर सो गए कि सुबह राशन की रोटी मिलने के पहले के दो घण्टे का समय ऊबा देने वाला नहीं रहेगा।

वे लोग सम्राट के लिए एक खाट और बिस्तर ले आए और वह पाखाने की बाल्टी के बराबर चुपचाप लेट गया।



सन् १९१६ में एक भारी भरकम शरीर वाले आगन्तुक ने, जिसकी उम्र काफी थी और जिसकी दाढ़ी हल्के भूरे रंग की थी, मास्को के रेल इंजीनियर वेलोब के घर में प्रवेश किया और इस इंजीनियर की धर्मनिष्ठ पत्नी से बोला : "पेलाजेया ! तुम्हारा एक वर्ष का पुत्र है। ईश्वर के लिए उसकी अच्छी तरह से देखभाल करना। समय आयेगा और मैं

एक बार फिर तुम्हारे पास वापस लौटूंगा।" और इसके बाद वह चला गया। पेलाजेया को इस बात का आभास मात्र नहीं था कि यह व्यक्ति कौन था। लेकिन यह व्यक्ति इतने स्पष्ट और अधिकृत स्वर में बोला था कि पेलाजेया के मां के हृदय ने इस अजनबी के शब्दों को कानून समझ कर स्वीकार कर लिया। और वह अपने बच्चे की देखभाल अपने आंख के तारे की तरह करने लगी। विक्टर बड़ा हुआ। वह अत्यन्त शान्त स्वभाव वाला, अधिकारी और धार्मिक निष्ठा वाला युवक बना। अक्सर उसे देवदूतों और पवित्र मेरी के दर्शन होते। लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, ये दर्शन कम होते गये। वह वयोवृद्ध व्यक्ति वापस नहीं आया। विक्टर ने मोटरगाड़ी चलाना सीखा और सन् १९३६ में उसे सेना में भर्ती कर लिया गया और बीरोबीजान में भेज दिया गया। यहां उसकी नियुक्ति मोटरगाड़ियों की एक कम्पनी में हुई। वह अन्य लोगों जैसा उद्धत दिखाई नहीं पड़ता था और सम्भवत: एक मोटर ड्राइवर से अत्यन्त भिन्न चाल ढाल और विनम्रता के कारण उसके प्रति एक सैनिक लड़की कर्मचारी आकृष्ट हुई। लेकिन उसकी प्लाटून का कमाण्डर भी इस लड़की पर नजर लगाये हुए था और उसने देखा कि इस विक्टर के कारण वह सफल नहीं हो पायेगा। इसी समय मार्शल ब्लूचर इस क्षेत्र में युद्ध के अभ्यास के प्रदर्शन के सिलसिले में आया और उसका व्यक्तिगत ड्राइवर गम्भीर रूप से बीमार पड़ गया। मार्शल ब्लूचर ने मोटर कम्पनी के कमाण्डर को हुक्म दिया कि वह अपनी कम्पनी के सर्वोत्तम ड्राइवर को उसके लिये भेजे। कम्पनी कमाण्डर ने प्लाटून कमांडर को बुलाया और तुरन्त उसके मन में यह विचार आया कि अपने प्रतिद्वन्द्वी बेलोव को रास्ते से हटा देने का यह सर्वोत्तम अवसर है। (सेना में अक्सर ऐसा ही होता है। जिस व्यक्ति को पदोन्नति मिलनी चाहिए, उसे नहीं मिलती और जिससे छुटकारा पाना चाहते हैं, उसे पदोन्नति मिल जाती है।) इसके अलावा बेलोव गम्भीर था, कठोर परिश्रमी और विश्वास योग्य भी—वह उन लोगों को मुश्किल में नहीं डालेगा।

ब्लूचर को बेलोव पसन्द आ गया। और बेलोव उसी के पास काम करता रहा। इसके तुरन्त बाद ब्लूचर को किसी बहाने से मास्को बुलाया गया। इस प्रकार उन लोगों ने मार्शल ब्लूचर को उसकी गिरफ्तारी से पहले सुदूर पूर्व में तैनात उसकी सेनाओं से अलग कर दिया ताकि उसकी शक्ति का स्रोत समाप्त हो जाए। मार्शल ब्लूचर अपने साथ अपने ड्राइवर बेलोव को भी मास्को लाया था। अपने अफसर को खो देने के बाद, बेलोव क्रेमलिन के गैरेज में पहुंच गया और कुछ समय तक माइखेलोव (युवक कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्धित) के ड्राइवर के रूप में, तो कभी लोज़ोवस्की के ड्राइवर के रूप में अथवा किसी और नेता के ड्राइवर के रूप में काम करता रहा और अन्तत: उसे ख्रुश्चेव के ड्राइवर के रूप में काम करने का मौका मिला। उसमें हर बात को बहुत सूक्ष्मता से देखने की क्षमता थी—और उसने हमें दावतों, नैतिकता और सुरक्षा सम्बन्धी व्यवस्थाओं के बारे में बहुत सी बातें बताईं। मास्को के सर्वहारा वर्ग के एक सामान्य प्रतिनिधि के नाते वह मजदूर संघ भवन में बुखारिन के मुकदमे के समय भी मौजूद था। उसने जिन बड़े नेताओं के ड्राइवर के रूप में काम किया था, उनमें से वह केवल ख्रुश्चेव की ही प्रशंसा करता था। केवल ख्रुश्चेव के घर में ही ड्राइवर को परिवार की मेज पर बैठ कर भोजन दिया जाता था, अन्य नेताओं के घरों की तरह रसोई में नहीं। उन वर्षों में केवल ख्रुश्चेव के घर में ही उसने यह देखा कि एक श्रमजीवी के जीवन की सादगी को कायम रखा गया है। ख्रुश्चेव भी, जो जीवन का आनन्द लेने में बहुत विश्वास

रखते थे, विक्टर अलेक्सेएविच को पसन्द करने लगे और जब १९३८ में वे यूक्रेन के लिए रवाना हुये, तो उन्होंने उसे भी अपने साथ ले जाने की कोशिश की। "मैं सदा ख्रुश्चेव के साथ ही रहता," विक्टर अलेक्सेएविच बोला। पर न जाने क्यों, उसे लगा कि उसे मास्को में ही रहना चाहिये।

सन् १९४१ में कुछ समय तक, युद्ध शुरू होने से पहले, वह सरकारी गैरेज में काम नहीं कर रहा था। और कोई ऐसा व्यक्ति मौजूद न होने के कारण, जो उसकी रक्षा कर पाता, उसे सेना में भर्ती कर लिया गया। अब क्योंकि उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था अतः उसे मोर्चे पर नहीं भेजा गया और इसके बदले श्रम बटालियन में लगा दिया गया। पहले वे लोग पैदल इंजा पहुंचे, जहां उन्होंने खन्दकें खोदीं और सड़कें बनाईं। पिछले कुछ वर्षों के सुरक्षित और समृद्ध जीवन के बाद अब उसे इस प्रकार धूल फांकना बहुत कष्टप्रद लग रहा था। यहां उसने कष्ट और गरीबी का भरपूर अनुभव किया और उसने सर्वत्र यह देखा कि लोगों का जीवन युद्ध से पहले की तुलना में बुरा ही नहीं हुआ है, बल्कि वे अत्यन्त गन्दगी में फंस गये हैं। स्वयं को मुश्किल से जीवित रख पाकर, और बीमारी के कारण काम से हटा दिये जाने के बाद, वह मास्को वापस लौटा और किसी प्रकार शचेरबाकोव[22] के ड्राइवर के रूप में काम करने का मौका उसे मिल गया। इसके बाद उसने पेट्रोलियम विभाग के जनवादी कमीसार सेदिन के ड्राइवर का काम किया। लेकिन सेदिन ने तीन करोड़ पचास लाख रूबल का गबन कर लिया था और उसे चुपचाप अपदस्थ कर दिया गया और एक बार फिर बेलोव के हाथ से नेताओं की ड्राइवरी निकल गई। वह एक मोटरकार डिपो में ड्राइवर बन गया और अपने अतिरिक्त समय में वह क्रातनाया पाखरा की सड़क पर अपनी कार में चांदनी में चक्कर लगाया करता।

लेकिन अब तक उसका ध्यान कहीं और केन्द्रित हो चुका था। सन् १९४३ में वह अपनी मां से मिलने गया। वह कपड़े धो रही थी और बाहर पानी के नल पर बाल्टी लेकर गई हुई थी। तभी दरवाजा खुला और एक भारी भरकम शरीर वाला नवागन्तुक, श्वेत दाढ़ी वाला एक वृद्ध मकान के भीतर आया। उसने घर के भीतर लगी किसी ईसाई सन्त की तस्वीर को प्रणाम करते हुये अपने ऊपर क्रास का चिह्न बनाया। बड़ी कड़ी नजर से बेलोव की ओर देखा और उससे बोला : "माइखेल की जय हो! ईश्वर आपको अपना आशीर्वाद देता है।" बेलोव ने उत्तर दिया : "मेरा नाम विक्टर है।" "लेकिन", वृद्ध महाशय ने आगे कहा : "लेकिन तुम्हारे भाग्य में माइखेल बनना, पवित्र रूस का सम्राट माइखेल बनना लिखा है!" तभी विक्टर की मां वापस लौट आई और डर के मारे वह प्रायः बेहोश ही हो गई और बाल्टी का पानी फर्श पर बिखर गया। वह वही वृद्ध था जो २७ वर्ष पहले उसके पास आया था। इस बीच उसके बाल सफेद हो गये थे। लेकिन यह वही व्यक्ति था। "ईश्वर तुम्हारा भला करे पेलाजेया, तुमने अपने पुत्र की रक्षा की है।" वृद्ध बोला। और वह भावी सम्राट को एक ओर ले गया मानो चर्च का एक लाट पादरी सम्राट को सिंहासनारूढ़ करने की तैयारी कर रहा हो। और अचम्भे में पड़े इस युवक से बोला कि सन् १९५३ में रूस में शासन में परिवर्तन होगा और वह समस्त रूस का सम्राट बन जायेगा।[23] (यही कारण था कि हमारी कोठरी के ५३ नम्बर ने उसे चौंका दिया था।) इस कार्य के लिये उसे १९४८ में अपनी सेनाएं एकत्र करने का काम शुरू करना होगा, वह वृद्ध बोला। इस वृद्ध ने उसे यह नहीं बताया कि वह किस प्रकार अपनी फौज एकत्र करेगा। वह चला गया और विक्टर

एलक्सेएविच उससे यह बात नहीं पूछ सका।)

अब उसके जीवन की समस्त शान्ति और सादगी समाप्त हो गई थी। शायद अन्य कोई व्यक्ति इस महत्वाकांक्षापूर्ण कार्य से पीछे हट जाता। लेकिन संयोग यह था कि विक्टर ने हमारे देश के उच्चतम नेताओं के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया था। वह उन सब माइखेलोवों, शचेरबाकोवों और सेदिनों को देख चुका था और दूसरे ड्राइवरों से उनके बारे में बहुत सी बातें सुन चुका था। और उसके मन में यह बात स्पष्ट हो चुकी थी कि बड़ा नेता बनने के लिये किसी असाधारण योग्यता की आवश्यकता नहीं है—बल्कि ठीक इसके विपरीत होने की ज़रूरत है।

नव अभिषिक्त ज़ार, शान्त, निष्ठावान और भावुक ज़ार, फ्योदोर आइवानोविच की तरह, जो रयूरिक के वंश की अन्तिम कड़ी था, मोनोमाख के राजमुकुट के भारी भार का अपने मस्तक पर अनुभव करने लगा। वह अपने चारों ओर कष्ट से ग्रस्त लोगों को देख रहा था, जिनके प्रति अब तक वह किसी उत्तरदायित्व का अनुभव नहीं करता था। लेकिन अब यह सब जिम्मेदारी उसके कन्धे पर आ गई थी और उसे इस बात का दोष दिया जा सकता था कि आज भी यह गरीबी, ये कष्ट मौजूद हैं। उसे सन् १९४८ तक प्रतीक्षा करना बड़ा विचित्र लगा और इस कारण से सन् १९४३ की शरद् ऋतु में ही उसने रूस की जनता के नाम अपनी पहली घोषणा तैयार की और पेट्रोलियम विभाग के कमीसार कार्यालय के एक गैरेज में अपने चार साथी ड्राइवरों को इसे पढ़कर सुनाया।

सुबह से ही हम लोगों ने विक्टर एलेक्सेएविच को चारों से घेर लिया था और उसने बड़ी विनम्रता से ये सब बातें बता दी थीं। हम अभी तक उसके बच्चों जैसे विश्वास की थाह नहीं ले पाये थे—हम लोग उसकी असाधारण कहानी में खोये हुये थे—और यह स्वयं हमारा दोष था—कि हम उसे कोठरी में मौजूद मुखबिर के बारे में सजग न कर सके। वास्तविकता यह थी कि हम एक मिनट के लिये भी यह नहीं सोच पाये थे कि उसकी इस बचकानी और सीधी सादी कहानी में ऐसी कोई बात थी, जिसकी जानकारी पूछताछ अधिकारी को पहले से ही नहीं थी।

जैसे ही यह कहानी समाप्त हुई, क्रामारेंको यह मांग करने लगा कि उसे या तो 'तम्बाकू के लिये जेल के सबसे बड़े अफसर" के पास ले जाया जाये अथवा डाक्टर के पास पहुंचाया जाये। खैर, उन लोगों ने उसे तुरन्त बुला लिया और जैसे ही वह वहां पहुंचा उसने पेट्रोलियम विभाग के जनवादी कमीसार कार्यालय में काम करने वाले उन चार ड्राइवरों के नाम बता दिये; जिन्हें विक्टर एलेक्सेएविच ने अपनी घोषणा सुनाई थी—और अन्य कोई व्यक्ति इन चार आदमियों के बारे में सोचता भी नहीं। (अगले दिन, पूछताछ से वापस लौटने के बाद बेलोव को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि पूछताछ अधिकारी को इन चार ड्राइवरों की जानकारी थी और तब सारी बात हमारी समझ में आ गई।) उन ड्राइवरों ने इस घोषणा को सुना था और इस पर अपनी पूरी सहमति दी थी। और इनमें से किसी ने भी सम्राट को गिरफ्तार नहीं कराया था। लेकिन बेलोव ने स्वयं यह अनुभव कर लिया था कि अभी यह घोषणा जारी करने का समय नहीं आया था और उसने इसे जला दिया था।

एक वर्ष बीत गया। विक्टर एलेक्सेएविच एक मोटर डिपो के एक गैरेज में एक मिस्त्री के रूप में काम कर रहा था। सन् १९४४ की वसन्त ऋतु में उसने एक और घोषणा लिखी और इसे १० लोगों को पढ़ने के लिये दिया—ये लोग ड्राइवर और खरादिये थे। इन

सब लोगों ने इस घोषणा पर सहमति प्रकट की। नहीं, उनमें से एक ने भी उसे गिरफ्तार नहीं कराया। (यह वास्तव में बड़ी आश्चर्यजनक बात थी कि इन दस आदमियों की टोली में से एक ने भी उसे गिरफ्तार नहीं कराया, जबकि उन दिनों प्राय: ऐसी कोई जगह नहीं होती थी कि पुलिस के मुखबिर मौजूद न हों। फास्तेंको ने "श्रमजीवी वर्ग की मन:स्थिति" के बारे में जो निष्कर्ष निकाला था वह गलत नहीं था) यह सच है कि इस मामले में सम्राट ने कुछ निर्दोष चालाकियां बरती थीं। उसने यह संकेत कर दिया था कि सरकार के भीतर कुछ शक्तिशाली लोग उसके पीछे हैं। और उसने अपने समर्थकों को यह आश्वासन दिया था कि आगे चलकर उन लोगों को जन सामान्य में सम्राट के समर्थन का वातावरण तैयार करने के लिये भेजा जायेगा।

कई महीने बीत गये। सम्राट ने अपना यह रहस्य गैरेज में काम करने वाली दो लड़कियों को भी बता दिया। लेकिन इस बार असफलता नहीं हुई। ये लड़कियां विचारधारा की दृष्टि से ठोस निकलीं! और विक्टर अलेक्सेएविच का दिल डूब गया: उसे सर्वनाश का पूर्वाभास होने लगा।[२४] मार्च के ईसाई त्यौहार के बाद के रविवार को वह बाजार गया और उसके पास घोषणा का मसौदा भी मौजूद था। पुराने श्रमिकों में उसका एक समर्थक उसे वहां मिला और बोला: "विक्टर, तुम्हें उस कागज़ के टुकड़े को फिलहाल जला डालना चाहिये। क्यों, ठीक नहीं होगा क्या?" और विक्टर ने बड़ी स्पष्टता से यह अनुभव किया कि उसने इसे समय से पूर्व ही लिख लिया है और उसे इस कागज़ को जला डालना चाहिये "मैं इसे अभी जलाये डालता हूं। तुम ठीक कहते हो।" और वह इसे जला डालने के लिये अपने घर लौटने लगा। लेकिन बाजार में ही दो हंसमुख युवक उससे आ टकराये और बोले: "विक्टर एलेक्सेएविच! हमारे साथ आइये?" और वे लोग उसे एक निजी कार में लूबयांका ले गये। वहां पहुंचने के बाद, वे लोग इतनी जल्दबाजी में थे और इतने उत्तेजित भी कि उन्होंने सदा की तरह उसकी तलाशी नहीं ली और शौचालय में सम्राट को इस घोषणा को प्राय: नष्ट कर डालने का मौका मिला। लेकिन उसने यह निश्चय किया कि यह बात उसके लिये और भी बुरी होगी। वह उसके पीछे पड़े रहेंगे और यह पूछते रहेंगे कि वह घोषणा कहां है? और वे लोग उसे लिफ्ट में बैठा कर सीधे एक जनरल और एक कर्नल के सामने ले गए और जनरल ने स्वयं अपने हाथों से इस घोषणा को विक्टर की जेब से निकाला।

विशाल लूबयांका में इस काम के लिये एक पूछताछ ही काफी थी और इसके बाद शान्ति हो गई। यह पता चला कि यह घोषणा उतनी खतरनाक नहीं थी। मोटरगाड़ी डिपो के गैरेज में १० और पेट्रोलियम विभाग के जनवादी कमीसार कार्यालय के गैरेज से ४ गिरफ्तारियां हुई। पूछताछ का काम एक लैफ्टिनेंट कर्नल को सौंपा गया और घोषणापत्र को पढ़ते समय वह खूब हंसा:

"महामहिम, आपने यहां लिखा है: 'पहली वसन्त ऋतु में मैं अपने कृषि मंत्री को यह निर्देश दूंगा कि वह सामूहिक खेतों को भंग कर दे।' लेकिन आप औजारों और पशुओं का बटवारा कैसे करेंगे? आपने इस बात का ब्यौरा तैयार नहीं किया है? और इसके अलावा आप यह भी लिखते हैं: "मैं मकानों के निर्माण में वृद्धि करूंगा और प्रत्येक व्यक्ति को उसके काम के स्थान के पास ही मकान मिलेगा और मैं सब श्रमिकों का वेतन बढ़ा दूंगा।' और आपको इसके लिये धन कहां से प्राप्त होगा महामहिम? क्या आप किताब छापने वाले छापे-

खानों में नोट छपवायेंगे ? आप राज्य के ऋणों को समाप्त करने जा रहे हैं और इसके बाद आप यह करेंगे : 'मैं इस पृथ्वी के ऊपर से क्रेमेलिन का अस्तित्व ही मिटा दूंगा।' लेकिन आप स्वयं अपनी सरकार की कहां स्थापना करेंगे ? विशाल लूबयांका की इमारत के बारे में आपका क्या विचार है ? क्या आप इसका निरीक्षण करना पसन्द करेंगे ? क्या आप इस पर एक नज़र डालना चाहेंगे ?"

अनेक युवक पूछताछ अधिकारी भी अखिल रूस के सम्राट का मज़ाक उड़ाने के लिये रुक गये थे। उन्हें इस पूरे मामले में मज़ाक के अलावा और कुछ नहीं दिखाई पड़ रहा था।

और अपनी कोठरी में भी हम सब लोगों के लिए लगातार गम्भीर बने रहना मुश्किल हो रहा था। "हम आशा करते हैं कि आप हम लोगों को, कोठरी नम्बर ५३ के लोगों को नहीं भुला देंगे।" ज—व ने हम लोगों की ओर आंख मारते हुए कहा।

सब लोग हंस पड़े।

विक्टर एलेक्सेएविच, अपनी सफ़ेद भवों और निर्दोष सादगी तथा घट्टे पड़े हाथों से हमें उन उबले हुये आलुओं में हिस्सा बटाने के लिये आमंत्रित करता, जो उसकी अभागी मां उसे दे जाती थी। वह इन आलुओं को "तुम्हारे लिये" और "मेरे लिये" में विभाजित नहीं करता था। वह कहता था : "आओ, कामरेडो, खाओ, खाओ !"

वह लजाता हुआ मुस्कराता था। वह यह बात अच्छी तरह से समझता था कि अखिल रूस का सम्राट होना कितना असामयिक और हास्यास्पद है। लेकिन वह कर भी क्या सकता था यदि इस काम के लिए ईश्वर ने उसे चुन लिया था ?

उन लोगों ने जल्दी ही उसे हमारी कोठरी से हटा दिया।[२५]



पहली मई से पहले उन लोगों ने ब्लैक आउट के समय खिड़की पर लगाया जाने वाला पर्दा हटा दिया था। स्पष्ट था कि युद्ध समाप्त हो रहा है।

उस रोज़ शाम को लूबयांका में सदा से कहीं अधिक शान्ति थी। मुझे स्मरण है कि यह ईस्टर के दूसरे दिन जैसी शांति थी, क्योंकि उस वर्ष मई दिवस और ईस्टर एक दूसरे के बाद पड़े थे। सब पूछताछ अधिकारी मास्को में आनन्द मना रहे थे। किसी भी कैदी को पूछताछ के लिये नहीं बुलाया गया था। जेल में छाई हुई शांति में, स्तब्धता में हम यह सुन पा रहे थे कि बरामदे के पास कोई व्यक्ति विरोध प्रकट कर रहा था। वे लोग उसे कोठरी से निकाल कर सन्दूक में बन्द करने जा रहे थे। आवाज़ों का अनुमान लगा कर हम सब दरवाजों की स्थिति को पहचान जाते थे। उन लोगों ने सन्दूक का दरवाजा खुला छोड़ दिया और उस कैदी को काफी देर तक पीटते रहे। पूर्ण निःस्तब्धता में उसके मुलायम और सांस लेने के लिये आतुर मुख पर पड़ने वाले प्रत्येक प्रहार की आवाज़ स्पष्ट सुनाई पड़ती थी।

दूसरी मई को तीस तोपों की सलामी दी गई। इसका अर्थ यह था कि यूरोप के किसी देश की राजधानी पर अधिकार कर लिया गया है। उस समय तक दो राजधानियों पर कब्जा नहीं हुआ था—प्राग और बर्लिन। हमने अनुमान लगाने की कोशिश की कि यह कौन सी राजधानी हो सकती है ?

९ मई को वे लोग हमारे दोपहर के भोजन के साथ ही रात का भोजन भी ले आए

—लूबयांका में यह कार्य केवल १ मई और ७ नवम्बर को होता था।

और इस प्रकार हमने यह अनुमान लगा लिया कि युद्ध समाप्त हो गया है।

उसी रोज शाम को उन्होंने ३० तोपों की एक और सलामी दागी। अब यह स्पष्ट हो गया था कि अधिकार करने के लिये और राजधानियां शेष नहीं रह गई हैं। और उसी रोज़ रात को ४० तोपों की एक और जबर्दस्त सलामी दागी गई। हां, मुझे यही याद पड़ता है कि यह ४० तोपों की ही सलामी थी और यह सब अंतों का अंत था।

अपनी कोठरी की खिड़की पर लगी लोहे की चादर के ऊपर जो हिस्सा शेष था, उससे हम लोगों ने और लूबयांका की अन्य समस्त कोठरियों के कैदियो ने और मास्को की अन्य सब जेलों की सब खिड़कियों से हम सब लोगों ने, भूतपूर्व युद्धबन्दियों ने, अग्रिम मोर्चों पर लड़ने वाले भूतपूर्व सैनिकों ने मास्को के आकाश को देखा, आतिशबाजी के रंग-बिरंगे नमूनों और इधर-उधर चक्कर काटने वाली सर्चलाइटों की तेज़ प्रकाश धाराओं से आच्छादित आकाश को देखा।

बोरिस गामेरोव उस शाम को बुत्यर्की जेल की खचाखच भरी एक कोठरी में था, जहां आधे कैदी भूतपूर्व युद्धबन्दी और अग्रिम मोर्चों पर लड़ने वाले सैनिक थे। युवक बोरिस गामेरोव टैंकों को नष्ट करने वाली टुकड़ी में था और उसे युद्ध में घायल हो जाने के कारण सेवा निवृत्त कर दिया गया था, क्योंकि उसके फेफड़े में कभी भी ठीक न हो सकने वाला घाव आया था; और उसे विद्यार्थियों की एक टोली के साथ गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया था। बोरिस गामेरोव ने युद्ध की इस अन्तिम सलामी का विवरण आठ पदों की एक कविता में किया है। यह कविता अत्यन्त साधारण भाषा में लिखी गई है। इसमें बताया गया है कि वे किस प्रकार अपने तख्तों पर लेटे हुए थे, उन्होंने अपने शरीरों को किस प्रकार अपने ओवरकोटों से ढक रखा था; वे किस प्रकार धमाकों से जाग उठे थे, उन्होंने किस प्रकार अपने सिर उठाये थे; खिड़की पर लगी चद्दर के ऊपर से आंखें भींचते हुए देखा था— "ओह, यह एक सलामी भर है"—और इसके बाद वे फिर लेट गये थे :

और एक बार फिर उन्होंने अपने शरीरों को अपने ओवरकोटों से ढक लिया था।

ये वही ओवरकोट थे, जिन्होंने मोर्चों पर खंदकों की मिट्टी का स्पर्श किया था और अलावों की राख का भी और जर्मनों की तोपों के गोलों के टुकड़ों ने जिन्हें जर्जर बना दिया था।

यह विजय हमारे लिये नहीं थी। और यह वसन्त ऋतु भी हमारे लिये नहीं थी।

अध्याय ६



वसन्त

जून १९४५ में हमें हर रोज़ सुबह और शाम को बुत्यर्की जेल की खिड़कियों से बैंड बाजे की स्वर लहरियां सुनाई पड़तीं। ऐसा लगता कि यह बैंड बहुत दूर नहीं बज रहा है—यह ध्वनि या तो लेसनाया मार्ग से अथवा नोवोस्लोबोदस्काया से आती हुई सुनाई पड़ती। वे एक के बाद एक सैनिक अभियान की धुन बजाते।

धुंधले हरे रंग के मजबूत कांच से बंद खिड़कियों के पीछे हम खड़े रहते और बैंडों पर बजाई जाने वाली धुनों को सुनते। ये खिड़कियां पूरी तरह खुली होतीं पर इन पर लगी मोटे कांच की परत के उस पार कुछ भी देख पाना सम्भव नहीं था। हम यही कल्पना करते रहते कि क्या कुछ सैनिक यूनिटें मार्च कर रही हैं? अथवा श्रमिक लोग बड़ी प्रसन्नता से भर कर सैनिक कूच की धुनों का अभ्यास कर रहे हैं? हमें कुछ भी मालूम नहीं था। लेकिन अफवाह हमारे पास तक पहुंच चुकी थी कि २२ जून को लाल चौक में एक विशाल विजय परेड के आयोजन की तैयारियां हो रही हैं—यह युद्ध के समारम्भ की चौथी वर्षगांठ होगी।

एक विशाल इमारत के नींव के पत्थरों का यही भाग्य होता है कि वे कराहते हैं और उनके ऊपर भयंकर भार पड़ता है; उन्हें इस इमारत के शीर्ष को सुशोभित करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। लेकिन नींव का एक अंग होने का सम्मान भी उन लोगों को नहीं दिया गया, जिन लोगों के ध्वस्त सिरों और पसलियों ने युद्ध के पहले प्रहारों को सहा और विदेशियों की विजय कामना को विफल बना दिया। और आज जिन्हें किसी भी कारण के बिना ही त्याग दिया गया है।

"हर्ष भरी ध्वनियों का देशद्रोहियों के लिए कोई अर्थ नहीं है।"

सन् १९४५ की वसंत ऋतु हमारी जेलों में मुख्यतया रूसी युद्ध-बन्दियों की वसन्त ऋतु थी। ये लोग अपार महासागरों में इधर-उधर भटकने वाले छोटी-छोटी मछलियों के विशाल झुण्डों की तरह सोवियत संघ की एक जेल से दूसरी जेल में जाते रहते। इन झुण्डों का पहला चिह्न मुझे यूरी वाई० की झलक के रूप में दिखाई पड़ा। लेकिन जल्दी ही मैं इनकी उद्देश्यपूर्ण गतिशीलता से पूरी तरह चारों ओर से घिर गया और ऐसा लगता था कि इन लोगों को अपनी नियति का ज्ञान है।

जेल की इन कोठरियों से होकर केवल युद्धबन्दी ही नहीं गुजरे, बल्कि उन लोगों

की एक लहर भी इन कोठरियों से होकर गुजर रही थी, जिन्होंने कुछ समय विदेशों में बिताया था। यह लोग गृहयुद्ध के समय विदेश चले जाने वाले प्रवासी रूसी थे; इनमें "ग्रोस्तोवत्सी" भी थे—ग्रर्थात् वे श्रमिक जिन्हें दूसरे महायुद्ध की ग्रवधि में जर्मनों ने मजदूरों के रूप में भर्ती कर लिया था; लाल सेना के वे ग्रफसर भी इनमें शामिल थे, जो ग्रपने निष्कर्ष निकालने में इतने ग्रधिक चतुर ग्रौर दूरदर्शी थे, जिनसे स्तालिन को यह भय था कि वे लोग यूरोप में ग्रपने ग्रभियान में प्राप्त ग्रनुभव को १२० वर्ष पहले के दिसम्बरवादियों की तरह यूरोप में मौजूद स्वतंत्रताग्रों के रूप ग्रपने साथ वापस लायेंगे। इसके बावजूद इस लहर में सबसे बड़ा हिस्सा युद्ध बंदियों का ही था। ग्रौर विभिन्न उम्र वर्गों के युद्ध बंदियों में, ग्रधिकांश युद्धबन्दी स्वयं मेरी उम्र के थे—एकदम ठीक-ठीक मेरी उम्र के नहीं, बल्कि ग्रक्तूबर क्रान्ति के जुड़वां भाई, जिनका जन्म स्वयं क्रान्ति के वर्ष में हुग्रा था, ग्रौर जिन्होंने क्रान्ति की २०वीं वर्षगांठ मनाने के लिए जबर्दस्त उत्साह का प्रदर्शन किया था ग्रौर जिनका उम्र वर्ग, युद्ध के ग्रारम्भ में स्थायी सेना के रूप में खड़ा हुग्रा था—ग्रौर जो सेना कुछ ही सप्ताहों की ग्रवधि में इधर-उधर छितरा गई थी।

जेल में बिताई वह कठिन वसन्त ऋतु, विजय ग्रभियानों पर बजने वाली बैंड की धुनों के साथ-साथ, मेरी समस्त पीढ़ी के लिए लेखा-जोखा लेने वाली वसंत ऋतु बन गई थी।

हमारे पालनों के ऊपर ग्राह्वान की यह तेज़ ग्रावाज़ गूँजती रहती थी : "समस्त शक्तियां सोवियतों को दो !" हम लोगों ने ही धूप में तपे ग्रपने बचकाने हाथों से बाल कम्युनिस्ट पार्टी—पायनियर पार्टी—के बिगुल हाथ में उठाये थे। ग्रौर पायनियरों की इस चुनौती के जवाब में कि "सतत रूप से तैयार रहो" किसने सावधान होकर सलामी दी थी, किसने स्वीकृतिसूचक प्रतिध्वनि की थी : "हम सदा तैयार हैं !" हम लोगों ने ही बूचेनवाल्ड में चोरी छिपे हथियार पहुंचाये थे ग्रौर वहां कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए थे। ग्रौर हम लोग ही ग्रब इस ग्रपमानित ग्रवस्था में पड़े थे, ग्रौर इसका एकमात्र कारण यह था कि हम जीवित बच गए थे।[1]

उस समय जब लाल सेना पूर्वी प्रशा को चीर कर पार निकल गई थी, मैंने सिर झुकाये हुए वापस लौटने वाले युद्ध-बन्दियों की बड़ी-बड़ी कतारों को देखा था—यही एकमात्र ऐसे लोग थे, जो विजय का हर्ष मनाने के स्थान पर दुख के सागर में डूब रहे थे। उस समय भी मैं इनके इस दुख को देखकर स्तम्भित रह गया था, यद्यपि उस समय मेरी समझ में इसका कारण नहीं ग्राया था। मैं ग्रपनी मोटरगाड़ी से नीचे कूदा ग्रौर स्वेच्छा से कतारबद्ध खड़े उन लोगों के पास पहुंचा। (ये लोग पंक्तिबद्ध क्यों चल रहे हैं ? ये लोग इस तरह कतार बनाकर क्यों खड़े हो गए हैं ? ग्राखिरकार किसी ने इन्हें इस बात के लिए बाध्य नहीं किया है ग्रौर ग्रन्य सब राष्ट्रों के युद्धबन्दी व्यक्तिगत रूप से ग्रलग-ग्रलग ग्रपने घरों को वापस लौट रहे थे। लेकिन हमारे युद्धबन्दी ग्रधिक से ग्रधिक विनम्रता से वापस लौटना चाहते थे।) उस समय मेरे कन्धों पर एक कैप्टेन के पद सूचक सितारे लगे थे ग्रौर इस कारण से ग्रौर इस तथ्य की वजह से ही कि मैं ग्रागे बढ़ रहा था, मैं यह पता नहीं लगा सका कि हमारे युद्धबन्दी इतने उदास क्यों थे। लेकिन इसके बाद मेरे भाग्य ने पलटा खाया ग्रौर मुझे इन्हीं कैदियों की कतार के पीछे, उसी रास्ते पर चलने के लिए विवश कर दिया, जिस रास्ते पर स्वयं ये युद्ध बन्दी चल रहे थे। मैं इससे पहले भी सेना के जासूसी विरोधी संगठन के मुख्यालय से मोर्चे के मुख्यालय तक इनके साथ मार्च करता हुग्रा पहुंचा

था। और वहां पहुँचने पर मुझे इनकी पहली कहानियां सुनने को मिली थीं और ये मेरी समझ में नहीं आई थीं और इसके बाद यूरी वाई० ने मुझे पूरा किस्सा बताया। और यहां लाल ईंट के बुत्यर्की किले के गुम्बदों के नीचे मैंने अनुभव किया कि इन लाखों रूसी युद्धबन्दियों की कहानी ने मुझे सदा सर्वदा के लिए उस प्रकार अपने शिकंजे में कस लिया है, जिस प्रकार एक नमूने के गुबरैले के भीतर घुस कर एक सूई उसे अपने काबू में कर लेती है। मेरा जेल में पहुंचना महत्वहीन दिखाई पड़ रहा था। मैंने अपने कन्धों से सितारों को नोंच कर फेंक दिये जाने पर खेद प्रकट करना बन्द कर दिया था। यह मात्र संयोग का विषय था कि मैं उस स्थान पर और परिस्थिति में नहीं था, जहां मेरे इन समकालीन सैनिकों और अफसरों का अन्त हुआ। मैं यह समझने लगा कि यह मेरा कर्तव्य है कि मैं इनके सामान्य भार को अपने कन्धों पर उठाऊं। और इनमें से प्रत्येक का, एक-एक व्यक्ति का भार उठाऊं। जब तक हम इसके नीचे न कुचल जायें। अब मैं यह अनुभव करने लगा, मानो स्वयं मैं भी सोलोवएव क्रासिंग पर, खारकोव के घेरे में, केर्च की खदानों में युद्ध-बन्दी बना लिया गया था और मैंने अपनी पीठ के पीछे अपने हाथ बांध कर अपने सोवियत गर्व को अक्षुण्णा बनाये रख कर यातना शिविरों के कांटेदार तारों के पीछे पांव रखा था; कि मैं स्वयं एक करछी ठंडे कहवा (एक प्रकार की काफी) के लिए घंटों तक बर्फानी ठंडक में खड़ा हुआ ठिठुरता रहता था और इस काफी की केतली तक पहुंचने से पहले ही जमीन पर गिर पड़ा था और वे मुझे मृत समझ कर वहीं पड़ा छोड़ गए थे; कि ओफ्लाग ६८ (सुवालकी) में मैंने अपने हाथों और अपने खाने के डिब्बे के ढक्कन से घंटी की शक्ल का (यानी उलटी हुई घंटी की शक्ल का) एक गड्ढा खोदा था ताकि मुझे खुले खेत में सर्दियां न बितानी पड़ें। और भूख से पागल हो चुका एक कैदी पेट के बल घिसटता हुआ उस समय मेरे पास आया, जब मैं अपनी आखिरी सांसें गिन रहा था, ताकि वह मेरी बांहों के नीचे अभी तक कुछ गर्म मांस को अपने मुंह में भर सके। और अपनी पूरी तरह विध्वस्त तथा भूख से ग्रस्त चेतना में मैं दिन-प्रति-दिन टाइफस ज्वर से ग्रस्त बैरकों में अथवा बराबर के अंग्रेज युद्धबन्दियों के शिविर के कांटेदार तारों के पास पड़ा रहता और मृत्यु के समय मेरे मस्तिष्क में यह स्पष्ट विचार आ रहा था: सोवियत रूस ने अपने मौत के मुंह में जा रहे बच्चों का परित्याग कर दिया है। सोवियत मातृभूमि को उस समय तक अपने "गर्वीले पुत्रों" की आवश्यकता थी, जब तक वे स्वयं अपने ऊपर टैंकों को गुजरने देने के लिए तैयार थे और जब तक इन लोगों को एक बार फिर इनके पांवों पर खड़ा करके एक और हमले के लिए भेजना संभव था। लेकिन एक बार युद्धबन्दी बन जाने के बाद उन्हें भोजन देना? अतिरिक्त पेटों की भूख की ज्वाला शान्त करना! और अपमान भरी पराजयों की अतिरिक्त साक्षियां बटोरना![२]

कभी-कभी हम झूठ बोलने का प्रयास करते हैं। लेकिन हमारी जीभ यह नहीं कर पाती। इन लोगों को देशद्रोही कहकर पुकारा गया था। लेकिन बड़े विलक्षण ढंग से जबान फिसल गई। और न जाने क्या मुंह से निकल गया—न्यायधीशों, सरकारी बकीलों और पूछताछ अधिकारियों के मुंह से यह निकला। दण्डित कैदियों, समस्त राष्ट्र और समाचार-पत्रों ने इस गलती को बारम्बार दोहराया, इसे बल प्रदान किया और अनिच्छा से सत्य को प्रकट हो जाने दिया। इन लोगों का यह इरादा था कि इन्हें "मातृभूमि के प्रति द्रोह करने वाले" बताया जाए। लेकिन सर्वत्र, बोलचाल में और लेखों में भी, अदालतों के

दस्तावेजों तक में इन्हें "मातृभूमि द्रोही" कहा गया।

हां, आप लोगों ने यह कहा! इन लोगों ने मातृभूमि के प्रति द्रोह नहीं किया था, विश्वासघात नहीं किया था। इन लोगों ने, इन अभागे लोगों ने मातृभूमि के साथ विश्वासघात नहीं किया था, बल्कि स्वयं इनकी लेखा-जोखा करने वाली मातृभूमि ने इनके साथ विश्वासघात किया था और वह भी केवल एक बार नहीं बल्कि तीन-तीन बार।

पहली बार मातृभूमि ने इन लोगों के साथ युद्ध के मैदान में, अपनी अकार्यकुशलता के द्वारा विश्वासघात किया—जब सरकार ने, जिसे मातृभूमि इतना अधिक प्यार करती थी, युद्ध में पराजित होने के लिए हर सम्भव उपाय किया : सुदृढ़ मोर्चों और किलेबंदियों की पंक्तियों को नष्ट कर दिया; समस्त वायु सेना का सर्वनाश कर डाला; टैंकों और तोपों को खोल डाला; प्रभावशाली जनरलों को हटा दिया और सेनाओं को प्रतिरोध करने का निषेध कर दिया।[2] और युद्धबंदी वे लोग थे जिनके शरीरों ने प्रहार झेला और आगे बढ़ती हुई नाज़ी सेनाओं को रोका।

दूसरी बार मातृभूमि ने इनके साथ उस समय निर्ममता से विश्वासघात किया, जब इन लोगों को शत्रु की कैद में मर जाने के लिए स्वयं इनके भाग्य के भरोसे छोड़ दिया।

और तीसरी बार इनके साथ उस समय भयंकर विश्वासघात हुआ, जब मातृ सदृश्य प्रेम के साथ मातृभूमि ने इत लोगों को स्वदेश वापस लौटने के लिए फुसलाया और ऐसे शब्दों का प्रयोग किया, "मातृभूमि ने आपको क्षमा कर दिया है! मातृभूमि आपको पुकार रही है!" और जैसे ही ये लोग सीमाओं पर पहुँचे इन्हें जाल में फंसा लिया गया।[3] एक राज्य के रूप में रूस के ११०० वर्ष के अस्तित्व की अवधि में यहां कितने दूषित और भयंकर कृत्य हुए! लेकिन क्या इन दुष्कृत्यों में कभी भी कोई ऐसा दूषित कृत्य हुआ जिसमें करोड़ों लोगों की बलि चढ़ गई हो : जिसमें स्वयं अपने सैनिकों के साथ विश्वासघात किया गया हो और उन्हें देशद्रोही करार दिया गया हो?

हमने अपनी गणना से उन्हें इतनी आसानी से बाहर निकाला फैंका! वह देशद्रोही था? शर्म, शर्म! उसे समाप्त करो! और हमारे पिता ने उससे पहले ही इन्हें अपनी गणना में समाप्त कर डाला था, जब हमने यह कदम उठाया : उसने [स्तालिन] ने मास्को के सर्वश्रेष्ठ बुद्धिवादियों को व्याज़मा के मोर्चे पर सन् १८८६ की पुरानी केवल एक गोली भरने योग्य बेरडन राईफलें देकर झोंक दिया और इतना ही नहीं पांच आदमियों के पीछे केवल एक ऐसी राइफल होती थी। वह कौन-सा लेवतोल्सतोय होगा जो हमारे लिए उस बोरोदिनों का विररण प्रस्तुत करेगा? और उस महान् युद्ध विशारद ने अपनी चिपचिपाहट भरी ठिगनी अंगुली के एक मूर्खतापूर्ण इशारे से हमारे १२०,००० नौजवानों को, बोरोदिनों में तैनात प्राय: समस्त रूसी फौजों की संख्या के बराबर नवयुवकों को दिसम्बर १९४१ में केर्च के तट के पार भेज दिया—विवेकहीनता से और नव वर्ष पर जारी होने वाली एक सनसनीखेज उद्घोषरण भर के लिए यह कार्य किया गया—और उसने बिना लड़े ही इन सबको जर्मन सेनाओं के हाथों बंदी बनवा दिया।

और इसके बावजूद, न जाने किस कारण से, स्वयं वह देशद्रोही नहीं था, बल्कि युद्धबंदी बनाए गए ये युवक देशद्रही थे।

(हम लोग कुछ खेमों के ऊपर चिपका दिए जाने वाले नामों के झांसों में कितनी

आसानी से आ जाते है; हम कितनी तत्परता से, कितनी आसानी से इन निष्ठावान युवकों को देशद्रोही मानने के लिए तैयार हो गए ! उस वसन्त ऋतु में बुत्यर्की जेल की एक कोठरी में लेबेदेव नाम का एक वृद्ध था। वह व्यवसाय से धातु विज्ञानी था और उसने प्रोफेसर के पद पर काम किया था। देखने में वह पिछली शताब्दी का एक प्रभावशाली कारीगर, अथवा शायद इससे भी पहली शताब्दी का देमीदोव के प्रसिद्ध लोहे का सामान ढालने वाले कारखानों का कारीगर दिखाई पड़ता था। उसके चौड़े कंधे थे, विशाल सिर था, पुगाचेव जैसी दाढ़ी थी और उसका जबर्दस्त हाथ १५० पौंड वजन की बाल्टी को आसानी से उठा सकता था। जेल की कोठरी में वह अपने अधोवस्त्रों के ऊपर एक मजदूर का काम के समय पहने जाने वाला फटा पुराना चोगा पहने रहता था। वह बहुत उदास था और लगता शायद वह जेल का कोई सहायक मज़दूर हो—हां जब तक वह पढ़ने के लिए नहीं बैठता, एक सामान्य मज़दूर ही दिखाई पड़ता था, लेकिन जैसे ही वह पुस्तक खोलता, उसके मुख पर स्वाभाविक और प्रभावशाली बुद्धिमत्ता खिल उठती। दूसरे कैदी अक्सर उसके चारों ओर एकत्र हो जाते। वह धातु विज्ञान के बारे में बहुत कम बात करता। लेकिन अपनी भारी भरकम और गम्भीर आवाज़ से हमें यह समझाता कि स्तालिन ठीक भयंकर आइवन की तरह ही एक कुत्ता है : "गोली से उड़ा दो !" "गला घोट डालो !" "हिचकिचाओ नहीं !" उसने हमें यह भी समझाया कि मैक्सिम गोर्की एक मूर्ख बकवादी था और जल्लादों का पृष्ठ पोषण करता था। मैं इस लेबेदेव की ओर अत्यधिक आकृष्ट हुआ था। मुझे ऐसा लगता, मानो मेरी आंखों के समक्ष उसके रूप में समस्त रूसी जनता साकार हो उठी हो। एक भारी भरकम और पुष्ट धड़, जिसके ऊपर बुद्धिमत्तापूर्ण सिर विराजमान था, तथा एक हलवाहे जैसी पुष्ट बाहों और टांगों वाला एक आदमी समस्त रूस की जनता का प्रतीक लगता था। वह इससे पहले ही अनेक मसलों की थाह ले चुका था। दुनिया को समझने के लिए मैंने उससे बहुत कुछ सीखा ! और एक बार अचानक अपने विशाल हाथ के एक झटके से उसने जबर्दस्त आवाज़ में कहा कि जिन लोगों के ऊपर अनुच्छेद ५८-१ ख के अधीन अभियोग लगाए गए हैं वे मातृभूमि के द्रोही हैं और उन्हें क्षमा नहीं किया जाना चाहिए। और यही लोग, इसी अनुच्छेद की १-ख धारा के अन्तर्गत गिरफ्तार किए गए लोग, चारों ओर तख्तों पर लेटे हुए थे और उनके लिए यह कितना आघातजनक था ? रूस के किसानों और मजदूरों के नाम पर यह वृद्ध इतने आत्मविश्वास से भर कर भाषण कर रहा था कि ये सब लोग शर्म से सरवाबोर हो गये थे और उनके लिए इस नई दिशा से होने वाले प्रहार से अपनी रक्षा करना कठिन हो रहा था। स्वयं मैंने और अनुच्छेद ५८-१० के अन्तर्गत गिरफ्तार दो और लड़कों ने इन लोगों का समर्थन करने और वृद्ध से बहस करने का जिम्मा अपने ऊपर लिया। लेकिन राज्य द्वारा बोले गये उन राक्षसी मिथ्या वचनों ने हमें कितनी गहराई से अज्ञान के गर्त में धकेल दिया था। हममें से अधिकतम उदारमना व्यक्ति सत्य के केवल उस अंश को ही अंगीकार कर अकता है, जिसे स्वयं हमने जाना है, जिसकी थाह लेने का हमें अवसर मिला है।[४])

रूस को कितने युद्धों में हिस्सा लेना पड़ा था ! (अच्छा होता कि इन युद्धों की संख्या कम रही होती।) और क्या इन समस्त युद्धों में देशद्रोहियों की संख्या बहुत बड़ी थी ? क्या किसी ने यह देखा था कि रूसी सैनिकों के हृदय में देशद्रोह गहराई से पैठ गया

है ? तभी, संसार की सर्वाधिक न्यायपूर्ण सामाजिक प्रणाली के अधीन, युद्धों में सर्वाधिक न्यायपूर्ण युद्ध हुआ—और न जाने कहाँ से करोड़ों देशद्रोही प्रकट हो गए, सादे से सादे, आबादी के नीचे से नीचे स्तरों के मध्य से यह उपज पड़े। हम इस बात को किस प्रकार समझ सकते हैं और समझा सकते हैं ?

पूंजीवादी इंग्लैण्ड हमारे साथ मिलकर हिटलर के विरुद्ध लड़ा था। मार्क्स ने बड़े हृदयग्राही तरीके से इसी इंग्लैण्ड के श्रमजीवी वर्ग की गरीबी और कष्टों का विवरण प्रस्तुत किया था। क्या कारण था कि इस युद्ध में उन लोगों के मध्य केवल एक देशद्रोही ही मिल सका। व्यापारी "लार्ड हा" ही एकमात्र देशद्रोही साबित हुआ—लेकिन हमारे देश में करोड़ों देशद्रोही उत्पन्न हो गए ?

इस विषय पर अपना मुंह खोलना बड़ा भयावह है। लेकिन क्या इसका मूल राजनीतिक प्रणाली नहीं हो सकती ?

हमारी एक प्राचीनतम कहावत में युद्धबंदी का औचित्य सिद्ध किया गया है : "बंदी चीख उठेगा, लेकिन मृतक कभी नहीं।" ज़ार अलेकसेई माइखेलोविच के शासनकाल में अभिजात वंश के लोगों को युद्धबंदी बना लिये जाने पर सुविधाएं दी जाती थीं ! और इसके बाद के समस्त युद्धों में युद्धबदियों का विनिमय करना, अपने युद्धबदियों को दिलासा देना और उन्हें जीवन यापन के साधन और सहायता देना समाज का कर्तव्य समझा जाता था। शत्रु की कैद से भाग निकलने के प्रत्येक कार्य को सर्वोच्च वीरता का कार्य बताकर प्रशंसा की जाती थी। पहले महायुद्ध की पूरी अवधि में रूस भर में युद्धबंदियों की सहायता के लिए पैसा इक्ट्ठा किया जाता था और हमारी नर्सों को जर्मनी जाकर हमारे कैदियों की सेवा करने का मौका दिया जाता था। और हमारे समाचारपत्र अपने पाठकों को प्रतिदिन यह स्मरण दिलाते थे कि हमारे युद्धबंदी, हमारे देशवासी बुरे लोगों की कैद में कष्ट भोग रहे हैं। पश्चिम के अन्य सब देशों, अन्य सब जातियों ने हमारे साथ हुए युद्ध में इसी प्रकार आचरण किया : तटस्थ देशों से खाने की चीजों आदि के पार्सल, पत्र और प्रायः हर प्रकार की सहायता स्वतंत्र रूप से आती रही। पश्चिम के देशों के युद्धबंदियों को जर्मनों से एक करछी शोरबा प्राप्त करने के लिये कतारों में खड़े होकर स्वयं को अपमानित करना नहीं कराना पड़ा। वे जर्मन संतरियों से दृढ़ता से बात करते थे। पश्चिम की सरकारें युद्धबंदी बने अपने सैनिकों की वरिष्ठता को कायम रखती थीं, उन्हें नियमित पदोन्नतियां मिलती थीं। यहाँ तक कि उन्हें पूरा वेतन भी दिया जाता था।

पूरे संसार में यदि कोई एकमात्र सैनिक हथियार नहीं डाल सकता, तो वह संसार की एकमात्र सेना, लाल सेना का सैनिक ही है। हमारी सैनिक नियमावलियों में यही कहा गया है। (जर्मन अपनी खन्दकों से हमारी ओर चिल्ला कर कहते : "आइवन प्लेन निक्त !"—"आइवन बन्दी नहीं !") इसका क्या अर्थ होता है यह कौन निष्कर्ष निकाल सकता है ? युद्ध है; मृत्यु है—लेकिन हथियार डालने की अनुमति नहीं है ! यह भी कैसा अनुसंधान है ! इसका यह अर्थ होता है : जाओ और मरो; हम जीवित रहेंगे। और यदि युद्ध में आपकी टांगें कट जाती हैं और आप शत्रु की कैद से बैसाखियों पर चलते हुए किसी प्रकार वापस लौट आते हैं, तो हम आपको सजा देंगे। (उदाहरण के लिए लेनिनग्राद के निवासी आइवानोव को, जो फिनलैंड से हुए युद्ध में एक मशीनगन प्लेटून का कमाण्डर था, इसी प्रकार उस्तवीनलाग में जेल में डाल दिया गया था।)

केवल हमारे सैनिकों को ही, जिन्हें उनकी मातृभूमि ने त्याग दिया था और जो शत्रुओं और मित्र राष्ट्रों के सैनिकों की आंखों में नगण्य बन चुके थे, उन्हें जर्मनी की तीसरी राह के अहातों में अपने जीवन को बचाये रखने के लिये भिखमंगों की तरह खड़ा रहना पड़ा। केवल हमारे सैनिकों के लिये ही स्वदेश वापसी के दरवाजे कड़ाई से बन्द कर दिये गये थे। यद्यपि इनके युवा मन इस बात का भरपूर प्रयास करते थे कि इस बात पर विश्वास न करें। अनुच्छेद ५८—१ ख नाम की कोई वस्तु थी और युद्धकाल में इसके अधीन गोली मार कर मृत्यु दण्ड देने की भी व्यवस्था थी ! जर्मनों की गोली से मरने की इच्छा न दिखाने के कारण, युद्धबंदी को इसलिए सोवियत गोली से मरना था, क्योंकि वह युद्धबंदी बना ! कुछ सैनिकों को शत्रु से गोली मिलती है, हमें स्वयं अपने लोगों से !

यह कहना बहुत बचकानापन है कि यह क्यों होता है ? किसी भी युग में सरकारें नैतिकतावादी नहीं थीं। उन्होंने कभी भी लोगों को इसलिए जेलों में नहीं डाला, इसलिए गोली से नहीं मरवाया या मृत्युदण्ड नहीं दिया कि उन्होंने कुछ किया था। इन सरकारों ने लोगों को इसलिए कैद किया और मृत्युदण्ड दिया कि वे उन्हें कुछ करने से रोकना चाहती थीं। उन लोगों ने सब युद्धबंदियों को मातृभूमि के प्रति विश्वासघात के लिए जेलों में नहीं डाला, क्योंकि एक मूर्ख तक को इस बात का स्पष्ट ज्ञान था कि केवल व्लासोव के आदमियों को ही देशद्रोह के लिये सजा दी जा सकती है। इन लोगों को केवल इसलिए जेलों में डाला गया ताकि वे अपने गाँवों के लोगों को यूरोप के बारे में न बता सकें। जिस चीज़ को आंख नहीं देख पाती, उसके लिए दिल दुखी नहीं होता।

तो रूसी युद्धबंदी क्या कर सकते थे, उनके सामने कौन-कौन से रास्ते थे ? कानूनी दृष्टि से मान्य केवल एक रास्ता था : जमीन पर लेट जाना और अपने आपको कुचल कर मरने देना। घास का एक तिनका भी स्वयं को जीवित रखने के लिए ऊपर की ओर उठता है और आपको जमीन पर लेट जाना चाहिए और स्वयं को कुचलने दिया जाना चाहिए। चाहे आप इस काम में सुस्त रहे, चाहे आप इस प्रकार युद्ध क्षेत्र में नहीं मर सके। ठीक है तो कम से कम अब तो मरो; इसके बाद तुम्हें दण्ड नहीं दिया जायेगा।

सैनिक सोते हैं। वे अपनी बात कह चुके हैं।

और उन्हें शाश्वत होने का अधिकार मिल चुका है।

और इसके अलावा आप जो भी कदम उठाने की सोचेंगे; अपने जीवन की रक्षा के लिए जो भी रास्ता निकालने की कल्पना करेंगे, उसके परिणामस्वरूप कानून से आपका संघर्ष होगा।

युद्धबंदी शिविर से भागो और मातृभूमि वापस लौट आओ। शिविर पर कड़ा पहरा रखने वाले संतरियों की नजर बचा कर आधी जर्मनी को पार करके और इसके बाद पोलैंड अथवा बालकन देशों को पार कर सीधे स्मर्श के हाथों में और वहाँ से जेल में। इस प्रकार भाग निकलने वाले युद्धबंदियों से पूछा जाता : तुम कैसे भाग आये, जब दूसरे भागने में कामयाब नहीं हुए ? कोई न कोई गड़बड़ है ! ठीक है, चूहे कहीं के, उन लोगों ने तुम्हें क्या काम सौंपा है ? (माइखेल बुरनात्सेव, तावेल बोंदारेंको और अनेक, अनेक युद्धबंदियों के साथ यही हुआ।)[5]

भाग कर पश्चिमी सेनाओं या जर्मन अधिकृत प्रदेशों में जर्मनी का प्रतिरोध करने वाले संगठनों से जा मिलने की स्थिति में आपका सैनिक अदालत से सामना होने में बस कुछ

बिलम्ब ही हो सकता है और यह कारवाई आपको और अधिक खतरनाक बना देती है। हो सकता है कि यूरोपियनों के मध्य स्वतंत्रतापूर्वक रह कर आपने अत्यधिक हानिप्रद आदतें और भावनाएं प्राप्त कर ली हों। और यदि आप भाग निकले और लड़ाई लड़ने से भयभीत नहीं रहे, तो इसका यह अर्थ होता है कि आप दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति हैं और इस प्रकार आप अपनी मातृभूमि में दोहरे खतरनाक हो जाते हैं।

क्या आप युद्धबंदी शिविर में अपने देशवासियों और कामरेडों के हितों को हानि पहुंचा कर जीवित रहे? क्या आप शिविर की पुलिस के सदस्य बन गए थे अथवा एक कमांडेंट और जर्मनों के सहायक और इस प्रकार मृत्यु के सहायक भी? स्तालिनवादी कानून के अन्तर्गत इन सब कार्यों के लिए भी आपको उससे अधिक कठोर दण्ड नहीं मिलता जितना जर्मनों का प्रतिरोध करने वाली सेनाओं के साथ मिलकर काम करने के लिए मिलता था। इसके लिए भी दण्डसंहिता के उसी अनुच्छेद के अन्तर्गत सजा दी जाती थी और इतनी ही सज़ा मिलती थी—और यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह क्यों होता था। ऐसा आदमी जिसने जर्मनों से सहयोग किया हो कम खतरनाक था। लेकिन हमारे हृदय के भीतर जो कानुन चलता है, वह कुछ पतित लोगों को छोड़ कर अन्य किसी को ऐसे कार्यों के लिए प्रेरित नहीं करता।

इन चार संभावनाओं के अलावा या तो असम्भव अथवा अग्राह्य—एक पांचवीं संभावना भी थी: भर्ती करने वाले जर्मनों की प्रतीक्षा करें और यह देखें कि वे किस काम के लिये आपको बुलाते हैं।

यदाकदा, सौभाग्यवश जर्मनी के देहाती जिलों के कुछ प्रतिनिधि अपने किसानों के लिए मजदूरों को भर्ती करने के लिए आते। कभी-कभी वे कुछ कम्पनियों की ओर से आते और इंजीनियरों तथा मेकेनिकों को चुनकर ले जाते। सर्वोच्च स्तालिनवादी अनिवार्यता के अनुसार आपको इसे भी ठुकरा देना चाहिए था। आपको यह तथ्य छिपा लेना चाहिए था कि आप एक इंजीनियर हैं। आपको यह तथ्य छिपा लेना चाहिए था कि आप एक कुशल कारीगर हैं। एक औद्योगिक डिजाइनर अथवा बिजली के काम के विशेषज्ञ के रूप में आप केवल तभी अपनी देशभक्ति की शुद्धता कायम रख सकते थे कि आप जमीन के भीतर गड्ढा खोद कर एक जानवर की तरह उसके भीतर घुस जाने, तिल-तिल करके मरने, कूड़े के ढेर से खाने की चीजों को, जूठन को कुरेदने के लिए युद्धबंदी शिविर में डटे रहते। यह करने पर आप मातृभूमि के प्रति शुद्ध और पवित्र विश्वासघात के लिए गर्व से सिर ऊपर उठाकर, दस वर्ष का समय जेलों और शिविरों में तथा पांच वर्ष का और समय निष्कासन में बिताने के लिए तैयार रहते।

इसके विपरीत शत्रु के लिए काम करने के फलस्वरूप मातृभूमि के प्रति विश्वासघात और भी अधिक बढ़ जाने के कारण, विशेषकर अपने पेशे से सम्बन्धित क्षेत्र में शत्रु के लिए काम करने के कारण, आपको सिर झुका कर वही दस वर्ष की कैद की सज़ा और पांच वर्ष निष्कासन की सजा मिलती।

यह एक जौहरी का अत्यन्त सूक्ष्म निशान था—स्तालिन का ट्रेड मार्क था।

यदाकदा ऐसे भर्ती करने वाले आ पहुंचते जो एकदम भिन्न किस्म के होते—रूसी, अक्सर ये लोग कम्युनिस्ट राजनीतिक कमीसार होते। श्वेत रक्षक इस प्रकार के रोजगार को स्वीकार नहीं करते। ये भर्ती करने वाले शिविर में एक बैठक बुलाते, सोवियत

शासन की भर्त्सना करते और कैदियों से जासूसी स्कूलों अथवा व्लासोव की फौजी टुकड़ियों में भर्ती होने की अपील करते।

जिन लोगों ने हमारे युद्धबंदियों की तरह भुखमरी का सामना नहीं किया है, जिन लोगों ने बैरकों में घुस आने वाले चमगादड़ों को नहीं खाया है, जिन्होंने पुराने जूतों के तलों को उबाल कर नहीं खाया है, वे ऐसी किसी भी अपील की असीम भौतिक शक्ति को नहीं समझ सकते, जिसके आधार पर शिविर के फाटकों के दूसरी ओर, किसी फौजी टुकड़ी की रसोई से निकलता हुआ धुआं दिखाई पड़ता हो और ऐसी प्रत्येक अपील से सहमत होने वाले व्यक्ति को तुरन्त वहीं पेट भर भोजन मिल सकता हो चाहे केवल एक बार ही! मरने से पहले चाहे केवल एक बार ही! और भाप उठते हुए गर्मागर्म काशा और भर्ती करने वालों के प्रलोभनों के ऊपर स्वतंत्रता और वास्तविक जीवन की छाया मंडराती हुई दिखाई देती—चाहे यह कहीं भी हमें क्यों न ले जाए: व्लोसोव की बटालियनों में, क्रासनोव की कज्जाक रेजीमेंट में, श्रम बटालियनों में जहां हम भावी अटलांटिक दीवार के भीतर सीमेंट डालने का काम करें; नार्वे की समुद्री खाड़ियों मे; लीबिया के रेगिस्तान में; "हीवी" यूनिटों में ('हिफ्सविसिजे' जर्मन सेना में भर्ती स्वयंसेवक—जर्मन सेना की प्रत्येक कम्पनी में १२ "ही वी" होते थे) और अन्तत:, गांव की पुलिस में जो जर्मनों के विरुद्ध संघर्ष करने वालों को पकड़ती थी—जिनमें से अनेक का मातृभूमि त्याग नहीं करेगी। इसके परिणामस्वरूप चाहे हमें कहीं भी जाना पड़े, कम से कम यह निश्चित था कि युद्धबंदी शिविर में रह कर लावारिस ढोर की तरह नहीं मरना होगा।

स्वयं हम लोगों को समस्त दायित्वों से मुक्त कर दिया गया था। केवल अपनी मातृभूमि के प्रति ही नहीं, समस्त मानवता के प्रति दायित्वों से हम मुक्त हो गय थे, क्योंकि हम ऐसे मनुष्य थे, जिन्हें चमगादड़ों को खाने के लिए बाध्य कर दिया गया था।

और हमारे वे नवयुवक सैनिक जो अधकचरे जासूस बनने के लिए तैयार हो गए थे, उन्हें अपनी इस परित्यक्त स्थिति के दूरगामी निष्कर्ष निकालने का मौका नहीं मिला था; वे आज भी, वास्तव में, अत्यन्त देशभक्ति से काम कर रहे थे। उन लोगों ने युद्धबंदी शिविरों से निकलने का यह सबसे आसान रास्ता देखा। इनमें से प्राय: प्रत्येक सैनिक ने यह निश्चय कर लिया था कि जैसे ही जर्मन उन्हें मोर्चों के उस पार सोवियत सेनाओं के पीछे भेजेंगे वे स्वयं को अधिकारियों के हवाले कर देंगे और जर्मनों द्वारा दिया गया साज सामान और निर्देश भी अधिकारियों को सौंप देंगे और मूर्ख जर्मनों पर हंसते हुए हम स्वयं अपनी कृपापूर्ण सैनिक कमान में आ मिलेंगे। इसके बाद वे लोग अपनी लाल सेना की वर्दियां पहन लेंगे और वीरता से लड़ने के लिए अपनी सैनिक टुकड़ियों में वापस लौट जायेंगे। और मुझे यह बताइए कि मानवीय दृष्टि से विचार करने वाला कोई भी व्यक्ति अन्य किसी परिणाम की कैसे आशा कर सकता था? इसके अलावा अन्य क्या हो सकता था? ये सच्चे और निष्ठावान आदमी थे। मैंने इनमें से अनेक लोगों को देखा है। इनके चेहरे ईमानदारी से भरे थे और ये व्यातका अथवा व्लादिमिर के लहजे से बोलते थे। इन लोगों ने बड़े साहस से जासूसों के रूप में भर्ती होना स्वीकार किया, यद्यपि ये गांवों के स्कूलों में मुश्किल से चार या पांच कक्षा तक ही पढ़े थे और नक्शे तथा कुतुबनुमा के इस्तेमाल के योग्य नहीं थे।

ऐसा लगता है कि उन लोगों ने एकमात्र संभव रास्ता अपनाया और हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि जर्मन सैनिक कमान का यह व्ययसाध्य और मूर्खतापूर्ण खेल था। लेकिन नहीं! हिटलर अपने भाई सदृश तानाशाह की लयात्मकता से ही काम कर रहा था! जासूसी का उन्माद स्तालिन के पागलपन का एक बुनियादी पहलू था। स्तालिन को ऐसा लगता था कि देश में चारों ओर जासूस भरे पड़े हैं। सोवियत संघ के सुदूर पूर्वी इलाकों में रहने वाले सब चीनियों को जासूस बता कर सजाएं दी गईं—अनुच्छेद ५८-६—और इन्हें उत्तर के शिविरों में पहुँचा दिया गया, जहां ये मौत के मुंह में चले गए। यही हाल सोवियत गृहयुद्ध में हिस्सा लेने वाले चीनियों का हुआ—यदि ये समय रहते भाग न निकले। लाखों कोरियावासियों को कज़ाकिस्तान में निष्कासित कर दिया गया। इन सबके ऊपर भी जासूस होने का ही अभियोग लगाया गया था। उन समस्त सोवियत नागरिकों को जो किसी भी समय विदेश में रहे हों, जो किसी समय भी विदेश पर्यटकों के होटलों के आस-पास काम करते रहे हों, जिनका कभी भी किसी विदेशी के साथ फोटोग्राफ लिया गया हो अथवा जिसने कभी स्वयं शहर की इमारत का फोटो ले लिया हो (व्लादिमिर में स्वर्णद्वार का फोटो) उन सब के ऊपर एक ही अपराध का अभियोग लगाया गया। जो लोग बहुत देर तक किसी रेल की पटरी, किसी सड़क पुल, कारखाने की चिमनी की ओर देखते रहे उनके ऊपर भी यही अभियोग लगाया गया। उन अनेक विदेशी कम्युनिस्टों का भी यही हाल हुआ जो सोवियत संघ में फंस गए थे। कम्युनिस्ट इन्टनेरशनल के समस्त छोटे बड़े अफसरों और कर्मचारियों को, एक के बाद एक को, बिना किसी व्यक्तिगत भेदभाव के सबसे पहले जासूसी के अभियोग पर गिरफ्तार किया गया।[६] और लतविया के राइफलमैनों को भी—जिनकी राइफलों की किर्चें क्रान्ति के बाद के पहले वर्षों में सर्वाधिक विश्वसनीय मानी गई थीं—सन् १९३७ में उस समय जासूसी के अभियोग का ही सामाना करना पड़ा, जब उनमें से एक-एक आदमी को गिरफ्तार कर लिया गया। ऐसा लगता है कि स्तालिन ने आसानी से प्रसिद्धि चाहने वाली उस कैथीरीन महान् की उस प्रसिद्ध घोषणा को एकदम उलट दिया था और अधिकतम व्यापक बना दिया था: वह यह पसन्द करेगा कि ९९९ निर्दोष लोग जेलों में सड़ते रहें, पर एक सच्चा जासूस बचने न पाये। अब आप ही सोचिए कि उन रूसी सैनिकों पर कैसे विश्वास और भरोसा किया जा सकता था, जो सचमुच जर्मन जासूसी सेवा के हाथों में कुछ समय रह चुके थे? और इस तथ्य ने एम० जी० बी० के जल्लादों के काम को कितना आसान बना दिया था जब यूरोप से आने वाले हजारों सैनिकों ने इस तथ्य को छिपाने तक की कोशिश नहीं की कि वे स्वेच्छा से जर्मनों के जासूसों के रूप में काम करने के लिए अपना नाम लिखाने को तैयार हो गए थे। यह बुद्धिमानों में सर्वाधिक बुद्धिमान की भविष्यवाणियों की कितनी आश्चर्यजनक पुष्टि थी। ठीक है आओ, लगातार आते रहो, तुम मूर्ख हो! लम्बे अरसे से दण्ड संहिता का एक विशिष्ट अनुच्छेद और प्रतिशोध तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।

लेकिन एक प्रश्न और पूछना उपयुक्त होगा। ऐसे युद्धबन्दी भी थे, जिन्होंने जर्मनों की इच्छा के अनुसार भर्ती के प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया, उन्होंने अपने पेशे अथवा कार्य के क्षेत्र में जर्मनों के लिए काम नहीं किया और वे शिविर की पुलिस में भी भर्ती नहीं हुए, उन्होंने युद्ध की पूरी अवधि युद्धबन्दियों के शिविर में ही बिताई। उन्होंने बाहर निकलने की कोशिश नहीं की और ये लोग प्राय: भयंकरतम परिस्थितियों के बावजूद मौत के मुंह

स नहीं पहुंचे, चाहे जीवित रहना कितना भी असम्भावित क्यों नहीं था। उदाहरण के लिए इन लोगों ने धातु के टुकड़ों से सिगरेट जलाने के लाइटर बनाए। यह काम बिजली के इंजीनियर निकोलाई आन्द्रेएविच सेमीयोनोव और फ्योदार फ्योदोरोएविच कारपोव ने किया और इस प्रकार खाने के लिए पर्याप्त सामग्री जुटा सके। और इसके बावजूद मातृभूमि ने उन्हें हथियार डाल देने के लिए क्षमा कर दिया?

नहीं, इसने उन्हें क्षमा नहीं किया। मेरी मुलाकात सेमियोनोव और कारपोव दोनों से बुत्यर्की जेल में हुई। इस समय तक इन दोनों को कानून के अन्तर्गत सजाएं सुनाई जा चुकी थीं और ये कानून सम्मत सजाएं क्या थीं! सतर्क पाठक पहले ही इनसे परिचित हैं: १० वर्ष की कैद की सज़ा और पांच वर्ष का निष्कासन। मेधावी इंजीनियरों के रूप में इन लोगों ने अपने पेशे के क्षेत्र में जर्मनों के लिए काम करने के प्रस्तावों को ठुकरा दिया था। सन् १९४१ में जूनियर लेफ्टिनेंट सेमियोनोव एक स्वयंसेवक के रूप में मोर्चे पर गया था। सन् १९४२ तक उसे एक रिवाल्वर तक प्राप्त नहीं हुआ था। इसके स्थान पर उसके पास एक खाली होल्स्टर (रिवाल्वर रखने का चमड़े का केस) था और यह बात पूछताछ अफसर की समझ में नहीं आ रही थी कि सेमियोनोव स्वयं को इस होल्स्टर से गोली से उड़ा देने में सफल क्यों नहीं हुआ? जर्मनों की कैद से वह तीन बार भाग निकला था और सन् १९४५ में, एक यातना शिविर में मुक्त किए जाने के बाद, पैदल सेना की दण्ड टुकड़ी के एक सदस्य के रूप में उसने एक टैंक के ऊपर बैठकर लड़ाई में हिस्सा लिया। उसने बर्लिन पर अधिकार की लड़ाई में हिस्सा लिया और उसे वीरता के लिए आर्डर आफ दि रेड स्टार (लाल सितारे का पदक) प्राप्त हुआ। पर इस सबके बावजूद उसे अन्ततः गिरफ्तार कर लिया गया और सजा सुना दी गई। इन बातों से हमारी अन्तिम नियति स्पष्ट होती है।

बहुत थोड़े से युद्धबन्दी ही स्वतन्त्र लोगों के रूप में सोवियत सीमा को पार कर सके। और यदि कोई उस समय व्याप्त गड़बड़ के कारण इस कार्य में सफल भी हुआ तो आगे चलकर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। ये गिरफ्तारियां १९४६ अथवा १९४७ तक में होती रहीं। कुछ युद्धबन्दियों को जर्मनी में युद्धबन्दियों के एकत्र होने के स्थानों पर गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ अन्य को वहां तुरन्त खुल्लमखुल्ला रूप से गिरफ्तार नहीं किया गया, बल्कि सीमा से उन्हें माल के डिब्बों में भर कर सशस्त्र सन्तरियों के पहरे में उन अनेक पहचान और जांच शिविरों (पी० एफ० एल०) में पहुंचा दिया गया जो देश भर में फैले हुए थे। ये शिविर श्रम से सुधार शिविरों (आई० टी० एल०) से किसी भी रूप में भिन्न नहीं थे। अन्तर केवल इतना था कि उन शिविरों के कैदियों को अभी तक सजाएं नहीं सुनाई गई थीं और यह काम जल्दी ही किया जाना था। ये सब पहचान और जांच शिविर किसी न किसी कारखाने, अथवा खान अथवा निर्माण योजना से सम्बद्ध होते थे और ये भूतपूर्व युद्धबन्दी अपनी मातृभूमि को, उन कांटेदार तारों के पीछे से देखते थे, जिनके पीछे बन्द रह कर वे जर्मनी को देखते रहे थे और पहले दिन से ही इन्हें प्रतिदिन दस घंटे काम में लगा दिया जाता था, यद्यपि हाल में ही उन्हें अपनी मातृभूमि को वापस लौटने का गौरव प्राप्त हुआ था। जिन लोगों पर संदेह होता था उनसे उनकी आराम की अवधियों, शाम के समय और रात को भी पूछताछ की जाती थी और इस कार्य के लिए पहचान और जांच शिविरों में बड़ी संख्या में सुरक्षा अफसर और पूछताछ अधिकारी नियुक्त किए गए थे।

जैसाकि सदा होता है, पूछताछ की शुरूआत इस मान्यता से होती कि आप स्पष्ट रूप से दोषी हैं। और आपको उन कांटेदार तारों से बाहर निकले बिना ही यह सिद्ध करना पड़ता था कि आप दोषी नहीं हैं। इस कार्य के लिए आपको केवल उन्हीं गवाहों पर निर्भर करना पड़ता, जो स्वयं आपकी तरह ही पहले से ही युद्धबन्दी थे। यह भी स्पष्ट था कि ऐसे युद्धबन्दी आपके पहचान और जांच शिविर में न रखे गए हों। हो सकता है कि वे देश के एकदम दूसरे छोर पर हों। उस स्थिति में सुरक्षा अफसर उस दूसरे शिविर के सुरक्षा अफसरों को आपके बारे में लिख भेजेंगे जिस प्रकार केमेरोवो के सुरक्षा अफसरों ने सोलीकामक्स के सुरक्षा अफसरों को लिखा। अब ये सुरक्षा अफसर गवाहों से पूछताछ करेंगे और कुछ नई जाँच सम्बन्धी आवश्यकताओं सहित अपना जवाब लिख भेजेंगे। और स्वयं आपसे किसी दूसरे मामले में एक गवाह के रूप में पूछताछ की जाएगी। यह सच है कि आपका मामला सुलझने में एक या दो वर्ष का समय लग सकता है। लेकिन, आखिरकार, इस प्रक्रिया में मातृभूमि की तो कोई हानि नहीं हो रही है। आप हर रोज़ कोयला खानों में कोयला निकालने के लिए जाते हैं। और यदि आपके गवाहों में से एक ने भी कोई गलत किस्म का बयान दे दिया अथवा यदि आपके गवाहों में से कोई भी जीवित नहीं है, तो आप इसके लिए केवल स्वयं को ही दोष दे सकते हैं और सम्बन्धित कागज-पत्रों में आपको मातृभूमि द्रोही लिख दिया जाएगा। और दौरे पर आने वाली सैनिक अदालत आपको दस्सा थमाने पर अपनी मोहर लगा देगी। और यदि उन लोगों के द्वारा हर चीज़ को तोड़-मरोड़ कर पेश करने के प्रयासों के बावजूद यह स्पष्ट हुआ कि आपने जर्मनों के लिए सचमुच कोई काम नहीं किया था और यदि—और यह मुख्य बात थी—आपको अमरीकियों और अंग्रेजों को स्वयं अपनी आंखों से देखने का मौका नहीं मिला (अमरीकी और अंग्रेज फौजों द्वारा जर्मनों की कैद से मुक्त कराये जाने की स्थिति में आपके लिए परिस्थितियां अत्यधिक गम्भीर हो उठतीं) तो सुरक्षा अफसर यह निर्णय करेंगे कि आपको किस सीमा तक अन्य लोगों से अलग-थलग रखा जाना चाहिए। कुछ लोगों को यह हुक्म सुनाया गया कि वे अपना निवास स्थान बदल लें—ऐसा कोई भी आदेश व्यक्ति को अपने परिवेश से काट कर अलग कर देता है और उसे और अधिक असहाय बना देता है। अन्य लोगों को बड़ी वीरतापूर्वक सैनिक सन्तरी सेवा में काम करने का प्रस्ताव किया गया। इस स्थिति में, नाम मात्र को स्वतन्त्र रहने के बावजूद, व्यक्ति अपनी समस्त व्यक्तिगत स्वतन्त्रता से वंचित हो जाता और उसे एक सुदूर स्थान पर भेज दिया जाता। एक तीसरी श्रेणी भी थी : हाथ मिलाने के बाद कुछ भूतपूर्व युद्धबन्दियों को बड़ी मानवीयता से अपने घर वापस लौटने की अनुमति दे दी गई। यद्यपि, परिस्थिति को गम्भीर बनाने के प्रमाणों के बिना ही, सुरक्षा अधिकारियों के अनुसार इन लोगों को केवल इसलिए गोली से उड़ा दिया जाना चाहिए था कि इन्होंने हथियार डाले हैं। लेकिन इस श्रेणी के लोग समय से पहले ही अपनी मुक्ति का आनन्द मनाने लगते! इन भूतपूर्व युद्धबन्दियों के अपने घर पहुँचने से पहले ही उनके मामले उनके जिलों को भेज दिये जाते और यह संदेश राज्य सुरक्षा संगठन के गुप्त सूत्रों के माध्यम से भेजा जाता। ये लोग सदा बाहरी ही बने रहते और जैसे ही किसी भी कारण से बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां शुरू होतीं, जैसाकि १९४८-१९४९ में हुआ, इन लोगों को यह अभियोग लगा कर तुरन्त गिरफ्तार कर लिया जाता कि वे शत्रुतापूर्ण प्रचार में लगे हुए थे। अथवा अन्य कारण बताकर भी इन्हें गिरफ्तार किया

जा सकता था। स्वयं मुझे भी इस श्रेणी के लोगों के साथ गिरफ्तार कर जेल में डाला गया था।

"काश ! मुझे इस बात की जानकारी होती !" उस वसन्त ऋतु में जेल की कोठरियों में बस बारम्बार यही स्वर सुनाई पड़ता। काश ! मुझे यह मालूम होता कि मातृभूमि में वापस लौटने पर मेरा इस प्रकार स्वागत होगा ! काश, मुझे यह मालूम होता कि ये लोग मेरे साथ इस प्रकार धोखा करेंगे ! कि मेरा भाग्य यही होगा ! तो क्या मैं सचमुच अपनी मातृभूमि वापस लौट आता ? नहीं, किसी भी हालत में नहीं ! मैं स्विटज़रलैंड चला जाता, फ्रांस पहुँच जाता। मैं समुद्र पार निकल जाता, महासागर को पार कर जाता ! मैं तीन महासागरों के पार पहुंच जाता ![७]

लेकिन अधिक विचारशील कैदी इन लोगों की इस गलती को सुधारते थे। वे लोग इससे पहले गलती कर चुके थे ! इन लोगों ने सन् १९४१ में तुरन्त मोर्चों पर पहुंच जाने की मूर्खता की थी। वह आदमी मूर्ख होता है, जो तुरन्त युद्ध के मोर्चे पर पहुंच जाता है ! युद्ध के आरम्भ से ही इन लोगों को स्वयं को मोर्चों से बहुत पीछे अच्छी तरह जमा लेना चाहिए था। कहीं बड़े आराम से शांतिपूर्वक बने रहना चाहिए था। जिन लोगों ने यह किया, आज उन्हें वीर नायकों की तरह सम्मान मिल रहा है और सेना से भाग निकलने पर, भगोड़ा बन जाने पर तो और भी अच्छी स्थिति रहती। यह निश्चय था कि आप कष्टों से बचते, अपने जीवन को सुरक्षित रख पाते। ऐसे लोगों को दस वर्ष की कैद की सज़ा नहीं मिली—बल्कि ८ और ७ साल की सज़ा मिली। और इन लोगों को शिविरों में आराम के कामों से भी अलग नहीं रखा गया। आखिरकार सेना के एक भगोड़े को एक शत्रु अथवा देशद्रोही अथवा राजनीतिक कैदी नहीं समझा जाता। उसे एक शत्रुतापूर्ण कार्रवाई करने वाला तत्व नहीं, बल्कि मित्रतापूर्ण तत्व समझा जाता है अर्थात् एक गैर-राजनीतिक अपराधी माना जाता है। इस दृष्टिकोण के प्रति अत्यधिक भावावेश से तर्क दिए जाते, आपत्तियां उठाई जातीं। यह कहा जाता कि भगोड़ों ने ये सब वर्ष जेलों में सड़ कर बिताये। और उन्हें क्षमा नहीं किया जाएगा। लेकिन जल्दी ही अन्य सब लोगों के लिए क्षमादान होगा और उन सब लोगों को रिहा कर दिया जाएगा। (उस समय तक भगोड़ा होने के प्रमुख लाभ का प्राय: ज्ञान नहीं था।)

जिन लोगों को अनुच्छेद ५८-१० के अन्तर्गत उनके घरों अथवा लाल सेना से गिरफ्तार किया गया था, वे अक्सर अन्य लोगों से ईर्ष्या करते थे। यह भी क्या बात है ! उतने ही पैसे पर, अर्थात् उसी दस्से के आधार पर, वे लोग इतनी अधिक दिलचस्प चीजें देख सके, ठीक उन दूसरे लोगों की तरह, जो प्राय: सर्वत्र घूम आए थे ! और यहां हम हैं, हमें शिविरों में भेजा जाना है। लेकिन अब तक हमने अपनी सड़ाँध भरी सीढ़ियों के अलावा अन्य कुछ नहीं देखा। प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि जो लोग अनुच्छेद ५८-१० के अन्तर्गत गिरफ्तार किये जाते थे, वे अपनी इस विजय भावना को मुश्किल से ही छिपा पाते थे कि सबसे पहले स्वयं उन्हें ही क्षमादान प्राप्त होगा।

केवल वे लोग पश्चाताप नहीं करते थे। केवल वे लोग जो यह नहीं कहते थे कि "काश, मुझे मालूम होता" जो यह जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं और जिन लोगों को किसी भी प्रकार की दया की आशा नहीं थी, किसी भी प्रकार के क्षमादान के अन्तर्गत रिहा होने की उम्मीद नहीं थी—वे व्लासोव के आदमी थे।



मुझे इन लोगों की जानकारी थी और जेल के तख्तों पर अपनी अप्रत्याशित मुलाकात से पहले मैं इन लोगों के बारे में आश्चर्य में पड़ा रहता था।

सबसे पहले इश्तिहार और परचे आने शुरू हुए। ये बार-बार भीग जाते थे और बार-बार सुखाये गये थे तथा कुछ ऊंची घास में खो जाते थे—जिसे तीन साल से काटा नहीं गया था—और ओरेल के पास अग्रिम मोर्चे की पट्टी पर ये इश्तहार गिराये जाते थे। दिसम्बर १९४२ में इन इश्तिहारों में यह घोषणा की गई कि स्मोलेंस्क में एक "रूसी समिति" की स्थापना की गई है—प्रकट रूप से इसे किसी प्रकार की एक रूसी सरकार दर्शाने की कोशिश की गई थी और इसके साथ ही यह लगता था कि यह सरकार नहीं है। स्पष्ट था कि इस सम्बन्ध में स्वयं जर्मन अन्तिम निर्णय नहीं ले पाये थे। इस कारण से, इन इश्तिहारों में दी गई विज्ञप्ति झूठी और जालसाजी से तैयार लगती थी। इश्तिहारों पर जनरल व्लासोव का चित्र होता था और उसकी संक्षिप्त जीवनी भी दी गई थी। इस अस्पष्ट चित्र में उसका चेहरा खूब खाते-पीते और सफल आदमी जैसा दिखाई पड़ता था, जैसाकि हमारे सब नए किस्म के जनरलों का होता है। उन लोगों ने मुझे आगे चल कर बताया कि यह बात नहीं थी। व्लासोव का चेहरा एक पश्चिमी जनरल जैसा कहीं अधिक दिखाई पड़ता था—ऊंचा, दुबला-पतला, और सींग के फ्रेम के चश्मे से सुशोभित। उसकी जीवनी से यह लगता था कि यह व्यक्ति सदा सफल होता रहा है। उसका जन्म एक किसान परिवार में हुआ था और सन् १९३७ में उसकी गगनचुम्बी सफलता समाप्त नहीं हुई थी; और न ही चांग काई शेक के सैनिक सलाहकार के रूप में काम करने के बावजूद कोई असर पड़ा था। उसके आरम्भिक जीवन की पहली और एकमात्र विनाशकारी घटना उस समय हुई, जब उसकी द्वितीय प्रहार सेना शत्रु के घेरे में घिर गई और उसे अत्यधिक मूर्खता और अकार्यकुशलता से भूखों मर जाने के लिए वहीं छोड़ दिया गया। लेकिन इस पूरी जीवनी के कितने हिस्से पर विश्वास किया जा सकता था।[८]

उसके फोटोग्राफ से यह विश्वास करना असम्भव था कि वह एक विशिष्ट क्षमताओं वाला व्यक्ति था अथवा उसने रूस के लिए लम्बे समय तक अत्यन्त कष्ट भोगे थे। इन इश्तिहारों में "रूसी मुक्ति सेना" (आर० ओ० ए०) की स्थापना की जो बात कही गई थी, उस घोषणा को केवल भद्दी रूसी भाषा में ही नहीं लिखा गया था, बल्कि इसमें एक ऐसी विदेश भावना थी, जो स्पष्ट रूप से जर्मन दिखाई पड़ती थी और इसमें अपनी मुक्ति के लक्ष्य के प्रति प्राय: कोई चिन्ता नहीं दिखाई गई थी; इसके अलावा इन इश्तिहारों में बड़े भद्दे ढंग से यह शेखी बघारी जाती थी कि खाने के लिए बहुत चीजें उपलब्ध हैं और सैनिक अत्यधिक प्रसन्न मन:स्थिति में हैं। कोई भी व्यक्ति यह विश्वास नहीं कर सकता था कि यदि इस सेना का अस्तित्व है भी तो यह सेना किस रूप में प्रसन्न हो सकती है? केवल एक जर्मन ही इस प्रकार झूठ बोल सकता था।[९]

हमें बहुत जल्दी यह पता चल गया कि सचमुच रूसी लोग हमारे मुकाबले में लड़ रहे हैं और वे किसी भी एस० एस० सैनिक से कहीं अधिक दृढ़ता और वीरता से लड़ रहे हैं। उदाहरण के लिए १९४३ के जुलाई महीने में ओरेल के पास जर्मन वर्दीधारी रूसियों की एक प्लाटून ने सोवार्किसकिए वाइसेलकी की रक्षा की। इन लोगों ने इस प्रकार जीवन

का मोह त्याग कर यह लड़ाई लड़ी, जिसकी केवल उन लोगों से आशा की जा सकती थी, जिन्होंने स्वयं अपने हाथों से इसका निर्माण किया हो। इनमें से एक सैनिक को बीज के तहखाने में खदेड़ दिया गया। उन लोगों ने इस तहखाने में ग्रिनेड फेंके और वह शान्त हो गया। लेकिन जैसे ही इन लोगों ने इस तहखाने में झांक कर देखने के लिए अपने सिर भीतर झुकाये उसने अपनी स्वचालित पिस्तौल से गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। एक एंटी टैंक अर्थात् टैंक तोड़ने वाले एक ग्रिनेड को इस तहखाने में फेंकने के बाद ही इन लोगों को यह पता चल सका कि इस तहखाने के भीतर उसने एक और गड्ढा खोद रखा था, जिसमें वह पैदल सेना के ग्रिनेडों से बचाव के लिए जा छिपा था। ज़रा सोचिए, वह उस आघात-जनक और भयानक धमाकों के कारण स्मरण शक्ति तक समाप्त हो जाने और निराशा की स्थिति तक में किस प्रकार डटकर मुकाबला करता रहा।

उदाहरण के लिए, उन लोगों ने टुर्स्क के दक्षिण में स्थित नीपर नदी के अटूट मोर्चे की रक्षा की। हम दो सप्ताह तक कुछ सौ गज़ दूर से इन लोगों से लड़ते रहे। दिसम्बर १९४३ में लड़ाइयां बड़ी भयंकर हो उठीं थीं और इसी प्रकार ठंडक भी भयानक हो चली थी। अनेक दिनों तक हम और वे ठंड के भयंकर कष्ट भोगते रहे, सर्दियों में पहने जाने वाले उन सैनिक चोगों को पहने हुए हम लड़ रहे थे, जो हमारे ओवरकोटों और टोपियों तक को ढके रहते थे। मालये कोज़लोविची के पास मुझे बताया गया कि एक मुठभेड़ हुई है। सैनिक चीड़ वृक्षों के बीच इधर-उधर दौड़ रहे थे, पूरी तरह से गड़बड़ फैल गई और दो सैनिक एक-दूसरे के बराबर पड़े हुए देखे गए। अब शत्रु और मित्र की सही-सही पहचान सम्भव न होने के कारण वे लोग जो सामने आता उस पर गोलियां बरसाते। दोनों के पास सोवियत स्वचालित पिस्तौलें थीं। ये एक-दूसरे की गोलियों का इस्तेमाल करते। एक-दूसरे के निशाने की तारीफ करते और जब उनकी स्वचालित पिस्तौलों पर लगी ग्रीज (चिकनाई) ठंड के कारण बर्फ की तरह जम जाती, तो वे गालियां देने लगते। अन्ततः उन दोनों की पिस्तौलों ने एक साथ काम करना बन्द कर दिया और उन्होंने यह निश्चय किया कि अब वे थोड़ी देर आराम करेंगे और सिगरेट पीयेंगे। उन्होंने अपनी टोपियों को छिपाने वाले सफेद चोगे के ऊपरी हिस्से को पीछे खिसकाया—और तत्क्षण दोनों ने एक-दूसरे की टोपी देखी......गिद्ध और तारा। वे कूद कर उठ खड़े हुए! उनकी स्वचालित पिस्तौलें अभी भी चलने से इनकार कर रही थीं! इनकी नली पकड़ कर और इन्हें डंडे की तरह घुमाते हुए वे एक-दूसरे पर टूट पड़े। यदि आप चाहें तो यह कह सकते हैं कि यह न तो राजनीति थी और न ही मातृभूमि, बल्कि गुफाओं में रहने वाले आदिम मानव जैसा अविश्वास था : यदि मैं उसके ऊपर दया करता हूं, तो वह मुझे मार डालेगा।

पूर्वी प्रशा में, जनरल व्लासोव के तीन गिरफ्तार आदमियों को मुझसे कुछ कदम आगे सड़क पर ले जाया जा रहा था। उसी क्षण हमारा एक टी-३४ टैंक घड़घड़ाता हुआ सड़क पर आया। अचानक एक कैदी ने झटका दिया और स्वयं को टैंक के सामने फेंक दिया। टैंक ने उसे बचाने की कोशिश की, लेकिन पहियों पर चढ़ी पेटी के किनारे ने उसे कुचल ही डाला। यह क्षत-विक्षत आदमी छटपटाता हुआ, खून उगलता हुआ सड़क पर पड़ा रहा। और उसकी बात आप समझ सकते थे! वह एक तहखाने में फांसी पर लटकाये जाने से बेहतर, एक सैनिक की तरह मर जाना पसन्द करता था।

उनके सामने कोई विकल्प नहीं था। लड़ाई लड़ने का उनके लिए दूसरा कोई तरीका नहीं था। घेरे से भाग निकलने का कोई मौका दिखाई नहीं पड़ता था। अपने जीवन की रक्षा कर पाना भी सम्भव नहीं था। वे लड़ाई लड़ने के किसी अधिक साव-धानी भरे तरीके से अपने जीवन की रक्षा नहीं कर सकते थे। यदि 'शुद्ध रूप से हथियार डालने' को मातृभूमि के प्रति अक्षम्य अविश्वासघात माना जाता था, तो उन लोगों के बारे में आप क्या कहेंगे, जिन्होंने शत्रु की ओर से हथियार उठाये थे? हमारे प्रचार में, अत्यधिक भद्दे ढंग से, इन लोगों के आचरण को समझाया गया: (१) देशद्रोही (क्या यह जीव विज्ञान पर आधारित था? क्या यह रक्त में बसा हुआ था?); अथवा (२) कायरता नहीं - यह कायरता नहीं थी! एक कायर एक ऐसी जगह की तलाश करता है, जहां जीवन बेहतर होता है, सरल, सुरक्षित और सम्पूर्ण होता है। और सैनिकों को नाज़ी सेना की व्लासोव टुकड़ियों में केवल अन्तिम विकल्प के रूप में ही शामिल होने के लिए प्रेरित किया जा सकता था। सब ओर से पूरी तरह निराश हो जाने की स्थिति में ही, सोवियत शासन के प्रति कभी समाप्त न होने वाली घृणा के आधार पर ही, इन लोगों को अपनी जान की किसी भी रूप में परवाह किए बिना इन टुकड़ियों में शामिल होने के लिए राजी किया जा सकता था; क्योंकि वे जानते थे कि उन्हें कण मात्र भी दया प्राप्त नहीं होगी। हम लोग जैसे ही उन्हें गिरफ्तार करते, उनके मुंह से रूसी भाषा का एक भी स्पष्ट शब्द सुनते ही उन्हें गोली मार देते। रूसियों द्वारा बन्दी बना लिये जाने के बाद सबसे बुरा हाल स्वयं रूसियों का ही होता था, जैसाकि रूसियों का जर्मनों की कैद में हुआ था।

मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि इस युद्ध ने हमारे ऊपर यह प्रकट कर दिया कि संसार में सबसे बुरी बात एक रूसी होना है।

मैं अत्यन्त शर्म से भर कर उस घटना का स्मरण करता हूं, जिसे मैंने बोवरूइस्क के घेरे में घिरे इलाके के सफाये—दूसरे शब्दों में लूट—के रूप में उस समय देखी, जब मैं ध्वस्त और उल्टी हुई जर्मन मोटर-गाड़ियों के बराबर सड़क पर पैदल चल रहा था और सर्वत्र लूट का माल बिखरा पड़ा था। जर्मन घोड़ा गाड़ियों के घोड़े एक उथले गड्ढे में इधर-उधर भटक रहे थे, जहां कीचड़ में घोड़ा-गाड़ियां और मोटर गाड़ियां फंस गई थीं और लूट के माल की होली हो रही थी। तभी मैंने सहायता की एक पुकार सुनी: "मिस्टर कैप्टेन! मिस्टर कैप्टेन!" एक कैदी जिसने जर्मन बिजिस पहन रखी थी और जो पैदल चल रहा था, शुद्ध रूसीभाषा में मुझे पुकार कर कह रहा था। कमर से ऊपर उसका शरीर नंगा था और उसका चेहरा, छाती, कन्धे और पीठ खून से सराबोर थे और एक ओसोबिस्त सार्जेंट अर्थात् सुरक्षा संगठन का सार्जेंट घोड़े पर सवार होकर उसे चाबुक लगा-लगा कर आगे चलने को कह रहा था और अपने घोड़े से उसे आगे धकेलता जाता था। वह कैदी की नंगी पीठ पर चाबुक बरसाता जा रहा था और उसे पीछे मुड़कर नहीं देखने देता था, उसे सहायता के लिए पुकारने नहीं देता था। वह उसे आगे धकेलता गया, निरन्तर पीटते-पीटते आगे धकेलता गया, चाबुक के प्रत्येक प्रहार के साथ उसके शरीर पर रक्त रंजित रेखाएं खींचता गया।

और यह पुराने जमाने का कोई पूनिक युद्ध (रोमन युग का कर्थेज का युद्ध) नहीं था, और यह यूनानियों के बीच होने वाला युद्ध भी नहीं था! कोई भी अफसर, कोई भी

सत्ता सम्पन्न अफसर, ससार की किसी भी सेना का अफसर, इस विवेकहीन उत्पीड़न को रोकता। हां, संसार की किसी भी सेना का अफसर, लेकिन हमारी सेना का? मानवता को विभाजित करने के हमारे भयावह और किसी भी हालत में समझौता न करने वाले तरीके को ध्यान में रखते हुए? (यदि तुम हमारे साथ नहीं हो, तो तुम हमारे अपने नहीं हो। तो तुम घृणा और विनाश के अलावा अन्य किसी भी वस्तु के योग्य नहीं हो।) इस कारण से मैं व्लासोव के आदमी को सुरक्षा संगठन के आदमी से बचाने में डरता था। मैंने कुछ नहीं कहा और मैंने कुछ नहीं किया। मैं उसके बराबर से इस प्रकार निकल गया, मानो मैंने उसकी बात सुनी ही न हो...ताकि स्वयं मैं ही सर्वत्र व्याप्त और आसानी से पहचानी जाने वाली प्लेग की छूत से ग्रस्त न हो जाऊं। (यदि व्लासोव का यह आदमी कोई पहुंचा हुआ धूर्त होता तो क्या होता? अथवा इस ओसोबिस्त के मन में ही यह बात आ जाती कि स्वयं मेरे मामले में कोई गड़बड़ है? तो क्या होता?) अथवा यदि मैं एक ऐसे व्यक्ति को अत्यन्त सरल रूप में यह बात कहूं, जो उस समय सोवियत सेना की स्थिति से परिचित था: क्या सुरक्षा संगठन का वह सार्जेंट सेना के एक कप्तान की किसी भी बात पर ध्यान देता?

तो वह ओसोबिस्त उस असहाय आदमी पर अत्यन्त पाशविकता से चाबुक बरसाता रहा और उसे एक पशु की तरह खदेड़ता रहा।

यह तस्वीर मेरी स्मृति में सदा सर्वदा अंकित रहेगी।

यह, आखिरकार, द्वीपसमूह का प्रायः एक प्रतीक है। यह चित्र इस पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर होना चाहिए था। आवरण पृष्ठ पर यही चित्र दिया गया है (प्रकाशक)

व्लासोव के आदमियों को इन सब बातों का पूरा आभास था; वे पहले से ही यह जानते थे। इसके बावजूद उन्होंने अपनी जर्मन वर्दियों की बाईं बांह पर सेंट एन्ड्रूज़ की सफेद-नीले-लाल रंग की ढाल का चिह्न और "आर ओ ए" अंकित कर रखा था।[10] रूस के जर्मन अधिकृत क्षेत्रों के निवासी इन लोगों से जर्मनों का गुलाम होने के कारण घृणा करते थे। इसी प्रकार जर्मन लोग भी इनसे घृणा करते थे, क्योंकि इनका रक्त रूसी था। इनके छोटे-छोटे दयनीय समाचारपत्र जर्मन सेंसर की चौड़ी तलवार का प्रहार सहते थे। यह चिह्न: बृहतर जर्मनी और फूहरर हिटलर का होता था। और व्लासोव के आदमियों के सामने इस स्थिति से उबरने का मात्र एक रास्ता था· लड़ते-लड़ते मर जाना, और, जब वे लड़ाई के मैदान में नहीं होते थे तो स्वयं को वोदका में डुबा देते थे। इन लोगों का निवाश निश्चित था—इस जानकारी को लेकर उन्होंने युद्ध के वर्ष बिताये और विदेशों में समय काटा और किसी भी दिशा से, किसी भी रूप में उन्हें मुक्ति की संभावना दिखाई नहीं पड़ती थी।

हिटलर और उसके नज़दीक के लोग, उस समय भी जब वे प्रत्येक मोर्चे पर पीछे हट रहे थे और स्वयं उनका विनाश उनके सामने मुंह बाये खड़ा था, पूरी तरह से अलग रूसी सैनिक यूनिटों के प्रति प्रबल अविश्वास पर काबू नहीं कर पा रहे थे। वे ऐसी सैनिक डिवीजनें संगठित करने को तैयार नहीं होते थे जो पूरी तरह से रूसियों से बनी हों। वे एक ऐसे रूस की छाया मात्र को बर्दाश्त करने को तैयार नहीं थे जो पूरी तरह से उनके अधीन न हो। केवल अन्तिम पराजय के समय ही, नवम्बर १९४४ में, प्राग में अत्यन्त विलम्ब से इस नाटक की अनुमति दी गई: 'रूसी जनता की मुक्ति सम्बन्धं

समिति" बनाई गई, जिसमें रूस की विभिन्न जातियों के समूहों को शामिल किया गया और एक घोषणापत्र तैयार किया गया, जो इससे पहले की घोषणाओं की तरह ही न तो तीतर था और न ही बटेर; क्योंकि जर्मनी और नाज़ीवाद से स्वतंत्र रूस की कल्पना तक को अभी भी बर्दाश्त नहीं किया जा रहा था। व्लासोव इस समिति का अध्यक्ष बना। और केवल १९४४ की वसन्त ऋतु में ही इन लोगों ने वे व्लासोव डिवीजनें संगठित करनी शुरू कीं, जिनमें सब सैनिक रूसी ही थे।[११] सम्भवतः जर्मनी के बुद्धिमान राजनीतिक नेताओं ने यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि अब जर्मनी में काम करने वाले "रूसी मजदूर" ("ओस्तोवत्सी") हथियार उठाने के लिए दौड़ पड़ेंगे। लेकिन इस समय तक लाल सेना विस्तुला और डेन्यूब नदियों तक पहुंच चुकी थी। और यह अत्यन्त विद्रूपपूर्ण स्थिति थी कि मानो अत्यन्त समीप दृष्टि जर्मनों की दूरदर्शिता को प्रमाणित करने के लिए, व्लासोव की इन्हीं डिवीजनों ने अपनी प्रथम और स्वतंत्र कारवाई में, स्वयं जर्मनों पर ही प्रहार किया। सर्वव्यापी विनाश के मध्य व्लासोव ने प्राग के समीप अप्रैल के अन्त में अपनी ढाई डिवीजनें एकत्र कीं और इस कार्य में जर्मन सर्वोच्च कमान से कोई सम्पर्क नहीं किया। इस समय यह स्पष्ट हो गया था कि जर्मन सेना का एल० एस० जनरल स्टीनर चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग को मित्र राष्ट्रों को सुरक्षित समर्पित करने के स्थान पर इसे ध्वस्त कर डालने की तैयारी कर रहा है। और व्लासोव ने अपनी डिवीजनों को हुक्म दिया कि वे चेक विद्रोहियों की सहायता करें और पिछले तीन क्रूरतापूर्ण और निरर्थकता से भरे वर्षों में गुलामों की तरह काम करने वाले रूसियों के हृदय में जर्मनों के प्रति जो आक्रोश, कटुता और क्रोध संचित हुआ था वह जर्मनों पर होने वाले प्रहार में फूट पड़ा। जर्मनों को एक अप्रत्याशित दिशा से प्राग से बाहर खदेड़ दिया गया। क्या बाद में सब चेकोस्लोवाकिया निवासियों ने यह समझा कि कौन से रूसियों ने उनके नगर की रक्षा की थी? इसी प्रकार स्वयं हमारे इतिहास को भी विकृत बनाया गया है; हम दावा करते हैं कि सोवियत सेनाओं ने प्राग की रक्षा की, यद्यपि वे समय रहते प्राग की रक्षा के लिए नहीं पहुंच सकते थे।

इसके बाद व्लासोव की सेना ने बवेरिया और अमरीकी सेनाओं की ओर पीछे हटना शुरू किया। वे अपनी समस्त आशाएं इस बात पर लगाए हुए थे कि वे शायद मित्र राष्ट्रों के लिए उपयोगी सिद्ध हों। इस प्रकार के फांसी के फंदे में झूलते हुए वे अपनी रक्षा कर सकते थे। लेकिन अमरीकियों ने इनका स्वागत टैंकों की दीवारों से किया और याल्टा सम्मेलन की व्यवस्थाओं के अनुसार उन्हें सोवियत सेनाओं के समक्ष हथियार डालने के लिए बाध्य किया। आस्ट्रिया में भी मई के महीने में चर्चिल ने "वफादार मित्र राष्ट्र के रूप में काम करते हुए" यही काम किया। लेकिन हम लोगों ने अपनी पुरानी विनम्रता के कारण इस बात का प्रचार नहीं किया। चर्चिल ने ९०,००० सैनिकों की कज्जाक सेना को सोवियत कमान के हवाले कर दिया।[५२] इसके साथ ही उसने अनेक माल डिब्बे भर कर वृद्ध पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को भी लौटा दिया, जो अपनी कज्जाक भूमि की नदियों पर वापस नहीं लौटना चाहते थे। इस महान् वीर नायक ने, जिसके स्मारक कालांतर में समस्त इंगलैंड में व्याप्त हो जायेंगे, यह भी हुक्म दिया कि इन लोगों को भी अपनी मौत के समक्ष आत्म समर्पण कर देना चाहिए।

व्लासोव की जल्दबाजी में तैयार डिवीजनें, रूसियों की कुछ छोटी सैनिक टकड़ियां

भी जर्मन सेना की गहराइयों में फंसी हुई निरंतर कटुता से भरती जा रही थीं। यद्यपि ये जर्मन वर्दियां ही पहनती थी। इन लोगों ने विभिन्न युद्ध क्षेत्रों में और विभिन्न तरीकों से युद्ध का अन्त देखा।

स्वयं मुझे भी अपनी गिरफ्तारी से कुछ दिन पहले व्लासोव की डिवीजनों की गोलाबारी का सामना करना पड़ा था। पूर्वी प्रशा के उस हिस्से में जिसे हमने घेर लिया था, कुछ रूसी सैनिक टुकड़ियाँ थीं और जनवरी की एक रात को इनकी टुकड़ी ने हमारे घेरे को तोड़ कर पश्चिम की ओर भाग निकलने की कोशिश की और यह काम वे चुपचाप तोपों से गोलाबारी किए बिना ही करना चाहते थे। कहीं भी एकदम स्पष्ट मोर्चे नहीं थे और वे गहराई तक हमारी ओर घुस आए थे और उन्होंने मेरी तोपखाना टुकड़ी को दो ओर से घेर लिया था। मैं समय रहते मुश्किल से एकमात्र शेष रास्ते से पीछे हट कर अपनी टुकड़ी को निकाल ले जाने में सफल हुआ और इसके बाद मैं एक क्षतिग्रस्त तोप को वापस लेने पहुंचा और पौ फटने से पहले मैंने उन्हें बर्फ से अचानक उठते हुए देखा, जहां उन्होंने गड्ढे खोद कर मोर्चे बना लिये थे। ये लोग अपने सर्दियों में इस्तेमाल होने वाले बड़े चोगे पहने हुए थे और एडलिग शवेनकिटन में १५२ मिलीमीटर तोपों की एक बटालियन की एक छोटी टुकड़ी पर बड़ी प्रसन्नतापूर्वक प्रहार कर रहे थे और इन लोगों ने हथगोलों की मार से बारह भारी तोपों को बर्बाद कर डाला और ये तोपें एक गोला भी दागने में कामयाब नहीं हो सकीं। इस टुकड़ी की ट्रेसर गोलियों की मार से बचने के लिए हमारा अन्तिम छोटा तोप ग्रुप ताजे बर्फ में दो मील तक अन्धाधुंध भागा और पैसार्ज नदी पर बने पुल को पार करने में सफल हुआ। और यहीं इन लोगों को रोका जा सका।

इसके कुछ ही समय बाद मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और अब, विजय परेड के अवसर पर, हम लोग बुत्यर्की जेल में अपने सोने के तख्तों पर बैठे हुए थे। मैं उनकी सिगरेटों के कश खींच रहा था और वे मेरी सिगरेटों के। और उनमें से किसी न किसी आदमी के साथ मिल कर मैं पाखाने के छह बाल्टियों वाले ढोल को उठा कर भी ले जाता था।

"भाड़े के जासूस" की तरह व्लासोव के बहुत से आदमी युवक थे और इनका जन्म सन् १९१५ और १९२२ के बीच में हुआ था। यह उन्हीं लोगों की "युवा और अज्ञात जाति" थी, पुश्किन के नाम पर जिनका स्वागत करने के लिए तड़क-भड़क दिखाने वाला लुनाचारस्की तत्परता से आगे बढ़ा था। इनमें से अधिकांश उसी अन्ध संयोगवश व्लासोव की सैनिक टुकड़ियों में शामिल हो गए थे, जिस अन्ध संयोग के द्वारा बराबर के शिविर के रूसी युद्धबंदी जासूसी के काम के लिए तैयार हो गए थे—यह बात इस बात पर निर्भर करती थी कि कौन सा भर्ती करने वाला उनके शिविर में जा पहुंचा था।

भर्ती करने वालों ने उन्हें खीस निपोरते हुए बताया था कि—अथवा इसे यदि यह सच्चाई न होती तो शायद इसे खीस निपोरना कहा जा सकता था: "स्तालिन ने तुम्हें त्याग दिया है! स्तालिन को तुम्हारी कोई फिक्र नहीं है!"

जब इन्होंने स्वयं को कानून की परिधि के बाहर फेंका, सोबियत कानून ने उससे पहले ही इन्हें कानून की परिधि के बाहर फेंक दिया था।

तो इस प्रकार ये लोग भर्ती हो गए—कुछ ने यह केवल इसलिए किया कि वे मृत्यु शिविर से बाहर निकलना चाहते थे, तो कुछ अन्य इस आशय से इन टुकड़ियों में भर्ती हो

गए, ताकि मौका मिलते ही जर्मन सेनाओं का प्रतिरोध करने वाली स्थानीय सैनिक टुकड़ियों से जा मिलें। (और उनमें से कुछ ने यह किया भी! और जर्मनों का प्रतिरोध करने वाली टुकड़ियों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर लड़े! लेकिन स्तालिन के नियमों के अनुसार इस बात से इनकी सजाओं में कोई कमी नहीं हो सकती थी।) पर, कुछ लोगों के मामले में, सन् १९४१ की शरद में, शेखी बधारने की लम्बी अवधि के बाद की वह भयंकर पराजय, उनके दिलों को कचोट रही थी। कुछ का यह विश्वास था कि उन अमानुषिक युद्ध-बन्दी शिविरों का दोष स्तालिन के मत्थे है। वे लोग भी यह चाहते थे कि उन्हें एक ऐसा अवसर मिले कि वे स्वयं अपनी बात कह सकें, अपने भयंकर अनुभव के बारे में बता सकें: वे इस बात की पुष्टि करना चाहते थे कि वे स्वयं भी रूस की भूमि का कण थे, और रूस के भविष्य को प्रभावित करना चाहते थे, और अन्य लोगों की गलतियों की कठपुतली नहीं बनना चाहते थे।

लेकिन भाग्य ने उनके साथ इससे भी भयावह चाल चली, और वे पहले से भी कहीं अधिक हीन मोहरे बन गए। जर्मनों ने अपनी उथली मूर्खता और आत्म महत्व के कारण इन लोगों को केवल अपनी जर्मन रीह के लिए ही मरने की अनुमति दी और रूस की स्वतंत्र नियति की योजना बनाने के अधिकार से उन्हें वंचित कर दिया।

और मित्र सेनाएं २,००० कोस दूर थीं—खैर अन्ततः वे किस प्रकार के मित्र राष्ट्र सिद्ध हुए?

हमारे देश में "व्लासोववादी" शब्द की वही सशक्त ध्वनि होती है, जो अंग्रेजी में "गन्दे नाले" की होती है। हम यह अनुभव करते हैं कि इसके उच्चारण मात्र से हम अपने मुँह को गन्दा कर रहे हैं और कोई भी व्यक्ति "व्लासोववादी" से सम्बन्धित किसी भी विषय पर एक शब्द कहने का साहस नहीं करता।

लेकिन इतिहास लिखने का यह कोई तरीका नहीं है। आज, चौथाई शताब्दी बाद, जब उनमें से अधिकांश शिविरों में मौत के घाट उतर चुके हैं और जो किसी प्रकार जीवित बच गए हैं, वे सुदूर उत्तर में अपनी जिन्दगी के शेष दिन काट रहे हैं; मैं एक स्मरणपत्र जारी करना चाहूंगा। इन पृष्ठों के माध्यम से यह कहना चाहूंगा कि यह एक ऐसी घटना थी, जिसके बारे में संसार के समस्त इतिहास में कभी कोई दूसरा उदाहरण देखने को नहीं मिला; कि लाखों युवक[3], २० और ३० साल के बीच के युवक, अपनी पितृभूमि के विरुद्ध इसके सर्वाधिक दुष्ट शत्रु के साथियों के रूप में हथियार लेकर खड़े हो जायें। संभवतः इसमें विचार करने के लिए कुछ तत्व मौजूद हैं: इसके लिये किसे अधिक दोष दिया जा सकता है, उन युवकों को अथवा वयोवृद्ध पितृभूमि को? कोई व्यक्ति जीव विज्ञान के आधार पर, जाति और रक्त के आधार पर इसका स्पष्टीकरण नहीं दे सकता। इसका अनिवार्यतः सामाजिक कारण होगा। एक पुरानी कहावत है: अच्छी तरह खिलाये पिलाये जाने वाले घोड़े उछल कूद मचा कर विनाश नहीं करते।

आप एक ऐसे खेत की कल्पना कीजिए, जिसमें भुखमरी से ग्रस्त, उपेक्षित और उन्मत घोड़े इधर-उधर दौड़ते हुए तोड़-फोड़ कर रहे हों।



उसी वसंत ऋतु में अनेक प्रवासी रूसी भी इन्हीं कोठरियों में बन्द थे।

यह एक सपने के समान था : दफनाए हुए इतिहास को फिर खोद कर निकाल लिया गया था। गृहयुद्ध के बारे में लिखे गये वृहद् ग्रन्थ लम्बे अरसे पहले पूरे हो चुके थे और इन्हें कड़ाई से बन्द करके रख दिया गया था। लोगों न जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए गृहयुद्ध में हिस्सा लिया, उन पर फतवा दिया जा चुका था। पाठ्य पुस्तकों में गृहयुद्ध के घटनाक्रम की तिथियों का निश्चय हो चुका था। ऐसा लगता था कि श्वेत रक्षक आंदोलन के नेता अब इस पृथ्वी पर हमारे समकालीन नहीं थे बल्कि उन अतीत के प्रेत भर थे जो बहुत समय पहले अन्तर्धान हो चुका था। इज़राइल की जातियों से कहीं अधिक क्रूरतापूर्वक प्रवासी रूसियों को इधर उधर फैला दिया गया था। और, हमने अपनी सोवियत कल्पना में यह देखा कि यदि वे आज भी कहीं अपने जीवन का भार ढो रहे थे, तो केवल छोटे-छोटे बदबू भरे रेस्टोरेंटों में पियानों बादकों, नौकरों, धोबिनों तथा भिखमंगों के रूप में ही वे मार्फीन खाने के आदी हो चुके थे और प्राय: मुर्दों की तरह ही जीवन के अन्तिम दिन काट रहे थे। सन् १९४१ तक जब युद्ध शुरू हुआ, हमारे समाचारपत्रों, हमारे उदात्त साहित्य और कलाओं की हमारी समालोचना में किसी संकेत के माध्यम से भी यह पता लगा पाना असम्भव था (और हमारी कला और साहित्य के मज़ा लूटने वाले मालिकों ने हमें यह पता लगाने में कोई सहायता नहीं दी) कि विदेशों में जो रूस बसा हुआ था, वह एक महान् आध्यात्मिक संसार था, उसमें रूसी दर्शन जीवित था और विकसित हो रहा था ; कि इस संसार में बुलगाकोव, बर्दयाएव और लॉस्की जैसे दार्शनिक मौजूद थे; कि रूसी कला ने संसार को सम्मोहित कर लिया था ; कि राचमानीनोफ, चालियापिन, बेनोइस, दियाधीलेव, पावलोवा और जारोफ की दोनकज्जाक गीत मण्डली वहां मौजूद है ; कि दोस्तोएवस्की के साहित्य का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया जा रहा है (और यह काम उस समय हो रहा है, जब दोस्तोएवस्की सोवियत संघ में अग्राह्य बन चुके हैं); कि अविश्वासनीय लेखक नावोकोवसीरन भी वहीं मौजूद है ; कि स्वयं बुनिन भी जीवित है और पिछले २० वर्षों में वहां निरन्तर लेखन में लगे हैं ; कि कला पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं ; कि नाटकों का मंचन होता है ; कि रूस के एक ही इलाकों के रूसी ऐसे स्थानों पर एकत्र होते हैं, जहां वे अपनी मातृभाषा सुन सकते हों; और प्रवासी पुरुषों ने प्रवासी स्त्रियों से विवाह करना बन्द नहीं किया है, और इन विवाहों के परिणामस्वरूप उन बच्चों का जन्म हुआ है, जो स्वयं हमारी उम्र के हैं।

हमारे देश में प्रवासी रूसियों की जो तस्वीर प्रस्तुत की गई थी, वह इतनी मिथ्या थी कि यदि कोई व्यक्ति इस बारे में व्यापक सर्वेक्षण करता कि स्पेन के गृहयुद्ध में रूसी प्रवासियों ने किस पक्ष की ओर से युद्ध में हिस्सा लिया, अथवा यहां तक कि वे किस दूसरे पक्ष की ओर से लड़े, तो प्रत्येक व्यक्ति एक स्वर से यही उत्तर देता : फ्रेंको की ओर से ! हिटलर की ओर से ! आज भी हमारे देश में लोग यह नहीं जानते कि अधिकांश श्वेत-रक्षक प्रवासी रूसी स्पेन में गणराज्य की ओर से गृहयुद्ध में शामिल हुए थे; कि व्लासोव की डिवीजनों और वानपान्नविट्ज़ ("क्रासनोव" सेना) की कज्ज़ाक सेना में सोवियत नागरिक शामिल थे, प्रवासी रूसी नहीं। प्रवासी रूसियों ने हिटलर का समर्थन नहीं किया। इन लोगों ने हिटलर का पक्ष लेने के लिए मेरेभकोवस्की और जिप्पियस का बहिष्कार किया और उन्हें अपने देशवासियों से बिल्कुल अलग-थलग एकाकी जीवन बिताने

के लिए बाध्य कर दिया। मज़ाक में एक किस्सा सुनाया जाता है—यथार्थ यह है कि यह मज़ाक नहीं है—कि देनिकिन हिलटर के विरुद्ध सोवियत संघ की ओर से लड़ना चाहते थे और एक समय स्तालिन ने इनकी मातृभूमि में वापस लौटने की योजना बनाने की तैयारी की थी। वह यह काम सैनिक कारणों से नहीं, बल्कि जैसाकि स्पष्ट था, राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में करना चाहता था। फ्रांस पर जर्मनी का अधिकार हो जाने के बाद, बहुत बड़ी संख्या में रूसी प्रवासियों ने जर्मन सेनाओं का प्रतिरोध करने वाली फ्रांसीसी टुकड़ियों में हिस्सा लिया। इनमें युवक और वृद्ध दोनों शामिल हुए। और पेरिस की मुक्ति के बाद इन लोगों के झुंड के झुंड मातृभूमि वापस लौटने की अनुमति प्राप्त करने के लिए सोवियत दूतावास जा पहुंचे। इस बात का कोई महत्व नहीं था कि यह कैसा रूस था, आखिरकार यह रूस ही था। उन लोगों का यही नारा था, और इस प्रकार वे यह प्रमाणित करना चाहते थे, कि वे रूस के प्रति अपने प्रेम की जो बात कहते थे वह मिथ्या नहीं थी। (सन् १९४५ और १९४६ में जेलों में डाल दिये जाने के बाद वे इस बात से प्रायः प्रसन्न थे कि जेलों के ये सींखचे, जेलों के ये सन्तरी उनके अपने थे, रूसी थे। उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सोवियत लड़के अपना सिर खुरचते हुए यह कहते : ("सत्यानाश हो, हम लोग वापस क्यों आये ? क्या यूरोप में हमारे लिये काफी जगह नहीं थी" ?)

स्तालिन के इस तर्क को ध्यान में रखते हुए कि ऐसा प्रत्येक सोवियत नागरिक जो विदेश में रह चुका हो, शिविर में भेज दिया जाना चाहिए, प्रवासी रूसी इस नियति से किस प्रकार बच सकते थे ? बालकन देशों, मध्य यूरोप और हार्बिन में इन लोगों को सोवियत सेनाओं के पहुँचते ही गिरफ्तार कर लिया गया। इन लोगों को ठीक सोवियत नागरिकों की तरह ही इनके घरों में और सड़कों पर गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ समय तक राज्य सुरक्षा संगठन ने, केवल पुरुषों को और यह भी सबको नहीं, गिरफ्तार किया। इनमें वे पुरुष शामिल थे, जिन्होंने किसी न किसी समय राजनीतिक रुझान दिखाया था। आगे चलकर उनके परिवारों को रूस में निष्कासित कर दिया गया; लेकिन कुछ को बुलगारिया और चेकोस्लोवाकिया में जहां का तहां छोड़ दिया गया। फ्रांस में इन लोगों को सम्मानपूर्वक और फूलों की भेंट देकर सोवियत नागरिक बनने के लिए आमंत्रित किया गया और इन्हें बड़े सम्मान से मातृभूमि वापस भेज दिया गया; और सोवियत संघ पहुँचते ही इन्हें जेलों में डाल दिया गया। शंघाई के प्रवासी रूसियों के विरुद्ध यह कारवाई विलम्ब से हुई। सन् १९४६ में रूसियों के हाथ उतनी दूर नहीं पहुँच पाये थे। लेकिन एक सर्वाधिकारी दूत सोवियत सरकार की ओर से शंघाई पहुँचा और उसने सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल का एक आदेश पढ़कर सुनाया, जिसमें समस्त प्रवासी रूसियों को क्षमा कर दिया गया था। अब इस स्थिति में, कौन व्यक्ति इस पर विश्वास करने से इनकार करेगा ? निश्चय ही सरकार झूठ नहीं बोल सकती ? ऐसा कोई अध्यादेश था अथवा नहीं, पर इससे सुरक्षा संगठन का हाथ नहीं रोका जा सकता था। अध्यादेश की घोषणा सुनकर, शंघाई के रूसियों ने हर्ष प्रकट किया, उन्हें बताया गया कि वे अपने साथ अपनी जो सम्पत्ति, जो साज़-सामान ले जाना चाहें, ले जा सकते हैं। वे लोग अपने साथ मोटरगाड़ियाँ लेकर स्वदेश लौटे—देश इनका अच्छा उपयोग कर सकता था। इन्हें बताया गया कि वे सोवियत संघ में जहां चाहें बस सकते हैं और निश्चय ही, जो पेशा चाहें अपना सकते हैं, जो व्यापार

चाहें कर सकते हैं। इन लोगों को भाप से चलने वाले जहाज़ों से शंघाई से रूस पहुँचाया गया। इन यात्रियों का भाग्य अलग-अलग रहा। एक जहाज़ पर न जाने किस कारण से, उन्हें कुछ भी खाने को नहीं दिया गया, बाखोदका बन्दरगाह (प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि यह गुलाग द्वीपसमूह को भेजे जाने वाले कैदियों का एक प्रमुख संक्रमण केन्द्र था) पहुँचने के बाद इन लोगों को अलग-अलग कष्टों और परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। प्राय: इन सबको, कैदियों की तरह माल-डिब्बों में भर दिया गया। बस अन्तर केवल इतना था कि इनकी सशस्त्र सन्तरी कड़ाई से निगरानी नहीं करते थे और इन सन्तरियों के साथ पुलिस के कुत्ते भी नहीं थे। इनमें से कुछ को सचमुच बस्तियों में पहुँचाया गया, शहरों में ले जाया गया और वहां इन्हें दो या तीन वर्ष तक रहने दिया गया। अन्य को, पूरी की पूरी मालगाड़ियों में भर कर उनके शिविरों में पहुँचा दिया गया और वोलगा के उस पार जंगल में किसी ऊंचे तटबंध पर उतार दिया गया। इन्हें यहां अपने श्वेत पियानों और बढ़िया साज़ सामान के साथ उतार दिया गया। सन् १९४८-१९४९ में सुदूर पूर्व के भूत-पूर्व प्रवासी रूसियों को, जो अब तक शिविरों में पहुँचने में बचे रहे थे, एक-एक करके पकड़ लिया गया और शिविरों में फेंक दिया गया।

नौ वर्ष की उम्र में मैंने वी० वी० शुलिगन की छोटी-छोटी गहरे नीले रंग की पुस्तकों को, बूल्स वर्नी की पुस्तकों से कहीं अधिक दिलचस्पी से पढ़ा था। उस समय ये पुस्तकें हमारी पुस्तकों की दुकानों पर खुले रूप से बिकती थीं। शुलिगन की आवाज़ एक ऐसे संसार से आने वाली आवाज़ थी जो इस प्रकार अन्तिम रूप से अन्तर्धान हो चुका था कि अत्यन्त कल्पनाशील उड़ान के द्वारा विशाल लूबयांका के निःस्तब्धतापूर्ण बरामदों का कोई अदृश्य बिन्दु भी उसे प्रतिबिम्बित नहीं कर सकता था, जहां उसके और मेरे कदम २० वर्ष बीतने के पहले ही एक-दूसरे से मिलने जा रहे थे। यह सच है कि मैं इस व्यक्ति से २० वर्ष और बीत जाने तक स्वयं न मिल सका। लेकिन मुझे १९४५ की वसंत ऋतु में अनेक वृद्ध और युवक प्रवासी रूसियों का गहराई से अध्ययन करने का मौका मिला।

मैं कैप्टेन बोर्श और कर्नल मारियुश्किन के साथ डाक्टरी मुआयने के लिए गया था। और इनके नग्न, झुर्रियोंदार और गहरे पीले रंग के शरीरों का दयनीय दृश्य सदा मेरी आंखों के सामने झूलता रहा। ये अब शरीर नहीं रह गए थे, बल्कि मुलम्मा चढ़े सुरक्षित शव भर दिखाई पड़ते थे। यह कहा जा सकता था कि इन लोगों को कब्र में पहुँचने से बस पांच मिनट पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया था और हजारों मील दूर से मास्को लाया गया था। और अब मास्को में, सन् १९४५ में, अत्यन्त गंभीर तरीके से पूछ-ताछ का काम चल रहा था...इनके ऊपर सन् १९१९ में सोवियत सत्ता के विरुद्ध संघर्ष का अभियोग था।

पूछताछ और मुकदमे के दौरान एक के बाद एक अन्याय के हम इतने अधिक आदी हो चुके थे कि अब हमने यह अन्तर करना छोड़ दिया था कि किस व्यक्ति के साथ किस सीमा तक अन्याय हुआ। यह कैप्टेन और यह कर्नल ज़ार की रूसी सेना के पुराने अफसर थे। इन दोनों की उम्र ४० से अधिक थी और ये सेना में २० वर्ष तक सेवा कर चुके थे कि इन्हें तार से यह सूचना मिली कि पेत्रोग्राद में ज़ार का तख्ता उलट दिया गया है। ये २० वर्ष तक अपनी शपथ के अनुसार ज़ार की सेवा करते रहे थे। और अब इन लोगों ने अपनी इच्छा के विरुद्ध—क्योंकि हम यही जानते हैं, शायद अपने मन में यह दोहराते हुए

कि "मरने दो ? अब यही करना है !"—इन लोगों ने अस्थायी सरकार के प्रति वफादारी की शपथ ली। इसके बाद किसी अन्य ने उनसे और शपथ लेने को नहीं कहा, क्योंकि पूरी सेना विशृंखलित हो गई थी। इन लोगों को वे नए तौर तरीके पसन्द नहीं आए, जिनमें सैनिक अपने अफसरों के कन्धों पर लगे पद सूचक सितारे नोंच फेंकते थे और उन्हें मार डालते थे। और उन्हें यह बड़ा स्वाभाविक लगा कि इसके विरुद्ध लड़ने के लिए, उन्हें दूसरे अफसरों के साथ मिल जाना चाहिए। और यह लाल सेना के लिए स्वाभाविक था कि वह उनके विरुद्ध लड़ती और उन्हें समुद्र में धकेल देती। लेकिन एक ऐसे देश में, जहां न्याय प्रक्रिया के कुछ अंश मौजूद थे, इन लोगों के ऊपर मुकदमा चलाने का क्या आधार था और वह भी चौथाई शताब्दी बाद ? (वे इस पूरी अवधि में इन लोगों ने केवल निजी तौर पर जीवन यापन किया। उन्होंने राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा नहीं लिया था...मारियुश्किन ने तो अपनी गिरफ्तारी के क्षण तक, ऐसी किसी गतिविधि में हिस्सा नहीं लिया था। हां, बोर्श कज्ज़ाकों को लाने वाली मालगाड़ी में आस्ट्रिया में सवार हुआ था। लेकिन यह मालगाड़ी वृद्ध स्त्री-पुरुषों को ला रही थी, सशस्त्र सेनाओं को नहीं।)

पर, सन् १९४५ में, सोवियत सत्ता के केन्द्र में इन लोगों के ऊपर यह अभियोग लगाया गया : श्रमिकों और किसानों की सोवियतों की सरकार को उलट देने के प्रयास; सोवियत प्रदेश में सशस्त्र घुसपैठ, अर्थात् उस समय तुरन्त रूस से न चला जाना जब पेत्रोग्राद को सोवियत प्रदेश घोषित कर दिया गया था; अन्तर्राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग की सहायता (जिसके दर्शन उन्हें सपने में भी नहीं हुए थे); क्रान्ति विरोधी सरकारों की सेवा (अर्थात् स्वयं अपने जनरलों के अधीन काम करना, जिनके अन्तर्गत वे जीवन पर्यन्त काम करते रहे थे।) और इन समस्त धाराओं को—अनुच्छेद ५८ की पहली, दूसरी, चौथी और तेरहवीं धाराओं को—१९२६ में स्वीकृत दण्डसंहिता में शामिल किया गया था अर्थात् गृहयुद्ध समाप्त होने के ६-७ वर्ष बाद यह दंडसंहिता तैयार की गई थी। घटना के बाद बने किसी कानून को इस प्रकार लागू किये जाने का यह विलक्षण और अद्भुत उदाहरण है ! इसके अलावा दंडसंहिता के अनुच्छेद २ में यह उल्लेख था कि दंडसंहिता केवल उन नागरिकों पर लागू होगी, जिन्हें रूस गणराज्य के अधिकार क्षेत्र में गिरफ्तार किया गया हो। लेकिन राज्य सुरक्षा संगठन के सशक्त हाथों ने उन लोगों को धर दबोचा था, जो किसी भी रूप में सोवियत नागरिक नहीं थे और जिन्हें यूरोप और एशिया के देशों से गिरफ्तार किया गया था।[१४] और हम कानून के सीमित होने की बात तक नहीं उठा सकते। इस आपत्ति से बचने के लिए बड़ी चालाकी बरती गई थी—सीमा निर्धारित करने वाली कोई भी व्यवस्था या कानून अनुच्छेद-५८ पर लागू नहीं होता। ("बीती हुई बातों को कुरेदने में क्या फायदा?") ऐसी व्यवस्थाओं और कानूनों का उल्लेख तो केवल अपने घरेलू उन जल्लादों के मामले में ही किया जा सकता था; जिन्होंने उससे कई गुने अपने देशवासियों को मौत के घाट उतार दिया था, जितने समस्त गृहयुद्ध की भेंट नहीं चढ़े थे।

कम-से-कम मारियुश्किन को प्रत्येक बात स्पष्ट रूप से याद थी। उसने बड़े विस्तार से हमें नोवोरोविस्क से बाहर निकाले जाने की बातें बताईं। लेकिन बोर्श तो अपनी दूसरी बाल्यावस्था में प्रवेश कर गया था और लूबयांका में इस्टर का त्यौहार मनाने के बारे में कुछ न कुछ निरन्तर कहता रहता। उसने ताड़ वृक्ष वाले रविवार (पाम सण्डे) के सप्ताह और पवित्र सप्ताह में मिले रोटी के राशन को खाया था और शेष को बचा रखा था और

वह रोटी के बासी टुकड़ों के स्थान पर धीरे-धीरे ताजे टुकड़े रखता जाता था। इस प्रकार जब लेनतेन का उपवास तोड़ने का समय आया उसके पास सात दिन का पूरा राशन इकट्ठा हो गया था – और उसने ईस्टर त्यौहार के तीन दिन "दावत" उड़ाई।

मुझे नहीं मालूम कि गृहयुद्ध के दौरान ये लोग किस प्रकार के श्वेत रक्षक रहे थे। इन दोनों में से कौन सा व्यक्ति किस रूप में श्वेत रक्षकों में शामिल हुआ था। क्या ये लोग उन गिने चुने श्वेत रक्षकों में से थे, जो हर दसवें मजदूर को बिना मुकदमे के फांसी पर लटका देते थे और किसानों को कोड़े लगाते थे अथवा वे दूसरी किस्म के थे, सैनिकों के बहुमत में से थे। उन लोगों से मास्को में पूछताछ की जा रही थी और उन्हें मास्को में सजाएं सुनाई जा रही थीं। यह अपने आपमें किसी बात का प्रमाण नहीं था और न ही इस बात का कोई महत्व था। लेकिन यदि उस समय के बाद, ये लोग चौथाई शताब्दी तक अवकाश प्राप्त अफसरों के रूप में नहीं, सम्मानपूर्वक पेन्शन प्राप्त करने वाले अफसरों के रूप में नहीं, बल्कि बेघर और निष्कासित लोगों की तरह रहते रहे तो कोई व्यक्ति इनके ऊपर मुकदमा चलाने के किसी नैतिक आधार का उल्लेख कैसे कर सकता है ? यह एक ऐसी द्वन्द्वात्मकता है, जिसे अनातोली फ्रांस ने सिद्ध कर दिया था। लेकिन जो हमारी समझ में नहीं आती। अनातोली फ्रांस के अनुसार, आज का दिन शुरू होने तक, कल का बलिदानी गलत सिद्ध हो चुका होता है—वास्तव में, उस पहले क्षण से जब उसके शरीर को लाल कमीज ने आच्छादित किया, वह गलत सिद्ध हो चुका होता है। और इसका विलाम भी सही है। लेकिन हम इस बात को इस प्रकार कहते हैं : यदि केवल एक साल तक वे उस समय मेरे ऊपर सवारी करते रहे, जब मैं घोड़े का एक छोटा सा बच्चा ही था, तो मुझे जीवन भर घुड़सवारी का घोड़ा कहा जाता रहेगा; चाहे मुझे लम्बे अरसे से घोड़ा गाड़ी में ही क्यों न जोता जाता रहा हो।

कर्नल कोंस्तांतिन कोंस्तांतिनोविच यासेविच इन असहाय प्रवासी ममियों (मुलम्मा चढ़े शवों) से बहुत भिन्न था। वह यह स्पष्ट रूप से मानता था कि गृहयुद्ध की समाप्ति के बोलशेविकवाद के विरुद्ध संघर्ष समाप्त नहीं हो गया था। यह प्रश्न पूछे जाने पर कि उसने अपना संघर्ष किस प्रकार जारी रखा, कहां और किसके विरुद्ध उसका संघर्ष जारी रहा—वह अपनी बात मुझे नहीं समझा सका। लेकिन जेल की कोठरी में बन्द होने पर भी वह यही समझता था कि वह आज भी सेना की सेवा में नियुक्त है। भ्रांतिग्रस्त संकल्पनाओं, विचारों की धूमिल और टूटी हुई रेखाओं तथा, हम अधिकांश लोगों के मस्तिष्कों में फैली हुई उलझनों के मध्य, उसका प्रत्येक वस्तु के प्रति स्पष्ट और निश्चित मत था। जीवन के प्रति इस तार्किकतापूर्ण दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप, उसका शरीर भी निरन्तर शक्ति, लचकीलेपन और सक्रियता का परिचय देता था। किसी भी रूप में उसकी उम्र ६० साल से कम नहीं थी। उसके सिर पर एक भी बाल नहीं था। वह पूछताछ के बाद जीवित बचा हुआ था और सज़ा सुनाये जाने की प्रतीक्षा कर रहा था—हम सब लोगों की तरह। वस्तुत: उसे किसी भी व्यक्ति से किसी भी प्रकार की सहायता की आशा नहीं थी। लेकिन वह अपनी त्वचा को जवान बनाये रखने, इसका गुलाबी रंग बनाए रखने में सफल हुआ था। जेल की कोठरी में मौजूद हम सब लोगों में केवल वही हर रोज़ सुबह कसरत करता था और नल पर मुंह धोता था। शेष लोग जेल के राशन से प्राप्त शक्ति का अपव्यय नहीं करना चाहते थे। वह अपने समय का सदुपयोग करता था और जब कभी

दीवार के सहारे लगे तख्तों के बीच कुछ स्थान खाली हो जाता तो वह इस १५ या २० फुट जगह के बीच बड़े सधे हुए कदमों से अपने शरीर को साध कर, अपनी बांहों को छाती के ऊपर बांधकर और स्पष्ट युवा दृष्टि से दीवारों को वेधता हुआ इधर-उधर चक्कर काटता था।

और हमारे तथा उसके बीच यह अन्तर था कि हम इस अचरज में फंसे हुए थे कि हमारे साथ क्या हो रहा है, जबकि उसके चारों ओर की कोई भी वस्तु उसकी आशाओं, अपेक्षाओं के विपरीत न होती और इस कारण से वह कोठरी में पूरी तरह से एकाकी बन गया था।

एक वर्ष बाद, मैं जेल में उसके आचरणों को समझ सका; उसके आचरण का मूल्यांकन कर सका। मैं एक बार फिर बुत्यर्की जेल में पहुंच गया था और उन ७० कोठरियों में मुझे यासेविच के साथी अभियुक्तों से मिलने का मौका मिला, जिन्हें १० से १५ वर्ष तक की कैद की सजाएं सुनाई जा चुकी थीं। इनकी टोली में प्रत्येक व्यक्ति को जो सजाएं सुनाई गई थीं उनका विवरण सिगरेट के कागज़ पर टाइप कर लिया गया था और न जाने कैसे यह विवरण उनके पास मौजूद था। इस सूची में सबसे ऊपर यासेविच का नाम था और उसकी सज़ा थी : गोली से उड़ा दिया जाय। तो वह यह देख रहा था—वह इसे पहले से ही देख रहा था - वह मेज़ से लेकर दरवाजे तक आगे-पीछे चक्कर लगाते समय, कोठरी की दीवारों को वेधकर उस पार यही देखा करता था। लेकिन जीवन में उसने जो मार्ग अपनाया था, उसके सही होने के प्रति उनके मन में जो निर्विवाद सजगता थी, वह उसे असाधारण शक्ति प्रदान करती थी।

इन प्रवासी रूसियों में एक स्वयं मेरी उम्र का भी था। वह था आइगोर त्रोंको। हम लोग दोस्त बन गए। हम दोनों बड़े दुर्बल थे। हमारा शरीर सूख गया था; हमारी हड्डियों पर खिची हुई हमारी त्वचा मटियाले पीले रंग की हो गई थी। (हम इस सीमा तक पस्त क्यों हो गए थे ? मैं समझता हूं कि इसका प्रमुख कारण अध्यात्मिक उलझन थी।) हम दोनों दुबले और अपेक्षाकृत लम्बे थे और बुत्यर्की के अहातों में गर्मी की तेज़ हवा हमें झकझोर डालती थी। हम लोग सदा बराबर-बराबर चलते थे, बूढ़े आदमियों की तरह सावधानी से कदम बढ़ाते थे और हमारे जीवन में क्या-क्या समानताएं थीं, उनके बारे में विचार करते थे। हमारा दक्षिण रूस में एक ही वर्ष में जन्म हुआ था। जब हम दूध मुंहे बच्चे ही थे कि किस्मत नाम की औरत ने अपने विख्यात बटुए के अन्दर हाथ डाला और मेरे लिए एक छोटा तिनका और उसके लिए एक लम्बा टुकड़ा खींचकर बाहर निकाल लिया। इस प्रकार वह समुद्र के पार जा पहुँचा, यद्यपि उसके श्वेत रक्षक दल में शामिल पिता एक मामूली से सैनिक थे, सम्पत्तिविहीन तार कर्मचारी थे।

मुझे यह बात अत्यन्त दिलचस्प लगती थी कि मैं उसके जीवन के माध्यम से अपनी पीढ़ी के उन समस्त देशवासियों के जीवन के बारे में कल्पना करूं, जो रूस के बाहर पहुंच गए थे। इन लोगों का पालन-पोषण अच्छी पारिवारिक देख-रेख में हुआ था, यद्यपि इनके परिवारों के साधन बहुत मामूली थे। यहां तक कि बहुत कम थे। पर इनका पालन-पोषण, उस समय विद्यमान परिस्थितियों के अन्तर्गत, अच्छे ढंग से हुआ था और वे सुरक्षित थे। ये लोग भय और दमन से अनजान रह कर ही बड़े हुए थे। यद्यपि श्वेत रक्षकों के संगठन उस समय तक इनके ऊपर कुछ नियन्त्रण रखते थे, जब तक कि ये स्वयं सशक्त

न हो जायें । ये लोग इस प्रकार बड़े हुए कि उस युग के समस्त यूरोपीय युवक जिन बुरे कामों से प्रभावित थे— अत्यधिक अपराध, जीवन के प्रति दायित्वहीन दृष्टिकोण, विवेकहीनता और व्यभिचार—वे इन लोगों को छू तक नहीं पाये थे। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वे लोग उस अमिट दुर्भाग्य की छाया में बड़े हुए थे, जो उनके परिवारों पर फूट पड़ा था। चाहे उनका पालन-पोषण किसी भी देश में क्यों न हुआ हो, वे रूस को ही अपनी मातृभूमि समझते थे। उनका आध्यात्मिक विकास रूसी साहित्य पर हुआ था, और यह उनके लिए इस कारण और भी प्रिय हो उठा था, क्योंकि यह उनकी मातृभूमि के अन्त का समारम्भ था, क्योंकि उनके लिए उनकी मातृभूमि केवल एक भौगोलिक और भौतिक तथ्य के रूप में ही विद्यमान न थी। समकालीन साहित्य उन्हें सामान्यतया हमारी तुलना में कहीं अधिक आसानी से मिल जाता था। लेकिन उन्हें सोवियत पुस्तकें अत्यन्त कम मात्रा में मिलती थीं और वे इस कमी को बहुत गहराई से अनुभव करते थे और इस कारण से वे यह सोचते थे कि सोवियत रूस में क्या सर्वाधिक महत्वपूर्ण, सर्वोपरि और सर्वाधिक सुन्दर है, उसे वे नहीं समझ पाते; और जो पुस्तकें उन्हें मिली थीं, वे विकृति को, झूठ को प्रस्तुत करती थीं और अपूर्ण थीं। हमारे वास्तविक जीवन की जो तस्वीर उनकी आँखों के सामने थी, वह अत्यन्त धूमिल थी। लेकिन अपनी मातृभूमि में वापस लौटने की उनकी इतनी उत्कृष्ट अभिलाषा थी कि यदि हम सन् १६४१ में उनका आह्वान करते थे तो वे लाल सेना में भर्ती हो जाते और उनके लिए अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर देना जीवित रहने से कहीं अधिक सुखद होता। २५ से २७ वर्ष की उम्र के ये युवक, कई दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते थे और बड़ी दृढ़ता से उनका समर्थन भी। ये दृष्टिकोण पुराने जनरलों और राजनीतिक नेताओं के विचारों से निश्चित रूप से विपरीत थे। आइगोर की टोली को "नेप्रेद्रेशेन्तसी"—"समय से पहले ही मूल्यांकन न करने वाले" के नाम से पुकारा जाता था: इन लोगों ने घोषणा की थी कि जिन लोगों ने मातृभूमि के पिछले दशकों के सम्पूर्ण और जटिल भार को वहन करने में हिस्सा नहीं बटाया है, उन्हें रूस के भविष्य के बारे में कोई भी निर्णय करने का अधिकार नहीं है। ऐसे व्यक्ति को किसी भी वस्तु की पूर्व-कल्पना करने का भी अधिकार नहीं है, बल्कि उसे लोगों के निश्चयों को शक्ति प्रदान करने के लिए वहां जाना चाहिए।

हम लोग अक्सर लकड़ी के तख्तों पर एक दूसरे के बराबर लेटे रहते। मैं शक्तिभर उसके संसार को समझने की कोशिश करता और बाद में जिन लोगों से मेरी मुलाकात हुई, उसके आधार पर मेरे समक्ष वह संकल्पना स्पष्ट हुई, जो आइगोर से मिलकर मेरे मन में उत्पन्न हुई थी—गृहयुद्ध के दौरान रूस की सांस्कृतिक शक्तियों के एक महत्वपूर्ण भाग के रूस से बाहर चले जाने के कारण हम रूसी संस्कृति की एक महान और महत्वपूर्ण धारा से वंचित हो गए थे। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति, जो सच्चे अर्थों में इस संस्कृति को प्यार करता है, इन दोनों धाराओं के पुनर्मिलन का प्रयोग करेगा – स्वदेश में प्रवाहित धारा और इसकी विदेशी सहायक नदी। केवल इसके बाद ही हमारी संस्कृति को अपनी समग्रता प्राप्त होगी। केवल तभी यह उदार विकास की अपनी क्षमता को उद्घाटित कर सकेगी।

और मैं उस दिन तक जीवित रहने का सपना देखता हूँ।

मनुष्य कमजोर है, कमजोर होता है। अन्ततः, उस वसन्त ऋतु में हममें से अत्यधिक दृढ़ और कट्टर लोग भी क्षमा की कामना करने लगे थे और कुछ अधिक जीवन के लिए बहुत कुछ त्यागने को तत्पर थे। कैदी आपस में यह किस्सा एक दूसरे से कहते थे: "तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है, अभियुक्त ?" "मैं आपसे यही प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे जहां चाहें भेज दें, बस यह स्थान सोवियत संघ के अधीन हो !" और वहां धूप भी हो ! कोई भी व्यक्ति हमें सोवियत सरकार के अधिकार क्षेत्र से वंचित करने की कोशिश नहीं कर रहा था। हां, केवल हमें धूप से वंचित करने की व्यवस्था थी। कोई भी व्यक्ति आर्कटिक वृत्त से आगे अर्थात् उन इलाकों में नहीं जाना चाहता था जहां प्रायः कभी सूरज नहीं निकलता और जहाँ कैदी स्कर्वी रोग से ग्रस्त हो जाते हैं और पोष्टिक आहार के अभाव में उनका स्वास्थ्य चौपट हो जाता है। न जाने क्यों, जेल की कोठरियों में अलताई क्षेत्र के बारे में एक किस्सा विशेष रूप से प्रचलित था। ऐसे गिने-चुने कैदी, जो किसी न किसी समय वहाँ हो आये थे, लेकिन विशेषकर वे जो वहाँ कभी नहीं गए थे, अपने साथी कैदियों को अलताई के अद्भुत देश के बारे में बड़े सुखद किस्से सुनाते थे और उनकी आँखों के सामने बड़े सुखद सपनों को ताना-बाना बुनते थे ! इस क्षेत्र का विस्तार साइबेरिया जैसा था और यहां की जलवायु सामान्य थी। गेहूँ के कगारों के बीच शहद की नदियां बहती थीं। चीड़ के वृक्षों से ढके ढलान और पर्वत थे। भेड़ों, जंगली पक्षियों और मछलियों के विशाल झुंडों का वहाँ अस्तित्व था। वहाँ के गांव अच्छी आबादी वाले और समृद्ध थे।[15]

काश ! हमें इस शान्त वातावरण में कहीं जा छिपने का स्थान मिल पाता ! काश ! हम इस दूषणरहित शुद्ध वायु में सुबह के समय मुर्गे की बाँग की शुद्ध प्रतिध्वनि सुन पाते ! अथवा किसी घोड़े के अच्छे और गम्भीरतापूर्ण चेहरे को थपथपाते ! नाश हो, इन गम्भीर समस्याओं का ! कोई और इन समस्याओं से अपना सिर टकराये, कोई हमसे अधिक मूर्ख व्यक्ति यह काम करे। काश ! हम वहां पूछताछ अधिकारी की माँ-बहन की गालियों और निरन्तर एक ही ढर्रे पर चलने वाले अपने समस्त जीवन, जेल के तालों के खुलने और बन्द होने और जेल की कोठरी की दम घोट देने वाली बासी हवा से मुक्ति पा सकते। केवल हमें एक जीवन प्राप्त होता है—एक छोटा संक्षिप्त जीवन ! और हमने यह अत्यधिक अपराधपूर्ण तरीके से अपने इस जीवन को किसी की मशीनगनों के सामने धकेल दिया अथवा इसे अपने साथ, यद्यपि यह अभी तक गन्दगी से बचा हुआ था, राजनीति के गन्दे कूड़े-कर्कट के ढेर में घसीट लाये। वहाँ, अलताई में, ऐसा लगता था, मानो हम जंगल के बराबर किसी गांव के किनारे बनी मामूली से मामूली और अन्धकार ग्रस्त झोंपड़ी में रह सकेंगे और हम जंगल में जा सकेंगे, लकड़ी इकट्ठी करने के लिए नहीं, कुकुरमुत्ता इकट्ठा करने के लिए। बस, वैसे ही, बिना किसी कारण के हम जंगल के भीतर जायेंगे और दो पेड़ों के तनों को अपनी बाहों में समेट लेगें; मेरे प्रिय वृक्षो बस मुझे तुम्हारी ही आवश्यकता है।

और स्वयं वसंत ऋतु क्षमादान का पूर्व सूचक लग रही थी। यह एक ऐसी वसंत ऋतु थी, जिसने एक विराट युद्ध की समाप्ति की सूचना दी थी। हम देख रहे थे कि हम लाखों कैदी शिविरों की ओर बढ़ते जा रहे हैं और यह जानते थे कि शिविरों में अन्य लाखों

कैदियों से हमारी मुलाकात होगी। यह हो ही नहीं सकता कि संसार की महान्तम विजय के बाद इतनी बड़ी संख्या में लोगों को कैद रखा जाये! हम लोगों को बस भयभीत करने के लिए ही फिलहाल कैद रखा जा रहा है: ताकि हम इन बातों का स्मरण रखें और इन्हें भुला न दें। निश्चय ही, जल्दी ही पूर्ण क्षमादान दिया जायेगा। और हम सब लोगों को रिहा कर दिया जायेगा। कोई कैदी तो शपथ लेकर यह बोला कि उसने समाचारपत्रों में यह पढ़ा है कि स्तालिन ने, किसी अमरीकी संवाददाताओं के प्रश्न का उत्तर देते हुए, (इस संवाददाता का नाम उसे याद नहीं रहा) कहा कि युद्ध के बाद एक ऐसा क्षमादान दिया जायेगा, जिसका दूसरा उदाहरण संसार ने कभी नहीं देखा। और एक पूछताछ अधिकारी ने सचमुच किसी से यह कहा था कि जल्दी ही सामान्य क्षमादान दिया जायेगा। (ऐसी अफवाहें पूछताछ अधिकारियों के लिये सहायक बनती थीं क्योंकि इससे कैदियों की संकल्प शक्ति क्षीण हो जाती थी: मरने दो इसे, हमें बयान पर हस्ताक्षर कर देने चाहिएं। अब क्षमादान में अधिक विलम्ब नहीं है।)

लेकिन...क्षमादान देने के लिये और दयाभावना का प्रदर्शन करने के लिए संबंधित व्यक्ति में बुद्धिमानी की आवश्यकता होती है। हमारे समस्त इतिहास में यह तथ्य मौजूद रहा और बहुत समय तक यह तथ्य कायम रहेगा।

हम लोगों ने अपने बीच मौजूद कुछ गिने चुने गम्भीर लोगों की इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, जिन्होंने यह कहा था कि पूरी चौथाई शताब्दी में राजनीतिक कैदियों को कभी भी क्षमादान नहीं मिला—और कभी भविष्य में भी यह क्षमादान प्राप्त नहीं होगा। कोठरी में मौजूद मुखबिरों में से कोई विशेषज्ञ यह उत्तर देने के लिये उठ खड़ा हुआ: "हां, क्षमादान मिला था! सन् १९२७ में। क्रान्ति की १०वीं वर्ष गांठ पर। सारी जेलों को खाली कर दिया गया था और उनके ऊपर सफेद झंडे फहरा दिये गए थे।" जेलों के ऊपर फहराने वाले सफेद झंडों का यह आश्चर्यजनक दृश्य विशेष रूप से प्रभावशाली लगता था—लेकिन सफेद झण्डे ही क्यों?[१९] हम लोगों ने अपने बीच मौजूद उन कुछ गिने-चुने बुद्धिमानों की बातों की एकदम उपेक्षा कर दी, जो हमें यह समझाने की कोशिश कर रहे थे कि करोड़ों लोगों को केवल इसीलिए कैद में डाला गया है क्योंकि युद्ध समाप्त हो गया था। अब हमारी मोर्चों पर ज़रूरत नहीं रह गई है। मोर्चों के पीछे देश के विभिन्न हिस्सों में हम खतरनाक थे और क्या हमारे बिना सोवियत संघ के सुदूर हिस्सों में किसी भी निर्माण योजना में एक भी ईंट लगाई जा सकती थी। हम लोग अपनी मनचीती कल्पनाओं में इस सीमा तक खोये हुये थे कि स्तालिन की सीधी सादी आर्थिक गणनाओं तक की ओर ध्यान देने को तैयार नहीं थे—उसकी विद्वेषपूर्ण भावनाओं की ओर ध्यान देना तो दूर। इस वर्ष, सेना से छुट्टी पाने के बाद, ऐसा कौन-सा व्यक्ति होगा, जो अपने परिवार और घर को छोड़ कर कोलिमा, और वोरकुता अथवा साइबेरिया चला जाये, जहां न तो सड़कें थीं और न ही मकान? वस्तुतः यह दायित्व राज्य योजना आयोग का था कि वह योजना के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए एम० वी० डी० को निश्चित संख्या में मज़दूर उपलब्ध कराये और इस प्रकार अपने आप यह निश्चय हो जाता था कि कितने लोगों को गिरफ्तार किया जाना चाहिए। हम लोग क्षमायाचना, एक व्यापक और उदात्त क्षमायाचना की प्रतिज्ञा कर रहे थे और उसकी ओर अत्यन्त उत्कट प्रत्याशा से आंखें लगाये बैठे थे! कोई बोला कि इंग्लैण्ड में राजा के गद्दी पर बैठने की वर्षगांठ पर कैदियों को

क्षमादान मिलता है। सन् १९१२ में इसके रोमानोव वंश के ज़ारों के शासन की ३००वीं वर्षगांठ पर अनेक राजनीतिक कैदियों को क्षमादान दिया गया था। तो क्या अब यह सचमुच सम्भव था कि जब हमने एक ऐसी विजय प्राप्त की, जो हमारे समस्त युग और उसके बाद तक प्रतिध्वनित होती रहेगी, स्तालिन की सरकार क्षुद्र और प्रतिशोधपूर्ण बनी रहे और अपने प्रजाजनों में से नगण्य से नगण्य, तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति के प्रति अपने आक्रोश को बनाए रखें ?

एक अत्यन्त सीधासाधा तथ्य होता है, जिसका केवल कष्टों के माध्यम से ही ज्ञान होता है : युद्ध में विजय धन्य नहीं होती, बल्कि पराजय धन्य होती है। सरकारों को विजयों की आवश्यकता होती है और जन-सामान्य को पराजयों की। विजय के फलस्वरूप और अधिक विजय प्राप्त करने की उत्कट इच्छा होती है। पर पराजय के बाद लोग स्वतंत्रता चाहते हैं - और अक्सर इसे प्राप्त भी कर लेते हैं। जातियों को ठीक उसी प्रकार पराजय की आवश्यकता होती है, जिस प्रकार व्यक्ति को कष्टों और दुर्भाग्य की आवश्यकता होती है : इसके अतिरिक्त जीवन बलात् गहन हो उठता है और आध्यात्मिक उद्रेक उत्पन्न होता है।

पोलतावा की विजय रूस का एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य सिद्ध हुई : उसके परिणामस्वरूप दो शताब्दियों तक रूस को भार ढोना पड़ा, बर्बादी और स्वतंत्रता के अभाव का सामना करना पड़ा तथा एक के बाद एक युद्ध में फंसना पड़ा। पोलतावा की विजय स्वीडन के लोगों के लिए मुक्तिदायिनी सिद्ध हुई। युद्ध की इच्छा समाप्त हो जाने के कारण, स्वीडन के लोग समस्त यूरोप में सर्वाधिक समृद्ध और सर्वाधिक स्वतंत्र बन गए।[१७]

हम लोग नेपोलियन के ऊपर अपनी विजय पर गर्व करने के इतने आदी हो चुके हैं कि इसके कारण ही आधी शताब्दी तक गुलाम-किसानों की मुक्ति संभव नहीं हो सकी। इसके कारण ही, सशक्त राजतंत्र ने दिसम्बरवादियों को समाप्त कर दिया। (फ्रांस का अधिकार रूस के लिए कभी भी यथार्थ नहीं बन सका।) लेकिन क्रीमिया के युद्ध, जापान से हुए युद्ध और पहले महायुद्ध में जर्मनी से युद्ध और इनमें मिली पराजय ने स्वतंत्रता और क्रान्ति को जन्म दिया।

उस वसंत ऋतु में हम क्षमादान में विश्वास कर रहे थे और यह हमारा कोई मौलिक चिंतन नहीं था। पुराने कैदियों से बात करते हुए, आपको धीरे-धीरे यह पता चल जाता है कि जेल की सलेटी दीवारों के भीतर क्षमादान की यह उत्कट अभिलाषा और क्षमादान में इस प्रकार का विश्वास सदा मौजूद रहा। अनेक दशकों से, निरन्तर एक के बाद एक दशक में, कैदियों की एक के बाद एक लहर ने सदा यह कामना की कि क्षमादान दिया जाएगा अथवा कोई नई दंड संहिता लागू होगी, अथवा सब कैदियों के मामलों पर पुनर्विचार होगा। और इन अफवाहों को सुरक्षा संगठनों के अधिकारियों ने सदा अत्यन्त कुशलतापूर्वक सतर्कता से बढ़ावा दिया। कैदी की कल्पनाशीलता मुक्ति देने वाले देवदूत के चिर-प्रतीक्षित आगमन की प्रायः प्रत्येक बात में दर्शन करती : अक्तूबर क्रान्ति की अगली वर्षगांठ, लेनिन की वर्षगांठ, विजय दिवस, लाल सेना दिवस, पेरिस कम्यून दिवस, अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी का प्रत्येक नया अधिवेशन, प्रत्येक पंचवर्षीय योजना का समापन, सर्वोच्च न्यायालय का प्रत्येक महाअधिवेशन यह आशा जगाता। गिरफ्तारियां जितनी अधिक मनमानी होतीं, ये जितनी अधिक विशाल पैमाने पर और दिमाग को चकरा डालने वाले

पैमाने पर होतीं, कैदियों की लहरें जितनी बड़ी होतीं, उनसे स्थिर मस्तिष्क से सोचने की प्रेरणा नहीं मिलती, बल्कि व्यापक क्षमादान दिये जाने का विश्वास उत्पन्न होता।

प्रकाश के कुछ स्रोतों की तुलना कुछ सीमा से सूर्य से की जा सकती है, और सूर्य की तुलना अन्य किसी वस्तु से नहीं की जा सकती। अतः संसार की समस्त आकांक्षाओं की तुलना क्षमादान की आकांक्षा से की जा सकती है, लेकिन क्षमादान की आकांक्षा की तुलना संसार की अन्य वस्तु से नहीं की जा सकती।

सन् १९४५ की वसंत ऋतु में जेल की कोठरी में आने वाले प्रत्येक नए कैदी से सबसे पहले यह सवाल पूछा जाता कि उसने क्षमादान के बारे में क्या सुना है? और यदि दो या तीन कैदियों को उनकी कोठरियों से उनके सामान सहित बाहर ले जाया जाता, तो कोठरी में मौजूद विशेषज्ञ तुरन्त मामलों का तुलनात्मक अध्ययन करते और यह निष्कर्ष निकालते कि इन लोगों के मामले सबसे कम गम्भीर थे और इन लोगों को रिहा करने के लिए ही बाहर ले जाया गया है। रिहाई शुरू हो गई है! शौचालय में और स्नान घर में—जो कैदियों के डाकखाने होते थे—हमारे "सक्रिय कार्यकर्ता" क्षमादान के चिन्हों और सूचनाओं के अनुसंधान में लगे रहते। और एक दिन जुलाई के आरम्भ में, बुत्यर्की जेल के स्नानघरों के प्रसिद्ध लेवेंडर खोखे में हमने लेवेंडर के पालिश किए हुए एक बड़े टुकड़े पर साबुन से लिखी गई यह महान् भविष्यवाणी पढ़ी। यह भविष्यवाणी आदमी के सिर से बहुत ऊपर लिखी गई थी, जिसका यह तात्पर्य था कि यह लिखने के लिए एक आदमी दूसरे के कन्धों पर खड़ा हुआ, ताकि इस भविष्यवाणी को ऐसे स्थान पर लिख सके, जहां इसको मिटाने में अधिक समय लगेगा:

"हुर्रा!! १७ जुलाई को क्षमादान होगा!"[१८]

जेल में क्या खुशियां मनाई गईं! ("आखिरकार, यदि उन लोगों को निश्चित जानकारी न होती तो वे कभी न लिखते!") शरीर में जो चीज़ धड़कती थी, गतिशील रहती थी, प्रवाहित होती थी वह आनन्द की लहर के नीचे रुक गई, इस प्रत्याशा से थम गई कि अब जेल के द्वार खुलेंगे।

लेकिन...क्षमादान देने के लिए और क्या भावना का प्रदर्शन करने के लिए सम्बन्धित व्यक्ति में बुद्धिमानी की आवश्यकता होती है।

जुलाई के मध्य में, बरामदे में तैनात सन्तरी ने हमारी कोठरी के एक कैदी को पाखाना साफ करने के लिए बुलाया और वहां जब ये लोग एक दूसरे के सामने खड़े थे,—क्योंकि सन्तरी गवाहों की मौजूदगी में यह कहने का साहस नहीं कर सकता था—उसने कैदी के सफेद सिर की ओर सहानुभूतिपूर्वक देखते हुए पूछा: "तुम्हारा क्या अनुच्छेद है, पिता जी?" "अट्ठावन!" यह वृद्ध खिल उठा! घर में तीन पीढ़ियां उसकी गिरफ्तारी पर आंसू बहा रही थीं। "आप इसमें शामिल नहीं हैं।" सन्तरी ने निराशा भरी सांस छोड़ी। निहायत बेवकूफी है। हम लोगों ने कोठरी में निष्कर्ष निकाला। यह सचमुच कोई अनपढ़ सन्तरी होगा।

हमारी कोठरी में कीव का वालिन्तीन नाम का एक युवक भी था। मुझे उसके परिवार का नाम याद नहीं आ रहा है। उसकी बहुत बड़ी-बड़ी आंखें थीं और उनमें स्त्रियों की आंखों जैसी सुन्दरता थी और वह पूछताछ से बहुत भयभीत हो उठा था। इस बात में संदेह नहीं कि उसमें पूर्वानुमान की क्षमता थी—शायद इसका यही कारण था कि वह

अभी भी उत्तेजना की स्थिति में था— सुबह के समय वह कोठरी में एक से अधिक बार इधर-उधर चक्कर लगाता और कहता : "आज वे लोग आपको लेने आएंगे। मैंने यह सपने में देखा है।" और वे आते और इन्हीं लोगों को ले जाते। ठीक उन्हीं कैदियों को, जिन्हें उसने सुबह यह बात कही थी। यहां यह उल्लेखनीय है कि कैदी का हृदय रहस्यवाद की ओर इतना अधिक झुका होता है कि वह बिना किसी आश्चर्य के इस प्रकार के पूर्वाभासों, इस प्रकार की भविष्यवाणियों पर विश्वास कर लेता है।

२७ जुलाई को वालितीन मेरे पास आया : "अलेक्सान्द्र, आज हमारी बारी है।" और उसने मुझे एक ऐसा सपना सुनाया, जिसमें जेल में देखे जाने वाले सपनों की समस्त विशेषताएं थीं। गदले पानी की नदी पर बना पुल, एक क्रास का चिन्ह। मैंने अपना सामान बटोरना शुरू कर दिया और यह निरर्थक भी नहीं था। उसे और मुझे सुबह की चाय के बाद बुलाया गया। हमारे साथी कैदियों ने हमें अत्यधिक उत्साहपूर्ण शुभकामनाएं देकर विदा किया और उनमें से अनेक ने हमें इस बात का पूरा आश्वासन दिया कि हमें आज़ाद किया जा रहा है। इन लोगों ने ये निष्कर्ष हमारे कम गम्भीर मामलों के तुलनात्मक अध्ययन से निकाल लिये थे।

हो सकता है कि आप सचमुच इन बातों में विश्वास न करते हों। हो सकता है कि आप अपने आपको इन बातों पर विश्वास न करने दें, आप मज़ाक में इन बातों को ठुकरा दें। लेकिन आग में तपा कर लाल बना दिये गये जम्बूर, जो पृथ्वी पर अन्य किसी भी वस्तु से अधिक गरम होते, अचानक आपके हृदय को अपने शिकंजे में कस लेते। ऐसा ही होता है। शायद ऐसा ही होता है। शायद यह सच हो?

उन लोगों ने विभिन्न कोठरियों से २० कैदियों को एक स्थान पर इकट्ठा किया और सबसे पहले हमें स्नान घरों में ले गए। हमें वहां पर्याप्त समय मिला, डेढ़ घंटे का समय और हम अपने अनुमानों और विचारों का विनिमय कर सके। तभी, गर्म जल से स्नान के कारण हमारे शरीर गर्म थे और हमारी त्वचा बहुत मुलायम हो उठी थी, हमें बुत्यर्की जेल के भीतरी अहाते के पन्ने की तरह एक छोटे से बगीचे से ले जाया गया। चिड़ियां अत्यधिक तीखी आवाज़ में गा रही थीं। शायद ये गौरैया ही थी। इनकी आवाजें कर्णवेधी लग रही थीं। पेड़ों का हरा रंग असह्य लग रहा था, क्योंकि अब हमारी आंखें इसकी आदी नहीं रही थीं। मेरी आंखों को पत्तियों का इतना गहरा हरा रंग कभी नहीं लगा, जितना उस वसंत ऋतु में! और मैंने अपने जीवन में कभी भी किसी वस्तु को बुत्यर्की के इस छोटे से बगीचे से अधिक ईश्वर के स्वर्ग के समीप नहीं समझा। यद्यपि तारकोल की पक्की सड़क पर चलते हुए हमें इस बगीचे को पार कर जाने में ३० सैकेंड से अधिक समय नहीं लगा होगा।[१९]

ये लोग हमें बुत्यर्की स्टेशन ले गए—यह नाम बहुत होशियारी से चुना गया था, क्योंकि कैदियों को इकट्ठा करने और आगे भेजने का यह केन्द्र, विशेषकर अपने मुख्य कक्ष के कारण एक अच्छे रेलवे स्टेशन जैसा दिखाई पड़ता था। उन लोगों ने हमें एक बड़े लम्बे-चौड़े बाक्स के भीतर धकेल दिया। इसके भीतर अर्ध अंधकार था और हवा साफ और स्वच्छ थी, इसकी एकमात्र और छोटी सी खिड़की बहुत ऊपर बनी थी और इस खिड़की पर लोहे की चद्दर नहीं लगी थी। और यह खिड़की उसी छोटे से धूप भरे बगीचे पर खुलती थी और हमें यहां भी पक्षियों का कर्णवेधी स्वर सुनाई पड़ रहा था।

इसके भीतर से हमें एक तीख हरे रंग की छोटी सी टहनी दिखाई पड़ रही थी, जो हमें पूर्ण स्वतंत्रता और घरों की वापसी का संदेश दे रही थीं। हमें कभी भी इतने बढ़िया बाक्स में बन्द होने का अवसर नहीं मिला था—और यह संयोग की ही बात थी।

और हम सब लोगों के मामले ओ० एस० ओ० अर्थात जी० पी० यू० एन० के० बी० डी० से सम्बद्ध विशेष मण्डलों के ही विचाराधीन थे। और हमें यह पता चला कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति को किसी खास अभियोग पर गिरफ्तार नहीं किया गया था।

तीन घंटे तक किसी भी व्यक्ति ने हमारी कोई खोज खबर नहीं ली। किसी ने दरवाजा नहीं खोला। हम बाक्स में इधर-उधर चक्कर काटते रहे और अन्ततः थक कर इसकी पत्थर की बैंचों पर बैठ गए। और वह छोटी सी टहनी दरार के बाहर निरन्तर हवा में हिल रही थी और गौरैया इस प्रकार चीख रही थीं कि मानो उनके ऊपर किसी ने जादू कर दिया हो।

अचानक तेज़ आवाज़ करता हुआ दरवाजा खुला। और हममें से एक व्यक्ति को बाहर बुलाया गया। एक शान्त लेखाकार को, जिसकी उम्र ३५ वर्ष थी। वह बाहर गया। दरवाजे का ताला बन्द हो गया। हम पहले से भी अधिक उत्तेजना से भर कर अपने इस बाक्स के भीतर इधर-उधर दौड़ने लगे। हमारे पांवों तले अंगारे दहक रहे थे।

एक बार फिर दरवाजा खुला। उन लोगों ने किसी दूसरे का नाम पुकारा और पहले को भीतर पहुँचा दिया। हम दौड़कर उसके पास पहुँचे। लेकिन यह वही आदमी नहीं था! अब उसके चेहरे पर जीवन का अंश शेष नहीं रह गया था। उसकी विस्फारित आँखें और कुछ भी नहीं देख पा रही थीं। उसके पांव लड़खड़ा रहे थे और वह इस बाक्स के चिकने फर्श पर लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था। क्या उसे आघात पहुँचा है? क्या उन लोगों ने इस्तरी के तख्ते से उसके ऊपर प्रहार कर दिया था?

"ठीक है? ठीक है?" हमने अपने डूबते हुए कलेजों से उससे पूछा? (यदि वह स्वयं बिजली की कुर्सी से तुरन्त उठकर नहीं आया था तो यह निश्चित था कि उन लोगों ने उसे कम से कम मृत्युदण्ड अवश्य सुना दिया था।) और एक ऐसी आवाज़ में जिससे समस्त ब्रह्माण्ड की समाप्ति की सूचना मिल रही हो; यह लेखाकार किसी प्रकार बोल उठा:

"पांच...साल!"

और एक बार फिर तेज़ आवाज़ के साथ दरवाजा खुला। हां, वह इतनी तेजी से ही वापस लौट रहे थे, मानो उन्हें केवल पेशाब के लिए ही बाहर ले जाया गया था। दूसरा आदमी वापस लौटा। वह खुशी से जगमगा रहा था। जाहिर था कि उसे रिहा कर दिया गया हो।

"ठीक है, ठीक है। इधर आओ?" हम सब लोग उसके चारों ओर मक्खियों की तरह जमा हो गए और हमारी आशाएं एक बार फिर बलवती हो उठीं। उसने हंसी के मारे लोटपोट होते हुए अपना हाथ हिलाया।

"१५ वर्ष!"

यह बात इतनी मूर्खतापूर्ण थी कि इस पर विश्वास कर पाना कठिन था।

अध्याय ७



ईंजन के कमरे में

तथाकथित बुटयर्की "स्टेशन" के बराबर बना बॉक्स तलाशी लेने का प्रसिद्ध बाक्स था जहां नए कैदियों की तलाशी ली जाती थी। इसमें इतना स्थान था कि ५ या ६ जेल कर्मचारी एक साथ २० कैदियों की टोली की तलाशी ले सकें। लेकिन अब यह खाली था। और तलाशी लेने वाली भद्दी मेजों के ऊपर कुछ नहीं रखा था। वे खाली थीं। कमरे के एक सिरे पर, एक छोटी और मामूली सी मेज के पीछे, एक छोटे से लैम्प के नीचे एक साफ़ सुथरा और काले बालों वाला एन० के० वी० डी० का मेजर बैठा था। उसके चेहरे से अत्यन्त ऊब प्रकट होती थी। एक-एक कर कैदियों को भीतर लाने और बाहर से जाने से उसके समय की बर्बादी होती थी। उनके हस्ताक्षर कहीं अधिक तेजी से प्राप्त किये जा सकते थे।

उसने मुझे संकेत किया कि मुझे उसके सामने रखे हुए स्टूल पर बैठना है। उसने मेरा नाम पूछा। दावात के दोनों ओर टाइप के कागज़ के आकार के सफेद कागज़ों के दो ढ़ेर लगे थे और ये सब एक से ही दिखाई पड़ते थे। कागज़ों का स्वरूप वैसा ही था जैसा मकानों की व्यवस्था करने वाले कार्यालयों में ईंधन प्राप्त करने की पर्चियों का होता है अथवा सरकारी उपयोग के लिए खरीदे जाने वाले सामान के वारंट या पर्ची का। अपने दाहिनी ओर रखे हुए ढेर को टटोल कर मेजर ने वह कागज़ निकाल लिया, जिसका मुझसे सम्बन्ध था। उसने इस कागज़ पर लिखे शब्दों को अत्यन्त ऊब भरे स्वर में पढ़कर सुनाया। (मेरी समझ में यही बात आई कि मुझे ८ वर्ष की कैद सुनाई गई है।) उसने तुरन्त एक फाउन्टेन पैन से इस कागज़ की पीठ पर इस आशय का वक्तव्य लिखना शुरू किया कि अमुक तारीख को मुझे इस कागज़ पर लिखा मसौदा पढ़ कर सुना दिया गया।

मेरे हृदय में किंचित मात्र भी अधिक धड़कन नहीं हुई—यह इतनी अधिक रोज-मर्रा की बात थी, यह तो दिनचर्या ही बन चुकी थी। क्या यह मेरी सज़ा हो सकती—मेरे जीवन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण मोड़? मैं हतोत्साहित होना चाहता था, इस क्षण का गहनतम अनुभव करना चाहता था लेकिन मैं यह नहीं कर सका। और उस समय तक वह मेजर इस कागज़ को मेरी ओर धकेल चुका था, कागज़ का कोरा हिस्सा मेरी ओर था। और एक स्कूली बच्चे का ७ कोपेक में मिलने वाला पैन जिसका निब बहुत बुरा था और रोशनाई में पड़ा हुआ कपड़ा जिसकी नोक में चिपक गया था, मेरे सामने पड़ा हुआ था।

"नहीं, मैं इसे स्वयं पढ़ना चाहूँगा।"

"क्या तुम सचमुच यह समझते हो कि मैं तुम्हें धोखा दूंगा?" मेजर ने बड़े आलस्य से आपत्ति उठाई। "ठीक है, आगे बढ़ो, इसे पढ़ लो।"

बड़ी अनिच्छा से उसने अपने हाथ से यह कागज़ छोड़ा। मैंने इसे उलटा और जान-बूझकर बहुत धीरे-धीरे पढ़ना शुरू किया। एक-एक शब्द करके नहीं बल्कि एक-एक अक्षर कर मैंने उसे पढ़ना शुरू किया। इसे टाइप किया गया था। लेकिन मेरे सामने इसकी मूल प्रति नहीं थी बल्कि कार्बन प्रति थी:

सोवियत संघ की एन० के० वी० डी० के ओ० एस० ओ० के ७ जुलाई १९४५ के आदेश का।[1]

अंश, संख्या

इसके नीचे बिंदिया लगाकर रेखा खींच दी गई थी और इस पृष्ठ को भी इसी प्रकार बिन्दी लगाकर दो हिस्सों में विभाजित किया गया था:

मुकदमे की सुनवाई हुई:	आदेश:
अमुक व्यक्ति पर अभियोग लगाया गया (नाम, जन्म का वर्ष, जन्म का स्थान)	अमुक व्यक्ति को (नाम) सोवियत विरोधी प्रचार के लिए, और सोवियत विरोधी संगठन बनाने का प्रचार करने के लिए, श्रम से सुधार शिविरों में ८ (आठ) वर्ष की सज़ा।

सत्यापित प्रति..............सचिव--

क्या मुझसे बस यही आशा थी कि मैं हस्ताक्षर करूंगा और शांतिपूर्वक वहां से चला जाऊंगा? मैंने मेजर की ओर देखा—मैंने इस आशय से इसकी ओर देखा कि क्या वह मुझसे कुछ कहना चाहता है कि क्या वह कोई स्पष्टीकरण देना चाहेगा। नहीं, उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था। वह दरवाजे पर खड़े सन्तरी को सिर हिलाकर पहले ही संकेत दे चुका था कि अगले कैदी को तैयार रखा जाए।

इस क्षण को कम से कम थोड़ा बहुत महत्व देने के लिए, मैंने अपने चेहरे पर अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण भाव लाकर कहा: "लेकिन, सचमुच, यह बड़ा भयावह है! ८ वर्ष किसलिए?"

और मैं स्वयं यह सुन पा रहा था कि स्वयं मेरे शब्द कितने मिथ्या लग रहे थे। न तो वह न ही मैं इसमें कोई भयंकरता देख पा रहे थे।

"यहां करो।" मेजर ने मुझे वह जगह एक बार फिर दिखाई, जहां मुझे हस्ताक्षर करने थे।

मैंने हस्ताक्षर कर दिये। मेरी समझ में अन्य कोई बात आ ही नहीं रही थी।

"खैर आप मुझे इस दण्ड के खिलाफ तुरन्त यहीं अपील लिखने की अनुमति दीजिए। आखिरकार यह दंड अन्यायपूर्ण है।"

"नियमों में यही व्यवस्था है," मेजर ने सिर हिलाते हुए कहा और मेरे कागज़ को उठाकर दायीं ओर के ढेर के ऊपर रख दिया।

"अब चलो," सन्तरी ने तीखी आवाज़ में कहा।

और मैं चल पड़ा।

(सचमुच मैंने कोई सूझ-बूझ नहीं दिखाई थी। जार्जी तेन्यो को जब २५ वर्ष की सज़ा सुनाने वाला कागज़ थमाया गया था तो उसने उत्तर दिया था : "आखिरकार यह आजन्म कारावास है। पुराने जमाने में वे लोग ढोल बजाकर लोगों को एकत्र कर लेते थे और तब आजन्म कारावास की घोषणा होती थी और यहाँ तो बस ऐसा हो रहा है मानो मुझे साबुन के राशन के लिए कोई पर्ची दी जा रही हो। २५ वर्ष और भागो!" आर्नोल्ड रैपोपोर्ट ने कलम लेकर इस सज़ा के कागज़ के पीछे लिख दिया था : "मैं इस आतंक फैलाने वाले और गैर कानूनी दण्ड के विरुद्ध स्पष्ट शब्दों में अपना विरोध प्रकट करता हूं और तुरन्त अपनी रिहाई की मांग करता हूँ।" जिस अफसर ने उसे यह कागज़ दिया था वह पहले तो बड़े सब्र से प्रतीक्षा करता रहा लेकिन जब उसने यह पढ़ा कि रैपोपोर्ट ने उसके ऊपर क्या लिख दिया था, तो वह क्रोधित हो उठा और इस कागज़ को उसने फाड़ फेंका। तो क्या हुआ! सज़ा ज्यों की त्यों बरकरार रही। यह सज़ा के आदेश की एक प्रतिलिपि ही तो थी।

वेरा कोरनेऐवा को यह आशा थी कि उसे १५ वर्ष की सजा दी जाएगी और उसने अत्यन्त प्रसन्नता से यह देखा कि सरकारी कागज़ पर टाईप की गलती रह गई है—उसपर केवल ५ वर्ष लिखा था। वह अत्यन्त आकर्षक ढंग से हंसी और तुरन्त उस कागज पर हस्ताक्षर कर दिए मानो वह उनके कहीं कागज़ वापस न ले लेने के भय के कारण तुरन्त हस्ताक्षर कर डालना चाहती थी। अफसर ने उसकी ओर बड़ी दुविधापूर्वक देखा : मैंने जो पढ़कर सुनाया है क्या वह सचमुच तुम्हारी समझ में आ गया है?" "हां, हाँ, धन्यवाद। बहुत-बहुत धन्यवाद। श्रम से सुधार शिविरों में ५ वर्ष।"

एक हगरी निवासी जानोस रोजसास को १० वर्ष की सजा पढ़ कर सुनाई गई। उसे जेल के बरामदे में रूसी भाषा में सजा का आदेश पढ़कर सुनाया गया था और इसका अनुवाद हंगरी की भाषा में नहीं किया गया था। उसने इस पर हस्ताक्षर कर दिए थे और उसे यह मालूम नहीं था कि वह अपनी सज़ा के आदेश पर हस्ताक्षर कर चुका है और काफी समय बाद तक वह अपने ऊपर मुकदमा चलाये जाने की प्रतीक्षा करता रहा। इससे भी काफी समय बाद, जब वह शिविर में था, उसने बड़ी अस्पष्टता से इस घटना का स्मरण किया और तब यह बात उसकी समझ में आई कि वास्तव में क्या हुआ था।

मैं मुस्कराहट के साथ उसी बाक्स में वापस लौट आया। बड़ी विचित्र स्थिति थी। हर मिनट मैं निरन्तर अधिक खुश होता जा रहा था और मुझे ऐसा लग रहा था मानो मेरे कन्धों के ऊपर से कोई भार उतर गया हो। सब लोग "१० रूबल का नोट" लेकर वापस लौट रहे थे, जिनमें वैलेन्तिन भी शामिल था। हमारी टोली में सबसे हलकी सज़ा लेखाकार को दी गई थी, जो अपनी सुधबुध खो चुका था। वास्तव में वह अभी भी स्तम्भित था और उसके बाद सबसे हलकी सज़ा मेरी थी।

धूप और जुलाई की हवा में इस बाक्स की खिड़की से बाहर दिखाई पड़ने वाली टहनियाँ बड़ी खुशी से इधर-उधर हिल रही थीं। हम लोग बहुत जोर-जोर से बात कर रहे थे। बीच-बीच में हम लोग जोर-जोर से हंस उठते और हंसी का यह क्रम निरन्तर तेज होता गया। हम लोग इसलिए हंस रहे थे कि हर काम इतनी अच्छी तरह हो गया। हम लोग स्तम्भित लेखाकार पर हंस रहे थे। हम लोग सुबह के समय हमारे मन में जो आशाएं जगी थीं उन पर हंस रहे थे और अपनी जेल की कोठरी के साथियों के उस तरीके पर

भी, जिस प्रकार उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से हमें बिदा दी थी और यह कहा था कि हम किस प्रकार खाने की चीजों के पार्सलों के माध्यम से अपनी रिहाई की सूचना उनके पास भेजेंगे। चार आलू अथवा दो बैजल।

"खैर, ठीक है, क्षमादान की तो घोषणा अवश्य होगी! कई लोगों ने बड़ी दृढ़ता से कहा।" यह सब कारवाई तो कागज़ का पेट भरने के लिए की जा रही है और इसका कोई खास महत्व नहीं है। ये लोग हमें भयभीत करना चाहते हैं ताकि हम भविष्य में सरकारी निर्देशों के पीछे आंख बन्द करके चलते रहें। स्तालिन ने एक अमरीकी संवाददाता से कहा था—

"इस संवाददाता का क्या नाम था?"

"मुझे नाम तो याद नहीं रहा।"

और उन लोगों ने हमें अपनी चीजें उठाने का हुक्म दिया, दो-दो की कतारों में खड़ा किया और एक बार फिर उसी अद्भुत छोटे से बगीचे से होकर ले चले जो ग्रीष्म के प्रभाव से जगमगा रहा था। और वे लोग हमें कहाँ ले गए? एक बार फिर स्नान-घरों में।

और जरा उसी हंसी की कल्पना कीजिए, जिसके फव्वारे वहाँ छूट पड़े! मेरे भगवान, कितने मूर्ख और निकम्मे लोग हैं! अभी भी हंसी से लोटपोट, हम लोगों ने अपने कपड़े उतारे। इन्हें उसी ट्राली के हुकों पर टाँग दिया और उसी ताप यंत्र के भीतर घुमा कर पहुँचा दिया, जहां वे उसी दिन सुबह डाले गए थे। हंसते हुए, हममें से प्रत्येक व्यक्ति ने उस गन्दे साबुन का एक-एक छोटा सा टुकड़ा लिया और अपनी लड़कियों जैसी प्रसन्नता को धो डालने के लिए बड़े और प्रतिध्वनित होने वाले स्नान करने के फव्वारे के नीचे खड़े होने के लिए चले गए। हम स्नान का आनन्द लेते रहे। हमारे शरीर पर गरम और स्वच्छ पानी बरस रहा था। और हम इस फव्वारे के नीचे इस तरह उछलते-कूदते रहे मानो हम स्कूल की परीक्षा समाप्त करने के बाद छुट्टियाँ मनाने के लिए आने वाले स्कूली बच्चे हों और स्नान का आनन्द ले रहे हों। यह स्वच्छतादायक और राहत पहुँचाने वाला हास्य, मेरी राय में, वास्तव में हमारी कमजोरी या घबराहट का लक्षण नहीं था। बल्कि शरीर की रक्षा के लिए, शरीर के भीतर मौजूद जीवंत प्रतिरक्षा थी।

जब हम अपने शरीर को सुखा रहे थे, वालेन्तिन मुझसे अत्यन्त आश्वासनदायक स्वर में बड़ी घनिष्ठतापूर्वक बोला: "कोई बात नहीं। हम अभी भी जवान हैं, अभी हमें बहुत समय जीना है। अब खास बात यह है कि हम कोई गलत कदम न उठायें। हम लोग एक शिविर में जा रहे हैं— और हम किसी भी व्यक्ति से एक शब्द भी नहीं कहेंगे, ताकि उन्हें हमें और नई सज़ा सुनाने का मौका न मिल पाये। हम ईमानदारी से काम करेंगे—और मुंह बन्द रखेंगे।"

और सचमुच अपने कार्यक्रम में उसकी आस्था थी। उस अनाज के नन्हे से दाने की जो स्तालिन की चक्कियों के पाटों के बीच में फंस गया था! वह वस्तुतः आशान्वितथा। किसी भी व्यक्ति के मन में उससे सहमत होने का भाव उठ सकता था। यह बात मन में आ सकती थी कि आराम से सजा की अवधि को पूरा कर लेंगे और इसके बाद उन बातों को अपने दिमाग से निकाल देंगे, जो हमारे साथ हुई थीं, उन कष्टों को भुला देंगे, जो हम ने भोगे थे।

लेकिन मैंने स्वयं अपने भीतर एक सत्य का आभास पाना शुरू कर दिया था : यदि वास्तविक अर्थों में जीवित रहने के लिए जीवित न रहना आवश्यक हो तो यह सब किसलिए हो रहा है ?



हम सचमुच यह बात नहीं कह सकते कि ओ० एस० ओ० अर्थात् कैदियों को सज़ा सुनाने वाले विशेष मण्डलों की, कल्पना क्रान्ति के बाद ही की गई थी। कैथेरीन महान् ने पत्रकार नोवीकोव को, जिसे वह नापसंद करती थी, १५ वर्ष की कैद की सज़ा सुना दी थी। इस प्रकार सज़ा सुनाना विशेष मण्डल के अनुसार सज़ा सुनाना ही कहा जा सकता है क्योंकि कैथरीन महान् ने उसका मामला किसी अदालता के सुपुर्द नहीं किया था। और सब ज़ार सम्राटों ने कभी न कभी, पिता समान आचरण करते हुए, बिना किसी मुकदमे के उन लोगों को निष्कासित किया था जिन पर वे अप्रसन्न हो उठे थे। सन् १८६० में अदालतों का एक बुनियादी सुधार हुआ। ऐसा लगने लगा मानो शासक और शासित, राजा और प्रजा जन—दोनों ही समाज के प्रति एक न्यायिक दृष्टिकोण विकसित करने लगे हैं। पर इसके बावजूद पिछली शताब्दी के ८वें और ९वें दशक में कोरोलेंको ने ऐसे मामलों का अनुसंधान किया, जिनमें प्रशासनिक दमन ने न्यायिक निर्णयों की भूमिका अपने हाथ में ले ली थी। सन् १८७२ में स्वयं कोरोलेंको और दो अन्य विद्यार्थियों को बिना किसी मुकदमे के राज्य सम्पत्ति उपमंत्री के आदेश से निष्कासित कर दिया गया—यह किसी विशेष मण्डल द्वारा सुनाये गए फैसले का विशिष्ट उदाहरण था। एक अन्य अवसर पर उन्हें और उनके भाई को ग्लाजोव में निष्काषित कर दिया गया था। कोरोलेंको ने हमें किसी फ्योदोर बोगदान का नाम भी बताया है। वह किसानों का प्रतिनिधि—खोदोक—था और वह स्वयं जार तक जा पहुँचा था और इसके परिणामस्वरूप उसे निष्कासित कर दिया गया था। हमें उनसे प्यानकोव के बारे में भी जानकारी मिलती है, जिसे एक अदालत ने रिहा कर दिया था पर ज़ार के आदेश से निष्कासित कर दिया गया था। इनके अलावा भी बहुत से मामले हैं और वेरा जासुलिच ने अपने प्रवास के बाद एक पत्र भेज कर यह बताया कि वे अदालत और मुकदमे से बचकर नहीं भागी थीं बल्कि न्याय विरोधी प्रशासनिक दमन से बच कर भागी थीं।

इस प्रकार "रेखाँकित" परम्परा जारी रही अर्थात् प्रशासनिक आधार पर सुनाई गई सज़ाओं की व्यवस्था चलती रही। लेकिन यह व्यवस्था बहुत ढ़ीली थी। यह एक आलसी एशियाई देश के लिए उपयुक्त थी, एक ऐसे देश के लिये नहीं जो बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा हो...इतना ही नहीं इसमें किसी भी निश्चितता का अभाव था : विशेष मण्डल क्या था, इसमें कौन लोग थे ? कभी-कभी यह स्वयं ज़ार होता था, कभी-कभी कोई गवर्नर, कभी कोई उपमंत्री। और यदि उन लोगों के नामों का उल्लेख करना संभव हो, जिन्हें इस प्रकार सज़ाएं दी गई, तो मैं क्षमायाचनापूर्वक यह कहना चाहूँगा कि इन मामलों की संख्या बहुत बड़ी नहीं थी।

इसका वास्तविक विस्तार इस शताब्दी का तीसरा दशक शुरू होने के बाद हुआ। जब स्थाई रूप से संचालित त्रोइकाओं—बन्द कमरों में मामलों की सुनवाई करने वाले

तीन सदस्यीय मण्डल—की स्थापना अदालतों से बच निकलने के लिए की गई। आरम्भ में वे बड़े गर्व से इस बात की घोषणा करते थे—जी० पी० यू० का त्रोइका। उन लोगों ने इसके सदस्यों के नामों को छिपाना तो दूर बल्कि उनका प्रचार किया। सीलोवेतस्की द्वीपों पर किस व्यक्ति को प्रसिद्ध मास्को त्रोइका के सदस्यों के नामों की जानकारी नहीं थी। ये सदस्य थे—ग्लेव बोकी, वूल और वासिलएव। हाँ, और सचमुच उन लोगों ने इसके लिए क्या शब्द निकला था—त्रोइका! इससे तीन घोड़ों की स्लेज के नीचे लगी घंटियों; श्रोवेटाइड के उत्सव का भी आभास मिलता था और इन बातों के साथ ही इसमें रहस्य का समावेश हो गया था। "त्रोइका" क्यों? और इसका क्या अर्थ था? आखिरकार एक अदालत में भी चार न्यायाधीश नहीं होते! और एक त्रोइका अदालत नहीं होती! और सबसे बड़ा रहस्य यह था कि इसे, इसके सदस्यों को नगरों से दूर ही रखा जाता था। हमें इसके सामने पेश नहीं किया गया, हमने इसके सदस्यों को नहीं देखा। हमें कागज़ का एक टुकड़ा मिला, यहाँ हस्ताक्षर करो! त्रोइका तो एक क्रान्तिकारी अदालत से भी अधिक भयानक थी। यह स्वयं को इससे भी अधिक दूर रखती थी अपने आपको छिपा लेती थी। स्वयं को एक अलग कमरे में बन्द कर लेती थी। और जल्दी ही इसने अपने सदस्यों के नामों को भी छिपा लिया। इस प्रकार हम लोग इस विचार के आदी हो गए कि त्रोइका के सदस्य सामान्य लोगों की तरह न तो खाते-पीते थे और न ही उनके मध्य घूमते थे। बस, स्वयं को मामलों की सुनवाई के लिए एक बार अलग कर देने के बाद वे सर्वदा के लिए बन्द हो जाते थे और हमें उनके बारे में जो भी जानकारी मिलती थी वह टाइपिस्टों के माध्यम से प्राप्त सज़ाओं के निर्णय ही होते थे। (और इन कागज़ों को वापस भी देना पड़ता था। ऐसे दस्तावेजों को विभिन्न व्यक्तियों के हाथों में नहीं छोड़ा जा सकता था!)

इन त्रोइकाओं ने (हमने बहुवचन का प्रयोग केवल इसलिए किया है क्योंकि किसी देवता की तरह, हम नहीं जानते कि यह किस रूप में और किस स्थान पर विद्यमान है।) उस आवश्यकता को पूरा किया जो निरन्तर कायम थी: गिरफ्तार हो जाने वाले लोगों को भी आजाद होकर वापस न लौटने देना। (यह एक ओ० टी० के० उद्योग में किस्म नियंत्रण करने वाले विभाग—की तरह था लेकिन यहाँ इसे जी० पी० यू० से सम्बद्ध कर दिया गया था—ताकि बर्बाद हुई चीजें वापस न लौट सकें। "यदि यह स्पष्ट हो जाता कि अमुक व्यक्ति निर्दोष था और इस कारण से उसके ऊपर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता था तो उसे त्रोइका के माध्यम से "माइनस ३२" दिया जा सकता था—अर्थात वह प्रान्तों की राजधानियों में से किसी भी राजधानी में रह सकता था—अथवा उसे निष्कासन में दो या तीन वर्ष बिताने के लिए भेजा जा सकता था। और इसके बाद उसके ऊपर सदा सर्वदा के लिए सजायाफ्ता की मोहर लग जाएगी और वह बार-बार सज़ा काटने के लिए भेजा जा सकेगा।

(पाठक, कृपया हमें क्षमा करें। हम लोग एक बार फिर दक्षिण पंथी अवसरवाद के कारण भटक गए हैं—हमने "अपराध" और अपराधी अथवा निर्दोष होने की इस संकल्पना का प्रश्न उठाया। आखिरकार यह बात हमें समझाई जा चुकी है कि वास्तविक बात व्यक्तिगत रूप से दोषी होने या न होने की नहीं है बल्कि सामाजिक खतरे की है। एक ऐसे निर्दोष व्यक्ति को जेल में डाला जा सकता है यदि वह सामाजिक दृष्टि से विरोधी है। और एक ऐसे दोषी को रिहा किया जा सकता है, जो सामाजिक दृष्टि से मित्र है। कानून

की प्रशिक्षण प्राप्त न होने के कारण, हमें क्षमा किया जा सकता है, क्योंकि स्वयं सन् १९२६ की दण्डसंहिता की, जिसके अनुसार हम लोग २५ वर्ष से अधिक समय तक संचालित होते रहे, यह कह कर आलोचना की गई कि इसका "निषिद्ध बुर्जुआ दृष्टिकोण है" इसके "दृष्टिकोण में वर्ग सम्बन्धी अपर्याप्त जागरूकता है" और यह एक प्रकार से 'बुर्जुआ ढंग से अपराध की गम्भीरता का मूल्यांकन, दंड के अनुरूप या दंड की व्यवस्था के अनुसार करता है।")[२]

खैर, हमें प्रशासन के इस विशेष अंग का दिलचस्प इतिहास नहीं लिखना है: त्रोइका किस प्रकार ओ० एस० ओ० अर्थात् विशेष मण्डलों में बदल गए; अथवा कब इनका पुनर्नामकरण हुआ; अथवा प्रान्तीय केन्द्रों में भी विशेष मंडल थे अथवा नहीं; अथवा केवल एक विशेष मण्डल महान् महल अर्थात् क्रेमलिन में भी मौजूद था; अथवा हमारे कौन-कौन से महान् और गर्वीले नेता इसके सदस्य थे; अथवा इनकी बैठकें कब कब होती थीं और बैठकें कितनी देर चलती थीं। काम करते समय इन लोगों को चाय भी पेश की जाती थी अथवा नहीं और यदि चाय दी जाती थी तो चाय के साथ इन्हें और क्या-क्या दिया जाता था और काम किस प्रकार होता था—क्या काम करते समय वे लोग आपस में बातचीत करते थे अथवा नहीं? हम लोग यह इतिहास नहीं लिखेंगे—क्योंकि हमें इन बातों की जानकारी नहीं है। बस, हमने केवल यही सुना है कि विशेष मण्डलों का सार इसका तीन सदस्यीय होना था। और यद्यपि आज भी इसके कठोर परिश्रमी सदस्यों के नामों का उल्लेख कर पाना असम्भव है पर हम यह जानते हैं कि इन संगठनों के प्रतिनिधि स्थायी रूप से इसमें रहते थे। एक सदस्य पार्टी की केन्द्रीय समिति का प्रतिनिधित्व करता था, एक एम० वी० डी० का प्रतिनिधि होता था और एक सबसे बड़े सरकारी वकील के कार्यालय का प्रतिनिधित्व करता था। इसके बावजूद यदि किसी दिन हमें यह पता चले तो यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं होगी कि इस विशेष मण्डल की कभी भी कोई बैठक नहीं होती थी और कुछ अनुभवी टाइपिस्टों का एक स्टाफ था, जो अस्तित्वहीन कार्रवाइयों के विवरण से कुछ हिस्सों को टाइप करते थे और एक सामान्य प्रशासक इन टाइपिस्टों का मार्गदर्शन करता था। जहां तक टाइपिस्टों का सवाल है वह केवल टाइपिस्ट ही थे। इस बात की हम गारंटी दे सकते हैं।

सन् १९२४ तक त्रोइका को केवल अधिक से अधिक तीन वर्ष तक की कैद की सजा देने का ही अधिकार था। सन् १९२४ से उन्हें शिविरों में पांच वर्ष की कैद; सन् १९३७ से विशेष मण्डल को दस्सा थमाने का अधिकार मिल गया; और १९४८ से वे लोग एक "२५ सा—अर्थात् २५ साल की कैद की सजा सुना सकते थे। और ऐसे लोग भी हैं--उदाहरण के लिए चावदारोव—जो यह जानते हैं कि युद्ध के वर्षों में विशेष मण्डल ने गोली से उड़ा कर मृत्युदण्ड की सजा सुनाई। इसमें भी क्या असाधारण बात है।

संविधान अथवा दंड संहिता में कहीं भी विशेष मण्डल—ओ० एस० ओ० का उल्लेख नहीं हुआ था। पर यह हैम्बर्ग तैयार करने वाली सबसे अधिक सुविधाजनक मशीन सिद्ध हुआ—इसे चलाना आसान था, इसे चलाने में कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता था और इसके लिए किसी कानूनी चिकनाई की भी जरूरत नहीं होती थी। दंड संहिता का अपना अलग अस्तित्व था और विशेष मण्डल का अपना अलग। और यह दंड संहिता के २०५ अनुच्छेदों की सहायता के बिना ही, इनका सहारा लिये बिना ही, इनका उल्लेख किये

बिना ही अपना काम करता रहता था। लोगों को चक्की में पीसता रहता था।

वे लोग शिविर में यह मजाक करते थे: ऐसी कोई अदालत नहीं होती, जो अस्तित्वहीन मुकदमों की सुनवाई कर सके। इस काम के लिये विशेष मण्डल है।"

इसके बावजूद स्वयं विशेष मण्डल ओ० एस० ओ० को अपनी सुविधा के लिए एक प्रकार के शार्टहैंड, एक प्रकार की आशुलिपि की आवश्यकता थी और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने अक्षरों से बनने वाले एक दर्जन अनुच्छेद तैयार किए, जिसके परिणामस्वरूप इसका काम कहीं अधिक आसान हो गया। जब इनका इस्तेमाल किया जाता तो इस बात की आवश्यकता नहीं रह जाती कि आप अपना सिर पीट कर, अपना दिमाग धुन कर यह देखें कि विशेष मण्डल के आदेश दंड संहिता की व्यवस्थाओं से मेल खाते हैं अथवा नहीं। और इन अक्षरों वाले अनुच्छेदों की संख्या इतनी छोटी थी कि कोई बच्चा भी इन्हें याद रख सकता था। इनमें से कुछ का हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं:

ए० एस० ए०—सोवियत विरोधी आंदोलन।

के० आर० डी०– क्रान्ति विरोधी गतिविधि।

के० आर० टी० डी०--क्रांति विरोधी ट्राटस्कीवादी गतिविधि (और यह "टी" अक्षर शिविर में कैदी की जिन्दगी को और अधिक कठोर बना देता था।)

पी० श०—जासूसी का संदेह (जिस जासूसी के मामले में संदेह नहीं होता था अथवा जो मामला संदेह की सीमाओं को पार जाता था उसे एक न्यायाधिकारी को सौंप दिया जाता था।)

एस० वी० ई० श०—वे सम्पर्क (!) जिनके आधार पर जासूसी का संदेह हो सकता है।

के० आर० एम०—-क्रांति विरोधी विचार।

वी० ए० एस०—सोवियत विरोधी भावनाओं का प्रचार।

एस० ओ० ई०—सामाजिक दृष्टि से खतरनाक तत्व।

एस० वी० ई०—समाजिक दृष्टि से हानिप्रद।

पी० डी०—दंडनीय गतिविधि (शिविरों में सजा काट कर लौटे हुए कैदियों के खिलाफ यदि अन्य कोई अभियोग लगा पाना सम्भव न होता तो इसका इस्तेमाल किया जाता।)

और अन्त में एक अत्यधिक विशाल और व्यापक श्रेणी थी:

च० एस०—परिवार का सदस्य (एक ऐसे व्यक्ति के परिवार का सदस्य, जिसे उक्त किसी भी "अक्षर" श्रेणी के अन्तर्गत सजा दी गई हो।)

यह स्मरण रखना चाहिए कि इन श्रेणियों को समान रूप से, विभिन्न समूहों पर और विभिन्न वर्षों में समान रूप से लागू नहीं किया था। दंड संहिता के अनुच्छेदों और विशेष अध्यादेशों की धाराओं की तरह ही इनकी महामारिया भी अचानक शुरू होती थीं।

एक और बात भी है। विशेष मण्डल यह नहीं कहता था कि वह किसी को सजा सुना रहा है। यह किसी व्यक्ति को सजा नहीं सुनाता था बल्कि इसके विपरीत एक प्रशासनिक दंड लागू करता था। और आप इसे ही गागर में सागर के समान समझिए यही

कारण था कि इसे न्यायिक स्वतंत्रता अर्थात न्याय से स्वतंत्रता प्राप्त करने की आवश्यकता थी।

चाहे वह इस बात का दावा नहीं करते थे कि प्रशासनिक दंड किसी अदालत के द्वारा सुनाई गई सज़ा के समान है पर वे २५ वर्ष तक का दंड दे सकते थे और इसमें इन बातों को भी शामिल कर लिया जाता था :

+ख़िताबों, पदों और पदकों आदि अलंकारों से वंचित कर दिया जाना।

+समस्त सम्पति को जब्त करना।

+जेल में डालना।

+पत्र व्यवहार के अधिकार से वंचित करना।

इस प्रकार एक व्यक्ति विशेष इस मण्डल की सहायता से इस पृथ्वी के ऊपर से नदारद हो सकता था और यह काम एक अत्यन्त आदम अदालत द्वारा सुनाई गई सज़ा से कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता था।

विशेष मण्डल को एक और विशेष लाभ यह था कि इसके द्वारा दिये गये दंड के विरुद्ध अपील नहीं हो सकती थी। इसके खिलाफ अपील की भी किससे जा सकती थी। इसके ऊपर ऐसी कोई सत्ता नहीं थी, जिससे अपील की जा सकती हो और इससे नीचे भी कोई सत्ता नहीं थी, जो इससे पहले इन मामलों पर विचार कर सकती हो। यह केवल आंतरिक मामलों के मंत्री, स्तालिन और स्वयं शैतान के ही अधीन था।

विशेष मण्डल को जो एक दूसरा बड़ा लाभ प्राप्त था वह था इसकी गति। इस गति की सीमा टाईप करने की तकनीक से ही सीमित हो सकती थी अन्य किसी बात से नहीं।

और अन्तिम, लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं, बात यह थी कि विशेष मण्डल को अभियुक्त को आमने-सामने देखने की कोई आवश्यकता नहीं थी, जिससे एक जेल से दूसरी जेल में पहुँचाने के कष्ट से अधिकारी बच जाते थे और कैदियों को ढोने वाली रेल-गाड़ियों पर कम जोर पड़ता था, बल्कि इसे इन अभियुक्तों के फोटोग्राफ देखने की भी आवश्यकता नहीं होती थी। एक ऐसे दौर में जब जेलों में भयंकर भीड़-भाड़ हो यह एक बहुत बड़ा अतिरिक्त लाभ था। क्योंकि कैदी को जेल के फर्श पर जगह घेरने अथवा पूछ-ताछ पूरी हो जाने के बाद मुफ्त की रोटी खाने का मौका नहीं मिलता था। उसे तुरन्त शिविर में भेजा जा सकता था और ईमानदारी भरे काम में लगाया जा सकता था। काफी समय बाद तक उसे सुनाये गये दण्ड की प्रतिलिपी पढ़ कर सुनाई जा सकती थी।

जब स्थिति बेहतर होती तो कैदियों को अपने गंतव्य पर पहुंचने के बाद माल गाड़ी के डिब्बों से नीचे उतारा जाता और इन्हें वहीं पटरी के बराबर घुटनों के बल बिठाया जाता—कैदी कहीं भागने का प्रयास न करें इसलिए यह किया जाता। लेकिन ऐसा लगता था कि मानो कैदी घुटने टेककर विशेष मण्डल की पूजा कर रहे हैं, प्रार्थना कर रहे हैं। और वहीं तत्काल उन्हें दंड पढ़ कर सुना दिये जाते। यह काम भिन्न तरीके से भी हो सकता था। सन् १९३८ में जो लोग कैदियों की गाड़ियों में लद कर पेरेबोरी पहुंचते थे उन्हें न तो यह मालूम होता था कि दंड संहिता के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत उन्हें सज़ा दी गई है अथवा उनकी सज़ा की अवधि क्या है। लेकिन वहाँ जो क्लर्क उन्हें मिलता उसे इस बात की जानकारी होती और वह एक सूची में इन लोगों के

नाम देखता : एस० वी० ई०—सामाजिक दृष्टि से हानिप्रद तत्व — ५ वर्ष। यह कारवाई उन दिनों होती जब किसी काम को पूरा करने के लिए तुरन्त बहुत से लोगों की आवश्यकता होती। मास्को, वोल्गा नहर जैसे कामों को पूरा करने के लिए।

अन्य बहुत से लोग महीनों तक यह जाने बिना ही कि उन्हें क्या सज़ा दी गई है शिविरों में रहते थे। इसके बाद, जैसाकि आई० दोबरियाक ने बताया है, इन लोगों को बड़ी गम्भीरतापूर्वक पंक्तिबद्ध खड़ा किया गया—और किसी अन्य दिन नहीं बल्कि एक मई, १९३८ को जब चारों ओर लाल झण्डे फहरा रहे थे—और इन्हें स्तालिनों प्रान्त के त्रोइका द्वारा दी गई सज़ाएँ सुना दी गईं। (इससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि बहुत अधिक काम हो जाने पर विशेष मण्डल का बिकेन्द्रीकरण कर दिया जाता था।) इन सज़ाओं की अवधियाँ १० से २० वर्ष थीं। और उसी वर्ष, मेरे शिविर के भूतपूर्व फोरमैन, साईनब्रीधूखोव को एक पूरी रेलगाड़ी भरे कैदियों के साथ चेल्याबिंस्क से चेरेपोवेत्स भेज दिया गया यद्यपि इन कैदियों को अभी तक सज़ा नहीं सुनाई गई थी। महीनों का समय बीत गया और ये कैदी काम करते रहे और फिर एक दिन सर्दियों में आराम के दिन (जरा इन दिनों पर गौर कीजिये ? विशेष मण्डल को यह एक और विशेष लाभ प्राप्त था), जब कड़ाके की ठंड थी और इस ठंड के कारण बर्फ तक चटक रहा था, कैदियों को बैरकों से बाहर निकाल कर बाहर अहाते में पंक्तिबद्ध खड़ा कर दिया गया। एक नया आया लैफ्टिनैंट वहां पहुँचा और कैदियों से बोला कि वह उन लोगों को विशेष मण्डल द्वारा दिये गये दण्ड की जानकारी देने आया है। लेकिन यह एक भला आदमी निकला क्योंकि उसने कैदियों के अत्यन्त मामूली जूतों पर नज़र डाली और जमीन पर जमे बर्फ से निकली हुई भाप पर पड़ने वाली सूर्य की किरणों में आंख भींचते हुए बोला :

"ठीक है, तुम लोग यहाँ ठण्ड में क्यों मर रहे हो ? विशेष मण्डल ने तुम सब लोगों को १०-१० वर्ष का दण्ड दिया है। ऐसे गिने-चुने लोग हैं, जिन्हें ८ वर्षं का दण्ड मिला है। समझ गए ? बैरकों में वापस जाओ !"



विशेष मण्डल के स्पष्ट रूप से यंत्रवत् कार्यों को ध्यान में रखते हुए यह प्रश्न उठता है कि अदालतों की क्या जरूरत है ? उस समय घोड़ा गाड़ी का इस्तेमाल करने की क्या ज़रूरत है जब आपके पास एक ऐसी बिना शोर के चलने वाली आधुनिक बस या ट्राम कार हो, जिससे कूद कर कोई भी व्यक्ति नीचे न उतर सकता हो ? क्या अदालतें केवल इसलिए कायम हैं कि न्यायधीशों को बढ़िया भोजन मिलता रहे ?

पर इस सबके बावजूद एक लोकतन्त्रीय राज्य के लिए यह बहुत भद्दी बात होगी कि उसके यहाँ अदालतें न हों। सन् १९१९ में पार्टी के ८वें अधिवेशन में यह घोषणा की गई : समस्त श्रमजीवी आबादी को न्यायिक कर्तव्यों को पूरा करने में हिस्सा लेने के लिए प्रयास करना चाहिए। यह तो सम्भव हो सका कि "समस्त" श्रमजीवी आबादी इस प्रक्रिया में हिस्सा ले पाती। मुकदमा चलाना एक नाजुक काम होता है। लेकिन अदालतों के बिना ही काम चलाना ठीक नहीं था।

पर हमारी राजनीतिक अदालतें—प्रान्तीय अदालतों के विशेष कालेजियम सैनिक

न्यायाधिकरण (और शान्तिकाल में न्यायाधिकरणों की आखिर क्या आवश्यकता है ?) और सब प्रान्तों के सब सर्वोच्च न्यायालयों ने एक मत होकर विशेष मण्डल का अनुसरण किया। वे, भी सार्वजनिक रूप से चलाये जाने वाले मुकदमों अथवा दोनों पक्षों की बहस के कीचड़ में नहीं फंसे।

इनकी प्रमुख और बुनियादी विशेषता बंद दरवाजे थे। सबसे पहले यह बंद अदालतें थीं, स्वयं अपनी सुविधा के लिए।

और अब तक हम इस तथ्य के इतने आदी हो चुके हैं कि लाखों करोड़ों लोगों के ऊपर बन्द अदालतों में मुकदमे चलाये गये और हम इतने लम्बे अरसे से इस बात के इतने आदी हो गये हैं कि यदा-कदा किसी कैदी का भ्रांत पुत्र, भाई, अथवा भतीजा बड़े विश्वास से यह कह सकता था : "और इसके अलावा आप चाहते क्या थे?...मुकदमों में जानकारी देनी होती है, इनसे जानकारी सम्बन्धित होती है। हमारे शत्रुओं को यह जानकारी प्राप्त हो जायेगी ! आप यह नहीं कर सकते !"

यह भय कि हमारे "शत्रुओं को पता चल जायेगा" हमारे सिरों को हमारे घुटनों के बीच घुसेड़ देने के लिए पर्याप्त था। कुछ किताबी कीड़ों को छोड़कर आज हमारी पितृभूमि में किस व्यक्ति को इस बात का स्मरण है कि उस काराकोजोव को जिसने ज़ार के ऊपर गोली चलाई थी, अपनी सफाई पेश करने के लिये वकील दिया गया था ? अथवा इस तथ्य की भी किसे जानकारी है कि झेलवाबोव और नारोदनाया वोल्या की टोली पर खुली अदालत में मुकदमा चलाया गया था और इस भय के बिना ही इस मुकदमे की सार्वजनिक रूप से सुनवाई हुई थी कि तुर्कों को इसका पता चल जाएगा ?" यह बात कौन याद करता है कि उस वेरा जासुलइच को—जिसने एक ऐसे अफसर को मारने की कोशिश की थी जिसे सोवियत शताब्दी में अथवा सोवियत संदर्भ में एम० वी० डी० के मास्को प्रशासन का अध्यक्ष कहा जा सकता है यद्यपि उसका निशाना लक्ष्य पर नहीं लगा और गोली इस अफसर के सिर के ऊपर से गुजर गई—यातना की कोठरियों में दम नहीं तोड़ना पड़ा बल्कि एक जूरी, त्रोइका नहीं, द्वारा खुली अदालत में मुकदमे की सुनवाई के बाद रिहा कर दिया गया और इसके बाद वह बड़ी शान से एक घोड़ा गाड़ी में सवार होकर अदालत से चली गई।

इन तुलनाओं के बावजूद मैं यह नहीं कहना चाहता कि रूस में अदालतों और न्याय की कोई पूर्ण प्रणाली मौजूद रही। यह कहा जा सकता है कि अच्छी न्यायिक प्रणाली अत्यन्त प्रौढ़ समाज का अन्तिम फल होती है, अन्यथा आपको एक न्यायप्रिय राजा सोलोमन की ज़रूरत होती है। व्लादिमिर दाल ने कहा है कि रूस में गुलाम-किसानों की मुक्ति से पहले की अवधि में एक भी "ऐसी कहावत नहीं थी, जिसमें अदालतों की प्रशंसा की गई हो। और यह कथन सचमुच बहुत महत्वपूर्ण है। इस बात की भी सम्भावना दिखाई पड़ती है कि उन लोगों को जेमस्तवो अर्थात् स्थानीय संस्थाओं के अध्यक्षों की प्रशंसा में कुछ कहावतें तैयार करने का भी समय नहीं मिला। पर इसके बावजूद सन् १८६४ में जो न्यायिक सुधार किया गया उसने हमारे समाज के शहरी क्षेत्र को कम से कम अंग्रेजी नमूनों अथवा आदर्शों के उस मार्ग पर आगे बढ़ाया जिनकी हरजेन ने अत्यन्त प्रशंसा की है।

यह सब कहने के बावजूद मैं उन बातों को नहीं भुला पाया हूँ जो दोस्तोएवस्की ने अपनी पुस्तक "एक लेखक की डायरी" में जूरी द्वारा मुकदमों की सुनवाई के विरुद्ध कही

है : हमारे वकीलों की वक्तृत्व शक्ति की ज्यादतियाँ ("जूरी के भद्र पुरुषो ! यदि वह अपनी प्रतिद्वंद्वी को छुरा न घोंपती, तो वह किस प्रकार की औरत होती ? जूरी के भद्र पुरुषो ! आप लोगों में से ऐसा कौन होता, जो बच्चे को खिड़की के बाहर न फेंक देता ?") और इस बात का खतरा कि जूरी के किसी सदस्य का क्षणिक भावावेश उसके नागरिक उत्तर-दायित्वों से अधिक प्रभावशाली हो जाए। "लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से दोस्तोएवस्की हमारे जीवन के यथार्थों से बहुत आगे निकल चुके थे और वे उन बातों की चिन्ता करते थे जिन बातों की चिन्ता उन्हें नहीं करनी चाहिए थी। वे यह विश्वास करने लगे कि हमारे देश में खुली अदालतों में मुकदमे की सुनवाई का तरीका सदा सर्वदा के लिए स्थापित हो चुका है ! (वास्तव में उनके समकालीनों में कौन-सा व्यक्ति विशेष मण्डलों द्वारा मुकदमों के निपटारे की कल्पना कर सकता था ?) और कहीं अन्यत्र उन्होंने लिखा है : "क्षमा के संबन्ध में ग़लती करना बेहतर है, मृत्युदण्ड के सम्बन्ध में नहीं।" हां, हां, हां !

जब किसी वस्तु अथवा प्रणाली की स्थापना होती है तो उसके बारे में अक्सर अतिरेक देखने को मिलते हैं और न्यायिक प्रणाली की स्थापना में अतिरेक हुए यह कहना उचित नहीं होगा; इससे भी अधिक स्पष्ट रूप से यह अतिरेक पहले से ही स्थापित उस लोकतंत्र में कहीं अधिक दिखाई पड़ते हैं, जिस लोकतंत्र ने अभी तक अपने नैतिक लक्ष्य पूरे न कर लिये हों। इस सम्बन्ध में इंग्लैंड कुछ और उदाहरण प्रस्तुत करता है। जब अपने दल के लाभ के लिये विपक्ष का नेता सरकार के ऊपर उन राष्ट्रीय कठिनाइयों और बुराइयों का दोष मढ़ता है जो वास्तव में उतनी बड़ी नहीं हैं। अर्थात् विपक्ष का नेता देश के समक्ष मौजूद कठिनाइयों को बहुत बढ़ा चढ़ा कर दिखाता है।

भाषण के समय बातों को बहुत बढ़ा कर कहना एक रोग है। लेकिन हम अदालतों के बन्द दरवाजों से आवश्यकता से अधिक उपयोग के बारे में किन शब्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं ? दोस्तोएवस्की एक ऐसी अदालत का सपना देखते थे, जिसमें अभियुक्त की सफाई पेश करने के लिये सरकारी वकील हर सम्भव प्रमाण और तर्क पेश करेगा। हमें कितने युगों तक इसकी प्रतीक्षा करनी होगी ? हमारे सामाजिक अनुभव ने हमें अब तक असीम सीमा तक यह अनुभव प्राप्त कराया है कि सफाई पक्ष के वकील स्वयं प्रतिवादी के ऊपर अभियोग लगाते हैं। ("एक ईमानदार सोवियत व्यक्ति के रूप में एक सच्चे देशभक्त के रूप में, मैं इन दुष्कृत्यों के प्रकट होने पर घृणाभाव के अलावा, जुगुप्सा के अलावा, अन्य कुछ अनुभव नहीं कर सकता।")

और इस बन्द अदालत में ये सब बातें न्यायाधीशों के लिये कितनी आरामदेह होती हैं ! न्यायाधीशों के चोगों की भी ज़रूरत नहीं रहती और न्यायाधीश अपनी कमीज की बाहें तक मोड़ सकता है। काम करना कितना आसान हो जाता है ! कोई माइक्रोफोन नहीं होते, समाचारपत्रों के संवाददाता नहीं होते और जनता भी नहीं होती। (नहीं, जनता होती है, कुछ श्रोता होते हैं, लेकिन इनमें केवल पूछताछ अधिकारी भी होते हैं। उदाहरण के लिए, यह पूछताछ अधिकारी लेनिनग्राद के प्रान्तीय न्यायालय में मुकदमों की सुनवाई के समय इसलिये मौजूद रहते थे ताकि वे यह देख सकें कि उनके "पिट्ठु" किस प्रकार का काम कर रहे हैं और रात के समय उन कैदियों को बुला भेजते थे जिनकी आत्मा से और अधिक अपील करने की आवश्यकता अनुभव की जाती थी।)[1]

हमारी राजनीतिक अदालतों की दूसरी मुख्य विशेषता उनके काम में किसी भी

प्रकार की दुविधा की कमी है। अर्थात् इनके निर्णय पहले से ही तैयार रहते हैं।[४] दूसरे शब्दों में, आपको, न्यायाधीश के रूप में काम करते समय सदा इस बात की जानकारी रहती है कि बड़े नेता आपसे क्या चाहते हैं (इतना ही नहीं यदि इसके बावजूद आपके मन में कोई संदेह हो तो आपके पास टेलीफोन मौजूद है।) और, विशेष मण्डलों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, अदालत के निर्णय को पहले से ही टाईप करके तैयार रखा जा सकता है और बाद में हाथ से इस पर कैदी का नाम लिखा जा सकता है। सन् १९४२ में लेनिनग्राद सेना जिले के सैनिक न्यायाधिकरण के समक्ष स्त्राखोविच यह चिल्ला उठा : "यह कैसे हो सकता है कि केवल १० वर्ष की उम्र में मुझे इगनातोएवस्की इस प्रकार सेना में भर्ती कर सकता था !" लेकिन न्यायाधीश मण्डल की अध्यक्षता करने वाला न्यायाधीश इसके उत्तर में चिल्ला कर बोला : "सोवियत जासूसी सेवा के विरुद्ध झूठी बातें मत कहो!" बहुत अरसे पहले ही प्रत्येक बात का निश्चय हो चुका था : इगनातोएवस्की की टोली के प्रत्येक सदस्य को गोली से उड़ा कर मृत्युदण्ड दिया जाना था। लाइपोव नाम का कोई व्यक्ति इस टोली में किसी प्रकार फंस गया, लेकिन इस टोली का कोई भी सदस्य उसे नहीं जानता था और न ही वह किसी सदस्य को जानता था। तो क्या हुआ, सब कुछ ठीक है, लाइपोव को १० वर्ष की कैद की सज़ा सुना दी गई।

किस अभियुक्त को क्या सज़ा दी जाएगी इस बात का पहले से ही निर्णय हो जाने से एक न्यायाधीश का कांटों भरा जीवन इतना अधिक सरल हो उठता था। यह मानसिक राहत ही नहीं थी, क्योंकि इसके बारे में सोचने की ज़रूरत ही नहीं थी, बल्कि यह नैतिक राहत अधिक थी। आपको स्वयं को इस बात से चिंतित रखने की आवश्यकता नहीं थी कि आप सज़ा सुनाते समय कोई गलती कर सकते हैं और स्वयं अपने छोटे-छोटे बच्चों को अनाथ बना सकते हैं। और सज़ाओं का पहले से ही निर्धारण हो जाने के फलस्वरूप उलरिख जैसे भावनाहीन न्यायाधीश भी हास्यविनोद करने लगते थे (और ऐसा कौन सा बड़ा मुकदमा होगा जिसमें उसने मृत्युदण्ड न सुनाये हों ?) सन् १९४५ में सैनिक कालेजियम "एस्तोनिया के अलगाववादियों" का मामला सुन रहा था छोटे कद का, भारी भरकम शरीर वाला और हास्य व्यंग्य करने वाला उलरिख अदालत की अध्यक्षता कर रहा था। उसने केवल अपने सहयोगियों से ही नहीं बल्कि कैदियों से भी हंसी मजाक करने का एक भी अवसर अपने हाथ से नहीं जाने दिया (आखिरकार, मानवीयता यही है ! यह एक नया गुण है - इससे पहले यह गुण कहीं दिखाई पड़ा था ?) यह जानकारी मिलने पर कि सूसी एक वकील था। वह मुस्कराकर उससे बोला : "ठीक है, अब तुम्हारा पेशा, तुम्हारे कुछ काम आ सकता है !" हां, झगड़ा करने की कोई जरूरत नहीं है। कटुता क्यों पैदा करें ? अदालत का काम बड़ी हंसी खुशी चलता है। न्यायाधीश की मेज पर बैठे हुए वे लोग सिग़रेट पीते थे और सुविधाजनक समय पर दोपहर के भोजन के लिये उठ खड़े होते थे। और जब शाम होने लगती तो उन्हें भीतर जाकर मंत्रणा करनी पड़ती। पर रात के समय कौन मंत्रणा करता है ? वे लोग कैदियों को अपनी मेज़ों पर ही रातभर बैठा छोड़ कर अपने घर चले जाते थे। सुबह ९ बजे वे वापस लौटते। सबके सब बड़े फुरतीले और हाल में दाढ़ी बनाने के कारण ताजगी से भरे हुए : "खड़े हो जाओ ! अदालत की कारवाई शुरू होती है।" और सब कैदियों को, प्रत्येक कैदी को "१०-१० रूबल का नोट" थमा दिया गया।

और यदि कोई इस बात की आपत्ति करे कि कम से कम विशेष मण्डल बिना किसी वंचना के काम करता था जबकि ऊपर बताये गये उदाहरणों में वंचना दिखाई पड़ती थी—वे मंत्रणा करने का स्वांग रचते थे लेकिन वास्तव में मंत्रणा नहीं करते थे—तो हमें निश्चय ही अपनी आपत्ति, बहुत कड़ी आपत्ति प्रकट करनी होगी।

हाँ, तीसरी और अन्तिम विशेषता द्वन्द्वात्मकता की है। (जिसे इस लोकोक्ति में बड़े अपरिष्कृत ढंग से इस प्रकार स्पष्ट किया गया है : "आप माल के डिब्बे का मुंह जिस ओर कर देते हैं, वह उसी ओर चल पड़ता है") दंड संहिता किसी न्यायाधीश के मार्ग में बाधक नहीं बन सकती। दंड संहिता के अनुच्छेद १०, १५ और २० वर्षों के तेज़ परिवर्तन के मध्य मौजूद रहे हैं और जैसाकि फास्ट ने कहा है :

सारा संसार बदलता है और प्रत्येक वस्तु आगे बढ़ती है,
तो मुझे अपना वचन तोड़ देने में क्यों भयभीत होना चाहिए ?

दंड संहिता के समस्त अनुच्छेदों के ऊपर व्याख्याओं, सम्मतियों और निर्देशों की मोटी परत जम चुकी हैं और यदि अभियुक्त के कार्यों पर दंड संहिता की व्यवस्थाएं लागू नहीं होतीं तो भी उसे सज़ा सुनाई जा सकती है :

+तुलनात्मक उदाहरण के रूप में (यह भी कितना जबर्दस्त अवसर है !)

+केवल परिवार अथवा जाति के कारण (७-३५ : सामाजिक दृष्टि से खतरनाक परिवेश से सम्बन्धित)[1]

+खतरनाक व्यक्तियों से सम्पर्क के कारण[1] (इसकी लपेट में भी आ सकते हैं ! "खतरनाक" कौन है और कौन से "सम्पर्क" इसके अन्तर्गत आते हैं यह केवल न्यायाधीश ही बता सकता है।)

लेकिन किसी को हमारे प्रकाशित कानून की सूक्ष्म शब्दावली के बारे में शिकायत नहीं करनी चाहिए। १३ जनवरी १९५० को एक अध्यादेश जारी करके मृत्युदण्ड की फिर व्यवस्था कर दी गई। (वस्तुतः हम यह सोचने पर बाध्य होंगे कि बेरिया के तहखानों से मृत्युदण्ड कभी भी विदा नहीं हुआ था।) और इस अध्यादेश में यह कहा गया था कि मृत्युदण्ड तोड़फोड़ करने वालों, ध्यान बटाने वालों को दिया जा सकता है। इसका क्या मतलब होता है ? इस बात का अध्यादेश में कोई उल्लेख नहीं था। आईओसिफ विसारियोनोविच इस बात को इस प्रकार कहना पसन्द करता था : पूरी बात कहना जरूरी नहीं है। बस संकेत मात्र काफी है। क्या इसका संकेत किसी ऐसे व्यक्ति की ओर था जो बारूद से रेल पटरियों को उड़ाता हो ? इसमें यह बात नहीं कही गई। हम लम्बे अरसे से यह ज्ञान प्राप्त कर चुके थे कि "ध्यान बटाने वाला कौन होता है : घटिया किस्म का माल बनाने वाला व्यक्ति ध्यान बटाने वाला था। लेकिन तोड़फोड़ करने वाला कौन था ? क्या किसी बस या ट्राम में बातचीत के दौरान सरकार की सत्ता को क्षति पहुँचाने वाला व्यक्ति इस कोटि के अन्तर्गत आता था ? अथवा किसी विदेशी से शादी कर लेने पर कोई लड़की इस कोटि के अन्तर्गत आ जाती थी—क्या वह हमारी मातृभूमि की महानता को क्षति नहीं पहुँचा रही थी ?

लेकिन इन बातों का निर्णय न्यायाधीश नहीं करता। न्यायाधीश केवल अपना वेतन बटोरता है। निर्देश न्याय का निर्धारण करते हैं। सन् १९३७ के निर्देश में कहा गया : १० साल; २० साल; गोली से उड़ा कर मृत्युदण्ड। १९४३ का निर्देश : २० वर्ष

का कठोर कारावास; फांसी पर लटका कर मृत्युदण्ड; १९४५ का निर्देश : प्रत्येक को १० वर्ष की कैद और ५ वर्ष तक मताधिकार से वंचित रखना।[7] (तीन पंचवर्षीय योजनाओं के लिए श्रम शक्ति जुटाने का साधन।) सन् १९४९ का निर्देश : प्रत्येक को २५ वर्ष।[8]

मशीन सज़ा की अवधि का ठप्पा लगाती थी। जब राज्य सुरक्षा की इमारत की ड्योढ़ी पर कैदी के कोट के बटन काट कर फैंक दिये जाते थे तो कैदी तभी अपने समस्त अधिकारों से वंचित हो जाता था और वह सज़ा से नहीं बच सकता था। कानून के पेशे के सदस्य इस तरीके के इतने आदी हो चुके थे कि सन् १९५८ में वे मुंह के बल जा गिरे और उन्होंने अत्यधिक बदनामी करा दी। नए प्रस्तावित "सोवियत संघ में फौजदारी मुकदमों के बुनियादी सिद्धांत" समाचारपत्रों में प्रकाशित कर दिये गये और वे इसमें उन बातों को शामिल करना भूल गए, जिनके आधार पर किसी कैदी को रिहा करने की संभावना हो सकती थी। सरकारी समाचारपत्र ने एक हल्की सी फटकार बताई : "इससे यह आभास मिल सकता है कि हमारी अदालतें केवल दण्ड ही सुनाती हैं।"[9]

लेकिन एक क्षण के लिए आप न्यायविदों का पक्ष लीजिए : किसी मुकदमे के दो संभावित परिणाम क्यों होने चाहिएं जब हमारे आम चुनाव केवल एक उम्मीदवार के आधार पर ही आयोजित होते हैं? और आर्थिक दृष्टिकोण से कैदी को रिहा करना अकल्पनीय है! इसका यह अर्थ होगा कि मुखबिर, सुरक्षा अफसर, पूछताछ अधिकारी, सरकारी वकील के कार्यालय के कर्मचारी, जेल के आन्तरिक संतरी, और कैदियों को एक जेल से दूसरी जेल या शिविर में ले जाने वाले सन्तरियों ने कोई उपयोगी काम नहीं किया।

यहां एक ऐसा स्पष्ट और विशिष्ट मामला है, जिसे सैनिक अदालत के सामने पेश किया गया था। सन् १९४१ में, मंगोलिया में तैनात हमारी निष्क्रिय सेना की सुरक्षा कार्य शाखा को कुछ गतिविधि और सतर्कता दिखाने को कहा गया। सैनिक चिकित्सा सहायक लोजोवस्की ने इस बात के महत्व को समझा और वह किसी स्त्री के कारण लैफ्टिनेंट पावेल चुलपेनएव से जलता था। जब वे दोनों अकेले थे तो उसने चुलपेनएव से तीन प्रश्न पूछे : (१)—"तुम्हारी राय में हम जर्मनों के मुकाबले में पीछे हटते जा रहे हैं?" (चुलपेनएव का उत्तर था : "उनके पास अधिक हथियार और साज सामान है तथा उन्होंने काफी समय पहले तैयारी शुरू कर दी थी।" इसके उत्तर में लोजोवस्की बोला : "नहीं, यह तो एक चाल है। हम लोग उन्हें झांसा दे रहे हैं।") (२)—"क्या तुम्हारे विचार से मित्र राष्ट्र सहायता करेंगे," (चुलपेनएव : "मैं समझता हूं कि वे सहायता करेंगे, लेकिन निःस्वार्थ उद्देश्यों से नहीं।" लोजोवस्की का जवाब था : "वे हमें धोखा दे रहे हैं, वह हमारी कोई मदद नहीं करेंगे।") (३)—"वोरोशिलोव को उत्तर-पश्चिम मोर्चे की कमान संभालने के लिए क्यों भेजा गया था?"

चुलपेनएव ने उत्तर दिया और इनके बारे में भूल गया। और लोजोवस्की ने उसके खिलाफ अभियोग लिख कर भेजा। चुलपेनएव को डिवीजन की राजनीतिक शाखा के सामने पेश होने को कहा गया और उसे युवक कम्युनिस्ट पार्टी कोमसोमोल से निकाल दिया गया। पराजयवादी दृष्टिकोण के कारण : जर्मनों के साज सामान की प्रशंसा करने के कारण, सैनिक उच्च कमान की समर नीति का मजाक उड़ाने के कारण। उसके विरुद्ध सबसे अधिक ऊंची आवाज़ कोमसोमोल के संगठनकर्ता काल्याजिन ने उठाई थी क्योंकि

काल्याजिन ने चुलपेनएव के समक्ष खालखिन-गोल की लड़ाई में कायरता का प्रदर्शन किया था और इस कारण से अपनी कायरता के साक्षा से सदा सर्वदा के लिए छुटकारा पाना उसके लिए उपयोगी और सुविधाजनक था।

इसके बाद चुलपेनएव को गिरफ्तार कर लिया गया। उसका एक बार लोजोवस्की से सामना कराया गया। पूछताछ अधिकारी ने उनकी पिछली बातचीत का मामला तक नहीं उठाया। केवल एक प्रश्न पूछा गया : "क्या तुम इस आदमी को जानते हो ?" "हाँ !" "गवाह, तुम जा सकते हो।" (पूछताछ अधिकारी को यह भय था कि कहीं अभियोग नाकाम न हो जाये।)[१०]

एक महीने तक उस प्रकार के गड्ढे बन्द रहने के बाद जिसका विवरण हम पहले दे चुके हैं। चुलपेनएव २६वीं मोटर डिवीजन की सैनिक अदालत के सामने पेश हुआ। इसमें डिवीजन का राजनीतिक कमीसार लेवेदेव, और राजनीतिक शाखा का अध्यक्ष लेसारेव मौजूद थे। गवाह लोजोवस्की को ब्यान देने तक के लिए नहीं बुलाया गया था। झूठी गवाही का विवरण मुकदमे के दस्तावेजों में रखने के लिये मुकदमे के बाद लोजोवस्की और राजनीतिक कमीसार सेरएजिन के हस्ताक्षर करा लिये गये। सैनिक अदालत ने यह प्रश्न पूछे थे। क्या तुम्हारी लोजोवस्की से बातचीत हुई थी ? उसने तुमसे क्या पूछा था ? तुम्हारे उत्तर क्या थे ? बड़े बचकानेपन से चुलपेनएव ने उन्हें पूरी बात बता दी। अभी तक उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि आखिरकार वह किस बात का दोषी है। आखिरकार अनेक लोग इस प्रकार बात करते हैं ! "उसने अत्यन्त अबोधपन से कहा। सैनिक अदालत की दिलचस्पी बढ़ी ?" कौन लोग ? "हमें उनके नाम बताओ ?" लेकिन चुलपेनएव उनकी नस्ल का नहीं था ! उसकी अन्तिम प्रार्थना यह थी कि—"मैं अदालत से यह प्रार्थना करता हूँ कि मुझे एक ऐसा काम सौंपा जाये जिसमें मेरी मृत्यु निश्चित हो ताकि एक बार मैं फिर अपनी देशभक्ति को प्रमाणित कर सकूँ।" और, पुराने जमाने के एक सरल हृदय योद्धा की तरह उसने इसमें यह अनुरोध भी जोड़ दिया : "मुझे और उस व्यक्ति को जिसने मेरे ऊपर अभियोग लगाया है यह काम पूरा करने के लिये भेजा जाना चाहिए।"

ओह, नहीं ! हमारा काम लोगों के मन में मौजूद ऐसे समस्त वीरता-पूर्ण विचारों और भावों को नष्ट कर डालना है। लोजोवस्की का काम लोगों को दवा की गोलियाँ बांटना था और सेरएजिन का काम सैनिकों को पार्टी और सरकार की महिमा का पाठ पढ़ाना था।[११] इस बात का कोई महत्व नहीं था कि आप मरते हैं अथवा जिन्दा रहते हैं। महत्वपूर्ण बात यह थी कि हम सतर्क थे। सैनिक अदालत के सदस्य बाहर चले गए। उन्होंने सिगरेट के कश खींचे और वापस लौट आए : १० वर्ष की कैद और ३ वर्ष तक मतदान के अधिकार से वंचित रहना।

युद्ध की अवधि प्रत्येक डिवीजन में ऐसे १० से अधिक मामले निश्चयपूर्वक रहे। (अन्यथा सैनिक अदालतें अपने ऊपर होने वाले खर्च का औचित्य सिद्ध नहीं कर सकती थीं।) और कुल डिवीजनों की संख्या क्या थी ? पाठक यह गणना स्वयं कर सकता है।

सैनिक अदालतों की बैठकें अत्यधिक उबा देने वाली सीमा तक समान होती थीं। न्यायाधीश निराशाजनक सीमा तक व्यक्तित्वहीन और भावहीन होते थे—रबड़ की मोहरों की तरह। सज़ा की अवधियाँ कहीं और निर्धारित होती थीं।

प्रत्येक व्यक्ति बड़ी गम्भीर मुख मुद्रा बनाए रखता था। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति यह जानता था कि यह नाटक है, विशेषकर कैदियों को लाने वाले सन्तरी, क्योंकि ये उन सब लोगों में सबसे अधिक सीधे-सादे होते थे। सन् १९४५ में नोवोतीविर्स की संक्रमण जेल में वे मामलों के आधार पर कैदियों को सज़ा सुनाते थे। "अमुक कैदी! अनुच्छेद ५८-१ क, २५ वर्ष।" गारद का मुखिया जिज्ञासा से भर उठता था : "तुम्हें यह सज़ा किसलिए मिली?" "बस, यूं ही, कोई भी कारण नहीं था।" "तुम झूठ बोल रहे हो। कुछ भी न करने की सज़ा १० वर्ष होती है।"

जब सैनिक अदालतों के सामने बहुत काम होता था, और उनके ऊपर काम का बहुत दबाव रहता था तो उनकी बैठक "एक मिनट चलती थी — बस केवल उतना समय लगता था जितना उन्हें कमरे से बाहर जाकर लौटने में लगता था। जब उनका काम का दिन लगातार १६ घंटे तक चलता रहता था तो आप अदालत के कमरे के दरवाजे से यह देख सकते थे कि सफेद मेजपोश के ऊपर फलों की छोटी-छोटी टोकरियाँ रखी हैं। जब उन्हें जल्दी नहीं होती थी तो "मनोवैज्ञानिक रंग देकर" सज़ाएं सुनाई जाती थीं :..."दण्ड की सर्वोच्च कारवाई के अन्तर्गत दण्डित!" और इसके बाद थोड़ा सा अन्तराल होता। न्ययाधीश दंड सुनाए जाने वाले व्यक्ति की आँखों में आँख डाल कर देखता। यह देखना दिलचस्प होता कि वह इसे किस तरह बर्दाश्त करता है। उस क्षण उसके मन में क्या भाव आते हैं? और उसके बाद ही निर्णन आगे बढ़ाया जाता। "...लेकिन निष्ठापूर्ण पश्चाताप को ध्यान में रखते हुए...।"

अदालत से बाहर बने प्रतीक्षालय में दीवार पर नाखून से खुरच कर और पेन्सिल से भी यह संदेश लिखे होते : "मुझे मृत्युदण्ड दिया गया," "मुझे २५ वर्ष," "मुझे दस्सा मिला!" वे लोग दीवारों पर लिखे इन संदेशों को मिटाते नहीं थे। इनसे शिक्षा का एक उद्देश्य पूरा होता था। भयभीत रहो; सिर झुकाओ; यह मत सोचो कि तुम अपने आचरण से किसी भी बात में कोई परिवर्तन कर सकते हो। यदि आप देवमोस्थनीज की वक्तृत्व शक्ति से अपनी सफाई में बोलते और आपका यह भाषण मुट्ठी भर पूछताछ अधिकारियों को छोड़ कर पूरी तरह खाली अदालत के कमरे में होता—सन् १९३६ में सर्वोच्च न्यायालय में ओलगा क्लीओजवर्ग की तरह—तो यह आपके लिए कणमात्र भी सहायक न बनता। बस, आप यही कर सकते थे कि अपनी सज़ा को १० वर्ष से बढ़ा कर मृत्युदण्ड में परिवर्तित करा देते। उदाहरण के लिए यदि आप यह चिल्ला पड़ते, तुम लोग फासिस्ट हो! मुझे इस बात की शरम है कि मैं अनेक वर्षों तक तुम्हारी पार्टी का सदस्य रहा! (निकोलाई सेभियोनोविच दास्कल ने १९३७ में अजोव कालासागर प्रान्त के विशेष कालेजियम के समक्ष माइकोप में यही कहा। इस अदालत की अध्यक्षता खोलिक कर रहा था।) इस स्थिति में वे यही करेंगे कि आपके खिलाफ एक नया मामला तैयार करेंगे और आपको सदा सर्वदा के लिए समाप्त कर दिया जाएगा।

चावदारोव ने एक ऐसी घटना का विवरण दिया है जिसमें सब अभियुक्तों ने मुकदमे के दौरान अचानक अपने उस झूठे ब्यान को गलत बता दिया जो उन्होंने पूछताछ के दौरान दिया था। और क्या हुआ? यदि एक दूसरे की ओर कनखियों से देखते समय न्यायाधीशों के मन में कोई दुविधा थी तो वे कुछ सैकण्डों से अधिक कायम नहीं रही। सरकारी वकील ने यह बताये बिना ही कि वह यह मांग क्यों कर रहा है, मुकदमा स्थगित

करने की माँग की। पूछताछ जेल से पूछताछ अधिकारी और उन्हें सहायता देने वाले मुसटंडे दौड़े हुए आए। सब कैदियों को, अलग-अलग बाक्सों में बन्द कर दिया गया। एक बार फिर उन्हें भयंकर रूप से मारा पीटा गया और धमकी दी कि जब अगली बार अदालत की कारवाई फिर स्थगित होगी उन्हें इसी प्रकार मारा पीटा जायेगा। अदालत स्थगित होने का समय पूरा हो गया। न्यायाधीशों ने एक बार फिर सवाल पूछे—और इस बार उन सबने झूठी स्वीकारोक्ति कर ली।

वस्त्र उद्योग अनुसंधान संस्था के निर्देशक अलेक्सांदर ग्रीगोरेविच कारतेनिकोव ने अत्यधिक चतुरता का उदाहरण प्रस्तुत किया। जैसे ही सर्वोच्च न्यायालय के सैनिक कालेजियम की बैठक शुरू होने जा रही थी उसने अपने सन्तरी की मार्फत यह कहला भेजा कि वह कुछ और सामान देना चाहता है। जैसाकि स्पष्ट था कि इससे अत्यधिक जिज्ञासा उत्पन्न हुई। सरकारी वकील ने उससे बात की। कारेतनिकोव ने अपने गले की टूटी हुई हड्डी दिखाई, जिसमें मवाद और खून रिस रहा था। उसकी गले की हड्डी को पूछताछ अफसर ने स्टूल मार कर तोड़ डाला था। कारेतनिकोव ने सरकारी वकील से कहा: "मैंने सब बातों पर यातना दिये जाने के कारण हस्ताक्षर किए थे।" अब तक सरकारी वकील अपने आपको इस अतिरिक्त प्रमाण को प्राप्त करने का लालच दिखाने के लिए कोसने लगा था। लेकिन अब बहुत विलम्ब हो चुका था। इनमें से प्रत्येक वकील उस समय तक निर्भय होता है जब तक वह इस पूरी मशीन का एक अनाम पुर्जा बना रहता है। लेकिन जैसे ही उत्तरदायित्व किसी खास व्यक्ति पर आ जाता है, किसी वकील आदि के ऊपर आ पड़ता है, और स्वयं उसके ऊपर भी प्रकाश पड़ने लगता है, वह पीला पड़ जाता है और वह अनुभव करने लगता है कि वह नगण्य है और किसी भी क्षण केले के छिलके पर फिसल सकता है। इस प्रकार कोरेतनिकोव ने सरकारी वकील को फंसा लिया और सरकारी वकील इस मामले को दबाने के लिए तैयार नहीं हो पा रहा था। सैनिक कालेजियम की बैठक शुरू होने वाली थी और कारेतनिकोव ने न्यायाधीशों के सामने अपना वक्तव्य दोहरा दिया। अब यह एक ऐसा मामला उठ खड़ा हुआ था जिस पर कालेजियम के सदस्यों को बाहर जाकर विचार करने के लिए बाध्य होना पड़ा! लेकिन वे इस मामले में केवल कैदी को रिहा करने का फैसला ही सुना सकने थे, जिसका अर्थ अदालत में ही कारेतनिकोव को रिहा कर देना होता। अत: उन्होंने कोई फैसला ही नहीं सुनाया।

मानो कुछ भी न हुआ हो, वे लोग कारेतनिकोव को वापस जेल ले गए, उसके गले की हड्डी का इलाज किया और उसे तीन महीने और जेल में रखा। एक अत्यन्त विनम्र नया पूछताछ अफसर इस मामले के लिये नियुक्त हुआ, जिसने कारेतनिकोव की गिरफ्तारी के लिये नया वारंट लिखा। ("यदि कालेजिमम स्थिति को इस प्रकार तोड़ मरोड़ न देता तो कम से कम वह तीन महीने का यह समय एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में बिता सकता था। इस पूछताछ अधिकारी ने भी पहले पूछताछ अधिकारी की तरह ही प्रश्न पूछे, उसने भी वही प्रश्न पूछे। कारेतनिकोव का स्वतंत्र हो जाने की संभावना का आभास अनुभव होने लगा। और उसने पूछताछ का बड़ी दृढ़ता से सामना किया। और किसी भी प्रकार के अपराध को स्वीकार करते से इनकार कर दिया। और इसके बाद क्या हुआ? उसे विशेष मण्डल ने ८ वर्ष की कैद की सज़ा दे दी।

इस उदाहरण से यह पर्याप्त स्पष्ट होता है कि कैदी को क्या-क्या अवसर उपलब्ध

हो सकते थे और विशेष मण्डल को कितनी व्यापक सुविधायें प्राप्त थीं। कवि देरझाविन ने लिखा है :

एक आंशिक अदालत लूटमार से बुरी होती है।
न्यायाधीश शत्रु हैं; कानून वहां सो रहा है।
आपके सामने नागरिक की गर्दन।
खिंची पड़ी होती है, शांत और प्रतिरक्षा के बिना।

लेकिन ऐसी घटनाएं सर्वोच्च न्यायालय के सैनिक कालेजियम में यदाकदा ही होती थीं। इस कारण से, सामान्यतया यह कार्य इस कालेजियम के लिये बड़ा दुर्लभ था कि वह अपनी धूमिल आँखों को मले और कैदी के रूप में उसके सामने पेश छोटे टीन के सिपाही को देखने की कोशिश करे। सन् १९३७ में ए० डी० आर० नाम के एक बिजली इन्जीनियर को चौथी मंजिल पर ले जाया गया। वह सीढ़ियों के ऊपर दौड़ा जा रहा था और उसके दोनों ओर सशस्त्र संतरी थे। (इस बात की पूरी संभावना थी कि लिफ्ट चल रही थी लेकिन इतनी बड़ी संख्या में कैदी आ जा रहे थे कि यदि कैदियों को लिफ्ट का इस्तेमाल करने दिया जाता तो अफसरों और कर्मचारियों को इसके इस्तेमाल का मौका नहीं मिलता।) अभी हाल में दण्डित एक कैदी से मिलने के बाद जो तुरन्त रवाना हुआ था, उन लोगों ने अदालत में प्रवेश किया। सैनिक कालेजियम इतनी जल्दबाजी में था कि उसने अभी तक अपनी कुर्सियाँ नहीं संभाली थीं और इसके तीनों सदस्य खड़े हुए थे। मुश्किल से अपना सांस रोकते हुए, क्योंकि लम्बी पूछताछ के कारण वह बेहद कमजोर हो चुका था और सीढ़ियों पर चढ़ने का परिश्रम उसके लिये बहुत अधिक था, और आर० ने अपना पूरा नाम ले डाला। न्यायाधीशों से बुदबुदा कर कुछ कहा, एक दूसरे की ओर देखा और उलरिख ने—वही उल्लरिख अन्य कोई नहीं—घोषणा की "२० वर्ष!" और वे लोग आर० को दौड़ाते हुए बाहर घसीट ले गए और उतनी ही तेज़ रफ्तार से दूसरा कैदी पेश कर दिया गया।

यह एक सपने के समान था। फरवरी १९६३ में मुझे भी वे सीढ़ियां चढ़नी पड़ीं। लेकिन मेरे साथ बड़ी विनम्रतापूर्वक एक कर्नल चल रहा था, जो कम्युनिस्ट पार्टी का संगठनकर्त्ता था। और वृत्ताकार खम्भों वाले उस कमरे में, जिसके बारे में उन लोगों का कहना है कि सोवियत संघ के सर्वोच्च न्यायालय के सब न्यायाधीश एक-साथ बड़े मुकदमे की सुनवाई करते हैं—और जिस पक्ष के मध्य एक विशाल घोड़े की नाल जैसी मेज़ रखी हुई है और जिसके भीतर एक और गोल मेज रहती है तथा सात पुराने किस्म की कुर्सियां रखी रहती हैं—सैनिक कालेजियम के ७० अफसरों ने मेरी बातें सुनीं—यह वही सैनिक कालेजियम था, जिसने एक समय कारेतनिकोव और आर० तथा अन्य अनेक लोगों को, न जाने कितने लोगों को सजाएँ सुनाई थीं। और मैंने उनसे कहा : "यह कितना विलक्षण दिन है! यद्यपि पहले मुझे शिविर में सजा काटने और बाद में सदा सर्वदा निष्कासन में रहने का दण्ड दिया गया था, मैंने इससे पहले एक भी न्यायधीश को इस प्रकार आमने-सामने नहीं देखा था। और आज मैं आप सब लोगों को यहां एकत्र देखता हूँ!" (और उन लोगों ने, अपनी आंखों को मल कर खोलते हुए, अपने जीवन में पहली बार एक जीवित कैदी को देखा।)

लेकिन यह स्पष्ट हुआ कि वह लोग वे नहीं थे! हाँ। उन्होंने यही कहा, कि वे

वे लोग नहीं थे। उन लोगों ने मुझे इस बात से आश्वस्त किया कि वे दूसरे लोग अब मौजूद नहीं हैं। उनमें से कुछ बड़े सम्मान के साथ पेशन सहित अवकाश प्राप्त कर चुके हैं, कुछ को अपदस्थ कर दिया गया है। (यह पता चला कि उलरिख को, जो इन सबमें सबसे बड़ा जल्लाद था, स्तालिन के जमाने में १९५० में अपदस्थ कर दिया गया था और आप इस बात का विश्वास करें अथवा नहीं, उसे कैदियों के साथ रियायत बरतने, उन्हें कम कठोर दण्ड देने के लिए हटाया गया था।) उनमें से कुछ लोगों पर— इनकी संख्या बहुत थोड़ी थी—ख्रुश्चेव के ज़माने में मुकदमा चलाया गया था। और प्रतिवादियों के रूप में अदालत में उन लोगों ने यह धमकी दी थी : आज तुम हमारे ऊपर मुकदमा चला रहे हो सावधान रहना ! "ख्रुश्चेव के अधीन अन्य सब बातों की तरह यह प्रयास भी, जो आरम्भ में अत्यधिक सक्रिय रहा जल्दी ही त्याग दिया गया। ख्रुश्चेव ने इस प्रक्रिया को कभी भी परिवर्तित न होने वाले परिवर्तन से पहले ही समाप्त कर दिया, जिसका यह अर्थ हुआ कि स्थिति वैसी की वैसी बनी रही।

उस अवसर पर, न्यायापीठ पर बैठे अनेक अनुभवी और पुराने लोगों ने, जो सबके सब एक साथ बोलने लगे थे, अपने संस्मरण बताये और अनजाने में ही मुझे इस अध्याय के लिये सामग्री उपलब्ध करा दी। (काश, वे इन बातों को सचमुच याद रखते और इन्हें प्रकाशित करते ! लेकिन वर्ष गुजरते गए; और पाँच वर्ष गुजर गए और स्थिति न तो पहले से बेहतर और न ही पिछले से अधिक सह्य हो सकी।) इन लोगों ने बताया कि किस प्रकार बहुत से न्यायाधीश अपने अन्य न्यायाधीश सहयोगियों के सम्मेलनों में मंच से भाषण करते समय यह बात बड़े गर्व से कहते थे कि वे दंड संहिता के अनुच्छेद ५१ का प्रयोग न करने में कितने सफल हुए। दंड संहिता के उस अनुच्छेद में उन परिस्थितियों का उल्लेख किया गया है, जिनसे अभियुक्त के अपराधों की गम्भीरता कम होती है और इस प्रकार वे उन मामलों में २५ वर्ष की कैद सुनाने में सफल हुए, जिन मामलों में केवल १० वर्ष की कैद सुनाई जानी चाहिए थी। और उन नए न्यायाधीशों ने यह भी बताया कि न्यायालय किस प्रकार सुरक्षा संगठनों की इच्छा के अनुसार अपमानजनक सीमा तक उनके अधीन काम करते थे। संयुक्त राज्य अमरीका से वापस लौटने वाले एक सोवियत नागरिक ने यह प्रवादपूर्ण बात कही थी कि अमरीका में मोटरगाड़ियों के लिए अच्छी सड़कें हैं—बस इसके अलावा उसने और कुछ नहीं कहा था। यह मामला बस इतना था। न्यायधीश ने इस मामले को और आगे पूछताछ के लिए भेजा और निर्देश दिया कि "सच्ची सोवियत विरोधी सामग्री।" जुटाई जानी चाहिए—दूसरे शब्दों में इस मामले को लौटा दिया ताकि अभियुक्त को मारा-पीटा जा सके, यातनाएं दी जा सकें। लेकिन उनके इस प्रशंसनीय इरादे पर ध्यान नहीं दिया गया। न्यायाधीश को अत्यन्त क्रोधपूर्ण उत्तर मिला : तुम यह कहना चाहते हो कि तुम हमारे सुरक्षा संगठनों पर विश्वास नहीं करते ? और इसके परिणामस्वरूप इस न्यायाधीश को सखालिन में एक सैनिक अदालत के सचिव के पद पर निष्कासित कर दिया गया ! (ख्रुश्चेव के शासनकाल में, फटकार इतनी कठोर नहीं होती थी; जो न्यायधीश गलतियाँ करते थे "उन्हें आपकी राय में कहां भेज दिया जाता था ?— वकीलों के रूप में काम करने के लिए।)"[१२] सरकारी वकील का कार्यालय इसी प्रकार सुरक्षा संगठनों के इशारे पर नाचता था जब सन् १९४२ में, उत्तरी जहाजी बेड़े के जासूसी विरोधी अनुभाग में र्‍यूमिन द्वारा खुल्लमखुल्ला गालियाँ बकने की बात—

ज़ाहिर हो गई, सरकारी वकील के कार्यालय ने अपनी ओर से इस बात में हस्तक्षेप करने का साहस नहीं किया बल्कि इसके विपरीत बड़े सम्मानपूर्वक अबाकुमोव को सूचना दी कि उनके लड़के बहुत ऊंचे काम कर रहे हैं। अबाकुमोव सुरक्षा संगठनों को संसार की सर्वोत्तम वस्तु मानता! यह वही अवसर था जब उसने र्‍यूमिन को अपने पास बुलाया और उसे पदोन्नति दी — जो अन्ततः स्वयं उसके विनाश का कारण बनी।)

फरवरी के उस दिन इन न्यायाधीशों के पास पर्याप्त समय नहीं था अन्यथा वे मुझे १० गुनी बातें बताते। लेकिन उन्होंने मुझे जो कुछ बताया वह भी अत्यन्त विचारणीय है। अदालतें और सरकारी वकील का दफ्तर राज्य सुरक्षा मंत्री के हाथों के मोहरे थे। अतः एक अलग अध्याय में इन पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

उन लोगों ने मुझे अधिक से अधिक बातें बताने में एक-दूसरे से होड़ लगा रखी थी और मैं अपने चारों ओर अत्यन्त आश्चर्य से भर कर देख रहा था। वे लोग थे सचमुच जीते-जागते लोग! वे मुस्करा रहे थे! वे मुझे यह समझा रहे थे कि उनके सर्वोत्तम इरादे हैं। कल्पना कीजिए कि यदि स्थिति फिर उलट जाती है और उन्हें एक बार फिर मेरे मुकदमे की सुनवाई का मौका मिलता है? हो सकता है कि इसी विशाल कक्ष में—और वे लोग मुझे इस इमारत का मुख्य कक्ष दिखा रहे थे।

उस स्थिति में वे लोग मुझे दंड देंगे।

पहले किसका जन्म हुआ—मुर्गी के बच्चे का अथवा अण्डे का? लोग अथवा प्रणाली, पहले अस्तित्व में आई?

अनेक शताब्दियों से हमारे यहाँ एक कहावत है: "कानून से मत डरो न्यायाधीश से डरो।"

लेकिन मेरी राय में कानून लोगों से बहुत आगे बढ़ गया है, और लोग क्रूरता में बहुत पीछे छूट गए हैं। अब समय आ गया है कि इस कहावत को उलट दिया जाए: "न्यायाधीश से मत डरो, कानून से डरो।"

हां, अबाकुमोव जैसे कानून से।

वे लोग मंच पर आ गए और (मेरे उपन्यास) आइ वन डेनिसोविच के बारे में बातचीत करने लगे। उन लोगों ने बड़ी प्रसन्नता से कहा कि इस पुस्तक ने उनकी आत्माओं के ऊपर से बहुत बड़ा बोझ हटा दिया है (उन लोगों ने यही कहा था……।) उन लोगों ने यह स्वीकार किया कि मैंने जो तस्वीर खींची थी वह निश्चय ही वस्तु स्थिति से बेहतर तस्वीर थी, कि उनमें प्रत्येक व्यक्ति शिविरों की इससे भी कहीं अधिक बुरी हालत से परिचित था। (ओह, तो वे यह जानते थे?) घोड़े की नाल की शक्ल की मेज पर बैठे हुए ७० लोगों में से कुछ लोगों को साहित्य का अच्छा ज्ञान था। उनका ज्ञान नोवीमीर (साहित्यिक पत्रिका) के पाठकों से भी अधिक था। वे लोग सुधार के लिए उत्सुक थे। उन लोगों ने बड़े प्रभावशाली ढंग से हमारे सामाजिक नासूरों का उल्लेख किया, देश के देहाती इलाकों की उपेक्षा की चर्चा की।

और मैं वहाँ बैठा रहा, सोचता रहा: यदि सत्य की अत्यन्त छोटी बूंद का एक मनोवैज्ञानिक बम के रूप में विस्फोट हुआ है, तो उस समय हमारे देश में क्या होगा जब यदि सत्य के प्रबल झरने ही प्रवाहित हो उठें?

और ये झरने प्रवाहित होंगे, फूट निकलेंगे। यह अवश्य होगा।

अध्याय—८



बालक के रूप में कानून

हम सब कुछ भूल जाते हैं। हम वह स्मरण नहीं रखते, जो सचमुच हुआ, हम इतिहास को याद नहीं रखते। केवल उन तुच्छ रेखांकित पंक्तियों को याद रखते हैं, जिन्हें वे हमारी स्मृति में निरन्तर पुनरावृत्ति के द्वारा गहराई से बैठा देते हैं।

मुझे नहीं मालूम कि क्या समस्त मानवता का यही गुण है, यही विशेषता है। लेकिन यह निश्चय है कि हमारे देश के लोगों का यह गुण है। और यह निरन्तर बढ़ता जा रहा है। हो सकता है कि इसका मूल अच्छाई में रहा हो, लेकिन इसके बावजूद यह व्यापक होता जा रहा है। यह हमें झूठे लोगों का आसानी से शिकार बना देता है।

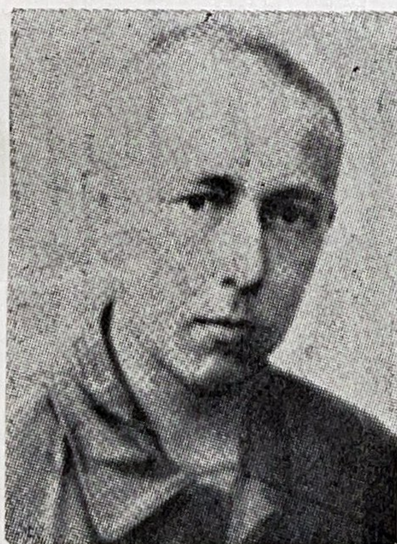
अतः, यदि वे हमसे यह मांगें करते हैं कि हम सार्वजनिक रूप से चलाये गये मुकदमों तक को भूल जाएं, तो हम उन्हें भूल जाते हैं। इन मुकदमों की कारवाई खुली अदालतों में हुई थी और इनका विवरण हमारे समाचारपत्रों में छपा था, लेकिन इन्हें स्मरण रखने के लिये उन लोगों ने हमारे मस्तिष्कों में बरसों से छेद नहीं किये थे—अतः हम इन्हें भूल गए केवल वही बातें जिन्हें निरन्तर, हर रोज़ रेडियो पर दोहराया जाता है, हमारे मस्तिष्क में प्रविष्ट होती हैं। मैं यह बात युवकों के विषय में नहीं कह रहा हूं, क्योंकि उन्हें सचमुच इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है, बल्कि मेरा संकेत उन लोगों के प्रति है, जो इन मुकदमों के समय जीवित थे। किसी भी अधेड़ उम्र के व्यक्ति से अत्यधिक प्रचार के अन्तर्गत सुने गए खुले मुकदमों का विवरण बताने को कहो। उसे बुखारिन और जिनोवीएव के मुकदमों की याद होगी। और, अपनी भवों को सिकोड़ते हुये, वह प्रोमपार्टी के मुकदमे का भी उल्लेख करेगा। और यहीं उसका अन्त हो जायेगा, जैसे और सार्वजनिक मुकदमे नहीं हुये!

यद्यपि, वास्तविकता यह है कि अक्तूबर क्रांति के तुरन्त बाद इनका समारम्भ हो गया था। सन् १९१८ में अनेक अदालतों में ये मुकदमे चल रहे थे। ये मुकदमे उस समय चलाये गये थे, जब तक न तो कानून थे और न ही कानून संहितायें। और न्यायाधीशों को क्रांतिकारी श्रमिकों और किसानों की शक्ति की आवश्यकताओं के अनुसार निर्णय सुनाने पड़ते थे। इसके साथ ही वे लोग स्वयं वीरतापूर्ण कानून व्यवस्था का भी मार्ग प्रशस्त कर रहे थे। किसी दिन कोई व्यक्ति उनका विस्तृत इतिहास लिखेगा और हम अपनी वर्तमान पड़ताल में इसे शामिल करने का प्रयास तक नहीं करेंगे।

पर एक संक्षिप्त समीक्षा के बिना हमारा काम नहीं चलेगा। यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम कुछ उन जले हुये ध्वांसावशेषों की खोज करें, जो हमारे भद्र, अस्पष्ट और गुलाबी



अलेक्जेंडर सोल्झेनित्सीन—फौज में



...जेल में



...कैम्प से रिहाई के बाद



विक्टर पेत्रोविच पोकरोवस्की

मास्को में १९१८ में गोली से उड़ाया गया।



अलेक्सान्द्र शत्रोबाइंडर, विद्यार्थी

पेत्रोग्राद में १९१८ में गोली से उड़ाया गया।



वासिली आइवानोविच एनिचकोव

लूबयांका में १९२७ में गोली से उड़ाया गया।



अलेक्सान्द्र आन्द्रेएविच सवेचिन, जनरल स्टाफ के प्रोफेसर

१९३५ में गोली से उड़ाया गया।



माइखेल अलेक्सान्द्रोविच रिफार्मातस्की, कृषि विज्ञानी

ओरेल में १९३८ में गोली से उड़ाया गया।



एलिजाबेता एवजेनएवना अनिचकोवा

येनीसेई नदी पर बने एक शिविर में १९४२ में गोली से उड़ाई गई।

रंग के प्रभात से सम्बन्धित है।

उन गतिशील वर्षों में युद्ध की तलवारें म्यान में जंग नहीं खा रही थीं और न ही जल्लादों की रिवाल्वरों को अपने केसों में ठंडा होने का समय मिलता था। केवल आगे चल कर ही रात के समय तहखानों में लोगों को गोली से उड़ाने की कारवाइयों को छिपाया जाने लगा और इन हत्याकांडों का लक्ष्य बने लोगों के सिर के पिछले हिस्से में गोली मार कर उन्हें समाप्त करने का काम शुरू हुआ। सन् १९१८ में रियाजन का प्रसिद्ध चेकिस्ट (खुफिया पुलिस चेका का सदस्य) स्तेलमाख गोली से उड़ाये जाने का दण्ड सुनाये गये लोगों को दिन के समय ही जेल के अहाते में गोली से उड़ा देता था और अपनी बारी की प्रतीक्षा करने वाले कैदी जेल की खिड़कियों से यह दृश्य देखा करते थे।

उस समय इसके लिये एक अधिकृत शब्दावली प्रचलित थी : न्याय की परिधि के बाहर प्रतिशोध...इसका कारण यह नहीं था कि उस जमाने में अदालतें नहीं थीं, बल्कि इसका कारण यह था कि चेका मौजूद थी।[1] क्योंकि यह तरीका अभी कार्यकुशल था। निश्चय ही, अदालतें थीं और वे लोगों पर मुकदमा चलातीं, सजाएं सुनातीं और मृत्युदण्ड देतीं। लेकिन हमें यह स्मरण रखना आवश्यक है कि इनके समानानंतर और इनसे स्वतन्त्र रह कर, न्याय की परिधि के बाहर प्रतिशोध निरन्तर जारी था। हम इसके पैमाने को किस प्रकार दर्शा सकते हैं? एम० लातसिस ने, चेका की गतिविधियों की अपनी लोकप्रिय समीक्षा में,[2] केवल डेढ़ वर्ष के (सन् १९१८ और १९१९ की पहली छमाही और वह भी मध्य रूस के २० प्रान्तों के बारे में) जो आंकड़े प्रस्तुत किए हैं, वे किसी भी रूप में पूर्ण नहीं है।[3] संभवत: उसने इन्हें विनम्रतावश ही आंशिक बताया था : चेका ने जिन लोगों को गोली से उड़ाया (अर्थात् मुकदमे के बिना, अदालतों की उपेक्षा करते हुए) उनकी संख्या ८,३८९ थी;[4] जिन क्रान्ति विरोधी संगठनों का पता लगाया गया, उनकी संख्या ४१२ थी (अपने देशवासियों की अपने समस्त इतिहास में संगठन बनाने की अपर्याप्त क्षमता को देखते हुए यह संख्या अत्यधिक बड़ी लगती है और इसके अलावा उन वर्षों में लोग एक दूसरे से अलग-थलग पड़ चुके थे तथा व्यापक रूप से निराशा फैली हुई थी); गिरफ्तार लोगों की कुल संख्या ८७,०० थी[5] (और इस संख्या से लाघव कथन की बू आती है।) मूल्यांकन के लिये क्या कोई उदाहरण या तुलनात्मक दृष्टांत उपलब्ध है? सन् १९०७ में वामपंथी नेताओं की एक टोली ने "मृत्युदण्ड के विरुद्ध"[6] शीर्षक निबन्ध संग्रह प्रकाशित किया, जिसमें उन लोगों के नाम दिये गये थे, जिन्हें १८२६ से १९०६ तक जारशाही के रूस में मृत्युदण्ड दिया गया था। इसके संपादकों ने यह भी कहा था कि इसके अलावा भी कुछ और लोग हो सकते हैं, जिन्हें मृत्युदण्ड दिया गया हो। इन लोगों के नामों की जानकारी नहीं है और यह सूची अपूर्ण है। (पर यह निश्चय है कि यह सूची उतनी अपूर्ण नहीं है, जितनी गृहयुद्ध के दौरान लातासिस द्वारा संगृहीत सामग्री।) उक्त सूची में १,३९७ नाम दिये गये हैं—और इसमें से २३३ लोगों को निकाल देना होगा, क्योंकि इसके मृत्युदण्ड को जेल की सजा में बदल दिया था और इसी प्रकार उन २७० लोगों को भी निकाल देना होगा, जिन्हें उनकी गैर-मौजूदगी में मृत्युदण्ड सुनाया गया था और जिन्हें कभी भी गिरफ्तार नहीं किया जा सका। (इनमें अधिकांशतया वे पोलैंड निवासी विद्रोही थे, जो पश्चिम के देशों को भाग गये थे।) इसके बाद केवल ८९४ नाम रह जाते हैं। और ८० वर्ष की इस अवधि में जिन लोगों को मृत्युदण्ड दिया गया, उनकी संख्या लातसिस की डेढ़ वर्ष की संख्या के भी बराबर नहीं है, जबकि लातसिस ने

अपनी गणना में रूप के सब प्रान्तों को शामिल नहीं किया था। यह सच है कि इस संकलन के संपादक यह कहते हैं कि संभवत: १,३१० और लोगों को केवल १९०६ में ही मृत्युदण्ड दिया गया था (यद्यपि इन सबको, संभवत: फांसी नहीं दी जा सकी थी) और इस प्रकार सन् १८२६ से १९०६ तक का कुल योग ३,४१९ बैठता है। लेकिन यह स्मरण रखिये कि इसमें स्तोलीपिन के कुख्यात प्रतिक्रियावादी कार्यों के युग की संख्याएं भी शामिल हैं। इसके लिए मृत्युदण्डों की एक और संख्या उपलब्ध है। छह महीने में ९५० व्यक्तियों को मृत्युदण्ड। (वास्तव में, स्तोलीपिन की सैनिक अदालतें केवल छह महीने तक ही कायम रहीं।) यह बड़ा भयंकर दिखाई पड़ता है, लेकिन इससे हमारे कठोर स्नायुओं पर कोई असर नहीं पड़ता : यदि हम छह महीने में ९५० को मृत्युदण्ड की संख्या को तीन से गुना कर दें, ताकि इसकी क्रांति के बाद की उस १८ महीने की अवधि की लातसिस द्वारा एकत्र संख्या से तुलना की जा सके, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि क्रान्ति के बाद जो आतंक फैलाया गया, वह स्तोलीपिन द्वारा फैलाये गये आतंक से कम से कम तीन गुना अधिक उग्र था। यह केवल २० प्रांतों की संख्या थी और इसमें अदालतों और सैनिक अदालतों द्वारा सुनाये गये मृत्युदण्ड शामिल नहीं किए गये थे।

और नवम्बर १९१७ से अदालतें अपनी इच्छा के अनुसार काम करने लगी थीं। उस समय की समस्त कठिनाइयों के बावजूद रूसी समाजवादी संघीय गणराज्य के फौजदारी कानून के निर्देशक सिद्धान्तों को अदालतों के उपयोग के लिये १९१९ में जारी किया गया (हमने इस पुस्तक को नहीं पढ़ा है, यह हमें प्राप्त नहीं हो सकी और हमें केवल इतना ही मालूम है कि इसमें "अनिश्चित काल तक कैद में रखने" की व्यवस्था शामिल थी—दूसरे शब्दों मे विशेष आदेश प्राप्त होने तक कैदी को जेल में बन्द रखा जाना चाहिए था।)

अदालतें तीन किस्म की थीं : जनवादी अदालतें, क्षेत्रीय अदालतें और क्रान्तिकारी अदालतें—इन्हें क्रांतिकारी न्यायाधिकरण भी कहा जाता था।

जनवादी अदालतों में मामूली मुकदमों और गैर-राजनीतिक फौजदारी मुकदमों की सुनवाई होती थी। इन्हें मृत्युदण्ड देने का अधिकार नहीं दिया गया था और यद्यपि यह हास्यस्पद लगेगा, जनवादी अदालतें वास्तव में, दो वर्ष से अधिक की सजा नहीं दे सकती थीं। जुलाई १९१८ तक वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की परम्परा हमारी अदालतों की कारवाई में बनी रही। केवल सरकार के विशेष हस्तक्षेप पर और वह भी व्यक्तिगत रूप से, अत्यधिक उदार सज़ाओं को बढ़ाकर २० वर्ष किया जाता था।[८] जुलाई १९१८ से जनवादी अदालतों को ५ वर्ष तक की कैद की सजा सुनाने का अधिकार दिया गया और १९२२ में जब युद्ध का खतरा पूरी तरह समाप्त हो गया, जनवादी अदालतों को १० वर्ष तक की कैद की सज़ा देने का अधिकार मिला और किसी को छह महीने की सज़ा से कम देने के अधिकार से वंचित कर दिया गया।

आरम्भ से ही क्षेत्रीय अदालतों और क्रांतिकारी अदालतों को मृत्युदण्ड देने का अधिकार था, लेकिन कुछ समय के लिए इन्हें इस अधिकार से वंचित कर दिया गया था : क्षेत्रीय अदालतों को १९२० और स्वयं क्रांतिकारी अदालतों को १९२१ में इससे वंचित कर दिया गया था। इस अवधि में कुछ मामूली से उतार-चढ़ाव हुए, जिनका विवरण केवल वही इतिहासकार दे सकता है, जो बड़ी गहराई से इन वर्षों की घटनाओं का अनुसंधान करें।

सम्भवत: वह इतिहासकार हमारे लिए इन दस्तावेजों और पुलिंदों को खोज निकालेगा, जिनमें क्रान्तिकारी अदालतों के द्वारा दी गई सजाओं का विवरण दिया गया हो और अभियुक्तों और दण्डित व्यक्तियों की संख्याओं की जानकारी मिल सके। (संभवत: यह नहीं हो पायेगा। जब कभी समय और घटनाएं कुछ ऐसे दस्तावेजों को नष्ट करने में सफल नहीं हुईं, तब इन्हें ऐसे व्यक्तियों ने नष्ट कर डाला जिनका हित इन दस्तावेजों के भौतिक रूप से अन्तर्धान हो जाने में था।) हमें केवल यही जानकारी है कि क्रान्तिकारी अदालतें सोती नहीं रहती थीं। वे अन्धाधुन्ध तरीके से लोगों को सज़ाएं सुनाती रहती थीं और हम यह भी जानते हैं कि गृहयुद्ध के दौरान जब कभी किसी शहर पर अधिकार होता था तब केवल चेका के अहातों में बारूद का धुआं ही निकलता हुआ नहीं दिखाई पड़ता था बल्कि क्रांतिकारी अदालतें भी रात दिन सज़ाएं सुनाने में लगी रहती थीं। और गोली का लक्ष्य बनने के लिए आपको एक श्वेत अफसर, सीनेट का सदस्य, जमींदार, ईसाई सन्यासी, कैडेट पार्टी का सदस्य, समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी का सदस्य अथवा अराजकतावादी पार्टी का सदस्य होना जरूरी नहीं था। उन वर्षों में गोली से उड़ाए जाने के लिए आपके मुलायम और ठेग रहित हाथ होना काफी था। लेकिन हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि इझेवस्क अथवा वोतकिंस्क में, यारोस्लावल अथवा मूरोम में, कोज़लोव अथवा तामबोव में, विद्रोह उन लोगों को भी बहुत महंगे पड़े, जिनके हाथ कठोर परिश्रम करने वाले मज़दूरों की तरह कड़े और ठेगदार थे। यदि लिपटे हुए कागज के उन पुलिंदों को—कानून की परिधि के बाहर प्रतिशोध के रूप में गोली से उड़ाये गए लोगों और अदालतों द्वारा प्राणदण्ड दिये गए लोगों से सम्बन्धित पुलिंदों को—किसी दिन हमारे लिए खोला गया, तो सर्वाधिक आश्चर्यजनक बात यह होगी कि हमें काफी बड़ी संख्या में इनमें साधारण किसानों के नाम देखने को मिलेंगे। यद्यपि सन् १९१८ और १९२१ के बीच अनन्त किसान विद्रोह हुए थे। पर ये गृहयुद्ध के सरकारी तौर पर लिखित इतिहास के रंगीन पृष्ठों की शोभा नहीं बढ़ा रहे हैं। किसी ने इनके फोटोग्राफ नहीं लिये हैं। मशीनगनों पर मोटे डण्डों, हेंगियों और कुल्हाड़ियों से हमला करने वाली क्रुद्ध भीड़ों और भीड़ के हाथों मरे एक बोलशेविक के लिए १० सामान्य लोगों के हिसाब से, इन लोगों को अपने हाथ पीठ के पीछे बांध कर गोली से उड़ाये जाने की प्रतीक्षा में खड़े रहने की स्थिति में किसी ने इनकी फिल्में नहीं उतारी हैं, चलचित्र नहीं बताए हैं! स्पोफ्रोक के विद्रोह की याद केवल स्पोफ्रोक में ही की जाती है, पितेलीनो के विद्रोह की केवल पितेलीनो में। हमें लातसिस से यह जानकारी मिलती है कि डेढ़ वर्ष की उसी अवधि में २० प्रांतों में कुचले गए किसान विद्रोहों की संख्या क्या थी। यह संख्या थी ३४४।[९] (सन् १९१८ से, किसानों के विद्रोहों को 'कुलक' विद्रोह कहा जाने लगा था, क्योंकि किसान किस प्रकार मजदूरों और किसानों की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह कर सकते थे। पर हम इस स्थिति में इस बात को कैसे समझा सकते हैं कि विद्रोह के प्रत्येक मामले में पूरे गांव ने विद्रोह किया केवल किसानों की तीन झोंपड़ियों ने नहीं। गरीब किसानों के विशाल समुदायों ने विद्रोही 'कुलकों' को उन्हीं हेंगियों और कुल्हाड़ियों से क्यों नहीं मार डाला, जिन्हें लेकर वे मशीनगनों पर टूट पड़े थे? लातसिस का दावा है: "कुलकों ने शेष किसानों को इन विद्रोहों में प्रलोभन देकर, डरा धमका कर और झूठी बातें बताकर हिस्सा लेने के लिये बाध्य किया।"[१०] लेकिन गरीबों की समिति के वायदों से अधिक वायदा कौन कर सकता था? और विशेष उद्देश्य टुकड़ियों, सी० एच० ओ० एन०, की मशीनगनों से अधिक भयंकर धमकियां और किस चीज की हो सकती

थीं ?

और पूरी तरह से संयोगवश आ फंसने वाले लोगों को कितनी बड़ी संख्या में विनाश का सामना करना पड़ा। वास्तविक, गोली के माध्यम से होने वाली क्रान्ति की बलि चढ़ने वाले लोगों में आधी संख्या इन्हीं लोगों की रही, ये लोग ही चक्की के दो पाटों के बीच में पिसे ?

यहां रियाज़न की क्रान्तिकारी अदालत की उस बैठक का एक प्रत्यक्षदर्शी द्वारा प्रस्तुत विवरण दिया गया है, जिसने आई० ए—व नामक एक तोल्सतोएवादी के मुकदमे की सुनवाई को १६१६ में देखा था।

लाल सेना में सार्वभौम और अनिवार्य भर्ती की घोषणा के बाद (इन नारों के केवल एक वर्ष बाद कि "युद्ध का नाश हो !" ; "अपनी किर्चों को ज़मीन में घुसा दो !" "घर वापस जाओ !") ५४,६९७ भगोड़ों को पकड़ कर मोर्चे पर भेज दिया गया। केवल रियाज़न प्रान्त में सितम्बर १६१६ तक यह कारवाई पूरी हो चुकी थी।[11] (और कितने अन्य लोगों को तत्काल गोली से उड़ा दिया गया था, ताकि दूसरे लोगों को सबक मिले ?) ए—व भगोड़ा नहीं था, बल्कि उसने अपने धार्मिक विश्वासों के आधार पर सैनिक सेवा में भर्ती होने से स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया था। उसे बलपूर्वक भर्ती कर लिया गया, लेकिन बैरक में पहुंचने पर उसने हथियार उठाने अथवा ट्रेनिंग लेने से इनकार कर दिया। इस यूनिट के क्रोधांद्ध राजनीतिक कमीसार ने यह कहते हुए उसे चेका के हवाले कर दिया। "यह सोवियत सरकार को स्वीकार नहीं करता।" पूछताछ शुरू हुई। चेका के तीन अफसर मेज़ पर बैठे और इनमें से प्रत्येक के सामने एक-एक नागुआन रिवाल्वर रखी हुई थी। "हमने इससे पहले भी तुम्हारे जैसे हीरो देखे हैं। एक मिनट में तुम हमारे सामने घुटनों के बल बैठे हुए दिखाई पड़ोगे। या तो तुरन्त लड़ाई लड़ने के लिए तैयार हो जाओ अन्यथा हम तुम्हें गोली से उड़ा देंगे !" लेकिन ए—व कठोरता से डटा रहा। वह लड़ाई लड़ने को तैयार नहीं था। वह मुक्त ईसाई धर्म में आस्था रखता था। और उसके मामले को क्रांतिकारी अदालत के सुपुर्द कर दिया गया।

अदालत की कारवाई खुले रूप से हुई और अदालत के कमरे में १०० दर्शक मौजूद थे। प्रतिवादी की ओर से एक विनम्र वयोवृद्ध वकील पेश हुआ था। विद्वान् "अभियोक्ता"—सन् १६२२ तक "सरकारी वकील" शब्द का प्रयोग निषिद्ध था—निकोलस्की था। वह भी एक पुराना न्यायविद् था। क्रान्तिकारी अदालत के एक सदस्य ने अभियुक्त के विचार जानने चाहे। ("तुम, श्रमजीवी वर्ग के प्रतिनिधि होने के नाते किस प्रकार सामन्त काउण्ट तोल्सतोय के विचारों का अनुसरण कर सकते हो ?") लेकिन अदालत की अध्यक्षता करने वाले न्यायाधीश ने बीच में ही इस प्रश्न को रोक दिया और जूरी के सदस्य को आगे प्रश्न नहीं पूछने दिया। इस पर झगड़ा शुरू हो गया।

जूरी का सदस्य : "आप लोगों को मारना नहीं चाहते, आप दूसरे लोगों को हत्या करने से रोकने का प्रयास करते हैं। लेकिन श्वेत रक्षकों ने लड़ाई शुरू की है। और आप हमें स्वयं अपनी रक्षा करने से रोक रहे हैं। हम आपको कोलचाक के पास भेज देंगे। और आप वहां प्रतिरोध न करने का अपना उद्देश्य सुना सकते हैं !"

ए—व: "आप जहां कहीं भेजेंगे मैं जाने को तैयार हूं।"

अभियोक्ता : "इस अदालत का सम्बन्ध कुछ मामूली से दण्डनीय कार्यों से नहीं है, बल्कि क्रान्ति विरोधी कार्यों से है। इस अपराध के स्वरूप को ध्यान में रखते हुये, मैं मांग

करता हूं कि यह मुकदमा किसी जनवादी अदालत को सौंप दिया जाये।"

अदालत का अध्यक्ष न्यायाधीश : "हां ! दण्डनीय कार्य ! तुम भी क्या घटिया बातें करते हो। हमारा मार्गदर्शन कानून नहीं करते, बल्कि हमारी क्रान्तिकारी आत्मा करती है !"

अभियोक्ता : "मैं इस बात पर जोर देता हूं कि मेरी मांग को मुकदमे की कारवाई में लिखा जाये।"

प्रतिवादी का वकील : "मैं अभियोग लगाने वाले का समर्थन करता हूं। इस मामले की सुनवाई एक मामूली अदालत में होनी चाहिये।"

अध्यक्ष न्यायाधीश : "यह बुड्ढा बेवकूफ यहां मौजूद है ! वे लोग ऐसे बेवकूफों को कहां से ढूंढ़ लाते हैं ?"

प्रतिवादी का वकील : "४० वर्ष से मैं वकील का काम कर रहा हूं और यह पहला अवसर है, जब मैंने ऐसी अपमानजनक बात सुनी। इसे मुकदमे के विवरण में लिखो।"

अध्यक्ष न्यायाधीश (हंसते हुये) : "हम इसे लिखेंगे, हम इसे लिखेंगे !" अदालत के कमरे में हंसी। अदालत के सदस्य मंत्राणा के लिये बाहर चले जाते हैं। मंत्रणा के कमरे से जोर-जोर से बहस होने की आवाज़ सुनाई पड़ती है। वे सज़ा का निर्णय करके वापस लौट आते हैं—गोली से उड़ा दिया जाये।

अदालत के कमरे में अत्यधिक क्रोध प्रदर्शन होता है।

अभियोक्ता : "मैं इस दण्ड के खिलाफ अपना विरोध प्रकट करता हूं और मैं न्याय विभाग से शिकायत करूंगा !"

प्रतिवादी का वकील : "मैं अभियोक्ता से पूरी तरह सहमत हूं।"

अध्यक्ष न्यायाधीश : "अदालत के कमरे को खाली कराओ !" सन्तरी भीतर आए और ए—व को जेल की ओर ले चले। वे उससे बोले : "भाई, यदि हर आदमी तुम्हारे जैसा होता, तो कितना अच्छा होता ! युद्ध ही न होता, न तो श्वेत रक्षक होते और न ही लाल सेना !" वे लोग अपनी बैरकों को वापस लौट गये और उन्होंने लाल सेना की एक बैठक बुलाई। इस सभा में इस दण्ड की निन्दा की गई और इन सैनिकों ने विरोध प्रकट करते हुये मास्को को चिट्ठी भेजी।

प्रतिदिन मृत्युदण्ड की प्रतीक्षा करते हुये, ए—व ३७ दिन तक जेल की खिड़की से लोगों को गोली से उड़ाया जाता हुआ देखता रहा। उन लोगों ने उसके मृत्युदण्ड को १५ वर्ष की कड़ी कैद में बदल दिया।

यह एक शिक्षाप्रद उदाहरण है। यद्यपि "क्रांतिकारी वैधानिकता" को आंशिक विजय प्राप्त हुई। लेकिन इसके लिए अध्यक्ष न्यायाधीश को इतना अधिक प्रयास करना पड़ा ! कितनी अव्यवस्था रही, कितनी अनुशासनहीनता और कितनी राजनीतिक चेतना की कमी उस समय तक थी ! सरकारी वकील दृढ़तापूर्वक प्रतिवादी का समर्थन करता रहा। कैदी को ले जाने वाली गारद के सैनिकों ने इस मामले में, एक ऐसे मामले में दिलचस्पी दिखाई जिससे उनका सम्बन्ध नहीं था और उसके प्रति विरोध प्रकट किया स्पष्ट है कि सर्वहारा वर्ग की तानाशाही और नए किस्म की अदालतों का काम आसानी से नहीं चल रहा था ! हां, यह सच है, अदालतों की सब बैठकें इतनी उथल-पुथल भरी नहीं होती थीं, लेकिन यह अपने किस्म का एकमात्र उदाहरण भी नहीं था। इस बात को कितना समय लगा, यह

बताने, निर्देशित करने और पुष्टि करने के लिये कितना समय लगा कि प्रतिवादी, सरकारी वकील और अदालत सब एक स्वर में बोलने लगे और स्वयं अभियुक्त भी इनसे सहमत होने लगा और इसी प्रकार श्रमिकों के समस्त प्रस्ताव भी अदालत की इच्छा के अनुरूप पारित होने लगे !

इस अनुसंधान कार्य में अनेक वर्षों का समय लगेगा और यह किसी भी इतिहासकार के लिये अत्यन्त गौरव का विषय होगा। जहां तक हमारा सम्बन्ध है—हम उस गुलाबी धुंधलके के मध्य अपना मार्ग कैसे टटोलें ? हम किससे इन बातों के बारे में सवाल पूछें ? जिन लोगों को गोली से उड़ा दिया गया वे बोल नहीं सकते और न ही वे लोग, जिन्हें न जाने कहां अन्तर्धान कर दिया गया। यदि प्रतिवादी, वकील, गारद के सन्तरी और अदालत में मौजूद दर्शक भी आज जीवित हों तो हमें इन लोगों को खोज निकालने की अनुमति नहीं मिलेगी।

स्पष्ट है कि हमें एकमात्र सहायता सरकारी पक्ष अर्थात् सरकारी वकीलों से मिल सकती है।

मुझे कुछ शुभचिंतकों ने उस आग उगलने वाले क्रान्तिकारी, श्रमिकों और किसानों की सरकार में सैनिक मामलों के पहले जनवादी कमीसार, कमाण्डर-इन-चीफ और आगे चल कर न्याय सम्बन्धी मामलों के जनवादी कमीसार कार्यालय के असाधारण अदालत विभाग के संगठन कर्त्ता के सरकारी वकील के रूप में दिये गये भाषणों के एक संग्रह की पूरी प्रति दे दी है। यह महानतम मुकदमों का वही शानदार अभियोक्ता था, जिसका आगे चल कर जनता का भयंकर शत्रु बताकर भण्डाफोड़ किया गया। इसे जन नायक का व्यक्तिगत अलंकार देने का प्रस्ताव था लेकिन लेनिन ने अपने निषेधाकार का प्रयोग कर यह खिताब देने के प्रस्ताव को रद्द कर दिया।[१२] इस व्यक्ति का नाम था एन० वाई० क्राइलेंको।[१३] और यद्यपि इन सब कठिनाइयों के बावजूद हम सार्वजनिक रूप से चलाये गये मुकदमों की संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत करने का प्रस्ताव करें; यदि हम क्रान्ति के बाद के पहले वर्षों के न्याय सम्बन्धी वातावरण का अनुभव प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प हों, तो हमें क्राइलेंको के इस भाषण संग्रह को पढ़ना सीखना होगा। इसके अलावा हमारे पास अन्य कोई सामग्री नहीं है। और इसे आधार के रूप में इस्तेमाल करते हुए, हमें उन बातों की कल्पना करनी होगी, जो इस समय मौजूद नहीं है और उन बातों की भी जो प्रांतों में हुई।

वास्तव में, हम इन मुकदमों का स्टेनोग्राफरों द्वारा लिखा गया विवरण देखना पसंद करेंगे, कब्र के उस पार से उन प्रथम प्रतिवादियों और उन प्रथम वकीलों की नाटकीय आवाजें सुनना पसंद करेंगे, जो एक ऐसे समय में बोल रहे थे जब इस बात की कोई भी पूर्व कल्पना नहीं कर सकता था कि अन्ततः किस रूप में इसका अन्त होगा—इसके साथ ही हम क्रान्तिकारी अदालतों के सदस्यों के विचार भी सुनना चाहेंगे।

पर, जैसाकि क्राइलेंको ने समझाया है, अनेक तकनीकी कारणों से "स्टेनोग्राफरों द्वारा लिखे गए विवरण प्रकाशित करना असुविधाजनक था।"[१४] इस्तगासे की ओर से उसके भाषणों को ही प्रकाशित करना सुविधाजनक था और अदालतों द्वारा सुनाई गई सजाओं को भी, जो उस समय तक पूरी तरह से अभियोक्ता—सरकारी वकील—की मांगों के अनुसार काम करने लगी थीं।

क्राइलेंको का दावा है कि मास्को की क्रांतिकारी अदालत और सर्वोच्च क्रान्तिकारी

अदालत के पुरालेख संग्रहालय (सन् १९२२ तक) "व्यवस्थित नहीं रह गए थे...अनेक मुकदमों के सम्बन्ध में स्टेनोग्राफरों द्वारा लिखे गये विवरण...इतने अस्पष्ट थे कि एक के बाद एक पृष्ठ को काट डालना आवश्यक हुआ अथवा याददाश्त के भरोसे अदालत की कारवाई का विवरण तैयार करना पड़ा !" और "इनमें सबसे बड़े मुकदमों की शृंखलाएं" भी शामिल हैं—इनमें वह मुकदमा भी शामिल है जो वामपंथी समाजवादी क्रान्तिकारियों के विद्रोह के बाद चला, और एडमिरल शचास्तनी का मुकदमा भी—"इन सब मुकदमों को स्टेनोग्राफरों की सहायता के बिना ही पूरी तरह से चलाया गया।"[१५]

यह विचित्र है। वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी के सदस्यों के ऊपर मुकदमा चलाना कोई मामूली बात नहीं थी। फरवरी और अक्तूबर की क्रांतियों के बाद यह हमारे इतिहास का तीसरा मोड़ था और इसके परिणामस्वरूप हमारे देश में एक पार्टी के शासन की प्रणाली शुरू हुई। इनमें से कुछ ही लोगों को गोली से नहीं उड़ाया गया था और कहा जाता है कि स्टेनोग्राफरों से कोई विवरण तैयार नहीं कराया गया।

और सन् १९१९ के "सैनिक षड्यन्त्र" को चेका ने "न्याय की परिधि के बाहर प्रतिशोध के द्वारा ही समाप्त कर दिया।"[१६] जो "इसके अस्तित्व का एक और प्रमाण माना गया।"[१७] (इस मामले के सम्बन्ध में कुल मिलाकर १००० से अधिक लोग गिरफ्तार किये गए थे।[१८] और, जैसाकि जाहिर है, उन सब लोगों के ऊपर मुकदमा चलाने की व्यवस्था कैसे की जा सकती थी ?)

अत: उन वर्षों के मुकदमों के बारे में एक साफ सुथरी और व्यवस्थित रिपोर्ट पेश करना ही उनके हित में था।

इसके बावजूद इन मुकदमों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सिद्धांतों की जानकारी हम प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, सर्वोच्च अभियोक्ता—दूसरे शब्दों में, सर्वोच्च सरकारी वकील—हमें जानकारी देता है कि अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी को किसी भी न्यायिक कारवाई में हस्तक्षेप करने का अधिकार था। "अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी (वी० टी० एस० आई० के०) क्षमादान करती है और दण्ड देती है, वह यह कार्य बिना किसी सीमा के अपने विवेक और इच्छा के अनुसार करती है।"[१९] उदाहरण के लिए छह महीने की कैद की सज़ा को बदलकर १० वर्ष कर दिया गया (और जैसाकि पाठक समझता है, अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी के सब सदस्यों को अपने महा अधिवेशन में इस कार्य के लिए एकत्र होने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि इसका अध्यक्ष, स्वर्दलोव, अपने कार्यालय के कमरे से बाहर निकले बिना ही किसी भी मुकदमे के निर्णय को बदल सकता था)। इस सम्बन्ध में भी क्राइलेंको हमें समझाते हैं कि "इन सब बातों से सत्ताओं के विकेन्द्रीयकरण के झूठे सिद्धांत के ऊपर हमारी प्रणाली की श्रेष्ठता प्रकट होती है।"[२०] अर्थात् इससे न्यायांग यानी अदालतों के स्वतन्त्र होने के सिद्धांत के ऊपर हमारी प्रणाली की श्रेष्ठता सिद्ध होती है। (हां, यह सच है कि स्वर्दलोव ने यह भी कहा : "यह बहुत अच्छा है कि विधानांग और कार्यांग को पश्चिम की तरह एक मोटी दीवार खींचकर अलग-अलग नहीं किया गया। सब समस्याओं का बहुत जल्दी निपटारा किया जा सकता है।" विशेषकर टेलीफोन पर।)

क्राइलेंको ने कहीं अधिक स्पष्टता और सूक्ष्मता से इन अदालतों के समक्ष अपने भाषणों में सोवियत अदालतों के सामान्य कार्यों और दायित्वों को निर्धारित किया। क्राइलेंको के अनुसार अदालत, "कानून की निर्माता...और एक राजनीतिक हथियार दोनों थी।"[२१]

इसे कानून का निर्माता इसलिए बताया गया, क्योंकि चार वर्ष तक किसी भी प्रकार की दण्ड संहिताएं या कानून संहिताएं नहीं थीं। उन लोगों ने ज़ारशाही के जमाने की संहिताओं को उठाकर बाहर फेंक दिया था और स्वयं अपनी दण्ड संहिताएं तैयार नहीं कर सके थे। "मुझे यह मत कहो कि हमारी फौजदारी अदालतें केवल वर्तमान लिखित मानदण्डों के आधार पर ही कार्य कर सकती हैं। हम लोग क्रांति के दौर में रह रहे हैं।"[२२] "क्रांतिकारी अदालत एक ऐसी अदालत नहीं होती, जिसमें न्याय प्रक्रिया के शानदार मुद्दों और चतुरतापूर्ण तर्क-वितर्क की पुर्नस्थापना की जाती है...हम लोग एक नए कानून और नए नैतिक मानदण्डों का निर्माण कर रहे हैं।"[२३] और यह भी : "यहां सत्य, न्याय आदि के शाश्वत कानून के बारे में चाहे कुछ भी क्यों न कहा जाये, हम जानते हैं...हमें इनकी कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है।"[२४]

(यदि आपकी जेल की अवधियां की तुलना हमारी जेल की अवधियों से की जाए, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि शायद आपको अधिक कीमत नहीं चुकानी पड़ी? शायद शाश्वत न्याय आपके लिए कहीं अधिक आरामदेह रहा।)

न्याय प्रक्रिया के शानदार मुद्दे, इसलिए आवश्यक हैं, क्योंकि इस प्रकार यह स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता नहीं होती कि प्रतिवादी दोषी है अथवा निर्दोष। दोषी होने अथवा दोषी न होने की संकल्पना पुरानी बुर्जुआ संकल्पना है, जिसे अब जड़ से उखाड़ फेंका गया है।[२५]

और इस प्रकार हमने कामरेड क्राइलेंको से यह सुना कि क्रांतिकारी अदालत उस प्रकार की अदालत नहीं! एक अन्य अवसर पर हम उसे यह कहते हुए सुनेंगे कि एक क्रांतिकारी अदालत, अदालत ही नहीं होती : "एक क्रांतिकारी अदालत श्रमजीवियों के वर्ग संघर्ष का एक हथियार होती है, जिसे श्रमजीवियों के शत्रुओं के विरुद्ध इस्तेमाल में लाया जाता है" और हमे "क्रांति के हितों के अनुसार कार्य करना होगा...और मजदूरों तथा किसानों के समुदायों के लिए सर्वाधिक वांछित परिणामों को ध्यान में रखना होगा।"[२६] लोग, लोग नहीं होते, बल्कि "विशेष विचारों के वाहक होते हैं।"[२७] "[प्रतिवादी की] व्यक्तिगत विशेषताएं चाहे कुछ भी क्यों न हों, उसका मूल्यांकन करने के लिए केवल एक ही तरीका इस्तेमाल में लाया जा सकता है। वर्गगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन।"[२८]

दूसरे शब्दों में आप तभी जीवित रह सकते हैं, जब यह श्रमजीवी वर्ग के लिये आवश्यक हो। और यदि "इस आवश्यकता के लिये यह अपेक्षित हो कि प्रतिवादियों के सिर पर प्रतिशोध की तलवार गिरनी चाहिये, तो उस स्थिति में किसी भी प्रकार की जबानी बहस सहायक नहीं हो सकती।"[२९] (वकीलों आदि द्वारा बहस) "हमारी क्रांतिकारी अदालतों में हमारा मार्गदर्शन कानून के अनुच्छेद नहीं करते, और न ही अपराध को कम गम्भीर बनाने वाली परिस्थितियों के बारे में जारी किये गये अध्यादेश क्रांतिकारी अदालत में हमें आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही कारवाई करनी होगी।"[३०]

उन वर्षों में यही स्थिति थी : लोग जीवित रहते थे, सांस लेते थे और तभी अचानक उन्हें बताया जाता था कि उनका जीवन अनावश्यक है।

और यह भी स्मरण रखना होगा कि प्रतिवादी ने क्या कार्य किये। केवल वही उसका भार नहीं बनेंगे। केवल वे ही उसके दण्ड का आधार नहीं बनेंगे, बल्कि यदि उसे

गोली से नहीं उड़ाया गया तो वह क्या कर सकता है यह बात भी उसके दण्ड का आधार बनेगी। "हम अपनी रक्षा केवल अतीत के विरुद्ध ही नहीं, बल्कि भविष्य के किए भी करते हैं।"[११]

कामरेड क्राइलेंको के विवेचन और उद्गार स्पष्ट और सर्वव्यापी हैं। वे हमारी आंखों के समक्ष इस समस्त अवधि में कानून की स्थिति की जीवन्त तस्वीर ला खड़ी करते हैं। शिशिर ऋतु की स्वच्छता अचानक बसन्त ऋतु के धुंधलकों को चीरती हुई हमारे सामने आ खड़ी होती है। और संभवत: इससे आगे बढ़ना आवश्यक है? संभवत: हमें एक के बाद एक मुकदमे का विवरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। उक्त घोषणाओं का भविष्य में अनिवार्य रूप से बिना किसी अपवाद के प्रयोग किया गया।

एक मिनट के लिए कसकर अपनी आंखें बन्द कर लीजिए और अदालत के एक छोटे से कमरे की कल्पना कीजिये—अभी तक इस अदालत के कमरे में सुनहरी सजावट नहीं हुई है। क्रांतिकारी अदालत के निष्ठावान सदस्य सीधे-सादे सैनिक कोटों में मौजूद हैं। वे पतले दुबले हैं और अभी तक उन पर मोटापा नहीं चढ़ा है। अभियोग लगाने वाली शक्ति—क्राइलेंको स्वयं को यह कहना बहुत पसन्द करता था—बिना बटन वाला एक नागरिक कोट पहने हैं, और खुले गले पर एक नौसैनिक की नीचे पहने जाने वाली धारीदार कमीज की झलक दिखाई पड़ रही है।

सर्वोच्च अभियोक्ता इस प्रकार की भाषा में अपने विचार व्यक्त करता है। "तथ्य के प्रश्न में मुझे बड़ी दिलचस्पी है"; "प्रवृत्ति के इस पक्ष की ठोस परिभाषा दो!"; "हम लोग निरपेक्ष सत्य के विश्लेषण के स्तर पर कार्य कर रहे हैं।" कभी-कभी इन भाषणों को पढ़ते समय, लेटिन भाषा का कोई उद्धरण चमक उठता है। (यह सच है कि एक के बाद एक मुकदमे में वही उद्धरण पेश होता है लेकिन कई वर्षों के बाद एक दूसरा उद्धरण शुरू हो जाता है।) और इस बात पर आश्चर्य भी नहीं करना चाहिए। आखिरकार उसने उस पाठ्यक्रम को दो निकायों में पूरा किया, यद्यपि वह अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के सिलसिले में निरन्तर इधर-उधर दौड़ता रहता था। उसके प्रति हम इस बात से आकर्षित होते हैं कि उसने प्रतिवादियों के बारे में अपनी बड़ी स्पष्ट राय प्रकट की है: "पेशेवर बदमाश!" और वह किसी बात को छिपाता नहीं। यदि उसे प्रतिवादी की मुस्कुराहट पसन्द नहीं आई, तो वह कभी भी धमकी देने से नहीं हिचकिचाया और अदालत द्वारा दण्ड सुनाये जाने से पहले ही वह धमकियां देता। "और जहां तक तुम्हारा और तुम्हारी मुस्कुराहट का संबंध है, नागरिका आइवानोवा, तुम्हें इसकी कीमत चुकानी होगी। हम तुम्हें इसकी कीमत चुकाने के लिए बाध्य करेंगे और हम इसका प्रबन्ध इस प्रकार करेंगे कि फिर तुम कभी मुस्कुरा न सकोगी।"[१२]

तो, क्या हम शुरू करें?

क. "रुस्कीए वेदोमोस्ती" का मुकदमा

इस मुकदमे में, जो एकदम आरम्भ के मुकदमों में से था, विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता पर मुकदमा चल रहा था। २४ मार्च, १९१८ को "प्रोफेसरों के" इस प्रसिद्ध समाचारपत्र ने साविनकोव का "यात्रा पर" शीर्षक लेख प्रकाशित किया। वे लोग साविनकोव को गिरफ्तार करना कहीं अधिक पसन्द करते। लेकिन वह सचमुच यात्रा पर निकल चुका था, सत्यानाश हो उसका, उसे कहां तलाश किया जा सकता था? तो उसे गिरफ्तार

करने के स्थान पर उन लोगों ने इस समाचारपत्र को बन्द कर दिया और वयोवृद्ध सम्पादक, पी० वी० येगोरोव को अदालत में प्रतिवादी के रूप में पेश कर दिया। और उनसे यह पूछा गया कि अब वे यह बतायें कि उन्होंने यह लेख प्रकाशित करने का साहस कैसे किया। आखिरकार, नवयुग का समारम्भ हुए ४ महीने बीत चुके थे और इसका आदी होने के लिए काफी समय बीत चुका था!

येगोराव ने बड़े बचकानेपन से यह कहकर अपनी सफाई पेश करने की कोशिश की कि यह लेख एक "प्रमुख राजनीतिक व्यक्ति ने लिखा है, जिसकी राय में लोगों को सामान्यतया दिलचस्पी है, चाहे सम्पादकगण उसकी राय से सहमत हों अथवा नहीं।" इसके अलावा उन्हें साविनकोव के लेख में कोई प्रवादजनक बात भी दिखाई नहीं पड़ी थी: "हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि लेनिन, नतानसन एण्ड कम्पनी (अर्थात् उनके साथी) बर्लिन होकर रूस पहुंचे थे; अर्थात् जर्मन अधिकारियों ने उन्हें स्वदेश लौटने में सहायता दी थी"—वास्तव में सच्चाई भी यही थी; कैसर विलहेल्म की युद्धग्रस्त जर्मनी ने कामरेड लेनिन को वापस लौटने में सहायता दी थी।

क्राइलेंको ने इसका प्रत्युत्तर देते हुए कहा कि वह प्रवाद के लिए मुकदमा नहीं चलायेगा (पर क्यों नहीं?) और समाचारपत्र पर इसलिए मुकदमा चलाया जा रहा है कि उसने लोगों के विचारों को प्रभावित करने का प्रयास किया! (और कोई समाचारपत्र यह करने का साहस कैसे कर सकता है?)

विधिवत् जो अभियोग लगाया गया, उसमें साविनकोव का यह वाक्य शामिल नहीं था: "गम्भीरतापूर्वक इस बात की पुष्टि करने के लिए किसी भी व्यक्ति को अपराधपूर्ण सीमा तक पागल होना होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग हमारी सहायता के लिए आएगा।"—क्योंकि अभी भी इसे हमारी सहायता के लिए आना था।

लोगों के विचारों को प्रभावित करने का प्रयास करने के लिये, उस समाचारपत्र को सदा सर्वदा के लिए बन्द कर दिया, जो सन् १८६४ से प्रकाशित हो रहा था और जो सर्वाधिक उग्र प्रतिक्रियावादी युगों में भी प्रकाशित होता रहा था—ये युग थे लोरिस-मेलीकोव के, पोवेदोनोस्तसेव के, स्तोलिपिन के, कासो और अन्य ऐसे ही व्यक्तियों के। और सम्पादक येगोरोव को—और यह कहने में सचमुच बड़ी शर्म आती है—तनहाई में केवल तीन महीने की कैद की सजा सुनाई गई, मानो हम लोग यूनान में अथवा ऐसे ही किसी अन्य स्थान में रह रहे थे। (पर यदि आप जरा ठहरकर यह विचारें कि यह बात केवल १९१८ की है, तो आपको यह सजा इतनी शर्मनाक रूप से उदार नहीं लगेगी! और यदि इसके बाद भी वह वयोवृद्ध जीता जागता बच जाये, तो उसे फिर जेल में डाला जा सकता था, एक नहीं अनेक बार!)

यह हमें विचित्र दिखाई पड़ सकता है। लेकिन यह तथ्य मौजूद है कि उन भयंकर गरजना भरे वर्षों में उसी प्रकार रिश्वतें दी और ली जाती थीं जिस प्रकार पुराने रूस में आदिकाल से दी और ली जा रही थीं और जिस प्रकार वे सोवियत संघ में आज से लेकर अनन्त काल तक ली और दी जाती रहेंगी। न्यायिक संगठनों में रिश्वतखोरी का विशेष रूप से बोलबाला था। और चेका में भी, यद्यपि यह कहते हुए शर्म से हम लाल हो उठते हैं। लाल और सुनहरी जिल्द वाले सरकारी इतिहास इस विषय में मौन हैं, लेकिन वयोवृद्ध लोगों और प्रत्यक्षदर्शियों को इस बात का स्मरण है कि क्रांति के पहले वर्षों में, स्तालिन-

वादी युगों से भिन्न रूप से, राजनीतिक कैदियों का भाग्य अक्सर रिश्वत पर निर्भर करता था : रिश्वत खुल्लम-खुल्ला ली जाती थी और रिश्वत लेने के बाद बड़ी ईमानदारी से कैदियों को रिहा कर दिया जाता था। यद्यपि क्राइलेंको ने अपनी पुस्तक से सम्बन्धित पांच वर्ष की अवधि में केवल बारह मुकदमों को ही चुना है, लेकिन उसने रिश्वत के दो मामलों का उल्लेख किया है। इतना ही नहीं मास्को की क्रांतिकारी अदालत और सर्वोच्च क्रांतिकारी अदालत ने भी इस काम में सिद्धहस्तता प्राप्त की और अनेक अनुचित कार्य किए।

ख. मास्को की क्रांतिकारी अदालत के तीन पूछताछ अधिकारियों का मामला—अप्रैल १६१८

मार्च १६१८ में सोने की छड़ों की सट्टेबाजी करने वाला बेरीजे गिरफ्तार कर लिया गया। उसकी पत्नी ने अपने पति को किसी भी प्रकार छुड़ा लेने की कोशिश की और यह बात कोई अजीब नहीं थी। अनेक परिचितों के माध्यम से वह पूछताछ अधिकारियों में से किसी एक अधिकारी तक पहुंचने में सफल हुई और यह पूछताछ अधिकारी दो और अधिकारियों को बुला लाया। अपनी गुप्त मुलाकात में इन लोगों ने २, ५०,००० रूबल की रिश्वत मांगी, लेकिन कुछ सौदेबाजी के बाद इसे घटाकर ६०,००० रूबल कर दिया। लेकिन यह तय हुआ कि आधी राशि पेशगी दी जायेगी। यह सौदा वकील ग्रिन की मार्फत हुआ। यह पूरा मामला बिना किसी गड़बड़ के निपट जाता, जिस प्रकार ऐसे सैंकड़ों और मामले निपट गए थे और इसका उल्लेख न तो क्राइलेंको की पुस्तक में होता और न ही हमारी और यह जनवादी कमीसार परिषद की चिन्ता का विषय भी न बनता, यदि बेरीजे की पत्नी यकायक कंजूस न बन जाती और पेशगी के रूप में ग्रिन के पास केवल १५,००० रूबल न लाती, जबकि ३०,००० रूबल देने की बात पक्की हुई थी। असली बात यह थी कि एक स्त्री के अस्थिर मस्तिष्क के परिणामस्वरूप रातों-रात उसने अपना निश्चय बदल दिया और इस निष्कर्ष पर पहुंची कि उसका वकील बेकार है और अगले दिन वह याकुलोव नामक वकील के पास जा पहुंची। इस बात का कहीं उल्लेख नहीं हुआ है। लेकिन यह स्पष्ट है कि याकुलोव ने ही पूछताछ अधिकारियों को गिरफ्तार कराने का निश्चय किया।

यह बड़ी दिलचस्प बात है कि इस मुकदमे में सब गवाहों ने, इस अभागी पत्नी से लेकर अन्य सब गवाहों ने, अभियुक्तों के लिए सहायक गवाही देने की कोशिश की और इस्तगासे को उलझन में डाल दिया। (किसी राजनीतिक मुकदमे में यह कार्य असम्भव था!) क्राइलेंको ने इनके आचरण को संकीर्ण मस्तिष्क और मूर्खतापूर्ण रवैये का परिणाम बताया, क्योंकि जहां तक क्रांतिकारी अदालत का सम्बन्ध था, ये लोग स्वयं को बाहरी अनुभव कर रहे थे। (क्या स्वयं हम भी एक मूर्खतापूर्ण स्थापना को प्रस्तुत करने का दुस्साहस करते हुए यह कह सकते हैं कि डेढ़ वर्ष की अवधि में गवाह लोग सर्वहारा वर्ग की तानाशाही से भयभीत होना सीख चुके थे? आखिरकार, क्रांतिकारी अदालत के पूछताछ अधिकारियों को गिरफ्तार करवाना कोई मामूली बात नहीं थी, इसके लिए बहुत अधिक साहस की जरूरत थी। इसके बाद स्वयं आपका क्या होगा?)

अभियोक्ता ने जिस तरीके से इस मुकदमे में बहस की वह भी बड़ी दिलचस्प है। आखिरकार, केवल एक महीना पहले ही इस मुकदमे के प्रतिवादी उसके सहयोगी थे, उसके पक्के साथी थे, उसके सहायक थे। ये ऐसे लोग थे, जो निर्विवाद रूप से क्रांति के हितों के प्रति निष्ठावान थे और उनमें से एक, नीस्त नामक पूछताछ अधिकारी तो "एक कठोर अभियोक्ता था, और ऐसे किसी भी व्यक्ति के ऊपर बिजली की कड़क से टूट पड़ने की क्षमता

रखता था, जो नींव पर प्रहार करने की कोशिश करे।" अब वह इन लोगों के बारे में क्या कह सकता था ? वह इन लोगों के पतन के कारणों का किस प्रकार अनुसंधान करे ? (अपने आपमें रिश्वत पर्याप्त नहीं थी।) और, जैसाकि स्वाभाविक था, कि वह किस स्थान पर इस सामग्री की तलाश करता : उसने उनके अतीत को टटोला, उनके जीवन के विवरण को देखा !

क्राइलेंको ने घोषणा की : "अगर हम इस लीस्त की तरफ गौर से देखें, तो हमें अत्यन्त दिलचस्प जानकारी मिलेगी।" कितनी विचित्र बात है। क्या वह अपने लाभ के लिए कुछ भी कर गुजरने वाला आदमी था और सदा ऐसे ही कामों में लगा रहा था ? नहीं, वह तो मास्को विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर का पुत्र था ! और उसके पिता कोई मामूली प्रोफेसर नहीं थे, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति थे जो राजनीतिक गतिविधि के प्रति उदासीनता बरतते हुए निष्क्रियता भरे २० वर्ष तक जीवित रह सके ! (और इस प्रतिक्रियावादी दृष्टि-कोण के बावजूद क्राइलेंको ने उसे परामर्शदाता के रूप में स्वीकार कर लिया) तो क्या आश्चर्य कि उस प्रोफेसर का पुत्र दोनों ओर हाथ मारने वाला निकला ?

जहां तक पोदगायस्की का सम्बन्ध है, वह अदालतों के एक अफसर का बेटा था... इस बात में क्या सन्देह हो सकता था कि वह एक प्रतिक्रियावादी था, ज़ारशाही के काले चोगेधारी हत्यारों में से था; अन्यथा वह २० वर्ष तक ज़ार की सेवा में कैसे नियुक्त रह सकता था ? और पुत्र ने भी अदालतों में ही नौकरी की तैयारी की थी, लेकिन तभी क्रांति हुई—और वह किसी प्रकार क्रांतिकारी अदालत में घुस आया। केवल एक दिन पहले तक, इन सब बातों को बहुत अच्छे ढंग से पेश किया जा रहा था, लेकिन अचानक ये सब बातें जुगुप्सापूर्ण बन गईं !

इन दोनों से कहीं अधिक जुगुप्सापूर्ण था—गुगेल। वह प्रकाशक रह चुका था। और वह मज़दूरों और किसानों को किस प्रकार का बौद्धिक भोजन उपलब्ध कराता था ? वह "जनसामान्य को घटिया किस्म के साहित्य पर पालपोस रहा था", वह मार्क्स के साहित्य के स्थान पर, उन बुर्जुआ प्रोफेसरों की पुस्तकें प्रकाशित करता था जिनकी संसार भर में ख्याति थी। (और हम बहुत जल्दी ही इन प्रोफेसरों को भी अभियुक्तों के कठघरे में खड़ा हुआ देखेंगे।)

क्राइलेंको अत्यन्त क्रोधित है और इस बात पर उसे अत्यन्त अचरज हो रहा है कि न जाने कैसे-कैसे लोग क्रांतिकारी अदालत में घुस आये। (यह बात हमारी भी समझ में नहीं आती। मजदूरों और किसानों की अदालतों के सदस्य कैसे लोग हैं ? सर्वहारा वर्ग ने अपने शत्रुओं के विनाश की जिम्मेदारी ऐसे लोगों के हाथ में क्यों सौंपी ?)

जहां तक वकील ग्रिन का सम्बन्ध है, वह ऐसा व्यक्ति था, जिसकी पूछताछ करने वाले आयोग में अच्छी पहुंच थी और वह किसी भी व्यक्ति को बेदाग बरी करा सकता था, वह मानव जाति की उस उपजाति का एक विशिष्ट प्रतिनिधि था, जिसे मार्क्स ने "पूंजी-वादी ढांचे पर चिपकी हुई जोंक" बताया है—यह एक ऐसी श्रेणी है जिसमें उक्त लोगों के अलावा सब वकील, पुलिस कर्मचारी, पादरी और नोटरी शामिल हैं।[11]

ऐसा लगता है कि क्राइलेंको ने इन लोगों को अत्यधिक कठोर सजाएं देने की मांग करने में कोई कोर कसर नहीं उठा रखी। और इस सम्बन्ध में उसने "व्यक्तिगत रूप से अपराध से बच निकलने" का उल्लेख नहीं किया। लेकिन न जाने कैसे, अन्यथा अत्यधिक और

सतत रूप से सक्रिय क्रान्तिकारी अदालत के ऊपर, आलस्य छा गया, इसके सदस्य एक प्रकार की तंद्रा की स्थिति में पहुंच गए और यह अदालत बड़ी मुश्किल से पूछताछ अधिकारियों को छह महीने की कैद की सजा सुना पाई और वकील के ऊपर बस जुर्माना किया गया। और केवल अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी की "बिना किसी सीमा के दण्ड देने की" शक्ति का लाभ उठाकर क्राइलेंको पूछताछ अफसरों को १० वर्ष की कैद और वकील को ५ वर्ष की कैद की सज़ा दिलाने में सफल हुआ। और इसके अलावा वकील की समस्त सम्पत्ति भी ज़ब्त कर ली गई। क्राइलेंको ने सतर्क रहने के बारे में भयंकर गर्जना करते हुए भाषण किया और वह जननायक का वह खिताब प्राप्त करने में प्राय: सफल ही हो गया था, जिस खिताब को प्राप्त करने की उसकी उत्कट अभिलाषा थी।

हम यह बात स्वीकार करते हैं कि तत्कालीन क्रान्तिकारी जन समुदाय की नज़रों में, आज के हमारे पाठकों की तरह ही, इस दुर्भाग्यपूर्ण मुकदमे ने क्रान्तिकारी अदालत की पवित्रता में विश्वास को क्षति पहुंचाई। अत: हम और अधिक डरते हुए अगले मुकदमे की चर्चा कर रहे हैं, क्योंकि इसका सम्बन्ध इससे भी कहीं अधिक ऊंची संस्था से था।

ग. कोसीरेव का मुकदमा—१५ फरवरी, १६१६

एफ० एम० कोसीरेव और उसके दोस्त लीवर्ट, रोटिनबर्ग और सोलोवएव पहले पूर्वी मोर्चे को माल भेजने वाले आयोग में काम करते थे। (यह बात कोलचाक से पहले की है, जब शत्रु की फौजें संविधान सभा की सेनाओं में शामिल थीं।) यह पता चला कि इन लोगों ने स्वयं अपनी जेबों में ७०,००० से १०,००,००० रूबल तक भर लेने में कामयाबी हासिल की है। ये लोग बढ़िया घोड़ों पर सवार होकर चलते और नर्सों के साथ काम लीला करते। इनके आयोग ने एक मकान और एक मोटरगाड़ी भी प्राप्त कर ली थी और उनका मेजर डोमो यार रेस्टोरेंट में रहता था। (सन् १६१८ की ऐसी तस्वीर खींचने के हम आदी नहीं थे, लेकिन ये सब बातें क्रांतिकारी अदालत के समक्ष दिये गये बयानों में शामिल हैं।)

लेकिन इन लोगों के ऊपर जो मुकदमा चलाया गया, इनमें से कोई भी बात उसका आधार नहीं थी। पूर्वी मोर्चे पर उनकी गतिविधियों के सम्बन्ध में उनके ऊपर कोई भी अभियोग नहीं लगाया गया था। उन लोगों को इन कार्यों के लिए क्षमा दे दी गई थी। लेकिन महान् आश्चर्य! उनका सप्लाई आयोग भंग ही हुआ था कि इन चारों को नज़ारेंको सहित, जो पहले कोसीरेव के साथ अनेक अपराधों के लिए सज़ा काट चुका था और साइबेरिया का आवारा था, चेका के नियंत्रण और लेखा परीक्षा कालेजियम का सदस्य नियुक्त किया गया।

इस कालेजियम को यह अधिकार और शक्तियां प्राप्त थीं—"इसे चेका के अन्य सब अंगों की कारवाइयों की वैधानिकता की पुष्टि करने के समस्त अधिकार प्राप्त थे, यह किसी भी समय, मुकदमे के किसी भी दौर में किसी भी मामले को अपने विचार के लिए भेजने को कह सकता था, चेका के शेष सब अंगों के निर्णयों को उलट सकता था। केवल चेका के अध्यक्ष मण्डल के निर्णयों को बदलने का अधिकार इसे प्राप्त नहीं था!"[३४] यह कोई मामूली बात नहीं थी। चेका के अध्यक्ष मण्डल के बाद दूसरा स्थान इसी कालेजियम का था—यह ज़ेरझिंस्की-उरितस्की-पीटर्स-लातसिस-मेनझिंस्की-यगोदा के एकदम नीचे था!

इस दोस्तों की टोली का जीवन पहले की तरह ही चलता रहा। इन लोगों के सिर नहीं फिरे। ये लोग भावना के प्रवाह में नहीं बहे। मैक्सिमिच, लेंका, राफेलस्की और

मारिउपोलस्को नामक कुछ व्यक्तियों के सहयोग से, "जिनका कम्युनिस्ट पार्टी से कोई सम्बन्ध नहीं था, इन लोगों ने—निजी घरों और होटल सेवोय में—"ऐसे शान शौकत वाले स्थान बनाए, जहां एक-एक हजार रूबल का दाव लगाकर जुआ खेलना मामूली बात थी और इसके साथ ही सुरा-सुन्दरी का भी दौर चलता था।" कोसीरेव ने भी एक ऐसा ही शानदार स्थान बनाया था (इस पर ७०,००० रूबल लागत आई थी) और उसने चेका के भण्डार से चांदी की चम्मचें और प्याले, यहां तक कि मामूली कांच के बर्तन बटोर लेने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। (और स्वयं ये सब चीजें चेका के पास कैसे पहुंची थीं।) "और इन्हीं बातों पर उसका ध्यान केन्द्रित रहता था। विचारों और विचारधारा के निर्देश पर नहीं, और वह क्रान्तिकारी आंदोलन का यही अर्थ समझता था।" (उसने जो रिश्वतें खाई थीं, उनको गलत साबित करने के प्रयत्न में, चेका के इस प्रमुख पदाधिकारी ने बड़ी दृढ़ता से स्वयं यह जानकारी दी कि शिकागो के बैंक में जमा दो लाख रूबल उसे विरासत में मिले थे! स्पष्ट है कि जहां तक उसका सम्बन्ध था, एक ऐसी बात और विश्व क्रान्ति के बीच कोई संघर्ष नहीं था, कोई मतभेद नहीं था!)

स्थिति यह थी कि वह किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करा लेने और किसी भी व्यक्ति को रिहा करने देने के अपने अति मानवीय अधिकार का किस प्रकार सदुपयोग कर सकता था। स्पष्ट था कि इस सदुपयोग के लिए एक ऐसी मछली की तलाश करने की ज़रूरत होती है, जिसके साथ सोने की बंसी जुड़ी हुई हो और सन् १९१८ में जाल में फंसी मछलियों में ऐसी मछलियों की कमी नहीं थी। (आखिरकार क्रान्ति आवश्यकता से अधिक तेज़ी से हुई थी। वे सब चीजों की तलाश नहीं कर पाये थे—बुर्जुआ महिलाएं न जाने कितने कितने बहुमूल्य रत्न, हार, कंगन, अंगूठियां और कर्णफूल छिपा लेने में सफल हो गई थीं!) इसके बाद यह भी ज़रूरी था कि गिरफ्तार लोगों के रिश्तेदारों से किसी विश्वसनीय दलाल की मार्फत सम्पर्क किया जाए।

मुकदमे के समय ऐसे लोग भी हमारी नजरों के सामने से गुजरते हैं। एक बीस वर्षीया उस्पेन्सकाया नाम की औरत थी। उसने सेन्ट पीटर्सबर्ग जिमनासियम से परीक्षा उत्तीर्ण की थी, लेकिन विश्वविद्यालय में भर्ती नहीं हुई थी। सोवियतें सत्तारूढ़ हो चुकी थीं—और इस कारण से सन् १९१८ की वसन्त ऋतु में उस्पेन्सकाया चेका के दफ्तर में जा पहुंची और एक मुखबिर के रूप में अपनी सेवाएं अर्पित कीं। अपनी सूरत शक्ल के आधार पर वह इस कार्य के योग्य मानी गई और उन लोगों ने उसे स्वीकार कर लिया।

क्राइलेंको ने मुखबिरी के बारे में ये उद्गार प्रकट किए थे, क्योंकि उन दिनों इसके लिए एक दूसरे ही नाम का प्रयोग होता था। "जहां तक हमारा सम्बन्ध है, हमें इस कार्य में कुछ भी शर्मनाक दिखाई नहीं पड़ता। हम इसे अपना कर्तव्य मानते हैं...यह काम अपने आपमें अपमानजनक नहीं है; जब कोई व्यक्ति एक बार यह स्वीकार कर ले कि क्रान्ति के हितों को ध्यान में रखते हुए यह कार्य आवश्यक है, तो उसे यह कार्य अवश्य करना चाहिए।"[३५] पर दुर्भाग्यवश यह बात प्रकट हुई कि उस्पेन्सकाया की कोई राजनीतिक मान्यता नहीं थी! बस, यही भयंकर बात थी। उसने बताया: "मैं इस काम के लिए इसलिए सहमत हुई, क्योंकि मुझे एक निश्चित प्रतिशत के रूप में कमीशन देने की बात कही गई थी।" और उसे उन मुकदमों के बारे में कमीशन मिलना था, जिनके अभियुक्तों के खिलाफ वह मुखबिरी करती और इतना ही नहीं उसे "किसी अन्य व्यक्ति को प्राप्त राशि

को आधा-आधा बांटने" का भी आश्वासन था...इस व्यक्ति को अदालत का संरक्षण प्राप्त था और उसे हिदायत दी गई थी कि वह उस व्यक्ति का नाम न बताये। क्राइलेंको ने अपने शब्दों में स्थिति को समझाने की कोशिश की। चेका के कर्मचारियों में उस्पेन्स्काया शामिल नहीं थी, बल्कि "काम के अनुसार वेतन के आधार पर काम करती थी।"[36] और, यह भी प्रसंगवश उल्लेखनीय है कि अभियोक्ता ने उस्पेन्स्काया की स्थिति को सहानुभूति-पूर्वक समझते हुए यह स्पष्ट किया और समझाया कि वह बहुत अधिक पैसे की आदी हो चुकी थी और आर्थिक मामलों की सर्वोच्च परिषद से उसे पांच सौ रूबल का जो महत्वहीन वेतन मिलता था, वह इस बात को ध्यान में रखते हुए नगण्य था कि लोगों को डरा धमका-कर या उन्हें नाजायज़ रियायतें दिलाकर कितना पैसा ऐंठा जा सकता था—उदाहरण के लिए, किसी व्यापारी के गोदाम से सरकारी मोहर हटवाने में सहायता देकर वह पांच हजार रूबल वसूल सकती थी। और एक कैदी की पत्नी नेशचेरस्काया-ग्रेव्स से उसने १७,००० रूबल वसूल किए। और यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि उस्पेन्स्काया ने बहुत थोड़े दिन ही मुखबिर का काम किया था। चेका के कुछ बड़े अफसरों का धन्यवाद कि कुछ ही महीनों के भीतर वह कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य और पूछताछ अधिकारी बन गई थी।

पर इसके बावजूद हम लोग मुकदमे के सार पर पहुंचते हुए नहीं दिखाई पड़ रहे हैं। उस्पेन्सकाया ने उक्त मेशचेरस्काया-ग्रेव्स और कोसीरेव के लंगोटिया यार गोदेलयुक नामक व्यक्ति की मुलाकात कराई ताकि वह अपने पति को बचाने के लिए रिश्वत की राशि तय कर सके। (आरम्भ में इन लोगों ने छह लाख रूबल मांगे!) लेकिन दुर्भाग्य वश, अभी तक अस्पष्ट माध्यमों से, इस गुप्त मुलाकात की जानकारी उसी याकुलोव वकील को मिल गई, जो इससे पहले रिश्वत लेने वाले तीन पूछताछ अफसरों को गिरफ्तार करा चुका था। और जो, जाहिर था कि न्यायिक और न्याय की परिधि के बाहर समस्त सर्वहारा प्रणाली के प्रति वर्गगत घृणा रखता था। याकुलोव ने मास्को की क्रान्तिकारी अदालत के समक्ष इन लोगों के ऊपर अभियोग लगाया।[37] और अदालत के अध्यक्ष न्यायाधीश ने संभवत: उक्त तीन पूछताछ अधिकारियों के मामले में जनवादी कमीसार परिषद के क्रोध का स्मरण रखते हुए, वर्गगत मान्यताओं के बारे में भयंकर भूल की। कामरेड जेरझिन्स्की को केवल चेतावनी देने और इस मामले को परिवार के भीतर ही निपटा लेने के स्थान पर उसने पर्दे के पीछे एक स्टेनोग्राफर को छिपाकर बैठा दिया। और इस स्टेनोग्राफर ने उन सब बातों को लिख लिया जो गोदेलयुक ने कोसीरेव, सोलोवएव और अन्य जनवादी कमीसारों के बारे में कही थीं और यह विवरण भी ज्यों का त्यों लिख लिया कि चेका में कौन-कौन व्यक्ति, कितनी-कितनी रिश्वत लेता है। स्टेनोग्राफर द्वारा लिखित विवरण के अनुसार गोदेलयुक को १२,००० रूबल पेशगी के रूप में मिले थे और मेशचेरस्काया-ग्रेव्स को चेका की इमारत में प्रवेश करने का पास दिया गया था। इस पास को नियंत्रण और परीक्षण कालेजियम तथा लाइबर्ट और रोटेनबर्ग ने भरा और जारी किया था। (स्वयं चेका की इमारत के भीतर ही अन्तिम राशि के लिए सौदेबाजी हो रही थी।) वहीं गोदेलयुक को पकड़ लिया गया! घबराहट में उन लोगों के खिलाफ बयान दे बैठा! और उस समय तक मेशचेरस्काया-ग्रेव्स नियंत्रण और परीक्षण कालेजियम तक पहुंच चुकी थी और यह कालेजियम उसके पति के मामले को पुष्टि के लिए अपने पास भेजने का आदेश दे चुका था।)

ज़रा एक क्षण ठहरिए! आखिरकार ऐसा रहस्योद्घाटन चेका की नीलाम आकाश

के रंग की वर्दियों पर धब्बा लगा देता है ! क्या मास्को की क्रान्तिकारी अदालत का अध्यक्ष न्यायाधीश होशो-हवाश में था ? क्या वह सचमुच अपने अधिकारों का अतिक्रमण नहीं कर रहा था ?

लेकिन उस क्षण का स्वरूप यही था—और यह क्षण हमारे शानदार इतिहास की परतों के भीतर पूरी तरह छिपा हुआ है ! ऐसा लगता है कि चेका के काम के पहले वर्ष ने सर्वहारा वर्ग की पार्टी तक पर जुगुप्सापूर्ण प्रभाव डाला था, जो उस समय तक ऐसी बातों की आदी नहीं हुई थी । केवल पहला वर्ष ही बीता था; चेका ने अपने गरिमापूर्ण मार्ग पर केवल पहला डग ही भरा था; और इससे पहले ही, जैसाकि क्राइलेंको लिखता है, यद्यपि बहुत स्पष्टता से नहीं; "झगड़ा शुरू हो चुका था और यह झगड़ा" अदालत और इसके कार्यों तथा चेका के न्याय की परिधि से बाहर के कार्यों के बारे में था । यह एक ऐसा झगड़ा था जिसने उस पार्टी और श्रमिक जिलों को दो खेमों में बांट दिया था ।"[३८] और यही कारण था कि कोसीरेव का मामला उठ सका—यद्यपि इससे पहले बड़े मजे में काम हो रहा था—और समस्त राज्य व्यवस्था के सर्वोच्च स्तर तक पहुंच सका ।

चेका को बचाना ही था ! बचाओ ! चेका को बचाओ ! सोलोवएव ने क्रान्तिकारी अदालत से कहा कि गोदेलयुक से मुलाकात के लिए तगानका जेल के भीतर जाने की अनुमति दी जाए (यह दुर्भाग्यवश लूबयांका में नहीं था, ताकि वह उससे बात कर सके । अदालत ने इस अनुरोध को ठुकरा दिया । लेकिन सोलोवएव अदालत की सहायता के बिना ही गोदेलयुक की कोठरी तक पहुंचने में सफल हुआ और—कैसा विलक्षण संयोग है !—उसी क्षण गोदेलयुक गम्भीर रूप से बीमार हो गया । "कोई भी व्यक्ति सोलोवएव के बुरे इरादों की बात कैसे कह सकता है ?" क्राइलेंको को झुककर अपना निवेदन पेश करता है ।) मौत को सामने देखकर कांपते हुए गोदेलयुक ने चेका के विरुद्ध बातें कहने पर पश्चाताप प्रकट करना शुरू किया और यह अनुरोध किया कि उसे पहले की बातों को वापस लेने के लिये एक कागज़ दिया जाए : यह सब झूठ था; उसने कोसीरेव और चेका के कमीसारों पर झूठे अभियोग लगाये और पर्दे के पीछे बैठे हुए स्टेनोग्राफर ने जो बातें कही थीं, वे भी झूठी थीं ![३९] "और किसने मेशचेरस्काया-ग्रव्स को चेका की इमारत में आने के लिए पास दिए ?" क्राइलेंको ने मांग की । यह पास आकाश से नहीं गिरे थे, ज़ाहिर था ? नहीं, प्रमुख अभियोक्ता "यह कहना नहीं चाहता कि इस मामले में सोलोवएव सहायक था, क्योंकि...क्योंकि अपर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं," लेकिन वह यह मान्यता पेश करता है कि "हो सकता है कि उन नागरिकों ने, जिनके हाथ शिकंजे में फंसे हुए हैं और जो आज स्वतंत्र हैं और जिनके समक्ष गिरफ्तारी का खतरा मौजूद है, हो सकता है सोलोवएव को तेगानका जेल भेजा हो ।

यह लाइबर्ट और रोटेनबर्ग से सवाल पूछने का सर्वोत्तम समय था और उनके नाम सम्मन जारी किए गए, लेकिन वे अदालत में हाजिर नहीं हुए ! हां, नहीं हुए ! वे अदालत में नहीं आए । उन्होंने अदालत में पेश होने से इनकार कर दिया । ठीक है, तो मेशचेरस्काया-ग्रेव्स से ही पूछताछ करो ! और—क्या आप कल्पना कर सकते हैं ?—इस सत्ताभ्रष्ट अभिजात वंश की स्त्री में भी इतना साहस था कि उसने क्रांतिकारी अदालत के सामने पेश होने से इनकार कर दिया । और ऐसा कोई व्यक्ति मौजूद नहीं था, जो उसे अदालत में हाजिर होने को बाध्य कर पाता ! गोदेलयुक पश्चाताप प्रकट कर चुका था, अपने पूर्व बयान को झूठा बता चुका था—और अन्तिम सांस गिन रहा था । कोसीरेव ने कोई भी बात

स्वीकार करने से इनकार कर दिया था ! सोलोवएव किसी भी बात का दोषी नहीं था ! तो पूछताछ किससे की जाती।

तो अदालत के समक्ष कौन से गवाह सचमुच पेश हुए, और वे भी स्वयं अपनी स्वतन्त्र इच्छा से ! चेका का उपाध्यक्ष, कामरेड पीटर्स। इतना ही नहीं, स्वयं फेलिक्स एडमंडोविच जेरझिस्की भी। वह अत्यन्त घबराहट की स्थिति में पेश हुआ। उसका एक अत्यन्त उत्साही का लम्बा और जगमगाता हुआ चेहरा अदालत के सदस्यों के समक्ष मौजूद था और अदालत के सदस्यों का दिल डूबा जा रहा था—तथा उसने पूरी तरह से निर्दोष कोसीरेव की सफाई में अत्यधिक भावावेश से बयान दिया और कोसीरेव की उच्च नैतिकता, क्रांतिकारी तथा पेशे सम्बन्धी गुणों का बखान करने लगा। दुर्भाग्यवश इस बयान को हमारे लिए सुरक्षित नहीं रखा गया। लेकिन क्राइलेंको ने इस प्रकार इसका उल्लेख किया है : "सोलोवएव और जेरझिस्की ने कोसीरेव के अद्भुत गुणों का चित्रण किया।"[४०] (तुम्हारे जैसे लापरवाह लोगों को, हां, तुम्हें भी २० वर्ष बाद लूबयांका में, वे लोग इस मुकदमे का स्मरण दिलायेंगे !) यह अनुमान लगाना बड़ा आसान है कि जेरझिस्की ने क्या कहा होगा : कि कोसीरेव चेका का इस्पाती सदस्य था, वह अपने शत्रुओं के प्रति निष्ठुर था; कि वह एक अच्छा कामरेड था : गर्म दिल, ठण्डे दिमाग और स्वच्छ हाथों वाला।

और प्रवाद के कूड़े करकट के ढेर से, कांस्यवीर कोसीरेव हमारी आंखों के समक्ष उठ खड़ा होता है। इतना ही नहीं, उसकी संपूर्ण जीवनी, उसकी विलक्षण संकल्प शक्ति का प्रमाण प्रस्तुत करती है। क्रांति से पहले उसे अनेक बार सज़ाएं दी गई थीं। अक्सर उसे हत्या के मामलों में जेल भेजा गया था। कोस्त्रोमा नगर में उसे स्मिरनोवा नाम की वृद्धा के घर में धोखाधड़ी से जा घुसने और स्वयं अपने हाथों से उसका गला घोंट देने के लिए जेल भेजा गया था; इसके बाद स्वयं अपने पिता की हत्या करने के प्रयास में और फिर पासपोर्ट इस्तेमाल करने के लिए अपने साथी को ही मार डालने के लिए उसे सज़ा मिली थी। कोसीरेव को जिन अन्य मामलों में सज़ा मिली थी वे धोखाधड़ी से सम्बन्धित थे और उसने कुल मिलाकर अनेक वर्ष जेल में बिताये थे। (हम उसके ऐश आराम के जीवन की इच्छा को समझ सकते हैं।) और उसे ज़ारशाही के जमाने में दिए गये क्षमादानों के बल पर ही जलों से छुटकारा पाने का मौका मिला था।

तभी प्रमुख चेकिस्टों अर्थात् चेका के अधिकारियों की कठोर और ईमानदारी दर्शाने वाली आवाज़ों ने प्रमुख अभियोक्ता को टोका; इन लोगों ने उसे बताया कि जिन अदालतों ने कोसीरेव को सज़ाएं सुनाई थीं, वे बुर्जुओं और जमींदारों की अदालतें थीं और हमारे नए समाज में उन पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। इसके बाद क्या हुआ ? प्रमुख अभियोक्ता भावावेश से भर उठा और उसने अपने मंच से एक ऐसा भाषण किया जो विचारधारा की दृष्टि से इतना दोषपूर्ण था कि यदि हम क्रांतिकारी अदालतों द्वारा चलाए गये मुकदमों की सामंजस्यपूर्ण श्रृंखला में उसका उल्लेख करते हैं, तो यह एक अत्यन्त विरोधी स्वर दिखाई पड़ेगा।

"यदि पुराने ज़ारशाही के जमाने की अदालत की प्रणाली में कोई अच्छी बात थी, तो वह जूरी के द्वारा मुकदमों की सुनवाई की व्यवस्था थी...हम सदा जूरी के सदस्यों के निर्णयों पर विश्वास कर सकते थे और इन मामलों में न्यूनतम न्यायिक गलतियां देखने को मिलीं।"[४१]

कामरेड क्राइलेंको के मुख से यह बात सुनना और भी अधिक कष्टप्रद लग रहा था क्योंकि केवल ३ महीने पहले ही, लोगों को भड़काकर गलत काम कराने वाले आर० मालीनोवस्की के मुकदमे के समय, जो पहले कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं का चहेता रह चुका था, और जिसे पहले चार बार फौजदारी मुकदमों के बाद सज़ाएं दी जा चुकी थीं, नेताओं ने उसे केन्द्रीय समिति में सहयोजित कर लिया था और उसे दूमा (संसद) का सदस्य नियुक्त कर दिया था। और उस समय अभियोग लगाने वाली सत्ता अर्थात् सरकारी अभियोक्ता ने वर्ग सम्बन्धी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एकदम सही दृष्टिकोण अपनाया था।

"प्रत्येक अपराध सम्बन्धित सामाजिक प्रणाली का परिणाम होता है, और इस दृष्टि से किसी पूंजीवादी समाज और ज़ारशाही के जमाने के कानूनों के अन्तर्गत दण्डनीय अपराधों के लिए दी गई सज़ा हमारी नज़र में किसी व्यक्ति के ऊपर सदा सर्वदा के लिए लांछन नहीं लगाती...हमें अपने साथियों के मध्य मौजूद ऐसे अनेक लोगों के उदाहरण मालूम हैं जिनके ऊपर अतीत में ऐसे ही तथ्यों के आधार पर अभियोग लगाये गये थे। लेकिन हमने यह निष्कर्ष कभी नहीं निकाला कि इस आधार पर हमें ऐसे किसी व्यक्ति को अपने परिवेश से हटा देना चाहिए। एक ऐसा व्यक्ति जो हमारे सिद्धांतों के बारे में जानता है, इस बात से भयभीत नहीं हो सकता कि पहले फौजदारी मुकदमों में मिली सज़ा के कारण, वह क्रांतिकारियों की जमात में शामिल नहीं हो सकता।"[४२]

कामरेड क्राइलेंको पार्टी की तरंग में होने पर इस प्रकार अपने उद्गार प्रकट कर सकता था। लेकिन इस दूसरे मामले में, अपने गलत मूल्यांकन के परिणामस्वरूप, चमचमाते कवच वाले वीरनायक कोसीरेव के ऊपर थूका जा रहा था। और इसके परिणामस्वरूप अदालत के समक्ष एक ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी, जिसमें कामरेड जेरझिस्को को बाध्य होकर कहना पड़ा: "एक क्षण के लिए (हां, केवल एक क्षण के लिए) यह विचार मेरे मन में कौंधा कि हो सकता है कि नागरिक कोसीरेव उस राजनीतिक भावावेश का शिकार बन रहा हो जो हाल के समय में असाधारण आयोग के चारों ओर छा गया है।"[४३]

और तभी अचानक क्राइलेंको के मन में यह विचार कौंधा: "मैं यह नहीं चाहता और मैंने कभी यह चाहा भी नहीं था कि वर्तमान मुकदमा कोसीरेव और उस्पेन्सकाया के मुकदमे के स्थान पर चेका के खिलाफ मुकदमा बन जाए। मैं केवल ऐसे परिणाम की इच्छा करने में ही असमर्थ नहीं हूं, बल्कि हर उपलब्ध साधन से ऐसी स्थिति के विरुद्ध लड़ने का उत्तरदायित्व भी मुझ पर है!" और वह आगे कहता रहा: "सर्वाधिक उत्तरदायी, ईमानदार और आत्मनियंत्रण रखने वाले कामरेडों को असाधारण आयोग के सर्वोच्च पदों पर नियुक्त किया गया और इन लोगों ने अपने ऊपर शत्रु को नष्ट कर डालने का कठिन दायित्व लिया, यद्यपि इसमें गलती की जोखिम भरी हुई थी।...इस कारण से क्रांति उनके प्रति आभार प्रकट करने के लिए बाध्य है, उनका धन्यवाद करने के लिए बाध्य है।...मैं यह बात विशेष रूप से जोर देकर कहना चाहता हूं...आगे चलकर कोई व्यक्ति मुझसे यह न कह सके: "वह राजनीतिक विश्वासघात का माध्यम बन गया!"[४४] (लेकिन वे लोग यही कहेंगे!)

सर्वोच्च अभियोक्ता कैसी तलवार की धार पर चल रहा था! लेकिन स्पष्ट था कि उसके भी अपने सम्पर्क थे, पार्टी की गुप्त गतिविधियों के जमाने के उसके साथी थे, जिनसे उसे यह पता चलता था कि भविष्य में क्या होने जा रहा है। यह बात अनेक मुकदमों

में अत्यन्त स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ी है और स्वयं इस मुकदमे में भी स्पष्ट हुई। सन् १९१९ के आरम्भ में, इस कथन की प्रवृत्तियां दिखाई पड़ रही थीं : "बस बहुत हो चुका! अब चेका को लगाम देना जरूरी है!" और इस क्षण को "बुखारिन के निबन्ध में बड़ी सुन्दरता से प्रस्तुत किया गया, जिसमें उन्होंने कहा कि क्रांतिकारी वैधानिकता का स्थान वैधानिक क्रांतिकारिता को ले लेना चाहिए।"[४५]

आप जहां कहीं भी नजर डालते हैं, आपको द्वन्द्वात्मकता दिखाई पड़ती है! और क्राइलेंको चीख उठा : "क्रांतिकारी अदालत से यह कहा जा रहा था कि वह असाधारण आयोग का स्थान ले ले।" (स्थान ले ले ???) इस बीच, इसे आतंक, डराने धमकाने और आतंकित करने की उस प्रणाली को पूरी उग्रता से लागू करने में असाधारण आयोग अर्थात् चेका से कम कठोर नहीं होना चाहिए।[४६]

क्राइलेंको ने यहां चेका के लिए भूतकाल का प्रयोग किया था। क्या वह चेका को पहले ही दफना चुका था? ठीक है, तुम चेका का स्थान लेना चाहते हो। और चेका के सदस्य कहां जायेंगे? भयंकर दिन आ रहे हैं! यही कारण था कि तुरन्त क्रांतिकारी अदालत के सामने, एड़ियों तक पहुंचने वाला ओवरकोट पहनकर, अदालत के समक्ष गवाह के रूप में पेश होना ज़रूरी था।

पर सम्भवत:, कामरेड क्राइलेंको, तुम्हारी जानकारी के स्रोत गलत थे?

हां, लूबयांका के ऊपर आकाश काला पड़ चुका था। और हो सकता है कि यदि स्थिति बदल जाती तो यह पूरी पुस्तक भिन्न रूप में लिखी जाती। लेकिन मैं समझता हूं कि वास्तव में यह हुआ कि लौह पुरुष फेलिक्स जेरझिस्की, व्लादिमिर इलिच लेनिन से मिलने गया और उनसे बातचीत की तथा स्थिति की जटिलता को स्पष्ट किया। और आसमान साफ हो गया। और यद्यपि दो दिन बाद, १७ फरवरी १९१९ को चेका को अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी के एक अध्यादेश के द्वारा अपने न्यायिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया—पर यह अधिक समय तक के लिए नहीं हुआ।[४७]

अदालत का हमारा यह दिन इस तथ्य के कारण और भी जटिल हो गया कि आपत्तिजनक उस्पेन्सकाया ने अदालत में बहुत बुरा व्यवहार किया। प्रतिवादी के कठघरे से उसने चेका के उन प्रमुख अधिकारियों पर भी, "कीचड़ उछाला" जिनके नामों का इससे पहले इस मुकदमे में उल्लेख नहीं हुआ था। और इन अधिकारियों में कामरेड पीटर्स भी शामिल था! यह पता चला कि लोगों को डरा धमकाकर पैसा वसूलने की अपनी कार-वाइयों में वह कामरेड पीटर्स के पवित्र नाम का भी उपयोग करती थी; वह उसके दफ्तर के कमरे में बैठकर बिना किसी दिखावे के, हमारे जासूसों से बातचीत करती थी। अब उसने रीगा में कामरेड पीटर्स के क्रांति के पहले के जीवन के कुछ अंधकारपूर्ण पहलुओं की ओर संकेत किया। इन आठ महीनों में वह कैसी नागिन बन गई थी, और वह भी इस तथ्य के बावजूद कि इन आठ महीनों में वह चेका के अधिकारियों के साथ रही थी! ऐसी औरत का कोई क्या करे? यहां क्राइलेंको की स्थिति चेका के अधिकारियों की स्थिति से पूरी तरह मेल खाती थी : "जब तक दृढ़तापूर्वक शासन की स्थापना नहीं हो जाती और अभी इस कार्य के लिए बहुत समय लगना है (क्या सचमुच ???)...अत: क्रांति की रक्षा के हितों को ध्यान में रखते हुए...नागरिका उस्पेन्सकाया को पूरी तरह मिटा डालने के अलावा अन्य कोई सज़ा नहीं हो सकती।" उसने यह नहीं कहा था कि उसे "गोली से उड़ा दिया जाये।"

उसने कहा था "पूरी तरह मिटा डालने के अलावा अन्य कोई सज़ा नहीं हो सकती।" पर, नागरिका क्राइलेंको, आखिरकार वह एक युवती ही है! ठीक है, उसे "दस्सा" थमा दो अथवा हो सकता है "पच्चीसा" दे दो और हो सकता है उस समय तक आपकी प्रणाली की दृढ़तापूर्वक स्थापना हो जाए? क्यों इस बारे में आपकी क्या राय है? लेकिन नहीं: "समाज के हितों और क्रांति के हितों को ध्यान में रखते हुए, इसका कोई दूसरा उत्तर नहीं है, इसका कोई भी दूसरा उत्तर नहीं हो सकता—और इस प्रश्न को किसी भी अन्य तरीके से पेश नहीं किया जा सकता। इस मामले में, जेल में कैद रखने से कोई लाभ नहीं होगा!"

निश्चय ही उसने घावों पर नमक छिड़क दिया था...वह बहुत कुछ जानती थी...

और कोसीरेव का बलिदान देना भी ज़रूरी था। उन्होंने उसे गोली से उड़ा दिया। दूसरों के स्वास्थ्य के लिए यह ज़रूरी था।

क्या सचमुच कभी वह दिन आयेगा, जब हम लूबयांका जेल के पुराने दस्तावेज़ पढ़ सकेंगे? नहीं, वे उन्हें जला डालेंगे। वे उन्हें जला चुके हैं।

जैसाकि पाठक ने स्वयं देख लिया होगा कि यह एक बेहद महत्वहीन मामला था। हमें इस पर विचार करने की भी आवश्यकता नहीं थी। लेकिन यहां एक भिन्न मामला पेश है।

घ. "चर्च के अधिकारियों" का मुकदमा—११-१६ जनवरी १९२०

क्राइलेंको की राय के अनुसार इस मुकदमे को "रूस की क्रांति के इतिहास में उपयुक्त स्थान मिलेगा।" सचमुच इतिहास में! कोसीरेव की गर्दन मरोड़ डालने के लिए केवल एक दिन की ज़रूरत हुई, लेकिन यह मुकदमा पूरे पांच दिन तक घिसटता रहा।

प्रमुख प्रतिवादी थे: ए० डी० समारिन (रूस में प्रसिद्ध व्यक्ति, पादरी परिषद् का भूतपूर्व मुख्य प्रोक्यूरेटर इस व्यक्ति ने चर्च को ज़ार के प्रभाव से मुक्त कराने की कोशिश की थी, यह रासपुतिन का शत्रु था और रासपुतिन ने उसे अपदस्थ करा दिया था।)[८८]; कुजनितसोव, मास्को विश्वविद्यालय में चर्च के कानून के प्रोफेसर; मास्को के बड़े पादरी उस्पेन्सकी और सुरेतकोव। (स्वयं अभियोक्ता ने स्वेतकोव के बारे में यह कहा: "एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक व्यक्ति, संभवतः एक ऐसा सर्वोत्तम व्यक्ति, जो पादरी समुदाय में उत्पन्न हो सकता था, लोगों की भलाई का काम करने वाला।")

उनका अपराध यह था कि उन्होंने "संयुक्त पैरिशों (गिरजाघर का क्षेत्र) की मास्को परिषद्" की स्थापना की; जिसने ४० से ८० वर्ष की उम्र के धर्म में आस्था रखने वाले लोगों को पेट्रिआर्क (लाट पादरी) की रक्षा करने के लिए स्वयंसेवक अंगरक्षकों के रूप में भर्ती किया। (ये स्वयं सेवक पूरी तरह निरस्त्र थे) इन स्वयंसेवकों ने पेट्रियार्क के घर पर स्थायी रूप से, रात दिन पहरा रखा और इन लोगों को यह जिम्मेदारी सौंपा गई थी कि अधिकारियों की ओर से पेट्रियार्क को खतरा उत्पन्न होने पर, चर्च की खतरे की घंटियां बजाकर और टेलीफोन करके लोगों को एकत्र कर लें, ताकि जहां कहीं पेट्रियार्क को ले जाया जाये वहां एक विशाल भीड़ भी जाए और जनवादी कमीसार परिषद् से पेट्रियार्क को रिहा करने की प्रार्थना करे—और यह कार्य आपको क्रांति विरोधी ठहराने के लिए पर्याप्त था।

यह प्राचीन रूस की, पवित्र रूस की कैसी विलक्षण योजना थी! लोगों को खतरे की घंटियां बजाकर एकत्र करना...और भीड़ के रूप में याचिका लेकर जाना!

और अभियोक्ता आश्चर्यचकित था। आखिर पेट्रियार्क को किस बात का खतरा था ? उनकी रक्षा करने के लिए योजनाएं बनाने की क्या ज़रूरत थी ?

वस्तुतः, यह एक स्पष्ट तथ्य था कि पिछले दो वर्षों से चेका अवांछित लोगों के विरुद्ध न्याय की परिधि के बाहर प्रतिशोध की कारवाई कर रही थी, यह तथ्य सबके सामने था कि कुछ समय पहले ही लाल सेना के चार आदमियों ने कीव के मेट्रोपोलिटन (बड़ा पादरी) को मार डाला था, यह तथ्य मौजूद था कि पेट्रियार्क का "मामला पहले ही तैयार और पूरा हो चुका था और केवल इसे क्रांतिकारी अदालत के सामने पेश करना शेष रह गया था।" और "केवल मज़दूरों तथा किसानों के उन व्यापक जन समुदायों की चिन्ता के कारण ही, जो अभी तक पादरियों के मित्थया प्रचार के प्रभाव के अधीन थे, हमने अब तक अपने इन वर्ग शत्रुओं के खिलाफ कारवाई नहीं की थी।"[४६] अब आप ही बताइये आर्थोडाक्स चर्च के अनुयायी अपने सर्वोच्च पादरी पेट्रियार्क के लिए चिन्तित क्यों थे ? इन दो वर्षों में पेट्रियार्क तिखोन ने अपना मुंह बन्द रखने से इनकार कर दिया था, उन्होंने जनवादी कमीसारों, पादरियों और अपने अनुयायियों को संदेश भेजे थे। छापेखाने उनके संदेशों को छापने के लिए तैयार नहीं होते थे। इसलिए टाइपराइटरों पर इनकी प्रतिलिपियां तैयार की गईं (यह पहला समिज़दात साहित्य था।) इन संदेशों में निर्दोष लोगों के हत्याकाण्ड, और देश की बर्बादी का भण्डा फोड़ किया गया था। अतः कोई भी व्यक्ति पेट्रियार्क के जीवन के लिए किस प्रकार चिन्तित हो सकता था ?

प्रतिवादियों के ऊपर एक दूसरा अभियोग भी लगाया गया था। पूरे देश में चर्च की सम्पत्ति की गणना और अधिग्रहण हो रहा था। (यह कारवाई ईसाई सन्यासियों के मठों को बन्द कर डालने और चर्च की भूमि और सम्पत्ति को जब्त करने के अलावा थी; यहां जिस सम्पत्ति का उल्लेख है वह पूजा से सम्बन्धित पात्रों, प्यालों और मोमबत्ती लगाने के झाड़ फानूस ही हैं।) और पैरिशों की परिषद् ने अपने अनुयायियों से यह अपील की थी कि वे गिरजाघरों की सम्पत्ति को इस प्रकार जब्त किए जाने का प्रतिरोध करें और जब कभी सम्पत्ति को जब्त करने का प्रयास किया जाता इस बात की सूचना गिरजाघर की घण्टियां बजाकर श्रद्धालुओं को दी जातीं। (आखिरकार यह स्वाभाविक भी था ! इसी प्रकार उन लोगों ने तातारों से भी गिरजाघरों की रक्षा की थी !)

और तीसरा अभियोग उनके विरुद्ध यह लगाया गया था कि वे लगातार धृष्टतापूर्वक जनवादी कमीसार परिषद् को याचिकाएं भेजते रहे हैं, जिसमें उन्होंने स्थानीय अधिकारियों द्वारा गिरजाघरों को अपवित्र करने, भद्दी धर्म विरोधी बातों और उस कानून के उल्लंघन से रक्षा की प्रार्थना की थी, जिस कानून के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आत्मा के आवाज़ के अनुसार धर्म पालन आदि का अधिकार था। यद्यपि इन याचिकाओं पर कोई कारवाई नहीं की गई थी (पर जनवादी कमीसार परिषद् के प्रशासनिक अधिकारी बोंच-ब्रूएविच के बयान के अनुसार), पर इनसे स्थानीय अधिकारियों का भण्डाफोड़ हो गया था।

इन प्रतिवादियों ने जो उल्लंघन किए थे, उन्हें ध्यान में रखते हुए, अभियोक्ता इन भयंकर अपराधों के लिए आखिरकार किस सज़ा की मांग कर सकता था ? क्या पाठक का क्रांतिकारी अन्तःकरण यह उत्तर देने के लिए उसे प्रेरित नहीं करेगा ? स्पष्ट है कि इन्हें गोली से उड़ा दिया जाना चाहिए था। और क्राइलेंको ने भी बस इसी दण्ड की मांग की—समारिन और कुजनितसोव के लिए।

जिस बीच ये लोग अभिशप्त कानूनी औपचारिकताओं पर अपना सिर फोड़ रहे थे, और बुर्जुआ वकीलों के आवश्यकता से अधिक लम्बे भाषण सुन रहे थे ("तकनीकी कारणों से" हम इन भाषणों का यहां उल्लेख नहीं करेंगे, उद्धरण नहीं करेंगे)। पर अन्तत: यह स्पष्ट हुआ कि मृत्युदण्ड को...समाप्त किया जा सकता है ! कैसी सुविधा थी, नहीं, यह नहीं हो सकता ! यह क्या हो गया ? अन्तत: इस बात का पता चला कि जेरझिन्स्की ने चेका को यह आदेश दिया था (जरा सोचिए मृत्युदण्ड के अधिकार से वंचित चेका ?)। लेकिन क्या यह आदेश जनवादी कमीसार परिषद् ने क्रांतिकारी अदालतों पर भी लागू कर दिया है ? नहीं अभी नहीं। क्राइलेंको खिल उठा। और वह गोली से उड़ा कर मृत्युदण्ड देने की मांग निम्नलिखित आधार पर करता रहा :

"यदि हम यह कल्पना कर लें कि गणराज्य के दृढ़ आधार पर स्थापित हो जाने के कारण ऐसे लोगों से तात्कालिक खतरा समाप्त हो गया है, पर इसके बावजूद यह स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है कि सृजनात्मक प्रयास की इस अवधि में...पुराने दोगले नेताओं...का सफाया...क्रान्तिकारी आवश्यकता द्वारा अपेक्षित है।" और इसके बाद वह बोला : "सोवियत सत्ता को चेका के उस आदेश पर गर्व है, जिसके द्वारा मृत्युदण्ड को समाप्त कर दिया गया है।" लेकिन यह "हमें यह निष्कर्ष निकालने के लिये बाध्य नहीं करता कि मृत्युदण्ड की समाप्ति के प्रश्न पर अन्तिम निर्णय लिया जा चुका है...सोवियत शासन की समस्त अवधि के लिए यह निर्णय लिया जा चुका है।"[५०]

यह कथन भविष्यवाणी से भरा था ! मृत्युदण्ड वापस लौटेगा—और वह भी बहुत जल्दी ! आखिरकार अभी कितनी लम्बी सूची में दिये गए नामों को मटियामेट करना है ! (हां, क्राइलेंको को भी, और उसके वर्ग के अनेक भाइयों को भी।)

और, वस्तुत:, क्रान्तिकारी अदालत बड़ी आज्ञाकारी थी और उसने समारिन और कुज़्नितसोव को गोली से उड़ा कर, मृत्युदण्ड देने की सज़ा सुना दी। लेकिन अदालत क्षमादान की सिफारिश भी इसके साथ जोड़ने में सफल हुई : इन लोगों को उस समय तक के लिये किसी यातना शिविर में डाल दिया जाये, जब तक विश्व साम्राज्यवाद के ऊपर अन्तिम विजय प्राप्त नहीं हो जाती ! (इस प्रकार वे आज भी वहां बैठे हों !) और जहां तक "उस सर्वोत्तम व्यक्ति" का सवाल था जिसे "पादरी समुदाय जन्म दे सकता था"--उसे १५ वर्ष की कैद की सज़ा सुनाई गई थी पर इसे घटा कर ५ वर्ष कर दिया गया था।

अभियोगों को कुछ ठोस बनाने के लिये इस मुकदमे में और प्रतिवादियों को भी घसीट लिया गया था। इनमें कुछ ईसाई सन्यासी और ज़्वेनीगोरोद के शिक्षक थे इन लोगों को १९१८ की गर्मियों में ज़्वेनीगोरोद के मामले में फंसा दिया गया था। लेकिन किसी कारण से डेढ़ वर्ष तक इनके ऊपर मुकदमा नहीं चलाया गया था। (अथवा यह भी हो सकता है कि उनके ऊपर मुकदमा चलाया जा चुका हो, और अब आवश्यकता होने पर एक बार फिर उनके ऊपर मुकदमा चलाना शुरू कर दिया गया हो)। उस गर्मी में कुछ सोवियत अफसर ज़्वेनीगोरोद के ईसाई मठ में फादर सुपीरियर आइओन[५१] से मिलने पहुंचे और उन्हें हुक्म दिया कि वे सेन्ट सावा के पवित्र अवशेष उनके हवाले कर दें। ये अफसर गिरजाघर के भीतर केवल सिगरेट ही नहीं पी रहे थे, और जाहिर था कि पूजा की वेदी के पर्दे के पीछे भी, बल्कि उन लोगों ने अपनी टोपियां उतारने से भी इनकार कर दिया। इतना ही नहीं, उनमें से एक ने सेन्ट सावा की खोपड़ी को अपने हाथों में उठा लिया और इसके ऊपर थूकना

शुरू कर दिया। इस प्रकार वह यह दर्शाना चाहता था कि इस खोपड़ी की पवित्रता मात्र भ्रांति है। इसके अलावा गिरजाघर की पवित्र वस्तुओं को अपवित्र करने के और कार्य भी उन्होंने किए। इसके परिणामस्वरूप गिरजाघर की खतरे की घंटियां बजाई गईं और लोगों ने व्यापक रूप से विद्रोह किया तथा एक या दो अधिकारी मार डाले गए। (अन्य अधिकारियों ने गिरजाघर को अपवित्र करने की बात से, थूकने की घटना तक से इनकार कर दिया और क्राइलेंको ने उनकी इस बात को स्वीकार भी कर लिया।[५२] क्या इस समय इन्हीं अफसरों के ऊपर मुकदमा चलाया जा रहा था? नहीं, ईसाई सन्यासियों के ऊपर।)

हम पाठक से यह प्रार्थना करते हैं कि वह निरन्तर यह बात ध्यान में रखे: सन् १६१८ से, हमारी न्याय परम्परा ने यह निर्धारित कर दिया कि मास्को में चलाए जाने वाला प्रत्येक मुकदमा, हां चेका के अधिकारियों के अन्यायपूर्ण मुकदमे को छोड़कर, किसी भी रूप में कोई अलग थलग मुकदमा नहीं होता था। यह कोई ऐसा कार्य नहीं होता था कि परिस्थितियोंवश कुछ घटनाएं घटीं। और उनके परिणामस्वरूप मुकदमा शुरू हुआ; यह न्याय सम्बन्धी नीति से महत्वपूर्ण ढंग से सम्बन्धित होता था; यह एक ऐसा आदर्श प्रदर्शन होता था, जिसके आधार पर यह निर्धारित किया जाता था कि इस प्रकार की कारवाइयां प्रांतों के लिये भी अच्छी रहेंगी; यह एक मानक होता था; यह ठीक वैसी ही बात होती थी, जिस प्रकार गणित की पुस्तक में प्रश्न का आदर्श हल दे दिया जाता है और स्कूली बच्चे उसी आदर्श हल के अनुसार आगे काम करते हैं।

अतः, जब हम यह कहते हैं कि "चर्च के अधिकारियों का मुकदमा" तो इसका अर्थ केवल बहुवचन के रूप में ही..."अनेक मुकदमों" के रूप में ही समझा जाना चाहिए। और, वास्तव में, स्वयं सर्वोच्च अभियोक्ता ने बड़ी तत्परता से यह बात समझाई: ऐसे मुकदमे गणराज्य के प्रायः समस्त क्रान्तिकारी अदालतों में चल रहे हैं।" (क्या भाषा है!) उत्तर दवीना, तवेर और रियाजन में; सरातोव, कज़ान, उफा, सोलवाईचेगोदस्क और ज़ारेबोकोकशाइस्क में कुछ ही समय पहले पादरियों, गिरजाघरों की गायनमण्डलियों के सदस्यों और श्रद्धालुओं के सक्रिय सदस्यों के ऊपर मुकदमे चलाये गये थे, जिन्हें उस कृतहघ्न "आर्थाडाक्स चर्च" का प्रतिनिधि बताया गया था, "जिसे अक्तूबर क्रान्ति ने मुक्ति दिलाई थी।"[५३]

पाठक को यहां एक विरोधाभास दिखाई पड़ेगा: इनमें से बहुत से मुकदमे मास्को के आदर्श मुकदमे से पहले क्यों हुए? यह हमारे विवरण की एक खामी भर है। स्वतन्त्र कराई गई चर्च को न्यायिक और न्याय की परिधि के बाहर उत्पीड़न का लक्ष्य बनाने की कारवाई १६१८ में काफी समय पहले ही शुरू हो चुकी थी और जवेनीगोरोद के मामले को ध्यान में रखते हुए, उस वर्ष गर्मियों तक यह उग्रता की चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी। अक्तूबर १६१८ में पेट्रियार्क तिखोन ने जनवादी कमीसार परिषद् को एक संदेश भेज कर इस बात के प्रति विरोध प्रकट किया था कि गिरजाघरों में धर्म सम्बन्धी उपदेश की स्वतन्त्रता शेष नहीं रह गई है और "अनेक साहसी पादरी अपने उपदेशों की कीमत अपने बलिदान के रक्त से चुका चुके हैं...अनेक पीढ़ियों से श्रद्धालुओं ने गिरजाघरों के लिए जो सम्पत्ति संचित की है, आपने उसके ऊपर हाथ डाला है और आपने उनकी मरणोपरान्त इच्छा का उल्लंघन और अपमान करने में भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई है।" (निश्चय ही, जनवादी कमीसारों ने यह संदेश नहीं पढ़ा, लेकिन उनके प्रशासनिक कर्मचारी इस पर अवश्य ही जी खोलकर हंसे होंगे: इन लोगों को हमें बुरा भला कहने का अब अच्छा मौका मिल गया है—मरणोपरांत

इच्छाओं का उल्लंघन। हम तुम्हारे पूर्वजों पर थूकते हैं? हमारी दिलचस्पी केवल वंशजों में है। "वे लोग विशपों, पादरियों, सन्यासियों और सन्यासिनों को गोली से उड़ा रहे हैं जबकि ये पूरी तरह निर्दोष हैं। इन्हें अस्पष्ट और अनिश्चित क्रान्ति विरोधी अपराधों का दोषी बता कर, अन्धाधुन्ध तरीके से गोली से उड़ाया जा रहा है।" यह सच है कि देनिकिन और कोलचाक के मैदान में उतर आने से यह कारवाई बन्द कर दी गई थी, ताकि आर्थोडाक्स चर्च के अनुयायियों के लिए क्रांति की रक्षा करना आसान हो जाए। लेकिन जैसे ही गृहयुद्ध समाप्ति की ओर बढ़ा, उन लोगों ने चर्च के खिलाफ फिर हथियार उठा लिये और एक बार फिर क्रांतिकारी अदालतों में पादरियों के खिलाफ मामले तेजी से पेश होने लगे। सन् १९२० में उन्होंने त्रिमूर्तिसन्स सरजिएस के मठ पर प्रहार किया और रादोनेभ के सरजिएस के, जिसे मदांध देशभक्त बताया गया था, पवित्र अवशेषों को उठा कर सीधे मास्को के संग्रहालय में पहुंचा दिया।[५४]

न्याय सम्बन्धी मामलों के कमीसार कार्यालय ने २५ अगस्त १९२० को एक निर्देश जारी किया, जिसमें हर प्रकार के अवशेषों को नष्ट कर डालने का हुक्म दिया गया था, क्योंकि यह अवशेष एक नए और न्यायोचित समाज की ओर शानदार तरीके से आगे बढ़ने के मार्ग में बड़ी बाधा थे।

क्राइलेंको ने अपनी इच्छा से जिन मुकदमों का चुनाव किया था, उन पर आगे विचार करते समय आइये हम वेर्खत्रिब अर्थात् सर्वोच्च अदालत में चले मुकदमे पर भी विचार करें। (अपने घनिष्ठ दायरे से सम्बन्धित शब्दों का संक्षेप, वे कितने स्नेह से तैयार करते थे। लेकिन हम कीड़ों-मकोड़ों को वे चिल्ला कर कहते थे : "खड़े हो जाओ अदालत की कारवाई शुरू हो गई है!"

च. "समर नीति केन्द्र" का मुकदमा—१६-२० अगस्त १९२०

इस मुकदमे में २८ प्रतिवादी मौजूद थे, इसके अलावा और प्रतिवादी भी थे, जिनके ऊपर उनकी गैर-मौजूदगी में मुकदमा चलाया जा रहा था, क्योंकि उन्हें पकड़ कर अदालत में पेश नहीं किया जा सका था।

अपने भावावेशपूर्ण भाषण के आरम्भ में ही, एक ऐसी आवाज में जो उस समय तक विकृत नहीं हुई थी और वर्ग विश्लेषण के प्रकाश से भरपूर शब्दावली का प्रयोग करते हुए सर्वोच्च अभियोक्ता हमें बताता है कि जमींदारों और पूंजीपतियों के अलावा "एक और सामाजिक स्तर मौजूद था और आज भी मौजूद है, जिसकी सामाजिक विशेषताओं पर लम्बे अरसे से क्रान्तिकारी समाजवाद के प्रतिनिधि विचार करते आ रहे हैं। (दूसरे शब्दों में : यह किया जाए अथवा नहीं—कोई दुविधा चल रही थी?) यह सामाजिक स्तर तथाकथित "बुद्धिवादी" वर्ग है। इस मुकदमे में हमारा सम्बन्ध रूस के बुद्धिवादियों की गतिविधियों पर इतिहास के निर्णय से होगा।"[५५] और इसके ऊपर क्रांति के निर्णय से भी।

हमारी जांच पड़ताल की संकीर्ण सीमाएं हमें उस विशिष्ट तरीके को सूक्ष्मता के समझने से रोकती हैं, जिस तरीके से क्रांतिकारी समाजवाद के प्रतिनिधि तथाकथित बुद्धिवादी वर्ग के भाग्य के बारे में निर्णय लेने के लिए विचार कर रहे थे और वे इस सम्बन्ध में क्या योजना बना रहे थे। पर हम, इस तथ्य से आश्वस्त हो सकते हैं कि इस सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित हुई हैं, कि यह सामग्री प्रत्येक को उपलब्ध है और विस्तार से इसका संकलन और मूल्यांकन किया जा सकता है। अतः, गणराज्य में व्याप्त वातावरण को समझने के लिए,

हम जनवादी कमीसार परिषद् के अध्यक्ष की उन वर्षों की राय का स्मरण करेंगे, जिन वर्षों में इन सब अदालतों की कारवाई चल रही थी।

गोर्की को १५ सितम्बर १६१६ को भेजे अपने पत्र में—जिसका हम ऊपर भी उद्धरण दे चुके हैं—व्लादिमिर इलिच लेनिन ने बुद्धिवादी वर्ग के सदस्यों की गिरफ्तारियों में हस्तक्षेप करने के प्रयासों का उत्तर देते हुए और उन वर्षों के अधिकांश रूसी बुद्धिवादियों के बारे में अपनी राय प्रकट करते हुए (कैडेट पार्टी के समीप के बुद्धिवादियों" के बारे में) उन्होंने लिखा : "वास्तविकता यह है कि वे (राष्ट्र के) मस्तिष्क नहीं हैं, बल्कि विष्टा है।"[५६] एक अन्य अवसर पर, उन्होंने गोर्की से कहा : "यदि हमें आवश्यकता से अधिक बर्तन फोड़ने पड़े तो यह इसका (बुद्धिवादी वर्ग का) दोष होगा।"[५७] यदि बुद्धिवादी वर्ग न्याय चाहता है तो यह हमारे साथ क्यों नहीं मिल जाता ? "स्वयं मुझे बुद्धिवादी वर्ग से एक गोली प्राप्त हुई है।"[५८] (दूसरे शब्दों में कापलन से)।

इन भावनाओं के आधार पर, उन्होंने बुद्धिवादी वर्ग के प्रति अविश्वास और शत्रु भाव प्रकट किया : गले सड़े—उदारतावादी; "धार्मिक"; "वह ढर्रा जो शिक्षक लोगों में बड़ा प्रचलित है";[५९] उनका विश्वास था कि बुद्धिवादी वर्ग सदा अदूरदर्शी होता है, और इसने श्रमिकों के लक्ष्यों से विश्वासघात किया है। (लेकिन बुद्धिवादी वर्ग ने क्या कभी श्रमिकों के उद्देश्यों के प्रति अपनी वफादारी की शपथ ली थी, श्रमिकों की तानाशाही के प्रति वफादारी दिखाई थी ?)

बुद्धिवादी वर्ग की इस प्रकार मजाक उड़ाना, बुद्धिवादी वर्ग के प्रति इस प्रकार घृणाभाव प्रकट करना, आगे चलकर इस शताब्दी के तीसरे दशक में प्रचारकों और समाचारपत्रों का प्रिय विषय बन गया और इनके माध्यम से दिन-प्रति-दिन के जीवन की धारा में घुलमिल गया। और अन्त में, स्वयं बुद्धिवादी वर्ग के सदस्यों ने भी इसे स्वीकार किया, और अपनी शाश्वत विवेकहीनता, अपने शाश्वत दुविधापूर्ण आचरण और अपनी शाश्वत दृढ़ताविहीनता और अत्यधिक निराशाजनक सीमा तक समय से पिछड़ जाने की अपनी आदत को कोसना शुरू किया।

और यह न्यायोचित था ! अभियोग लगाने वाली सत्ता की आवाज प्रतिध्वनित हुई और वेर्खत्रिब के तहखानों के नीचे इसकी फिर गूंज सुनाई पड़ी और यह गूंज हम प्रतिवादियों की बेंचों से आ टकराई।

"यह सामाजिक स्तर...हाल के वर्षों में सार्वभौम पुर्नमूल्यांकन के परीक्षण के दौर से गुजरा है।" हां, हां, पुर्नमूल्यांकन जैसाकि उस जमाने में बार-बार कहा जाता था। और यह पुर्नमूल्यांकन किस प्रकार हुआ ? उसका तरीका यह था : "रूस का बुद्धिवादी वर्ग, जिसने क्रान्ति की अग्नि में 'जनता को सत्ता प्राप्त हो' के नारों से प्रवेश किया था (आखिरकार इसे भी किसी न किसी बात का श्रेय था !) वह क्रांति के बाद काले (श्वेत तक नहीं) जनरलों के सहयोगी और यूरोपीय साम्राज्यवाद के क्रीत (!) और आज्ञाकारी अभिकर्ताओं के रूप में प्रकट हुआ। बुद्धिवादी वर्ग ने स्वयं अपने झण्डों को कुचल डाला (जैसाकि सेना में हुआ था, हां ?) और उन्हें कीचड़ से सराबोर कर दिया।"[६०]

तो, सचमुच, हम पश्चाताप में रो-रोकर अपने हृदयों को ही क्यों न गला डालें ? हम स्वयं अपनी छातियों को अपने नाखूनों से उधेड़ डालने से स्वयं को कैसे रोक सकते हैं ?

और इस बुद्धिवादी वर्ग के "विभिन्न प्रतिनिधियों को मौत के घाट उतारने की

आवश्यकता क्यों नहीं है" इसका एकमात्र कारण यह है कि "अब यह सामाजिक समूह अपने समय को स्वयं पूरा कर चुका है।"[६१]

अब, २०वीं शताब्दी के आरम्भ में ! दूरदर्शिता की कैसी विलक्षण शक्ति है ! वाह, वैज्ञानिक क्रांतिकारियो ! (चाहे कुछ भी हो, बुद्धिवादी वर्ग को समाप्त करना ही था। इस शताब्दी के तीसरे दशक में वे उन्हें समाप्त करते रहे, समाप्त करते रहे।)

हम काले जनरलों के २८ विभिन्न सहयोगियों और यूरोपीय साम्राज्यवाद के क्रीत-दासों की ओर शत्रुभाव से देखते हैं और हमारे मन में केन्द्र शब्द की बदबू से भयंकर क्रोध उत्पन्न होता है। कभी हमें कोई समर नीति केन्द्र दिखाई पड़ता है, तो कभी राष्ट्रीय केन्द्र, तो कभी दक्षिणपंथी केन्द्र। (और दो दशकों के मुकदमों का स्मरण करते समय लगातार हमारे सामने केन्द्र आते जाते हैं, एक के बाद एक केन्द्र दिखाई पड़ता है, इन्जीनियरों के केन्द्र, मेनशेविकों के केन्द्र, ट्राटस्कीवादियों-जिनोवीएववादियों के केन्द्र, दक्षिणपंथी-बुखारिनवादियों के केन्द्र, लेकिन इन सबको कुचल डाला जाता है, सबको कुचल डाला गया है, और यही एक मात्र कारण है कि आप और मैं आज जीवित हैं।) सचमुच, जहां कहीं एक केन्द्र होता है, वहां साम्राज्यवाद का हाथ देखा जा सकता है।

यह सच है कि हमें उस समय कुछ राहत अनुभव होती है, जब हमें यह पता चलता है कि इस अवसर पर यह समर नीति केन्द्र कोई संगठन नहीं था; कि इसका : (१) विधान नहीं था; (२) कार्यक्रम नहीं था; (३) सदस्यता का शुल्क नहीं था। तो इसके पास क्या था ? यहां यह मौजूद है : ये लोग मुलाकात किया करते थे ! (क्या सुनकर आपके रोंगटे खड़े नहीं हो जाते !) और जब ये लोग मिलते थे, तो एक दूसरे को अपने-अपने दृष्टिकोण से परिचित कराने की कोशिश करते थे ! (यह जानकारी सारे शरीर को बर्फानी ठंड से जमा डालने के लिए काफी थी !)

अभियोग अत्यन्त गम्भीर थे और इनके समर्थन में प्रमाण भी मौजूद थे। दो प्रकार के प्रमाणों को २८ अभियुक्तों के विरुद्ध पेश किया गया था।[६२] दो ऐसे व्यक्तियों के पत्र प्रमाण के रूप में मौजूद थे, जो स्वयं अदालत में नहीं थे, क्योंकि वे विदेशों में थे। पत्र लिखने वाले इन व्यक्तियों के नाम थे : नियाकोतिन और पयोदोरोव। वे लोग अनुपस्थिति थे, लेकिन अक्तूबर क्रान्ति होने तक ये लोग उन्हीं समितियों के सदस्य थे, जिनके सदस्य वहां मौजूद लोग थे। यह एक ऐसी परिस्थिति थी, जिसके आधार पर हमें यह अधिकार प्राप्त हो जाता था कि हम अनुपस्थित लोगों और वहां मौजूद लोगों को एक ही कतार में बैठा सकें। और उनके पत्रों में कुछ मामूली से प्रश्नों पर देनिकिन से मतभेद था ? किसानों का सवाल (हमें यह नहीं बताया गया कि यह मतभेद क्या थे। लेकिन यह स्पष्ट था कि इन पत्रों के लेखकों ने देनिकिन को यह सलाह दी थी कि भूमि किसानों को दे दी जाये); यहूदी प्रश्न (स्पष्ट रूप से वे लोग उसे सलाह दे रहे थे कि यहूदियों पर पहले जो पाबंदियां लगाई गई थीं, उन्हें फिर लागू न किया जाए); संघीय अल्पसंख्यक जातियों का प्रश्न (इतना ही कहना काफी है : स्पष्ट हो गया); सरकार के गठन और स्वरूप का प्रश्न (तानाशाही के स्थान पर लोकतंत्र); और ऐसे ही अन्य मामले। इन बातों से पत्राचार का तथ्य प्रमाणित हो जाता था, और इससे यह बात भी सिद्ध हो जाती थी कि इन लोगों की देनिकिन से सहमति है, मतैक्य है ! (घर्र ! घर्रर !)

लेकिन अदालत में मौजूद लोगों के ऊपर कुछ प्रत्यक्ष आरोप भी लगाये गए थे—

कि उन लोगों ने अपने ऐसे परिचितों से जानकारी का विनिमय किया जो देश के सुदूर इलाकों में रह रहे थे। उदाहरण के लिए कीव में) और ये ऐसे इलाके थे, जिनपर केन्द्रीय सोवियत अधिकारियों का नियंत्रण नहीं था! दूसरे शब्दों में यह रूस का इलाका हुआ करता था, लेकिन तभी विश्व क्रान्ति के हितों को ध्यान में रखते हुए हमने यह टुकड़ा जर्मनी को दे डाला और लोग आपस में पत्र व्यवहार करते रहे। तुम्हारा क्या हाल चाल है, आइवन आइवानिच? यहां हमारा यह हाल है। कैडेट पार्टी की केन्द्रीय समिति का एक सदस्य एम० एम० किशकिन इतना दुस्साहसी बना कि प्रतिवादियों की बेंच पर बैठे हुए उसने अपने कार्यों का औचित्य सिद्ध करने की कोशिश की: "कोई भी आदमी अन्धा नहीं बनना चाहता। वह यह कोशिश करता है कि दूसरी जगहों पर क्या हो रहा है।"

हर बात का पता लगाने की कोशिश करना, यह जानने की कोशिश करना कि कहां क्या-क्या हो रहा है? वह अन्धा नहीं बनना चाहता? ठीक है, इस सम्बन्ध में कोई यही कह सकता है कि अभियोक्ता ने उनके कार्यों को सही रूप से ही देशद्रोह, सोवियत सत्ता के प्रति द्रोह बताया!

लेकिन उनका भयंकरतम अपराध कुछ और ही था। गृह युद्ध के दौरान उन लोगों ने पुस्तकें लिखीं, स्मरणपत्र तैयार किए और कुछ योजनाएं बनाई। हां, संवैधानिक कानून, वित्त विज्ञान, आर्थिक सम्बन्धों, न्याय प्रणाली और शिक्षा के विशेषज्ञों के रूप में इन लोगों ने पुस्तकें लिखीं! (और इस सम्बन्ध में हम आसानी से अनुमान लगा सकते हैं कि इनकी पुस्तकें लेनिन, ट्राटस्की और बुखारिन की आरम्भिक रचनाओं पर आधारित नहीं थीं।) प्रोफेसर ओतल्यारेवस्की ने रूस के संघीय ढांचे के बारे में लिखा; "वी० आई० स्तेम्प-कोवस्की ने कृषि के बारे में लिखा (निःसंदेह इसमें सामूहिक खेती की बात नहीं कही गई थी। वी० एस० मुरालेविच ने भावी रूस में शिक्षा के स्वरूप के बारे में अपने विचार प्रकट किए और एन० एन० गिनोग्रादस्की ने अर्थशास्त्र के बारे में। और (महान्) जीव विज्ञानी एन० के० कोल्तसोब ने (जिसे अपनी मातृभूमि से यातनाओं और मृत्युदण्ड के अलावा कभी कुछ प्राप्त नहीं हुआ) इन सब बुर्जुआ बड़े आदमियों को अपनी संस्था में विचार विमर्श के लिए एकत्र होने दिया। (इसमें एन० डी० कोन्द्रातएव को भी शामिल कर लिया गया था। सन् १९३१ में उन्हें टी० के० पी० अर्थात् काल्पनिक श्रमिक किसान पार्टी से सम्बन्धित होने के लिए सदा सर्वदा के लिए दंडित किया गया था।)

हमारा अभियोग लगाने में प्रवृत्त, हृदय, बड़ी से बड़ी सज़ा का प्रस्ताव करने के लिए मानो हमारी छाती को चीरकर बाहर निकलने लगता है। जनरल के इन सहायकों के लिए क्या सज़ा पर्याप्त हो सकती है? केवल एक, सचमुच केवल एक—गोली से उड़ाया जाना! यह केवल अभियोक्ता की ही मांग नहीं रही—क्रान्तिकारी अदालत का निर्णय भी यही था। (पर बाद में इसे घटाकर गृहयुद्ध की समाप्ति तक किसी यातना शिविर में कैद में बदल दिया गया।)

वास्तव में इन प्रतिवादियों का अपराध यह था कि ये चुपचाप अपने-अपने कोनों में, अपनी चौथाई पौंड रोटी को चबाते हुए नहीं बैठे रहे; इन लोगों ने "आपस में बातचीत की और इस सहमति पर पहुंचे कि सोवियत शासन के पतन के बाद राज्य का कैसा ढांचा होना चाहिए।"

सम-सामयिक वैज्ञानिक मात्रा में इसे वैकल्पिक संभावना का अध्ययन कहा जाता है।

अभियोक्ता की आवाज़ कड़क उठी। लेकिन हमें इसमें एक दरार भी दिखाई पड़ी। मानो उसकी आंखें मंच की तलाशी ले रही हों, कागज़ के किसी और टुकड़े को वहां तलाश कर रही हों? शायद वह कोई उद्धरण ढूंढ़ रहा हो? उसे चुपचाप यह उद्धरण थमा दो, जल्दी करो, जल्दी करो! उसे यूं ही उठाकर कोई भी उद्धरण दे दो! किसी और मुकदमे से सम्बन्धित उद्धरण दे दो? इस बात का कोई महत्व नहीं है, क्या आपको इसी की तलाश थी, निकोलाई वासिलेविच क्राइलेंको?

"जहां तक हमारा सम्बन्ध है...यातनाएं देने की संकल्पना इस बात से संतुष्ट हो जाती है कि राजनीतिक कैदियों को जेल में रखा जाये...।"

तो बस यही बात है! राजनीतिक कैदियों को जेल में रखना चाहता है। और स्वयं अभियोक्ता ने यह कहा! कितना उदार दृष्टिकोण है! एक नई कानून प्रक्रिया का उदय हो रहा है! और आगे भी सुनिए:

"...ज़ार की सरकार के विरुद्ध संघर्ष उनका दूसरा स्वभाव था। (राजनीतिज्ञों का) और ज़ारशाही के खिलाफ संघर्ष न करना उनके बस की बात नहीं थी।"[६३]

यह क्या बात है? वे लोग वैकल्पिक संभावनाओं का अध्ययन न करने में अक्षम थे। संभवतः विचार करना बुद्धिवादियों का पहला स्वभाव था?

दुर्भाग्यवश, मूर्खता के कारण उन लोगों ने एक गलत उद्धरण उसे थमा दिया था। तो क्या मामला उलझ नहीं गया था! लेकिन अब तक निकोलाई वासिलेविच दौड़ में शामिल हो चुका था।

"यदि यहां मास्को में मौजूद उन प्रतिवादियों ने एक अंगुली भी नहीं उठाई (और यह दिखाई पड़ता है कि स्थिति भी यही थी) पर ऐसे अवसर पर......चाय पीते समय यह बातचीत करना कि सोवियत प्रणाली के स्थान पर किस प्रणाली की स्थापना की जा सकती है, और सोवियत प्रणाली के समाप्त होने की कल्पना भर क्रांति विरोधी कार्य है... गृहयुद्ध के दौरान किसी भी प्रकार की कारवाई (सोवियत सत्ता के विरुद्ध) ही अपराध नहीं है...बल्कि कारवाई न करना भी दण्डनीय अपराध है।"[६४]

ठीक है, अब प्रत्येक बात समझ में आती है, प्रत्येक वस्तु स्पष्ट हो गई है। इन लोगों को मृत्युदण्ड दिया जा रहा है—कुछ भी न करने के लिए, कोई भी कारवाई न करने के लिए। चाय के एक प्याले के लिए।

उदाहरण के लिए पेत्रोग्राद के बुद्धिवादियों ने यह निश्चय किया था कि अगर यूदेनिच नगर पर अधिकार कर लेता है तो सबसे पहले "एक लोकतंत्री नगरपालिका की बैठक बुलाने की कोशिश करेंगे।" (दूसरे शब्दों में, वे संभावित तानाशाही से नगर की रक्षा करने का प्रयास करेंगे।)

क्राइलेंको: "मैं इन लोगों से चिल्लाकर यह कहना चाहूंगा: 'सबसे पहले तुम्हारा कर्तव्य यह सोचना था कि तुम युद्ध में किस प्रकार अपने प्राण न्योछावर कर सकते हो, ताकि युदेनिच नगर में न घुस सके!' "

लेकिन ये लोग लड़ाई में नहीं मरे।

(और न ही निकोलाई वासिलेविच क्राइलेंको ही मरा था।)

इतना ही नहीं, कुछ ऐसे प्रतिवादी भी थे, जिन्हें इस विचार विमर्श के बारे में

जानकारी थी और वे इसके बावजूद चुप रहे, उन लोगों ने अभियोग नहीं लगाया शिकायतें नहीं कीं। (हमारी सम सामयिक भाषा में : "वह जानता था, लेकिन उसने नहीं बताया।")

और यहां केवल कोई कार्य न करने का ही उदाहरण नहीं है, बल्कि सक्रिय रूप से दण्डनीय कार्य करने का उदाहरण प्रस्तुत है। राजनीतिक रेडक्रास की एक सदस्या एल० एन० ख्रुश्चेवा की मार्फत (और वे वहीं प्रतिवादियों की बेंच पर बैठी हुई थीं) कुछ अन्य प्रतिवादियों ने बुत्यर्की के कैदियों को सहायता देने के लिए धन एकत्र किया। (जरा इस प्रकार पैसे की वर्षा होने की कल्पना कीजिए—जेल सम्बन्धी मामलों के कमीसार कार्यालय में धन की वर्षा होने की कल्पना कीजिए!) और इन लोगों ने कैदियों के लिये बहुत सी चीजें भी भेजी थीं। हां, देखिए तो। शायद इन लोगों ने गर्म कपड़े भी भेजे थे?)

इन लोगों के बुरे कार्यों का कोई अन्त नहीं था! तो उन्हें मिलने वाली सर्वहारा सज़ा की भी कोई सीमा नहीं होगी!

जिस समय एक सिनेमा का प्रोजेक्टर धीमी गति से चलने लगता है, तो क्रांति से पहले के २८ स्त्री पुरुषों के चेहरे एक ऐसी फिल्म पर हमें दिखाई पड़ने लगते हैं, जो धुंधली और भद्दी हो गई है। हमें इनकी मुखाकृतियां दिखाई नहीं पड़तीं! इनके मुख पर मौजूद भाव दिखाई नहीं पड़ते। क्या वे भयभीत थे? घृणाभाव से भरे? गर्वीले?

हमें उनके उत्तर प्राप्त नहीं हैं! उनके अन्तिम शब्द नदारद हैं— "तकनीकी कारणों से।" लेकिन इस कमी को पूरा करने के लिए, अभियोक्ता हमें बताता है : "शुरू से आखिर तक, इन लोगों ने अपनी गलतियों के लिए स्वयं को दोष दिया और पश्चाताप प्रकट किया। राजनीतिक अस्थिरता और बुद्धिवादी वर्ग के अन्तरिम स्वरूप ने...(हां, हां, यहां एक और नई बात मालूम होती है : अन्तिरिम स्वरूप) इस बात का औचित्य पूरी तरह सिद्ध कर दिया कि बोलशेविकों ने बुद्धिवादियों का जो मार्क्सवादी क्रम-विकास किया था, वह उचित था।"[६५]

मुझे नहीं मालूम। हो सकता है, उन्होंने आत्मालोचना की हो। हो सकता है न की हो। हो सकता है कि अपने जीवन को किसी भी कीमत पर बचाने का तीव्र भाव उस समय तक उत्पन्न हो चुका हो। हो सकता है कि बुद्धिवादियों की पुरानी गरिमा उस समय तक कायम रही हो...मुझे नहीं मालूम।

हमारे सामने से तेज़ी से गुज़रने वाली वह युवती कौन थी?

वह थी तोल्सतोय की पुत्री अलेक्सान्द्रा। क्राइलेंको ने उससे पूछा : "इन बातचीतों के दौरान तुम क्या करती थीं?" और उसने उत्तर दिया : "मैं समोवर (यानी चाय का बर्तन) का ध्यान रखती थी।" यातना शिविर में तीन वर्ष की सज़ा।

और वहां यह कौन आदमी बैठा है? उसका चेहरा परिचित सा लग रहा था। वह सावा मोरोज़ोव था। लेकिन जरा सुनिए : आखिरकार, बोलशेविकों को सब धन इसी व्यक्ति ने तो दिया था! और अब इन लोगों को भी थोड़ा सा पैसा उसने दे डाला था? तीन साल की कैद की सज़ा, लेकिन जमानत पर रिहा। इससे उसे सबक मिल जाना चाहिए![६६]

और इस प्रकार हमारी स्वतंत्रता के सूर्य का उदय हुआ। इस छोटे से हृष्ट-पुष्ट परिजाद, इस अक्तूबर में जन्मे बच्चे - यानी हमारे कानून ने—बढ़ना शुरू किया।

पर आज हमें इन सब बातों का ज़रा भी स्मरण नहीं है।

अध्याय ९



कानून वयस्क हो जाता है

हमारी समीक्षा काफी विकसित हो चुकी है। पर इसके बावजूद हमारे विषय का मुश्किल से ही समारम्भ हुआ है। समस्त बड़े और प्रसिद्ध मुकदमे अभी होने शेष हैं। लेकिन उनकी बुनियादी रेखाएं पहले ही स्पष्ट हो चुकी हैं।

तो हमें उस अवधि में अपने कानून से चिपके रहना चाहिए, जिस अवधि को इसकी बालक स्काउट की अवधि कहा जा सकता है।

आइये हम उस चिरविस्मृत मुकदमे की चर्चा करें जो राजनीतिक नहीं था।

छ. ग्लावतोप का मुकदमा—मई १९२१

इस दृष्टि से यह मुकदमा महत्वपूर्ण था; क्योंकि इसमें इंजीनियर फंसे हुए थे। इन्हें उस जमाने की शब्दावली में "विशेषज्ञ" अथवा स्पेत्सी कहा जाने लगा था। (ग्लावतोप, प्रमुख ईंधन समिति का नाम था।)

गृह युद्ध की चारों सर्दियों में सर्वाधिक कठिन १९२१ की सर्दी थी; ईंधन के लिए कुछ भी नहीं बचा था और रेलगाड़ियां एक स्टेशन से रवाना होकर दूसरे स्टेशन तक भी नहीं पहुंच पाती थीं, और प्रान्तों की राजधानियों में ठंडक और अकाल का बोलबाला था और कारखानों में हड़तालों की लहर आ गई थी—हड़तालें जिन्हें अब तक हमारे इतिहास की पुस्तकों से पूरी तरह मिटा दिया गया है। इसके लिए कौन दोषी था? यह एक प्रसिद्ध प्रश्न था: इसके लिए कौन दोषी है?

जैसाकि जाहिर है, बड़े नेता इसके दोषी नहीं हो सकते। और स्थानीय नेता भी कैसे दोषी हो सकते हैं! यह महत्वपूर्ण बात थी। यदि "उन कामरेडों को, जिन्हें अक्सर बाहर से बुलाया जाता था" स्थिति का सही ज्ञान नहीं था; तो इन्जीनियरों को स्पेत्सी लोगों को "समस्या के प्रति सही दृष्टिकोण समझना चाहिए था।"[1] और इसका यही अर्थ होता था कि "इसका दोष नेताओं को नहीं दिया जा सकता था...जिन लोगों ने गणनाएं की थीं वे दोषी थे, जिन लोगों ने गणनाओं के आधार पर निष्कर्ष निकाले थे, वे दोषी थे, जिन लोगों ने योजनाओं के ब्यौरे तैयार किए थे वे दोषी थे—इन योजनाओं को इस प्रकार तैयार करना था कि शून्य से खाने की चीजें और ताप उत्पन्न किया जा सके। दोषी वे लोग नहीं थे, जिन्होंने ऐसी गणनाएं करने, ऐसी योजनाएं बनाने के लिए विशेषज्ञों को बाध्य किया बल्कि दोषी वे थे, जिन्होंने इस प्रकार बाध्य होकर गणनाएं कीं! यदि योजनाएं

बहुत अधिक बढ़ी-चढ़ी हुई दिखाई पड़ीं, यदि ये वास्तविकता से दूर सिद्ध हुईं, तो इसके लिए स्पेत्सी को ही दोष दिया जा सकता था। अब क्योंकि ये आंकड़े सही सिद्ध नहीं हुए "तो यह स्पेत्सी का दोष था, श्रम और प्रतिरक्षा परिषद का नहीं" और "यहां तक कि रज़ावतोव अर्थात् प्रमुख ईंधन समिति के बड़े अधिकारियों का भी नहीं।"[2]

यदि कोयला, ईंधन की लकड़ी अथवा पेट्रोलियम उपलब्ध नहीं था, तो इसका कारण यह था कि स्पेत्सी ने "अव्यवस्थापूर्ण स्थिति उत्पन्न कर दी थी।" और यह भी उनका ही दोष था कि उन्होंने राइकोव और सरकार द्वारा भेजे गये फोनोग्रामों का प्रतिरोध नहीं किया—और योजना की व्यवस्थाओं के विपरीत ईंधन जारी किया।

हर बात का दोष स्पेत्सी के ही मत्थे मढ़ा जा सकता था। लेकिन सर्वहारा अदालतें उनके प्रति निष्ठुर नहीं बनीं। उन्हें हल्की सज़ायें दी गयीं। हां, यह सच है कि इन अभिशप्त विशेषज्ञों के प्रति सर्वहारा हृदयों में आन्तरिक शत्रु भाव जैसे का तैसा बना रहा—लेकिन इन लोगों के बिना काम भी तो नहीं चलता। हर वस्तु अव्यवस्थित हो जाती है, बर्बाद हो जाती है और क्रांतिकारी अदालत इन लोगों को यातना नहीं देती और क्राइलेंको यहां तक कहता है कि १६२० के बाद से "किसी भी प्रकार की तोड़फोड़ का सवाल ही नहीं उठता।" स्पेत्सी दोषी हैं, लेकिन उन्होंने विद्वेष से प्रेरित होकर यह नहीं किया; अकार्य-कुशलता के कारण ही यह हुआ। इन लोगों में इससे बेहतर काम करने की क्षमता नहीं थी। पूंजीवाद के अन्तर्गत इन लोगों ने काम करना नहीं सीखा था; अथवा ये लोग शेखी बघारने वाले और रिश्वत लेने वाले थे।

और इस प्रकार, पुर्ननिर्माण की अवधि के आरम्भ में इन्जीनियरों के सम्बन्ध में उदारता बरतने की एक आश्चर्यजनक प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है।

सन् १६२२ का वर्ष, शांति का पहला वर्ष, सार्वजनिक रूप से चलाये गये मुकदमों की दृष्टि से समृद्ध था, यह इतना समृद्ध था कि प्रायः यह पूरा अध्याय केवल इसी वर्ष को समर्पित होगा। (लोग आश्चर्यचकित हैं : युद्ध समाप्त हो गया था, पर इसके बावजूद अदालतों की गतिविधियों में वृद्धि हो गई थी। लेकिन १६४५ में भी, और फिर १६४८ में भी यह अजगर अत्यन्त सक्रिय हो उठा। क्या इस कार्य में एक सीधा सादा कानून या नियम दिखाई नहीं पड़ता?)

यद्यपि दिसम्बर १६२१ में सोवियतों के ६वें अधिवेशन ने यह आदेश दिया कि चेका के अधिकार को सीमित बनाया जाये[3] और इसके परिणामस्वरूप, इसके अधिकार को सचमुच सीमित किया गया और इसका नाम बदलकर जी० पी० यू० कर दिया गया। पर अक्तूबर १६२२ से ही एक बार फिर जी० पी० यू० के अधिकार बढ़ने लगे, और दिसम्बर में ज़ेरझिंस्की ने प्रावदा के एक संवाददाता को बताया : "अब हमें सोवियत विरोधी धाराओं और गुटबंदियों के ऊपर अत्यन्त सतर्कता से नजर रखने की आवश्यकता है। जी० पी० यू० ने अपने कर्मचारियों की संख्या में कमी की है, लेकिन प्रभावशालिता की दृष्टि से इसे और मजबूत बनाया है।"[4]

और, सन् १६२२ के आरम्भ में क्या हुआ। हमें उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए :

ज. इंजीनियर ओलदेनबोरजर की आत्महत्या का मुकदमा

(इस मुकदमे की सुनवाई वेर्खत्रिब—सर्वोच्च क्रांतिकारी अदालत—में फरवरी १६२२ में हुई)

इस मुकदमे को भुला दिया गया है, यह मामूली मुकदमा है और पूरी तरह से अपने किस्म का है। यह इस दृष्टि से अपने किस्म का है, क्योंकि यह पूरा मुकदमा केवल एक ऐसे जीवन से सम्बन्धित था जो पहले ही समाप्त हो चुका था। और अगर यह जीवन समाप्त न हुआ होता, तो इस मुकदमे में केवल वही इन्जीनियर नहीं, हां, उनके साथ १० और इंजीनियर पेश होते और इनका एक केन्द्र बन जाता और इस केन्द्र के सब सदस्य वेर्खत्रिब के सामने बैठे होते; इस स्थिति में यह मामला पूरी तरह से अन्य मामलों के ही अनुरूप होता। लेकिन इस मुकदमे में, पार्टी का एक प्रमुख कामरेड, सदेलनिकोव, प्रतिवादियों की बेंच पर बैठा हुआ था और उसके साथ आर० के० आई०—श्रमिक और किसान निरीक्षण टोली—के दो सदस्य और मज़दूर संघ के दो पदाधिकारी बैठे हुए थे।

लेकिन, बहुत समय पहले टूट गये चेखव के इकतारे की तरह, इस मुकदमे में कुछ शिकायत का स्वर मौजूद था; यह, अपने विशिष्ट तरीके से शाख्ती और प्रोमपाटी के मुकदमों का आरम्भिक पूर्ववर्ती था।

वी० वी० ओलदेनबोरजर मास्को के जल विभाग में ३० वर्ष से काम कर रहे थे और जैसाकि जाहिर है वे इस शताब्दी के आरम्भ में इस विभाग के मुख्य इंजीनियर बन गये थे। यद्यपि कला का रजत युग, चार राज्य संसदें, तीन युद्ध और तीन क्रांतियां आ-जा चुकी थीं पर पूरा मास्को ओलदेनबोरजर का ही पानी पीता था। शिखरवादी और भविष्यवादी, प्रतिक्रियावादी और क्रांतिकारी, सेना के केडेट और लाल सैनिक, जनवादी कमीसार परिषद के सदस्य, चेका के सदस्य, श्रमिक और किसान निरीक्षण संगठन के सदस्य —सब ओलदेनबोरजर का स्वच्छ और ठण्डा पानी पीते थे। उन्होंने विवाह नहीं किया था और उनके कोई बच्चा नहीं था। उनका पूरा जीवन मास्को के जल विभाग से ही एकाकार हो उठा था। सन् १९०५ में उन्होंने सैनिकों को पानी के पाइपों के समीप पहरे पर खड़े होने से मना कर दिया था—"क्योंकि ये सैनिक, अपने भद्दे तौर तरीकों के कारण पाइपों या मशीनों को तोड़ सकते थे।" फरवरी की क्रांति के दूसरे दिन उन्होंने अपने विभाग के श्रमिकों से कहा कि अब काफी आंदोलन हो चुका है, क्रांति पूरी हो चुकी है और उन सब लोगों को अपने-अपने कामों में जुट जाना चाहिए। नलों में पानी फिर बहने लगना चाहिए। बोलशेविकों के सत्ता हथियाने के प्रयास में हड़ताल के सिलसिले में ओलदेनबोरजर के सहयोगियों ने हड़ताल की, और अपने साथ हड़ताल में हिस्सा लेने के लिए उन्हें आमन्त्रित किया। उनका उत्तर था : "जहां तक पानी की सप्लाई का सम्बन्ध है, कृपया मुझे क्षमा करें, मैं हड़ताल पर नहीं हूं...हां, और सब मामलों में हड़ताल पर हूं।" उन्होंने हड़ताल समिति से हड़ताली कर्मचारियों के लिए पैसा स्वीकार किया और उन्हें इसकी रसीद दी। लेकिन स्वयं एक टूटे हुए पाईप की मरम्मत करने के लिए चल पड़े।

पर इसके बावजूद, वे एक शत्रु थे! उन्होंने एक श्रमिक से यह बात कही थी : "सोवियत शासन दो सप्ताह भी नहीं टिकेगा।" (नई आर्थिक नीति की घोषणा से पहले एक नई राजनीतिक स्थिति उत्पन्न हो चुकी थी और इस संदर्भ में क्रांइलेंको वेर्खत्रिव के समक्ष कुछ स्पष्ट बातें कहने की स्थिति में था : "उस समय केवल स्पेत्सी—विशेषज्ञ ही इस तरीके से नहीं सोचते थे। स्वयं हम लोगों ने भी एक से अधिक बार यही सोचा था।

पर इसके बावजूद, ओलदेनबोरजर एक शत्रु था! जैसाकि कामरेड लेनिन ने हमें बताया था : बुर्जुआ विशेषज्ञों के ऊपर नजर रखने के लिए हमें एक सतर्क प्रहरी—आर०

के० आई०—श्रमिक और किसान निरीक्षण संगठन की आवश्यकता है।

इन लोगों ने पूरे समय के लिए दो ऐसे ही प्रहरी ओलदेनबोरजर के काम की निगरानी के लिए नियुक्त कर दिए। (इनमें से एक मकारोव–जेमल्यांस्की था, जो जालसाज और जल विभाग का भूतपूर्व क्लर्क था और जिसे "अनुचित आचरण" के लिए बर्खास्त कर दिया गया था और वह इसके बाद आर० के० आई० में भर्ती हो गया था। "क्योंकि वह अच्छा वेतन देते थे।" उसे पदोन्नति देकर केन्द्रीय जनवादी कमीसार कार्यालय में नियुक्त कर दिया गया था "क्योंकि वहां और भी बेहतर वेतन मिलता था—" और, उस सर्वोच्च शिखर से वह अपने भूतपूर्व अफसर पर नजर रखने के लिए और उस व्यक्ति से जी भरकर बदला लेने के लिए जा पहुंचा था जिसने उसे बर्खास्त किया था।) हां, इसके बाद स्थानीय पार्टी समिति भी ऊंघ नहीं रही थी—आखिरकार स्थानीय पार्टी समिति श्रमिकों के हितों की बेमिसाल संरक्षक जो होती है। और कम्युनिस्टों को जल विभाग में सर्वोच्च पदों पर बिठा दिया गया। "केवल श्रमिक ही सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो सकते हैं; नेतृत्व के पद केवल कम्युनिस्टों को ही दिए जा सकते हैं, और इस मुकदमे में इस विचार की बुद्धिमत्ता प्रमाणित हुई।"[5]

मास्को के पार्टी संगठन ने भी जल विभाग के ऊपर अपनी नजर रखी। (और इसके पीछे चेका खड़ी थी।) "स्वयं अपने युग में हम लोगों ने वर्गगत शत्रुता की स्वस्थ भावना के आधार पर अपनी सेना का निर्माण किया है; इसके नाम पर, हम उन लोगों को एक भी उत्तरदायी पद नहीं दे सकते जो हमारे खेमे में शामिल नहीं हैं, उनके काम की देखरेख के लिए ..एक कमीसार की नियुक्ति किए बिना हम उन्हें कोई काम नहीं दे सकते।"[6] और इस प्रकार, उन लोगों ने तुरन्त इंजीनियर को हुक्म सुनाने, उनके काम की निगरानी करना उन्हें निर्देश देना और उनकी जानकारी के बिना ही और इंजीनियरों को इधर उधर बदलना शुरू कर दिया। ("उन लोगों ने व्यापारियों के पूरे जाल को तोड़ डाला।")

पर इसके बावजूद वे लोग जल विभाग की रक्षा नहीं कर सके। इस व्यवस्था से स्थिति में सुधार नहीं हुआ बल्कि स्थिति और बिगड़ गई! इंजीनियरों के उस गिरोह ने अपनी भयंकर योजना को बड़ी चालाकी से संचालित करने की तैयारी की थी। इतना ही नहीं बुद्धिवादी के रूप में अपने अन्तरिम स्वभाव को एक ओर फेंकते हुए, जिस स्वभाव के परिणामस्वरूप उसने अपने जीवन में कभी भी कोई बात कठोर रूप से नहीं कही थी, ओलदेनबोरजर ने इतना साहस दिखाया कि जल विभाग के नए अध्यक्ष जैनयुक के कार्यों को मूर्खतापूर्ण हठधर्मिता कह डाला। (और यही जेनयुक, क्राइलेंको को "अपनी आन्तरिक बनावट के आधार पर अत्यन्त पसन्द किए जाने योग्य व्यक्ति" दिखाई पड़ता था।")

यहीं आकर यह स्पष्ट हुआ कि "इंजीनियर ओलदेनबोरजर जानबूझ कर श्रमिकों के हितों के साथ विश्वासघात कर रहा है और वह श्रमजीवी वर्ग की तानाशाही का प्रत्यक्ष और खुल्लमखुल्ला शत्रु था।" वे लोग जल विभाग में जांच आयोग लाने लगे, लेकिन इन जांच आयोगों ने देखा और कहा कि प्रत्येक वस्तु बहुत अच्छी अवस्था में है और पानी की सप्लाई सामान्य आधार पर हो रही है। पर आर० के० आई० के आदमी: "रावक्रिनोवस्ती" ने इस बात से संतुष्ट होने से इनकार कर दिया। वे निरन्तर आर० के० आई० को एक के बाद एक रिपोर्ट भेजते रहे। इन रिपोर्टों में कहा जाता कि ओलदेनबोरजर "राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पानी की सप्लाई को नष्ट, बर्बाद और समाप्त कर डालना चाहता

है" लेकिन वह यह नहीं कर सका। वे यथा सम्भव रुकावटें उनके मार्ग में डालते रहे; उन लोगों ने बायलरों की व्यर्थ की और खर्चीली मरम्मतों को रोक दिया और लकड़ी की टंकियों के स्थान पर कंक्रीट की टंकियां बनवा दीं। जल विभाग के श्रमिकों की बैठकों में, नेताओं ने खुल्लमखुल्ला यह कहना शुरू कर दिया कि उनका चीफ इंजीनियर, संगठित तकनीकी तोड़फोड़ का केन्द्र बिन्दु है और उस पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए, कि हर बात पर उसका प्रतिरोध किया जाना चाहिए।

पर इस सबके बावजूद, पानी की सप्लाई की व्यवस्था बेहतर नहीं हुई बल्कि उसमें गिरावट आई।

जो बात श्रमिकों और किसानों के निरीक्षण संगठन और मजदूर संघों के पदाधिकारियों की "वंशानुगत सर्वहारा मनोविज्ञान" के लिए विशेष रूप से आपत्तिजनक दिखाई पड़ती थी वह यह थी कि जल विभाग के पम्पिंग स्टेशनों पर काम करने वाले अधिकांश मजदूरों में "क्षुद्र बुर्जुआ मनोविज्ञान की छूत फैल गई थी" और वे ओलदेनबोरजर की तोड़फोड़ की कारवाई को नहीं समझ पा रहे थे और उसकी सहायता के लिए तत्पर रहते थे। इन्हीं दिनों मास्को सोवियत के चुनाव हुए और श्रमिकों ने जल विभाग के उम्मीदवार के रूप में ओलदेनबोरजर को नामजद कर दिया और जैसाकि स्वाभाविक था जल विभाग की पार्टी शाखा ने स्वयं अपना उम्मीदवार खड़ा किया। लेकिन, इस उम्मीदवार को खड़ा करना निरर्थक सिद्ध हुआ क्योंकि मुख्य इंजीनियर की श्रमिकों पर जो धोखाधड़ी भरी सत्ता थी वह कामयाब हुई। पर इससे क्या फर्क पड़ता था, पार्टी शाखा ने यह सवाल जिला पार्टी समिति में उठाया, हर स्तर पर यह प्रश्न उठाया गया और एक आम सभा में यह घोषणा की गई कि ओलदेनबोरजर तोड़फोड़ का केन्द्र बिन्दु और प्रेरक शक्ति है और वह मास्को सोवियत में हमारा राजनीतिक शत्रु होगा।' सभा में मौजूद मजदूर गरजना कर उठे और चिल्ला-चिल्लाकर बोले : "झूठ है ! झूठ है !" तभी पार्टी समिति का सचिव, कामरेड सेदेलनिकोव ने सभा में मौजूद सहज सिर वाले सर्वहारा वर्ग के मुंह पर यह जवाब दे मारा : "मैं ऐसे ब्लैक हंड्रर्ड (जारशाही के जमाने का एक आतंककारी संगठन) और प्रतिक्रियावादी हत्यारों से बात भी नहीं करना चाहता।" इस कथन का यह अभिप्राय था : हम तुम लोगों से कहीं और ही बात करेंगे।

पार्टी की ओर से भी कारवाई की गई : उन लोगों ने मुख्य इंजीनियर को जल विभाग के प्रशासन के कालेजियम से निष्कासित कर दिया और उसे निरन्तर निगरानी के अधीन रखा ! उसे लगातार अनेक प्रकार के आयोगों और उपआयोगों के सम्मुख पेश होने के लिए बुलाया गया। उससे पूछताछ होती रही और ऐसे काम दिए गए जिन्हें तुरन्त पूरा किया जाना था। ऐसे प्रत्येक अवसर पर वह हाजिर नहीं हुआ। इस बात को दस्तावेजों में विधिवत् लिख दिया गया ताकि भविष्य में चलने वाले किसी मुकदमे में काम आए। "और श्रम और प्रतिरक्षा परिषद् (अध्यक्ष–कामरेड लेनिन) की मार्फत इन लोगों ने "असाधारण त्रोइका की नियुक्ति जल विभाग की जांच के लिए करा ली। (इस असाधारण त्रोइका अर्थात त्रिमूर्ति में आर० के० आई०, मजदूर संघ परिषद् के प्रतिनिधि और कामरेड कुइबाइशेव थे।)

और लगातार चौथे वर्ष भी पाइपों में पानी प्रवाहित होता रहा। और मास्को निवासी इसे पीते रहे और उन्हें इसमें कोई बुरी बात दिखाई नहीं पड़ी।

तभी कामरेड सेदेलनिकोव ने इकोनामीचेस्काया भिन्न नामक समाचारपत्र के लिए एक लेख लिखा : "पानी की सप्लाई की व्यवस्था की विनाशपूर्ण स्थिति के बारे में जो अफवाहें फैली हुई हैं और जिनसे जन सामान्य बहुत चिंतित है उसे ध्यान में रखते हुए..." और उसने बहुत सी नई और चिंताजनक अफवाहों की भी जानकारी दी—उसने यहां तक कहा कि जल विभाग "जमीन के भीतर पम्पों से पानी डाल रहा है ताकि पूरे मास्को की इमारतों की नींवों को ही खोखला कर डाला जाए।" (उसी मास्को की नींव, जिसका निर्माण आइवन कालिता ने १४वीं शताब्दी में किया था।) उन लोगों ने मास्को सोवियत का एक आयोग बुलाया। आयोग ने जांच के बाद कहा कि "पानी की सप्लाई की व्यवस्था संतोषजनक है और इसका तकनीकी निर्देश कुशलतापूर्वक हो रहा है।" ओलदेनबोरजर ने अपने ऊपर लगाए गए सब अभियोगों को ठुकरा दिया और इनके बाद सेदेलनिकोव ने बहुत शान्ति से घोषणा की : "मैंने इस मामले में यह बावेला इसलिए उठाया ताकि स्पेत्सी के प्रश्न पर विचार हो सके।"

अब श्रमिकों के नेताओं को क्या करना शेष रह गया था? वह कौन सा अन्तिम और किसी भी स्थिति में असफल न होने वाला तरीका था? चेका के समक्ष मुख्य इंजीनियर पर अभियोग लगाना! सेदेलनिकोव ने यही रास्ता अपनाया! उसने "ओलदेनबोरजर द्वारा जानबूझ कर पानी की सप्लाई की व्यवस्था को नष्ट कर डालने की तस्वीर खींची।" उसे इस बात में जरा भी संदेह नहीं था : "लाल मास्को के हृदय के भीतर, जल विभाग में एक क्रान्ति विरोधी संगठन" काम कर रहा है। और, इतना ही नहीं, रुबलेवो की पानी की बड़ी टंकी में विनाशकारी स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

यहां आकर, ओलदेनबोरजर अभद्रता और दृढ़ताविहीन अन्तरिम बुद्धिवादी के क्रोध प्रदर्शन की विवेकहीन कारवाई के दोषी हो गए। उन्होंने विदेश से जो नए बायलर मंगाने का आर्डर दिया था, उसे रद्द कर दिया गया। और उस समय रूस में पुराने बायलरों की मरम्मत कर पाना असम्भव था। अत: ओलदेनबोरजर ने आत्महत्या कर ली। (यह एक आदमी के लिए बहुत अधिक था—आखिरकार, इस प्रकार के कार्यों के लिए उसे ढाला नहीं गया था।)

पर आत्महत्या से मामला असफल नहीं हुआ। ओलदेनबोरजर के बिना ही वे एक क्रान्ति विरोधी संगठन का अनुसंधान करने में सफल हुए। अब आर० के० आई० के आदमियों ने इस पूरे मामले का भण्डाफोड़ करने का दायित्व अपने ऊपर लिया। दो महीने तक कुछ छिपे दाव पेंच चलते रहे। लेकिन नई आर्थिक नीति के आरम्भ में ऐसी भावना मौजूद थी कि "किसी न किसी प्रकार सबक सिखाना आवश्यक था।" अत: सर्वोच्च क्रान्तिकारी अदालत के समक्ष मुकदमा चला। क्राइलेंको ने मध्यम दर्जे की कठोरता दिखाई। क्राइलेंको ने मध्यम दर्जे की दया दिखाई। उसने स्थिति को समझते हुए कहा : "रूस का मजदूर यदि ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को मित्र से अधिक शत्रु के रूप में देखता है जो स्वयं उसके अपने वर्ग का नहीं है तो यह बात उचित ही है।"[७] इसके बावजूद : "हमारी व्यावहारिक और सामान्य नीति में और अधिक परिवर्तन होने के कारण, सम्भवत: हमें और अधिक रियायतें देने को तैयार रहना होगा, पीछे हटने और उचित संघर्ष नीति निर्धारित करने के लिए तैयार रहना होगा। संभवत: पार्टी को एक ऐसी संघर्ष नीति अपनाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा, जिसके

प्रति ईमानदार और निष्ठावान योद्धाओं की आदिम तार्किकता विरोध प्रकट करेगी।)[८]

हां, यह तथ्य है, कि जिन मजदूरों ने कामरेड सेदेलनिकोव और आर० के० आई० के आदमियों के खिलाफ बयान दिये उन्हें अदालत ने "आसानी से ठुकरा दिया।" और प्रतिवादी सेदेलनिकोव ने उद्दंडतापूर्वक अभियोक्ता की धमकियों का जवाब दिया। कामरेड काइलेंको ! मुझे इन सब अनुच्छेदों की जानकारी है। यहां वर्ग शत्रुओं के खिलाफ निर्णय नहीं हो रहा है और यह अनुच्छेद वर्ग शत्रुओं से संबंधित हैं।"

पर, काइलेंको ने काफी अभियोग प्रस्तुत किए थे। राज्य संगठनों के समक्ष जानबूझ कर झूठे अभियोग प्रस्तुत करना ऐसी परिस्थितियों में जिनसे अपराध और भयंकर हो उठता है, जैसे व्यक्तिगत विद्वेष और व्यक्तिगत प्रतिशोध लेने की इच्छा...अपने सरकारी पद का दुरुपयोग, राजनीतिक गैर-जिम्मेदारी...सरकारी अफसरों और रूस की कम्युनिस्ट पार्टी, बोलशेविक पार्टी के सदस्यों की शक्ति और सत्ता का दुरुपयोग...पानी की सप्लाई की व्यवस्था के काम को गड़बड़ में डालना...मास्को सोवियत और सोवियत रूस को क्षति पहुंचाना, क्योंकि ऐसे गिने-चुने विशेषज्ञ ही उपलब्ध थे और इनके स्थान पर ऐसी ही योग्यता के विशेषज्ञों को नियुक्त कर पाना असम्भव था। "और हम व्यक्तिगत, और अपनी हानि की चर्चा नहीं करेंगे...हमारे युग में, जब संघर्ष हमारे जीवन की प्रमुख वस्तु बन गया है, हम लोग ऐसी कभी भी पूरी न हो सकने योग्य हानियों की ओर ध्यान न देने के आदी हो गए हैं।"[६] सर्वोच्च क्रान्तिकारी अदालत को अपना सारगर्मित निर्णय देना चाहिए : "दण्ड का मूल्यांकन अत्यन्त कठोरता से किया जाना चाहिए ! ...हम लोग यहां हंसी मजाक के लिए इकट्ठा नहीं हुए हैं।"

हे भगवान, अब इन लोगों को क्या सज़ा मिलेगी ? क्या यह वही सज़ा होगी ? मेरा पाठक अब तक यह कह डालने का आदी हो चुका है; इन सबको गोली से...!

और यह पूरी तरह सही है। इन सब लोगों को सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जाना था, इनके ईमानदारी से भरे पश्चाताप को ध्यान में रखते हुए ! इन लोगों को दण्ड दिया गया था—बहिष्कार और उपहास।

दो सत्य...

और यह भी कहा जाता है कि सेदेलनिकोव को एक वर्ष की कैद की सज़ा भी सुनाई गई थी।

यदि मैं इस बात पर विश्वास न करूंगा तो आप मुझे क्षमा करेंगे।

अरे, इस शताब्दी के तीसरे दशक के चारणों, उस युग के लोगों के दैदिप्यमान और परम सुख की तस्वीर खींचने वालो ! जिन लोगों ने इस दशक की सबसे बाहरी परिधि को भी छुआ है, जिन्होंने अपने बचपन में इसे जाना है, वे इसे कभी नहीं भूलेंगे। और उन भद्दे लोगों ने, उन मोटे बरबराये चेहरे वालों ने, जो इंजीनियरों को सताने में व्यस्त रहते थे—हां, तीसरे दशक में ही, वे सब भरपूर भोजन करते थे, खूब मौज उड़ाते थे।

और अब हम यह देखते हैं कि वे लोग १९१८ से ही व्यस्त हो गए थे।



इसके बाद के दो मुकदमों में हम अपने खास और अप्रिय सर्वोच्च अभियोक्ता से कुछ समय

के लिए छुट्टी ले लेते हैं : वह समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के सदस्यों के बड़े मुकदमे की तैयारी में लगा हुआ है।[10] इस जबर्दस्त मुकदमे यूरोप में पहले ही काफी भावनाएं भड़काई थीं और न्याय सम्बन्धी मामलों का जनवादी कार्यालय में अचानक भौंचक्का रह गया था : आखिरकार हम चार वर्ष से बिना किसी दंडसंहिता के लोगों पर मुकदमे चला रहे थे और हमें इन मुकदमों में नई पुरानी किसी भी किस्म की दंडसंहिता की ज़रूरत नहीं पड़ी थी। और इस बात की पूरी संभावना है कि स्वयं क्राइलेंको भी दंडसंहिता के बारे में चिंतित था। समय रहते प्रत्येक बात की बड़ी सतर्कता से तैयारी की जरूरत थी।

चर्च के पादरियों के भावी मुकदमे आन्तरिक थे। उनमें प्रगतिशील यूरोप को कोई दिलचस्पी नहीं थी। और उन्हें एक दंडसंहिता के बिना चलाया जा सकता था।

हमें इससे पहले यह देखने का अवसर मिल चुका है कि चर्च और राज्य को अलग रखने का काम इस प्रकार किया गया था कि स्वयं गिरजाघर और इन गिरजाघरों में लटकी हुई प्रत्येक वस्तु, इनमें रखी हुई प्रत्येक वस्तु इनकी दीवारों आदि पर चित्रित प्रत्येक वस्तु राज्य की थी और जो एकमात्र चर्च अथवा गिरजाघर रह गया था, वह धर्म शास्त्रों के अनुसार, केवल व्यक्ति के हृदय में ही था। और सन् १६१८ से जब आशा से कहीं अधिक तेजी से और आसानी से राजनीतिक विजय प्राप्त हो गई तो उन्होंने चर्च की सम्पत्ति को ज़ब्त करना शुरू कर दिया। लेकिन इस कारवाई के परिणामस्वरूप जन सामान्य में भयंकर और व्यापक क्रोध भड़का। गृहयुद्ध के दौर में यह बुद्धिमानी का काम नहीं था कि धर्म में आस्था रखने वालों के खिलाफ एक और मोर्चा खोल दिया जाये। और यह आवश्यक हुआ कि फिलहाल कम्युनिस्टों और ईसाइयों के बीच वार्तालाप को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया जाये।

गृहयुद्ध के अन्त में, और इसके स्वाभाविक परिणाम के रूप में, वोलगा क्षेत्र में अकल्पित अकाल पड़ा। उन लोगों ने इस अकाल को सरकारी इतिहासों में केवल दो पंक्तियां दी हैं क्योंकि गृहयुद्ध के विजेताओं को इससे मालाएं प्राप्त करने का गौरव नहीं मिलता। पर इसके बावजूद अकाल का अस्तित्व रहा—और यह मनुष्यभक्षण की सीमा तक भयंकर हो उठा, यह इतना भीषण हो उठा कि माता पिता स्वयं अपने बच्चों को खा गये—रूस तक में कभी ऐसा अकाल नहीं पड़ा था, १७ वीं शताब्दी के आरम्भ में भयंकर संकट के दौर में भी यह नहीं हुआ था। (क्योंकि उस समय, जैसाकि इतिहासकारों ने बताया है, अनाज की बालियां बर्फ के नीचे अनेक वर्षों तक जैसी की तैसी दबी रहीं और खराब नहीं हुईं।) अकाल के बारे में केवल एक फिलम उन समस्त बातों पर नई रोशनी डाल सकती है, जिन्हें हमने देखा और जिन्हें हम क्रांति और गृहयुद्ध के बारे में जानते हैं। लेकिन ऐसी फिल्में नहीं हैं, ऐसे उपन्यास नहीं हैं और आंकड़ों पर आधारित कोई ऐसा अनुसंधान इस सम्बन्ध में नहीं हुआ है—प्रयास इसे भुला देने का रहा है। यह सजावट के लिए उपयोगी नहीं है। इसके अलावा, हम लोग सदा अकाल का दोष कुलकों के माथे लगाते रहे हैं—और इतने बड़े पैमाने पर सामूहिक मृत्यु के मध्य कुलक कौन था ? वी० जी० क्राइलेंको ने 'लैटर्स टू लुनाचारस्की (जिन्हें लुनाचारस्की के वचन के बावजूद सोवियत संघ में कभी भी अधिकृत रूप से प्रकाशित नहीं किया गया।)''[11] में हमें बताते हैं कि रूस किस प्रकार अकाल और भयंकर निर्धनता के गर्त में पूरी तरह से डूब गया था एक भयंकर महामारी की तरह किस प्रकार अकाल और निर्धनता ने पूरे देश को लील लिया था। यह उत्पादकता के शून्य बन

जाने का परिणाम था (काम करने योग्य सब लोग हाथों में बंदूकें लेकर घूम रहे थे) और यह इस बात का भी परिणाम था कि किसानों को इस बात का ज़रा भी भरोसा और आशा नहीं थी कि यदि वे फसल उगाते हैं तो उन्हें कणमात्र भी अनाज मिल सकेगा। हां, और किसी दिन कोई व्यक्ति उन माल डिब्बों की भी गणना करेगा जो निरन्तर अनेक महीनों तक शाही जर्मनी को भेजे जाते रहे। ब्रेस्त लितोवस्क की शांति संधि की शर्तों के अनुसार यह अनाज उस रूस से भेजा जाता रहा, जिसे प्रतिवाद करने की शक्ति से वंचित कर दिया गया था और अनाज भेजने का यह काम उन प्रांतों से हो रहा था, जहां भयंकर अकाल पड़ने जा रहा था—और यह अनाज जर्मनी को इसलिए भेजा जा रहा था ताकि वह पश्चिम के देशों से अन्त तक डट कर लड़ सके।

कार्य और कारण की एक प्रत्यक्ष और तात्कालिक शृंखला मौजूद थी। वोलगा के किसानों को इसलिए अपने बच्चों को खाना पड़ा क्योंकि हम संविधान सभा का मुकाबला करने के लिए अत्यन्त व्यग्र हो उठे थे।

लेकिन राजनीतिक प्रतिभा इस बात में निहित होती है कि जन सामान्य की बर्बादी से भी सफलता को निचोड़ लिया जाये। एक बहुत बढ़िया विचार उत्पन्न हुआ: आखिरकार एक बार में बिलयर्ड की तीन गेंदों को पाकेट में डाला जा सकता है। तो अब पादरी लोग वोलगा क्षेत्र के लोगों के भोजन का प्रबन्ध करें। वे ईसाई हैं, वे उदार हैं!

१-यदि वे इनकार करते हैं, तो हम पूरे अकाल का दोष उनके माथे मढ़ सकते हैं और चर्च को समाप्त कर सकते हैं।

२-यदि वे सहमत हो जाते हैं तो हम गिरजाघरों में झाड़ू लगा देंगे।

३-दोनों स्थितियों में हम विदेशी मुद्रा और सोने चांदी के अपने भण्डार को भर लेंगे।

ठीक है, और संभवत: यह विचार स्वयं चर्च के कार्यों के परिणामस्वरूप ही उत्पन्न हो सका। स्वयं पेट्रियार्क तिखोन ने अगस्त १९२१ में, अकाल के आरम्भ में कहा था कि चर्च ने विभिन्न गिरजाघरों के क्षेत्रों में और अखिल रूस समितियां बनाई हैं ताकि भुखमरी से ग्रस्त लोगों को सहायता पहुंचाई जा सके और चर्च ने इस काम के लिए धन एकत्र करना भी शुरू कर दिया है। लेकिन चर्च से उन लोगों के मुंह में सीधा भोजन पहुंचाना जो भूख से मर रहे थे सर्वहारा वर्ग की तानाशाही को क्षति पहुंचाता। समितियां बनाने के काम पर पाबंदी लगा दी गई और चर्च ने जो धन एकत्र किया था उसे ज़ब्त कर लिया गया और राज्य के खजाने में भर दिया गया। पेट्रियार्क ने रोम के पोप से भी प्रार्थना की थी और केन्टरबरी के आर्च विशप से भी सहायता मांगी थी।—लेकिन इस कार्य के लिए उन्हें भला बुरा कहा गया और यह बात कही गई कि केवल सोवियत सरकार को ही विदेशियों से बातचीत करने का अधिकार है। हां, सचमुच और इसमें इतना अधिक घबरा जाने की भी क्या बात थी? समाचारपत्रों ने लिख दिया था कि अकाल का मुकाबला करने के लिए स्वयं सरकार के पास आवश्यक साधन मौजूद हैं।

इस बीच, वोलगा क्षेत्र में लोग घास, जूतों के तले खा रहे थे और दरवाजे की चौखटों को दांत से काटकर खा जाने की कोशिश कर रहे थे। और अन्ततः, दिसम्बर १९२१ में, पोमगोल—राज्य अकाल सहायता आयोग—ने प्रस्ताव किया कि गिरजाघरों को अपना बहुमूल्य सामान चन्दे में देकर भूख से मर रहे लोगों की सहायता करनी चाहिए—सब सामान

देने की जरूरत नहीं है केवल वही सामान दे दिया जाए जिसकी पूजा अर्चना के लिए जरूरत नहीं होती। पेट्रियार्क सहमत हो गए। पोमगोल ने एक निर्देश जारी किया : समस्त उपहार पूरी तरह से स्वेच्छा से दिए जाने चाहिएं ! १९ फरवरी १९२२ को पेट्रियार्क ने सब गिरजाघरों को एक गश्ती पत्र लिखकर गिरजाघर परिषदों को यह अधिकार दिया कि वे उन वस्तुओं को उपहार में दे सकती हैं जिनकी पूजा-अर्चना और अन्य ऐसे ही धार्मिक कृत्यों में आवश्यकता नहीं होती।

और इस प्रकार ये सब मामले एक समझौते के रूप में इस प्रकार विकृत हो सकते थे जिसके परिणामस्वरूप सर्वहारा वर्ग की इच्छा ही विफल हो जाती, जिस प्रकार एक बार संविधान सभा के मामले में हुआ था, और आज भी यूरोप की निरर्थक बकवास करने वाली संसदों में हो रहा है।

यह विचार बिजली की कड़क की तरह कौंधा ! विचार अवतरित हुआ—और इसके बाद अध्यादेश जारी हुआ ! २६ फरवरी को अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी का अध्यादेश जारी हुआ : गिरजाघरों से—भूख से ग्रस्त लोगों के लिए समस्त बहुमूल्य सामान ले लिया जाना चाहिए !

पेट्रियार्क ने कालिनिन को पत्र लिखा पर उसने उत्तर नहीं दिया। इसके बाद २८ फरवरी को पेट्रियार्क ने एक नया, और निर्णायक पत्र सब गिरजाघरों के नाम लिखा : चर्च के विचार से यह कारवाई गिरजाघरों की पवित्रता का उल्लंघन है और हम इस प्रकार चर्च की वस्तुओं को जब्त करने पर अपनी सहमति नहीं दे सकते।

आज आधी शताब्दी बाद पेट्रियार्क को भला बुरा कहना आसान है। हां, यह सही है, कि ईसाई चर्च के नेताओं को यह सोचकर और अपने विचार प्रकट करके वास्तविक मुद्दे से ध्यान नहीं हटाना चाहिए था कि क्या सोवियत सरकार को अन्य साधन उपलब्ध नहीं हैं, और वोल्गा में अकाल के लिए कौन उत्तरदायी है ? उन लोगों को उन खजानों से चिपका नहीं रहना चाहिए था, क्योंकि धार्मिक आस्था के एक नए दुर्ग की स्थापना की संभावना उनके ऊपर निर्भर नहीं करती थी। लेकिन हमें उस अभागे पेट्रियार्क की स्थिति की भी कल्पना करनी होगी, जिसे अक्तूबर क्रांति के बाद तक अपने पद के लिए निर्वाचित नहीं किया गया था, जिसने गिने चुने वर्षों के लिए ही उस चर्च का नेतृत्व किया था जिसे सदा से सताया गया था, प्रतिबन्ध लगाए गए थे, प्रहार किए गए थे और अब जिसकी सुरक्षा का भार उन्हें सौंप दिया गया था।

लेकिन तत्काल समाचारपत्रों में निर्णायक रूप से प्रभावशाली यातना अभियान शुरू हुआ, जिसका लक्ष्य पेट्रियार्क और चर्च के उच्च पदाधिकारी थे। समाचारपत्रों में यह कहा गया कि ये लोग वोल्गा क्षेत्र को अकाल के गाल में डाल देने के लिए उत्तरदायी हैं। और पेट्रियार्क जितनी अधिक दृढ़ता से अपनी बात पर डटते रहे, उनकी स्थिति उतनी ही अधिक कमजोर होती गई। मार्च के महीने में स्वयं पादरियों के मध्य भी यह आंदोलन शुरू हो गया कि गिरजाघरों की बहुमूल्य वस्तुओं को दे देना चाहिए और सरकार से कोई समझौता कर लेना चाहिए। बिशप एन्तोनिन ग्रानोवस्की ने जो पोमगोल की केन्द्रीय समिति के सदस्य थे, कालिनिन के समक्ष अपनी शंकाएं प्रकट कीं, जिन्हें अभी तक दूर नहीं किया जा सका था : "श्रद्धालुओं को यह भय है कि गिरजाघरों के बहुमूल्य सामान का उपयोग अन्य उद्देश्यों के लिए किया जाएगा, जो अत्यधिक सीमित हैं और जिनके लिए इस बहुमूल्य सामान के

उपयोग की अनुमति देने पर उनके हृदय राजी नहीं होते।" (हमारे प्रगतिशील सिद्धांत के सामान्य मुद्दों से परिचित हमारे अनुभवी पाठक इस बात पर सहमत होंगे कि यह सचमुच सम्भव था। आखिरकार कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की आवश्यकताएं और मुक्ति के दौर में पूर्व के क्षेत्रों की आवश्यकताएं भी वोल्गा के इलाके के लोगों से कम महत्वपूर्ण और प्रबल नहीं थीं।) पेत्रोग्राद का मेट्रोपालिटन वेनियामिन विश्वास के भाव से भर चुका था : "यह सब कुछ ईश्वर का है और हम स्वयं यह सब कुछ दे डालेंगे।" लेकिन बलपूर्वक ज़ब्त करना गलत था। बलिदान स्वयं हमारी इच्छा के अनुसार होना चाहिए। वह भी यही चाहते थे कि पादरी और ईसाई धर्म के अनुयायी इस बात की पुष्टि करें : उस समय तक पादरीगण और श्रद्धालुजन गिरजाघरों के बहुमूल्य सामान पर नजर रखें जब तक इसे रोटी में नहीं बदल दिया जाता। और यह कहते समय उनके हृदय में यह भयंकर शंका और दुविधा बनी हुई थी कि उनका यह प्रयास पेट्रियार्क की भर्त्सनापूर्ण इच्छा का उल्लंघन न हो।

ऐसा लग रहा था कि पेत्रोग्राद में सब काम शांतिपूर्वक होने जा रहा है। ५ मार्च १९२२ को पेत्रोग्राद के पोमगोल के अधिवेशन का वातावरण एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार हर्षपूर्ण था। वेनियामिन ने घोषणा की : "आर्थोडाक्स चर्च भुखमरी से ग्रस्त लोगों के लिए सब कुछ देने को तैयार है।" चर्च बलपूर्वक गिरजाघरों से सामान छीनने को गिरजाघरों की पवित्रता का उल्लंघन मानती है। लेकिन सब कुछ स्वेच्छा से देने की स्थिति में गिरजाघरों की वस्तुओं को ज़ब्त करना आवश्यक था ! पेत्रोग्राद के पोमगोल के अध्यक्ष कनातचिकोव ने इस आशय के आश्वासन दिए कि इस कारवाई के परिणामस्वरूप सोवियत सरकार चर्च के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रुख अपनायेगी। (यद्यपि इस बात की अधिक संभावना नहीं थी।) सद्भाव के वातावरण में प्रत्येक व्यक्ति उठ खड़ा हुआ। मेट्रोपालिटन ने कहा : "सबसे अधिक भार फूट और शत्रुता का होता है। लेकिन वह समय आएगा जब रूस के लोग एक हो जायेंगे। स्वयं मैं, श्रद्धालु भक्तों की पंक्ति में सबसे आगे खड़ा होकर, कजान की पवित्र कुमारी के स्मृति चिह्न के ऊपर से आवरण हटाऊंगा (यह स्मृतिचिह्न बहुमूल्य धातुओं और रत्नों से बना था।) मैं इस पर मृदुतापूर्ण आंसू बहाऊंगा और इसे दे डालूंगा।" मेट्रोपालिटन वेनियामिन ने पोमगोल के बोलशेविक सदस्यों को अपना आशीर्वाद दिया और वे लोग नंगे सिर ही उन्हें विदाई देने के लिए दरवाजे तक गए। समाचारपत्र, पेत्रोग्रादस्काया प्रावदा ने अपने ८, ९, और १० मार्च के अंकों में,[१२] बातचीत के शांतिपूर्ण और सफल समापन की पुष्टि की और मेट्रोपालिटन के बारे में अच्छी बातें कहीं। "स्मोलनी में उन लोगों ने इस बात पर सहमति दी कि गिरजाघर के पात्र और स्मृति चिह्नों के ढक्कनों को गलाकर स्वर्ण-पिण्ड बना दिए जायेंगे और यह काम चर्च के अनुयायियों की मौजूदगी में किया जायेगा।"

एक बार फिर इस प्रकार के समझौतों के कारण स्थिति बदलती जा रही थी, मामला बिगड़ रहा था ! ईसाई धर्म का दूषित गुब्बार क्रांतिकारी इच्छा को विषाक्त बनाता जा रहा था। इस प्रकार की एकता और इस प्रकार गिरजाघरों की बहुमूल्य वस्तुओं को समर्पित कर देना वोल्गा के भूख से मर रहे लोगों को वांछित नहीं था ! पेत्रोग्राद पोमगोल से संकल्पविहीन सदस्यों को बदल दिया गया। समाचारपत्रों ने "दुष्ट पादरियों" और "चर्च के राजाओं" जैसे पदाधिकारियों को भला बुरा कहना शुरू किया और चर्च के प्रतिनिधियों से कहा गया : "हमें तुम्हारे दान की जरूरत नहीं है ! और तुम्हारे साथ कोई बातचीत भी नहीं होगी ! प्रत्येक वस्तु पर सरकार का अधिकार है—और सरकार जो कुछ

आवश्यक समझेगी उसे ले लेगी।"

और इस प्रकार बलपूर्वक गिरजाघरों की वस्तुओं को छीनना शुरू हुआ, और इसके साथ ही संघर्ष भी। यही घटनाएं दूसरे स्थानों पर भी हुईं।

और इस प्रकार पादरियों के खिलाफ मुकदमे चलाने का कानूनी आधार प्राप्त हो गया।[13]

झ. मास्को में चर्च का मुकदमा—२६ अप्रैल-७ मई १९२२

इस मुकदमे की सुनवाई पोलिटेक्नीक के संग्रहालय में हुई। यह मुकदमा मास्को की क्रांतिकारी अदालत के समक्ष पेश हुआ। अध्यक्ष न्यायाधीश बेक था। सरकारी वकील थे लूनिन और लोंजीनोव। १७ प्रतिवादियों में बड़े पादरी, आर्च प्रीस्ट और सामान्य उपदेशक शामिल थे, जिनके ऊपर पेट्रियार्क की घोषणा का प्रचार करने का अभियोग लगाया गया था। यह अभियोग, गिरजाघरों की बहुमूल्य वस्तुओं को अधिकारियों को सौंपने अथवा न सौंपने के प्रश्न से अधिक महत्वपूर्ण था। बड़े पादरी ए० एन० जाओजेरस्की ने अपने गिरजाघर की समस्त बहुमूल्य वस्तुओं को सौंप दिया था, लेकिन उसने सिद्धांत रूप में बहुमूल्य वस्तुओं को बलपूर्वक छीनने को गिरजाघरों को अपवित्र करने की बात कहते हुए पेट्रियार्क की अपील को सही बताया था और इस मुकदमे में उसे ही प्रमुख अभियुक्त करार दिया गया—और हम देखेंगे कि जल्दी ही उन्हें गोली से उड़ा दिया जाता है। (इन सब बातों से यह प्रमाणित हो जाता है कि महत्वपूर्ण बात भूख से मर रहे लोगों को भोजन देने की नहीं थी बल्कि एक सुविधाजनक अवसर का लाभ उठाकर चर्च की कमर तोड़ डालना थी।)

पेट्रियार्क तिखोनकोव ५ मई को एक गवाह के रूप में क्रांतिकारी अदालत के सामने पेश होने के लिए बुलाया गया। यद्यपि अदालत में मौजूद लोगों में बहुत सावधानी से चुने गए मुट्ठी भर लोग ही थे (इस दृष्टि से सन् १९२२ का वर्ष १९३७ और १९६८ के वर्षों से कुछ भिन्न था) पर इसके बावजूद प्राचीन रूप की छाप अभी तक इतनी गहरी थी और सोवियत छाप अभी तक इतनी सतही थी कि पेट्रियार्क के अदालत में प्रवेश करते ही वहां मौजूद आधे से अधिक लोग उनका आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए उठ खड़े हुए।

तिखोन ने उक्त अपील लिखने और उसका प्रचार करने का पूरा दोष अपने ऊपर लिया। अध्यक्ष न्यायाधीश ने उनके बयान से एक भिन्न प्रकार का सार निकालने की कोशिश की : "लेकिन यह संभव नहीं है ! क्या आपने स्वयं अपने हाथ से इसे लिखा ? इसकी सब पंक्तियां ? संभवतः आपने इस पर केवल हस्ताक्षर भर किए। और वास्तव में इसे किस व्यक्ति ने लिखा ? और आपके सलाहकार कौन थे ?" और वह फिर बोला : "इस अपील में आपने उस यातना का उल्लेख क्यों किया जो समाचारपत्र आपको दे रहे थे ? (आखिरकार, वे आपको यातनाएं दे रहे हैं और हम इसके बारे में क्यों सुनें) आप कहना क्या चाहते थे ?"

पेट्रियार्क : "यह प्रश्न आपको उन लोगों से पूछना चाहिए, जिन्होंने यातनाएं देने, सताने का काम शुरू किया : वे किन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए यह कर रहे थे !"

अध्यक्ष न्यायाधीश : "लेकिन इस बात का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है !"

पेट्रियार्क : "इसका एतिहासिक महत्व है।"

अध्यक्ष न्यायाधीश : "इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए कि अध्यादेश उस समय प्रकाशित हुआ, जिस समय आप पोमगोल के सदस्यों से बातचीत कर रहे थे, आपने "हमारी

पीठ पीछे" अभिव्यक्ति का प्रयोग किया ?"

पेट्रियार्क : "हां।"

अध्यक्ष न्यायाधीश : "इस प्रकार आप यह समझते हैं कि सोवियत सरकार ने गलत ढंग से काम किया ?"

कुचल डालने वाला तर्क ! पूछताछ अधिकारियों के रात्रिकालीन कार्यालयों में करोड़ों बार यह प्रश्न दोहराया जाएगा। और हम कभी भी सीधे सादे ढंग से स्पष्ट रूप से यह उत्तर नहीं दे सकेंगे :

पेट्रियार्क : "हां।"

अध्यक्ष न्यायाधीश : "क्या आप राज्य के कानूनों को अनिवार्य रूप से लागू मानते हैं अथवा नहीं ?"

पेट्रियार्क : "हां, मैं उन्हें स्वीकार करता हूं, पर केवल उस सीमा तक जिस सीमा तक वे धर्म के नियमों के विरोधी नहीं होते।"

(काश प्रत्येक व्यक्ति इसी प्रकार उत्तर दे पाता ! हमारा पूर्ण इतिहास भिन्न होता।)

इसके बाद चर्च के नियमों के बारे में बहस शुरू हुई। पेट्रियार्क ने समझाया कि यदि चर्च स्वयं अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को सौंप देती है तो यह गिरजाघरों की पवित्रता का उल्लंघन नहीं होगा। लेकिन यदि इन्हें चर्च की इच्छा के विरुद्ध छीना गया तो यह गिरजाघरों को अपवित्र करना होगा। पेट्रियार्क की अपील में यह नहीं कहा गया था कि गिरजाघरों की बहुमूल्य वस्तुएं किसी भी रूप में न दी जायें। उन्होंने केवल यही घोषणा की थी कि बलपूर्वक इन वस्तुओं को छीनने की भर्त्सना की जानी चाहिए।

(लेकिन हम तो यही चाहते थे—चर्च की इच्छा के विरुद्ध बहुमूल्य वस्तुओं को ज़ब्त कर लेना।)

कामरेड बेक, जो अध्यक्ष न्यायाधीश की कुर्सी पर विराजमान था, आश्चर्यचकित रह गया : "अन्तिम विश्लेषण में आपके लिए अधिक महत्वपूर्ण क्या है—चर्च के नियम अथवा सोवियत सरकार का दृष्टिकोण ?"

(अपेक्षित उत्तर यही था : "सोवियत सरकार का दृष्टिकोण।)"

ठीक है; तो चर्च के नियमों के अनुसार यह गिरजाघरों को अपवित्र करने की कारवाई थी। अभियोक्ता ने उद्गार प्रकट किए : "लेकिन करुणा के दृष्टिकोण से यह क्या था ?"

(एक क्रांतिकारी अदालत के समक्ष प्रथम और अन्तिम बार—अगले पचास वर्षों तक—करुणा शब्द का उच्चारण हुआ था।)

इसके बाद स्वयातो तातस्त्वो शब्द का दार्शनिक विश्लेषण हुआ, जिसका अर्थ "अपवित्र करना" होता है। लेकिन यह शब्द "स्वयातो" अर्थात् "अपवित्र" और "तात" अर्थात् "चोर" शब्दों से मिलकर बना है।

अभियोक्ता : "तो इसका यह अर्थ होता है कि हम, सोवियत सरकार के प्रतिनिधि पवित्र वस्तुओं के चोर हैं ?"

अदालत के कक्ष में बहुत देर तक शोरगुल मचता है, कुछ देर के लिए अदालत की

कारवाई स्थगित कर दी जाती है। अदालत के कारिन्दे अपने काम में लग जाते हैं।)

अभियोक्ता : "तो आप सोवियत सरकार के प्रतिनिधियों, अखिल रूस केन्द्रीय कार्य-कारिणी के सदस्यों को चोर कहते हैं ?"

पेट्रियार्क : "मैं केवल चर्च के नियमों का उल्लेख कर रहा था।"

इसके बाद "ईश्वर के अपमान" सम्बन्धी अभिव्यक्ति पर विचार हुआ। सीजेरिया के महान् सन्त बासिल के गिरजाघर से बहुमूल्य वस्तुओं को ज़ब्त करते समय मूर्ति का ढक्कन एक पेटी में नहीं आ रहा था और उन लोगों ने इस ढक्कन को अपने पांव तले कुचल डाला। लेकिन इस घटना के समय पेट्रियार्क स्वयं उपस्थित नहीं थे।

अभियोक्ता : "आपको यह कैसे मालूम ? हमें उस पादरी का नाम बताइये जिसने आपको यह बात बताई है। (और हम उसे तुरन्त गिरफ्तार कर लेंगे।)"

पेट्रियार्क नाम नहीं बताते।

इसका अर्थ यह होता है कि यह बात झूठ थी !

अभियोक्ता बड़े गर्व से विजयपूर्वक अपनी बात को दोहराता है : "नहीं, किस व्यक्ति ने यह जुगुप्सापूर्ण झूठी बात फैलाई ?"

अध्यक्ष न्यायाधीश : "जिन लोगों ने मूर्ति के ढक्कन को पांवों तले कुचला उनके नाम हमें दीजिए ? (आप यह मानकर चल सकते हैं कि जिन लोगों ने यह काम किया था वे गिरजाघर में अपने विजिटिंग कार्ड छोड़ आए थे !) अन्यथा अदालत आपकी बात पर विश्वास नहीं करेगी।

पेट्रियार्क उनका नाम नहीं बता पाते।

अध्यक्ष न्यायाधीश : "इसका यह अर्थ होता है कि आपने एक ऐसी बात कही है, जिसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।"

इस बात को भी अभी सिद्ध करना शेष था कि पेट्रियार्क सोवियत सरकार का तख्ता उलट देना चाहते थे और इस प्रकार यह बात प्रमाणित की गई : "प्रचार एक ऐसा प्रयास होता है, जिससे एक ऐसी मनःस्थिति तैयार की जाती है, जिसके आधार पर भविष्य में विद्रोह की तैयारी की जा सके।"

क्रांतिकारी अदालत ने हुक्म दिया कि पेट्रियार्क के विरुद्ध दण्डनीय अभियोग पेश किए जाएं।

७ मई को दण्ड की घोषणा कर दी गई है : १७ प्रतिवादियों में से ११ को गोली से उड़ा दिया जाना था। (वास्तव में उन लोगों ने ५ को गोली से उड़ाया।)

जैसाकि क्राइलेंको ने कहा था : "हम लोग यहां हंसी मजाक करने के लिए एकत्र नहीं हुए हैं।"

एक सप्ताह बाद पेट्रियार्क को अपदस्थ कर गिरफ्तार कर लिया गया। (लेकिन यह अन्त नहीं था। फिलहाल उन्हें दोन्सकोई मठ ले जाया गया और वहां कड़ाई से एकदम अलग-थलग कैद रखा गया, ताकि धर्म में आस्था रखने वाले उनके अनुयायी उनकी गैर मौजूदगी के आदी हो जाएं। जरा स्मरण कीजिए कि थोड़ी देर पहले ही क्राइलेंको इस बात से अत्यन्त आश्चर्यचकित था और बोला था कि पेट्रियार्क को आखिर क्या खतरा हो सकता है ? यह सच है, जब वास्तविक खतरा सामने आता है, तो इससे किसी भी प्रकार बचा नहीं जा सकता। गिरजाघरों की खतरे की घण्टियां और श्रद्धालुजनों को टेलीफोन से सूचना

देकर इस खतरे को टाला नहीं जा सकता।

इसके दो सप्ताह बाद पेत्रोग्राद में मेट्रोपालिटन बेनियामिन को गिरफ्तार कर लिया गया। क्रांति से पहले वे चर्च के उच्च पदाधिकारी नहीं थे। चर्च के अन्य सब मेट्रोपालिटनों की तरह उनका नियुक्ति भी नहीं हुई थी। सन् १९१७ की बसन्त ऋतु में, प्राचीन नोवगोरोद महान् के समय के बाद यह पहला अवसर था कि मास्को और पेत्रोग्राद में मेट्रोपालिटनों का चुनाव हुआ था। भद्र, सरल, आसानी से सबकी पहुंच के भीतर, कल कारखानों में अक्सर दौरा लगाने वाला, जन सामान्य और छोटे पादरियों में लोकप्रिय बेनियामिन इन्हीं लोगों के वोटों पर निर्वाचित हुए थे। उस युग की प्रवृत्ति को न समझते हुए, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि उनका दायित्व चर्च को राजनीति से मुक्त कराना है "क्योंकि अतीत में राजनीति के कारण चर्च को बहुत हानि पहुंची है। इसी मेट्रोपालिटन के ऊपर निम्नलिखित मामले में मुकदमा चलाया गया था :

ट. पेत्रोग्राद चर्च का मुकदमा—९ जून-५ जुलाई १९२२

प्रतिवादियों को गिरजाघरों की बहुमूल्य वस्तुओं को जब्त करने का प्रतिरोध करने के अभियोग पर गिरफ्तार किया गया था। इनकी संख्या कई दर्जन थी और इनमें धर्मशास्त्र और च र्चकानून का एक प्रोफेसर, अनेक आर्कीमैनड्राइट पादरी और समय उपदेशक थे। इस अदालत का अध्यक्ष सेमियोनोव था, जिसकी उम्र २५ वर्ष थी और अफवाह के अनुसार वह नानबाई अर्थात् डबल रोटी बनाने का काम करता था। प्रमुख अभियोक्ता न्याय सम्बन्धी मामलों के जनवादी कमीसार कार्यालय के कालेजियम का एक सदस्य था। इस व्यक्ति का नाम पी० ए० क्रासिकोव था और यह लेनिन का हमउम्र था। जिन दिनों लेनिन क्रासनोयारस्क क्षेत्र में निष्कासन में रह रहे थे उस समय लेनिन की इससे मित्रता हुई थी और आगे चलकर विदेश चले जाने पर भी इसकी लेनिन से दोस्ती रही। व्लादिमिर इलिच इसका वायलन बजाना बहुत पसन्द करते थे।

नेवस्की चौक में नेवस्की के मोड़ पर मुकदमे की अवधि में हर रोज़ लोगों की बड़ी भीड़ जमा रहती थी और जब मैट्रोपालिटन को कार में अदालत ले जाया जाना था तो ये लोग घुटनों के बल बैठ जाते थे और यह गीत गाते थे : "हे, ईश्वर लोगों की रक्षा करो!" (कहना न होगा कि वे लोग आवश्यकता से अधिक उत्साही श्रद्धालुओं को सड़क पर और अदालत की इमारत के भीतर ही गिरफ्तार कर लेते थे।) "अदालत में मौजूद दर्शकों में अधिकांश लाल सेना के सैनिक थे। और जैसे ही मैट्रोपालिटन अपने पादरियों के वस्त्रों में अदालत में प्रवेश करते, ये लोग तक उठकर खड़े हो जाते थे। इसके बावजूद अभियोक्ता और अदालत ने उन्हें जनता का शत्रु कहा। यह ध्यान देने योग्य बात है कि इस समय तक यह अभिव्यक्ति अस्तित्व में आ चुकी थी।

मुकदमे के प्रत्येक दिन प्रतिवादियों के वकीलों की स्थिति बिगड़ती जा रही थी और उनकी अपमानजनक दुविधा पहले ही स्पष्ट हो चुकी थी। फाइलें को इस सम्बन्ध में हमें कुछ नहीं बताते। लेकिन इस अन्तराल को एक प्रत्यक्षदर्शी ने भर दिया है। अदालत ने स्वयं गरज कर यह धमकी दी कि प्रमुख प्रतिवादी वकील वोवरिश्चेव-पुष्किन को भी गिरफ्तार कर लिया जाए और यह बात उस जमाने के वातावरण के अनुरूप थी और यह धमकी इतनी वास्तविक थी कि वोवरिश्चेव-पुष्किन ने तुरन्त अपनी सोने की घड़ी और नोटों का बटुआ

वकील गुरोविच को सौंप दिया । और तभी तत्काल अदालत ने प्रोफेसर येगोरोव नामक एक गवाह को तुरन्त गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। प्रोफेसर येगोरोव को मैट्रोपालिटन की ओर से गवाही देने के लिये गिरफ्तार कर लिया गया था। और यह बात भी स्पष्ट हुई कि स्वयं येगोरोव इसके लिए तैयार था। वह अपने साथ एक भारी भरकम ब्रीफकेस लाया था, जिसमें उसने खाने की चीजें, नीचे पहनने के कपड़े और यहां तक कि एक छोटा सा कम्बल भी ठूंस रखा था।

पाठक यह देख सकता है कि अदालत धीरे-धीरे वह स्वरूप ग्रहण कर रही थी, जिससे हम परिचित हैं।

मेट्रोपालिटन वेनियामिन के ऊपर यह अभियोग लगाया गया था कि उन्होंने बुरे उद्देश्यों से...सोवियत सरकार किसी अन्य से नहीं, एक समझौता किया और इस प्रकार गिरजाघरों की बहुमूल्य वस्तुओं को जब्त करने के अध्यादेश को उदार बनाने में सफल हुआ। यह अभियोग लगाया गया कि उन्होंने पोमगोल से जो अपील की थी उसका प्रचार विद्वेशपूर्ण भावनाओं से जन सामान्य में किया गया। (समिजदात!—आत्म-प्रकाशन! स्वयं अपना प्रकाशन!) और उन्होंने विश्व बुर्जुआ वर्ग के साथ मिल कर भी काम किया था।

पादरी क्रातनितस्की ने, जो "जीवन्त चर्च का एक प्रमुख कार्यकर्ता और जी०पी०यू० का सहयोगी था, यह बयान दिया कि पादरियों ने अकाल को आधार बना कर सोवियत सरकार के विरुद्ध विद्रोह भड़काने का षड्यंत्र रचा था।

केवल इस्तगासे के गवाहों के बयान ही अदालत में हुए। प्रतिवादियों के गवाहों को ब्यान देने की अनुमति नहीं मिली। (ओह, यह कितना परिचित है! हमारे लिए निरन्तर अधिकाधिक परिचित।)

अभियोक्ता स्मिरनोव ने "१६ सिरों" की मांग की। अभियोक्ता क्रासीकोव चिल्ला उठा: "समस्त आर्थोडाक्स चर्च तोड़ फोड़ में लगा हुआ एक संगठन है। सही बात तो यह है कि पूरी चर्च को ही जेल में डाल देना चाहिये।"

(यह बहुत व्यावहारिक कार्यक्रम था। जल्दी ही यह प्रायः पूरा भी हो गया। और यह बातचीत का अच्छा आधार था।)

आइये हम मैट्रोपोलिटन के वकील एस०वाई० गूरोविच के भाषण के उन वाक्यों को उद्धृत करें जो हमें आज भी उपलब्ध हैं और जिसे एक दुर्लभ अवसर कहा जा सकता है।"

"अपराध के प्रमाण मौजूद नहीं हैं। कोई तथ्य उपलब्ध नहीं है। कोई अभियोगपत्र तक पेश नहीं किया गया है...इतिहास क्या कहेगा? ओह, सचमुच इस वकील ने इन्हें भयभीत करने का तरीका निकाल लिया है! इतिहास भूल जाएगा और इस बारे में कुछ नहीं कहेगा! । पेत्रोग्राद में गिरजाघरों की बहुमूल्य वस्तुओं को जब्त करने का का पूरी तरह से शांतिपूर्वक हुआ। लेकिन यहां पेत्रोग्राद के पादरी प्रतिवादियों की बेंच पर बैठे हैं और किसी व्यक्ति के हाथ इन्हें मृत्यु की ओर धकेलते जा रहे हैं। आप जिस बुनियादी सिद्धांत पर जोर देते हैं वह सोवियत सरकार की भलाई है। लेकिन यह न भूलिए कि चर्च को बलिदानियों के रक्त से शक्ति प्राप्त होगी। लेकिन, सोवियत संघ में नहीं! । इस सम्बन्ध में और कुछ कहने को नहीं है। लेकिन बोलना बन्द करना भी बड़ा कठिन है। जब तक बहस चलेगी, प्रतिवादी जीवित रहेंगे। जब बहस समाप्त हो जाएगी, जीवन भी समाप्त हो जाएगा।"

क्रांतिकारी अदालत ने १० प्रतिवादियों को मृत्युदण्ड दिया। एक महीने से अधिक समय तक इस मृत्युदण्ड को लागू करने की प्रतीक्षा करनी पड़ी। समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी के सदस्यों का मुकदमा समाप्त होने के बाद ही यह काम किया गया। (ऐसा लग रहा था मानो इन लोगों ने पादरियों को समाजवादी क्रांतिकारियों के साथ ही गोली से उड़ाने की तैयारी की थी।) और इसके बाद अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी ने इनमें से छह को क्षमादान दे दिया और चार को—मेट्रोपालिटन बेनियामिन; आर्चीमैनड्राइट सेरजियस, जो राज्य संसद का भूतपूर्व सदस्य था; कानून का प्रोफेसर वाइ० पी० नोवितस्की; और बैरिस्टर कोवशारोव—१२-१३ अगस्त की रात को गोली से उड़ा दिया गया।

हम अपने पाठकों से जोर देकर यह अनुरोध करते हैं कि वे प्रांतीय नगरपालिका के सिद्धांत को न भूलें। जब कभी मास्को और पेत्रोग्राद में पादरियों के खिलाफ दो मुकदमे चलाये जाते थे तो प्रांतों में इनके खिलाफ २२ मुकदमे शुरू होते थे।



वे लोग इस बात की बेहद जल्दबाजी में थे कि समाजवादी क्रांतिकारियों का मुकदमा शुरू होने तक एक दण्डसंहिता किसी न किसी प्रकार तैयार हो जाये। कानून की दृढ़ आधारशिला रखने का समय आ गया था। पूर्व निश्चय के अनुसार १२ मई को अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी का अधिवेशन शुरू हुआ। लेकिन इस समय तक यह प्रस्तावित दण्डसंहिता तैयार नहीं हो पाई थी। इसे अभी हाल में ही व्लादिमिर इलिच लेनिन को उनके विश्लेषण के लिए मास्को से बाहर उनके गोर्की स्थिति आवास में भेजा गया था। दंडसंहिता के छह अनुच्छेदों के अन्तर्गत अधिकतम दण्ड के रूप में गोली मार कर मृत्युदण्ड देने की व्यवस्था की गई थी। यह असन्तोषजनक था। १५ मई को, दण्डसंहिता के मसौदे के हाशियों पर, लेनिन ने ऐसे छह और अनुच्छेदों का उल्लेख किया, जिनके अधीन गोली मार कर मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिये। (इसमें—अनुच्छेद ६९ के अन्तर्गत—प्रचार और आंदोलन, विशेषकर सविनय अवज्ञा के रूप में सरकार के प्रतिरोध और सैनिक सेवा अथवा करों की अदायगी के दायित्वों को पूरा करने से सामूहिक रूप से इनकार करना शामिल थे।)[१४] और एक अन्य अपराध के लिए भी गोली मार कर मृत्युदण्ड देने की आवश्यकता बताई गई थी : "अनधिकृत रूप से अर्थात् सरकार की आज्ञा के बिना विदेश से वापसी (हे भगवान, पहले जमाने में समाजवादी लोग किस प्रकार देश से बाहर जाते और वापस लौटते रहते थे!) और एक सन्य सज़ा को गोली मार कर मृत्युदण्ड के समतुल्य माना गया : विदेश में निष्कासन। व्लादिमिर इलिच ने यह पूर्व कल्पना कर ली थी कि वह समय दूर नहीं है जब यूरोप से लोग सोवियत संघ में बहुत बड़ी संख्या में आकर बसने लगेंगे, और किसी भी व्यक्ति को स्वेच्छा से सोवियत संघ छोड़कर पश्चिम के देशों में जाने के लिए तैयार करना असम्भव होगा। लेनिन ने न्याय सम्बन्धी मामलों के जनवादी कमीसार कार्यालय के समक्ष अपने प्रमुख निष्कर्ष को अभिव्यक्ति दी :

"कामरेड कुर्स्की! मेरी राय में हमें मेनशेविकों, समाजवादी क्रान्तिकारियों आदि की सब गतिविधियों पर गोली मार कर मृत्युदण्ड देने की व्यवस्था लागू कर देनी चाहिए। (इसके स्थान पर विदेशों में निष्कासन की भी अनुमति हो सकती थी)। हमें कोई ऐसा

तरीका निकालना चाहिए जो इन गतिविधियों को **अन्तर्राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग से सम्बन्धित कर दे।**"[15] (लेनिन द्वारा रेखांकित।)

गोली मार कर मृत्युदण्ड देने की व्यवस्था को व्यापक बनाना ! यहां किसी भी बात को कल्पना के भरोसे नहीं छोड़ा गया है ! (और क्या उन लोगों ने बहुत अधिक लोगों को निष्कासन में भेजा ?) आतंक लोगों को राजी करने का एक तरीका है।[16] इस बात को भी गलत ढंग से समझ लेने की गुंजाइश नहीं है।

पर इसके बावजूद कुर्स्की की समझ में पूरी बात नहीं आई। इस बात की पूरी संभावना है कि वह इसे लागू करने का तरीका निकालने में अधिक सफल नहीं हुआ। वह उक्त तरीके से इन गतिविधियों को सम्बन्धित करने में कामयाब नहीं हो पाया। अगले दिन, वह जनवादी कमीसार परिषद् के अध्यक्ष, लेनिन से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए मिलने गया। हमारे पास यह जानने का कोई साधन नहीं है कि इन लोगों की क्या बातचीत हुई। लेकिन इसी बातचीत के संदर्भ में १७ मई को लेनिन ने गोर्की से एक दूसरा पत्र भेजा :

कामरेड कुर्स्की !

अपनी बातचीत के परिणामस्वरूप मैं तुम्हें दंडसंहिता के एक अतिरिक्त पैराग्राफ की रूपरेखा भेज रहा हूं...मैं आशा करता हूं कि बुनियादी संकल्पना स्पष्ट है, आरम्भिक मसौदे की समस्त खामियों के बावजूद यह स्पष्ट है : स्पष्ट रूप से एक ऐसा कानून तैयार किया जाए, जो सिद्धांत पर आधारित हो और राजनीतिक दृष्टि से सच्चा भी। (यह न्यायिक दृष्टि से संकीर्ण नहीं होना चाहिए) ताकि आतंक के साथ, इसके औचित्य की प्रेरणा उपलब्ध हो सके, इसकी आवश्यकता और इसकी सीमाओं को निर्धारित किया जा सके।

अदालत को आतंक को अपने कार्य की परिधि से नहीं निकाल देना चाहिए। आतंक को त्याग देना आत्मवंचना होगी और इसे एक निश्चित आधार देने और सैद्धान्तिक दृष्टि से इसे कानून सम्मत बनाने के लिए, स्पष्ट रूप से और वंचना के बिना, किसी भी बाहरी अलंकरण के बिना, इसे यह रूप देने के लिये यह आवश्यक है कि यथासम्भव व्यापक रूप से इसका निर्धारण किया जाए, क्योंकि केवल क्रांतिकारी ईमानदारी और एक क्रांतिकारी अन्त:करण ही इसे व्यवहार में प्राय: व्यापक रूप से लागू करने की परिस्थितियां उपलब्ध करायेंगे।

कम्युनिस्ट अभिवादन सहित,
लेनिन[17]

हम इस महत्वपूर्ण दस्तावेज़ पर टिप्पणी नहीं करना चाहेंगे, इसके लिए मौन और चिन्तन की आवश्यकता है।

इस दृष्टि से यह दस्तावेज़ बहुत महत्वपूर्ण है कि लेनिन ने इस संसार में जो निर्देश दिये यह उनमें से अन्तिम निर्देशों में से था—वे कुछ समय तक बीमार नहीं पड़े थे—और इस दस्तावेज़ को उनकी राजनीतिक वसीयत का एक महत्वपूर्ण अंग भी कहा जा सकता है। यह पत्र लिखने के १० दिन बाद, उन्हें पहली बार लकवे का दौरा पड़ा, और इससे वे सन् १९२२ की शिशर ऋतु के महीनों में अपूर्ण रूप से और कुछ ही समय के लिए ठीक हो सके। सम्भवत: लेनिन के आवास की दूसरी मंजिल के कोने में बने प्रकाशमान और हवादार तथा सफेद संगमरमर से निर्मित अध्ययन कक्ष में उन्होंने कुर्स्की को भेजे गए अपने दोनों पत्र लिखे

थे। इसी मंजिल पर नेता की भावी मृत्यु शैया प्रतीक्षा में मौजूद थी।

इस पत्र के साथ वह आरम्भिक मसौदा नत्थी था, जिसका उल्लेख इस पत्र में किया गया है, इसमें अतिरिक्त पैराग्राफ के दो भिन्न मसौदे थे और इन्हीं के आधार पर कुछ ही वर्षों की अवधि में अनुच्छेद ५८-४ और हमारी प्रिय वृद्धा माता अनुच्छेद-५८ की अन्य सब धाराएं विकसित हुईं। आप इसे पढ़ते हैं और आपका हृदय प्रशंसा के भाव से भर उठता है: इसे यथासम्भव व्यापक रूप से निर्धारित करने का सचमुच यही अर्थ होता है! इसके उपयोग को व्यापक बनाने का भी यही अर्थ होता है। आप इसे पढ़ते हैं और यह स्मरण करते हैं कि उस छोटी सी वृद्धा माता का आलिंगन कितना व्यापक था।

"...प्रचार अथवा आंदोलन, अथवा किसी संगठन में हिस्सा लेना, अथवा सहायता देना (निरपेक्ष दृष्टि से सहायता देना अथवा सहायता देने में समक्ष होना)...ऐसे संगठन अथवा व्यक्ति, जिनकी गतिविधि का स्वरूप..."

सन्त अगस्तीन को मेरे हवाले करो और एक क्षण में मैं उनके लिए इस अनुच्छेद में जगह खोज निकालूंगा।

आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक वस्तु का समावेश कर दिया गया था; इसे फिर टाईप भर कर लिया गया; गोली मार कर मृत्युदंड देने की व्यवस्था को व्यापक बना दिया—और अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी के अधिवेशन में इस नई दंडसंहिता को २० मई के तुरन्त बाद अंगीकार कर लिया गया और यह आदेश दिया कि यह दंडसंहिता १, जून १९२२ से लागू मानी जाएगी।

और इस प्रकार, सर्वाधिक कानूनी आधार पर, दो महीने तक चलने वाला निम्न मुकदमा शुरू हुआ:

ठ. समाजवादी क्रांतिकारियों का मुकदमा—८ जून-७ अगस्त १९२२

अदालत थी, सर्वोच्च क्रांतिकारी अदालत-बेर्खत्रिब। इस अदालत की सामान्यतया अध्यक्षता करने वाले न्यायाधीश, कामरेड कार्कलिन (यह न्यायाधीश के लिए एक अच्छा नाम था—इस शब्द की वित्युपत्ति "टर्राने" अथवा "काऊं काऊं करना") को इस महत्वपूर्ण मुकदमे के लिये बदल दिया गया था और उसके स्थान पर चतुर जार्जी ज्ञाताकोव की नियुक्ति की गई थी क्योंकि सारे समाजवादी संसार की आंखें इस मुकदमे पर लगी हुई थीं। (भाग्य अपने हंसी मजाक के तरीके में आनन्द लेता है—लेकिन यह हमारे लिये अपने कृत्यों पर विचार करने का समय भी प्रदान करता है! भाग्य ने प्याताकोव को इस काम के लिए १५ वर्ष का समय दिया।) इस मुकदमे में सफाई पक्ष के वकील मौजूद नहीं थे। प्रतिवादियों में सब, समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के प्रमुख नेता थे, और उन्होंने स्वयं अपनी सफाई पेश करने का निश्चय किया था। प्याताकोव ने अत्यन्त कठोर आचरण किया और प्रतिवादियों को अपनी बात तक पूरी नहीं कहने दी।

यदि मेरे पाठक और स्वयं मैं अब तक पर्याप्त रूप से यह जानकारी प्राप्त न चुके होते कि प्रत्येक मुकदमे में जो अभियोग लगाये जाते हैं अथवा जो अपराध होता है उसका कोई महत्व नहीं होता। महत्व होता है आवश्यकता का। इन परिस्थितियों में अर्थात् इस जानकारी से वंचित होने की स्थिति में हम इस मुकदमे को पूरे हृदय से स्वीकार न कर पाते। लेकिन आवश्यकता, समय का तकाजा निश्चित रूप से मौजूद रहता है: मेनशेविकों के विपरीत, समाजवादी क्रांतिकारियों को अभी भी खतरनाक समझा जाता था, जिन्हें अब तक

प्रभावहीन बनाना और देश के विभिन्न हिस्सों में पहुंचाना शेष था, इन्हें अभी पूरी तरह से समाप्त कर डालना शेष था और नव स्थापित तानाशाही (सर्वहारा वर्ग) के दुर्ग की ओर से, इन लोगों को नष्ट कर डालना आवश्यक था।

जो व्यक्ति इस सिद्धान्त से अपरिचित होता वह इस पूरे मुकदमे को पार्टी का प्रतिशोध मानने की गलती कर सकता था।

फिर भी, इच्छा न होते हुए भी आप इस मुकदमे में लगाये गये अभियोगों पर विचार करते हैं और राष्ट्रों के लम्बे तथा उस समय भी विकसित हो रहे इतिहास के परिप्रेक्ष्य में इन्हें देखने-समझने की कोशिश करते हैं। अत्यन्त सीमित संख्या में संसदीय लोकतंत्रों को छोड़ कर, कुछ अत्यन्त सीमित दशकों में, राष्ट्रों का इतिहास पूरी तरह से क्रान्तियों और सत्ता हथियाने की कारवाइयों का इतिहास है। और जो कोई भी अधिक सफल और अधिक स्थाई रहने वाली क्रान्ति करने में सफल होता है, वह उसी क्षण से न्याय के अधिक चमकीले चोगे पहनने का हकदार बन जाता है। और उसके अतीत और भविष्य के प्रत्येक कार्य को कानून सम्मत बना दिया जाता है, कविताओं के माध्यम से स्मृतियों में संजो दिया जाता है, जबकि उसके असफल शत्रुओं का अतीत और भविष्य का प्रत्येक कार्य दंडनीय और मुकदमे की कारवाई तथा कानूनी दण्ड का लक्ष्य बन जाता है।

दंडसंहिता को केवल एक सप्ताह पहले ही अंगीकार किया गया था। लेकिन इसमें क्रांति के बाद के अनुभव के पूरे पांच वर्षों को भर दिया गया था। २०, १० और ५ वर्ष पहले तक समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी, ज़ारशाही की सत्ता उलटने के प्रयास में लगी एक सहयोगी पार्टी थी। यह वह पार्टी थी, जिसने आतंकवादी तरीके से काम करने की अपनी विशेषता के कारण ज़ारशाही के ज़माने में कठोर कारावास का कष्ट भोगा था और बोलशेविकों को शायद मुश्किल से ही कभी यह दण्ड मिला था।

अब इनके ऊपर सबसे पहला अभियोग यह लगाया गया था कि समाजवादी क्रान्तिकारियों ने गृहयुद्ध शुरू किया : हां, उन लोगों ने शुरू किया, उन लोगों ने ही शुरू किया था। अक्तूबर में सत्ता पर अधिकार करने का, सशस्त्र प्रतिरोध करने का उन लोगों पर अभियोग लगाया गया। जब उस अस्थायी सरकार को, जिसका वे समर्थन करते थे और जो आंशिक रूप से उनके सदस्यों से बनी थी, नौसैनिकों ने मशीनगनों की गोलियों की बौछार से कानूनी तरीके से अपदस्थ कर दिया, तो समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी के सदस्यों ने पूरी तरह गैर-कानूनी तरीके से इसकी रक्षा करने की कोशिश की,[१८] और इतना ही नहीं गोली का जवाब गोली से दिया, और उस अपदस्थ सरकार के सैनिक कैडेटों (अफसर प्रशिक्षार्थियों) को लड़ाई में हिस्सा लेने के लिए बुलाया।

लड़ाई में हार जाने के बाद, उन लोगों ने राजनीतिक दृष्टि से पश्चाताप नहीं किया। वे लोग जनवादी कमीसार परिषद के समक्ष घुटने टेक कर नहीं बैठे, जिसने स्वयं को सरकार घोषित कर दिया था। वे बड़ी हठधर्मिता से इस बात पर जोर देते रहे कि एकमात्र कानून सम्मत सरकार वह है, जिसका तख्ता उलट दिया गया था। वे तुरन्त यह स्वीकार करने को तैयार नहीं हुए कि पिछले २० वर्षों से उनकी जो राजनीतिक नीति रही है, वह पूरी तरह असफल थी।[१९] और उन्होंने क्षमा की भीख भी नहीं मांगी, अपनी पार्टी को भंग कर देने और स्वयं को एक पार्टी न मानने का अनुरोध भी नहीं किया।[२०]

इनके विरुद्ध दूसरा अभियोग यह था कि इन्होंने ५ और ६ जनवरी, १९१८ को श्रमिकों और किसानों की सरकार की कानून सम्मत सत्ता के विरुद्ध प्रदर्शनों में हिस्सा लेकर इन सांकेतिक विद्रोहों के द्वारा—गृहयुद्ध की खाई को और गहरा कर दिया था। इन लोगों ने अपनी गैर-कानूनी संविधान सभा का समर्थन किया था (जिसके सदस्यों का चुनाव सार्वभौम, स्वतंत्र, समान अधिकार पर आधारित, गुप्त और प्रत्यक्ष मतदान के आधार पर हुआ था।) इन लोगों ने संविधान सभा का समर्थन नौसैनिकों और लाल सैनिकों के विरुद्ध किया था, जिन्होंने संविधान सभा के सदस्यों और प्रदर्शनकारियों को कानूनी तरीके से खदेड़ दिया था। (और संविधान सभा के शांतिपूर्ण अधिवेशन से क्या भलाई हो सकती थी? केवल तीन वर्ष तक चलने वाले गृहयुद्ध की ज्वाला ही कुछ भलाई कर सकती थी। और इसी कारण से गृहयुद्ध शुरू हुआ, क्योंकि सब लोगों ने एक साथ और आज्ञाकारिता से जनवादी कमीसार परिषद् के कानून सम्मत आदेशों के समक्ष घुटने नहीं टेके।)

तीसरा अभियोग यह था कि उन लोगों ने ब्रेस्त-लितोवस्क की शान्ति संधि को स्वीकार नहीं किया था। यह वही कानून-सम्मत और जीवनदायिनी ब्रेस्त-लितोवस्क की शान्ति संधि थी, जिसने रूस के सिर को ही नहीं, बल्कि इसके धड़ के कुछ हिस्सों को भी काट फेंका था। इस आधार पर, सरकारी अभियोगपत्र ने घोषणा की, "अत्यन्त उग्र देशद्रोह और देश को युद्ध में झोंक देने के उद्देश्य से संचालित अपराधपूर्ण गतिविधि के सब लक्षण" मौजूद थे।

अत्यन्त उग्रदेशद्रोह! यह भी एक और दुधारी तलवार है। बस, महत्व इस बात का है कि आप धार के किस छोर पर हैं।

इस तीसरे अभियोग से चौथा गम्भीर अभियोग उत्पन्न हुआ: सन् १९१८ की गर्मियों और वसन्त ऋतु में, यह वही अन्तिम महीने और सप्ताह थे जब कैसर की जर्मनी मुश्किल से ही मित्र राष्ट्रों का अकेले मुकाबला कर पा रही थी, और सोवियत सरकार, ब्रेस्त-लितोवस्क की संधि के प्रति वफादार रहकर, अनाज भरी मालगाड़ियां और स्वर्ण के रूप में हर महीने अंशदान देकर जर्मनी को सहायता पहुंचा रही थी, और समाजवादी क्रान्तिकारियों ने देशद्रोही तरीके से एक ऐसी ही अनाज और सोने से लदी रेलगाड़ी को बारूद से उड़ाने और इस प्रकार मातृभूमि के सोने को मातृभूमि के भीतर रखने का प्रयास किया (वास्तव में इन लोगों ने किसी बात की तैयारी नहीं की, लेकिन जैसी कि इनकी आदत थी, इन लोगों ने इस सम्बन्ध में केवल बातें ही कीं—लेकिन अगर वे सचमुच यह करते तो क्या होता!)। दूसरे शब्दों में इन्होंने "हमारी सार्वजनिक संपदा, रेलगाड़ियों को अपराधपूर्ण तरीके से नष्ट करने की तैयारी की।"

उस समय कम्युनिस्ट इस बात से शर्मिन्दा नहीं थे और उन्होंने इस तथ्य को छिपाया भी नहीं कि वे वास्तव में हिटलर के भावी साम्राज्य में रूसी सोना रेलगाड़ियों में लाद-लाद कर पहुंचा रहे हैं और दो शिक्षा विभागों—इतिहास और कानून विभागों में—अध्ययन करने के बावजूद यह बात क्राइलेंकों की समझ में नहीं आई और उसके किसी सहायक ने भी उसके कान में यह बात नहीं कही कि यदि इस्पात की रेल पटरियां सार्वजनिक सम्पदा हैं, तो शायद सोने के बड़े-बड़े पिण्ड भी सार्वजनिक सम्पदा हो सकते हैं?

इस चौथे अभियोग से पांचवां अभियोग निर्विवाद रूप से उत्पन्न होना था: समाज-

वादी क्रान्तिकारियों ने ऐसे बारूदी धमाके के लिए मित्र राष्ट्रों के प्रतिनिधियों से प्राप्त धन से तकनीकी उपकरण प्राप्त करने की योजना बनाई थी। (इन लोगों ने एन्तेंत से इसलिए धन लेना चाहा था, ताकि कैसर विल्हेल्म को सोना न दिया जा सके।) और यह अत्यन्त उग्र देशद्रोह था ! वैसे क्राइलेंको ने यह भी कहा था कि समाजवादी क्रान्तिकारियों का लुडिन-डोर्फ के जनरल स्टाफ से सम्बन्ध था, लेकिन यह पत्थर सचमुच एक गलत सब्ज़ी के बगीचे में जा पड़ा था, और उसने तुरन्त इस बात को जहां का तहां छोड़ दिया।)

इसके बाद छठा अभियोग बहुत दूर नहीं रह जाता : समाजवादी क्रांतिकारी सन् १६१८ में एन्तेंत के जासूसों के रूप में काम कर रहे थे। कल वे क्रान्तिकारी थे और आज जासूस बन गए थे। उस समय, यह अभियोग सम्भवतः विस्फोटक लग रहा था। लेकिन उसके बाद से और अनेक, अनेक मुकदमों के बाद यह समस्त क्रियाकलाप आपके मन में कै कर देने की इच्छा उत्पन्न करता है।

हां, तो, ७वें और १०वें अभियोगों का सम्बन्ध साविनकोव, अथवा फ़िलोनेन को अथवा कैडेटों, अथवा "पुनर्जन्म संघ" (क्या सचमुच इसका अस्तित्व था ?) और यहां तक कि अभिजातवंशियों, प्रतिक्रियावादियों, दायिलेतांत—अर्थात् उच्च वर्ग के विद्यार्थियों—अथवा श्वेत रक्षकों से सहयोग से था।

एक-दूसरे सम्बन्धित अभियोगों की शृंखला के बारे में सरकारी वकील[11] ने बड़े अच्छे ढंग से प्रतिपादन किया। अपने कार्यालय में बहुत गहन विचार के परिणामस्वरूप अथवा मंच पर बोलते समय अचानक प्रतिभा के उद्रेक के कारण, उसने इस मुकदमे में हार्दिक सहानुभूति और मित्रतापूर्ण आलोचना का स्वर अपनाया। यह वही स्वर था, जिसका वह बाद के मुकदमों में भी निरन्तर बढ़ते हुए आत्मविश्वास से और व्यापक मात्रा में उपयोग करेगा। और जिसके परिणामस्वरूप १६३७ में शानदार चकाचौंध कर देने वाली सफलता मिलेगी। इस स्वर ने न्याय करने वालों और न्याय का लक्ष्य बने लोगों के बीच—शेष संसार के विरुद्ध—एक सामान्य आधार तैयार कर दिया और इसका प्रभाव प्रतिवादियों की विशेष रूप से कोमल भावनाओं पर हुआ। सरकारी वकील के मंच से उन लोगों ने समाजवादी क्रान्तिकारियों से कहा : "आखिरकार, आप और हम क्रान्तिकारी हैं ! [हम ! आप और हम—और इसे मिलाकर हम लोग बन जाता है !] और आप लोग इतने पतित कैसे हो सकते थे कि कैडेटों से जा मिले ? [हां, निःसन्देह इस बात से तुम्हारा हृदय फटा जा रहा होगा !] अथवा अफसरों के साथ भी तुम कैसे सहयोग कर सके ? अथवा अभिजातवंशियों, प्रतिक्रियावादियों और उच्च वर्ग के विद्यार्थियों को आप अपनी इतनी कुशलता और योग्यता से तैयार षड्यंत्रपूर्ण योजनाएं किस प्रकार समझा सके ?"

प्रतिवादियों ने उनके उत्तर में क्या कहा इसकी हमें कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। क्या उनमें से किसी ने भी इस बात की ओर संकेत किया कि अक्तूबर में सत्ता हथियाने की कारवाई का लक्ष्य, विशेषतया अन्य समस्त पार्टियों के विरुद्ध तुरन्त युद्ध छेड़ देना और इन पार्टियों को एकजुट हो जाने से रोकना था ? ("वे तुम्हें बन्द नहीं कर रहे हैं, अतः तुम्हें झांककर देखने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए !") लेकिन किसी कारण से हमारे मन में यह भाव उठता है कि वहां कुछ प्रतिवादी नीचे नज़र झुकाये बैठे होंगे और उनमें से कुछ के हृदय निश्चित रूप से विभाजित होंगे : वे इतने पतित कैसे बन सकते थे ? आखिरकार, एक अंधकारपूर्ण जेल की कोठरी से आए हुए किसी कैदी को, जब कोई सरकारी वकील

अदालत के विशाल और प्रकाशमान कक्ष में मित्रता और सहानुभूतिपूर्ण बातें कहे तो उनका गहरा प्रभाव होता है।

और क्राइलेंको ने एक अत्यन्त तर्कसम्मत छोटा सा रास्ता ढूंढ़ निकाला जो आगे चलकर उस समय अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ, जब वाईशिस्की ने इसका इस्तेमाल कामेनेव और बुखारिन के विरुद्ध किया। बुर्जुआ वर्ग से सहयोग करके आप लोगों ने उनसे पैसा स्वीकार किया। आरम्भ में आप उद्देश्य के लिए, केवल उद्देश्य के लिए पैसा लेते थे, पार्टी के कार्यों के लिए नहीं। लेकिन यह विभाजन रेखा कहां होती है? इस विभाजन रेखा को कौन खींच सकता है? क्या उद्देश्य पार्टी का उद्देश्य, नहीं होता? और इस प्रकार आप लोग समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के सदस्य इतने नीचे स्तर तक गिर गए, कि बुर्जुआ वर्ग का समर्थन और सहयोग लेने लगे! आपका क्रान्तिकारी गर्व कहां चला गया था?

बड़े पैमाने पर अभियोगों की तैयारी की गई थी। और अदालत के सदस्य मंत्रणा के लिए बाहर जा सकते थे और उसके बाद प्रत्येक कैदी को मृत्युदण्ड सुना सकते थे, जो उसने अच्छी तरह अर्जित किया था—लेकिन, दुर्भाग्यवश, बहुत उलझन पैदा हो गई, गड़बड़ उत्पन्न हो गई :

१–समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के सदस्यों पर जिन समस्त बातों का अभियोग लगाया गया था, वे सन् १९१८ से सम्बन्धित थीं।

२–इसके बाद, २७ फरवरी १९१९ को, केवल विशेष रूप से समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी के सदस्यों को, क्षमादान की घोषणा की गई थी, जिसके अन्तर्गत इस एकमात्र आधार पर अतीत की इनकी बोलशेविकों के विरुद्ध की गई शत्रुतापूर्ण कारवाइयों को क्षमा कर दिया गया था कि वे भविष्य में यह नहीं करेंगे।

३–और उस समय के बाद इन लोगों ने संघर्ष भी नहीं किया था।

४–और यह सन् १९२२ का वर्ष था!

क्राइलेंको इस समस्या को कैसे सुलझा सकता था?

इस मुद्दे पर उस समय कुछ विचार किया गया था, जब समाजवादी इन्टरनेशनल ने सोवियत सरकार से यह अनुरोध किया था कि वह अपने समाजवादी भाइयों के ऊपर अभियोग न लगाये और उनके ऊपर मुकदमा न चलाये।

वास्तव में, सन् १९१९ के आरम्भ में, कोलचाक और देनिकिन द्वारा प्रस्तुत तर्कों के समक्ष, समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी ने यह कहा था कि वे बोलशेविकों के खिलाफ अपना विद्रोह समाप्त करते हैं और उन लोगों ने बोलशेविकों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष को समाप्त भी कर दिया। (और अपने कम्युनिस्ट भाइयों की सहायता के लिए समारा के समाजवादी क्रान्तिकारियों ने कोलचाक की सेनाओं के मोर्चे पर एक हिस्से में स्वयं लड़ाई शुरू कर दी थी...और वास्तव में इसी कारवाई के परिणामस्वरूप समाजवादी क्रान्तिकारियों को क्षमादान दिया गया था।) और इसी मुकदमे के समय प्रतिवादी जेनदेलमन ने, जो केन्द्रीय समिति का सदस्य था, कहा : "हमें तथाकथित नागरिक स्वतंत्रताओं का पूर्ण उपभोग करने का अवसर दीजिए और हम कानून नहीं तोड़ेंगे। (उन लोगों को अवसर दीजिए) "समस्त नागरिक स्वतंत्रताओं के उपभोग का अवसर!" कैसे जबानदराज़ लोग हैं!)

और यह बात भी नहीं थी कि इन लोगों ने विरोध में हिस्सा लिया था : इन लोगों ने सोवियत सरकार को स्वीकार कर लिया था! दूसरे शब्दों में, इन लोगों ने अपनी भूत-

पूर्व अस्थायी सरकार का त्याग कर दिया था। हां, और इसी प्रकार संविधान सभा का भी। और उन लोगों ने बस यही मांग की थी कि सोवियतों के लिए नया चुनाव हो, और सब पार्टियों को चुनाव का अभियान चलाने की स्वतंत्रता हो।

क्या आपने यह बात सुनी? क्या आपने इसे सुना? इन्हीं बातों में स्वतंत्रतापूर्ण बुर्जुआ पशु अपनी थूथन घुसेड़ता रहता था। हम यह कैसे कर सकते थे? आखिरकार यह संकट का समय है! आखिरकार, हम चारों ओर से शत्रु से घिरे हैं! (और २० वर्ष बाद ५० वर्ष बाद और यहां तक कि १०० वर्ष बाद भी, स्थिति ठीक यही रहेगी।) और तुम पार्टियों के लिए चुनाव अभियान चलाने की स्वतंत्रता चाहते हो, हरामज़ादे कहीं के?

क्राइलेंको का उत्तर था कि ऐसी बातों पर राजनीतिक दृष्टि से गम्भीर लोग केवल हंस भर सकते थे, अपने कन्धे भर हिला सकते थे। यह बड़ा न्यायपूर्ण निर्णय था कि "तुरन्त और राज्य को दमन के लिए उपलब्ध समस्त साधनों के द्वारा इन गुटों को सरकार के विरुद्ध प्रचार से रोका जाए।"[२२] और विशेषकर : समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के सशस्त्र विरोध को त्याग देने और शान्तिपूर्ण प्रस्ताव करने के जवाब में समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी की केन्द्रीय समिति के सब सदस्यों को जेल में डाल दिया गया! (हां, जितने सदस्यों को पकड़ा जा सका।)

हमारा काम करने का यही तरीका है!

लेकिन इन लोगों को जेलों में बन्द रखने के लिए क्या मुकदमा चलाना ज़रूरी था— और क्या तीन वर्ष से ये जेलों में बन्द नहीं थे? और इनके ऊपर क्या अभियोग लगाए जा सकते थे? "मुकदमे से पहले की जांच के दौरान, इस अवधि के बारे में पर्याप्त छानबीन और पूछताछ नहीं हुई।" हमारे सरकारी वकील ने शिकायत के स्वर में कहा।

पर एक अभियोग यही था। सन् १९१९ की उसी फरवरी में, समाजवादी क्रान्तिकारियों ने एक प्रस्ताव स्वीकार किया था, जिसे अमल में नहीं लाया गया, यद्यपि नई दंड-संहिता की व्यवस्थाओं के अनुसार इस बात का कोई महत्व नहीं था। समाजवादियों ने लाल सेना की टुकड़ियों में सैनिकों को किसानों के विरुद्ध बदले की कारवाइयों में हिस्सा लेने से इनकार करने के लिए तैयार करने के वास्ते गुप्त रूप से आंदोलन चलाने का प्रस्ताव स्वीकार किया था।

और यह बहुत नीचतापूर्ण कार्य था, क्रान्ति के प्रति गन्दा विश्वासघात था—लोगों को प्रतिशोध की कारवाइयों में हिस्सा न लेने के लिए राज़ी करना।

और इन लोगों के ऊपर उन सब बातों का भी अभियोग लगाया जा सकता था, जो समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के तथाकथित "केन्द्रीय समिति के विदेशी प्रतिनिधि-मंडल"—ये वे प्रमुख समाजवादी क्रान्तिकारी नेता थे, जो भाग कर यूरोप पहुंच गए थे— के सदस्यों ने कहीं, लिखी अथवा कीं (अधिकांशतया शब्दों के माध्यम से)।

लेकिन इतना पर्याप्त नहीं था। अतः उन लोगों ने यह रास्ता सोच निकाला : "यहां जो प्रतिवादी बैठे हैं, उनमें से बहुतों को इस मुकदमे में पेश नहीं किया जाता, यदि उन्होंने आतंककारी कार्यों की योजना न बनाई होती।" इस कथन का शायद यह तात्पर्य था कि जब सन् १९१९ में क्षमादान की घोषणा की गई थी, "सोवियत न्याय का कोई भी नेता यह कल्पना नहीं कर सकता था कि "समाजवादी क्रांतिकारियों ने सोवियत राज्य के नेताओं के विरुद्ध आतंकवाद का इस्तेमाल करने की योजना बनाई है!" (ठीक तो है, इस बात

की कौन कल्पना कर सकता था ! समाजवादी क्रान्तिकारी ! और आतंकवाद, यह अचानक कैसे हुआ ? और यदि उस समय इस बात का ध्यान आ जाता, तो इसे भी क्षमादान में शामिल कर लिया जाता ! अथवा कोलचाक की फौजों के मोर्चे पर लड़ाई की बात को स्वीकार न किया जाता। सचमुच यह अत्यन्त सौभाग्य की बात रही कि किसी के मन में इस बात का विचार नहीं आया। उस समय तक यह विचार नहीं आया, जब तक इसकी आवश्यकता नहीं हुई—आवश्यकता होते ही, किसी ने इसके बारे में झट सोच लिया।) तो इस अभियोग के लिए क्षमादान नहीं दिया गया था (आखिरकार, केवल संघर्ष ही एकमात्र ऐसा अपराध था, जिसके लिए क्षमादान दिया गया था)। और इस प्रकार क्राइलेंको अब अभियोग लगा सकता था !

और, इस बात की पूरी संभावना थी, वे लोग इतनी बातों का पता लगा चुके थे ! इतनी बातों का !

पहली बात तो यह थी कि वे यह पता लगा चुके थे कि समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के नेताओं ने क्या कहा था।[२३] अक्तूबर में सत्ता पर अधिकार हो जाने के बाद के आरम्भिक दिनों में उन्होंने क्या कहा था ? समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के चौथे अधिवेशन में चेरनोव ने कहा था कि पार्टी "जनता के अधिकारों पर होने वाले किसी भी प्रहार के विरुद्ध उसी प्रकार अपनी पूरी शक्ति लगा देगी" जिस प्रकार उसने ज़ारशाही के खिलाफ लगाई थी। (और प्रत्येक व्यक्ति को यह याद था कि इस पार्टी ने यह काम किस प्रकार किया था।) गोट्स ने कहा था : "यदि स्मोलनी के तानाशाह संविधान सभा के ऊपर हाथ डालते हैं...तो समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी अपने पुराने आजमाए हुए और सच्चे तरीकों का स्मरण रखेगी।"

शायद इसने स्मरण भी रखा, लेकिन उसने कदम नहीं उठाया, कारवाई करने का संकल्प नहीं किया। और इसके बावजूद इस पार्टी के सदस्यों के ऊपर इसी बात के आधार पर मुकदमा चलाया जा सकता था।

क्राइलेंको ने शिकायत भरे स्वर में कहा कि षड्यंत्र के कारण, "हमारी जांच पड़ताल के इस क्षेत्र में गवाहों की ओर से बहुत कम प्रमाण प्रस्तुत किए जा सकेंगे।" और वह आगे बोला : "इस बात ने मेरे कार्य को अत्यन्त कठिन बना दिया है...इस क्षेत्र में [आतंकवाद के क्षेत्र में] कुछ क्षणों में यह आवश्यक होता है कि छायाओं में भटका जाए।"[२४]

इन तथ्य ने वस्तुत: क्राइलेंको के कार्य को कठिन बना दिया था कि सोवियत सरकार के विरुद्ध आतंकवाद के प्रयोग के ऊपर समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी की केन्द्रीय समिति की बैठक में १९१८ में विचार हुआ था और इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया था। और अब, अनेक वर्ष बाद, यह प्रमाणित करना आवश्यक हो गया था कि समाजवादी क्रान्तिकारी आत्मवंचना में लगे थे।

उस समय समाजवादी क्रान्तिकारियों ने कहा था कि वे उस समय तक आतंकवाद का सहारा नहीं लेंगे, जब तक बोलशेविक समाजवादियों को गोली से उड़ाना शुरू नहीं करते। सन् १९२० में उन लोगों ने कहा था कि यदि बोलशेविक, समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के बंधकों को मार डालते हैं, तो पार्टी हथियार उठायेगी।[२५] तो उस समय प्रश्न यह था : उन लोगों ने आतंकवाद को त्याग देने के बारे में शर्त क्यों लगाई थी ? यह पूर्ण और शर्त के

बिना क्यों नहीं था ? और उन लोगों ने हथियार उठाने की बात सोचने तक का साहस कैसे किया ! "ऐसे वक्तव्य क्यों नहीं थे, जिन्हें आतंकवाद को पूरी तरह त्याग देने के समतुल्य माना जा सकता था।" (लेकिन, कामरेड क्राइलेंको, आतंकवाद उनके स्वभाव का अभिन्न अंग था ?)

समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी ने आतंक की कारवाई नहीं की और अभियोगों पर अपने भाषण में भी क्राइलेंको ने जो निष्कर्ष निकाला, उनसे यह स्पष्ट हो जाता है। लेकिन इस्तगासा ऐसे तथ्यों का अधिक से अधिक उपयोग करने की कोशिश करता रहा : एक प्रतिवादी के मन में उस रेलगाड़ी को उड़ा देने की योजना थी, जिस रेलगाड़ी से जनवादी कमीसार परिषद् के सदस्य मास्को जा रहे थे। इसका यही अर्थ होता है कि समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी की केन्द्रीय समिति आतंकवाद की दोषी थी। और आतंकवादी आइवानोवा ने विस्फोटक पदार्थों सहित एक रात रेलवे स्टेशन के पास बिताई थी। इसका यह अर्थ होता है कि ट्राट्स्की की रेलगाड़ी को उड़ा देने का एक प्रयास हुआ था—और इस कारण से समाजवादी क्रान्तिकारियों की केन्द्रीय समिति आतंकवाद की दोषी थी। और इतना ही नहीं : केन्द्रीय समिति के एक सदस्य दोन्सकोई ने फान्या कापलान को यह धमकी दी थी कि यदि वह लेनिन के ऊपर गोली चलाती है, तो उसे पार्टी से निकाल दिया जायेगा। लेकिन यह पर्याप्त नहीं था ! उसे पूरी तरह स्पष्ट रूप से गोली चलाने से क्यों नहीं रोका गया था ? (अथवा शायद यह कहा जा सकता है : उसके ऊपर चेका के समक्ष अभियोग क्यों नहीं लगाया गया था !)

क्राइलेंको मरे मुर्गों के ऐसे ही पर नोंच-नोंचकर फेंकता रहा—कि समाजवादी क्रांतिकारियों ने अपने आतंक के कार्यों से वंचित और निठल्ले बंदूकधारियों को छिटपुट आतंक की कारवाइयों से रोकने के लिए कदम क्यों नहीं उठाये। समाजवादी क्रान्तिकारियों का समस्त आतंकवाद केवल यही था। (हां, और उनके इन बंदूकधारियों ने भी कुछ नहीं किया। सन् १९२२ में इनमें से दो ने, कोनोपलेवा और तेनियोनोव ने, अपनी संदेहपूर्ण तत्परता के परिणामस्वरूप जी० पी० यू० और क्रान्तिकारी अदालत को अपने स्वेच्छा से दिए गए बयानों के द्वारा कुछ मसाला उपलब्ध कराया, लेकिन इन लोगों के बयानों के लिए समाजवादी क्रान्तिकारियों की केन्द्रीय समिति को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता था—और अचानक तथा आश्चर्यजनक रूप से इन कट्टर आतंकवादियों को बेदाग रिहा कर दिया गया।)

सब उपलब्ध प्रमाण ऐसे थे कि इन्हें बैसाखी के सहारे ही खड़ा किया जा सकता था। एक गवाह के बारे में क्राइलेंको ने इस प्रकार बातों को स्पष्ट किया : "यदि यह व्यक्ति सचमुच स्थिति में सुधार करना चाहता था, तो इस बात की कोई संभावना नहीं है कि वह संयोगवश ही इस उद्देश्य को पूरा कर सकता था।"[२६] (सचमुच बड़े प्रभावशाली ढंग से यह कहा गया है। यह बात किसी भी प्रकार के जालसाजी से तैयार बयान और प्रमाण के बारे में कही जा सकती है।) उसने दोन्सकोई के बारे में यह उद्गार प्रकट किया : क्या सचमुच कोई व्यक्ति "इसके ऊपर इस बात का संदेह कर सकता है कि उसमें ऐसी विशेष अन्तर्दृष्टि है, जिसके आधार पर वह कोई ऐसी बात कह सके जो इस्तगासा कहलाना चाहता है ?" कोनोपलेवा का मामला बिल्कुल उलटा था : उसके बयान की विश्वसनीयता इस तथ्य से आंकी जा रही थी कि उसने उस प्रत्येक बात को प्रकट नहीं किया, जो इस्तगासा चाहता था।

(लेकिन इतना ही प्रतिवादियों को मृत्युदंड दिलवाने के लिए पर्याप्त था।) "यदि हम यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या कोनोपलेवा ने यह पूरा किस्सा गढ़ा था, तो यह...स्पष्ट हो जाता है : यदि कोई किस्सा गढ़ेगा, तो उस किस्से को पूरी तरह से ही गढ़ेगा। उसे यह बात जाननी चाहिये ! [और यदि कोई व्यक्ति किसी का भण्डा फोड़ करने जा रहा है तो वह सचमुच उसका पूरा भण्डाफोड़ करेगा]।"[२७] लेकिन जैसा आप देखते हैं कोनोपलेवा ने अन्त तक यह कार्य पूरा नहीं किया। तो इन बातों को एक और ढंग से पेश किया जाता है : "आखिरकार, इस बात की संभावना दिखाई नहीं पड़ती कि बिना किसी कारण के एफीमोव, कोनोपलेवा को मृत्युदंड के खतरे में डाल देता।"[२८] यह बात भी सही है, एक बार फिर इस बात को बड़े जबर्दस्त तरीके से पेश किया गया ! अथवा इसे इस तरीके से और भी अधिक प्रभावशाली ढंग से पेश किया जा सकता है : "क्या यह मुठभेड़ हो सकती थी ? इस संभावना को पूरी तरह से त्यागा नहीं जा सकता।" त्यागा नहीं जा सकता ? तो इसका यह अर्थ होता है कि यह बात हुई। तो चलो इसका नतीजा भुगतो !

इसके अलावा "तोड़फोड़ करने वाला गुट" भी था। लम्बे अरसे से वे लोग इसकी चर्चा कर रहे थे, आखिर अचानक : "गतिविधि के अभाव में इसे भंग कर दिया।" तो यह सब हंगामा क्यों मचाया जा रहा है ? अनेक सोवियत संस्थाओं में कई गबन हुए थे (समाजवादी क्रांतिकारियों के पास काम करने के लिए पैसा नहीं था, मकान किराये पर लेने के लिए पैसा नहीं था, एक नगर से दूसरे नगर में जाने के लिए पैसा नहीं था) लेकिन पहले जमाने में इन कार्यों को खूबसूरत गरिमापूर्ण "अतिरेक" कहा जाता था—सब क्रांतिकारी इसी शब्द से इसे पुकारते थे। और अब, एक सोवियत अदालत में ? ये "डाकेजनी और चोरी के माल को छिपाने की कारवाइयां थीं।"

इस मुकदमे में इस्तगासे ने जो सामग्री प्रस्तुत की थी, उनके माध्यम से कानून के मद्धिम, कभी भी टिमटिमाने न वाले और क्षीण पीला प्रकाश देने वाले सड़कों पर लगे लैम्पों से करुणाजनक सीमा तक बकवादी, बुनियादी तौर पर भ्रान्त, असहाय और यहां तक कि निष्क्रिय पार्टी के समस्त अनिश्चित, ढुलमिल और मिथ्या इतिहास पर प्रकाश डाला गया। सचमुच इस पार्टी को कभी भी योग्य नेतृत्व नहीं मिला था और इसके प्रत्येक निर्णय अथवा निर्णय के अभाव को, इसके प्रत्येक असहाय कार्य, उद्रेक, साहस अथवा पीछे हटने की कारवाई को, सम्पूर्ण अपराध में बदल दिया गया, पूर्ण अपराध ही माना गया। अधिक बड़ा, निरन्तर अधिकाधिक बड़ा अपराध माना गया।

यह दर्शाया गया कि मानो समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की केन्द्रीय समिति ने सितम्बर १९२१ में, मुकदमा चलने से १० महीने पहले बुत्यर्की जेल की कोठरियों से नवनिर्वाचित केन्द्रीय समिति को लिखा कि वह हर उपलब्ध साधन से बोलशेविक तानाशाही का तख्ता उलट देने की बात से सहमत नहीं है। श्रमजीवी समुदाय को संगठित करके और प्रचार के माध्यम से ही यह कार्य किया जाना चाहिए—इसका बस यही अभिप्राय था कि यद्यपि वे जेल में सड़ रहे थे, पर वे आतंकवाद या षड्यंत्र के द्वारा कारा से स्वतन्त्र नहीं होना चाहते थे—लेकिन इस बात को भी उनका प्रमुख अपराध बना डाला गया : अच्छा ! तो इसका यह मतलब है कि तुम इसका तख्ता उलट दिये जाने से सहमत थे।

यदि वे सरकार का तख्ता उलटने के दोषी नहीं थे, आतंकवाद के दोषी नहीं थे, और यदि उन्होंने कोई "गबन" भी नहीं किया था और यदि काफी अरसे पहले ही उन्हें शेष कार्यों

के लिए क्षमादान दिया जा चुका था, तो क्या हुआ ? हमारे लोकप्रिय सरकारी वकील ने अन्ततः प्रयोग में लाई जाने वाली भारी-भरकम तोप दागी : "अन्ततः, किसी दूसरे व्यक्ति पर अभियोग न लगाने में असफल रहना, एक ऐसा चोटी का अपराध है, जो बिना किसी अपवाद के इन सब प्रतिवादियों पर लागू होता है और इस अपराध को सिद्ध मान लिया जाना चाहिए ।"[२९] समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी इस बात की अपराधी थी कि इसने स्वयं अपने ऊपर अभियोग नहीं लगाये, स्वयं अपनी शिकायत खुफिया पुलिस से नहीं की ! अब यह एक ऐसी चीज़ थी, जो चूक नहीं सकती थी, निष्फल नहीं जा सकती थी ! यह उस अनुसंधान का प्रतिनिधित्व करती थी, जो अनुसंधान न्याय सम्बन्धी विचारधारा ने नई दंड-संहिता में किया था । यह वह पक्की सड़क थी, जिस पर से वे अपने आभारी वंशजों को खदेड़-खदेड़ कर साइबेरिया पहुंचाते रहेंगे !

और क्राइलेंको क्रोध से भरकर चिल्ला उठा : "पक्के और शाश्वत शत्रु"—प्रतिवादी यही थे ! इस स्थिति में मुकदमे के बिना भी यह एकदम स्पष्ट था कि इनके खिलाफ क्या कारवाई की जानी चाहिए ।

यह दंडसंहिता इतनी नई थी कि क्राइलेंको को प्रमुख क्रांति विरोधी अनुच्छेदों की संख्याएं भी याद नहीं आती थीं—लेकिन उसने इसके बावजूद कितने कमाल से इन संख्याओं का प्रयोग किया ! कितने सारगर्भित तरीके से उसने इनका उल्लेख किया और व्याख्या प्रस्तुत की ! मानो अनेक दशकों से गिलोटिन (कैदी का सिर काटने के लिए प्रयुक्त तेज धार वाला यंत्र) इन्हीं अनुच्छेदों के निर्देशों पर उठता और गिरता रहा है । और विशेष रूप से नया और महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि हमने ज़ारशाही की पुरानी दंडसंहिता की तरह तरीकों और साधनों के बीच अन्तर नहीं किया था । इस प्रकार के अन्तरों का अभियोगों के वर्गीकरण अथवा सज़ा पर कोई असर नहीं पड़ता था ! जहां तक हमारा सम्बन्ध था, इरादा और कार्य दोनों समरूप थे ! एक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ—हम इसके लिए उन पर मुकदमा चलायेंगे । और "इस प्रस्ताव को लागू किया गया अथवा नहीं इस बात का कोई बुनियादी महत्व नहीं था ।"[३०] यदि कोई व्यक्ति रात को सोते समय अपनी पत्नी से फुसफुसा कर यह कहे कि सोवियत सरकार का तख्ता उलट देना अच्छी बात होगी अथवा वह चुनाव के दौरान प्रचार के काम में लगा हो अथवा बम फेंके, ये सब बातें एक हैं, बिल्कुल एक हैं ! और इनके लिए दण्ड भी समान था !!!

जिस प्रकार कोई दूरदर्शी चित्रकार, कुछ आरम्भिक आड़ी-तिरछी रेखाएं खींचकर समस्त वांछित चित्र की रूप-रेखा तैयार कर लेता है, उसी प्रकार हमें १९२२ की इन रूप रेखाओं में १९३७-१९४५ और १९४९ की व्यापक दृश्यावली अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगी थी ।

लेकिन नहीं, एक वस्तु नदारद है ! यहां जो वस्तु मौजूद नहीं है वह है प्रतिवादियों का आचरण । वे अभी तक प्रतीक्षित भेड़-बकरी नहीं बन पाये हैं । वे अभी तक आदमी हैं ! हमें बहुत थोड़ा अत्यन्त थोड़ा बताया गया है । लेकिन इस ज़रा सी जानकारी से हम बहुत कुछ समझ सकते हैं, यदाकदा लापरवाही के कारण, क्राइलेंको उन बातों का उद्धरण दे देता है, जो उन प्रतिवादियों ने मुकदमे की सुनवाई के दौरान कहीं । उदाहरण के लिए, प्रतिवादी वर्ग ने "५ जनवरी को लोगों के मरने की जिम्मेदारी बोलशेविकों के मत्थे मढ़ी"—इस दिन उन प्रदर्शनकारियों को गोली से उड़ा दिया गया था, जो संविधान सभा की ओर से प्रदर्शन

कर रहे थे। और जो बात लाइबेरोव ने कही, वह और भी प्रत्यक्ष थी। "मैं स्वीकार करता हूं कि मैंने सन् १९१८ में उतना अधिक, उतना कठोर परिश्रम नहीं किया, जितना परिश्रम बोलशेविक सरकार का तख्ता उलट देने के लिए आवश्यक था। मैं सचमुच इस बात का अपराधी हूं।"[३१] एवजेनिया रातनर भी इसी बात पर डटी रही और बर्ग ने यह भी कहा : "मैं रूस के श्रमिकों के समक्ष स्वयं को इस बात का अपराधी मानता हूं कि मैं श्रमिकों और किसानों की तथाकथित सरकार के विरुद्ध अपनी पूरी शक्ति से लड़ने में असमर्थ रहा। लेकिन मैं आशा करता हूं कि अभी तक समय मेरे हाथ से नहीं निकला है।"[३२] (यह निकल चुका है, मेरे प्यारे, यह पूरी तरह निकल चुका है!)

वस्तुतः इन बातों में चमत्कारिक ढंग से बातें कहने का पुराना लगाव दिखाई पड़ता है, लेकिन इन बातों से दृढ़ता भी टपकती है।

सरकारी वकील ने तर्क किया : अभियुक्त इसलिये सोवियत रूस के लिए खतरनाक है, क्योंकि वे अपने सब कार्यों को अच्छा मानते हैं। "संभवतः कुछ प्रतिवादी इस आशा से अपने मन को दिलासा दे रहे हैं कि कोई भावी इतिहासकार उनकी प्रशंसा करेगा अथवा मुकदमे के समय उनके आचरण की प्रशंसा करेगा।"[३३]

और मुकदमे के बाद अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी के एक अध्यादेश में यह घोषणा की गई। "स्वयं मुकदमे के दौरान भी उन लोगों ने अपना यह अधिकार सुरक्षित रखा" कि वे अपनी पहले की गतिविधियों को जारी रखेंगे।

प्रतिवादी जेनदेलमन-ग्रावोवस्की ने (जो स्वयं एक वकील था) मुकदमे के दौरान क्राइलेंको से गवाहों के बयानों में फेरबदल करने के बारे में जो तर्क किए, वे बड़े प्रभावशाली थे और "मुकदमे से पहले गवाहों के साथ विशेष तरीकों से व्यवहार करने" के बारे में भी उसने बहुत प्रभावशाली बातें कहीं—दूसरे शब्दों में यह विशेष तरीके अन्य कुछ नहीं थे, बल्कि जी०पी०यू० द्वारा गवाहों को यातनाएं देने के कार्य थे। (ये सब वहां मौजूद हैं! सब तत्व वहां मौजूद हैं! आदर्श की पूर्ति के लिए बस कुछ कदम आगे बढ़ना जरूरी था।) यह बात स्पष्ट थी कि आरम्भिक पूछताछ का काम सरकारी वकील अर्थात् इसी क्राइलेंको की देखरेख में हुआ था। और इस अवधि में बयानों में एकरूपता की जो कमी थी, उसे निकाल दिया गया था। हां कुछ बयान, पहली बार स्वयं मुकदमे के समय हुए थे।

ठीक है, तो क्या हुआ, यदि यहां वहां कुछ भद्दे दाग थे। तो यह आदर्श और अधिक पूर्ण नहीं था। लेकिन अन्तिम विश्लेषण में "हमें पूरी स्पष्टता और भावनाविहीनता से यह घोषणा करनी होगी...हम इस प्रश्न के प्रति चिंतित नहीं हैं कि इतिहास की अदालत हमारे इस वर्तमान कृत्य का किस रूप में मूल्यांकन करेगी।"[३४]

और जहां तक भद्दे दागों का सम्बन्ध था, हम उन पर गौर करेंगे और उन्हें ठीक कर देंगे।

लेकिन स्थिति यह थी कि क्राइलेंको को चाहे छटपटाते हुए ही पर जांच पड़ताल, पूछताछ से पहले की आरम्भिक जांच पड़ताल का मामला उठाना पड़ा—संभवतः सोवियत न्याय प्रक्रिया में यह कार्य पहली और अन्तिम बार हुआ। और उसने बड़ी चालाकी से इस मुद्दे को पेश किया : सरकारी वकील की गैर-मौजूदगी में जो कारवाई हुई थी और जिसे आपने पूछताछ समझ लिया था, वह केवल आरम्भिक जांच थी। और सरकारी वकील की मौजूदगी में जो कारवाई हुई थी और जिसे आपने दूसरी बार होने वाली पूछताछ समझ

लिया था, जब सब खामियों को निकाल दिया गया था और मुकदमे को पूरी तरह कस दिया गया था, वह सचमुच पूछताछ की कारवाई थी। "आरम्भिक पूछताछ के लिये सुरक्षा संगठन ने" जो अव्यवस्थित "सामग्री उपलब्ध कराई थी और जो पूछताछ के द्वारा प्रमाणित नहीं हुई थी, उसका प्रमाण के रूप में उस सामग्री की तुलना में कम महत्व है, जो बहुत कुशलता से निर्देशित पूछताछ से उपलब्ध होती है।"[३५]

क्यों क्या यह बात बहुत चतुरतापूर्ण नहीं थी, जरा आप स्वयं कोई ऐसा तरीका निकालने, कोई ऐसी बात गढ़ने की कोशिश करें!

इस सम्बन्ध में व्यावहारिक बनते हुए, हमें यह कहना होगा कि क्राइलेंको को इस बात पर बड़ा रोष था कि उसे इस मुकदमे की तैयारी के लिए आधे वर्ष का समय लगाना पड़ा, और इसके बाद दो महीने तक वह प्रतिवादियों पर चीखता-चिल्लाता रहा, और फिर १५ घण्टे तक समस्त कारवाइयों, प्रमाणों और बयानों का निष्कर्ष निकालता रहा, जबकि ये सब प्रतिवादी "एक से अधिक बार असाधारण सुरक्षा संगठनों के हाथों में ऐसे दौर में रहे, जब इन संगठनों को असाधारण अधिकार और शक्तियां प्राप्त थीं; लेकिन किसी न किसी परिस्थिति का लाभ उठा कर, ये लोग जीवित रहने में सफल रहे।"[३६] तो अब क्राइलेंको को इन लोगों को कानूनी तरीके से मृत्युददंड दिलाने की कोशिश करने और वस्तुतः अदालत से मृत्युदंड की सज़ा सुनवाने में इस प्रकार एक गुलाम की तरह कमर तोड़ मेहनत करनी पड़ रही है।

वस्तुतः, "केवल एक ही निर्णय संभव है—इनमें से एक-एक को, प्रत्येक को मृत्युदण्ड!"[३७] लेकिन क्राइलेंको बड़ी उदारतापूर्वक इस पर कुछ शर्तें भी लगाता है। अब क्यों कि पूरा संसार इस मुकदमे पर नज़र लगाये बैठा है, अतः सरकारी वकील की मांग, "अदालत को निर्देश नहीं मानी जाएगी" और अदालत "इसे तुरन्त विचार अथवा निर्णय के लिए स्वीकार करने के लिये बाध्य नहीं होगी।"[३८]

कितनी शानदार अदालत है, जिसे एक ऐसे स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है!

और सचमुच इस क्रांतिकारी अदालत ने जो सज़ाएं सुनाई, उसमें उसने अपने साहस का परिचय दिया: "इनमें से एक-एक को, प्रत्येक को" मृत्युदण्ड नहीं दिया केवल १४ को मृत्युदण्ड दिया गया। शेष प्रतिवादियों में से अधिकांश को जेलों और शिविरों में सज़ाएं काटने का दंड दिया गया और उत्पादक संघ के रूप में अन्य १०० लोगों को भी सजा सुनाई गई।

और पाठक, यह याद रखें: "गणराज्य की अन्य सब अदालतें इस बात पर नजर लगाये रहती हैं कि सर्वोच्च क्रांतिकारी अदालत क्या करती है? यह उनका मार्गदर्शन करती है।"[३९]

वेर्खत्रिब द्वारा दिए गए दंड "इनके मार्गदर्शन के लिए निर्देशों के रूप में" प्रयुक्त होते हैं।[४०] अब प्रांतों में कितने अधिक और लोगों को सज़ाएं मिलेंगी इसकी गणना आप स्वयं कर सकते हैं।

और, संभवतः, अपील करने पर अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष मंडल का निर्णय पूरे मुकदमे के ही समान होगा: मृत्युदंड लागू रहेंगे, लेकिन फिलहाल इन पर अमल नहीं किया जाएगा। जिन लोगों को मृत्युदंड सुनाया गया था, उनका भाग्य उन समाजवादी क्रांतिकारियों के आचरण पर निर्भर करेगा, जिन्हें अब तक गिरफ्तार नहीं किया गया

है और जिनमें स्पष्ट रूप से वे समाजवादी क्रांतिकारी भी शामिल हैं, जो विदेश भाग गए थे। दूसरे शब्दों में : यदि तुम हमारे खिलाफ कोई कारवाई करते हो तो हम तुम्हें मार डालेंगे।

रूस के खेतों में वे लोग दूसरी बार शांतिकाल में फसल काट रहे थे। चेका की इमारतों के अहातों के अलावा अन्यत्र कहीं लोगों को गोली से नहीं उड़ाया जा रहा था (पेरखूरोव को यारोस्लावल में, मेट्रोपोलिटन बेनियामिन को पेत्रोग्राद में। और सदा, सदा, सदा!) स्वच्छ नीले आकाश के नीचे हमारे प्रथम राजनयिक और पत्रकार समुद्र के नीले पानी को जहाजों से पार करते हुए विदेशों में पहुंचे। और श्रमिकों और किसानों के प्रतिनिधियों की केन्द्रीय कार्यकारिणी ने सदा सर्वदा के लिए बंधक लोगों को अपनी जेबों में भर लिया। शासक पार्टी के सदस्यों ने इस मुकदमे से सम्बधित प्रावदा के समस्त ६० अंकों को पढ़ा—क्योंकि ये सब लोग समाचारपत्र पढ़ते हैं—और उन सब लोगों ने कहा : "हां, हां, हां!" किसी ने यह धीमी सी भी आवाज़ नहीं निकाली : "नहीं।"

तो उन्हें १९३७ में किस बात पर आश्चर्य हुआ? किस बात की शिकायत की जा सकती थी? क्या गैर-कानूनी तरीके से काम करने की नींव नहीं डाली जा चुकी थी—सबसे पहले चेका के न्याय की परिधि के बाहर प्रतिशोधों के माध्यम से : और फिर इन आरम्भिक मुकदमों और इस नई दंड संहिता के द्वारा? क्या सन् १९३७ आवश्यक नहीं था (स्तालिन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक और, संभवतः, इतिहास की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी)?

एक भविष्यवक्ता के रूप में, क्राइलेंको यह कह बैठा कि वे अतीत का नहीं, बल्कि भविष्य का न्याय कर रहे हैं, मूल्यांकन कर रहे हैं।

हंसिया से शुरू में कुछ पौधे काटना ही कठिन होता है।



बोरिस विक्टरोविच साविनकोव ने २० अगस्त १९२४ को या इसके लगभग सोवियत सीमा को पार किया। उसे तुरन्त गिरफ्तार कर लूबयांका पहुंचा दिया गया।[४१] कुल मिलाकर पूछताछ की एक ही बैठक हुई और इस बैठक में उसने स्वेच्छा से बयान दिया और अपनी गतिविधि का मूल्यांकन किया। २३ अगस्त तक सरकारी अभियोगपत्र तैयार हो गया। जिस तेज़ गति से काम हो रहा था, वह पूरी तरह से अविश्वसनीय थी; लेकिन इसका असर हुआ। (किसी व्यक्ति ने बहुत सही तरीके से स्थिति का मूल्यांकन किया था : साविनकोव को यातनाएं देकर उससे झूठे और करुणाजनक बयान करना पूरी तस्वीर को ही, इसकी सत्यता को ही नष्ट कर डालता।)

सरकारी अभियोगपत्र में, जो अब तक अच्छी तरह विकसित हो चुकी उस शब्दावली में तैयार किया गया था, जिसकी सहायता से प्रत्येक वस्तु को एकदम उलटा जा सकता था, साविनकोव के ऊपर हर कल्पनायोग्य अपराध का अभियोग लगाया गया : "निर्धनतम किसानों का सदा शत्रु बना रहना"; "रूसी बुर्जुआ वर्ग को अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में सहायता देना" : दूसरे शब्दों में, वह जर्मनी से युद्ध जारी रखने के पक्ष में था; "मित्र राष्ट्रों की सैनिक कमान के प्रतिनिधियों से सम्बन्ध कायम रखना" (यह उस

समय होता यदि वह युद्ध मन्त्रालय का अध्यक्ष बन जाता); "सैनिक समितियों का इस उद्देश्य से सदस्य बनना कि सैनिकों को भड़काया जा सके" : (अर्थात् उसे सैनिकों की समितियों ने निर्वाचित किया था); और एक ऐसी अन्तिम बात जो मुर्गी के बच्चों को भी हंसी के मारे लोटपोट कर दे—"राजतन्त्र के प्रति सहानुभूति रखना।"

लेकिन ये सब पुरानी बातें थीं। अभियोगपत्र में कुछ नई बातें भी शामिल की गई थीं—ये भावी मुकदमों के मानक अभियोग थे : साम्राज्यवादियों से पैसा लेना; पोलेंड की ओर से जासूसी करना (चाहे आप विश्वास करें अथवा नहीं उन्होंने जापान को छोड़ दिया था); और हां, उसने लाल सेना को पोटेशियम साइनाइड देकर मार डालने की भी तैयारी की थी (लेकिन न जाने किस कारण से उसने लाल सेना के एक भी सैनिकों को यह जहर नहीं दिया था।)

२६ अगस्त को मुकदमा शुरू हुआ। अध्यक्ष न्यायाधीश उलरिख था—उसे न्यायाधीश की कुर्सी पर देखने का हमारा यह पहला अवसर था। और कोई सरकारी वकील नहीं था, सफाई पक्ष का भी कोई वकील नहीं था।

सावितकोव ने अपनी सफाई पेश करने में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई और अपने खिलाफ पेश बयानों और अन्य प्रमाणों के प्रति उसने प्रायः कोई आपत्ति नहीं उठाई। वह बड़े काव्यमय तरीके से इस मुकदमे को देख रहा था। यह उसका रूस से अन्तिम सामना था और अपने विचारों को, अपनी स्थिति को सार्वजनिक रूप से स्पष्ट करने का अन्तिम अवसर भी। और पश्चाताप प्रकट करने का अन्तिम अवसर भी। (उसके ऊपर जिन अपराधों के अभियोग लगाए गए थे, उनके प्रति पश्चाताप नहीं बल्कि अन्य पापों के प्रति पश्चाताप प्रकट करने का।)

(और यह पुराना गीत यहां बेहद मौजू बैठा और इससे प्रतिवादी बेहद उलझन में फंस गया : "आखिरकार हम सब लोग रूसी हैं। आप और हमको मिलाकर हम लोग बनता है। इस बात में सन्देह नहीं कि आप रूस को प्रेम करते हैं और हम आपकी इस प्रेम भावना का सम्मान करते हैं—और क्या हम भी रूस से प्रेम नहीं करते? वास्तव में, क्या फिलहाल हम लोग ही रूस का दुर्ग और इसकी गरिमा नहीं हैं? और आप हमारे विरुद्ध लड़ना चाहते थे? पश्चाताप प्रकट करो!")

लेकिन सबसे अद्भुत वस्तु सज़ा का निर्णय था : "क्रान्तिकारी कानून और व्यवस्था बनाए रखने के हितों के लिए और इस आधार पर भी मृत्युदण्ड देना आवश्यक नहीं है कि प्रतिशोध की भावनाओं को सर्वहारा जनसमुदाय की न्याय भावना को प्रभावित नहीं करना चाहिए।"—अतः मृत्युदंड को १० वर्ष की कैद की सजा में बदल दिया गया।

यह एक सनसनीखेज बात थी! और इससे बहुत से लोग उलझन में फंस गये। क्या इसका मतलब इस बात से है कि अब शासन ढील दे रहा है, उदारता बरत रहा है? कैसा आमूल परिवर्तन! उलरिख ने प्रावदा में इस आशय का स्पष्टीकरण भी प्रकाशित किया कि साविनकोव को मृत्युदण्ड क्यों नहीं दिया गया।

आप देखते हैं कि केवल ७ वर्ष की अवधि में सोवियत सरकार कितनी मजबूत हो गई थी! वह किसी साविनकोव अथवा किसी अन्य व्यक्ति से भयभीत क्यों हो! (क्रांति की २०वीं वर्ष गांठ पर यह अधिक कमजोर हो जाएगी और इस बात के लिए हमारी कटु आलोचना न करें कि हम हजारों लोगों को गोली से उड़ाने जा रहे हैं)।

और इस प्रकार, उसकी वापसी की पहली पहेली के एकदम पीछे-पीछे उसे मृत्युदंड न देने की दूसरी पहेली उठ खड़ी होती, यदि मई १९२५ में एक तीसरी पहेली ने इसे गौण न बना दिया होता : अत्यधिक निराशा के दौर में, साविनकोव एक बिना सींखचे लगी खिड़की से लूबयांका के एक भीतरी अहाते में कूद पड़ा और उसके संरक्षक देवदूत—गायपायुशनिकी—उसे नहीं रोक सके और उसके विशालकाय और भारी भरकम शरीर को अपने हाथों में सुरक्षित नहीं रख सके। पर शायद लोग शंका उठायें—ताकि उसकी सेवाओं के बारे में कोई प्रवाद न फैले—साविनकोव उन लोगों के लिए अपनी आत्महत्या के बारे में एक पत्र लिखकर छोड़ गया। इस पत्र में उसने बहुत तर्कसंगत और सम्बद्ध तरीके से यह बताया कि वह अपनी जान क्यों ले रहा है—और यह पत्र इतने प्रामाणिक ढंग से लिखा गया था, इसे साविनकोव की शैली और भाषा में इतनी स्पष्टता से लिखा गया था कि मृतक का पुत्र, लेव बोरिसोविच भी इस पत्र की प्रामाणिकता और सच्चेपन से पूरी तरह आश्वस्त हो गया था और वह पेरिस में सब लोगों को यह समझा रहा था कि उसके पिता के अलावा और कोई दूसरा व्यक्ति यह पत्र नहीं लिख सकता था और उन्होंने अपनी जीवनलीला इसलिए समाप्त की क्योंकि वे अपने राजनीतिक दिवालियेपन को समझ चुके थे।[४२]

और सब बड़े और सर्वाधिक प्रसिद्ध मुकदमे अभी होने शेष हैं।

अध्याय १०



कानून प्रौढ़ हो जाता है

हमारी पश्चिमी सीमाओं पर लगे कांटेदार तारों को तोड़कर देश के भीतर प्रवेश करने वाली वे उन्मादपूर्ण भीड़ कहां थीं, जिन्हें हम दंडसंहिता के अनुच्छेद-७१ के अन्तर्गत रूसी-सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य में अनधिकृत रूप से वापस लौटने के अभियोग पर गोली से उड़ाने जा रहे थे ? वैज्ञानिक भविष्यवाणी के विपरीत ऐसी कोई भी भीड़ दिखाई नहीं पड़ी और लेनिन ने दंड संहिता के जिस अनुच्छेद को कुर्स्की को लिखवाया था वह निरर्थक ही बना रहा। यह कार्य करने वाला एकमात्र पर्याप्त पागल रूसी साविनकोव ही था और उन्होंने इस अनुच्छेद को उसके ऊपर भी लागू नहीं किया। दूसरी ओर, इसके विपरीत कार्य के लिए दी जाने वाली सज़ा को—मृत्युदण्ड के स्थान पर विदेशों में निष्कासन को—बड़े पैमाने पर तुरन्त प्रयोग में लाना पड़ा।

जिन दिनों व्लादिमिर इलिच लेनिन दण्ड संहिता की रचना कर रहे थे, उन्होंने अपने मेधावी विचार को विकसित करते हुए परिस्थितिजन्य भावावेश में आकर १९ मई को लिखा :

कामरेड जेरझिंस्की ! क्रांति के विरोध को सहायता पहुंचाने वाले लेखकों और प्रोफेसरों को विदेशों में निष्कासन के सम्बन्ध में हमें बड़ी सावधानी से तैयारी करनी होगी। यदि हम अच्छी तरह तैयारी नहीं करते, तो हम मूर्खताएं कर सकते हैं...हमें इस कार्य की व्यवस्था इस प्रकार करनी चाहिए कि हम इन सैनिक जासूसों को पकड़ सकें और इन्हें निरन्तर और विधिवत् पकड़कर, विदेशों में निष्कासित करते रह सकें। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि इस पत्र को आप पोलित ब्यूरो के सदस्यों को गुप्त रूप से दिखायें और यह काम इसकी प्रतिलिपियां तैयार किए बिना ही करें।[1]

इस कारवाई के महत्व और शिक्षाप्रद प्रभाव की दृष्टि से इसके बारे में अत्यन्त गोपनीयता बरतना स्वाभाविक था। सोवियत रूस में वर्ग के मोर्चे पर अत्यन्त स्पष्ट रूप से शक्तियों के विभाजन को प्रकट करना था। दूसरे शब्दों में सोवियत रूस में वर्ग-संघर्ष के मोर्चे और शक्तियों के विभाजन को इस प्राचीन, आकारहीन और लिबलिबे बुर्जुआ बुद्धिवादी वर्ग की मौजूदगी ने दूषित कर दिया था और यह वर्ग विचारधारा के क्षेत्र में सैनिक जासूसों की भूमिका निभा रहा था—और इससे छुटकारा पाने का कोई भी सर्वोत्तम निदान यह सोचा जा सकता था कि विचारों के इस निष्क्रिय विष्टा को खुरचकर विदेशों में फेंक दिया जाये।

कामरेड लेनिन को लकवे का दौरा पड़ चुका था, पर यह लगता है कि पोलित ब्यूरो के सदस्य इस प्रस्ताव को पहले ही अपनी सहमति दे चुके थे और कामरेड जेरझिंस्की ने इन जासूसों को पकड़ने का काम किया था। सन् १९२२ के अन्त में, लगभग ३०० प्रमुख रूसी मानवतावादियों को सम्भवतः एक छोटे जहाज़ में लाद दिया गया ? नहीं, इन्हें एक अगनबोट में सवार किया गया था और यूरोप के कूड़े के ढेर पर फेंक देने के लिए रवाना कर दिया गया था। (इन लोगों में जो लोग विदेशों में बस गए और जिन्होंने ख्याति प्राप्त की उनमें दार्शनिक एन० ओ० लास्की, एस० एन० बुलगाकोव, एन० ए० बर्दयाएव, एफ० ए० स्टीफन, वी० पी० वाइशेस्लावत्सेव, एल० पी० कारसाविन, एस० एल० फ्रैंक, आई० ए० इलिन; इतिहासकार एस० पी० मेलगुनोव, वाई० ए० म्याकोतिन, ए० ए० किज़ेवेत्तर, आई० आई० लापशिन और अन्य; लेखक और प्रचारक बाई० आई० आइखेनवाल्ड, ए० एस० इज़गोएव, एम० ए० ओसोरजिन, ए० वी० पेशेखोनोव थे। सन् १९२३ के आरम्भ में कुछ और छोटी-छोटी टुकड़ियों को विदेशों में निष्कासित कर दिया गया। इनमें, उदाहरण के लिए, लेव तोलसतोय के सचिव वी० एफ० बुलगाकोव भी थे। और आपत्तिजनक सम्बन्धों के कारण कुछ गणितज्ञों का भी यही हाल हुआ, जिनमें वी० एफ० सेलिवानोव भी शामिल थे।")

लेकिन यह कार्य निरन्तर और विधिवत् नहीं हो सका। प्रवासी रूसियों ने जिस घोर गर्जना से यह घोषणा की कि वे निष्कासन को एक "वरदान" मानते हैं; संभवतः उससे यह स्पष्ट हो गया कि इस सज़ा में सुधार करना आवश्यक है; कि जल्लाद के हाथ से इतनी अच्छी सामग्री इस प्रकार निकलने देना गलती है और कूड़े के ढेर पर विषाक्त फूल भी उत्पन्न हो सकते हैं। और इस कारण से उन लोगों ने यह सज़ा देना बन्द कर दिया। और इसके बाद, ऐसे लोगों के सफाये के अभियान में लोगों को या तो जल्लादों के हवाले कर दिया गया अथवा द्वीपसमूह पहुंचा दिया गया।

सन् १९२६ में जो संशोधित दंड संहिता लागू की गई और जो वास्तव में ख्रुश्चेव के शासनकाल तक जारी रही, उसमें अन्य समस्त राजनीतिक अनुच्छेदों को एक चिरस्थाई जाल का अंग बना दिया गया और इसे अनुच्छेद-५८ का नाम दे दिया गया तथा इस जाल को फेंककर शिकार को फंसाने का काम जारी रहा। बहुत जल्दी ही इस जाल में इंजीनियरी और तकनीकी बुद्धिवादी वर्ग भी आ फंसा; यह इस दृष्टि से विशेष रूप से खतरनाक था, क्योंकि अर्थ-व्यवस्था में इसकी दृढ़ स्थिति थी और प्रगतिशील सिद्धांत के माध्यम से ही इसके ऊपर नज़र रखना बड़ा कठिन था। अब यह स्पष्ट हो चुका था कि ओलदेनबोरजर का समर्थन करते हुए जो मुकदमा चलाया गया था वह एक गलती थी—आखिरकार, वहां एक बड़े अच्छे सुगठित केन्द्र का संगठन किया गया था। और काइलेंको की यह घोषणा कि सन् १९२० और १९२१ में इन्जीनियरों की ओर से तोड़फोड़ करने का प्रश्न ही नहीं उठता[२], बहुत जल्दबाजी में इन लोगों को अभियोग से मुक्त कर देने की कारवाई थी। अब यह केवल तोड़फोड़ की कारवाई ही नहीं रह गई थी, बल्कि इसने विध्वंस का रूप धारण कर लिया था—लगता है साख्ती के मामले में किसी सामान्य पूछताछ अधिकारी ने इस शब्द का अनुसंधान किया था।

अब जब एक बार यह स्थापित हो गया कि विध्वंस का पता लगाया जाना है—मानवता के समस्त इतिहास ने इस संकल्पना की गैर-मौजूदगी के बावजूद—तो उद्योग की

समस्त शाखाओं और समस्त व्यक्तिगत उद्यमों में बिना किसी कष्ट के इसका पता लगाना शुरू हो गया। पर, योजना की एकता नहीं थी, इसे कार्य रूप देने की पूर्णता प्राप्त नहीं हुई थी। इन समस्त अन्धाधुन्ध अनुसंधानों में, यही स्थिति दिखाई पड़ रही थी। पर स्तालिन अपने चरित्र और हमारी न्याय व्यवस्था की पूछताछ करने वाली शाखा के निश्चित स्वरूप के कारण स्पष्टतया बस यही करना चाहता था। पर अब अन्ततः हमारा कानून प्रौढ़ हो चुका था और संसार को एक ऐसी वस्तु के दर्शन करा सकता था, जो सचमुच पूर्ण हो—एक बड़ा, समन्वित और सुसंगठित मुकदमा। इस बार यह इंजीनियरों का मुकदमा था। और इस प्रकार साख्ती के मुकदमे का जन्म हुआ।

ड. साख्ती का मुकदमा—१८ मई-१५ जुलाई, १९२८

इस मुकदमे की सुनवाई सोवियत संघ के सर्वोच्च न्यायालय के एक विशेष असेसर मण्डल के समक्ष हुई। अदालत की अध्यक्षता ए० वाई० वाईशिस्की कर रहा था। (जो उस समय प्रथम मास्को विश्वविद्यालय में रेक्टर के रूप में काम कर रहा था); मुख्य अभियोक्ता एन० वाई० क्राइलेंको था (यह भी कितना महत्वपूर्ण संयोग और मुकाबला है! यह किसी न्याय सम्बन्धी रिले दौड़ जैसी बात थी)।[3] इस मुकदमे में ५३ प्रतिवादी और ५६ गवाह थे। कितना शानदार पैमाना है!

पर दुर्भाग्यवश इस शानदार पैमाने में ही इस मुकदमे की कमजोरी निहित थी। यदि प्रत्येक प्रतिवादी को दण्डित कराने के लिए तीन प्रमाण प्रस्तुत किए जाएं तो भी कुल मिलाकर १५९ प्रमाणों की जरूरत होती। और इस बीच क्राइलेंको के पास केवल १० अंगुलियां थीं और वाईशिस्की के पास १० और। हां, सचमुच, "प्रतिवादियों ने समाज के प्रति अपने जघन्य अपराधों का भण्डाफोड़ करने का प्रयास किया"—लेकिन उनमें से सबने यह कार्य नहीं किया; केवल १६ ही इस प्रयास में शामिल हुए; १३ अनिश्चितता के झूले में झूलते रहे; और २४ ने अपना अपराध किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया।[4] इससे एक ऐसी विषम स्थिति उत्पन्न हो गई थी, जिसकी अनुमति नहीं दी जा सकती थी और यह निश्चित था कि ऐसी उलझन की स्थिति में जन-सामान्य इस महत्व के मुकदमे को नहीं समझ पायेगा। इस मुकदमे के सकारात्मक पहलुओं के साथ-साथ (जिन्हें इससे पहले के मुकदमों में दर्शाया जा चुका था, जैसे प्रतिवादियों और उनके वकीलों की असहाय स्थिति, अदालत के निर्णय के रूप में उनके ऊपर जो विशाल शिलाखण्ड टूटकर गिरता हुआ चला आता था उसे एक ओर धकेल देने अथवा उसके रास्ते से हट जाने की उनकी अक्षमता) इस नए मुकदमे की खामियां पूरी तरह से स्पष्ट थीं। क्राइलेंको से कोई कम अनुभवी व्यक्ति इन खामियों को क्षमा कर सकता था, लेकिन क्राइलेंको द्वारा इसे क्षमा कर देना असम्भव था।

वर्गविहीन समाज की स्थापना की ड्योढ़ी पर पहुंचकर, हम लोग संघर्षरहित मुकदमे के संचालन की अन्ततः वह क्षमता प्राप्त कर चुके थे—यह हमारे सामाजिक ढांचे में आन्तरिक संघर्ष के अभाव का प्रतिबिम्ब था—जिसमें केवल न्यायाधीश और सरकारी वकील ही नहीं बल्कि सफाई पक्ष के वकील और स्वयं प्रतिवादी भी सामूहिक रूप से अपने सामान्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयास करेंगे।

खैर, साख्ती के मुकदमे का समस्त पैमाना, क्योंकि यह कोयला उद्योग और दोनेत्स बेसिन तक ही सीमित था, इस युग की क्षमताओं को देखते हुए अत्यन्त क्षुद्र था।

ऐसा लगता है कि ठीक जिस दिन साख्ती का मुकदमा समाप्त हुआ क्राइलेंको ने तत्काल एक नया और विशाल गड्ढा खोदना शुरू कर दिया। (साख्ती के मुकदमे के उसके दो सहयोगी भी—सार्वजनिक अभियोक्ता ओसादची और शीन—इस गड्ढे में गिर पड़े।) कहना न होगा कि ओ० जी० पी० यू० के समस्त संगठन ने, जो बड़ी कड़ाई से अब तक यगोदा के दृढ़ हाथों में पहुंच चुका था, बड़ी तत्परता और कुशलता से उसकी सहायता की। यह आवश्यक था कि इन्जीनियरों के एक ऐसे संगठन की सृष्टि और पर्दाफाश किया जाये जो पूरे देश भर में फैला हुआ हो। और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह आवश्यक था कि इस संगठन के शीर्ष पर कुछ प्रभावशाली और प्रमुख "विध्वंसक" मौजूद हों। और ऐसा कौन-सा इन्जीनियर था जिसे प्योत्र आकीमोविच पालचिंस्की जैसे निर्विवाद रूप से प्रभावशाली और व्यग्रता की सीमा तक गर्वीले नेता की जानकारी न हो? इस शताब्दी के आरम्भ में ही वह एक महत्वपूर्ण खान इन्जीनियर बन चुका था और पहले महायुद्ध के दौरान युद्ध उद्योग समिति का उपाध्यक्ष रह चुका था—दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उसने रूस के समस्त युद्ध सम्बन्धी प्रयासों का संचालन किया था। और इस प्रकार युद्ध की अवधि में उन खामियों को पूरा कर दिया गया था, जो ज़ार का शासन युद्ध की तैयारी की अवधि में पूरा करने में असफल रहा था। फरवरी १६१७ के बाद वह व्यापार और उद्योग मन्त्रालय का उपमन्त्री बन गया। ज़ार के शासनकाल में उसे क्रांतिकारी गति-विधि के लिए यातनाएं दी गई थीं। अक्तूबर के बाद उसे तीन बार जेल में डाला गया था—१६१७ में, १६१८ और १६२२ में। सन् १६२० से वह खनन संस्था में प्रोफेसर और गोस्पलान—राज्य योजना आयोग—के परामर्शदाता के रूप में काम कर रहा था। (इसके बारे में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए देखिए खण्ड ३, अध्याय १०।)

उन लोगों ने इस पालचिंस्की को एक नए शानदार मुकदमे में मुख्य प्रतिवादी के रूप में पेश करने के लिए चुना। पर, विवेकहीन क्राइलेंको एक ऐसे नए क्षेत्र में—इन्जीनियरी के क्षेत्र में प्रवेश कर रहा था, जिसके माल के प्रतिरोध की ही उसे जानकारी नहीं थी, बल्कि आत्माओं के सम्भावित प्रतिरोध की भी वह कल्पना नहीं कर पाया था...यद्यपि एक सरकारी वकील के रूप में वह १० वर्ष से सनसनीखेज कार्य करता आ रहा था। क्राइलेंको का यह चुनाव गलत सिद्ध हुआ। पालचिंस्की ने ऐसे प्रत्येक दबाव का प्रतिरोध किया जो ओ० पी० यू० जी० उसके ऊपर डाल सकती थी अथवा जिस किसी दबाव का वह अनुसंधान कर सकती थी। किसी भी दबाव के समक्ष उसने घुटने नहीं टेके। वास्तव में वह किसी भी प्रकार के झूठे और मूर्खतापूर्ण बयान पर हस्ताक्षर किए बिना ही मौत के मुंह में चला गया। उसके साथी एन० के० वानमेक और ए० एफ० वेलिचको को भी यातनाएं दी गई थीं, और ऐसा लगता है कि उन लोगों ने भी घुटने नहीं टेके। हमें अभी तक इस बात की जानकारी नहीं है कि यातनाओं के परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हुई अथवा उन्हें गोली से उड़ाया गया। लेकिन उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया कि प्रतिरोध करना सम्भव था घुटने न टेकना सम्भव था—और इस प्रकार वे बाद के समस्त विख्यात प्रतिवादियों के विरुद्ध एक प्रभावशाली उलहाना छोड़ गए।

पर इस पराजय को छिपाने के लिए, २४ मई, १६२६ को यगोदा ने तीन व्यक्तियों को बड़े पैमाने पर विध्वंस की कारवाइयों के लिए मृत्युदण्ड दिए जाने के बारे में जी० पी० यू० की ओर से एक संक्षिप्त विज्ञप्ति प्रचारित की। इस विज्ञप्ति में कुछ ऐसे लोगों का भी

उल्लेख किया गया था, जिनके नाम नहीं बताये गये थे।[५]

पर व्यर्थ में इतना समय गंवाया गया! लगभग एक पूरा वर्ष! और न जाने कितनी रात पूछताछ चली! और पूछताछ अधिकारियों ने अपनी कितनी सूझबूझ का अपव्यय किया! और इस सबका कोई लाभ नहीं मिला। अब क्राइलेंको को फिर आरम्भ से एक ऐसे नेता की तलाश शुरू करनी थी, जो मेधावी और प्रभावशाली हो; पर साथ ही अत्यन्त कमजोर और पूरी तरह से उसकी इच्छा के अनुरूप ढल सकने योग्य भी। लेकिन उसे इन्जीनियरों की इस अभिशप्त नस्ल की इतनी कम जानकारी थी कि पूरा एक और वर्ष असफल प्रयासों में नष्ट हो गया। सन् १९२९ की गर्मियों से उसने खेन्नीकोव के विरुद्ध मुकदमा तैयार करने की शोशिश की, लेकिन खेन्नीकोव भी एक कायरतापूर्ण भूमिका निभाने पर सहमत हुए बिना ही मौत के मुंह में चला गया। उन लोगों ने वृद्ध फेदोतोव को तोड़ा-मरोड़ा, लेकिन वह अत्यन्त वृद्ध था और इसके अलावा वह कपड़ा उद्योग का इन्जीनियर था और यह लाभदायक क्षेत्र नहीं था। और एक और वर्ष नष्ट हो गया! देश समस्त विध्वंसकर्त्ताओं के मुकदमे की प्रतीक्षा कर रहा था और कामरेड स्तालिन भी, लेकिन भाग्य क्राइलेंको का साथ नहीं दे रहा था और सब काम उसकी इच्छा के अनुसार नहीं हो पा रहे थे।[६] केवल १९३० की गर्मियों में ही किसी व्यक्ति ने ताप इन्जीनियरी संस्था के निदेशक रामजिन का पता लगाया अथवा उसके नाम का सुझाव दिया! उसे गिरफ्तार कर लिया गया और तीन महीने में एक शानदार नाटक तैयार और मंचित किया गया। यह हमारी न्याय व्यवस्था की सच्ची पूर्णता थी और विश्व न्याय व्यवस्था के लिए यह कभी भी पूरा न हो सकने योग्य आदर्श भी।

ढ. प्रोम पार्टी (उद्योगपार्टी) का मुकदमा—२५ नवम्बर-७ दिसम्बर १९३०

इस मुकदमे की सुनवाई सर्वोच्च न्यायालय के विशेष असेसरमण्डल के समक्ष हुई। वही वाइशिस्की अध्यक्ष न्यायाधीश था। वही एन्तोनोव सरातोवस्की था और हमारा वही प्रीतिभाजन क्राइलेंको भी।

इस बार वे "तकनीकी कारण" सामने नहीं आए, जिसके कारण पाठक को मुकदमे का स्टेनोग्राफरों द्वारा लिखित पूर्ण विवरण प्राप्त न हो पाता अथवा जिनके कारण विदेशी संवाददाताओं को अदालत में मौजूद रहने से रोका जाता।

बड़ी शानदार संकल्पना थी: राष्ट्र के समस्त उद्योग, इसकी समस्त शाखाएं और योजना संगठन, प्रतिवादियों की बेंचों पर बैठे हुए थे। (केवल उसी व्यक्ति की आंखें, जिसने इस समस्त नाटक का आयोजन किया था, उन दरारों को देख सकती थीं, जिनमें खान उद्योग और रेल परिवहन अन्तर्धान हो गए थे।) इसके साथ ही सामग्री के उपयोग में भी बड़ी कमखर्ची बरती गई थी: कुल मिलाकर ८ प्रतिवादी थे। (साख्ती के मुकदमे की गलतियों का ध्यान रखा गया था।)

आप यह कह उठेंगे: क्या आठ आदमी देश के समस्त उद्योगों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं? हां, सचमुच, ये तो हमारी आवश्यकता से भी अधिक हैं। ८ में से ३ पूरी तरह से कपड़ा उद्योग से सम्बन्धित थे, और उद्योगों की ऐसी सर्वाधिक महत्वपूर्ण शाखा का प्रतिनिधित्व करते थे, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक है। लेकिन, नि:संदेह, गवाहों की भरमार थी? इनकी संख्या ७ थी, जो स्वयं ही ठीक वैसे ही विध्वंसकारी थे, जैसे प्रतिवादी और इन्हें भी कैद कर लिया गया था। इस बात पर तो संदेह नहीं किया जा सकता कि

इन लोगों के षड्यन्त्रों का भण्डाफोड़ करने के लिए दस्तावेज़ों के अम्बार लगे होंगे ? रेखाचित्र ? योजनाओं के विवरण ? निर्देश ? परिणामों के संक्षेप ? प्रस्ताव ? बाहर भेजे जाने वाले संदेश ? निजी पत्र-व्यवहार ? नहीं, इनमें से कुछ भी नहीं ! तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि कागज़ का एक मामूली-सा टुकड़ा भी अदालत में पेश नहीं किया गया था ? जी० पी० यू० ऐसी बात कैसे होने दे सकती है ? उन लोगों ने इन सब आदमियों को गिरफ्तार किया और उनके हाथ कागज़ का एक छोटा-सा टुकड़ा भी नहीं लगा ? "नहीं बहुत से कागज़ात हाथ लगे थे" लेकिन "इन सबको नष्ट कर दिया गया ।" क्योंकि "फाइलों को रखने के लिए जगह नहीं थी ।" मुकदमे के दौरान अदालत में उन लोगों ने समाचारपत्रों में प्रकाशित कुछ लेख पेश किए। ये लेख प्रवासी रूसियों के अखबारों और स्वयं हमारे अखबारों में प्रकाशित हुए थे । लेकिन इस प्रकार इस्तगासा अपना मुकदमा अदालत में कैसे चला सकता है ? आप चिन्ता क्यों करते हैं । आखिरकार निकोलाई वासिलएविच क्राइलेंकों इस मुकदमे का संचालन कर रहा है । और यह आप निश्चयपूर्वक जानते हैं कि वह इस काम को पहली बार नहीं कर रहा था । "चाहे परिस्थितियां कुछ भी क्यों न हों, सर्वोत्तम प्रमाण प्रतिवादियों की स्वीकारोक्तियों होती हैं ।"[८]

लेकिन कैसी स्वीकारोक्तियां ! इन स्वीकारोक्तियां को बलपूर्वक नहीं कराया गया था, बल्कि इनकी प्रेरणा दी गई थी—पश्चाताप ने प्रतिवादियों के हृदय को चीरकर लम्बे-लम्बे स्वगत भाषण करा दिये थे । बातें, बातें, और अधिक बातें, आत्म-उद्घाटन और आत्म-भर्त्सना ! उन लोगों ने ६६ वर्षीय वृद्ध फेदोतोव से कहा कि वह बैठ सकता है; कि वह बहुत लम्बे से बोल रहा है । लेकिन नहीं, वह और अधिक स्पष्टीकरण और व्याख्याएं प्रस्तुत करता रहा, निरन्तर बोलता रहा । लगातार अदालत की पांच बैठकों में एक भी सवाल नहीं पूछा गया । प्रतिवादी निरन्तर बोलते रहे, निरन्तर बोलते रहे, अपनी बात को समझाते रहे और यह अनुरोध करते रहे कि उन्हें एक बार फिर बोलने का मौका दिया जाये, ताकि वे उन बातों को भी कह सकें, जिन्हें वे पहले कहना भूल गए थे । इन लोगों ने संदर्भ के रूप में, उस प्रत्येक जानकारी को स्वयं प्रस्तुत किया, जिसकी इस्तगासे को अपेक्षा थी और यह काम एक भी प्रश्न पूछे बिना हुआ । रामजिन ने, व्यापक स्पष्टीकरण देने के बाद, मुद्दे को स्पष्ट करने की दृष्टि से संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए, मानो वह मन्द बुद्धि विद्यार्थियों को कोई समस्या समझा रहा हो । सबसे अधिक प्रतिवादियों को इस बात का भय था कि उनके स्पष्टीकरण में कोई बात छूट न जाये; कि कोई व्यक्ति भण्डा फूटने से बच न जाए; कि कहीं किसी व्यक्ति के नाम का उल्लेख होने से न रह जाए; कि किसी व्यक्ति की विध्वंस करने की इच्छा स्पष्ट होने से न रह जाए । और उन लोगों ने इस प्रकार अपने ऊपर कीचड़ उछाला ! "मैं एक वर्ग शत्रु हूं !" "मुझे रिश्वत दी गई थी ।" "हमारी बुर्जुआ विचारधारा ।" और इसके बाद सरकारी वकील : "क्या यह तुम्हारी गलती थी ?" और चारणोवस्की ने उत्तर दिया : "और अपराध भी !" क्राइलेंको के लिए करने को कुछ भी नहीं था । अदालत की पांच बैठकों की पूरी अवधि में वह चाय पीता रहा, पकवान खाता रहा अथवा वे लोग उसे जो कुछ भी लाकर देते उसे जीमता रहा ।

लेकिन प्रतिवादी एक ऐसे भावनात्मक विस्फोट को किस प्रकार बर्दाश्त कर सके, निरन्तर जारी रख सके ? उनके शब्दों को संजो लेने के लिए कोई टेप रेकार्डर नहीं था । लेकिन सफाई पक्ष के वकील ओतसेत ने इस प्रकार इन शब्दों का महत्व समझाया : "प्रति-

वादियों के शब्द शुद्ध व्यापारिक तरीके से प्रवाहित हो रहे थे : शान्त और पेशेवर लोगों की तरह भावना से वंचित।" अब आप समझ गए ! स्वीकारोक्ति का ऐसा उद्रेक—और वह भी साथ-साथ शुद्ध व्यापारिक तरीके से ! भावनाविहीन ? इतना ही नहीं : उन लोगों ने अपने शब्दों की भरमार से आपूरित पश्चाताप को इतने निर्जीव ढंग से बुदबुदा कर कहा कि वाइशिस्की को अक्सर यह कहना पड़ा कि वे और अधिक जोर से और अधिक स्पष्टता से बोलें, क्योंकि उनके शब्द सुनाई नहीं पड़ रहे हैं।

सफाई पक्ष ने मुकदमे के सद्भाव और सामंजस्य में खलल नहीं डाली, और वह सरकारी वकील के सब प्रस्तावों से सहमत हो गया। सफाई पक्ष के प्रमुख वकील ने सरकारी वकील द्वारा मुकदमे का सारांश पेश करने को ऐतिहासिक बताया और स्वयं अपने विवेचन को संकीर्ण। और यह भी स्वीकार किया कि सफाई पक्ष की ओर से बोलकर उसने अपने हृदय की आवाज़ के विरुद्ध आचरण किया है; क्योंकि "एक सोवियत प्रतिवादी वकील सर्वप्रथम एक सोवियत नागरिक होता है।" और "समस्त श्रमजीवियों की तरह वह भी प्रतिवादियों के अपराध से भयंकर रूप से क्रुद्ध है।"[१] मुकदमे के दौरान सफाई पक्ष ने बहुत शर्म से भरे और अनिश्चित प्रश्न पूछे और जब कभी वाइशिस्की ने बीच में हस्तक्षेप किया, तो तुरन्त इन प्रश्नों को वापस ले लिया। वकीलों ने वास्तव में कपड़ा उद्योग के दो हानिरहित अफसरों की सफाई पेश की और प्रतिवादियों पर लगाए गए औपचारिक अभियोगों को अथवा प्रतिवादियों के कार्य के विवरण को चुनौती नहीं दी। उन्होंने बस यही पूछा कि क्या किसी प्रकार प्रतिवादी मृत्युदण्ड से बच सकते हैं। कामरेड न्यायाधीशो, अधिक उपयोगी क्या है, "इनके शव अथवा इनका श्रम ?"

...इन बुर्जुआ इंजीनियरों के अपराध कितने दूषित और दुर्गंधमय थे ? ये ऐसे ही होते हैं। इन लोगों ने विकास की गति को धीमी करने की योजना बनाई। उदाहरण के लिए इन लोगों ने प्रति वर्ष उत्पादन में केवल २० से २२ प्रतिशत वृद्धि की ही योजना बनाई, जबकि श्रमिक इसे ४० से ५० प्रतिशत तक बढ़ाने को तैयार थे। इन लोगों ने स्थानीय रूप से उपलब्ध ईंधनों के खनन की गति को धीमा कर दिया। इन लोगों ने कुजनेतस्क जलागम क्षेत्र का विकास करने में बेहद सुस्ती दिखाई। इन लोगों ने सैद्धांतिक और आर्थिक तर्कों का दुरुपयोग किया—जैसे कि नीपर बिजलीघर से दोनेत्स जलागम क्षेत्र को बिजली दी जानी चाहिए अथवा मास्को और दोनवास के बीच एक अत्यन्त विशाल ट्रंक लाईन बिछाई जानी चाहिए—उन लोगों ने यह कार्य महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान निकालने में विलम्ब करने की दृष्टि से किया। (काम रुक जाता है और इंजीनियर तर्क करते हैं !) इन लोगों ने नई इंजीनियरी योजनाओं पर विचार करना स्थगित कर दिया (अर्थात् इन लोगों ने तुरन्त उन्हें शुरू करने की अनुमति नहीं दी।) सामग्रियों के प्रतिरोध पर भाषणों में इन लोगों ने सोवियत विरोधी तर्क प्रणाली अपनाई। इन लोगों ने घिसी-पिटी मशीनें लगाई। इन लोगों ने, उदाहरण के लिए, अत्यधिक व्यवसाय और लम्बी अवधियों में तैयार होने वाली योजनाएं शुरू करके पूंजी को फंसा दिया। इन लोगों ने अनावश्यक (!) मरम्मत कराई। इन लोगों ने धातुओं का दुरुपयोग किया (कुछ खास किस्मों के लौह की कमी थी)। इन लोगों ने किसी कारखाने के विभिन्न विभागों और कच्चे माल की सप्लाई और इस माल को उद्योगों में साफ करके तैयार करने की क्षमता के बीच असंतुलन पैदा कर दिया। (यह बात विशेष रूप से कपड़ा उद्योग में उल्लेखनीय थी, जहां उन लोगों ने कपास की

फसल को साफ कर कपड़ा बनाने के लिए आवश्यक कारखानों से अधिक एक या दो कारखाने बना दिये थे।) इसके बाद ये लोग न्यूनतम से अधिकतम योजनाओं पर छलांग लगा कर जा पहुंचे। और स्पष्ट था कि उसी अभागे कपड़ा उद्योग का तेज़ी से विकास शुरू करके उसका विनाश शुरू किया गया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन लोगों ने बिजली के क्षेत्र में तोड़फोड़ की योजना बनाई, यद्यपि ऐसी किसी योजना को अमल में नहीं लाया जा सका। इस प्रकार विध्वंस की कारवाई में वास्तविक क्षति का स्वरूप ग्रहण नहीं किया, बल्कि यह कारवाई के आयोजन के क्षेत्र तक ही सीमित रही। पर इसके बावजूद इस कारवाई का उद्देश्य राष्ट्रव्यापी संकट उत्पन्न करना और १९३० में देश की पूरी अर्थव्यवस्था को ही समाप्त कर डालना था। लेकिन यह नहीं हो सका— और इसका कारण जन-समुदाय की प्रतियोगितात्मक औद्योगिक और वित्तीय योजनाएं थीं (इनमें उत्पादन के आंकड़ों को दुगना कर दिया गया था)..."हां, हां, हां," शंकालु पाठक कहना शुरू करता है।

क्या ? क्या यह तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं है ? यदि हम मुकदमे के समय, प्रत्येक मुद्दे को दोहराते हैं और इसका पांच से आठ बार तक उल्लेख करते हैं, तो संभवतः यह इतना नगण्य नहीं रह जाएगा ?

"हां, हां, हां।" इस शताब्दी के ७वें दशक का पाठक इसके बावजूद अपने दृष्टिकोण से चिपका रहता है। "क्या ये सब बातें उन प्रतियोगितात्मक औद्योगिक और वित्तीय योजनाओं के ही परिणामस्वरूप नहीं हुई ? क्या उस स्थिति में प्रत्येक वस्तु का संतुलन नहीं बिगड़ जायेगा कि मज़दूर संघ की कोई भी बैठक, राज्य योजना आयोग से परामर्श किए बिना ही, अपनी इच्छा के अनुसार अनुपात में परिवर्तन करने लगे ?"

ओह, सरकारी वकील की रोटी कड़ुवी है। आखिरकार उन लोगों ने एक-एक शब्द प्रकाशित करने का निश्चय किया था। इसका अर्थ यह था कि इसे इंजीनियर भी पढ़ेंगे। 'आपने अपना बिस्तर लगा लिया है, अब इसपर लेट जाइए।" और क्राइलेंको बड़ी निर्भयतापूर्वक इंजीनियरी मामलों के विवरणों पर सवाल पूछने और जिरह करने के लिए तत्पर था ! भारी भरकम समाचारपत्रों के भीतरी पृष्ठ और अतिरिक्त पृष्ठ तकनीकी विवरण की बारीकियों से भरे पड़े थे। विचार यह था कि इतने बड़े पैमाने पर सामग्री के प्रकाशन से पाठक अभिभूत हो उठेगा, कि उसे इस समस्त सामग्री को पढ़ने का पर्याप्त समय नहीं मिलेगा, चाहे वह अपनी पूरी संध्याएं और आराम के पूरे दिन भी इन्हें पढ़ने में क्यों न लगा दे और इस प्रकार वह पूरा विवरण नहीं पढ़ सकेगा बल्कि कुछ पैराग्राफों के बाद बार-बार आने वाली इस टेक को ही देखेगा। "हम विध्वंसक थे, विध्वंसक, विध्वंसक।"

पर कल्पना कीजिए कि कोई व्यक्ति शुरू से अन्त तक एक-एक पंक्ति पढ़ डाले ?

उस स्थिति में वह यह देखेगा कि आत्म-भर्त्सना के पर्दे के पीछे, जिस आत्मभर्त्सना को अत्यन्त अकुशलता और मूर्खता से तैयार किया गया था, लूबयांका का अजगर एक ऐसे मामले में जा फंसा है जो इसकी अपनी क्षमता, इसके अपने किस्म के काम की परिधि के बाहर है और इस अजगर के अपरिष्कृत फंदे से जो चीज़ छूटकर बाहर निकलती है, वह २०वीं शताब्दी का सशक्त पंखों वाला विचार है। हमारे सामने कैदी खड़े हैं: कठघरे में, विनम्र, कुचले हुए - लेकिन उनके विचार पंख लगाकर उड़ निकलते हैं उनकी आतंकित और थकान से पस्त जिव्हायें प्रत्येक वस्तु को उचित रूप में संबोधित करती हैं और हमें प्रत्येक वस्तु के बारे में विस्तार से बताती हैं।

...इन लोगों ने इस परिस्थिति में काम किया। कालिन्निकोव : "हां, यह निश्चय है, कि तकनीकी अविश्वास की परिस्थिति उत्पन्न कर दी गई थी।" लारिचेव "हमें चाहे आवश्यकता थी अथवा नहीं, पर हम अभी भी ४,२०,००,००० टन पेट्रोलियम उत्पन्न कर रहे थे (अर्थात् ऊपर से इतना पेट्रोलियम निकालने का हुक्म मिला था।...चाहे हम कुछ भी करते किसी भी स्थिति में ४.२ करोड़ टन पेट्रोलियम पैदा नहीं कर सकते थे।)[१०]

हमारे इंजीनियरों की उस दुखद पीढ़ी का समस्त कार्य दो ऐसी असम्भवताओं के बीच कुचल डाला गया था। ताप इंजीनियरी संस्था अपने अनुसंधान की प्रमुख उपलब्धि पर गर्व करती थी, जिसके परिणामस्वरूप ईंधन की खपत के आंकड़े में बहुत अधिक सुधार हुआ था। इस आधार पर आरम्भिक योजना में ईंधन के उत्पादन की कम आवश्यकता निर्धारित की गई थी। और इसका अर्थ था विध्वंस की कारवाई। ईंधन के साधनों में कमी करना। परिवहन योजना में उन लोगों ने यह व्यवस्था की थी कि सब माल डिब्बों में ऐसे उपकरण लगाये जायेंगे, जिनसे डिब्बे स्वचालित रूप से आपस में जुड़ जाया करेंगे। और इसका अर्थ भी विध्वंस की कारवाई था, इन लोगों ने पूंजी को फंसा दिया था। आखिरकार, स्वचालित ढंग से डिब्बों को जोड़ने के काम में समय लगता है और यह व्यवस्था करने पर जितनी पूंजी लगानी पड़ती है, उसका लाभ लम्बी अवधि में प्राप्त होता है और हम हर वस्तु, हर लाभ तत्काल चाहते हैं! इकहरी पटरी वाली रेलगाड़ियों को और अधिक कार्यकुशल बनाने के लिए उन लोगों ने रेल इंजनों और माल डिब्बों का आकार बढ़ाने का निश्चय किया। और क्या इस कार्य को आधुनिकीकरण माना गया? नहीं, यह विध्वंस की कारवाई थी। क्योंकि उस स्थिति में रेल पटरियों के नीचे के ढांचे और पुलों के ऊपर के ढांचों को मजबूत बनाने पर पूंजी लगानी पड़ती। अत्यधिक गहन आर्थिक कारणों से अमरीका में पूंजी सस्ती है और श्रम महंगा और यहां स्थिति एकदम उलटी है। अत: हमें बन्दर की तरह दूसरों की नकल नहीं करनी चाहिए। फेदोतोव ने निष्कर्ष निकाला कि अमरीका से महंगी मशीनें खरीदना हमारे लिए निरर्थक था। अगले १० वर्षों तक हमारे लिये इंगलैंड से कम विकसित मशीनें खरीदना अधिक लाभप्रद होगा और इन मशीनों में अधिक श्रमिकों को लगाना लाभदायक रहेगा; क्योंकि यह अनिवार्य था कि १० वर्ष की अवधि में उन सब वस्तुओं को बदल दिया जायेगा, जो हम खरीद चुके हैं। अतः इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमने क्या खरीदा है और इसके बाद हम अधिक महंगी मशीनें खरीद सकते हैं। तो यह कार्य भी विध्वंस की कारवाई था। कम खर्ची को कारण बताते हुए वास्तव में वह अभियोग के अनुसार, यह चाहता था कि सोवियत उद्योग में सर्वाधिक विकसित किस्म की मशीनें न लगाई जायें। इन लोगों ने वज्र कंक्रीट से नए कारखाने बनाने शुरू किए, जबकि इसके स्थान पर सस्ती सामान्य कंक्रीट का इस्तेमाल किया जा सकता था। वज्र कंक्रीट का इस्तेमाल इस आधार पर किया गया कि सौ वर्ष की अवधि में वज्र कंक्रीट से इसकी अधिक लागत से कई गुना अतिरिक्त लाभ प्राप्त होगा। तो यह भी तोड़फोड़ की कारवाई थी : पूंजी को फंसा डालना; जिस समय लोहे की कमी थी, उस समय वज्र कंक्रीट तैयार करने में लोहे की सलाखों का इस्तेमाल करना। (आखिरकार इस लोहे को किसलिए बचाकर रखना जरूरी था—नकली दांत बनाने के लिए?)

प्रतिवादियों में फेदोतोव ने सहर्ष स्वीकार किया : यदि आज सचमुच प्रत्येक कोपेक

की गणना करनी है तो इसे विध्वंस की कारवाई माना जा सकता है। अंग्रेज कहते हैं: मैं सस्ता माल खरीदने के लिए पर्याप्त अमीर नहीं हूं।

वह बड़ी मृदुता से ठोस दिमाग वाले सरकारी वकील को समझाने की कोशिश करता है: "प्रत्येक किस्म के सैद्धांतिक दृष्टिकोण ऐसे मानदण्डों को प्रस्तुत करते हैं, जो अन्तिम विश्लेषण में [विध्वंस की कारवाई...] माने जायेंगे।"[11]

ठीक है, आप ही मुझे बताइए एक भयभीत प्रतिवादी इससे अधिक स्पष्टता से और क्या कह सकता है? हमारे लिये जो सिद्धांत है, वह आपके लिए विध्वंस की कारवाई है! क्योंकि आज आप, कल का विचार किए बिना हर चीज़ को हड़प लेने के लिए बाध्य हैं।

वृद्ध फेदोतोव यह समझाने की कोशिश करता है कि पंचवर्षीय योजना की पागलपन से भरी जल्दबाजी में कहां हजारों लाखों रूबल नष्ट हुए: जिस स्थान पर कपास उगाई जाती है, वहां इसे किस्म के अनुसार अलग-अलग नहीं किया जाता ताकि प्रत्येक कारखाने को इसकी आवश्यकता के अनुसार खास किस्म की कपास दी जा सके; इसके स्थान पर इसे पुराने तरीके से ही अन्धाधुन्ध मिलाकर कारखानों को भेज दिया जाता है। लेकिन सरकारी वकील उसकी बात नहीं सुनता। पत्थर के एक खण्ड की हठधर्मिता से वह बारम्बार आता जाता है—१० बार—और बच्चों के खेल के मकान के टुकड़ों को मिलाकर, उसने जो अधिक स्पष्ट प्रश्न तैयार किये थे, उन्हें बार-बार पूछता: उन लोगों ने तथाकथित "कारखानों के महल", ऊंची-ऊंची छतों, चौड़े बरामदों और अनावश्यक रूप से अच्छे रोशनदानों वाली विशाल कारखानों की इमारतें क्यों बनानी शुरू कीं? क्या यह सर्वाधिक स्पष्ट किस्म की विध्वंस की कारवाई नहीं थी। आखिरकार इस प्रकार पूंजी स्थायी रूप से फंस जाती थी! बुर्जुआ विध्वंसकारी समझाता है कि श्रम सम्बन्धी मामलों का जनवादी कमीसार कार्यालय सर्वहारा वर्ग की भूमि में, मजदूरों के लिए ऐसे कारखाने बनाना चाहता था, जो विशाल हों और जिनमें स्वच्छ हवा आती हो। [इसका यह अर्थ है कि श्रम सम्बन्धी मामलों के जनवादी कमीसार कार्यालय में भी विध्वंसक घुसे हुए हैं। इस बात को लिख लो!] डाक्टरों ने इस बात पर जोर दिया था कि दो मंजिलों के बीच ३० फुट का फासला होना चाहिए और फेदोतोव ने इसे घटाकर २० फुट कर दिया था—तो इसे घटाकर १६ फुट क्यों नहीं किया जा सकता था? अब यह भी विध्वंस की कारवाई थी! (यदि वह इसे घटाकर १५ फुट कर देता, तो यह और भयंकर विध्वंस की कारवाई होता: वह स्वतंत्र सोवियत श्रमिकों के लिए एक पूंजीवादी कारखाने की भयावह परिस्थितियों का निर्माण करने की कोशिश करता हुआ दर्शाया जाता।) वे लोग क्राइलेंको को समझाते हैं कि पूरे कारखाने और इसमें लगने वाली मशीनों की कुल लागत की तुलना में यह अन्तर केवल तीन प्रतिशत बैठता है—लेकिन नहीं, वह बारम्बार लगातार, छतों की ऊंचाई के बारे में ही सवाल पूछता रहता है! और उन लोगों ने इतने शक्तिशाली रोशनदान लगाने का साहस कैसे दिखाया? उन लोगों ने गर्मी के मौसम के सबसे अधिक गर्म दिनों का ध्यान रखा। सबसे अधिक गर्म दिनों का ही क्यों? तो क्या हुआ! सर्वाधिक गर्म दिनों में मजदूर कुछ पसीना बहा सकते हैं!

और इस बीच: "गलत अनुपात स्वयं सिद्ध थे...'इंजीनियरों के केन्द्र' की स्थापना से पहले ही गलत संगठन यह कार्य कर चुके थे" (चारणोवस्की)।[12] "विध्वंस की गतिविधियों की आवश्यकता भी नहीं थी...बस, इतना काफी था कि आप उचित कारवाई करते रहें और शेष सब कुछ अपने आप हो जाएगा।" (एक बार फिर चारणोवस्की।)[13] वह स्वयं

को इससे अधिक स्पष्टता से व्यक्त नहीं कर सकता था। और उसने यह बात लूबयांका में अनेक महीने बिताने के बाद कही थी और वह भी एक अदालत में प्रतिवादियों की बेंच पर बैठ कर। उपयुक्त कारवाई अर्थात् मूर्खतापूर्ण कार्यों का आदेश देने वाले उच्च नेताओं के कार्य–यह पर्याप्त था : उच्च नेता जो कहते हैं, उसे करो और अकल्पनीय योजना स्वयं अपने आपको नष्ट कर डालेगी। यहां उनके ढंग की विध्वंस की कारवाई प्रस्तुत है : "हमारे पास, मान लीजिए, एक हजार टन उत्पादन की क्षमता थी और हमें हुक्म दिया गया [दूसरे शब्दों में एक मूर्खतापूर्ण योजना के माध्यम से] कि हम ३,००० टन उत्पादन करें। तो हमने इस उत्पादन के लिए कोई प्रयास नहीं किया।"[१४]...

आपको यह स्वीकार करना होगा कि उन वर्षों में स्टेनोग्राफरों द्वारा तैयार विवरण में सरकारी तौर पर, अच्छी तरह से जांच लेने के बाद, यह सब लिख दिया जाना मामूली बात नहीं है।

अनेक अवसरों पर क्राइलेंको अपने अभिनेताओं को अत्यन्त थकान भरे स्वर में बोलने के लिए बाध्य करता है, इसके लिए हमें उस मूर्खतापूर्ण प्रलाप का धन्यवाद करना चाहिए जो निरन्तर करना पड़ रहा था...यह एक ऐसे नाटक का दृश्य था, जिसमें अभिनेता, नाटक के लेखक के लिए, शर्म से मरा जा रहा हो, पर इसके बावजूद उसे अपना अभिनय करना पड़ रहा हो, ताकि वह अपनी आत्मा और शरीर को एक साथ रख सके।

क्राइलेंको; "क्या तुम सहमत हो ?"

फेदोतोव : "मैं सहमत हूं...यद्यपि मैं समझता हूं कि सामान्य रूप से..."[१५]

क्राइलेंको : "क्या तुम इस बात की पुष्टि करते हो ?"

फेदोतोव : "यदि सही ढंग से कहा जाए...तो कुछ अंशों में...और, सामान्य रूप से भी...हां।"[१६]

इंजीनियरों के लिए (जो अभी तक आजाद थे, जिन्हें अभी तक जेल में नहीं डाला गया था और जिन्हें इस मुकदमे में अपने समस्त वर्ग की इस प्रकार बदनामी के बाद भी प्रसन्नतापूर्वक काम करना था, दूसरा कोई रास्ता नहीं था। यदि वे काम करते थे, तो भी मरते थे और यदि नहीं करते थे तो भी मरते थे। यदि वे आगे बढ़ते थे, तो यह बात गलत थी। यदि वे पीछे हटते थे, तो भी यह बात गलत थी। यदि वे तेजी करते थे, तो वे विध्वंस की कारवाई के लिए जल्दबाजी दिखाते थे। यदि वे सही तरीके से विधिवत् काम करते थे, तो गति को धीमी करके विध्वंस करना उसका उद्देश्य बताया जाता था। यदि वे किसी उद्योग की किसी शाखा के विकास को अनेक कठिनाइयों के बावजूद बड़े परिश्रम से विकसित करने की कोशिश करते तो इसे जानबूझ कर विलम्ब और तोड़फोड़ की कारवाई माना जाता और यदि वे मनमाने ढंग से कार्य करते तो यह कहा जाता कि उनका उद्देश्य विध्वंस के लिए असंतुलन पैदा करना है। मरम्मत, सुधार अथवा पूंजीगत तैयारी के लिए पूंजी का उपयोग करना पूंजी को फंसा डालना बताया जाता। और यदि वे उस समय तक बिना किसी मरम्मत आदि के मशीनों आदि का इस्तेमाल होने देते जब तक ये घिसकर नष्ट न हो जातीं, तो इसे ध्यान बटाने की कारवाई कहा जाता। (इसके अलावा, पूछताछ अधिकारी इन लोगों को निरन्तर नींद से वंचित रखकर और सजा की कोठरियों में यातनाएं देकर, यह सब जानकारी प्राप्त करते और इसके बाद इन्हें बाध्य करते कि वे इस बात के विश्वास योग्य उदाहरण दें कि वे किस प्रकार विध्वंस की कारवाई कर सकते थे।)

"हमें स्पष्ट उदाहरण दो ! हमें अपनी तोड़फोड़ की गतिविधि का स्पष्ट उदाहरण बताओ !" व्यग्र क्राइलेंको इन्हें और आगे बोलने की प्रेरणा देता ।

(वे लोग आपको उत्कृष्ट उदाहरण देते, ज़रा ठहरिए ! उन वर्षों की टेक्नालॉजी के इतिहास में जल्दी ही कोई व्यक्ति उनके बारे में लिखेगा । वह आपको उदाहरण देगा और नकारात्मक उदाहरण । वह आपके लिए, मिर्गी से ग्रस्त आपकी "चार वर्षों में पंच-वर्षीय योजना" की ऐंठनों का मूल्यांकन प्रस्तुत करेगा । तब हमें पता चलेगा कि जनता की कितनी अधिक सम्पदा और शक्ति को बर्बाद किया गया था । तब हमें पता चलेगा कि किस प्रकार समस्त सर्वोत्तम योजनाओं को नष्ट कर दिया गया था, और किस प्रकार सबसे बुरी योजनाओं को अधिकतम बुरे तरीकों से पूरा किया गया था । हां, ठीक है, यदि लाल प्रहरियों की माओ त्से-तुंग वाली नस्ल मेधावी इंजीनियरों के कार्य का निरीक्षण करे, तो इससे क्या भलाई हो सकती है ? दाइलेतांत उत्साही—ये वही थे जिन लोगों ने अपने और भी अधिक मूर्ख नेताओं को इसी विनाशकारी दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया ।)

हां, पूर्ण विवरण एक कुसेवा है । न जाने क्यों, जैसे-जैसे अधिक विवरण प्राप्त होते हैं, दुष्कृत्य मृत्युदण्ड के उतने ही कम अधिकारी दिखाई पड़ने लगते हैं ।

लेकिन ज़रा एक क्षण ठहरिए ! हमें अभी तक प्रत्येक वस्तु प्राप्त नहीं हुई है । सर्वाधिक महत्वपूर्ण अपराध अभी हमारे सामने आने शेष हैं ! लीजिए ये आ गए । ये पेश हो गए । प्रत्येक निरक्षर व्यक्ति भी इन्हें समझ सकता है, इनकी थाह ले सकता है । प्रोम पार्टी ने (१) हस्तक्षेप का मार्गप्रशस्त किया; (२) साम्राज्यवादियों से पैसा लिया । (३) जासूसी की; (४) भावी सरकार में मंत्रिपदों का बटवारा किया ।

और बस काम हो गया ! सब मुंह बन्द हो गए । और वे सब लोग जो कुछ शर्तें लगाकर बातें कर रहे थे, शंका प्रकट कर रहे थे, चुप हो गए । और केवल प्रदर्शनकारियों के पांवों की आवाज़ ही सुनाई पड़ रही थी और अदालत के कमरे की खिड़की के बाहर यह गर्जना हो रही थी : "मृत्यु ! मृत्यु ! मृत्यु !"

कुछ और विस्तार से विवरण पेश करना कैसा रहेगा ? आपको और विस्तृत विवरण की क्या ज़रूरत है ? ठीक है, अगर तुम यही चाहते हो । लेकिन ये विवरण डराने वाले होंगे । ये सब लोग फ्रांस के जनरल स्टाफ के आदेशों के अन्तर्गत काम कर रहे थे । आखिरकार, फ्रांस की चिन्ताएं, अथवा कठिनाइयां अथवा स्वयं अपनी पार्टियों के संघर्ष पर्याप्त नहीं थे, उसके लिए सीटी बजाना पर्याप्त था । और बस देखिए, सैनिक डिवीजनें अभियान के लिए, कूच के लिए तैयार हो जाएंगी...। हस्तक्षेप ! पहले उन्होंने सन् १६२८ में हस्तक्षेप की योजना बनाई थी । लेकिन वे इस बात पर सहमत नहीं हो सके, वे सब कमियों और खामियों को दूर नहीं कर सके । ठीक है, तो उन्होंने इसे १६३० तक स्थगित कर दिया । लेकिन एक बार फिर वे आपस में सहमत नहीं हो सके । ठीक है, तो १६३१ में यह कारवाई होगी । और, वास्तविकता यह थी कि इस काम को इस प्रकार किया जाना था : फ्रांस लड़ाई में हिस्सा नहीं लेगा । पर इस कारवाई की व्यवस्था करने के अपने कमीशन के रूप में वह यूक्रेन का दाहिना तट ले लेगा । इंगलैंड भी, जैसाकि निश्चित था, लड़ाई में शामिल नहीं होगा । लेकिन भय फैलाने के लिये वह काला सागर और बाल्टिक सागर में अपना जहाजी बेड़ा भेजने को तैयार हो गया था—इसके बदले इंगलैंड को काकेशस का तेल मिलेगा । अधिकांशतया निम्नलिखित लोग वास्तव में युद्ध में हिस्सा लेंगे : एक लाख

प्रवासी रूसी (यह सच है कि काफी समय पहले ही वे न जाने कहां चले गए थे। लेकिन इन लोगों को तुरन्त फिर इकट्ठा कर लेने के लिए एक सीटी बजाना ही काफी होगा; पोलैंड—जिसे इस कारवाई के परिणामस्वरूप यूक्रेन का आधा हिस्सा मिलेगा रूमानिया (पहले महायुद्ध में उसे अपनी शानदार सफलताओं के कारण प्रसिद्धि मिल चुकी है—वह एक जबर्दस्त शत्रु था)। "और इसके बाद लतविया और इस्तोनिया—ये दो छोटे से देश बड़ी तत्परता से अपनी हाल में स्थापित सरकारों की समस्त चिन्ताओं को भुलाकर एकदम पूरी तरह से युद्ध में कूद पड़ेंगे।" और सबसे अधिक भयानक वस्तु प्रमुख प्रहार की दिशा थी। यह क्या बात है ? क्या पहले से ही इसकी जानकारी मिल गई थी ? हां ! इसका समारम्भ बेसअरेबिया से होगा और वहां से नीपर के दाहिने किनारे से आगे बढ़ते हुए शत्रु सीधे मास्को पहुंच जाएगा।[17] और क्या उस महत्वपूर्ण क्षण में हमारी सब रेल पटरियों को नहीं उड़ा दिया जायेगा ? नहीं, एकदम नहीं। रेलों के आने-जाने में रुकावट डाली जाएगी ! और प्रोम पार्टी बिजली घरों से बिजली के फ्यूज भी निकाल लेगी और समस्त सोवियत संघ अन्धकार के गर्त में जा गिरेगा, हमारी सब मशीनें, कपड़ा कारखानों सहित, एकदम बन्द हो जाएंगी ! और तोड़फोड़ की कारवाई की जाएगी। (प्रतिवादियो इस बात पर ध्यान दो ! तुम्हें अपने तोड़फोड़ के तरीके नहीं बताने चाहिएं, उन कारखानों का नाम भी नहीं बताना चाहिए, जिन्हें तुमने तोड़फोड़ का लक्ष्य बनाने की बात सोची थी, और न ही उन स्थानों का उल्लेख करना चाहिए—बन्द कमरे में अदालत की कारवाई शुरू होने तक यह नहीं करना चाहिए। और तुम्हें किसी भी हालत में लोगों के नाम नहीं लेने चाहिएं, चाहे वे विदेशी हों या स्वयं आपके अपने देशवासी ! इस सबके साथ कपड़ा उद्योग पर होने वाला संघातिक प्रहार भी जोड़ दीजिए, जो उस समय तक हो चुका होगा ! इसमें इस तथ्य का भी समावेश कीजिए कि तोड़फोड़ करने वाले इस समय तक बाइलो रूस में दो या तीन कपड़ा कारखाने बना चुके होंगे और ये कारखाने हस्तक्षेपवादियों की कारवाइयों का अड्डा बनेंगे।[18] कपड़ा कारखाने अपने हाथ में आ जाने के बाद, हस्तक्षेपवादी बिना किसी भय के मास्को की ओर बढ़ने लगेंगे। लेकिन इस पूरे षड्यंत्र का सबसे चतुरतापूर्ण भाग यह है : यद्यपि उन्हें यह करने में कामयाबी नहीं मिली, पर उन्होंने कुबान की दलदलों और पोलेसिए के खादर और इलमेन झील के पास की दलदल (वाईशिस्की ने प्रतिवादियों को एकदम सही-सही स्थानों के नामों का उल्लेख करने की मनाही कर दी थी, लेकिन गवाह ने यह नाम ले डाले) को सुखा डालने की योजना बनाई थी। और इस प्रकार हस्तक्षेपवादी सबसे छोटे रास्ते से अपने पांवों अथवा अपने घोड़े के खुरों को गीला किए बिना ही सीधे मास्को पहुंच जाते। (और यह काम तातारों के लिए इतना कठिन क्यों रहा ? नेपोलियन मास्को क्यों नहीं पहुंच सका। हां ! पोलेसिए और इलमेन की दलदलों के कारण। और एक बार इन दलदलों के सूख जाने पर, राजधानी खतरे से नहीं बच सकती थी।) सबसे बड़ी बात तो यह थी और इसे भुलाना नहीं चाहिए कि लकड़ी चीरने के कारखानों के बहाने से हवाई जहाज़ खड़े करने के हैंगार बनाए जा चुके थे (किन स्थानों पर इनका निर्माण हुआ था, इसका उल्लेख नहीं किया जाएगा) ताकि हस्तक्षेपवादियों के जहाज वर्षा में न भीगें और इन्हें इन हैंगारों में सुरक्षित खड़े कर दिए जाएं। हस्तक्षेपवादियों के लिए मकान भी बनाए जा चुके थे (पर स्थानों के नामों का उल्लेख न करें !) (और इससे पहले के युद्धों में रूस के विभिन्न भागों पर अधिकार करने वाले बेघर सेनाओं को कहां रखा गया

था ?) प्रतिवादियों को इन सब मामलों में दो रहस्यपूर्ण विदेशी भद्र पुरुषों पी० और आर० से निर्देश मिले थे। (उन लोगों के नामों का उल्लेख करने का बड़ी कड़ाई से निषेध किया गया था—इसी प्रकार इनके देशों के नामों का भी उल्लेख नहीं किया जा सकता था।)[१९] और अभी हाल में इन लोगों ने "लाल सेना की कुछ यूनिटों में देशद्रोह के कार्यों की तैयारी" शुरू कर दी थी। लाल सेना की उन शाखाओं, उन यूनिटों के नामों का उल्लेख न करो और उन व्यक्तियों में से किसी का नाम भी न बताओ, जो ऐसी कारवाइयों से सम्बन्धित रहे।) यह सच है, उन्होंने इनमें से कोई भी काम नहीं किया था, लेकिन यह काम करने का उनका इरादा तो था (यद्यपि उन्होंने यह भी नहीं किया था) कि किसी केन्द्रीय सैनिक संस्था में आंदोलन के लिए धन देने वालों और श्वेत सेनाओं के भूतपूर्व अफसरों की एक शाखा गठित की जाए।) अहा, श्वेत सेना! इसे लिख लीजिए, इसे लिख लीजिए! गिरफ्तारियां शुरू कर दीजिए!) और सोवियत विरोधी विद्यार्थियों की शाखाएं। (विद्यार्थी? इसे लिख लीजिए! गिरफ्तारियां शुरू कर दीजिए।)

इन बातों को आवश्यकता से अधिक आगे न बढ़ाइए। हम यह नहीं चाहते कि श्रमिक निराश हो उठें और यह सोचने लगें कि सब कुछ नष्ट होना शुरू हो गया है; कि सोवियत सरकार इसके लिए तैयार नहीं थी। और इस कारण से उन लोगों ने इस पक्ष पर काफी प्रकाश डाला : कि प्रतिवादी बहुत कुछ करना चाहते थे और बहुत कम कर पाये, कि किसी भी उद्योग को काई गम्भीर क्षति नहीं पहुंची!)

लेकिन क्या कारण था। यह हस्तक्षेप नहीं हुआ? इसके अनेक जटिल कारण थे। यह हो सकता है कि पोइनकेयर का फ्रांस में चुनाव नहीं हो सका, अथवा इस कारण से कि हमारे प्रवासी उद्योगपतियों ने यह निश्चय किया कि अभी तक बोलशेविक उनके भूतपूर्व कल-कारखानों की पर्याप्त मरम्मत नहीं कर पाये हैं—बोलशेविकों को इन्हें और सुधार लेने दीजिए। और यह भी लगता है कि पोलेंड और रूमानिया से सौदा नहीं पट सका।

तो, ठीक है, हस्तक्षेप नहीं हुआ। पर कम से कम प्रोम पार्टी तो मौजूद थी! क्या तुम्हें मार्च करने वालों के जूतों की आवाज़ सुनाई पड़ती है? क्या तुम्हें श्रमिक समुदायों की आवाज़ सुनाई पड़ती है, मृत्यु! मृत्यु! मृत्यु! ? और यह कूच करने वाले वे लोग थे "जो युद्ध होने की स्थिति में अपनी मृत्युओं और कष्टों तथा यातनाओं के माध्यम से इन लोगों के कार्यों के लिए प्रायश्चित करते।"[२०]

(और ऐसा लग रहा था, मानो उसने किसी भविष्य वक्ता की क्षमता प्राप्त कर ली हो : सचमुच अपनी मृत्यु, अपने कष्टों और यातनाओं के माध्यम से ही ये विश्वासी प्रदर्शनकारी सन् १६४१ में...इन आदमियों...के कार्यों के लिए प्रायश्चित करेंगे! सरकारी वकील महोदय, पर आपकी अंगुली किस ओर संकेत कर रही है? तुम्हारी अंगुली किस ओर संकेत कर रही है?)

तो यह पार्टी उद्योग पार्टी क्यों थी? यह पार्टी क्यों थी और इंजीनियरी तकनीकी केन्द्र क्यों नहीं था? हम लोग केन्द्र के आदी हो चुके हैं!

हां, एक केन्द्र भी था। लेकिन इन लोगों ने स्वयं को एक पार्टी के रूप में पुनर्गठित करने का निश्चय कर लिया था। यह अधिक सम्मानित लगता था। इस प्रकार भावी सरकार में, मंत्रिमण्डल में, नियुक्तियों के बारे में आसानी से लड़ाई शुरू की जा सकती थी। इस पार्टी को "सत्ता पर अधिकार के संघर्ष के उद्देश्य से इन्जीनियरी-तकनीकी समुदायों को

संगठित करना था।" और ये लोग किसके विरुद्ध संघर्ष करेंगे ? स्पष्ट हैं, अन्य पार्टियों के और श्रमजीवी किसान पार्टी—टी० के० पी०—के विरुद्ध सबसे पहले, क्योंकि आखिरकार इस पार्टी के दो लाख सदस्य थे ! दूसरे स्थान पर मेनशेविक पार्टी के विरुद्ध ! और जहां तक एक केन्द्र का प्रश्न था, यह तीनों पार्टियां मिलकर एक संयुक्त केन्द्र बनाने जा रही थीं। लेकिन जी० पी० यू० ने इन्हें नष्ट कर डाला था। "और यह एक अच्छी बात है कि उन लोगों ने हमें नष्ट कर डाला।" (सब प्रतिवादी प्रसन्न थे।)

(और स्तालिन को यह बहुत अच्छा लग रहा था कि वह तीन और पार्टियों का संहार कर रहा है। यदि इस सूची में तीन और "केन्द्रों को ज़ोड़ दिया जाता तो क्या यह बात इतनी शानदार दिखाई पड़ती ?"

और इस केन्द्र के स्थान पर पार्टी होने से एक और केन्द्रीय समिति की मौजूदगी का भी लाभ रहता था—हां, प्रोम पार्टी की अपनी केन्द्रीय समिति ! हां यह ठीक है कि इस पार्टी के सम्मेलन नहीं हुए, इसके चुनाव भी नहीं हुए। नहीं, एक चुनाव तक नहीं हुआ। जो कोई केन्द्रीय समिति का सदस्य बनना चाहता, वह अपने आप बन जाता—कुल मिला कर पांच सदस्य थे। ये पाचों एक दूसरे के लिए रास्ता छोड़ देते थे और इन सबने एक दूसरे के लिए अध्यक्ष पद भी छोड़ दिया। कभी कोई बैठक नहीं हुई—न तो केन्द्रीय समिति की। (अन्य कोई व्यक्ति इस बात को याद नहीं रखेगा, लेकिन रामजिन इस बात को भलीभांति याद रखेगा और वह नाम भी लेगा) और न ही विभिन्न उद्योगों की शाखाओं के समूहों की सदस्यों की कुछ कमी भी दिखाई पड़ी। जैसाकि चारणोवस्की ने कहा : "किसी प्रोम पार्टी का कोई औपचारिक संगठन कभी नहीं रहा।" और सदस्यों की संख्या क्या थी ? लारिचेव: "सदस्यों की गणना करना कठिन होता; ठीक, ठीक संख्या की जानकारी नहीं थी।" और इन लोगों ने अपनी विध्वंस की कारवाई कैसे की ? उन्हें निर्देश किस प्रकार प्राप्त होते थे। यह तो बस इस प्रकार होता था कि जब किसी संस्था में कोई व्यक्ति एक दूसरे से मिल जाता, तो मौलिक रूप से निर्देश दे दिए जाते। इसके बाद बस प्रत्येक व्यक्ति अपनी आत्मा की आवाज़ के अनुसार अपने तरीके से विध्वंस की कारवाई करता। (ठीक है, अब, रामजिन ने बड़े विश्वास से दो हजार सदस्यों का उल्लेख किया। और जब कभी उसने दो नाम बताये, उन्होंने पांच को गिरफ्तार किया। अदालत में पेश दस्तावेजों के अनुसार, पूरे सोवियत संघ में ३०-४० हजार इन्जीनियर थे। इसका यह अर्थ था कि वे प्रत्येक सातवें इन्जीनियर को गिरफ्तार करेंगे और शेष को आतंकित।) और श्रमजीवी किसान पार्टी से सम्पर्कों का क्या हुआ ? ठीक है, वे लोग राज्य योजना आयोग अथवा आर्थिक मामलों की सर्वोच्च परिषद् में एक दूसरे से मिल सकते थे और "गांवों के कम्युनिस्टों के विरुद्ध कारवाई करने की विधिवत् योजना बना सकते थे।"

हमने इससे पहले यह सब कहां देखा है ? ठीक है ! आइदा में। वे लोग रादामेस को अपने अभियान पर जाने के लिए विदाई दे रहे थे, बाजे बज रहे थे और वहां शिरस्त्राण-धारी आठ योद्धा हाथों में भाले लिये खड़े थे—और दो हजार अन्य योद्धाओं का चित्र पीछे लगे पर्दे पर चित्रित कर दिया गया था।

यह है आपकी प्रोम पार्टी।

लेकिन ठीक तो है। इससे काम चलता है। नाटक जारी रहता है ! (आज यह विश्वास कर पाना असम्भव है कि उस समय यह कितना गम्भीर और भयावह लग रहा

था।) और बारम्बार पुनरावृत्ति के द्वारा इसके महत्व को बढ़ाया जाता था और प्रत्येक घटना को अनेक बार दोहराया जाता था। और इस प्रकार भयंकर दृश्य और अधिक भयंकर हो उठता था। और, इसके अलावा स्थिति बहुत स्पष्ट न हो उठे, अचानक प्रतिवादी कोई अत्यन्त महत्वहीन वस्तु भूल जाते हैं अथवा वे "अपने बयान को अस्वीकार करने की कोशिश करते हैं"—लेकिन तभी तत्काल, वे लोग सवाल पूछकर विवाह कर जिरह करके उन्हें निरुत्तर बना देते हैं। और इसका समापन मास्को कला नाट्यशाला के नाटकों की तरह ही अच्छी तरह से हो जाता है।

लेकिन क्राइलेंको ने बहुत दबाव डाला। उसने प्रोम पार्टी को पूरी तरह से बेनकाब कर डालने, इसके सामाजिक आधार का रहस्योद्घाटन करने की योजना बनाई थी। यह वर्ग का प्रश्न था और यहां उसका विश्लेषण गलत नहीं हो सकता था। लेकिन क्राइलेंको ने स्तानिसलावस्की के तरीके को त्याग दिया, उसने विभिन्न प्रतिवादियों को उनकी भूमिकाएं नहीं बांटी। उसने काम चलाऊ तरीके से ही काम करना अधिक पसन्द किया। उसने प्रत्येक प्रतिवादी को अपने जीवन की कहानी सुनाने की अनुमति दी, और यह भी बताने दिया कि क्रान्ति से उसका क्या सम्बन्ध रहा था और किस प्रकार उसे विध्वंस की कारवाइयों में हिस्सा लेने के लिए तैयार किया गया।

और एक ही झटके में, इस विवेकहीन समावेश ने, इस मानवीय तस्वीर ने, इस नाटक के पांचों अंकों को नष्ट कर डाला।

हम अत्यधिक आश्चर्य से भरकर जो पहली बात बुर्जुआ बुद्धिवादी वर्ग के इन आठों बड़े आदमियों के बारे में सुनते हैं, वह यह है कि इन सबका जन्म गरीब परिवारों में हुआ था: एक किसान का बेटा; एक क्लर्क के अनेक बच्चों में से एक; एक दस्तकार का बेटा; गांव के एक अध्यापक का बेटा; फेरी लगाने वाले का बेटा। स्कूल में इन सब लोगों ने अत्यन्त गरीबी में दिन काटे और अपनी शिक्षा के लिए स्वयं धन कमाया। और इन लोगों ने १२, १३ और १४ वर्ष की उम्र से ही काम करना शुरू कर दिया था। इनमें से कुछ ट्यूशन पढ़ाते थे और कुछ रेल इन्जनों पर काम करते थे। और सबसे भयानक बात यह थी कि किसी भी व्यक्ति ने उन्हें शिक्षा प्राप्त करने से नहीं रोका इन सबने हाई स्कूल और कुछ उच्च टेक्नालॉजी संस्थाओं में पढ़ाई पूरी की और ये लोग महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध प्रोफेसर बन गए। (यह कैसे हो सकता था? वे लोग सदा हमें यह बताते थे कि ज़ारों के शासनकाल में केवल जमींदारों और पूंजीपतियों के बच्चों को ही...निश्चय ही वे प्रचारित कैलेंडर झूठ नहीं बोल सकते थे।)

और यहां, सोवियत युग में, इन्जीनियर लोग बड़ी कठिन स्थिति में फंसे हुए थे। अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिला पाना इनके लिए प्रायः असम्भव हो चुका था (यह याद रखिए कि बुद्धिवादी वर्ग के बच्चों को शिक्षा संस्थाओं में सबसे बाद में प्रवेश मिलता था!)

न्यायाधीशों ने कोई बहस नहीं की और क्राइलेको भी चुप रहा। (और स्वयं प्रतिवादियों ने ही तुरन्त यह कहा कि सामान्य और समस्त विजयों की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, उनके जीवन का विवरण महत्वहीन था।)

यहां आकर हम प्रतिवादियों को धीरे-धीरे अलग-अलग रूपों में पहचानने लगते हैं, जो अब तक प्रायः समान रूप से ही बोल रहे थे। उनकी उम्र का अन्तर भी उन्हें नैतिक निष्ठा की दृष्टि से विभाजित करता था। ६० वर्ष और उससे अधिक उम्र के प्रतिवादियों ने ऐसे

वक्तव्य किए, जिन पर मित्रतापूर्ण और सहानुभूति भरी प्रतिक्रिया हुई। लेकिन ४३ वर्षीय रामजिन और लारिचेव तथा ३६ वर्षीय ओचकिन (यह वही व्यक्ति है, जिसने सन् १६२१ में ग्लावतोप --प्रमुख ईंधन समिति—के सदस्यों के ऊपर अभियोग लगाया था) बहुत बोल रहे थे और बेशर्मी दिखा रहे थे। और प्रोम पार्टी तथा हस्तक्षेप के बारे में सब बड़ी-बड़ी बातें इन्हीं लोगों ने कहीं। रामजिन एक ऐसा व्यक्ति था, जिसे पूरा इन्जीनियरी पेशा अपने पास नहीं फटकने देता था (उसकी बहुत जल्दी और असाधारण सफलताओं के परिणामस्वरूप यह प्रतिक्रिया हुई थी और वह इसे बर्दाश्त करता रहा था। मुकदमे के दौरान वह क्राइलेंको के इशारों को समझ जाता था और स्वेच्छा से बड़ी सटीक गवाही देता था। समस्त अभियोग रामजिन की स्मृति पर आधारित थे। उसमें इतना आत्म-नियंत्रण और शक्ति थी कि वह हस्तक्षेप के बारे में (स्पष्टतया जी० पी० यू० की ओर से नियुक्त होने पर) पेरिस में सर्वाधिकारी दूत के रूप में बहुत शानदार काम कर सकता था। ओचकिन भी तेज़ी से ऊपर पहुंचने वाला आदमी था : २६ वर्ष की उम्र में ही उसे "श्रम और प्रतिरक्षा परिषद् तथा जनवादी कमीसार परिषद् का असीम विश्वास" प्राप्त हो चुका था।

लेकिन हम यही बात ६२ वर्षीय प्रोफेसर चारणोवस्की के बारे में नहीं कह सकते थे : अनाम विद्यार्थियों ने दीवारी अखबारों में उनके खिलाफ झूठी बातें लिखकर उन्हें सताया था। २३ वर्ष तक एक प्रोफेसर के रूप में काम करने के बाद उन्हें विद्यार्थियों की एक आम सभा में पेश होकर "अपने काम का ब्यौरा देने" का हुक्म दिया गया। वे उस आम सभा में नहीं गए।

और सन् १६२१ में प्रोफेसर कालिन्निकोव ने सोवियत सरकार के विरुद्ध एक खुले संघर्ष का नेतृत्व किया—इसे प्रोफेसरों की हड़ताल कहा जा सकता था। वास्तव में बात यह हुई : स्तोलिपिन के दमन के ज़माने में, मास्को उच्च टेक्नीकल स्कूल को शिक्षा सम्बन्धी मामलों में स्वायत्तता प्राप्त हो गई थी। (इसमें महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियां, रेक्टर का चुनाव आदि बातें शामिल थीं।) सन् १६२१ में इस स्कूल के प्रोफेसरों ने कालिन्निकोव को एक बार फिर रेक्टर निर्वाचित किया। लेकिन जनवादी कमीसार कार्यालय उन्हें इस पद पर नहीं देखना चाहता था और इस पद के लिए स्वयं अपना उम्मीदवार नामजद किया था। पर, इसके विरोध में प्रोफेसरों ने हड़ताल की और इस कार्य में विद्यार्थियों ने उनका समर्थन किया—और सोवियत सरकार की इच्छा के बावजूद कालिन्निकोव पूरे एक वर्ष तक रेक्टर के रूप में कार्य करते रहे। (केवल १६२२ में ही उन लोगों ने उक्त स्वायत्तता की गर्दन मरोड़ दी और इस बात की पूरी संभावना है कि उस समय भी यह काम गिरफ्तारियों के बिना नहीं हुआ होगा।)

फेदोतोव की उम्र ६६ वर्ष थी और उन्होंने रूसी समाजवादी लोकतंत्री श्रमिक पार्टी के पूरे जीवनकाल से ११ वर्ष अधिक समय तक एक कारखाना-इन्जीनियर के रूप में काम किया था। इसी पार्टी से सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म हुआ था। वे रूस की सब कताई मिलों और कपड़ा कारखानों में काम कर चुके थे। (ऐसे लोग कितने घृणायोग्य होते हैं और इनसे यथाशीघ्र छुटकारा पाना कितना वांछित होता है। सन् १६०५ में उन्होंने मोरोज़ोव कपड़ा कम्पनी के निदेशक का पद त्याग दिया और इसके साथ ही इस पद के उच्च वेतन का मोह भी छोड़ दिया। उन्होंने यह कार्य "क्रान्तिकारियों द्वारा शोक प्रदर्शन" में हिस्सा लेने के लिए किया। कज्ज़ाकों के हमलों में जो मजदूर मारे जाते थे, उनके जनाजे के पीछे

क्रान्तिकारी लोग जुलूस बनाकर चलते थे और इसे क्रान्तिकारियों द्वारा शोक प्रदर्शन कहा जाता था। और अब वे बीमार थे, उनकी नज़र बहुत कमजोर हो चुकी थी और वे इतने कमज़ोर हो चुके थे कि रात के समय नाटक देखने तक के लिए घर से नहीं निकल पाते थे।

और ऐसे लोगों ने हस्तक्षेप का संगठन किया? और आर्थिक बर्बादी का भी? अनेक वर्षों से चारणोवस्की को अपनी संध्याएं गुजारने का मौका नहीं मिल पा रहा था, क्योंकि वे अध्यापन और नए वैधानिक अनुसंधानों में अत्यन्त व्यस्त थे—वे उत्पादन संगठन विज्ञान और उत्पादन के तरीकों को अधिक प्रभावशाली बनाने के सिद्धान्तों सम्बन्धी विज्ञान के अध्ययन में बिता देते थे। [मुझे अपने बचपन के इन्जीनियरी प्रोफेसरों की याद है और वे सब लोग ऐसे ही थे] वे अपनी पूरी संध्याएं हर कक्षा के विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने में बिता देते थे और रात ११ बजे तक वे अपने परिवारों के पास वापस नहीं लौट पाते थे। आखिरकार, पांचवीं योजना के आरम्भ में पूरे देश में इन्जीनियरों की संख्या ३०,००० ही तो थी। इन सबके ऊपर काम का बेहद भार था।

और इन लोगों के मत्थे यह दोष मढ़ा जा रहा था कि इन्होंने संकट उत्पन्न किया; कि इन लोगों ने पैसे के बदले जासूसी करना स्वीकार किया?

पूरे मुकदमे के दौरान रामजिन ने केवल एक ईमानदारी की बात कही: "विध्वंस का रास्ता, इन्जीनियरी के भीतरी ढांचे से मेल नहीं खाता।"

मुकदमे की पूरी अवधि में क्राइलेंको ने प्रतिवादियों को क्षमायाचनापूर्वक यह कहने के लिए बाध्य किया कि उन्हें राजनीति के बारे में "मुश्किल से ही जानकारी है" अथवा वे राजनीति के सम्बन्ध में "अशिक्षित" हैं। आखिरकार, राजनीति धातु-कर्म विज्ञान अथवा टरबाइन का डिजाइन तैयार करने से कहीं अधिक कठिन और उच्च कोटि का कार्य है। राजनीति में आपका दिमाग आपकी मदद नहीं करता और न ही आपकी शिक्षा आपके काम आती है। सुनो! उत्तर दो! जिस समय अक्तूबर क्रांति हुई, उस समय इसके प्रति तुम्हारा क्या दृष्टिकोण था? शंकापूर्ण! दूसरे शब्दों में, तुरन्त शत्रुतापूर्ण! क्यों? क्यों? क्यों?

क्राइलेंको ने अपने सैद्धांतिक प्रश्नों से इन लोगों को बहुत सताया—पर इन प्रतिवादियों को जिन भूमिकाओं का नाटक करने का दायित्व सौंपा गया था, उसके विपरीत गलती से मानवीय कमजोरी के कारण कोई शब्द जबान से निकल जाने की वजह से, हमारे समक्ष सत्य का केन्द्र बिन्दु प्रकट हो जाता है कि वास्तव में क्या हुआ और किस प्रकार यह सारा मामला तैयार किया गया।

अक्तूबर में सत्ता पर अधिकार होने की बात को इन्जीनियरों ने एक विनाशकारी घटना ही समझा था (और तीन वर्ष से बर्बादी के अलावा अन्य कुछ हो भी नहीं रहा था)। इसके अलावा उन्होंने यह भी देखा था कि मामूली से मामूली स्वतंत्रताओं से भी वे वंचित होने जा रहे हैं। (और ये स्वतंत्रताएं फिर कभी प्राप्त नहीं हुईं।) तो यह कैसे हो सकता था कि इन्जीनियरों के मन में एक लोकतंत्री गणराज्य की स्थापना की इच्छा न होती? इन्जीनियर लोग किस प्रकार मजदूरों की तानाशाही, उद्योग में अपने अधीन काम करने वाले लोगों की तानाशाही को स्वीकार कर सकते थे, जबकि वे यह जानते थे कि ये लोग उत्पादन के भौतिक अथवा आर्थिक नियमों को नहीं समझते और न ही उन्हें इस काम का प्रशिक्षण मिला है। लेकिन अब वे सर्वोच्च पदों पर नियुक्त कर दिए गए थे और वहां से इन्जीनियरों

के काम की निगरानी कर रहे थे। इंजीनियर लोग इस बात को अधिक स्वाभाविक क्यों न मानते कि समाज में सर्वोच्च पदों पर ऐसे लोग नियुक्त हों, जो समाज की गतिविधियों का संचालन बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से कर सकें। (और केवल समाज के नैतिक नेतृत्व प्रश्न को छोड़कर क्या आज समस्त सामाजिक परिवर्तन इसी दिशा में नहीं हो रहा है? क्या यह सच नहीं है कि पेशेवर राजनीतिज्ञ, समाज की गर्दन पर निकला हुआ एक ऐसा फोड़ा है, जो इन्हें अपना सिर नहीं घुमाने देता, अपनी बांहें नहीं उठाने देता?) और इजीनियरों को राजनीतिक विचारों की क्यों मनाही होनी चाहिए? आखिरकार राजनीति तो विज्ञान तक नहीं है, बल्कि एक ऐसा प्राथमिक क्षेत्र है, जिसका विवरण किसी भी गणित उपकरण के माध्यम से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इसके अलावा यह एक ऐसा क्षेत्र भी है, जो मानव आत्मश्लाघा और विवेकहीन भावावेश से प्रभावित रहता है। (मुकदमे के दौरान भी चारणोवस्की कहते हैं: "इसके बावजूद राजनीति का कुछ सीमा तक टेक्नालॉजी की मान्यताओं के आधार पर निर्देशित होना चाहिए।")

युद्ध साम्यवाद के जंगली दबाव इन्जीनियरों के मन में केवल जुगुप्सा ही उत्पन्न कर सकते थे। एक इन्जीनियर तर्कविहीनता में हिस्सा नहीं ले सकता। और १६२० तक इनमें से अधिकांश ने कुछ भी नहीं किया, यद्यपि बर्बरता की सीमा तक इन्हें गरीबी के गर्त में धकेल दिया गया था। जब नई आर्थिक नीति का समारम्भ हुआ, तो इन्जीनियर लोग खुशी से अपने काम पर वापस लौट आए। इन लोगों ने नई आर्थिक नीति को इस बात का सूचक माना कि सरकार को होश आ गया है। लेकिन, दुर्भाग्यवश, परिस्थितियां वैसी नहीं रह गई थीं, जैसी पहले हुआ करती थीं। इन्जीनियरों को सामाजिक दृष्टि से संदेहास्पद तत्व समझा जाने लगा था। एक ऐसा तत्व, जिसे अपने बच्चों को शिक्षा देने का भी अधिकार नहीं था। उत्पादन में अपने योगदान की तुलना में इन्जीनियरों को अकल्पनीय रूप से कम वेतन दिया जाता था। यद्यपि उनके बड़े अफसर उत्पादन में सफलता और अनुशासन के पालन की मांग करते थे, पर इन्जीनियरों को अपने अधीन लोगों पर अनुशासन लागू करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। कोई भी मज़दूर किसी भी इन्जीनियर के निर्देशों का पालन करने से इन्कार ही नहीं कर सकता था, बल्कि उसका अपमान कर सकता था, यहां तक कि उसे तमाचा जमा सकता था और इसके बावजूद उसे कोई भी सज़ा नहीं दी जा सकती थी—ऐसे प्रत्येक मामले में शासक वर्ग का प्रतिनिधि अर्थात् मज़दूर सदा सही होता था।

क्राइलेंको आपत्ति उठाता है: "क्या तुम्हें ओलदेनबोरजर के मुकदमे का स्मरण है?" (दूसरे शब्दों में, हम लोगों ने किस प्रकार उसका समर्थन किया।)

फोदोतोव: "हां, उसे इन्जीनियरों की दुर्दशा की ओर कुछ ध्यान आकर्षित करने के लिए अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा।"

क्राइलेंको: (निराश होते हुए): "ठीक है, लेकिन बात इस रूप में नहीं कही गई थी।"

फेंदोतोव: "वह मर गया और मरने वाला वह एकमात्र व्यक्ति नहीं था। वह स्वेच्छा से मर गया, और अन्य अनेक को मार डाला गया।"[२१]

क्राइलेंको चुप हो गया। इसका अर्थ यह था कि यह बात सच थी। (ओलदेनबोरजर के मुकदमे के विवरण के फिर पन्ने उलटिए और ज़रा इस बात पर गौर कीजिए कि इन्जी-

नियरों को किस तरह सताया जाता था। और इस सम्बन्ध में इस अन्तिम पंक्ति का भी ध्यान रखिए : "अन्य अनेक को मार डाला गया।")

तो इस प्रकार हर बात का दोष इन्जीनियर को ही दिया जाना था, चाहे उसने कोई भी गलती न की हो। और यदि वास्तव में वह कोई गलती कर बैठा हो, और आखिरकार वह एक मनुष्य ही होता है, तो उसकी धज्जियां उड़ा दी जाएंगी। यदि उसके सहयोगी इस मामले को किसी तरह दबाये रखें, तभी वह बच सकता है। क्योंकि वह ईमानदारी को कोई महत्व नहीं देंगे। यही कारण था कि इन्जीनियरों को पार्टी के नेताओं के समक्ष झूठ बोलने के लिए कभी-कभी बाध्य होना पड़ता था!

अपनी सत्ता और सम्मान को फिर कायम करने के लिए, यह ज़रूरी था कि इन्जीनियर स्वयं संगठित हों और एक-दूसरे की मदद करें। वे सब खतरे में थे। लेकिन इन्हें किसी भी प्रकार के सम्मेलन, सदस्यता के कार्डों की ऐसी एकता के लिए आवश्यकता नहीं थी। बुद्धिमान और स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता रखने वाले लोगों के बीच जो आपसी सद्भाव और सूझबूझ होती है, वह बहुत थोड़े से और यहां तक कि संयोगवश कहे गए शब्दों के द्वारा कायम की जा सकती है। इसके लिए किसी भी प्रकार के मतदान की आवश्यकता नहीं थी। केवल संकीर्णमना लोगों को ही प्रस्तावों और पार्टी के डण्डे की ज़रूरत होती है। (और यह एक ऐसी बात थी, जिसे स्तालिन कभी नहीं समझ सकता था। पूछताछ अधिकारी भी नहीं समझ सकते थे और न ही उनके समर्थकों की पूरी भीड़। उन्हें ऐसे मानवीय सम्बन्धों का कभी अनुभव प्राप्त नहीं हुआ था। उन्होंने पार्टी के इतिहास में कभी भी ऐसी कोई चीज़ नहीं देखी थी!) खैर, रूस के इन्जीनियरों के मध्य अपने उस विशाल और निरक्षर राष्ट्र तथा क्षुद्र अत्याचारी शासकों वाले देश में यह एकता लम्बे अरसे से कायम थी। अनेक दशकों तक इस एकता को कसौटी पर कसा जा चुका था। लेकिन अब एक नई सरकार ने इस एकता का पता लगा लिया था, और भयभीत हो उठी थी।

इसके बाद १६२७ का वर्ष आया। और नई आर्थिक नीति के दौर का विवेक अन्तर्धान हो गया। और यह प्रकट हुआ कि समस्त नई आर्थिक नीति भयंकर वंचना थी। उद्योग के क्षेत्र में एक अत्यन्त लम्बी छलांग लगाने के लिए पूरी तरह से अव्यावहारिक और विशाल योजनाओं की घोषणा की गई; असम्भव योजनाएं और कार्य सौंपे गये। इन परिस्थितियों में, इन्जीनियरों की सामूहिक बुद्धिमत्ता क्या कर सकती थी—राज्य योजना आयोग और आर्थिक मामलों की सर्वोच्च परिषद् का इन्जीनियरी नेतृत्व क्या कर सकता था? इस पागलपन के सामने घुटने टेक दे? पृष्ठभूमि में बना रहे? यह करने पर उसका कुछ न बिगड़ता। कोई भी व्यक्ति कागज़ के टुकड़े पर अपनी इच्छानुसार जो आंकड़ा चाहे लिख सकता है। लेकिन हमारे कामरेडो, वास्तविक उत्पादन के हमारे सहयोगी, इन कार्यों और लक्ष्यों को पूरा नहीं कर सकेंगे। और इसका यह अभिप्राय था कि इन योजनाओं में कुछ कमी करना आवश्यक था, इनके ऊपर विवेक का अंकुश लगाना, सर्वाधिक विवेकहीन लक्ष्यों और कार्यों को पूरी तरह रद्द कर देना ज़रूरी था। यह कहा जा सकता है कि नेताओं की मूर्खताओं में सुधार करने के लिए, इन्जीनियरों को अपना राज्य योजना आयोग बनाना ज़रूरी था। और सबसे अधिक दिलचस्प बात यह थी कि यह स्वयं उनके हित में था—नेताओं के हित में था। और यह सब उद्योगों और सब लोगों के हित में भी था, क्योंकि इस प्रकार विनाशकारी निर्णयों से बचा जा सकता था और उन करोड़ों रूबलों को बचाया जा सकता है,

जिन्हें मिट्टी में फेंका जा रहा था। अच्छे किस्म का माल बनाने पर जोर देना खतरनाक बात थी—"जो टेक्नालॉजी का सार होता है"—और वह भी बड़ी मात्रा में माल बनाने, आयोजन और आवश्यकता से अधिक आयोजन के शोरगुल के बीच इस बात पर जोर देना और विद्यार्थियों के मन में यही भाव भरना उन्हें इन्हीं विचारों का पाठ पढ़ाना।

बात यही थी, यही सत्य का सच्चा लेकिन नाजुक स्वरूप था। हां, वास्तविकता यही थी।

लेकिन सन् १९३० में ऐसे विचारों को प्रकट करने का अर्थ गोली से उड़ाया जाना था।

पर इसके बावजूद भीड़ को क्रुद्ध करने के लिए यह अभी भी बहुत छोटी और अदृश्य बात थी।

अतः यह आवश्यक था कि इन्जीनियरों के मौन और लाभदायक सहयोग को भद्दे विध्वंस और हस्तक्षेप के रूप में प्रकट किया जाए।

इस प्रकार उन लोगों ने जो खाका पेशा किया, उसके मध्य भी समस्त प्रयासों के बावजूद, हमें सत्य का नग्न—और निरर्थक दर्शन हुआ। मंच निदेशक का श्रम बेकार होता हुआ दिखाई पड़ने लगा। फेदोतोव इससे पहले अपनी ८ महीने की कैद की अवधि में निद्राविहीन रातों (!) के बारे में कुछ कह गये थे; और उन्होंने जी० पी० यू० के एक ऐसे महत्वपूर्ण अफसर का उल्लेख किया था, जिसने हाल में उनसे हाथ मिलाया था (?) (तो अवश्य कोई न कोई सौदा हुआ : तुम अपनी भूमिका निभाओ और जी० पी० यू० अपने वादे पूरे करेगी?) और यहां तक कि गवाह भी, यद्यपि इनकी भूमिका बहुत कम महत्व की थी, उलझन में फंसने लगे।

क्राइलेंको : "क्या तुमने इस टोली में हिस्सा लिया?"

गवाह किरपोतेंको : "दो या तीन बार, जब हस्तक्षेप के प्रश्नों पर विचार हो रहा था।"

और बस इतना कहना काफी था!

काइलेंको (प्रोत्साहित करते हुए) : "आगे चलो।"

किरपोतेंको (थोड़ी देर मौन) : "इसके अलावा और किसी बात की जानकारी नहीं है।"

क्राइलेंको उसे औरआगे बोलने को प्रोत्साहित करता है। उसे आगे क्या कहना चाहिए इस बात का संकेत देता है।

किरपोतेंको (मूर्खतापूर्वक) : "हस्तक्षेप के अलावा मुझे और किसी बात की जानकारी नहीं है।"[२२]

इसके बाद जब कुप्रियानोव से वास्तविक मुकाबला हुआ, तो तथ्य ठीक जगह पर नहीं बैठे। क्राइलेंको नाराज हो उठा और वह अकुशल कैदियों के ऊपर बरस पड़ा :

"तो तुम लोगों को यह व्यवस्था करनी होगी कि सब लोग समान उत्तर दे सको।"

और अदालत की कारवाई स्थगित होने के समय, पर्दे के पीछे, एक बार फिर इन बातों को याद दिलाया गया। एक बार फिर सब प्रतिवादी अत्यधिक घबराहट से अपनी भूमिकाओं के अन्तर्गत कही जाने वाली बातों के संकेतों की प्रतीक्षा कर रहे थे। और क्राइलेंको ने इन आठों को एक साथ यह बताया कि उन्हें क्या कहना चाहिए था : प्रवासी उद्योग-

पतियों ने विदेश में इस आशय का एक लेख प्रकाशित किया है कि उन लोगों ने रामजिन और लारिचेव से कोई बात नहीं की और उन्हें किसी प्रोम पार्टी के बारे में कोई जानकारी नहीं है और इस बात की पूरी संभावना है कि गवाहों को यातना देकर ये बयान देने के लिए बाध्य किया गया है। ठीक है, इसके बारे में तुम लोग अदालत में क्या कहोगे?

हे भगवान! प्रतिवादी कितने क्रोधित हुए! वे लोग अपनी बारी की प्रतीक्षा किए बिना ही अदालत में बयान करने के लिए उतावले हो उठे। उस थकान भरी शांति को क्या हो गया था, जिसके द्वारा उन लोगों ने पिछले सात दिन से स्वयं अपने आपको और अपने सहयोगियों को अपमानित किया था। इन प्रवासियों के प्रति उनके क्रोध का ज्वार फट चुका था। इन लोगों ने यह अनुमति मांगी कि जी० पी० यू० के तरीकों के समर्थन में इन लोगों को समाचारपत्रों को एक लिखित घोषणा भेजने की अनुमति दी जाए। (क्या यह बढ़िया सजावट नहीं थी? क्या यह एक रत्न जैसी जगमगाहट नहीं थी?) और रामजिन ने घोषणा की: "यहां हमारी मौजूदगी इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि हम लोगों को यातनाएं और कष्ट नहीं दिए गये!" (कृपया यह भी बताइये कि उन यातनाओं का क्या लाभ जो प्रतिवादियों का अदालत में पेश होना ही असम्भव बना दें!) और फेदोतोव: "गिरफ्तारी ने, कैद में डाले जाने ने, मेरी बड़ी भलाई की और केवल मेरी ही नहीं...मैं जेल में, बाहर स्वतंत्र रहने से बेहतर अनुभव करता हूं।" और ओचकिन: "मैं भी। मुझे भी बहुत अच्छा लगता है!"

मात्र उदारतावश क्राइलेंको और वाइशिंस्की ने उनकी सामूहिक घोषणा के प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं किया। निश्चय ही वह लिखित रूप से यह घोषणा तैयार करेंगे! और वे निश्चय ही इस पर हस्ताक्षर भी करेंगे!

लेकिन हो सकता है कि अभी भी किसी के मन कहीं दुविधा का अंश छिपा हो? उस स्थिति में, कामरेड क्राइलेंको ने स्वयं अपनी शानदार तार्किकता की चमक से उन्हें आश्वस्त किया। "यदि एक क्षण के लिए हम यह स्वीकार भी कर लें कि ये लोग झूठ बोल रहे थे, तो इन लोगों को गिरफ्तार क्यों किया गया था और ये सब लोग एक साथ इस प्रकार क्यों बढ़-बढ़कर बोलने लगे?"[२३]

यह है तार्किकता की शक्ति! एक हजार वर्ष की अवधि में सरकारी वकील और अभियोक्ता कभी भी यह कल्पना नहीं कर पाये कि गिरफ्तारी का तथ्य अपने आपमें अपराध का प्रमाण बन जाता है। यदि प्रतिवादी निर्दोश होते तो उन्हें गिरफ्तार क्यों किया जाता? और एक बार जब उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तो स्पष्ट है कि वे दोषी थे!

और, सचमुच, वे लोग इस प्रकार बढ़-चढ़कर क्यों बोलने लगे?

"यातनाएं देने के प्रश्न को हम अलग उठाकर रख देते हैं!...पर आइये हमें मनोवैज्ञानिक तरीके से प्रश्न पूछना चाहिए: इन लोगों ने स्वीकारोक्ति क्यों की? और मैं आपसे पूछता हूं: इसके अलावा वे कर भी क्या सकते थे?"[२४]

वाह, कितनी सच्चाई है! कितनी मनोवैज्ञानिक दृष्टि है! यदि आपको कभी उस संस्था में सजा काटने का मौका मिला है, तो जरा याद कीजिए: वहां और किया ही जा सकता था।

(आइवानोव-राजुमनिक ने लिखा है[२५] कि सन् १९३८ में उन्हें क्राइलेंको के साथ बुत्यर्की जेल की एक ही कोठरी में कैद रखा गया था और इस कोठरी में क्राइलेंको को कैदियों

के लेटने के लिए लगे तख्तों के नीचे जगह मिली थी। मैं इस स्थिति का बड़े विस्तार से अनुमान लगा सकता हूं; क्योंकि मैं खुद इन तख्तों के नीचे घुसकर लेट चुका हूं। ये तख्ते इतने नीचे लगे होते थे कि तख्तों के नीचे तारकोल के गन्दे फर्श पर पेट के बल सरककर ही पहुंचा जा सकता था; लेकिन नए आने वाले कैदी यह काम नहीं कर पाते थे और वे अपने घुटनों और हाथों के बल चलकर इनके नीचे घुसना चाहते थे। इस प्रकार वे अपना सिर तो तख्ते के नीचे घुसा लेते थे, लेकिन उनका पिछला हिस्सा बाहर ही निकला रहता था। और यह मेरी राय है कि सर्वोच्च सरकारी वकील को स्वयं को इसके अनुरूप ढालने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा होगा और मैं यह स्पष्ट रूप से देख पाता हूं कि उसका पिछला हिस्सा, जो उस समय तक दुबला नहीं हुआ था, बाहर निकला रहता होगा और सोवियत न्याय की महानतर गरिमा का बखान करता होगा...। एक पापी होने के कारण मैं बहुत विद्वेष भावना से भरकर बाहर निकले हुए उस पिछले हिस्से की कल्पना करता हूं; और यह दृश्य मुझे इन मुकदमों के लम्बे विवरणों में कुछ संतोष प्रदान करता है।)

हां, सरकारी वकील ने व्याख्या प्रस्तुत की और उसका व्याख्या का तरीका पहले जैसा ही था। यदि यातनाओं के बारे में ये सब बातें सच थीं, तो यह समझ पाना असंभव था कि क्या बात सब प्रतिवादियों को एक स्वर से, एक-दूसरे की आवाज़ में आवाज़ मिलाकर बिना किसी तर्क और भिन्नता के स्वीकारोक्ति करने के लिए प्रेरणा देती। अन्यत्र इतना विराट सहयोग और एकरूपता कैसे प्राप्त हो सकती थी? आखिरकार, पूछताछ की अवधि में इन लोगों को एक-दूसरे से बातचीत करने, सम्पर्क करने का मौका नहीं दिया गया था।

(कुछ और पृष्ठ बाद, एक जीवित गवाह हमें यह बतायेगा कि कहां यह सहयोग और एकरूपता हो सकती थी।)

अब यह मेरा काम नहीं है कि मैं पाठक को बताऊं, बल्कि स्वयं पाठक को मुझे यह बताना चाहिए कि "चौथे दशक के मास्को के मुकदमों की" कुख्यात "पहेली" क्या थी? पहले लोग प्रोम पार्टी के मुकदमे से आश्चर्यचकित रह गए और इसके बाद इस पहेली को पार्टी के नेताओं के मुकदमों में निरुपित कर दिया गया।

आखिरकार, इन लोगों ने उन दो हजार आदमियों के ऊपर खुली अदालत में मुकदमा नहीं चलाया, जिन्हें इस पार्टी से सम्बन्धित बताया गया था। इतना ही नहीं, दो या तीन सौ लोगों पर भी नहीं, बल्कि केवल आठ लोगों पर मुकदमा चलाया गया। आठ लोगों को एक स्वर में बोलने के लिए बाध्य करना उतना मुश्किल नहीं होता और जहां तक क्राइलेंको की पसन्द का सवाल था, वह दो वर्ष की अवधि में हजारों लोगों में से जिन आदमियों को चाहे चुनने के लिए स्वतन्त्र था। पालचिंस्की से झूठी स्वीकारोक्ति नहीं कराई जा सकी थी और इन्हें गोली से उड़ा दिया गया था और उन्हें मरणोपरांत प्रोम पार्टी का नेता घोषित कर दिया गया था। मुकदमे की कारवाई में, बयानों आदि में, उन्हें इसी नाम से पुकारा गया था, यद्यपि उन्होंने कभी क्या कहा था, इस सम्बन्ध में एक शब्द भी अदालत को नहीं बताया गया। और उन्हें आशा थी कि वे मारपीट कर ख्रेन्निकोव से अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ कहलवा लेंगे। और ख्रेन्निकोव ने भी घुटने नहीं टेके। अत: मुकदमे के कागजपत्रों में केवल एक बार और वह भी पाद टिप्पणी में छोटे टाइप में उनका उल्लेख हुआ : "पूछताछ के दौरान ख्रेन्निकोव की मृत्यु हो गई थी।" तुम बेवकूफों के लिए छोटे टाइप का इस्तेमाल कर रहे हो, लेकिन कम से कम हम सच्चाई जानते हैं और हम बड़े-बड़े अक्षरों में यह

लिखेंगे **पूछताछ के दौरान यातनाओं के कारण मृत्यु** । उन्हें भी मरने के बाद प्रोम पार्टी का एक नेता बता दिया गया और उनसे कोई भी जानकारी प्राप्त नहीं हुई थी । एक स्वर में प्रतिवादी जो बयान दे रहे थे, उनमें उनकी ओर से एक शब्द भी शामिल नहीं था । क्योंकि वे एक भी बात, एक भी शब्द कहने को तैयार नहीं हुए थे ! (और तभी अचानक रामजिन आ खड़ा हुआ ! यह ज़बर्दस्त खोज थी । कैसी शक्ति और कैसी सूझबूझ थी और वह जीवित रहने के लिए कुछ भी करने को तैयार था । और क्या प्रतिभा थी ! केवल गर्मियों के अन्त में ही उसे गिरफ्तार किया गया था—मुकदमे से कुछ ही दिन पहले—और वह अपनी भूमिका को पूरी तरह निभा ही नहीं सका, बल्कि ऐसा लग रहा था, मानो यह पूरा नाटक उसी ने लिखा हो। उसने परस्पर सम्बन्धित अपार सामग्री को आत्मसात कर लिया था और वह इसे जब चाहे बड़ी सफाई से पेश कर सकता था, आप जो नाम चाहें, जो तथ्य चाहें, वह पेश कर सकता था । और यदाकदा वह एक बड़े वैज्ञानिक की लच्छेदार भाषा का भी प्रयोग करता : "प्रोम पार्टी की गतिविधि इतनी व्यापक थी कि ११ दिन चलने वाले किसी मुकदमे में भी इसे पूरे विस्तार से बताने का मौका नहीं मिल सकता ।") (दूसरे शब्दों में, जाओ और इसे देखो, और आगे देखो !) "मैं इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हूं कि इन्जीनियरी क्षेत्रों में आज भी एक छोटा सोवियत विरोधी स्तर कायम है ।" (जाओ इन्हें पकड़ लो, जाओ इन्हें गिरफ्तार कर लो, जाओ कुछ और को पकड़ लाओ !) और वह कितना योग्य था : वह यह जानता था कि यह एक पहेली थी, और एक पहेली का एक कलात्मक स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए । और, ऊन के एक गोले की भावनाहीनता से, उसने तत्काल वहीं अपने भीतर "रूसी अपराधी के उन गुणों को" खोज निकाला "जिसकी शुद्धि सब लोगों के सामने सार्वजनिक रूप से अपने अपराध को स्वीकार करने और पश्चाताप प्रकट करने से ही हो सकती है ।"[२६]

इस प्रकार यह बात सामने आती है कि क्राइलेंको और जी० पी० यू० को बस यही करना था कि सही लोगों को ढूंढ निकाला जाए । इसमें अधिक जोखिम भी नहीं थी । पूछताछ के दौरान नष्ट सामग्री को सदा कब्र में दफनाया जा सकता था । और जो व्यक्ति मारपीट और यातनाओं के बाद जीवित रह जाता और झूठी स्वीकारोक्ति करने को तैयार हो जाता, उसकी चिकित्सा की जा सकती थी, उसे खिला पिलाकर मोटा किया जा सकता है और खुली अदालत में पेश किया जा सकता था ।

तो पहेली कहां है ? इन लोगों को स्वीकारोक्तियों के लिए किस तरह तैयार किया गया ? बड़ी सीधी सादी बात है : क्या तुम जीवित रहना चाहते हो ? और जो लोग अपनी जान की परवाह नहीं करते वे अपने बच्चों अथवा बच्चों के बच्चों की चिन्ता करते हैं ।) अब आपकी समझ में आ गया कि आपको गोली से उड़वा देने के लिए प्राय: किसी प्रयास की ज़रूरत नहीं है और इस काम के लिए आपको जी० पी० यू० के अहातों से भी बाहर जाने की ज़रूरत नहीं होगी ? (और इस सम्बन्ध में ज़रा-सा भी संदेह नहीं था । जिस व्यक्ति ने अभी तक यह सबक नहीं सीख लिया था उसे लूबयांका में रहकर यह बताया जायेगा कि कैदी को किस प्रकार कुचला जाता है, किस प्रकार स्वीकारोक्ति के लिए तैयार किया जाता है ।) लेकिन यह बात आपके लिए और हमारे लिए भी उपयोगी है कि आप कुछ नाटक करें, और विशेषज्ञ होने के नाते आप लोग स्वयं इस नाटक की पाण्डुलिपि तैयार कर सकते हैं, पट कथा लिख सकते हैं और हम, सरकारी वकीलों के रूप में, इसे कंठस्थ कर

लेंगे...और हम तकनीकी शब्दों को याद रखने की कोशिश करेंगे। (मुकदमे के दौरान क्राइ-लेंको कभी-कभी गलती कर बैठता था। एक बार उसने 'माल डिब्बे का धुरा" कहा जबकि उसे "रेल इन्जन का धुरा" कहना चाहिए था।) नाटक करना अरुचिकर होगा और आपको शर्म महसूस होगी, लेकिन आपको यह तकलीफ उठानी ही होगी। आखिरकार जीवित रहना बेहतर है। और हमें यह आश्वासन कैसे प्राप्त हो, हम इस बात से कैसे आश्वस्त हों कि बाद में हमें गोली से नहीं उड़ा दिया जाएगा? हम लोग आपसे बदला क्यों लेंगे। आप लोग बहुत अच्छे विशेषज्ञ हैं और आपने कोई अपराध नहीं किए हैं और हम आपको बहुत महत्त्व देते हैं। जरा देखिए, कितने लम्बे अरसे से विध्वंस की कारवाई संबन्धी मुकदमे चल रहे थे आप लोग देखेंगे कि जिस किसी ने अच्छा आचरण किया उसे गोली से नहीं उड़ाया गया। (सहयोग करने वाले प्रतिवादियों पर दया दिखाना अगले मुकदमे की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण बात थी और इस श्रृंखला के माध्यम से स्वयं जिनोवीएव और कामेनेव तक इस आशा को पहुंचाया गया।) लेकिन आपसी समझौता यह होता है कि आपको अन्त तक हमारी सब शर्तों को पूरा करना होगा! मुकदमा समाजवादी समाज की भलाई के लिए होना चाहिए।

और प्रतिवादी सब शर्तों को पूरा करेंगे।

इस प्रकार उन लोगों ने इन्जीनियरों के बौद्धिक विरोध की समस्त चतुरताओं और सूक्ष्मताओं को इतने निचले स्तर की गन्दी विध्वंस की कारवाई में बदल दिया, ताकि इसे देश का निरक्षरतम व्यक्ति आसानी से समझ सके। (लेकिन अभी तक ये लोग इतने नीचे नहीं गिरे थे कि श्रमिकों के भोजन में पिसा हुआ कांच मिलाने लगें। सरकारी वकीलों के दिमाग में अभी यह बात नहीं आ पाई थी।)

एक और विषय विचारधारा सम्बन्धी प्रेरणा होता था। क्या उन्होंने विध्वंस करना शुरू कर दिया था? यह शत्रुतापूर्ण भावनाओं की प्रेरणा का परिणाम था और अब वे स्वीकारोक्ति करने में एक साथ मिलकर सहयोग कर रहे थे? यह बात भी विचारधारा सम्बन्धी प्रेरणा का परिणाम थी, क्योंकि इन्हें जेल में, पंचवर्षीय योजना के तीसरे वर्ष के आग की लपट की तरह प्रज्ज्वलित धमन भट्टी जैसे चेहरे में एक बार फिर बदल दिया था! यद्यपि अपने अन्तिम शब्दों में इन लोगों ने अपने प्राणों की भीख मांगी, लेकिन यह प्रमुख विषय नहीं था। (फेंदोतोव : "हमारे लिए क्षमादान का प्रश्न ही नहीं उठता। सरकारी वकील सही कहते हैं।") उस क्षण मृत्यु के द्वार पर खड़े उन विचित्र प्रतिवादियों के लिए प्रमुख बात यह थी कि वे लोगों को और समस्त संसार को सोवियत सरकार के कभी भी असफल न होने और दूरदर्शिता से आश्वस्त करें। रामजिन ने विशेष रूप से "सर्वहारा जन-समुदायों और उनके नेताओं की क्रान्तिकारी चेतना" की महिमा का बखान किया जो "आर्थिक नीति के अकल्पनीय रूप से अधिक भरोसे योग्य मार्गों का अनुसंधान करने में सफल हुए हैं।" जबकि यह सफलता वैज्ञानिकों को नहीं मिली। इन्हीं सर्वहारा जन समुदायों और उनके नेताओं ने आर्थिक विकास की दर का कहीं अधिक सही तरीके से मूल्यांकन और निर्धा-रण किया। और इसके बाद : "अब मेरी समझ में यह आ गया कि लम्बी छलांग लगाना आवश्यक था, बहुत तेजी से आगे बढ़ना आवश्यक था, यह भी आवश्यक था कि हम धावा बोलकर तुरन्त अपने लक्ष्य पर जा पहुंचे, आदि, आदि। और लारिचेव ने घोषणा की "सोवि-यत संघ कमजोर होते जा रहे पूंजीवादी संसार के समक्ष अजय है।" और कालिन्निकोव

प्रमाण और स्पष्टीकरण प्राप्त होता है।

इस प्रकार "अखिल संघ कार्यालय" को जन्म दिया गया जबकि इसका अस्तित्व तक नहीं था? जी० पी० यू० को एक काम सौंपा गया था: उनसे कहा गया था कि वे यह प्रमाणित करें कि मेनशेविक बहुत चालाकी से क्रांति विरोधी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बहुत से महत्वपूर्ण सरकारी पदों में घुस आए हैं। वास्तविक स्थिति इस योजना से मेल नहीं खाती थी। कोई भी सच्चा मेनशेविक किसी भी महत्वपूर्ण पद पर नहीं था। पर इसी प्रकार कोई भी सच्चा मेनशेविक इस मुकदमे में अभियुक्त के रूप में भी पेश नहीं किया गया था। (यह सच है, कि वे कहते हैं कि वी० के० आइकोव मेनशेविकों के शान्त, निरर्थक और गैर-कानूनी मास्को कार्यालय का सदस्य था—लेकिन मुकदमे के समय उन लोगों को इस बात की जानकारी नहीं थी। उसे दूसरे दर्जे के नेताओं में रखा गया था और केवल ८ साल की ही सजा सुनाई गई थी।) जी० पी० यू० ने कुछ और ही सोच रखा था: आर्थिक मामलों की सर्वोच्च परिषद् से दो, व्यापार सम्बन्धी मामलों के जनवादी कमीसार कार्यालय से दो, स्टेट बैंक के दो, केन्द्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ से एक, राज्य योजना आयोग से एक, व्यक्तियों को मुकदमे में अभियुक्त के रूप में पेश किया जाए। (यह भी कितनी ऊबा देने वाली और मौलिकता से वंचित योजना है। सन् १९२० में भी, उन लोगों ने आदेश दिया था कि "समर नीति केन्द्र" के मामले में पुर्नजन्म संघ से दो, सार्वजनिक व्यक्तियों की परिषद् से दो, अमुक संगठन से दो, इस संगठन से दो आदि लोगों को मुकदमे में पेश किया जाए) इस प्रकार उन लोगों ने ऐसे व्यक्तियों को चुन लिया जो अपने पदों के कारण उनकी योजना में सहायक बन सकते थे। और यह बात कि वे मेनशेविक थे अथवा नहीं इस बात पर निर्भर करती थी कि कोई व्यक्ति अफवाहों पर विश्वास करता है अथवा नहीं। इस तरीके से गिरफ्त में आए लोगों में से कुछ किसी भी रूप में मेनशेविक नहीं थे, लेकिन उन लोगों को मेनशेविक मान लेने के निर्देश दे दिये गए थे। अभियुक्तों के सच्चे राजनीतिक विचारों में जी० पी० यू० को जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। सब प्रतिवादी एक-दूसरे को जानते ही नहीं थे। और उन लोगों ने मेनशेविक गवाहों को भी हर सम्भव स्थान से बटोर लिया।[३३] (बाद में सब गवाहों को, बिना किसी अपवाद के, जेल की सज़ाएं सुना दी गई।) रामजिन ने इस मुकदमे में भी खूब बढ़ चढ़कर और जी० पी० यू० की इच्छा के अनुसार बयान दिए। लेकिन जी० पी० यू० ने इस मुकदमे के प्रमुख प्रतिवादी, व्लादिमिर गुस्तावोविच ग्रोमन के ऊपर अपनी आशाएं केन्द्रित कर रखी थीं (उनका यह विचार था कि वह इस पूरे मामले को तैयार करने में सहायता देगा और इसके बदले उसे क्षमादान दे दिया जाएगा) और भड़काने की कारवाई करने वाले पेतुनिन के ऊपर भी उन्हें बहुत भरोसा था। (मैं ये सब बातें याकूबोविच की रिपोर्ट के आधार पर कह रहा हूं।)

आइए अब हम एम० पी० याकूबोविच का परिचय दें। उन्होंने इतनी कम उम्र में अपनी क्रांतिकारी गतिविधियां शुरू कर दी थीं कि वह अपनी आरम्भिक शिक्षा भी पूरी नहीं कर पाये थे। मार्च १९१७ में वे स्मोलेन्स्क सोवियत के अध्यक्ष बन चुके थे। अपनी आस्थाओं की शक्ति से प्रेरित होकर, जो सदा उनका मार्गदर्शन करती रही वह प्रभावशाली और सफल वक्ता बन गए। पश्चिमी मोर्चे के सम्मेलन में, उन्होंने अत्यन्त क्रोध से उन पत्रकारों को जनता का शत्रु बताया, जो युद्ध को जारी रखने की मांग कर रहे थे। और यह बात अप्रैल १९१७ की है। उन्हें इस कथन के बाद मंच से प्रायः नीचे घसीट लिया गया और उन्होंने

क्षमा मांगी, लेकिन इसके बाद उन्होंने इतनी कुशलता से अपना भाषण किया और अपने श्रोताओं को इस प्रकार जीत लिया कि अन्त में उन्होंने एक बार फिर उन्हें जनता का शत्रु बताया और इस बार श्रोता समुदाय ताली बजा कर हर्षध्वनि करने लगा। पेत्रोग्राद सोवियत को भेजे गए प्रतिनिधि मंडल का उन्हें सदस्य चुना गया और वे मुश्किल से ही पेत्रोग्राद पहुंचे थे कि उन्हें—उन दिनों की अनौपचारिकता से—पेत्रोग्राद सोवियत के सैनिक आयोग का सदस्य नियुक्त कर दिया गया। यहां उन्होंने सेना के कमीसारों की नियुक्ति पर बहुत गहरा प्रभाव डाला[14] और अन्ततः वे स्वयं दक्षिण पश्चिमी मोर्चे के एक सैनिक कमीसार बन गए और उन्होंने विनित्सा में स्वयं अपने हाथों से (कोर्निलोव के विद्रोह के बाद) देनिकिन को गिरफ्तार किया और सचमुच इस बात पर (मुकदमे के दौरान भी) अत्यन्त खेद प्रकट किया कि उन्होंने उसे वहीं तत्काल गोली से उड़ा दिया था।

स्पष्ट विचारों वाले, सदा निष्ठावान और सदा पूरी तरह से अपने विचारों में खोये रहने वाले याकूबोविच—चाहे यह विचार सही होते अथवा गलत—मेनशेविक पार्टी के युवक सदस्यों में गिने जाते थे। पर इसके बावजूद वे अत्यधिक साहस और भावावेश से मेनशेविक पार्टी के बड़े नेताओं के समक्ष अपनी योजनाएं प्रस्तुत करते थे। एक ऐसी ही योजना उन्होंने सन् १६१७ की वसन्त ऋतु में पेश की और समाजवादी लोकतंत्रीय सरकार की स्थापना का प्रस्ताव किया। सन् १६१६ में उन्होंने यह सुझाव दिया कि मेनशेविकों को कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल में शामिल हो जाना चाहिये। (दान और अन्य सब नेताओं ने सदा उनकी इन योजनाओं और इनके विभिन्न स्वरूपों को अस्वीकार किया और वह भी बड़ी सूझबूझ और कृपा भाव से।) जुलाई १६१७ में उन्हें समाजवादी पेत्रोग्राद सोवियत की इस कारवाई से अत्यन्त कष्ट पहुंचा कि सोवियत ने अस्थाई सरकार द्वारा अन्य समाजवादियों के विरुद्ध प्रयोग के लिए सैनिक टुकड़ियां बुलाने को अपना समर्थन दिया था। उन्होंने इसे एक घातक गलती बताया यद्यपि ये दूसरे समाजवादी स्वयं बलप्रयोग कर रहे थे। जैसे ही अक्तूबर में बोलशेविकों ने सत्ता हथियाई, याकूबोविच ने अपनी पार्टी से प्रस्ताव किया कि उसे बोलशेविकों को अपना पूरा समर्थन देना चाहिए और वे जिस राज्य के ढांचे का निर्माण कर रहे हैं उसे और बेहतर बनाने के लिए काम करना चाहिए, इसके परिणामस्वरूप अन्ततः मारतोव ने उन्हें पार्टी से बहिष्कृत कर दिया और सन् १६२० तक उन्होंने सदा सर्वदा के लिए मेनशेविकों से विदा ले ली। क्योंकि वे इस बात से आश्वस्त हो गए थे कि वे उन्हें बोलशेविकों के मार्ग का अनुसरण करने के लिए तैयार नहीं कर सकेंगे।

मैंने यह सब विवरण यह स्पष्ट करने के लिए प्रस्तुत किए हैं कि क्रांति की पूरी अवधि में याकूबोविच मेनशेविक नहीं थे बल्कि बोलशेविक थे और वे पूरी तरह से निष्ठावान थे और अपने स्वार्थ साधन की बात नहीं सोच रहे थे। सन् १६२० में भी वे भोजन का सप्लाई सम्बन्धी विभाग के समोलेन्स्क में कमीसार थे और वे एकमात्र ऐसे कमीसार थे जो बोलशेविक पार्टी का सदस्य नहीं था। भोजन की सप्लाई सम्बन्धी मामलों के जनवादी कमीसार कार्यालय ने उन्हें सर्वोत्तम कमीसार बताकर सम्मानित भी किया था। (उनका दावा है कि वे किसानों के विरुद्ध प्रतिशोध की कारवाई किए बिना ही अपना काम करने में सफल रहे थे। लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि उनकी यह बात सच है अथवा नहीं। पर उन्होंने अपने मुकदमे के समय यह बात कही थी कि उन्होंने "सट्टेबाजों के खिलाफ कारवाई" करने के लिए टुकड़ियों का गठन किया था।) तीसरे दशक में उन्होंने तोरगोवाया गजेता (व्यापार

गजट) का सम्पादन किया था और अन्य महत्वपूर्ण पदों पर भी रहे थे। सन् १९३० में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। उनके जैसे मेनशेविकों को "जो भीतर घुस आये थे" जी० पी० यू० की योजनाओं के अनुसार गिरफ्तार करना शुरू कर दिया गया था।

क्राइलेंको ने उन्हें तुरन्त जांच पड़ताल के लिए बुला लिया था और आप जानते ही हैं कि क्राइलेंको ने इससे पहले भी और सदा, आरम्भिक जांच की गड़बड़ को कार्य-कुशलतापूर्ण पूछताछ में बदल देने का काम किया था। यह बात स्पष्ट थी कि वे एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह जानते थे। क्योंकि पहले मुकदमों के बीच के वर्षों में क्राइलेंको अनाज आदि की वसूली के काम में सुधार करने के लिए उसी स्मोलेंस्क प्रान्त में गया था। और अब क्राइलेंको ने यह कहा :

"माइखेल पेत्रोविच, में आपसे बहुत स्पष्ट रूप से बात करना चाहता हूं : मैं आप को एक कम्युनिस्ट मानता हूं ! उसके शब्दों ने याकूबोविच का उत्साह बढ़ाया और उसका मनोबल ऊंचा किया। मुझे आपके निर्दोष होने में जरा भी संदेह नहीं है लेकिन हमारा, आपका और मेरा, पार्टी के प्रति यह कर्तव्य है कि हम इस मुकदमे को चलाएं। क्राइलेंको को स्तालिन से आदेश प्राप्त हुए थे और याकूबोविच उद्देश्य के लिए काम करने की कल्पना से भावावेश में बह चुका था और वह एक ऐसे अत्यन्त उत्साही घोड़े के रूप में काम कर रहा था, जो जूए के नीचे अपना सिर डाल देता है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप हर सम्भव तरीके से मेरी सहायता करें और इस्तगासे को पूछताछ में सहायता पहुंचाएं। यदि मुकदमे के दौरान कोई अकल्पित कठिनाइयां सामने आईं, तो सर्वाधिक कठिन क्षणों में मैं अदालत के अध्यक्ष से आपको अदालत में बोलने का अवसर देने को कहूंगा।"

! ! ! !

और याकूबोविच ने वचन दिया। अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहते हुए उन्होंने वचन दिया। वस्तुतः, इससे पहले सोवियत सरकार ने उन्हें इतना अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण काम कभी नहीं सौंपा था।

अत: पूछताछ की अवधि में याकूबोविच के शरीर का स्पर्श तक करने की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन यह बात जी० पी० यू० के लिए आवश्यकता से अधिक सूक्ष्म थी। अन्य प्रत्येक कैदी की तरह याकूबोविच को भी कसाई-पूछताछ अधिकारियों के हवाले किया गया, और उन्होंने याकूबोविच को भरपूर मजा चखाया—बर्फ की ठण्डक से जमी हुई सजा की कोठरी, अत्यन्त गरम सन्दूक, गुप्तांगों पर प्रहार। उन्होंने याकूबोविच को इतनी उग्रता से यातनाएं दीं कि याकूबोविच और उनके साथी प्रतिवादी एब्राम जिम्जबर्ग ने और कोई रास्ता न देखकर अपनी नसें काट डालीं। डाक्टरी चिकित्सा के बाद, उन लोगों को यातनाएं नहीं दी गईं, मारा पीटा नहीं गया। इसके स्थान पर, केवल उन्हें दो सप्ताह तक सोने नहीं दिया गया। (याकूबोविच कहते हैं : "बस, सोने की अनुमति मिल जाये ! इसके बाद आत्मा की आवाज़ अथवा सम्मान का कोई महत्व नहीं रह जाता।" और इसके बाद उनका सामना उन अन्य लोगों से कराया गया जो पहले ही घुटने टेक चुके थे और जिन्होंने उनसे स्वीकारोक्ति करने को कहा...मूर्खतापूर्ण बातें कहने को कहा। और स्वयं पूछताछ अधिकारी, इलैक्सेई इलैक्सियेविच नासेदकिन बोला : "में जानता हूं, मैं जानता हूं। इनमें से कुछ भी वास्तव में नहीं हुआ लेकिन वे लोग यही कहलवाने पर जोर देते हैं !"

एक अवसर पर जब याकूबोविच को पूछताछ के लिए बुलाया गया तो उनकी मुला-

कात एक एक ऐसे कैदी से हुई जिसे यातनाएं दी गई थीं। पूछताछ अधिकारी ने मुस्कराते हुए कहा : "मोईसेई आइसायाविच तीतेलवाम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप उन्हें अपने सोवियत विरोधी संगठन में शामिल कर लें। आप जितना खुलकर बात करना चाहें कर सकते हैं। मैं कुछ देर के लिए बाहर जा रहा हूं।" वह बाहर चला गया। सचमुच तीतेलवाम ने उनसे प्रार्थना की : "कामरेड याकूबोविच ! मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप कृपा करके मुझे अपने मेनशेविकों के अखिल संघ कार्यालय का सदस्य बना लें ! वे लोग मेरे ऊपर "विदेशी कम्पनियों से रिश्वत लेने" का अभियोग लगा रहे हैं और मुझे मृत्युदण्ड देने की धमकी दे रहे हैं। लेकिन मैं एक सामान्य अपराधी से बेहतर क्रांति विरोधी के रूप में मरना पसन्द करूंगा। (इस बात की भी संभावना थी कि उन्होंने उसे यह विश्वास दिलाया हो कि एक क्रांति विरोधी के रूप में उसे गोली से नहीं उड़ाया जाएगा और वह इस बात में गलत भी नहीं था। उन्होंने उसे बच्चों को मिलने वाली कैद की सजा सुनाई "पंजा"। जी० पी० यू० के पास मेनशेविकों की इतनी कमी थी कि उन्होंने स्वयंसेवकों के रूप में प्रतिवादियों को भर्ती करना पड़ा ! (और आखिरकार तीतेलवाम को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जा रहा था—विदेशों में रहने वाले मेनशेविक और दूसरे इण्टरनेशनल से सम्पर्क के लिए ! लेकिन उन लोगों ने उससे जो सौदेबाजी की थी उसे बड़ी ईमानदारी से उसे पूरा किया—उसे सिर्फ पांच साल की सजा दी गई।) और पूछताछ अफसर की सहमति से याकूबोविच ने तीतेलवाम को अखिल संघ कार्यालय के सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया।

मुकदमा शुरू होने से कई दिन पहले मेनशेविकों के अखिल संघ कार्यालय का पहला संगठनात्मक अधिवेशन वरिष्ठ पूछताछ अधिकारी, दमित्री मातवेएविच दमित्रीएव के कमरे में हुआ ताकि सब बातों में समन्वय स्थापित किया जा सके और प्रत्येक व्यक्ति अपनी भूमिका को अधिक बेहतर ढंग से समझ सके। (इसी प्रकार प्रोम पार्टी की केन्द्रीय समिति की भी बैठक हुई थी। यही वह स्थान था, जहां क्राइलेंको के आरम्भिक संकेतात्मक प्रश्नों का जवाब देने के लिए प्रतिवादी "एक-दूसरे से मिले होंगे।") लेकिन झूठ का इतना बड़ा पहाड़ लगा दिया गया था कि एक अधिवेशन में इतनी जानकारी को आतमसात कर पाना अत्यन्त कठिन था और इसमें हिस्सा लेने वाले अनेक बातों में उलझ जाते थे। एक पूर्वाभ्यास में इस पर पूरा अधिकार नहीं कर पा रहे थे। अतः उन्हें एक और बैठक के लिए जमा किया गया।

मुकदमे के लिए अदालत में पेश होते समय याकूबोविच क्या अनुभव कर रहे थे क्या उन्हें उन सब यातनाओं का बदला लेने के लिए जो उन्हें दी गई थीं, क्या उस झूठ से छुटकारा पाने के लिए जो उनके हृदय में कूट-कूटकर भर दिया गया था, उन्हें बदला नहीं लेना चाहिए था, एक सनसनीखेज प्रवाद उत्पन्न नहीं कर देना चाहिए था और संसार को अचम्भे में नहीं डाल देना चाहिए था ? पर इसके बावजूद :

१-यह करने का अर्थ सोवियत सरकार की पीठ में छुरा घोंपना होता ! अपने समस्त जीवन के उद्देश्य को नकार देना होता। वे जीवन में जिस प्रत्येक वस्तु के लिए जीवित रहे उन्होंने गलत मेनशेविकवाद से स्वयं को अलग कर लेने के लिए जीवन भर जो रास्ता अपनाया और सही विचारों वाला बोलशेविक बनने का जो उन्होंने प्रयास किया वह सब व्यर्थ हो जाता।

२-इस प्रकार पूरे मामले का पर्दाफाश कर देने के बाद वे उन्हें मरने नहीं देते; वे उन्हें बस गोली से नहीं उड़ा देते; वे उन्हें एक बार फिर यातनाएं देते और इस बार भयंकर बदले की भावना से प्रेरित होकर और उन्हें पागल कर डालते। लेकिन उनका शरीर पहले ही यातनाओं से जर्जर हो चुका था। और नई यातनाओं को सहन करने के लिए वे कहां से नैतिक शक्ति बटोर पाते ? वे इसके लिए आवश्यक वीरता कहां से खोज निकालते ?

(मैंने उस समय उनके यह तर्क लिखे, जब उनके मुंह से भयंकर क्रोध से भरकर शब्द निकल रहे थे—क्योंकि यह कहा जा सकता है कि किसी ऐसे मुकदमे में हिस्सा लेने वाले लोगों का "मरणोपरांत स्पष्टीकरण प्राप्त करने का असाधारणतम अवसर था। और मुझे लगा कि बुखारिन अथवा राइकोव मुकदमों के समय स्वयं अपनी रहस्यपूर्ण विनम्रता के कारण समझा रहे हों। उन्होंने भी इसी निष्ठा और ईमानदारी से पार्टी के प्रति ऐसे ही लगाव से, ऐसी ही मानवीय कमजोरी से, डटकर मुकाबला करने के लिए नैतिक शक्ति के इसी प्रकार अभाव के कारण यह आचरण किया था। उन्होंने इस कारण से यह आचरण किया था क्योंकि उनकी कोई अपनी अलग व्यक्तिगत स्थिति अथवा मान्यता नहीं थी।)

और मुकदमे के समय याकूबोविच ने बड़ी आज्ञाकारिता से केवल उन समस्त झूठी बातों को ही नहीं दोहराया जो स्तालिन की कल्पनाशीलता की सर्वोच्च सीमा थी—और उसके शिक्षार्थियों तथा यातनाग्रस्त प्रतिवादियों की कल्पनाशीलता की भी अन्तिम सीमा थी। लेकिन उन्होंने अपनी प्रेरणायुक्त भूमिका भी निभाई, जिसका वचन उन्होंने क्राइलेंको को दिया था।

मेनशेविकों के तथाकथित विदेश प्रतिनिधिमण्डल ने—वास्तव में उनकी केन्द्रीय समिति के सब बड़े नेताओं ने—औपचारिक रूप से एक वक्तव्य जारी कर जो वोरवार्ट्स में प्रकाशित हुआ था, प्रतिवादियों से अपना सम्बन्ध पूरी तरह तोड़ लिया। उन लोगों ने घोषणा की कि यह मुकदमा एक शर्मनाक झूठ है। इसे भड़काने की कारवाई के लिए नियुक्त एजेंटों और उन अभागे प्रतिवादियों की गवाही पर आधारित किया गया है, जिन्हें आतंक के बल पर यह सब बातें कहने के लिए बाध्य किया गया है; कि प्रतिवादियों में से अधिकांश १० वर्ष से अधिक समय पहले ही पार्टी छोड़ गये थे और फिर कभी वापस नहीं लौटे; कि मुकदमे के समय जितनी बड़ी धनराशियों का उल्लेख किया गया है उतनी धनराशि कभी भी पार्टी को प्राप्त नहीं हुई।

और यह लेख पढ़ लेने के बाद क्राइलेंको ने शवेरनिक से कहा कि वह प्रतिवादियों को इसका उत्तर देने की अनुमति दें—यह वही तरीका था जो उसने प्रोम पार्टी के मुकदमे के समय अपनाया था। इस तरीके के अन्तर्गत उसने एक साथ सब कठपुतलियों की डोर खींची थी। सब प्रतिवादी एक साथ बोल उठे और इन सब लोगों ने मेनशेविक केन्द्रीय समिति के विरुद्ध इस्तेमाल किए गए जी० पी० यू० के तरीकों का समर्थन किया।

लेकिन आज याकूबोविच को अपने "उत्तर" और अन्तिम भाषण के बारे में क्या स्मरण है ? उन्हें यह याद है कि वे केवल उसी रूप में नहीं बोले जो क्राइलेंको को दिए गए वचन के अनुरूप था, बल्कि स्वयं अपने पांवों पर खड़े होने के स्थान पर उन्हें पकड़कर खड़ा किया गया, लहर पर डूबते उतराते लकड़ी के टुकड़े की तरह। और वह लहर, जिसने उन्हें इस प्रकार अपनी गिरफ्त में लेकर ऊपर उछाल दिया था, वह क्रोध और वक्तुत्व शक्ति का उफान था। किसके विरुद्ध क्रोध ? यह जान लेने के बाद कि यातना क्या होती है, और

एक से अधिक बार आत्महत्या करने का प्रयास करने और मौत के समीप पहुंच जाने के बाद, वह इस समय सचमुच ईमानदारी से भरे क्रोध से पागल थे। लेकिन यह क्रोध सरकारी वकील अथवा जी० पी० यू० के विरुद्ध नहीं था। ओह, नहीं! यह क्रोध मेनशेविकों के विदेश स्थित प्रतिनिधिमण्डल के ऊपर बरस रहा था!!! अब आपके समक्ष एक मनोवैज्ञानिक रूपांतर उपस्थित है। वहां वे लोग, बिना किसी चिन्ता के आराम से, सुरक्षा से, बैठे हुए हैं—क्योंकि लूबयांका की तुलना में प्रवासी रूसी की गरीबी भी सचमुच बहुत बड़ा आराम थी। और वे लोग उन लोगों पर दया दिखाने से कैसे इन्कार कर सकते थे, जिनके ऊपर मुकदमा चलाया जा रहा था, जिन्हें यातनाएं दी गई थीं जिन्हें अपार कष्ट सहने पड़े थे? वे लोग इतनी विवेकहीनता से स्वयं को उन लोगों से कैसे अलग कर सकते थे और इन अभागे लोगों को अपने भाग्य के भरोसे कैसे छोड़ सकते थे? याकूबोविच ने इसका जो उत्तर दिया वह बड़ा प्रभावशाली था और जिन लोगों ने मुकदमे का नाटक तैयार किया था वे खुशी से झूम उठे।)

जिस समय याकूबोविच १९६७ में यह बता रहे थे उस समय भी विदेश स्थित मेनशेविक प्रतिनिधिमण्डल, उनके विश्वासघात, उनके प्रतिवादियों से अपना सम्बन्ध तोड़ लेने, समाजवादी क्रांति के प्रति उनके विश्वासघात की बात पर वे उसी प्रकार क्रोध से कांप रहे थे जिस क्रोध से भरकर उन्होंने सन् १९१७ में मेनशेविकों को भला बुरा कहा था।

उस समय मेरे पास मुकदमे का स्टेनोग्राफरों द्वारा लिखित विवरण नहीं था। बाद में मुझे यह प्राप्त हुआ और मैं आश्चर्यचकित रह गया। इस सम्बन्ध में याकूबोविच की स्मृति ने उन्हें धोखा दे दिया था—जो अन्यथा छोटे से छोटे विवरण, प्रत्येक तारीख और प्रत्येक नाम के बारे में कितनी सही थी। आखिरकार अदालत में उन्होंने कहा था कि विदेश स्थित मेनशेविक प्रतिनिधिमण्डल ने दूसरे इण्टरनेशनल के आदेशों पर उन्हें तोड़फोड़ की गतिविधियां करने का निर्देश दिया था। अब उन्हें यह बात याद नहीं रही थी। उन विदेश स्थित मेनशेविकों का वक्तव्य न तो विवेकहीन था और न ही आराम से बैठे हुए लोगों की मनोवृत्ति के फलस्वरूप उत्पन्न। उन्होंने वस्तुतः इस मुकदमे के अभागे प्रतिवादियों पर दया दिखाई थी। पर इसके साथ यह भी कहा था कि लम्बे अरसे से ये लोग मेनशेविक नहीं रहे थे और यह बात सही थी। तो क्या कारण था कि, जिसने याकूबोविच को इस प्रकार अपरिवर्तनीय रूप से और ईमानदारी से उन लोगों के विरुद्ध क्रुद्ध कर दिया था? और विदेश स्थित प्रतिनिधिमण्डल प्रतिवादियों को उनके भाग्य के भरोसे न छोड़कर, क्या कर सकता था?

हम लोग उन पर अपना गुस्सा उतारते हैं, जो कमजोर होते हैं, हम उन पर बरसते हैं जो जवाब नहीं दे पाते। यह मनुष्य की कमजोरी होती है और ऐसे तर्क जो हमें सही प्रमाणित करते हैं न जाने अपने आप कहां से आ टपकते हैं।

क्राइलेंको ने मुकदमे की कारवाई का सार प्रस्तुत करते हुए यह कहा कि याकूबोविच क्रांति विरोधी विचारों का उन्मादी समर्थक है और उन्हें गोली से उड़ाकर मृत्युदण्ड देने की मांग की।

और उस दिन याकूबोविच के गालों पर आभारपूर्ण आंसू बह निकले और आज अनेक शिविरों और हिरासत जेलों में अनेक वर्ष बिताने के बाद भी वे यही अनुभव करते हैं। वे आज भी क्राइलेंको के प्रति इस बात के लिए आभारी हैं कि उसने उन्हें एक प्रति-

वादी के रूप में अपमानित नहीं किया, उनके सम्मान पर चोट नहीं की, उनका मजाक नहीं उड़ाया और उसने एक उन्मादपूर्ण समर्थक (चाहे उनके अपने वास्तविक विचार के विपरीत ही) सही रूप से बताया और उनके लिए एक सीधे सादे और गरिमापूर्ण मृत्युदण्ड की मांग की, जो उनकी समस्त यातनाओं को समाप्त कर सकता था ! अपने अन्तिम बयान में, याकूबोविच ने काइलेंको से सहमति प्रकट की : "मैंने जिन अपराधों की स्वीकारोक्ति की है [वे इस बात को अत्यधिक महत्व देते थे कि उन्होंने "स्वीकारोक्ति की है" अभिव्यक्ति का अत्यधिक कुशलता से प्रयोग किया था—उनका इस कथन से यह अभिप्राय: था कि जो भी व्यक्ति असलियत जानता था, वह यह समझ जाएगा कि इसका अर्थ यह होता है कि "वे अपराध नहीं, जिन्हें मैंने किया था"] उनके लिए सर्वोच्च दण्ड ही दिया जा सकता है —और मैं क्षमा याचना नहीं करता ! मैं यह नहीं कहता कि मेरी जिन्दगी को बख्श दिया जाए !" (प्रतिवादियों की बैंच पर उनके बराबर बैठा हुआ ग्रोमन उत्तेजित हो उठा ! "तुम पागल हो ! तुम्हें अपने कामरेडों की बात सोचनी चाहिए, तुम्हें यह कहने का अधिकार नहीं है !")

तो क्या याकूबोविच सचमुच सरकारी वकील के लिए एक बहुत बड़ा वरदान नहीं थे ?

और क्या आज भी कोई व्यक्ति यह कह सकता है कि सन् १९३६ से १९३८ तक हुए मुकदमों का स्पष्टीकरण प्राप्त नहीं है ?

क्या इसी मुकदमे के माध्यम से यह बात स्तालिन की समझ में नहीं आई, क्या स्तालिन का इस बात पर विश्वास नहीं जम गया कि वह अपने सब बड़बोले शत्रुओं को गिरफ्तार कर सकता है और एक ऐसे ही प्रदर्शन के लिए उन्हें तैयार कर सकता है ?



और अब मैं अपने कृपालू पाठक से क्षमा याचना करता हूं ! अब तक मेरी कलम कांपे बिना ही सरासर चलती रही, मेरे दिल की धड़कन एक क्षण के लिए भी नहीं रुकी और हम बिना किसी चिन्ता के आगे बढ़ते गए। क्योंकि इन १५ वर्षों की अवधि में कानूनी क्रांतिकारिता अथवा क्रांतिकारी वैधानिकता से बड़ी दृढ़ता से संरक्षित रहे। लेकिन अब आगे बातें कष्टप्रद होंगी : जैसाकि पाठक को स्मरण होगा, जैसाकि हम दर्जनों बार ख्रुश्चेव से शुरू करके स्वयं को समझा चुके हैं, हम "इस बात से स्वयं को आश्वस्त कर चुके हैं" लगभग सन् १९३४ से लेनिनवादी वैधानिकता के मानदण्डों का उल्लंघन शुरू हुआ। और अब हम इस गैर कानूनी कारवाई के गर्त में इस प्रकार प्रवेश करेंगे ? हम सड़क के एक और कटुता और कष्टपूर्ण हिस्से को कैसे पार करेंगे ?

पर, ये मुकदमे जिनका आगे विवरण दिया गया है, प्रतिवादियों की ख्याति के कारण पूरे संसार की आंख का बिन्दु बने हुए थे। ये लोग जनता की नजरों से दूर नहीं रह सकते थे। इन लोगों के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। इनके आचरण की व्यवस्था की जा चुकी है और भविष्य में बारम्बार व्याख्या की जाएगी। हमें उनकी पहेली को बहुत हलके से ही स्पर्श करना है।

हमें एक शर्त लगानी होगी, यद्यपि यह बड़ी शर्त नहीं है; मुकदमों में जो कुछ कहा

गया था उसका एकदम ठीक-ठीक विवरण स्टेनोग्राफरों द्वारा तैयार प्रकाशित विवरणों में नहीं दिया गया था। एक ऐसे लेखक ने जिसे अदालत में प्रवेश का अनुमति पत्र मिल गया था—यह अनुमतिपत्र कुछ चुने हुए लोगों को ही दिए जाते थे—उसने अदालत की कारवाई का विवरण लिख लिया था और आगे चलकर उसने इन विवरणों का अन्तर देखा। अदालत में मौजूद सब संवाददाताओं ने क्रेसतिन्स्की के सम्बन्ध में उत्पन्न दुविधा को भी देखा, जिसके परिणामस्वरूप अदालत की कारवाई को कुछ समय के लिए स्थगित करना पड़ा ताकि क्रेस-तिन्स्की को अपना निर्धारित बयान देने के लिए फिर राजी किया जा सके। (मैं इस बात की कल्पना इस प्रकार करता हूं। मुकदमे से पहले आपातकालीन स्थितियों का विवरण एक चार्ट पर तैयार कर लिया गया था। इस चार्ट के पहले कालम में प्रतिवादी का नाम था; दूसरे कालम में उस तरीके का विवरण दिया गया था जिसका इस्तेमाल अदालत की कार-वाई स्थगित होने की अवधि में किया जाएगा यदि सब प्रतिवादी पहले से तैयार बयान से हटकर खुली अदालत में कुछ और बयान देने लगे। तीसरे कालम में चेका के उस आदमी का नाम दिया गया था, जो इस प्रकार निर्देशित तरीके को लागू करेगा। इस प्रकार यदि क्रेसतिन्स्की अपने बयान के पहले से तैयार मसौदे से हटता है तो कौन व्यक्ति दौड़ता हुआ आएगा और वह व्यक्ति क्या करेगा इस बात का ब्यौरा पहले ही तैयार कर लिया गया था।)

लेकिन स्टेनोग्राफरों द्वारा तैयार विवरण की गलतियां तस्वीर को न तो बदलती हैं और न ही उसे हलका बनाती हैं। स्तम्भित संसार ने एक के बाद एक तीन नाटक देखे, ये ऐसे व्यापकतम और अत्यधिक व्यवसहाय नाट्य प्रदर्शन थे, जिनमें निर्भीक कम्युनिस्ट पार्टी के शक्तिशाली नेता, जिन्होंने पूरे संसार को उलट दिया था और आतंकित कर दिया था, अब डरपोक और आज्ञाकारी बकरियों की तरह चल रहे थे। और मिमिया-मिमिया कर वे सब बातें कह रहे थे जिनका उन्हें आदेश दिया गया था, उन्होंने अपने समस्त शरीर को स्वयं अपने वमन से आपूरित कर दिया था, उन्होंने कायरों की तरह गिड़गिड़ा कर स्वयं अपने आप को और अपनी आस्थाओं को पतन के गड्ढे में धकेल दिया था, और ऐसे अपराधों की स्वी-कारोक्ति की थी जिन्हें वे किसी भी रूप में नहीं कर सकते थे।

आज हमें इतिहास का जो भी स्मरण है उसमें यह अकल्पनीय घटना थी। यह दिमित्रोव के हाल के लाइकजिग के मुकदमे को देखते हुए आश्चर्यजनक रूप से उलटी बात दिखाई पड़ती है। दिमित्रोव ने एक दहाड़ते हुए शेर की तरह नाजी न्यायाधीशों के प्रश्नों के उत्तर दिये थे और इसके तुरन्त बाद, मास्को में उसके कामरेड, उसी सतत दृढ़ रहने वाले दल के सदस्य जिसने सारे संसार को कंपा दिया था—और इन सदस्यों में से भी महानतम सदस्य, वे सदस्य, जिन्हें "लेनिनवादी हरावल" कहा जाता था, न्यायाधीशों के समक्ष स्वयं अपने पेशाब में सराबोर होकर पेश हुए।

और यद्यपि ऐसा लगता है कि उस समय के बाद से बहुत कुछ स्पष्टीकरण दिया जा चुका है—आर्थर कोएेस्टलर ने विशेष सफलता से यह कार्य किया है—यह पहेली सदा की तरह आज भी उसी दृढ़ता से प्रचारित हो रही है।

लोगों ने तिब्बत में तैयार होने वाले एक ऐसे मरहम की कल्पना की थी जो मनुष्य को उसकी इच्छा शक्ति से वंचित कर देता है और सम्मोहन के प्रयोग के बारे में चर्चाएं हुई हैं। ऐसे स्पष्टीकरणों को ठुकराया नहीं जा सकता। यदि एन० के० वी० डी० को ऐसे

तरीके उपलब्ध थे, तो इनके उपयोग को रोकने के लिए नैतिक नियम स्पष्ट रूप से मौजूद नहीं थे। इच्छा शक्ति को कमजोर या भ्रांत क्यों न बनाया जाए? और यह एक सर्वविदित तथ्य है कि तीसरे दशक में कुछ प्रमुख सम्मोहन विशेषज्ञों ने अपना रोजगार छोड़ कर जी० पी० यू० में भर्ती होना पसन्द किया। इस बात का भी विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि चौथे दशक में एन० के० वी० डी० में सम्मोहन करने वालों का एक प्रशिक्षण स्कूल मौजूद था। कामेनेव की पत्नी को मुकदमे से पहले अपने पति से मिलने की अनुमति दी गई थी और उसने देखा कि उसका पति पहले जैसा नहीं रहा, उसकी प्रतिक्रियाएं, उसकी क्षमताएं क्षीण हो गई थीं। (और स्वयं गिरफ्तार होने से पहले उन्होंने यह बात दूसरे लोगों को बता दी थी।)

लेकिन क्या कारण था कि न तो पालचिन्स्की को और न ही ख्रेन्निकोव को तिब्बती मरहम देकर अथवा सम्मोहन के द्वारा घुटने टेकने को बाध्य नहीं किया जा सका।

वास्तविकता यह है कि एक उच्च, मनोवैज्ञानिक स्तर पर स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

एक गलतफहमी इन व्यक्तियों के ऐसे पुराने क्रांतिकारी समझ लिए जाने के कारण विशेष रूप से होती है, जो जारशाही की जेलों के तहखानों में भयभीत नहीं हुए थे—अनुभवी, परखे हुए सच्चे और आग में तपे हुए आदि स्वतन्त्रता सेनानी। लेकिन यहां एक बड़ी स्पष्ट और सीधीसादी गलती है। ये प्रतिवादी उक्त पुराने क्रांतिकारी नहीं थे। इन लोगों को यह गरिमा नारोदनिकों, समाजवादी क्रांतिकारियों और अराजकतावादियों से सम्बन्धित होने के कारण विरासत में मिली। उक्त पार्टियों के क्रांतिकारी सच्चे क्रांतिकारी थे, ये लोग ही बम फेंकने और षड्यंत्र रचने का काम करते हैं और इन्होंने ही कठोर कारावास और कैद की सज़ाएं काटी थीं—लेकिन इन लोगों को भी अपने जीवन में एक सच्ची क्रूरतापूर्ण पूछताछ का अनुभव प्राप्त नहीं हुआ था (क्योंकि जारों के रूप में ऐसी किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं था।) और इन दूसरे लोगों, देशद्रोह के मुकदमों में पेश बोलशेविक प्रतिवादियों को न तो कभी जारों के जमाने में पूछताछ का सामना करना पड़ा था और न ही वास्तविक कैद की सज़ा का। बोलशेविकों को कभी भी विशेष "तहखानों" में नहीं डाला गया था, इन्हें कभी भी किसी भी सखालिन जेल में, किसी भी विशेष याकूतस्क जैसी जेल में कैद नहीं किया गया था, जहां विशेषरूप से कठोर परिश्रम करना पड़ता था। यह सर्व विदित है कि जेरझिस्की को सबसे अधिक कठोर कारावास भोगना पड़ा था कि उसने अपना प्रायः पूरा जीवन जेलों में ही बिताया था। लेकिन, हमारे पैमाने के अनुसार, उसने केवल एक सामान्य दस साल की सज़ा ही काटी थी, उसे केवल "दस्सा" मिला था। और यह एक ऐसी सज़ा थी जो हमारे युग में सामूहिक खेत के किसी भी सामान्य किसान को दी जाती थी। यह सच है कि दस वर्ष की इस सज़ा में किसी केन्द्रीय जेल में कठोर श्रम करना पड़ता था लेकिन इस बात में कोई विशेषता नहीं थी।

पार्टी के जिन नेताओं को १९३६ से १९३८ के बीच की अवधि में चलाए गए मुकदमों में प्रतिवादियों के रूप में पेश किया गया, वे अपने क्रांतिकारी अतीत में केवल साधारण कैद, थोड़ी सी अवधि के लिए निष्कासन से ही परिचित हुए थे और उन्हें कभी भी कठोर श्रम नहीं करना पड़ा था। बुखारिन की कई बार मामूली गिरफ्तारियां हुई थीं लेकिन ये गिरफ्तारियां महत्वहीन थीं। यह स्पष्ट है कि कभी भी उन्हें पूरे एक वर्ष के लिए भी जेल

में नहीं डाला गया था और बहुत कम समय के लिए ओनेगा में निष्कासित किया गया था।" कामेनेव ने केवल दो वर्ष का समय जेल में और आधे वर्ष का समय निष्कासन में बिताया था यद्यपि वे रूस के प्रायः समस्त नगरों में प्रचार कार्य के लिए व्यापक रूप से यात्रा करते थे। हमारे युग में, १६ वर्ष के लड़कों तक को कम से कम पांच वर्ष की सज़ा दी जाती थी। चाहे आप इस बात पर विश्वास करें अथवा नहीं ज़िनोवीएव ने किसी समय भी तीन महीने की कैद नहीं काटी थी। उन्हें एक बार भी दण्डित नहीं किया गया था। हमारे द्वीपसमूह के सामान्य मूल निवासियों की तुलना में ये सब लोग अनुभवहीन युवक थे; इन लोगों को यह मालूम नहीं था कि जेल क्या होती है। राइकोव और आई० एन० सुविर्नोव को कई बार कैद की सज़ा सुनाई गई थी और ये पांच वर्ष तक जेलों में भी रहे थे। लेकिन न जाने कैसे इन्होंने बड़ी आसानी से जेल काट ली और ये लोग निष्कासन से बिना किसी कठिनाई के या तो भाग निकले अथवा इन्हें किसी क्षमादान के अन्तर्गत रिहा कर दिया गया। जब तक इन्हें गिरफ्तार कर लूबयांका में नहीं डाला गया, इन्हें इस बात का मामूली सा भी आभास नहीं था कि एक वास्तविक जेल क्या होती है और अन्यायपूर्ण पूछताछ का असली स्वरूप क्या होता है। (यह मान लेने का कोई आधार नहीं है कि यदि ट्राटस्की इन अन्यायपूर्ण पूछताछों के शिकंजे में फंस जाते तो वे इन प्रतिवादियों की तुलना में कम गिरावट का प्रदर्शन कर पाते अथवा उनका प्रतिरोध इन प्रतिवादियों की तुलना में अधिक प्रभावशाली होता। उन्हें यह प्रमाणित करने का अवसर नहीं मिला। उन्हें भी मामूली कैद का ही परिचय प्राप्त हुआ था, गम्भीर पूछताछ का कभी भी सामना नहीं करना पड़ा था और उस्तकुत में केवल दो वर्ष निष्कासन में रहे थे। क्रांतिकारी सैनिक परिषद् के अध्यक्ष के रूप में ट्राटस्की का नाम जो आतंक उत्पन्न करता था वह एक ऐसी वस्तु थी जो उन्हें सस्ते में प्राप्त हो गई थी, और इससे चरित्र अथवा साहस की वास्तविक शक्ति प्रकट नहीं होती। जिन लोगों ने दूसरे लोगों को गोली से उड़ा देने की सज़ा सुनाई वे अक्सर अपनी मृत्यु के समक्ष घबराए हुए दिखाई पड़े। उक्त दो प्रकार की कठोरताओं में कोई आपसी सम्बन्ध नहीं है।) और जहां तक रादेक का सम्बन्ध है—वह तो लोगों को भड़काने का काम करने वाला एजेंट भर था। (और इन तीन मुकदमों में वही एकमात्र व्यक्ति नहीं था)। और यगोदा एक पक्का, आदतन अपराध करने वाला व्यक्ति था।

(लाखों लोगों का यह हत्यारा बस यह कल्पना ही नहीं कर पा रहा था कि ऊपर की मंजिल पर बैठा हुआ उससे ऊंचा हत्यारा अन्तिम क्षण में, हस्तक्षेप करके उसे बचा नहीं लेगा। मानो स्तालिन अदालत के कक्ष में ही बैठा हो, यगोदा ने बड़े विश्वास से और जोर देकर सीधे उसी से दया की भीख मांगी : "मैं आपसे प्रार्थना करता हूं! आपके लिए मैंने दो विशाल नहरों का निर्माण किया है!" और एक गवाह का कहना है कि उसी क्षण इस कक्ष की दूसरी मंजिल पर एक खिड़की के पीछे के अन्धेरे में माचिस जल उठी, स्पष्ट रूप से मलमल के पर्दे के पीछे कोई खड़ा था और जितनी देर माचिस जलती रही एक पाईप की रूपरेखा दिखाई पड़ती रही। जो भी व्यक्ति बाखचीसराय गया है उसे इन पूरब के देशों की चालाकी का स्मरण होगा राज्य परिषद् के सभाकक्ष की दूसरी मंजिल की खिड़कियां लोहे की चद्दरों से बन्द हैं और इन चद्दरों में छोटे-छोटे छेद कर दिये गए हैं और इनके पीछे जो गैलरी बनी है उनमें प्रकाश नहीं रहता। नीचे सभाकक्ष में यह अनुमान लगा पाना सम्भव नहीं होता कि ऊपर कोई व्यक्ति है अथवा नहीं। खान अथवा शासक अदृश रहता

ग्रौर परिषद् की बैठकें इस तरह चलती मानो खान स्वयं मौजूद हो। स्तालिन के पक्के पूर्व चरित्र को ध्यान में रखते हुए मैं तत्परता से इस बात पर विश्वास कर सकता हूं कि वह अक्तूबर कक्षा में होने वाले इन मुकदमों के नाटकों को देखा करता था। मैं यह कल्पना नहीं कर सकता कि वह स्वयं को यह दृश्य देखने, यह सन्तोष प्राप्त करने से वंचित कर सकता था।)"

ग्रौर ग्राखिरकार मुकदमों में प्रतिवादियों के ग्राचरण को समझने में ग्रसफल रहने का कारण इन प्रतिवादियों के ग्रसाधारण चरित्र के प्रति हमारा विश्वास है। आखिरकार हम लोगों को उस समय इतनी भयंकर परेशानी नहीं होती जब हम सामान्य नागरिकों द्वारा की गई सामान्य स्वीकारोक्तियों के कारणों पर विचार करते हुए यह निष्कर्ष निकालने की कोशिश करते हैं कि इन लोगों ने स्वयं ग्रपने बारे में यह बातें क्यों कहीं। हम इन बातों को समझ जाते हैं: एक मनुष्य कमजोर होता है; एक मनुष्य घबरा कर घुटने टेक देता है। लेकिन हम बुखारिन, जिनोवीएव, कामेनेव, प्याताकोव और ग्राइ० एन० स्मिरनोव को ग्रति-मानव मानते हैं—ग्रौर सार रूप में, परिस्थिति की वास्तविकता को समझने में हम केवल इसी कारण से असफल रहते हैं।

यह बात सच है कि इस नाटक के निदेशकों को इन्जीनियरों के इससे पहले के मुकदमों की तुलना में अभिनेताग्रों के चुनाव में कहीं ग्रधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा: हम यह कह सकते हैं कि इन मुकदमों में ग्रभिनेताग्रों के चुनाव के लिए उनके सामने लोगों की भरमार थी। लेकिन यहां चुनाव बेहद सीमित था। प्रत्येक व्यक्ति यह मानता था कि प्रमुख ग्रभिनेता कौन है और दर्शकगण केवल उन्हीं लोगों को इन भूमिकाग्रों में देखना चाहते थे।

पर इसके बावजूद चुनाव की गुंजाइश थी! जिन लोगों को इस दमन का लक्ष्य बनाया जा चुका था उनमें सर्वाधिक दूरदर्शी और कृतसंकल्प लोगों ने स्वयं को गिरफ्तार नहीं होने दिया। उन्होंने इससे पहले ही ग्रात्महत्या कर ली। (स्क्रिपनिक तोमस्की ग्रौर गमारिनिक)। केवल उन लोगों ने ही स्वयं को गिरफ्तार होने दिया जो जीवित रहना चाहते थे ग्रौर जो लोग जीवित रहना चाहते हैं उन्हें बटकर निश्चय ही एक रस्सी तैयार की जा सकती है। लेकिन इन लोगों में से कुछ ने पूछताछ के समय भिन्न रूप से ग्राचरण किया। वे यह समझ गए कि क्या हो रहा है। कड़ाई से डट गए और चुपचाप मौत के मुंह में चले गए लेकिन कम से कम बेशर्मी से नहीं मरे। न जाने क्यों उन लोगों ने रुदजुताक, पोस्तीशेव, येनुकिजे, चुबार कोसीओर ग्रौर यहां तक कि स्वयं क्राइलेंको को भी सार्वजनिक मुकदमे के लिए खुली ग्रदालत में पेश नहीं किया। यद्यपि इनके नामों से मुकदमों की सजावट और बढ़ जाती।

उन लोगों ने अत्यन्त विनम्र ग्रौर ग्रधिकारियों की इच्छा के ग्रनुसार सब कुछ करने को तत्पर लोगों को खुली ग्रदालतों में पेश किया। आखिरकार चुनाव किया गया था।

इस नाटक के अभिनेताओं का चुनाव निचले दर्जे के लोगों से हुआ था लेकिन दूसरी ग्रोर, मूछों वाला नाटक प्रस्तुतकर्ता इनमें से प्रत्येक को अच्छी तरह से जानता था। वह यह भी जानता था कि ये लोग कमजोर और डरपोक हैं ग्रौर वह एक-एक की कमजोरी से परि-चित था। यही उसका अन्धकारपूर्ण और विशेष गुण था। उसका प्रमुख मनोवैज्ञानिक झुकाव ग्रौर जीवन की उपलब्धि थी: ग्रस्तित्व के निम्नतर स्तर पर लोगों की कमजोरियों को भांपना।

आज समय के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए अपमानित, गिरफ्तार और गोली से

उड़ाये गए नेताओं में जो नेता सबसे उच्च और प्रखरतम बुद्धिमत्ता का धनी दिखाई पड़ता था (और केवल जिसके बारे में भी आर्थर कोएस्टलर ने अपनी प्रतिभापूर्ण पड़ताल की है) एन० आई० बुखारिन था।

स्तालिन ने बुखारिन के माध्यम से उस निरन्तर स्तर की कल्पना की थी, जिस स्तर पर मनुष्य का मिट्टी से सम्पर्क होता है। और स्तालिन ने उन्हें बहुत लम्बे अरसे से मौत के शिकंजे में कसकर रखा था, उनके साथ उसी प्रकार खिलवाड़ करता रहा जैसे कोई बिल्ली चूहे के साथ करती है, चूहे को अपने पंजे से जरा सा बाहर निकलने देती है और फिर धर दबोचती है। बुखारिन ने हमारे समस्त वर्तमान—दूसरे शब्दों में गैर मौजूद—संविधान का एक-एक शब्द लिखा था, जिसे सुनने में बड़ा आनन्द आता है। और वे इस संविधान की रचना के बाद आकाश में उड़ चले थे। और बादलों के समीप पहुंचकर उन्होंने यह कल्पना की थी कि उन्होंने कोबा [स्तालिन] को पछाड़ दिया है: कि उन्होंने उसके ऊपर एक ऐसा संविधान लाद दिया है जो उसे तानाशाही में ढील देने के लिए बाध्य करेगा। और उसी क्षण बुखारिन को विनाशकारी शिकंजों में कस लिया गया।

बुखारिन, कोमेनेव और जिनोवीएव को पसन्द नहीं करते थे और बहुत समय पहले जब कीरोव की हत्या के बाद इन लोगों के ऊपर मुकदमा चलाया गया था, बुखारिन ने अपने निकट के लोगों से कहा था: "ठीक है, तो क्या हुआ? वे ऐसे ही लोग हैं; हो सकता है कोई न कोई बात रही हो···" (यह फिलस्तीन लोगों का उन वर्षों का सबसे बड़ा और पुराना फारमूला था: "हो सकता है कोई बात रही हो...हमारे देश में लोगों को अकारण गिरफ्तार नहीं किया जाता।" और यह बात सन् १९३५ में पार्टी के प्रमुख सिद्धांतकार ने कही!") सन् १९३६ की गर्मियों में बुखारिन तीएन शान के जंगलों में शिकार के लिए गए हुए थे जब कामेनेव और जिनोवीएव के ऊपर दूसरा मुकदमा चल रहा था और उन्हें इस बात की कोई जानकारी नहीं थी। वे पहाड़ों से उतर कर फुन्जे पहुंचे और वहां उन्होंने पढ़ा कि उन दोनों को मृत्युदण्ड सुना दिया गया है और उन्होंने समाचारपत्रों के वे लेख भी पढ़े जिनसे यह स्पष्ट हो गया कि इन लोगों ने स्वयं उनके विरुद्ध कितने विनाशकारी बयान दिये थे। लेकिन क्या उन्होंने दमन की इस कारवाई को रोकने का प्रयास किया? और क्या उन्होंने पार्टी में यह आवाज़ उठाई कि कुछ बहुत ही भयावह काम हो रहा है? नहीं, बस उन्होंने केवल कोबा को तार भेजकर उससे यह कहा कि वह कामेनेव और जिनोवीएव को गोली से उड़ाने की कारवाई को स्थगित कर दे ताकि बुखारिन उनसे सामना करके स्वयं को निर्दोष सिद्ध कर सके।

अब बहुत विलम्ब हो चुका था। कोबा को शपथ लेकर दिये गये पर्याप्त बयान प्राप्त थे। उसे इन लोगों का आमना-सामना कराने की क्या ज़रूरत थी?

पर उन लोगों ने अभी भी काफी समय तक बुखारिन को गिरफ्तार नहीं किया। उन्हें इज़वेस्तिया के प्रधान सम्पादक पद से हटा दिया गया। और पार्टी ने उन्हें जो अन्य पद और कार्य सौंप रखे थे उनसे भी अलग कर दिया गया। वे लगभग आधे वर्ष तक अपने क्रेमलिन स्थित मकान में रहते रहे—अर्थात् पीटर महान् के पोतेशनी महल में रहते रहे—पर उनका निवास ऐसा ही था जैसे कोई व्यक्ति जेल में रहता है। पर, शरद् ऋतु में वे अपने गांव में स्थित भवन में जाते थे और क्रेमलिन के सन्तरी उन्हें सलाम करते थे मानो कुछ भी बदला नहीं है।) अब कोई भी व्यक्ति उनसे न तो मिलने आता था और न ही

टेलीफोन करता था। और इन महीनों में उन्होंने असंख्य पत्र लिखे "प्रिय कोबा ! प्रिय कोबा ! प्रिय कोबा !" और उन्हें एक भी उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।

वे अभी भी स्तालिन से मित्रतापूर्ण सम्पर्क कायम करने का प्रयास कर रहे थे।

और प्रिय कोबा, अपनी आंख मारता हुआ बड़े नाटक का पूर्वाभ्यास करा रहा था। अनेक वर्षों से कोबा विभिन्न भूमिकाओं के लिए लोगों की आजमाइश कर रहा था। और वह जानता था कि बुखारचिक अपनी भूमिका बड़ी खूबसूरती से निभायेगा। आखिरकार बुखारिन ने अपने उन शिष्यों और समर्थकों को पहले ही त्याग दिया था, जिन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था, निष्कासित कर दिया गया था।—पर इनकी संख्या अधिक नहीं थी—और इस प्रकार अपने समर्थकों से वंचित होकर उन्होंने स्वयं को आसानी से नष्ट कर दिये जाने की परिस्थितियों का निर्माण कर दिया था।[15] उन्होंने अपनी विचारधारा को पूरी तरह विकसित और उदित होने से पहले ही कुचल डालने, विध्वंस कर डालने की अनुमति दी थी और अपने आप चुपचाप यह देखते रहे थे। और अभी हाल में, जब वे इजवेस्तिया के प्रधान सम्पादक पद पर काम कर रहे थे और पोलित ब्यूरो के सदस्य थे, उन्होंने कामेनेव और जिनोवीएव को गोली से उड़ाने की कारवाई को कानून सम्मत स्वीकार कर लिया था। उन्होंने न तो पूरी ताकत से चिल्लाकर और न ही कुसफुसाहट के स्वर में इस बात पर अपना क्रोध प्रकट किया। और स्वयं ये बातें ही उनकी भूमिका का आधार बनीं।

बहुत समय पहले, जब स्तालिन ने उन्हें (और उनके साथियों को) पार्टी से निकाल देने की धमकी दी थी, बुखारिन ने (अन्य शेष लोगों की तरह) पार्टी में बने रहने के लिए अपने विचारों का त्याग कर दिया था। और स्तालिन की यह कारवाई भी यह आजमाने के लिए थी कि स्तालिन अपनी भावी भूमिका के लिए उपयुक्त है अथवा नहीं। यदि ये लोग स्वतंत्र रहते समय और उस समय भी जब इन्हें देश में सर्वोच्च सम्मान और सत्ता प्राप्त थी इस प्रकार आचरण कर सकते थे, तो यह अनुमान लगाया जा सकता था कि जब इनके शरीर, इनका भोजन, इनकी नींद लूबयांका के पाठ पढ़ाने वालों के हाथ में होगी तब वे किस प्रकार बिना किसी गलती के नाटक में अपनी निर्धारित भूमिका निभायेंगे।

अपनी गिफ्तारी से पहले बुखारिन को सबसे अधिक इस बात का डर था? विश्वसनीय रूप से इस बात की जानकारी है कि उन्हें सब बातों से अधिक पार्टी से निकाल दिये जाने का भय था ! पार्टी से अलग कर दिये जाने की कल्पना ! पार्टी से बाहर जीवित रहने की भी कल्पना असह्य थी। और प्रिय कोबा ने उनकी इस विशेषता का बड़ी शान से लाभ उठाया था (और यही विशेषता अन्य नेताओं में थी) और स्तालिन जिस क्षण से स्वयं पार्टी बन गया था इस कमजोरी का लाभ उठाता आ रहा था। बुखारिन का (अन्य शेष नेताओं की तरह) अपना कोई व्यक्तिगत दृष्टिकोण नहीं था (इन लोगों की विरोध की कोई सच्ची विचारधारा नहीं थी, जिसके बल पर वे लोग अलग हट सकते थे और जिसके आधार पर वे किसी मुद्दे पर डट सकते थे। इनके स्वयं विपक्ष बनने से पहले स्तालिन ने इन्हें विपक्ष घोषित कर दिया। और इस कारवाई के द्वारा उसने उन्हें प्रभावहीन बना दिया। और ये लोग किसी न किसी प्रकार पार्टी के भीतर बने रहने पर ही अपनी पूरी ताकत लगाते रहे। और इसके साथ ही इनकी पूरी ताकत इस बात पर भी लगी कि पार्टी को हानि न पहुंचे।

ये सब बातें इन लोगों के स्वतंत्र रूप से सोचने और कार्य करने के मार्ग में बाधक बनीं।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि बुखारिन को सर्वोच्च भूमिका दी गई थी और नाटक प्रस्तुत करने वाले ने बुखारिन की भूमिका में किसी भी बात में उपेक्षा नहीं की थी किसी भी बात को संक्षेप में प्रस्तुत करने की कोशिश नहीं की थी, इस भूमिका को तैयार करने में अधिक से अधिक समय दिया गया था और इस बात का भी ध्यान रखा गया था कि बुखारिन को इस भूमिका का पूरी तरह आदी बनने के लिए पर्याप्त समय मिले। (पिछली सर्दियों में उन्हें मार्क्स की पांडुलिपियां प्राप्त करने के लिए यूरोप भेजना भी बड़ा आवश्यक था—यह कोई निरर्थक बात नहीं थी, विदेशों में सम्पर्क कायम करने के अभियोगों के लिए यह यात्रा आवश्यक थी। लेकिन इस बात का ध्यान रखा गया था कि यूरोप यात्रा की उनके जीवन की उद्देश्यहीन स्वतंत्रता उन्हें नाटक के प्रमुख मंच पर अपनी भूमिका निभाने में सहायता दे। और अब, अभियोगों की काली कड़कती हुई बिजली से भरे बादलों के नीचे, गैर-गिरफ्तारी की लंबी कभी समाप्त न होने वाली अवधि आई, घर में निठल्ले पड़े रहने का पस्त कर डालने वाला अनुभव मिला, क्योंकि यह किसी भी व्यक्ति की शक्ति को लूबयांका में प्रत्यक्ष गिरफ्तारी से कहीं अधिक प्रभावशाली रूप से समाप्त कर सकती है। (और लूबयांका कहीं भागी नहीं जा रही थी। बुखारिन यहां भी एक वर्ष रह सकते थे।)

एक अवसर पर कगानोविच ने बुखारिन को बुलाया और चेका के बड़े अफसरों की मौजूदगी में सोपोलनिकोव से उनका मुकाबला कराया गया। सोकोलनिकोव ने "समानान्तर दक्षिणपंथी केन्द्र" (ट्राटस्कीवादियों के केन्द्र के समानान्तर) के बारे में बयान दिया और बुखारिन की गुप्त गतिविधियों के बारे में भी बातें कहीं। कगोनोविच ने बड़े आक्रामक रूप से पूछताछ की और उसके बाद सोकोलनिकोव को वहां से ले जाने का हुक्म दिया। और वह बड़े मित्रतापूर्ण स्वर में बुखारिन से बोला : "वह कैसा सफेद झूठ बोलता है, बदमाश कहीं का!"

इसके बावजूद समाचारपत्र जन सामान्य के क्रोध प्रदर्शन की खबरें देते रहे। बुखारिन ने केन्द्रीय समिति को टेलीफोन किया। बुखारिन ने, प्रिय कोबा संबोधन से शुरू होने वाले पत्र लिखे और यह प्रार्थना की कि उनके ऊपर जो अभियोग लगाये जा रहे हैं उनका सार्वजनिक रूप से खंडन किया जाए। और इसके बाद सरकारी वकील के कार्यालय ने घुमा फिरा कर एक घोषणा की : "बुखारिन पर लगाये गये अभियोगों के निरपेक्ष प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं।"

रादेक ने वसन्त ऋतु में उन्हें टेलीफोन किया और मिलने की इच्छा प्रकट की। बुखारिन ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया : हम दोनों के ऊपर अभियोग लगाया जा रहा है; और गलतफहमी क्यों पैदा करें? लेकिन इनके इजबेस्तिया के देहांत स्थित घर एकदम बराबर-बराबर थे और एक दिन शाम रादेक उनके पास जा पहुंचा : "आगे चलकर चाहे मैं कुछ भी कहूं, कृपया यह बात आप समझ लीजिए कि इसके लिए मुझे दोष नहीं दिया जा सकता। पर कुछ भी हो आप इस मामले से बच निकलेंगे, आप ट्राटस्कीवादियों से सम्बन्धित नहीं थे।"

और बुखारिन ने यह विश्वास कर लिया कि वे इस मामले से बच निकलेंगे, उन्हें पार्टी से निष्कासित नहीं किया जाएगा। क्योंकि यह बात अत्यन्त भयावह होती! वास्तविकता यही थी कि ट्राटस्कीवादियों के प्रति सदा उनका शत्रु भाव रहा था : ट्राटस्कीवादियों ने स्वयं को पार्टी से अलग कर लिया था और देखो इसका क्या परिणाम हुआ था।

हमें साथ रहना है, चाहे वे गलतियां ही क्यों न करें। हमें, इस बात पर भी साथ रहना है।

नवम्बर के प्रदर्शन के अवसर पर (यह उनकी लाल चौक को अलविदा थी) वह और उनकी पत्नी एक समाचार पत्र के सम्पादक के प्रेस कार्ड पर मेहमानों के लिए बनाए गए मंच पर पहुंचे। तुरन्त एक सशस्त्र सैनिक उनके पास पहुंचा। उनके दिल की धड़कन बन्द हो गई तो वे यहां यह करने जा रहे हैं? एक ऐसे अवसर पर? नहीं। सैनिक ने सलाम किया : "कामरेड स्तालिन को आपके यहां इस मंच पर आने पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने अनुरोध किया है कि आप मकबरे के ऊपर अपने उपयुक्त स्थान पर जाएं।

और इसी प्रकार वे लोग बुखारिन को पूरे आधे वर्ष तक इधर उधर उछलाते रहे, कभी ऊपर उठाते तो कभी नीचे पटक देते। ५ दिसम्बर को उन लोगों ने अत्यधिक प्रचार और उत्सव के साथ बुखारिन द्वारा तैयार संविधान को अंगीकार किया और सदा सर्वदा के लिए इसे स्तालिनवादी संविधान का नाम दे दिया। केन्द्रीय समिति के दिसम्बर के महाधिवेशन में वे लोग प्याताकोव को लाए। प्याताकोव के दांत तोड़ डाले गए थे और वह पहले जैसा प्याताकोव नहीं रह गया था। उसके पीछे मौन चेकिस्ट खड़े थे (यगोदा के आदमी और आखिरकार स्वयं यगोदा को भी किसी भूमिका के लिए परखा और तैयार किया जा रहा था)। प्याताकोव ने बुखारिन और राइकोव के खिलाफ अत्यधिक जुगुप्सापूर्ण बयान दिया जबकि ये दोनों नेता मंच पर नेताओं के मध्य बैठे हुए थे। ओर्झोनिकिजे अपने कान के पीछे हाथ की ओट लगाकर और अधिक सावधानी से सुनने का प्रयास करने लगा (वह ऊंचा सुनता था) : "मेरी बात पर ध्यान दो, क्या तुम ये सब बातें स्वेच्छा से कह रहे हो, अपनी मर्जी से बयान दे रहे हो?" (इस बात पर विशेष रूप से ध्यान दीजिए। स्वयं ओर्झोनिकिजे को भी एक गोली प्राप्त होगी)! "पूरी तरह स्वेच्छा"—और प्याताकोव अपने पांव पर इधर उधर डोलने लगा। मध्यान्तर के समय राइकोव ने बुखारिन से कहा : "तोमस्की में इच्छा शक्ति थी। अगस्त के महीने में ही वह इन सब बातों को समझ गया था और उसने अपनी जान ले ली थी। जबकि आप और मैं मूर्खों की तरह, जिन्दा रहे।"

इसी अवसर पर कगानोविच ने एक क्रोधपूर्ण और भयंकर निन्दा से भरा भाषण किया (वह बुखारिचिक के निर्दोष होने की बात पर विश्वास करने को बड़ा आतुर है। लेकिन जो बातें कही जा चुकी थीं उनके बाद वह यह विश्वास नहीं कर सकता था)। और इसके बाद मोलोतोव बोला। और फिर स्तालिन! कैसा उदारमना आदमी है! अच्छी बातों को याद रखने की कैसी क्षमता! "इसके बावजूद, मैं समझता हूं कि बुखारिन के अपराध को अभी तक प्रमाणित नहीं किया जा सका है। हो सकता है राइकोव दोषी हो, लेकिन बुखारिन नहीं।" (मानो किसी व्यक्ति ने स्तालिन की इच्छा के विरुद्ध ही बुखारिन के ऊपर अभियोग लगा दिए हों!)

यही खेल चलता रहा। कभी दबाव कभी प्रशंसा। इसी तरीके से व्यक्ति की संकल्प शक्ति समाप्त होती है। इसी प्रकार वह एक बर्बाद वीर नायक की भूमिका निभाने का आदी हो जाता है।

और इसके बाद वे लोग हर रोज उसके घर पूछताछ के विवरण पहुंचाने लगे : लाल [कम्युनिस्ट प्रोफेसर की संस्था के भूतपूर्व युवक विद्यार्थियों के नाम रादेक और अन्य व्यक्तियों के नाम और इन सब बयानों में बुखारिन के जघन्यतम देशद्रोह के गम्भीरतम प्रमाण प्रस्तुत

किए गए थे। वे लोग ये दस्तावेज उसके घर इस प्रकार पहुंचाते मानो वह स्वयं एक प्रतिवादी न हो—नहीं किसी भी रूप में प्रतिवादी नहीं ! केन्द्रीय समिति के सदस्य की हैसियत से उन्हें ये कागज़ पत्र प्राप्त होते—उनकी जानकारी भर के लिए।

जब बुखारिन को इस सामग्री की कोई नई किश्त प्राप्त होती तो अक्सर वह अपनी २२ वर्षीय पत्नी, जिसने उसी वसन्त ऋतु में उनके पुत्र को जन्म दिया था, से कहते : "तुम इन्हें पढ़ो। मैं नहीं पढ़ सकता।" और इसके बाद वह अपना मुंह एक तकिए में छिपा लेते। उनके घर पर दो रिलावर थे। (स्तालिन उन्हें भी समय दे रहा था।) और इसके बावजूद बुखारिन ने आत्महत्या नहीं की।

क्या यह स्पष्ट नहीं है कि वे अपनी निर्धारित भूमिका निभाने के लिए तैयार नहीं हो गए थे ?

और एक और सार्वजनिक मुकदमा चला। और उन लोगों ने प्रतिवादियों की एक और टोली को गोली से उड़ा दिया। और इसके बावजूद वे लोग बुखारिन के प्रति दयावान बने रहे। उन्होंने बुखारिन को गिरफ्तार नहीं किया।

फरवरी १९३७ के आरम्भ में बुखारिन ने अपने घर पर ही भूख हड़ताल शुरू करने का निश्चय किया ताकि केन्द्रीय समिति को उनकी बातें सुनने के लिए और उन्हें मुक्त करने के लिए बाध्य किया जा सके। उन्होंने "प्रिय कोबा" को अपने पत्र में भूख हड़ताल के इरादे की घोषणा की और ईमानदारी से उन्होंने भूख हड़ताल शुरू भी कर दी। इसके बाद केन्द्रीय समिति का एक महाधिवेशन बुलाया गया, जिसके विचाराधीन विषय थे : (१) दक्षिण पंथी केन्द्र के अपराध; (२) कामरेड बुखारिन का पार्टी विरोधी आचरण जो भूख हड़ताल से स्पष्ट हो जाता है।

बुखारिन हिचकिचाये। क्या सचमुच उन्होंने किसी विशेष तरीके से पार्टी को अपमानित कर दिया है ? बढ़ी हुई दाढ़ी, कमजोर शरीर और उत्साहहीन बुखारिन जो अब तक एक कैदी जैसे दिखाई पड़ने लगे थे, स्वयं को किसी प्रकार घसीटकर महाधिवेशन में उपस्थित हुए। (आखिरकार तुम सोच क्या रहे हो ?) प्रिय कोबा ने उनसे बड़ी घनिष्ठता से पूछा : "आखिर ऐसे अभियोगों के समक्ष बताओ मैं क्या करूं ? वे लोग मुझे पार्टी से निकाल देना चाहते थे।" स्तालिन ने इस मूर्खतापूर्ण और विचित्र बात पर बड़ी बुरी शक्ल बनाई : "अरे नहीं। तुम्हें पार्टी से कोई नहीं निकाल रहा है !"

बुखारिन ने उसकी बात पर भरोसा कर लिया और उनके स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। उन्होंने महाधिवेशन को अपने पश्चाताप से आश्वस्त किया और तुरन्त अपनी भूख हड़ताल तोड़ दी। (घर वापस लौटने पर वे बोले : अरे सुनो, मुझे कुछ अच्छी चीजें खाने को दो ! कोबा कहता था कि वह मुझे पार्टी से नहीं निकालेंगे ! लेकिन महाधिवेशन के दौरान ही, कगानोविच और मोलोतोव ने (सचमुच यह बड़े धृष्ट थे और इन्होंने स्तालिन की राय की कोई परवाह नहीं की !)[३७] बुखारिन को फासिस्टों का किराये का पिट्ठू बताया और उन्हें गोली से उड़ा देने की मांग की।

और एक बार फिर बुखारिन का उत्साह ठण्डा पड़ गया और अपने अन्तिम दिनों में वे "भावी केन्द्रीय समिति को पत्र" लिखने लगे। उन्होंने इस पत्र को कंठ कर लिया और इस प्रकार यह पत्र सुरक्षित रह सका और पूरा संसार इसे हाल में जान सका। लेकिन इससे संसार की जड़ें नहीं हिली।[३८] इस प्रतिभाशाली सिद्धांतकार ने भावी पीढ़ियों को

क्या अन्तिम शब्द समर्पित किए थे ? पार्टी का सदस्य बने रहने देने के लिए एक और कष्ट-पूर्ण पुकार और प्रार्थना। (पार्टी के प्रति निष्ठा की कीमत उन्होंने अपने सम्मान से चुकाई!) और यह इस बात की एक और पुष्टि थी कि वे उन सब बातों से "पूरी तरह सहमत हैं" जो १९३७ तक हुई। और इसमें केवल पहले के अत्यधिक मजाक उड़ाने वाले मुकदमे ही शामिल नहीं थे बल्कि हमारी समस्त जेल प्रणाली के माध्यम से कैदियों के सफाये की समस्त दुर्गन्धपूर्ण धाराएं और लहरें भी शामिल थीं।

और इस प्रकार उन्होंने स्वयं यह प्रमाणपत्र दिया कि किस प्रकार स्वयं इन्हें भी इन लहरों को समर्पित किया जा सकता है।

अन्तत: इस प्रकार उन्हें लूबयांका के पाठ पढ़ाने वालों और नाटक के सहायक निदेशकों के हवाले करने के लिए तैयार कर लिया गया, इस सशक्त व्यक्ति को, इस शिकारी और पहलवान को ! (केन्द्रीय समिति की मौजूदगी में अनेक अवसरों पर मजाक में होने वाली बहस में न जाने कितनी बार बुखारिन ने स्तालिन को चारों खाने चित किया था ! और संभवत: यह भी एक ऐसी बात थी जिसके लिए कोबा उन्हें क्षमा नहीं कर सका।)

और एक ऐसे व्यक्ति के मामले में जो इस प्रकार पूरी तरह से तैयार हो गया था, जिसे इस प्रकार पूरी तरह पस्त किया जा चुका हो, यातना देने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उनकी स्थिति को १९३१ में याकूबोविच की स्थिति से किस प्रकार बेहतर कहा जा सकता था ? किस प्रकार वे उन्हीं दो तर्कों के समक्ष झुकने से कैसे बच सकते हैं ? वास्तव में उसकी तुलना में वे कहीं अधिक कमजोर थे क्योंकि याकूबोविच मृत्यु की कामना कर रहा था और बुखारिन इससे भयभीत थे।

पूर्व निर्धारित तरीके से वाईशिस्की की एक आसान बातचीत ही शेष रह गई थी :

"क्या यह सच है कि पार्टी का प्रत्येक विरोध पार्टी के विरुद्ध संघर्ष होता है ?" "सामान्यतया यह होता है, वास्तव में यह होता है।" "पार्टी के विरुद्ध ऐसा कौन सा संघर्ष होता है जो आखिरकार पार्टी के विरुद्ध युद्ध का रूप धारण न कर ले।" "तार्किकता के अनुसार—हां, यह होगा।" "तो इसका यह अर्थ होता है कि अन्त में, विरोधी विश्वासों के अस्तित्व के कारण, पार्टी के विरुद्ध किए गए दुष्कृत्य...(जासूसी, हत्या, मातृभूमि के साथ विश्वासघात) ? "लेकिन जरा ठहरिए, ऐसा कोई भी अपराध वास्तव में नहीं किया।" "लेकिन यह अपराध हो सकते थे ?" "हां, सैद्धांतिक दृष्टि से" (यही आपके सिद्धांतकार हैं !) "लेकिन हमारे लिये पार्टी के हित सर्वोपरि हैं ?" "हां, वास्तव में, वास्तव में। तो आप देखते हैं कि इसकी अत्यन्त सूक्ष्म विभाजन रेखा है। हमें भविष्य में क्या हो सकता था इस बात को ठोस रूप में प्रस्तुत करना होगा : भविष्य के लिए विपक्ष या विरोधी के किसी भी विचार को पूरी तरह निन्दनीय साबित करने के लिए हमें उन बातों को इस रूप में स्वीकार करना होगा, जो भविष्य में सिद्धान्त रूप में हो सकती थीं कि वे वास्तव में हो सकी थीं। आखिरकार, यह हो सकता था, क्या नहीं ?" "यह हो सकता था।" "तो यह आवश्यक है कि जो सम्भव था उसे वास्तविक माना जाए बस, हम यही चाहते हैं। यह एक मामूली सा दार्शनिक संक्रमण है। क्या हम इस बात पर सहमत हैं ?...हां, और एक बात, और वैसे यह समझाने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है कि यदि मुकदमे के दौरान आप अपनी बात बदल देते हैं, पीछे हट जाते हैं और भिन्न बात कहने लगते हैं तो आप समझते ही हैं कि इस प्रकार इसका लाभ विश्व बुर्जुआ वर्ग उठायेगा और इससे पार्टी को हानि

पहुंचेगी। और यह भी स्पष्ट है कि उस स्थिति में आपकी मृत्यु आसान तरीकों से नहीं होगी। लेकिन यदि हर काम अच्छी तरह से हो जाता है तो यह निश्चित है कि हम आपको जीवित रहने की अनुमति देंगे। हम चुपचाप आपको मोन्तेक्रिस्तो ही पहुंचा देंगे और आप वहां समाजवाद के अर्थशास्त्र का विवेचन करने में अपना समय बिता सकते हैं।" "लेकिन पहले के मुकदमों में, जैसीकि मुझे जानकारी है, आपने उन सब लोगों को गोली से उड़ा दिया ?" "लेकिन उनका आपसे क्या मुकाबला है! और हमने उनमें से बहुतों को जिन्दा भी छोड़ दिया। उन्हें केवल समाचारपत्रों में गोली से उड़ाया गया था।"

और इस प्रकार सम्भवतः ऐसी कोई पहेली नहीं है, जिसे सुलझाया न जा सकता हो ?

आखिरकार वही अजेय गीत बार-बार दोहराया जाता था और अनेक विभिन्न मुकदमों में इसमें मामूली-सा फेरबदल किया जाता था। आखिरकार हम और तुम कम्युनिस्ट हैं! तुम नीतियों से हटकर किस प्रकार हमारा विरोध कर सकते थे, पश्चाताप करो! आखिरकार तुम और हम मिलकर—हम लोग हो जाते हैं!

किसी भी समाज में ऐतिहासिक सूझबूझ धीरे-धीरे प्रौढ़ता प्राप्त करती है। और जब यह प्रौढ़ता प्राप्त हो जाती है तो सब कुछ बड़ा सरल हो जाता है। न तो १६२२ में और न ही १६२४ में और इसी प्रकार न ही १६३७ में चले मुकदमों के प्रतिवादी इतनी दृढ़ता से अपने विचारों पर डटे रहकर, अपना सिर ऊपर उठाकर, दृढ़ और ऊंची आवाज़ में, उक्त सम्भोहनकारी और व्यक्ति को निष्क्रिय बना देने वाली पंक्ति के उत्तर में यह नहीं कह सके :

"नहीं हम तुम्हारे साथी क्रांतिकारी नहीं हैं! नहीं, हम तुम्हारे जैसे रूसी नहीं हैं! नहीं, तुम्हारे जैसे कम्युनिस्ट नहीं हैं!"

यह स्पष्ट लगता है कि यदि ऐसी आवाज़ उठाई जाती, तो नाटक के समस्त मंच हरहरा कर गिर पड़ते, मुखौटे चूर-चूर हो जाते, नाटक प्रस्तुत करने वाला पिछली सीढ़ियों से भाग निकलता और नाटक की निर्धारित पंक्तियां बुलवाने वाले अपने-अपने बिलों में जा घुसते। और नाट्यशाला के दरवाजों से, हां, १६६७ का वर्ष प्रकट हो जाता।



इनमें सर्वाधिक सफल नाटक भी अत्यन्त व्ययसाध्य और दुस्साध्य थे। और स्तालिन ने यह निर्णय किया कि अब भविष्य में सार्वजनिक मुकदमों का आयोजन नहीं किया जाएगा।

अथवा यह कहा जा सकता है कि शायद १६३७ में उसकी योजना स्थानीय जिलों में बड़े पैमाने पर सार्वजनिक मुकदमे चलाने की नहीं थी—ताकि विरोधियों की काली आत्मा जन समुदायों के समक्ष पेश की जा सकें। लेकिन बात यह थी कि उसे इन नाटकों को पेश करने के लिए अच्छे प्रस्तोता नहीं मिले। इतनी सावधानी से हर मुकदमे की तैयारी कर पाना व्यावहारिक नहीं था और अभियुक्तों की विचार प्रक्रियाएं उतनी जटिल नहीं थीं और स्तालिन बड़ी उलझन में फंस गया, यद्यपि बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी है। कुछ ही मुकदमों के बाद यह पूरी योजना समाप्त हो गई और इसे त्याग दिया गया।

यहां एक ऐसे ही मुकदमे का विवरण प्रस्तुत करना उचित होगा। यह कादी का

मुकदमा है, जिसकी कारवाई का विस्तृत विवरण आइवानोवो प्रान्त के समाचारपत्रों ने आरम्भ में विस्तार से प्रकाशित किया था।

सन् १९३४ के अन्त में आइवानोवो प्रान्त के सुदूर जंगली इलाके में, जिस स्थान पर इसका इलाका कोस्त्रोमा और निझनी नोवगोरोद प्रान्तों से मिलता है, एक स्थानीय प्रशासनिक जिले की स्थापना की गई और इस जिले का प्रशासनिक केन्द्र कादी नाम के प्राचीन और अत्यधिक धीमी गति से आगे बढ़ने वाले गांव में स्थापित किया गया। विभिन्न स्थानों से नये नेता यहां भेजे गए और पहली बार कादी में ही इन लोगों की मुलाकात हुई। यहां इन लोगों ने देखा कि इस सुदूर, उदासी भरे और गरीबी से ग्रस्त इलाके को धन, मशीनों और कुशल आर्थिक प्रशासन की जरूरत है। लेकिन इसके विपरीत बड़े पैमाने पर अनाज की वसूली से इस इलाके के लोग भूखों मर रहे हैं। बात यह हुई कि जिला पार्टी समिति का प्रथम सचिव फ्योदोर आइवानोविच स्मिरनोव अत्यधिक न्यायप्रिय व्यक्ति था; जिले के कृषि विभाग का अध्यक्ष स्तावरोव एक पक्का किसान था। वह उन किसानों की कोटि में आता था, जिन्हें इनतेन्सीविकी अर्थात् कठोर परिश्रम करने वाले, उत्साही और पढ़े लिखे किसान कहा जाता था, जिन्होंने इस शताब्दी के तीसरे दशक में खेती के वैज्ञानिक तरीके अपनाये और इसके लिए उन्हें उस समय सोवियत सरकार से पुरस्कार मिले क्योंकि उस समय तक यह निर्णय नहीं लिया गया था कि इन सब इन्तेंसीविकी को समाप्त कर दिया जाए। पार्टी में शामिल हो जाने के कारण ही, स्तावरोव कुलकों के सफाये के अभियान में जीवित बच गया था। (और हो सकता है कि उसने स्वयं कुलकों के सफाये में हिस्सा लिया हो?) इन लोगों ने अपने इस नए जिले में किसानों के लिए कुछ करने की कोशिश की। लेकिन ऊपर से लगातार निर्देश आते रहे और यह इन लोगों के अपनी इच्छा के अनुसार काम करने के विरुद्ध होते थे। ऐसा लगता था कि ऊपर बैठे हुए लोग यह सोचने में पूरी तरह व्यस्त हों कि किसानों की स्थिति को किस प्रकार और अधिक बुरा और निराशापूर्ण बनाया जा सकता है। और एक अवसर पर कादी स्थित नेताओं ने प्रान्तीय नेताओं को लिखा कि अनाज की वसूली के लक्ष्य को कुछ कम किया जाना चाहिए क्योंकि जिले के लोगों को प्रायः भूखा मारकर ही इस लक्ष्य को पूरा किया जा सकता था। यह कथन योजना की पवित्रता को नष्ट करने और सरकार के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाने की बात क्यों समझा जाता था इसे समझाने के लिए आपको चौथे दशक की परिस्थितियों का स्मरण करना होगा। (और शायद केवल चौथे दशक की परिस्थितियों का ही नहीं?) लेकिन, उस जमाने की काम करने की शैली के अनुरूप, इस सम्बन्ध में ऊपर से कोई कारवाई करने का निर्देश प्राप्त नहीं हुआ बल्कि स्थानीय नेताओं को अपनी सूझबूझ के अनुसार काम करने को कहा गया। जिन दिनों स्मिर्नोव छुट्टी पर था उसके सहायक अर्थात् जिला पार्टी के द्वितीय सचिव वासिली फ्योदोरोविच रोमानोव ने जिला पार्टी समिति में यह प्रस्ताव स्वीकार कराया: "यदि ट्राटस्कीवादी स्तावरोव अड़ंगा न अड़ाता तो जिले की सफलता कहीं अधिक शानदार होती।" इसके परिणामस्वरूप स्तारोवका "व्यक्तिगत मुकदमा" शुरू हो गया। (बड़ा दिलचस्प तरीका अपनाया गया: फूट डालो और हुकूमत करो। फिलहाल स्मिरनोव को केवल भयभीत करने, प्रभावहीन बनाने और पीछे हटने के लिए ही बाध्य करना था; आगे चलकर उससे निपटने के लिए काफी समय मिलेगा। और यह, एक छोटे पैमाने पर, पार्टी की केन्द्रीय समिति में स्तालिन द्वारा अपनाये गये तरीके का ही उदाहरण

थी।) जिला पार्टी समिति की एक जोरदार बैठक में यह बात स्पष्ट हुई कि स्तावरोव जितना ट्राटस्कीवादी था उतना ही यहूदीवादी भी था। जिले के उपभोक्ता सहकारियों के अध्यक्ष वासिली ग्रीगोरेविच ब्लासोव ने पार्टी की बैठक में मौजूद लोगों को इस बात पर राजी करने का प्रयास किया कि रोमानोव को दूसरे लोगों के खिलाफ झूठी बातें फैलाने के आरोप पर पार्टी से निकाल देना चाहिए। ब्लासोव एक ऐसा व्यक्ति था जिसे यद्यपि मामूली सी अव्यवस्था शिक्षा भी मिली थी बल्कि जो अपनी नैसर्गिक प्रतिभा से अत्यधिक सम्पन्न था और उन रूसियों का उदाहरण था, जिनकी यह नैसर्गिक प्रतिभा देखकर लोग आश्चर्य-चकित रह जाते हैं। वह खुदरा व्यापार की व्यवस्था करने वाला जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न व्यवस्थापक था, अच्छा वक्ता और प्रभावशाली तार्किक था। और किसी भी ऐसी बात पर वह क्रोध से पागल हो उठता था जिस पर वह विश्वास करता था। और वास्तव में उन लोगों ने रोमानोव को पार्टी की ओर से भला बुरा कहा! इस झगड़े में रोमानोव के अंतिम शब्द ऐसे व्यक्ति का विशिष्ट उदाहरण थे, जिसने उस समय व्याप्त परिस्थितियों के प्रति अपनी गहरी सूझबूझ और विश्वास का प्रदर्शन किया। "यद्यपि उन लोगों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि स्तारोव ट्राटस्कीवादी नहीं है, फिर भी मुझे इस बात का निश्चय है कि वह ट्राटस्कीवादी है। पार्टी इस मामले की छानबीन करेगी और मुझे जो भली बुरी बातें कही गई हैं उनकी भी जांच होगी।" और सचमुच पार्टी ने छानबीन की : जिले की एन० के० वी० डी० ने प्रायः तुरन्त स्तावरोव को गिरफ्तार कर लिया और एक महीने बाद यूनीवर को भी गिरफ्तार कर लिया गया, जो जिला कार्यकारिणी का अध्यक्ष और स्तोनिया निवासी था। और यूनीवर के स्थान पर रोमानोव को जिला कार्यकारिणी का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया गया। गिरफ्तारी के बाद स्तावरोव को प्रान्त की एन० के० वी० डी० की जेल में ले जाया गया, जहां उसने यह स्वीकारोक्ति की कि वह ट्राटस्कीवादी था, कि उसने जीवन प्रयन्त समाजवादी क्रांतिकारियों के सहयोग से काम किया, कि वह अपने जिले के एक गुप्त दक्षिणपंथी संगठन का सदस्य था (यह उस समय के अनुरूप आरोप था और अगर कोई अभियोग लगाना शेष रह गया था तो वह एनतेन्त से सम्बन्ध का था।) यह भी हो सकता है कि उसने कभी भी इन अपराधों की स्वीकारोक्ति न की हो लेकिन सच्चाई का कभी भी पता न लग सकेगा क्योंकि आइवानोवो एन० के० वी० डी० की आन्तरिक जेल में पूछताछ के दौरान यातनाएं दिये जाने से उसकी मृत्यु हो गई थी। वैसे उसके बयान के अनेक पृष्ठ एन० के० वी० डी० ने प्रस्तुत किए थे। इसके तुरन्त बाद उन लोगों ने जिला पार्टी समिति के सचिव स्मिरनोव को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें कथित दक्षिणपंथी संगठन का अध्यक्ष बताकर गिरफ्तार किया गया। इसके अलावा जिला वित्त-विभाग के अध्यक्ष साबूरोव और किसी अन्य व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया गया।

विशेष दिलचस्पी की बात यह है कि ब्लासोव के भाग्य का इस प्रकार निर्णय हुआ। हाल में ही उसने यह मांग की थी कि रोमानोव को पार्टी से निकाल दिया जाये और अब रोमानोव जिला कार्यकारिणी का नया अध्यक्ष बन चुका था। उसने जिला एन० के० वी० डी० के अध्यक्ष एन० आई० क्राइलोव को भी अपने दो सक्रिय और योग्य अधिकारियों को कथित विध्वंस की कारवाई के अभियोग पर गिरफ्तारी से बचाने के लिए नाराज कर दिया था। इन दोनों अधिकारियों को उनके सामाजिक मुल के कारण अवांछित समझा जाता था। (ब्लासोव अपने कार्य के लिए प्रायः सब प्रकार के "भूतपूर्व" लोगों को नियुक्त करता था

क्योंकि ये लोग अपने काम को बड़े प्रभावशाली ढंग से सीख लेते थे और बड़े परिश्रम से काम करते थे; सर्वहारा वर्ग से पदोन्नति देकर जिन लोगों को बड़े पदों पर नियुक्त किया जाता था वे कुछ नहीं जानते थे और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे कुछ सीखना भी नहीं चाहते थे।) इसके बावजूद एन० के० वी० डी० विभिन्न व्यवसायों की सहकारी समिति से भी शांति कायम रखना चाहती थी। जिला एन० के० वी० डी० का उपाध्यक्ष सोरोकिन एक शांति प्रस्ताव लेकर व्लासोव से मिलने आया : एन० के० वी० डी० को बिना पैसा लिए सात सौ रूबल का सामान दे दिया जाए (और आगे चलकर हम किसी प्रकार इस धन को रद्द कराने में मदद देंगे।) (गन्दे लोग ! और यह राशि व्लासोव के दो महीने के वेतन के बराबर थी और उसने कभी भी गैर कानूनी तरीके से एक पैसा भी नहीं कमाया था।) "और अगर तुम यह सामान हमें नहीं देते तो तुम्हें इसके लिए पछताना होगा" व्लासोव ने उसे फटकार कर भगा दिया : "तुम मेरे सामने, एक कम्युनिस्ट के सामने, ऐसा प्रस्ताव करने का साहस कैसे करते हो ?" अगले ही दिन क्राइलोव जिला उपभोक्ता समिति के कार्यालय में पहुंचा। इस बार वह जिला पार्टी समिति के प्रतिनिधि के रूप में गया था। (यह स्वांग और ऐसी ही अन्य चालाकियां सन् १९३७ में व्याप्त वातावरण के अनुकूल थीं।) और इस बार उसने पार्टी की एक बैठक बुलाने का आदेश दिया; विचाराधीन विषय था : "उपभोक्ता सहकारियों में स्मिरनोव और यूनीवर की विध्वंस की कारवाइयां" और इस बारे में कामरेड व्लासोव की रिपोर्ट। अब जैसाकि स्पष्ट है यह बहुत ऊंचे दर्जे की चालाकी है, जिसमें आपको आसानी से फंसाया जा सकता है। उस समय कोई भी व्यक्ति व्लासोव के ऊपर अभियोग नहीं लगा रहा था। लेकिन जिला पार्टी समिति के भूतपूर्व सचिव की विध्वंस की कारवाइयों के बारे में व्लासोव का दो शब्द भी कहना पर्याप्त था और एन० के० वी० डी० के प्रतिनिधि उसे बीच में टोकते : "और आप कहां थे ? आपने समय रहते हमें सूचना क्यों नहीं दी ?" ऐसी परिस्थिति में अनेक लोग अपना संतुलन खो देते और जाल में फंस जाते। लेकिन व्लासोव ऐसा आदमी नहीं था ! उसने तुरन्त उत्तर दिया : "मैं रिपोर्ट पेश नहीं करूंगा। क्राइलोव रिपोर्ट दे—आखिरकार उसने स्मिरनोव और यूनीवर को गिरफ्तार किया है और वहीं उनके मामले की जांच पड़ताल कर रहा है।" क्राइलोव ने रिपोर्ट पेश करने से इन्कार कर दिया : "मैं प्रमाण से परिचित नहीं हूं।" व्लासोव का उत्तर था : "अगर स्वयं तुम प्रमाण से परिचित नहीं हो तो इसका यह अर्थ होता है कि उन लोगों को बिना किसी कारण के गिरफ्तार किया गया।" इस प्रकार पार्टी की बैठक नहीं हो सकी। लेकिन ऐसे कितने अवसर थे जिनमें लोगों ने इस प्रकार अपनी रक्षा की हो ? (यदि हम इस तथ्य की उपेक्षा कर दें कि उस समय तक ऐसी प्रबल संकल्प शक्ति वाले लोग थे, जो कठिन निर्णय ले सकते थे, तो हम सन् १९३७ के वातावरण को पूरी तरह से नहीं समझ पायेंगे और इस वातावरण को समझने के लिए यह स्मरण रखना भी आवश्यक है कि उसी रात जिला उपभोक्ता सहकारी समिति का वरिष्ठ लेखाकार टी० और उसका सहायक एन०, व्लासोव के कार्यालय में १०,००० रूबल लेकर आए। वासिली ग्रीगोरेविच ! आज की रात आप इस शहर से चले जायें ! कल सुबह होने की प्रतीक्षा न करें अन्यथा आप अपना जीवन समाप्त ही समझें। "लेकिन व्लासोव ने यह बात उचित नहीं समझी कि एक कम्युनिस्ट भाग निकले।" अगले दिन सुबह जिले के अखबार में जिला उपभोक्ता सहकारी समिति के काम के बारे में एक बहुत बुरा लेख प्रकाशित हुआ। (यह

उल्लेखनीय है कि सन् १९३७ में समाचारपत्र एन० के० वी० डी० के साथ मिलकर काम करते थे ।) शाम होते-होते व्लासोव से यह कहा गया कि वह जिला पार्टी समिति को स्वयं अपने काम का लेखा जोखा दे । (इन लोगों के काम का यही तरीका था । पूरे सोवियत संघ में इसी तरह से काम हो रहा था ।)

यह बात सन् १९३७ की है तथाकथित "मिकोयान समृद्धि" के दूसरे वर्ष की है जब मास्को और अन्य बड़े शहरों में समृति फैल जाने का दावा किया जाता था । और आज भी, पत्रकार और लेखक अपने संस्मरणों में यही आभास देते हैं कि उस समय तक देश में हर चीज़ की भरमार हो चुकी थी । लगता है कि यह संकल्पना इतिहास में व्याप्त हो गई है और इस बात का खतरा है कि यह इतिहास में ज्यों की त्यों कायम रहेगी और इसके बावजूद नवम्बर १९३६ में, रोटी के राशन की समाप्ति के दो वर्ष बाद, आइवानोवो प्रान्त में (और दूसरे प्रान्तों में भी) एक गुप्त निर्देश जारी किया गया, जिसके अधीन आटे की बिक्री पर पाबन्दी लगा दी गई । इन वर्षों में कस्बों और विशेषकर गांवों में गृहणियां स्वयं अपनी रोटी तैयार करती थीं । आटे की बिक्री पर पाबन्दी लगाने का अर्थ था रोटी मत खाओ ! कादी के जिला केन्द्र में, रोटी खरीदने वालों की इतनी बड़ी-बड़ी लाइनें लग गई जैसी लाइनें इससे पहले किसी व्यक्ति ने नहीं देखी थीं । (पर उन लोगों ने जिला केन्द्रों में काली रोटी तैयार करने पर पाबन्दी लगाकर और केवल अधिक मंहगी सफेद रोटी ही पकाने की अनुमति देकर इस समस्या पर प्रहार किया ।) पूरे कादी जिले में एकमात्र बेकरी जिले के मुख्यालय में ही थी और लोग काली रोटी खरीदने के लिए गांवों से जिले में पहुंचने लगे । जिला सहकारी समिति के गोदामों में आटा मौजूद था । लेकिन दो समानान्तर पाबंदियों के कारण इस आटे को किसी भी रूप में जनता को नहीं दिया जा सकता था ! पर इसके बावजूद व्लासोव ने एक रास्ता निकाला और सरकार के चालाकी से भरे निर्देश के बावजूद उसने पूरे एक वर्ष तक जिले के लोगों के भोजन की अच्छी व्यवस्था की । वह सामूहिक खेतों में पहुंचा और उनमें से आठ को इस बात पर सहमत किया कि वे "कुलकों" की खाली झोंपड़ियों में सार्वजनिक बेकरी चलायेंगे (दूसरे शब्दों में, वे लोग जलाने की लकड़ी इकट्ठा करेंगे और स्त्रियों को मामूली रूसी चूल्हों में रोटियां पकाने के लिए लगायेंगे । लेकिन इस बात का ध्यान रखिये, अब तक चूल्हों का समाजीकरण किया जा चुका था और इन पर निजी नहीं सार्वजनिक स्वामित्व कायम हो चुका था ।) जिला उपभोक्ता सहकारी इन्हें आटा देने को तैयार थी । स्पष्ट था कि यह समाधान कितना सरल और सीधा सादा था, पर इस समाधान को ढूंढने और लागू करने की भी आवश्यकता थी । बेकरियां स्थापित किए बिना ही (जिसके लिए व्लासोव के पास पैसा नहीं था), व्लासोव ने एक ही दिन में बेकरियां शुरू करवा दीं । आटे का व्यापार शुरू किए बिना ही, वह निरन्तर अपने गोदामों से आटा देता रहा और उसने प्रान्त से और अधिक आटा मंगवाने की व्यवस्था की । जिला मुख्यालय में काली रोटी बेचे बिना ही वह पूरे जिले को काली रोटी उपलब्ध कराता रहा । हां, उसने निर्देशों का शाब्दिक उल्लंघन नहीं किया लेकिन उसने उनकी भावना का उल्लंघन किया—क्योंकि निर्देशों का सार यह था कि लोगों को भूखा मारकर आटे की खपत में कमी की जाए । अतः जिला पार्टी समिति में व्लासोव की आलोचना करने के अच्छे आधार उपलब्ध थे ।

इस आलोचना के बाद व्लासोव रात भर स्वतन्त्र रहा और अगले दिन सुबह उसे

गिरफ्तार कर लिया गया। वह एक तगड़ा और संकल्प शक्ति वाला आदमी था। उसका कद छोटा था और वह हमेशा अपना सिर ऊपर उठाकर चलता था और उसकी चाल ढाल में आक्रामक भाव प्रकट होता था। उसने पार्टी की सदस्यता का अपना कार्ड सौंप देने में आनाकानी की क्योंकि पार्टी की जिला समिति में उस रात को उसे पार्टी से निकालने के बारे में कोई निर्णय नहीं लिया गया था। उसने जिला सोवियत के एक सदस्य का अपना पहचान का कार्ड भी देने से इन्कार कर दिया क्योंकि जनता ने उसे इस पद के लिए निर्वाचित किया था और जिला कार्यकारिणी ने ऐसा कोई निर्णय नहीं लिया था जिसके आधार पर उसे जिला सोवियत के सदस्य के अधिकारों से वंचित किया जा सके। लेकिन पुलिस ऐसी औपचारिकताओं को समझने की चिन्ता नहीं करती थी। पुलिस ने उसे धर दबोचा और बल प्रयोग के द्वारा ये सब चीजें उससे छीन लीं। वे लोग दिन दहाड़े उसे गिरफ्तार करके कादी की मुख्य सड़क से जिला उपभोक्ता सहकारी समिति के कार्यालय से ले गये। व्लासोव के एक युवक मैनेजर ने जो युवा कम्युनिस्ट पार्टी कोमसोमोल का भी सदस्य था जिला पार्टी समिति के मुख्यालय की खिड़की से यह दृश्य देखा। उस समय प्रत्येक व्यक्ति, विशेषकर गांवों के लोग अपने अबोधपन के कारण वह नहीं सीख पाये थे कि उन्हें अपनी जबान बन्द रखनी चाहिए। यह युवा मैनेजर चिल्ला उठा : "इन हरामजादों को देखो! अब इन लोगों ने मेरे बड़े अफसर को भी गिरफ्तार कर लिया है।" वहीं तत्काल, कमरे से बाहर निकले बिना ही उन लोगों ने उसे जिला पार्टी समिति और युवक कम्युनिस्ट पार्टी दोनों से निष्कासित कर दिया और वह चिर परिचित मार्ग से अथाह गर्त में जा गिरा।

अन्य लोगों की तुलना में, जिन्हें इसी मामले में फंसाया गया था, व्लासोव को बहुत देरी से फंसाया गया। उसकी गिरफ्तारी के बिना इस पूरे मामले को प्राय: तैयार कर लिया गया था और इसे अदालत में पेश करने की तैयारी हो रही थी। वे लोग उसे आइवानोवो एन० के० वी० डी० की आन्तरिक जेल में ले गये। लेकिन इस मामले में फंसाये जाने वाले वे अन्तिम व्यक्ति थे। अत: उसके ऊपर बहुत भारी दबाव नहीं पड़ा। दो बार उससे पूछ-ताछ की गई। गवाहों से अभियोगों के समर्थन में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं थे और उसके मामले की फाइल को जिला उपभोक्ता समिति की रिर्पोटों के संक्षेप और जिले के अखबार की कतरनों से भर दिया गया। व्लासोव के ऊपर ये अभियोग लगाये गये थे : (१) लोगों को रोटी के लिए कतारों में खड़े करने की स्थिति उत्पन्न करना; (२) उपभोक्ता सामान की न्यूनतम मात्रा रखना (मानो कि वह उपभोक्ता माल जो यहां मौजूद नहीं था वह कहीं अन्यत्र मौजूद था और किसी ने इसे कादी जिले की उपभोक्ता सहकारी समिति को देने का प्रस्ताव किया था); (३) आवश्यकता से अधिक नमक का भण्डार करना (लेकिन यह सुरक्षित भण्डार रखना अनिवार्य था : प्राचीन समय से ही रूस के लोग इस बात से भयभीत रहे थे कि युद्ध की स्थिति में कहीं उनके पास नमक ही समाप्त न हो जाए।)

सितम्बर के अन्त में प्रतिवादियों को सार्वजनिक मुकदमे के लिए कादी लाया गया। यह छोटी यात्रा नहीं थी। (यह स्मरण रखिए कि ओ० एस० ओ० अर्थात् विशेष मण्डल और बन्द अदालतें—इतने कम खर्च पर मुकदमों का निपटार कर देती थीं! (आइवानोवो से किनेशमा तक ये लोग स्तोलीपिन रेल डिब्बे में गये; इसके बाद किनेशमा से कादी तक का ७० मील का फासला मोटर गाड़ियों में तय किया। कारों के इस काफिले में १० से अधिक कारें थीं। एक पुरानी और बियाबान सड़क पर यह एक असाधारण दृश्य दिखाई

पड़ता था और इससे लोगों के मन में आश्चर्य, भय और युद्ध की आशंका का भय उत्पन्न होता था। प्रान्तीय एन० के० वी० डी० के क्रांति विरोधी संगठनों के विशेष गुप्त विभाग का अध्यक्ष प्यूजिन इस पूरे मुकदमे का बिना किसी खामी के संचालन और इसके माध्यम से लोगों को आतंकित करने के लिए जिम्मेदार था। इस काफिले में घुड़सवार पुलिस की सुरक्षित टुकड़ियों के ४० सन्तरी थे और २४ से २७ सितम्बर तक ये सन्तरी नंगी तलवारें और नागुवां रिवाल्वरें लेकर कैदियों को जिला एन० के० वी० डी० से आधी तैयार क्लब की इमारत पहुंचते थे और वापस लाते थे। इन लोगों को उस गांव के बीच से ले जाया जाता था, जहां हाल तक वे सरकार के रूप में काम कर रहे थे। क्लब की अधूरी इमारत में खिड़कियां लगाई जा चुकी थीं लेकिन मंच अभी तक तैयार नहीं हुआ था। बिजली भी नहीं थी। कादी में बिजली ही नहीं थी। रात हो जाने पर अदालत की कारवाई मिट्टी के तेल की लालटेनों के प्रकाश में होती थी। बारी-बारी से विभिन्न सामूहिक खेतों से दर्शकों को लाया जाता था और इसके अलावा कादी की सारी जनता भी मौजूद रहती थी। ये दर्शक खिड़की की सिलों पर ही नहीं बैठते थे बल्कि पूरे कमरे में भरे रहते थे और एक साथ कम से कम सात सौ आदमी भर जाते थे। (रूस की जनता सदा से तमाशबीनी की शौकीन रही है।) इस अदालत के कमरे की अगली बेंचें सदा कम्युनिष्टों के लिए सुरक्षित रहती थीं ताकि अदालत को भरोसे योग्य समर्थन मिलता रहे।

प्रान्तीय अदालत के एक विशेष न्यायपीठ का गठन किया गया, जिसमें प्रान्तीय अदालत का उपाध्यक्ष शुबिन था और इसके सदस्य बिचे और जायोजेरोव नामक व्यक्ति थे। शुबिन ने इस अदालत की अध्यक्षता की। दोरपात विश्वविद्यालय का स्नातक प्रांतीय सरकारी वकील करासिक इस्तगासे का वकील था। और यद्यपि सब प्रतिवादियों ने अपनी सफाई पेश करने के लिए वकीलों की सेवाएं लेने से इनकार कर दिया था पर इसके बावजूद एक सरकारी वकील को उनके मत्थे मढ़ा गया, ताकि मुकदमे में उनकी ओर से भी एक वकील मौजूद रहे। औपचारिक रूप से जो अभियोगपत्र पेश किया गया वह अत्यन्त गम्भीरतापूर्ण, खतरनाक और लम्बा था। अभियोगपत्र का सार यह था कि कादी जिले में एक गुप्त दक्षिण पंथी बुखारिनवादी टोली काम कर रही थी, जिसका गठन आइवानोवो में किया गया था (अर्थात् आप भविष्य में आइवानोवो में भी गिरफ्तारियों की आशा कर सकते थे) और इस टोली का उद्देश्य कादी गांव में विध्वंस की कारवाई के द्वारा सोवियत सरकार की सत्ता समाप्त करना था। (और कादी गांव समस्त रूस में एक ऐसा सुदूर स्थान था, जिसे दक्षिण-पंथी लोगों ने अपना काम शुरू करने के लिए चुना)।

सरकारी वकील ने अदालत से याचना की कि जेल में अपनी मृत्यु से पहले सावरोव ने जो बयान दिया था वह अदालत में पढ़ कर सुनाया जाये और उसे प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाये। वास्तव में उक्त तथाकथित टोली के विरुद्ध लगाया गया अभियोग स्तावरोव के बयान पर ही आधारित था। अदालत स्मिरतक के बयान को उसी प्रकार मुकदमे की कारवाई में शामिल करने के लिए तैयार हो गई, जिस प्रकार किसी जीवित व्यक्ति के बयान को शामिल किया जाता है। (पर इसमें लाभ यह था कि कोई भी प्रतिवादी इस बयान का खण्डन नहीं कर सकता था।)

लेकिन अन्धकारपूर्ण कादी गांव इन विद्वतापूर्ण सूक्ष्म बातों को नहीं समझ पा रहा था। वह केवल इस प्रतीक्षा में था कि आगे क्या होता है। स्तावरोव का बयान अदालत में

पढ़कर सुनाया गया और इसे एक बार फिर अदालत की कारवाई का अंग मान लिया गया यद्यपि जेल में पूछताछ के दौरान स्तावरोव को मार डाला गया था। अदालत में प्रतिवादियों से जिरह शुरू हुई—और तुरन्त गड़बड़ फैल गई। सब प्रतिवादियों ने अपने उन बयानों का खण्डन किया, जो उन्होंने पूछताछ के दौरान दिए थे।

यह बात स्पष्ट नहीं है, हम यह नहीं जानते कि यदि मास्को में मजदूर संघ भवन के अक्तूबर कक्ष में यदि यह घटना होती तो इसका समाधान किस प्रकार निकाला जाता। लेकिन, कम से कम यहां, अत्यन्त बेशर्मी से मुकदमे की कारवाई को जारी रखने का निश्चय किया गया। न्यायाधीश ने प्रतिवादियों को भला बुरा कहा : पूछताछ के दौरान तुम लोग भिन्न बयान कैसे दे सकते थे ? अत्यन्त कमजोर यूनीवर ने अपनी अत्यन्त क्षीण और मुश्किल से सुनाई पड़ने वाली आवाज़ में उत्तर दिया : "एक कम्युनिस्ट होने के नाते में एक खुली अदालत में यह नहीं बता सकता कि एन० के० वी० डी० पूछताछ के दौरान क्या तरीके अपनाती है।" (यह बुखारिन के मुकदमे के लिए एक आदर्श नमूना था। यही बात इन लोगों को एकता के सूत्र में बांधती है ! अन्य सब बातों से अधिक इन लोगों को इस बात की चिंता रहती है कि लोग पार्टी के बारे में बुरी बातें सोचेंगे। पर उनके न्यायाधीश बहुत समय पहले ही इन बातों की चिन्ता करना छोड़ चुके थे।)

अदालत की कारवाई कुछ समय स्थगित होने की अवधि में क्ल्यूजिन प्रतिवादियों की कोठरियों में गया। उसने व्लासोव से कहा : "तुमने सुना है कि स्मिरनोव और यूनीवर ने कितना पतित आचरण किया है, हरामजादे कहीं के ? तुम्हें अपना अपराध स्वीकार करना होगा और पूरी सच्चाई बतानी होगी !" "हां, सच्चाई, सच्चाई के अलावा अन्य कुछ नहीं," व्लासोव तत्परता से राजी हो गया। वह अभी तक कमजोर नहीं पड़ा था। "यह सत्य और सत्य के अलावा अन्य कुछ नहीं कि तुम हर प्रकार से, हर दृष्टि से जर्मन फासिस्टों की तरह ही बुरे हो !" क्ल्यूजिन क्रोध से आग बबूला हो उठा "सुनो, दोगले कहीं के, इसकी कीमत तुम्हें अपने खून से चुकानी होगी !"[१९] उसी क्षण से व्लासोव को प्रतिवादियों के मध्य एक पिछले स्थान से उठा कर इस मुकदमे में प्रमुख भूमिका निभाने के लिए आगे धकेल दिया गया। उसे इस टोली के सैद्धांतिक नेता की भूमिका निभाने का काम सौंपा गया था।

अदालत के कमरे में कुर्सियों के बीच जो भीड़ खचाखच भरी थी वह उस समय अत्यधिक दिलचस्पी से भर उठती थी जब अदालत बड़ी निर्भयता से रोटी के लिए लगने वाली लाइनों के बारे में प्रश्न उठाती थी—जब ऐसी बातों के बारे में सवाल पूछे जाते थे जिनका प्रत्येक व्यक्ति से गहरा सम्बन्ध था। (और स्पष्ट था कि मुकदमे से कुछ दिन पहले से रोटी की खुली बिक्री शुरू हो गई थी और जिस दिन मुकदमे की सुनवाई हो रही थी गांव में कहीं भी रोटी के लिए लाइनें नहीं लगी थीं।) अभियुक्त स्मिरनोव से यह सवाल पूछा गया : "क्या तुम्हें जिले में रोटी की लाइनों के बारे में जानकारी थी ?" "हां, सचमुच जानकारी थी। सहकारी दुकान से लेकर जिला पार्टी समिति की इमारत तक लम्बी लाइन लगी रहती थी।" "और तुमने इस सम्बन्ध में क्या किया ?" स्मिरनोव को जिन यातनाओं का सामना करना पड़ा था उनके बावजूद उसकी आवाज़ की कड़क और व्यवहार की शान्त निष्ठा मौजूद थी। चौड़े कन्धों, सरल मुखाकृति और हलके भूरे रंग के बालों वाले इस व्यक्ति ने धीरे-धीरे इस प्रश्न का उत्तर दिया और अदालत के कमरे में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति ने उसका एक-एक शब्द सुना : "प्रान्त की राजधानी के सब संगठनों को भेजी गई सब अपीलों का जब कोई

नतीजा नहीं निकला तो मैंने व्लासोव को यह निर्देश दिया कि वह एक रिपोर्ट लिखकर कामरेड स्तालिन को भेजे।" "और तुमने स्वयं यह क्यों नहीं लिखीं ?"(अभी तक उन लोगों को इस बात की जानकारी नहीं थी ? यह बात निश्चय ही उनकी नज़र से बचकर निकल गई थी !) "हमने यह रिपोर्ट तैयार की और मैंने एक विशेष संदेश वाहक की मार्फत इसे सीधे केन्द्रीय समिति को भेजा और प्रांतीय नेताओं से इस बात का उल्लेख नहीं किया। इस प्रतिवेदन की एक प्रति पार्टी की जिला समिति की फाइलों में रख दी गई थी।"

अदालत के कमरे में मौजूद सब लोगों ने अपनी सांस रोक ली। स्वयं अदालत के सदस्य भी बड़ी पशोपेश में पड़ गए थे। इसके बाद इन्हें आगे सवाल नहीं पूछने चाहिए थे पर इसके बावजूद कोई यह सवाल उठा बैठा : "और फिर क्या हुआ ?"

सचमुच यह प्रश्न अदालत के कमरे में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति के होंठों से निकल पड़ा : और फिर क्या हुआ ?

स्मिरनोव अपने आदर्श की मृत्यु पर हिचकियां लेकर नहीं रोया, उसने इस पर आंसू नहीं बहाये (और मास्को के मुकदमों में इसी बात का अभाव था !) उसने ऊंचे स्वर में और शांतिपूर्वक उत्तर दिया :

"कुछ नहीं। इसका कोई जवाब नहीं मिला।"

और लग रहा था मानो उसकी थकान भरी आवाज कह रही ही : ठीक है, पर वास्तविकता यही है कि मुझे इसी बात की आशा थी।

इसका कोई जवाब नहीं मिला। पिता और शिक्षक से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ ! सार्वजनिक मुकदमा अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुंच चुका था। इसने जनसमुदाय के समक्ष उस नरभक्षी के काले हृदय को प्रकट कर दिया था ! और मुकदमा तुरन्त नहीं समाप्त किया जा सकता था। लेकिन नहीं, उनमें इस कार्य के लिए पर्याप्त बुद्धि नहीं थी, पर्याप्त चतुरता नहीं थी और वे अगले तीन दिनों तक इसी गन्दगी को दोहराते रहे।

सरकारी वकील ने बहुत शोरगुल मचाया : धोखाधड़ी, दोगलापन ! हां बात यही थी। ये लोग एक ओर विध्वंस के कार्यों में लगे थे और दूसरी ओर उन लोगों ने कामरेड स्तालिन को पत्र लिखने का साहस किया। और वे उससे उत्तर तक की अपेक्षा करते थे। आइए प्रतिवादी व्लासोव को यह बताने दें कि उसने किस प्रकार आटे की बिक्री और मामूली रोटी तैयार करने पर पाबन्दी लगा कर जिले में भयंकर तोड़फोड़ का काम शुरू किया।

व्लासोव को बयान देने के लिए उठ खड़े होने को कहने की ज़रूरत नहीं थी—वह पहले ही तपाक से खड़ा हो चुका था और उसने गूंजती हुई आवाज़ में ऊंचे स्वर में कहा :

"मैं अदालत को इसका पूरा उत्तर देने को तैयार हूं। लेकिन शर्त केवल यह है कि तुम, सरकारी वकील कासिक अभियोक्ता के मंच से नीचे उतर आओ और यहां मेरे बराबर बैठ जाओ !" यह बात समझ के बाहर थी, अकल्पनीय थी। शोर, चिल्लाने की आवाज़। इन लोगों को व्यवस्था बनाए रखने को कहो ! यह क्या हो रहा है ?

इस प्रकार अदालत में बोलने का अधिकार प्राप्त कर, व्लासोव ने बड़ी तत्परता से स्पष्टीकरण दिया।

'आटा बेचने और मामूली रोटी तैयार करने पर पाबन्दियां प्रान्तीय कार्यकारिणी के आदेश के द्वारा लगाई गई थीं। इस समिति के अध्यक्षमण्डल के स्थाई सदस्यों में प्रांतीय सरकारी वकील कासिक भी है। यदि यह पाबंदी लगाना विध्वंस की कारवाई है, तो तुमने

सरकारी वकील के नाते इस प्रस्ताव के विरुद्ध अपने निषेधाधिकार का प्रयोग क्यों नहीं किया ? इसका यह अभिप्राय है कि तुम मुझसे भी पहले विध्वंस की कारवाई में लगे हुए थे !"

सरकारी वकील के मुंह से आवाज़ नहीं निकली । यह बहुत तेज़ और सटीक प्रहार था । अदालत भी सकते की स्थिति में आ गई थी, न्यायाधीश बुदबुदाया ।

"यदि आवश्यक हुआ [?] तो हम सरकारी वकील पर भी मुकदमा चलायेंगे । लेकिन आज हम तुम्हारे मुकदमे की सुनवाई कर रहे हैं ।"

(दो सत्य : यह सब तुम्हारे पद पर निर्भर करता है ।)

"मैं यह मांग करता हूं कि उसे सरकारी वकील के मंच से हटा दिया जाये," अदम्य व्लासोव ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा ।

अदालत की कारवाई स्थगित कर दी गई ।

अब आप ही बताइए कि जनसमुदाय को कुछ विशेष बातों का ही पाठ पढ़ाने की दृष्टि से किसी ऐसे मुकदमे का क्या महत्व हो सकता है ?

लेकिन वे लोग इस मुकदमे को चलाते रहे । प्रतिवादियों से जिरह के बाद उन लोगों ने गवाहों से जिरह शुरू की । लेखाकार एन०

"व्लासोव की विध्वंस की कारवाइयों के बारे में तुम्हें क्या जानकारी है ?"

"कुछ भी नहीं ।"

"यह कैसे हो सकता है ?"

"मैं तो गवाहों के कमरे में बैठा हुआ था और मैंने वे बातें नहीं सुनीं जो यहां कही जा रही थीं ।"

"तुम्हें यह सुनने की जरूरत नहीं है ! तुम्हारे हाथों से अनेक दस्तावेज़ गुजरे । यह कैसे हो सकता है कि तुम्हें जानकारी न हो ।"

"ये सब दस्तावेज़ पूरी तरह उचित थे ।"

"लेकिन यहां जिले के अखबारों का ढेर रखा हुआ है और इन अखबारों तक में वे लोग व्लासोव की विध्वंस की कारवाइयों के बारे में लिख रहे थे । और तुम यह दावा करते हो कि तुम्हें किसी भी बात की जानकारी नहीं है ?"

"तो ठीक है, जाकर उन्हीं लोगों से पूछिए जिन्होंने ये लेख लिखे हैं ।"

इसके बाद रोटी की दुकान का मैनेजर पेश हुआ ।

"बताइए, क्या सोवियत सरकार के पास काफी रोटी है ?"

(जरा सोचिए ! आप इस प्रश्न का उत्तर कैसे दे सकते थे ? यह बात कौन कह सकता था : "मैंने रोटियों की गिनती नहीं की ?")

"बहुत ।"

"तुम्हारी दुकान पर रोटी के लिए लाइनें क्यों लगी रहती हैं ?"

"मुझे नहीं मालूम ।"

"इस दुकान का अध्यक्ष कौन था ?"

"मुझे नहीं मालूम ।"

"तुम्हारा क्या मतलब है, तुम कैसे कह सकते हो कि तुम्हें नहीं मालूम ? तुम्हारी दुकान का अध्यक्ष कौन था ?"

"वासिली ग्रीगोरेविच।"

"क्या बकते हो! उसे वासिली ग्रीगोरेविच कह कर तुम कैसे पुकार सकते हो? प्रतिवादी व्लासोव कहो! तो वह इस दुकान का अध्यक्ष था।"

गवाह मौन हो गया।

अदालत के न्यायाधीश ने स्टोनोग्राफर को लिखवाया। उत्तर: 'व्लासोव की विध्वंस की कारवाई के परिणामस्वरूप रोटी लेने वालों की लाइनें लगी यद्यपि सोवियत सरकार के पास बहुत बड़ी मात्रा में रोटी का भंडार था।'

अपने भय को दबाते हुए सरकारी वकील ने एक बहुत लम्बा और क्रोधपूर्ण भाषण किया। प्रतिवादियों का वकील अधिकांशतया स्वयं अपनी रक्षा करने, स्वयं अपनी सफाई पेश करने में ही लगा रहा और इस बात को दोहराता रहा कि मातृभूमि के हित उसके लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि किसी ईमानदार नागरिक के लिए हो सकते हैं।

अदालत के समक्ष अपने अन्तिम बयान में स्मिरनोव ने कोई याचना नहीं की और किसी भी बात के प्रति पश्चाताप नहीं किया। आज हम जिस रूप में इस स्थिति की कल्पना कर सकते हैं उससे यही प्रकट होता है कि वह बहुत दृढ़ व्यक्ति था और इतना अधिक स्पष्ट-वादी भी कि सन् १९३७ के वर्ष में जीवित नहीं रह सकता था।

जब साबुरोव ने यह याचना की कि उसे मृत्युदण्ड न दिया जाये—"मैं अपने लिए नहीं बल्कि अपने छोटे-छोटे बच्चों के लिए यह याचना कर रहा हूं—व्लासोव के लिए यह बात असह्य हो उठी और उसने साबुरोव का कोट पकड़ कर खींचा और बोला: "तुम बेवकूफ हो।"

व्लासोव ने अदालत के समक्ष अपने अन्तिम बयान में अत्यन्त धृष्टतापूर्ण बातें कहने का मौका हाथ से नहीं जाने दिया।

"मैं तुम्हें अदालत के सदस्य और न्यायाधीश नहीं मानता बल्कि मंच पर प्रस्तुत एक हास्य नाटिका के अभिनेता भर मानता हूं, जिसमें पहले से ही तुम्हारी भूमिकाएं निर्धारित कर दी गई हैं। तुम्हें एन० के० वी० डी० ने एक घृणायोग्य उत्तेजना की कारवाई में हिस्सा लेने के लिए नियुक्त किया है। मैं चाहे कुछ भी क्यों न कहूं, तुम लोग मुझे गोली से उड़ाकर मृत्यु की सजा सुनाओगे। मेरा केवल एक बात में विश्वास है: वह समय आयेगा जब तुम लोग यहां मेरे स्थान पर होगे।"[४०]

अदालत ने शाम ७ बजे से रात एक बजे तक निर्णय लिखने में बिताया और इस पूरी अवधि में अदालत के कमरे में मिट्टी के तेल की लालटेनें जलती रहीं और प्रतिवादी नंगी तलवारों की छाया में बैठे रहे और अदालत में मौजूद दर्शकों में फुसफुसाहट के स्वर में वार्तालाप चल रहा था जो अभी तक अपने-अपने घर नहीं गए थे। बल्कि अब फैसला सुनने के लिए अदालत में ही जमे हुए थे।

और जिस प्रकार इन लोगों को निर्णय लिखने में लम्बा समय लगा उसी प्रकार इस निर्णय को पढ़ कर सुनाने में भी लम्बे समय की जरूरत हुई और उन्होंने न जाने कितनी कल्पनातीत विध्वंस की कारवाइयों, सम्पर्कों और षड्यंत्रों का अम्बार लगा दिया। स्मिरनोव, यूनीवर, साबुरोव और व्लासोव को गोली से उड़ाकर मृत्युदण्ड, दो अन्य को १० वर्ष की कैद; एक को ८ वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई। इसके अलावा अदालत के फैसले में कादी की युवक कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर एक और विध्वंस करने वाले संगठन का भी रहस्योद्-

घाटन किया गया (स्पष्ट था कि इसके सदस्यों को तुरन्त गिरफ्तार कर लिया गया।) युवक मैनेजर का स्मरण कीजिए ? इतना ही नहीं आइवानोत्रो ने गुप्त संगठनों के एक केन्द्र की भी बात कही जो मास्को के केन्द्र के अधीन बताया गया। (यह बुखारिन के ताबूत में एक और कील थी।)

अत्यन्त गम्भीरतापूर्ण "गोली से उड़ाकर मृत्युदण्ड" शब्दों के उच्चारण के बाद न्यायाधीश दर्शकों की करतल ध्वनि के लिए रुके। लेकिन अदालत के कमरे में अत्यन्त दुखपूर्ण वातावरण था और ऐसे लोग रो रहे थे, जिनका प्रतिवादियों से कोई रिश्ता नहीं था और इनके रिश्तेदारों की चीखें और बेहोश होकर गिरने की आवाजें अदालत के कमरे में गूंज उठीं। अदालत की अगली दो पंक्तियों से भी करतल ध्वनि नहीं हुई, जिन पर पार्टी के सदस्य बैठे हुए थे। सचमुच यह बात पूरी तरह से अनुचित थी। "ओह, हे भगवान, तुम लोगों ने यह क्या किया ?" अदालत के कमरे में मौजूद किसी व्यक्ति ने न्यायाधीशों के ऊपर चिल्लाते हुए कहा। यूनीवर की पत्नी आंसुओं के सागर में डूब गई थी। अर्ध अंधकार में भीड़ में हलचल शुरू हुई। व्लासोव ने अगली पंक्तियों में बैठे हुए लोगों से चिल्ला कर कहा : "अरे हरामजादो, तुम लोग तालियां क्यों नहीं बजा रहे हो ? तुम कम्युनिस्ट बनते हो !"

गारद प्लाटून का राजनीतिक कमीसार दौड़ कर उसके पास पहुंचा और उसने उसके मुंह पर अपनी रिवाल्वर अड़ा दी। व्लासोव ने रिवाल्वर छीनने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि एक पुलिसमैन दौड़ता हुआ आया और उसने अपने राजनीतिक कमीसार को पीछे धकेल दिया क्योंकि उसने एक बहुत बड़ी गलती की थी। गारद के कमाण्डर ने हुक्म दिया : "हथियार तैयार रखो !" और स्थानीय एन० के० वी० डी० के आदमियों की तीस कारबाईनें और पिस्तौलें प्रतिवादियों और भीड़ पर तन गईं। (उस समय ऐसा लगा कि मानो भीड़ प्रतिवादियों को मुक्त करने के लिए टूट पड़ेगी।)

अदालत के कमरे में मिट्टी के तेल की कुछ लालटेनें ही थीं और अर्ध अन्धकार ने गड़बड़ और भय को और बढ़ा दिया था। भीड़ अब, अन्ततः स्थिति से आश्वस्त होकर मुकदमे के कारण नहीं बल्कि तनी हुई कारबाईनों के कारण बेहद घबराहट से दरवाजों और खिड़कियों की ओर दौड़ने लगी। लकड़ी चटखने और टूटने लगी कांच चूर-चूर होने लगा। यूनीवरकी पत्नी, जो बहुत गहरी मूर्छा में थी, भीड़ के पांव तले प्रायः कुचलकर मौत के मुंह में पहुंच चुकी थी और अगले दिन सुबह तक कुर्सियों के नीचे वह पड़ी रही।

और तालियां कहीं नहीं बजीं।[४१]

दण्डित कैदियों को तत्काल गोली से नहीं उड़ाया जा सकता था। अतः उन्हें कहीं अधिक कड़े पहरे में रखने की आवश्यकता थी। क्योंकि अब इन कैदियों को कुछ भी खोने को शेष नहीं रह गया था और इन्हें मृत्युदण्ड के लिए प्रांत की राजधानी में पहुंचाना था।

उन लोगों ने पहली समस्या को—मुख्य सड़क से कैदियों को रात के समय एन० के० वी० डी० की जेल में पहुंचाने के लिए—एक-एक दण्डित कैदी को पांच-पांच आदमियों के पहरे में भेजा। एक सन्तरी के हाथ में लालटेन थी। एक सन्तरी पिस्तौल ताने हुए आगे-आगे चल रहा था, दो सन्तरी एक कैदी को बांहों से पकड़े हुए थे और अपने दूसरे हाथ में पिस्तौल संभाल रखी थीं। पांचवां सन्तरी पीछे-पीछे चल रहा था और उसकी पिस्तौल कैदी की पीठ पर तनी हुई थी।

पुलिस के शेष सिपाही दोनों ओर पंक्ति बना कर चल रहे थे ताकि भीड़ के किसी

भी हमले को रोका जा सके।

अब प्रत्येक विचारशील आदमी इस बात से सहमत हो जायेगा कि यदि वे लोग खुली अदालतों में सार्वजनिक रूप से मुकदमे चलाने के क्रम को जारी रखते तो एन० के० वी० डी० कभी भी अपना काम पूरा नहीं कर सकती थी।

और यही कारण है कि सार्वजनिक रूप से राजनीतिक मुकदमे चलाने का काम हमारे देश में जड़ नहीं जमा सका।

अध्याय ११



मृत्युदण्ड

रूस में मृत्युदण्ड के इतिहास में बहुत उतार-चढ़ाव आये हैं। जार इलैक्सेई माइखेलोविच रोमानोव की दंडसंहिता में ऐसे पचास अपराध थे, जिनके लिए मृत्युदण्ड दिया जा सकता था। पीटर महान् के सैनिक कानूनों के लागू होने के समय तक इनकी संख्या बढ़कर दो सौ हो गई थी। इसके बावजूद सम्राज्ञी एलिजाबेथ ने एक बार भी मृत्युदण्ड का सहारा नहीं लिया। यद्यपि उसने मृत्युदण्ड की अनुमति देने वाले कानूनों को रद्द नहीं किया। लोगों का कहना है कि गद्दी पर बैठते समय सम्राज्ञी एलिजाबेथ ने यह शपथ ली थी कि वह कभी भी किसी को मृत्युदण्ड नहीं देगी—और अपने शासन के २० वर्ष की अवधि में उसने शपथ को पूरा किया। उसके शासन-काल में सात वर्ष का युद्ध हुआ। इसके बावजूद उसने मृत्युदण्ड के बिना अपना काम चलाया। १८वीं शताब्दी के मध्य में यह एक आश्चर्यजनक उपलब्धि थी—फ्रांस के जैकोबिनवादियों की गिलोटन के इस्तेमाल से ५० वर्ष पहले यह सम्भव हो सका था। यह सच है कि हमने अपने अतीत का मजाक उड़ाने के लिए स्वयं को शिक्षित कर लिया है; हम अपने इतिहास के एक भी अच्छे कार्य अथवा एक भी अच्छी भावना को स्वीकार नहीं करते। और बड़ी आसानी से सम्राज्ञी एलिजाबेथ की ख्याति पर कालिख पोती जा सकती है; उसने मृत्युदण्ड के स्थान पर कोड़े लगाने की सजा की व्यवस्था की; नथुनों को चीर डालने; "चोर शब्द शरीर पर दाग देने और साइबेरिया में निष्कासित कर देने की व्यवस्था की। पर इसके बावजूद हम सम्राज्ञी की ओर से भी कुछ कह सकते हैं: अपने युग की सामाजिक संकल्पनाओं का उल्लंघन करते हुए वह इन बातों में उससे अधिक आमूल परिवर्तन कैसे कर सकती थी जितना परिवर्तन उसने किया? और सम्भवत: आज जिस कैदी को मृत्युदण्ड दिया जाता है वह उन समस्त सजाओं को स्वेच्छा से भोगने के लिए राजी हो जाएगा यदि उसे सूर्य के प्रकाश के नीचे जीवित रहने दिया जाए। लेकिन हम अपनी मानवीयता के कारण उसे यह अवसर नहीं देते। और सम्भवत: इस पुस्तक को पढ़ते समय पाठक यह अनुभव करने लगेगा कि हमारे शिविरों में २० अथवा यहां तक कि १० वर्ष की कैद भी एलिजाबेथ के युग में दी जाने वाली सजाओं से कहीं अधिक भयंकर है।

आज के संदर्भ में, इन सब बातों के प्रति एलिजाबेथ का सार्वभौम मानवीय दृष्टिकोण था। जबकि इसके विपरीत सम्राज्ञी कैथीरीन महान् का वर्ग पर आधारित दृष्टिकोण

था (जो इसके परिणामस्वरूप अधिक सही था)। किसी भी व्यक्ति को मृत्युदण्ड न देना कैथरीन महान् को बड़ा भयावह और तर्क के विरुद्ध लगता था। वह अपने शरीर अपने सिंहासन और अपनी प्रणाली की रक्षा के लिए मृत्युदण्ड को पूरी तरह से उचित मानती थी—दूसरे शब्दों में, नीरोविच जैसे राजनीतिक मुक़दमों, मास्को में प्लेग के फलस्वरूप होने वाले विद्रोह और पुगाचेव जैसे मामलों में वह मृत्युदण्ड को उचित मानती थी। लेकिन आदतन अपराध करने वाले और गैर राजनीतिक अपराधियों के लिए मृत्युदण्ड को समाप्त करने पर विचार क्यों नहीं किया जा सकता था ?

पाल के शासन काल में मृत्युदण्ड की समाप्ति की पुष्टि कर दी गई। (सम्राट पाल ने जो अनेक युद्ध लड़े उनके बावजूद सैनिक यूनिटों से सैनिक अदालतें कभी भी सम्बद्ध नहीं रहीं।) और एलक्जेंडर प्रथम के लम्बे शासनकाल में केवल युद्ध सम्बन्धी अपराधों के लिए ही मृत्युदण्ड देना शुरू किया गया और युद्ध सम्बन्धी अभियान के दौरान किए गए अपराध के लिए भी मृत्युदण्ड दिया जा सकता था। (१८१२)। (यहां कुछ लोग हमसे कहेंगे : एक दूसरे को चुनौती देने के परिणामस्वरूप होने वाली मृत्युओं को आप क्या कहेंगे ? हां, सचमुच, चुपचाप कुछ लोगों को मार डाला जाता था—लेकिन इसी प्रकार मजदूर संघ की एक बैठक के द्वारा भी किसी व्यक्ति को मौत के मुंह में धकेला जा सकता है!) लेकिन हमारे देश में पूरी अर्ध-शताब्दी तक—पुगाचेवसे लेकर दिसम्बरवादियों के समय तक—लोगों को ईश्वर प्रदत्त जीवन से राज्य के विरुद्ध किये जाने वाले अपराधों तक के लिए इसलिए वंचित नहीं किया गया कि कुछ लोगों ने निर्णय देकर यह बात कह दी हो।

पाँच दिसम्बरवादियों के खून ने हमारे राज्य की भूख को और तीव्र कर दिया। इसके बाद से, राज्य के विरुद्ध अपराधों के लिए न तो मृत्युदण्ड का निषेध किया गया और न ही इसे भुलाया गया और यह क्रम १९१७ की फरवरी क्रांन्ति तक जारी रहा। सन् १८४५ और १९०४ के कानूनों से इस बात की पुष्टि कर दी गई और इसके बाद सेना और नौ-सेना के फौजदारी कानूनों के द्वारा इसे और मजबूत बना दिया गया।

और इस अवधि में रूस में कितने लोगों को मृत्युदण्ड दिया गया ? हम इससे पहले ही अध्याय ८ में १९०५-१९०७ के बीच मृत्युदण्डों के बारे में उदारतावादी नेताओं द्वारा दिए गए आंकड़ों का उल्लेख कर चुके हैं। हम इसके अलावा रूस के फौजदारी कानून के विशेषज्ञ एन० एस० तंगातसेव द्वारा पुष्ट आंकड़ों का भी उल्लेख कर सकते हैं।[1] सन् १९०५ तक मृत्युदण्ड रूस में एक असाधारण कारवाई माना जाता था! ३० वर्ष की अवधि तक—सन् १८७६ से १९०४ तक (यह अवधि नारोदनाया वोल्या क्रान्तिकारियों और उनके द्वारा आतंक की कारवाइयों की अवधि है—ये आतंक के कार्य किसी सामूहिक मकान की रसोई में आतंक फैलाने के बारे में फुसफुसाहट के स्वर में कुछ कहने तक ही सीमित नहीं थे—यह अवधि व्यापक हड़तालों और किसान विद्रोह की थी। यह अवधि थी जब भावी क्रान्ति की पार्टियों का जन्म हुआ और वे शक्तिशाली बनी)—केवल ४८६ लोगों को मृत्युदण्ड दिया गया; दूसरे शब्दों में, पूरे देश में हर वर्ष १७ लोगों को मृत्युदण्ड मिला (इस आंकड़े में सामान्य गैर राजनीतिक अपराधियों को दिया गया मृत्युदण्ड भी शामिल है।[2]) पहली क्रान्ति (१९०५) के वर्षों और इसके दमन के वर्षों में, मृत्युदण्ड की संख्या बेहद तेजी से बढ़ी। इसमें रूस की कल्पनाशीलता को स्तम्भित कर दिया, इसके परिणाम-

स्वरूप तोलसतोय की आंखों से आंसू बहने लगे और कोरोलिंको क्रोध से भर उठा और यही बात बहुत से दूसरे लोगों के बारे में भी सही है : सन् १९०५ से लेकर १९०८ तक लगभग २२०० लोगों को मृत्युदण्ड दिया गया—अर्थात् हर महीने ४५ लोगों को मृत्युदण्ड दिया गया। जैसाकि तगांतसेव ने कहा है कि यह मृत्युदण्ड की महामारी भड़क उठने जैसी बात थी। इसका अन्त भी अचानक हुआ।

जब अस्थायी सरकार सत्तारूढ़ हुई तो उसने मृत्युदण्ड को पूरी तरह से समाप्त कर दिया। लेकिन जुलाई १९१७ में मृत्युदण्ड को सक्रिय सेना और अग्रिम मोर्चों पर सैनिक अपराधों, हत्या, बलात्कार, हत्या के प्रयास और लूटपाट जैसे अपराधों पर लागू कर दिया गया (लूटपाट अग्रिम मोर्चों के आस-पास के क्षेत्रों में बहुत व्यापक थी।) अस्थायी सरकार की सर्वाधिक अलोकप्रिय कारवाइयों में से यह भी एक थी, जिसने इस सरकार को समाप्त किया। बोलशेविकों द्वारा सत्ता हथियाने से पहले यह नारा उठाया था : "केरेन्सी द्वारा फिर चालू मृत्युदण्ड का नाश हो!"

हमें इस किस्से की जानकारी है कि २५-२६ अक्तूबर की रात को स्मोलनी में यह विचार हुआ कि क्या बोलशेविक सरकार जो अध्यादेश सबसे पहले जारी करेगी उनमें सदा सर्वदा के लिए मृत्युदण्ड को समाप्त करने का अध्यादेश भी होना चाहिए?—इस बात पर लेनिन ने अपने कामरेडों के आदर्शवाद का उचित रूप से मजाक उड़ाया। वे यह अच्छी तरह से जानते थे कि नये समाज की स्थापना की दिशा में मृत्युदण्ड के अभाव में आगे नहीं बढ़ा जा सकेगा। पर वामपंथी समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी के साथ मिलकर सरकार बनाते समय उन्हें इस पार्टी के दोषपूर्ण संकल्पनाओं के सामने झुकना पड़ा और २८ अक्तूबर १९१७ को मृत्युदण्ड को समाप्त कर दिया गया। जाहिर था कि इस "अच्छी" स्थिति से कोई अच्छाई प्राप्त नहीं हो सकती थी। (और उन लोगों ने किस प्रकार से छुटकारा पाया? सन् १९१८ के आरम्भ में ट्राटस्की ने हुक्म दिया कि नव नियुक्त एडमिरल अलेक्सेई शचास्तनी को मुकदमे के लिए पेश किया जाए क्योंकि उसने बाल्टिक नौसैनिक बेड़े को समाप्त करने पर सहमति नहीं दी थी। वेर्खंत्रिव के अध्यक्ष कार्कलिन ने उसे टूटी-फूटी रूसी भाषा में दण्ड सुनाया : "२४ घंटे के भीतर गोली से उड़ा दिया जाए" : अदालत के कमरे में हलचल मची : पर मृत्युदण्ड को तो समाप्त कर दिया गया है! सरकारी वकील क्राइलेंको ने समझाया। "आप लोग किस बात की चिन्ता कर रहे हैं? मृत्युदण्ड को समाप्त किया गया है। शचास्तनी को मृत्युदण्ड नहीं दिया जा रहा है; उसे केवल गोली से उड़ाया जा रहा है।" और उन लोगों ने शचास्तनी को गोली से उड़ा दिया।

यदि हम सरकारी दस्तावेजों के आधार पर निष्कर्ष निकालें तो जून १९१८ में मृत्युदण्ड को पूरी शक्ति के साथ फिर लागू कर दिया गया था। नहीं इसे फिर "लागू" नहीं किया गया था बल्कि इसके स्थान पर मृत्युदण्ड के एक नवयुग का उद्घाटन किया गया था। यदि हम यह दृष्टिकोण अपनायें कि लातसिस[1] जानबूझ कर आंकड़ों को घटा कर नहीं दर्शा रहा है बल्कि उसे जानकारी प्राप्त नहीं थी और इस बात का भी ध्यान रखे कि क्रांतिकारी अदालतें उतने ही बड़े पैमाने पर न्याययिक कार्य करती थीं जितने बड़े पैमाने पर चेका कानून की परिधि के बाहर लोगों को ठिकाने लगाती थीं तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि रूस के २० केन्द्रीय प्रान्तों में १६ महीनों की अवधि में (जून १९१८ से अक्तूबर १९१९ तक) १६,००० से अधिक लोगों को गोली से उड़ाया गया, जो हर महीने

१,००० से अधिक लोगों को गोली से उड़ाने का हिसाब बैठता है।[४] (यह वही अवधि है, जिसमें रूस की पहली सोवियत १६०५ में बनी सेन्ट पीटर्सबर्ग सावियत के अध्यक्ष खस्तालेव-नोसार और उस कलाकार को गोली से उड़ाया गया था, जिसने लाल सेना की उस अत्यन्त प्रसिद्ध वर्दी का डिजाइन तैयार किया था, जो लाल सेना के सैनिक गृहयुद्ध की पूरी अवधि में पहनते रहे।)

पर इस बात की पूरी संभावना है कि विभिन्न लोगों को व्यक्तिगत रूप से औपचारिक मृत्युदण्ड सुनाकर अथवा उसके बिना ही मार डालने की इस कारवाई ने जिसके अन्तर्गत हजारों लोग मौत के मुंह में पहुंच गए और १६१८ में मृत्युदण्ड के एक नए युग का समारम्भ हुआ, रूस को स्तम्भित नहीं किया। हमारे लिए इससे भी कहीं अधिक भयानक बात उन छोटे जहाजों को डुबाने की है जिनमें न जाने कितने लोग सवार रहते थे, जिनकी संख्या कहीं नहीं लिखी गई, जिन लोगों के नामों तक का कहीं उल्लेख नहीं किया गया। आरम्भ में यह तरीका गृहयुद्ध लड़ने वाले दोनों पक्षों ने अपनाया और बाद में केवल विजेताओं ने। (फिनलैंड की खाड़ी, श्वेत, कैस्पियन और काला सागरों में नौसैनिक अफसरों को और १६२० तक में बैकल झील में बन्धकों को इसी तरीके से डुबाया गया।) यह बात हमारी अदालतों और मुकदमों के संकीर्ण इतिहास की परिधि के बाहर है लेकिन इसका सम्बन्ध नैतिकता के इतिहास से है और अन्य सब बातों का भी इससे सम्बन्ध रहता है। हमारी समस्त शताब्दियों में, पहले रियुरिक से लेकर क्या कभी ऐसी क्रूरताओं और ऐसी हत्याओं का कोई दौर आया जैसी क्रूरताएं और हत्याएं अक्तूबर के गृहयुद्ध की अवधि में हुई?

यदि हम इस बात का उल्लेख करने की उपक्षा करें कि जनवरी १६१६ में मृत्युदण्ड को समाप्त कर दिया गया था तो हम रूस में मृत्युदण्ड की कहानी के उतार-चढ़ावों की एक विशेष घटना को नजर अंदाज कर डालेंगे। हां, सचमुच उस समय मृत्युदण्ड को समाप्त किया गया था! और इस विषय के कुछ अध्येता एक ऐसी तानाशाही की आस्था और असहाय अवस्था की व्याख्या करने में स्वयं को अक्षम पायेंगे जिसने स्वयं को उस समय प्रतिशोध लेने वाली तलवार से वंचित कर दिया जब देनिकिन कूबान में मौजूद था, व्रानगेल क्रीमिया में जमा हुआ था और पोलैंड की घुड़सवार पलटन अभियान की तैयारी कर रही थी। लेकिन पहली बात तो यह है कि यह अध्यादेश बड़ा विचारपूर्ण था : इसे सैनिक अदालतों के निर्णयों पर लागू नहीं किया गया था। इसे केवल चेका के कानून की परिधि के बाहर की जाने वाली कारवाइयों और मोर्चों से दूर के इलाकों में अदालतों के निर्णयों पर लागू किया गया था। दूसरी बात यह थी कि इस आदेश के लागू करने से पहले जो लोग जेलों में कैद थे उन सब लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया था, जिन्हें अन्यथा इस आदेश का लाभ मिलता। और तीसरी बात यह थी कि यह आदेश बहुत थोड़े समय के लिए ही लागू रहा—केवल चार महीने। (एक बार फिर जेलों के भरने तक यह लागू रहा) २८ मई, १६२० के एक आदेश के द्वारा चेका को फिर यह अधिकार दे दिया गया कि वह जिसे चाहे मृत्युदण्ड दे।

क्रान्ति ने बड़ी तेजी से प्रत्येक वस्तु का पुनर नामकरण किया ताकि हर वस्तु नई दिखाई पड़े। इस प्रकार मृत्युदण्ड को "सर्वोच्च कारवाई" का नाम दिया गया और यह एक "दण्ड" नहीं रह गया था बल्कि सामाजिक प्रतिरक्षा का एक साधन बन गया था। सन्

१९२४ के फौजदारी कानून के लिए जो तैयारियां की गई थीं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सर्वोच्च कारवाई को केवल अस्थाई रूप से, अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी द्वारा इसके पूरी तरह से समाप्त किए जाने तक लागू किया गया था।

और १९२७ में उन लोगों ने सचमुच इसे समाप्त करना शुरू किया और मृत्युदण्ड केवल राज्य और सेना के विरुद्ध किए गए अपराधों के लिए ही दिया जा सकता था। अनुच्छेद ५८ और सैनिक अपराध – और हां, लूटपाट के लिए भी। (लेकिन "लूट पाट" की व्यापक राजनीतिक व्याख्या उस समय भी उसी प्रकार सर्वविदित थी जैसी आज है : मध्य एशिया के "बासमाच" से लेकर लुथवानिया के जंगल के गुरिल्ला तक प्रत्येक ऐसे सशस्त्र राष्ट्रवादी को, जो केन्द्रीय सरकार से सहमत नहीं था, "लुटेरा" कहा जाता था और इस स्थिति में कोई भी व्यक्ति उक्त अनुच्छेद से कैसे बच सकता था? इसी प्रकार किसी शिविर के विद्रोह में हिस्सा लेने वाले और किसी शहरी विद्रोह में हिस्सा लेने वाला भी "लुटेरा" था।) लेकिन जहां तक उन अनुच्छेदों का सवाल है, जो निजी व्यक्तियों की रक्षा करते हैं, क्रान्ति की १०वीं वर्षगांठ मनाने के लिए मृत्युदण्ड को समाप्त कर दिया गया।

और १५वीं वर्षगांठ के अवसर पर ७ बटा ८ का कानून मृत्युदण्ड की सूची में जोड़ दिया गया—यह कानून समाजवाद की प्रगति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण था और इसमें यह व्यवस्था की गई थी कि राज्य की मेज़ से रोटी का एक छोटे से छोटा टुकड़ा चुराने वाले प्रत्येक सोवियत प्रजा जन को पिस्तौल की गोली प्राप्त होगी।

जैसाकि आरम्भ में सब मामलों में होता है, उन लोगों ने १९३२-१९३३ में इस कानून को लागू करने में बड़ी तत्परता दिखाई और लोगों को विशेष भयंकरता और क्रूरता से गोली से उड़ाया। दिसम्बर १९३२ के इस शांति काल में (जब कीरोव जीवित था); लेनिनग्राद की क्रेस्ती जेल में ही एक समय २६५ दण्डित कैदी मृत्युदण्ड को लागू किए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।[५] और एक पूरे वर्ष में, यह निश्चित रूप से दिखाई पड़ता है कि केवल क्रेस्ती में ही एक हजार से अधिक लोगों को गोली से उड़ाया गया।

और ये लोग, जिन्हें मृत्युदन्ड दिया गया था, कैसे आदमी थे, उन्होंने क्या अपराध किए थे? इतने अधिक षडयंत्रकारी और उपद्रवी कहां से आ पहुंचे थे? उदाहरण के लिए इन लोगों में पास के जारस्कोएसेलो के सामूहिक खेतों के ६ किसान थे, जो निम्नलिखित अपराधों के दोषी थे : सामूहिक खेत में स्वयं अपने हाथों से कटाई करने के बाद वे लोग एक बार फिर वहां गए और इस बार उन्होंने खुरपे आदि से खुदाई कर के स्वयं अपनी गायों के लिए थोड़ा सा चारा बटोरने की कोशिश की। अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी ने इन छहों किसानों को क्षमादान देने से इनकार कर दिया और मृत्युदण्ड को लागू कर दिया गया।

कौन सा क्रूर और दुष्ट साल्तीचिका, कौन सा पूरी तरह से जुगुप्सित और कुख्यात जमींदार, मामूली सी घास काटने के लिए छह किसानों को मौत के घाट उतार सकता था? यदि कोई जमींदार इन किसानों को एक बार भी छड़ी से पीटता तो हमें इस बात की जानकारी प्राप्त होती और हमें स्कूल की पाठ्य पुस्तक में इस जमींदार का नाम पढ़ने को मिलता और हम उसे भली-बुरी बातें कहते।[६] लेकिन अब, पानी में लाशों को फैंक दो और जल्दी ही पानी की ऊपरी सतह फिर हमवार हो जाएगी, शान्त हो जाएगी और किसी को

यह पता नहीं चलेगा कि क्या हुआ था। और हम यह आशा लगा सकते हैं कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब दस्तावेज मेरे गवाह की रिपोर्ट की पुष्टि करेंगे और मुझे जानकारी देने वाला यह व्यक्ति आज भी जीवित है। यदि स्तालिन ने अन्य किसी की भी हत्या नहीं की होती तो मेरा विश्वास है कि केवल जारस्कोएसेलो के इन छह किसानों का जीवन समाप्त कर देने के लिए ही उसे नीचे घसीट कर टुकड़े-टुकड़े कर डालना चाहिए था! और इसके बावजूद वे आज भी हमारे ऊपर चिल्ला कर यह कहने का साहस करते हैं (पीकिंग से, तिराना से, तिबलसी से, और हां मास्को के उपनगरों में रहने वाले अनेक मोटे पेट वाले भी यही कर रहे हैं): "तुम उसका भण्डा फोड़ करने का साहस कैसे कर सकते हो?" "तुम उसकी महान् छाया को आन्दोलित करने का साहस कैसे कर सकते हो?" "स्तालिन विश्व साम्यवादी आंदोलन का है!" पर मेरी राय में स्तालिन का सम्बन्ध केवल दंडसंहिता से है इसे सिर्फ दंडसंहिता के ही हवाले किया जा सकता है। "संसार भर के लोग उसका स्मरण एक मित्र के रूप में करते हैं।" लेकिन वे लोग नहीं जिनकी पीठ पर उसने सवारी की, जिनके शरीरों को उसने अपने भयंकर चाबुक से चिथड़े-चिथड़े कर डाला।

आइए, हम एक बार फिर भावनाओं को त्याग कर और निष्पक्ष रूप से विचार करें। यह निश्चित है, कि अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी पूरी तरह से सर्वोच्च कारवाई को अपने वचन के अनुसार "पूरी तरह से समाप्त" कर देती। लेकिन दुर्भाग्यवश हुआ यह कि सन् १९३६ में पिता और शिक्षक ने स्वयं अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी को "पूरी तरह समाप्त" कर दिया। और इसके स्थान पर जिस सर्वोच्च सोवियत की स्थापना हुई वह १८वीं शताब्दी जैसी थी। एक बार फिर "सर्वोच्च कारवाई" दण्ड बन गई और अब यह समझ में न आने योग्य किसी प्रकार की "सामाजिक प्रतिरक्षा" नहीं रह गई। स्थिति इस सीमा तक आगे बढ़ चुकी थी कि स्तालिनवादियों तक के लिए १९३७-३८ के मृत्युदण्ड मुश्किल से ही "प्रतिरक्षा" की प्रतिध्वनि करते हुए दिखाई पड़ते थे।

वह कौन सा कानून विशेषज्ञ होगा, वह कौन सा फौजदारी कानून का इतिहासकार होगा, जो हमारे समक्ष १९३७-१९३८ के मृत्युदण्डों के प्रमाणित आंकड़े प्रस्तुत करेगा। वह विशेष पुरालेख संग्रहालय कहां है, सही आंकड़े प्राप्त करने के लिए हम जिसमें प्रवेश करने की कोशिश कर सकते हैं? ऐसा कोई संग्रहालय नहीं है। ऐसा कोई संग्रहालय नहीं है और भविष्य में भी नहीं होगा। अतः हम उन आंकड़ों का ही उल्लेख करने का साहस कर सकते हैं, जिनका उल्लेख अफवाहों ने किया था जो १९३९-४० में स्मृति में ताजा थे और जब ये अफवाहें बुत्यर्की जेल के मेहरावों के नीचे तक उतर आई थीं इनका समारम्भ एन० के० वी० डी० के येझोव के उच्च और मध्यम वर्ग के गिरफ्तार अफसरों से हुआ था, जिन्हें गिरफ्तारी के बाद इन्हीं कोठरियों के भीतर भेजा जा चुका था। (और ये लोग सचमुच सही बात जानते हैं।) येझोव के इन आदमियों ने बताया कि १९३७ और १९३८ के दो वर्षों में पूरे सोवियत संघ में पांच लाख "राजनीतिक कैदियों" को गोली से उड़ा दिया गया था और इसके अलावा ४ लाख ८० हजार ब्लातनिये अर्थात् आदतन चोरी करने वालों को भी मृत्युदंड दिया गया था। (सब चोरों को अनुच्छेद ५९-३ के अधीन गोली से उड़ाया गया था क्योंकि ये लोग "यगोदा की शक्ति के आधार" थे और इस प्रकार "चोरों की प्राचीन और महान् साझेदारी को" काट-छांट दिया गया था।)

ये आंकड़े कितने असम्भावित हैं? यह बात ध्यान में रखते हुए कि बड़े पैमाने पर

मृत्युदण्ड पूरे दो साल तक नहीं बल्कि केवल डेढ़ साल तक जारी रहे, हमें यह मानना होगा कि (अनुच्छेद ५८ के अन्तर्गत अर्थात केवल राजनीतिज्ञों को ही) हर महीने औसतन २८ हजार लोगों को गोली से उड़ाया गया। यह पूरे सोवियत संघ का आँकड़ा बताया गया है। लेकिन यह जानना होगा कि कितने विभिन्न स्थानों पर मृत्युदण्ड दिए जा रहे थे? १५० की संख्या बहुत मामूली होगी। (वस्तुत: लोगों को मौत के घाट उतारने वाले स्थानों की संख्या अधिक थी। केवल पस्कोव में ही एन०के०वी०डी० ने अनेक गिरजाघरों और ईसाई सन्यासियों की पुरानी कोठरियों में यातना और मृत्युदण्ड देने की व्यवस्था की थी। और सन् १९५३ तक में पर्यटकों को यह कह कर इन गिरजाघरों में नहीं जाने दिया जाता था कि वहां "प्राचीन वस्तुओं का संग्रह" तैयार किया गया है। लगातार दस वर्ष तक इन गिरजा घरों में जाले तक नहीं झाड़े गए थे: वहां वे यही "प्राचीन वस्तुएं" रख रहे थे। और इन गिरजा घरों की खुद मरम्मत करने का काम शुरू करने से पहले उन लोगों को इन गिरजाघरों के तहखानों में भरी हड्डियों को ट्रकों में लाद कर ले जाना पड़ा।) इस गणना के आधार पर मृत्युदण्ड देने के प्रत्येक स्थान पर प्रति दिन छ: लोगों को गोली से उड़ाने का औसत बैठता है। इसमें इतनी भयानक बात क्या है? यह कहना वास्तविकता को घटाकर दर्शाना है! (अन्य सूत्रों के अनुसार एक जनवरी १९३९ तक १७ लाख लोगों को गोली से उड़ाया जा चुका था।)

दूसरे महायुद्ध की अवधि में अनेक कारणों से यदा कदा मृत्युदण्ड दिया जाता था (उदाहरण के लिए, रेल विभाग के सैनिकीकरण के द्वारा) और कभी कभी इस तरीके को बहुत व्यापक बना दिया जाता था। (उदाहरण के लिए अप्रैल १९४३ से फांसी देकर मृत्यु-दण्ड देने का आदेश जारी किया गया था।)

इन समस्त घटनाओं ने मृत्युदण्ड को पूरी तरह से, अन्तिम रूप से और सदा सर्वदा के लिए समाप्त कर डालने के वचन को लागू करने में विलम्ब कराया। पर अंतत: हमारे लोगों के सब्र और वफादारी ने यह पुरस्कार प्राप्त कर ही लिया। मई १९४७ में आई-ओसिफ विसारियोनोविच ने आइने में अपनी शक्ल का मुआइना किया और उन्हें यह पसन्द आई तथा उन्होंने सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल को शांतिकाल में मृत्युदण्ड की समाप्ति सम्बन्धी आदेश का हुक्म सुना दिया। (इसके स्थान पर २५ वर्ष की अधिकतम सजा की व्यवस्था की गई—यह तथाकथित २५ सा लागू करने का अच्छा बहाना था।)

लेकिन हमारे देशवासी कृतघ्न अपराध भावना से पूर्ण और उदारता को समझने में अक्षम थे। अत: शासकों ने मृत्युदण्ड के अभाव में न जाने किस तरह बड़ी मुश्किल से अढ़ाई वर्ष का समय गुजारा और १२ जनवरी १९५० को एक और आदेश जारी किया गया, जो पहले के आदेश का एकदम उलटा था: "गणराज्यों [यूक्रेन ?], मजदूर संघों [ओह, वे खूब-सूरत मजदूर संघ; उन्हें सदा इस बात का ज्ञान रहता है कि वे किस समय किस बात की आवश्यकता है], किसानों के संगठनों [यह बात नींद में चलने वाले किसी व्यक्ति ने लिख-वाई थी, क्योंकि महान् परिवर्तन के वर्ष में ही महामहिम शासक ने समस्त किसान संगठनों को मौत के घाट उतार दिया था], और सांस्कृतिक नेताओं [हां इस बात की काफी संभा-वना है] की ओर से बड़े पैमाने पर प्राप्त होने वाली याचिकाओं को ध्यान में रखते हुए" अनेक प्रकार के "मातृभूमि द्रोहियों, जासूसों तथा तोड़फोड़ करने वालों और ध्यान बटाने वालों" के लिए फिर मृत्युदण्ड की व्यवस्था की जा रही है। (और, सचमुच, वे लोग पच्चीसें

अर्थात् २५ साल की कैद की सजा को समाप्त करने की बात भूल ही गए। वह पूर्ववत् लागू रही।)

और हमारे इस चिरपरिचित मित्र, सिर को धड़ से अलग करने वाले खड्ग के प्रत्यावर्तन के बाद घटनाक्रम, बिना किसी प्रयास के आगे बढ़ने लगा। : सन् १९५४ में योजना बना कर हत्या करने के प्रयास के लिए; मई १९६१ में राज्य की सम्पत्ति की चोरी, और आलसाजी करने तथा जेलों में आतंकवाद फैलाने के लिए यह सजा दी जाने लगी। (जेलों आदि में आतंक फैलाने के लिए मृत्युदण्ड इसलिए विशेष रूप से दिया जाने लगा क्योंकि कुछ कैदी मुखबिरों को मार डालते थे और शिविर के प्रशासन को आतंकित करते थे।); जुलाई १९६१ में विदेशी मुद्रा सम्बन्धी नियमों का उलंल्घन करने के लिए; फरवरी १९६२ में पुलिस वालों अथवा कम्यूनिस्ट कार्यकर्ताओं, जिन्हें "द्रुभिन्नकी" कहा जाता है, को मार डालने की धमकी देने के लिए (उन्हें घूंसा दिखाना काफी था); और इसके बाद बलात्कार के लिए और इसके तुरन्त बाद रिश्वतखोरी के लिए मृत्युदण्ड की व्यवस्था की गई।

लेकिन ये सब बातें अस्थायी हैं—मृत्युदण्ड को पूरी तरह समाप्त करने तक ही ये कारवाइयां होंगी। और आज भी मृत्युदण्ड के बारे में यही कहा जाता है।[७]

और इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि रूस में सम्राज्ञी एलिजाबेथ पेत्रोवना के शासनकाल में ही सबसे अधिक लम्बी अवधि तक मृत्युदण्ड के बिना काम चलाया गया।



हम लोग अपने सुखद और अन्ध जीवन में मृत्युदण्ड प्राप्त लोगों के बारे में बस यही कल्पना करते हैं कि वे कुछ गिने चुने अभागे और एकाकी व्यक्ति हैं। हम लोग स्वभावतः यह विश्वास करते हैं कि हमें कभी भी मृत्युदण्ड का सामना नहीं करना पड़ेगा, कि यदि यह होता है तो इससे एक भयंकरतम अपराध और अन्याय होगा, अन्यथा कम से कम इसके परिणामस्वरूप एक विशिष्ट कार्यकर्ता की जीवन लीला समाप्त हो जाएगी। वास्तविक तस्वीर को देखने और समझने के लिए हमारे दिमागों से बहुत सी चीजों जो झकझोर कर बाहर निकालना होगा : अत्यधिक साधारण, औसत, सलेटी कपड़े पहनने वाले लोगों का एक बड़ा समुदाय अत्यन्त साधारण और मामूली कार्यों के लिए मौत की कोठरियों में ठूंस दिया गया और यद्यपि इनमें से कुछ लोग भाग्यशाली सिद्ध हुए और उनके मृत्युदण्ड को जेल की सजा में बदल दिया गया पर यह केवल एक संयोग की ही बात थी। पर अक्सर उन्हें सर्वोच्च की प्राप्ति होती थी (कैदी लोग "सर्वोच्च कारवाई" के लिए केवल सर्वोच्च शब्द का ही इस्तेमाल करते थे क्योंकि वे भारी भरकम शब्दों में घृणा करते हैं और न जाने कैसे प्रत्येक वस्तु को एक छोटा नाम, एक अलग नाम दे डालते हैं, जो भद्दा और छोटा दोनों होता है)।

एक जिला कृषि विभाग के कृषि विज्ञानी को केवल इसलिए मृत्युदण्ड सुना दिया गया क्योंकि उसने सामूहिक खेत के अनाज का विश्लेषण करने में गलती कर दी थी! (हो सकता है कि उसने वह विश्लेषण प्रस्तुत किया हो जो उसके बड़े अफसर नहीं चाहते थे।) यह बात सन् १९३७ की है।

धागे की गोलियां बनाने वाले दस्तकारी प्रतिष्ठान के अध्यक्ष मैलनिकोव को केवल इसलिए मृत्युदण्ड दे दिया गया था क्योंकि उसके प्रतिष्ठान में हाथ से चलने वाले इंजन से निकलने वाली एक चिंगारी से आग लग गई थी! यह बात १९३७ की है। (हां, यह सच है उसके मृत्युदण्ड को "दस्से" में बदल दिया गया था।) लेनिनग्राद में १९३२ में क्रेस्ती की जेल में काल कोठरियों में फेल्डमन और फेतेलिविच कैद थे फेल्डमन को विदेशी मुद्रा अपने पास रखने के लिए सजा दी गई थी और फेतेलेविच को, जो एक विद्यार्थी था, बालपाइंट पेन लेने के लिए इस्पात की पत्तियां बेच डालने के जुर्म पर मृत्युदण्ड सुनाया गया था। यह कैसा आदिम धन्धा है। यह रोटी और मक्खन कमाने की बात और यहूदियों का मनोरंजन है और इसे भी मृत्युदण्ड का लक्ष्य बना दिया गया।

तो क्या हमें इस बात पर आश्चर्यचकित होना चाहिए कि आइवानोवो प्रांत के एक ग्रामीण लड़के जेरास्का को मृत्युदण्ड दिया गया? सेन्ट निकोलस के त्योहार के अवसर पर वह बराबर के गांव में त्योहार मनाने चला गया। उसने खूब शराब पी और उसने एक छड़ी से पुलिस मैन के पिछले हिस्से पर नहीं बल्कि पुलिस मैन के घोड़े के पिछले हिस्से पर प्रहार कर दिया। (यह सच है कि पुलिस के ऊपर क्रोध बरसाते हुए उसने ग्राम सोवियत इमारत का एक तख्ता उखाड़ लिया और इसके बाद ग्राम सोवियत के टेलीफोन की डोरी भी खींच कर उखाड़ दी और वह चिल्लाता रहा कि "इन शैतानों को खत्म कर डालो!")

हमारे भाग्य में मृत्युदण्ड की कोठरी में पहुंचना बदा है अथवा नहीं यह बात इस बात पर निर्भर नहीं करती कि हमने क्या किया है और क्या नहीं। इसका निर्धारण एक विशाल पहिए के चक्कर और शक्तिशाली बाह्य परिस्थितियों के दबाव के परिणामस्वरूप होता है। उदाहरण के लिए, लेनिनग्राद शत्रु के घेरे में फंसा हुआ था और शहर से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। और यदि ऐसे कठिन दौर में लेनिनग्राद राज्य सुरक्षा संगठन के मामलों में मृत्युदण्ड के मामले भी शामिल न हों तो लेनिनग्राद का सर्वोच्च नेता कामरेड झदानोव क्या सोचेगा? वह यही सोचेगा कि सुरक्षा संगठन अपना काम ठीक से नही कर रहे हैं। क्यों क्या वह यह नहीं सोचेगा? क्या ऐसे विशाल गुप्त षड्यंत्र नहीं होंगे, जिनका जर्मन लोग बाहर से संचालन कर रहे हों और जिन षड्यंत्रों का पता लगाना मुश्किल हो। (स्तालिन के अधीन १९१९ में ऐसे षड्यंत्रों का पता लगाया जा सका और झदानोव के अधीन १९४२ में पता न लगाया जा सके? बस, हुक्म भर की देर है। अनेक बड़े-बड़े षड्यंत्रों का पता लगा लिया गया। आप अपने लेनिनग्राद के ताप से वंचित कमरे में सो रहे थे और काले पंजे के तेज नाखून आपको दबोच लेने के लिए आपके ऊपर मंडराने लगे थे। और इसके बावजूद इनमें से कोई भी बात स्वयं आपके ऊपर निर्भर नहीं थी। एक लैफ्टिनैंट जनरल इगनातोवस्की के ऊपर ध्यान चला गया, जिसके कमरे की खिड़कियां नेवा के ऊपर खुलती थीं। उसने अपनी नाक साफ करने के लिए सफेद रूमाल जेब से निकाला था। अच्छा तो वह संकेत दे रहा है! और इगनातोवस्की एक इंजीनियर भी था और वह नौसैनिकों से मशीनों के बारे में बात करना पसन्द करता था। बस इतना काफी था! इगनातोवस्की को गिरफ्तार कर लिया गया। निर्णय का समय आ गया। ठीक है, अब अपने संगठन के ४० सदस्यों के नाम बताओ। उसने नाम गिनवा दिए। और इस प्रकार यदि आप अलैकसान्द्रिनस्की नाट्यशाला में गेटकीपर का काम करते थे तो इन ४० में आप का नाम शामिल होने की सबसे कम गुंजाइश थी। लेकिन यदि आप टैक्नालोजी संस्था

में प्रोफेसर थे तो आपका उस सूची में होना स्वाभाविक था (एक बार फिर, वही अभिशप्त बुद्धिवादी वर्ग ।) तो यह बात आपके ऊपर कैसे निर्भर कर सकती थी ? ऐसी किसी भी सूची में शामिल होने का अर्थ मृत्युदण्ड के अलावा अन्य कुछ नहीं था ।

तो उन लोगों ने इन सबको गोली से उड़ा दिया । लेकिन जल विज्ञान के एक अत्यंत महत्वपूर्ण रूसी विशेषज्ञ कोस्तांतिन आइवानोविच स्त्राखोविच इस प्रकार जीवित बचे रहे : राज्य सुरक्षा संगठन के कुछ और अधिक बड़े अफसर इस बात से असंतुष्ट थे कि यह सूची बहुत छोटी थी और काफी लोगों को गोली से नहीं उड़ाया जा रहा है । अत: स्त्राखोविच को एक उपयुक्त केन्द्र के रूप में चुना गया ताकि एक नए संगठन का रहस्योद्घाटन किया जा सके ।। कैप्टेन अल्तशूलर ने उन्हें बुलाया : "यह सब क्या है ? क्या तुमने इसलिए इतनी जल्दबाज़ी में प्रत्येक बात की स्वीकारोक्ति की है कि तुम्हें गोली से उड़ा दिया जाए और इस प्रकार तुम गुप्त सरकार के सदस्यों के नाम छिपा जाओ ? इसमें तुम्हारी क्या भूमिका थी ? इस प्रकार स्त्राखोविच ने देखा कि मृत्यु दण्ड सुनाए जाने के बाद भी उन्हें पूछ-ताछ के एक दौर का सामना करना पड़ रहा है । उन्होंने सुझाव दिया कि वे लोग उन्हें गुप्त सरकार का शिक्षा मंत्री मान सकते हैं । (वे जल्दी से जल्दी इस बात से छुटकारा पा लेना चाहते थे)लेकिन अल्तशुलर के लिए इतना पर्याप्त नहीं था । पूछताछ जारी रही और इस बीच इजनातोवस्की के साथ गिरफ्तार लोगों को गोली से उड़ाया जाता रहा । एक बार पूछताछ के समय स्त्राखोविच क्रोधित हो उठे । यह बात नहीं थी कि वे जीवित रहना चाहते थे लेकिन इस प्रकार मरते रहने की प्रतीक्षा से भी वे ऊब गए थे और अन्य सब बातों से अधिक झूठ बोलना उनके लिए असह्य हो रहा था । और जिस समय सुरक्षा संगठन के किसी बड़े अफसर की मौजूदगी में पूछताछ की जा रही थी वे क्रोधित हो उठे और मेज़ को जोर-जोर से पीटते हुए बोले : "तुम लोगों को गोली से उड़ाया जाना चाहिए । अब आगे मैं झूठ बोलने को तैयार नहीं हूं । मैं अपने सब बयान वापस लेता हूं ।" और यह क्रोध प्रदर्शन उनके लिए सहायक बना । सुरक्षा संगठन के अफसरों ने उन से पूछताछ करना ही बन्द नहीं कर दिया बल्कि काफी समय तक यह बात भी भूल गए कि वे काल कोठरी में पड़े हुए मृत्युदण्ड लागू किए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

इस बात की पूरी संभावना है कि सर्वव्यापी विनम्रता के मध्य इस प्रकार किसी भी बात की परवाह न करते हुए क्रोध प्रदर्शन सदा सहायक बनेगा ।

इस प्रकार अनेक लोगों को गोली से उड़ाया गया—शुरू में हजारों को, बाद में लाखों को । हम लोग भाग देते हैं, गुणा करते हैं, आह भरते हैं, भला बुरा कहते हैं । लेकिन इस सबके बावजूद यह केवल संख्याएं ही हैं । ये मस्तिष्क पर छा जाती हैं और इसके बाद इन्हें आसानी से भुला दिया जाता है । यदि किसी दिन उन लोगों के रिश्तेदार जिन्हें गोली से उड़ाया जा चुका है किसी प्रकाशक को अपने मौत के घाट उतारे गए रिश्तेदारों के फोटो-ग्राफ प्रकाशन के लिए भेजें और अनेक खण्डों में इन चित्रों को प्रकाशित किया जाये तो इन चित्रावलियों के पन्ने उलट कर और उन आंखों में झांक कर जिन्हें सदा सर्वदा के लिए मिटा दिया गया है हमें ऐसी बहुत सी जानकारी मिलेगी जो हमारे शेष जीवन के लिए मूल्यवान होगी । इस प्रकार के किसी प्रायः प्रकाशन शब्दरहित प्रकाशन को देखना और पढ़ना निश्चय ही हमारे हृदयों में सदा सर्वदा के लिए गहरी छाप छोड़ जाएगा ।

मैं एक ऐसे परिवार से परिचित हूं, जिसमें कुछ भूतपूर्व कैदी मौजूद हैं, निम्न-

लिखित समारोह मनाया जाता है : ५ मार्च को अर्थात् प्रमुख हत्यारे की मृत्यु के दिन वे लोग मेज पर उन सब लोगों के चित्र सजाते, जिन्हें गोली से उड़ा दिया गया अथवा जो शिविरों में मर गए थे। ये कुछ दर्जन ऐसे चित्र थे जिन्हें प्राप्त करने में वे सफल हुए थे। और पूरे दिन इस घर में अत्यन्त गम्भीरता का वातावरण रहता—एक गिरजा घर, एक संग्रहालय जैसा वातावरण बना रहता। शोक संगीत बजता, मित्र मिलने आते, इन चित्रों को देखने आते, मौन रहने और एक दूसरे की बात सुनने तथा बहुत धीमी आवाज़ में बात करने के लिए आते। और इसके बाद वे लोग अलविदा कहे बिना ही चले जाते।

और सर्वत्र यही होना चाहिए। आखिरकार उन मृत्युओं का हमारे हृदयों पर थोड़ा बहुत असर अवश्य हुआ होगा।

इस प्रकार इन लोगों की मृत्यु निरर्थक सिद्ध नहीं होगी!

संयोगवश मेरे पास भी ऐसे कुछ फोटोग्राफ हैं। कम से कम इन पर तो एक नजर डालिए :

विक्टर पेत्रोविच पोकरोवस्की—मास्को में १९१८ में गोली से उड़ाया गया।

अलेक्सान्द्र शत्रोबाइंडर, विद्यार्थी—पेत्रोग्राद में १९१८ में गोली से उड़ाया गया।

वासिली आइवानोविच एनिचकोव—लूबयांका में १९२७ में गोली से उड़ाया गया।

अलेक्सान्द्र आन्द्रेएविच सवेचिन, जनरल स्टाफ के प्रोफेसर—१९३५ में गोली से उड़ाया गया।

माइखेल अलेक्सान्द्रोविच रिफामतस्की, कृषि विज्ञानी—ओरेल में १९३८ में गोली से उड़ाया गया।

एलिजाबेता एवजेनएवना अनिचकोवा—येनीसोई नदी पर बने एक शिविर में १९४२ में गोली से उड़ाई गई।

ये सब किस प्रकार होता है? मृत्यु की प्रतीक्षा करते समय वे लोग क्या अनुभव करते हैं? उनके मन में क्या भाव उठते हैं? वे किन बातों के बारे में सोचते हैं? और वे किन निर्णयों पर पहुंचते हैं? और जब उन्हें कोठरी से निकाल कर ले जाया जाता है तब कैसा लगता है? और अपने अन्तिम क्षणों में वे क्या अनुभव करते हैं? और, वास्तव में, वे लोग...हां...वे लोग...?

इस पर्दे को बेध कर दूसरी ओर देखने की बुरी इच्छा स्वाभाविक है। (यद्यपि हम लोगों के साथ कभी भी यह नहीं होने जा रहा है।) और यह भी स्वाभाविक है कि जो लोग इन परिस्थितियों में जीवित बचे रहे वे हमें अन्तिम क्षण तक के अनुभव की जानकारी नहीं दे सकते क्योंकि, अखिरकार, उन्हें क्षमा कर दिया गया था।

इसके बाद क्या होता है इसके बारे में जल्लाद ही जानते हैं। लेकिन जल्लाद यह क्यों बताने लगे। (उदाहरण के लिए लेनिनग्राद की क्रेस्ती जेल के उस प्रसिद्ध चाचा ल्योशा को ही लीजिए, जो कैदी के हाथ मरोड़ कर पीठ के पीछे ले जाता था और हाथों में हथकड़ियां डाल देता था और अगर कैदी रात की निःस्तब्धता में बरामदे में यह चिल्लाता; अलविदा, भाइयों! तो उसके मुंह में वह कपड़ा ठूंस देता था—अब आप ही बताइए कि वह इस बारे में आपको क्यों जानकारी देगा? शायद आज भी वह अच्छे वस्त्रों में लेनिनग्राद की सड़कों पर घूमता होगा। लेकिन यदि कभी संयोगवश आपकी मुलाकात उससे द्वीपों में स्थित बीयर की दुकान पर अथवा फुटबाल के मैच के समय हो जाए तो उससे यह पूछना

न भूलिएगा !) पर स्वयं जल्लाद भी प्रत्येक वस्तु के बारे में आखिरी बात नहीं जानता। जिस समय किसी मोटर का इंजन तेज़ आवाज़ करता, वह अपनी पिस्तौल से गोलियां दागता और मोटर के इंजन की आवाज़ में गोलियों की आवाज डूब जाती। कैदी के सिरे के पीछे गोलियां मारी जातीं और स्वयं उससे भी यह आशा की जाती है कि वह इस बात का महत्व न समझ पाये कि आखिरकार वह क्या कर रहा है, क्यों कर रहा है। उसे स्वयं अन्त की जानकारी नहीं है, जिन लोगों को इस प्रकार मार डाला गया वे ही इससे परिचित हैं—और इसका अर्थ है कोई भी व्यक्ति यह नहीं जानता।

पर यह सच है कि कलाकार, चाहे कितने ही चक्करदार तरीके से और अस्पष्टता से इन बातों को जानता है, पर फिर भी उसे गोली लगने अथवा फांसी का फंदा गले में कस जाने तक और उसके बाद क्या होता है, इसकी कुछ न कुछ जानकारी होती है, कल्पना होती है।

तो हम कलाकारों की सहायता से और उन लोगों की सहायता से भी, जिन्हें क्षमा कर दिया गया था, काल कोठरी का अधिक से अधिक सच्चा खाका उतारने की कोशिश करेंगे। उदाहरण के लिए हम यह जानते हैं कि जिन लोगों को मृत्युदण्ड सुना दिया जाता है वे लोग रात को सोते नहीं बल्कि प्रतीक्षा करते रहते हैं। केवल सुबह के समय ही उनका मन शान्त होता है।

नारोकोव (मारचेंकों) ने अपने उपन्यास, इमेजनरी वैल्यूज़' में मेरी राय में काल कोठरी और स्वयं मत्युदण्ड देने के दृश्य को अच्छी तरह अंकित किया है यद्यपि यह उपन्यास लेखक के अपने ऊपर यह दायित्व लेने के कारण काफी सीमा तक बर्बाद हो गया है कि वह प्रत्येक वस्तु का विवरण इस रूप में प्रस्तुत करे कि मानो वे स्वयं दोस्तेएवस्की हो कि वह पाठक के हृदय को बुरी तरह मथ डाले और उसे स्वयं दोस्तोएवस्की से भी कहीं अधिक कातर कर दे। इन बातों की पुष्टि नहीं की जा सकती लेकिन न जाने क्यों हम इस पर विश्वास कर लेते हैं।

आज आरम्भिक कलाकारों की व्याख्याएं, (उदाहरण के लिए लियोनिद आन्द्रेएव का उल्लेख किया जा सकता है) क्राइलोव के समय से ही सम्बन्धित दिखाई पड़ती हैं, यह डेढ़ शताब्दी पहले की बात लगती है। और इस बात को ध्यान में रखते हुए हम यह सोच सकते हैं कि अत्यधिक कल्पनाशील बातें लिखने वाला कौन सा व्यक्ति १९३७ की काल कोठरियों की कल्पना कर सकता था ? उसके लिए अपने मनोवैज्ञानिक ताने बाने बुनना आवश्यक होता : प्रतीक्षा कैसी होती थी, मृत्युदण्ड प्राप्त व्यक्ति किस प्रकार हर आहट को सुनता था आदि। लेकिन मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों के सम्बन्ध में कौन व्यक्ति ऐसी सनसनीखेज बातों की कल्पना कर सकता था और उनका विवरण दे सकता था :

१—मृत्युदण्ड की प्रतीक्षा कर रहे कैदियों को अत्यधिक ठंड में कष्ट भोगना पड़ता था। उन्हें खिड़कियों के नीचे सीमेंट के फर्श पर २८ डिग्री फारेनहाइट तापमान में सोना पड़ता था। (स्त्राखोविच।) इस स्थिति में आप गोली से उड़ाये जाने की प्रतीक्षा करते हुए ठंड से सिकुड़ कर ही मर सकते थे।

२—उन लोगों को स्वच्छ हवा से वंछित और अत्यंत भीड़ भरी कोठरियों में रहना पड़ता था। केवल एक व्यक्ति को तन्हाई में कैद रखने की कोठरी में वे सात आदमियों को (इससे कम को नहीं), और कभी कभी १०, १५, यहां तक कि २८ कैदियों को ठूंस देते थे

और ये कैदी वे होते थे जो मृत्युदण्ड को लागू किये जाने अर्थात् गोली से उड़ाये जाने की प्रतीक्षा कर रहे होते थे। (लेनिनग्राद में स्ताखोविच १९४२) और इस प्रकार वे लोग कई सप्ताहों तक, यहां तक कि कई महीनों तक पड़े रहते थे। एक छोटी सी कोठरी में इस प्रकार खचाखच भरे लोगों के समक्ष मृत्युदण्ड की क्या भयावह कल्पना होती थी ? इन परिस्थितियों में लोग मृत्युदण्ड के बारे में नहीं सोचते और वे लोग इस बात की चिन्ता नहीं करते कि उन्हें गोली से उड़ाया जायेगा बल्कि उन्हें यह चिन्ता रहती है कि वे किस प्रकार अपनी टांगें फैला सकते हैं, किस प्रकार वे करवट ले सकते हैं, किस प्रकार जरा सी स्वच्छ हवा प्राप्त कर सकते हैं।

सन् १९३७ में आइवानोवो की जेलों में-- एन०के०वी०डी० की आंतरिक जेल संख्या १, संख्या २ और आरम्भिक हिरासत की कोठरियों में- एक समय ४०, ००० कैदी कैद थे यद्यपि इन जेलों और कोठरियों का निर्माण केवल ३-४ हजार कैदियों को रखने के लिए किया गया था। जेल संख्या २ में उन कैदियों का रखा जाता था, जिनसे पूछताछ जारी हो, जिन्हें शिविरों में सजा काटने का दण्ड सुनाया जा चुका हो, मृत्युदण्ड सुनाया जा चुका हो, जिनके मृत्युदण्डों को कैद की सजा में बदल दिया हो और मामूली चोर भी इनमें शामिल होते थे—और ये सब लोग अनेक दिनों तक एक बड़ी कोठरी में एक दूसरे से सटकर लगातार कई दिन तक इस प्रकार खड़े रहते थे कि न तो बांह को ऊपर उठाना या नीचे करना सम्भव था। इतना ही नहीं जो कैदी तख्तों के समीप होते थे, जोर पड़ने के कारण उनकी टांगों की हड्डियां टूट जाने का भय रहता था। यह सर्दी का मौसम था। लेकिन स्वच्छ हवा के अभाव में कहीं दम न घुट जाए अतः कैदियों ने खिड़कियों के शीशें तोड़ डाले थे। (इसी कोठरी में पुराने बोलशेविक अलालीकिन ने अपने मृत्युदण्ड को लागू करने की प्रतीक्षा की थी। इस वयोवृद्ध बोलशेविक के सब बाल पूरे तरह सफेद हो चुके थे। वह १८९८ में पार्टी का सदस्य बना था और अप्रैल-सिद्धान्त के प्रतिपादन के बाद १९१७ में उसने पार्टी की सदस्यता त्याग दी थी।)

३—जिन कैदियों को मृत्युदण्ड सुनाया जाता था उन्हें भूख का भी कष्ट उठाना पड़ता था। मृत्युदण्ड सुनाये जाने और इसे लागू करने के बीच इतनी लम्बी अवधि होती थी कि मृत्यु की आशंका का भय उनके मन में प्रमुख नहीं रह जाता था बल्कि इसका स्थान भूख ले लेती थी। बस, वे लगातार यही सोचते रहते थे कि किस प्रकार कोई खाने की चीज प्राप्त कर सकें ? सन् १९४१ में अलैक्सान्द्र बाबिच ने क्रासनोयारस्क जेल की काल कोठरी में ७५ दिन का समय बिताया। वे स्वयं को मृत्यु के लिए तैयार कर चुके थे और वे स्वयं को गोली से उड़ाये जाने को अपने असफल जीवन का एकमात्र सम्भव अन्त मानते थे। लेकिन भुखमरी से उनका बुरा हाल होने लगा। तभी उन लोगों ने बाबिच के मृत्युदण्ड को १० वर्ष की कैद की सजा में बदल दिया और इस प्रकार उनके शिविर के कार्यकाल का समारम्भ हुआ। और सबसे लम्बी अवधि तक काल कोठरी में रहने का क्या कीर्तिमान है ? कौन जाने ? एक कालकोठरी के बडे हां, उन्हें बड़े ही कहा जाता था, वीसेवोलोद पेत्रोविच गोलितसीन ने १९३८ में काल कोठरी में १४० दिन बिताये ? रूस के विज्ञान की गरिमा, प्रसिद्ध प्रजनन विज्ञानी एन० आई० वावीलोव अनेक महीनों तक गोली से उड़ाये जाने की प्रतीक्षा करते रहे। हां, हो सकता है कि पूरे एक वर्ष तक वे यह प्रतीक्षा करते रहे हों। मृत्युदण्ड सुनाये जाने के बाद भी उन्हें सरातोव जेल में पहुंचाया गया और वहां उन्हें एक ऐसे

तहखाने की कोठरी में रखा गया, जिनमें कोई खिड़की नहीं थी। जब १९४२ की गर्मियों में उनके मृत्युदण्ड को कैद की सजा में बदल दिया गया तो उन्हें एक सामान्य कोठरी में भेज दिया गया और उस समय उनकी यह हालत थी कि वे चल भी नहीं पा रहे थे। दूसरे कैदी उन्हें कोठरी के बाहर टहलने के लिए ले जाने के समय पकड़ कर ले जाते थे और सहारा देकर चलाते थे।

४—जिन कैदियों को मृत्युदण्ड सुना दिया जाता था उनकी दवा दारू नहीं होती थी। सन् १९३८ में ओखरीमेंको को लम्बे अरसे तक काल कोठरी में रखा गया और वे बेहद बीमार हो गए। उन लोगों ने उन्हें अस्पताल में भरती करने से इनकार ही नहीं किया बल्कि कोई डाक्टर कभी देखने भी नहीं आया। जब एक स्त्री डाक्टर अन्ततः आई तो वह कोठरी के भीतर नहीं गई बल्कि उसने उनकी जाँच किए बिना ही, उनके स्वास्थ्य और बीमारी के बारे में कोई सवाल पूछे बिना ही दरवाजे पर लगी सलाखों से ही पिसी हुई दवा की कुछ पुड़िया उन्हें दे दी। और स्त्राखोविच की टांगों में पानी जमा होने लगा। उन्हें ड्राप्सी नामक रोग हो गया था। उन्होंने जेलर को इस बारे में बताया—और उन लोगों ने, चाहे आप इस बात पर विश्वास करें अथवा नहीं उनकी जांच के लिए एक दांत के डाक्टर को भेजा।

और जब कभी डाक्टर ऐसे कैदी की चिकित्सा के लिए आ भी पहुंचे तो क्या उसके लिए उचित था कि वह एक ऐसे कैदी को स्वस्थ करे जिसे मृत्युदण्ड सुनाया जा चुका हो। दूसरे शब्दों में, उसकी मृत्युदण्ड की प्रतीक्षा को और लम्बा बना दे? अथवा मानवीयता का यह तकाजा है कि डाक्टर इस बात पर जोर दे कि कैदी को यदासम्भव गोली से उड़ा दिया जाना चाहिए? स्त्राखोविच के बारे में एक और दृश्य की झांकी देखिए: डाक्टर आया और ड्यूटी पर तैनात सन्तरी से बात करते समय उसने मृत्युदण्ड की प्रतीक्षा कर रहे कैदियों की ओर इशारा करते हुए कहा: "वह तो मृत आदमी है! वह तो मृत आदमी है! वह तो मृत आदमी है!" (वह सन्तरी को यह बता रहा था कि ये लोग पौष्टिक आहार की कमी के कारण इस प्रकार रोगग्रस्त हो चुके हैं और वह यह भी कह रहा था कि इस प्रकार लोगों को तड़पाना गलत है तथा इन्हें गोली से उड़ा देना चाहिए।)

मृत्युदण्ड सुना देने के बाद भी इतने समय तक इन लोगों को गोली से न उड़ाने का क्या कारण था? क्या पर्याप्त संख्या में जल्लाद उपलब्ध नहीं थे? यहां यह उल्लेखनीय है कि अक्सर जेल के अधिकारी मृत्युदण्ड सुनाये गए कैदियों को यह सुझाव देते थे और कभी कभी यह करने के लिए जोर देकर भी कहते थे कि उन्हें अपने मृत्युदण्ड को कैद की सजा में बदलने की याचना करनी चाहिए। और जब कैदी इस बात पर जबर्दस्त आपत्ति उठाते और भविष्य में किसी भी "सौदे" पर हस्ताक्षर करने से इनकार करते तो जेल के अफसर कैदियों की ओर से इन याचिकाओं पर हस्ताक्षर कर देते और इन याचिकाओं पर निर्णय होने में कई महीने का समय लगना स्वभाविक था क्योंकि ये याचिकाएं न जाने किन-किन कार्यालयों की मार्फत ऊपर पहुंचती थीं।

सम्भवतः दो भिन्न संस्थाओं के बीच इस बारे में खींचतान चलती थी। पूछताछ करने वाले और न्यायिक संगठन—जिस बात की हमें सैनिक कालेजियम के सदस्यों से जानकारी मिल चुकी है ये दोनों संगठन एक ही हैं—भयंकर मामलों का भण्डाफोड़ करने की चिन्ता के कारण अपराधियों को उचित दण्ड दिलाने के अलावा अन्य क्या मांग कर सकते

थे और उनकी नजर में यह उचित दण्ड—मृत्युदण्ड ही था। लेकिन जैसे ही मृत्युदण्डों की घोषणा होती और इन्हें पूछताछ और मुकदमे की कारवाइयों के विवरण में दर्ज कर दिया जाता, तो इन संगठनों को ऐसे किसी भी व्यक्ति में कोई दिलचस्पी नहीं रह जाती। और वास्तविकता यह थी कि कोई देशद्रोह नहीं हुआ था और यदि मृत्युदण्ड प्राप्त ये लोग जीवित भी रहें तो इससे राज्य पर कोई असर नहीं पड़ता था। अतः इन लोगों को पूरी तरह से जेल प्रशासन के ऊपर छोड़ दिया जाता था और जेल प्रशासन गुलाग से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होने के कारण कैदियों का मूल्यांकन आर्थिक दृष्टि से करता था। उनके लिए महत्वपूर्ण आंकड़े मृत्युदण्डों की संख्या में वृद्धि के आंकड़े नहीं थे बल्कि द्वीपसमूह को भेजे जाने वाली जन शक्ति में वृद्धि थी।

और लेनिनग्राद के बड़े घर की आंतरिक जेल का प्रमुख अधिकारी सोकोलोव इसी दृष्टि से स्त्राखोविच को देखता था। स्वयं स्त्राखोविच कालकोठरी मे प्रतीक्षा करते-करते इतने ऊब चुके थे कि उन्होंने अपने वैज्ञानिक अध्ययन के लिए कागज पेंसिल की मांग की। उन्होंने एक कापी में सबसे पहले "द्रव के भीतर गतिमान ठोस की एक दूसरे पर पारस्परिक प्रतिक्रिया" पर अपने विचार लिखे और इसके बाद "बेलिस्टा, स्प्रिंगों और आघात सहने वाले शॉक एब्जार्बरों सम्बन्धी गणनाएं" तैयार की और फिर "स्थिरिता सिद्धान्त के आधार" पर निबन्ध लिखा। वे लोग उन्हें एक अलग "वैज्ञानिक कोठरी दे चुके थे और भोजन भी बेहतर मिलने लगा था। लेनिनग्राद के मोर्चे से उनके पास सवाल भी आने लगे थे। उन्होंने अधिकारियों के अनुरोध पर "हवाई जहाजों पर घनत्व वाले हथियारों से गोलाबारी की जटिलताओं को सुलझाया। अन्ततः झदानोव ने उनके मृत्युदण्ड को १५ वर्ष की कैद की सजा में बदल दिया (मुख्य भूमि से डाक बहुत धीमी गति से आती थी। लेकिन जल्दी ही मास्को से उनके मृत्युदण्ड को बदलने के नियमित आदेश प्राप्त हुए और ये आदेश झदानोव के आदेश से अधिक उदार थे: उन्हें केवल १० वर्ष की कैद की सजा दी गई थी।[१]

एन० पी० नाम के एक गणितज्ञ का अनुचित लाभ पूछताछ अफसर क्रुझकोव (हां, हां वही चोर) ने अपने लाभ के लिए उठाया। यह गणितज्ञ एक सहायक प्रोफेसर था। क्रुझकोव पत्राचार पाठ्यक्रम का विद्यार्थी था और उसने एन० पी० को उनकी कालकोठरी से बुलवाया और क्रुझकोव को पत्राचार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत जो गणित सम्बन्धी जटिल प्रश्न हल करने के लिए दिए गए थे, उसने उन्हें एन० पी० को थमा दिया। ये प्रश्न एक कम्पलेक्स वेरियेबल सम्बन्धी सिद्धान्त के बारे में थे (और हो सकता है कि ये प्रश्न स्वयं क्रुझकोव के भी न हों)।

तो इससे विश्व साहित्य को मृत्युदण्ड लागू किये जाने से पहले की कैदियों की यातनाओं के बारे में क्या जानकारी मिलती है।

अन्त में, हमें च—व से यह पता चलता है कि काल कोठरी का पूछताछ के कक्ष के रूप में भी, कैदी को डरा धमका कर स्वीकारोक्ति करने के लिए तैयार करने के वास्ते भी इस्तेमाल किया जा सकता है। क्रासनोयारस्क के दो कैदियों को अचानक "मुकदमे" के लिए बुलाया गया और उन्हें मृत्युदण्ड सुना दिया गया तथा काल कोठरी में पहुंचा दिया गया। इन दोनों कैदियों ने झूठी स्वीकारोक्तियां करने से इनकार किया था। (च—व का कहना है: "इन लोगों ने हमारे समक्ष मुकदमे का नाटक किया था" लेकिन एक दृष्टि से प्रत्येक मुकदमा ऐसा ही होता है। हम इस झूठे मुकदमे अथवा मुकदमे के नाटक को दूसरे मुकदमों से भिन्न

दर्शाने के लिए किस शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं ? क्या मंच के भीतर मंच, अथवा नाटक का प्रयोग किया जा सकता है ?) उन लोगों ने इन्हें इस बात का अच्छा अनुभव कराया कि काल कोठरी में मृत्यु की प्रतीक्षा करना कैसा होता है । और इसके बाद उन लोगों ने उनकी काल कोठरी में कुछ मुखबिर भी भेज दिए । ये मुखबिर यही नाटक कर रहे थे कि उन्हें मृत्युदण्ड दिया जा चुका है और अब इन मुखबिरों ने अचानक इस बात पर पश्चाताप प्रकट करना शुरू किया कि उन्होंने पूछताछ की अवधि में क्यों हठधर्मिता दिखाई और सन्तरी से यह प्रार्थना करने लगे कि वे पूछताछ अफसर से यह कह दे कि वे किसी भी कागज पर हस्ताक्षर करने को तैयार हैं । इन लोगों को अपनी स्वीकारोक्तियों पर हस्ताक्षर करने के लिए कागज दिए गए और फिर इन्हें दिन के समय ही कोठरी से ले जाया गया —दूसरे शब्दों में इन्हें यह दिखाने के लिए बाहर ले जाया गया कि इन्हें गोली से नहीं उड़ाया जाएगा ।

और इस काल कोठरी के उन सच्चे कैदियों का क्या हुआ जो पूछताछ अधिकारियों के खेल का साधन बने हुए थे ? यही लगता है कि जब इसी कोठरी में दूसरे कैदियों ने "पाश्चाताप प्रकट किया" और उन्हें क्षमा कर दिया गया तो निःसंदेह स्वयं इनके ऊपर भी इसका असर हुआ ? हां, असर तो हुआ लेकिन इसका लाभ यह नाटक प्रस्तुत करने वालों को नहीं मिला ।

उन लोगों का कहना है कि भावी मार्शल आन्स्तांतिन रोकोसोवस्की को रात के समय तथाकथित मृत्युदण्ड के लिए दो बार जंगल में ले जाया गया । गोली चलाने वाले दस्ते ने अपनी राइफलों से उनके ऊपर निशाना साधा और इसके बाद उन्होंने अपनी राइफलें नीची कर लीं और उसे फिर जेल में वापस पहुँचा दिया गया । और यह उदाहरण भी "सर्वोच्च कारवाई" का पूछताछ अफसर की चालाकियों के रूप में इस्तेमाल प्रकट करता है । लेकिन सब ठीक रहा; कुछ भी नहीं हुआ; वे आज भी जीवित और स्वस्थ हैं तथा उसे इस बात से कोई शिकायत नहीं है ।

और सदा एक व्यक्ति बड़ी आज्ञाकारिता से स्वयं को मार डालने देता है ऐसा क्यों है कि मृत्युदण्ड का ऐसा सम्मोहनकारी प्रभाव होता है ? क्षमादान प्राप्त लोगों को ऐसा कोई उदाहरण याद नहीं है जब उनकी काल कोठरी में किसी व्यक्ति ने गोली से उड़ाये जाने के समय बाहर ले जाने के अवसर पर प्रतिरोध किया हो । लेकिन ऐसे मामले हुए हैं । सन् १९३२ में लेनिनग्राद की क्रेस्ती जेल में मृत्युदण्ड सुनाये गये कैदियों ने सन्तरियों की रिवाल्वरें छीन लीं और गोली चलाई । इस घटना के बाद अब एक भिन्न तरीका अपनाया गया : कोठरी के दरवाजे में बने छेद में झांककर देखने के बाद यह निर्णय कर लेने पर कि अमुक कैदी को गोली से उड़ाने के लिए ले जाना है पांच सशस्त्र सन्तरी कोठरी के भीतर घुस पड़ते और उस व्यक्ति को धर दबोचते । इस कोठरी में मृत्युदण्ड प्राप्त आठ कैदी थे । लेकिन इनमें से प्रत्येक ने आखिरकार कालिनिन को याचिका भेजी थी और इनमें से प्रत्येक मृत्युदण्ड को कैद की सजा में बदल दिये जाने की आशा लगाये बैठा था और इस प्रकार "आज तुम, कल मैं" का क्रम चलता रहा । कोठरी के अन्य कैदी उस समय अलग हट जाते और दूसरी ओर देखने लगते जब कैदी को बांध कर गोली से उड़ाने के लिए बाहर ले जाया जाता और यह कैदी सहायता के लिए चिल्लाता और सन्तरी उसके मुंह में बच्चों के खेलने की रबड़ की गेंद ठूंस देते । (बच्चे के खेल की रबड़ की गेंद को देख कर क्या आप सब संभावित उपयोगों की कल्पना कर सकते हैं । द्वन्द्वात्मक तरीके पर भाषण

करने वाले व्यक्ति के लिए यह कितना अच्छा उदाहरण है !)

आशा से व्यक्ति को शक्ति मिलती है अथवा वह इससे कमजोर हो जाता है ? यदि प्रत्येक कोठरी का मृत्युदंड प्राप्त व्यक्ति इन जल्लादों के खिलाफ मोर्चे बांध लेता तो क्या इसके परिणामस्वरूप लोगों को गोली से उड़ा देने का काम अखिल रूस कार्यकारिणी की अपील से पहले ही समाप्त न हो जाता ? जब कोई व्यक्ति पहले ही मौत के कगार पर पहुंच गया हो तो प्रतिरोध क्यों न करे ?

लेकिन क्या गिरफ्तारी के क्षण से ही प्रत्येक बात का निर्णय नहीं हो चुका था ? इसके बावजूद सब गिरफ्तार लोग इस प्रकार घुटनों के बल चलते रहे मानों उनकी टांगें काट दी गई हों।



वासिली ग्रिगोरेविच व्लासोव को अदालत में सजा सुनाये जाने के बाद उस रात का दृश्य आज भी याद है। जब उसे अन्धकारग्रस्त कादी गांव के बीच से ले जाया जा रहा था और उसके चारों ओर चार पिस्तोलें तनी हुई थीं। उस समय उसके मनमें प्रमुख विचार यह था : "यदि वे यहीं तत्काल एक उत्तेजना की कारवाई के रूप में मुझे गोली मार देते हैं और यह कहते हैं कि मैं भागने की कोशिश कर रहा था तो क्या होगा ? स्पष्ट था कि अभी उसे अपनी सजा पर विश्वास नहीं हो पा रहा था। उसे अभी भी किसी प्रकार जीवित बच निकलने की आशा थी।

उन लोगों ने उसे पुलिस के कमरे में बन्द कर दिया। उसे एक मेज पर सोने की इजाजत दी गई और दो या तीन पुलिसमैन रात-भर मिट्टी के तेल की लालटेन में पहरा देते रहे। वे लोग आपस में बात कर रहे थे : "मैं चार दिन तक लगातार सुनता रहा। और यह बात मेरी समझ में नहीं आई कि उन लोगों को किस बात के लिए सजा दी जा रही है।" "यह बात हमारे समझने की नहीं है।"

व्लासोव पांच दिन तक इस कमरे में रहा। वे लोग उसे और अन्य व्यक्तियों को वहीं कादी में गोली से उड़ाने के लिए अदालत द्वारा सुनाई गई सजा की अधिकृत पुष्टि की प्रतीक्षा कर रहे थे। दण्डित लोगों को किसी अन्य स्थान पर पहुंचाना आसान नहीं था। किसी व्यक्ति ने व्लासोव की ओर से क्षमायाचना करते हुए एक तार भेज दिया था : "मैं अपने अभियोग को स्वीकार नहीं करता और मैं प्रार्थना करता हूं कि मुझे जीवनदान दिया जाए।" इसका कोई उत्तर नहीं आया। इन दिनों व्लासोव के हाथ इस कदर कांपते रहते थे कि वह अपनी चम्मच उठाकर मुंह तक नहीं ले जा पाता था और वह अपना कटोरा उठाकर इसे मुंह से लगाकर ही शोरबा आदि पी लेता था। क्लूजिन उसका मजाक उड़ाने के लिए उससे मिलने गया। (कादी के मुकदमे के तुरन्त बाद उसे आइवानोवो से बदलकर मास्को भेज दिया गया था। उस वर्ष गुलाग के आकाश में जगमगाने वाले उन लाल सितारों में से कुछ का बहुत तेजी से अभ्युदय हुआ था और कुछ का पतन। वह समय आ रहा था जब उन्हें भी उसी गर्त में फैंका जाना था लेकिन वे यह बात नहीं जानते थे।)

मृत्युदण्ड की न तो पुष्टि प्राप्त हुये और न ही उसे कैद की सजा में बदलने का आदेश

अतः उन लोगों को चार दण्डित व्यक्तियों को किनेशमा ले जाना पड़ा वे लोग इन्हें चार डेढ़-डेढ़ टन के ट्रकों में ले गए। प्रत्येक दण्डित व्यक्ति की निगरानी के लिए प्रत्येक ट्रक में सात-सात पुलिस के सिपाही थे।

किनेशमा में इन लोगों को एक ईसाई मठ की किसी कोठरी में रखा गया। (ईसाई साधुओं की विचारधार से मुक्त, मठों का स्थापत्य हमारे लिए बड़ा लाभप्रद सिद्ध हो रहा था।) इसी समय कुछ अन्य दण्डित कैदियों को भी इन लोगों के साथ रखा गया और इन सब को कैदियों के रेल डिब्बे में आइवानोवो पहुँचाया गया।

मालगाड़ियां खड़ी करने के रेलवे यार्ड में आइवानोवो में उन लोगों ने तीन कैदियों को—साबुरोव, व्लासोव और कैदियों की दूसरी टोली से एक आदमी को—अन्य कैदियों से अलग कर दिया और इन्हें तुरन्त दूसरी ओर ले चले--गोली से उड़ाने के लिए--ताकि जेलों में और अधिक भीड़ भाड़ न रहे। और इस प्रकार व्लासोव ने स्मिरनोव से अलविदा कही।

तीन अन्य कैदियों को जेल संख्या १ में अक्तूबर की ठंडी हवा में अहाते में रखा गया और वे चार घंटे तक वहीं रहे। इस बीच एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जाने वाली कैदियों की अन्य टोलियां बाहर भीतर लाने ले जाने का काम जारी रहा। इन कैदियों की तलाशियां भी ली गईं। अभी तक इस बात का कोई प्रमाण नहीं था कि स्वयं उन्हें भी उसी दिन गोली से उड़ाया जायेगा। उन चार घंटों में उन्हें फर्श पर बैठे-बैठे इस बारे में सोचने का समय मिला। एक क्षण साबुरोव के मन में यह विचार आया कि उन्हें गोली से उड़ाने के लिए ले जाया जा रहा है। पर इसके विपरीत उन्हें वास्तव में जेल की कोठरी में पहुँचाया गया। उसने रोना शुरू नहीं किया बल्कि अपने बराबर खड़े कैदी की बांह इतनी कस कर पकड़ ली कि यह कैदी दर्द से चिल्ला उठा। सन्तरियों को साबुरोव को खींचकर अलग करना पड़ा और सन्तरियों ने अपनी बैनटें दिखाकर भी उसे डराया धमकाया।

जेल में चार काल कोठरियां थीं--ये कोठरियां उसी कतार में थी, जिसमें बाल अपराधियों और अस्पताल की कोठरियां थीं। काल कोठरियों के दो-दो दरवाजे थे : अन्य कोठरियों की तरह लकड़ी का दरवाजा, जिसमें भीतर झांकने के लिए एक छेद बना था और लोहे का जालीदार दरवाजा। प्रत्येक दरवाजे में दो ताले थे और सन्तरी तथा जेल के इस खण्ड के निरीक्षक के पास अलग-अलग तालों की चाबियां थीं। ताकि वे दोनों मिलकर ही इन दरवाजों को खोल सकते थे। ४३ नम्बर की कोठरी पूछताछ अफसर के कमरे की दीवार के दूसरी ओर थी और रात के समय जब ये दण्डित लोग गोली से उड़ाये जाने की प्रतीक्षा कर रहे होते तो उन्हें उन कैदियों की चीखों से भयंकर कष्ट होता, जिन्हें यातनाएं दी जा रही थीं।

व्लासोव को ६१ नम्बर की कोठरी में रखा गया। यह कोठरी तन्हाई में कैदी को रखने के लिए थी। उसकी लम्बाई १६ फुट थी और इसकी चौड़ाई ३ फुट से कुछ अधिक। दो लोहे की चारपाइयों को मोटे-मोटे बोल्टों से जमीन में कस दिया गया था और प्रत्येक खाट पर दो-दो दण्डित कैदी लेटे हुए थे और इनके सिर खाटों के भिन्न सिरों पर थे। १४ अन्य कैदी जमीन के फर्श पर आड़े लेटे हुए थे।

यद्यपि बहुत समय पहले ही यह ज्ञात हो चुका था कि एक लाश तक को पृथ्वी पर तीन आर्शिन जगह की जरूरत होती है (और चेखोव को यह भी बहुत कम जगह दिखाई

पड़ती थी) लेकिन इस काल कोठरी में प्रत्येक कैदी को, अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते समय, इससे तिहाई से भी कम स्थान दिया गया था।

व्लासोव ने पूछा कि क्या मृत्युदण्ड तुरन्त लागू किया जाता है? "अरे आप स्वयं ही देख लीलिये। हम यहां न जाने कब से प्रतीक्षा कर रहे हैं और हम आज भी जीवित हैं।

प्रतीक्षा का समय—सर्वविदित प्रतीक्षा का समय शुरू हुआ: कैदी रात भर नहीं सोते थे; पूर्ण निराशा की स्थिति में वे लोग यह प्रतीक्षा करते रहते थे कि उन्हें कब कोठरी से बाहर ले जाकर मौत के घाट उतारा जाएगा; वे लोग बरामदे में होने वाली प्रत्येक आहट को बड़ी सतर्कता से सुनते थे। (और सबसे बुरी बात यह थी कि यह अनन्त प्रतीक्षा प्रतिरोध करने की इच्छा शक्ति को नष्ट कर डालती है।) विशेष रूप से निराशाजनक और हिम्मत तोड़ डालने वाली रातें उस दिन के बाद की होतीं जब किसी कैदी को मृत्यु-दण्ड के बदले कैद की सजा का आदेश प्राप्त हो जाता। वह कैदी खुशी से रोता हुआ कोठरी से बाहर चला जाता और कोठरी के भीतर भय की छाया और घनी हो जाती। आखिरकार, इससे यह प्रकट होता था कि उच्च पर्वत से उस रोज क्षमादान और क्षमादान अस्वीकार करने के आदेश लुढ़कते हुए नीचे आ पहुँचे थे। और रात के समय वे लोग किसी न किसी को ले जाने के लिए आयेंगे।

कभी-कभी रात के समय तालों में चाबियां घूमतीं और दिल डूब जाते: क्या मेरी बारी आई है? नहीं, मेरी नहीं! और सन्तरी किस मूर्खतापूर्ण कार्य के लिए लकड़ी का दरवाजा खोलता: "अपना सामान खिड़की की सिल से नीचे रखो।" संभवतः इस दरवाजा खुलने में सब १६ कैदियों के जीवन का एक वर्ष ही उनसे छीन लिया। यह भी हो सकता है कि यदि ५० बार इस दरवाजे को खोला जाता तो इन्हें गोलियां बर्बाद करने की जरूरत नहीं थी। लेकिन इसके बावजूद प्रत्येक व्यक्ति इतना आभारी था, क्योंकि सब कुछ ठीक था: "हम इन्हें तुरन्त ले चलते हैं, अध्यक्ष नागरिक महोदय!"

सुबह शौचालय जाने के बाद वे लोग अपने भयों से मुक्त होकर गए। इसके बाद सन्तरी खिचड़ी की बाल्टी लाया और बोला: "गुड मार्निंग!" जेल के नियमों के अनुसार, भीतरी लोहे का दरवाजा जेल के ड्यूटी अफसर की मौजूदगी में ही खोला जा सकता था। लेकिन जैसाकि सब जानते हैं, मनुष्य लोग अपने नियमों और निर्देशों से बेहतर और अधिक आलसी होते हैं और सुबह के समय सन्तरी ड्यूटी अफसर के बिना ही आया और उसने पर्याप्त मानवीयता से उनका अभिवादन किया—नहीं, यह इससे भी अधिक मूल्यवान बात थी। उसने कहा था: "गुड मार्निंग!"

पूरे संसार में अन्य किस व्यक्ति के लिए यह सुबह इससे अधिक अच्छी थी, इससे अधिक शुभ थी! उस आवाज की सहृदयता और खिचड़ी रूपी पानी की गरमाहट के प्रति आभार से भर कर कैदी दोपहर तक के लिए सो गए। (उन लोगों को केवल सुबह के समय ही भोजन मिलता था!) अनेक कैदी दिन के समय कुछ भी नहीं खा पाते थे। किसी कैदी को अपने घर से खाने की चीजों का पार्सल मिला था। हो सकता है कि रिश्तेदारों को मृत्युनण्ड की जानकारी हो और यह भी सम्भव था कि जानकारी न हो। कोठरी में पहुंचने के बाद यह पार्सल सब कैदियों की समान सम्पत्ति बन जाते थे। लेकिन अब यह एक ढेर में पड़े हुए बर्बाद हो रहे थे।

दिन के समय कोठरी में अभी भी कुछ जीवन और गतिविधि रहती थी। खंड का निरीक्षक आ सकता था—यह उदासी से भरा ताराकानोव अथवा मित्रतापूर्ण व्यवहार करने वाला मकारोव हो सकता था—और याचिकाएं लिखने के लिए कागज दे सकता था और यह पूछ सकता था कि क्या किसी कैदी के पास पैसा है और वह जेल की दुकान से तम्बाकू वगैरा खरीदना चाहता है। इनके प्रश्न या तो अत्यधिक आपत्तिजनक अथवा असाधारण रूप से मानवीयतापूर्ण दिखाई पड़ते थे : ऐसा नाटक किया जाता था मानो इन लोगों को दण्ड न सुनाया गया हो, आखिर यह क्या बात थी ?

दण्डित कैदी माचिसों को तोड़ कर डोमिनो बनाते और उनसे खेलते। व्लासोव उपभोक्ता सहकारियों के बारे में किसी कैदी को बातें बता कर अपना तनाव दूर करता और उसका विवरण हमेशा हास्यपूर्ण बन जाता।[10] सुदोगदा जिला कार्यकारिणी का अध्यक्ष याकोव पेत्रोविच कोलपाकोव, सन् १९१७ की वसन्त ऋतु से ही बोलशेविक था और मोर्चे पर वह पार्टी में शामिल हो गया था, दर्जनों दिनों से एक ही स्थिति में बैठा हुआ था। उसने अपना सिर अपने हाथों में, दबोच रखा था और अपनी कोहनियां अपने घुटनों पर टिका रखी थीं। और वह निरन्तर दीवार पर एक ही स्थान पर टकटकी लगा कर देखता रहता था। (सन् १९१७ की वसन्त ऋतु का फिर स्मरण करना कितना आनन्दपूर्ण रहा होगा।) व्लासोव के बेहद बात करने से वह चिड़चिड़ा हो उठता था : "तुम किस प्रकार ये सब बातें कर पाते हो ?" और व्लासोव ने तपाक से इसका उत्तर दिया : "और तुम क्या कर रहे हो ? क्या स्वयं को स्वर्ग के लिए तैयार कर रहे हो ?" व्लासोव बहुत तपाक से जवाब देते समय भी इन शब्दों पर जोर देता था। "जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैंने एक बात का निश्चय किया है। मैं जल्लाद से कहूंगा : "केवल तुम और केवल तुम ही मेरी मृत्यु के लिये दोषी हो, अपराधी हो, इसके लिए न्यायाधीश या सरकारी वकील दोषी नहीं हैं और तुम्हें ही यह दोष अपने कन्धों पर ढोना होगा ! यदि तुम्हारे जैसे जल्लाद न होते तो मृत्युदण्ड नहीं दिया जा सकता था !" और इसके बाद वह चूहा मुझे मार सकता है !"

कोलपाकोव को गोली से उड़ा दिया गया। व्लादिमिर प्रान्त के अलेक्सान्द्रोव जिला कृषि विभाग के भूतपूर्व मैनेजर कोन्स्तानतिन सरजेएविच अरकादएव को गोली से उड़ा दिया गया। उसके मामले में अपने साथी कैदियों से अलविदा विशेष रूप से कष्टप्रद रही। रात के समय छः सन्तरी उसे ले जाने के लिए लम्बे-लम्बे डग भरते हुए आए और वे बहुत जल्दबाजी दिखा रहे थे जबकि अरकादएव बहुत ही भद्र आचरण करने वाला व्यक्ति था। और वह इधर-उधर घूम कर अपने साथी कैदियों की ओर देखता रहा। अपनी टोपी को अपने हाथ में मरोड़ता रहा और विदा के समय को एक-एक क्षण टालता रहा—वह इस पृथ्वी पर मौजूद अपने अन्तिम साथियों से विदा ले रहा था। और जब अन्त में उसने "अलविदा" कही तो उसकी आवाज सुनाई तक नहीं पड़ रही थी।

जिस क्षण गोली से उड़ाये जाने के लिए निश्चित कैदी की ओर संकेत हो जाता, शेष कैदी राहत का अनुभव करते। (मेरी बारी नहीं आई है !) लेकिन जैसे ही सम्बन्धित कैदी को कोठरी से बाहर ले जाया जाता, जो कैदी कोठरी में रह जाते उनकी स्थिति भी असह्य हो उठती। अगले पूरे दिन ये लोग मौन रहते और उनके मन में कुछ भी खाने की इच्छा उत्पन्न नहीं होती।

पर गेरास्का नामक वह युवक, जिसने ग्राम सोवियत इमारत तोड़ डाली थी, अच्छी

तरह से खाता पीता था और खूब सोता था। वह इन बातों का आदि हो चुका था। सचमुच एक किसान के विशेष गुण और स्वभाव के अनुरूप वह इस काल कोठरी की घटनाओं का भी आदी हो चुका था। न जाने क्यों उसे यह विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि वे लोग उसे गोली से उड़ा देंगे। (और उन लोगों ने उसे गोला से उड़ाया भी नहीं। उन्होंने उसके मृत्युदण्ड को दस वर्ष की सजा में बदल दिया।)

अनेक कैदियों के बाल अपने साथी कैदियों की आंखों के समक्ष ही तीन या चार दिन में सफेद हो उठे थे।

जब लोगों को मृत्युदण्ड के लिए इतने लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी होती है तो उनके बाल बढ़ते हैं और यह आदेश दिये जाते हैं कि सब कैदियों के बाल काटे जाएं और नहाने के लिए ले जाया जाए। जेल का क्रम, सजा किस प्रकार की है, इस बात का ध्यान रखे बिना ही चलता रहता है।

कुछ कैदी स्पष्ट रूप से बोलने और बातों को समझने की क्षमता खो बैठे थे लेकिन उन्हें इसी रूप में अपने भाग्य के अन्तिम निपटारे की प्रतीक्षा करनी थी। जो कैदी काल कोठरी में पागल हो जाता था उसे पागलपन की स्थिति में ही गोली से उड़ा दिया जाता था।

अनेक मृत्युदण्डों को कैद में बदल दिया गया था। सन् १९३७ की वसंत ऋतु में क्रान्ति के बाद पहली बार १५ और २० वर्ष की कैद की सजा शुरू की गई थी और अनेक मामलों में जल्लादों की गोलियों का स्थान इन सजाओं ने ले लिया था। मृत्युदण्ड के स्थान पर १० वर्ष की कैद की सजाएं दी जाती थीं। और पांच वर्ष की कैद की सजा भी। चमत्कारों के देश में ऐसे चमत्कार भी सम्भव थे : कल वह मृत्युदण्ड के योग्य था और आज उसे बच्चों को दी जाने वाली सजा दी जा रही है; वह एक मामूली सा अपराधी है, और शिविर में वह सन्तरियों के बिना ही इधर-उधर आ-जा सकेगा।

कुबान का ६० वर्षीय कज्जाक कैप्टेन वी० एन० खोमेंको भी इन्हीं की कोठरी में कैद था। यदि किसी काल कोठरी की आत्मा हो सकती है तो वह "कोठरी की आत्मा" था! वह हंसी मजाक करता था। वह अपने आप मुस्कराता रहता था। वह इस प्रकार आचरण नहीं करता था कि स्थिति बहुत बुरी हो। जापान से हुए युद्ध के बाद ही उसे सैनिक सेवा के अयोग्य घोषित कर दिया गया था और उसने घोड़ों के प्रजनन का अध्ययन शुरू कर दिया था और इसके बाद प्रान्तीय स्वशासन परिषद् में काम करने लगा था। चौथे दशक में उसे आइवानोवो प्रान्तीय कृषि विभाग में "लाल सेना के घोड़ों के झुण्ड का इन्सपैक्टर" नियुक्त कर दिया गया था। दूसरे शब्दों में उसके ऊपर यह जिम्मेदारी थी कि वह इस बात की व्यवस्था करे कि सर्वोत्तम घोड़े सेना को प्राप्त हों। उसे विध्वंस की कारवाई के अभियोग पर गिरफ्तार करके गोली से उड़ाने का आदेश दे दिया गया—उसका अपराध यह था कि उसने यह सिफारिश की थी कि तीन वर्ष की उम्र से पहले घोड़ों को बधिया किया जाना चाहिए और इस कारण से उसके ऊपर यह अभियोग लगाया गया कि उसने "लाल सेना की युद्ध क्षमता को क्षति पहुँचाई।" खोमेंको ने अदालत के इस निर्णय के विरुद्ध अपील की। ५५ दिन बाद जेल के इस खण्ड का निरीक्षक आया और उससे बोला कि उसने अपनी अपील गलत अधिकारियों को भेज दी थी। वहीं तत्काल कागज को दीवार पर रख कर और खण्ड के निरीक्षक की पेंसिल लेकर खोमेंको ने एक अधिकारी का नाम काट कर दूसरे का लिख दिया मानो वह सिगरेट की डब्बी के लिए अर्जी भेज रहा हो। इस

प्रकार भद्दे ढंग से संशोधित होने के बाद यह अपील ६० और दिन तक चक्कर लगाती रही और इस प्रकार खोमेंको ४ महीने से मृत्युदण्ड की प्रतीक्षा कर रहा था। (जहां तक एक या दो वर्ष प्रतीक्षा करने का सवाल है, आखिरकार यह तो सोचिए कि हम अनेक वर्ष तक मृत्यु के फरिश्ते के आगमन की प्रतीक्षा करते रहते हैं। क्या हमारा पूरा संसार एक काल कोठरी ही नहीं है ?) और एक दिन खोमेंको को पूरी तरह अभियोग मुक्त करने का आदेश आया। उसे (मृत्युदण्ड सुनाये जाने के बाद जो समय बीता उसमें किसी समय बोरोशिलोव ने यह आदेश दे दिया था कि तीन वर्ष की उम्र से पहले ही घोड़ों का बधिया किया जाना चाहिए।) एक क्षण मौत और दूसरे क्षण आनन्द !

अनेक मृत्युदण्डों को कैद में बदल दिया गया था और अनेक कैदियों को बहुत आशा थी। लेकिन व्लासोव अपने मामले की दूसरे लोगों के मामलों से तुलना करने के बाद और मुक़दमे के दौरान अपने आचरण को प्रमुख बात मानते हुए यह अनुभव कर रहा था कि उसके मामले का अन्त बुरा ही होगा। उन्हें किसी न किसी को गोली से उड़ाना ही है। सम्भवत: मृत्युदण्ड सुनाए गए लोगों में से आधों को गोली से उड़ाना ही है। अत: वह यह विश्वास करने लगा कि उसे गोली से उड़ाया जाएगा। और वह केवल एक बात चाहता था—जिस समय यह घटना घटे वह अपना सिर नीचे नहीं झुकायेगा। किसी भी बात की परवाह न करना उसके चरित्र की एक विशेशता थी और अब उसकी यह विशेषता एक बार फिर जागृत और अधिक प्रबल हो उठी थी। और वह अन्त तक पूरी तरह निर्भीक और उद्धत बने रहने का निश्चय कर चुका था।

और उसे एक अवसर प्राप्त भी हुआ। न जाने किस कारण से आइवानो राज्य सुरक्षा संगठन के जांच विभाग का प्रमुख चिगुली जेल का निरीक्षण करने आया हुआ था और उसने व्लासोव की कोठरी का दरवाजा खोलने का हुक्म दिया और दरवाजे की चौखट पर जा खड़ा हुआ। उसने किसी व्यक्ति से यह पूछा : "कादी के मामले से सम्बन्धित कैदी कौन सा है ?"

चिगुली ने आधी बांह की रेशमी कमीज पहन रखी थी। अभी हाल में ही इस प्रकार की कमीजें रूस में अब दिखाई पड़ने लगी थीं। और इस कारण से यह पहनावा पुरुषोचित दिखाई नहीं पड़ता था। और इसके अलावा या तो वह स्वयं अथवा उसका कमीज किसी मीठे इतर में डुबाया गया था जिसकी गन्ध कोठरी में फैलने लगी थी।

व्लासोव बड़ी तेजी से कूद कर खाट पर खड़ा हो गया और बड़ी तीखी आवाज में चिल्ला कर बोला : "यह कैसा उपनिवेशी अफसर है ? यहां से बाहर निकल जाओ, हत्यारे कहीं के ! और वहीं खाट पर खड़े-खड़े व्लासोव ने चिगुली के मुंह पर थूक दिया।

और थूक ठीक निशाने पर बैठा।

चिगुली ने अपना चेहरा पोंछा और पीछे हट गया क्योंकि छ: संतरियों के बिना कोठरी में घुसने का अधिकार नहीं था और हो सकता है कि शायद छ: संतरियों के साथ भी उसे कोठरी में घुसने का अधिकार न हो।

एक विवेकपूर्ण खरगोश को इस तरीके से आचरण नहीं करना चाहिए। मान लीजिए कि चिगुली उन दिनों आपके मामले पर ही विचार कर रहा हो और वही ऐसा व्यक्ति हो जिसे यह निर्णय लेना हो कि आप की मृत्युदण्ड की सजा कैद की सजा में बदला जाना चाहिए अथवा नहीं ? आखिरकार बिना कारण के ही उसने यह नहीं पूछा होगा :

"कादी के मामले का कैदी कौन सा है ?" हो सकता है कि इसी कारण से वह यहाँ आया हो।

लेकिन एक सीमा होती है और उस सीमा के बाहर व्यक्ति ऐसी बातों को बर्दाश्त नहीं कर पाता, उसके लिए ये सब बातें जुगुप्सापूर्ण बन जाती हैं, एक छोटे से खरगोश की तरह विवेकपूर्ण बना रहना उसे सह्य नहीं हो पाता। और यही वह सीमा है जिसे पार करने के बाद खरगोशों को यह ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि सब खरगोशों को अन्ततः गोश्त और भोजन का रूप लेना पड़ता है और इन परिस्थितियों में उसे अधिक से अधिक यही लाभ मिल सकता है कि उसकी मृत्यु का समय कुछ समय के लिए स्थगित हो जाये। यही वह अवसर होता है जब एक व्यक्ति यह चिल्ला कर कहना चाहता है : "तुम्हारा नाश हो, जल्दी करो और गोली चलाओ !"

गोली से उड़ाये जाने की प्रतीक्षा के ४१ दिनों में व्लासोव के ऊपर यह क्रोध भावना विशेष रूप से छा गई थी। आइवानो जेल में उन लोगों ने दो बार सुझाव दिया था कि वह क्षमादान के लिए याचिका भेजे लेकिन उसने इनकार कर दिया था।

लेकिन ४२ वें दिन उन लोगों ने उसे एक बाक्स के भीतर बुलाया और यह सूचना दी कि सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल ने दण्ड की सर्वोच्च कारवाई को श्रम से सुधार शिविरों में २० वर्ष की कैद में बदल दिया है और इसके बाद वह पांच और वर्षों तक मताधिकार से वंचित रहेगा।

कमजोर और विवर्ण व्लासोव रूखी हंसी हंसा और उस समय भी वह यह शब्द कहने से नहीं चूका :

"यह बड़ी विचित्र बात है। मुझे यह कह कर दण्ड सुनाया गया था कि हमारे देश में समाजवाद की विजय में मेरा विश्वास नहीं है। लेकिन क्या इस स्थिति में स्वयं कालिनिन भी समाजवाद की इस विजय में विश्वास कर सकता है। यदि आज से २० वर्ष बाद भी हमारे देश में इन शिविरों की आवश्यकता रहेगी ?"

उस समय यह बात प्रायः कल्पनातीत दिखाई पड़ती थी : २० वर्ष बाद भी शिविरों की आवश्यकता होगी।

पर विचित्र बात यह है कि आज ३० वर्ष बाद भी इनकी आवश्यकता है।

अध्याय १२



त्युर्ज़ाक

रूसी भाषा का अच्छा शब्द ''ओस्त्रोग'' अर्थात ''जेल''। यह कितना शक्तिशाली शब्द है और इसे कितने अच्छे तरीके से तैयार किया गया है। इस शब्द से हमें उन मोटी और अभेद्य दीवारों की शक्ति का आभास मिलता है, जिनके पीछे बन्द हो जाने के बाद, कोई व्यक्ति भाग नहीं सकता। और केवल छह अक्षरों में ही इसे अभिव्यक्त कर दिया जाता है। और जो दूसरे शब्द प्रायः यही ध्वनि देते हैं, उनके बड़े दिलचस्प अर्थ होते हैं : ''उदाहरण के लिए स्त्रोगोस्त—अर्थात् ''कठोरता''; और ओस्त्रोगा—अर्थात् ''बड़ी मछलियां मारने का भाला''; और ओस्त्रोता—अर्थात् ''तीक्ष्णता या नुकीलापन'' (साही के कांटों का तीखापन जब वे आपके चेहरे में घुस जाते हैं, बर्फानी आंधी का तीखापन जब वह आपके ठंड से जमे हुए चेहरे पर टकराती है; शिविर की परिधि पर लगे नोकदार खम्भों का तीखापन और कांटेदार तारों का तीखापन भी); और ''ओस्त्रोभनोस्त'' शब्द भी है, जिसका अर्थ ''सतर्कता'' (एक दण्डित कैदी की सतर्कता) होता है और यह ध्वनि भी उक्त अर्थों के समीप है। और इसके अलावा ''रोग'' शब्द है, जिसका अर्थ ''सींग'' होता है। हां, सचमुच, यह सींग बड़ी भयंकरता से बाहर की ओर निकला होता है और इसकी नोक सीधी सामने की ओर होती है! इसका निशाना एकदम सीधा हमारे ऊपर होता है।

यदि आप पिछले ६० वर्ष के समस्त रूस की जेलों के रीति-रिवाजों और संचालन पर नज़र डालें, इस पूरी संस्था के ऊपर नज़र डालें, तो आपको केवल एक नहीं बल्कि दो सींग दिखाई पड़ेंगे। नारोदनाया वोल्या (''पीपुल्ज विल'' अर्थात् जन इच्छा नामक आंन्दोलन) क्रांतिकारियों ने एक सींग की नोक पर शुरूआत की थी। ठीक उसी स्थान से जहां यह सींग गहराई तक घुस जाने की क्षमता रखता था। ठीक उस स्थान से, जहां से इस प्रहार को छाती की हड्डी तक पर बर्दाश्त कर पाना भयंकर रूप से असह्य होता था। उन लोगों ने इस सींग की तीक्ष्णता को निरन्तर प्रभावहीन बनाया। इसे निरन्तर भुथरा बनाते गए, जब तक यह किनारे पर गोल मटोल नहीं बन गया, जब तक एक चपटा खूंटा भर नहीं रह गया; जब तक इसका एक सींग के रूप में प्रायः अस्तित्व ही समाप्त नहीं हो गया और अन्ततः एक रोयेंदार स्थान के रूप में परिवर्तित नहीं हो गया (यह २०वीं शताब्दी का समारम्भ था)। लेकिन इसके बाद यानी सन् १९१७ के बाद इसी स्थान पर एक नई खूंटी उगने के लक्षण दिखाई पड़ने लगे और तभी ''तुम्हें इस बात का अधिकार नहीं है'' के भयंकर नारे के

साथ यह तेजी से प्रस्फुटित होने लगा, बढ़ने लगा और तेज नोकीला बन गया, कठोर बन गया और इसने एक सच्चे सींग का स्वरूप धारण कर लिया—और यह प्रक्रिया, इसके निरन्तर अधिक तीखे और शक्तिशाली होने की प्रक्रिया १९३८ तक उस समय तक जारी रही जब तक इसने गले की हड्डियों और गर्दन के बीच के कोमल स्थान पर मनुष्यों को बेधना शुरू नहीं कर दिया : त्युर्जाक ![1] अर्थात् जेल की सज़ा। और वर्ष में एक बार, रात के समय कहीं बहुत दूर चौकीदार द्वारा घंटी पर केवल एक प्रहार करने की ध्वनि सुनाई पड़ती : "टन्न !"[2] अर्थात् विशेष उद्देश्य के लिए निर्मित जेल।

यदि हम सेंट पीटर्सबर्ग के पास के श्लूसेलबर्ग किले के एक कैदी की सहायता से ऊपर वर्णित निरन्तर अधिक भयावह होती जा रही परिस्थिति के ऊपर विचार करें तो हमें पता चलता है कि आरम्भ में परिस्थिति बेहद खराब थी।[3] कैदी का एक नम्बर होता था और कोई भी व्यक्ति उसे उसके पारिवारिक नाम से नहीं पुकारता था। पुलिस के सिपाही इस प्रकार आचरण करते थे मानो उन्हें लूबयांका में ही प्रशिक्षण दिया गया हो। वे अपनी ओर से एक शब्द भी नहीं बोलते थे। यदि आपके मुंह से गलती से यह शब्द निकल जाए : "हम...," तो उत्तर मिलेगा, "केवल अपनी ओर से ही कहो !" कब्र की खामोशी। कोठरी कभी समाप्त न होने वाली छाया के नीचे दबी रहती थी। खिड़कियों पर धुंधला कांच लगा होता था और फर्श तारकोल का। खिड़की में लगा रोशनदान जैसा पल्ला दिन में केवल ४० मिनट के लिए ही खोला जाता था। भोजन में गोश्त के बिना सेब की गुल्ली और बन्द गोभी का सूप दिया जाता था। पर इसमें गोश्त नहीं होता था। पुस्तकालय से आप कोई भी विद्वतापूर्ण पुस्तक प्राप्त नहीं कर सकते थे। लगातार दो वर्ष तक आप किसी अन्य मनुष्य को नहीं देख सकते थे। केवल तीन वर्ष बाद ही वे आपको कागज के ताव देना शुरू करते थे और इन कागजों पर नम्बर पड़ा होता था।[4] और इसके बाद धीरे-धीरे, परिस्थितियां उदार होती गईं और यह क्रम उस समय तक जारी रहा, जब तक सींग पूरी तरह से सामने से गोल मटोल नहीं बन गया। सफेद रोटी मिलने लगी; और इसके बाद कैदियों को चाय और चीनी भी प्राप्त होने लगी; और आप पैसा भी प्राप्त कर सकते थे और जेल से मिलने वाले राशन के अलावा खाने की और चीजें भी खरीद सकते थे; धूम्रपान की अनुमति दे दी गई थी। खिड़कियों में पारदर्शी कांच लगा दिये गए थे और एक छोटी सी खिड़की को हर समय खुला रखा जा सकता था। उन्होंने दीवारों को बहुत हल्के रंग से पोत दिया था; और आप सेंट पीटर्सबर्ग पुस्तकालय का "सदस्य बनकर" पुस्तकें प्राप्त कर सकते थे; बगीचे के विभिन्न हिस्सों के बीच जालियां लगी थीं और आप जाली के उस पार के लोगों से बात कर सकते थे और कुछ कैदी दूसरे कैदियों को अपना भाषण तक सुनाते थे। अब यह स्थिति हो गई थी कि कैदी लोग जेल प्रशासन पर यह दबाव डाल रहे थे कि उन्हें "काम करने के लिए और अधिक जमीन दी जाये।" और कैदियों ने जेल के दो बड़े अहातों में फूल और सब्जियां उगाईं। यहां ४५० किस्म के फूल और सब्जियां लगाई गईं ! और इसके अलावा वैज्ञानिक संग्रह थे, बढ़ई की दुकान थी। लुहार की दुकान थी और यहां काम करके कैदी पैसा कमा सकते थे और पुस्तकें खरीद सकते थे, रूसी भाषा की राजनीतिक पुस्तकें खरीद सकते थे[5] और विदेशों से पत्रिकाएं भी मंगा सकते थे। और वे अपने परिवारों को पत्र लिखते थे और उन्हें अपने पत्रों के जवाब भी प्राप्त होते थे। और अगर उनकी इच्छा होती, तो वे दिन भर बाहर टहल सकते थे।

ग्रौर धीरे-धीरे, फिगनेर के संस्मरणों के अनुसार, यह स्थिति ग्रा गई थी : "ग्रब जेल का सुपरिन्टेन्डेन्ट कैदियों के ऊपर नहीं चिल्लाता था, बल्कि कैदी उस पर चीखते चिल्लाते थे। "सन् १६०२ में जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट ने फिगनेर की एक शिकायत को आगे ग्रधिकारियों के पास भेजने से इनकार कर दिया और इस बात पर क्रोधित होकर इस स्त्री कैदी ने जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट के कन्धों से उसके पद के सूचक सितारे नोचकर फेंक दिये और इसका परिणाम यह हुग्रा कि एक सैनिक पूछताछ ग्रफसर वहां ग्राया ग्रौर सुपरिन्टेन्डेन्ट के भद्दे ग्राचरण के लिए फिगनेर से अत्यन्त क्षमा याचना की।

यह सींग धीरे-धीरे छोटा ग्रौर भुथरा क्यों होता गया ? फिगनेर हमें बताती हैं कि कुछ सीमा तक इसका कारण जेलों के सुपरिन्टेन्डेन्टों का मानवीय दृष्टिकोण था और यह तथ्य भी मौजूद था कि "ज़ार पुलिस कैदियों के साथ दोस्ती बरतने लगी थी", ग्रौर पुलिस वाले इन लोगों के ग्रादी हो गए थे। एक महत्वपूर्ण तथ्य निश्चित रूप से कैदियों का संकल्प, उनकी गरिमा और दृढ़ता तथा कुशलता से ग्राचरण करना था। पर इसके बावजूद मेरा अपना विश्वास यह है कि ये सब परिवर्तन उस युग की भावनाओं के ग्रनुरूप हुए थे : हवा में व्याप्त नमी ग्रौर ताजगी ने कड़कती बिजली वाले बादलों को उड़ा दिया था; समाज में स्वतन्त्रता की जो हवा बह रही थी वह निर्णायक बन चुकी थी। इसके अभाव में पुलिस वालों को हर सोमवार को एक संक्षिप्त प्रशिक्षण के अन्तर्गत विशेष निर्देश दिये जा सकते थे और परिस्थितियों को निरन्तर ग्रौर कठोर बनाया जा सकता था, शिकंजे को निरन्तर ग्रौर कसा जा सकता था। एक ग्रफसर की वर्दी से उसके पद के सूचक सितारे नोच कर फेंक देने के लिए वेरा निकोलाएवना फिगनेर को उक्त ग्राचरण के स्थान पर जेल के किसी तहखाने में सिर के पिछले हिस्से में नौ ग्राम सीसा प्राप्त होता।

ज़ारशाही के जमाने में जेल प्रणाली स्वयं अपने आप कमजोर ग्रौर परिवर्तित नहीं हुई बल्कि इसका वास्तविक कारण यह था कि पूरा समाज, क्रांतिकारियों के साथ मिलकर, हर संभव तरीके से इसे झकझोर रहा था, इसकी मजाक उड़ा रहा था। ज़ारशाही फरवरी के महीने में सड़कों पर हुई मुठभेड़ों के कारण अपने अस्तित्व से वंचित नहीं हुई, बल्कि कई दशक पहले ही वह अपने अस्तित्व को कायम रखने का ग्रवसर खो चुकी थी। यह वह समय था जब समृद्ध परिवारों के युवक-युवतियां जेल जाने को सम्मान की बात मानने लगे थे; जब सेना के ग्रफसरों (यहां तक कि ज़ार के ग्रंगरक्षक ग्रफसरों) तक ने पुलिस वालों से हाथ मिलाना ग्रपमानजनक मान लिया था। जैसे-जैसे जेल प्रणाली कमजोर होती गई, राजनीतिक कैदियों की नैतिकता उतनी ही ग्रधिक विजयी होती गई ग्रौर इसके परिणामस्वरूप क्रांतिकारी पार्टियों के सदस्य अपनी शक्ति को ग्रधिक स्पष्ट रूप से पहचानने लगे ग्रौर स्वयं ग्रपने नियमों को राज्य के कानूनों से श्रेष्ठ मानने लगे।

ग्रौर इस प्रकार सन् १६१७ के रूस का पदार्पण हुआ, जिसने सन् १६१८ को अपने कन्धों पर लाद रखा था। हम तुरन्त सन् १६१८ में प्रवेश कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि हमारा विचाराधीन विषय हमें सन् १६१७ पर विचार की अनुमति नहीं देता। फरवरी १६१७ में सब राजनीतिक जेलें खाली पड़ी थीं। इनमें वे जेलें भी शामिल थीं, जहां पूछताछ की जाती थीं ग्रौर वे जेलें भी, जहां कैदियों को अपनी सजा काटनी पड़ती थी। इसके अलावा सब कठोर श्रम वाली जेलें भी खाली पड़ी थीं। यह बड़े आश्चर्य का विषय है कि इस वर्ष जेल के सब अफसर, सन्तरी और कर्मचारी किस प्रकार अपने काम पर बने रह सके। शायद

अपनी गुजर बसर के लिए उन लोगों ने अपने सब्जी के बगीचों में आलू उगाने का काम शुरू कर दिया होगा। (लेकिन सन् १६१८ से जेल के कर्मचारियों की स्थिति में सुधार होने लगा और शपालेरनाया जेल में वे १६२८ तक में नए शासन की सेवा कर रहे थे, और इसमें बुरी बात भी क्या है ?)

दिसम्बर १६१७ में यह बात स्पष्ट हो गई थी कि जेलों के बिना काम चला पाना असम्भव है। क्योंकि कुछ लोगों को जेल के सींखचों के पीछे रखने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं है। (देखिये अध्याय-२) क्योंकि—जैसा कि स्पष्ट था—नए समाज में उन लोगों के लिए कोई स्थान नहीं था। और यही कारण था कि नए शासकों ने दो पुराने सींगों के बीच के स्थान पर टटोलना और यह देखना शुरू कर दिया कि नया सींग पैदा होने लगा है अथवा नहीं।

हां, सचमुच उन लोगों ने यह घोषणा की कि ज़ारशाही के जमाने की जेलों की भयानकता को नहीं दोहराया जाएगा। कैदी को थका देने वाला श्रम नहीं कराया जाएगा; जेलों में अनिवार्य रूप से मौन रहने को बाध्य नहीं किया जायेगा, तन्हाई में किसी को नहीं रखा जायेगा, कोठरी के बाहर कैदियों को टहलने के लिये ले जाने के समय उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं रखा जायेगा, कैदियों को कदम से कदम मिला कर एक-एक की पंक्ति में चलने के लिये बाध्य नहीं किया जायेगा और जेलों में ताला बन्द कोठरियां तक नहीं होंगी।' प्यारे मेहमानो आगे बढ़ो, मिल जुलकर रहो। जितना मन करे बातें करो और बोलशेविकों की शिकायतें करो। और जेल के नए अधिकारियों का ध्यान इस ओर केन्द्रित था कि वे जेलों की दीवारों के बाहर जेल के सन्तरियों को पूरी तरह तैयार रखें तथा ज़ार से विरासत में जेलों का जो सामान प्राप्त हुआ था उसे अपने अधिकार में ले लें। (यह राज्य की व्यवस्था का वह विशेष अंग था जिसे पूरी तरह नष्ट करके आमूल रूप से फिर बनाने की आवश्यकता होती।) सौभाग्यवश स्थिति यह रही कि गृहयुद्ध के परिणामस्वरूप सब प्रमुख केन्द्रीय जेलों को नष्ट नहीं किया जा सका। बस, आवश्यकता केवल इस बात की थी कि पुराने और निंदनीय बन गए शब्दों को बदल दिया जाए। अत: उन लोगों ने जेलों को राजनीतिक हिरासत केन्द्र अथवा लोगों को राजनीतिक रूप से अलग रखने वाले स्थान कहना शुरू कर दिया और इस प्रकार वे लोग एक समय क्रांतिकारी पार्टियों के सदस्यों को राजनीतिक शत्रु दर्शाने लगे और इस बात पर जोर देने लगे कि इन लोगों को हिरासत में रखने का उद्देश्य, जेल के सींखचों के पीछे रखने का उद्देश्य, दण्ड देना नहीं बल्कि इन पुराने किस्म के क्रांतिकारियों को नए समाज के विजय अभियान से दूर रखना है। (और वह भी कुछ समय के लिए)। और इस प्रकार पुरानी केन्द्रीय जेलों (जिनमें सुजदाल की जेल भी शामिल है, जिसमें गृहयुद्ध के आरम्भ से ही कैदियों को भेजना शुरू कर दिया गया था) के मेहराबों को समाजवादी क्रांतिकारियों, समाजवादी लोकतंत्री पार्टी और अराजकतावादी पार्टी के सदस्यों को अपनी छत्रछाया में रखने का अवसर मिला।

ये सब लोग अपने साथ वह चेतना लेकर वापस लौटे थे कि दण्डित कैदियों के रूप में उनके क्या अधिकार हैं और इसके अलावा उन्हें जेल के अधिकारियों का प्रतिरोध करने की लम्बी परम्परा भी विरासत में मिली थी।) वे यह मानते थे कि उन्हें कानूनी रूप से विशेष राजनीतिक राशन मिलना चाहिए (इस राशन पर ज़ार ने सहमति दी थी और क्रांति ने भी इसकी पुष्टि की थी। इस राशन में प्रतिदिन आधी डिब्बी सिगरेट; बाजार से खाने

की चीजों की खरीद (घर का बना पनीर, दूध); दिन के अधिकांश समय कोठरी के बाहर अपनी इच्छानुसार टहलने की सुविधा; जेल के कर्मचारियों द्वारा आदरपूर्वक सम्बोधित किया जाना और किसी भी जेल के अधिकारी के आने पर उठ कर खड़े होने के लिये बाध्य न होना; पति और पत्नी को जेल की एक ही कोठरी में कैद रखना; समाचारपत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें, लिखने की सामग्री, व्यक्तिगत उपयोग का सामान यहां तक कि रेजर और कैंचियां प्राप्त करने का अधिकार; महीने में तीन बार पत्र भेजना और उनके उत्तर प्राप्त करना; महीने में एक बार रिश्तेदारों से मुलाकात; बिना सलाखों वाली खिड़कियां (उस समय खिड़कियों पर लोहे की चद्दर ठोक देने की कल्पना का जन्म नहीं हुआ था); एक जेल की किसी भी कोठरी में जाने की खुली छूट; हरे भरे और फूलों की क्यारियों वाले अहातों में टहलने की सुविधा; बाहर टहलने के समय किसी भी साथी को अपने साथ रखने की स्वतंत्रता और एक अहाते से दूसरे अहाते में डाक के छोटे-छोटे पुलन्दे फेंकने की भी स्वतन्त्रता; और गर्भवती स्त्रियों को बच्चे के जन्म से दो महीने पहले जेल से रिहा करके निष्कासन में भेजने की व्यवस्था।[७]

ये सब व्यवस्थाएं राजनीतिक कैदियों के लिए जेलों में होती थीं। पर तीसरे दशक के राजनीतिक कैदियों को इससे भी एक अधिक महत्वपूर्ण बात का स्मरण है: राजनीतिक कैदियों का स्वशासन और इस प्रकार जेल तक में एक समुदाय के हिस्से के रूप में काम करने की भावना मौजूद रहती थी। स्वशासन (कैदियों के ऐसे प्रवक्ताओं का स्वतन्त्र चुनाव जो जेल के अधिकारियों से बातचीत और सौदेबाजी में कैदियों के हितों का प्रतिनिधित्व करते थे) विभिन्न कैदियों पर व्यक्तिगत दबाव को कम कर देता था और सब कैदी समान रूप से इस दबाव का सामना करते थे और इस कारण से प्रत्येक कैदी की शिकायत बहुत प्रभावशाली हो जाती थी क्योंकि प्रत्येक कैदी की आवाज़ और कैदियों की आवाज़ से मिलकर प्रभावशाली हो जाती थी।

कैदी लोग इस व्यवस्था की रक्षा करना चाहते थे! और जेल के अधिकारी उनसे यह सब अधिकार छीन लेना चाहते थे। और एक मौन युद्ध शुरू हुआ, जिसमें तोप के गोलों के धमाके नहीं हुए और यदा-कदा ही कभी राइफल की गोलियां चलीं और टूटते हुए कांच की आवाज़ थोड़ी दूर पर भी सुनाई नहीं पड़ती थी। स्वतन्त्रता के अवशेषों, व्यक्तिगत राय और विचार रखने के अधिकार के अवशेषों के लिए मौन संघर्ष चलता रहा और प्रायः २० वर्ष तक यह संघर्ष जारी रहा—लेकिन इस संघर्ष को दर्शाने के लिए अनेक खण्डों में प्रकाशित कोई बड़ी और सचित्र पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई। और इस संघर्ष के उतार चढ़ाव, इसकी विजयों और पराजयों की सूची अब प्रायः सदा के लिए खो गई है क्योंकि आखिरकार द्वीप समूह में किसी लिखित भाषा का प्रयोग नहीं होता और लोगों की मृत्यु के साथ मौखिक संचार समाप्त हो जाता है। और इस संघर्ष के कुछ छिटपुट कण ही यदा-कदा हमारे पास तक पहुंच पाये और यह कण अप्रत्यक्ष और अस्पष्ट चन्द्रमा के प्रकाश से ही प्रकाशित थे।

उस समय से हम लोग बहुत अधिक ऊपरी बातों में उलझे रहे। हमें टैंकों के युद्धों का परिचय प्राप्त है; हमें परमाणु विस्फोटों की जानकारी है। उस संघर्ष का क्या स्वरूप है जो इस प्रश्न को लेकर चलता है कि जेल की कोठरियों के दरवाजे तालाबंद रखे जाएं अथवा नहीं और क्या कैदी लोग एक दूसरे से सम्पर्क करने के अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए अपनी अपनी कोठरियों की दीवारों को थपथपा कर खुले रूप से एक दूसरे को संदेश दे

सकते हैं, एक खिड़की से चिल्ला कर दूसरी खिड़की तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं, धागों से बांध कर एक मंजिल से दूसरी मंजिल तक लिखित संदेश भेज सकते हैं और इस बात पर जोर दे सकते हैं कि कम से कम विभिन्न पार्टियों से सम्बन्धित दलों के निर्वाचित प्रवक्ताओं को विभिन्न कोठरियों के बीच स्वतन्त्रतापूर्वक आने जाने की अनुमति होनी चाहिए ? उस संघर्ष का स्वरूप क्या है, जो उस समय शुरू होता है जब लूबयांका जेल का अध्यक्ष अराजकतावादी पार्टी की सदस्या अन्ना जी—व (१९२६ में) अथवा समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की सदस्या कात्या ओलीतस्काया (१९३१ में) की कोठरी में प्रवेश करता है और यह उसके प्रवेश करने पर उठकर खड़े होने से इनकार कर देती हैं ? और उस वन्य पशु ने कात्या के लिए एक सजा का विधान किया : कात्या को शौचालय जाने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। वह संघर्ष कैसा था जब शुरा और वेरा (१९२५ में) नाम की दो लड़कियों ने लूबयांका के उन नियमों के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए जिन नियमों का उद्देश्य कैदी के व्यक्तित्व को कुचल डालना था यह कहा कि बातचीत केवल फुसफुसाहट के स्वर में ही करना जरूरी नहीं है और इस व्यवस्था को तोड़ने के लिए वे अपनी कोठरी में जोर-जोर से गीत गाने लगीं। (ये गीत फूलों और वसन्त ऋतु के बारे में ही थे) और इस बात पर क्रुद्ध होकर जेल के अध्यक्ष, लतविया निवासी डयूक्स ने उन्हें बाल पकड़कर जेल के बरामदे में घसीटा और इस प्रकार घसीटते हुये उन्हें शौचालय में ले गया ? और जब लेनिनग्राद से (१९२४) स्तोलिपिन रेल डिब्बे में सवार विद्यार्थियों ने क्रांतिकारी गीत गाने शुरू किये और इस रेलगाड़ी के साथ जाने वाली गारद ने उन्हें पीने के पाने से वंचित कर दिया तो यह संघर्ष कैसा था ? ये विद्यार्थी चिल्ला उठे : "जारशाही के जमाने की गारद यह नहीं कर सकती थी !" और यह कहने के लिए गारद के संतरियों ने कैदियों को मारा पीटा। अथवा जब समाजवादी क्रांतिकारी कोजलोव ने, केम स्थित संक्रमण जेल में चिल्ला कर संतरियों को "जल्लाद" कहा और इसके लिए उसे अलग घसीट कर मारा पीटा गया ?

बात यह है कि हम लोग केवल युद्ध में प्रदर्शित वीरता को ही वीरता समझने के आदी हो चुके हैं (अथवा बाहरी अंतरिक्ष में उड़ान भरने के लिए आवश्यक वीरता को ही वीरता मानते हैं), हम केवल ऐसे कार्यों को ही वीरतापूर्ण मानते हैं जिनके परिणामस्वरूप हमें चमचमाते पदक प्राप्त होते हैं। हमने वीरता की एक अन्य संकलपना—नागरिक वीरता की संकल्पना को भुला दिया है। और हमारे समाज को केवल इसी वीरता की आवश्यकता है, केवल इसी वीरता की, केवल इसी वीरता की, केवल इसी वीरता की ! हमें बस इसी की आवश्यकता है और हमारे पास यही मौजूद नहीं है।

सन् १९२३ में, व्यातका जेल में, समाजवादी क्रांतिकारी स्त्रुझिस्की और उसके साथियों ने (इनकी संख्या कितनी थी ? ये कौन थे ? यह किस बात का विरोध कर रहे थे ?) जेल की एक कोठरी में स्वयं को बन्द कर लिया, सब गद्दों के ऊपर मिट्टी का तेल छिड़का और अपने आपको जला कर भस्म कर दिया। यह कार्य क्रांति से पहले की शलूसेलबर्ग की परम्परा के पूरी तरह अनुरूप था और यदि हम और आगे भी न बढ़ें तो यह विचार करना काफी है कि क्रांति से पहले ऐसे किसी भी कार्य के परिणामस्वरूप देश में कैसा हंगामा मचता था और किस प्रकार रूस का समस्त समाज उत्तेजित हो उठता था। लेकिन इस बार इन लोगों के बारे में न तो व्यातका को पता चला और न ही मास्को को और न ही इतिहास को। यद्यपि मनुष्यों का शरीर ठीक उसी प्रकार आग की लपटों को अर्पित हुआ था।

सोलोवेतस्की द्वीपों (संक्षेप में उन्हें सोलोत्स्की कहा जाता था) में कैद रखने का उद्देश्य यही था : यह एक ऐसा उद्देश्य था जो वर्ष में छः महीने बाहरी संसार से पूरी तरह कट जाता था : यह स्थान ऐसा था कि आप चाहे जितने ऊंचे स्वर में चिल्लायें आपकी आवाज कोई नहीं सुन सकता था और आप स्वयं को जला कर खाक भी कर सकते थे और इसकी भनक किसी को भी न मिलती। सन् १९२३ में कैदी समाजवादियों को पेरतोमिन्स्क से वहां पहुंचाया गया। पेरतोमिन्स्क ओनेगा अन्तरीप में है और यहां इन कैदियों को तीन अलग-थलग पड़े हुए ईसाई मठों में कैद कर दिया जाता था।

सावातएवस्की मठ को ही लीजिए। इसकी दो इमारतें थीं, जिनमें पहले तीर्थयात्रा पर निकले धार्मिक लोग निवास करते थे। झील का एक हिस्सा जेल के अहाते के भीतर पड़ता था। आरम्भिक महीनों में हर बात सही दिखाई पड़ी : कैदियों को राजनीतिक कैदियों को प्राप्त विशेष सुविधाएं मिलती रहीं, कुछ कैदियों के रिश्तेदार वहां मुलाकात के लिए पहुंच सके और तीन पार्टियों के तीन प्रवक्ता जेल के अधिकारियों से बातचीत करते थे। और मठ का भीतरी अहाता स्वतन्त्र क्षेत्र माना जाता था। इसके भीतर कैदी लोग बातचीत कर सकते थे, सोच विचार कर सकते थे और बिना किसी व्यवधान के जो चाहे कर सकते थे।

लेकिन उस समय भी, द्वीपसमूह के उदयकाल में, पाखाने की अफवाहें (यद्यपि उस समय इन अफवाहों को इस नाम से सम्बोधित नहीं किया जाता था) शुरू हो चुकी थीं और इन असुखद अफवाहों में यह कहा जाता था कि राजनीतिक कैदियों को प्राप्त विशेष सुविधाएं समाप्त होने जा रही हैं।

और वास्तव में, दिसम्बर के मध्य तक प्रतीक्षा करने के बाद श्वेत सागर के ठण्ड से जम जाने के कारण जहाज चलने योग्य न रह जाने के बाद और इसके परिणामस्वरूप बाहरी संसार से हर प्रकार का सम्पर्क टूट जाने के बाद, सोलोवेतस्की शिविर के अध्यक्ष आइखमन्स[८] ने यह घोषणा की कि नई व्यवस्था के बारे में वास्तव में नए निर्देश प्राप्त हो गए हैं। हां, वे हर सुविधा को वापस नहीं लेंगे, प्रत्येक सुविधा को नहीं। वे पत्र व्यवहार में कमी करेंगे और इसके बाद किसी और चीज में भी और उस दिन से, २० दिसम्बर १९२३ से दिन में चौबीस घंटे अपनी इच्छा के अनुसार बाहर और भीतर आने-जाने को सीमित बनाया जायेगा—केवल दिन के समय शाम छः बजे तक ही कैदी बाहर आ जा सकेंगे।

विभिन्न पार्टियों के कैदियों ने इसका विरोध करने का निश्चय किया और समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी और अराजकतावादी पार्टी के मुखियाओं ने स्वयंसेवकों के नाम मांगे : नई पाबन्दी लागू होने के पहले दिन ही इन लोगों ने ठीक शाम छः बजे बाहर जाने का निश्चय किया। अब यह स्पष्ट हुआ कि सवातएवस्की ईसाई मठ की जेल का प्रमुख अफसर नोगतएव गोली बरसाने के लिए इतना उतावला था कि शाम छः बजे के निर्धारित समय से पहले ही (और हो सकता है कि इनकी घड़ियों में अलग-अलग समय हो; क्योंकि उन दिनों रेडियो से घड़ी मिलाना सम्भव नहीं था।) सन्तरी लोग राइफलें लेकर जेल के अहाते के भीतर घुसे और कोठरियों के बाहर मौजूद कैदियों पर गोली चलाई। यद्यपि ये लोग कानूनी रूप से उस समय तक बाहर रह सकते थे। गोलियों की बौछार में छः कैदी मारे गए और तीन गम्भीर रूप से घायल हुए।

अगले दिन आइखमन्स स्वयं प्रकट हुआ, इस सम्बन्ध में बहुत दुर्भाग्यपूर्ण गलतफहमी हुई। नोगतएव को हटा दिया गया (स्थानांतरित कर दिया गया और पदोन्नति दे दी गई)।

गोली से मरे कैदियों के अन्तिम संस्कार का आयोजन हुआ। सोलोवेतस्की के बियाबान में कैदियों ने संवेद स्वर में यह शोक गीत गाया :

तुम एक निर्णायक संघर्ष की बलि चढ़े।

(क्या सम्भवत: यह अन्तिम अवसर नहीं था जब अधिकारियों की गोली का शिकार बने लोगों के लिए इस प्रकार शोक गीत गाने की अनुमति दी गई ?) उन लोगों ने इन कैदियों की सामूहिक पर के ऊपर एक बहुत बड़ा पत्थर रखा और इसके ऊपर गोली बारी में मरे कैदियों के नाम खोद दिए।[९]

हम यह नहीं कह सकते कि समाचारपत्रों ने इन घटनाओं को छिपाया। उदाहरण के लिए 'प्रावदा' ने बहुत छोटे टाइप में यह समाचार प्रकाशित किया : कैदियों ने सन्तरियों पर हमला किया और इसके परिणामस्वरूप छ: की मृत्यु हुई। ईमानदार अखबार 'रोते फाहने' ने सोलोव्की में विद्रोह समाचार छापा।[१०]

इसके बावजूद कैदियों ने सफलतापूर्वक अपनी विशेष सुविधाओं की रक्षा की ! और पूरे एक वर्ष तक किसी भी व्यक्ति ने इसे बदलने की बात का उल्लेख नहीं किया।

हां, सन् १९२४ के पूरे वर्ष में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। लेकिन वर्ष के अन्त में फिर लगातार इस आशय की अफवाहें प्रचारित होने लगीं कि वे लोग दिसम्बर के अन्त तक नई प्रणाली लागू करने जा रहे हैं। अजगर फिर भूखा हो उठा था। उसे नए बलि के बकरों की आवश्यकता हो रही थी। यद्यपि वे तीन ईसाई मठ जिनमें समाजवादियों को कैद रखा गया था, सावातएवस्की, त्रोइतस्की और मुकसालमस्की—अलग-अलग द्वीपों पर थे, पर इन कैदियों ने षड्यन्त्रकारी तरीकों से एक दूसरे को समाचार भेज कर इस बात पर सहमति प्राप्त कर ली कि इन तीनों मठों में कैद विभिन्न पार्टियों के कैदी मास्को और सोलोव्की प्रशासन को एक साथ अल्टीमेटम देंगे : या तो कैदियों को सोलोवेतस्की द्वीपों से श्वेत सागर में जहाजों का आना-जाना बन्द होने से पहले हटा दिया जाये अथवा राजनीतिक कैदियों के लिए जो व्यवस्था चली आ रही है वह ज्यों की त्यों बनी रहे। इस अल्टीमेटम में दो सप्ताह का समय दिया गया था और यदि इस अवधि में उनकी मांग पूरी नहीं होती तो तीनों जेलों के कैदियों ने भूख हड़ताल करने का निश्चय कर लिया था।

इस प्रकार की एकता पर बाध्य होकर ध्यान देना पड़ता था। यह ऐसी बात नहीं थी जिसे आप एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते। अल्टीमेटम का समय समाप्त होने से एक दिन पहले, आइखमन्स प्रत्येक मठ में गया और यह घोषणा की कि मास्कोने उनकी प्रत्येक मांग को अस्वीकार कर दिया है और निर्धारित दिन भूख हड़ताल शुरू हुई। यह निर्जल भूख हड़ताल नहीं थी। पानी पीने की अनुमति थी और यह भूख हड़ताल एक साथ तीनों जेलों में शुरू हुई। (और अब ये तीनों जेल एक दूसरे से सम्पर्क नहीं कर सकती थीं।) सावातएवस्की जेल में लगभग दो सौ कैदियों ने भूख हड़ताल शुरू की। बीमार कैदियों को भूख हड़ताल में शामिल न होने की अनुमति थी। कैदियों के बीच मौजूद एक डाक्टर हर रोज भूख हड़तालियों के स्वास्थ्य की परीक्षा करता था। व्यक्तिगत भूख हड़ताल की तुलना में सामूहिक भूख हड़ताल चला पाना सदा बड़ा कठिन होता है क्योंकि भूख हड़तालियों में सबसे अधिक मजबूत हड़ताली नहीं बल्कि सबसे कमजोर हड़ताली ही परिणाम का निर्णय करते हैं। भूख हड़ताल करने का तभी लाभ होता है जब उसे अडिग निश्चय से किया जाय और प्रत्येक भूख हड़ताली को दूसरे भूख हड़तालियों के बारे में व्यक्तिगत जानकारी हो।

और प्रत्येक एक दूसरे पर पूरा भरोसा करता हो। विभिन्न पार्टियों के कैदियों और सैकड़ों भूख हड़तालियों की संख्या के कारण मतभेद और नैतिक संकट उत्पन्न होना अनिवार्य था। यह नैतिक संकट इस कारण से उत्पन्न होता है कि दूसरे लोगों के जीवन का उत्तरदायित्व भूख हड़ताल जारी रखने के निर्णय पर निर्भर करता है। १५ दिन के बाद यह आवश्यक हो गया कि सावातएवस्की में गुप्त मतदान के द्वारा यह जानकारी प्राप्त की जाए कि कैदी भूख हड़ताल जारी रखना चाहते हैं अथवा नहीं। मतदान की पेटी को एक एक कमरे में ले जाया गया।

मास्को और आइखमन्स इस मतदान के परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे। आखिरकार इन लोगों को अच्छा भोजन मिलता था और पूंजीवादी समाचारपत्रों ने भूख हड़ताल के बारे में आभास तक नहीं दिया था और कज्जान के बड़े गिरजाघर में विद्यार्थियों ने विरोध सभाएं भी नहीं की थीं। अब तक 'मौन' हमारे इतिहास को स्वरूप देने का विश्वासपूर्वक निर्धारण करने लगा था।

मठों में भूख हड़ताल बन्द कर दी गई। कैदी जीते नहीं थे, लेकिन उनकी हार भी नहीं हुई थी। सर्दियों भर राजनीतिक कैदियों की व्यवस्था और नियम पहले की तरह जारी रहे। केवल अन्तर इतना हुआ कि जंगल से जलाने की लकड़ी काटने का काम और शुरू कर दिया। लेकिन सर्दियों के लिए लकड़ी काटना पर्याप्त तर्कसंगत बात थी। और सन् १९२५ की वसन्त ऋतु में ऐसा लगने लगा मानो भूख हड़ताल से विजय प्राप्त हो गई थी: इन तीनों मठों में कैद कैदियों को सोलोव्की द्वीपों से हटा दिया गया। इन्हें मुख्य भूमि में पहुंचाने के लिए हटाया गया! अब आर्कटिक क्षेत्र की लम्बी रात और वर्ष में छः महीने मुख्य भूमि से पूरी तरह सम्पर्क कट जाने का कष्ट नहीं भोगना होगा!

लेकिन रास्ते में कैदियों को अत्यधिक कठोर सन्तरियों और बेहद कम राशन के कारण तकलीफ उठानी पड़ी। और जल्दी ही इन लोगों के साथ बड़ी चालाकी से विश्वासघात किया गया। यह बहाना बनाकर कि कैदियों के प्रवक्ता उस "स्टाफ" के डिब्बे में ज्यादा आराम से रह सकेंगे, जहां साज सामान रहता है, कैदियों को अपने नेताओं से वंचित कर दिया। "स्टाफ" के डिब्बे को व्यातका में अलग कर दिया गया और कैदियों के प्रवक्ताओं को तोबोलस्क की तनहाई जेल में पहुंचा दिया गया। केवल तभी यह बात स्पष्ट हुई कि पिछली वसन्त ऋतु की भूख हड़ताल असफल रही थी। दृढ़ और प्रभावशाली प्रवक्ताओं को इसलिए अलग कर दिया गया था ताकि शेष कैदियों को डरा धमका कर दबाया जा सके। यगोदा और कतानयान ने सोलोवेतस्की द्वीपों के भूतपूर्व कैदियों को वेरखने-ऊरालस्क की तनहाई जेल में पहुंचाने के कार्य का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण किया। वेरखने-उरालस्क की पुरानी और उस समय तक इस्तेमाल में न आने वाली इमारतों का अब इस्तेमाल शुरू हुआ और सन् १९२१ की वसन्त ऋतु में इन इमारतों को खोल दिया गया। (इस जेल का प्रधान अफसर दुपर नियुक्त हुआ)। यह जेल अनेक दशकों तक कैदियों के लिए विशेष रूप से भयावह बनी रही।

सोलोव्की के भूतपूर्व कैदियों को अपनी नई जेलों में इधर-उधर आने जाने की स्वतंत्रता से तुरन्त वंचित कर दिया गया। जेल की कोठरियों में ताले डाल दिये गए। यद्यपि कैदियों को अपने प्रवक्ताओं का चुनाव करने में सफलता मिली लेकिन प्रवक्ताओं को सब कोठरियों में जाने का अधिकार प्राप्त नहीं हो सका। पहले विभिन्न कोठरियों के बीच पैसे,

व्यक्तिगत उपयोग की चीजों और पुस्तकों आदि का जो असीमित चलन होता था उस पर पाबन्दी लगा दी गई। कैदी लोग अपनी कोठरियों की खिड़कियों से चिल्ला-चिल्ला कर बात करने लगे लेकिन जब टावरों पर तैनात कैदियों ने खिड़कियों से कोठरियों के भीतर गोलियां चलाईं तो कैदियों को यह काम बन्द करना पड़ा। इसके जवाब में कैदियों ने अपनी आपत्ति प्रकट करने के लिए कारवाई की और उन्होंने खिड़कियों के शीशे और जेल का सामान तोड़ डाला। और कोठरी की खिड़की के शीशे तोड़ना एक ऐसा काम है, जिसे करने से पहले कैदियों को दो बार सोचना पड़ता है। हो सकता है कि पूरी सर्दियों भर जेल अधिकारी खिड़कियों पर शीशे ही न लगाएं और शीशे न लगाना कोई आश्चर्य की बात भी न होगी। केवल ज़ारशाही के जमाने में ही शीशे लगाने वाले आदमी दौड़े हुए आते थे।) संघर्ष जारी रहा, लेकिन अब यह संघर्ष अत्यन्त निराशा के वातावरण में और गम्भीर रूप से असुविधाजनक परिस्थितियों में हो रहा था।

सन् १९२८ में (प्योत्र पेत्रोविच रुबिन के अनुसार) किसी घटना के फलस्वरूप वेरखने-उरालस्क तनहाई जेल के सब कैदियों के एक और भूख हड़ताल का कारण बनी। लेकिन इस बार पहले का कठोर और गम्भीरतापूर्ण वातावरण मौजूद नहीं था। इसी प्रकार अपने मित्रों की सलाह और एक डाक्टर का परामर्श भी प्राप्त नहीं था। भूख हड़ताल के दौरान एक दिन जेल के सन्तरी बहुत बड़ी संख्या में कैदियों की कोठरियों में घुस पड़े और भूख हड़ताल से कमजोर कैदियों को मोटे डण्डों और जूतों से पीटने लगे और ठोकरें जमाने लगे। पीटते-पीटते इन लोगों ने कैदियों को प्राय: मार ही डाला और भूख हड़ताल समाप्त हो गई।



अतीत के अपने अनुभव और अतीत के अपने साहित्य के आधार पर हम लोगों ने भूख हड़ताल की शक्ति के प्रति बचकानेपन से भरी आस्था प्राप्त की है। लेकिन भूख हड़ताल शुद्ध रूप से एक नैतिक हथियार है। इसमें यह मान लिया जाता है कि आपको जेल में डालने वालों की आत्मा पूरी तरह से मरी नहीं है। अथवा आपको जेल में डालने वाले लोग जनमत से डरते हैं। केवल इन्हीं परिस्थितियों में भूख हड़ताल प्रभावशाली हो सकती है।

ज़ारशाही के जेलरों को उचित अनुभव प्राप्त नहीं था। यदि उनका कोई कैदी भूख हड़ताल शुरू कर देता तो वे घबरा उठते थे। वे इसकी ओर ध्यान देने लगते थे, इसकी चर्चा करते थे और भूख हड़ताल करने वाले कैदी को अस्पताल पहुंचा देते थे। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, लेकिन यह पुस्तक ज़ारशाही के जेलरों के बारे में नहीं लिखी जा रही है। इस बात पर गौर करना बहुत विनोदपूर्ण लगता है कि वालिनतिनोव के लिए १२ दिन की भूख हड़ताल करना पर्याप्त सिद्ध हुआ : इसके परिणामस्वरूप उसे केवल जेल की कठोर व्यवस्था से ही कुछ राहत नहीं मिली, बल्कि पूछताछ से पूरी तरह मुक्त कर दिया गया और इसके बाद वह स्विट्जरलैंड में लेनिन के पास जा पहुंचा। ओरेल की केन्द्रीय कठोर कारावास जेल में भूखहड़तालियों की सदा विजय होती थी। कैदियों को जेल की कठोर व्यवस्था को और उदार बनाने में १९१२ में और फिर १९१३ में सफलता मिली। इसके परिणामस्वरूप कठोर कैद की सजा प्राप्त सब राजनीतिक कैदियों को बाहर खुले अहाते में टहलने की अनु-

मति प्राप्त हो गई। यह स्पष्ट है कि ये कैदी जेल के अफसरों के निरीक्षण से इतने मुक्त थे कि "रूस की जनता के नाम" अपील लिखकर उसे जेल से बाहर भेजने में कामयाब हो जाते थे। (और यह काम कठोर कारावास के कैदी कर पाते थे और वह भी एक केन्द्रीय जेल में।) इतना ही नहीं यह अपील प्रकाशित भी हो जाती थी। (यह कल्पना ऐसी विचित्र है कि हमारी आंखें फट पड़ती हैं ! सचमुच ये लोग पागल ही रहे होंगे !) एक ऐसी ही अपील सन् १९१४ में कठोर कारावास और निष्कासन समाचार पत्र—वेस्तनिक कातोरजी आइस-सिलकी—के पहले अंक में प्रकाशित हुई।[11] (और इस समाचारपत्र के बारे में आप क्या कहेंगे ? क्या हम लोगों को भी एक ऐसा ही अखबार निकालने की बात सोचनी चाहिए ?) सन् १९१४ में, केवल पांच दिन की भूख हड़ताल के बाद ही—हां यह भूख हड़ताल निर्जल थी—ज़ेरझिन्स्की और उसके चार साथियों को अपनी सब मांगें मनवाने में कामयाबी हासिल हुई। (ये अनेक मांगें जेल में रहन-सहन की परिस्थितियों के बारे में थीं)।[12]

उन वर्षों में, भूखहड़तालियों के सामने भूख के कष्ट के अलावा अन्य कोई खतरा अथवा कठिनाई मौजूद नहीं रहती थी। जेल के अफसर और सन्तरी भूखहड़तालियों को मारपीट नहीं सकते थे, उन्हें कैद की एक और सजा नहीं सुना सकते थे, उनकी जेल की चालू अवधि को बढ़ा नहीं सकते थे, उन्हें गोली से नहीं उड़ा सकते थे और न ही कैदियों को ढोने वाली किसी रेलगाड़ी में ही चढ़ा सकते थे। (ये सब बातें भविष्य में होनी थीं)।

सन् १९०५ की क्रांति और उसके बाद के वर्षों में कैदी लोग स्वयं को जेल का ऐसा स्वामी मानते थे कि उन्हें भूख हड़ताल की घोषणा करने का कष्ट उठाने की भी आवश्यकता नहीं थी। बस वे जेल की सम्पत्ति को नष्ट कर डालते थे। (तथाकथित "बाधाओं" को तोड़ डालते थे)। अथवा केवल हड़ताल की घोषणा कर देते थे। यद्यपि यह स्पष्ट है कि कैदियों द्वारा हड़ताल करने की घोषणा का क्या अर्थ होता है। इस प्रकार सन् १९०६ में निकोला-एव नगर की स्थानीय जेल में १९७ कैदियों ने बाहरी लोगों के साथ मिलकर "हड़ताल" की घोषणा कर दी। जेल के बाहर, हड़ताल के समर्थन में इश्तिहार बांटे गए और हर रोज़ जेल की इमारत के बाहर सभाएं की गईं। इन सभाओं ने (कहना न होगा कि इन सभाओं के समय कैदी लोग खिड़कियों पर खड़े रहते थे और उस समय तक इन खिड़कियों के ऊपर लोहे की चद्दरें नहीं ठोकी गई थीं) प्रशासन को "हड़ताली" कैदियों की मांगें स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। इसके बाद सड़क पर मौजूद लोगों और जेल के सीखचों के पीछे बन्द कैदियों ने एक साथ मिलकर क्रांतिकारी गीत गाये। यह क्रम लगातार ८ दिन तक चलता रहा। (और किसी ने इन लोगों को रोका नहीं ! आखिरकार यह क्रांति के दमन के बाद का एक वर्ष था।) नौवें दिन कैदियों की सब मांगों को मान लिया गया। उन्हीं दिनों ओडेसा, खेरसन और एलिज़ा वेतग्राद में ऐसी ही घटनाएं घटीं। उन दिनों इतनी आसानी से ही विजय प्राप्त हो जाती थी।

प्रसंगवश यह तुलना करना दिलचस्प होगा कि अस्थायी सरकार के शासनकाल में भूख हड़ताल कितनी प्रभावशाली थी, लेकिन कोरनिलोव के मामले तक जुलाई के महीने से कैद कुछ बोलशेविकों को भूख हड़ताल करने का प्रकट रूप से कोई कारण नहीं था। (कामेनेव, ट्राटस्की और रासकोलनिकोव ने कुछ अधिक समय तक यह कारवाई की)।

१९२० के बाद के वर्षों में भूख हड़तालों की उत्साहपूर्ण तस्वीर धूमिल हो जाती है (यद्यपि यह बात, सचमुच, अपने-अपने दृष्टिकोण पर निर्भर करती है...)।

इस हथियार का इस्तेमाल केवल मान्य "राजनीतिक कैदियों" ने ही नहीं किया बल्कि उन, कैदियों ने भी, जिन्हें राजनीतिक नहीं माना जाता था जैसे क्रांति विरोधी कैदी (जिन्हें अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत कैद किया जाता था) और अन्य ऐसे ही कैदी इसका इस्तेमाल करने लगे थे। कैदियों को भूखहड़ताल के हथियार की व्यापक जानकारी थी और अत्यन्त शानदार तरीके से इसके इस्तेमाल का औचित्य सिद्ध हो चुका था। पर न जाने कैसे वे बाण कुंठित हो चुके थे, जो एक समय अत्यधिक तीखे थे अथवा यह भी कहा जा सकता है कि बीच में ही लोहे के किसी पंजे ने इन्हें अपने लक्ष्य से विमुख कर दिया था। यह सच है कि अभी भी भूखहड़ताल शुरू करने की लिखित घोषणा को स्वीकार किया जाता था और इसमें तोड़-फोड़ की कारवाई दिखाई नहीं पड़ती थी। लेकिन असुखद नए नियम तैयार किए गए : भूखहड़ताली को एक विशेष तन्हाई की कोठरी में अन्य कैदियों से अलग रखा जाएगा। (बुत्यर्की जेल में भूखहड़ताली को पुगाचेव टावर में रखा जाता था।) भूखहड़ताल के बारे में केवल बाहर के लोगों को ही अंधकार में नहीं रखा जाता था, जो संभवतः सार्वजनिक रूप से अपना विरोध कर सकते थे और आस-पास की कोठरियों के कैदियों से ही नहीं बल्कि उस कोठरी के कैदियों को भी इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी जाती थी जिस कोठरी में भूखहड़ताली अपनी भूखहड़ताल शुरू करने के दिन तक कैद था। —क्योंकि इन लोगों को भी जनता माना जाता था और इस कारण यह आवश्यक हो जाता था कि इन कैदियों को भी भूखहड़ताली से दूर रखा जाए। इस कारवाई का नाम-मात्र का औचित्य इस तर्क में निहित था कि जेल प्रशासन को इस बात का निश्चय करना है कि भूखहड़ताल ईमानदारी से की जा रही है अथवा नहीं—अर्थात् कोठरी के अन्य कैदी भूखहड़ताली को खाने की चीजें चुपचाप तो नहीं दे रहे हैं। (और पहले इस बात का पता कैसे लगाया जाता था ? कैदी का वचन काफी होता था, कैदी की ईमानदारी से कही गई बात प्रर्याप्त मानी जाती थी।

उन वर्षों में कोई कैदी कम से कम अपनी व्यक्तिगत मांगों को इस तरीके से मनवा सकता था :

पर १९३० के बाद से, भूखहड़ताल के बारे में राज्य के विचारों में एक नया परिवर्तन आया। ऐसी प्रभावहीन, अलग-थलग और आधी सीमा तक दबाई गई भूखहड़तालों से राज्य को क्या अपेक्षा थी ? क्या कैदियों की यह आदर्श तस्वीर न होगी कि उनमें अपनी कोई इच्छा न हो, उनमें स्वयं अपनी ओर से निर्णय लेने की क्षमता न हो— और जेल का प्रशासन ऐसा हो जो कैदियों की ओर से सोचे और कैदियों की ओर से स्वंय निर्णय ले। केवल ये कैदी ही नए समाज में जीवित रह सकते हैं। और इस प्रकार १९३० से जेल अधिकारियों ने भूखहड़ताल की घोषणा को गैर-कानूनी बताना शुरू कर दिया। "प्रतिरोध के एक तरीके के रूप में अब भूखहड़ताल का अस्तित्व शेष नहीं रह गया है।" उन लोगों ने सन् १९३२ में एकातेरीना ओलीतस्काया को बताया और इसके बाद अन्य अनेक कैदियों को भी यही बात बताई गई। सरकार ने आपकी भूखहड़तालों को समाप्त कर दिया है-और इससे आगे कुछ कहने सुनने की जरूरत नहीं है। लेकिन ओलीतस्काया ने आज्ञा पालन करने से इनकार कर दिया और भूखहड़ताल शुरू कर दी। उन लोगों ने उसे एक अलग तन्हाई की कोठरी में १५ दिन तक भूखहड़ताल करने दी और इसके बाद वे लोग उसे अस्पताल ले गए और उसे ललचाने के लिए दूध और अन्य खाने की चीजें उसके सामने रखीं। लेकिन वह दृढ़ता से डटी

रही और १९वें दिन उसे विजय प्राप्त हुई : उसे और अधिक समय तक जेल की कोठरी के बाहर घूमने, समाचार प्राप्त करने तथा राजनीतिक रैडक्रास से पार्सल प्राप्त करने की अनुमति मिल गई। (पूरी तरह से कानूनी पार्सलों को सहायता के रूप में प्राप्त करने के लिए कैदी को इस प्रकार कष्ट भोगने पड़ते थे!) समग्र दृष्टि से, यह महत्वहीन विजय थी और इसके लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी। ओलीतस्काया को अन्य कैदियों की ऐसी ही मूर्खतापूर्ण भूखहड़तालों का स्मरण है : कुछ कैदियों को एक पार्सल प्राप्त करने अथवा बाहर टहलने के समय अपने साथियों में परिवर्तन के लिए २० दिन तक की भूखहड़ताल करनी पड़ी थी। क्या इसके लिए भूखहड़ताल का यह कष्ट भोगना उचित था? आखिरकार, नए किस्म की जेल में जब कैदी एक बार अपनी शारीरिक शक्ति खो देता है, तो वह उसे कभी वापस प्राप्त नहीं होती। धार्मिक सम्प्रदाय का सदस्य कोलोसकोव अपनी मृत्यु तक २५ दिन तक भूखहड़ताल करता रहा। क्या कोई व्यक्ति नए किस्म की जेल में स्वंय को भूखहड़ताल करने की अनुमति दे सकता है? आखिरकार नई जेलों के बड़े अफसरों ने, गुप्त और मौन तरीके से काम करते हुए भूखहड़तालों के मुकाबले के लिए अनेक शक्तिशाली तरीके निकाल लिए है :

१—प्रशासन की ओर से सब्र। (ऊपर के उदाहरणों से हमें इस बात का पर्याप्त परिचय प्राप्त हो गया है।)

२—धोखा। पूर्ण गोपनीयता के कारण यह भी किया जा सकता है। यदि समाचारपत्रों में हर बात प्रकाशित होती हो तो आप यह धोखाधड़ी नहीं कर सकते। लेकिन हमारे देश में यह क्यों न किया जाए! सन् १९३३ में खबारोवस्क जेल में, कैद एस० ए० चेबोतारएव ने यह मांग करते हुए १७ दिन की भूखहड़ताल की कि उसके परिवार को यह जानकारी दी जाए कि वह इस जेल में कैद है। (वह मंचूरिया में चीनी पूर्वी रेल विभाग से आया था और फिर अचानक गायब हो गया था और उसे इस बात की चिन्ता थी कि क्या जाने उसकी पत्नी क्या सोच रही होगी।)१७वें दिन प्रांतीय जी० पी० यू० का उपाध्यक्ष जपादनी और खबारोवस्क प्रान्त का सरकारी वकील (इन अधिकारियों के पद से यह स्पष्ट हो जाता है कि लम्बे अरसे तक चलने वाली भूखहड़तालें अधिक नहीं होती थीं।) उसके पास आये और उसे तार की एक प्रति दिखाई। (देखो, तुम्हारी पत्नी को सूचना दे दी गई है।) और इस प्रकार उसे कुछ शोरबा लेने के लिए राजी कर लिया। पर यह रसीद जाली थी! (इन बड़े अफसरों ने यह जालसाजी करने का कष्ट क्यों उठाया? नहीं, चेबोतारएव का जीवन बचाने के लिए किसी भी रूप में नहीं। इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि १९३५ तक लम्बी अवधि तक चलने वाली भूखहड़तालों के बारे में बड़े अधिकारियों के ऊपर किसी न किसी प्रकार की व्यक्तिगत जिम्मेदारी रहती थी।)

३—कृत्रिम उपायों से जबर्दस्ती भोजन खिलाना। इस तरीके को पकड़े गए जंगली जानवरों से प्राप्त अनुभव के आधार पर अपनाया गया था। और यह काम एकदम गुप्त तरीके से किया जा सकता था। इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि सन् १९३७ से कृत्रिम उपायों से भोजन खिलाने का काम व्यापक रूप से होने लगा था, उदाहरण के लिए यारोस्लावल केन्द्रीय जेल में समाजवादियों द्वारा सामूहिक रूप से भूखहड़ताल करने पर १५वें दिन प्रत्येक भूखहड़ताली को कृत्रिम उपायों से भोजन कराया गया।

कृत्रिम उपायों से किसी व्यक्ति को भोजन देने और किसी स्त्री के साथ बलात्कार

करने में बहुत समानताएं हैं। और यह काम इस प्रकार होता है : ४ लंबे तड़ंगे आदमी एक कमजोर प्राणी पर टूट पड़ते हैं और उसे अपने निषेध के अधिकार से वंचित कर देते हैं—वे बस एक बार उसके पेट में भोजन पहुंचा देते हैं और इसके बाद क्या होता है इस बात का कोई महत्व नहीं है। बलात्कार का प्रमुख तत्व यह है कि उसमें बलात्कार का लक्ष्य बनी स्त्री की इच्छा का उल्लंघन होता है : "तुम्हारी मर्जी नहीं चलेगी, जैसा मैं चाहूंगा वैसा होगा; लेट जाओ और हील हुज्जत न करो।" वे लोग एक छोटी तश्तरी जैसी चीज़ से भूखहड़ताली का मुंह खोल देते हैं और इसके बाद जबड़ों के बीच एक नली ठूंस देते हैं : "इसे निगलो।" और यदि आप इसे नहीं निगलते तो वे नली को और भीतर ठूंसने लगते हैं और दूसरे सिरे से तरल भोजन डालने लगते हैं। इसके बाद वे लोग पेट की मालिश करते हैं ताकि कैदी कै करके भोजन न निकाल सके। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हड़ताली के मन में स्वयं को नैतिक रूप से अपवित्र कर डालने का भाव उत्पन्न होता है। मुंह में मीठा स्वाद बस जाता है और हर्षोन्मत्त पेट अपनी ज्वाला शान्त होने के कारण प्रफुल्लित हो उठता है।

विज्ञान जहां का तहां नहीं रुका है और कृत्रिम तरीके से भोजन शरीर में पहुंचाने के और तरीके भी विकसित हुए हैं : गुदा के रास्ते अनीमा के द्वारा और नाक के रास्ते बूंद-बूंद कर करके पेट में भोजन पहुंचाना।

४—भूख हड़ताल के बारे में एक नया विचार : कि भूखहड़ताल जेल में क्रान्ति विरोधी गतिविधियों को जारी रखने की कारवाई है और इसके लिए कैद की और सजा दी जानी चाहिए। नए किस्म की जेल में जो तरीके अपनाये जाते थे, जो काम होते थे उनमें इस दृष्टिकोण के कारण और वृद्धि हुई। लेकिन अधिकांशतया भूखहड़ताल के लिए एक और सजा देने की बात धमकियों के क्षेत्र तक ही सीमित रही। और जब इस तरीके का उपयोग समाप्त अथवा सीमित हो गया, तो इसका कारण विनोद भावना नहीं थी, बल्कि जेल के अधिकारियों का आलस्य ही इसका कारण था : इन सब बातों की चिन्ता करने का क्या लाभ जब सब्र से सब काम हो सकता है ? सब्र और अधिक सब्र—अच्छी तरह भोजन करने वाले व्यक्ति का भूख से तड़पने वाले व्यक्ति के समक्ष सब्र।

सन् १९३७ के लगभग मध्य में एक नया निर्देश प्राप्त हुआ : भविष्य में जेल प्रशासन ऐसे लोगों की मृत्यु के लिए जिम्मेदार नहीं होगा जो भूखहड़ताल के कारण मर जाते हैं ! जेल के अधिकारियों पर जो व्यक्तिगत जिम्मेदारी हो सकती थी अब वह पूरी तरह से अन्तर्धान हो गई। (इन परिस्थितियों में, प्रान्त का सरकारी वकील चेवोतारएव से मिलने नहीं आएगा !) इतना ही नहीं, इस बात का ध्यान रखते हुए कि पूछताछ अधिकारी के काम में बाधा न पड़े, इस बात की घोषणा की गई कि कैदी जितने दिन भूखहड़ताल करता है, उनकी गणना पूछताछ की निर्धारित अवधि में नहीं की जाएगी। दूसरे शब्दों में, केवल यही नहीं माना जाएगा कि भूखहड़ताल नहीं हुई, बल्कि यह माना जाएगा कि भूखहड़ताल की पूरी अवधि में कैदी जेल में मौजूद ही नहीं था। इस प्रकार पूछताछ अधिकारी पर निश्चित समय में पूछताछ पूरी करने का दोष नहीं लगाया जा सकेगा। तो भूखहड़ताल का एकमात्र प्रकट परिणाम कैदी का क्षीण और पस्त हो जाना ही हो सकता था !

और इसका अर्थ था : यदि तुम मरना चाहते हो तो खुशी से मरो !

आरनोल्ड रैप्पोपोर्ट का यह दुर्भाग्य था कि उसने आर्चएंजिल एन० के० वी० डी० की आन्तरिक जेल में ठीक उस क्षण भूखहड़ताल की घोषणा की जब जेल अधिकारियों को

उक्त आदेश प्राप्त हुआ। यह भूखहड़ताल बहुत कठोर थी और यह लगता था कि इसका अधिक असर होगा। रैप्पोपोर्ट ने निर्जल भूखहड़ताल की थी और १३ दिन तक भूखहड़ताल जारी रही। (इसकी तुलना जेरझिन्स्की की पांच दिन की "निर्जल" भूखहड़ताल से कीजिए, जिसे सम्भवत: एक अलग तन्हाई की कोठरी में नहीं रखा गया था। और अन्त में उसे पूर्ण विजय प्राप्त हुई थी।) तन्हाई में भूखहड़ताल के १३ दिनों में रैप्पोपोर्ट को देखने के लिए एक चिकित्सा सहायक कभी-कभी आता रहता था। कोई डाक्टर नहीं आता था। और प्रशासन से सम्बद्ध किसी भी व्यक्ति ने इस बात में जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखाई कि वह किस मांग को लेकर भूखहड़ताल कर रहा था। उन लोगों ने उससे यह बात पूछी तक नहीं। प्रशासन ने उसकी ओर केवल यही ध्यान दिया कि उसकी कोठरी की बड़ी सावधानी से तलाशी ली गई और उन्हें छिपा कर रखे गए माखोरका तम्बाकू और कुछ माचिसें ढूंढ़ निकालने में कामयाबी मिली। रैप्पोपोर्ट बस यही चाहता था कि पूछताछ अधिकारी उसे अपमानित न करे। उसने पूरी तरह से वैज्ञानिक तरीके से भूख हड़ताल की तैयारी की थी। इससे पहले उसे अपने घर से भोजन का एक पार्सल प्राप्त हुआ था और भूखहड़ताल के एक सप्ताह पहले ही उसने कालीरोटी खाना बन्द कर दिया था और वह केवल मक्खन और बारांकी नाम के छल्लेदार रोल्स ही खाता था। उसने उस समय तक अपनी भूखहड़ताल जारी रखी जब तक दुर्बलता के कारण उसके हाथ इतने क्षीण नहीं हो गये कि इनके आर-पार प्रकाश दिखाई पड़ने लगा। उन्हें आज भी इस बात का स्मरण है कि किस प्रकार उनका मस्तिष्क एकदम हल्का हो गया था और विचारों में कितनी अधिक स्पष्टता आ गई थी। भूखहड़ताल के इस दौर में एक दिन एक दयावान और करुणा सम्पन्न स्त्री जेल कर्मचारी, जिसका नाम मारूसिया था, उसकी कोठरी में आई और फुसफुसाहट के स्वर में उससे बोली : "भूखहड़ताल बन्द कर दो; इसका कोई लाभ नहीं होगा; बस, तुम्हारी जान चली जाएगी! तुम्हें एक सप्ताह पहले ही भूखहड़ताल तोड़ देनी चाहिए थी।" रैप्पोपोर्ट ने उस स्त्री की बात सुनी और अपनी मांग स्वीकार हुए बिना ही भूखहड़ताल तोड़ दी। भूखहड़ताल तोड़ने पर उन लोगों ने उसे लाल शराब और रोल्स खाने को दिये और इसके बाद सन्तरी उसे उठा कर उसकी पहले वाली जेल की कोठरी में छोड़ गया। कुछ दिन बाद फिर पूछताछ शुरू हुई। लेकिन उसकी भूखहड़ताल पूरी तरह से निरर्थक सिद्ध नहीं हुई थी : पूछताछ अधिकारी अब यह समझ गया था कि रैप्पोपोर्ट में संकल्प शक्ति है और वह मृत्यु से नहीं डरता और इस प्रकार पूछताछ की कठोरता कम हो गई। "ठीक है, अब यह बात जाहिर हो गई है कि तुम एक पूरे भेड़िए हो," पूछताछ अधिकारी उससे बोला। "एक भेड़िया!" रैप्पोपोर्ट ने पुष्टि की। "और यह निश्चित है कि मैं कभी भी तुम्हारा कुत्ता नहीं बनूंगा।"

आगे चल कर कोतलास संक्रमण जेल में रैप्पोपोर्ट ने एक और भूखहड़ताल की घोषणा की। लेकिन काफी हास्यास्पद ढंग से यह काम हुआ। उसने घोषणा की कि वह एक बार फिर पूछताछ किए जाने की मांग करता है और वह कैदियों की रेलगाड़ी में सवार नहीं होगा। तीसरे दिन वे लोग उसके पास आये "कैदियों की गाड़ी में सवार होने के लिए तैयार हो जाओ" : "तुम्हें इस बात का अधिकार नहीं है, मैं भूखहड़ताल पर हूं!" यह कहते ही चार हट्टे-कट्टे नौजवानों ने उसे पकड़ कर उठा लिया और उसे ले जाकर स्नान घर में फेंक दिया। स्नान के बाद वे लोग उसे गारद घर में ले गए। अब इसके बाद कुछ भी

करने को शेष नहीं रह गया, रैप्पोपोर्ट उठ खड़ा हुआ और कैदियों की गाड़ी में सवार होने के लिये खड़े कैदियों की कतार में जा खड़ा हुआ—आखिरकार, उसकी पीठ पीछे सन्तरियों की संगीनें और कुत्ते मौजूद थे।

और इसी तरीके से नये किस्म की जेल ने बुर्जुआ भूखहड़तालों को पराजित किया।

एक शक्तिशाली व्यक्ति के समक्ष, संभवतः आत्महत्या को छोड़कर, जेल व्यवस्था से लड़ने का अन्य कोई रास्ता नहीं रह गया था। पर क्या आत्महत्या सच्चे मानो में प्रतिरोध है ? क्या यह सचमुच घुटने टेक देने की कारवाई नहीं है ?

समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की सदस्या एकातेरीना ओलीतस्काया का विचार है कि उसकी पार्टी के सदस्यों के बाद जो ट्राटस्कीवादी और आगे चलकर कम्युनिस्ट जेलों में पहुंचे, उन लोगों ने अधिकारियों के विरुद्ध संघर्ष में एक ही हथियार के रूप में भूखहड़ताल के इस्तेमाल को बहुत अधिक कमजोर बना डालने में सहायता दी : वे मामूली-सी बात पर भूख-हड़ताल की घोषणा कर देते और बेहद आसानी से भूखहड़ताल तोड़ देते। ओलीतस्काया का कहना है कि ट्राटस्कीवादी नेता आई० एन० स्मिरनोव तक ने अपने मास्को के मुकदमे के चार दिन पहले भूखहड़ताल शुरू की और बहुत जल्दी ही घुटने टेक दिये और भूख-हड़ताल तोड़ दी। उन लोगों का कहना है कि सन् १९३६ तक ट्राटस्कीवादी सिद्धान्त रूप में सोवियत सरकार के विरुद्ध भूखहड़ताल करने का विरोध करते थे और उन्होंने भूखहड़ताल करने वाले समाजवादी क्रान्तिकारियों और समाजवादी लोकतंत्रवादियों का कभी भी समर्थन नहीं किया।[११]

इतिहास ही यह बतायेगा कि यह उलाहना कितना सच है और कितना झूठ पर ट्राटस्कीवादियों से अधिक किसी अन्य पार्टी अथवा व्यक्तियों ने भूखहड़ताल की कीमत नहीं चुकाई। (हम भाग ३ में इन लोगों की भूखहड़तालों और शिविरों में हड़ताल पर विचार करेंगे।)

अत्यधिक जल्दबाजी में भूखहड़ताल की घोषणा करना और उसे तोड़ना संभवतः उनके उग्र स्वभाव की विशेषता थी और इस स्वभाव के कारण बड़ी तेज़ी से वे अपनी भाव-नाओं को प्रकट कर डालते थे। लेकिन आखिरकार रूस के पुराने क्रांतिकारियों में और इटली तथा फ्रांस में भी ऐसे ही स्वभाव के लोग थे। लेकिन क्रांति से पहले रूस में, इटली में अथवा फ्रांस में, कहीं भी अधिकारियों को भूखहड़तालों के प्रति कैदियों को इस सीमा तक निरु-त्साहित करने में सफलता नहीं मिली, जिस सीमा तक उन्हें सोवियत संघ में यह सफलता प्राप्त हुई। इस शताब्दी की दूसरी तिमाही में पहली तिमाही की तुलना में भूखहड़तालों के लिए कम शारीरिक यातनाएं सहने की क्षमता और कम आध्यात्मिक संकल्प की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन उस समय सोवियत संघ में जनमत मौजूद नहीं था। और इसके आधार पर नये किस्म की जेल व्यापक होती गई और मजबूत बनती गई। और आसान विजयों के स्थान पर, कैदियों को भयंकर कष्टों के बाद कठोर पराजयों का मुंह देखना पड़ा।

अनेक दशक बीत गये और समय ने अपने परिणाम दिखाये। भूख हड़ताल—जो कैदी का पहला और सर्वाधिक स्वाभाविक हथियार था—अन्ततः स्वयं कैदियों के लिए पूरी तरह से अपरिचित और समझ के बाहर हो गयी। अब निरन्तर कम से कम कैदी भूख-हड़ताल की बात सोचते। और जेल प्रशासनों को भूखहड़ताल शुद्ध रूप से मूर्खतापूर्ण अथवा जेल के नियमों का विद्वेषपूर्ण उल्लंघन दिखाई पड़ने लगी।

जब सन् १९६० में जेनादिस्मेलोव ने, जो एक गैर-राजनीतिक कैदी था, लेनिनग्राद जेल में एक लम्बी भूखहड़ताल की घोषणा की, तो किसी कारण से सरकारी वकील उसकी कोठरी में जा पहुंचा (संभवतः वह अपने निर्धारित निरीक्षण पर आया हुआ था) और उससे बोला : "तुम अपने आपको यातना क्यों दे रहे हो ?"

और स्मेलोव ने उत्तर दिया : "मेरे लिए न्याय अपने जीवन से अधिक प्रिय है, अधिक मूल्यवान है।"

इस कथन से सरकारी वकील इतना अधिक आश्चर्यचकित हुआ कि अगले दिन स्मेलोव को लेनिनग्राद विशेष अस्पताल (अर्थात् पागलखाना) ले जाया गया। यह अस्पताल कैदियों के लिए सुरक्षित था। और वहां डाक्टर ने उससे कहा :

"हमें संदेह है कि तुम शायद शाइजोफ्रेनिया से ग्रस्त हो।"

●

जेल प्रशासन के तीखे सींगों की चरम परिणति से पूर्व भूतपूर्व केन्द्रीय जेलों का पुनर्जन्म और पुनर्नामकरण हुआ। सन् १९३७ के आरम्भ तक इन्हें "विशेष रूप से अलग रखने वाले स्थान" कहा जाने लगा। अब जेल प्रणाली की अंतिम कमजोरियों को, प्रकाश और हवा के अंतिम अंशों को पूरी तरह से समाप्त किया जा रहा था। और १९३७ के आरम्भ में यारोस्लावल दण्ड स्थल में थके हारे समाजवादियों की भूखहड़ताल, उनका अंतिम और पूरी तरह निराशाग्रस्त प्रयास था। इतना ही नहीं अब समाजवादियों की संख्या भी बहुत कम हो गई थी।

ये लोग अभी भी यह मांग कर रहे थे कि जेलों में पहले जैसी व्यवस्था फिर कायम की जाए। वे लोग कैदियों के प्रवक्ताओं के चुनाव और कोठरियों के बीच स्वतंत्र रूप से आवागमन की मांग कर रहे थे। लेकिन इस बात की संभावना दिखाई नहीं पड़ती कि स्वयं इन लोगों को अब इस बात की कोई आशा शेष रह गई थी। १५ दिन की भूखहड़ताल के द्वारा इन लोगों को प्रकट रूप से अपनी पुरानी व्यवस्था के कुछ हिस्सों की रक्षा में सफलता मिल गई थी, यद्यपि इस भूखहड़ताल की समाप्ति नली से बलपूर्वक पेट में भोजन पहुंचाने के रूप में हुई थी। इन्हें कोठरी के बाहर खुले दालान में एक घंटा टहलने, प्रान्तीय समाचार पत्र प्राप्त करने और अपने लेखन के लिए कापियां प्राप्त करने की सुविधा मिल गई। इन लोगों के पास ये कापियां छोड़ दी गईं। लेकिन अधिकारियों ने इनका व्यक्तिगत सामान छीन लिया और एक विशेष जेल के सामान्य कैदियों के कपड़े उनके ऊपर फेंक दिये। कुछ दिनों बाद बाहर टहलने के समय को आधा घंटा दिया गया। और फिर इसे १५ मिनट और कम कर दिया गया।

ताश के बड़े सोलितेयर खेल के नियमों के अनुसार, इन्हीं लोगों को एक के बाद एक कैद की सजा और निष्कासन में निरन्तर घसीटा जा रहा था। इनमें से कुछ को पिछले १० वर्षों से, तो कुछ को पिछले १५ वर्षों से सामान्य और मानवीय जीवन बिताने का अवसर नहीं मिला था। बस उन्हें जेल में स्वयं को जीवित रखने भर के लिए दिये जाने वाले राशन पर समय काटना पड़ रहा था और बीच-बीच में भूखहड़तालों तक के लिए बाध्य होना पड़ता था। ऐसे कुछ लोग जीवित थे जो क्रान्ति से पहले जेल प्रशासनों पर विजय

प्राप्ति के आदी थे। पर क्रांति से पहले वे लोग समय के साथ कदम से कदम मिला कर निरन्तर कमजोर होते जा रहे शत्रु के विरुद्ध मार्च करते जा रहे थे। और अब समय उनके विपरीत था और इसका गठबन्धन एक ऐसे शत्रु से था, जो निरन्तर शक्तिशाली होता जा रहा था। इन लोगों में युवक भी थे (यह बात हमें आज कैसी विचित्र लगती है)—वे युवक जो स्वयं को समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी, समाजवादी लोकतंत्रवादी पार्टी अथवा अराजकतावादी पार्टी का (इन पार्टियों का अस्तित्व समाप्त हो जाने के बाद भी) स्वयं को सदस्य मानते आ रहे थे और इन नये रंगरूटों के सामने जेल जीवन के अलावा दूसरा कोई जीवन दिखाई नहीं पड़ता था।

जेलों में समाजवादियों के संघर्ष पर जो एकाकीपन छाया हुआ था और यह प्रत्येक वर्ष की समाप्ति पर और अधिक असहाय, और अधिक क्षीण और अन्ततः शून्य की सीमा को छूता जा रहा था। ज़ार के शासनकाल में यह स्थिति नहीं थी : जैसे ही जेल के दरवाजे खुलते जनता फूलों से उनका स्वागत करती। और अब समाचार पत्रों के पन्ने उलटते समय वे यह देखते कि उनके ऊपर भयंकर लांछन लगाये जा रहे हैं, गंदगी उछाली जा रही है। (आखिरकार स्तालिन, समाजवादियों को ही अपने समाजवाद का सबसे अधिक खतरनाक शत्रु समझता था।) और लोग मौन थे। और वे इस आधार पर यह कल्पना करने का साहस कर सकते थे कि जनता के मन में उन लोगों के प्रति कैसे सहृदयता शेष हो सकती है, जिन्हें कुछ समय पहले ही जनता ने संविधान सभा के लिए निर्वाचित किया था ? और अन्ततः समाचारपत्रों ने समाजवादियों के ऊपर अपमान की वर्षा बन्द कर दी, क्योंकि उस समय तक रूस के समाजवादी इतने महत्वहीन, और इतने प्रभावहीन ही दिखाई नहीं पड़ने लगे थे बल्कि यह भी लगने लगा था कि उनका अब प्रायः अस्तित्व ही समाप्त हो गया है। बाहर स्वतंत्र लोग इन समाजवादियों का स्मरण, एक अतीत की वस्तु, सुदूर अतीत की वस्तु के रूप में ही करते थे। और युवकों को इस बात का आभास मात्र नहीं था कि समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी और मेनशेविक पार्टी के कुछ सदस्य कहीं किसी अन्य स्थान पर जीवित भी हैं। और चिनकेन्त और चेरदीन के निष्कासन, वेरखने-उरालस्क और व्लादिमिर की जेलों में वे लोग अपनी अन्धकारपूर्ण तन्हाई की कोठरियों में, लोहे की चद्दरों से बन्द खिड़कियों वाली कोठरियों में यह अनुभव करने और कांप उठने से कैसे बच सकते थे कि संभवतः उनके नेता गलती पर थे, कि संभवतः उनका काम करने का तरीका और कार्य गलती पर आधारित थे ? और उनकी समस्त कारवाइयां निष्क्रियता से अधिक अन्य कुछ दिखाई नहीं पड़ रही थीं और उनका जीवन अब केवल कष्टों तथा घातक भ्रांति को समर्पित हो गया था।

इन लोगों का जेलों में एकाकी संघर्ष, बुनियादी तौर पर हम सब लोगों के लिए हुआ था, भविष्य के सब कैदियों के लिए हुआ था (चाहे वे स्वयं यह बात नहीं सोच रहे थे, चाहे यह बात उनकी समझ के बाहर थी), यह संघर्ष इस बारे में था कि हम लोग भविष्य में जेलों में किस प्रकार जीवन यापन करेंगे और हमें किन परिस्थितियों में वहां रखा जाएगा। और यदि वे अपने संघर्ष में विजयी होते, तो संभवतः हमारे साथ जो कुछ हुआ वह न होता, इस पुस्तक में जिन घटनाओं का विवरण दिया गया है, इसके समस्त सात भागों में जिन घटनाओं के बारे में बताया है, वे न घटती।

लेकिन वे लोग पराजित हुए, वे लोग स्वयं अपने आपको अथवा हमें बचाने में असफल रहे।

आंशिक रूप से इन लोगों के ऊपर इस कारण से भी एकाकीपन का आवरण छा गया था, क्योंकि क्रांति के बाद के पहले वर्षों में इन लोगों ने जी० पी० यू० द्वारा स्वयं को राजनीतिक कैदी के रूप में स्वीकार कर लिए जाने के बाद, जो उचित भी था, ये लोग जी० पी० यू० से स्वभावतः इस बात पर भी सहमत हो गए थे कि कैडेट पार्टी से शुरू करके अन्य सब ऐसी पार्टियां जो "उनके दाहिनी ओर आती हैं, दक्षिणपंथी हैं"[१४], उनके सदस्यों को राजनीतिक कैदी नहीं बल्कि क्रांति विरोधी माना जाएगा, इतिहास की खाद माना जाएगा। और क्रांति विरोधियों के अन्तर्गत इन लोगों ने उन्हें भी शामिल किया, जो ईसा मसीह में अपनी आस्था के कारण कष्ट भोग रहे थे। और जिन लोगों को इस बात की जानकारी नहीं थी कि "दक्षिणपंथी" अथवा "वामपंथी" का क्या अर्थ होता है, उन सबको क्रान्ति विरोधी मान लिया गया। और इस प्रकार आंशिक रूप से स्वेच्छा से, आंशिक रूप से इच्छा के विपरीत, स्वयं को अन्य लोगों से अलग रख कर, अन्य लोगों को ठुकरा कर इन लोगों ने भावी "५८" [अनुच्छेद-५८] को अपना आशीर्वाद दे दिया, जिसके कोल्हू में वे स्वयं पिलने जा रहे थे।

प्रेक्षक की स्थिति के अनुसार वस्तुएं और कार्य बड़े निर्णायक ढंग से अपने पहलू में परिवर्तन कर लेते हैं। इस अध्याय में अब तक हम समाजवादियों के जेल में अपनाये गए दृष्टिकोण का विवरण उनके अपने तरीके से दे रहे थे और जैसाकि आप देखते हैं कि यह विवरण एकदम दुर्भाग्यपूर्ण बातों से भरा पड़ा है। लेकिन वे तथाकथित क्रान्ति विरोधी जिनके साथ राजनीतिक कैदियों ने सोलोव्की द्वीपों पर अत्यन्त घृणापूर्ण व्यवहार किया, अपने तरीके से राजनीतिक कैदियों का स्मरण करते हैं। "राजनीतिक कैदी? यह भी एक कैसी भद्दी और बुरी भीड़ थी: वे हर प्रत्येक कैदी को बहुत तुच्छ समझते थे; वे केवल अपनी ही टोलियों से चिपके रहते थे। वे हर समय अपने विशेष राशन और अपनी विशेष सुविधाओं की मांग करते रहते थे और वे आपस में भी लगातार झगड़ते रहते थे।" और इस कथन में सच्चाई मौजूद है। इस बात पर हम लोग विश्वास क्यों न करें? वहां ऐसे निरर्थक और अनन्त तर्क जारी रहते थे, जो अत्यन्त हास्यस्पद दिखाई पड़ने लगे हैं। और वे लोग देश के भूखे और गरीब जनसमुदायों की तुलना में अपने लिये अतिरिक्त राशन की भी जो मांग करते थे उसके बारे में आप क्या कहेंगे? सोवियत युग में, राजनीतिक कैदी होने की सम्मानित स्थिति विषाक्त वरदान में बदल गई। और इसके बाद तुरन्त एक दूसरा उलाहना भी इसके साथ जुड़ गया: क्या कारण था कि जो समाजवादी ज़ार-शाही के जमाने में इतनी आसानी से जेलों से भाग निकलते थे सोवियत जेलों में इतने प्रभावहीन क्यों हो गए थे? वे लोग भागे क्यों नहीं, उनकी भागने की क्षमता को क्या हो गया? वैसे कुछ लोग जेलों से भाग निकले थे, लेकिन इन भागने वालों में कोई समाजवादी भी था, इस बात का स्मरण कौन रख सकता है कि इन भागने वालों में कोई समाजवादी भी था।

और इसी प्रकार वे कैदी जो "विचारधारा की दृष्टि से" समाजवादियों के बाईं ओर आते थे अर्थात् उनसे अधिक वामपंथी थे—जैसे ट्राटस्कीवादी और कम्युनिस्ट—समाज-वादियों को अपने पास नहीं फटकने देते थे और उन्हें शेष क्रान्ति विरोधी कैदियों जैसा ही मानते थे और इस प्रकार समाजवादियों का अलगाव जेलों में पूर्ण हो जाता था। वे स्वयं अपने दायरे के भीतर बन्द रह जाते थे।

ट्राटस्कीवादी और कम्युनिस्ट, अपने-अपने विचारों और काम के तरीकों को अधिक शुद्ध और गरिमापूर्ण मानते थे तथा समाजवादियों से नफरत तक करते थे (तथा एक दूसरे से भी) यद्यपि समाजवादी इन लोगों के साथ एक ही जेल में कैद थे और जेल के समान अहातों में बाहर टहलने के लिए निकलते थे। एकातारीना पोलीतस्काया को स्मरण है कि सन् १९३७ में, वानिनो खाड़ी की संक्रमण जेल में, जब समाजवादी लोग पुरुषों और स्त्रियों के अलग अलग वार्डों से एक दूसरे को पुकारते थे, अपने साथी समाजवादियों की तलाश करते थे और उन्हें समाचार देते थे, कम्युनिस्ट लिजाकोतिक और मारिया क्रुतिकोवा उनके इस आचरण से अत्यन्त क्रोधित हो उठती थी, क्योंकि उन्हें इस बात का भय रहता था कि कहीं समाजवादियों के इस गैर-जिम्मेदाराना आचरण के कारण सजा न मिले। वे कहतीं : "हमारे समस्त दुर्भाग्य का कारण ये समाजवादी चूहे हैं ! [यह बहुत गहन स्पष्टीकरण है और इसी प्रकार द्वन्द्वात्मक भी !] इन लोगों का तो गला घोंट डालना चाहिए।" और मैंने पहले लूबयांका में सन् १९२५ में जिन दो लड़कियों का उल्लेख किया है, वे वसन्त ऋतु और फूलों के बारे में गीत गाती थीं, क्योंकि इनमें से एक समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की सदस्या थी और दूसरी विरोधी कम्युनिस्ट गुट की सदस्या और ऐसा कोई राजनीतिक गीत नहीं था, जिस पर इनकी सहमति होती और जिसे ये एक साथ मिल कर गा पातीं। और वास्तविकता तो यह थी कि कम्युनिस्ट-अतिरेकवादी लड़की को किसी भी रूप में समाजवादी क्रांतिकारी लड़की के साथ मिल कर जेल में विरोध प्रकट नहीं करना चाहिए था।

यद्यपि जारशाही की जेलों में विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के कैदी एक साथ मिल कर संघर्ष करते थे (इस सम्बन्ध में हम सेवास्तोपोल केन्द्रीय जेल से कैदियों के भाग निकलने का स्मरण कर सकते हैं), सोवियत जेलों में प्रत्येक राजनीतिक टोली इस प्रयास में लगी रहती थी कि वह दूसरी राजनीतिक टोलियों से दूर रहे और इस प्रकार अपनी सैद्धांतिक पवित्रता कायम रखे। ट्राटस्कीवादी बिल्कुल अलग-थलग अकेले ही संघर्ष करते थे। वे समाजवादियों और कम्युनिस्टों के साथ मिल कर कोई काम नहीं करते थे; कम्युनिस्ट किसी भी प्रकार का संघर्ष नहीं करते थे क्योंकि कोई भी व्यक्ति स्वयं अपनी सरकार और स्वयं अपनी जेल के विरुद्ध कैसे संघर्ष कर सकता है ?

इसके परिणामस्वरूप सामान्य जेलों और लम्बी अवधि की सजा प्राप्त कैदियों की जेलों में सबसे पहले कम्युनिस्टों पर ही प्रतिबन्ध लगाये गये और ये प्रतिबन्ध बड़े कठोर थे। सन् १९२८ में, यारोस्लावल केन्द्रीय जेल में कम्युनिस्ट नादेझदा सरोवतसेवा कैदियों की एक कतार में शुद्ध हवा में बाहर टहलने के लिए निकली। कैदियों को आपस में बातचीत करने का निषेध था, यद्यपि समाजवादी आपस में बातचीत करने में लगे हुए थे। अहाते में लगे फूलों की देखभाल करने की अनुमति भी नादेझदा को नहीं मिली, क्योंकि ये ऐसे फूल थे जिन्हें पहले के कैदियों ने लगाया था और इन कैदियों ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया था। जेल अधिकारियों ने उसे अखबार देने भी बन्द कर दिये थे। (पर जी० पी० यू० के गुप्त राजनीतिक विभाग ने उसे अपनी जेल की कोठरी में मार्क्स और ऐंजिल, लेनिन और हीगल का सम्पूर्ण वांगमय रखने की अनुमति दे दी थी।) प्रायः पूरे अंधेरे में उसकी मुलाकात उसकी मां से कराई गई और इस मुलाकात के कुछ ही दिनों बाद उसकी निराश माता की मृत्यु हो गई। (उसने जेल में पड़ी अपनी पुत्री की परिस्थितियों के

बारे में न जाने क्या-क्या सोचा होगा ?)

समाजवादी कैदियों और कम्युनिस्ट कैदियों के साथ अलग-अलग तरीके से व्यवहार कई वर्ष तक चलता रहा। यह व्यवहार केवल उक्त बातों तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि बहुत अधिक व्यापक बन गया। सन् १९३७–१९३८ में समाजवादियों को अन्य कैदियों की तरह ही जेल में रखा जाता था और उन्हें भी अन्य की तरह १० साल की कैद की सजा दी जाती थी। लेकिन, नियमतः, उन्हें अपने विचारों को त्यागने, अपने विचारों की निन्दा करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता था। क्योंकि इन लोगों ने कभी भी अपने विशेष, व्यक्तिगत विचारों को छिपाया नहीं था—और ये विचार इन्हें सजा दिलवाने के लिए पर्याप्त थे। लेकिन एक कम्युनिस्ट के कोई विशेष, व्यक्तिगत विचार नहीं थे तो उसे आत्म-भर्त्सना के लिए बाध्य किए बिना कैसे सजा सुनाई जा सकती थी ?



यद्यपि विशाल द्वीपसमूह अब तक पूरे सोवियत संघ में व्याप्त हो चुका था, लेकिन लम्बी अवधि के कैदियों की जेलें जर्जर नहीं हुई थीं। पुरानी जेल परम्परा को बड़े उत्साह से कायम रखा जा रहा था। द्वीपसमूह ने जन-समुदाय को विशेष विचारधारा का पाठ पढ़ाने में जो नए और बहुमूल्य योगदान किए थे, वे अभी तक पर्याप्त नहीं थे। इस कमी को विशेष उद्देश्य जेलों—टी ओ एन—के द्वारा पूरा किया जाता था और लम्बी अवधि के कैदियों की जेलों में भी इस कार्य में अपना अंशदान करती थीं।

व्यापक दमनचक्र का शिकार बने प्रत्येक व्यक्ति को द्वीपसमूह के मूल निवासियों [द्वीपसमूह के कैदियों] के बीच नहीं रखा जा सकता था। विख्यात विदेशियों, ऐसे व्यक्तियों को जो आवश्यकता से अधिक प्रसिद्ध थे, अथवा जिन्हें गुप्त रूप से कैद रखा जा रहा था, अपदस्थ गेबिस्ती शिविरों में खुले रूप में नहीं रखे जा सकते थे। उनसे सामान ढुलवा कर जो लाभ प्राप्त होता, वह इन कैदियों के शिविरों में मौजूद होने के भण्डाफोड़ से होने वाली नैतिक और राजनीतिक क्षति[१५] से बहुत कम होता। इसी प्रकार उन समाज-वादियों को भी कैदियों के विशाल समुदायों में घुलने मिलने नहीं दिया जा सकता था, जो समाजवादी अपने विशेष अधिकारों के, जेल में कैदियों के अधिकारों के संघर्ष में लगे हुए थे। इन्हें बिल्कुल अलग-थलग रखना और, वास्तव में, अलग-थलग घोट कर मार डालना जरूरी था— यह कार्य भी उनके विशेष अधिकारों और सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए जरूरी था। लेकिन इसके बहुत बाद, १९५० के बाद के वर्षों में, जैसाकि हम इस पुस्तक में आगे चल कर देखेंगे, शिविरों के विद्रोही कैदियों को अलग-थलग रखने के लिए भी विशेष उद्देश्य जेलों की आवश्यकता थी। और अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में चोरों का "सुधार" करने की संभावना से निराश हो जाने के बाद, स्तालिन ने यह आदेश दिये कि चोरों के सरगनों को जेलों में रखा जाना चाहिये, उन्हें शिविरों में भेजना सही नहीं होगा। और इतना ही नहीं, राज्य के लिए यह भी आवश्यक था कि उन कैदियों को जेलों में निःशुल्क खाना आदि दे, जो इतने कमजोर हो गए थे कि शिविरों में काम नहीं कर सकते थे और उनकी तुरन्त मृत्यु हो सकती थी और इस प्रकार वे अपनी पूरी सजा काटने की जिम्मेदारी से बच सकते थे। और ऐसे लोगों को भी जेलों में रखा गया, जिनका उपयोग शिविरों के

कार्य में नहीं किया जा सकता था—जैसे अन्धा कोपीकिन। यह ७० वर्षीय वृद्ध वोल्गा पर स्थित यूरएवेत्स के बाजार में दिन भर बैठा रहता था। उसके गीतों और प्रखर टिप्पणियों ने उसे के० आर० डी०—क्रान्ति विरोधी गतिविधि—के अन्तर्गत १० वर्ष की सजा दिला दी थी। लेकिन उसे शिविर में नहीं भेजा जा सकता था : अतः उसे जेल में ही रखना पड़ा।

रोमानोव राजवंश से जो पुरानी जेलें विरासत में प्राप्त हुई थीं, उनकी अच्छी तरह देखभाल करना, उनमें सुधार करना, उन्हें और मजबूत तथा पूर्ण बनाना आवश्यक था। यारोस्लावल जैसी कुछ केन्द्रीय जेलें इतनी अच्छी तरह बनी हुई थीं (दरवाजों पर लोहे की चद्दरें लगी थीं; मेज, स्टूल और चारपाई को प्रत्येक कोठरी में स्थायी रूप से जमीन में गाड़ दिया गया था) फिर भी इन्हें पूरी तरह से आधुनिक आवश्यकता के अनुसार बनाने के लिए खिड़कियों पर लोहे की चद्दरें ठोकना और अहातों में बाड़ लगाना जरूरी था। इन अहातों में कैदियों को टहलने के लिए निकाला जाता था अतः यह जरूरी था कि इन अहातों में बाड़ लगा कर इनके आकार को भी जेल की कोठरी जितना ही बना दिया जाये (सन् १९३७ तक जेल के भीतर लगे सब पेड़ों को काट डाला गया था, सब्जी के बगीचों को हल चला कर हमवार कर दिया गया था और घास के हिस्सों को कोलतार से पाट दिया गया था) पर सुजदाल जैसी अन्य जेलों को नए साज-सामान की आवश्यकता थी और इस ईसाई मठ की व्यवस्था में बहुत सुधार करने की जरूरत थी। पर किसी मठ में स्वेच्छा से अपने आपको बन्द रखने और राज्य द्वारा जेल के भीतर कैदी को कैद रखने की भौतिक आवश्यकताएं प्रायः समान थीं। अतः इन इमारतों में मामूली सा परिवर्तन करके इन्हें आधुनिक जेलों का रूप दिया जा सकता था। सुखानोव का ईसाई मठ की एक इमारत को आवश्यक सुधार के बाद लम्बी अवधि के कैदियों की जेल में बदल दिया गया। हां, यह जरूरी था कि ज़ारशाही के जमाने से प्राप्त जेलों की कमी को पूरा किया जाये : आखिरकार लेनिनग्राद के पीटर और पाल किले और लेनिनग्राद के पास स्थित शलूसेलबर्ग की जेल को पर्यटकों के लिए संग्रहालयों में बदल दिया गया था। अतः व्लादिमिर केन्द्रीय जेल का विस्तार किया गया और यहां येझोव के कार्यकाल में एक नई बड़ी इमारत बनाई गई। इस इमारत का जबर्दस्त उपयोग हुआ और उन दशकों में यहां न जाने कितने लोग कैद रहे। हम पहले ही यह बता चुके हैं कि किस प्रकार तोबोलस्क केन्द्रीय जेल का उद्घाटन हुआ था और सन् १९२५ में वेरखने-उरालस्क की जेल को निरन्तर और भरपूर उपयोग के लिए खोल दिया गया था। (यह हमारा दुर्भाग्य है कि ये पंक्तियां लिखते समय भी इन सब जेलों का उपयोग हो रहा है और ये पूरी तरह से कार्ययोग्य हैं।) त्वारदोवस्की की कविता "दूरी के पार दूरी" से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्तालिन के जमाने में अलैक्सांद्रोवस्क केन्द्रीय जेल भी खाली नहीं थी। हमें ओरेल की जेल के बारे में कम जानकारी है : इस बात की आशंका है कि दूसरे महायुद्ध के दौरान इस जेल को गम्भीर क्षति पहुंची थी। लेकिन इसके पास ही दमित्रोवस्क-ओरलोवस्की में लम्बी अवधि के कैदियों के लिए एक सुसज्जित जेल मौजूद थी।

१९२० के बाद के वर्षों में राजनीतिक कैदियों की जेलों में (जिन्हें अभी तक कैदी लोग "राजनीतिक हिरासत जेल" कहा करते थे) कैदियों को अच्छा खाना मिलता था : दोपहर के भोजन में हमेशा कुछ गोश्त दिया जाता था, ताजी सब्जियां मिलती थीं और जेल

की दुकान से कैदी दूध खरीद सकते थे। सन् १९३१-१९३३ में भोजन बहुत तेजी से बुरा होने लगा। लेकिन उन दिनों बाहर स्वतन्त्र लोगों का हाल भी बेहतर नहीं था। इन वर्षों में राजनीतिक कैदियों की जेलों में भोजन की कमी के कारण स्कर्वी रोग होना और चक्कर आना बहुत मामूली सी बात थी। आगे चलकर भोजन की स्थिति में कुछ सुधार हुआ, लेकिन यह पहले जैसा कभी न हो सका। सन् १९४७ में व्लादिमिर की विशेष उद्देश्य जेल में आई कोर्नेएव निरन्तर भूखा रहता था : एक पौंड रोटी, चीनी के दो टुकड़े, बहुत कम मात्रा में खाने की दो अन्य गरम चीजें मिला करतीं थीं। केवल उबला हुआ पानी ही असीमित मात्रा में उपलब्ध था। (एक बार यह फिर कहना होगा कि इसे एक विशेष वर्ष नहीं कहा जा सकता और बाहर स्वतन्त्र लोगों को भी भूख का सामना करना पड़ रहा था। यह वह समय था जब अधिकारियों ने कैदियों के लिए भेजे जाने वाले भोजन पर से प्रायः हर पाबन्दी हटा ली थी। कैदी के रिश्तेदार खाने की जितनी चीजें चाहें भेज सकते थे।) यह कहा जा सकता है कि जेल की कोठरियों में चौथे और पांचवें दोनों दशकों में रोशनी का "राशन" कर दिया गया था : खिड़कियों पर लगी लोहे की चद्दरों और धुंधले मजबूत कांच के कारण कोठरियों में स्थाई रूप से धुंधलका बना रहता था। (अंधेरे के परिणामस्वरूप कैदियों का उत्साह और साहस टूट जाता था।) अक्सर खिड़कियों पर लगी लोहे की चद्दरों के ऊपरी हिस्से में लोहे की जाली लगा दी जाती थी और सर्दियों में इस जाली के ऊपर बर्फ जम जाता था और खिड़की के इस हिस्से से जो थोड़ा बहुत प्रकाश आता था वह भी बन्द हो जाता था। अब कोई कैदी पुस्तक पढ़ने का प्रयास करके केवल अपनी आंखें ही बर्बाद कर सकता था। व्लादिमिर की विशेष उद्देश्य जेल में, रात के समय दिन में प्रकाश की कमी को पूरा किया जाता था, रात भर बिजली के तेज बल्ब जलते रहते थे और इस प्रकार कैदियों के सोने में बाधा पड़ती थी। और सन् १९३८ में दमित्रोवस्क जेल में (एन० ए० कोजीरेव) शाम और रात के समय प्रकाश रहता था —छत के पास एक छोटे से तख्ते के ऊपर मिट्टी के तेल का लैम्प रख दिया जाता था और इसके परिणामस्वरूप कोठरी में प्रायः स्वच्छ हवा नाम मात्र को भी नहीं रह जाती थी; सन् १९३९ में आधा वोल्टेज होने के कारण बिजली के बल्ब लाल प्रकाश देते थे। हवा का भी "राशन" था। रोशनदान की खिड़कियों को बन्द रखा जाता था और जब कैदी लोग शौचालय जाते थे, तभी इन्हें खोला जाता था। दमित्रोवस्क और यारोस्लावल जेलों के कैदियों को हवा के राशन की यह बात याद है। (वाई० जिन्झबर्ग : सुबह और दोपहर के भोजन के समय के बीच रोटी पर फफूंद जम जाती थी; बिस्तर की चादरें गीली और दीवारें हरी रहती थीं।) सन् १९४८ में व्लादिमिर में हवा की कोई कमी नहीं थी क्योंकि रोशनदान स्थाई रूप से खुला रहता था। विभिन्न जेलों में विभिन्न समयों पर १५ से ४५ मिनट तक कोठरियों के बाहर कैदियों को टहलने के लिए निकाला जाता था। शलूसेलबर्ग अथवा सोलोवकी में कैदी का सम्पर्क प्रकृति से, धरती की मिट्टी अथवा किसी भी प्रकार की वनस्पति से नहीं हो सकता था, क्योंकि उगने वाली प्रत्येक वस्तु को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया गया था, कुचल डाला गया था और उसके ऊपर कंक्रीट और कोलतार की परत बिछा दी गई थी। बाहर टहलते समय कैदी अपना सिर ऊपर उठा कर आकाश को भी नहीं देख सकता था : "अपने पांवों की ओर देखो!" कोजीरेव और अदामोवा दोनों को कज़ान जेल में प्राप्त होने वाला यह हुक्म याद है। सन् १९३७ में रिश्तेदारों से मुलाकात बन्द कर दी गई और फिर कभी इसकी इजाजत नहीं

मिली। महीने में दो बार बहुत नज़दीकी रिश्तेदारों को पत्र भेजे जा सकते थे और रिश्तेदारों के पत्र भी अधिकांश वर्षों में प्राप्त होते रहे। (लेकिन कज़ान जेल में इन पत्रों को पढ़ लेने के बाद अगले दिन जेल अधिकारियों को वापस देना पड़ता था।) कैदियों को अपने घर से निश्चित और निर्धारित मात्रा में जो पैसा प्राप्त होता था, उससे जेल की दुकान से चीजें खरीदी जा सकती थीं। जेल व्यवस्था में फरनीचर का भी कम महत्व नहीं था। अदामोवा ने अत्यन्त उल्लास से भर कर यह लिखा है कि सुजदाल जेल की अपनी कोठरी में उसे एक लकड़ी की चारपाई और भूसे का गद्दा तथा लकड़ी की एक मामूली सी मेज प्राप्त हुई। जबकि इससे पहले केवल ऐसी चारपाइयां मिलती थीं, जिन्हें दिवारों में कस दिया जाता था और कुर्सियां फर्श में गड़ी होती थीं। व्लादिमिर की विशेष उद्देश्य जेल में आई० कोर्नेएव ने जेल में दो विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं को देखा : एक व्यवस्था के अन्तर्गत सन् १९४७-१९४८ में कोठरियों से कैदियों का व्यक्तिगत सामान नहीं हटाया जाता था। दिन के समय कैदी लेट सकता था और सन्तरी यदा-कदा ही दरवाजे में बने छेद से झांक कर देखते थे। लेकिन एक दूसरी व्यवस्था के अन्तर्गत, सन् १९४९-१९५३ में कोठरी में दो ताले डाले जाते थे (सन्तरी और जेल का ड्यूटी अफसर अलग अलग ताले लगाता था); कैदी को लेटने की मनाही थी सामान्य स्वर में बात चीत करने की मनाही थी (कज़ान में केवल फुसफुसाहट के स्वर में ही बातचीत की जा सकती थी); कैदियों का व्यक्तिगत सामान उनसे ले लिया गया था; धारीदार मोटे कपड़े की एक वर्दी दे दी गई थी; वर्ष में केवल दो बार पत्र लिखे जा सकते थे और केवल उन दिनों जिनकी घोषणा जेल का प्रधान अफसर बिना किसी पूर्व सूचना के करता था। (जो कैदी इन दिनों पत्र न लिख पाते, उन्हें पत्र लिखने का फिर मौका न मिलता था।) डाक के कागज के आधे आकार का कागज, पत्र लिखने के लिए दिया जाता; बड़ी उग्रता से कैदियों की तलाशी और किसी भी समय अफसरों के आ धमकने की कारवाई जारी रहती थी और इन तलाशियों में कैदी को अपने पास मौजूद प्रत्येक वस्तु छानबीन के लिए सौंपनी पड़ती थी और अपने सारे वस्त्र उतारने पड़ते थे। विभिन्न कोठरियों के बीच सम्पर्क करने की इस सीमा तक मनाही थी कि कैदियों की एक टोली के शौचालय से लौटने के बाद सन्तरी लोग लालटेन लेकर शौचालय के भीतर जाते और वहां गहराई से छानबीन करते। यदि शौचालय में कोई सूचना देने वाली वस्तु मिल जाती तो कोठरी के सब कैदियों को दण्डित किया जाता। विशेष उद्देश्य जेलों में सज़ा की कोठरियां बड़ी भयावह थीं और मामूली सी मामूली बात पर कैदियों को इन कोठरियों में डाल दिया जाता था। किसी कैदी को खांसने भर पर सज़ा की कोठरी में डाला जा सकता था। ("अपना सिर कम्बल से ढको और इसके बाद खांसो!") अथवा कोठरी में इधर-उधर चक्कर काटने पर भी यह सज़ा मिल सकती थी, क्योंकि जूतों की आवाज़ से शोर होता था (कोज़ीरेव: "इस बात को विद्रोह माना जाता था")। (कज़ान जेल में स्त्रियों को पुरुषों के जूते दिये गये थे, जो उनके लिए बेहद बड़े थे। स्त्रियों को साढ़े दस साइज़ के जूते दिये गए थे।) प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि जिन्झबर्ग का यह निष्कर्ष सही है कि कैदियों को किसी आपत्तिजनक आचरण के लिए जेल की कोठरी में नहीं डाला जाता था, बल्कि यह काम एक निश्चित कार्यक्रम के अनुसार होता था। प्रत्येक कैदी को सज़ा की कोठरी में इसलिए डाला जाता था, ताकि उसे यह पता चल जाये कि आखिर सज़ा की कोठरी कैसी होती है। और नियमों में यह बात भी शामिल थी : "किसी सज़ा की कोठरी में उद्दण्डता

दिखाने के परिणामस्वरूप [?] जेल का प्रधान अफसर कैदी को २० दिन तक सज़ा की कोठरी में बन्द रख सकता था।" आखिरकार उद्दण्डता का क्या अर्थ था? कोज़ीरेव के साथ यह घटना घटी। (सज़ा की कोठरियों के विवरण और जेलों की व्यवस्थाओं की विभिन्न बातें एक दूसरे से इतनी अधिक मेल खाती हैं कि यह स्पष्ट हो जाता है कि सब जेलों को समान प्रशासनिक आदेश दिये गये थे और इनके आधार पर समान व्यवस्थाएं की गई थीं।) कोज़ीरेव को सज़ा की कोठरी में इधर-उधर चक्कर लगाने के परिणामस्वरूप पांच दिन तक और सज़ा की कोठरी में रहने का दण्ड दिया गया। शरद ऋतु में उस इमारत को तपाया नहीं जाता था, जिसमें सज़ा की कोठरियां थीं और इसके परिणामस्वरूप यह इमारत बेहद ठण्डी हो गई थी। कैदियों को जांघियां छोड़कर अन्य सब कपड़े उतारने पड़ते थे और उनके जूते भी उतरवा दिये जाते थे। कोठरी का कच्चा धूल भरा फर्श होता था। (यह गीली मिट्टी हो सकती थी और कज़ान जेल में तो कोठरी में पानी भी भरा हो सकता था)। कोज़ीरेव की कोठरी में एक स्टूल था। (जिन्झबर्ग की कोठरी में स्टूल नहीं था) कोज़ीरेव ने तुरन्त यह निष्कर्ष निकाल लिया कि वह इस कोठरी में जीवित नहीं बचेगा और ठण्ड में सिकुड़कर उसकी मृत्यु हो जायेगी। लेकिन न जाने कैसे एक आन्तरिक गरमाहट धीरे-धीरे प्रकट होने लगी और इसी गरमाहट ने उसे जीवित रखा। उसने स्टूल पर बैठे-बैठे सोने की आदत डाली। दिन में तीन बार उसे एक गिलास गरम पानी दिया जाता और इसे पीकर उसके ऊपर नशा छा जाता। एक ड्यूटी अफसर ने, नियमों का उल्लंघन करते हुए, उसकी साढ़े दस औंस रोटी के राशन के बीच चीनी का एक टुकड़ा भी रख दिया। उसे जो राशन प्राप्त होता उसके आधार पर और किसी सुदूर छोटी सी खिड़की से चमकने वाले प्रकाश के आधार पर गणना करके कोज़ीरेव दिनों की गिनती करता था। उसके पांच दिन समाप्त हो गये थे। लेकिन उसे सज़ा की कोठरी से नहीं निकाला गया था। उसकी श्रवण शक्ति अत्यधिक तीव्र हो उठी थी और उसने बरामदे में इस आशय की फुसफुसाहट सुनी जिससे "छठे" अथवा "छह दिन" का आभास मिलता था। यह एक उत्तेजना की कारवाई थी: वे लोग उसके यह कहने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि उसकी सज़ा के पांच दिन समाप्त हो गए हैं और अब उसे बाहर निकाला जाना चाहिये। इसका अर्थ उद्दण्डता होता और इसके आधार पर उसे और अधिक समय तक सज़ा की कोठरी में रखा जा सकता था। लेकिन वह चुपचाप बड़ी आज्ञाकारिता से एक और दिन बैठा रहा और इसके बाद उन लोगों ने उसे बाहर निकाला, मानो सब कुछ पूर्व व्यवस्था के अनुसार ही हुआ था। (संभवतः जेल का प्रमुख अफसर कैदियों की विनम्रता का पता लगाने के लिए बारी-बारी से यह तरीका अपनाता था? और वह उन लोगों को और अधिक समय तक सज़ा की कोठरी में रखने का दंड दे सकता था जो पर्याप्त विनम्र नहीं बन पाये थे।) सज़ा की कोठरी के बाद जेल की सामान्य कोठरी महल जैसी दिखाई पड़ती थी। कोज़ीरेव छः महीने तक कुछ न सुन सका और उसके गले में घाव हो गए। उसकी कोठरी का एक दूसरा साथी कैदी बार-बार सज़ा की कोठरी में बन्द किए जाने के परिणामस्वरूप पागल हो गया था और कोज़ीरेव को एक वर्ष से अधिक समय तक इस पागल कैदी के साथ रखा गया और इस कोठरी में ये केवल दो ही कैदी थे। (नादेझदा सरोवत्सेवा को राजनीतिक कैदियों की जेलों में कैदियों के पागल हो जाने के अनेक मामलों का स्मरण है। नोवोरुस्की ने शलूसेलबर्ग के पूरे वृत्तान्त में कैदियों के पागल होने के जिन मामलों का उल्लेख किया है, नादेझदा को अकेले ही उतने मामलों का

स्मरण है।)

क्या यहां आकर, पाठक को यह नहीं लगता कि हम लोग धीरे-धीरे, एक-एक कदम करके, दूसरे सींग के चरम बिन्दु पर, चोटी पर पहुंच गए हैं—और संभवतः यह सींग पहले सींग से सचमुच अधिक बड़ा है? और शायद अधिक तीखा भी?

लेकिन इस बारे में मत विभाजित है। शिविरों के पुराने कैदी एक स्वर से १९५० के बाद के वर्षों की व्लादिमिर की विशेष उद्देश्य जेल को एक सैरगाह ही मानते हैं। आवेज स्टेशन से यहां भेजे गए व्लादिमिर वोरिसोविच जेलदोविच और केमेरोवो शिविरों से यहां १९५६ में भेजी गई अन्ना पेत्रोवना स्क्रिपनिकोवा का यही विचार है। स्क्रिपनिकोवा को इस जेल में हर दसवें दिन याचिकाएं और घोषणाएं नियमित रूप से आगे भेजे जाने की व्यवस्था पर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। (आप इस बात पर विश्वास करें अथवा नहीं पर उसने संयुक्त राष्ट्र तक को याचिकाएं भेजनी शुरू कर दीं) इसके अलावा स्क्रिपनिकोवा को इस जेल के बहुत अच्छे पुस्तकालय पर भी बड़ा आश्चर्य था, जिसमें विदेशी भाषाओं की पुस्तकें भी थीं: वे लोग पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की पूरी सूची जेल की कोठरी में लाते और कैदी पूरे वर्ष के लिए पुस्तकों का चुनाव कर सकता था।

यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि हमारा कानून कितना लचकीला है: हजारों स्त्रियों को ("पत्नियों को") जेल में सजा काटने का दण्ड दिया गया था। और एक दिन किसी ने सीटी बजाई और इन सब स्त्रियों को शिविरों में भेज दिया गया। (कोलिमा में खानों से सोना निकालने का लक्ष्य पूरा नहीं हुआ था।) अतः उन लोगों ने स्त्रियों को बिना किसी मुकदमे के अथवा बिना किसी अदालत के आदेश के शिविरों में पहुंचा दिया।

वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या सचमुच जेलों में सजा काटने की व्यवस्था है अथवा जेलें कैदियों को आगे शिविरों में भेजने का माध्यम भर हैं?



और केवल यहीं आकर हमारे इस अध्याय का आरम्भ होना चाहिए था। इस अध्याय में इस बात पर विचार होना चाहिए था, उस तेज प्रकाश पर विचार होना चाहिए था, जो कालांतर में, एकाकी कैदी की आत्मा से निकलना शुरू होता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार किसी सन्त के मुख के चारों ओर एक आभामण्डल रहता है। प्रतिदिन के जीवन के भीड़-भड़ाके से इतनी पूर्णता से कैदी अलग हो जाता है कि गुजरने वाले एक-एक मिनट की गणना उसे ब्रह्माण्ड के घनिष्ठ सम्पर्क में पहुंचा देती है। एकाकी कैदी प्रत्येक अपूर्णता से छुटकारा पा चुका होता है, उसकी ऐसी प्रत्येक वस्तु से मुक्ति हो चुकी होती है, जो उसे उसके भूतपूर्व जीवन में आंदोलित करती थी, परेशान करती थी और जो उसके विचारों के गदले पानी को स्थिर और पारदर्शी बनने के मार्ग में बाधक बनती थी। कितने आभार से भर कर उसकी अंगुलियां सब्जी के बगीचे की मिट्टी का स्पर्श करने और मिट्टी के छोटे-छोटे ढेलों को कुचल कर हमवार बनाने के लिये आतुर रहती (लेकिन दुर्भाग्यवश, चारों ओर बस तारकोल का फर्श ही होता)। उसका सिर स्वतः अनाजाने ही शाश्वत आकाश की ओर उठना चाहता है (लेकिन, दुर्भाग्यवश, इसकी पाबन्दी है।) और खिड़की की सिल पर बैठी हुई छोटी सी चिड़िया कितनी मार्मिकता से उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करती है

(लेकिन, दुर्भाग्यवश, खिड़की के अधिकांश हिस्से पर लोहे की चादर ठुकी है और शेष हिस्से में लोहे की जाली। और रोशनदान भी बंद है।) और कितने स्पष्ट विचार, यदा कदा कैसे आश्चर्यजनक निष्कर्ष वह अधिकारियों द्वारा दिये गए कागज पर लिखता है (लेकिन, दुर्भाग्यवश, कागज केवल जेल की दुकान से ही खरीदा जा सकता था और वह भी उसी स्थिति में आपको प्राप्त हो सकता था, यदि आप इसका इस्तेमाल करने के बाद इसे जेल के कार्यालय को सौंप दें—सदा सर्वदा के लिए सुरक्षित रखने के लिए...)।

लेकिन हमारे हठधर्मिता पर आधारित गुण और योग्यताएं हमारे विचार-क्रम में बाधा डालते हैं। हमारे अध्याय की योजना चरमराने लगती है और इसमें दरार उत्पन्न हो जाती हैं। और हमारे पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं होता : क्या नए किस्म की जेल में, विशेष उद्देश्य जेल में एक व्यक्ति की आत्मा पवित्र हो उठती है अथवा यह सदा सर्वदा के लिए मर जाती है?

यदि हर रोज़ सुबह आप सबसे पहली वस्तु अपनी कोठरी के साथी की पागलपन से भरी आंखें ही देखते है, तो आप स्वयं को कैसे पागलपन से बचा सकते हैं? निकोलाई अलेक्सांद्रोविच कोज़ीरेव ने स्वयं को पागल होने से बचाने के लिए केवल शाश्वत और अनन्त वस्तुओं पर ही अपने विचार केन्द्रित रखे! वे ब्रह्माण्ड की व्यवस्था के बारे में विचार करते और सर्वोच्च आत्मा के बारे में भी; वे तारों के बारे में सोचते और इनकी आंतरिक परिस्थितियों पर विचार करते तथा यह निष्कर्ष निकालने की कोशिश करते कि आखिरकार समय और समय का गुजरना क्या है? अपनी गिरफ्तारी से पहले कोजीरेव ज्योतिर्विज्ञान के अध्ययेता थे और उनकी गिरफ्तारी ने उनके शानदार कार्य में बाधा डाल दी थी।

और इस प्रकार उन्होंने भौतिक विज्ञान में एक नए क्षेत्र का अनुसंधान शुरू किया। और केवल इसी प्रकार वे दमित्रोवस्क जेल में स्वयं को जीवित रख सके। लेकिन उनके मानसिक अनुसंधान के क्रम में विस्मृत आंकड़े बाधक बनते थे। वे बहुत आगे नहीं बढ़ पाते थे, इसके लिए ज़रूरी था कि उन्हें बहुत से आंकड़े उपलब्ध हों। अब आप ही बताइए कि उन्हें तन्हाई की कोठरी में, जहां रात भर मिट्टी के तेल की लालटेन जलती रहती थी, एक ऐसी कोठरी में, जहां एक छोटी सी चिड़िया भी प्रवेश नहीं कर सकती थी, यही आंकड़े कैसे प्राप्त हो सकते थे? और वैज्ञानिक ने प्रार्थना की : "कृपावान ईश्वर! मैं जो भी कर सकता था मैंने किया है। कृपया मेरी सहायता करो! कृपया मुझे यह काम आगे बढ़ाने में सहायता दो!"

इन दिनों उन्हें हर दसवें दिन एक पुस्तक प्राप्त करने का अधिकार था। (लेकिन उस समय वे कोठरी में अकेले थे)। जेल के छोटे से पुस्तकालय में देमयान बदनी की पुस्तक रैड कंसर्ट के अनेक विभिन्न संस्करण थे और बारम्बार यही पुस्तक कैदियों के पास पहुंचती रहती थी। कोज़ीरेव की प्रार्थना को आधा घंटा ही बीता होगा कि वे उसकी पुस्तक बदलने आए और सदा की तरह, बिना कुछ पूछे ही, उन्होंने एक पुस्तक उनकी ओर बढ़ा दी। इस पुस्तक का शीर्षक था "ज्योतिर्विज्ञान की पाठ्य पुस्तक!" यह पुस्तक कहां से आई? वे जेल के पुस्तकालय में इस पुस्तक की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। इस बात की जानकारी होने के कारण कि बहुत थोड़े दिन ही यह पुस्तक उनके पास रहेगी कोज़ीरेव इस पुस्तक के अध्ययन में जुट गए और उन्होंने उन अंशों को कंठस्थ करना शुरू कर दिया, जिनकी उन्हें तत्काल आवश्यकता थी। और वे विवरण भी अपनी स्मृति में संजो लिये जिनकी आवश्यकता उन्हें आगे चल कर पड़ सकती थी। कुल मिला कर, केवल दो दिन ही बीते थे, और वे आठ और

दिन इस पुस्तक को अपने पास रख सकते थे कि जेल का प्रमुख अफसर अचानक निरीक्षण के लिए आ पहुंचा। उसकी गिद्ध दृष्टि तुरन्त इस पुस्तक पर पड़ी। "तो तुम ज्योतिर्विज्ञानी हो ?" "हां।" "यह पुस्तक इससे एकदम ले लो !" लेकिन इस पुस्तक के रहस्यपूर्ण आगमन ने कोज़ीरेव के काम को आगे बढ़ने में सहायता दी थी और उन्होंने इसके बाद नोरीलस्क शिविर में इस अध्ययन को जारी रखा।

तो अब हमें आत्मा और जेल के सींखचों के बीच संघर्ष का अध्याय शुरू करना चाहिये।

लेकिन यह क्या ? सन्तरी की चाबी बड़ी ज़ोर से कोठरी के ताले में घूम रही है। हमारे खण्ड का उत्साहहीन सुपरिन्टेन्डेन्ट एक लम्बी फहरिस्त लिए मौजूद है। "नाम का अन्तिम हिस्सा, पहला हिस्सा, पारिवारिक नाम ? जन्म की तारीख ? दण्डसंहिता का अनुच्छेद ? सज़ा की अवधि ? सज़ा की अवधि की समाप्ति की तारीख ? अपना सामान उठाओ। जल्दी करो !"

तो भाइयो, कैदियों की गाड़ी में सवार होने के लिए तैयार हो जाओ ! कैदियों की गाड़ी ! हम लोग कहीं जा रहे हैं ! हे, ईश्वर, हमारे ऊपर कृपा कर ! क्या हम स्वयं अपनी हड्डियां बटोर पायेंगे ?

बस हम यही कह सकते हैं : यदि हम जीवित रहे तो किसी अन्य समय इस कहानी को पूरा करेंगे। भाग-४ में। यदि हम जीवित रहे...

भाग—२

सतत गतिशीलता



और तभी हम इसे उन पहियों में देखते हैं,
उन पहियों में !
जो कभी रुकना नहीं चाहते,
वे पहिए......
ये पत्थर स्वयं कितने भारी हैं,
ये चक्की के पाट !
ये सुखद कतारों में नाचते हैं...
ये चक्की के पाट !

डब्लू० मूल्लर

अध्याय—१



द्वीपसमूह के जहाज़

बेरिंग तट से लेकर बासपोरस तक मंत्रमुग्ध द्वीपसमूह के हजारों द्वीप फैले हुए हैं। ये दिखाई नहीं पड़ते, लेकिन इनका अस्तित्व है। और इस द्वीपसमूह के अदृश्य गुलामों को, जो भौतिक सार के रूप में मौजूद हैं, जिनमें भार और घनत्व है, उन्हें एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक बस इसी प्रकार अदृश्य रूप से, और निर्बाध रूप से भी, पहुंचाना पड़ता है।

और इन लोगों को किन वाहनों के माध्यम से एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक पहुंचाया जाता है? इन्हें किन गाड़ियों पर चढ़ा कर भेजा जाता है?

इस काम के लिए बड़े-बड़े बन्दरगाह मौजूद हैं—संक्रमण जेलें; और अपेक्षाकृत छोटे बन्दरगाह—शिवरों के संक्रमण केन्द्र। मोहरबंद इस्पाती जहाज़ भी मौजूद हैं: रेल के डिब्बे, जिनका विशेष रूप से ज़ाक कार ("कैदियों की कार या माल डिब्बे") नामकरण किया गया है। और जहाज़ों के लंगर डालने के स्थान पर, पड़ाव स्थल पर, इनकी मुलाकात इसी प्रकार मोहरबन्द और विविध उपयोग की ब्लैक मारिया मोटरगाड़ियों से होती है, छोटे जहाज़ों और नौकाओं से नहीं। ज़ाक कारें निश्चित कार्यक्रम के अनुसार नियमित रूप से आती-जाती रहती हैं। और जब कभी आवश्यक होता है, इनके पूरे काफिले—पशुओं को ढोने की लाल रेल गाड़ियां—एक बंदरगाह से दूसरे बंदरगाह के लिए रवाना होती हैं और इनका गंतव्य होता है द्वीपसमूह।

यह एक अत्यन्त विकसित प्रणाली है! दर्जनों वर्षों की अवधि में इसका निर्माण हुआ—जल्दबाजी में नहीं। अच्छा भोजन खाने वाले, वर्दीधारी और आराम से आहिस्ता-आहिस्ता काम करने वाले लोगों ने इस प्रणाली की सृष्टि की। किनेशमा का काफिला मास्को के उत्तरी रेलवे स्टेशन पर तीसरे पहर पांच बजे महीने के विषम दिनों में बुत्यर्की, क्रासनाया, प्रेसन्या और तगानका जेलों से आने वाली ब्लैक मारिया मोटरगाड़ियों की प्रतीक्षा करता है। आइवानोवो काफिले को सुबह छह बजे महीने के सम दिनों में नेरेखता, बेझेतस्क और बोलोगोए जाने वाले कैदियों को लेने और अपने भीतर समेट लेने के लिए स्टेशन पर पहुंचना पड़ता है।

यह सब कुछ एकदम आपके सामने होता है। आप इसका प्रायः स्पर्श कर सकते हैं। लेकिन यह फिर भी अदृश्य है (और आप इसकी ओर से अपनी आंखें बंद भी कर सकते हैं)। बड़े रेलवे स्टेशनों पर गंदे चेहरों वाले कैदियों को गाड़ियों में चढ़ाने और उतारने का काम, यात्री प्लेटफार्म से दूर होता है और इसे केवल रेलों के स्विचमैन और रेल पटरियों के

इन्सपैक्टर ही देख पाते हैं। छोटे रेलवे स्टेशनों पर इन दो गोदामों के बीच एक पूरी तरह से बंद गलियारा अधिक पसन्द किया जाता है। ब्लैक मारिया मोटरगाड़ियां एकदम इस गलियारे से सट कर खड़ी हो जाती हैं और इनका पिछला हिस्सा ज़ाक डिब्बे के बराबर लग जाता है। कैदी को स्टेशन देखने, आपको देखने, अथवा रेलगाड़ी को ऊपर नीचे देखने का भी मौका नहीं मिलता। उसे केवल डिब्बे में चढ़ने के लिए लगे पायदानों की ओर ही देखना पड़ता है। (और कभी-कभी निचला पायदान कमर तक ऊंचा होता है और कैदी में इसके ऊपर चढ़ने की शक्ति नहीं होती।) और काफिले के सन्तरी, जो ब्लैक मारिया और ज़ाक डिब्बे के बीच की छोटी-सी दूरी में दोनों ओर ठसाठस खड़े होते हैं, गुर्राते हैं और धमकियां देते हैं। जल्दी करो, जल्दी करो! आगे बढ़ो, आगे बढ़ो! और हो सकता है कि वे अपनी राइफलों की संगीनें घोंप देने की धमकियां भी दें।

और आप, अपने बच्चों, अपने सूटकेसों, अपने झोलों आदि के साथ इतनी जल्दबाजी में होते हैं कि आप स्टेशन पर क्या हो रहा है इसे गौर से नहीं देखते: रेलगाड़ी से एक दूसरा माल डिब्बा क्यों जोड़ा जा रहा है? इसके ऊपर कोई पहचान चिन्ह नहीं है और यह एक माल डिब्बे जैसा ही है—और खिड़की की जालियों पर आड़ी सलाखें भी लगी हैं और इन सलाखों के पीछे एकदम अन्धकार है। लेकिन इस माल डिब्बे में सैनिक, पितृभूमि के रखवाले सैनिक क्यों सवार हैं? और जब रेलगाड़ी रुकती है तो इनमें से दो सैनिक डिब्बे के दोनों ओर सीटी बजाते हुए क्यों चलते हैं और डिब्बे के नीचे झांक-झांक कर क्यों देखते हैं?

रेलगाड़ी रवाना होती है—और सैकड़ों खचाखच भरे कैदियों की नियति और अपार कष्टों का भार ढोते हुए हृदय, उन्हीं सर्पीली रेल पटरियों पर, उसी रेल इंजिन के धुएं के पीछे, उन्हीं खेतों, चौकियों और चारे के ढेरों के बराबर से आपकी तरह ही गुजरते हैं और हो सकता है कि शायद आपसे कुछ क्षण पहले ही वे गुज़र रहे हों। लेकिन आपकी खिड़की के बाहर से अपार कष्टों की जो धारा निरन्तर गुजरती रहती है, उसका वैसा चिह्न भी शेष नहीं रह जाता, जैसा पानी में अंगुलियां डालने से रह जाता है। और रेलगाड़ी के चिर परिचित जीवन में, जो सदा एकदम समान होता है—बिस्तर के कपड़ों के पुलिंदे और धातु चढ़े कांच के गिलासों में चाय—क्या आप इस बात का अनुमान लगा सकते हैं कि आपसे केवल तीन सैकेण्ड पहले ही उसी स्थान पर उसी अन्तराल से कैसी भयानकता, अंधकारपूर्ण भयानकता गुजर रही है? आप इस बात से असंतुष्ट हैं कि आपके डिब्बे में चार यात्री हैं और इसके परिणामस्वरूप भीड़भाड़ हो गई है। और क्या आप इस बात पर विश्वास कर सकते हैं—और इन पंक्तियों को पढ़ते समय भी क्या आप विश्वास कर पायेंगे—कि आपके जितने ही बड़े रेल डिब्बे में, लेकिन आगे लगे हुए कैदियों के डिब्बे में, १४ आदमी भरे गए हैं? और यदि वहां २५ कैदी हों? और यदि ३० हों?

ज़ाक डिब्बा—यह भी कैसा भद्दा संक्षेप है? और जल्लादों द्वारा प्रयुक्त अन्य सब संक्षेप भी इसी प्रकार भद्दे और दूषित हैं। वे यह दर्शाना चाहते थे कि इसका अर्थ कैदियों—अर्थात् ज़ाकल्युचेन्ये—के लिए रेल डिब्बों से होता है। लेकिन जेलों के दस्तावेज़ों को छोड़ कर यह शब्द अन्यत्र कहीं प्रचलित नहीं हो सका। कैदी लोग तो इस प्रकार के रेल डिब्बे को स्तोलीपिन डिब्बा कहने के आदी हो गए थे, अथवा वे इससे भी अधिक सरल रूप में इसे केवल स्तोलीपिन ही कहते थे।

जब हमारी पितृभूमि में रेल यात्रा अधिक बड़े पैमाने पर शुरू हुई, तो कैदियों को लाने ले जाने के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ। पिछली शताब्दी के अन्तिम दशकों में कैदियों को पैदल अथवा घोड़ा गाड़ियों में साइबेरिया पहुंचाया जाता था। सन् १८९६ में लेनिन ने अपने साइबेरिया निष्कासन की यात्रा रेलगाड़ी के तीसरे दर्जे के एक सामान्य यात्री डिब्बे में की थी। (उनके चारों ओर स्वतंत्र लोग बैठे हुए थे) और लेनिन ने रेलगाड़ी के कर्मचारियों पर क्रोध प्रकट करते हुए यह कहा था कि डिब्बे में असह्य भीड़ है। यारोशेंकों के "जीवन सर्वत्र है" शीर्षक चित्र में, जिससे प्रत्येक व्यक्ति परिचित है, चौथे दर्जे के एक रेल डिब्बे को बहुत बचकाने ढंग से कैदियों के लिए प्रयुक्त रेल डिब्बे में बदला गया है। इस डिब्बे में अन्य सब चीजें जैसी की तैसी थीं और कैदी सामान्य लोगों की तरह ही यात्रा कर रहे थे। बस अन्तर केवल इतना था कि खिड़कियों पर दोहरी सलाखें लगा दी गई थीं। इस प्रकार के रेल डिब्बे बहुत लम्बे समय तक रूस में इस्तेमाल होते रहे। और कुछ लोगों को सन् १९२७ में ऐसे डिब्बों में कैदियों के रूप में यात्रा करने का स्मरण है। बस अन्तर केवल इतना था कि पुरुषों और स्त्रियों को अलग-अलग रखा गया था। दूसरी ओर समाजवादी क्रांतिकारी तूशिन को स्मरण है कि ज़ारशाही के जमाने में भी उन्हें एक कैदी के रूप में "स्तोलीपिन" डिब्बे में ले जाया गया था। बस फर्क केवल यह था कि एक डिब्बे में छः कैदी होते थे—यह भी कैसा अद्भुत समय था।

संभवतः इस प्रकार के रेल डिब्बे का पहली बार इस्तेमाल स्तोलीपिन के कार्यालय में हुआ था। अर्थात् इसे सन् १९११ से पहले इस्तेमाल में लाया गया था। और कैडेट पार्टी के सदस्यों ने अपनी क्रांतिकारी कटुता के कारण इस डिब्बे का नाम स्वयं स्तोलापिन के नाम पर ही रख दिया था। पर यह केवल १९२० के बाद के वर्षों में ही कैदियों को लाने ले जाने का लोकप्रिय साधन बना और केवल १९३० के बाद ही इसे सार्वभौम पैमाने पर इस्तेमाल किया जाने लगा। यह वह समय था, जब हमारे जीवन में प्रत्येक वस्तु समरूप हो गई थी। अतः इस रेल डिब्बे को स्तोलिपिन रेलडिब्बा न कहकर स्तालिन रेलडिब्बा कहना अधिक सही होगा। लेकिन हम यहां रूसी भाषा से बहस में नहीं पड़ेंगे।

स्तोलिपिन रेल डिब्बा एक साधारण यात्री रेल डिब्बा होता है, जिसे विभिन्न छोटे-छोटे कम्पार्टमेंटों में विभाजित कर दिया जाता है। अन्तर केवल इतना होता है कि इसके नौ कम्पार्टमेंटों में से पांच को कैदियों के लिए सुरक्षित रखा जाता है। (यहां भी, द्वीपसमूह के अन्य प्रत्येक स्थान की तरह, प्रत्येक वस्तु का आधा हिस्सा सहायक कर्मचारियों अर्थात् सन्तरियों को प्राप्त होता है), और कम्पार्टमेंटों को डिब्बे के गलियारे से किसी ठोस बाधा के द्वारा नहीं, बल्कि लोहे की सलाखों की जाली से अलग किया जाता है ताकि झिरियों से कैदियों के ऊपर नजर रखी जा सके। यह जाली आडी-तिरछी लगी लोहे की छड़ों से बनी होती है, जैसी हम स्टेशन के बागीचों में देखते हैं। यह जाली डिब्बे में नीचे से ऊपर तक लगी होती है और इसके कारण यात्रियों का सामान रखने के लिए, कम्पार्टमेंट से लेकर गलियारे के ऊपर तक रैक नहीं होते। गलियारे के ओर की खिड़कियां सामान्य खिड़कियां होती थीं, लेकिन इनमें भी बाहर की तरफ तिरछी सलाखें लगी रहती थीं। कैदियों के कम्पार्टमेंटों में खिड़कियां नहीं होती थीं—सोने के लिए लगे तख्तों की कतार में, दूसरे तख्तों के बराबर बहुत छोटी-छोटी लोहे की सलाख लगी झिरियां होती थीं। यही कारण था कि बाहर से इस रेल डिब्बे में खिड़कियां नहीं दिखाई पड़ती थीं और यह मालगाड़ी का डिब्बा

लगता था। प्रत्येक कम्पार्टमेंट में एक खिसकाने योग्य किवाड़ लगा होता था। यह लोहे का सलाखदार फाटक होता था :

गलियारे से देखने पर किसी पिंजड़े में बन्द पशुओं की याद आती थी। इन पिंजड़ों में मनुष्यों जैसे दिखाई पड़ने वाले दयनीय प्राणियों को ठूंस-ठूंस कर भर दिया जाता था। ये प्राणी कम्पार्टमेंट के फर्शों और सोने के लिए लगे तख्तों पर भरे होते थे और इनके चारों ओर लोहे की लगी जालियां होती थीं और ये आपकी ओर अत्यन्त दयनीय ढ़ंग से कुछ खाने और पीने को मांगते हुए दिखाई पड़ते थे। अन्तर केवल इतना है कि जानवरों को उनके पिंजड़ों में इस प्रकार ठूंस-ठूंस कर कभी भी नहीं भरा जाता।

गैर कैदी इंजीनियरों की गणना के अनुसार, एकस्तोलिपिन कम्पार्टमेंट के सबसे निचले तख्ते पर छह आदमी बैठ सकते हैं, तथा तीन और बीच के तख्ते पर लेट सकते हैं(जो एक साथ मिला दिये जाने के कारण हमवार होते हैं। बस दरवाजे के पास थोड़ी सी जगह छोड़ दी जाती है ताकि इस तख्ते पर चढ़ा जा सके और नीचे उतरा जा सके।) और दो और आदमी सामान रखने के लिए लगे तख्ते पर लेट सकते हैं। और यदि इन ग्यारह आदमियों के अलावा ग्यारह और आदमी कम्पार्टमेंट में घुसेड़ दिए जाएं तो यह स्तोलिपिन कैदी कम्पार्टमेंट के भीतर बन्द रहने वाले कैदियों की सामान्य संख्या मानी जाएगी। (सबसे आखिर में जिन कैदियों को कम्पार्टमेंट के भीतर धकेला जाता, उन्हें सन्तरी लोग अपने जूतों से ठोकरें मार कर भीतर की ओर फेंकते, ताकि कम्पार्टमेंट का फाटक बन्द किया जा सके।) सामान रखने के लिए लगे सबसे ऊपर के तख्तों पर दो-दो आदमी उसी प्रकार गठरी बन कर बैठते हैं; अन्य पांच बीच के जुड़े हुए तख्तों पर लेट जाते हैं (और ये भाग्यशाली होते हैं—ये स्थान केवल लड़ाई लड़ कर ही प्राप्त किये जा सकते हैं और यदि कम्पार्टमेंट में चोरों के गिरोहों के कुछ कैदी मौजूद हों तो लेटने का स्थान केवल उन्हीं को मिलेगा); और इस प्रकार १३ आदमी नीचे रह जाते हैं :पांच-पांच आदमी दोनों तख्तों पर बैठते हैं और तीन आदमी इनकी टांगों के बीच फर्श पर किसी प्रकार बैठ जाते हैं। और कहीं किसी स्थान पर लोगों के साथ, लोगों के ऊपर और लोगों के नीचे घुला मिला इनका सामान पड़ा होता है। और इस प्रकार कैदी लोग बैठे रहते हैं, पालथी मारे, निरन्तर न जाने कितने दिनों तक।

नहीं, लोगों को यातनाएं देने के लिए विशेष रूप से यह कार्य नहीं किया जाता। एक दण्डित कैदी समाजवाद का श्रमिक सैनिक होता है तो उसे यातना देने की क्या आवश्यकता है ? उन लोगों को इस कैदी की निर्माण के लिए आवश्यकता होती है। पर आखिरकार आप इस बात पर सहमत होंगे कि वह अपनी सास से मिलने के लिए शान से यात्रा नहीं कर रहा है और इस बात का कोई कारण नहीं है कि उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाये कि स्वतंत्र लोग उससे ईर्ष्या करने लगें। हमारी परिवहन व्यवस्था में अनेक कठिनाइयां और समस्यांएं मौजूद हैं। वह अपने गन्तव्य पर पहुंचेगा और वह रास्ते में मरेगा भी नहीं।

सन् १९५० के बाद के वर्षों से, जब रेल गाड़ियों के टाइम टेबिलों में सचमुच सुधार किया गया था, कैदियों को बहुत अधिक समय—अर्थात् डेढ़ दिन या दो दिन तक— इस प्रकार यात्रा करनी पड़ती थी। युद्ध के दौरान और युद्ध के बाद भी स्थिति बहुत बुरी थी। पेत्रो–पावलोवस्य (कजाकिस्तान में) से लेकर करागन्दा तक, एक स्तोलिपिन रेल डिब्बे को यात्रा में सात दिन का समय लगता है (और एक कम्पार्टमेंट में पच्चीस आदमी ठुंसे होते हैं, करागन्दा से स्वर्दलोवस्क तक आठ दिन का समय लग सकता है (और एक कम्पार्टमेंट में

छब्बीस आदमी हो सकते हैं)। अगस्त १९४५ में कुइबाइशेव से चेलयाबिन्स्क पहुंचने में सूसीको एक स्तोलिपिन डिब्बे में कई दिन तक यात्रा करनी पड़ी और उनके कम्पार्टमेंट में ३५ आदमी एक दूसरे के ऊपर पड़े हुए थे, एक दूसरे से लड़ रहे थे।[1] और सन् १९४६ की शरद ऋतु में एन० वी० टाइमोफेएव रेसोवस्की ने पेत्रो-पावलोवस्क से मास्को तक की यात्रा एक ऐसे कम्पार्टमेंट में की थी जिसमें ३६ आदमियों को ठूंस दिया गया था। अनेक दिन तक वह दूसरे आदमियों के ऊपर ही पड़ा रहा था यूं कहिए कि दूसरे आदमियों के सहारे अधर में लटका रहा और उसके पांव फर्श को न छू सके। इसके बाद कैदी मरने लगे—और सन्तरियों ने लाशों को कैदियों के पांव के नीचे से घसीट-घसीट कर बाहर निकाला। (इन लाशों को लोगों की मृत्यु के तुरन्त बाद नहीं, केवल दूसरे दिन निकाला गया।) इस प्रकार भीड़ में कुछ कमी हुई। मास्को की यह सम्पूर्ण यात्रा इसी प्रकार तीन सप्ताह तक चलती रही।[2]

क्या एक स्तोलिपिन कम्पार्टमेंट में अधिक से अधिक छत्तीस आदमियों को ही भरा जा सकता था? मेरे पास सैंतीस या इससे अधिक आदमियों को भरने का कोई प्रमाण मौजूद नहीं है। लेकिन इसके बावजूद एक मात्र वैज्ञानिक तरीके का अनुसरण करते हुए और "सीमा निर्धारित करने वालों" के विरुद्ध संघर्ष की आवश्यकता का स्मरण करते हुए हम यह उत्तर देने के लिए बाध्य हैं: नहीं, नहीं नहीं! यह सीमा नहीं है! हो सकता है किसी और देश में यह अधिकतम सीमा हो, लेकिन यहां हमारे देश में नहीं! जब तक कम्पार्टमेंट में कुछ घन सेंटीमीटर खुली जगह मौजूद रहेगी, चाहे यह सबसे ऊपर के तख्तों के नीचे हो, कैदियों के कन्धों, टांगों और सिरों के बीच हो, कम्पार्टमेंट और कैदियों को आत्मसात करने के लिए तैयार रहेगा। पर हम अधिकतम सीमा के रूप में उस संख्या को स्वीकार कर सकते है, जो उन लाशों की होगी, जिन्हें पूरे कम्पार्टमेंट में ठूंस-ठूंस कर भरा जा सकता हो। बशर्ते इन लाशों को भरने के लिए पर्याप्त समय दिया गया हो।

वी० ए० कोनेंएवा ने मास्को से एक ऐसे कम्पार्टमेंट में यात्रा की जिसमें तीस स्त्रियां थीं—इनमें अधिकांश अत्यन्त दुर्बल वृद्ध स्त्रियां थीं, जिन्हें उनके धार्मिक विश्वासों के कारण निष्कासित किया गया था। (गंतव्य पर पहुंचने पर इन सब स्त्रियों को, केवल दो को छोड़ कर, तुरन्त अस्पताल में भर्ती किया गया)। इस कम्पार्टमेंट में किसी की मृत्यु नहीं हुई, क्योंकि कैदियों में कई सुगठित और सुन्दर युवतियां थीं, जिन्हें "विदेशियों के साथ जाने के लिए" गिरफ्तार किया गया था। इन लड़कियों ने गारद के सन्तरियों को बहुत शर्मिंदा किया: "तुम्हें इन स्त्रियों को इस तरह भर कर ले जाने के लिए शर्मिंदा होना चाहिए! ये स्वयं तुम्हारी माताएं ही हैं!" संभवत: उनके नैतिक तर्क का संतरियों पर उतना प्रभाव नहीं हुआ, जितना उनकी सुन्दरता का और वे कई वृद्धाओं को कम्पार्टमेंट से निकाल कर "सजा की कोठरी" में ले गए। लेकिन स्तोलिपिन रेलडिब्बे में सज़ा की कोठरी सचमुच सज़ा नहीं होती, यह एक वरदान होती है। कैदियों के पांच कम्पार्टमेंटों में से चार का उपयोग कैदियों को रखने के लिए सामान्य रूप से होता है और पांचवें कम्पार्टमेंट को अलग रखा जाता है। इसे दो हिस्सों में बांट दिया जाता है। इन दो सकरे आधे कम्पार्टमेंटों में एक बर्थ नीचे और एक ऊपर होती है। कंडक्टरों के डिब्बों की तरह ही ये दिखाई पड़ते हैं। इन सज़ा की कोठरियों का उपयोग कैदियों को अलग रखने के लिए किया जाता है। एक साथ तीन या चार कैदी इनमें यात्रा करते हैं और इससे आराम और जगह दोनों प्राप्त होती है:

नहीं, प्यास की यातना देने के इरादे से इन थके हारे और कम्पार्टमेंटों में खचाखच भरे कैदियों को शोरबे के स्थान पर नमकीन छोटी मछली अथवा कैस्पियन सागर की सुखाई हुई कार्प मछली यात्रा की पूरी अवधि में नहीं दी जाती। (इन समस्त वर्षों में सदा यही हुआ। १९३० के बाद के वर्षों में और १९५० के बाद के वर्षों में भी, सर्दियों में और गर्मियों में, साइबेरिया में और यूक्रेन में, सदा और सर्वत्र यही हुआ और इसका उदाहरण देने की भी आवश्यकता नहीं है।) इन कैदियों को प्यास की यातना देने के लिए नहीं—लेकिन आप ही बताइए कि इन निरर्थक लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते समय आखिरकार खाने को दिया भी क्या जा सकता था। कैदियों को ढोने वाली रेलगाड़ी में इन्हें गरमागरम भोजन कैसे दिया जा सकता था। (हां, यह सच है कि स्तोलिपिन रेल-डिब्बे के एक कम्पार्टमेंट में रसोई रहती थी, लेकिन यह केवल गारद के सन्तरियों के लिए होती थी।) आप कैदियों को कच्चा ग्रिट नहीं दे सकते थे। आप उनको कच्ची काड मछली भी नहीं दे सकते थे, आप उनको डिब्बाबन्द गोश्त भी नहीं दे सकते थे क्योंकि वे अपना पेट आवश्यकता से अधिक भर सकते थे। छोटी हेरिंग मछली ही एकमात्र ऐसी वस्तु थी, जिसे उन्हें रोटी के एक टुकड़े के साथ दिया जा सकता था—और उन्हें अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता भी क्या थी?

आगे बढ़ो और समय रहते उनसे आधी हेरिंग मछली ले लो और इस बात पर प्रसन्न हो जाओ कि यह आधी मछली तुम्हारे हाथ लग गई है। यदि तुम चतुर हो तो इस मछली को नहीं खाओगे। सब्र से काम लो, प्रतीक्षा करो, इसे अपनी जेब में छिपा लो। और इसे अगले संक्रमण केन्द्र में खाने के लिए रख लो, जहां आपको पानी मिलेगा। स्थिति उस समय और बुरी होती है, जब वे अजोव समुद्र के गीले एंकोवाई बांटते हैं। ये दरदरे नमक लगे एंकोवाई होते हैं। तुम उन्हें अपनी जेब में नहीं रख सकते तो इन्हें अपनी जाकट के पल्ले में ले लो या अपने रूमाल में, या अपने हाथ में—और इन्हें खा जाओ। कैदी लोग किसी की जाकट पर रख कर इन अजोव एंकोवाई का बंटवारा करते हैं। संतरी सूखी कार्प मछली को कम्पार्टमेंट के फर्श पर डाल देते हैं और इन्हें बेंचों पर या कैदियों के घुटनों पर रख कर बांटा जाता है।[3]

लेकिन एक बार मछली देने के बाद, वे रोटी देने में विलम्ब नहीं करेंगे। और हो सकता है कि थोड़ी-सी चीनी भी मिल जाए। स्थिति उस समय बहुत अधिक खराब हो जाती है जब कोई सन्तरी आकर यह घोषणा करता है: "हम आज तुम लोगों को खाने के लिए कुछ भी नहीं देंगे। तुम लोगों के लिए आज का राशन नहीं दिया गया है।" और यह हो सकता है कि सचमुच कुछ भी न दिया गया हो: किसी जेल के दफ्तर में किसी व्यक्ति ने हिसाब लगाने में गलती कर दी हो। और यह भी हो सकता है कि राशन दिया गया हो, लेकिन स्वयं गारद का राशन कम पड़ रहा हो—आखिरकार, इन लोगों को भी बहुत अधिक भोनज नहीं मिलता—तो इन लोगों ने आपकी कुछ रोटी स्वयं अपने लिए रख लेने का निश्चय कर लिया। और इस स्थिति में आधी हेरिंग लेना संदेहास्पद लगेगा।

और, सचमुच, कैदी को जानबूझ कर यातना देने के उद्देश्य से हेरिंग मछला के बाद उसे न तो गरम पानी दिया जाता है (गरम पानी तो किसी भी हालत में नहीं मिलता) और न ही सादा बिना उबला हुआ पानी। आपको स्थिति को समझना जरूरी है। गारद के सन्तरियों की संख्या सीमित होती है; इनमें से कुछ गलियारे की निगरानी करते हैं; कुछ

प्लेटफार्म पर ड्यूटी पर तैनात होते हैं। स्टेशनों पर वे पूरे डिब्बे पर छा जाते हैं। डिब्बे के नीचे घुसते हैं, ऊपर चढ़ते हैं, ताकि यह निश्चय कर सकें कि इसमें कहीं छेद तो नहीं बना लिए गए हैं। अन्य सन्तरियों को राइफलों को साफ करने में व्यस्त रखा जाता है और इसके अलावा इन्हें राजनीतिक शिक्षा का पाठ भी पढ़ाया जाता है और युद्ध के बारे में भी जानकारी दी जाती है। सन्तरियों का तीसरा हिस्सा अपनी नींद पूरी करता है। वे पूरे आठ घंटे की नींद पर जोर देते हैं। आखिरकार युद्ध समाप्त हो गया है। और इसके बाद इन लोगों से बाल्टियों में पानी भरकर पानी लाने की अपेक्षा कैसे की जा सकती है—बहुत दूर से पानी लाना पड़ता है और यह अपमानजनक भी हैं: एक सोवियत सैनिक एक गधे की तरह जनता के शत्रुओं के लिए पानी लाद कर क्यों लाये? और ऐसे अवसर भी आते हैं, जब इन्हें आधे दिन का समय स्तोलिपिन डिब्बे को स्टेशन से दूर धकेल कर ले जाने में बिताना पड़ता है, ताकि डिब्बों को भिन्न तरीके से जोड़ा जा सके। (यह काम जिज्ञासा भरी नज़रों से बहुत दूर ही करना होगा) और इसका परिणाम यह होता है कि आपको अपने लाल सेना के मैस के लिए भी पानी नहीं मिलता। हां, यह सच है कि इसका एक रास्ता है। आप रेल इंजन से पानी ले सकते हैं। यह पीला और गदला होता है और इसमें कुछ चिकनाई भी मिली होती है। लेकिन कैदी लोग बड़ी तत्परता से इसे पी जायेंगे। अब इस बात से सचमुच कोई खास फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि अपने कम्पार्टमेंट के अंधियारे वातावरण में उन्हें यह पता भी नहीं चलता कि वे क्या पी रहे हैं। इनके कम्पार्टमेंट में कोई खिड़की नहीं होती और रोशनी के लिए कोई बल्ब भी नहीं होता और उन्हें जो भी प्रकाश प्राप्त होता है वह गलियारे से आता है। और एक दूसरी बात भी होती है। पानी बांटने में बहुत समय लगता है। कैदियों के पास अपने मग नहीं होते। जिस किसी के पास मग था, उससे ले लिया गया था। तो इसका यही परिणाम निकलता है कि उन लोगों को पानी पीने के लिए दो सरकारी मग देने पड़ेंगे और उनके पानी पीते समय आपको वहां खड़ा रहना पड़ेगा। और बार-बार मगों में पानी डालना पड़ेगा। (हां, और इसके अलावा, कैदी यह भी तर्क करते हैं कि पहले कौन पानी पिये। वे यह मांग करते हैं कि पहले स्वस्थ कैदी पानी पियें और इसके बाद तपेदिक के रोगी और सबसे अन्त में आतशक के रोगी। मानो अगले डिब्बे में फिर यही क्रम नहीं दोहराया जाएगा: सबसे पहले स्वस्थ कैदी......)

लेकिन गारद के सन्तरी इस सबको भी बर्दाश्त कर लेते, पानी भर लाते और इसका बंटवारा कर देते यदि ये सुअर, पानी निगल जाने के बाद, पेशाब जाने की मांग न करते। तो इस प्रकार यह व्यवस्था होती है: यदि आप एक दिन पानी न दें तो वे शौचालय जाने की भी मांग नहीं करेंगे। उन्हें एक बार पानी दो तो वे एक बार शौचालय जायेंगे; उनके ऊपर दया करो और उन्हें दो बार पानी दो तो वे दो बार शौचालय जायेंगे। तो यह सीधा-सादा मामूली सूझबूझ का मामला है: उन्हें पीने के लिए कुछ भी न दो।

बात यह नहीं है कि कोई कैदियों को शौचालय ले जाने में इसलिए कंजूसी बरतना चाहता है कि वह शौचालयों के उपयोग को कम से कम करना चाहता है, बल्कि इसका कारण यह है कि कैदियों को शौचालय ले जाने का काम बहुत जिम्मेदारी का है—इसे युद्ध जैसी कारवाई कहा जा सकता है: इस काम में एक प्रथम श्रेणी के सिपाही और दो अन्य सिपाहियों को बेहद, बेहद समय लगाना पड़ता है। दो संतरियों को तैनात करना पड़ता है, एक संतरी को शौचालय के दरवाजे के बराबर और दूसरे को गलियारे के दूसरे छोर पर

(ताकि कोई कैदी उस दिशा में भागने की कोशिश न करे)। प्रथम श्रेणी का सिपाही कम्पार्टमेंट का फाटक खोलता और बन्द करता है। पहले वापस लौटने वाले कैदी को कम्पार्टमेंट के भीतर भेजने के लिए और फिर दूसरे कैदियों को शौचालय ले जाने के लिए। नियमों के अनुसार एक समय केवल एक कैदी को ही बाहर निकाला जा सकता है, ताकि वह भागने और विद्रोह शुरू करने की कोशिश न करे। अतः इस प्रकार एक कैदी जब शौचालय जाता है तो वह स्वयं अपने कम्पार्टमेंट में तीस अन्य कैदियों को और पूरे रेलडिब्बे में १२० आदमियों को शौचालय की प्रतीक्षा में पीछे छोड़ जाता है। और इसमें सन्तरियों की संख्या शामिल नहीं है। और इस प्रकार हुक्म गूंज उठता है: "इधर आओ, इधर आओ! जल्दी आगे बढ़ो, जल्दी करो!" प्रथम श्रेणी का सैनिक और अन्य सैनिक भी कैदी को इतनी तेजी से खदेड़ने में लगे रहते हैं कि वह लड़खड़ा उठता है। ऐसा लगता है, मानो संतरियों को इस बात की चिन्ता सता रही हो कि कैदी पाखाने के भीतर बैठा हुआ कहीं पाखाने में लगे साज़-सामान को ही न चुरा ले। (सन् १९४९ में मास्को और कुइबाइशेव के बीच एक स्तोलिपिन रेलडिब्बे में यात्रा करने वाला एक टांग वाला जर्मन शुल्ट्ज़, जल्दी करो, जल्दी करो के रूसी शब्द को अब तक समझ लेने के कारण इतनी तेजी से अपनी एक टांग पर फुदक-फुदक कर शौचालय जाता और वापस लौटता कि सन्तरी लोग हंसने लगते और उसे और तेजी से दौड़ने का हुक्म सुनाते। एक ऐसी ही शौचालय यात्रा के दौरान एक सन्तरी ने गलियारे के अन्त में शुल्ट्ज़ के पहुंचने पर उसे धक्का दे दिया और वह शौचालय के सामने फर्श पर गिर पड़ा। सन्तरी क्रोध से आग बबूला हो गया और उसे पीटने लगा। ऊपर से लात-घूंसों की मार के कारण शुल्ट्ज़ खड़ा नहीं हो पा रहा था। अतः वह पेट के बल घिसटता हुआ गन्दे पाखाने में घुस गया। गारद के शेष सन्तरी हंसी के मारे लोट-पोट हो गए।)[४]

पाखाने के भीतर से कैदी भागने की कोशिश न करे और एक के बाद एक कैदी को तेजी से भीतर भेजा और बाहर निकाला जा सके, अतः पाखाने का दरवाजा बन्द नहीं किया जाता था। और बाहर खड़ा हुआ जो सन्तरी कैदी की शौच क्रिया पर नज़र रखता था, लगातार यह कहता रहता था: "बस अब उठो, बस अब उठो! बहुत हो गया, इतना तुम्हारे लिए काफी है!" कभी-कभी तो आपके शौच शुरू करने से पहले ही यह हुक्म मिल जाता: "ठीक है, बस पेशाब करो और बाहर निकलो!" और इसका यह अर्थ होता कि बाहर खड़ा सन्तरी आपको अन्य कुछ भी करने से रोकेगा। और इसके बाद आप अपने हाथ नहीं धो सकते थे। इसके लिए टंकी में न तो कभी पर्याप्त पानी होता था और न ही कभी पर्याप्त समय। यदि कोई कैदी पानी के नल को छूने तक का साहस करता तो सन्तरी चिल्ला उठता: "इसे मत छूओ, आगे बढ़ो!" (और यदि किसी कैदी के सामान में साबुन या तौलिया होता तो वह केवल शर्म के मारे ही उसे अपने साथ बाहर ले जाने का साहस न करता। इस प्रकार तौलिया साबुन लेकर जाने का अर्थ एक शोषण करने वाले की तरह आचरण करना होता।) पाखाना बेहद गन्दा था। जल्दी करो, जल्दी करो की आवाज़ गूंजती रहती थी और गन्दगी से भरे जूतों सहित कैदी को वापस कम्पार्टमेंट में ठूंस दिया जाता था। जहां वह किसी और कैदी की बांहों और कन्धों पर पांव रख कर ऊपर चढ़ता था और फिर सबसे ऊपर के तख्ते से उसके गन्दे जूते बीच के तख्तों पर लटकते रहते थे और इनसे पानी चूता रहता था।

जब स्त्रियों को शौचालय ले जाया जाता, तो सन्तरियों की सेवा की नियमावली के अनुसार और सामान्य सूझ-बूझ के आधार पर भी, यह आवश्यक था कि शौचालय का दरवाजा खुला रखा जाये। लेकिन हर गारद इस बात पर जोर नहीं देती थी और कुछ गारद दरवाजा बन्द करने की इजाजत दे देती थी : "ओह, ठीक है, दरवाजा बन्द कर लो।" (इसके बाद किसी स्त्री कैदी को पाखाना धोने के लिए भेजा जाता था और एक सन्तरी को वहां फिर खड़ा रहना पड़ता था, ताकि वह भागने की कोशिश न करे।)

और इस तेज रफ्तार के बावजूद एक सौ बीस आदमियों को शौचालय ले जाने और वापस लाने में दो घण्टे से अधिक का समय लगता—यह तीन संतरियों की काम की पूरी पारी के चौथाई समय से अधिक का समय होता! और इसके बावजूद, आप उन लोगों को खुश नहीं कर सकते थे। इसके बावजूद, कोई बुढ्ढा या कोई अन्य कैदी आधे घण्टे बाद फिर चिल्लाने लगता और शौचालय ले जाने को कहता और, जाहिर है कि उसे शौचालय नहीं ले जाया जाता और वह वहीं कम्पार्टमेंट के भीतर अपने कपड़ों को खराब कर डालता और एक बार फिर इसका अर्थ प्रथम श्रेणी के सैनिक के लिए कष्ट की शुरूआत होती : कैदी को बाध्य किया जाता कि वह अपने पाखाने को हाथ में उठाकर डिब्बे से बाहर ले जाये।

तो बस यही किया जा सकता था : शौचालय कम से कम बार ले जाया जाये! और इसका अर्थ था कम पानी, और कम भोजन भी—क्योंकि इस स्थिति में वे लोग पेट खराब होने की शिकायत नहीं करेंगे और बदबू नहीं फैलाएंगे अन्यथा स्थिति कितनी बुरी हो सकती थी? आदमी सांस तक नहीं ले सकता था।

कम पानी! लेकिन उन्हें हेरिंग मछली तो देनी ही पड़ती थी, क्योंकि नियमों में इस बात की व्यवस्था थी! पानी बिलकुल नहीं—यह एक उचित कारवाई थी। हेरिंग मछली नहीं—यह एक अपराध था।

किसी भी व्यक्ति ने किसी उद्देश्य से हमें कभी भी यातनाएं नहीं दीं! गारद के कार्य पर्याप्त तर्कसंगत थे! लेकिन, पुराने ईसाईयों की तरह, हम लोग पिंजड़े के भीतर बैठे रहते थे और वे हमारी घायल जीभों के ऊपर नमक छिड़कते रहते थे।

इसी प्रकार कैदियों की गाड़ियों की गारद के सन्तरी जानबूझ कर (यद्यपि कभी-कभी वे ऐसा करते भी थे) चोरों को अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत दण्डित राजनीतिक कैदियों के साथ एक ही कम्पार्टमेंट में नहीं रखते थे। लेकिन एक विशेष स्थिति मौजूद रहती थी : कैदियों की संख्या बहुत बड़ी थी और रेल डिब्बों और कम्पार्टमेंटों की संख्या बहुत कम। और इसके अलावा समय बेहद कम रहता था और इन कैदियों को अलग-अलग करने का समय मिलता भी कब था? चार कम्पार्टमेंटों में से एक स्त्रियों के लिए अलग रखा जाता था और यदि कैदियों को अलग-अलग रखना संभव भी हो तो इन्हें अलग-अलग करने का सबसे अधिक तर्कसंगत आधार उनका गंतव्य ही हो सकता था, ताकि इन्हें आसानी से उतारा जा सके।

आखिरकार क्या ईसा मसीह को दो चोरों के बीच इसलिए क्रास पर लटकाया गया था कि पोंटियस पाइलेट उन्हें अपमानित करना चाहता था? बस बात यह थी कि वह दिन कैदियों को सूली पर लटकाने का दिन था और इस काम के लिए केवल एक वध-स्थल उपलब्ध था और समय बहुत कम था। और इस कारण से उन्हें चोरों के साथ मिला दिया गया।

मैं यह सोचने भर से भयभीत हो उठता हूं कि यदि मैं एक सामान्य सज़ायाफ्ता की स्थिति में होता, तो मुझे कितना कष्ट उठाना पड़ता...गारद और परिवहन अफसरों ने मेरे और मेरे कामरेडों के साथ बहुत सतर्कतापूर्ण विनम्रता से व्यवहार किया...एक राजनीतिक कैदी होने के नाते मैं अपना कठोर कारावास काटने के लिए अपेक्षाकृत आराम से यात्रा कर सका। मुझे मामूली अपराधियों से अलग रखा गया और मेरा ३६ पौंड का सामान का पुलिंदा एक हाथ गाड़ी पर रख कर ले जाया गया...

...मैंने ऊपर के पैराग्राफ में उद्धरणचिह्न इसलिए नहीं लगाये हैं, ताकि पाठक इन बातों को अधिक अच्छी तरह समझ सकें। आखिरकार, उद्धरणचिह्न व्यंग्य के लिए लगाये जाते हैं अथवा किसी वस्तु को अलग-थलग दर्शाने के लिए। और उद्धरणचिह्नों के बिना पैराग्राफ बड़ा जंगली लगता है, क्यों नहीं क्या ?

उक्त बातें पी० एफ० याकूबोविच ने पिछली शताब्दी के आखिरी दशक के बारे में लिखी थीं। हाल में उसकी पुस्तक उस अंधकारपूर्ण और निन्दनीय युग सम्बन्धी एक उपदेश के रूप में प्रकाशित हुई है। इससे हमें पता चलता है कि एक छोटे जहाज पर भी राजनीतिक कैदियों को अलग रहने की जगह दी जाती थी और जहाज के डेक पर टहलने के लिये उनके लिए अलग स्थान सुरक्षित रखा जाता था। (यही बात तोलसतोय "रिसोरैक्शन" में बताई गई है, जिसमें हमें यह भी पता चलता है कि एक बाहरी आदमी, प्रिंस नेखल्यूदोव को राजनीतिक कैदियों से मुलाकात का मौका दिया जाता है, ताकि वह उनके विचार जान सके।) और "जादुई शब्द 'राजनीतिक कैदी' के गलती से छूट जाने के कारण" याकूबोविच को उस्तकारा में (स्वयं उनके शब्दों में)" कठोर कारावास की निगरानी करने वाले एक इंस्पेक्टर का...एक सामान्य अपराधी की तरह सामना करना पड़ा और इन्स्पेक्टर ने उजड्डता से, उत्तेजनापूर्वक और धृष्टता से आचरण किया।" लेकिन इस गलतफहमी को तुरन्त बहुत अच्छे ढंग से दूर कर दिया गया।

यह कैसा अविश्वसनीय युग था ! राजनीतिक कैदियों को सामान्य अपराधियों के साथ रखना प्रायः एक अपराध माना जाता था ! अपराधियों को टोलियों में पैदल स्टेशन ले जाया जाता था ताकि उन्हें सार्वजनिक रूप से अपमान का सामना करना पड़े। और राजनीतिक कैदी घोड़ा गाड़ी में स्टेशन जा सकते थे। (ओलमिन्स्की, सन् १८९९ में) राजनीतिक कैदियों को अन्य कैदियों की तरह सामान्य रसोई से भोजन नहीं मिलता था, बल्कि उन्हें भोजन का भत्ता मिलता था और वे बाहर से अपना भोजन मंगा सकते थे। बोलशेविक ओलमिन्स्की अस्पताल का राशन भी लेने को तैयार नहीं था, क्योंकि यह भोजन बहुत रद्दी था।[५] बुत्यर्की जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट ने ओलमिन्स्की से केवल इसलिए क्षमायाचना की कि जेल के सन्तरियों ने पर्याप्त औपचारिकता से उसे सम्बोधित नहीं किया था : आप जानते ही हैं कि यदा कदा ही हमारे यहां राजनीतिक कैदी आते हैं, और सन्तरी को मालूम नहीं था कि आपसे किस प्रकार उचित व्यवहार किया जाये।

बुत्यर्की में यदाकदा ही राजनीतिक कैदी आते थे ? यह कैसा स्वप्न है ? तो इन्हें कहां रखा जाता था ? उस समय जेल के रूप में लूबयांका का अस्तित्व नहीं था और लेफोरतोवो जेल भी नहीं थी।

लेखक रादिशेव को कैदियों की गाड़ी तक हथकड़ियां और बेड़ियां डाल कर ले

जाया गया और जब बेहद ठंडक हो जाती थी तो वे उसके शरीर पर "एक घृणोत्पादक और बिना कमाई हुई भेड़ की खाल का कोट" डाल देते थे, जो उन्होंने एक पहरेदार से ले लिया था। लेकिन सम्राज्ञी कैथेरीन ने तुरन्त यह आदेश जारी किया कि उसकी बेड़ियां खोल दी जाएं और उसे यात्रा के लिए आश्वयक सब वस्तुएं दी जाएं। लेकिन नवम्बर १६२७ में अन्ना स्क्रिपनिकोवा को बुत्यर्की से सोलोवेतस्की द्वीपों तक कैदियों की गाड़ी से केवल गर्मियों के कपड़ों और भूसे के हैट में भेजा गया। (गर्मियों में अपनी गिरफ्तारी के समय अन्ना स्क्रिपनिकोवा ने यही पोशाक पहन रखी थी और उसी समय उसके कमरे को मोहरबन्द कर दिया गया था और कोई भी व्यक्ति उसे अपने कमरे से सर्दियों के कपड़े निकालने की अनुमति देने को तैयार नहीं था।)

राजनीतिक कैदियों और सामान्य अपराधियों के बीच एक विभाजन रेखा खींचने का अर्थ राजनीतिक कैदियों के प्रति समान दर्जे के विरोधियों के रूप में आदरभाव प्रकट करना है। यह इस बात को दर्शाता है कि लोग अपने भिन्न विचार रच सकते हैं। इस प्रकार एक राजनीतिक कैदी गिरफ्तारी के बाद भी अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता के प्रति सजग होता है।

लेकिन जिस क्षण हम सब लोग क्रान्ति विरोधी बन गए और समाजवादी लोग राजनीतिक कैदियों के रूप में अपना दर्जा कायम रखने में असफल हो गए, यह बात कहना और विरोध प्रकट करना कि एक राजनीतिक कैदी होने के कारण आपको सामान्य अपराधियों के साथ नहीं मिलाया जाना चाहिए, अन्य कैदियों की हंसी और उपहास का तथा जेल कर्मचारियों के आश्चर्य का लक्ष्य बनने लगा। "यहां सब अपराधी ही हैं।" जेल के कर्मचारा उत्तर देते—बड़ी निष्ठा से।

राजनीतिक कैदियों और सामान्य अपराधियों का इस प्रकार एक दूसरे से मिलाया जाना, पहला आघातजनक सामना होता था और या तो ब्लैक मारिया में अथवा स्तोलिपिन डिब्बे में यह सामना होता था। इस क्षण तक, चाहे आपको कितना ही क्यों न सताया गया हो, यातनाएं और कष्ट क्यों न दिये गए हों, पूछताछ के दौरान आपके साथ चाहे कैसा भी व्यवहार क्यों न किया गया हो, इस सबका कारण नीली टोपी वाले लोग होते थे। और आप इन्हें कभी भी मनुष्य नहीं स्वीकार करते थे, बल्कि सेवा की एक घृष्ट शाखा के रूप में ही इन्हें देखते थे। इसके साथ ही, चाहे आपकी कोठरी के अन्य साथी कैदियों का विकास और अनुभव चाहे आपसे बिल्कुल भिन्न क्यों न रहा हो और चाहे आपका उनसे झगड़ा ही क्यों न हुआ हो और चाहे उन्होंने आपके खिलाफ मुखबरी ही क्यों न की हो, पर ये सब लोग उस सामान्य, पापपूर्ण और रोजमर्रा की परिचित मानवता के अंग थे, जिसके मध्य आपने अपना पूरा जीवन बिताया था।

जब आपको एक स्तोलिपिन कम्पार्टमेंट में ठूंस-ठूंस कर भरा गया तो आप यही आशा कर रहे थे कि यहां भी आपका सामना अपने दुर्भाग्य के समभागी लोगों से होगा। आपके समस्त शत्रु और उत्पीड़क सीखचों के दूसरी ओर होंगे। और आपको इस बात की जरा भी आशा न थी कि सीखचों के इस ओर भी यह लोग हो सकते हैं। और तभी अचानक आप बीच के तख्ते की चौकोर खाली जगह की ओर अपनी आंख उठाते हैं, क्योंकि आपके ऊपर यही एकमात्र आकाश होता है और वहां आप तीन या चार—नहीं, ओह नहीं, ये चेहरे नहीं होते! ये बन्दरों की थूथन भी नहीं होतीं, क्योंकि बन्दरों की थूथन भी कहीं अधिक भद्र और कहीं अधिक विचारशील होती हैं! नहीं, ये भयावह मुखाकृतियां भी नहीं होतीं, क्योंकि इनमें भी

कुछ न कुछ मानवीयता अनिवार्य है। आपको वहां क्रूर, जुगुप्सा उत्पन्न करने वाली थूथन दिखाई पड़ती हैं, ये ऐसी आकृतियां होती हैं, जिन पर लालच और व्यंग्य की अभिव्यक्ति छाई रहती है। इनमें से प्रत्येक आपकी ओर ठीक उस प्रकार देखता है, जिस प्रकार एक मकड़ी मक्खी को टकटकी लगाकर देखती है। इनका जाला वह लोहे की सलाखों की जाली होता है, जिसने आपको अपने भीतर कैद कर रखा है—और बस यहां आपकी एक न चलेगी। वे अपने ओठ इस प्रकार उमेठते हैं मानो वे आपको कच्चा ही चबा जायेंगे। बोलते समय उनके मुंह से सांप जैसी आवाज़ निकलती है और वे बोलने के इस तरीके से बड़े आनन्दित होते हैं—इनकी भाषा में, क्रियाओं और संज्ञाओं के अन्तिम अक्षर ही रूस की भाषा से मिलते जुलते दिखाई पड़ते हैं। यह इनकी अपनी खास बोली है।

ये विचित्र वनमानुष बिना बांह की भीतर पहने जाने वाली कमीजों में ही होते थे। आखिरकार स्तोलिपिन डिब्बे में बहुत उमस और गर्मी होती है। इनकी दमदार लाल गर्दनों, कन्धों के मजबूत और पुष्ट स्नायुओं तथा गोदना गुदी बलिष्ठ छातियों पर जेल की भुखमरी का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। इन्हें जेल कमजोर नहीं बना पाई थी। ये लोग कौन हैं? ये कहां से आते हैं? और अचानक आप देखते हैं कि इनमें से किसी की गर्दन पर एक छोटा सा क्रास लटक रहा है। हां, धागे से बंधा एक छोटा सा अलुमीनियम का क्रास। आपको आश्चर्य होता है और कुछ राहत का अनुभव भी। इसका यह अर्थ है कि इन लोगों में धर्म में विश्वास करने वाले भी हैं। कितना मार्मिक है! तो कुछ भी भयानक नहीं घटेगा। लेकिन तुरन्त यह "धार्मिक आस्थावान" अपने क्रास और अपने धर्म को झुठलाता हुआ गालियां बकने लगता है (और ये अंशतः रूसी भाषा में गालियां बकते हैं।) और वह दो अंगुलियां, दो फैली हुई अंगुलियां, गुलेल की दो शाखाओं के रूप में फैली हुई अंगुलियां आपकी ओर बढ़ाता है, आपकी आंखों की ओर आगे बढ़ाता है—वह आपको धमकाने भर के लिए एक क्षण को बीच में रुकता नहीं, बल्कि सीधे उन्हें आपकी आंखों में घुसेड़ने लगता है। और इनका यह तरीका इस अभिव्यक्ति का माध्यम बनता है कि "मैं तेरी आंखें नोच कर फेंक दूंगा"। और यही इनके समस्त दर्शन और विश्वास का आधार है। यदि ये आपकी आंखों को ही कीड़ों मकोड़ों की तरह कुचल डालने की ताकत रखते हैं तो आपकी किसी भी वस्तु को वे किस प्रकार छोड़ सकते हैं? वह छोटा क्रास अभी भी झूलता रहता है और आपकी अब तक अनफूटी आंखें इस जंगली दृश्य को देखती रहती हैं और आपकी लोगों को समझने की सारी सूझ-बूझ बेकार सी हो जाती है: इनमें से कौन पहले ही पागल है? और कौन पागल होने जा रहा है?

एक क्षण में, मानव व्यवहार और आचरण के वे समस्त मानदण्ड, रीति-रिवाज और आदतें समाप्त हो जाती हैं, जीवन भर आप जिनके आदी रहे। अपने समस्त पूर्व जीवन में, विशेषकर अपनी गिरफ्तारी से पहले और कुछ सीमा तक इसके बाद भी, कुछ सीमा तक पूछताछ के दौरान भी आपने उन लोगों को शब्दों में सम्बोधित किया और उन्होंने शब्दों में इसका उत्तर दिया। और उन शब्दों के परिणामस्वरूप कुछ क्रियाएं हुईं, कुछ कार्य हुए। कोई व्यक्ति किसी अन्य को अपनी बात से सहमत कर सकता है, अथवा किसी बात से इनकार कर सकता है अथवा किसी बात पर समझौता कर सकता है। विभिन्न मानव सम्बन्ध आप को स्मरण आते हैं—एक अनुरोध, एक आदेश, एक आभार प्रदर्शन। लेकिन यहां आपका सामना जिस स्थिति से होता है, वह इन सब शब्दों के परे है, इन समस्त सम्बन्धों के परे

है। भद्दी थूथनों का एक प्रतिनिधि नीचे उतरता है। यह अक्सर एक दुष्ट लड़का होता है, जिसकी धृष्टता और अभद्रता अत्यन्त घृणा योग्य होती है। और यह छोटा सा राक्षस आपके झोले को खोल लेता है और आपकी जेबों को टटोलने लगता है—यह किसी संदेह या शंका से यह काम नहीं करता, बल्कि इस प्रकार करता है मानो यह सब कुछ उसका अपना हो। बस उस क्षण से, ऐसी कोई भी वस्तु आपकी नहीं रह जाती, जो अब तक केवल आपकी थी। और स्वयं आप भी एक रबड़ का पुतला भर रह जाते हैं, जिसके ऊपर निरर्थक वस्त्र लपेट दिये गए हों और इन वस्त्रों को आसानी से उतारा जा सकता था। आप किसी भी बात को शब्दों में नहीं समझा सकते। किसी भी बात से इनकार नहीं कर सकते। किसी भी बात का निषेध नहीं कर सकते और न ही इस छोटे से धूर्त से अथवा ऊपर के तख्ते से झांक रही उन थूथनों से प्रार्थना ही कर सकते हैं। ये मनुष्य नहीं हैं। एक क्षण में ही यह बात आपके ऊपर प्रकट हो जाती है। बस इनके सम्बन्ध में केवल एक ही काम किया जा सकता है और वह है, इन्हें पीटना। अपनी जबान हिलाने पर समय नष्ट किये बिना ही इन्हें पीटना। इस लड़के को अथवा ऊपर लोटने वाले उन बड़े सांपों को।

लेकिन आप ऊपर लेटे हुये उन तीन को नीचे से कैसे मार सकते हैं? और नीचे आपके सामने जो लड़का है, यद्यपि वह एक बदबूदार बिलौटा भर दिखाई पड़ता है, पर उसे भी घूंसा जमाना ठीक नहीं लगता। शायद उसे आहिस्ता से धकेल देना काफी हो? नहीं, आप यह भी नहीं कर सकते, क्योंकि वह तुरन्त आपकी नाक अपने दांतों से काट कर अलग फेंक देगा अथवा ऊपर बैठे हुये उसके साथी आपका सिर तोड़ डालेंगे (और इन लोगों के पास चाकू भी होते हैं, लेकिन वे आपके ऊपर इन चाकुओं का वार करके इन्हें गन्दा नहीं करना चाहेंगे)।

आप अपने पड़ोसियों, अपने कामरेडों की ओर देखते हैं, हमें इसका प्रतिरोध करना चाहिये या इस पर आपत्ति उठानी चाहिये! लेकिन आपके सब कामरेड, आपकी तरह ही अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत दण्डित आपके अन्य सब साथी, जिन्हें आपके आने से पहले एक-एक करके लूटा जा चुका है, चुपचाप विनम्रतापूर्वक बैठे रहते हैं। अपनी पीठ झुकाये आपसे आगे की ओर देखते रहते हैं क्योंकि आपकी ओर सदा की तरह देखना और भी बुरा लगता है, मानो वहां कोई हिंसा ही न हो रही हो, आपको लूटा न जा रहा हो, मानो यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया हो, मानो यह घास के उगने और वर्षा के बरसने जैसी नैसर्गिक बात हो।

और भद्र पुरुषो, कामरेडो और भाइयो इसका कारण यह है कि हमने उचित समय अपने हाथ से निकल जाने दिया! जिस समय स्त्रूझिस्की ने व्यातका जेल की कोठरी में स्वयं को जिन्दा जला डाला था, और इससे पहले भी, जब आपको "क्रांति विरोधी" घोषित कर दिया गया था, आपको अपना मनोबल नहीं त्यागना चाहिये था और इस बात का स्मरण करना चाहिये था कि आखिर आप लोग क्या हैं।

और इस प्रकार आप चोरों को अपना ओवरकोट उतार लेने देते हैं, अपनी जेब को टटोल लेने और २० रूबल उस स्थान से निकाल लेने देते हैं, जहां उन्हें सी दिया गया था। और आपका झोला तो पहले ही ऊपर फेंका जा चुका है और इसकी हर अच्छी चीज को निकाल लिया गया है। ऐसी प्रत्येक वस्तु को भी आपसे छीन लिया गया है, जो आपकी भावुक पत्नी ने आपको सज़ा सुनाये जाने के बाद आपकी लम्बी यात्रा को ध्यान में रखते हुए

आपके लिये भेजी थी। और वे खाली झोले को वापस नीचे आपके ऊपर फेंक देते हैं...आपके टूथ ब्रश के साथ।

यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार अपने को लुटने नहीं देता था, लेकिन १६३० और १६४० के बाद के वर्षों में ६६ प्रतिशत लोगों ने चुपचाप अपने घुटने टेक दिए।[1] और यह सब कैसे हो सका? जवानों ने, अफसरों ने, सैनिकों ने, मोर्चों पर जूझ चुके सैनिकों ने यह कैसे होने दिया!

साहसपूर्वक प्रहार करने के लिये व्यक्ति को इस लड़ाई के लिये तैयार रहने की आवश्यकता होती है, इसकी प्रतीक्षा में रहने की जरूरत होती है और उसे इसका कारण भी समझना पड़ता है। यहां ये सब परिस्थितियां नदारद थीं। एक ऐसे व्यक्ति ने जो इन चोरों से पूरी तरह अपरिचित था, ऐसी किसी लड़ाई की आशा नहीं की थी और सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि इसकी अत्यन्त आवश्यकता की बात वह समझ ही नहीं पाता था। अब तक वह यही मानता आया था (पर गलत ढंग से) कि उसके एकमात्र शत्रु नीली टोपी वाले हैं। उसे यह सूझ बूझ प्राप्त करने के लिए और अधिक शिक्षा की आवश्यकता थी कि गोदना गुदी छाती वाले नीली टोपी वालों का पिछला हिस्सा भर हैं। नीली टोपी वालों ने कभी भी यह प्रबोधनकारी शब्द नहीं कहे थे : "आज तुम, कल मैं।" नया कैदी स्वयं को एक राजनीतिक कैदी मानना चाहता था—दूसरे शब्दों में वह अपने आपको जनता के पक्ष में मानना चाहता था—जबकि राज्य जनता के विरुद्ध था। और उसी क्षण अचानक उसके ऊपर पीछे से, दोनों ओर से न जाने किस किस्म के तेज अंगुलियों वाले राक्षसों ने हमला बोल दिया और लोगों की विभिन्न श्रेणियां एक दूसरे से बुरी तरह उलझ गईं और स्पष्टता टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गईं। (कैदी को इस बात के निष्कर्ष पर पहुंचने में बहुत लम्बा समय लगेगा कि इन राक्षसों का यह गिरोह सन्तरियों की सांठ-गांठ से काम करता था।)

साहसपूर्वक प्रहार करने के लिये एक व्यक्ति को इस आश्वासन की आवश्यकता होती है कि उसकी पीठ सुरक्षित है, कि दोनों बाजुओं से उसे समर्थन मिलेगा, कि वह ठोस जमीन पर खड़ा हुआ है। ये सब परिस्थितियां अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत दण्डित कैदियों के लिये नदारद थीं। राजनीतिक पूछताछ की कुचल डालने वाली व्यवस्था से गुजरने के बाद, शारीरिक रूप से मनुष्य कुचल दिया जाता था, पूरी तरह से जर्जर हो जाता था। उसे भूखा मारा गया था, उसे सोने नहीं दिया गया था, उसे सजा की कोठरियों में बर्फानी ठंडक में रखा गया था और वह एक पूरी तरह से कुचल डाले गए आदमी की तरह वहां पड़ा रहा था। केवल उसके शरीर को ही नहीं कुचला गया था, उसकी आत्मा को भी कुचल डाला गया था। बारम्बार उसे यही बताया गया था, और उसके समक्ष यह प्रदर्शित भी किया गया था कि उसके विचार, कि जीवन में उसका आचरण और अन्य लोगों से उसके सम्बन्ध निरन्तर गलत रहे हैं और इसके परिणामस्वरूप उसका इस प्रकार सर्वनाश हुआ है। और कानून के इन्जन के कमरे में कैदी को पूरी तरह से निचोड़ लेने के बाद जिस फोक को कैदियों की गाड़ी में फेंक दिया गया था, वह जीवन का लोभ मात्र था और इसमें किसी भी बात को समझने की क्षमता शेष नहीं रह गई थी। सदा सर्वदा के लिए उसे कुचल डालना और सदा सर्वदा के लिए उसे अन्य लोगों से काट कर अलग कर देना—यही अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत पूछताछ का उद्देश्य था। दण्डित कैदी को यह सीखना पड़ता था कि अपने स्वतंत्र जीवन में उसका सबसे बुरा अपराध यह था कि उसने पार्टी के संगठनकर्ता, मजदूर संघ के संगठनकर्ता अथवा

प्रशासन द्वारा निर्देशित संगठन के अलावा अन्य लोगों के साथ मिलने जुलने अथवा संगठन बनाने का जो प्रयास किया वह भयंकरतम अपराध था। जेल में यह भय इस सीमा तक आगे बढ़ गया था कि हर प्रकार का सामूहिक कार्य भयंकरतम लगता था। एक ही शिकायत करने वाले दो स्वर अथवा कागज के एक टुकड़े पर शिकायत के रूप में दो कैदियों के हस्ताक्षर भयावह बात बन चुके थे। अब लड़ाई लड़ने से घबराने वाले और भविष्य में भी काफी समय तक किसी भी प्रकार के सहयोग अथवा एकता से दूर रहने वाले, छद्म राजनीतिक कैदी चोरों के विरुद्ध भी एक होने के लिए तैयार नहीं थे। वे लोग अपने साथ किसी भी प्रकार का हथियार—एक चाकू अथवा मोटा डंडा, स्तोलिपिन डिब्बे अथवा संक्रमण जेल में लाने के लिए तैयार नहीं थे—पहली बात यह थी कि इसकी क्या ज़रूरत है, और किसके विरुद्ध इसकी ज़रूरत होगी ? और दूसरी बात यह थी कि अगर आप इसका इस्तेमाल करते हैं तो आपके अनुच्छेद-५८ की खतरनाक परिस्थितियों को और उग्र बनाने वाले कार्यों को ध्यान में रखते हुए, आपको दोबारा मुकदमा चलाये जाने पर गोली से उड़ाया जा सकता है। तीसरी बात यह थी कि तलाशी के समय यदि आपके पास से चाकू निकल आता है, तो आप को जो सज़ा मिलेगी वह चोर को मिलने वाली सज़ा से एकदम भिन्न होगी। चोर के पास चाकू होना एक गलत आचरण भर था, यह एक परम्परा भर थी, क्योंकि वह इसके अलावा अन्य कुछ जानता भी नहीं था। लेकिन आपके पास चाकू होने का अर्थ था "आतंकवाद"।

इसके अलावा, अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत गिरफ्तार अनेक लोग शांतिप्रिय लोग थे (अक्सर ये वयोवृद्ध और बीमार भी होते थे) और इन्होंने अपने पूरे जीवन में शब्दों से काम चलाया था, मुक्केबाजी से नहीं। और वे आज भी इसके लिए तैयार नहीं थे।

चोरों को कभी भी राजनीतिक कैदियों की तरह पूछताछ का सामना नहीं करना पड़ा था। केवल दो बैठकों में उनकी पूछताछ पूरी हो जाती थी। इनका आसान मुकदमा होता था और आसान सज़ा सुनाई जाती थी। इन्हें अपनी सज़ा की पूरी अवधि में जेल या शिविर में रहने की आवश्यकता नहीं थी। इन्हें सज़ा पूरी होने से पहले ही रिहा कर दिया जायेगा : इन लोगों को क्षमादान दे दिया जाएगा अथवा ये भाग निकलेंगे।[7] पूछताछ के दौरान भी किसी चोर को कभी भी बाहर से पार्सल प्राप्त करने से वंचित नहीं किया गया—उसके गिरोह के साथी अपने लूट के हिस्से में से बड़े-बड़े पार्सल भेजते रहते थे। वह कभी दुर्बल नहीं हुआ, एक दिन भी उसे कमजोरी का सामना नहीं करना पड़ा और शिविरों की यात्रा के दौरान वह निर्दोष गैर-चोरों से लूटकर खूब खाना खाता। जिन्हें वह अपनी खास शब्दावली में फ्रेएरा[8]—"निर्दोष" अथवा "बेवकूफ"। दंडसंहिता के दो अनुच्छेद चोरों और लुटेरों पर लागू होते थे। उससे चोर भयभीत नहीं होता था, बल्कि इसके विपरीत वह इनके अन्तर्गत दण्डित होने पर गर्व करता था। और इस गर्व में उसे नीले कंधों के फीतों और नीली डोरी वाले सब प्रमुख अफसरों से उसे समर्थन मिलता था। "ओह, यह कुछ भी नहीं है। यद्यपि तुम एक लुटेरे और हत्यारे हो, पर तुम मातृभूमि के द्रोही नहीं हो, तुम हमारे अपने आदमी हो; तुम सुधर जाओगे।" दंडसंहिता के चोरों से सम्बन्धित अनुच्छेदों में कोई भी धारा-११—संगठन सम्बन्धी—नहीं थी। चोरों को संगठन बनाने का निषेध नहीं किया गया था। और किया भी क्यों जाये ? इन लोगों में सामूहिक रूप से रहने और कार्य करने की वह भावना विकसित होने दी जानी चाहिये, जिसकी हमारे समाज को अत्यन्त आवश्यकता है। इन लोगों से हथियार छीन लेना खिलवाड़ भर था। इन लोगों को हथियार रखने के लिए

सज़ा नहीं दी जाती थी। इन चोरों के कानून का सम्मान किया जाता था ("ये लोग और हो भी क्या सकते हैं")। और जेल की कोठरी में एक और हत्या से एक हत्यारे की सजा की अवधि में वृद्धि नहीं हो सकती, बल्कि इससे उसे और शाबाशी मिलेगी।

और ये सब बातें बहुत दूरगामी बनीं, इनका बहुत गहरा प्रभाव हुआ। पिछली शताब्दी की साहित्यिक रचनाओं में अत्यन्त निर्धन और अपराधपूर्ण प्रवृत्ति वाले सर्वहारा वर्ग की आलोचना केवल अनुशासन के अभाव और कुछ मनमाना आचरण करने के लिए ही की गई थी। और स्तालिन सदा चोरों के प्रति पक्षपात बरतता था—आखिरकार, किन लोगों ने स्तालिन के लिए बैंकों को लूटा था? सन् १९०१ में स्तालिन के साथियों ने पार्टी के भीतर और जेल में यह आरोप लगाया था कि वह अपने राजनीतिक शत्रुओं के विरुद्ध सामान्य अपराधियों का इस्तेमाल करता है। सन् १९२० के बाद के वर्षों से आभारपूर्ण शब्द "सामाजिक साथी" का बड़े पैमाने पर प्रयोग होने लगा। यही दृष्टिकोण मकारेंको का भी था: इन लोगों को सुधारा जा सकता है। मकारेंकों के अनुसार, अपराध का मूल पूरी तरह से "क्रांति विरोधी गुप्त गिरोहों" में निहित है।[९] (केवल इंजीनियरों, पादरियों, समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी के सदस्यों और मेनशेविकों को सुधारा नहीं जा सकता था।)

और यदि कोई रोकने वाला न हो तो वे चोरी क्यों न करें? सन्तरियों की सांठ-गांठ से काम करने वाले तीन या चार उद्दण्ड चोर कई दर्जन भयभीत और डरपोक छद्म राजनीतिक कैदियों के ऊपर अपना आधिपत्य जमा सकते थे।

प्रशासन की सहमति से। प्रगतिशील सिद्धान्त के आधार पर।

यदि लोगों ने चोरों को घूंसे मार-मारकर नहीं खदेड़ा तो लुटने वाले लोगों ने कम से कम इनकी शिकायत क्यों नहीं की? आखिरकार, गलियारे में जरा सी आवाज़ भी सुनी जा सकती थी और गारद का एक संतरी डिब्बे के गलियारे में इधर-उधर धीरे-धीरे चक्कर लगाता रहता था।

हां, यह एक अच्छा प्रश्न है! प्रत्येक आवाज़ और प्रत्येक शिकायत भरे स्वर को बाहर सुना जा सकता था और सन्तरी गलियारे में निरन्तर चक्कर लगाता रहता था—तो वह हस्तक्षेप क्यों नहीं करता था? उससे केवल एक गज़ दूर कम्पार्टमेंट की अर्द्धअन्धियारी गुफा में, वे लोग एक मनुष्य को लूट रहे हैं, तो सरकारी पुलिस का सिपाही हस्तक्षेप क्यों नहीं करता था?

ठीक उसी कारण से: उसे भी यह आचरण करने का पाठ पढ़ाया जा चुका है।

इससे भी अधिक: अनेक वर्षों से चोरों का पक्ष लेते रहने के बाद गारद के सन्तरी स्वयं इनकी दिशा में आगे बढ़ गए। स्वयं गारद चोर बन गई।

सन् १९३५ से सन् १९४५ तक की दस वर्ष की अवधि में चोरों द्वारा खुल्लम-खुल्ला बदमाशियां करने और राजनीतिक कैदियों को भयंकर रूप से सताने के बावजूद कोई भी व्यक्ति एक ऐसा उदाहरण नहीं दे सकता कि गारद के किसी सन्तरी ने किसी कोठरी में, रेल के डिब्बे में अथवा किसी ब्लैक मारिया में लूटे जा रहे किसी राजनीतिक कैदी को बचाया हो। लेकिन राजनीतिक कैदी आपको ऐसे असंख्य उदाहरण बता सकते हैं, जिनमें गारद के सन्तरियों ने चोरों से चोरी का माल लिया और इसके बदले उनके लिए वोदका शराब, खाने की बढ़िया चीजें और तम्बाकू लाकर दिया। ये उदाहरण इतने बड़े हैं कि इनकी विशिष्टता नहीं रह जाती।

आखिरकार गारद के सार्जेन्ट के पास भी कुछ नहीं होता : उसके पास एक बंदूक होती है, ओवरकोट का पुलिंदा होता है, खाना खाने का डिब्बा होता है और उसे एक सैनिक का राशन मिलता है। उससे यह अपेक्षा करना बड़ी क्रूरता होगी कि वह जनता के एक ऐसे शत्रु को अपने पहरे में ले जाये जिसके पास एक महंगा ओवरकोट हो अथवा बढ़िया चमड़े के जूते हों अथवा शहरों में मिलने वाला बढ़िया सामान हो—और वह इस असमानता को चुपचाप बर्दाश्त कर ले। क्या इन चीजों को छीन लेना वर्ग संघर्ष का एक अन्य रूप नहीं होगा? और संघर्ष के अन्य मानदण्ड क्या हो सकते थे?

सन् १९४५-४६ में जब कैदी लोग अन्य कहीं से नहीं बल्कि यूरोप से ही आ रहे थे और उन्होंने ऐसे कपड़े पहन रखे थे तथा अपने झोलों में ऐसी चीजें भर रखी थीं, जिनके बारे में रूस में हमने सुना भी नहीं था, तो गारद के अफसरों के लिए भी अपने ऊपर नियंत्रण रख पाना सम्भव नहीं होता था। उनकी सेवा ही ऐसी थी कि वे मोर्चे पर नहीं जा सके, लेकिन युद्ध के अन्त में इस कारण से वे लूट के माल से भी वंचित रह गए—और मैं आपसे पूछता हूं कि क्या यह न्यायोचित था?

और इस कारण से, इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, गारद विधिवत् चोरों और राजनीतिक कैदियों को स्तोलिपिन रेलडिब्बे के प्रत्येक कम्पार्टमेंट में मिला देती थी। यह इसलिए नहीं किया जाता था कि अन्यन्त्र इनके लिए जगह की कमी थी। यह काम जल्दबाजी के कारण भी नहीं होता था। इसका कारण केवल लालच था। और चोरों ने इन्हें निराश भी नहीं किया : इन्होंने ऊदबिलावों[१०] अर्थात् अमीर कैदियों से सब कुछ छीन लिया और इसके बाद यह माल गारद के सन्तरियों के सूटकेसों में पहुंच गया।

यदि ऊदबिलावों को स्तोलिपिन रेलडिब्बों में लाद दिया जाये और रेल गाड़ी चल रही हो और वहां कोई चोर भी न हो—चोरों को इसमें चढ़ाया न गया हो तो क्या किया जा सकता है? यदि उस दिन चोरों को कैदियों की गाड़ी में और बीच के स्टेशनों पर भी न चढ़ाया जा रहा हो तो क्या होगा? यह हो सकता था और हुआ—ऐसे अनेक मामलों की जानकारी है।

सन् १९४७ में वे लोग मास्को से व्लादिमिर केन्द्रीय जेल में विदेशियों की एक टोली को ले जा रहे थे, जिनके पास बहुत बढ़िया माल था—जैसे ही उनके सूटकेस खोले गए थे यह बात स्पष्ट हो गई थी। तभी, उसी क्षण से स्वयं गारद के सन्तरियों ने रेल के डिब्बे में ही विधिवत् उनका सामान छीनना शुरू कर दिया। कोई चीज हाथ से न निकल जाए, इसलिए कैदियों को अपने कपड़े उतारने के लिए, एकदम नंगा हो जाने के लिए बाध्य किया गया। इसके बाद इन्हें पाखाने के पास फर्श पर बैठा दिया गया और इनके माल को जांच परख कर सन्तरी लोग उठा ले गए। लेकिन गारद के सन्तरी यह ध्यान रखने में चूक गए थे कि वे लोग इन कैदियों को शिविर में नहीं, बल्कि एक सच्ची जेल में ले जा रहे हैं। जेल में पहुंचने पर, आई० ए० कोर्नेएव ने एक लिखित शिकायत भेजी और उसमें रेल गाड़ी में जो कुछ हुआ था उसका ठीक-ठीक विवरण दिया। उन लोगों ने इस खास गारद को ढूंढ निकाला और सन्तरियों के सामान की तलाशी हुई। कुछ चीजें मिल गईं और उन्हें इनके मालिकों को लौटा दिया गया और जिन कैदियों का सामान नहीं मिला, उन्हें धन के रूप में मुआवजा दिया गया। उन लोगों का कहना है कि गारद के सन्तरियों को दस से पन्द्रह वर्ष तक की कैद की सजा मिली। लेकिन, यह एक ऐसी बात है जिसकी पुष्टि नहीं की जा सकती।

पर यदि उन्हें सजा भी दी गई हो तो दंड संहिता के किसी गैर-राजनीतिक अनुच्छेद के अन्तर्गत ही दी गई होगी और उन्हें जेल में अधिक समय नहीं बिताना पड़ा होगा।

पर यह एक असाधारण मामला था और यदि गारद का प्रमुख अफसर समय रहते अपने लालच पर अंकुश लगा लेता तो वह इस निष्कर्ष पर पहुंच सकता था कि इस मामले में न फंसना ही बेहतर होगा। और यहां एक दूसरा, कम जटिल मामला है, जिससे सम्भवत: यह स्पष्ट होता है कि यह घटना अक्सर होती थी। अगस्त १९४५ में मास्को-नोवोसीबिर्स्क स्तोलिपिन रेलडिब्बे में (जिसमें ए० सूसी को ले जाया जा रहा था) यह पता चला कि कैदियों में कोई भी चोर मौजूद नहीं है। यह यात्रा बड़ी लम्बी थी और उन दिनो स्तोलिपिन रेलडिब्बे बहुत धीमी रफ्तार से चलते थे। बिना किसी जल्दबाजी के कुछ समय बाद, गारद के मुखिया ने कैदियों की तलाशी का हुक्म दिया—एक-एक कैदी को अपना सामान लेकर डिब्बे के गलियारे में बुलाया गया। जिन कैदियों को बुलाया गया, उन्हें जेल के नियमों के अनुसार अपने सब कपड़े उतारने पड़ते थे। लेकिन तलाशी का उद्देश्य यह नहीं था, क्योंकि तलाशी के बाद प्रत्येक कैदी को उसके ठसाठस भरे कम्पार्टमेंट में वापस भेज दिया जाता था और किसी भी चाकू को अथवा निषिध वस्तु को कैदी एक के बाद एक को देते रह सकते थे। तलाशी का वास्तविक उद्देश्य कैदियों के व्यक्तिगत सामान को जांचना था—उन्होंने कैसे कपड़े पहन रखे हैं और उनके झोलों में क्या है—और वहीं, झोलों के बराबर इस लम्बी और ऊबा देने वाली तलाशी की पूरी अवधि में गारद का मुखिया, जो एक अफसर था, लगातार दम्भ से भरा हुआ खड़ा रहा। उसके बराबर उसका सहायक, सार्जेंट खड़ा हुआ था। पापपूर्ण लालच एकदम बाहर निकल आना चाहता था लेकिन उस अफसर ने उपेक्षा के नाटक के पीछे इसे छिपाए रखा। यह एक ऐसा ही मामला था, मानो कोई लम्पट बूढ्ढा छोटी-छोटी लड़कियों को देखना चाहे, लेकिन बाहरी लोगों की मौजूदगी के कारण उलझन में फंस जाये—हां, और स्वयं लड़कियों की मौजूदगी के कारण भी। और उनकी समझ में यह बात न आए कि वह आगे क्या करे। उसे कुछ चोरों की सख्त जरूरत थी। लेकिन रेलडिब्बे में चोर नहीं थे।

रेलगाड़ी में चोर नहीं थे, लेकिन कैदियों में कुछ ऐसे लोग मौजूद थे, जो जेल के चोरों से व्याप्त वातावरण में रह कर दूषित हो चुके थे। आखिरकार, चोरों का उदाहरण बड़ा शिक्षाप्रद है और इसका अनुकरण करने का प्रोत्साहन मिलता है। इससे यह प्रकट होता है कि जेल में जीवन यापन का एक सरल तरीका भी है। एक कम्पार्टमेंट में दो हाल के अफसर मौजूद थे—सानिन (नौसेना का था) और मेरेझकोव। इन दोनों को अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत सजा मिली थी लेकिन इनके विचार अब तक बदल चुके थे। सानिन ने, मेरेझकोव के समर्थन से स्वयं को कम्पार्टमेंट का मानिटर घोषित कर दिया और गारद के सन्तरी की मार्फत गारद के बड़े अफसर से मुलाकात का अनुरोध किया। (वह गारद के अफसर के दम्भ की असलियत और उसकी दगाल की आवश्यकता को भांप गया था।) यह बात अकल्पित थी, लेकिन सानिन को बुलाया गया और कहीं उन लोगों की बातचीत हुई। सानिन के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, दूसरे कम्पार्टमेंट में किसी व्यक्ति ने मुलाकात की मांग की और इस आदमी को भी इसी प्रकार बुलाया गया।

अगले दिन सुबह उन लोगों ने बीस औंस रोटी—कैदियों की रेलगाड़ियों में यही राशन दिया जाता था—नहीं बांटी, बल्कि मुश्किल से नौ औंस रोटी दी।

रोटी का राशन बंटने के बाद कैदियों में धीरे-धीरे फुसफुसाहट शुरू हुई। यह फुस-फुसाहट थी, पर "सामूहिक कारवाई" के भय से इन राजनीतिक कैदियों ने आवाज़ नहीं उठाई। केवल एक कैदी ने रोटी बांटने वाले सन्तरी से ऊंची आवाज़ में पूछा : "मुखिया नागरिक ! इस राशन का कितना वज़न है ?"

"सही वजन है," उसे बताया गया।

"मैं इसे दोबारा तोलने की मांग करता हूं; अन्यथा मैं इसे न लूंगा।" असंतुष्ट कैदी ने ऊंची आवाज में घोषणा की।

पूरा रेलडिब्बा स्तब्ध हो गया। बहुत से कैदी अपना राशन खाना शुरू करने से पहले रुके और यह प्रतीक्षा करने लगे की उनके राशन को भी तोला जाएगा और उसी क्षण एकदम स्वच्छ और साफ-सुथरे वस्त्रों में अफसर आ धमका। प्रत्येक कैदी मौन हो गया। और इस मौन के कारण अफसर के शब्द और भी भारी तथा महत्वपूर्ण बन गए।

"यहां किस आदमी ने सोवियत सरकार के खिलाफ आवाज उठाई है ?" सब दिलों की धड़कन रुक गई। (लोग यह कहेंगे कि यह तो सार्वभौम तरीका है। बाहर स्वतन्त्रता में भी छोटे से छोटा अफसर अपने आपको सोवियत सरकार घोषित करता है और जरा आप इस सम्बन्ध में उससे तर्क करने की तो कोशिश करें। लेकिन उन लोगों के लिए जो पहले से ही भयभीत हैं, जिन्हें अभी हाल में सोवियत विरोधी प्रचार के अभियोग पर सजा सुनाई गई है, यह धमकी और भयावह हो उठती है।)

"यहां कौन रोटी के राशन पर विद्रोह भड़का रहा था ?" अफसर ने पूछा।

"नागरिक लैफ्टिनेंट, मैं केवल यह चाहता था......" दोषी विद्रोही अब अपनी बात को स्पष्ट करके पीछे हट जाना चाहता था।

"तो तू है हरामजादे ? तू ही तो सोवियत सरकार को पसन्द नहीं करता ?"

(और विद्रोह क्यों करें ? तर्क क्यों करें ? क्या इस कम राशन को खा लेना सच-मुच कहीं अधिक आसान नहीं था, चुपचाप इस बात को बर्दाश्त कर लेना अधिक सरल नहीं था ? और अब वह पूरी तरह से इसमें फंस गया था।)

"तू बदबूदार विष्टा ? तू क्रांति विरोधी बदमाश ! तुम्हें तो फांसी पर लटका दिया जाना चाहिए था और तुम यह मांग करने का साहस दिखा रहे हो कि रोटी के राशन को दोबारा तोला जाए ? चूहे कहीं के—सोवियत सरकार तुझे खाना देती है और तेरी यह हिम्मत कि तू असंतोष प्रकट करे ? क्या तुझे मालूम है कि तेरे लिए इस बात का क्या नतीजा होगा ?"

सन्तरी को हुक्म देते हुए : "इसे बाहर निकालो !" ताले के खुलने की आवाज होती है। "चलो, बाहर निकलो ! अपने हाथ पीठ के पीछे रखो !" और वे लोग उस अभागे को बाहर निकाल लेते हैं। "और किसे असंतोष है ? और कौन अपने रोटी के राशन को फिर तुलवाना चाहता है ?"

(और आप किसी भी हालत में कुछ भी प्रमाणित नहीं कर सकते। यह कभी भी नहीं हो सकता कि वह लैफ्टिनेंट की बात के मुकाबले आपकी बात माने। चाहे आप कहीं भी यह शिकायत क्यों न करें कि आपको बीस औंस के स्थान पर केवल नौ औंस रोटी ही मिल रही है।)

एक ऐसे कुत्ते को जिसकी कसकर पिटाई हो चुकी हो चाबुक दिखाना काफी होता

है। शेष सब लोग संतुष्ट ही बने रहे और इस प्रकार यात्रा की पूरी अवधि में दण्ड स्वरूप दिया जाने वाला यह राशन यथावत् मिलता रहा। और उन लोगों ने चीनी देनी भी बन्द कर दी। गारद ने यह चीनी स्वयं हड़प ली थी।

(और यह घटना हमारी दो महान् विजयों—जर्मनी और जापान पर विजयों—ऐसी विजयों के बीच की गर्मियों में हुई, जो हमारी पितृभूमि के इतिहास को अलंकृत करती रहेंगी और जिनके बारे में हमारे पोते और पड़पोते स्कूल में जानकारी हासिल करेंगे।)

कैदी पहले एक दिन और फिर दूसरे दिन भी भूखे रहे और इस बीच इनमें से कुछ सचमुच अधिक बुद्धिमान दिखाई पड़ने लगे और सानिन ने अपने कम्पार्टमेंट के कैदियों से कहा : "देखो, साथियो; यदि हम इसी तरीके से चलते रहे तो सब कुछ खो जायेगा। आप लोगों में से जिस जिसके पास कुछ अच्छा सामान है उसे वह निकाल लेना चाहिए और कुछ खाने की चीजों के बदले इस सामान को बेच डालना चाहिए।" अत्यन्त आत्मविश्वास से उसने कैदियों द्वारा प्रस्तुत कुछ चीजों को स्वीकार किया और कुछ को अस्वीकार कर दिया। (सब कैदी अपना अच्छा सामान हाथ से निकाल देने को तैयार नहीं थे—और जैसा कि आप स्वयं देख रहे हैं किसी ने उन्हें इस काम के लिए बाध्य भी नहीं किया था।) और इसके बाद उसने तथा मेरेझकोव ने कम्पार्टमेंट से बाहर जाने की अनुमति मांगी और गारद ने सचमुच उन्हें डिब्बे से बाहर निकाला, जो बड़ी विचित्र बात थी। कैदियों का सामान लेकर वे लोग गारद के सन्तरियों के डिब्बे की ओर आगे बढ़े और कटी हुई रोटी तथा माखोरका तम्बाकू लेकर वापस लौट आए। कैदियों के रोजमर्रा के राशन से जो ग्यारह औंस रोटी काट ली जाती थी यह वही थी। अब इस रोटी को समान रूप से नहीं बांटा गया। रोटी केवल उन्हीं लोगों को दी गई जिन्होंने अपना सामान दिया था।

और यह बात बड़ी उचित भी थी : आखिरकार, उन सब लोगों ने यह बात स्वीकार की थी कि वे रोटी के घटे हुए राशन से संतुष्ट हैं। यह बात भी उचित थी कि आखिरकार जिन कैदियों ने अपना सामान दिया था उन्हें अपने सामान की कीमत मिलनी चाहिए थी। और लम्बे विचार की दृष्टि से यह भी उचित था कि जो कीमती चीजें कैदियों ने यहां दे डाली थीं वे अधिक समय तक उनके पास न रहतीं। शिविरों में उन्हें किसी न किसी प्रकार अवश्य ही चुरा लिया जाता।

माखोरका तम्बाकू सन्तरियों का था। सैनिकों ने अपने बहुमूल्य तम्बाकू में कैदियों से हिस्सा बटाया और यह बात उचित भी थी क्योंकि आखिरकार इन लोगों ने कैदियों की रोटी खाई थी और उनकी चीनी को चाय और शरबत में पिया था। आखिरकार शत्रुओं को इतनी बहुमूल्य वस्तु कैसे दी जा सकती थी और अंततः यह बात भी पूरी तरह से उचित थी कि सानिन और मेरेझकोव ने रोटी और तम्बाकू का सबसे बड़ा हिस्सा अपने पास रखा था यद्यपि उन्होंने अपनी कोई चीज नहीं दी थी—आखिरकार उनके बिना यह व्यवस्था कैसे की जा सकती थी।

और इस प्रकार वे लोग अर्द्ध-अन्धकार में ठसाठस बैठे रहे और कुछ ने अपने पड़ोसियों की रोटी के टुकड़ों में हिस्सा बटाया और उनके कुछ पड़ोसी चुपचाप बैठे हुए उन्हें इस प्रकार रोटी खाते हुए देखते रहे। गारद केवल सामूहिक रूप से धूम्रपान की ही अनुमति देती थी। प्रति दो घंटे के यह बाद अनुमति मिलती थी और पूरा डिब्बा धुएं से इस प्रकार भर जाता था मानो इसमें आग लग गई हो। पहले जिन लोगों ने अपनी कीमती चीजें

नहीं दी थीं अब वे इस बात पर पश्चाताप कर रहे थे कि उन्होंने सानिन को ये चीजें क्यों नहीं दे डाली थीं। पर सानिन बोला कि अब वह बाद में उनकी चीजें लेगा।

यह पूरी प्रक्रिया इतनी अच्छी तरह से और इतने प्रभावशाली ढंग से नहीं हो सकती थी यदि रेलगाडियां इतनी धीमी रफ्तार से न चलती होतीं इसका श्रेय युद्ध के तुरन्त बाद के वर्षों की अत्यन्त धीमी गति से चलने वाली रेल गाड़ियों और उनमें लगे और भी धीमी गति से चलने वाले स्तोलिपिन रेल डिब्बों को है जिन्हें अनेक स्थानों पर एक रेल गाड़ी से काट कर दूसरी रेल गाड़ी में जोड़ा जाता और इस प्रकार इन्हें स्टेशनों पर काफी प्रतीक्षा करनी पड़ती और इसके साथ ही यह तथ्य भी स्पष्ट है कि यदि युद्ध के तुरन्त बाद की यह अवधि न होती तो लालच उत्पन्न करने वाली वे वस्तुएं भी कैदियों के पास मौजूद न होतीं। उनकी रेल गाड़ी को कुइबाईशेव पहुंचने में एक सप्ताह का समय लगा और इस पूरे सप्ताह भर उन्हें केवल नौ औंस रोटी ही प्रतिदिन मिली। (पर यह बात निश्चित है कि नाजियों द्वारा लेनिनग्राद के घेरे की अवधि में लेनिनग्राद के लोगों को लो राशन दिया गया था यह उससे दुगना था।) और इसके अलावा उन्हें कास्पियन समुद्र की सुखाई हुई कार्प मछली और पानी भी मिलता था। उन्हें अपनी रोटी का शेष राशन प्राप्त करने के लिए अपना व्यक्तिगत सामान देने के लिए बाध्य होना पड़ा था। और जल्दी ही यह स्थिति आ गई कि मांग से अधिक यह सामान पेश किया जाने लगा और गारद के सन्तरी और अधिक सामान लेने में कुछ हील-हुज्जत करने लगे। अब वे बहुत बढ़िया माल ही लेना चाहते थे।

कैदियों को कुइबाईशेव की संक्रमण जेल में पहुंचाया गया। इसमें इन्हें नहाने की अनुमति दी गई और फिर वापस उसी स्तोलिपिन रेलडिब्बे में पहुंचा दिया गया। लेकिन इस बार गारद नई थी। लेकिन इस नई गारद को कार्यभार सौंपते समय पिछली गारद ने जैसा कि स्पष्ट था, यह बता दिया था कि किस प्रकार कैदियों को दुहा जा सकता है। और नोवोसीबिर्स्क पहुंचने तक कैदियों को अपने रोटी के राशन के शेष हिस्से को प्राप्त करने के लिए उसी प्रकार अपनी कीमती चीजें देनी पड़ीं जिस प्रकार किसी बन्धक को छुड़ाने के लिए धन देना पड़ता है। (यह समझना बड़ा आसान है कि संक्रामक प्रयोग की छूत सन्तरियों की पलटनों में किस प्रकार फैल गई होगी और दूसरे सन्तरियों ने भी किस प्रकार यह काम शुरू कर दिया होगा।)

और जब नोवोसीबिर्स्क में दो रेल पटरियों के बीच इन कैदियों को धरती पर उतारा गया तो कोई नया अफसर आया और उनसे बोला : "क्या गारद के खिलाफ कोई शिकायत है?" और सब कैदी इतनी उलझन में पड़े हुए थे कि किसी ने भी इसका उत्तर नहीं दिया।

पहली गारद के मुखिया ने सचमुच बड़े सटीक ढंग से यह अनुमान लगा लिया था कि यह रूस है!



स्तोलिपिन रेलडिब्बे के यात्री शेष रेल गाड़ी के यात्रियों से इस बात में भी भिन्न होते हैं कि उन्हें यह मालूम नहीं होता कि उनकी रेल गाड़ी कहां जा रही है और वे किस स्टेशन पर उतरेंगे। आखिरकार, उनके पास टिकट नहीं होते और वे रेल डिब्बों के ऊपर

बने मार्ग के चिन्हों को नहीं समझ सकते। मास्को में, कभी-कभी कैदियों को स्टेशन के प्लेटफार्म से इतनी दूर डिब्बों में चढ़ाया जाता है कि कैदियों के बीच मौजूद स्वयं मास्को निवासी भी यह नहीं समझ पाते कि मास्को के आठ स्टेशनों में से वे किस स्टेशन पर हैं। घंटों तक कैदी लोग गन्दगी में ठसाठस भरे बैठे रहते हैं और बदबू के मारे उनका बुरा हाल होता है और उनकी यह प्रतीक्षा उस समय तक जारी रहती है जब तक कोई रेल इंजन उन्हें किसी गाड़ी से जोड़ नहीं देता। अन्ततः यह इंजन आता है और कैदियों के डिब्बे को पहले से तैयार खड़ी रेल गाड़ी से जोड़ देता है। यदि गर्मियों का मौसम हो तो स्टेशन पर लगे लाउडस्पीकरों की आवाज़ सुनी जा सकती है : "मास्को से ऊफा की रेल गाड़ी तीसरे प्लेटफार्म से रवाना हो रही है। मास्को से ताशकन्द की गाड़ी अभी भी प्लेटफार्म नम्बर एक पर खड़ी है......"इसका यह अर्थ होता है कि यह कजान स्टेशन है और जो लोग द्वीपसमूह के भूगोल से परिचत होते हैं वे अपने कामरेडों को समझाते हैं कि जब वोरकुता और पेचोरा का सवाल नहीं उठता : वे लोग यारोस्लावल स्टेशन से रवाना होते हैं और तब कीरोव और गोर्की शिविरों[11] में पहुंचने का भी सवाल नहीं रह जाता। वे लोग कैदियों को मास्को से बाइलोरूस, यूक्रेन, अथवा काकेशस किसी भी हालत में नहीं भेजते। वहां स्वयं अपने लोगों के लिए ही जगह नहीं होती। आइए, आइए कुछ और घोषणाएं सुनें। ऊफा के लिए रेल गाड़ी रवाना हो गई है और हमारी रेल गाड़ी जहां की तहां खड़ी है। ताशकन्द की गाड़ी भी चल चुकी है और हम अभी भी जहां के तहां खड़े हैं। "मास्को से नोवोसीबिस्क की गाड़ी रवाना हो रही है। जो लोग यात्रियों को विदा देने आए हैं उन्हें रेल गाड़ी से नीचे उतर आना चाहिए.........सब यात्री अपना-अपना टिकट दिखायें........." हम रवाना हो गए हैं। हां, हमारी रेल गाड़ी चल पड़ी है। और इससे क्या पता चलता है? अब तक कुछ नहीं। मध्य बोलगा क्षेत्र अभी भी खुला है और दक्षिण यूराल क्षेत्र भी। और कजाकिस्तान भी खुला है, जहां भेजकाजगान की ताम्बे की खानें मौजूद हैं और ताइशेत भी है, जहां क्रियोसोट का कारखाना है, जिसमें रेल गाड़ियों के उपयोग का सामान बनता है। (कैदियों का कहना है कि क्रियोसोट त्वचा और हड्डियों को बध जाता है और इसकी भाप फेफड़ों में भर जाती है—और इसका अर्थ होता है मृत्यु)। पूरा साइबेरिया भी अभी हमारे सामने उन्मुक्त पड़ा है—हम सोवेतस्काया गवान तक आगे जा सकते हैं। कोलिमा भी। और नोरीलस्क भी।

और अगर सर्दियों का मौसम होता है तो डिब्बे एकदम बन्द होते हैं और लाउडस्पीकरों की आवाज़ सुनाई नहीं पड़ती। यदि गारद के सन्तरी अपने आदेशों का पालन करें तो आपको उनकी फुसफुसाहट तक से यह आभास नहीं मिलेगा कि आप किस रास्ते से जा रहे हैं। और इस प्रकार हम आगे बढ़ते हैं तथा दूसरे शरीरों के अंग प्रत्यंगों से उलझ कर रेलगाड़ी के पहियों की आवाज़ के संगीत को सुनते हुये सो जाते हैं और हमें इस बात की जानकारी नहीं होती कि कल सुबह हम खिड़की की झिर्रियों से कोई जंगल देखेंगे अथवा पहाड़ का ढलान। गलियारे की खिड़की से, बीच के तख्ते पर लेटे हुये खिड़की पर लगी लोहे की सलाखों की झिर्रियों से, गलियारे और इसके बाद दोहरे खिड़की के शीशों से, और इसके बाद लगी एक और जाली से आप अभी भी सिगनल के खम्बे और बाहर का दृश्य देख सकते हैं। अगर खिड़कियों के शीशों पर बर्फ नहीं जम गई है तो यदा-कदा आपको कुछ स्टेशनों का नाम पढ़ लेने में सफलता मिल सकती है। आपको एवसीउन्नीनो अथवा उन्दोल जैसा नाम

पढ़ने में कामयाबी हासिल हो सकती है। ये कौन से स्टेशन हैं? डिब्बे में मौजूद कोई भी व्यक्ति नहीं जानता। यदा कदा सूर्य की स्थिति से आप यह अनुमान लगा सकते हैं कि आप उत्तर की ओर जा रहे हैं अथवा पूर्व की ओर। अथवा तूफानोवो नामक किसी स्थान पर वे आपके डिब्बे में किसी अत्यन्त दुर्बल गैर-राजनीतिक अपराधी को धकेल सकते हैं और वह आपको यह बता सकता है कि उसे मुकदमे की सुनवाई के लिये दानीलोव ले जाया जा रहा है और वह इस बात से भयभीत है कि शायद उसे दो साल की कैद की सजा सुना दी जाये। इस प्रकार आपको पता चलेगा कि उस रात आप यारोस्लावल को पार कर चुके हैं! जिसका यह अर्थ होता है कि आपके मार्ग पर पहली संक्रमण जेल वोलोग्दा होगी। और डिब्बे में मौजूद कोई सर्वज्ञानी व्यक्ति अत्यन्त उदासीनता से भर कर और वोलोग्दा को बहुत लम्बा खींचते हुए यह घोषणा करेगा : "वोलोग्दा की गारद के सन्तरी मजाक नहीं करते!"

सामान्य दिशा का पता लगा लेने के बाद भी आपको कुछ भी पता नहीं चल पाता : आपके मार्ग पर संक्रमण जेलों के झुंड के झुंड मौजूद हैं और आपको इनमें से किसी भी जेल से किसी भी दिशा में भेजा जा सकता है। आपको उखता अथवा इन्ता अथवा वोरकुता पसंद नहीं है। तो क्या आप यह समझते हैं कि निर्माण योजना ५०१—उत्तर साइबेरिया के आर-पार टुंड्रा के इलाके में रेल पटरी बिछाने की योजना—कुछ अधिक बेहतर है? यह अन्य किसी भी स्थान और कार्य से बुरी है।

युद्ध के पांच वर्ष बाद जब कैदियों की लहरें अन्ततः नदियों के तटों के बीच स्थिर हो गई थीं (अथवा यह भी हो सकता है कि उन्होंने केवल एम० वी० डी० के कर्मचारियों में ही वृद्धि की हो?) मन्त्रालय ने लाखों मामलों का निपटारा किया और प्रत्येक दण्डित कैदी के साथ एक मोहरबन्द लिफाफा भेजा जाने लगा जिसमें कैदी के मामले की फाईल होती थी और लिफाफे में बने एक छेद से कैदी को ले जाने के रास्ते और गंतव्य का उल्लेख भर होता था। यह गारद के लिए होता था (और गारद से इससे अधिक जानने की अपेक्षा नहीं थी क्योंकि हो सकता है कि कैदी की फाइल में कोई ऐसा विवरण हो जिसका बुरा असर पड़ सके)। तो यदि आप अपने डिब्बे में बीच के तख्ते पर लेटे हुये हों और गारद का सारजेंट बिल्कुल आपके बराबर रुक जाये और आपका मुंह नीचे की ओर हो और आप उल्टे अक्षर पढ़ सकते हों तो आप बहुत तेजी से यह पढ़ सकते हैं कि किसी को कनियाज—पोगोस्त ले जाया जा रहा है और स्वयं आपको कारगोपोल भेजा जा रहा है।

तो अब और चिन्ताएं शुरू हो जाएंगी। कारगोपोल शिविर कैसा है? किसी ने कभी इसका नाम सुना है? वहां सामान्यतया कैदियों को कैसा काम दिया जाता है? (कुछ ऐसे सामान्य कार्य होते थे जो कैदियों की मृत्यु का कारण बनते थे और कुछ ऐसे होते थे जो इतने अधिक बुरे नहीं थे।) क्या यह कोई मृत्यु शिविर था अथवा नहीं?

और रवाना होने की जल्दबाजी में आप अपने परिवार को यह जानकारी भेजने में कैसे असफल रहे इसके कारण वे यह सोच रहे होंगे कि आप अभी भी तुला के समीप स्तालिनोगोरस्क शिविर में हैं। यदि आप इस बारे में बहुत चिंतित हों और आपमें बहुत सूझ-बूझ हो तो आप अभी भी इस समस्या को सुलझाने में सफल हो सकते हैं : आप अभी भी किसी ऐसे कैदी को ढूंढ़ निकाल सकते हैं, जिसके पास पेन्सिल का आधा इन्च लम्बा सीसा हो और मुसे हुये कागज का एक टुकड़ा। इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए कि सन्तरी गलियारे से आपको देख न ले (गलियारे की तरफ पांव करके लेटने की मनाही होती है। आप

को उस दिशा में अपना सिर रखना पड़ता है) आप अधिक से अधिक झुककर और दूसरी दिशा में अपना मुंह करके अपने परिवार को सूचना लिखते हैं। हिचकोले खाती हुई रेलगाड़ी में आप यह लिखते हैं कि आपको उस स्थान से आगे ले जाया जा रहा है, जहां आप पहले थे और अपने नये गंतव्य से आप वर्ष में केवल एक बार पत्र भेज सकेंगे अतः उन्हें इसके लिए तैयार रहना चाहिए। आपको अपना पत्र एक त्रिकोन के रूप में तह करना होगा और अच्छा अवसर हाथ लगने की आशा से पाखाने तक उस पत्र को ले जाना होगा। हो सकता है कि वे लोग आपको किसी स्टेशन पर पहुंचते समय अथवा किसी स्टेशन से आगे निकलते समय पाखाने ले जाएं और पाखाने के सामने तैनात सन्तरी कुछ लापरवाह हो जाएं और आप फ्लश पैंडल पर तेजी से पांव रखकर और अपने शरीर की ओट में इस पत्र को पाखाने के छेद से बाहर फेंक दें। यह गीला और गन्दा हो जायेगा। लेकिन फिर भी यह छेद से गुजरकर पटरियों के बीच जा पहुंचेगा। यह भी हो सकता है यह सूखा ही रहे और डिब्बे के नीचे तेज़ हवा का झोंका इसे उड़ा ले जाए और यह रेलगाड़ी के पहिये के नीचे दब जाये अथवा किसी प्रकार बच निकले और किसी प्रकार पटरी के बराबर के पुश्ते पर जा पड़े। हो सकता है कि बरसात शुरू होने तक यह वहीं पड़ा रहे, बर्फ गिरने तक वहीं पड़ा रहे और उस समय तक वहीं पड़ा रहे जब तक गल कर खाद न बन जाए। लेकिन यह भी हो सकता है कि यह किसी मनुष्य के हाथ में पहुंच जाये और यदि यह व्यक्ति पार्टी के निर्देशों पर आंख बन्द कर के चलने का हामी न हो तो वह पते को और स्पष्ट कर देगा। वह पत्र की सलवटें निकाल देगा और हो सकता है कि इसे एक लिफाफे में भी डाल दे और इस प्रकार पत्र अपने गंतव्य पर पहुंच जाये। यदा कदा ऐसे पत्र पहुंचते हैं—बैरंग होकर, इनकी लिखावट अस्पष्ट हो चुकी होती है। कुछ की लिखावट तो एकदम गायब हो चुकी होती है। ये मुड़े-तुड़े होते हैं। पर इनसे दुख का संदेश यथा स्थान अवश्य पहुंच जाता है।



लेकिन यह बेहतर है कि यथाशीघ्र इस प्रकार मूर्ख बना रहना आप बन्द कर दें। आप हास्यास्पद नौसिखिये न बने रहें। इस बात की ९५ प्रतिशत संभावना नहीं होती कि आपका पत्र अपने गंतव्य पर पहुंच सकेगा। यदि यह पहुंच भी जाता है तो इससे आपके घर में प्रसन्नता नहीं पहुंचेगी। और जब आप एक बार, महाकाव्यों में वर्णित देशों के समान, इस प्रदेश में प्रवेश कर जाएंगे तब आपके जीवन की गणना घण्टों और दिनों में नहीं होगी, यहां आगमन और प्रस्थान के बीच दशकों की दूरी होती है, एक चौथाई शताब्दी का अन्तराल होता है। आप कभी भी अपने पूर्व संसार में वापस नहीं जा सकेंगे। और आप जितनी जल्दी अपने प्रियजनों से दूर रहने के आदी बन जाएं और स्वयं आपके प्रियजन आपसे दूर रहने के आदी हो जाएं, उतना ही अच्छा। और इस प्रकार कष्ट सहना आसान भी हो जाता है!

और जहां तक सम्भव हो कम से कम चीजें अपने पास रखें ताकि आपके मन में उन्हें खो देने का भय न रहे। रेल डिब्बे के दरवाजे पर ही कुचल डालने के लिये आप एक अच्छा सूटकेस लेकर न जाएं (जब डिब्बे में २५ आदमियों को ठूंस दिया गया हो तो सन्तरी इस सूटकेस को क्या समझेगा?) और नये जूते न पहनें। और फैशनेबुल कपड़े न पहनें और ऊनी सूट भी न पहनें: इन चीजों को अवश्य चुरा लिया जाएगा, आपसे ले लिया जाएगा,

चुपचाप गायब कर दिया जाएगा। यह काम स्तोलिपिन रेल डिब्बे में, अथवा ब्लैकमारिया मोटरगाड़ी में अथवा संक्रमण जेल में कहीं भी हो सकता है। बिना किसी संघर्ष के इन चीजों को दे डालिए—अन्यथा आपको जिस अपमान का सामना करना पड़ेगा वह आपके हृदय को विष से भर देगा। वे लोग लड़कर ये चीजें आपसे छीन लेंगे और अगर आप अपनी सम्पत्ति की रक्षा करने की कोशिश करेंगे तो इसका परिणाम आपका रक्त रंजित मुख होगा। वे धृष्टतापूर्ण थूथन, मजाक उड़ाने वाले वे तौर तरीके, दो पांवों वाले वे मानव पशु आपके मन में घृणा उत्पन्न करते हैं। लेकिन अपनी वस्तुओं को अपने स्वामित्व में रखने और इनसे वंचित हो जाने की आशंका से निरन्तर कांपते रहने के कारण क्या आप स्वयं को, सब बातों को ध्यान से देखने और समझने के दुर्लभ अवसर से वंचित नहीं कर रहे हैं ? किपलिंग और गुमिलएव ने इतनी रंगीनी से जिन लुटेरों, समुद्री डाकुओं और डाकुओं का सजीव चित्रण किया है क्या वे, वे ही चोर नहीं हैं ? वे सचमुच ऐसे ही लोग थे। रूमानी साहित्य चरित्रों के रूप में जो लोग आपको इतने आकर्षक लगते थे वे आपको यहां इतने घृणास्पद क्यों लगते हैं ?

इन्हें भी समझो ! इन लोगों के लिए जेल इनका अपना घर है। चाहे सरकार इन के साथ कैसा भी कृपापूर्ण व्यवहार क्यों न करे, चाहे वह इनकी सजाओं को कितना भी उदार और सरल क्यों न बनाये, चाहे वह कितनी बार इन्हें क्षमादान क्यों न दे, उनकी आन्तरिक नियति उन्हें बारम्बार यहीं वापस लाती है। द्वीपसमूह के कानून में क्या पहला शब्द इन्हीं लोगों के लिये नहीं है ? हमारे देश में, स्वतन्त्र जीवन में भी, जेल के बाहर के जीवन में भी निजी सम्पत्ति के स्वामित्व के अधिकार को इसी प्रकार प्रभावशाली ढंग से समाप्त कर दिया गया था। (और इसके बाद स्वयं उन लोगों ने सम्पत्ति के स्वामित्व में आनन्द लेना शुरू किया, जिन्होंने इस अधिकार को समाप्त किया था।) तो इस अधिकार को जेल में ही क्यों बर्दाश्त किया जाए ? तुम बहुत सुस्त निकले, तुमने अपने हिस्से का गोश्त तुरन्त नहीं खा लिया। तुमने अपने मित्रों से अपनी चीनी और तम्बाकू में हिस्सा नहीं बटाया। तो अब चोर लोग आपकी नैतिक गलती को सुधारने के लिये आपका पूरा बंडल साफ कर देते हैं। आपके फैशनेबुल जूतों के बदले अपने अत्यन्त घिसे-पिटे और रद्दी जूते देकर, आपके ऊनी स्वेटर के बदले अपने गन्दे ओवरआल देकर, वे अधिक समय तक इन्हें आपके पास नहीं रखेंगे : आपके जूते ताश के जुये में पांच दाव हारने या जीतने का साधन भर थे और वे अगले दिन ही एक लिटर वोदका और थोड़ी सी सलामी के लिए आपका स्वेटर बेच डालेंगे। बस एक दिन में ही स्वयं उनके पास भी कुछ नहीं रह जाएगा—ठीक तुम्हारी तरह। यह तापगति की (थर्मोडाइनेमिक्स) के दूसरे नियम का सिद्धान्त है : समस्त अन्तर अथवा भेद समतल होना चाहते हैं, अन्तर्धान होना चाहते हैं ! ...।

किसी भी वस्तु को अपने पास न रखो ! परिग्रह न करो ! बुद्ध और ईसा मसीह ने हमें यही शिक्षा दी थी और स्टोइक सन्यासियों तथा दूसरे लोगों के दुख-सुख के प्रति पूरी तरह उदासीन रहने वाले विचारकों ने भी यही कहा था। यद्यपि हम लालची हैं पर हमारी समझ में यह सीधी सादी शिक्षा क्यों नहीं आती ? हम यह क्यों नहीं समझ पाते कि हम सम्पत्ति संचय के द्वारा अपनी आत्मा को नष्ट कर डालते हैं ?

तो हेरिंग मछली को अपनी जेब में उस वक्त तक गरम रखिये जब तक आप संक्रमण जेल में न पहुंच जाएं। क्योंकि डिब्बे में यह मछली खाने के बाद आपको पानी के लिए याचना

करनी होगी। और क्या उन लोगों ने हमें दो दिन के लिए रोटी दी है ? यदि ऐसा है तो इसे एक साथ बैठ कर खा जाइए। इस स्थित में कोई भी व्यक्ति इन्हें चुरा न सकेगा और आपको इनके लिए चिन्तित न होना पड़ेगा। और आप एक आकाशचारी पक्षी की तरह स्वतंत्र रहेंगे !

केवल वही चीज रखिये, जिसे आप हर समय अपने पास रख सकते हों। भाषाएं सीखिये, देशों के बारे में जानिये, लोगों के बारे में जानिये। अपनी स्मृति को ही अपनी यात्रा का झोला बनाइये। अपनी स्मृति का उपयोग कीजिये ! अपनी स्मृति का उपयोग कीजिये ! ये ही वे कड़ुवे बीज हैं, जो आगे चलकर किसी दिन अंकुरित हो सकते हैं, प्रस्फुटित हो सकते हैं।

अपने चारों ओर देखिये—आपके चारों ओर बहुत से लोग हैं। हो सकता है कि आप इनमें से किसी एक का जीवन भर स्मरण रखें और यह बात जीवन भर आपके हृदय को कचोटती रहे कि आपने उससे बहुत सी बातें क्यों न पूछीं। और आप जितना कम बोलेंगे उतना ही अधिक सुनेंगे। मानव जीवन के महीन धागे द्वीपसमूह के विभिन्न द्वीपों के बीच तने हुये हैं। ये एक-दूसरे के बीच से ताने बाने की तरह गुजरते हैं। केवल एक रात के लिए एक दूसरे का स्पर्श करते हैं। यह स्पर्श अर्ध अंधकार से ग्रस्त रेल डिब्बे में होता है, जहां पहियों की तेज़ आवाज़ गूंजती रहती है। और इसके बाद ये सदा सर्वदा के लिये अलग हो जाते हैं। आप धीमी आवाज और रेल के पहियों की गूंज पर अपने कान लगाइये। आखिरकार यही जीवन का वह चक्र है, जो निरन्तर ध्वनि कर रहा है।

आपको यहां कैसी कैसी विचित्र बातें सुनने को मिलेंगी। ऐसी बातें जिन पर आप अपनी हंसी न रोक सकेंगे।

जाली के पास बैठे हुये उस तेजी से चलने वाले छोटे कद के फ्रांसीसी को लीजिये—वह लगातार मुड़ता तुड़ता क्यों रहता है, उसे किस बात पर इतना अधिक आश्चर्य है ? उसे बातें समझाने की कोशिश कीजिये ! और इसके साथ ही आप उससे यह भी पूछिये कि वह किस प्रकार यहां आ पहुंचा। तो आपको कोई ऐसा व्यक्ति भी मिल गया जो फ्रांसीसी भाषा जानता है और आपको यह जानकारी भी मिलती है कि वह एक फ्रांसीसी सिपाही मैक्स सांतर है। और यह फ्रांसीसी सिपाही स्वतंत्र रहते समय भी इतना ही सतर्क और जिज्ञासु था। अपने फ्रांस में भी वह इसी प्रकार आचरण करता था। उन लोगों ने उससे बड़ी विनम्रतापूर्वक कहा कि वह रूसी युद्धबंदियों की वापसी के संक्रमण केन्द्र के आसपास न घूमें लेकिन वह लगातार यह करता रहा और इसके बाद एक दिन रूसियों ने उसे अपने साथ शराब पीने के लिये आमन्त्रित किया और शराब पीने के दौर में वह बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो वह एक हवाई जहाज के फर्श पर लेटा हुआ था और उसके शरीर पर लाल सेना के सिपाही की कमीज और बिजिस थी और उसके ऊपर गारद के एक सन्तरी के जूते लटके हुये थे। उन लोगों ने उसे बताया कि उसे शिविर में दस वर्ष की सज़ा सुना दी गई है। लेकिन सचमुच वह इस बात को एक भद्दा मजाक ही समझता रहा और क्या यह भद्दा मजाक ही नहीं लगता था और क्या वह यह आशा नहीं कर सकता था कि जल्दी ही यह गलत-फहमी दूर हो जाएगी और सब कुछ ठीक हो जायेगा ? ओह, हां, सब कुछ ठीक हो जायेगा, मेरे प्यारे साथी बस जरा प्रतीक्षा करो।[११] आश्चर्य की कोई बात नहीं थी। सन् १९४५-१९४६ में ऐसी बातें आश्चर्यजनक नहीं थीं।

यह किस्सा फ्रांसीसी-रूसी है और इसके अलावा एक और किस्सा भी है, जो रूसी-फ्रांसीसी है। लेकिन नहीं, इसे शुद्ध रूप से रूसी भी कहा जा सकता है, क्योंकि किसी रूसी के अलावा अन्य कोई व्यक्ति ऐसी चालाकी नहीं कर सकता। हमारे पूरे इतिहास में सुरिकोव के चित्र की तरह बेरेजोवो में मेनशिकोव जैसे लोग रहे हैं, जिन्हें किसी भी प्रकार काबू में नहीं रखा जा सकता था। अब आप आइवन कोवेरचिको का मामला लीजिये। कोवेरचिन्को औसत कद का दुबला पतला आदमी था लेकिन फिर भी उसे काबू में नहीं रखा जा सकता था। वह बहुत जबर्दस्त योद्धा था और उसका चेहरा अत्यधिक स्वास्थ्यपूर्ण था। और इसके साथ ही इस मूर्ख ने काफी वोदका पीने का भी अभ्यास कर लिया था। वह बड़ी तत्परता से अपने बारे में बातचीत करता था और स्वयं अपनी मजाक भी उड़ाता था। वह जो किस्से सुनाता था वे हमेशा हमेशा अपनी स्मृति में संजो कर रखने योग्य हैं। वे ऐसे किस्से हैं, जिन्हें अवश्य सुना जाना चाहिये। हां, यह सच है कि यह बात समझने में बड़ा समय लगा कि उसे गिरफ्तार क्यों किया गया और उसे एक राजनीतिक कैदी क्यों घोषित किया गया। लेकिन यहां राजनीतिक कैदियों की श्रेणी के बारे में भी ज्यादा तर्क वितर्क करने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्या इस बात का कोई महत्व है कि किस आरोप पर वे आपको जेल या शिविर में डाल दें।

जैसा कि प्रत्येक व्यक्ति अच्छी तरह से जानता है जर्मन रासायनिक युद्ध की तैयारी कर रहे थे और हम यह तैयारी नहीं कर रहे थे। अतः, यह बात अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण थी कि क्वार्टर मास्टर के विभाग के कुछ मन्दबुद्धि लोगों ने हमारे कूबान से भागते समय सरसों की गैस के बमों के ढेर के ढेर एक हवाई अड्डे पर पीछे छोड़ दिए। और जर्मन लोग इस तथ्य के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर हमारी बदनामी कर सकते थे। तभी क्रासनोदर के निवासी सीनियर लैफ्टिनैंट कोवेरचिन्को को २० छाताधारी सैनिकों के साथ जर्मनों की अग्रिम पंक्तियों के पीछे उतार दिया गया। उन्हें यह काम सौंपा गया था कि वे उन बुरे बमों को कहीं जमीन में दफना देंगे। (जो लोग यह कहानी सुन रहे होंगे उन्होंने अनुमान लगा लिया होगा कि इसका अन्त किस प्रकार होगा और वे जमुहाई लेते हुये कह उठे होंगे : इसके बाद उसे बन्दी बना लिया गया और इस प्रकार वह मातृभूमि का द्रोही बन गया। पर वास्तव में ऐसा कुछ नहीं हुआ !) कोवेरचिन्को ने अत्यन्त प्रतिभापूर्ण तरीके से इस काम को पूरा किया और अपने सब आदमियों सहित जर्मनों की अग्रिम पंक्तियों से होकर निकल आया। इस काम में उसे एक भी आदमी से हाथ नहीं धोना पड़ा और इस वीरतापूर्ण कार्य के फलस्वरूप उसे हीरो आफ दि सोवियत यूनियन (सोवियत संघ का वीर नायक) पदक देने के लिये नामजद किया गया।

लेकिन सरकारी नामजदगी की पुष्टि में एक या दो महीने का समय लगता है—और यदि हीरो आफ दि सोवियत यूनियन जैसे पदक को प्राप्त करने के बाद भी आपको नियंत्रण में न रखा जा सके तो क्या होगा ? ऐसे पदक उन चुप्पे लड़कों को दिये जाते हैं जो सैनिक और राजनीतिक तैयारी के आदर्श होते हैं—लेकिन यदि आपकी आत्मा निरन्तर उद्वेलित होती हो और आपको शराब पीने की जबर्दस्त इच्छा हो और आपके पास पीने के लिये कुछ भी न हो तब क्या होगा ? और यदि इसके साथ ही आप समस्त सोवियत संघ के वीर नायक हों और इसके बावजूद ये दुष्ट चूहे इतनी कंजूसी बरतें और आपको वोदका का एक फालतू लिटर देने तक से इनकार कर दें तो क्या होगा ? इस स्थिति में आइवन कोवेरचिन्को अपने

घोड़े पर सवार हुआ और यद्यपि यह बात सही है कि उसने कैलीगुला का नाम कभी भी नहीं सुना था, वह अपने घोड़े सहित दूसरी मंजिल पर नगर के सैनिक कमीसार से मिलने जा पहुंचा। स्पष्ट था कि वह सोच रहा था कि अब उसे कौन वोदका देने से इनकार करेगा। (उसने सोचा था कि यह तरीका अधिक प्रभावशाली होगा। एक वीरनायक की शैली के अधिक अनुरूप होगा और थोड़ी सी और वोदका की उसकी मांग को अस्वीकार करना मुश्किल होगा।) तो क्या उन लोगों ने उसे इस बात पर गिरफ्तार कर लिया ? नहीं, सचमुच नहीं! लेकिन उसके अलंकार को हीरो आफ दि सोवियत यूनियन से घटा कर आर्डर आफ दि रैड बैनर (लाल झण्डा पदक) कर दिया गया।

कोवेरचिन्को की प्यास मुश्किल से बुझती थी और वोदका हमेशा उपलब्ध नहीं होती थी अतः उसे बहुत सूझ-बूझ से काम लेना पड़ता था। पोलैंड में, उसे जर्मनों को एक खास पुल को बारूद से उड़ा देने से रोकने के लिये भेजा था और इसके परिणामस्वरूप उसके मन में यह भाव उत्पन्न हुआ कि वह स्वयं इस पुल का मालिक बन गया है। अतः कमांडेंट के मुख्यालय के वहां पहुंचने तक उसने यह पुल पार करने वाले पोलैंड निवासियों से कर लेना शुरू कर दिया। आखिरकार मेरे बिना तुम लोग इस पुल को बचा नहीं सकते थे। वह एक पूरे दिन कर वसूल करता रहा (वोदका के लिये) और फिर वह इस बात से ऊब उठा और इसके अलावा यह एक ऐसी जगह भी नहीं थी जहां वह लगातार मौजूद रह सकता था। अतः कैप्टेन कोवेरचिको ने पास के पोलैंड निवासियों के समक्ष एक बड़ा न्यायोचित हल रखा : कि वे लोग इस पुल को उससे खरीद लें। (क्या उसे इस बात पर गिरफ्तार कर लिया गया। नहीं ...नहीं !) उसने पुल की कोई अधिक कीमत भी नहीं मांगी थी लेकिन पोलैंड निवासियों ने इस बात पर बड़ी आपत्ति उठाई और पुल खरीदने से इनकार कर दिया।

इसके बाद कैप्टेन ने इस पुल को छोड़ दिया : ठीक है भाड़ में जाओ अपना पुल लो और बिना कुछ दिये ही इसके आर-पार आते जाते रहो।

सन् १९४९ में वह पोलोतस्क में एक पैराशूट रेजीमैंट के चीफ आफ स्टाफ के रूप में काम कर रहा था। इस डिवीज़न की राजनीतिक शाखा के लोग मेजर कोवेरचिन्को को बहुत अधिक नापसन्द करते थे क्योंकि वह राजनीतिक पाठ्यक्रम की परीक्षा में फेल हो गया था। इस पाठ्यक्रम में सैनिकों और अफसरों को राजनीति का एक विशेष दृष्टिकोण से पाठ पढ़ाया जाता था। एक समय उसने यह मांग की कि उसे सेना अकादमी में भर्ती के लिये सिफारिशी चिट्ठी दी जाये। लेकिन जब उन लोगों ने उसे यह सिफारिश की चिट्ठी दी तो इस पर नजर डाल कर ही कोवेरचिन्को ने इसे मेज के उस पार उन्हीं के ऊपर दे मारा। "ऐसी सिफारिशी चिट्ठी को लेकर तो मुझे सेना अकादमी में नहीं बल्कि बन्देरोवस्ती (यूक्रेन के राष्ट्रवादी विद्रोही) के पास जाना चाहिये।" (क्या उसे इस बात के लिये गिरफ्तार कर लिया गया ? उसे यह बात कहने के लिये आसानी से दस्सा थमाया जा सकता था। लेकिन वह इस बार भी बच निकला।) एक बार इन सब बातों के अलावा, उसने अपने एक सैनिक को नियमों के विपरीत छुट्टी दे डाली। और इसके बाद उसने शराब के नशे में धुत होकर अत्यन्त तेजी से एक ट्रक चलाई और इस ट्रक को टकराकर बर्बाद कर डाला। इस पर उसे गारद घर में दस दिन बन्द रखने की सजा दी गई। लेकिन इस गारद घर का पहरा स्वयं उसके सैनिकों के हाथ में था, जो उसे पूरी निष्ठा से प्यार करते थे और इन सैनिकों ने उसे गारद घर से निकाल दिया और उसे गांव में जाकर आनन्द मनाने का अवसर दे दिया। तो वह गारद

घर में बन्द रहने की सजा की अवधि में भी शान्त रह सकता था। पर ऐसा नहीं हुआ ऐसा राजनीतिक शाखा ने उसके ऊपर मुकदमा चलाने की धमकी दी। इस धमकी से कोवेरचिंको को आघात पहुंचा और उसने स्वयं को अपमानित अनुभव किया। तो इस बात का यह अर्थ है : बम जमीन में गाड़ने के लिये आइवन हमें तुम्हारी जरूरत है; लेकिन एक डेढ़ टन के भद्दे ट्रक के लिये तुम्हें जेल जाना होगा? रात को वह गारद घर की खिड़की से बाहर निकल गया और दबीना नदी के ऊपर जा पहुंचा, जहां एक मित्र की मोटर बोट छिपी हुई थी और उसे लेकर वहां से चल पड़ा।

और इस बात से यह बात स्पष्ट हुई कि वह अधिक समय तक किसी भी बात को याद न रखने वाला शराबी नहीं था : वह राजनीतिक शाखा से अपने साथ हुई ज्यादतियों का बदला चाहता था और लिथुवानिया में उसने यह मोटर बोट छोड़ी और वहां के लोगों से बोला : भाइयो, मुझे अपने विद्रोही नेताओं के पास ले चलो। मुझे अपने साथी के रूप में स्वीकार करो और इसके लिये आपको खेद नहीं होगा; हम लोग उनकी अक्ल ठिकाने लगायेंगे।" लेकिन लिथुवानिया निवासियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि उसे जासूसी के लिये उनके पास भेजा गया है।

आइवन के पास एक हुंडी थी, जो उसने अपने कपड़ों में सी रखी थी। उसने कुवान का टिकट खरीदा। लेकिन मास्को के रास्ते में ही उसने एक रेस्टोरेंट में बेहद शराब पी। इसके परिणामस्वरूप उसने मास्को में शराब के नशे में बुरी तरह धुत्त स्थिति में स्टेशन से रवाना होते समय टैक्सी ड्राइवर से कहा : "मुझे किसी दूतावास ले चलो!" "कौन से दूतावास?" "इस बात की किसे चिन्ता है? किसी भी दूतावास ले चलो।" और ड्राइवर उसे एक दूतावास ले गया : "यह कौन सा दूतावास है?" "फ्रांसीसी दूतावास।" "ठीक है।"

सम्भवत: उसके विचार उलझ गये थे और किसी दूतावास जाने के उसके मूल इरादों में एकदम परिवर्तन हो गया था। लेकिन उसकी चालाकी और शक्ति में जरा भी कमी नहीं आई थी, दूतावास के फाटक पर तैनात पुलिस के सिपाहियों को जरा भी चौंकाये बिना वह दूतावास के बराबर की सड़क पर आगे बढ़ गया और आदमी के कद से दुगुनी ऊंची एक दीवार को लांघ कर दूतावास के अहाते में पहुंच गया। दूतावास के अहाते में अधिक आसानी थी : किसी ने भी उसे नहीं देखा और वह भीतर पहुंच गया। वह पहले एक कमरे में घुसा और उसके बाद दूसरे में और वहां उसने एक सजी सजाई मेज देखी। इस मेज पर बहुत सी चीजें थी। लेकिन उसे सबसे अधिक आश्चर्य सेब देखकर हुआ। उसके मन में सेब खाने की इच्छा हुई और उसने अपने फौजी कोट और पतलून की जेबों में ये सेब भर लिये। तभी दूतावास के लोग भोजन के लिये मेज पर पहुंचे। इससे पहले कि ये लोग कोवेरचिन्को से कोई बात कहें उसने इन लोगों को बुरा भला कहना और चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया : "तुम फ्रांसीसी लोगों!" कोवेरचिन्को के विचार से पिछली पूरी एक शताब्दी में फ्रांस ने कोई भी अच्छा काम नहीं किया था। "तुम लोग क्रांति क्यों नहीं करते? तुम लोग दगाल को सत्तारूढ़ करने की कोशिश क्यों कर रहे हो? और तुम लोग यह चाहते हो कि हम अपना कूवान का गेहूं तुम्हारे लिये भेजें? यह कोई तरीका नहीं है।" "तुम कौन हो? तुम कहां से आये हो?" फ्रांसीसी लोग आश्चर्यचकित थे। तुरन्त सही तरीका अपनाते हुए कोवेरचिन्को ने अपनी बुद्धि से काम लिया : "मैं एम०जी०बी० का एक मेजर हूं।" फ्रांसीसी भयभीत हो उठे। "लेकिन

इसके बावजूद आपसे यहां घुस आने की आशा नहीं की जा सकती। आप यहां किसलिये आएं हैं?" "...तुम्हारे मुंह पर!" कोवेरचिन्को ने अपने हृदय की गहराइयों से चिल्ला कर कहा। और कुछ समय और इन लोगों के साथ एक गुण्डे की तरह व्यवहार करने के बाद उसने देखा कि बराबर के कमरे में वे लोग उसके बारे में ही टेलीफोन कर रहे हैं। अभी तक उसके होश इतने दुरुस्त थे कि वह वहां से बाहर निकल जाये। लेकिन सेब उसकी जेबों से बाहर गिरने लगे और उसे अपने पीछे से व्यंग्यपूर्ण हंसी की तेज आवाज़ आती रही।

और वास्तविकता यह है कि उसमें केवल दूतावास से सही सलामत से बाहर निकल जाने की शक्ति ही नहीं थी बल्कि इससे और आगे भी वह जा सकता था। अगले दिन सुबह वह कीव स्टेशन पर जगा। (क्या वह पश्चिम यूक्रेन जाने की योजना नहीं बना रहा था?) और जल्दी ही उन लोगों ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

पूछताछ के दौरान स्वयं अवाकुमोव ने व्यक्तिगत रूप से उसकी पिटाई की। और उसकी पीठ पर लगे चाबुकों के निशान और घाव एक हाथ की चौड़ाई जितने बड़े हो गये। मन्त्री अवाकुमोव ने उसे सेब चुराने अथवा फ्रांसीसियों को भली बुरी पर सच्ची कहने के लिए मारा पीटा नहीं था बल्कि यह पता लगाने के लिये कि उसे सेना में किसने भर्ती किया था। और सचमुच उसे २५ वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई।

ऐसे बहुत से किस्से हैं, लेकिन प्रत्येक रेलगाड़ी के डिब्बे की तरह स्तोलिपिन रेल-डिब्बा भी रात के समय शान्त हो जाता है। रात के समय मछली अथवा पानी नहीं मिलता और न ही शौचालय जाने का अवसर।

और इस समय रेल डिब्बा पहियों के निरन्तर जारी शोर से भर जाता है और यह शोर भी शान्ति और मौन को भंग नहीं कर पाता और यदि इस मौन के अलावा गारद के सन्तरी भी गलियारे से हट गये हों तो आदमियों के तीसरे कम्पार्टमेंट से चौथे कम्पार्टमेंट अथवा स्त्रियों के कम्पार्टमेंट से बातचीत की जा सकती थी।

जेल में एक स्त्री से वार्तालप की अपनी बड़ी विशेषता होती है। इसमें एक प्रकार की गरिमा होती है। चाहे आप बातचीत केवल दंडसंहिता के अनुच्छेदों और सजा की अवधियों के बारे में ही क्यों न करें।

एक ऐसा ही वार्तालाप पूरी रात चलता रहा और यह इन परिस्थितियों में हुआ। यह बात जुलाई १९५० की है। स्त्रियों के कम्पार्टमेंट में एक जवान लड़की को छोड़ कर अन्य कोई यात्री नहीं था। यह लड़की मास्को के एक डाक्टर की पुत्री थी। जिसे अनुच्छेद-५८-१० के अन्तर्गत सजा सुनाई गई थी। आदमियों के कम्पार्टमेंट में बड़ी हलचल थी। गारद के सन्तरियों ने तीन कम्पार्टमेंटों के कैदियों को दो कम्पार्टमेंटों में भरना शुरू किया (और कृपया यह न पूछिये कि इन कम्पार्टमेंटों में उन लोगों ने कितने कैदियों को ठूंसा)। और वे एक ऐसे अपराधी को लाये, जो सजा याफ्ता नहीं दिखाई पड़ रहा था। पहली बात तो यह थी कि उसका सिर मुंडवाया नहीं गया था और उसके सुनहरे रंग के लहरदार, नहीं वास्तव में लच्छेदार बाल अत्यन्त आकर्षक ढंग से उसके बड़े और अभिजातवंशी सिर के ऊपर मौजूद थे। वह युवक, गरिमापूर्ण था और उसने ब्रिटिश सेना की वर्दी पहन रखी थी। उसे बड़े सम्मानपूर्वक गलियारे में लाया गया (इस व्यक्ति के मामले की फाइल के लिफाफे के ऊपर जो निर्देश लिखे हुये थे उनके कारण गारद के सन्तरी कुछ आतंकित हो गये थे।) और इस लड़की ने इस पूरे दृश्य की एक झांकी देख ली थी। लेकिन वह स्वयं उस लड़की को नहीं

देख पाया था। (ग्रौर ग्रागे चलकर उसे इस बात का कितना ग्रधिक खेद हुग्रा।)

शोरगुल और सरगर्मी के कारण इस लड़की ने यह समझ लिया कि उसके बराबर का कम्पार्टमेंट इस नये ग्रादमी के लिये खाली किया जा रहा है। यह बात स्पष्ट थी कि इस व्यक्ति को किसी अन्य से सम्पर्क ग्रौर बातचीत न करने देने की व्यवस्था की जा रही थी ग्रौर इस कारण से वह उससे बात करने के लिये ग्रौर भी अधिक उत्सुक हो उठी थी। स्तोलिपिन रेल डिब्बे में एक छोटे कम्पार्टमेंट से दूसरे कम्पार्टमेंट में देख पाना सम्भव नहीं था। लेकिन शोर न होने पर आप एक दूसरे की बात सुन सकते थे। बहुत रात गये जब वातावरण होने लगा। यह लड़की अपने कम्पार्टमेंट के तख्ते के सिरे पर बैठ गई। वह जाली के बिल्कुल बराबर बैठ गई ग्रौर उस व्यक्ति को ग्राहिस्ता से पुकारा। (और सम्भवत: आरम्भ में उसने धीरे-धीरे गीत गाना शुरू किया। गारद इस बात पर उसे सजा दे सकती थी। लेकिन सन्तरी लोग स्वयं रात के लिये विश्राम करने चले गये थे और गलियारे में कोई नहीं था।) इस अजनबी ने उसकी आवाज सुनी ग्रौर उसके निर्देशों के ग्रनुसार जाली से सट कर बैठ गया। अब वे दोनों एक दूसरे से पीठ सटा कर बैठे हुये थे। बस इनके बीच एक इंच का पार्टीशन था ग्रौर वे पार्टीशन के बाहरी सिरे पर जाली के ग्रार-पार बातचीत कर रहे थे। उनके सिर एक दूसरे के इतने समीप थे मानो उनके ओठ एक दूसरे का चुम्बन कर रहे हों। लेकिन वे एक दूसरे को न तो छू सकते थे ग्रौर न ही देख सकते थे।

एरिक ग्रार्विद एंडरसन ग्रब तक काम चलाऊं रूसी भाषा समझने लगा था। बोलते समय वह बहुत सी गलतियां कर जाता था। लेकिन अन्ततः वह ग्रपने विचार व्यक्त करने में सफल हुग्रा। उसने इस लड़की को ग्रपनी आश्चर्यजनक कहानी सुनाई। (और हम लोग भी संक्रमण जेल में यह कहानी सुनेंगे)। स्वयं इस लड़की ने भी मास्को की विद्यार्थी की सीधी-सादी कहानी सुनाई, जिसे अनुच्छेद-५८-१० के अन्तर्गत दण्डित किया गया था। लेकिन ग्रार्विद बहुत ग्राकर्षित हो चुका था। उसने इस लड़की से सोवियत युवक युवतियों और सोवियत जीवन के बारे में पूछा ग्रौर उसे यहां जो जानकारी मिली वह उससे बिल्कुल भिन्न थी जो उसे पश्चिम के वामपंथी समाचार पत्रों से पहले प्राप्त हुई थी ग्रौर स्वयं अपने रूस के सरकारी दौरे के ग्रनुसार उसे बताया गया था।

वे रात भर बातचीत करते रहे ग्रौर उस रात ग्रार्विद के समक्ष पूरी स्थिति स्पष्ट हो गई: एक पराये देश में कैदियों का विचित्र रेल डिब्बा; रात के समय रेल के पहियों की लयात्मक ध्वनि जो सदा हमारे हृदयों में प्रतिध्वनित होती है; इस लड़की की संगीतमय ग्रावाज़, उसका फुसफुसाहट का स्वर, उसकी सांसें, जो आर्विद के कानों तक पहुंच रही थीं—हां उसके कानों तक, पर वह उसे एक क्षण के लिये देख भी नहीं सकता था। (और लगभग डेढ़ वर्ष से उसने एक स्त्री की ग्रावाज नहीं सुनी थी।

ग्रौर पहली बार, उस ग्रदृश्य (ग्रौर सम्भवत:, और सचमुच, एक सुन्दर) लड़की के माध्यम से उसने वास्तविक रूस को देखना शुरू किया, और रूस की उस वाणी ने पूरी रात भर उसे सत्य का दर्शन कराया। कोई व्यक्ति इस तरीके से भी पहली बार किसी देश के बारे में सच्ची जानकारी प्राप्त कर सकता है। (ग्रौर सुबह के समय वह खिड़की के पीछे से रूस के काले रंग के फूंस के छप्परों की छतें देखेगा उनकी एक झलक देखेगा और उसकी ग्रदृश्य मार्गदर्शक फुसफुसाहट के स्वर में उसे कुछ कह रही होगी।)

हां, वास्तव में, यह सब कुछ रूस है: रेल की पटरियों पर ग्रागे बढ़ने वाले वे कैदी

जो अपनी शिकायतें करने से इनकार करते हैं, स्तोलिपिन पार्टीशन के दूसरी ओर बैठी हुई लड़की, आराम से सोते हुए सन्तरी, जेब से गिरते हुए सेब, जमीन में दफनाये गये बम और दूसरी मंजिल पर चढ़ता हुआ घोड़ा ।



"पुलिस के सिपाही ! पुलिस के सिपाही !" कैदी लोग खुशी से चिल्लाये । वे इस बात से खुश थे कि अब शेष रास्ते में उनके पास अधिक ध्यान देने वाले पुलिस के सिपाही रहेंगे, गारद के सन्तरी नहीं ।

मैं एक बार फिर उद्धरणचिन्ह देना भूल गया हूं । हमें कोरोलेंको यह बात बता रहा था ।[13] यह सच है कि हम लोग नीली टोपी वालों को देखकर खुश नहीं होते थे । लेकिन ऐसा कोई भी व्यक्ति जो उस वस्तु में फंस गया हो, जिसे कैदी लोग पेंडुलम के नाम से पुकारते थे, नीली टोपी वालों तक को देखकर खुश हो सकता है ।

एक साधारण यात्री को एक छोटे स्टेशन पर रेलगाड़ी में चढ़ने में कठिनाई हो सकती है लेकिन नीचे उतरने में नहीं । डिब्बे से नीचे अपना सामान फेंक दो और स्वयं नीचे कूद जाओ । लेकिन कैदी यह नहीं कर सकता था । यदि स्थानीय जेल के सन्तरी अथवा पुलिस सम्बन्धित कैदी को लेने न आये अथवा उन्हें आने में दो मिनट की भी देरी हो जाये तो रेल की सीटी बजेगी और गाड़ी फिर चल पड़ेगी और वे कैदी रूपी उस गरीब पापी को आगे दूसरी संक्रमण जेल में ले जाएंगे । और यदि यह कोई संक्रमण केन्द्र ही हो तो कैदी का सौभाग्य है । क्योंकि वहां कैदी को खाने को कुछ भोजन मिल सकता है । लेकिन यदाकदा ऐसा भी होता कि स्तोलिपिन रेलडिब्बे की पूरी यात्रा इस कैदी को करनी पड़ती और इसके बाद उसे एक खाली डिब्बे में १८ घंटे तक रखा जाता और कैदियों के एक नये समूह के साथ उसे वापस ले जाया जाता और हो सकता है कि एक बार फिर सम्बन्धित जेल के सन्तरी अथवा पुलिस वाले उसे लेने न आएं और एक बार फिर उसकी वही निरुद्देश्य यात्रा जारी रहे और एक बार फिर आपको प्रतीक्षा करनी पड़े और इस पूरी अवधि में गारद आपको खाने के लिये कुछ नहीं देगी । आखिरकार आपका राशन आपके पहले पड़ाव तक के लिये जारी किया गया था और इस बात का दोष लेखा कार्यालय को नहीं दिया जा सकता कि जेल वालों ने गड़बड़ की । क्योंकि आखिरकार आपको तो तुलुन पहुंचना था । और गारद स्वयं अपने राशन से आपका पेट भरने के लिये जिम्मेदार नहीं है । तो वे आपको छः बार इधर-उधर लाते ले जाते हैं (यह घटना वास्तव में हुई !) "इरकुतस्क से क्रासनोयारस्क, क्रासनोयारस्क से इरकुतस्क, इरकुतस्क से क्रासनोयारस्क, आदि, आदि, आदि, और जब आप तुलुन के प्लेटफार्म पर एक नीली टोपी देखते हैं तो आप उसे अपनी छाती से लगा लेने के लिए उतावले हो उठते हैं : धन्यवाद, मेरे प्यारे, मेरी जान बचाने के लिये ।

एक स्तोलिपिन रेल डिब्बे में आप इतने अधिक थक जाते हैं, इतने अधिक घबरा जाते हैं, इतने अधिक पस्त हो जाते हैं कि आप किसी बड़े नगर में पहुंचने तक यह नहीं जान पाते कि क्या आप इस कष्ट के रहते अपने गंतव्य पर यथाशीघ्र पहुंचने के लिये आगे बढ़ते रहना पसन्द करेंगे अथवा आप कुछ सुस्ता लेने भर के लिये एक संक्रमण जेल में रहना पसन्द करेंगे । स्तोलिपिन रेल डिब्बे में केवल दो दिन में आपका यह हाल हो जाता है ।

लेकिन गारद के सन्तरी बड़ी सरगर्मी में लग जाते हैं। वे अपने ओवरकोट पहन कर बाहर निकाल आते हैं और अपनी राइफलों के कुन्दे फर्श पर दे देकर मारते हैं। इसका यह अर्थ होता है कि वे पूरे डिब्बे के सब कैदियों को नीचे उतारेंगे।

सबसे पहले गारद डिब्बे के पायदानों के पास एक घेरा बना कर खड़ी हो जाती है और आप जैसे ही पायदान से नीचे गिरते हैं, उतरते हैं अथवा लड़खड़ाते हैं सन्तरी लोग एक साथ मिल कर इतनी जोर से चिल्लाते हैं कि आपके कान फटने लगते हैं। (उन्हें इसी प्रकार चिल्लाने का प्रशिक्षण दिया जाता है) : "बैठ जाओ, बैठ जाओ, बैठ जाओ !" जब एक साथ अनेक सन्तरी चिल्ला-चिल्लाकर यह कहते हैं तो यह बात बड़ी प्रभावशाली बन जाती है और वे आपको अपनी आंखें तक ऊपर नहीं उठाने देते। यह दृश्य ऐसा होता है कि आप तोपों की गोलाबारी के बीच फंस गये हों और आप अनचाहे ही नीचे झुकते हैं, बल खाते हैं और जल्दबाजी करते हैं (और आप इस जल्दबाजी में आखिर पहुंचना कहां चाहते हैं ?), जमीन से सट कर घुटनों से बल बैठ जाते हैं, और अन्ततः सीधे बैठ जाते हैं और आप अपने से पहले उतरे हुए कैदियों के बराबर बैठे रहते हैं।

"बैठ जाओ !" एक बड़ा स्पष्ट आदेश है और यदि आप नये कैदी हों तो आप इसके पूरे महत्व को नहीं समझ पाते। जब मैंने आइवानोवो की रेल पटरियों के बराबर यह हुक्म सुना तो मैं अपना सूटकेस अपनी बांहों में दबोचे भागने लगा। क्योंकि उसका हैंडिल हमेशा टूट जाता था और वह भी हमेशा सबसे कठिन स्थिति में) और अपना सूटकेस जमीन पर रख दिया और यह देखे बिना ही कि मुझसे पहले उतरे कैदी किस तरह बैठे हुए हैं। मैं अपने सूटकेस पर बैठ गया। आखिरकार गन्दी काली जमीन और चिकने रेत पर अपने अफसर के कोट सहित बैठना मुझे असम्भव लग रहा था। मेरा कोट अभी तक बहुत गन्दा नहीं हुआ था और अभी तक कोट के कन्धों पर लगे फ्लैप काटे नहीं गये थे, जिससे यह प्रकट होता था कि यह एक अफसर का कोट है। गारद का मुखिया—लाल मुंह वाला आदमी, एक अच्छा रूसी चेहरा—मेरी तरफ बहुत तेजी से झपटा और मेरी समझ में यह नहीं आया कि वह क्या चाहता है। जब तक उसका इरादा मेरे समक्ष पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो गया वह अपने पवित्र बूट की भरपूर ठोकर मेरी अभिशप्त पीठ पर जमाना चाहता था। लेकिन न जाने किस वस्तु ने उसे रोक लिया। लेकिन उसने अपने बूट की पालिश से चमचमाती हुई ठोकर की परवाह नहीं की और मेरे सूटकेस पर लात जमाई और मेरे सिर पर एक हाथ जमाया। "बैठ जाओ !" उसने स्पष्टीकरण के रूप में दांत भींच कर कहा। केवल तभी मैं यह समझ पाया कि मैं अपने आस-पास बैठे हुए अन्य कैदियों से ऊंचा हो गया हूं और यह पूछे बिना ही कि "मुझे किस प्रकार बैठना चाहिये ?" मैं यह समझ गया था कि मुझे किस प्रकार बैठना चाहिये और मैं अन्य प्रत्येक कैदी की तरह अपने मूल्यवान कोट सहित बैठ गया जैसे कुत्ते फाटकों पर और बिल्लियां दरवाजों पर बैठती हैं।

(मेरे पास आज भी वह सूटकेस है, और आज भी जब मैं इसे देखता हूं तो मैं अपनी अंगुलियां इसमें बने छेद पर फेरता हूं। यह एक ऐसा घाव है जो हमारे शरीरों अथवा हृदयों पर लगे घावों की तरह कभी नहीं भरता। वस्तुओं की स्मृति मनुष्यों से कहीं अधिक लम्बी होती है।)

और कैदियों को जमीन पर बैठने के लिए बाध्य करना भी एक सोच-समझ कर तैयार किया गया तरीका था। यदि आप जमीन पर अपने नितम्बों के बल बैठे हुए हों, और

आपके घुटने आपके सामने उठे हुए हों तो आपके गुरुत्वाकर्षण का केन्द्र आपकी टांगों पर बहुत पीछे रहता है। और इस स्थिति से उठकर खड़ा होना कठिन तथा कूद कर खड़ा होना असम्भव होता है। और इससे भी अधिक इस बात का ध्यान रखा जाता है कि हमें अधिक से अधिक सटा कर बैठाया जाए ताकि हम एक-दूसरे के मार्ग में यथासम्भव बाधक बनें। और यदि हम सब एक साथ मिलकर गारद के ऊपर हमला करने की बात सोचें तो गारद के सन्तरी हमारे जरा-सा हिलने-डुलने पर भी हमें आसानी से गोलियों से भून सकते थे।

हमें ब्लैक मारिया गाड़ियों की प्रतीक्षा में इस प्रकार बिठाया जाता था (इन गाड़ियों में कैदियों को टोलियों में बारी-बारी से ले जाया जाता है। एक साथ सब कैदियों के लिए ब्लैक मारिया मोटर गाड़ियां नहीं आ सकतीं) अथवा पैदल ही हमें हांक कर ले जाया जा सकता था। वे लोग हमें किसी ऐसे स्थान पर छिपा कर बिठाने की कोशिश करते, जहां हमें कम से कम स्वतंत्र लोग देख पाएं। लेकिन कभी-कभी उन लोगों को कैदियों को प्लेटफार्म अथवा किसी खुले चौक में भद्दे ढंग से बिठाना पड़ता था। (कुइबइशेव में यही हुआ था।) और स्वतंत्र लोगों के लिये यह एक बड़ा कठिन अनुभव है: हम लोग बड़े उन्मुक्त और स्पष्ट ढंग से तथा पूरी ईमानदारी से उनकी ओर देखते। लेकिन उनसे हमारी ओर इस प्रकार देखने की अपेक्षा की जाती है? घृणापूर्वक? उनकी आत्मा इस बात की अनुमति नहीं देती। आखिरकार केवल येरमिलोववादी ही यह विश्वास करते हैं कि लोगों को "उद्देश्य के लिए" जेल में डाला जाता है।) सहानुभूतिपूर्वक? दयापूर्वक? सावधान, कोई व्यक्ति तुम्हारा नाम लिख लेगा और तुम्हें भी जेल की सजा सुना दी जाएगी; यह इतना ही आसान है। और हमारे गरबीले स्वतंत्र नागरिक (जैसाकि मायाकोवस्की ने लिखा है: "यह पढ़िए, मुझसे ईर्ष्या कीजिए, मैं एक नागरिक हूं।") अपने दोषी सिर झुका लेते हैं और हमें देखने की कोशिश भी नहीं करते। ऐसा आचरण करते हैं मानो वह स्थान एकदम खाली हो। वृद्ध स्त्रियां अन्य लोगों से अधिक साहसी होती हैं। आप उन्हें बुरा नहीं बना सकते। वे ईश्वर में विश्वास करती हैं और वे अपनी थोड़ी बहुत रोटी से एक टुकड़ा तोड़ कर हमारी ओर फेंकती हैं। और शिविरों के पुराने कैदी—गैर-राजनीतिक अपराधी—भी नहीं डरते थे। शिविरों के सब पुराने अनुभवी कैदी यह कहावत जानते थे: "जो अब तक वहां नहीं पहुंचा है वहां अवश्य पहुंचेगा, और जो वहां हो आया है वह उसे कभी नहीं भूलेगा।" और देखिए, वे लोग एक सिगरेट की डिब्बी फेंकते और यह आशा करते कि शायद उनकी अगली जेल यात्रा के दौरान कोई व्यक्ति उनके साथ भी यही व्यवहार करेगा। और वृद्धा की रोटी कैदियों तक नहीं पहुंच पाती। वह अपनी कमजोर बांह से इसे पर्याप्त दूरी तक नहीं फेंक पाती और यह बीच में ही गिर जाती है जबकि सिगरेट की डिब्बी हवा में उड़ती हुई एकदम हमारे बीच में आकर गिरती है और गारद के सन्तरी अपनी राइफलों के बोल्ट आगे पीछे करते हैं—राइफलों को वृद्धा के ऊपर तान देते हैं, दया और रोटी को राइफलों का लक्ष्य बना लेते हैं: (ए, बुढ़िया, सुनो यहां से भागो।")

और पवित्र रोटी, दो टुकड़ों में टूटी हुई रोटी जमीन पर धूल में पड़ी रहती है और हमें हांक कर आगे बढ़ा दिया जाता है।

सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि स्टेशन पर जमीन पर बैठ कर हम जो कुछ मिनट का समय बिताते हैं वह हमारे सर्वोत्तम समय में से होता है। मुझे याद है कि ओमस्क में हमें दो लम्बी मालगाड़ियों के बीच रेल पटरियों के बीच छूटी हुई जगह पर

बिठाया गया था। बाहर का कोई भी आदमी दो मालगाड़ियों के बने इस गलियारे में नहीं घुस सकता था। (संभवतः उन लोगों ने दोनों किनारों पर एक-एक सैनिक तैनात कर दिया था: "तुम वहां नहीं जा सकते।" और आजादी में भी हमारे लोगों को किसी भी वर्दीधारी का हुक्म मानने की शिक्षा दी जाती है।) अन्धेरा होने लगा। यह अगस्त का महीना था। स्टेशन की चिकनी बजरी धूप में गरम हो चुकी थी और अभी तक ठंडी नहीं हो पाई थी और हमें नीचे बैठे-बैठे बजरी की गरमाहट मिल रही थी। हम स्टेशन नहीं देख पा रहे थे। लेकिन यह कहीं बहुत पास में ही था, रेल गाड़ियों के पीछे कहीं मौजूद था। फोनोग्राफ पर नृत्य संगीत की तेज धुन बज रही थी और भीड़ इस धुन पर नाच रही थी। और न जाने क्यों किसी प्रकार के बाड़े में अत्यधिक गन्दी भीड़ के रूप में जमीन पर बैठना अपमानजनक नहीं लग रहा था; और युवा अजनबियों के नृत्य की आवाज़ सुनना व्यंग्यात्मक नहीं लग रहा था जबकि ये ऐसे नृत्य थे जिन्हें हम कभी भी नहीं नाच सकेंगे; हम स्टेशन के प्लेटफार्म पर किसी व्यक्ति के किसी अन्य से मुलाकात करने अथवा किसी व्यक्ति को विदाई देने—हो सकता है कि फूलों सहित विदाई देने की कल्पना भी नहीं कर पा रहे थे। यह प्रायः स्वतंत्रता के बीस मिनट थे: गोधूली का धुंधलका गहरा होता गया, आकाश में पहले तारे चमकने लगे, रेल पटरियों के बराबर लाल और हरे रंग की रोशनियां जल उठीं और संगीत निरन्तर जारी रहा। हमारे बिना भी जीवन का अबाध क्रम चल रहा था—और अब हमें इस बात की चिन्ता भी नहीं रह गई थी।

ऐसे क्षणों को अपनी स्मृति में संजोए रखो और कैद का कष्ट भोगना आसान हो जायेगा अन्यथा आप क्रोध से फट पड़ेंगे।

यदि इस कारण से कैदियों को ब्लैकमारिया गाड़ियों तक हांक कर ले जाना खतरनाक हो कि बीच में सड़कें पड़ती हों और कैदियों के बराबर अन्य लोग भी मौजूद हों तो इस स्थिति का सामना करने के लिए गारद की नियमावली में एक और अच्छे हुक्म की व्यवस्था की गई है: "बांह में बांह डालो!" इसमें कुछ भी अपमान नहीं है, बांह में बांह डालो। वृद्ध और लड़के, लड़कियां और वृद्धाएं, स्वस्थ लोग और अपंग। यदि आपका एक हाथ आपके सामान को किसी प्रकार समेटे हुए है तो आपका पड़ौसी अपनी बांह सामान के नीचे से आपकी बांह में डालता है और स्वयं आप अपनी दूसरी बांह अपने दूसरे पड़ौसी की बांह में डालते हैं। तो इस प्रकार आप सामान्य कतारों की तुलना में कहीं अधिक कस जाते हैं और आप तुरन्त स्वयं को अत्यन्त भारी अनुभव करने लगते हैं और आपको इस बात की आशंका बनी रहती है कि अपने सामान और उसे लेकर चलने की कठिनाई के कारण आप गिर न पड़ें अतः आप लड़खड़ा कर चलते हुए निरन्तर आगे बढ़ते हैं। हिचकोले खाते हुए चलते रहते हैं। गन्दे, सलेटी रंग के, भद्दे प्राणी, आप तीन अन्धे आदमियों की तरह एक दूसरे के प्रति प्रकट सहृदयता दिखाते हुए आगे बढ़ते रहते हैं—मानवता का कैसा विद्रूप स्वरूप है।

यह भी हो सकता है कि आपको ले जाने के लिए कोई ब्लैक-मारिया मौजूद न हो। और गारद का मुखिया सम्भवतः एक कायर हो। हो सकता है कि वह इस बात से भयभीत हो कि वह आपको सुरक्षापूर्वक गंतव्य पर नहीं पहुंचा सकेगा— और इस स्थिति में, भार के नीचे दबे, हिचकोले खाते हुए, वस्तुओं से टकराते हुए, आप पूरे नगर को पैदल पार करते हुए जेल पहुंच जाते हैं।

एक और आदेश भी है, जिसे बत्तख-चाल कहा जा सकता है : "अपनी एड़ियां पकड़ लो !" इसका यह अर्थ होता है कि जिस किसी के हाथ खाली हों उसे टखनों के ऊपर से अपनी दोनों टांगे पकड़नी होंगी। और अब : "आगे बढ़ो।" (ठीक है, अब, पाठक महोदय, इस पुस्तक को एक ओर रख दीजिये और अपने कमरे के भीतर इस प्रकार चलने की कोशिश कीजिये ! यह कैसा लगता है ? और किस गति से आप चल पाते हैं ? आप अपने चारों ओर कितना अधिक देख सकेंगे ? और जरा भाग निकलने के बारे में तो सोचिये ?) जरा यह भी कल्पना कीजिये कि तीन या चार दर्जन ऐसी बत्तखों का चलना एक ओर से कैसा दिखाई पड़ता होगा। (कीव,१९४०)

और यह आवश्यक नहीं है कि तब केवल अगस्त का महीना समाप्त हुआ हो; यह बात दिसम्बर १९४६ की भी हो सकती है और कोई भी ब्लैक मारिया उपलब्ध न होने के कारण आपको इस प्रकार झुंड़ों में खदेड़ कर शून्य से ४० डिग्री कम तापमान में पेत्रो-पावलोवस्क सक्रमण जेल में ले जाया जाता है। यह अनुमान लगा पाना आसान है कि स्टेशन पर पहुंचने से पहले के कुछ घन्टों में स्तोलिपिन रेल डिब्बे की गारद ने आपको शौचालय ले जाने का कष्ट उठाने से इनकार कर दिया, ताकि शौचालय गन्दा होने से बचाया जा सके। पूछताछ के फलस्वरूप कमजोर, भयंकर ठंडक के शिकंजे में जकड़े हुए आप बहुत ही कठिन दौर से गुजरते हैं—स्त्रियों का तो विशेष रूप से बुरा हाल होता है। ठीक है तो क्या हुआ ! केवज घोड़ों को ही यह सुविधा प्राप्त है कि व एक स्थान से रुक कर खड़े हो जाये और मलमूत्र विसर्जन करने लगें ! यह सुविधा केवल कुत्तों को ही प्राप्त है कि वे किसी बाड़ के ऊपर टांग उठा कर पेशाब करने लगें। लेकिन जहां तक मनुष्यों का सम्बन्ध है आप यह कार्य चलते-चलते अपने वस्त्रों में ही कर सकते हैं। अपनी पितृभूमि में शर्मिन्दा होने की क्या जरूरत है। कपड़े संक्रमण जेल में ही सूख जाएंगे......वैरा कोर्नेएवा अपने जूते को ठीक करने के लिये नीचे झुकी और एक दम पीछे रह गई। तथा गारद ने तुरन्त उसके ऊपर पुलिस का कुत्ता छोड़ दिया और कुत्ते ने सर्दियों के समस्त कपड़ों के बावजूद उसके नितम्बों पर काट कर घाव बना दिये। पिछड़ो मत ! और एक उजबेक नीचे गिर पड़ा और उन लोगों ने उसे अपने राइफलों के कुन्दों और फौजी बूटों से ठोकरें लगाई।

ठीक है, वह कोई भयंकर दुर्भाग्यपूर्ण घटना नहीं है : डेली एक्सप्रैस के लिये इसका फोटोग्राफ नहीं लिया जा सकेगा और गारद का मुखिया खूब बूढ्ढा होकर मरेगा और उसके ऊपर कोई मुकदमा नहीं चलायेगा।



और ब्लैक मारिया मोटर गाड़ियां भी हमें इतिहास से विरासत में प्राप्त हुई हैं। बालज़ाक ने जेल की जिन गाड़ियों का विवरण दिया है वह किस दृष्टि से ब्लैक मारिया से भिन्न हैं ? अन्तर केवल इतना है कि उक्त जेल की गाड़ी को कहीं अधिक धीरे-धीरे खींचा जाता था और इसमें कैदियों को इतना ठूंस-ठूंस कर भी नहीं भरा जाता था।

यह सच है कि १९२० के बाद के वर्षों में कैदियों के झुंडों को हमारे नगरों, यहां तक कि लेनिनग्राद में भी पैदल ही ले जाया जाता था। चौराहों पर इनके गुजरते समय यातायात रुक जाता था। ("तो तुम्हें चोरी करते हुए पकड़ा गया ?" पैदल पटरियों पर

खड़े हुए लोग उलहाने के स्वर में कहते। अभी तक किसी भी व्यक्ति की समझ में गन्दे नाले के माध्यम से निकासी की महान् योजना नहीं आ पाई थी।)

पर टेक्नालॉजी से प्राप्त होने वाली सुविधाओं के प्रति सदा सजग रहने वाले द्वीप-समूह ने काले कौवों का इस्तेमाल शुरू करने में समय नहीं गंवाया, जिन्हें अधिक परिचित रूप से केवल कौए ही कहा जाता था। ये कौए ब्लैक मारिया मोटर गाड़ियां ही थीं। पहली ब्लैक मारिया गाड़ियां हमारी अभी तक पत्थरों से बनी सड़कों पर पहले ट्रकों के साथ ही चलनी शुरू हुई थीं। इन मोटरगाड़ियों के स्प्रिंग आदि बहुत घटिया किस्म के थे और इनमें सवारी करना बड़ा कष्टप्रद था, पर कैदी लोग भी तो भंगुर कांच के नहीं बने थे। दूसरी ओर, सन् १९२७ तक में इन्हें ठूंस-ठूंस कर भरा जाता था, एक जरा सी झिर्री भी शेष नहीं रह जाती थी; एक छोटा सा बल्ब भी लगा नहीं होता था और सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा भी उपलब्ध नहीं होती थी और बाहर देख पाना तो असम्भव था। और उन दिनों भी वे ब्लैक मारियां के भीतर एक दूसरे से सट सट कर इस तरह खड़े होते थे कि जरा सी जगह भी नहीं बचती थी। पर यह नहीं कहा जा सकता कि जानबूझ कर इस बात की योजना बनाई गई थी। उपयोग के लिये पर्याप्त पहिए मौजूद ही नहीं थे।

अनेक वर्षों तक ब्लैक मारिया गाड़ियों का रंग गहरे भूरे रंग का था और यह कहा जा सकता है कि इनकी भूरी शक्ल जेल का आभास देती थी। लेकिन बड़े बड़े शहरों में युद्ध के बाद उन लोगों ने इस पर दूसरी बार गौर किया और यह निश्चय किया कि इन गाड़ियों को भड़कीले रंगों से पोत दिया जाए और इनके ऊपर "रोटी" (कैदी लोग निर्माण की रोटी ही तो थे) अथवा "गोश्त" ("हड्डियां" लिखना अधिक सही होता) अथवा सिर्फ "सोवियत शैम्पेन पीजिए!" भर लिख दिया जाता था।

ब्लैक मारिया गाड़ी का भीतरी हिस्सा एक खाली डिब्बा भर हो सकता था। अथवा सम्भवतः इसके चारों ओर दीवारों के सहारे बेंचें लगी हो सकती थीं। यह किसी भी रूप में सुविधाजनक बात नहीं होती थी, बल्कि स्थिति उलटी ही होती थी : वे लोग इसके भीतर इतने कैदियों को ठूस देते थे, जितने केवल खड़े रह कर आ सकते थे। लेकिन बेंचों के कारण अब कैदियों को सामान की तरह एक दूसरे के ऊपर लाद दिया जाता था—एक गांठ के ऊपर दूसरी गांठ। ब्लैक मारिया गाड़ी में एकदम पिछले हिस्से में एक छोटा सा संदूक भी हो सकता था—एक संकरी इस्पात की अलमारी सी—जिसमें केवल एक कैदी को बन्द किया जा सकता था। यह भी हो सकता था कि पूरी गाड़ी एक बक्से की तरह बन्द हो। इसके बीच एक संकरा सा गलियारा बना हो और दोनों ओर छोटे-छोटे बक्से बना दिए जायें बीच का गलियारा चाबीबरदार संतरी के लिये छोड़ा जाता था, ताकि वह कैदियों को इन बक्सों में बंद कर सके और बाहर निकाल सके।

इन गाड़ियों को बाहर से देख कर, इनके ऊपर बने मुस्कुराती हुई एक लड़की के चित्र और "सोवियत शैम्पेन पीजिये" की घोषणा को देख कर कोई व्यक्ति यह अनुमान कैसे लगा सकता था कि यह गाड़ी भीतर से मधुमक्खी के छत्ते की तरह बनी है।

ब्लैक मारिया गाड़ियों में भी आपको सवार करते समय चारों ओर से गारद के संतरियों का यही समवेत स्वर सुनाई पड़ता था। चलो आगे बढ़ो, आगे चलो, जल्दी करो! यह इसलिये किया जाता है, ताकि आप इधर-उधर न देख सकें और वहां से भाग निकलने की बात न सोच सकें। आपको इस प्रकार धक्के देकर जल्दी से जल्दी आगे बढ़ाया जाता

है, ताकि आप और आपका झोला गाड़ी के संकरे दरवाजे में फंस जाये और आपका सिर गाड़ी की छत की चौखट से टकरा जाये। इस्पात का पिछला दरवाजा जबर्दस्त आवाज के साथ बन्द होता है—और आप रवाना हो जाते हैं।

हां, यह शायद यदा-कदा ही होता हो कि आपको ब्लैक मारिया में कुछ घंटों का समय बिताने का मौका मिले; अधिक संभावना २०-३० मिनट की ही रहती थी। लेकिन आप इन मिनटों में जबर्दस्त हिचकोले खाते। यह हड्डीतोड़ यात्रा होती और आध घंटे में ही आपका सारा शरीर दुखने लगता। यदि आप लम्बे होते तो आपका सिर एकदम झुक जाता और आप स्तोलिपिन रेल डिब्बे की आरामदेह यात्रा का बरबस स्मरण करने लगते।

और ब्लैक मारिया का एक और अर्थ भी होता है—इसमें कैदियों की अदला-बदली होती है, नए कैदियों से मुलाकात होती है और इन मुलाकातों में जो विशेष रूप से उल्लेखनीय होती हैं वे हैं—चोरों से आपका सामना। हो सकता है कि आप एक ही रेल डिब्बे में उनके साथ न हों और हो सकता है कि संक्रमण जेल में उन्हें आपके साथ एक ही कोठरी में न रखा जाये, लेकिन यहां ब्लैक मारिया में आप उनके हाथों में होते हैं।

कभी-कभी ब्लैक मारिया इतनी खचाखच भरी होती हैं कि इन चोरों को, उर्की लोगों को, आपकी तलाशी लेने में कठिनाई पड़ती है। आपकी टांगें और आपकी बाहें आपके पड़ौसियों के शरीरों और झोलों के बीच बुरी तरह से ठसी होती हैं, मानो माल को ठूंस-ठूंस कर भर दिया गया हो। जब आप सब लोग हिचकोलों के कारण इधर-उधर एक साथ हिलते हैं और आपका अन्तरतम झकझोर उठता है, तभी आप अपनी टांगों और बांहों की स्थिति में परिवर्तन कर सकते हैं।

यदा कदा, कम भीड़ की परिस्थितियों में, चोर सिर्फ आध घंटे के भीतर ही सब झोलों को टटोल डालते हैं और सब खाने की चीजों और अच्छे सामान को उड़ा लेते हैं। इसके अलावा वे सर्वोत्तम कपड़ों को भी हथिया लेते हैं। कायरता और विवेक आपको इन लोगों से लड़ने से प्राय: रोक लेते हैं। (और धीरे-धीरे आप अपनी अनश्वर आत्मा को खोने लगते हैं, आप अभी भी यह सोचते रहते हैं कि मुख्य शत्रु और मुख्य प्रश्न अभी भी अन्यत्र हैं और आपको उनका मुकाबला करने के लिये स्वयं को सुरक्षित रखना चाहिये।) हां आप उन्हें एक घूंसा तो जमा सकते हैं पर तुरन्त वहीं आपकी पसलियों में एक चाकू घुस जायेगा। (कोई जांच नहीं होगी, और यदि जांच हुई भी तो इससे चोरों को खतरा नहीं होगा। उन्हें तुरन्त सुदूर शिविर के लिये रवाना करने के स्थान पर संक्रमण जेल मे कुछ समय और रोक कर रखा जा सकेगा। आपको यह स्वीकार करना होगा कि सामाजिक दृष्टि से मित्रतापूर्ण कैदी और सामाजिक दृष्टि से शत्रु भाव रखने वाले कैदी के बीच लड़ाई होने पर राज्य कभी भी इस दूसरे कैदी का पक्ष नहीं ले सकता।)

सन् १९४६ में एक अवकाश प्राप्त कर्नल लुनिन ने, जो ओसोआवियाखिम—सोवियत संघ की प्रतिरक्षा और उड़ान-रासायनिक निर्माण सहायता संस्था—में उच्च पद पर था। उसने बुत्यर्की जेल की कोठरी में यह बताया कि मास्को में एक ब्लैक मारिया मोटरगाड़ी में ८ मार्च को, अन्तर्राष्ट्रीय स्त्री दिवस पर, किस प्रकार चोरों ने शहर की अदालत से तगानका जेल भेजे जाते समय सामूहिक रूप से एक नवविवाहिता युवती से बलात्कार किया। यह बलात्कार स्वयं उसकी मौजूदगी में हुआ (और ब्लैक मारिया में मौजूद अन्य प्रत्येक व्यक्ति की मौन निष्क्रियता के मध्य भी) उसी दिन सुबह यह लड़की एक स्वतंत्र व्यक्ति के

रूप में अपने मुकदमे के लिये अदालत में पेश हुई थी। वह अपने साधनों के अनुरूप अच्छे से अच्छे कपड़े पहने हुये थी। (उसके ऊपर इस कारण से मुकदमा चलाया जा रहा था कि सरकारी अनुमति के बिना ही वह अपना काम छोड़ कर चली गई थी—यह स्वयं अपने आप में एक घृणास्पद जालसाजी थी और उसके अफसर ने उससे बदला लेने के लिये यह अभियोग लगाया था, क्योंकि इस युवती ने इस अफसर के साथ रहने से इनकार कर दिया था।) ब्लैक मारिया में सवार होने से आधा घंटे पहले, इस युवती को अध्यादेश के अन्तर्गत ५ वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई थी और इसके बाद ब्लैक मारिया में ठूंस दिया गया था। और दिन दहाड़े, पार्करिंग के आसपास किसी स्थान पर ("सोवियत शैम्पेयन पीजिए") उसे शिविर की वैश्या में बदल दिया गया था। और क्या हम सचमुच यह कह सकते हैं कि यह कार्य चोरों ने किया और उसे जेल में डालने वालों ने नहीं? और उसके अफसर ने नहीं ?

और चोरों की सहृदयता भी देखिए ! उसके साथ बलात्कार करने के बाद उन्होंने उसे लूट भी लिया। उन्होंने उसके वे फैशनेबुल जूते छीन लिए, जिससे वह अदालत के न्यायाधीशों को प्रभावित करना चाहती थी और उसका ब्लाउज भी ले लिया, जिसे उन्होंने गारद के सन्तरियों के हवाले कर दिया। वे सन्तरी गाड़ी रोक कर वोदका लेने गए और यह वोदका चोरों के हवाले कर दी, ताकि वे इस लड़की के वस्त्रों के बल पर शराब का भी आनंद ले सकें।

और जब वे लोग कगानका जेल पहुंचे तो लड़की ने रो-रो कर अपनी शिकायत सुनाई। अफसर ने उसकी शिकायत सुनी, जमुहाई ली और बोला : "सरकार आप में से प्रत्येक को अलग-अलग मोटरगाड़ी नहीं दे सकती। हमारे पास ऐसी सुविधायें मौजूद नहीं हैं।"

हां, ब्लैक मारिया गाड़ियां द्वीपसमूह के यातायात के सुचारू प्रवाह में बाधक बनती हैं। यदि स्तोलिपिन रेल डिब्बों में राजनीतिक कैदियों को सामान्य अपराधियों से अलग रखना सम्भव नहीं है, तो ब्लैक मारिया गाड़ियों में स्त्रियों को पुरुषों से अलग रखना भी सम्भव नहीं है। और आप यह कैसे आशा कर सकते हैं कि एक जेल से दूसरी जेल तक के रास्ते में चोर यह आचरण नहीं करेंगे ?

हां, यदि चोरों की बात न होती तो हम थोड़े से समय के लिये स्त्रियों के सम्पर्क में आ जाने के लिये ब्लैकमारिया मोटरगाड़ियों के प्रति आभारी हो सकते थे। जेल के जीवन में आप उन्हें कहां देख सकते हैं, उनकी आवाज कहां सुन सकते हैं और उन्हें कहां छू सकते हैं ?

एक बार सन् १९५० में वे लोग हमें बुत्यर्की जेल से स्टेशन ले जा रहे थे। यह मोटरगाड़ी ठसाठस नहीं भरी थी—बेंचों वाली एक ब्लैक मारिया में १४ आदमी बैठे थे। प्रत्येक व्यक्ति बैठ गया था और अचानक उन्होंने एक और को—एक अकेली औरत को भीतर धकेल दिया। वह पिछले दरवाजे के पास बैठ गई। शुरू में वह भयभीत थी। आखिरकार एक अंधेरी कोठरी सी मोटरगाड़ी में १४ आदमियों के सामने वह पूरी तरह असहाय ही थी। लेकिन कुछ ही शब्दों के बाद यह स्पष्ट हो गया कि गाड़ी में मौजूद सब लोग एक जैसे हैं। अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत दण्डित।

उसने हमें अपना नाम रेपीना बताया। वह एक कर्नल की पत्नी थी और उसे अपने पति की गिरफ्तारी के तुरन्त बाद गिरफ्तार कर लिया गया था। और अचानक एक मौन सैनिक, जो इतना कम उम्र और पतला दुबला था कि एक लैफ्टिनेंट जैसा दिखाई पड़ता था अचानक बोला उठा : "मुझे यह तो बताइए कि क्या आपको एन्तोनिना आइ० के साथ तो गिरफ्तार नहीं किया गया था ?" "क्या ?" क्या आप उसके पति हैं ? ओलेग ? "हां!" "लैफ्टिनेंट कर्नल आई० ? फुन्ज अकादमी से ?" "हां !"

और यह कैसी हां थी ! यह 'हां' एक कांपते हुए गले से निकली थी और इसमें प्रसन्नता के स्थान पर किसी बुरी बात का पता लगा लेने का भय झलक रहा था। वह उसके बराबर बैठ गया। गर्मियों के दिन का प्रकाश पिछले दो दरवाजों की दो अत्यन्त सूक्ष्म झिर्रियों से छन कर भीतर आ रहा था और गाड़ी के हिचकोले खाने के कारण यह इधर-उधर फिसलता रहता था और यह कभी स्त्री के चेहरे पर तो कभी लैफ्टिनेंट कर्नल के चेहरे पर पड़ता था। "जब उससे पूछताछ हो रही थी वह और मैं चार महीने तक जेल की एक ही कोठरी में कैद रहे।" "अब वह कहां है ?" "इस पूरी अवधि में वह केवल आपके लिये ही जीवित रही ! वह अपने लिये नहीं, बल्कि केवल आपके लिये भयभीत थी। सबसे पहले उसे इस बात का भय लगा रहता था कि वे कहीं आपको गिरफ्तार न कर लें। और इसके बाद वह इस कोशिश में लगी रही कि आपको हल्की सजा मिले।" "लेकिन अब उसका क्या हुआ है ?" "वह आपकी गिरफ्तारी का दोष स्वयं अपने को देती थी। उसकी स्थिति बड़ी कठोर थी !" "अब वह कहां है ?" "ठहरिये, डरिये मत"—रेपीना ने उसकी छाती पर अपने हाथ रख दिये, मानो वह उसका घनिष्ठ सम्बन्धी हो। "अब वह इस आघात को बर्दाश्त नहीं कर सकी। वे लोग उसे हमारे पास से ले गये। वह, आप जानते ही हैं—कुछ उलझन में फंस गई थी। उसके विचार उलझ गये थे। आप समझ गये न ?"

और यह छोटा तूफान, जो इस्पात की चादरों के बीच उठा था मोटर गाड़ियों के छह गलियारों वाले यातायात में अत्यन्त शांतिपूर्वक आगे बढ़ता रहा, यातायात की लाल रोशनी पर रुकता रहा और आगे बढ़ने की अपनी बारियों की प्रतीक्षा करता रहा।

कुछ क्षण पहले ही मेरी मुलाकात ओलेग आई० से बुत्यर्की जेल में हुई थी—और यहां अब यह घटना घट गई थी। उन लोगों ने हमें स्टेशन "बाक्स" में भर दिया था और जेल के गोदाम से हमारी चीजें ले आये थे। उन लोगों ने उसे और मुझे एक क्षण ही दरवाजे पर बुलाया था। गलियारे में खुलने वाले दरवाजे से हम यह देख सकते थे कि एक स्त्री जेल कर्मचारी उसके सूटकेस के सामान की तलाशी ले रही है और लैफ्टिनेंट कर्नल के पद के सूचक सितारों वाला सुनहरी बिल्ला फर्श पर गिर गया है। उस समय तक किसी प्रकार यह बिल्ला सूटकेस में बचा रहा था। पर न जाने कैसे; स्वयं इस स्त्री कर्मचारी ने इसे नहीं देखा था और संयोगवश ही उसका पांव इसके बड़े-बड़े सितारों पर पड़ गया था।

उसने उसी प्रकार अपने जूते से इन सितारों को कुचल डाला, जैसे किसी फिल्म के दृश्य में किया जाता है।

मैंने उससे कहा : "जरा उस ओर ध्यान दो, कामरेड लैफ्टिनेंट कर्नल !"

और वह गुर्राया। आखिरकार अभी भी उसके मन-मस्तिष्क में सैनिक सेवा की गरिमा के विचार व्याप्त थे।

और अब यह दूसरी घटना घटी थी—उसकी पत्नी के बारे में।

और एक घंटे के भीतर ही, उसे इन समस्त परिस्थितियों के यथार्थ को अपने भीतर समेट लेना था।

अध्याय २



द्वीपसमूह के बन्दरगाह

एक बड़ी मेज़ पर हमारी मातृभूमि का विशाल नक्शा फैलाओ। एक बड़े काले बिन्दु से सब प्रांतों की राजधानियों, सब रेल जंक्शनों पर निशान लगाओ और उन स्थानों पर भी, जहां रेल की पटरियां नदी मार्ग पर आकर समाप्त होती हैं और जहां नदियां मुड़ती हैं और फिर दूसरे मार्ग शुरू हो जाते हैं। यह क्या है? क्या पूरे नक्शे पर छूत फैलाने वाली मक्खियों ने गन्दगी फैला दी है? वास्तव में यही द्वीपसमूह के बन्दरगाहों का शानदार नक्शा है। पर आप यह बात निश्चयपूर्वक जान लीजिये कि ये वे सम्मोहनकारी बन्दरगाह नहीं हैं, जहां हमें प्रलोभन देकर अलैक्सान्द्र ग्रिन ले गया था, जहां सरायों में लोग रम पीते हैं और पुरुष सुन्दर स्त्रियों से प्रणय निवेदन करते हैं।

ऐसा कैदी दुर्लभ होगा, जिसे तीन से लेकर पांच तक संक्रमण जेलों और शिविरों में न रहना पड़ा हो। अनेक लोगों को तो एक दर्जन या इतनी ही शिविरों और संक्रमण जेलों का स्मरण है और गुलाग के सपूत तो बिना किसी कठिनाई के इनमें से ५० तक की गणना कर सकते हैं। पर, स्मृति में ये सब एक दूसरे से अत्यन्त घुल मिल जाते हैं, क्योंकि वे अत्यन्त समान हैं: गारद के सन्तरियों की निरक्षरता में, मुकदमे की फाइलों पर आधारित हाज़िरी के अकुशल तरीके में; चिलचिलाती धूप अथवा शरद् ऋतु की वर्षा में लम्बी प्रतीक्षा में; इससे भी लम्बी तलाशियों में जिनमें कैदी को अपने सब वस्त्र उतारने पड़ते हैं; गन्दी मशीनों से बाल मूंडने में; उनके अत्यधिक ठंडे और काई से भरे स्नानघरों में; उनके बदबूदार शौचालयों में; उनके सीलन और फफूंद भरे बरामदों में; उनकी निरन्तर भीड़ भरी और प्रायः सदा अन्धकार ग्रस्त गीली कोठरियों में; फर्श पर अथवा सोने के तख्ते पर आपके दोनों ओर मौजूद मानव शरीर की गरमाहट में; कैदियों के सोने के तख्तों की उभरी हुई लकड़ियों में; गीली, प्रायः तरल रोटी में; न जाने किस अखाद्य वस्तु से पकाई गई खिचड़ी में एकदम समानता होती है।

और जिस किसी व्यक्ति की स्मरण शक्ति अच्छी है और जो यह स्मरण कर सकता है कि एक शिविर दूसरे से किस रूप में भिन्न है, उसे देश की यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह संक्रमण जेलों के आधार पर इसके भूगोल से बहुत अच्छी तरह परिचित हो चुका है। नोवोसीबिर्स्क? मैं इसे जानता हूँ। मैं वहां था। वहां बहुत मजबूत बैरकें थीं,

मोटी बल्लियों से बनीं। इर्कुतस्क ? यहीं कई चरणों में खिड़कियों पर ईंटें लगाई गई थीं, आप देख सकते थे कि ज़ारशाही के जमाने में ये खिड़कियां कैसी थीं और खिड़कियों में ईंटों की प्रत्येक परत अलग-अलग समय पर लगाई गई थी और इनके बीच बहुत छोटी-छोटी झिरियां छूट गई थीं। वोलोगदा ? हां, टावरों वाली एक पुरानी इमारत। यहां एक दूसरे के ऊपर शौचालय बने थे, लकड़ी के पार्टीशन जर्जर हो चुके थे और ऊपर के तख्तों से पानी छन-छन कर आता रहता था। उस्मान ? हां, इसे भी जानता हूं। जुओं से भरी एक बदबूदार गन्दी जेल, एक प्राचीन मेहराबदार इमारत। और वे लोग इसमें इस तरह कैदियों को ठूंसते थे कि जब वे कुछ कैदियों को किसी गाड़ी से बाहर निकालते, तो आप यह कल्पना भी नहीं कर पाते कि वे इन सबको कहां रख पायेंगे—कैदियों की यह पंक्ति आधे शहर तक फैली होती थी।

यह बेहतर होगा कि आप एक ऐसे विशेषज्ञ जानकार को यह न कहें कि आप किसी ऐसे नगर को जानते हैं, जहां संक्रमण जेल नहीं है। वह बहुत निर्णायक ढंग से आपके समक्ष यह प्रमाणित करेगा कि ऐसा कोई नगर नहीं है, और उसका यह कथन सही भी होगा। सालस्क ? ठीक है, वहां वे आगे जाने वाले कैदियों को के० पी० जैड०—आरम्भिक हिरासत की कोठरियों—में उन कैदियों के साथ रखते हैं, जिनसे पूछताछ चल रही हो। और आप क्या कहना चाहते हैं, प्रत्येक जिले के मुख्यालय में संक्रमण जेल नहीं होती ? सोल—इलेतस्क ? हां, वहां एक संक्रमण जेल है। राइबिन्स्क में ? जेल संख्या-२ के बारे में आप क्या कहेंगे, जो पहले एक ईसाई मठ था ? यह एक शान्त जेल भी है, जिसके खाली आंगनों में पुराने, काई भरे पत्थर लगे हैं और स्नान घरों में साफ सुथरे लकड़ी के टब रखे हैं। चिता में ? जेल संख्या-१ है। नौशकी में ? यहां जेल नहीं है, बल्कि एक संक्रमण शिविर है जो एक ही बात होती है। तोरझोक में ? पहाड़ी के ऊपर, यहां भी एक ईसाई मठ में यह जेल है।

आदरणीय महोदय, आपको यह जान लेना चाहिये कि प्रत्येक नगर में अपनी संक्रमण जेल होना आवश्यक है। आखिरकार अदालतें सर्वत्र काम करती हैं। और कैदियों को शिविरों तक कैसे पहुंचाया जा सकता है ? हवाई जहाजों से ?

हां, सचमुच, कोई भी संक्रमण जेल किसी दूसरी संक्रमण जेल के समान नहीं होती। लेकिन कौन सी संक्रमण जेल बेहतर है और कौन सी बुरी इस बात का निर्णय तर्क के द्वारा नहीं किया जा सकता। यदि तीन या चार कैदी एक साथ मिल बैठें, तो इनमें से प्रत्येक अपने आपको "अपनी" संक्रमण जेल की प्रशंसा करने के लिये बाध्य पाता है। आइए, हम एक ऐसे ही विचार-विमर्श को कुछ देर के लिए सुनें :

"ठीक है, मेरे दोस्तो, यद्यपि आइवानोवो संक्रमण जेल अधिक प्रसिद्ध जेलों में नहीं है, पर ऐसे किसी आदमी से इसके बारे में पूछिये, जो वहां १९३७-१९३८ की सर्दियों में कैद रहा हो। इस जेल को गर्म करने की कोई व्यवस्था नहीं थी—और यहां कैदी लोग ठण्ड से ठिठुर कर मरने से बचे ही नहीं रहे, बल्कि ऊपर के तख्तों पर वे कपड़े उतार कर लेटते थे। और उन्होंने खिड़कियों के सब शीशों को तोड़ डाला था, ताकि स्वच्छ हवा के अभाव में दम घुटने से मरने से बचा जा सके। २० आदमियों के लिये बनी कोठरी संख्या-२१ में ३२३ आदमियों को भरा गया था ! सोने के तख्तों के नीचे पानी था और तख्तों को पानी के ऊपर रख दिया गया था। और लोग इन्हीं तख्तों पर लेटे रहते थे। टूटी हुई खिड़कियों से बाहर की बर्फानी ठण्डक भीतर आती थी और बर्फ बन जाती थी। तख्तों के नीचे आर्कटिक क्षेत्र

की रात जैसी ठंडक होती थी। वहां पर रोशनी भी नहीं थी, क्योंकि ऊपर के तख्तों पर लेटे हुए और तख्तों के बीच की जगह में खड़े लोगों ने इसे काट दिया था। बीच के रास्ते से गुजर कर पाखाने की बाल्टी तक पहुंचना असम्भव था और लोग सोने के तख्तों के किनारों पर घुटनों के बल चलते थे। वे लोग अलग-अलग कैदियों को राशन नहीं देते थे, बल्कि दस-दस की टोलियों में कैदियों को राशन दिया जाता था। यदि दस में से एक कैदी मर जाता था, तो दूसरे उसके शव को तख्तों के नीचे ठूंस देते थे और यह शव सड़ने लगने तक वहीं पड़ा रहता था। वे लोग मुर्दे का राशन लेने के लिए यह करते थे। इन सबको बर्दाश्त किया जा सकता था। लेकिन ऐसा लगता था कि कोठरियों का ताला खोलने और बन्द करने वाले चाबीबरदार सन्तरियों को तारपीन के तेल से सराबोर कर दिया गया है—और वे कैदियों को लगातार, अबाध गति से एक कोठरी से दूसरी कोठरी तक ले जाते रहते थे। आप मुश्किल से अपने को व्यवस्थित कर पाते कि आवाज लगती "इधर आओ, जल्दी चलो, तुम्हें यहां से ले जाया जा रहा है!" और आपको एक बार फिर अपनी जगह बनाने के लिये संघर्ष शुरू करना होगा! इतनी अधिक भीड़ के कारण वे लोग तीन महीने से किसी भी कैदी का नहाने के लिये नहीं ले गये थे, जूओं की भरमार हो गई थी और इनके काटने के कारण लोगों के पांवों और टांगों पर फोड़े बन गए थे, और टाइफस ज्वर भी फैल गया था। आर टाइफस ज्वर के कारण इस जेल को स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रतिबन्ध लगा कर एकदम अलग-थलग कर दिया गया था और चार महीने तक यहां से किसी भी कैदी को दूसरी जगह नहीं ले जाया जा सकता था।"

"ठीक है, पर मेरे साथियों, यह समस्या आइवानोवी के कारण नहीं थी, बल्कि यह उस वर्ष की समस्या थी, सन् १९३७-१९३८ में केवल कैदी ही नहीं, बल्कि संक्रमण जेलों के पत्थर भी कष्ट के कारण चीख रहे थे। इर्कुतस्क भी कोई विशेष संक्रमण जेल नहीं थी, लेकिन १९३८ में डाक्टर लोग कोठरियों के भीतर झांक कर देखने की हिम्मत तक नहीं कर पाते थे और बरामदे में चलता हुआ चाबीबरदार सन्तरी चिल्ला कर कहता रहता : "अगर कोई बेहोश हो गया है, तो वह बाहर आ जाये।"

"साथियों, सन् १९३७ में पूरे साइबेरिया में कोलिमा तक यही हाल था। और ओखोतस्क समुद्र और व्लादिवोस्तोक में बहुत बड़ा अवरोध हो गया था। भाप से चलने वाले जहाज एक महीने में केवल ३० हजार आदमियों को ही ले जा सकते थे और वे लोग इस बात का ध्यान रखे बिना ही मास्को से निरन्तर और कैदियों को हांके जा रहे थे। और इस प्रकार एक लाख आदमी जमा हो गए थे। अब आपकी समझ में यह बात आई?"

"किसने इन लोगों की गिनती की?"

"जिस किसी को यह गिनती करनी थी।"

"यदि आप व्लादिवोस्तोक संक्रमण जेल की बात कर रहे हैं, तो फरवरी १९३७ में वहां ४० हजार से अधिक कैदी नहीं थे।"

"वहां लोग कई महीने तक फंसे रहते थे। सोने के तख्तों पर टिड्डी दल की तरह खटमल छाये रहते थे। पूरे दिन में आधा मग पानी मिलता था। इससे अधिक पानी था ही नहीं। पानी लाने के लिए कोई आदमी ही नहीं था। एक पूरा अहाता कोरियावासियों से भरा था। और उनमें से प्रत्येक की मृत्यु पेचिश से हुई थी। स्वयं हमारे अहाते से वे लोग हर सुबह सौ लाशें ले जाते थे। वे लोग एक मुर्दाघर बना रहे थे और इस काम के लिए उन्होंने

क़ैदियों को ठेलों में जोत दिया और इस प्रकार पत्थरों की ढुलाई की। आज आप पत्थर ढोते हैं और कल वे स्वयं आपको ढोकर वहां पहुंचा देते हैं। और शरद् ऋतु में टाइफस ज्वर आ पहुंचा और हमने भी वही किया : हमने भी उस समय तक लाशें नहीं लौटाईं जब तक कि वे सड़ने न लगीं और अतिरिक्त राशन लेते रहे। दवा नाम की कोई चीज नहीं मिलती थी। हम लोग पेट के बल घिसटते हुए कांटेदार तारों तक जाते और याचना करते : "हमें दवा दो।" और सन्तरी लोग निगरानी टावरों से गोलियों की बौछार करते। इसके बाद उन लोंगों ने टाइफस ज्वर से ग्रस्त क़ैदियों को अलग बैरकों में रखना शुरू किया। कुछ क़ैदी तो इन बैरकों में भी नहीं पहुंच पाये और कुछ गिने चुने ही इनसे जीवित वापस लौटे। वहां सोने के तख्तों की, ऊपर नीचे दो मंजिलें थीं और ऊपरी तख्ते पर यदि कोई बीमार क़ैदी पड़ा होता था और बहुत तेज़ ज्वर के कारण वह शौचालय जाने के लिए नीचे नहीं उतर सकता था तो ऊपर से मत्र-मूत्र नीचे के तख्ते पर गिरता रहता था। वहां १५०० बीमार क़ैदी थे। और सब अर्दली चोर थे। वे लोग मुर्दों के सोने के दांत उखाड़ लेते थे। और केवल मुर्दों के ही नहीं।"

"आप केवल १९३७ की ही रट क्यों लगाये हुए हैं? सन् १९४९ में वानिनो खाड़ी में पांचवें अहाते में क्या हुआ? वहां क्या हुआ? वहां ३५,००० क़ैदी थे। और ये लोग वहां कई महीने तक रहे! कोलिमा में यातायात में फिर अवरोध आ गया था। और हर रात वे न जाने क्यों लोगों को एक बैरक से दूसरी बैरक में और एक अहाते से दूसरे अहाते में ले जाते रहते थे। जैसाकि फासिस्टों के अधीन होता था : सीटियां! चीखें! "एकदम बाहर आओ, पीछे कोई नहीं रहेगा!"[1] और प्रत्येक व्यक्ति दौड़ पड़ता था। सदा दौड़ता था! वे लोग रोटी लेने के लिए सौ आदमियों को खदेड़ेंगे—भगायेंगे! खिचड़ी के लिए चलो—दौड़ लगाओ! खाने के लिए कटोरे नहीं थे। जिस चीज़ में हो सके खिचड़ी ले लो—अपने कोट के पल्ले में, अपने हाथों में! वे लोग बड़ी-बड़ी टंकियों में पानी लाते थे और उसे किसी भी चीज़ में देने या बांटने की अवस्था नहीं थी। तो पानी का छिड़काव शुरू कर दिया जाता था। और जिस किसी का मुंह पानी की फुहार के सामने होता, उसे थोड़ा बहुत पानी मिल जाता। क़ैदी टंकियों के सामने लड़ने लगे—और टावरों पर खड़े सन्तरियों ने उनके ऊपर गोली चलाई। ठीक वैसे ही जैसे फासिस्टों के अधीन होता था। उत्तर पूर्व [अर्थात् कोलिमा] श्रम से सुधार शिविरों के प्रशासन का प्रमुख मेजर जनरल देरेवयांको वहां आया और वायुसेना का एक पायलट क़ैदियों की भीड़ से आगे निकला और उसने अपने फौजी कमीज़ को अपनी छाती से फाड़ कर मेजर जनरल देरेवयांको से कहा : "मुझे युद्ध में सात पदक प्राप्त हुए हैं! तुम्हें अहाते में गोली चलाने का अधिकार किसने दिया?" और देरेवयांको का उत्तर था : "हमने गोली चलाई है और हम उस समय तक गोली चलाते रहेंगे, जब तक तुम यह नहीं सीख जाते कि किस तरह सही आचरण करना चाहिए।[2]"

"नहीं, लड़को, इनमें से कोई भी सच्ची संक्रमण जेल नहीं है। अब कीरोव को लीजिए! वहां एक सच्ची संक्रमण जेल थी! हम कोई ख़ास वर्ष नहीं लेंगे। पर चलिए १९४७ की चर्चा करते हैं। उन दिनों भी कीरोव संक्रमण जेल में दो चाबीबरदार सन्तरियों को क़ैदियों को किसी कोठरी में ठूंसने के लिए अपने बूटों से उन्हें भीतर धकेलना पड़ता था, क्योंकि इसी तरीके से वे कोठरी का दरवाजा बन्द कर सकते थे। सितम्बर के महीने में (और कीरोव—जिसे पहले व्यातका के नाम से पुकारा जाता था—काला सागर के तट पर स्थित

नहीं है) प्रत्येक व्यक्ति अत्यधिक गर्मी के कारण तीन मंजिले सोने के तख्तों पर नंगा बैठा रहता था। वे लोग इसलिए बैठे थे, क्योंकि लेटने की जगह नहीं थी। कैदियों की एक पंक्ति तख्तों के दोनों सिरों पर बैठती थी और दो पंक्तियां तख्तों के बीच की जगह में फर्श पर तथा शेष इनके बीच में खड़े हो जाते थे और यह काम बारी-बारी से होता था। वे लोग अपने झोले अपने हाथों में अथवा अपने घुटनों के ऊपर रखते थे, क्योंकि इन्हें नीचे रखने के लिए कोई स्थान नहीं था। केवल चोर ही अपने कानूनी स्थानों पर डटे हुए थे—खिड़कियों के बराबर के दूसरी मंजिल के सोने के तख्तों पर और वे अपनी इच्छा के अनुसार पैर पसार कर लेट भी सकते थे। खटमल इतनी बड़ी संख्या में थे कि दिन के समय भी वे काटते रहते थे और एकदम छत से नीचे कैदियों के ऊपर गिरते थे। और लोगों को एक सप्ताह अथवा एक महीने तक यह यातना भोगनी पड़ती थी।"

मैं स्वयं अगस्त १९४५ में क्रासनाया प्रेसन्या[3] की स्थिति के बारे में बताने के लिये हस्तक्षेप करना चाहूंगा। यह हमारी विजय की ग्रीष्म थी। लेकिन, मुझे यह बताते हुए लज्जा का अनुभव होता है। आखिरकार, क्रासनाया प्रेसन्या में हम रात के समय किसी न किसी प्रकार अपने पांव फैला सकते थे और खटमलों की संख्या बहुत अधिक नहीं थी। पिस्सू हमें रात भर काटते रहते थे। हम लोग बिजली के बल्बों के तेज प्रकाश के नीचे नंगे और पसीने से लथपथ पड़े रहते थे। लेकिन यह कोई खास बात नहीं है और इस बात की डींग हांकने में मुझे लज्जा का अनुभव होगा। जरा-सा हिलते-डुलते ही हमारे शरीर से पसीने की धारा बहने लगती थी और कुछ खाने के बाद तो हम पसीने में सराबोर हो जाते थे। सामान्य फ्लैटों के औसत कमरे के आकार की एक कोठरी में एक सौ कैदी बन्द थे और हम इस प्रकार ठसाठस भरे हुये थे कि फर्श पर आपको पांव रखने के लिये भी जगह नहीं मिल सकती थी। दक्षिण की ओर की दीवार पर जो दो छोटी-छोटी खिड़कियां थीं उनके अधिकांश भाग को इस्पात की चादरें लगा कर बन्द कर दिया गया था। इससे केवल स्वच्छ हवा के आवागमन में ही रुकावट नहीं पड़ती थी लेकिन यह इस्पात की चादरें धूप में तप कर अत्यन्त गर्म हो जाती थीं और यह ताप कोठरी के भीतर फैलने लगता था।

जिस प्रकार समस्त संक्रमण जेलें निरर्थक होती हैं, उसी प्रकार संक्रमण जेलों के बारे में बात करना भी निरर्थक है, और, इस बात की पूरी संभावना है कि स्वयं यह भय भी ऐसा ही सिद्ध हो। यह बात समझ में नहीं आती कि सबसे पहले किस बात पर चर्चा की जाये, किस बात को सबसे पहले लिया जाये, कहां से शुरूआत की जाये। और संक्रमण जेलों में जितने अधिक लोगों को भरा जाता है, यह उतनी ही निरर्थक होती जाती हैं। ये जेलें मनुष्य के लिये असह्य होती हैं और गुलाग को भी इनकी आवश्यकता नहीं होती—लेकिन लोग इन जेलों में लगातार कई महीनों तक पड़े रहते हैं। और संक्रमण केन्द्र एक कारखाना बन जाती है: रोटी का राशन लाया जाता है, ईंट ढोने में प्रयुक्त हाथ गाड़ियों में इन्हें भर कर पहुंचाया जाता है। भाप उठती हुई खिचड़ी लकड़ी के बड़े-बड़े ढोलों में लाई जाती है। ये ढोल इतने बड़े होते हैं कि इनमें छः बाल्टी पानी आ जाये और इनमें कुदाल से छेद कर दिये जाते हैं।

कोतलास की संक्रमण जेल अन्य अनेक जेलों से कहीं अधिक तनावग्रस्त और ऊंचे दर्जे की थी। यह इसलिये तनावग्रस्त थी क्योंकि यहां से समस्त उत्तर-पूर्वी यूरोपीय रूस का मार्ग खुलता था और दूसरी जेलों से ऊंचे दर्जे की इसलिए क्योंकि यह स्थान पहले ही द्वीप-

समूह में काफी भीतर स्थित था। और किसी के भी समक्ष कोई स्वांग रचने की आवश्यकता नहीं थी। यह जमीन का एक ऐसा टुकड़ा था जिसे बाड़ लगाकर पिंजरों में बांट दिया गया था और सब पिंजरों में ताले पड़े रहते थे। यद्यपि सन् १९३० में निष्कासित किसानों की बड़ी संख्या को यहां बसाया गया था (यहां यह समझ लेना चाहिये कि इन किसानों के सिर पर छत भी नहीं थी पर इस बात से क्या फर्क पड़ता है। यह सब बातें बताने के लिए उनमें से आज कोई भी जीवित नहीं है) इतना ही नहीं सन् १९३८ तक में लकड़ी के लट्ठों के बेकार सिरों से बनी एक मंजिली बैरकों में जिनके ऊपर त्रिपाल ढका रहता था कैदियों के लिये पर्याप्त जगह नहीं थी। शरद् ऋतु की बर्फ में और शून्य से कम तापमान में लोग फर्श पर और खुले आसमान के नीचे पढ़े रहते थे। हां यह सच है कि गतिविधि के अभाव में उन्हें ठण्ड से जमने नहीं दिया जाता था। उनकी गणना का अनन्त कार्य निरन्तर जारी रहता था; जांच पड़ताल (वहां पर एक समय बीस हजार आदमी थे) अथवा रात के समय अचानक तलाशियों से इन लोगों को चुस्त रखा जाता था। आगे चलकर इन पिंजरों में तम्बू लगा दिये गए और कुछ में तो दो मंजिल ऊंचे बल्लियों के मकान बनाए गए। लेकिन बहुत विचार-शील ढंग से निर्माण की लागत घटाने के लिए पहली और दूसरी मंजिल के बीच छत नहीं बनाई थी—बस, इन मकानों के भीतर कैदियों के लिए छः मंजिले तख्ते लगा दिए गए थे और इनके बराबर सीढ़ी लगी होती थी। अत्यधिक बीमार और प्रायः मौत के मुंह में पहुंचे हुये कैदियों को भी नाविकों की तरह इन सीढ़ियों से चढ़ना उतरना पड़ता था। (यह एक ऐसा ढांचा था, जो किसी बन्दरगाह से अधिक किसी जहाज को सुशोभित करता)। सन् १९४४-१९४५ की सर्दियों में, जब प्रत्येक व्यक्ति के सिर के ऊपर छत थी, केवल ७,५०० कैदियों के लिए स्थान था और इनमें से ५० कैदी हर रोज मर जाते थे। और जिन स्ट्रेचरों पर लादकर इन्हें मुर्दाघर ले जाया जाता था वे कभी खाली नहीं रहती थीं। (लोग यह आपत्ति उठाएंगे कि यह बात पर्याप्त स्वीकार योग्य है—प्रतिदिन एक प्रतिशत से भी कम की मृत्युदर—और इस रफ्तार से एक व्यक्ति कम से कम पांच महीने तो जीवित रह ही सकता है। हां, लेकिन प्रमुख हथियार, शिविर का श्रम था और संक्रमण जेल में तो अभी यह शुरू भी नहीं हुआ था। प्रतिदिन एक प्रतिशत के दो तिहाई की हानि केवल वस्तुओं का सिकुड़ना ही कहा जा सकता है लेकिन कुछ सब्जियों के गोदामों तक में इसे असह्य रूप से ऊंचा बताया जाएगा।)

जैसे-जैसे आप द्वीपसमूह के भीतर आगे बढ़ते जाते हैं, द्वीपसमूह की कंक्रीट की गोदियां कहीं अधिक स्पष्ट रूप से लकड़ी के लठ्ठों के ढेरों के घाटों में बदलती जाती हैं।

कई वर्ष की अवधि में पांच लाख लोग कारावास से होकर गुजरे। यह संक्रमण शिविर करगन्दा के पास है, जिसका नाम हमारी भाषा में बहुत प्रचलित हो उठा। (सन् १९४२ में यूरीकारबे वहां था और उसकी पंजीकृत संख्या ४,३३,००० बताई गई थी।) संक्रमण जेल नीची छत वाली कच्ची बैरकों से बनी थी और इनका फर्श भी कच्चा था। यहां प्रति दिन के मनोरंजन में यह होता था कि सब कैदियों को उनके सामान सहित बैरकों से बाहर निकाल लिया जाता था और कलाकारों को इन बैरकों में फर्श पर सफेदी करने और यहां तक कि फर्श पर कालीनों की आकृतियां चित्रित करने के लिए भेजा जाता था। और फिर शाम के समय कैदी लोग इस फर्श पर लेटते थे और उनके शरीर सफेदी और कालीनों दोनों को मिटा डालते थे।[४]

कनियाभ्र-पोगोस्त संक्रमण केन्द्र (अक्षांस ६३ डिग्री उत्तर) में दलदली जमीन पर गंदी झोंपड़ियां बनी थीं। बल्लियों से बने ढांचों पर फटे पुराने तम्बुओं के त्रिपाल डाल दिए गए थे और ये इतने छोटे थे कि जमीन तक नहीं पहुंच पाते थे। इनके भीतर कैदियों के लेटने के लिए जो ऊपर नीचे स्थान बना होता था उस पर भी तख्तों के स्थान पर बल्लियां लगी थीं। (प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि इन बल्लियों पर कई स्थानों पर पेड़ की शाखाओं को पूरी तरह काटा भी नहीं गया था) और बीच के फर्श पर भी बल्लियां डाल दी गई थीं। दिन के समय कीचड़ इन बल्लियों के बीच से ऊपर निकल आता था और रात के समय की ठंडक में बर्फ की तरह जम जाता था। इस इलाके के विभिन्न हिस्सों में इधर उधर जाने के लिए कमजोर और निरन्तर हिलने डुलने वाली बल्लियों को रास्तों पर लगा दिया गया था। और जो कैदी कमजोर हो जाने के कारण बहुत सावधानी से इन बल्लियों के ऊपर से नहीं चल पाते थे वे नीचे पानी और दलदल में गिर पड़ते थे। सन् १९३८ में कनियाभ्र पोगोस्त में कैदियों को हर रोज एक ही चीज खाने के लिए दी जाती थी। कुचले हुये ग्रिट और मछली की हड्डियों का दलिया। ये इसलिए सुविधाजनक था क्योंकि संक्रमण जेल में कटोरे, चमचें अथवा कांटे नहीं थे। और कैदियों के पास स्वयं अपनी ऐसी कोई चीज नहीं थी। उन्हें दर्शनों की संख्या में भोजन उबालने वाले बर्तन के पास ले जाया जाता था और यह दलिया बड़ी कड़छी से इनकी टोपियों में अथवा कोट के पल्लों में डाल दिया जाता था।

और वोगवोजदिनो की संक्रमण जेल में, (उस्त-वीम से कई मील दूर) जहां ५,००० कैदियों को एक साथ रखा गया था, (अब आप ही, बताइए कि इस वाक्य से पहले किस व्यक्ति ने वोगवोजदिनो का नाम सुना था? ऐसे कितने अज्ञात संक्रमण केन्द्र वहां मौजूद थे? और इसके बाद इनकी संख्या को ५,००० से गुना कर दो) तरल भोजन दिया जाता था लेकिन वहां भी कटोरे नहीं थे। फिर भी उन लोगों ने इन कटोरों के बिना काम चलाया (ऐसा कौन सा काम है, जिससे हमारी रूसी प्रतिभा टक्कर न ले पाये?) इस पानी जैसी पतली खिचड़ी को एक साथ दस लोगों को चिलमचियों में दे दिया जाता था और इसके बाद इन लोगों के बीच अधिक से अधिक सड़प जाने की दौड़ शुरू हो जाती थी।[५]

यह सच है कि वोगवोजदिनो में किसी भी व्यक्ति को एक वर्ष से अधिक समय तक कैद नहीं रखा जाता था। (यहां पर जो कैदी इससे अधिक समय तक रखे जाते थे उनमें वे कैदी होते थे जो इस दुनिया में कुछ ही दिन के मेहमान थे और जिन्हें सब शिविरों ने लेने से इनकार कर दिया था।)

द्वीपसमूह के निवासियों के जीवन और रीति-रिवाजों के बारे में लेखकों की कल्पना दरिद्रता से ग्रस्त है। वे लोग जब कभी जेल के सबसे अधिक आपत्ति जनक और निन्दनीय पहलू के बारे में लिखना चाहते हैं तो वे सदा पाखाने की बाल्टी के माथे दोष मढ़ते हैं। साहित्य में पाखाने की बाल्टी जेल का प्रतीक, अपमान और बदबू का प्रतीक बन गई है। ओह, आप कितने विवेकहीन हो सकते हैं? क्या पाखाने की बाल्टी सचमुच कैदियों के लिये एक बुरी वस्तु थी? इसके विपरीत, यह जेल प्रशासन का सर्वाधिक दयापूर्ण कार्य था। वास्तविक भयावह स्थिति उस क्षण उत्पन्न होती थी जब किसी जेल की कोठरी में पाखाने की बाल्टी नहीं होती थी।

सन् १९३७ में साइबेरिया की जेलों में पाखाने की बाल्टियां नहीं थीं अथवा वे पर्याप्त नहीं थीं। समय रहते पर्याप्त संख्या में इन्हें बनाया नहीं गया था—साइबेरिया का उद्योग

गिरफ्तारियों की संपूर्ण व्यापकता और गति के साथ कदम से कदम मिला कर नहीं चल सका था। नव निर्मित जेल की कोठरियों के लिए गोदामों में पाखाने के ढोल उपलब्ध नहीं थे। कोठरियों में पुरानी पाखाने की बाल्टियां थीं लेकिन वे बहुत जर्जर और छोटी थीं और इनके सम्बन्ध में केवल यही एकमात्र उचित कारवाई की जा सकती थी कि इन्हें हटा दिया जाये। क्योंकि बड़ी संख्या में नये कैदियों के आ जाने के बाद इनका कोई अर्थ ही नहीं रह गया था। इस प्रकार यदि लम्बे अरसे पहले मिनूसिंस्क जेल ५०० आदमियों के लिये बनाई गई थी (व्लादिमिर इलिच लेनिन कभी भी इसके भीतर नहीं रहे : वे स्वतन्त्रतापूर्वक इधर-उधर घूम सकते थे) लेकिन अब इसमें १०,००० आदमी थे। इसका यह अर्थ होता है कि पाखाने की प्रत्येक बाल्टी का आकार २० गुना बड़ा हो जाना चाहिये था। लेकिन यह नहीं हुआ।

हमारी रूसी लेखनियां केवल बड़े-बड़े अक्षर लिखती हैं। हमने इतना अधिक देखा, सुना और सहा है और इसमें से प्राय: किसी का भी विवरण नहीं दिया गया है। और उन्हें उनके सच्चे नामों से पुकारा नहीं गया है। लेकिन पश्चिम के लेखकों के लिये, जो प्रतिदिन के जीवन की जीवन्त कोषिकाओं को एक सूक्ष्मदर्शी के माध्यम से देखते हैं, तेज प्रकाश की धारा में परखनली को हिलाते हैं, यह तो एक पूरा महाकाव्य ही है। इसके आधार पर 'अतीत की वस्तुओं के स्मरण' शीर्षक के अन्तर्गत दस खण्ड लिखे जा सकते हैं : एक ऐसी कोठरी में जिसमें निर्धारित संख्या से २० गुने अधिक कैदी भरे हों और जिसमें पाखाने की बाल्टी मौजूद न हो, जहां दिन में केवल एक बार कैदियों को बाहर शौचालय ले जाया जाता हो, मानव आत्मा के उद्वेलन के चित्रण के लिए इतने ही स्थान की आवश्यकता होगी। यह सही है कि इस जीवन का अधिकांश विवरण पश्चिम के लेखकों को प्राय: पूरी तरह से अज्ञात है। वे यह अनुभव नहीं कर सकते कि इस स्थिति में एक हल यह हो सकता है कि आप अपने मोमजामे के बड़े टोपे में पेशाब कर लें, और न ही यह बात उनकी समझ में आ सकती है कि एक कैदी दूसरे कैदी को यह सलाह देता है कि वह अपने बूट में पेशाब कर लें! पर यह सलाह अपार अनुभव से प्राप्त विवेक का सुफल थी और इसमें बूट बर्बाद ही नहीं होता था और इससे बूट एक बाल्टी भी नहीं बन जाता था। बस करना यह होता था कि आप अपना बूट उतारिये, इसे एकदम उल्टा कर लीजिये, ऊपरी हिस्सा भीतर और भीतरी हिस्सा बाहर कर लीजिये—बस इस प्रकार एक गोल बर्तन बन जाता है और इससे अत्यन्त आवश्यक पात्र की कमी पूरी हो जाती है : लेकिन, इसके साथ ही, कैसे मनोवैज्ञानिक दाव पेंचों के आधार पर पश्चिम के लेखक अपने साहित्य को समृद्ध बना सकते हैं (और इस काम में उन्हें प्रख्यात लेखकों की पंक्तियों को दोहराने की जोखिम भी नहीं उठानी पड़ेगी।) यदि उन्हें यह पता चल जाये कि इसी मिनूसिंस्क जेल में क्या परिस्थितियां थीं : प्रति चार कैदियों के पीछे भोजन का केवल एक कटोरा था; और प्रत्येक कैदी को प्रतिदिन एक मग पीने का पानी मिलता था (मगों की संख्या पर्याप्त थी।) और यह हो सकता था कि जिन चार कैदियों को भोजन का उक्त कटोरा मिला हो उनमें से कोई मौके का लाभ उठा कर अपने आन्तरिक दबाव से राहत पाने के लिए उसमें पेशाब कर दे और इसके बाद दोपहर के भोजन से पहले इस कटोरे को धोने के लिये अपने पानी के राशन में से जरा सा भी पानी देने से इनकार कर दे। कैसा संघर्ष है! चार व्यक्तियों का कैसा टकराव है! कैसी बारीकियां और पेचीदगियां हैं! (और मैं मजाक नहीं कर रहा हूं। इन्हीं परिस्थितियों में एक मनुष्य की थाह मिलती है। वह अपनी पूर्णता में उजागर हो जाता है। बस, बात केवल इतनी है कि रूस की

लेखनियां अन्य कार्यों में इतनी व्यस्त हैं कि उन्हें इन बातों के बारे में लिखने का समय ही नहीं मिलता, और रूसी आंखों को इन बातों का विवरण पढ़ने का अवकाश प्राप्त नहीं है। मैं मजाक नहीं कर रहा हूं—क्योंकि केवल डाक्टर लोग ही यह बता सकते हैं कि किसी ऐसी कोठरी में बिताये गए कुछ महीने किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य को सदा सर्वदा के लिए किस प्रकार चौपट कर सकते हैं, चाहे उसे येझोव के अधीन गोली से नहीं उड़ाया गया और ख्रुश्चेव के शासनकाल में अभियोग मुक्त कर दिया गया।)

और जरा यह तो सोचिए कि हम लोग बन्दरगाह में, संक्रमण जेल में कुछ समय आराम करने और राहत का अनुभव करने के सपने देख रहे थे! अनेक दिनों लगातार स्तोलिपिन रेलडिब्बे में भुर्ता बनाए जाने और निरन्तर चलते रहने के बाद हम कितनी लालसा से संक्रमण जेल का स्मरण कर रहे थे! हम सोचते थे कि वहां हम लोग अपने पांव पसार सकेंगे और सीधे खड़े हो सकेंगे। कि हम लोग वहां बिना किसी जल्दबाजी के शौचालय जा सकेंगे! कि हम वहां अपनी इच्छा के अनुसार जितना चाहेंगे पानी पीएंगे और हमें इसी प्रकार चाय के लिए भी पर्याप्त गर्म पानी मिलेगा। कि वहां हमें स्वयं अपने रोटी के राशन को सन्तरियों के बन्धक से छुड़ाने के लिए अपना कीमती सामान नहीं देना होगा। कि हमें वहां गर्म भोजन मिलेगा। और यह भी कि अन्ततः हमें स्नानघर ले जाया जाएगा, कि हम गर्म पानी में डटकर नहाएंगे और हमारे शरीर की खुजली मिट जाएगी। ब्लैकमारिया मोटर-गाड़ी के भीतर हमारी पसलियों में एक दूसरे की कुहनियां गड़ी थीं और हमने भयंकर हिचकोले खाए थे; और वे लोग हमारे ऊपर चीखते थे: "बांहों में बांह डालो!" "अपनी एड़ियां पकड़ लो!" लेकिन हम इसके बावजूद काफी उत्साहित थे: ठीक है, ठीक है, हम जल्दी ही संक्रमण जेल में पहुंच जाएंगे! और अब वहां पहुंच गए थे।

और यदि संक्रमण जेल में हमारे सपनों का कुछ हिस्सा सच्चा साबित हुआ तो भी ऐसी दूसरी बातें वहां अवश्य मौजूद रहतीं कि सब कुछ भद्दा हो जाता, बिगड़ जाता।

नहाने के कमरों में हमें क्या मिलता? आप कभी भी इस बात को निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते। अचानक उन लोगों ने सब स्त्रियों के बाल मुड़वाने शुरू कर दिए। (क्रासनाया प्रेसन्या, नवम्बर १६५० में) अथवा हम नंगे आदमियों की एक पूरी कतार के बाल स्त्री नाई मशीनों से मूंड़ती। वोलग्दा के भापघर में, भारी भरकम चाची मोतिया चिल्लाती रहती: "आदमियों खड़े हो जाओ!" और वह पूरी कतार के ऊपर पाइप से भाप छोड़ती। और इर्कुतस्क संक्रमण जेल का तर्क भिन्न प्रकार का था: नहाने के कमरे में सेवा कर्मचारियों में केवल पुरुष ही होने चाहिएं और एक आदमी को ही दवा का मलहम स्त्रियों की टांगों के बीच लगाना चाहिए। अथवा सर्दियों में, नोवोसिबिर्स्क संक्रमण जेल में साबुन लगाने के ठंडे कमरे में नल से केवल ठंडा पानी ही निकलता है। कैदी लोग बड़े अफसरों से यह बात कहने का निश्चय करते हैं और कैप्टन आता है, एक नल के नीचे अपना हाथ करता है: "मैं कहता हूं कि यह पानी गर्म है! समझ में आया?" मैं पहले ही यह कहते कहते थक चुका हूं कि ऐसे स्नानघर होते थे जिनमें पानी नहीं होता था, कि कपड़ों को जूओं आदि से मुक्त करने के लिए तपाने के यन्त्रों में इन्हें झुलसा दिया जाता था, कि नहाने के बाद वे लोगों को नंगे शरीर और नंगे पांव बर्फ के ऊपर से दौड़ कर अपनी चीजें लेने के लिए दौड़ने को बाध्य करते थे। (सन् १६४५ में ब्रोदनिका में दूसरे बाइलो रूसी मोर्चे का जासूसी विरोधी संगठन)।

संक्रमण जेल में पहला कदम रखते ही आप यह अनुभव कर लेते हैं कि आप यहां जेलरों अथवा जेल प्रशासन के अफसरों के हाथों में नहीं हैं, जो यदा कदा किसी प्रकार के लिखित कानून का पालन करते हैं। यहां आप ट्रस्टियों के हाथ में हैं। ये ट्रस्टी सामान्य अपराधी कैदी ही होते थे, जिन्हें संक्रमण जेलों के अफसर जेल का काम चलाने के लिये चुन लेते थे। और ये लोग अनेक गलत काम करते थे। वह स्नानघर का उद्धत सहायक जो कैदियों की गाड़ी के पास आकर कहता है : "ठीक है, भद्र पुरुषों, फासिस्टों, नहाने के लिए चलो!" और काम देने वाला वह क्लर्क जो अपने हाथ में प्लाईवुड का लिखने का तख्ता लिए रहता है और जो आपकी टोली के ऊपर बड़ी बेढब दृष्टि डालता है और आपको जल्दी जल्दी आगे बढ़ने का हुक्म सुनाता रहता है। और वह प्रशिक्षक, जिसके सब बाल एक बालों के गुच्छे को छोड़कर सफाचट हैं और जो लिपटे हुए अखबार को अपनी टांग पर मारता रहता है और इसके साथ ही आपके झोलों की तलाशी भी लेता है, और इसके बाद संक्रमण जेल के दूसरे ट्रस्टी जिन्हें आप पहचान नहीं पाते, और जो एक्सरे जैसी आंखों से आपके सूटकेसों को टटोलते हैं—ओह, ये सब कितने अधिक समान हैं! और आप सोचने लगते हैं कि कैदियों की गाड़ियों में अपनी संक्षिप्त यात्रा के दौरान आपने इन लोगों को इससे पहले कहां देखा है? ये लोग इतने साफ सुथरे दिखाई नहीं पड़ रहे थे, ये लोग इतनी अच्छी तरह से नहाये धोये दिखाई नहीं पड़ रहे थे। लेकिन ये वैसे ही भद्दे दुष्ट सुअर थे, जो कैदियों की गाड़ी में आपकी ओर निर्मम रूप से खीसें निपोरते थे?

वाह! यह तो वही ब्लातनिए है, वही चोर हैं। एक बार फिर इनसे भेंट हो गई। ये वही उर्की ठग हैं, जिनकी महिमा लियोनिद उत्योसोव अपने गीतों में गाता है। एक बार फिर हमारे सामने झेंका भोगोल, सेरयोगा, जवेर और दिमका किश्केन्या मौजूद हैं, लेकिन इस बार वे जेल के सींखचों के पीछे नहीं; इन लोगों को नहला धुला दिया गया है और राज्य के प्रतिनिधियों के रूप में सजा-संवार दिया गया है। और अपना अत्यन्त महत्व दर्शाते हुए, वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि अनुशासन का पालन हो—हम लोग अनुशासन का पालन करें। लेकिन यदि कोई व्यक्ति गौर से इन थूथनों पर नजर डाले तो थोड़ी सी कल्पनाशीलता से वह यह अनुमान लगा सकता है कि हम लोगों की तरह ही इन लोगों का उद्गम भी रूसी मूल से हुआ है—कि किसी समय ये लोग भी गांवों के लड़के थे जिनके पिताओं का नाम क्लिम, प्रोखोर, गुरि जैसे थे और इनकी शारीरिक बनावट भी हमारी जैसी ही है : दो नथुने, आंखों में दो गोल तारे, एक गुलाबी जिह्वा जो भोजन निगलती है और कुछ रूसी ध्वनियों का उच्चारण करती है, लेकिन जो पूरी तरह से नए शब्दों को जन्म देती है।

प्रत्येक संक्रमण जेल के प्रमुख अफसर में इतनी सूझ बूझ अवश्य होती है कि वह यह अनुभव कर सके कि वह अपनी जेल के समस्त कर्मचारियों का वेतन अपने रिश्तेदारों को घर बैठे भेज सकता है। अथवा वह इस पैसे को जेल के दूसरे अफसरों के साथ मिल-बांट कर खा सकता है। और इसके लिए बस एक सीटी बजाना भर आवश्यक है और आपको सामाजिक दृष्टि से मित्रतापूर्ण कैदियों से इच्छानुसार स्वयंसेवक प्राप्त हो जायेंगे जो इस बात के लिये जेल का काम करने को तैयार हो जायेंगे कि उन्हें संक्रमण जेल में ही रहने दिया जाय और आगे किसी खान अथवा जंगल में काम करने के लिए न भेजा जाय। कैदियों को काम देने वाले क्लर्क, दफ्तर के क्लर्क, लेखाकार, प्रशिक्षक, स्नानघरों के सहायक, नाई, गोदामों के क्लर्क, रसोइए, बर्तन साफ करने वाले, कपड़े धोने वाली औरतें,

अण्डरवियर और चादरों की मरम्मत करने वाले दर्जी—ये सब संक्रमण जेल के स्थाई निवासी हैं। इन लोगों को जेल का राशन दिया जाता है और विभिन्न कोठरियों में इनके नाम दर्ज होते हैं। वे जेल के सामान्य भोजन के बर्तन से अपना शोरबा और अन्य खाने की चीजें मनमाने ढंग से लेते रहते हैं अथवा संक्रमण जेल में जाने वाले कैदियों के पुलिन्दों से खाने की चीजें उड़ा लेते हैं। संक्रमण जेल के ये ट्रस्टी यह निश्चयपूर्वक जानते हैं कि किसी भी शिविर में वे इससे बेहतर स्थिति में नहीं हो सकते। हम जब संक्रमण जेल में इनके हाथों में पहुंचते हैं उस समय तक हम पूरी तरह लुटे हुए नहीं होते। और ये लोग जी भर हमें लूटते हैं। यहां ये लोग ही हमारी और हमारे सामान की तलासी लेते हैं जेलर नहीं और तलाशी से पहले वे हमें यह भी सुझाव देते हैं कि हम स्वेच्छा से अपना पैसा उन्हें सुरक्षित रखने के लिये दे दें और वे बड़ी गम्भीरता से एक सूची में तैयार करते हैं—पर हम कभी भी इस सूची अथवा अपने पैसे को नहीं देख पाते। "हमने अपना पैसा रखने के लिये दिया था।" "किसको दिया था?" अफसर बड़े आश्चर्य से पूछता है। "ठीक है, वह उन लोगों में से ही कोई था।" "पर वह कौन था, ठीक ठीक बताओ।" ट्रस्टियों ने तो स्पष्टतया यह नहीं देखा था कि कौन व्यक्ति पैसा इकट्ठा कर रहा है? "तुमने उसे अपना पैसा क्यों दिया?" "हमने सोचा···" "मुर्गी भी यही सोचती है। तुम सोचना कम करो तो तुम्हारी हालत बेहतर होगी।" और बस यहीं बात खत्म हो जाती है। वे लोग यह सुझाव देते हैं कि हम अपनी चीजें नहाने के कमरे के डिब्बे में बाहर छोड़ जाएं: "कोई भी इन्हें नहीं लेगा। किसे इनकी जरूरत है?" हम लोग अपनी चीजें छोड़ जाते हैं क्योंकि हम किसी भी हालत में उन चीजों को नहाने के कमरे के भीतर ले भी तो नहीं जा सकते। हम वापस लौटते हैं और न तो स्वेटर मिलते हैं और न हीं रोंयेदार खाल के अस्तर लगे दस्ताने। "कैसा स्वेटर था?" "सलेटी से रंग का।" "ठीक है, यह लांडरी में चला गया है।" वे लोग हमसे हमारी चीजें "ईमानदारी" से लेते हैं: गोदाम के कमरे में सुरक्षित रखने के लिये सूटकेस लेने के बदले वे कुछ मांगते हैं; ऐसी जेल की कोठरी में रखने के लिए भी कुछ देना पड़ता है जिसमें चोर न हों। जल्दी से जल्दी कैदियों की गाड़ी में सवार करने के लिये; जब तक सम्भव हो हमें संक्रमण जेल से आगे न भेजने के लिये। बस वे केवल एक ही काम नहीं करते कि खुल्लमखुल्ला बल प्रयोग के द्वारा हमें नहीं लूटते।

"लेकिन ये लोग चोर नहीं हैं!" हमारे बीच मौजूद पारखी समझाते हैं। "ये तो कुत्ते हैं—ये जेल के लिये काम करते हैं। ये लोग ईमानदार चोरों के दुश्मन हैं और ईमानदार चोर वे हैं जो कोठरियों में बंद हैं।" लेकिन न जाने क्यों हमारे खरगोशों जैसे मस्तिष्क में इस बात की पेचीदगी नहीं आती। इन लोगों के तौर तरीके एक से हैं; इनके शरीर पर एक से गोदने गुदे होते हैं। हो सकता है कि ये सचमुच उन दूसरे चोरों के शत्रु हों, लेकिन ये हमारे भी तो मित्र नहीं हैं, और स्थिति बस यही है···

और जब तक वे लोग हमें कोठरियों की खिड़कियों के नीचे अहाते में बैठने के लिए बाध्य कर चुके हैं। खिड़कियों पर चद्दरें ठुकी हैं और आप इनके भीतर झांक कर नहीं देख सकते: लेकिन भीतर से कर्कश पर मित्रतापूर्ण आवाजें हमें सलाह देती हैं: "अरे, साथियो! तुम्हें मालूम है कि ये लोग यहां क्या करते हैं? तलाशी के समय वे चाय और तम्बाकू जैसी सब चीजें छीन लेते हैं। अगर तुम्हारे पास ऐसी कोई चीज है तो इसे खिड़की से भीतर फेंक दो, हम बाद में तुम्हें लौटा देंगे। तो आप जानते ही क्या हैं? हम लोग मूर्ख और खरगोश

हैं। हो सकता है कि वे लोग चाय और तम्बाकू छीन लेते हों। हम लोगों ने अपने महान साहित्य में कैदियों की सार्वभौम एकजुटता के बारे में पढ़ा है, कि एक कैदी दूसरे कैदी को धोखा नहीं देता। उन लोगों ने हमें मित्रतापूर्ण तरीके से संबोधित किया था। अरे, साथियो!" और हम लोग अपनी तम्बाकू की थैलियां उनके पास फेंक देते हैं और खिड़कियों के दूसरी ओर खड़े सच्चे असली नस्ल के चोर इन्हें लपक लेते हैं और फिर हंसी का फुव्वारा छूटता है : "फासिस्ट, बेवकूफ कहीं के।"

और ये वे नारे हैं जिनसे समस्त संक्रमण जेल हमारा स्वागत करती है। यद्यपि वे लोग इन नारों को लिख कर जेल की दीवारों पर नहीं लटकाते : "यहां न्याय की आशा मत करो!" "यहां तुम्हें अपनी प्रत्येक वस्तु हमें सौंपनी होगी :" "तुम्हें एक एक चीज देनी होगी!" यही बात जेल के कर्मचारी, गारद के सन्तरी और चोर निरन्तर दोहराते हैं। आप पहले ही अपनी जेल की असह्य सजा और इसकी लम्बी अवधि से अभिभूत हैं और आप सांस लेने भर के लिये, स्वयं अपने विचारों को व्यवस्थित करने के लिये पूरी कोशिश में लगे हैं जबकि आप के चारों ओर मौजूद व्यक्ति यही करने में लगे हैं कि आपको किस प्रकार लूट लिया जाय। राजनीतिक कैदी को सताने के लिए प्रत्येक व्यवस्था और वस्तु मौजूद रहती है, जो कि अपने से पहले ही अत्यन्त निराश और परित्यक्त अनुभव करता है। "तुम्हें इन सब चीजों को दे डालना होगा। गोर्की संक्रमण जेल का एक जेल कर्मचारी निराशा से अपना सिर हिलाते हुए कहता है और अत्यधिक राहत का अनुभव करते हुए आंस बर्नश्टीन उसे अपना अफसर का बड़ा कोट थमा देता है—मुफ्त में नहीं, बल्कि दो प्याज के बदले। और आप चोरों की शिकायत क्यों करें। यदि आप क्रासनाया प्रेसन्या के सब जेल कर्मचारियों को बढ़िया चमड़े के बूट पहने हुए देखें जो उन्हें कभी भी सरकार की ओर से नहीं दिये गये थे? चोरों ने इन सब बूटों को कोठरियों से चुराया था और इसके बाद इन्हें जेल कर्मचारियों को सौंप दिया था। चोरों की शिकायत क्यों करें। यदि शिविर प्रशासन के सांस्कृतिक और शिक्षा विभाग का प्रशिक्षक ब्लाततोई है, चोर है और राजनीतिक कैदियों की रिपोर्ट लिखता है? (केम संक्रमण जेल।) और आपको रोस्तोव संक्रमण जेल में चोरों के विरुद्ध न्याय कैसे मिल सकता है। यदि यह इनका प्राचीन मूल जातीय अड्डा है?

कहते हैं कि सन् १९४२ में गोर्की संक्रमण जेल में कुछ अफसर कैदियों ने (जिनमें गाव्रीलोव, सैनिक इंजीनियर शेहेबेतिन और अन्य शामिल थे, विद्रोह कर दिया, चोरों को मारा-पीटा और उन्हें पंक्ति में खड़ा रहने के लिये बाध्य किया। लेकिन इस घटना को सदा एक आख्यान भर माना जाता रहा है; क्या किसी एक भी कोठरी में चोरों ने घुटने टेके? अधिक समय के लिये? और यह कैसे हुआ कि नीली टोपी वालों ने सामाजिक दृष्टि से शत्रुतापूर्ण तत्वों को सामाजिक दृष्टि से मित्रतापूर्ण तत्वों को पीटने दिया? और जब वे लोग यह बताते हैं कि १९४० में कोतलास संक्रमण जेल में चोरों ने कमीसारी के सामने पंक्तिबद्ध खड़े राजनीतिक कैदियों के हाथों से पैसा छीनना शुरू कर दिया और राजनीतिक कैदियों ने इन लोगों की इतनी भयंकर पिटाई शुरू कर दी कि उन्हें रोकना असम्भव हो गया और इसके बाद जेल के अहाते की रखवाली के लिये तैनात संतरियों ने चोरों की रक्षा के लिये मशीनगनें लेकर अहाते में प्रवेश किया। तो यह एक ऐसी बात दिखाई पड़ती है जिस पर विश्वास किया जा सकता है। वास्तव में हुआ भी यही था।

मूर्ख रिश्तेदार! वे लोग स्वतंत्रता में इधर उधर धक्के खाते फिरते हैं, ऋण लेते हैं

(क्योंकि उनके पास कभी भी पर्याप्त पैसा नहीं रहा), और आपके लिए खाने की चीजें और अन्य वस्तुएं भेजते हैं—एक विधवा का अन्तिम सहारा उस पर खर्च हो जाता है। लेकिन यह एक विषाक्त उपहार ही होता है क्योंकि यह आपको एक स्वतंत्र लेकिन भूखे व्यक्ति से बदल कर एक चिन्तित और कायर व्यक्ति बना डालता है और यह आपको उस नव प्राप्त प्रबुद्धता से भी, उस संकल्प की दृढ़ता से भी वंचित कर देता है जो आपके लिये इस नर्क में जीवित रहने के लिये आवश्यक है। बुद्धिमतापूर्ण धर्मपुस्तक में ऊंट और सुई के नाके का उदाहरण है। ये भौतिक वस्तुएं आपको मुक्त भावना के ईश्वरीय राज्य में प्रवेश करने से रोकेंगी। और आप देखते हैं कि पुलिस की गाड़ी में अन्य लोगों के पास भी आपके जैसे ही झोले होते हैं। "फटे चिथड़ों के झोले वाले हरामजादे!" चोरों ने ब्लैक मारिया के भीतर गुर्राते हुए यही शब्द आपके लिए कहे थे—लेकिन वे केवल दो थे और आपकी संख्या पचास थी और अभी तक वे आपको छू नहीं पाये थे। और अब वे लोग हमें क्रासनाया प्रेसन्या स्टेशन पर दूसरे दिन भी रोके हुए थे और हम गन्दे फर्श पर पालती मारे बैठें थे। लेकिन हममें से कोई भी हमारे चारों ओर व्याप्त जीवन का प्रेक्षण नहीं कर रहा था क्योंकि हम सब आवश्यकता से इस अधिक बात के लिए चिन्तित थे कि किस प्रकार सुरक्षित रखने के लिए अपने सूटकेस अधिकारियों को सौंप सकें। यद्यपि यह समझा जाता है कि हमें अपनी वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिये सौंपने का अधिकार है लेकिन इसके बावजूद काम देने वाले क्लर्कों ने हमें यह इसलिए करने दिया क्योंकि यह जेल एक मास्को की जेल थी और अभी तक हम मास्को के लोग दिखाई पड़ते थे।

कैसी राहत है—हमारी चीजों की जांच हो रही है। (इसका यह अर्थ होता है कि हमें अपनी चीजों को इस संक्रमण जेल में नहीं बल्कि आगे देना होगा। हमारे हाथों में हमारे बंडल लटक रहे थे, जिनमें हमारी दुर्भाग्यपूर्ण खाने की वस्तुएं थीं। हम बहुत से ऊदबिलावों को एक ही स्थान पर एकत्रित कर लिया गया था। उन लोगों ने हमें विभिन्न कोठरियों में पहुंचाना शुरू किया। मुझे उसी वैलिनतिल के साथ एक कोठरी में भेजा गया, जिसे मैंने उस दिन देखा था जब मैंने अपने विशेष मण्डल द्वारा सुनाई गई सजा पर हस्ताक्षर किए थे और जिसने अत्यधिक मार्मिक विचारों से भर कर कहा था कि हम शिविर में एक नया जीवन-शुरू करेंगे। अभी तक कोठरी ठसाठस नहीं भर पाई थी। सोने के तख्तों के बीच की जगह खाली थी। तख्तों के नीचे काफी जगह थी। परम्परागत व्यवस्था के अनुसार चोर लोग दूसरी मंजिल के तख्तों पर जमे हुए थे: उनके वरिष्ठ सदस्य खिड़कियों के बराबर थे और उनसे निचले दर्जे के कुछ पीछे। तटस्थ और महत्वहीन समुदाय नीचे के तख्तों पर था। किसी ने हमारे ऊपर हमला नहीं किया। चारों ओर देखे बिना और आगे की बात सोचे बिना अपनी अनुभवहीनता के कारण, हम लोग कोलतार के फर्श पर बैठ गए और पेट के बल घिसटते हुए सोने के तख्तों के नीचे पहुंच गये। हम लोग यहां भी काफी आराम से रह सकते थे। लम्बे चौड़े आदमियों के लिये तख्ते बहुत नीचे लगे थे और हमें अपने पेट के बल एक एक इन्च घिसट कर आगे बढ़ना पड़ा। हमने यही किया और कोई चारा भी नहीं था और हम लोग वहां चुपचाप लेटकर चुपचाप बात करने की सोच रहे थे। पर कहां! अर्ध अंधकार में, मौन सरसराहट से, हर दिशा से लड़के अपने हाथों और पांवों और घुटनों के बल बड़े बड़े चूहों की तरह हमारी ओर बढ़े। ये सब अभी लड़के ही थे। इनमें कुछ तो १२ वर्ष की उम्र के ही थे लेकिन दंडसंहिता में १२ वर्ष के बच्चों के लिये भी सजा की व्यवस्था है। इन लोगों

के मामले की सुनवाई एक चोरों के मुकद्दमे में हो चुकी थी और यहां वे पुराने चोरों के अधीन अपना प्रशिक्षण पूरा कर रहे थे। इन लोगों को हमारे ऊपर छोड़ दिया गया था। ये लोग चारों ओर से हमारे ऊपर टूटे और छ: जोड़ी हाथों ने हमारे हाथों से और हमारे नीचे से हमारी समस्त सम्पत्ति झपट ली। और यह सब कुछ पूर्ण मौन की स्थिति में हुआ। बस, नाक सुड़कने की भयंकर आवाज़ ही हो रही थी। और हम फंस चुके थे: हम लोग उठ कर खड़े नहीं हो सकते थे, हम लोग हिल नहीं सकते थे। इन लोगों को गोश्त, चीनी और रोटी के हमारे बंडल छीन लेने में एक मिनट का समय भी नहीं लगा। वे लोग वहां से खिसक गये। हम लोग वहां बेवकूफों की तरह पड़े रहे। हक लोगों ने बिना किसी लड़ाई के अपने खाने की चीजें दे डाली थीं। हम लोग वहां वैसे ही पड़े रह सकते थे लेकिन यह पूरी तरह से असम्भव था। बड़े भद्दे ढंग से घिसट कर हम लोग बाहर निकले। हमने पहले अपना पिछला हिस्सा बाहर निकाला और फिर उठकर खड़े हो गए।

क्या मैं कायर हूं? मैं समझता था कि मैं यह नहीं हूं। मैंने एक खुले पहाड़ी ढलान पर बमबारी के बीच अपना रास्ता निकाला था। मैं एक ऐसे रास्ते पर अपनी गाड़ी चलाने से डरा नहीं था, जिस पर स्पष्ट था कि टैंक तोड़ बारूदी सुरंगें बिछाई गई है। मैं उस समय भी पूरी तरह से संयत रहा जब मैंने अपनी तोपखाने की टुकड़ी को शत्रु के घेरे से बाहर निकाला और एक क्षतिग्रस्त कमांड कार को वापस लाने के लिए फिर वापस गया। तो मैंने उस क्षण इन मानवीय चूहों में से किसी एक को दबोच क्यों नहीं लिया और उसके गुलाबी चेहरे को काले तारकोल पर क्यों नहीं रगड़ा? क्या वह बहुत छोटा था? तो ठीक है, उनके नेताओं को पकड़ो। लेकिन नहीं। मोर्चे पर हमें एक प्रकार की पूरक चेतना से शक्ति मिलती थी। (और सम्भवत: यह भी पूरी तरह झूठी थी: "क्या यह हमारी सैनिक एकता का भाव है? क्या यह उचित समय पर उचित स्थान पर होने की भावना है? क्या यह कर्तव्य का भाव है? लेकिन इस नई परिस्थिति में कुछ भी स्पष्ट नहीं है, कोई नियम नहीं हैं और प्रत्येक वस्तु को अनुभव के आधार पर ही सीखना होगा।

अपने पांव पर खड़े होकर, मैं इनके अगुआ, अर्थात पाखन, चोरों के सरगना की ओर मुड़ा। दूसरी मंजिल के तख्तों पर खिड़की के बराबर चुराई गई सब खाने की चीजें उसके सामने रखी थीं: उन छोटे चूहों ने उनमें से कोई भी चीज नहीं खाई थी। वे अनुशासित थे। प्रकृति ने इस सरगना के सिर के अगले उस हिस्से को जिसे चेहरा कहा जाता है मतली और घृणा के द्वारा गढ़ा था। अथवा यह हो सकता है कि एक शिकारी जीवन का जीवन जीते जीते उसका यह रूप हो गया था। उसके चेहरे की चमड़ी बहुत भद्दे ढंग से लटकी हुई थी, माथा बेहद छोटा था, एक जबर्दस्त घाव उस पर लगा था और अगले दांतों पर आधुनिक इस्पात के दांत लगे थे। उसकी छोटी छोटी आंखें बस इतनी बड़ी थीं कि सब परिचित वस्तुओं को देख सकें। पर संसार की सुन्दरता से आनन्दित न हो सकें। उसने मेरी ओर इस प्रकार देखा जैसे कि कोई जंगली सुअर एक हिरन की ओर देखता है। क्योंकि वह इस बात से आश्वस्त था कि वह जब चाहे मुझे धक्का देकर गिरा सकता है।

वह प्रतीक्षा कर रहा था। और मैंने क्या किया? क्या उस भद्दे चेहरे पर एक भरपूर घूंसा जमाने के लिए मैं उछला और इसके बाद तख्तों के बीच की खाली जगह में आ पड़ा? नहीं, मैंने यह नहीं किया।

क्या मैं धूर्त हूं? उस क्षण तक मैं सदा यही सोचता रहा कि मैं धूर्त नहीं हूं। लेकिन

अब, लुट जाने और अपमानित होने के बाद, अब मुझे यह बात बहुत बुरी लग रही थी कि मैं एक बार फिर फर्श पर अपने पेट के बल लेटूं और घिसट-घिसट कर तख्तों के नीचे जा घुसूं। और इस कारण से मैंने चोरों के सरगना को बड़े क्रोध से सम्बोधित किया और कहा कि अब क्योंकि उसने हमारी खाने की चीजें हमसे ले ली हैं वह हमें कम से कम तख्तों पर लेटने की जगह तो दे। (अब आप ही बताइए, क्या यह एक शहरी और एक अफसर की स्वाभाविक शिकायत नहीं थी ?)

पर इसके बाद क्या हुआ ? चोरों का सरगना सहमत हो गया। आखिरकार इस प्रकार मैं बढ़िया गोश्त के ऊपर से अपना दावा वापस ले रहा था और इस प्रकार मैं उसकी उच्च सत्ता को भी स्वीकार कर रहा था; और मैं उसके दृष्टिकोण के अनुरूप ही विचार प्रकट कर रहा था—वह भी सबसे कमजोर आदमी को खदेड़ सकता था। और उसने निचले तख्तों पर खिड़की के बराबर लेटे दो निरर्थक तटस्थ कैदियों को हुक्म दिया कि वे हमारे लिए जगह खाली कर दें। उन्होंने बड़ी आज्ञाकारिता से इस आदेश का पालन किया। और हम लोग सर्वोत्तम स्थानों पर लेट गए। कुछ देर तक हम अपनी खाने की चीजों के लिए दुखी होते रहे (चोरों ने मेरी सैनिक बिर्जिस पर कोई ध्यान नहीं दिया था। यह वर्दी उन्हें पसन्द नहीं थी। लेकिन एक चोर वालिनतिन की ऊनी पतलून को छू-छूकर देखने लगा था। यह पतलून उसे पसन्द आ रही थी।) और केवल रात के समय ही हमारे पड़ौसियों की शिकायत भरी फुसफुसाहट हमारे कानों तक पहुंची : हम लोग स्वयं अपने दो आदमियों को तख्तों के नीचे अपने स्थान पर खदेड़ने के लिए चोरों की सहायता किस प्रकार मांग सके ? और तभी स्वयं मेरी अपनी नीचता के प्रति मेरा ध्यान गया और यह बात मेरे मन को कचोटने लगी और मैं शर्म से लाल हो उठा। (और इसके बाद भी अनेक वर्षों तक जब कभी मैं इस बात का स्मरण करता तो शर्म से लाल हो उठता।) नीचे के तख्तों पर लेटे हुए कैदी स्वयं मेरे अपने भाई थे, अनुच्छेद-५८-१ ब के अन्तर्गत दण्डित, युद्धबन्दी। क्या कुछ ही समय पहले मैंने इनकी नियति के भार को स्वयं ढोने की शपथ नहीं ली थी ? और इसके बाद मैंने इन लोगों को तख्तों के नीचे खदेड़ दिया। यह सच है कि इन लोगों ने चोरों से हमें बचाने के लिए कुछ नहीं किया था। लेकिन ये लोग हमारे गोश्त के लिए क्यों लड़े जब कि स्वयं हमने इसे बचाने के लिए कुछ नहीं किया ? ये लोग युद्धबंदियों के शिविरों में पर्याप्त क्रूरतापूर्ण लड़ाईयां लड़ चुके थे जो भद्रता में उनका विश्वास समाप्त कर डालने के लिए काफी थीं। लेकिन इन लोगों ने मुझे कोई हानि नहीं पहुंचाई थी और मैंने इन्हें हानि पहुंचाई थी।

और इस प्रकार हमें अपनी पसलियों पर, अपने मुंह पर बारम्बार आघात सहने पड़ते थे ताकि हम, कम से कम कालांतर में, मनुष्य बन सकें, हां मनुष्य बन सकें···



लेकिन एक नवागुन्तक के लिए भी यह बहुत, बहुत आवश्यक है, जिसे संक्रमण जेल टुकड़े-टुकड़े कर डालती है और प्रायः आत्मसात कर जाती है। शिविर के जीवन का सामना करने के लिए उसे इन परिस्थितियों और अनुभवों से धीरे-धीरे तैयारी का मौका मिलता है। अचानक एक कदम में कितना भारी परिवर्तन असह्य हो सकता है, हृदय ऐसे परिवर्तन का भार

स्वीकार नहीं कर पाता। अचानक ऐसी गन्दगी में उसकी आत्मा स्वयं को परिस्थितियों के अनुरूप नहीं ढाल सकी है। इसे धीरे-धीरे ही होना है।

इसके अलावा संक्रमण जेल कैदी को अपने घर से सम्पर्क कायम करने का आभास भी देती है। यहीं उसे अपने घर पहला पत्र लिखने की अनुमति मिलती है : इसमें वह यह सूचना दे सकता है कि उसे गोली से नहीं उड़ाया गया और यदाकदा वह अपनी कैदियों की गाड़ी की दिशा का भी संकेत दे सकता है और यह एक ऐसे व्यक्ति के अपने घर पहुंचने वाले पहले अपरिचित शब्द होते हैं, जिसे पूछताछ के दौरान ध्वस्त कर दिया गया था। घर में वे लोग उसका स्मरण उसी रूप में करते रहे जो उसका सही स्वरूप था, लेकिन वह कभी भी फिर वह व्यक्ति नहीं बन सकेगा और यह बात भद्दे ढंग से लिखी गई किसी पंक्ति के माध्यम से आकाश में कड़कने वाली बिजली की तरह घर वालों के ऊपर अचानक स्पष्ट हो जाती है। भद्दे ढंग से ये पंक्तियां इसलिए लिखी जाती हैं क्योंकि पेपर अथवा पेंसिल प्राप्त करना असम्भव था चाहे संक्रमण जेलों से पत्र भेजने की अनुमति क्यों न हो और अहाते में लैटरबाक्स भी क्यों न लगा हो। कागज और पेंसिल का ही अभाव नहीं होता बल्कि पेंसिल बनाने के लिए भी कोई वस्तु नहीं होती। पर माखोरका तम्बाकू का कागज अथवा चीनी के पैकेट का कागज सहायक बन सकता है। इसे हाथ से भरसक सीधा करने के बाद, इसकी भरसक सिलवटें निकालने के बाद इसका इस्तेमाल किया जा सकता है और कोठरी में किसी के पास एक पेंसिल भी हो सकती है—और इस प्रकार न पढ़े जाने योग्य घसीटनी पत्र लिखा जाता है जो कैदी के परिवार की भावी शांति अथवा अशांति का निर्णय करता है।

अपने पति से ऐसा पत्र पाने के बाद कुछ स्त्रियां इतनी अधिक घबरा उठतीं कि वे कुछ सोचे समझे इससे पहले ही अपने पतियों के पास संक्रमण जेलों में पहुंचने के लिए घर से चल पड़तीं—यद्यपि कैदियों से मुलाकात की अनुमति कभी नहीं दी जाती थी और वे केवल पति को और चीजों से लादने के अलावा अन्य किसी काम में सफलता प्राप्त नहीं कर सकती थीं। मेरी राय में एक ऐसी स्त्री ने सब पत्नियों के स्मारक के लिए विषय वस्तु जुटाई है—और इतना ही नहीं यह स्मारक कहां बनना चाहिए उस स्थान का भी उल्लेख कर दिया है।

यह घटना सन् १९५० में कूइबाइशेव संक्रमण जेल में घटी। यह जेल एक निचले इलाके में स्थित थी (पर इस स्थान से वोल्गा नदी के झिगुली दरवाजे देखे जा सकते थे)। और ठीक जेल से ऊपर, इसके पूर्व में, एक ऊंची, लम्बी और घासदार पहाड़ी थी। यह शिविर के अहाते के बाहर और उससे ऊपर स्थित थी। और केन्द्र के भीतर से तथा इसके निचले स्थानों से भी हम इस पहाड़ी पर चढ़ने के रास्ते को देख सकते थे। शायद ही कभी वहां कोई व्यक्ति आता हो। यद्यपि यदाकदा वहां बकरियां चरने के लिए आती थीं अथवा बच्चे खेलते थे। और एक दिन गर्मियों के मौसम में जब बादल छाये हुए थे इस पहाड़ी के ऊपर एक शहरी स्त्री दिखाई पड़ी। अपनी आंखों पर अपने हाथ की ओट लगा कर और प्रायः एक ही स्थान पर स्थिर रह कर, वह ऊपर से हमारे जेल के अहाते पर नजर दौड़ाने लगी। उस समय तीन कोठरियों के कैदी जिनकी संख्या बहुत अधिक थी, तीन विभिन्न व्यायाम अहातों में बाहर घूम रहे थे—और वहां उस गर्त में उन ३०० व्यक्तित्व खोये हुए चींटियों जैसे कैदियों में वह अपने आदमी की झलक प्राप्त करने की आशा में लगी थी। क्या उसे आशा थी कि उसका हृदय उसे यह बता देगा कि उसका पति कौन सा है? इस बात की

पूरी संभावना थी कि उन लोगों ने उसे मुलाकात का समय देने से इनकार कर दिया होगा और इस कारण से वह उस पहाड़ी पर चढ़ गई होगी। प्रत्येक व्यक्ति उसे अहातों से देख रहा था और प्रत्येक व्यक्ति उसकी ओर घूर रहा था। नीचे संक्रमण केन्द्र के गर्त में हवा नहीं चल रही थी लेकिन ऊपर पहाड़ी पर बहुत तेज हवा थी। इस हवा के कारण उसके लम्बे वस्त्र, उसके कोट में हवा भर गई थी और उसके लम्बे बाल हवा में लहरा रहे थे। और इस स्त्री के वस्त्र और बाल अपना समस्त प्रेम और चिन्ता प्रकट कर रहे थे।

मेरे विचार से एक ऐसी स्त्री की मूर्ति, ठीक उसी स्थान पर पहाड़ी के ऊपर संक्रमण केन्द्र की ओर देखते हुए स्थापित की जानी चाहिए। इस मूर्ति का मुख झिगुली दरवाजों की ओर होना चाहिए ठीक उसी तरह जिस प्रकार वह स्त्री वास्तव में खड़ी थी और यह मूर्ति हमारे नाती पोतों को उस समय की परिस्थितियों का शायद थोड़ा बहुत आभास दे सके[१]।

वह काफी देर तक वहां मौजूद रही और उन लोगों ने उसे भगाया नहीं, संभवत: सन्तरी लोग बहुत आलसी थे और वे पहाड़ी पर चढ़ने का कष्ट उठाने के लिए तैयार नहीं थे। अन्तत: एक सैनिक ऊपर चढ़ा और उसने स्त्री के ऊपर चिल्लाना तथा अपने हाथ के इशारों से उसे वहां से चले जाने को कहना शुरू किया—और अन्तत: उसे वहां से खदेड़ दिया।

संक्रमण जेल कैदी को एक समग्र दृष्टि भी प्रदान करती है, उसे व्यापक दृष्टिकोण अपनाने का मौका देती है। जैसाकि वे लोग कहते हैं: यद्यपि खाने के लिए कुछ भी नहीं है, फिर भी यह बड़ा प्रसन्नता भरा जीवन है। यहां निरन्तर जारी यातायात, दर्जनों और सैकड़ों लोगों के निरन्तर आवागमन, उनके किस्सों और वार्तालाप की स्पष्टता (शिविर में वे लोग इतनी स्वतन्त्रता से बात नहीं करते क्योंकि वहां उन्हें निरन्तर इस बात का डर बना रहता है कि वे कहीं ओपर अर्थात् सुरक्षा अफसर के जाल में न फंस जाएं), आपको तरोताजा किया जाता है, आपको बाहर हवा लगाई जाती है, आप अधिक प्रवाहवान बन जाते हैं, और आप यह बात बेहतर ढंग से समझने लगते हैं कि आपके साथ, आपके लोगों के साथ, यहां तक कि पूरे संसार के साथ क्या हो रहा है। यहां आपकी कोठरी में आने वाला कोई एकाकी झक्की आपको ऐसी बातें बता सकता है जो आपको पूरे जीवन भर पढ़ने को नहीं मिलेंगी।

अचानक वे लोग कोठरी में एक प्रकार का चमत्कार प्रविशिष्ट कर देते हैं: एक लम्बा ऊंचा, युवक सैनिक जिसका नाक नक्श रोमनों जैसा था, घुंघराले और बिना कटे सुनहरे बाल वाले इस युवक ने ब्रिटिश वर्दी पहन रखी थी—ऐसा लग रहा था मानो वह सीधा नॉरमंडी तट पर सेनाओं के उतरने की कारवाई में शामिल आक्रमण करने वाली सेना का एक अफसर हो। उसने इतने गर्व से भीतर प्रवेश किया मानो वह यह आशा कर रहा हो कि उसकी मौजूदगी में प्रत्येक व्यक्ति उठ कर खड़ा हो जायेगा। और बाद में स्पष्ट हुआ कि उसने यह आशा नहीं की थी कि यहां वह मित्रों के बीच पहुंच जाएगा: वह दो वर्ष से कैद में था लेकिन अभी तक उसे किसी कोठरी में रहने का मौका नहीं मिला था और उसे बड़े गुप्त रूप से, स्वयं संक्रमण जेल तक एक अलग स्तोलिपिल रेल डिब्बे में लाया गया था। और इसके बाद, अप्रत्याशित रूप से, गलती से अथवा विशेष रूप से जानबूझ कर, उसे हमारे सामान्य अस्तबल में भेज दिया गया था। उसने कोठरी में चारों ओर नजर दौड़ाई, नाजी सेना वेहरमाख्त के एक अफसर के ऊपर उसकी नजर पड़ी जिसने जर्मन वर्दी पहन रखी थी

और उससे जर्मन भाषा में बहस करनी शुरू कर दी। और वहां वे लोग बहुत गुस्से से भर कर एक दूसरे से बहस करने में लगे थे और ऐसा लग रहा था मानो यदि उनके पास हथियार होते तो उनका इस्तेमाल करने पर उतारू हो जाते। युद्ध को समाप्त हुए पांच वर्ष बीत चुके थे और यह बात बारम्बार दोहरा कर हमारे दिमागों में गहराई से बिठा दी गई थी कि पश्चिम में केवल दिखावे के लिए युद्ध किया गया था और हमारे लिए इन दोनों आदमियों के परस्पर क्रोध को समझ पाना बड़ा कठिन हो रहा था। यह जर्मन काफी समय से हमारे साथ था और हम रूसियों ने उसके साथ बहस नहीं की थी; अधिकांशतया हम लोग उसके साथ मिल कर हंसते थे।

कोई भी व्यक्ति एरिक आर्विद एंडरसन की कहानी पर विश्वास नहीं कर सकता था यदि उसके घुंघराले बाल उसके सिर पर मौजूद न होते—यह पूरे गुलाग में अपने किस्म का निराला चमत्कार था। और उसकी विदेशी सूरत शक्ल और कद काठी भी आकर्षण का केन्द्र थी। इसी प्रकार उसकी धारा प्रवाह अंग्रेजी, जर्मन और स्वीडिश भाषा भी। उसके अनुसार वह एक धनी स्वीडन निवासी का पुत्र था—उसके पिता करोड़पति ही नहीं बल्कि अरबपति थे। (ठीक है, हम यह मान कर चल सकते हैं कि वह अपनी बातों को थोड़ा बढ़ा-चढ़ा कर कहता था।) अपनी माता के पक्ष से ब्रिटेन के जनरल राबर्टसन का भान्जा था, जिसने मित्र सेनाओं के अधिकार में आने के बाद जर्मनी के ब्रिटिश क्षेत्र की कमान अपने हाथ में संभाली थी। स्वीडन का नागरिक होते हुए भी उसने ब्रिटेन की सेना में एक स्वयं-सेवक के रूप में काम किया था और वह वस्तुतः नारमंडी के तट पर उतरा भी था और युद्ध के बाद वह स्वीडन की सेना में भर्ती हो गया था। पर विभिन्न सामाजिक प्रणालियों की जांच पड़ताल करना उसकी प्रमुख दिलचस्पी थी। समाजवाद के प्रति उसका आकर्षण अपने पिता के धन के प्रति लगाव से कहीं अधिक गहरा था। वह सोवियत समाजवाद की ओर अत्यन्त गहन सहानुभूतिपूर्ण भावनाओं से देखता था और जब वह स्वीडन के एक सैनिक प्रति-निधि मण्डल के सदस्य के रूप में मास्को पहुंचा तो उसे इस फलते-फूलते राज्य को स्वयं अपनी आंखों से देखने का अवसर मिला। इस प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों के सम्मान में भोज दिये गए थे और इन्हें देहाती इलाकों में बने मकानों में ठहराया गया था और यहां इन्हें सामान्य सोवियत नागरिकों से सम्पर्क स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं हुई थी—इन्हें सुन्दर अभिनेत्रियों के साथ भी समय बिताने का मौका मिला था जो न जाने क्यों अपने काम पर जाने की जल्दी में नहीं थी और इन लोगों के लिए समय देने के लिए बड़ी तत्परता से तैयार थीं। और इस प्रकार हमारी सामाजिक प्रणाली की विजय से सदा सर्वदा के लिए आश्वस्त हो जाने के बाद एरिक ने पश्चिम लौटने पर समाचारपत्रों में लेख लिखे, जिनमें उसने सोवियत समाजवाद का जबर्दस्त समर्थन और प्रशंसा की। और यही बात उसके लिए विनाशकारी सिद्ध हुई। उन्हीं वर्षों में १९४७ और १९४८ के वर्षों में, वे लोग पश्चिम के ऐसे हर प्रकार के युवाओं को फंसाने में लगे हुए थे जो सार्वजनिक रूप से पश्चिम के देशों का परित्याग करने को तैयार हों। (और उन्हें यह लगता था कि यदि वे कोई एक दर्जन ऐसे युवक एकत्र कर सके तो पश्चिम के देश कांप उठेंगे और घुटने टेक देंगे।) समाचारपत्रों में प्रकाशित एरिक के लेखों से यह लगा कि वह इस कोटि के लिए अत्यन्त उपयुक्त युवक है। उन दिनों वह पश्चिम बर्लिन में काम कर रहा था और वह अपनी पत्नी को स्वीडन में छोड़ आया थ।

और एक क्षमा योग्य पुरुषोचित कमजोरी के परिणामस्वरूप वह पूर्व बर्लिन में एक अविवाहित

जर्मन लड़की से मिलने जाया करता था। और वहीं एक रात को उसके हाथ-पांव बांध दिए गए और उसके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया गया। (और क्या यह बात उस कहावत के महत्व को नहीं दर्शाती जिसमें कहा गया है : "वह अपनी चचेरी बहन से मिलने गया और जेल जा पहुंचा ?" सम्भवतः यह काम काफी अरसे से चल रहा था और इसका शिकार बनने वाला वह पहला व्यक्ति नहीं था।) वे लोग उसे मास्को ले गए, जहां ग्रोमिको ने, जो एक बार स्टाक होम में उसके पिता के घर पर रात्रि भोज में सम्मिलित हुआ था और जो पुत्र से भी परिचित था, केवल स्टाकहोम में हुए अपने आतिथ्य का प्रतिदान ही नहीं किया बल्कि ग्रोमिको ने इस युवक के समक्ष यह प्रस्ताव भी किया कि उसे सार्वजनिक रूप से पूंजीवाद और स्वयं अपने पिता का परित्याग करना चाहिए। और इसके बदले उसे यह वचन दिया गया कि यहां हमारे देश में जीवन पर्यन्त उसे उन्हीं सुख-सुविधाओं के मध्य रखा जाएगा जो उसे पूंजीवाद के अन्तर्गत प्राप्त थीं। लेकिन यह देखकर ग्रोमिको को अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि एरिक अत्यन्त क्रोधित हो उठा है और उसने अत्यन्त अपमानजनक शब्द कहे यद्यपि ग्रोमिको का प्रस्ताव स्वीकार करने पर उसे कोई भौतिक हानि न होती। अब क्योंकि उन लोगों को उसके मस्तिष्क की शक्ति पर विश्वास नहीं था अतः उन लोगों ने उसे मास्को से बाहर एक ग्राम-निवास में बन्द कर दिया, परियों की कहानी के एक राजकुमार की तरह उसे खिलाया-पिलाया (यदाकदा वे लोग उसके विरुद्ध "दमन के भयंकर तरीकों" का इस्तेमाल भी करते थे : वे अगले दिन के भोजन के बारे में उसका आदेश स्वीकार करने से इनकार कर देते थे और यदि वह मुर्गा लाने के लिए कहता तो वे उसके स्थान पर कोई अन्य गोश्त पेश करते, अथवा कोई ऐसी ही अन्य वस्तु।), उसके चारों ओर मार्क्स-एंजिल्स, लेनिन-स्तालिन की रचनाओं के ढेर लगा दिए और एक वर्ष तक यह प्रतीक्षा करते रहे कि वह पुनर्शिक्षित हो जाएगा। पर यह नहीं हुआ। इसके बाद उन लोगों ने उसके साथ एक भूतपूर्व लैफ्टिनेंट जनरल रखा जो इससे पहले ही दो वर्ष का समय नोरीलस्क में बिता चुका था। सम्भवतः इन लोगों ने यह अनुमान लगाया था कि शिविर की भयंकर परिस्थितियों के किस्से लैफ्टिनेंट जनरल से सुनकर एरिक घुटने टेकने को राजी हो जाएगा। उस लैफ्टिनेंट जनरल ने या तो अपनी यह भूमिका बुरी तरह से निभाई अथवा उसने यह काम करना ही नहीं चाहा। दस महीने तक उनके एक साथ कैद रहने के बाद, यदि वह एरिक को कुछ सिखा सका तो यह बात सिर्फ टूटी-फूटी रूसी भाषा थी और उसने एरिक के मन में नीली टोपी वालों के प्रति निरन्तर बढ़ती हुई घृणा भावना को और अधिक तीव्र कर दिया। सन् १९५० की गर्मियों में उन लोगों ने एरिक को एक बार फिर वाईशिंस्की से मिलवाया और उसने एक बार फिर प्रस्ताव स्वीकार करने से इनकार कर दिया। (यह करने में, उसने चेतना से अस्तित्व को सम्बन्धित किया और इस प्रकार समस्त मार्क्सवादी-लेनिनवादी नियमों का उल्लंघन किया !) और इसके बाद स्वयं अबाकुमोव ने एरिक को आदेश पढ़ कर सुनाया : जेल में २० वर्ष की सजा (किसलिए ? ? ?)। वे लोग इससे पहले ही इस मूर्ख के साथ उलझ जाने का पश्चात्ताप करने लगे थे लेकिन इसके साथ ही वे उसे रिहा भी नहीं कर सकते थे और उसे पश्चिम में वापस भी नहीं जाने दे सकते थे। अतः उन लोगों ने उसे एक बिल्कुल अलग कम्पार्टमेंट में संक्रमण जेल में पहुंचाया और इस यात्रा के दौरान ही उसने मास्को की एक लड़की की कहानी कम्पार्टमेंट के पार्टीशन के उस पार से सुनी और प्रभात के प्रकाश में डिब्बे की खिड़की में से रियाजन के पुरातन रूस की गलती सड़ती छप्परों की छतों को देखा।

इन दो वर्षों ने पश्चिम के प्रति उसकी निष्ठा को बड़े प्रभावशाली ढंग से पुष्ट बना दिया था। अब उसका पश्चिम पर अन्धविश्वास कायम हो गया था। वह इसकी कमजोरियों को स्वीकार करने को तैयार नहीं था। वह पश्चिम की सेनाओं को अजय और पश्चिम के राजनीतिक नेताओं को हर गलती के ऊपर मानता था। उसने हमारी इस बात पर विश्वास करने से इनकार कर दिया कि उसकी कैद की अवधि में स्तालिन ने बर्लिन की नाकेबन्दी शुरू की थी और अपनी इस कारवाई में कामयाब हो गया था। हम लोग जब कभी चर्चिल और रूजवेल्ट का मजाक उड़ाते तो एरिक की दूध सी सफेद गर्दन और मक्खन जैसे गालों पर लाली उभर आती। उसे इस बात का भी निश्चय था कि पश्चिम के देश उसकी अपनी गिरफ्तारी को बर्दाश्त नहीं करेंगे; कि कुइवाइशेव संक्रमण जेल से प्राप्त जानकारी के आधार पर पश्चिम की जासूसी सेवाओं को तुरन्त यह जानकारी मिल जाएगी कि एरिक स्प्री नदी में डूबा नहीं था बल्कि उसे सोवियत संघ में कैद करके रखा जा रहा है—और उसे पैसा देकर अथवा किसी अन्य कैदी के बदले छुड़ा लिया जाएगा। (स्वयं अपनी नियति के व्यक्तिगत महत्व में उसकी यह आस्था स्वयं हमारे अच्छे विचारों वाले कट्टरपंथी सोवियत कम्युनिस्टों के विश्वास का स्मरण दिलाती थी।) ("वहां हमें प्रत्येक व्यक्ति जानता है" वह एक थकान भरी मुस्कराहट से बोला मेरे पिता स्वीडन के राजा के पूरे दरबार का ही प्राय: भरण पोषण करते हैं) "पर फिलहाल अरबपति के इस बेटे के पास अपना पसीना पोंछने के लिए अपना कुछ भी नहीं था और मैंने उसे अपना एक फालतू फटा चिथड़ा तौलिया भेंट स्वरूप दिया। और जल्दी ही वे लोग उसे कैदियों की गाड़ियों में सवार कराने के लिए ले गए।

और लोगों के आवागमन का अनन्त सिलसिला जारी था। कैदियों को जेल में लाया जाता और बाहर ले जाया जाता। कभी किसी अकेले कैदी को और कभी कैदियों की टोलियों को, और कैदियों की गाड़ियों में सवार करके आगे भेज दिया जाता। ऊपर से तो यह बात बड़ी व्यवस्थित और सुनियोजित लगती थी लेकिन यह आवागमन कितना मूर्खतापूर्ण था कि आप उस पर मुश्किल से ही विश्वास कर पाएंगे।

सन् १९४९ में विशेष शिविरों की स्थापना की गई थी और तभी तत्काल, किसी सर्वोच्च निर्णय के आधार पर, यूरोपीय उत्तर और वोल्गा पार के क्षेत्र के शिविरों से विशाल संख्या में स्त्रियों के समुदायों को स्वर्दलोवस्क संक्रमण जेल से आगे साइबेरिया में, ताइशेत में, ओजेरलाग में भेजा जाने लगा। लेकिन सन् १९५० में अचानक किसी ने यह सोचा कि स्त्रियों का ओजेरलाग में नहीं बल्कि दुब्रोव्लाग में, तेमनिकोव में, मोर्दबिनिया में एकत्र करना अधिक सुविधाजनक है। और इस प्रकार इन्हीं स्त्रियों को, जिन्हें गुलाग की यात्रा की समस्त सुविधाएं उपलब्ध थीं, उसी स्वर्दलोवस्क संक्रमण जेल की मार्फत घसीट कर पश्चिम के क्षेत्र में पहुंचाया गया। सन् १९५१ में केमेरोवो प्रान्त (कामिश्लाग) में नए विशेष शिविरों की स्थापना की गई और यह स्पष्ट हुआ कि इन्हीं शिविरों में स्त्रियों के श्रम की आवश्यकता है और एक बार फिर इन अभागी स्त्रियों को उसी अभिशप्त स्वर्दलोवस्क संक्रमण जेल की मार्फत केमेरोवो शिविरों में पहुंचने की यातना भोगनी पड़ी। मुक्ति का समय आया—लेकिन उनमें से सबके लिए नहीं। उन सब स्त्रियों को, जिन्हें ख्रुश्चेव की व्यापक ढील और रियायत के मध्य भी अपनी सजा की अवधि को काटने के लिए छोड़ दिया गया था उन्हें एक बार फिर स्वर्दलोवस्क संक्रमण जेल की मार्फत साइबेरिया के बाहर निकाल कर मोर्दबिनिया पहुंचाया गया इन सब स्त्रियों को एक साथ रखना बेहतर समझा गया था।

ठीक है, आखिरकार, हमारी अपनी आत्मनिर्भर अर्थ व्यवस्था है ! सब द्वीप हमारे अपने हैं और एक रूसी के लिए यह दुनिया इतनी अधिक बड़ी नहीं है।

और ऐसी ही घटनाएं विभिन्न कैदियों के साथ घटीं, अधिक अभागे कैदियों के साथ। शेन्द्रिक एक लम्बा चौड़ा, खुशमिजाज और प्रसन्नमुख वाला आदमी था और वह ईमानदारी के साथ श्रम करता था। वह कुइवाइशेव के एक शिविर में था और उसे इस बात की कोई जानकारी नहीं थी कि उसके ऊपर दुर्भाग्य टूटने वाला है। पर उसे इस दुर्भाग्य का सामना करना ही पड़ा। शिविर में एक अत्यन्त आवश्यक आदेश पहुंचा—यह आदेश अन्य किसी व्यक्ति ने नहीं बल्कि स्वयं आन्तरिक मामलों ने भेजा था ! (और मंत्री को शेन्द्रिक के अस्तित्व की जानकारी कैसे हुई ?) यह आदेश भेजा गया था कि इस शेन्द्रिक को तुरन्त मास्को की जेल संख्या १८ में पहुंचा दिया जाये। उन लोगों ने उसे धर दबोचा, उसे कुई-बाइशेव संक्रमण जेल में घसीट ले गये और वहां से बिना किसी विलम्ब के सीधा मास्को के लिये रवाना कर दिया गया। लेकिन उसे किसी जेल संख्या १८ में नहीं बल्कि वह अन्य कैदियों के साथ व्यापक रूप से जानी मानी क्रासनाया प्रेसन्या जेल में पहुंच गया। (शेन्द्रिक को भी किसी जेल संख्या १८ की जानकारी नहीं थी। किसी ने भी उसे यह बात नहीं बताई थी।) लेकिन उसके दुर्भाग्य ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। मुश्किल से दो दिन ही बीते थे कि उन्होंने फिर उसे कैदियों की गाड़ियों में सवार कर दिया और इस बार उसे सीधे पेचोरा पहुंचा दिया। रेल की खिड़की के बाहर का दृश्य निरन्तर अधिक विरल और भयंकर होता गया, शेन्द्रिक भयभीत हो उठा : वह जानता था कि मंत्री के पास से एक आदेश आया था और अब वे लोग उसे इतनी तेजी से उत्तर की ओर भेज रहे थे। और इसका यह अर्थ था कि मंत्री को उसके विरुद्ध कोई बहुत भयंकर जानकारी प्राप्त हो गई थी। यात्रा की अन्य सब अतिरिक्त यातनाओं के अलावा उन लोगों ने उसका तीन दिन का रोटी का राशन भी रास्ते में चुरा लिया। और जब वह पेचोरा पहुंचा तो वह बुरी तरह लड़खड़ा कर ही चल पा रहा था। पेचोरा ने बहुत बुरे ढंग से उसका स्वागत किया। उन लोगों ने उसे गीले बर्फ में अत्यन्त भूख और कमजोरी की स्थिति में काम करने के लिये खदेड़ दिया। दो दिन तक उसे अपनी कमीजें सुखाने अथवा अपने गद्दे के भीतर चीड़ की पतली-पतली टहनियां भरने का मौका तक नहीं मिला। और तभी उन लोगों ने उसे हुक्म दिया कि उसे सरकार की ओर से जो भी चीजें दी गई हैं उन्हें वापस कर दिया जाए और एक बार फिर उसे और आगे वोरकुता के लिए रवाना कर दिया गया। जो कुछ भी हो रहा था उससे यह स्पष्ट लग रहा था कि मंत्री शेन्द्रिक को समाप्त कर डालने को कृतसंकल्प है और केवल उसे ही नहीं बल्कि उसकी कैदी गाड़ी की पूरी टोली को। वोरकुता में पूरे एक महीने तक उन लोगों ने शेन्द्रिक को छुआ तक नहीं। वह सामान्य काम के लिए बाहर निकला। यद्यपि वह अपनी यात्राओं के कारण उत्पन्न कमजोरी से मुक्त नहीं हो पाया था लेकिन उसने अब स्वयं को ढाढस देना शुरू कर दिया था कि उसके भाग्य में आर्कटिक के बर्फानी इलाके में ही रहना लिखा है। और तभी अचानक एक दिन उन लोगों ने उसे खान से बाहर बुलाया और उसे निरन्तर दौड़ाते हुए शिविर में ले गये और सरकार द्वारा दी गई प्रत्येक वस्तु लौटाने को कहा और एक घण्टे के भीतर ही वह दक्षिण की ओर जा रहा था। अब तक उसे यह लगने लगा था कि उससे व्यक्तिगत प्रतिशोध लिया जा रहा है ! वे लोग उसे मास्को की जेल संख्या १८ में ले गए। वहां उसे एक महीने तक कोठरी में रखा गया और इसके बाद उसे किसी लैफ्टिनेंट

कर्नल के सामने पेश किया गया, जिसने उससे पूछा : "आखिरकार तुम थे कहां ? क्या तुम सचमुच एक मकैनिकल इन्जीनियर हो ? शेन्द्रिक ने स्वीकारोक्ति करते हुये कहा कि हां वह मकैनिकल इन्जीनियर है। और इसके बाद वे लोग उसे अन्यत्र कहीं नहीं बल्कि स्वर्ग द्वीप ले गये ! (हां, द्वीपसमूह में ऐसे द्वीपों का भी अस्तित्व है !)

लोगों का यह आवागमन उनकी ये नियतियां और ये किस्से संक्रमण जेलों को बहुत जीवन्त बना देते हैं। और शिविर के पुराने अनुभवी नए आने वालों को सलाह देते हैं : लेट जाओ और आराम करो। यहां तुम्हें न्यूनतम निश्चित राशन तो दिया जाता है। और तुम्हें काम करते-करते अपनी पीठ नहीं तोड़नी पड़ती। और जब अधिक भीड़ नहीं होती तब जितना चाहें उतना सो सकते हैं। तो यहां पांव पसारो और लेट जाओ। लेटे रहो और केवल खिचड़ी लेने के वक्त ही उठो। भोजन कम मिलता है लेकिन सोने की अच्छी सुविधा है। जो लोग यह जानते हैं कि शिविरों में सामान्य कार्य क्या होता है वे यह समझते हैं कि संक्रमण जेल एक आरामघर है। हमारे मार्ग में सुख का क्षण है। और यहां एक और लाभ भी है : जब दिन के समय आप सो जाते हैं तो वक्त तेज़ी से गुजरता है। यदि आप दिन को समाप्त करने में सफल हो जाएं तो रात अपने आप ही गुजर जाएगी।

यह सच है कि यह स्मरण करते हुए कि श्रम से ही मनुष्यों का निर्माण होता है और केवल श्रम ही अपराधियों को सुधार सकता है, और कभी कभी कुछ सहायक योजनाओं के कारण और कभी कभी अपने वितीय साधनों को अच्छी स्थिति में रखने के लिए छोटे ठेकेदारों के रूप में काम करते हुए संक्रमण जेलों के बड़े अफसर यदाकदा अपनी मजे उड़ाती हुई संक्रमणशील जनशक्ति को काम के लिए बाहर निकालते हैं।

युद्ध से पहले इसी कोतलास संक्रमण जेल में काम नियमित शिविरों से किसी भी रूप में आसान नहीं था। सर्दियों के दिन छह या सात कमजोर कैदियों को एक ट्रैक्टर स्लेज में जोत दिया जाता था और उन्हें इसे घसीट कर दवीना नदी के बराबर सात मील दूर बाइचेगदा के मुहाने तक ले जाना पड़ता था। ये लोग बर्फ में फंस गए और नीचे गिर पड़े तथा स्लेज भी बर्फ में फंस गई। और यह स्पष्ट हो जाता है कि इससे अधिक थका डालने वाला और पस्त कर डालने वाला काम शायद ही कोई दूसरा हो सकता है ! लेकिन आगे चलकर यह पता चला कि वास्तविक काम यह नहीं था। यह तो कैदियों को गरमाने भर के लिए दिया गया था। वहां बाइचेगदा के मुहाने पर उन्हें स्लेजों पर तेरह घन गज ईंधन लकड़ी लादनी पड़ती थी—और उन्हीं लोगों को फिर इन्हीं स्लेजों में इसी तरीके से जोत दिया जाता था (रेपिन अब हमारे साथ नहीं है और यह हमारे नए कलाकारों को आकर्षित करने वाला विषय नहीं है; यह तो प्रकृति की एक भद्दी अनुकृति भर है) और इन्हें इन स्लेजों को वापस अपनी संक्रमण जेल में पहुंचाना पड़ता था। अब इसके बाद किसी शिविर में और क्या हो सकता था। शिविर में पहुंचने के लिये आपका जीवित बच पाना ही मुश्किल था। (इस काम के लिये नियुक्त कार्य ब्रिगेड का नेता कोलुपाएव था और काम के घोड़े थे बिजली इन्जीनियर दमित्रीएव, कोर का क्वाटर मास्टर लफ्टिनेंट कर्नल वेलयाएव और वासिली व्लासोव, जिससे हम पहले ही परिचित हो चुके हैं; लेकिन आज अन्य सब नामों को एकत्र नहीं किया जा सकता।)

युद्ध के दौरान अर्जामास संक्रमण जेल में कैदियों को चकन्दर का ऊपरी हिस्सा खाने

के लिये दिया गया और इसके साथ ही उन्हें स्थाई रूप से काम में लगाया गया। वहां कपड़ा तैयार करने की दुकानें थीं और जूतों में फेल्ट लगाने की भी दुकानें थीं। (जहां गर्म पानी और तेजाब में ऊनी रेशे को ऊबाला जाता था)।

सन् १६४५ की गर्मियों में हम लोग क्रासनाया प्रेसन्या की दम घोट डालने वाली कोठरियों से स्वयंसेवकों के रूप में काम करने के लिए तैयार हो गये : पूरे दिन स्वच्छ हवा में सांस लेने के अधिकार के लिये; लकड़ी के तख्तों से बने एक शौचालय में बिना किसी जल्दबाजी के, बिना किसी हस्तक्षेप के बैठे रहने के अधिकार के लिये (यह एक ऐसा प्रोत्साहन है जिसकी अक्सर उपेक्षा कर दी जाती है।) अगस्त के महीने के सूरज की गर्मी के ताप का उपभोग करते हुये पाखाने में बैठने के अधिकार के लिये (और यह पोट्सडैम और हिरोशिमा के दिन थे), एक एकाकी मधुमक्खी की शांतिपूर्ण भिनभिनाहट को सुनते हुये इस प्रकार बैठे रहने के अधिकार के लिये और अन्ततः रात के समय चौथाई पौंड अतिरिक्त रोटी प्राप्त करने के अधिकार के लिये हमने अपनी सेवाएं अर्पित की थीं। वे लोग हमें मास्को नदी के घाटों पर ले गए, जहां लकड़ी उतारी जा रही थीं। हमें यह काम सौंपा गया था कि हम कुछ ढेरों से नीचे लट्ठों को लुढ़कायें, उन्हें ढोकर ले जाएं और दूसरे ढेरों में रख दें। हमने इस कार्य में उससे कहीं अधिक शक्ति का व्यय किया जितनी शक्ति हमें अतिरिक्त भोजन की खपत के मुआवजे के रूप में मिली। उसके बावजूद हम लोगों ने वहां जाकर काम करने में आनन्द का अनुभव किया।

मुझे अपने किशोरावस्था और युवावस्था के वर्षों की अनेक स्मृतियों पर अक्सर शर्म से लाल होना पड़ता है। (और इन्हीं स्थानों पर मेरी युवावस्था बीती!)। लेकिन जो वस्तु आपको नीचे गिराती है वह आपको बहुत कुछ सिखाती भी है और यह स्पष्ट हुआ कि अफसर के सूचक सितारों के अवशेष के रूप में, उन सितारों के अवशेष के रूप में जो कुल मिला कर दो वर्ष तक मेरे कन्धों पर लहलहाते रहे, किसी प्रकार की विषाक्त स्वर्णिम धूल मेरी पसलियों के बीच के रिक्त स्थान में जम गई। नदी के उस घाट पर एक अहाता भी था, जिसके चारों ओर निगरानी टावर बने थे। हम लोग यहां से गुजरने भर के लिये ठहरे हुये थे, हमें अस्थाई रूप से काम पर लगाया गया था और इस आशय की कोई बातचीत नहीं हुई थी, कोई अफवाह सुनाई नहीं पड़ी थी कि हमें यहां रुके रहने और अपनी सज़ा की शेष अवधि को पूरा करने की इजाजत दी जा सकती थी। लेकिन जब उन्होंने पहली बार हमें पंक्तिबद्ध किया और जब काम देने वाले फोरमैन ने अस्थाई कार्य ब्रिगेड लीडरों के चुनाव के लिये पंक्ति पर नजर दौड़ाई, मेरा निरर्थक हृदय मेरे ऊनी फौजी कमीज के नीचे फटने की सीमा तक तेजी से धड़क रहा था। मुझे, मुझे, मुझे चुनो!

मुझे नहीं चुना गया। लेकिन आखिरकार मैं यह चाहता क्यों था? मैं और शर्मनाक गलतियां करता।

सत्ता को अपने हाथ से निकलने देना कितना कठिन है! इस बात को व्यक्ति को समझना पड़ता है।



एक समय था जब क्रासनाया प्रेसन्या गुलाग की राजधानी बन गया था—ठीक उसी तरह

जैसे मास्को। आप चाहे कहीं भी जाएं आपको यहां से गुजरना ही होगा। जब कोई व्यक्ति सोवियत संघ की यात्रा करता है तो ताशकन्द से सोची तक और चेरनिगोव से मास्को हो कर मिन्स्क तक यात्रा करना अधिक सुविधाजनक होता है। उसी प्रकार वे लोग कैदियों को सब स्थानों और दिशाओं से घसीट कर लाते थे और प्रेसन्या होकर आगे भेजते थे। जिन दिनों मैं वहां था यही स्थिति थी। आवश्यकता से अधिक भीड़ के कारण प्रेसन्या टूटने की सीमा तक पहुंच चुका था। उन लोगों ने एक और इमारत बना ली थी। केवल ऐसी पशुओं को ढोने वाली रास्ते में बिना रुकने वाली रेलगाड़ियां ही मास्को का चक्कर काट कर यहां बिना रुके ही आगे निकल जाती थीं जिनमें वे कैदी भरे होते थे, जिन्हें जासूसी विरोधी संगठनों में ही सजा सुना दी जाती थी। ये रेलगाड़ियां प्रेसन्या में रुकती तो नहीं थीं पर सम्भवत: ये इसके पास से गुजरते समय सीटी बजा कर इसे सलामी अवश्य देती थीं।

जब हम लोग यात्रा करने वाले स्वतन्त्र यात्रियों के रूप में मास्को आते हैं तो हमारे पास एक टिकट होता है और हम यह आशा करते हैं कि जल्दी अथवा देर से अपनी वांछित दिशा में आगे बढ़ेंगे। युद्ध के अन्त में प्रेसन्या में और युद्ध के तुरन्त बाद भी, वहां पहुंचने वाले केवल कैदियों को ही नहीं बल्कि उच्च कर्मचारियों को और यहां तक कि गुलाग के अध्यक्षों तक को यह पता नहीं होता था कि कौन किस दिशा में आगे जायेगा। उस समय तक जेल प्रणाली इस प्रकार व्यवस्थित नहीं हुई थी जिस प्रकार १९५० के बाद के वर्षों में हो गई थी और किसी भी व्यक्ति के लिए यात्रा के मार्गों और गंतव्य स्थानों का उल्लेख नहीं होता था—संभवत: केवल सेवा सम्बन्धी निर्देशों को छोड़ कर : "कड़े पहरे में रखिये"; "केवल सामान्य कार्य पर लगाया जाना चाहिये।" गारद के सार्जेंट जेल के मामलों के बंडल उठा कर चलते थे। ये फटी हुई फाईलें होती थीं, जिन्हें किसी डोरी या रस्सी से बांध लिया जाता था। इन बंडलों को एक अलग बनी लकड़ी की इमारत में ले जाया जाता था जिसमें जेल के दफ्तर थे। इन बंडलों को अलमारियों, मेजों के ऊपर, मेजों के नीचे, कुर्सियों के नीचे और फर्श पर खाली जगह में डाल दिया जाता था। (ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार इन फाइलों की विषयवस्तु, कैदी लोग कोठरियों के फर्श पर पड़े रहते थे)। ये फाइलें खुल जाती थीं, इनके कागज इधर-उधर फैल जाते थे और दूसरे कागजों से मिल जाते थे। पहले एक कमरा, फिर दूसरा और फिर तीसरा उन मामलों की फाइलों से भर गया जिनके कागज फैल गये थे, दूसरी फाइलों में मिल गये थे। जेल के दफ्तर की स्त्री-क्लर्क, जो भड़कीले रंगों के वस्त्र पहनने वाली स्वतंत्र, आलसी और खूब खाती-पीती स्त्रियां होती थीं गर्मी में पसीने से बेहाल रहती थीं, स्वयं को पंखा झलती रहती थीं और जेल और गारद के अफसरों से आंख लड़ाती रहती थीं। इनमें से कोई भी स्त्री इन फाइलों के जंगल में न तो घुसना चाहती थीं और न ही उसमें यह करने की शक्ति थी। पर इसके बावजूद लाल रेलगाड़ियों में बड़ी संख्या में कैदियों को भरकर भेजना पड़ता ही था—और यह काम सप्ताह में कई बार किया जाता था। और प्रतिदिन सौ आदमियों को पास के शिविरों में ट्रकों में भेजा जाता था। प्रत्येक कैदी के मामले की फाईल उसके साथ भेजनी जरूरी थी। तो आप ही बताइये कि इन बिखरी हुई, उलझी हुई और लापता कागजों वाली फाईलों से माथा कौन मारे? वहां ऐसा कौन व्यक्ति था जो सब मामलों को अलग-अलग करे और गाड़ियों में चढ़ाने के लिये कैदियों का चुनाव करे।

संक्रमण जेल के ट्रस्टियों में से कई काम देने वाले सुपरवाइजरों को यह काम सौंपा गया—ये लोग या तो "जेल के अधिकारियों के पिट्ठू" अथवा "नौसिखिये चोर" होते थे।[१]

ये लोग जेल के बरामदों में स्वतन्त्रतापूर्वक घूमते थे, जेल के दफ्तर में प्रवेश करते थे और इन लोगों के ऊपर यह निश्चय होता था कि आपके मामले की फाईल को कैदियों की बुरी गाड़ी में रखा जायेगा अथवा वे सचमुच कड़ा परिश्रम करेंगे, काफी लम्बे समय तक आवश्यक कागजों की तलाश करेंगे और आपके मामले को अच्छी गाड़ी के लिये भेजेंगे। (नये कैदियों का यह सोचना गलत नहीं था कि ऐसे अनेक शिविर थे जिन्हें मृत्यु शिविर ही कहा जा सकता था। लेकिन उनका यह सोचना मात्र भ्रांति थी कि कुछ ऐसे शिविर भी थे जिन्हें "अच्छा" शिविर कहा जा सकता था। अच्छे शिविर नाम की कोई चीज नहीं थी, बल्कि इनमें कुछ हल्के काम मिल सकते थे—और इस बात का निर्धारण केवल शिविर में ही हो सकता था)। यह तथ्य कि किसी कैदी का समस्त भविष्य किसी ऐसे अन्य कैदी के ऊपर निर्भर करता था, जिसके साथ बातचीत करने का अवसर ढूंढ़ना पड़ता था (चाहे यह काम स्नानघर के सहायक की मार्फत ही क्यों न करना पड़े), और जिसे निश्चित रूप से रिश्वत देनी होगी (चाहे यह काम गोदाम के बाबू की मार्फत ही क्यों न करना पड़े) उस स्थिति से बुरा था, जिसमें उसके भाग्य का निपटारा पासा डाल कर बिना सोचे समझे किया जा सकता था। यह अदृश्य और अपूर्ण अवसर—अर्थात् उत्तर में नोरिलसक के स्थान पर दक्षिण में नालचिक जाना केवल चमड़े के कोट के बदले, दो पौंड गोश्त के बदले साइबेरिया में ताइशेत के स्थान पर मास्को के बाहर सेरेबियानी बोर जाना (और सम्भवतः बिना किसी लाभ के चमड़े का कोट और गोश्त दोनों खो देना भी सम्भव था)—पहले से ही थकी हारी आत्माओं को और अधिक मुसीबत में डालते थे। हो सकता है कि किसी कैदी को यह व्यवस्था करने में सफलता मिली हो, हो सकता है किसी कैदी ने इस तरीके से स्वयं को किसी निश्चित शिविर में भेजने की व्यवस्था करा ली हो, लेकिन सबसे अधिक भाग्यशाली वे लोग थे, जिनके पास कुछ भी देने को नहीं था अथवा जो स्वयं को ऐसी चिन्ता से मुक्त ही रखते थे।

भाग्य को स्वीकार कर लेना, अपने जीवन को दिशा देने में पूरी तरह से अपनी इच्छा का परित्याग कर देना, यह स्वीकार कर लेना कि समय से पहले ही यह अनुमान लगाना असम्भव है कि क्या सर्वोत्तम है और क्या सबसे बुरा। कि ऐसा कदम उठाना आसान है, जिसके लिए आप स्वयं को कोसेंगे—ऐसी बातें थीं, जो कैदी को बन्धनमुक्त कर देती थीं, उसे और अधिक शान्त और यहां तक कि गरिमापूर्ण तक बना देती थीं।

और इस प्रकार कैदी लोग जेल की कोठरियों में कतारों में पड़े रहते थे और उनके भाग्य जेल के दफ्तर के कमरों में अछूती फाइलों के ढेरों में दबे पड़े होते थे। और सुपरवाइजर लोग किसी ऐसे कोने से फाइलें निकालना शुरू करते थे जहां से फाइल निकालना सब से सरल था। और कुछ कैदियों को इस अभिशप्त प्रेसन्या में दो या तीन महीने तक सड़ना पड़ता था जबकि कुछ अन्य आकाश में टूट कर गिरने वाले तारे की गति से इस संक्रमण जेल से होकर गुजर जाते थे। इस समस्त भीड़-भाड़, जल्दबाजी और मामलों की अव्यवस्था के कारण यदाकदा प्रेसन्या में कैदियों के सजा के विवरण बदल जाते थे (और अन्य संक्रमण जेलों में भी यह होता था)। इसका असर अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत दण्डित लोगों पर नहीं पड़ता था क्योंकि इनकी कैद की सजाएं, मैक्सिम गोर्की की शब्दावली में, ऐसे बड़े अक्षरों में लिखी सजाएं थीं, जो निश्चय ही लम्बी होती थीं और जब ये खत्म होती हुई भी दिखाई पड़ती थीं तब भी इनका अन्त किसी भी रूप में नहीं आता था। लेकिन बड़े चोरों और हत्यारों को यह राज मालूम होता था कि किसी मूर्ख गैर-राजनीतिक अपराधी की सजा की अवधि

को किस प्रकार बदला जा सकता है। और इस प्रकार वे स्वयं अथवा उनके सहयोगी चुपचाप ऐसे किसी व्यक्ति के पास पहुंचते और बड़ी दिलचस्पी और चिन्ता दिखाते हुए उससे बात करते। और वह यह न जानते हुए कि कम अवधि की सजा प्राप्त कैदी को संक्रमण जेल में किसी को भी अपने बारे में कोई बात नहीं बतानी चाहिए, उन्हें बड़े निर्दोष ढंग से अपना नाम बता देता। उदाहरण के लिये वह कह देता कि उसका नाम वासिलि पारफेनिच येवराश्किन है और उसका जन्म १९१३ में हुआ था, कि वह येमिदुब्ये का निवासी है और वहीं उसका जन्म हुआ था। और उसे अनुच्छेद-१०९ के अन्तर्गत अर्थात "लापरवाही के लिए" एक वर्ष की कैद की सजा दी गई थी। और फिर जब येवराश्किन सोया हुआ होगा अथवा सोया हुआ भी नहीं होगा, लेकिन कोठरी में इतना हंगामा मचा होगा और दरवाजे में बने छोटे दरवाजे पर इतनी जबर्दस्त भीड़ होगी कि वह वहां नहीं पहुंच सकेगा और वहां हो रही बात को नहीं सुन सकेगा और इसके साथ ही बरामदे में खड़े जेलकर्मचारी बड़ी तेजी से उन कैदियों के नाम पढ़ रहे होंगे, जिन्हें कैदियों की गाड़ी में चढ़ाया जाना है। कुछ नामों को कोठरी के दरवाजे पर जोर से चिल्ला कर पुकारा गया। लेकिन येवराश्किन के नाम को नहीं क्योंकि जैसे ही बाहर बरामदे में यह नाम हल्के से जेल कर्मचारी के मुंह से निकला वैसे ही एक उर्का, एक चोर, चुपचाप विनम्रतापूर्वक (और जब आवश्यक हो, तो वे ऐसी विनम्रता दिखा सकते हैं) अपनी थूथन बाहर निकालता है और बहुर तेजी से तथा शांतिपूर्वक कहता है "वासिल पारफेनिच, १९१३ में जन्म ग्राम सेमिदुब्ये, अनुच्छेद १०९, सजा १ वर्ष, लापरवाही के लिए और वहां से तेजी से अपनी चीजें लेने के लिये भाग निकलता है। असली येवराश्किन जमुहाई लेता रहता है। कोठरी के तख्ते पर लेटा रहता है और अगले दिन, अगले सप्ताह, और अगले महीने अपना नाम पुकारे जाने की बड़े सब्र से प्रतीक्षा करता रहता है और इस के बाद वह जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट को कष्ट देने का साहस जुटाता है : उसे कैदियों की गाड़ी में सवार करने के लिये क्यों नहीं ले जाया जाता (और प्रतिदिन जेल की सब कोठरियों में वे लोग किसी जेव्यागा का नाम पुकारते रहते हैं।) और जब एक महीने बाद अथवा छह महीने बाद वे हाजरी लेते समय सब मामलों की छानबीन करने में सफल हो जाते हैं जो उनके पास केवल एक फाइल बची रह जाती है—यह फाइल जेव्यागा की होती है, जो अनेक अपराधों का अपराधी है जिसे दोहरी हत्या और दुकान लूटने के लिए १० वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई है—और एक शरमालू कैदी जो प्रत्येक व्यक्ति को यह बताने की कोशिश करता रहा कि यह येवराश्किन है, यद्यपि आप फोटोग्राफ से किसी भी आदमी को पहचानने में कामयाब नहीं हो सकते, तो बस यह निर्णय ले लिया जाता है कि वही जेव्यागा है और उसे किसी दण्ड शिविर में, ईबदेलाग में भेजा जाना चाहिये—यह न करने की स्थिति में यह स्वीकारोक्ति करना आवश्यक होगा कि संक्रमण जेल ने गलती की है। और जहां तक उस दूसरे येवराश्किन का सवाल है, जिसे कैदियों की गाड़ी में चढ़ा कर भेजा जा चुका है आप यह पता ही नहीं लगा सकेंगे कि वह कहां चला गया है, क्योंकि संक्रमण जेल में अब कोई सूची मौजूद नहीं थी। और इसके अलावा उसे केवल एक वर्ष की कैद की सजा दी गई थी और उसे पहरे के बिना ही खेत में काम करने के लिये भेजा जाता था और एक दिन काम करने के बदले उसकी सजा की अवधि में तीन दिन की कटौती कर दी जाती थी। अथवा यह भी हो सकता है कि वह मौका पाते ही भाग निकला और काफी समय पहले ही अपने घर पहुंच गया अथवा, इस बात की भी बहुत संभावना है कि उसे किसी नए अपराध के लिये

फिर जेल भेज दिया गया हो।) ऐसे झक्की भी होते थे, जो एक या दो किलो गोश्त के लिए अपनी कम अवधि की सजा को बेच देते थे। वे यह सोचते थे कि जेल के अधिकारी मामले की जांच करेंगे और यह पता लगा लेंगे कि इस नाम का सही कैदी कौन सा है। और यदाकदा ऐसा होता भी था।[१०]

जिन वर्षों में कैदियों के मामलों की फाइलों पर यह उल्लेख नहीं होता था कि अन्ततः इस कैदी को किस स्थान पर पहुंचाया जाना चाहिये, संक्रमण जेलें गुलामों के बाजारों का रूप धारण कर लेती थीं। संक्रमण जेलों में सर्वाधिक वांछित मेहमान 'खरीदार' होते थे। ये शब्द जेल के बरामदों और कोठरियों में अक्सर सुना जाता था और इसका प्रयोग बिना किसी व्यंग के किया जाता था। जिस प्रकार सर्वत्र उद्योगों में यह स्थिति हो गई थी कि केन्द्र से निश्चित कोटे के आधार पर वस्तुएं और मजदूर प्राप्त करने के लिए चुपचाप बैठे रहना गलत था और यह बात अधिक संतोषजनक समझी जाती थी कि आप स्वयं अपने आदमियों को भेजें, जो जल्दी से जल्दी आवश्यक व्यवस्था करायें—वही स्थिति गुलाग में हो चुकी थी : द्वीपों के निवासी मरते रहते थे; यद्यपि इन कैदियों का मूल्य एक रूबल भी नहीं होता था फिर भी इनकी गिनती तो रखी ही जाती थी और शिविरों के अधिकारियों को इस बात की चिन्ता रहती थी कि वे किस प्रकार अधिक संख्या में कैदियों को प्राप्त करें ताकि अपने लिए निर्धारित काम को वे समय से पूरा कर सकें। इन खरीदारों को बहुत चालाक, और तेज नजर वाला होना जरूरी था और इस बात की सावधानी बरतनी पड़ती थी कि वे क्या माल ले जा रहे हैं ताकि अपने अन्तिम दिन गिनने वाले और अपंग कैदी उन्हें न भिड़ा दिये जाएं। जो खरीदार मामलों की फाइलों के आधार पर गाड़ी भर कैदी लेते थे वे अन्ततः घटिया खरीदार साबित होते थे। अपने काम को ईमानदारी से करने वाले व्यापारी यह मांग करते थे कि माल उनकी आंखों के सामने जीती जागती हालत में और वस्त्रों के बिना ही मुआइने के लिए पेश किया जाये। और वे लोग बिना किसी मुस्कराहट के माल शब्द का प्रयोग करते थे। "वाह, तुम क्या माल ले आए हो ?" बुत्यर्की स्टेशन पर एक खरीदार ने सत्रह वर्षीया इरा कालीना के स्त्री अंगों का मुआइना करते हुए उद्गार प्रकट किया।

यदि कभी मानव स्वभाव में परिवर्तन होता है तो यह पृथ्वी के भूगर्भीय स्वरूप में होने वाले परिवर्तन से अधिक तेजी से नहीं होता। पच्चीस शताब्दी पहले गुलाम लड़कियों के बाजारों में गुलामों के व्यापारियों को जिज्ञासा, आनन्द और परख का जो मजा प्राप्त होता था वही सन् १९४७ में उस्मान जेल में गुलाग के बड़े अफसरों के ऊपर छा जाता था जब वे, एम० वी० डी० के वर्दीधारी दो दर्जन आदमी, सफेद चादरों से ढकी कई मेजों पर बैठते थे (इन मेजों को उन लोगों के महत्व को ध्यान में रखते हुए ढक दिया जाता था अन्यथा ये मेजें बड़ी भद्दी दिखाई पड़ती थीं), और समस्त स्त्री कैदियों को बराबर के एक छोटे से बाक्स में अपने वस्त्र उतारने पड़ते थे और उनके समक्ष नंगे पांव, नंगे शरीर आना पड़ता था, पीछे मुड़ना पड़ता था, रुक कर खड़े रहना और प्रश्नों का उत्तर देना पड़ता था। "अपनी बाहें नीचे करो" उन्हें हुक्म दिया जाता यदि वे उस प्राचीन मूर्ति की तरह अपनी लज्जा को छिपाने के लिये अपने वक्ष पर अपनी बाहें बांध लेतीं। (आखिरकार, यह अफसर बड़ी गम्भीरता से अपने साथ पर्यंक शयन के लिए साथियों का चुनाव करते थे।)

और इस प्रकार नए कैदी के लिए विभिन्न अभिव्यक्तियां अगले दिन के शिविर के संघर्ष की पूर्व सूचना देती थीं और संक्रमण जेल के निर्दोष आध्यात्मिक आनन्द के ऊपर

निराशा का पर्दा डाल देती थीं।

केवल दो रात के लिए उन लोगों ने हमारी कोठरी में क्रासनाया प्रेसन्या में एक 'विशेष कार्य कैदी' को रखा। वह तख्ते पर मेरे बराबर लेटा हुआ था। वह विशेष कार्य आदेशों सहित यात्रा कर रहा था, जिसका यह अर्थ होता था कि केन्द्रीय प्रशासन में एक फार्म भर दिया गया है, जिसमें इस बात का उल्लेख किया गया है कि वह एक निर्माण तकनीशियन है और नए स्थान पर उसका उपयोग केवल इसी रूप में किया जा सकता है और यह फार्म उसके साथ एक के बाद एक शिविर में जाता रहता था। विशेष कार्य कैदी सामान्य स्तोलिपिन रेल डिब्बों में यात्रा करता था और उसे संक्रमण जेलों की सामान्य कोठरियों में ही रखा जाता था, लेकिन वह घबराया हुआ नहीं होता था; उसकी रक्षा उसका व्यक्तिगत दस्तावेज करता था और उसे पेड़ काटने के लिये जंगल में नहीं भेजा जा सकता था। शिविरों के इस अनुभवी के मुख पर एक क्रूरतापूर्ण और दृढ़ संकल्प को अभिव्यक्त करने वाला भाव प्रमुख रूप से मौजूद रहता था। वह अपनी अधिकांश सजा काट चुका था (और उस समय मैंने यह अनुभव नहीं किया कि कालान्तर में स्वयं हम सब लोगों के चेहरों पर ठीक यही भाव विराजमान हो जायगा क्योंकि गुलाग द्वीपों के निवासियों के चेहरे का प्रमुख राष्ट्रीय चिन्ह यही क्रूरतापूर्ण और दृढ़ संकल्प की अभिव्यक्ति होता है। कोमल और समझौता करने वाली अभिव्यतियों वाले लोग इन द्वीपों में अधिक समय तक जीवित नहीं रह पाते।) वह हमारी बचकानेपन से भरी गतिविधियों को विद्रूपपूर्ण मुस्कराहट से देख रहा था, ठीक उसी तरह जैसे लोग दो सप्ताह के पिल्ले की ओर देखते हैं।

हमें शिविर में किस बात की आशा करनी चाहिए? हमारे ऊपर दया करके उसने हमें यह शिक्षा दी :

"शिविर में पहला कदम रखने के समय से ही प्रत्येक व्यक्ति तुम्हें धोखा देने और लूटने की कोशिश करेगा। अपने अलावा अन्य किसी पर भरोसा न करो। चारों ओर बहुत तेजी से नजर दौड़ाओ : कोई व्यक्ति तुम्हें काटने के लिए चुपचाप तुम्हारी ओर बढ़ता हुआ हो सकता है। आठ वर्ष पहले मैं कारगोपोलाग पहुंचा था । तुम लोगों की तरह ही अबोध और बचकानेपन से भरा हुआ। उन लोगों ने हम कैदियों को दो रेल गाड़ियों से उतारा और गारद ने हमें गहरे और निरन्तर फिसलने वाले बर्फ के रास्ते से छह मील की दूरी तय करने के लिये आगे बढ़ाया। तीन स्लैज हमारे पास आईं। एक लम्बा तगड़ा आदमी जिसके काम में गारद के सन्तरी हस्तक्षेप नहीं कर रहे थे, हमारे पास आया और बोला : भाइयों, अपना सामान स्लैजों पर रख दो और हम आपके सामान को वहां पहुंचा देंगे। "हमें पुस्तकों में पड़ी इन बातों का स्मरण था कि कैदियों के सामान को गाड़ियों में लाद कर ले जाया जाता था और हम सोचने लगे : शिविर में उतना अधिक अमानुषिक वातावरण नहीं होगा; वे लोग हमारे बारे में चिन्तित हैं और हमने अपनी चीजें स्लैजों पर लाद दीं। वे लोग चल पड़े। और हमने उन्हें फिर कभी नहीं देखा। अपने पुलिन्दों को बांधने के खाली कपड़े या कागज तक को नहीं।"

"लेकिन यह कैसे हो सकता है? क्या वहां कानून का अस्तित्व नहीं है?"

"मूर्खतापूर्ण प्रश्न मत करो। वहां एक कानून का अस्तित्व है। यह तैगा का, जंगल का कानून है। लेकिन जहां तक न्याय का सवाल है—गुलाग में कभी भी न्याय नहीं रहा और न ही कभी रहेगा। कारगोपोल की वह घटना गुलाग का प्रतीक भर थी। और आपको

एक अन्य बात का भी श्रादी होना पड़ेगा : शिविर में कोई भी व्यक्ति कोई भी काम अकारण नहीं करता। कोई भी व्यक्ति उदारता अथवा सहृदयता के कारण कोई काम नहीं करता। तुम्हें प्रत्येक कार्य के लिए कीमत चुकानी होगी। यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे समक्ष कोई ऐसा प्रस्ताव करता है जो निःस्वार्थ हो, किसी व्यक्तिगत दिलचस्पी पर आधारित न हो, तो यह निश्चयपूर्वक जान लीजिये कि यह एक गन्दी चाल होगी, एक उत्तेजना की कारवाई होगी। प्रमुख बात यह है, कि सामान्य कार्य से बचो। वहां पहुंचने के दिन से ही इससे दूर रहो। यदि पहले दिन तुम सामान्य कार्य में लगा दिये गए, तो फिर कोई चारा नहीं है क्योंकि सदा सर्वदा तुम्हें यही करना पड़ेगा।"

"सामान्य कार्य ?"

"सामान्य कार्य—किसी भी शिविर में यही प्रमुख और बुनयादी काम होता है। ८० प्रतिशत कैदी इस काम में लगाये जाते हैं और वे सब मर जाते हैं। सब। और इसके बाद वे लोग इन कैदियों का स्थान लेने के लिये नए कैदियों को लाते हैं और इन्हें भी सामान्य कार्य में लगा दिया जाता है। यह कार्य करते हुए आप अपनी शक्ति का अन्तिम कण भी खर्च कर डालते हैं और आप निरन्तर भूख से पीड़ित हैं। और निरन्तर गीले भी। और नंगे पांव भी। आपको बहुत कम राशन दिया जाता है और अन्य प्रत्येक वस्तु की कमी होती है। आपको सबसे बुरी बैरकों में रखा जाता है। और जब आप बीमार हो जाते हैं तो आपका कोई इलाज नहीं किया जाता। शिविरों में केवल वे लोग ही जीवित बचते हैं जो हर कीमत पर यह कोशिश करते हैं कि सामान्य कार्य से बचे रहें। पहले ही दिन से।"

"किसी भी कीमत पर ?"

"किसी भी कीमत पर !"

क्रासनाया प्रेसन्या में मैंने क्रूर विशेष कार्य कैदी की पूरी तरह से ठोस सलाह को आत्मसात कर लिया, स्वीकार कर लिया। लेकिन मैं उससे एक बात पूछना भूल गया : आप उस कीमत को कैसे मापते हैं ? आप कितने ऊंचे जा सकते हैं ?

अध्याय ३



गुलामों के कारवां

स्तोलिपिन में यात्रा करना कष्टप्रद था, ब्लैकमारिया में सफर करना असह्य था, और संक्रमण जेल जल्दी ही आपको पस्त कर डालती है—और इन सब चीजों से बच कर एकदम सीधे पशुओं को ढोने वाले लाल माल डिब्बों में भर कर शिविर में पहुँचना बहुत बेहतर होता।

सदा की तरह, यहां राज्य के हित और व्यक्ति के हित एक साथ मिल जाते हैं। इसमें राज्य का लाभ होता यदि दण्डित कैदियों को सीधी गाड़ियों से सीधे शिविरों में पहुंचा दिया जाता और इस प्रकार नगर की ट्रंक लाईन रेल पटरियों, मोटर परिवहन और संक्रमण शिविर के कर्मचारियों को आवश्यकता से अधिक काम से बचाया जा सकता। बहुत लम्बे अरसे पहले ही गुलाग में वे इस तथ्य को समझ चुके थे और इसे बहुत अच्छी तरह से हृदयंगम कर लिया गया था: लाल गायों (जानवरों के लाल डिब्बे) के कारवां, बड़ी नौकाओं के कारवां, और जहां कहीं न तो रेल पटरियां हैं और न ही पानी, वहां पैदल लोगों के कारवां देखिए। (आखिरकार कैदियों को घोड़ों और ऊंटों के श्रम का शोषण करने की अनुमति नहीं दी जा सकती)।

उस समय लाल रेल गाड़ियां बड़ी सहायक बनतीं जब किसी विशेष स्थान पर अदालतें तेजी से काम करतीं अथवा संक्रमण सुविधाएं कैदियों की बड़ी संख्या के भार के नीचे दबी हुई होतीं। इस तरीके से कैदियों की एक बहुत बड़ी टोली को भेजा जा सकता था। इसी तरीके से सन् १९२९-१९३१ में लाखों किसानों को निष्कासन में भेजा गया था। इसी तरीके से उन लोगों ने लेनिनग्राद से लेनिनग्राद को निष्कासित कर दिया था। इसी तरीके से १९३० के बाद के वर्षों में उन्होंने कोलिमा को आबाद कर दिया था। हर रोज मास्को, हमारे देश की राजधानी, सोवितस्काया गावान के लिए, वानिनो बन्दरगाह के लिए एक ऐसी ही रेल गाड़ी रवाना करती थी। और प्रत्येक प्रान्तीय राजधानी भी लाल रेल गाड़ियां भेजती थीं, लेकिन इन्हें हर रोज रवाना नहीं किया जाता था। इसी तरीके से उन लोगों ने सन् १९४१ में वोल्गा जर्मन गणराज्य को कजाकिस्तान पहुंचा दिया था और आगे चल कर समस्त निष्कासित जातियों को इसी तरीके से भेजा गया था। सन् १९४५ में रूस के खर्चीले पुत्रों और पुत्रियों को जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया और आस्ट्रिया से भेजा गया था और पश्चिम के सीमा क्षेत्रों से भी—जो भी व्यक्ति अपने आप इन इलाकों में पहुंच गया था उसे ऐसी ही रेल गाड़ियों में चढ़ा कर सुदूर इलाकों में भेजा गया। सन् १९४९ में

इसी तरीके से उन लोगों ने विशेष शिविरों में अनुच्छेद -५८ के अन्तर्गत दण्डित कैदियों को एकत्र किया।

स्तोलिपिन रेल डिब्बे सामान्य रेल कार्यक्रम के अनुसार चलते हैं और लाल रेल-गाड़ियां अत्यन्त प्रभावशाली आदेशों के आधार पर चलती हैं, जिनके ऊपर गुलाग के महत्वपूर्ण जनरलों के हस्ताक्षर होते हैं। स्तोलिपिन रेल डिब्बे किसी खाली स्थान पर नहीं जा सकते, ये किसी "अनाम" स्थान पर नहीं पहुंच सकते; इनका गंतव्य सदा एक स्टेशन ही होगा चाहे यह एक अत्यन्त छोटे और नगण्य कस्बे का ही स्टेशन क्यों न हो, जहां किसी मकान के ऊपरी हिस्से में आरम्भिक हिरासत की कोठरियां बना दी गई हों। लेकिन लाल रेल गाड़ियां खाली स्थानों पर भी जा सकती हैं : और जहां कहीं कोई जाता है तो तुरन्त इसके बराबर, पहाड़ी ढलानों के समुद्र के भीतर से अथवा तैगा जंगलों के समुद्र के गर्भ से द्वीपसमूह का एक नया द्वीप जन्म ले लेता है।

प्रत्येक लाल जानवर रेलगाड़ी कैदियों को ढोने के लिए उपयुक्त नहीं होती। सबसे पहले इसे इस काम के लिए तैयार करना पड़ता है। लेकिन यह कार्य उस तरीके से नहीं होता, जिस तरीके से हमारे कुछ पाठक आशा करते होंगे : लोगों को ढोने से पहले यदि इसमें कोयला या चूना ढोया गया हो तो डिब्बों में झाड़ू लगाई जाए और इन्हें साफ किया जाए—यह काम सदा नहीं होता। इसके छिद्रों को बन्द करने और सर्दियों के मौसम में इसमें एक स्टोव लगाने की भी जरूरत नहीं होती। (जब कनियाभ-पोगोस्त से रोपचा तक की रेल पटरी बिछाई जा रही थी और यह अभी तक सामान्य रेल श्रृंखला का हिस्सा नहीं बनी थी उन लोगों ने इस लाईन पर कैदियों को तुरन्त लाना ले जाना शुरू कर दिया—कैदियों को ऐसे माल डिब्बों में ढोया जाता था, जिनमें न तो गर्म करने के लिए स्टोव होते थे और न ही कैदियों के लेटने के लिए तख्ते। सर्दियों में कैदी लोग बर्फीले फर्श पर लेटे रहते थे और उन्हें खाने के लिए कोई गर्म चीज भी नहीं दी जाती थी क्योंकि रेल गाड़ी एक ही दिन में इस इलाके से गुजर सकती थी। जो कोई व्यक्ति इन कैदियों की तरह उन बर्फानी डिब्बों में १८ से २० घंटे तक पड़े रहने के बाद जीवित रह सकता था वह सचमुच जी सकता था! जानवरों को ढोने वाले लाल डिब्बों को कैदियों को ढोने के लिए तैयार करने में यह काम करने पड़ते थे : डिब्बों के फर्श दीवारों और छतों को उनकी मजबूती के लिए परखा जाता था और यह भी देखा जाता था कि उनमें कोई छेद तो नहीं हैं अथवा कुछ ऐसी ही खामियां तो नहीं हैं। इनकी छोटी छोटी खिड़कियों पर सलाखें लगानी पड़ती थीं। नाली के रूप में प्रयोग के लिए डिब्बे के फर्श में एक छेद काटना पड़ता था और इसके चारों ओर एक मोटी चद्दर का टुकड़ा इस तरह लगा दिया जाता था ताकि इस छेद को बढ़ाया न जा सके। इस रेल गाड़ी में आवश्यक संख्या में ऐसे स्थान बनाने पड़ते थे, जिनपर गारद के संतरी मशीनगन लेकर खड़े रह सकें और पूरी रेल गाड़ी में इनका सही वितरण आवश्यक था। यदि ऐसे स्थानों की संख्या पर्याप्त न होती तो ऐसे और स्थान बनाए जाते। डिब्बों की छतों पर चढ़ने के लिए व्यवस्था करनी पड़ती। सर्च लाईट लगाने के लिए जगहों का चुनाव करना पड़ता और इन्हें अबाध गति से बिजली देने की भी व्यवस्था की जाती। लम्बे हैंडलों वाली मूसलियां प्राप्त की जातीं। कर्मचारियों के लिए एक यात्री डिब्बा इस रेल गाड़ी के साथ जोड़ा जाता और यदि ऐसा डिब्बा उपलब्ध न होता तो गारद के मुखिया, सुरक्षा अफसर और गारद के सन्तरियों के

लिए अच्छी तरह से गर्म रखा जाने वाला माल डिब्बा तैयार किया जाता। सन्तरियों और कैदियों के लिए रसोई घर बनाने पड़ते। यह सब हो जाने के बाद ही इन जानवरों को ढोने वाली गाड़ियों के बराबर टहलना और इनके ऊपर यह लिखना शुरू होता: 'विशेष साज सामान" अथवा "नष्ट होने योग्य सामान।" (एवजेनिया जिन्भबर्ग ने अपने "सातवां डिब्बा" शीर्षक अध्याय में लाल डिब्बों वाली रेल गाड़ी का बहुत विस्तृत विवरण दिया है और उनके इस विवरण के बाद यहां इस रेल गाड़ी का विस्तार से विवरण देना आवश्यक नहीं है)।

रेल गाड़ी को तैयार करने का काम पूरा हो गया है—और अब कैदियों को डिब्बों में लादने की जटिल और युद्ध जैसी कारवाई शेष है। यहां आकर दो महत्वपूर्ण और अनिवार्य लक्ष्य रह जाते हैं:

+ सामान्य नागरिकों से इस लदान को छिपाना

+ कैदियों को आतंकित करना

स्थानीय लोगों से लदान को छिपाना इसलिए आवश्यक था क्योंकि एक साथ लगभग एक हजार आदमियों को रेल गाड़ी में चढ़ाया जा रहा था। (कम से कम २५ डिब्बों में), और यह स्तोलिपिन डिब्बे की आपकी छोटी सी टोली नहीं थी, जिसे शहर के लोगों की आंख के सामने ही ले जाया जा सके। हां, प्रत्येक व्यक्ति यह जानता था कि प्रतिदिन और प्रति घंटे गिरफ्तारियां की जा रही हैं लेकिन किसी को भी इतने अधिक कैदियों के एक साथ प्रदर्शन के द्वारा भयभीत नहीं करना था। सन् १९३८ में ओरेल में आप यह तथ्य मुश्किल से ही छिपा सकते थे कि शहर में शायद ही ऐसा कोई घर हो जिसके किसी सदस्य को गिरफ्तार न किया गया हो और अपनी घोड़ा गाड़ियों में सवार रोती हुई स्त्रियों ने सुरिकोव के चित्र "स्त्रेलतसी को फांसी" की तरह ओरेल जेल के सामने के चौक को ठसाठस भर दिया था। (हाल की इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को हमारे लिए कौन चित्रित करेगा? कोई नहीं। यह काम करना इस प्रकार के चित्र बनाना फैशनेबल नहीं है फैशनेबल नहीं है...) लेकिन आपको इस बात की ज़रूरत नहीं है कि आप एक दिन में एकत्रित एक रेलगाड़ी भर कैदियों को हमारी सोवियत जनता के समक्ष उपस्थित करें। (और ओरेल में उस वर्ष इनकी संख्या इतनी बड़ी थी) और किशोरों को भी इन्हें नहीं देखना चाहिए—क्योंकि किशोर हमारा भविष्य हैं। अतः यह काम केवल रात के समय किया जाता था—और प्रत्येक रात, प्रत्येक रात, और यह क्रम लगातार कई महीनों तक जारी रहा। गाड़ियों में लाद कर ले जाने वाले कैदियों की काली पंक्ति को जेल से स्टेशन तक पैदल ही ले जाया जाता था। (इस बीच ब्लैकमारिया नई गिरफ्तारियों में व्यस्त रहती थी।) यह सच है, स्त्रियाँ यह समझ गईं, स्त्रियों ने न जाने कैसे इस बात का पता लगा लिया और वे रात के समय शहर भर से स्टेशन पर पहुंच जातीं और ट्रैकों पर खड़ी रेलगाड़ियों पर नजर रखतीं। वे डिब्बों के बराबर दौड़तीं, पटरियों के बीच लगे तारों और स्वयं पटरियों में उलझ कर गिरतीं और प्रत्येक डिब्बे के बाहर चिल्लातीं: "क्या अमुक व्यक्ति इसके भीतर है?" "क्या अमुक व्यक्ति इसके भीतर है?" और वे इसी प्रकार चिल्लाती हुई अगले डिब्बे तक पहुंच जातीं और कुछ अन्य इस पहले डिब्बे के बराबर आ पहुंचतीं: "क्या अमुक व्यक्ति इसके भीतर है?" और अचानक मोहरबंद डिब्बे के भीतर से उत्तर आता: "मैं यहां हूं, मैं यहां हूं!" अथवा यह सुनाई पड़ता: "उसे आगे तलाश करो, वह दूसरे डिब्बे में है।"

अथवा यह आवाज कान में पड़ती : "औरतो, सुनो मेरी पत्नी यहीं कहीं है स्टेशन के पास। दौड़ कर जरा उसे बता दो।"

यह दृश्य, जो हमारे सम सामयिक संसार के लिए उपयुक्त नहीं है केवल उस समय रेल गाड़ियों में कैदियों को लादने के कुशलता विहीन संगठन का ही प्रमाण हैं। इन गलतियों पर ध्यान दिया गया और एक निश्चित रात के बाद दूर-दूर तक रेल गाड़ियों को गुर्राते और भौंकते हुए पुलिस के कुत्तों ने घेर लिया।

और मास्को में, पुरानी स्रेतिन्का संक्रमण जेल से (जिसका अब कैदियों को स्मरण नहीं रहा है) अथवा क्रासनाया प्रेसन्या जेल से कैदियों को लाकर जानवर ढोने वाले लाल डिब्बों मे लादने का काम केवल रात के समय ही होता था; यह नियम था।

यद्यपि गारद को दिन के समय सूर्य की फालतू रोशनी की कोई आवश्यकता नहीं थी, कोई उपयोग नहीं था, पर दूसरी ओर वे रात के समय सर्चलाईट रूपी सूर्यों का उपयोग करते थे। यह अधिक कार्यकुशल थीं क्योंकि इन्हें आवश्यक इलाके पर ही केन्द्रित किया जा सकता था, जहां भयभीत झुंड के रूप में कैदी लोग इस आदेश की प्रतीक्षा करते हुए जमीन पर बैठे रहते थे : "अगले पांच आदमियों की टोली—खड़े हो जाओ! डिब्बे की ओर चलो—दौड़ो!" (केवल दौड़ते हुए ही, ताकि चारों ओर देखने का समय न मिले। सोचने का समय न मिले, आप इस प्रकार दौड़ते हुए आगे बढ़ते रहें कि आपके पीछे कुत्ते पड़े हुए हैं, और आप सबसे अधिक इस बात से भयभीत हैं कि कहीं दौड़ते समय नीचे न गिर पड़ें।) उस ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर। लदान के ऊंचे ढूह पर, लड़खड़ाते हुए, फिसलते हुए आगे बढ़ते रहें। और जगमगाती हुई तथा शत्रुतापूर्ण सर्चलाइटों की प्रकाश धाराएं केवल प्रकाश ही नहीं देती थीं बल्कि कैदियों को आतंकित करने के लिए महत्त्वपूर्ण नाटकीय तत्व उपलब्ध कराती थीं और इनके साथ ही संतरियों के चीखने चिल्लाने, धमकियां देने और राइफलों के कुन्दों की मार जारी रहती थी। जो कोई पीछे रह जाता, उसका यही हाल होता। और उसके बाद हुक्म मिलता : "बैठ जाओ।" (और यदा कदा, जैसाकि उसी ओरेल के स्टेशन के चौक में होता : "घुटनों के बल बैठो।" और प्रार्थना करते हुए भक्तों की एक नई नस्ल की तरह, पूरे एक हजार कैदी तुरन्त घुटनों के बल बैठ जाएंगे।) इसके साथ ही डिब्बे तक दौड़ लगाने की भी व्यवस्था थी, जो डराने धमकाने के अलावा अन्य प्रत्येक दृष्टि से अनावश्यक थी—पर कैदियों को आतंकित करने के लिए यह बहुत जरूरी थी। इसके साथ ही क्रोध से भरे कुत्तों का भौंकना जारी रहता। इसके साथ ही राइफलें कैदियों पर तनी होतीं (यह बात सम्बन्धित दशक पर निर्भर करती थी कि सन्तरियों के हाथों में राइफलें होंगी अथवा स्वचालित पिस्तौलें।) और प्रमुख बात कैदी की संकल्प शक्ति को क्षति पहुंचाना, कुचल डालना थी ताकि वह भागने की बात न सोचे, ताकि काफी समय तक वह अपने इस नए लाभ की ओर ध्यान न दे सके कि अब वह पत्थर की दीवारों वाली जेल के स्थान पर पतले तख्तों वाली दीवारों के रेल डिब्बे में है।

एक हजार कैदियों को रेल के डिब्बों में रात के समय इतनी सूक्ष्मता और तत्परता से चढ़ाने के लिए, जेल के अधिकारियों के लिए यह आवश्यक था कि उन्हें पहले दिन सुबह ही उनकी कोठरियों से निकाल लिया जाए और यात्रा के लिए तैयार किया जाए। और गारद के सन्तरियों को इन कैदियों को जेल में ही बड़ी कड़ाई से जांच करने के लम्बे और कठोर तरीके पर अपना पूरा दिन लगाना पड़ता था और इसके बाद कोठरियों से निकाले

गए कैदियों को अपनी निगरानी में रखना पड़ता था जो अब तक जेल के अहाते में होते थे, फर्श पर बैठे रहते थे ताकि ये लोग जेल के दूसरे कैदियों से मिल न जाएं। इस प्रकार कैदी के लिए दिन भर के कष्टों के बाद डिब्बों में सवार हो जाना बहुत राहत देता था।

कैदियों की सामान्य गिनती, जांच, बाल मुंडवाने, कपड़ों को तपाने और कैदियों को नहलाने के अलावा कैदियों की रेल गाड़ी में इन्हें सवार करने से पहले विशेष रूप से तलाशी की व्यवस्था भी करनी पड़ती थी। यह तलाशी जेल कर्मचारी नहीं बल्कि कैदियों को अपनी निगरानी में लेने वाली गारद करती थी।

गारद से यह आशा की जाती थी कि लाल रेल गाड़ियों के सम्बन्ध में प्राप्त निर्देशों और स्वयं अपनी कारवाई सम्बन्धी आवश्यकताओं के अनुसार तलाशी लें ताकि कैदियों के पास ऐसी कोई चीज़ न रह जाए जिससे उन्हें भागने में सहायता मिल सके; इन तलाशियों में ऐसी प्रत्येक वस्तु को ले लिया जाता था जिससे कि किसी वस्तु को चीरा या काटा जा सके; हर प्रकार के पाउडर या पिसी हुई वस्तु को (मंजन, चीनी, नमक, तम्बाकू, चाय) ले लिया जाता था ताकि इनका इस्तेमाल गारद के सन्तरियों की आंख में झोंकने के लिए न किया जा सके; हर प्रकार की डोरी, रस्सी पतली टहनी, पेटियां, सामान बांधने की पेटियां ले ली जाती थीं क्योंकि इन सबका इस्तेमाल भागने में किया जा सकता था। (और इसका मतलब था कि हर प्रकार की बांधने की चीज़ छीन ली जाती थी! और इस कारण से सन्तरियों ने उस लंगड़े आदमी के वे पट्टे भी काट दिए जिनका इस्तेमाल उसकी नकली टांग को बांधने के लिए किया जाता था। और उस अपंग व्यक्ति को अपनी नकली टांग को अपने कन्धे पर ढोना पड़ा और अपने दोनों ओर चलने वाले कैदियों की सहायता से फुदक-फुदक कर चलने के लिए बाध्य होना पड़ा।) और शेष सब चीज़ों को—सब "कीमती सामान" और सूटकेसों को भी—निर्देशों के अनुसार जांच-परख लेने के बाद विशेष सामान रखने के डिब्बे में ले जाया जाता था और यात्रा के अन्त में इन चीजों को उनके मालिकों को लौटा दिया जाता था।

इसके बावजूद मास्को के निर्देश की शक्ति क्षीण थी और वोलोग्दा तथा कुईवाइशेव की गारद इसकी उपेक्षा कर सकती थीं। जब कि कैदियों के ऊपर गारद की शक्ति बड़ी स्पष्ट थी, बड़ी वास्तविक थी। और यह तथ्य लदान की कारवाई के तीसरे लक्ष्य के लिए बड़ा महत्वपूर्ण था :

+जनता के शत्रुओं से सब अच्छी चीजों को छीन कर जनता के पुत्रों को सौंप देना सीधा सादा न्याय था।

"बैठ जाओ।" "अपने घुटनों के बल बैठो!" "कपड़े उतारो!" गारद के इन कानून सम्मत आदेशों में वह बुनियादी शक्ति निहित थी जिसके समक्ष कोई तर्क नहीं दिया जा सकता था। आखिरकार, एक नंगा आदमी अपना आत्मविश्वास खो देता है, वह गर्व से भर कर सीधा खड़ा नहीं हो सकता और ऐसे लोगों से समानता के आधार पर बात नहीं कर सकता जिन्होंने अभी भी वस्त्र पहन रखे हों। तलाशी शुरू होती है। (कुईवाइशेव, १९४९ की गर्मियां) नंगे कैदी आगे बढ़ते हैं, अपनी सम्पत्ति और उन वस्त्रों को लिए हुए, जो उन्होंने अपने शरीर के ऊपर से उतारे थे। सशस्त्र सैनिकों का एक झुण्ड उन्हें घेर लेता है। ऐसा नहीं लगता कि इन लोगों को कैदियों की गाड़ी में चढ़ाने के लिए ले जाया जा रहा है बल्कि ऐसा लगता है कि उन्हें तुरन्त गोली से उड़ा दिया जाएगा अथवा जहरीली

गैस की कोठरियों में डाल कर मार डाला जाएगा—और इस मनःस्थिति में मनुष्य को अपनी चीजों की चिन्ता नहीं रह जाती। गारद के सन्तरी जानबूझ कर बहुत तेजी से, उजड्डता से और अभद्रता से काम करते हैं और वे सामान्य मानवीय भाषा में एक शब्द भी नहीं बोलते। आखिरकार, इन सब कार्यों का उद्देश्य आतंकित और निराश करना है, सूटकेसों की सब चीजों को उलट दिया जाता है और चीजें फर्श पर इधर-उधर बिखर जाती हैं और इसके बाद उन्हें अलग-अलग ढेरों में लगा दिया जाता है। सिगरेट के डिब्बे, बटुए, और अन्य दयनीय "बहुमूल्य चीजें" सब ले ली जाती हैं और बिना पहचान का कोई निशान लगाए इन्हें पास खड़े एक ढोल में फेंक दिया जाता है। (और न जाने क्यों यह तथ्य नंगे कैदियों को विशेष रूप से निराश करता है कि जिस चीज में इन वस्तुओं को फेंका जा रहा है वह कोई तिजोरी अथवा ट्रंक अथवा बाक्स नहीं है बल्कि एक ढोल है और इस बात का प्रतिवाद करना अत्यन्त निरर्थक लगता है।) नंगा कैदी अधिक से अधिक बस यही कर सकता है कि अच्छी तरह से तालाशी लिए गए अपने फटे पुराने कपड़ों को फर्श से उठा ले और उन्हें लपेट कर गांठ बांध ले अथवा उन्हें एक कम्बल में लपेट ले। फैल्ट के बूट ? आप उन्हें जांच सकते हैं, उन्हे वहां फैंक सकते हैं और सूची में उनके लिए हस्ताक्षर कर सकते हैं ! (आपको रसीद नहीं मिलती, बल्कि आप यह दस्तखत करते हैं कि आपने इन्हें सौंपा है। आप यह प्रमाणित करते हैं कि आपने इन्हें सामान के ढेर में फैंका था !) और जब गोधूली के समय अन्तिम ट्रक कैदियों सहित जेल के अहाते से रवाना होता है तो वे देखते हैं कि गारद के सन्तरी ढेर से चमड़े के सर्वोत्तम सूटकेस झपट लेने और ढोल में से सर्वोत्तम सिगरेट के डिब्बे दबोच लेने के लिए लपक रहे हैं। और उनके बाद, जेल के कर्मचारी इस लूट के माल को टटोलते हैं और सबसे अन्त में संक्रमण जेल के ट्रस्टियों को यह मौका मिलता है।

जानवरों को ढोने वाली माल गाड़ी में सवार होने के लिए पूरा एक दिन बिताने की यह लागत आती है। और अब कैदी लोग बड़ी राहत का अनुभव करते हुए झिर्रिदार तख्तों के ऊपर चढ़ जाते हैं। लेकिन यह किस प्रकार की राहत है, यह कैसा तपाया हुआ माल डिब्बा है ? एक बार फिर ये ठंडक और भूख, चोरों और गारद के पाटों के बीच पिसते हैं।

यदि जानवरों के डिब्बों में चोर हों (और वे सचमुच इन लाल माल गाड़ियों में भी अलग नहीं रखे जाते) तो वे सदा की तरह सर्वोत्तम स्थान अपने लिए चुन लेते हैं— ऊपर के तख्तों पर खिड़की के बराबर। यह गर्मियों में होता है। अतः हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि सर्दियों में उनका स्थान क्या होगा। हां, वास्तव में स्टोव के बराबर ये लोग स्टोव के चारों ओर एक अत्यंत संकरा घेरा बना कर बैठ जाते हैं। जैसाकि भूतपूर्व चोर मिनाएव ने बताया है : सन् १९४९ में भयंकर शीत लहर के दौरान, पूरे डिब्बे के लिए तीन बाल्टी कोयला दिया गया था। यह कोयला वोरोनेझ से कोतलास तक की पूरी यात्रा के लिए दिया गया था जिसमें कई दिन लगते थे।[1] और इस संकट की स्थिति में, चोरों ने केवल स्टोव के चारों ओर की जगह ही नहीं हथिया ली, और केवल मूर्ख कैदियों के गर्म कपड़े ही उनसे छीन कर नहीं पहन लिए, बल्कि पांवों पर लपेटने के कपड़े तक उन के जूतों से निकलवा लिए और उन्हें स्वयं अपने पांवों पर लपेट लिया। आज तुम, कल मैं। यह स्थिति भोजन के मामले में और भी बुरी थी—चोरों ने पूरे डिब्बे के पूरे राशन को अपने कब्जे में कर लिया था और इसके अलावा वे सर्वोत्तम चीजों को, अन्य वस्तुओं

सहित अपने लिए रख लेते थे। लोशचिलन को स्मरण है कि उसने सन् १९३७ में मास्को से पेरेबोरी की तीन दिन की यात्रा किस प्रकार की थी। उन लोगों ने इतनी छोटी यात्रा के लिए रेल गाड़ी में गर्म भोजन नहीं पकाया और केवल सूखा राशन ही दिया। चोरों ने सर्वोत्तम चीजें अपने लिए ले लीं लेकिन और कैदियों को इस बात की अनुमति दे दी कि वे रोटी और हेरिन मछली को अपने बीच बांट लें; और इसका यह अर्थ था कि वे भूखे नहीं थे। जब गर्म राशन मिला और चोरों को इसे बांटने का काम सौंपा गया तो उन्होंने सारी खिड़ची अपने बीच ही बांट ली। (सन् १९४५ में किशिनेव से पेचोरा तक की तीन सप्ताह की यात्रा।) इस सबके अलावा, चोरों ने रास्ते में स्पष्ट डाकेजनी में भी कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई: उन लोगों ने एक स्तोनिया वासी के सोने के दांत देखे और उसे धक्का देकर जमीन पर गिरा दिया और अंगीठी की आग कुरेदने वाले लोहे के पोकर से उसके दांत तोड़ डाले।

कैदी लोग गर्म भोजन को लाल गाड़ियों का वास्तविक लाभ समझते थे: दूर के स्टेशनों पर (ऐसे स्थानों पर जहां लोग उन्हें नहीं देख सकते थे) रेलगाड़ियां रुकतीं और डिब्बों को खिचड़ी और दलिया बांटा जाता। लेकिन उन लोगों ने इस तरीके से किया कि स्थिति और खराब हो गई। यह भी हो सकता था कि वे (जैसाकि किशिनेव की गाड़ी में हुआ) खिचड़ी को उन्हीं बाल्टियों में डाल देते थे जिनमें कोयला दिया जाता था बाल्टियां धोने के लिए पानी उपलब्ध नहीं था। पीने का पानी तक बहुत थोड़ी मात्रा में दिया जाता था और इसकी मात्रा खिचड़ी से भी कम होती थी। और इस प्रकार आप खिचड़ी को निगलते थे और आपके दांत कोयले के टुकड़ों पर कड़कड़ाते रहते थे। यह भी होता था कि वे खिचड़ी और गर्म दलिया डिब्बे में लायें और पर्याप्त कटोरे कैदियों को न बांटें— ४० के स्थान पर २५ कटोरे दें और तुरन्त हुक्म सुनायें: "ठीक है, ठीक है, जल्दी करो, जल्दी करो। हमें दूसरे डिब्बों में भी भोजन पहुँचाना है, केवल तुम्हारा ही पेट नहीं भरना है।" तो आप किस प्रकार खाना खा सकते थे, आप किस प्रकार इसे बांट सकते थे? आप इसे कटोरों के आधार पर उचित रूप से नहीं बांट सकते थे और इसका यह अर्थ होता था कि आपको प्रत्येक हिस्से को इस प्रकार जांचना पड़ता था कि किसी के पास अधिक न चला जाए। और जिन लोगों को सबसे पहले भोजन दिया जाता वे चिल्लाते: "इसे चलाओ! इसे चलाओ!" पर अन्तिम चुप रहता था, तली में अधिक जमा होगा। पहले लोग खा रहे होते थे और अन्तिम लोग प्रतीक्षा कर रहे होते थे। वे निश्चित यह पसन्द करते कि दूसरे लोग अधिक तेजी से खायें क्योंकि वे भूखे थे और इस बीच ढोल में पड़ी पतली खिचड़ी ठंडी हो रही होगी और बाहर से भी जल्दी करने की आवाज लग रही थी: "तुम्हारा खाना समाप्त नहीं हुआ? ठीक है, अब जल्दी करो। जल्दी समाप्त करो।" और इसके बाद वे दूसरी टुकड़ी को भोजन देते—यह पहले डिब्बे के लोगों को दी गई खिचड़ी से न तो अधिक होती और न कम। न ही अधिक गाढ़ी और न ही कम पतली। और इसके बाद बचे खुचे भोजन का सही अनुमान लगाने की बारी आती और इन्हें कटोरे में आधे हिस्से तक डाला जाता। और इस बटवारे की पूरी अवधि में ४० आदमी खाने पर इतना ध्यान नहीं देते जितना यह देखने पर कि बटवारा सही तो किया जा रहा है। और इस प्रकार स्वयं कष्ट भोगते।

वे डिब्बों को गर्म नहीं करते, वे दूसरे कैदियों को चोरों से नहीं बचाते। वे आप

को पीने के लिए पर्याप्त पानी नहीं देते और आपको खाने के लिए पर्याप्त भोजन भी नहीं मिलता—और इसके साथ ही वे लोग आपको सोने भी नहीं देते। दिन के समय गारद पूरी रेल गाड़ी को बड़े स्पष्ट रूप से देख सकती थी और गाड़ी के पीछे तेजी से छूटती हुई पटरी पर भी नजर रख सकती थी और इस बात का निश्चय कर सकती थी कि कोई भी कैदी रेल गाड़ी से नीचे नहीं कूदा है अथवा डिब्बे के नीचे से खिसक कर पटरियों के बीच नहीं जा गिरा है। पर रात के समय सतर्कता मानो उनके ऊपर हावी हो जाती। वे लम्बे दस्तों वाली लकड़ी की थपकियों से (जो गुलाग का एक मानक औजार होता है) प्रत्येक डिब्बे के प्रत्येक तख्ते पर प्रत्येक स्टाप पर जोर-जोर से वार करते। हो सकता है किसी ने तख्ते काट लिए हों। और कुछ रुकने के स्थानों पर डिब्बे के दरवाजे को खोल दिया जाता। लालटेन की रोशनी अथवा सर्च लाइट की तेज प्रकाश धारा इसके भीतर पड़ती : "गिनती के लिए तैयार!" और इसका अर्थ होता : उठ खड़े होओ और वे आप को जहाँ चलने के लिए कहें उसके लिए तैयार हो जाओ—प्रत्येक कैदी को बाईं ओर या दाहिनी ओर दौड़ना पड़ता। गारद के सन्तरी अपनी लम्बी-लम्बी थपकियां लेकर डिब्बे के भीतर कूद आते (अन्य सन्तरी डिब्बे के दरवाजे के सामने अर्ध वृत्त बनाकर और अपना स्वचालित पिस्तौलें लेकर तैनात हो जाते) और इशारा करते : बायीं ओर! इसका यह अर्थ होता कि बायीं ओर के कैदी ठीक स्थान पर खड़े हैं और दाहिनी ओर के कैदियों को दूसरी ओर हटना है। कैदी लोग एक दूसरे के ऊपर से पिस्सुओं की तरह कूदते हुए बायीं और भागते हैं और जहां कहीं सम्भव हो जा घुसते हैं। और जो कोई पूरी तरह चुस्त नहीं निकलता, जो कोई पीछे पिछड़ जाता है उसकी पसलियों पर और पीठ पर थपकियों की मार पड़ती है ताकि उसे और शक्ति दी जा सके। अब तक संतरियों के फौजी बूट भी काम करने लगते हैं। कैदियों को कुचलना और ठोकरें जमाना शुरू हो जाता है और आपके सब सामान को इधर-उधर फेंका जाने लगता है और सर्वत्र रौशनी और थपकियों के वार की आवाज़ सुनाई पड़ने लगती है : क्या तुमने नहीं तख्तों को आरी से काट डाला है? नहीं। इसके बाद गारद के सन्तरी डिब्बे के बीच में खड़े हो जाते हैं और आपको बायें से दाहिनी ओर हटाने लगते हैं और इसके साथ गिनती जारी रहती है : "पहला···दूसरा···तीसरा।" अंगुली हिला कर गिनना पर्याप्त हो सकता था। लेकिन यदि इस तरह काम किया जाये तो यह आतंकित करने वाला तरीका नहीं होगा। अत: जोर से गिनती करने का अधिक स्पष्ट और कम गलत होने वाला, अधिक सक्रिय और तेज़ तरीका अपनाया जाता है और इस गिनती के साथ-साथ आपकी पतलूनों, कन्धों, सिरों और जहां कहीं सम्भव हो उसी थपकी का वार होता रहेगा। वे लोग ४० तक गिन चुके हैं। तो अब वे सामान को उठा कर फेंकने, तेज़ रौशनी डालने और थपकियां बरसाने का काम डिब्बे के दूसरे किनारे पर करेंगे। अन्ततः यह काम पूरा हो जाता है और डिब्बे में ताला डाल दिया जाता है। आप गाड़ी के अगले स्थान पर रुकने तक फिर सो सकते हैं। (और कोई सचमुच यह नहीं कह सकता कि गारद के सन्तरियों की यह चिन्ता पूरी तरह से बेबुनियाद है—क्योंकि जो लोग तरीका जानते हैं वे लाल डिब्बों से भाग सकते हैं। उदाहरण के लिए वे किसी तख्ते की मजबूती को जांचने के लिए उस पर वार करते हैं और देखते हैं कि इसके कुछ हिस्से को आरी से काट डाला गया है। अथवा अचानक सुबह के समय जब खिचड़ी बांटी जा रही हो, वे देखते हैं कि ऐसे कई लोगों की दाढ़ी बनी हुई है पहले जिनकी दाढ़ी

बहुत बढ़ी हुई थी। और वे लोग डिब्बे को अपनी स्वचालित पिस्तौलें लेकर घेर लेते हैं। "अपने चाकू सौंप दो!" और यह सचमुच चोरों और उनके साथियों की बहादुरी का एक हिस्सा ही है : वे अपनी बढ़ी दाढ़ी से ऊब गए थे और अब उन्हें अपने उस्तरे सौंपने पड़ रहे हैं।)

लाल रेल गाड़ी अन्य लम्बे सफर पर जाने वाली रेल गाड़ियों से इस दृष्टि से भिन्न होती हैं कि इनमें सवार लोग यह नहीं जानते कि क्या कभी वे इसके नीचे उतरेंगे अथवा नहीं। जब उन लोगों ने लेनिनग्राद जेलों (१९४२) के कैदियों की एक रेल गाड़ी से कैदियों को सोलिकामस्क में उतारना शुरू किया तो पूरा तटबंध लाशों से पट गया और केवल गिने चुने कैदी ही जीवित नीचे उतरे। सन् १९४४-१९४५ और १९४५-१९४६ की सर्दियों में झेलेजनो दोरोझनी (कनियाज-पोगोस्त) गांव में और इसी प्रकार उत्तर के समस्त प्रमुख रेल जंक्शनों पर मुक्त प्रदेशों से आने वाली कैदी रेल गाड़ियों (बाल्टिक राज्यों, पोलेंड, जर्मनी से आने वाली गाड़ियों) के पीछे एक या दो डिब्बे केवल लाशों से लदे होते थे। इस का यह अर्थ था कि रास्ते में उन लोगों ने उन डिब्बों से लाशों को सावधानी से बाहर निकाला जिनमें जीवित यात्री मौजूद थे और उन्हें मुर्दों वाले डिब्बों में लाद दिया। लेकिन यह सदा नहीं होता था। ऐसे अनेक अवसर होते थे जब उन्हें इस बात का केवल उस समय पता चलता था कि अभी तक कौन जीवित है और कौन मर चुका है जब वे सुखोबेजवोद-नाया (उन्झलाग) स्टेशन पर पहुंचने के बाद डिब्बों के दरवाजे खोलते। जो कैदी बाहर नहीं आते स्पष्ट था कि वे जीवित नहीं थे।

इस तरीके से यात्रा करना सर्दियों में इस लिए भयावह और संघातिक था क्योंकि गारद, सुरक्षा की चिन्ता में इस सीमा तक लगी होने के कारण, पच्चीस अंगीठियों के लिए कोयला नहीं जुटा पाती थी। लेकिन गर्मियों में भी इस तरीके से यात्रा करना आरामदेह नहीं था। चार छोटी-छोटी खिड़कियों में से दो को पूरी तरह बन्द कर दिया जाता था और डिब्बे की छत धूप में बेहद तप जाती और गारद के सन्तरी १,००० कैदियों के लिए पानी ढोकर लाने का कष्ट उठाने को तैयार नहीं थे। --आखिरकार वे एक स्तोलिपिन रेल डिब्बे तक को पर्याप्त पानी देने में सफल नहीं हो पाते थे। कैदी लोग अप्रैल और सितम्बर के महीनों को यातायात के लिए सर्वोत्तम महीने समझते थे। लेकिन सर्वोत्तम मौसम भी उस स्थिति में बहुत छोटा पड़ जाता। यदि कैदियों को तीन महीने का समय गाड़ियों में ही बिताना पड़े। सन् १९३५ में (लेनिनग्राद से व्लादिवोस्तोक तक) यदि इतनी लम्बी यात्रा की संभावना हो तो गारद के सन्तरियों की राजनीतिक शिक्षा और कैद आत्माओं या आध्यात्मिक देख-रेख का भी प्रबन्ध किया जाता। ऐसी रेलगाड़ी के साथ एक अलग रेल डिब्बा जुड़ा होता और इसमें एक 'गाड फादर'—एक सुरक्षा अधिकारी यात्रा करता। उसने जेल में ही कैदियों की रेल गाड़ी के लिए आवश्यक तैयारी कर ली थी और कैदियों को विभिन्न डिब्बों में अन्धाधुन्ध तरीके से नहीं बल्कि स्वयं उसके द्वारा स्वीकृत प्राप्त सूचियों के आधार पर रखा जाता। वह प्रत्येक डिब्बे में एक मानीटर की नियुक्ति करता और इसके अलावा एक मुखबिर को प्रत्येक डिब्बे के लिए आवश्यक निर्देश देकर तैयार रखा जाता। जहां कहीं गाड़ी अधिक देर के लिए रुकती वह किसी न किसी बहाने से इन दोनों को डिब्बे से अपने पास बुलाता और उनसे पूछता कि लोग वहां क्या बात कर रहे थे। और ऐसा कोई भी सुरक्षा अधिकारी बिना ठोस परिणाम प्राप्त किए यात्रा समाप्त

करने पर अत्यन्त शर्म का अनुभव करता। और इस कारण से वह मार्ग में ही किसी न किसी कैदी को पूछताछ के लिए बुलाता और देखिये गाड़ी के अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचने तक इस कैदी को कैद की एक और सजा सुना दी जाती।

नहीं, उस लाल रेल गाड़ी का भी नाश हो, यद्यपि यह कैदीयों को बीच में गाड़ियां बदले बिना हो सीधे उनके गंतव्य स्थान पर पहुंचा देती थी। पर जिस किसी ने एक बार भी ऐसी किसी गाड़ी में यात्रा की है वह कभी भी इसे नहीं भूल सकेगा। इससे बेहतर तो जल्दी से जल्दी शिविर में पहुंच जाता होता। यथाशीघ्र पहुंचना बेहतर होता।

मनुष्य आशा और बेसब्री का पुतला होता है। वह यह कल्पना करता है मानो शिविर का सुरक्षा अफसर अधिक मानवीय दृष्टिकोण वाला व्यक्ति होगा अथवा मुखबिर कम विवेकहीन। बात बिल्कुल उल्टी है। मानो वह हमारे शिविर में पहुंचने पर हमें वही धमकियां देकर और उन्हीं पुलिस के कुत्तों का इस्तेमाल कर जमीन पर बैठने को बाध्य नहीं करेंगे। मानों हमें फिर वही "बैठ जाओ," के आदेश सुनने को नहीं मिलेंगे। मानो शिविर में जमीन पर कम बर्फ होगा, उससे कम जितना लाल डिब्बों के भीतर जम गया था। मानो इसका यह अर्थ था कि हम पहले ही उन स्थानों पर पहुंच गए हैं जिन पर हमें जाना है, जब वे हमें गाड़ियों से उतारना शुरू करते हैं मानो हमें और आगे एक छोटी लाईन से खुले डिब्बों में और आगे नहीं पहुंचाया जाएगा। (और वे लोग हमें खुले डिब्बों में कैसे ले जा सकते हैं? हमारे ऊपर पहरा कैसे रखा जा सकता है? यह गारद की एक समस्या है। और वे इसका हल इस तरह निकालते हैं: वे लोग हमें एक दूसरे से बेहद सटकर नीचे लेट जाने को कहते हैं और इस के बाद हमारे ऊपर एक बहुत बड़ा त्रिपाल ढक दिया जाता है, यह ठीक उसी प्रकार होता है जैसे पोतेमकिन नामक सिनेमा में नौसैनिकों को गोली से उड़ाये जाने से पहले ले जाया गया था। और आपको त्रिपाल का भी धन्यवाद करना चाहिए। उत्तर में, अक्तूबर के महीने में, ओलेनएव और उसके साथियों को पूरे दिन भर खुले डिब्बे में बिना किसी साये के बैठना पड़ा था। वे लोग पहले ही डिब्बे में सवार हो चुके थे लेकिन रेल इंजन नहीं आया था। पहले वर्षा हुई। और इसके बाद बर्फ पड़ने लगी। और कैदियों के फटे चिथड़े उनके शरीरों पर ही बर्फ की तरह जम गए।) छोटी सी रेल गाड़ी चलते समय हिचकोले खाती और इधर-उधर हिलती-डुलती और खुले डिब्बे की दिवारें चटकने और टूटने लगतीं और रेल गाड़ी का झटका किसी कैदी को डिब्बे से नीचे पहियों के तले फेंक सकता था। और यह पहेली सामने आ जाती है: यदि कोई कैदी दुदिनका से ६० मील की दूरी की यात्रा आर्कटिक क्षेत्र के बर्फीले जमाव में छोटी संकरी लाईन पर खुले डिब्बे में कर रहा हो, तो चोर कहां होंगे? उत्तर: प्रत्येक खुले डिब्बे के मध्य में, ताकि उनके चारों ओर की भेड़ें उन्हें अपने शरीर के ताप से गर्म रखेंगी और उन्हें रेल गाड़ी के पहियों के नीचे गिरने से भी बचायेंगी। सही जवाब है! प्रश्न: संकरी लाईन के अन्त में कैदियों को क्या देखने को मिलेगा (१९३९)? क्या वहां कोई इमारत होगी? नहीं, एक भी नहीं। कोई खंदकें होंगी? हां, इनमें पहले से ही लोग मौजूद होंगे, ये इन लोगों को नहीं मिलेंगी। तो क्या इस का यह अर्थ होता है कि इन लोगों को सबसे पहला काम अपने लिए खंदकें खोदने का करना होगा? नहीं, क्योंकि आर्कटिक क्षेत्र की सर्दियों में वे जमीन कैसे खोद सकते हैं? इसके स्थान पर, उन्हें धातु की खानों में काम के लिए भेज दिया जाएगा। और वे लोग कहां रहेंगे? क्या...रहेंगे? ओह, हां, रहेंगे...वे लोग तम्बुओं में रहेंगे।

लेकिन क्या सदा संकरी रेल लाईन ही रहेगी? नहीं, सचमुच नहीं। रेल गाड़ी पहुंच गई है: येर्तसोवो स्टेशन, फरवरी १९३८। रात के समय सवारी गाड़ी के डिब्बे खोले गए। रेल गाड़ी के बराबर बड़े-बड़े अलाव जलाए गए और इनकी रोशनी में लोगों का उतरना शुरू हुआ, इसके बाद गिनती शुरू हुई, कतारें बनने लगीं और फिर गिनती हुई। तापमान था शून्य से ३२ डिग्री सेंटीग्रेट नीचे। कैदियों की रेल गाड़ी दोनबास से आई थी और इन सब कैदियों को गर्मियों में गिरफ्तार किया गया था और इन लोगों ने कम ऊंचे जूते, आक्सफोर्ड जूते अथवा यहां तक कि सेंडिल तक पहन रखी थीं। उन लोगों ने स्वयं को अलावों के सामने गर्म करने की कोशिश की लेकिन सन्तरियों ने उन्हें खदेड़ दिया। अलाव इसलिए नहीं जलाए गए थे; आग रोशनी के लिए जलाई गई थी। तत्काल अंगुलियां ठिठुर गईं। बर्फ पतले जूतों में भर गया और पिघला तक नहीं। किसी ने दया नहीं दिखाई और हुक्म सुनाया गया: कतार बनाओ! कतारों में खड़े होओ! दाहिनी अथवा बाईं ओर एक भी कदम बढ़ाने पर हम बिना किसी चेतावनी के गोली चलायेंगे। आगे बढ़ो! अपने प्रिय आदेश पर जंजीरों में बंधे कुत्ते भौंकने लगे। वे इस गतिविधि से उत्तेजित हो उठे थे। गारद के सन्तरी भेड़ की खाल के कोटों में आगे-आगे चल रहे थे—और कैदी लोग जिनका विनाश प्राय: निश्चित था गर्मी के वस्त्रों में गहरे बर्फ में आगे बढ़ रहे थे। यह सड़क अंधियारे जंगलों में किसी ऐसे स्थान पर थी, जिस पर पहले शायद ही कोई व्यक्ति चला हो और जरा सा भी प्रकाश दिखाई नहीं पड़ रहा था। उत्तर का प्रकाश दिखाई पड़ा— उन लोगों के लिए इस प्रकाश का प्रथम और सम्भवत: अन्तिम दर्शन भी था। फिर वृक्ष बर्फानी ठंडक में चटख रहे थे। पूरी तरह से अरक्षित कैदी बर्फ में आगे बढ़ रहे थे और ठंडक से उनके पांव और टांगें संवेदनाहीन होती जा रही थीं।

अथवा एक दूसरा उदाहरण है। जनवरी १९४५ का। पेचोरा में आगमन। ("हमारी सेनाओं ने वारसा पर अधिकार कर लिया है! हमारी सेनाओं ने पूर्वी प्रशा को हमारी सेनाओं ने काट कर अलग कर दिया!") एक खाली बर्फ से ढका खेत। कैदियों को डिब्बों से बाहर फेंक दिया गया, छह-छह की कतार में उन्हें बर्फ पर बिठा दिया गया, बड़े परिश्रम साध्य तरीके से उनकी गणना की गई, गिनती गलत निकली और फिर गिनती की गई। उन्हें खड़े होने का हुक्म दिया गया और फिर उन्हें एक अब तक अछूते बर्फानी इलाके में चार मील का फासला पैदल तय कराया गया। कैदियों की यह गाड़ी भी दक्षिण से आई थी, मोलदाविया से आई थी। और प्रत्येक व्यक्ति ने चमड़े के जूते पहन रखे थे। पुलिस के कुत्ते एकदम उनके पीछे थे और सबसे पिछली कतार के कैदियों की पीठों पर पंजे रख कर कुत्ते उन्हें धकेल रहे थे और उनके सिरों के पिछले हिस्सों पर कुत्तों की गर्म सांस पड़ रही थी। (उस पंक्ति में दो पादरी थे—वयोवृद्ध सफेद बालों वाले फादर फ्योदोर फ्लोरया और युवक पादरी विक्टर शिपोवालनिकोव, जो उन्हें खडे रहने में मदद दे रहा था।) पुलिस के कुत्तों का कैसा विलक्षण उपयोग है? नहीं, यह कुत्ते के कैसे संयम का प्रदर्शन करता है! आखिरकार कुत्ते के मन में काटने की बड़ी तीव्र इच्छा होती है!

अन्तत: वे अपने गंतव्य पर पहुंचे। शिविर में पहुंचने वाले कैदियों के लिए एक स्नानघर था; उन लोगों को एक केबिन में अपने कपड़े उतारने पड़े। पूरे अहाते को दौड़ कर नंगे पार करना पड़ा और दूसरे केबिन में नहाने की व्यवस्था थी। लेकिन अब यह सब कुछ सही था: सबसे बुरा दौर समाप्त हो चुका था। वे लोग पहुंच गए थे। गोधूली हो

रही थी और अचानक यह पता चला कि उन लोगों के लिए शिविर में स्थान नहीं है, शिविर कैदियों की गाड़ी के आगमन के लिए तैयार नहीं था और स्नान के बाद कैदियों को फिर पंक्तिबद्ध खड़ा किया गया उनकी गिनती की गई, कुत्तों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया और उन्हें फिर वही चार मील का फासला पार करके रेल गाड़ी में वापस पहुंचा दिया गया। लेकिन इस बार यह वापसी की यात्रा अन्धेरे में हुई। और इन घन्टों में डिब्बों के दरवाजे खुले पड़े थे और इन में पहले जो थोड़ी बहुत गर्मी थी वह भी समाप्त हो चुकी थी और यात्रा के दौरान सारा कोयला जलाया जा चुका था और कहीं से भी और कोयला प्राप्त नहीं हो सकता था। और इस प्रकार इन परिस्थितयों में वे रात भर ठंड से ठिठुरते रहे और सुबह के समय उन्हें खाने के लिए सुखाई हुई कार्प मछली दी गई। (और जो व्यक्ति पानी पीना चाहता था वह बर्फ चबा सकता था) और फिर उसी सड़क से उन्हें फिर ले जाया गया।

और यह आखिरकार एक ऐसा किस्सा है, जिसका सुखद समापन हुआ। इस मामले में कम से कम शिविर का अस्तित्व तो था। यदि यह इन्हें आज लेने को तैयार नहीं था तो कल उन्हें लेगा। लेकिन यह भी बात असाधारण नहीं है कि लाल रेल गाड़ियां कहीं ऐसे स्थान पर जा पहुंचे जहां किसी शिविर का नामो निशान न हो। और यात्रा का अन्त अक्सर एक नए शिविर का समारम्भ ही होता। वे लोग जंगल में कहीं रेलगाड़ी रोक सकते थे। उत्तर के प्रकाश में और किसी पेड़ के ऊपर यह नाम पट ठोक सकते थे : "पहला ओ० एस० पी०[2]" और वहां कैदी एक सप्ताह तक सूखी मछली चबाते और अपना आटा बर्फ में गूंथने की कोशिश करते।

यदि दो सप्ताह पहले वहां एक शिविर बना दिया जाता, जिसका अर्थ आराम होता; गर्म भोजन तैयार मिलता; और यदि खाने के कटोरे भी न होते तो पहली और दूसरी बार दी जाने वाली खाने की चीजों को एक साथ चिलमचियों में मिला दिया जाता और छह कैदियों को एक साथ खाने के लिए एक-एक चिलमची दे दी जाती; और छह कैदियों की एक टोली एक गोल घेरा बना लेती (उस समय तक मेज या कुर्सी नहीं थी), और उनमें से दो अपने बायें हाथ से चिलमची के हैंडिल पकड़ते और अपने दाहिने हाथों से खाना खाते। और यह काम बारी-बारी से होता। क्या मैं एक ही बात को फिर दोहरा रहा हूं? नहीं, यह घटना १६३७ में पेरेबोई में हुई थी, जिसकी जानकारी लोशचिलिन ने दी थी। मैं पुनरावृत्ति नहीं कर रहा हूं, बल्कि गुलाग पुनरावृत्ति कर रहा है।

इसके बाद वे नए कैदियों के ब्रिगेड मुखियाओं की नियुक्ति करते। ये मुखिया शिविर के पुराने अनुभवी कैदी होते, जो बहुत जल्दी ही नए कैदियो को यह सिखा देते कि किस प्रकार जीवित रहा जा सकता है, किस तरह काम चलाऊ व्यवस्था की जाती है, किस प्रकार अनुशासन का पालन किया जाता है और किस प्रकार धोखाघड़ी की जाती है। और अगले दिन सुबह से ही वे लोग काम के लिए चल पड़ते हैं क्योंकि महान् युग की घड़ी का घंटा बजना शुरू हो चुका था और अब यह किसी कीमत पर नहीं रुक सकता था। आखिरकार सोवियत संघ जारशाही के जमाने का कठोर श्रम अकातूई नहीं है, जहां कैदियों को पहुंचने के बाद तीन दिन का आराम दिया जाता था।[3]



धीरे-धीरे द्वीपसमूह की अर्थव्यवस्था समृद्ध होने लगी। नई रेल पटरियां बिछाई गई। और जल्दी ही वे लोग ऐसे अनेक स्थानों पर कैदियों को रेलगाड़ियों से पहुंचाने लगे जहां कुछ ही समय पहले उन्हें जल मार्ग से ले जाया जाता था। लेकिन द्वीप समूह के ऐसे निवासी आज भी जीवित हैं, जो आपको यह बता सकते हैं कि वे किस प्रकार इझमां नदी के ऊपर रूस की प्राचीन लम्बी नौकाओं में गए थे। एक-एक नौका में सौ सौ आदमी थे और कैदी स्वयं नौकाओं को खे रहे थे। वे लोग आपको यह बता सकते हैं कि उन लोगों ने किस प्रकार उखता, उसा और पेचोरा की उत्तरी नदियों पर अपने आरम्भिक शिविरों में पहुंचने के लिए मछली पकाने की नौकाओं में यात्राएं कीं। कैदियों को बोरकुता में बड़ी अगन बोटों में पहुंचाया जाता था: बड़ी अगनबोटों का इस्तेमाल अदजेवावोम जाने के लिए किया जाता था, जहां वोरकुतलाग के लिए कैदियों को आगे भेजने की व्यवस्था थी और वहां से बेहद नजदीक एकदम बेड़े जैसी चपटी पेंदे वाली अगनबोट पर उन्हें उस्त-उसा की १० दिन की यात्रा करनी पड़ती थी। पूरी अगनबोट में जूओं की भरमार होती थी और सन्तरी लोग कैदियों को एक-एक करके ऊपर डेक पर जाने देते थे ताकि वे जुओं को अपने शरीर से झाड़ कर नीचे पानी में फेंक सकें। नौकाएं भी सीधे अपने गंतव्य पर नहीं पहुंचती थीं बल्कि कभी-कभी इन्हें कैदियों को चढ़ाने उतारने के लिए बीच में रोका जाता था अथवा सामान ढोने के लिए अथवा कुछ हिस्सा पैदल ही पार करना पड़ता था।

और इस इलाके में उनकी अपनी संक्रमण जेलें भी थीं—ये बल्लियों अथवा तम्बुओं से बनी होती थीं। उस्त-उसा, पोमोजदिनो, शचेल्या-युर में ऐसी जेलें थीं, जहां नियन्त्रण की अपनी व्यवस्थाएं थीं। जहां उनके अपने गारद के नियम थे और वास्तव में अपने विशेष आदेश-शब्द भी। जहां की गारद की अपनी विशेष चालाकियां भी थीं और कैदियों को यातनाएं देने के अपने विशेष तरीके भी। लेकिन यह पहले ही स्पष्ट हो चुका है कि इस विशिष्ट विचित्रता का वर्णन करना हमारा काम नहीं है, अतः हम शुरूआत भी नहीं करेंगे।

उत्तरी दवीना, ओब और मेनीसेई नदियों को इस बात की जानकारी है कि कब उन्होंने कैदियों को अगनबोटों में ढोना शुरू किया—"कुलकों" के सफाये के दौरान। ये नदियां बहती हुई सीधे उत्तर जाती थीं और इन पर चलने वाली अगनबोटों के तले बहुत चौड़े और विशाल थे—और यही एकमात्र तरीका था जिसके माध्यम से वे जीवन्त रूस के कैदियों के विशाल समुदायों को ढो-ढोकर मृत उत्तर में पहुंचा सकते थे। लोगों को इन अगनबोटों के नांद जैसे पेटों में फेंक दिया जाता था और ये वहां एक दूसरे के ऊपर विशाल ढेरों में पड़े रहते थे अथवा एक टोकरी में केकड़ों की तरह इधर-उधर घुटनों के बल घिसटते रहते थे। और ऊपर डेक पर, मानो किसी चट्टान के ऊपर तैनात हों, सन्तरी खड़े रहते थे। यदाकदा वे इन कैदियों के समुदाय को एकदम खुले आकाश के नीचे बिना किसी साये के ले जाते थे और कभी-कभी ऊपर एक बड़ा त्रिपाल लगा दिया जाता था— इसे न देखने के लिए अथवा बेहतर ढंग से निगरानी रखने के लिए, पर यह निश्चित है कि वर्षा से बचाने के लिए नहीं। ऐसी अगनबोट में यात्रा कैदियों के यातायात की व्यवस्था नहीं थी बल्कि किस्तों में मृत्यु की व्यवस्था की योजना थी। इसके अलावा वे इन लोगों को

शायद ही कुछ खाने को देते थे। इसके बाद इन लोगों ने उन्हें टुन्ड्रा में फेंक दिया—और वहां उन्हें कुछ भी खाने को नहीं दिया। वहां उन लोगों ने इन कैदियों को प्रकृति की गोद में अकेले में मर जाने के लिए छोड़ दिया।

उत्तरी दवीना (और वाइचेगदा पर भी) सन् १९४० तक अगनबोटों से कैदियों को ले जाने की व्यवस्था समाप्त नहीं हुई थी। ए० वाई० ओलेनएव को इसी तरीके से ले जाया गया था। इस अगनबोट के पेटों में कैदी लोग ठसाठस भरे पड़े थे और उन्हें केवल एक दिन इस स्थिति में खड़ा रहना पड़ा। ये लोग कांच के पात्रों में पेशाब करते और इस बर्तन को एक के बाद दूसरे कैदी को दे दिया जाता और इस प्रकार हाथों-हाथ बढ़ा कर इसे नीचे नदी के पानी में खाली कर दिया जाता। और इससे अधिक ठोस कोई भी वस्तु कैदियों की पैंटों में ही निकल जाती थी।

येनिसेई नदी पर अगनबोटों से कैदियों को ढोने का काम कई दशकों तक नियमित और स्थाई रूप से होता रहा। १९३० के बाद के वर्षों में क्रासनोयारस्क में नदी के तट पर छप्पर डाल दिए गए थे और साइबेरिया की भयंकर ठंडक में कैदी लोग आगे भेजे जाने की प्रतीक्षा में एक या दो दिन तक ठिठुरते हुए बैठे रहते थे।[४] येनीसेई नदी की कैदियों को ढोने की अगनबोटों के अंधियारे पेटे तीन डेकों की गहराई जितने गहरे थे। पेटे के भीतर जो प्रकाश आता था वह पेटे में नीचे सीढ़ी डालने के लिए बनाये गए रास्ते से ही आता था। गारद के सन्तरी डेक के ऊपर बने एक छोटे से केबिन में रहते थे और नदी के ऊपर भी नजर रखी जाती थी ताकि कोई कैदी तैर कर भाग न निकले। वे किसी भी हालत में नीचे पेटे में नहीं उतरते थे। चाहे वहां से कैसी भी करुण सहायता की पुकार क्यों न आती हो। और कैदियों को कभी भी ऊपर डेक पर स्वच्छ हवा के लिए नहीं ले जाया जाता था। सन् १९३७ और १९३८ तथा १९४४ और १९४५ में कैदियों को ढोने वाली इन अगनबोटों में पेटे के भीतर मौजूद कैदियों को किसी भी प्रकार की चिकित्सा सम्बन्धी सहायता नहीं दी जाती थी। कैदी लोग वहां दो पंक्तियों में लेटे रहते थे। एक पंक्ति के कैदियों के सिर अगनबोट की दीवार की तरफ होते थे और दूसरी पंक्ति के सिर इनके पांवों के पास। पाखाने के ढोल तक पहुंचने का एकमात्र रास्ता इनके ऊपर से चलकर जाने का ही था। पाखाने के ढोलों को सदा समय से खाली नहीं किया जाता था (जरा कल्पना कीजिए कि बिष्टा से भरे उस ढोल को अगनबोट के गहरे पेटे से हिलती डुलती सीढ़ी से होकर डेक के ऊपर पहुंचाना कितना कठिन कार्य होगा)। ये ढोल लबालब भर जाते और गन्दगी डेक के ऊपर गिर जाती। और बह बह कर पेटे के नीचे बैठे हुए कैदियों पर गिरती और वहां नीचे लोग लेटे होते थे। इन लोगों को छोटे-छोटे कलसों में खिचड़ी दी जाती थी। खिचड़ी बांटने वाले लोग भी कैदी होते थे। और वहां अनन्त अन्धकार में (आज संभवत: वहां बिजली हो), मिट्टी के तेल की लालटेन के प्रकाश में वे खिचड़ी बांटते थे। दुदिनका तक पहुचने में इस अगनबोट को लगभग एक महीने का समय लगता था। (हां, आजकल वे एक सप्ताह में यह दूरी तय कर सकते हैं)। यदा कदा यह भी होता था कि नदी के तल में अधिक रेत जमा हो जाने और ऐसी ही बाधाओं के कारण यह यात्रा का समय बढ़ जाता था और उनके पास इस बढ़ी हुई अवधि के लिए पर्याप्त भोजन नहीं होता था और इस स्थिति में वे कई दिन तक लगातार खाने के लिए कुछ भी नहीं देते थे। (और आगे चलकर इन दिनों की कमी भी पूरी नहीं की जाती थी)।

यहां आकर कोई सतर्क पाठक लेखक की सहायता के बिना ही यह कह सकता है कि पेटे के भीतर ऊपरी तख्तों पर चोर लेटते होंगे और वे जहाज की सीढ़ी के समीप भी रहते होंगे—दूसरे शब्दों में वे प्रकाश और हवा के समीप रहते होंगे। उन लोगों को वह सुविधा प्राप्त थी जो रोटी के राशन के वितरण के लिए आवश्यक थी और यदि यात्रा कठोर होती तो वे पूरा राशन हड़प जाने में भी न हिचकिचाते। (दूसरे शब्दों में वे पशुओं के रूप में जीवन बिताने वाले कैदियों का राशन मार लेते)। चोर लोग लम्बी यात्रा का समय ताश खेलने में बिताते और वे अपनी डेकों का भी निर्माण कर लेते।[1] ताश के खेल में बाजी पर लगाने के लिए वे सीधे कैदियों का माल उड़ाकर सामान जुटाते। ये लोग अगनबोट के एक विशेष हिस्से में लेटे हुए प्रत्येक कैदी की तलाशी लेते। कुछ समय तक ये चोर अपने लूट के माल को हारते जीतते रहते तथा फिर हारते और फिर जीतते इसके बाद यह माल ऊपर सन्तरियों के पास पहुंच जाता। हां, अब पाठक ने हर बात का अनुमान लगा लिया होगा : गारद के सन्तरी चोरों की मुट्ठी में थे :, गारद के सन्तरी चोरी के माल को या तो अपने लिए रख लेते थे अथवा बीच में घाटों पर बेच देते थे और इनके बदले चोरों को खाने की कुछ चीजें लाकर दे देते थे।

और चोरों के प्रतिरोध के बारे में आप क्या कहेंगे—यह होता था लेकिन शायद ही कभी। एक ऐसे मामले की जानकारी है। सन् १९५० में एक ऐसी ही अगनबोट पर जिसका मैंने विवरण दिया है। अन्तर केवल इतना ही था कि यह बड़ी थी—यह एक समुद्र में चलने योग्य एक जहाज ही था और यह व्लादिवोस्तोक से सखालिन जा रहा था—सात निहत्थे अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत दण्डित कैदियों ने चोरों का मुकाबला किया। जिनकी संख्या लगभग ८० थी (इनमें से कुछ के पास सदा की तरह चाकू भी थे) इन कुत्ते-चोरों ने व्लादिवोस्नोक में इस जहाज में सवार सब कैदियों की तलाशी संक्रमण केन्द्र ३-१० पर ले ली थी और उन्होंने बहुत सावधानी से जेल के कर्मचारियों से किसी भी तरह कम कार्यकुशलता से यह तलाशी नहीं ली थी। उन लोगों को छिपाने की हर जगह की जानकारी थी लेकिन किसी भी तलाशी में कभी भी हर चीज नहीं मिल सकती। इस बात को ध्यान में रखते हुए, जहाज के पेटे में पहुंचने के बाद उन लोगों ने बड़े विश्वासघातपूर्ण तरीके से घोषणा की : "जिस किसी के पास पैसा है वह मखोरका खरीद सकता है।" और मिशा ग्राचेव ने अपनी रूई की जाकेट के भीतर छिपे तीन रूबल बाहर निकाले। और कुत्ता-चोर वोलोदका तातारिन उसके ऊपर चिल्लाया : "तू गन्दे आदमी कहीं के, तू अपना टैक्स क्यों नहीं चुकाता है ?" और वह तीन रूबल छीनने के लिए उसकी ओर लपका। लेकिन मास्टर्स सारजेंट पावेल (जिसके नाम का अन्तिम भाग नहीं लिखा जा सका है) ने उसे धक्का दे दिया। वोलोदका तातारिन ने एक गुलेल से पावेल की आंखों पर निशाना लगाया और पावेल ने उसे नीचे पटक दिया। तुरन्त २०-० कुत्ते-चोर उसके ऊपर टूट पड़े। और ग्राचेव तथा पावेल के चारों ओर एक भूतपूर्व कैप्टेन वोलोद्या शपाकोव, सेरयेझा पोतापोव, एक भूतपूर्व सारजेंट वोलोद्या रेयोनोव एक और भूतपूर्व सारजेंट वोलोद्या त्रेत्यूकिन और वासा क्रावतसोव इकट्ठे हो गए। और फिर क्या हुआ ? और कुछ घूंसे चलने के बाद ही मामला खत्म हो गया। इसका कारण चोरों की सनातन और अत्यन्त कायरता ही रही होगी (जिसे वे नकली कठोरता और झूठी उद्धतता के पीछे छिपाये रखते थे); अथवा सन्तरी के पास ही खड़े होने की वजह से वे लोग रुक गए। (यह लड़ाई सीढ़ी लटकाने के रास्ते से एकदम नीचे हो रही

थी। अथवा यह भी हो सकता है कि वे किसी यात्रा में अपने आपको एक अधिक महत्व-पूर्ण सामाजिक कार्य के लिए बचाकर रखना चाहते हों—अलैक्सान्द्रोवस्क संक्रमण जेल का नियंत्रण अपने हाथ में ले लेने के लिए (जिसका विवरण चेखव ने दिया है) और सखालिन निर्माण योजना के लिए (इसका नियन्त्रण अपने हाथ में लेने का उद्देश्य निर्माण करना नहीं था) वे अपनी शक्ति संचित रखना चाहते थे और ईमानदार चोरों से पहले इस पर अधिकार जमा लेना चाहते थे। खैर वे पीछे हट गए और उन्होंने केवल यह धमकी भर दी: "जमीन पर उतरने के बाद हम तुम्हारा भूसा भरेंगे!" (यह लड़ाई कभी नहीं हुई और काई भी इन लड़कों का भूसा नहीं भर सका। और अलैक्सान्द्रोवस्क संक्रमण केन्द्र में इन दोगले चोरों को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा। इस पर ईमानदार चोरों का पहले से ही दृढ़ आधिपत्य कायम था।)

कोलिमा जाने वाले भाप के जहाजों में स्थिति अगनबोटों जैसी ही थी। अन्तर केवल इतना था कि सब कुछ और अधिक बड़े पैमाने पर था। यद्यपि यह बात विचित्र दिखाई पड़ेगी, उनमे से कुछ कैदी जिन्हें अत्यन्त पुराने जहाजों में कोलिमा भेजा गया था आज भी जीवित हैं। सन् १९३८ की वसन्त ऋतु में बर्फ तोड़ने वाले जहाज क्रासिन के नेतृत्व में यह स्टीमर कोलिमा गए थे। झुरमा, कुलु, नेवोस्त्रोई, नेप्रोस्त्रोई स्टीमरों पर ठंडे और गन्दे पेटों में तीन डेक थे और इन डेकों पर भी दो मंजिले तख्ते लगे हुए थे। वास्तव में बल्लियां लगा कर कैदियों के लेटने की व्यवस्था की गई थी। पेटों के भीतर पूर्ण अन्धकार नहीं था, मिट्टी के तेल की लालटेनें और लैम्प मौजूद थे। कैदियों को डेक के ऊपर ताजी हवा के सेवन और टहलने के लिए टोलियों में ले जाया जाता था। प्रत्येक स्टीमर में तीन से लेकर चार हजार कैदी थे। यात्रा में एक सप्ताह से अधिक का समय लगा और यह यात्रा समाप्त होने तक स्टीमरों पर व्लादिवोस्तोक में जो रोटी ली गई थी उस पर फफूंद जम गई और रोटी के राशन को प्रतिदिन २१ औंस से घटा कर १४ औंस कर दिया गया। उन्होंने कैदियों को मछली भी दी और जहां तक पीने के पानी का सवाल है...हां, इस बात पर प्रसन्न होने की कोई गुंजाइश नहीं है, क्योंकि पानी के सम्बन्ध में अस्थायी कठिनाइयां सामने थीं। यहां, नदी परिवहन के विपरीत, समुद्र में तेज हवाओं के कारण बड़ी-बड़ी लहरें उठती थीं, तूफान आते थे और उसके परिणामस्वरूप कैदियों को कै होने लगती थी। पस्त और दुर्बल लोग कै करने लगते थे और उनमें स्वयं अपनी कै से उठ कर अलग खड़े हो जाने की भी शक्ति शेष नहीं थी। और सारे फर्श कै की भयंकर मतली उत्पन्न करने वाली गन्दगी से भर गए थे।

यात्रा के दौरान कोई राजनीतिक घटना नहीं हुई। स्टीमरों को लापेरूज तट से होकर गुजरना पड़ता था जो जापानी द्वीपों के बहुत समीप था। इस क्षेत्र में पहुंचने पर निगरानी टावरों से मशीन गनें नदारद हो गईं और गारद के सन्तरियों ने नागरिक वस्त्र पहन लिए, स्टीमरों के पेटे से ऊपर आने के रास्ते बन्द कर दिए गए और डेक पर ऊपर पहुंचने की पाबंदी कर दी गई। जहाजों के कागजपत्रों के अनुसार जिन्हें व्लादिवोस्तोक में ही बड़ी दूरदर्शिता के साथ तैयार कर लिया गया था, वे लोग कैदियों को नहीं बल्कि स्वयं-सेवकों को कोलिमा में काम के लिए ले जा रहे थे। ईश्वर हमारी रक्षा करे। छोटे जापानी जहाज और नौकाएं बिना किसी संदेह के हमारे जहाजों के चारों ओर घूमते रहे। (और एक अन्य अवसर पर, सन् १९३८ में, झुरमा जहाज के साथ एक घटना घटी : जहाज में

मौजूद चोर पेटे से बाहर खिसक गए और जहाज के गोदाम में जा घुसे। इसे लूट लिया और इसमें आग लगा दी। जिस समय यह घटना घटी जहाज जापान के बहुत समीप था। गोदाम से तेज धुआं निकल रहा था और जापानियों ने आग बुझाने में मदद का प्रस्ताव किया लेकिन जहाज के कप्तान ने यह सहायता लेने से इनकार कर दिया और जहाज के पेटे से बाहर आने के रास्ते खोलने तक से इनकार कर दिया। जब जापान पीछे रह गया उन कैदियों के शवों को जो धुएं के कारण दम घुट कर मर गए थे, नीचे समुद्र में फेंक दिया गया। और आधा जला हुआ, आधा बर्बाद भोजन शिविर में भेज दिया गया ताकि इसे कैदियों को राशन के रूप में दिया जा सके।)[१]

मगादान से कुछ पहले जहाजों का कारवां बर्फ में फंस गया और बर्फ तोड़ने वाला जहाज क्रासिन भी कोई मद्द नहीं कर सका। (अभी तक समुद्री यात्रा का उचित समय नहीं आया था लेकिन वे मजदूरों को वहां पहुंचाने की जल्दबाजी में थे) २ मई को उन लोगों ने तट से कुछ दूर कैदियों को बर्फ पर उतार दिया। हाल में आए हुए कैदियों ने उस ऋतु के मगादान के हृदय को दहला देने वाले दृश्य को देखा : जीवन विहीन पहाड़ियां, जिन पर न तो पेड़ थे और न ही झाड़ियां, और न ही पक्षी, बस कुछ लकड़ी के मकान थे और "दालस्त्रोई" की दो मंजिली इमारत थी। इसके बावजूद, कैदियों के श्रम से सुधार का स्वांग रचते हुए, दूसरे शब्दों में, यह नाटक करते हुए कि वे लोग अपने साथ सोना उगलने वाले कोलिमा क्षेत्र के मार्ग को पाटने के लिए केवल हड्डियां नहीं लाए हैं बल्कि कुछ समय के लिए अस्थायी रूप से अलग थलग रखे जाने वाले सोवियत नागरिकों को लाए हैं, जो भविष्य में फिर रचनात्मक जीवन में वापस लौट जाएंगे और यह नाटक करते हुए दालस्त्रोई वाद्य वृन्द ने उनका स्वागत किया। वाद्य वृन्द ने सेनाओं के कूच की धुनें और अन्य संगीत धुनें बजाईं और पीड़ित अर्ध मृत लोग एक भूरी रेखा में मास्को के अपने सामान को किसी प्रकार अपने साथ घसीटते हुए आगे बढ़ने लगे। (इस विशाल कैदी कारवां में प्राय: सब लोग राजनीतिक कैदी ही थे, जिनका अभी तक एक भी चोर से मुकाबला नहीं हुआ था।) और ये कैदी अपने कन्धों पर अन्य अर्धमृत कैदियों को भी ढो रहे थे—ये आर्थराइटिस्ट के रोगी थे अथवा बिना टांग वाले कैदी। (और बिना टांग के लोगों को भी जेल की सजा मिलती थी।)

लेकिन मैं यहां देखता हूं कि मैं एक बार फिर अपनी बात की पुनरावृत्ति कर रहा हूं और इन बातों को लिखना ऊबा देने वाला होगा, और इन बातों को पढ़ना भी पाठक को ऊबा देगा, क्योंकि पाठक पहले से ही यह जानता है कि आगे क्या-क्या होगा : कैदियों को सैंकड़ों मील ट्रकों में ले जाया जाएगा और इसके बाद आगे दर्जनों मील पैदल चलाया जाएगा। और अपने गंतव्य पर पहुंचने पर वे नए शिविरों के स्थानों पर पहुंचेंगे और उन्हें तुरन्त काम पर भेज दिया जाएगा। और वे मछली और आटा खाएंगे, तथा इसे हलक से नीचे उतारने के लिए बर्फ की मदद लेंगे। और तम्बुओं में सोयेंगे।

हां, ऐसा ही था। लेकिन सबसे पहले अधिकारी लोग उन्हें मगादान में रखेंगे, यहां भी उन्हें आर्कटिक तम्बुओं में रखा जाएगा और यहां भी इन्हें जांचा परखा जाएगा—दूसरे शब्दों में, इनके नग्न शरीरों की जांच से यह निर्धारित किया जाएगा कि ये काम करने के योग्य हैं अथवा नहीं और उनके नितम्बों की दशा से इस बात का निर्धारण होता था। (और उन सबको काम के योग्य घोषित कर दिया जाएगा)। इसके अलावा, सचमुच

इन लोगों को किसी स्नान घर में ले जाया जाएगा और स्नान घर की पेटी में उन्हें अपने चमड़े के कोट, अपने रोमानोव भेड़ की खाल के कोट, ऊनी स्वेटर, बढ़िया ऊन के सूट, फैल्ट के चौगे, चमड़े के बूट, फैल्ट के बूट छोड़कर नहाने के लिए जाने को कहा जाएगा। (आखिरकार इस बार कैदियों में अशिक्षित किसान नहीं थे, बल्कि ये पार्टी के प्रमुख कार्यकर्ता थे, जिनमें समाचार पत्रों के सम्पादक, ट्रस्टों और कारखानों के निदेशक, प्रान्तीय पार्टी समितियों के उत्तरदायी अधिकारी, राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर, और, १९३० के बाद के आरम्भिक वर्षों में, उन सबको यह पता चल चुका था कि बढ़िया माल क्या होता है।)' और इन वस्त्रों आदि की हिफाजत कौन करेगा ?" नवागुन्तकों ने शंका से भर कर पूछा। "ओह, जल्दी करो, किसे तुम्हारी चीजों की जरूरत है ?" स्नान घर में काम करने वाले कर्मचारियों ने बहुत अपमान का अनुभव करते हुए कहा। "नहाने चले जाओ और कोई चिन्ता मत करो।" और वे लोग नहाने चले गए। और बाहर निकलने का रास्ता दूसरे दरवाजे से था और इससे बाहर निकलने पर उन्हें काली सूती बिर्जिस, मामूली कमीजें, शिविर के रूई भरे बिना जेब वाले कोट, और सूअर की खाल के जूते दिए गए। (ओह, यह कोई मामूली बात नहीं थी ! यह आप के भूतपूर्व जीवन की समाप्ति थी। —यह आपके खिताबों, आपकी सामाजिक स्थित और आपके अहंकार से अलविदा थी!) "हमारी चीजें कहां हैं ?" वे लोग चिल्लाए। "तुम अपनी चीजें अपने घर छोड़ आए हो !" कोई मुखिया अथवा अन्य अफसर उनके ऊपर चिल्लाया। "शिविर में तुम्हारा कुछ भी नहीं है। यहां शिविर में साम्यवाद है ! आगे बढ़ो, नेता !"

और यदि यहां "साम्यवाद" था तो वे इस बात पर आपत्ति उठा सकते थे ? उन लोगों ने अपना पूरा जीवन इसी बात पर तो लगाया था।



कैदियों को घोड़ा गाड़ियों में और पैदल भी ले जाया जाता है। क्या आपको स्मरण है कि तोल्स्तोए के "पुनर्जन्म" में उन लोगों ने किस प्रकार कैदियों को जेल से रेलवे स्टेशन तक एक धूप वाले दिन पैदल पहुंचाया था ? ठीक है, मीनूसिंस्क में १९४—में, जब कैदी लोग पूरे एक वर्ष तक स्वच्छ हवा में नहीं ले जाए गए थे, जब वे यह भूल चुके थे कि किस प्रकार चला जाता है, सांस ली जाती है और प्रकाश की ओर देखा जाता है। और तब उन लोगों ने उन्हें बाहर निकाला, उन्हें पंक्तिबद्ध खड़ा किया और १५ मील पैदल चला कर अबाकान ले गए। लगभग एक दर्जन कैदी रास्ते में ही मर गए। और कोई भी इनके बारे में एक महान् उपन्यास नहीं लिखेगा, उपन्यास का एक अध्याय भी इन्हें प्राप्त नहीं होगा : यदि आप एक कब्रीस्तान में रहते हैं तो आप प्रत्येक मृतक के लिए नहीं रो सकते।

कैदियों को पैदल ले जाने की व्यवस्था—यह व्यवस्था कैदियों को रेल से, स्तोलिपिन रेल डिब्बों से और जानवरों के लिए प्रयुक्त लाल माल डिब्बों से ले जाने की व्यवस्था की जाती थी। हमारे युग में इसका इस्तेमाल लगातार कम किया जा रहा है और केवल उन्हीं स्थानों पर यह होता है, जहां गाड़ियां नहीं जा सकतीं। इस प्रकार लादोगा झील के एक क्षेत्रफल में, नाजियों के घेरे में फसे लेनिनग्राद से कैदियों को लाल माल डिब्बों में लादने के लिए भेजा गया। इन लाल डिब्बों का नाम "लाल गाय" रख दिया गया था।

वे लोग स्त्रियों को जर्मन युद्धबंदियों के साथ ले गए और हमारे आदमियों को उनसे दूर रखने के लिए संगीनों का इस्तेमाल किया ताकि वे उनकी रोटी न छीन लें। जो कैदी रास्ते में ही गिर जाते उन्हें तुरन्त उठा कर जिन्दा अथवा मृत अवस्था में एक ट्रक में फेंक दिया जाता और इसके बाद उनके जूते उतार लिए जाते। और १९३० के बाद के वर्षों में वे लोग प्रत्येक दिन कोतलास संक्रमण जेल से उस्त-बीम तक (लगभग १८५ मील) और कभी-कभी चिब्यू तक (३०० मील से अधिक) सौ कैदियों के काफिले को पैदल ले जाते। एक बार सन् १९३८ में उन्होंने इसी प्रकार स्त्री कैदियों को भी पैदल भेजा। इन कैदियों को हर रोज १५ मील की दूरी तय करनी पड़ती थी। गारद एक या दो कुत्तों के सहित साथ चलती थी और जो कैदी पिछड़ जाते थे उन्हें राइफलों के कुन्दों की मार से आगे बढ़ने को प्रेरित किया जाता था। हां, यह सच है कि कैदियों का सामान और भोजन पकाने के बर्तन और खाने की चीजें पीछे-पीछे गाड़ियों में लदी चलती थीं और कैदियों का यह काफिला पिछली शताब्दी के प्राचीन कैदी काफिलों का स्मरण दिलाता था। इसके अलावा कैदियों के काफिले के लिए रास्ते में कुछ झोंपड़ियां भी होती थीं—ये समाप्त कर डाले गए कुलकों के बर्बाद घर थे, जिनकी खिड़कियां टूटी हुई थीं और किवाड़ों को उखाड़ लिया गया था। कोतलास संक्रमण जेल के हिसाब किताब दफ्तर ने इस सैद्धांतिक गणना के आधार पर राशन दिया था कि यात्रा में कितना समय लगेगा बशर्ते रास्ते में कोई गड़-बड़ नहीं होती। पर इस गणना में एक फालतू दिन के लिए भी राशन नहीं दिया गया था। (यह हमारी हिसाब-किताब प्रणाली का बुनियादी सिद्धान्त है।) जब कभी रास्ते में विलम्ब होता, तो उन्हें उसी राशन में काम चलाना पड़ता और वे लोग कैदियों को घटिया आटे का घोल देते, जिसमें नमक तक न होता और कभी-कभी कैदियों को कुछ भी नहीं दिया जाता। इस दृष्टि से वे कैदियों के प्राचीन काफिलों से भिन्न थे।

सन् १९४० में ओलेनएव का कैदी काफिला, अगनबोट से उतरने के बाद, जंगल से होकर पैदल ही आगे चला (कनियाज-पोगोस्त से चिब्यू तक) और उन्हें कुछ भी खाने को नहीं दिया गया। उन लोगों ने गन्दे चौबच्चों का पानी पिया और उन्हें बहुत जल्दी पेचिश हो गई। कुछ कैदी कमजोरी के कारण रास्ते में ही गिर गए और कुत्तों ने नीचे गिरे हुए लोगों के कपड़े तार-तार कर डाले। इझमा में कैदियों ने अपनी पतलूनों का जाल के रूप में इस्तेमाल कर मछलियां पकड़ीं और उन्हें जीवित ही खा गए। (और एक चरागाह में उन्हें बताया गया : इसी स्थान पर तुम लोग कोतलास से वोरकुता तक रेल पटरी बिछाने का काम शुरू करोगे।)

और हमारे यूरोपीय उत्तर के अन्य इलाकों में उस समय तक कैदियों को पैदल लाने ले जाने का काम जारी रहा। जब तक इन इलाकों में रेल पटरियां नहीं बिछ गईं और इन पर जानवरों को ढोने में प्रयुक्त लाल माल डिब्बे बाद के कैदियों को लाने में नहीं लगाए गए।

ऐसे इलाकों में जहां कैदियों के पैदल काफिले अक्सर और बड़ी संख्या में चलते थे वहां एक विशेष तकनीक विकसित की गई। जब कोई पैदल काफिला कनियाझ-पोगोस्त से वेसलियाना तक जंगल से होकर जा रहा हो, और अचानक कोई कैदी रास्ते में गिर पड़े और उसमें आगे चलने की शक्ति न हो तो उसके साथ क्या किया जाना चाहिए ? जरा विवेक से काम लीजिए और इसके बारे में सोचिए : क्या ? आप पूरे काफिले को नहीं

रोकेंगे। और आप पीछे गिरने वाले प्रत्येक कैदी के लिए एक सैनिक नहीं छोड़ेंगे। कैदियों की संख्या बहुत बड़ी होती है और सैनिक गिने चुने और इसका क्या अर्थ होता है? सैनिक कुछ समय नीचे गिरे हुए कैदी के पास रहता है और फिर शेष काफिले को पकड़ लेने के लिए कैदी को जल्दी-जल्दी चलने के लिए प्रेरित करता है, वह भी अकेले।

काफी समय तक कारावास से इस्पास्क तक नियमित रूप से पैदल काफिले चलते रहे। यह दूरी केवल २०-२५ मील थी लेकिन इस रास्ते को एक ही दिन में तय करना पड़ता था और एक काफिले में १,००० कैदी होते थे और उनमें बहुत से बहुत कमजोर होते थे। ऐसे मामलों में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बहुत से कमजोर कैदी रास्ते में ही गिर जायेंगे अथवा मरणासन्न व्यक्तियों की उदासीनता और लापरवाही के द्वारा काफिले से पिछड़ जाएंगे—आप उन पर गोली चला सकते हैं पर फिर भी वे आगे नहीं बढ़ सकते। वे लोग मृत्यु से भयभीत नहीं हैं लेकिन मोटे डंडों के बारे में आप क्या कहेंगे। मोटे डंडों की जबर्दस्त और अंधाधुंध मार? वे लोग इन मोटे डंडों से भयभीत हैं और वे लोग चलते रहेंगे। यह आजमाया हुआ तरीका है—यह इसी तरह काम करता है। तो इन पैदल काफिलों के मामले में केवल यही होता कि ५० गज के फासले पर मशीनगनधारी सैनिकों की पंक्ति चलती रहे बल्कि इसके भीतर मोटे डंडों से लैस सैनिकों की कतार भी चलती है। जो कैदी पिछड़ जाते हैं उन पर डंडे बरसते हैं। (जैसाकि वास्तव में, कामरेड स्तालिन ने भविष्यवाणी की थी।) इन्हें लगातार पीटा जाता है और इसके बाद जब उन में चलने की जरा भी शक्ति नहीं रह जाती फिर भी ये लोग किसी न किसी तरह आगे बढ़ते रहते हैं। और बहुत से कैदी तो बड़े चमत्कारी ढंग से अपने गंतव्य पर भी पहुंच जाते हैं। वे यह नहीं जानते कि यह मोटे डंडों से परख का तरीका है और जो लोग नीचे गिर जाते हैं और डंडों की मार के बावजूद उठ कर नहीं चल पाते, उन्हें पीछे चलने वाली घोड़ा गाड़ियों में उठा कर डाल दिया जाता है। आपके लिए यह संगठन सम्बन्धी अनुभव है? (और कोई यह पूछ सकता है: तो उन लोगों ने ऐसे सब कैदियों को पहले ही घोड़ा गाड़ियों में सवार क्यों नहीं कर दिया? लेकिन पर्याप्त घोड़ा गाड़ियां कहां से आयेंगी? और घोड़े भी? आखिरकार, हमारे पास ट्रैक्टर हैं। आजकल घोड़ों को दिए जाने वाले दाने का क्या दाम है?) ऐसे काफिले १९४८-१९५० में भी काफी बड़ी संख्या में जारी थे।

और १९२० के बाद के वर्षों में तो पैदल काफिले कैदियों के शिविरों में पहुंचाने का बुनियादी तरीका था। उस समय मैं एक छोटा लड़का था, लेकिन मुझे इस बात का अच्छी तरह से स्मरण है कि वे लोग उन्हें किस प्रकार रोस्तोव-ओन-दि-दोन की सड़कों पर बिना किसी चिन्ता के खदेड़ते हुए ले जाते थे। और यह प्रसिद्ध हुक्म बार-बार दिया जाता था: "···हम बिना किसी चेतावनी के गोली चलायेंगे!" उन दिनों इस हुक्म की ध्वनि भिन्न होती थी क्योंकि उस समय टैक्नालॉजी का स्तर भिन्न था। आखिरकार, गारद के पास अक्सर केवल तलवार ही होती थी। वे लोग इस प्रकार हुक्म देते थे: "लाईन से एक कदम इधर या उधर हटने पर गारद के सन्तरी गोली चलायेंगे और वार करेंगे!" यह ध्वनि बड़ी प्रभावशाली होती थी; "गोली चलाएंगे और वार करेंगे!" आप यह कल्पना कर सकते थे कि वे किस प्रकार तलवार के वार से पीछे से आपका सिर काट लेंगे।

हां, और फरवरी १९३६ तक में, वे लोग वोल्गा के दूसरे तट के लम्बी दाढ़ी वाले वृद्ध पुरुषों के एक काफिले को निझनी नोवगोरोद से पैदल ले जा रहे थे। इन वृद्धों ने घर

की ऊन के कोट पहन रखे थे और इनके पांवों पर उस इलाके की पुरानी सैंडिल थीं जिन के ऊपर रूस के किसानों का पांव पर लपेटने का कपड़ा ओनूची लिपटा हुआ था। "पुराना रूस अन्तर्धान हो रहा है।" और तभी अचानक उनके सामने सड़क पर, तीन मोटर गाड़ियां आ पहुंची। इनमें से एक मोटर गाड़ी में केन्द्रीय कार्यकारिणी का अध्यक्ष, सोवियत संघ का राष्ट्रपति, कालिनिन सवार था। कैदियों का काफिला रुक गया। कालिनिन आगे बढ़ता रहा, उसे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

पाठक, अपनी आंखें बन्द कर लो। क्या तुम्हें पहियों की कर्णबेधी आवाज़ सुनाई पड़ती है? यह स्तोलिपिन रेल डिब्बे हैं, जो लगातार दौड़े जा रहे हैं। ये लाल गाय हैं, जो तेजी से रेल पटरियों पर आगे लुढ़क रही हैं। प्रतिदिन, प्रत्येक मिनट। और वर्ष के प्रत्येक दिन भी। और आप पानी की कल-कल ध्वनि सुन सकते हैं—ये कैदियों की अगन-बोट हैं, जो आगे बढ़ रही हैं। और ब्लैक मारिया गाड़ियों के इंजन तेज गरजना कर रहे हैं। वे लगातार किसी न किसी को गिरफ्तार करते जा रहे हैं। उसे कहीं न कहीं ठूंसते जा रहे हैं उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाते जा रहे हैं और आपको यह कैसी गूंज सुनाई पड़ रही है। संक्रमण जेलों की अकल्पनीय भीड़ से भरी कोठरियां। और चीखें? उन लोगों की शिकायतें जिन्हें लूट लिया गया, जिनके साथ बलात्कार किया गया, और पीटते-पीटते प्रायः मार ही डाला गया।

हमने कैदियों को शिविरों में पहुंचाने के सब तरीकों पर विचार किया है, इनकी समीक्षा की है और हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि ये सब...अधिक बुरे हैं। हमने संक्रमण जेलों की जांच की है, लेकिन हमें ऐसी एक भी जेल नहीं मिली, जिसे अच्छा कहा जा सके। और मनुष्य की यह अन्तिम आशा कि आगे कुछ बेहतर स्थिति होगी, कि शिविर में बेहतर हाल होगा, झूठी आशा है।

शिविर में तो स्थिति ..और भी बुरी होगी।

अध्याय ४



द्वीप द्वीप की यात्रा

और कैदियों को द्वीपसमूह के एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक बिल्कुल अकेले भी लाया ले जाया जाता है। इसे विशेष गारद कहते हैं। यह यातायात का सर्वाधिक मुक्त तरीका है। इस तरीके और स्वतंत्र यात्रा के बीच अन्तर कर पाना बड़ा मुश्किल है। पर केवल कुछ हा कैदियों को इस तरीके से लाया ले जाया जाता है। अपने कैदी के जीवन में स्वयं मैंने ऐसा तीन यात्राएं कीं।

विशेष गारद की नियुक्ति उच्चाधिकारियों के आदेश पर होती है। यह विशेष रूप से किसी कैदी को बुलाने से भिन्न होती है यद्यपि इस प्रकार कैदी को बुलाये जाने पर भी कोई बड़ा अफसर ही हस्ताक्षर करता है। विशेष रूप से बुलाया गया कैदी सामान्य तथा कैदियों की सामान्य गाड़ियों में यात्रा करता है और उसे भी अपनी यात्रा के दारान कुछ आश्चर्यजनक घटनाओं का सामना करना पड़ता है (जिनके परिणाम और भी असाधारण होते हैं।) उदाहरण के लिए एन्स बर्नशटीन उत्तर से लोवर वोल्गा तक विशेष बुलाहट पर यात्रा कर रहा था। उसे एक कृषि प्रतिनिधिमण्डल में शामिल होने के लिए बुलाया गया था। मैं पहले जिन समस्त भयंकर भीड़ की परिस्थितियों और अपमानजनक परिस्थितियों का जिक्र कर चुका हूं उसे उन सबका सामना करना पड़ा, कुत्ते उसके ऊपर गुर्राये, संगीनों से वह घिरा रहा और उसे यह धमकी भी सुननी पड़ी "लाईन से एक कदम बाहर होने पर..." और फिर अचानक उसे जेनजेवात्का नामक एक छोटे से स्टेशन पर उतार दिया गया और यहां उसकी मुलाकात एक एकाकी, शान्त, और निरस्त्र जेलर से हुई। जेलर ने जमुहाई ली : "ठीक है, आज रात का समय आप मेरे घर पर बितायेंगे और सुबह होने तक आप शहर में जहां चाहें जा सकते हैं। कल मैं आपको शिविर में ले जाऊंगा।" और एन्स सचमुच शहर में गया। क्या आप यह अनुमान लगा सकते हैं कि एक ऐसे व्यक्ति के लिए शहर में जाने का क्या अर्थ होता है, जिसे १० वर्ष की सजा सुनाई गई हो, जिसने असंख्यों बार अपने जीवन को अलविदा कह दी हो, जो उसी दिन सुबह एक स्तोलिपिन रेल डिब्बे में था और अगले दिन शिविर में पहुंच जाएगा। और वह तुरन्त बाहर निकल पड़ा और स्टेशन मास्टर के बगीचे में मुर्गी के बच्चों को इधर जमीन खोदते हुए देखने लगा और उस किसान स्त्री को भी जो अपना अनबिका मक्खन और तरबूज लेकर स्टेशन से रवाना होने की तैयारी कर रही थी, वह एक और तीन, चार और पांच कदम

बढ़ा और किसी ने भी उसे चिल्ला कर "रुक जाओ !" का हुक्म नहीं दिया। अविश्वास भरी अंगुलियों से उसने बबूल की पत्तियों को छुआ और उसके आंसू बह चले।

और विशेष गारद शुरू से अन्त तक ठीक एक ऐसा ही चमत्कार होती है। इस बार आपको कैदियों की सामान्य गाड़ियां देखने को नहीं मिलेंगी। आपको अपने हाथ पीठ के पीछे बांध कर नहीं चलना होगा। आपको अपने सब कपड़े नहीं उतारने होंगे, न ही जमीन पर उकडू बैठना होगा और आपकी तलाशी भी नहीं ली जाएगी। आपकी गारद के सन्तरी आपके पास मित्रतापूर्ण तरीके से आते हैं और आपको विनम्रतापूर्वक संबोधित तक करते हैं। एक सामान्य सतर्कता के रूप में वे आपको यह चेतावनी अवश्य देते हैं कि भागने की कोशिश होने पर हम सदा की तरह गोली चलाते हैं। हमारी पिस्तौलें भरी हुई हैं और वे हमारी जेबों में रखी हैं। पर हमें सीधे सादे तरीके से चलना चाहिए। स्वाभाविक रूप से आचरण करो। किसी भी व्यक्ति को यह आभास न होने दो कि तुम एक कैदी हो। (और मैं आपसे विशेष रूप से यह ध्यान देने का अनुरोध करता हूं कि यहां भी, सदा की तरह, व्यक्ति के हित, राज्य के हितों से पूरी तरह मेल खाते हैं।) उस दिन मेरा शिविर का जीवन आमूल रूप से बदल गया जब मैं बढ़इयों की ब्रिगेड में अत्यन्त निराशा से कतार में जा खड़ा हुआ। मेरी अंगुलियां एकदम अकड़ गई थीं (औजारों को निरन्तर पकड़ रहने के कारण ये इस तरह अकड़ गई थीं कि इन्हें सीधा कर पाना मेरे लिए सम्भव नहीं हो रहा था।) और तभी काम देने वाला सुपरवाइजर मुझे एक ओर ले गया और अप्रत्याशित सम्मान के साथ मुझसे बोला : "क्या तुम्हें मालूम है कि आन्तरिक मामलों के मन्त्रालय के आदेश पर...?"

मैं स्तब्ध रह गया। कतार में खड़े कैदी अपने स्थानों से हट गए और शिविर के अहाते के ट्रस्टी मुझे चारों ओर से घेर कर खड़े हो गए। उन में से कुछ बोले : 'वे तुम्हें एक और सजा सुनाने जा रहे हैं।" कुछ दूसरों की राय थी : 'तुम्हें रिहा कर दिया जाएगा।" लेकिन प्रत्येक व्यक्ति एक बात पर सहमत था। आंतरिक मामलों के मन्त्री क्रुगलोव के शिकंजे से बच निकलना सम्भव नहीं है। और मैं भी एक नई सजा और रिहाई के बीच जूझता रहा। मैं यह बात पूरी तरह से भूल गया था कि लगभग छह महीने पहले कोई आदमी हमारे शिविर में आया था और उसने गुलाग के रजिस्ट्रेशन कार्ड वितरित किए थे। (युद्ध के बाद उन लोगों ने पास के सब शिविरों में यह रजिस्ट्रेशन शुरू किया था। लेकिन यह बात असम्भावित दिखाई पड़ती थी कि यह काम कभी पूरा नहीं हो सकेगा।) इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न था : "पेशा अथवा व्यवसाय।" और कैदी लोग अपनी कीमत बढ़ाने के लिए गुलाग के लिए सर्वाधिक मूल्यवान पेशों का उल्लेख करते थे। "नाई," "दर्जी," "स्टोरकीपर," "नानबाई"। जहां तक मेरा सवाल था, मैं यह पढ़ कर गुर्राया और मैंने इस स्थान पर "परमाणु भौतिकीविद्" लिख दिया। मैं अपने जीवन में कभी भी परमाणु भौतिकीविद् नहीं रहा और मुझे इस विषय के बारे में जो कुछ जानकारी थी वह युद्ध से पहले विश्वविद्यालय में सुनी सुनाई बातों तक सीमित थी—बस मैं इतना जानता था कि परमाणु कणों के क्या नाम होते हैं और इनकी कितनी परिधि होती है। और मैंने इस कार्ड पर "परमाणु भौतिकीविद्" लिखने का निश्चय कर लिया था। यह १९४६ की बात थी। परमाणु बम की बेहद जरूरत थी। लेकिन मैं गुलाग के रजिस्ट्रेशन कार्ड को कोई महत्व नहीं देता था। और वास्तव में, मैं इसके बारे में भूल ही गया

था।

शिविर में आपको एक अस्पष्ट, अपुष्ट किस्सा सुनने को मिलता था, जिसकी पुष्टि कोई भी व्यक्ति नहीं कर पाया था कि द्वीपसमूह में कहीं कुछ छोटे-छोटे स्वर्गिक द्वीप हैं। किसी भी कैदी ने इन स्वर्ग समान द्वीपों को नहीं देखा था। कोई भी वहां नहीं गया था। यदि कोई गया था तो वह इनके बारे में मौन ही रहता था और उनका रहस्य किसी को नहीं बताता था। वे लोग कहते थे कि इन द्वीपों पर दूध और शहद की नदियां बहती थीं, भोजन में सबसे नगण्य वस्तु अंडे और क्रीम होती थी; प्रत्येक वस्तु साफ सुथरी होती थी और वहां सर्दी में कड़कड़ाना नहीं पड़ता था और वहां जो एकमात्र काम दिया जाता था वह दिमागी था और यह पूरा काम अत्यन्त-अत्यन्त गोपनीय था।

और इस प्रकार मैं स्वयं भी ऐसे ही स्वर्गिक द्वीप पर जा पहुंचा (कैदियों की भाषा में इन द्वीपों को "शराशकास" कहा जाता है) और मैंने अपनी कैद की आधी अवधि वहीं बिताई। इन्हीं द्वीपों के कारण आज मैं जीवित हूं क्योंकि मैं शिविरों में अपनी सजा की अवधि को जीवित रह कर नहीं काट सकता था। और इन्हीं द्वीपों के कारण आज मैं यह पुस्तक लिखने की स्थिति में हूं। यद्यपि मैंने इस पुस्तक में उन्हें कोई स्थान नहीं दिया है। (मैं इनके बारे में पहले ही एक उपन्यास लिख चुका हूं।) और इन द्वीपों में, एक द्वीप से दूसरे द्वीप की ओर दूसरे द्वीप की तीसरे द्वीप की यात्रा मैंने विशेष गारद के साथ की। दो जेल कर्मचारी और मैं।

यदि जो लोग मर जाते हैं उनकी आत्मा यदा कदा हमारे बीच मंडराती है, हमें देखती है. हमारी मामूली मामूली चिन्ताओं को आसानी से भांप लेती है, और हम उस आत्मा को देख नहीं पाते, उसकी अपार्थिव मौजूदगी को भांप नहीं पाते तो यही स्थिति विशेष गारद के साथ यात्रा की कही जा सकती है।

आपको स्वतंत्रता में छोड़ दिया जाता है, और आप स्टेशन के प्रतीक्षालय में दूसरे लोगों के पास बैठते हैं। भीड़ में दूसरे लोगों से कन्धे से कन्धा भिड़ाते हैं। आप ऐसे ही स्टेशन पर लगी घोषणाओं को पढ़ते हैं यद्यपि आपके लिए उनका कोई महत्व नहीं है। आप यात्रियों के लिए रखी हुई पुरानी बेंचों पर बैठते हैं तथा आप विचित्र और महत्वहीन वार्तालाप सुनते हैं: किसी ऐसे पति के बारे में जो अपनी पत्नी को पीटता है अथवा जो अपनी पत्नी को छोड़ कर चला गया है, किसी ऐसी सास के बारे में, जिसकी किसी कारण से अपनी बहू से पटरी नहीं बैठती :, कि सामूहिक इमारतों में पड़ोसी लोग बरामदे में लगी बिजली के पलगों का उपयोग व्यक्तिगत कामों में करते हैं, और वे किस प्रकार अपने पांव तक नहीं पोंछते; और किस प्रकार कोई व्यक्ति अपने दफ्तर में किसी दूसरे व्यक्ति के मार्ग में बाधक बन रहा है और किस प्रकार किसी व्यक्ति को एक अच्छा पद देने का प्रस्ताव किया गया है लेकिन वह यह निश्चय नहीं कर पा रहा है कि वह इसे स्वीकार करे अथवा नहीं - वह इस दूसरे स्थान पर अपने घर का सारा सामान उठा कर कैसे जा सकता है, क्या यह काम इतना आसान है? आप ये सब बातें सुनते हैं और आपकी रीढ़ की हड्डी पर अस्वीकार के रोंगटे खड़े हो जाते हैं: आपके समक्ष समस्त ब्रह्माण्ड में वस्तुओं का सच्चा पैमाना कितना अधिक स्पष्ट हो चुका है! समस्त कमजोरियों और समस्त उद्वेगों का पैमाना! और इन पापियों को यह समझने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है। वहां पर यदि कोई जीवित है, सच्चे अर्थों में जीवित है तो वह आपका अपार्थिव अस्तित्व ही है और ये

अन्य सब लोग यह सोचने की भ्रांति कर रहे हैं कि वे जीवित हैं।

और एक ऐसी खाई आपको उनसे अलग करती है, जिसे कभी भी पाटा नहीं जा सकता! आप चिल्ला कर उन्हें कुछ नहीं कह सकते, उनके ऊपर आंसू नहीं बहा सकते। उनका कन्धा नहीं हिला सकते। आखिरकार आप शरीरविहीन आत्मा भर हैं, आप प्रेत हैं, और वे पार्थिव शरीर वाले लोग हैं।

और आप उन्हें ये बातें कैसे समझा सकते हैं? प्रेरणा के द्वारा? किसी इलहाम के द्वारा? एक स्वप्न के द्वारा? भाइयों! लोगों! आपको यह जीवन क्यों प्राप्त हुआ है? मध्य रात्रि के गहन और श्रवण शक्ति विहीन मौन में मौत की कोठरियों के दरवाजे खोले जा रहे हैं—और महान् आत्माओं वाले लोगों को घसीट कर गोली से उड़ाने के लिए ले जाया जा रहा है। पूरे देश की रेलपटरियों पर इस क्षण भी हां, इस क्षण भी, वे लोग जिन्हें नमकीन हेरिंग मछली खाने को दी गई है, अपने सूखे होंठों को अपनी सूजी हुई जीभों से चाट रहे हैं। वे लोग अपने पांव पसारने के सुख के सपने देखते हैं और उस राहत का स्वप्न भी, जो मनुष्य को शौचालय जाने के बाद प्राप्त होती है। ओरोतूकान में केवल गर्मियों में ही और वह भी केवल तीन फुट की गहराई तक, जमीन का ठंडक से जमना समाप्त होता है—और केवल तभी वे लोग उन आदमियों को दफना सकते हैं जिनकी मृत्यु सर्दियों में हुई। और आपको नीले आकाश और गर्म सूर्य के नीचे अपने जीवन को व्यवस्थित करने का अधिकार प्राप्त है, आप पानी पी सकते हैं, अपने पांव पसार सकते हैं, अपनी इच्छा के अनुसार जहां चाहें गारद के बिना यात्रा कर सकते हैं। तो आप बिना धुले पुछे पांवों की चिन्ता क्यों करते हैं? और यह किसी सास का क्या मामला है? जीवन की प्रमुख वस्तु, इसकी समस्त पहेलियों के बारे में आप क्या कहेंगे? यदि आप चाहें, तो मैं तत्काल उन्हें आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकता हूं। भ्रान्ति के पीछे मन दौड़ो—सम्पत्ति और पद भ्रांति भर है: एक के बाद एक दशक तक आप कठोर परिश्रम से जो प्राप्त करते हैं उसे एक ही रात में समाप्त कर दिया जाता है। जीवन के ऊपर एक स्थिर वरीयता को लेकर जीओ—दुर्भाग्य से भयभीत न होओ, और सुख की उत्कट कामना न करो; आखिरकार ये सब चीजें समान हैं: कटुता सदा कायम नहीं रहती, और मृदुता कभी भी प्याले को लबालब नहीं भरती। यह पर्याप्त है कि आप ठंडक में एकदम ठिठुर कर जम न जाएं और भूख और प्यास आपकी आंतों को न कचोटे। यदि आपकी पीठ टूटी नहीं है, यदि आपके पांव चलने की क्षमता रखते हैं, यदि आपकी दोनों बाहें मुड़ सकती हैं, यदि आप की दोनों आंखें देख सकती हैं और यदि आपके दोनों कान सुन सकते हैं तो आपको किसी से ईर्ष्या करने की क्या आवश्यकता है और क्यों? दूसरे लोगों के प्रति ईर्ष्या हमें अधिकांशतया चाट जाती है। अपनी दृष्टि को निर्मल करो और अपने हृदय को शुद्ध बनाओ—और संसार में सबसे अधिक महत्वपूर्ण लोगों को लो, जो आपसे प्यार करते हैं और आपके भले की कामना करते हैं। उन्हें दुख न पहुंचाओ, उन्हें बुरा भला न कहो, और क्रोध में कभी भी उनसे अलग न होओ; आखिरकार आपको क्या मालूम: अपनी गिरफ्तारी से पहले शायद यह आपका अन्तिम कार्य हो, और इसी रूप में आपकी स्मृति उनके मन मस्तिष्क पर अंकित रहेगी!

लेकिन गारद के सन्तरी अपनी जेबों में पड़ी पिस्तौलों के काले दस्तों को अपने हाथ से थपथपाते हैं! और हम लोग वहां बैठे रहते हैं, तीनों एक कतार में बैठे रहते हैं,

गम्भीर लोग, शान्त मित्र।

मैं अपने माथे का पसीना पोंछता हूं। मैं अपनी आंखें बन्द कर लेता हूं और फिर इन्हें खोलता हूं। और मैं एक बार यह सपना देखता हूं—सन्तरियों के बिना लोगों की एक भीड़। मैं स्पष्ट रूप से स्मरण करता हूं कि कल रात का समय मैंने जेल की कोठरी में बिताया था और कल सुबह जेल की कोठरी में होऊंगा। लेकिन कोई कंडक्टर मेरे टिकट की जांच के लिए आता है: "आपका टिकट!" "मेरे मित्र के पास मेरा टिकट है!"

डिब्बे पूरी तरह भरे हैं। (हां, स्वतंत्र लोगों की शब्दावली में "भरे हैं"—कोई भी बैंचों के नीचे नहीं लेटा है और कोई भी बैंचों के बीच के फर्श पर नहीं बैठा है।) मुझसे यह कहा गया था कि मैं स्वभाविक रूप से आचरण करूं और मैं सचमुच बहुत स्वभाविक रूप से आचरण करता रहा: मैंने बराबर के कम्पार्टमेंट में खिड़की के बराबर एक सीट देखी और मैं उठ कर वहां जा बैठा। और उस डिब्बे में मेरे सन्तरियों के लिए और खाली सीटें नहीं थीं। वे लोग पहले की तरह ही बैठे रहे और वहीं से अपनी प्यार भरी नजर मेरे ऊपर रखते रहे। पेरेबोरी में, मेरे सामने लगी मेज के उस पार सीट खाली हुई। लेकिन मेरा सन्तरी इस सीट तक पहुंचे और वहां बैठे इससे पहले ही चाँद जैसे गोल मटोल चेहरे वाला एक आदमी, जिस ने भेड़ की खाल का कोट और रोयेंदार टोपी पहन रखी थी और जिसके पास लकड़ी का सादा लेकिन मजबूत सूटकेस था, वहां आकर बैठ गया। मैंने उसके सूटकेस को पहचान लिया: यह शिविर की कारीगिरी थी, "द्वीपसमूह में निर्मित।"

"हूं!" उसने आवाज की। डिब्बे में बहुत कम रोशनी थी लेकिन मैं यह देख पा रहा था कि इसका चेहरा लाल हो गया था और उसे गाड़ी पर सवार होने के लिए काफी भाग दौड़ करनी पड़ी थी। और उसने एक बोतल निकाली: "कामरेड, थोड़ी बीयर पियोगे?" मैं जानता था कि बराबर के कम्पार्टमेंट में मेरे सन्तरियों का हाल बड़ा खस्ता है: मुझे अलकोहल मिश्रित कोई भी पेय पीने की इजाजत नहीं थी। पर...मुझसे यह आशा की गई थी कि मैं यथासम्भव आचरण करूं। अतः मैंने बड़ी लापरवाही से कहा: ठीक है "क्यों नहीं?" (बीयर! यह एक पूरी कविता है! पूरे तीन वर्ष की अवधि में मैंने एक घूंट बीयर भी नहीं पी थी। और कल मैं अपनी जेल की कोठरी में शेखी बघारूंगा: "मैंने बीयर पी है।") उस आदमी ने बीयर उंडेली और मैंने आनन्द भरी सिहरन के साथ उसे पिया। अब तक अन्धेरा हो चुका था। डिब्बे में बिजली नहीं थी। यह युद्ध के बाद की अव्यवस्था थी। दरवाजे पर एक प्राचीन लालटेन में एक छोटी-सी मोमबत्ती जल रही थी। चार कम्पार्टमेंटों का यह एक दरवाजा था: दो कम्पार्टमेंट सामने थे और दो पीछे: मेरे सन्तरी चाहे कितने भी आगे क्यों न झुकते वे रेल के पहियों की आवाज़ में कोई भी बात न सुन सकते थे। मेरी जेब में एक पोस्टकार्ड रखा था, जो मैंने अपने घर लिखा था। और मैं मेज के उस पार बैठे हुए अपने इस सीधे-सादे मित्र को यह समझाने जा रहा था कि मैं कौन हूं और उससे इस पोस्टकार्ड को लैटरबक्स में डालने का अनुरोध करने जा रहा था। उसके सूटकेस से मैं यही अनुमान लगा सकता था कि वह स्वयं शिविर में रह चुका है। लेकिन उसने मुझे इस काम में परास्त कर दिया: "तुम जानते हो कि बड़ी मुश्किल से मैं कुछ छुट्टी ले पाया हूं। दो वर्ष से उन्होंने मुझे छुट्टी नहीं दी थी; यह सेवा की सचमुच बड़ी कुत्ती शाखा है।" "कैसी शाखा?" "क्या तुम नहीं जानते? मैं एम० वी० डी० का आदमी हूं, एक एस्मोड्यूस हूं, कन्धे पर नीले रंग के फीते होते हैं, क्या तुमने उन्हें कभी नहीं देखा?" नाश हो! मैं

तुरन्त इस बात को क्यों नहीं भांप गया था ? पेरिबोरी वोलगोलाग का केन्द्र था। और उसने यह सूटकेस कैदियों से प्राप्त किया था। कैदियों ने उसे यह सूटकेस मुफ्त बनाकर दिया था। यह सब हमारे जीवन में किस तरह प्रवेश कर चुका है ! दो कम्पार्टमेंटों में क्या एम० वी० डी० के दो आदमी, दो एस्मोदेई काफी नहीं थे। क्या तीसरे का होना ज़रूरी था। और सम्भवत: कहीं और कोई चौथा भी छिपा बैठा हो ? और हो सकता है कि वह प्रत्येक कम्पार्टमेंट में हों ? और हो सकता है कि कोई और भी मेरी तरह ही विशेष गारद के साथ यात्रा कर रहा हो।

मेरा यह साथी अपने भाग्य को कोसता रहा, शिकायत करता रहा, भुनभुनाता रहा। और तभी मैंने एक रहस्यपूर्ण आपत्ति उठाने का निश्चय किया। "और उन लोगों के बारे में तुम क्या कहोगे जिनके ऊपर तुम पहरा देते हो, जिन लोगों को बिना किसी बात के दस वर्ष की कैद की सजा सुना दी गई है—क्या उनकी स्थिति कुछ अधिक बेहतर है ?" वह तुरन्त शान्त हो गया और अगले दिन सुबह तक मौन ही रहा। इससे पहले, अर्ध अन्धकार में वह देख चुका था कि मैं किसी प्रकार का अर्धसैनिक ओवरकोट और फौजी कमीज पहने हुए हूं। और उसने यह सोचा था कि मैं कोई सैनिक लड़का हूं, लेकिन अब यह धूर्त जान चुका था कि मैं वास्तव में क्या हो सकता हूं : हो सकता है कि मैं पुलिस का जासूस हूं ? हो सकता है कि मैं भगोड़ों को पकड़ने के लिए निकला हूं ? मैं इस डिब्बे में क्यों था ? और उसने मेरी मौजूदगी में शिविरों की आलोचना की थी।

अब तक लालटेन के भीतर लगा मोमबत्ती का टुकड़ा पिघले हुए मोम पर तैर आया था लेकिन यह अभी भी जल रहा था। सामान रखने के तीसरे तख्ते पर कोई नौजवान बड़ी सुखद आवाज़ में युद्ध के बारे में बात कर रहा था, वास्तविक युद्ध के बारे में, ऐसे युद्ध के बारे में जिसके बारे में आप पुस्तकों में नहीं पढ़ पाते। वह सैनिक इन्जीनियरों की एक टुकड़ी के साथ काम कर चुका था और कुछ जीवन्त घटनाओं का विवरण सुना रहा था। और यह अनुभव करना बड़ा सुखद था कि वह किसी के कानों में बिना किसी अतिशयोक्ति की सच्ची बातें डाल रहा था।

मैं भी किस्से सुना सकता था। मुझे ये किस्से सुनाने बहुत अच्छे लगते। लेकिन नहीं, अब मैं ये किस्से नहीं सुनाना चाहता। एक गाय की तरह, लड़ाई मेरे चार वर्ष चाट गई थी। मैं अब यह विश्वास नहीं कर पाता था कि यह वास्तव में हुआ था और मैं इसे याद भी नहीं रखना चाहता था। यहां के दो वर्ष, द्वीपसमूह के दो वर्षों ने, मोर्चे की समस्त सड़कों की स्मृति को, अग्रिम मोर्चों के समस्त भाईचारे को धूमिल कर दिया था, पूरी तरह से अन्धकारमय बना दिया था।

एक खूंटा दूसरे खूंटे को ठोक कर बाहर निकाल देता है।

और स्वतन्त्र लोगों के बीच कुछ घंटे बिता देने के बाद मैं यह अनुभव करता हूं : मेरे होंठ बन्द हैं; इन लोगों के मध्य मेरे लिए कोई स्थान नहीं है; मेरे हाथ बंधे हुए हैं। मैं स्वतन्त्र रूप से बोलने का अधिकार चाहता हूं ! मैं अपने जन्मस्थान को वापस लौट जाना चाहता हूं ! मैं द्वीपसमूह में अपने घर वापस लौट जाना चाहता हूं !

अगले दिन सुबह मैं जानबूझ कर अपना पोस्टकार्ड ऊपर की बैंच पर भूल गया; आखिरकार कंडक्टर लड़की डिब्बा साफ करने आएगी; वह इसे लैटरबाक्स में डाल देगी यदि

वह मनुष्य है ।

हम लोग मास्को में उत्तरी स्टेशन के सामने चौक में निकलते हैं । एक बार फिर मेरे सन्तरी मास्को के लिए नये हैं और उन्हें इस नगर की जानकारी नहीं है । हम लोग ट्राम नम्बर "ब" पर यात्रा करते हैं और यह निर्णय मैं उनके लिए लेता हूं । चौक के मध्य ट्राम के अड्डे पर जबर्दस्त भीड़ है । इस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने काम पर जा रहा है । एक सन्तरी ट्राम के ड्राइवर के पास ऊपर चढ़ जाता है और उसे अपना एम० वी० डी० का पहचान पत्र दिखाता है । हमें पूरे रास्ते भर आगे के प्लेटफार्म तक शान के साथ खड़े होने की इजाजत दे दी जाती हैं मानो हम मास्को सोवियत के सदस्य हों । और हम टिकट खरीदने की भी चिन्ता नहीं करते । एक बूढ़े आदमी को वहां चढ़ने नहीं दिया जाता—वह अपंग नहीं है और उसे दूसरे लोगों की तरह पीछे के दरवाजे से चढ़ना होगा ।

हम लोग नोवोस्लोबोदस्काया के पास पहुंचते हैं और ट्राम से उतर जाते हैं—और पहली बार मैं बाहर से बुत्यर्की जेल देखता हूं यद्यपि चौथी बार मुझे यहां लाया गया है और मैं इसके भीतरी हिस्से की रूपरेखा बिना किसी कठिनाई के बना सकता हूं । उफ, कितनी भयंकर इमारत है, दो खंडों तक ऊंची दीवार फैली हुई है ! जिस समय मास्को निवासी इसके विशाल फाटकों के इस्पाती दरवाजों को खुलता देखते हैं तो उनके हृदय कांप उठते हैं । लेकिन मैं मास्को की पैदल पटरियों को बिना किसी खेद के पीछे छोड़ जाता हूं और मैं जैसे ही द्वार के गुम्बद में प्रवेश करता हूं तो मुझे लगता है कि मैं अपने घर वापस लौट रहा हूं । मैं पहले अहाते को देखकर मुस्कराता हूं और नक्काशीदार लकड़ी के परिचित मुख्य दरवाजों को पहचान लेता हूं । और मेरे लिए अब इस बात का कोई महत्व नहीं है कि वह मुझे दीवार की ओर मुंह करके खड़ा कर देंगे—और वे पहले ही मुझे इस प्रकार खड़ा कर चुके हैं और मुझसे पूछेंगे : "नाम का आखिरी हिस्सा ? दिया गया नाम और पारिवारिक नाम ? जन्म का वर्ष ?"

मेरा नाम ? मैं तो आकाश में नक्षत्रमण्डल के बीच विचरण करने वाला प्राणी हूं ! उन लोगों ने मेरे शरीर को कस कर बांध लिया है, लेकिन मेरी आत्मा उनकी शक्ति के बाहर है ।

मैं जानता हूं : लगातार कई घंटों तक मेरे शरीर को एक निश्चित प्रक्रिया से गुजारने के बाद—एक बाक्स में बन्द करना, तलाशी, रसीदें देना, प्रवेश पत्र भरना, और कपड़ों को तपाना और स्नान के बाद—मुझे दो गुम्बदों वाली एक कोठरी में ले जाया जाएगा, जिसके बीच एक मेहराब होगा । (सब कोठरियां ऐसी ही हैं) इस कोठरी में दो बड़ी खिड़कियां भी होंगी और एक बड़ी लम्बी मेज़ तथा दराज । और अजनबी लोग मेरा स्वागत करेंगे, जो निश्चय ही बुद्धिमान, दिलचस्प और मित्रतापूर्ण लोग होंगे और वे मुझे अपनी कहानियां सुनानी शुरू करेंगे और मैं उन्हें अपनी कहानी सुनाऊंगा और रात होने पर भी हमारे मन में सोने की इच्छा उत्पन्न नहीं होगी ।

और कटोरों पर यह मुहर लगी होगी (ताकि हम कैदियों की गाड़ियों में इन्हें उठा कर न ले जाएं) इन पर "बू-त्यूर"—बुत्यर्काया त्यूरमा, बुत्यर्की जेल । "बूत्यूर" स्वास्थ्य घर है, जैसाकि पिछली बार हम इसे कहते थे, मजाक उड़ाते थे । यह एक स्वास्थ्य घर है, जिसके बारे में मोटे पेट वाले बड़े लोग इतना कम जानते हैं और जो अपना वजन घटाने के लिए इतने अधिक चिन्तित रहते हैं । 'वे लोग अपने मोटे-मोटे पेटों को

घसीट कर किसलोवोदस्क तक ले जाते हैं और निर्धारित मार्गों पर लम्बी पैदल यात्राएं करते हैं, दन्ड पेलते हैं और ४ से ६ पौंड तक वजन घटाने के लिए पूरे महीने पसीना बहाते हैं। और यहां "बू-त्यूर" स्वास्थ्य घर में, एकदम उनके पास, उनमें से कोई भी व्यक्ति केवल एक सप्ताह में बिना किसी व्यायाम के सत्रह से अट्ठारह पौंड तक वजन आसानी से घटा सकता है।

यह एक आजमाया हुआ और सच्चा तरीका है। यह कभी भी असफल नहीं रहा।



जेल में आपको जिन सत्यों की जानकारी होती है उनमें एक सत्य यह भी है कि संसार छोटा है, सचमुच बहुत छोटा है। यह सच है कि गुलाग द्वीपसमूह यद्यपि पूरे सोवियत संघ में फैला हुआ है फिर भी इसके निवासियों की संख्या सोवियत संघ के समस्त निवासियों की संख्या से कई गुना कम है। कोई भी व्यक्ति यह निश्चयपूर्वक नहीं जान सकता कि द्वीपसमूह में कितने लोगों को रखा गया था। हम यह मानकर चल सकते हैं कि शिविरों में किसी भी समय कैदियों की संख्या एक करोड़ २० लाख से अधिक नहीं थी' (अब क्योंकि बहुत से कैदी जमीन के भीतर दफना दिये जाते थे अतः इनके स्थान पर दूसरे लोगों को निरन्तर लाते रहने की व्यवस्था रहती थी।) और इनमें राजनीतिक कैदियों की संख्या आधे से अधिक नहीं थी। ६०,००,००० ? क्यों, यह तो एक छोटा सा देश है, स्वीडन अथवा यूनान के आकार का, और ऐसे ही अनेक छोटे देशों में बहुत से लोग एक दूसरे को जानते हैं। अतः यह बहुत स्वाभाविक था कि आप जब कभी किसी संक्रमण जेल की कोठरी में पहुंच जाते, वहां हो रही बातें सुनते और स्वयं बातचीत करते, तो आपको निश्चय ही कुछ ऐसे परिचितों की जानकारी मिलती, जिनके बारे में आपकी कोठरी के कुछ अन्य साथियों को भी जानकारी थी। (और इस प्रकार एक वर्ष से अधिक का समय तनहाई में बिताने के बाद, सुखानोवका के बाद, और र्यूमिन की बर्बर मारपीट और अस्पताल के बाद जब डी० नामक कैदी लूबयांका की एक कोठरी में पहुंचता है और अपना नाम बताता है तो वहां तत्काल एफ० नाम का एक कुशाग्र बुद्धि व्यक्ति तुरन्त यह कह उठता है : "अरे, तो आज मुझे पता चला कि तुम कौन हो !" "कहां से पता चला ?" डी० शर्मा कर उससे दूर हो जाना चाहता है। "तुम्हें गलतफहमी हुई है।" "नहीं, एकदम नहीं। तुम अलेक्जेंडर डी० नाम के वही अमरीकी हो, जिसके बारे में बुर्जुआ समाचारपत्रों ने यह झूठी खबर फैलाई थी कि तुम्हें बलपूर्वक उड़ा लिया गया है और तास समाचार एजेंसी ने इस बात का खण्डन किया था। उस समय मैं स्वतन्त्र था और मैंने अखबारों में यह खबर पढ़ी थी।")

मुझे उस क्षण से बड़ा प्यार है जब किसी नये कैदी को पहली बार कोठरी में लाया जाता है। (एक नौसिखिये को नहीं, जिसे हाल में ही गिरफ्तार किया गया हो क्योंकि वह निश्चय ही बहुत उदास और उलझन में फंसा होगा बल्कि एक अनुभवी कैदी का आना मैं बेहद पसन्द करता हूं।) और मुझे स्वयं भी एक नई कोठरी में प्रवेश करना बेहद पसन्द है। (इसके बावजूद मैं यही कामना करता हूं कि ईश्वर की कृपा से मुझे फिर कभी यह न करना पड़े। मैं चिन्तामुक्त मुस्कराहट और बहुत शानदार तरीके से यह कहते हुये प्रवेश करता हूं : "नमस्कार भाइयो !" मैं अपना थैला सोने के तख्तों पर फेंक देता हूं। "ठीक है, तो

पिछले साल बुत्यर्की में क्या-क्या नई बातें हुईं ?"

हम परिचित होने लगते हैं। सूवोरोव नाम का अनुच्छेद-५८ के अन्तर्गत दण्डित एक व्यक्ति मौजूद है। पहली नजर में उसमें कुछ भी खास बात दिखाई नहीं पड़ती, लेकिन आप और अधिक गौर से देखते हैं, छानबीन करते हैं : क्रासनोयारस्क संक्रमण जेल में माखोत्किन नाम का एक व्यक्ति उसकी कोठरी में था।

"जरा ठहरिये क्या वह आर्कटिक क्षेत्र का हवाबाज नहीं था ?"

"हां। उन लोगों ने..."

"...तमीर खाड़ी में एक द्वीप का नाम उसके नाम पर रखा था। और अब वह अनुच्छेद-५८-१० के अधीन जेल में है। तो इसका यह मतलब होता है कि उन लोगों ने उसे दूदिनका भेज दिया है ?"

"तुम्हें कैसे मालूम ? हां, भेज दिया है।"

बहुत खूब ! यह एक ऐसे व्यक्ति की जीवनी की एक और कड़ी है, जिसे मैं नहीं जानता। मैं उससे कभी भी नहीं मिला, और सम्भवतः कभी मेरी मुलाकात उससे होगी ही नहीं। लेकिन मेरी कुशलस्मृति ने उसके बारे में उपलब्ध जानकारी को संचित कर लिया : माखोत्किन को पूरी "चौथाई शताब्दी" प्राप्त हुई, उसे पच्चीसा थमा दिया गया। लेकिन उस द्वीप का नाम नहीं बदला जा सका, जिसे माखोत्किन का नाम दे दिया गया था। क्योंकि यह नाम संसार भर के नक्शों पर अंकित हो चुका था। (यह गुलाग द्वीपसमूह का द्वीप नहीं था।) उन लोगों ने उसे बोलशिनो में उड़ान शरासका में भेज दिया था और वह वहां बेहद दुःखी था। इन्जीनियरों के मध्य एक हवाबाज़ और उसे भी विमान उड़ाने की अनुमति प्राप्त न हो। उन लोगों ने उस शरासका को दो हिस्सों में बांट दिया और माखोत्किन की नियुक्ति तगानरोग वाले हिस्से में हुई। और ऐसा लगने लगा मानो उससे समस्त सम्बन्ध तोड़ लिए गए हों। लेकिन इसके दूसरे हिस्से में, राइबिन्स्क में मुझे यह बताया गया कि उसने यह अनुमति मांगी कि उसे सुदूर उत्तर में विमान उड़ाने की अनुमति दी जाये। और अभी तुरन्त यह पता चला कि उसे यह अनुमति प्राप्त हो गई। मुझे इस जानकारी की आवश्यकता नहीं थी लेकिन फिर भी मैं इसे अपनी स्मृति में संजोये रहा। और दस दिन बाद मैं बुत्यर्की के उसी नहाने के कमरे में पहुंचा जिसमें आर० नाम का एक व्यक्ति भी पहुंचा हुआ था (बुत्यर्की जेल में नहाने के लिये ऐसे छोटे-छोटे कमरे या सुन्दर बाक्स बनाए गए हैं, जिनमें नल और छोटे टब लगाये गए हैं ताकि नहाने के बड़े-बड़े कमरों के ऊपर अधिक जोर न पड़े।) मैं इस आर० नामक व्यक्ति से भी परिचित नहीं था लेकिन बातचीत से यह स्पष्ट हुआ कि वह लगभग छः महीने से बुत्यर्की अस्पताल में रोगी के रूप में भर्ती था और उसे अभी राइबिन्स्क शरासका भेजा जा रहा था। तीन दिन बाद राइबिन्स्क के कैदियों को भी एक ऐसे बाक्स में जहां उन्हें बाहरी संसार से पूरी तरह अलग-थलग रखा जाता है यह जानकारी प्राप्त हो गई कि माखोत्किन को दूदिनका भेज दिया गया था और उन्हें यह भी पता चल जाएगा कि मुझे कहां भेजा गया था।

कैदियों की यही तार व्यवस्था है, इसी तरह वे अपना समाचार एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाते हैं : हर बात पर ध्यान देना, स्मरण रखना और संयोग से हुई मुलाकातें।

और सींग की कमानी वाला चश्मा पहनने वाला यह आकर्षक व्यक्ति ? वह कोठरी में इधर-उधर चक्कर लगा रहा था और बहुत ही सुखद आवाज में शूबर्ट के गीत की ये

पंक्तियां गुनगुना रहा था :

और जवानी मुझे फिर कष्ट दे रही है,
और कब्र का रास्ता बहुत लम्बा है ।

"जाराप्किन, सेरगेई रोमानोविच ।"

"देखिए, मैं आपको बहुत अच्छी तरह से जानता हूं। आप जीव विज्ञानी हैं? वापस न लौटने वाले व्यक्ति हैं ? बर्लिन से आए हैं ?"

"आपको कैसे मालूम ?"

"आखिरकार यह बहुत छोटी सी दुनिया है ! सन् १९४६ में निकोलाई व्लादिमीरोविच तीमोफिएव-रेसोवस्की के साथ..."

हां, सन् १९४६ में वह कैसी कोठरी रही थी : इसकी याद वापस लौटने लगी। संभवत: मेरे पूरे कैदी जीवन में मुझे इससे अधिक मेधावी कैदियों के साथ रहने का मौका नहीं मिला। जुलाई का महीना था। वे लोग मुझे शिविर से बुत्यर्की जेल ले गए थे और यह काम "आन्तरिक मामलों के मंत्री के" उन विलक्षण "निर्देशों पर किया गया था"। हम लोग दोपहर के भोजन के बाद वहां पहुंचे, लेकिन जेल में कैदियों की ऐसी भरमार थी कि कैदी को भीतर कोठरी में पहुंचाने के लिये ग्यारह घण्टे का समय लगा और सुबह ३ बजे ही, बेहद थकान की स्थिति में मुझे कोठरी संख्या ७५ में पहुंचाया गया। दो गुम्बदों के नीचे लगे दो तेज रोशनी वाले बिजली के बल्बों के तले कोठरी के सब कैदी बराबर-बराबर लेटे हुए थे। अपने शरीर के अकड़ जाने के कारण वे लोग बहुत कष्ट में थे : जुलाई की गर्म हवा कमरे में प्रवाहित नहीं हो सकती थी क्योंकि खिड़कियों का अधिकांश हिस्सा लोहे की चादरें लगा कर बन्द कर दिया गया था। नींद की परवाह न करने वाली मक्खियां निरन्तर भुनभुना रही थीं और जब ये मक्खियां सोने वाले कैदियों के चेहरों पर बैठतीं, तो वे अपनी चमड़ी सिकोड़ते, इन्हें उड़ाने की कोशिश करते। कुछ कैदियों ने रोशनी से बचाव के लिये अपने चेहरों को रूमालों से ढक रखा था। पाखाने के ढोल से भयंकर बदबू आ रही थी—ऐसी गर्मी में हर वस्तु बहुत तेजी से गलने सड़ने लगती है। पच्चीस आदमियों के लिए बनी कोठरी में अस्सी कैदियों को ठूंस दिया गया था और यह भी उच्चतम सीमा नहीं थी। कैदी लोग बांयें और दायें लगे सोने के तख्तों पर ठसाठस भरे पड़े थे और उन अतिरिक्त तख्तों पर भी जिन्हें बीच की जगह में आर पार लगा दिया गया था। इसके अतिरिक्त सर्वत्र सोने के इन तख्तों के नीचे से पांव बाहर निकले हुए दिखाई पड़ रहे थे और बुत्यर्की की परम्परागत दराजदार मेज़ को पाखाने के ढोल के पास धकेल दिया गया था और केवल यहीं फर्श पर थोड़ी सी खाली जगह थी और मैं वहीं जाकर लेट गया। और इस प्रकार जो भी कैदी सुबह होने से पहले पाखाने के ढोल का इस्तेमाल करना चाहता उसे मेरे ऊपर से लांघ कर वहां पहुंचना पड़ता।

जब "उठो !" का हुक्म सुनाया गया। जब कोठरी के दरवाजे में बने छेद के भीतर से चिल्ला कर यह हुक्म दिया गया, ' प्रत्येक वस्तु सक्रिय हो उठी : उन लोगों ने कोठरी के बीच की खाली जगह में आर पार लगे तख्तों को उठाना और मेज को धकेल कर खिड़की के नीचे पहुंचाना शुरू कर दिया। कैदी लोग मुझसे बातचीत करने लगे। वे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि मैं नौसिखिया हूं अथवा शिविर का अनुभवी। अब बात यह स्पष्ट हुई कि इस कोठरी में दो भिन्न लहरें एक दूसरे से मिल गई थीं : हाल में दण्डित कैदियों की सामान्य

लहर जो इन नए कैदियों को अपने साथ शिविरों में ले जा रही थी और शिविरों से कैदियों को वापस लाने वाली लहर जो अपने साथ समस्त तकनीकी विशेषज्ञों को घसीट लाई थी—इनमें भौतिकी विज्ञानी, रसायनविद्, गणितज्ञ और डिजाइन इन्जीनियर थे—इन सबको अज्ञात स्थानों पर भेजा जा रहा था। इन्हें कुछ खास किस्म की वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थाओं में 'भेजा जा रहा था, जो बड़ी तत्परता से काम कर रही थी। (अब मैंने राहत का अनुभव किया : मंत्री मुझे एक और सज़ा नहीं सुनाएगा।) अधेड़ उम्र और चौड़े कन्धों वाला एक व्यक्ति मेरे पास आया। वह अभी भी बहुत दुर्बल था और उसकी नाक में एक मामूली सा खम था।

"प्रोफेसर तीमोफिएव रेसोवस्की, कोठरी संख्या ७५ की वैज्ञानिक और तकनीकी सभा का अध्यक्ष। हमारी सभा हर रोज सुबह रोटी का राशन मिलने के बाद बांई ओर की खिड़की के नीचे बैठती है। शायद आप हमें कोई वैज्ञानिक रिपोर्ट दे सकें ? आप किस विषय पर बोलना चाहेंगे ?"

मैं इसके लिये तैयार नहीं था। मैं उसके सामने अपने बेहद लम्बे और जर्जर ओवर-कोट में तथा सर्दियों की टोपी में खड़ा रहा (जिन लोगों को सर्दियों में गिरफ्तार किया जाता है उन्हें गर्मियों में भी सर्दियों के ही कपड़े पहनने पड़ते हैं।) उस सुबह तक मेरी अंगुलियां सीधी नहीं हो पाई थीं और इन पर खरोंच के निशानों की भरमार थी। मैं कैसी वैज्ञानिक रिपोर्ट इन लोगों के समक्ष पेश कर सकता हूं ? और तभी मुझे याद आया कि अभी हाल में शिविर में मुझे दो रात तक अपने हाथों में स्मिथ रिपोर्ट रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यह पहले परमाणु बम के बारे में संयुक्त राज्य अमरीका के प्रतिरक्षा विभाग की अधिकृत रिपोर्ट थी, जिसे बाहर से किसी प्रकार शिविर में कोई ले आया था। उसी वसन्त ऋतु में यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी। क्या कोठरी में किसी व्यक्ति ने इसे देखा था ? यह निरर्थक प्रश्न था। इसे वे कैसे देख सकते थे। और इस प्रकार भाग्य ने मेरे साथ परिहास किया, कोई विशेष जानकारी न होते हुए भी मुझे परमाणु भौतिकी के क्षेत्र में कदम रखने के लिए बाध्य किया। यह वही क्षेत्र था, जिसका उल्लेख मैंने गुलाग के अपने कार्ड पर कर दिया था।

रोटी का राशन बटने के बाद कोठरी संख्या ७५ की वैज्ञानिक और तकनीकी सभा, जिसमें लगभग दस आदमी थे, बांयें ओर की खिड़की के नीचे बैठी और मैंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा मुझे इस सभा का सदस्य स्वीकार कर लिया गया। मैं कुछ बातें भूल गया था और मेरी समझ में दूसरे लोगों की बातें पूरी तरह से नहीं आ रही थीं और यद्यपि तिमो-फिएव-रेसोवस्की एक वर्ष से जेल में थे और परमाणु बम के बारे में कोई जानकारी नहीं थी फिर भी मेरे विवरण के लुप्त अंशों को वे बीच-बीच में पूरा कर सके। सिगरेट की एक खाली डिब्बी मेरा ब्लैकबोर्ड थी और मेरे हाथ में पेंसिल के नये सुरमे का एक गैर कानूनी टुकड़ा मौजूद था। निकोलाई व्लादिमीरोविच ने मेरे हाथ से इन चीजों को ले लिया और परमाणु सम्बन्धी रेखाचित्र बनाकर तथा अन्य सम्बन्धित जानकारी देकर वे इस बारे में ऐसे आत्मविश्वास से हमें बताने लगे मानो वे स्वयं परमाणु बम बनाने वाले लौस अलामौस के भौतिकी वैज्ञानिकों की टोली में से ही हों।

वास्तव में उन्होंने यूरोप में निर्मित एक पहले साइक्लोट्रोन पर काम किया था। लेकिन इस साइक्लोट्रोन का उपयोग फलों पर बैठने वाली मक्खियों के कीटाणुओं को समाप्त करना था। वे एक जीव विज्ञानी थे और हमारे युग के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रजनन विज्ञानियों

में उनकी गणना होती थी। काफी समय पहले उन्हें उस समय भी जेल यात्रा करनी पड़ी थी जब झेब्राक ने अनजाने ही (अथवा सम्भवतः, जान-बूझकर,) कनाडा की पत्रिका में यह लिखने का साहस दिखाया : "रूस का जीव विज्ञान लाइसेंको के लिए उत्तरदाई नहीं है; रूस का जीव विज्ञान तिमोफिएव-रेसोवस्की का समतुल्य है।" (और सन् १९४८ में सोवियत जीव विज्ञान के विनाश के दौर में झेब्राक को इसकी कीमत चुकानी पड़ी।) श्रूडिंजर ने अपनी "जीवन क्या है" ? शीर्षक पुस्तिका में दो बार तिमोफिएव-रेसोवस्की का उल्लेख किया था और वे इससे काफी समय पहले ही गिरफ्तार हो चुके थे।

और अब वे हमारे सामने मौजूद थे। उन्हें प्रायः हर सम्भव विज्ञान के बारे में अत्यन्त जानकारी थी। उनके ज्ञान की परिधि इतनी विशाल थी कि बाद की पीढ़ियों के वैज्ञानिकों ने इस पैमाने पर जानकारी उपलब्ध करने को आवश्यक नहीं समझा। वे इतनी अधिक जानकारी प्राप्त करना ही नहीं चाहते थे। (अथवा क्या यह कारण है कि ज्ञान प्राप्ति की संभावनाएं बदल गई हैं ?) यद्यपि उन दिनों वे इतने दुर्बल थे कि ये गणनाएं करना उनके लिए बड़ा कठिन हो रहा था। पूछताछ की अवधि में उन्हें जिस तरह भूखा मारा गया था उसके कारण वे इतने अधिक दुर्बल हो गए थे। उनकी माता का वंश निर्धनता ग्रस्त कालूगा के भले लोगों से सम्बन्धित था, जो रैसा नदी पर निवास करते थे और उनके पिता का वंश स्टीपान राजिन के वंशजों से सम्बन्धित था और कज्जाकों की शक्ति उनमें स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रही थी—उनका लम्बा तगड़ा डील डौल, उनकी बुनियादी कठोरता, अपने पूछताछ अधिकारी से दृढ़तापूर्वक संघर्ष और यह तथ्य कि उन्होंने हमसे अधिक भूख का कष्ट भोगा है इस बात के प्रमाण थे।

उनकी कहानी इस प्रकार है : सन् १९२२ में जर्मन वैज्ञानिक वोग्ट ने, जिसने मास्को में मस्तिष्क संस्था की स्थापना की थी, यह मांग की कि दो प्रतिभाशाली स्नातक विद्यार्थियों को उसके साथ विदेश में काम करने के लिए स्थाई रूप से भेजा जाए। और इस प्रकार तिमोफिएव-रेसोवस्की और उनके मित्र जाराप्किन को विदेश में अध्ययन के लिये भेजा गया और समय की कोई सीमा नहीं लगाई गई। यद्यपि वहां इन लोगों को विचारधारा सम्बन्धी कोई मार्गदर्शन प्राप्त नहीं था पर इसके बावजूद इन लोगों ने विज्ञान के क्षेत्र में महान् उपलब्धियां की और जब १९३७ में (!) उन्हें मातृभूमि वापस लौटने का निर्देश दिया गया तो उन्हें यह बात असम्भव जान पड़ी क्योंकि वापस लौटने से उनके काम में बाधा पड़ती। वे लोग न तो अपने अनुसंधान कार्य की निरन्तरता को तोड़ सकते थे और न ही अपने विद्यार्थियों को। और इस बात में भी संदेह नहीं है कि वे इस कारण से भी वापस नहीं लौट सकते थे क्योंकि मातृभूमि पहुंचने पर उन लोगों को जर्मनी में अपने १५ वर्ष के अध्ययन पर सार्वजनिक रूप से गन्दगी उछालने के लिए बाध्य किया जाता। और यह करने पर ही उन लोगों को जीवित रहने का अधिकार प्राप्त होता। (और क्या इसके बाद भी उन्हें यह अधिकार मिल सकता था ?) और इस प्रकार वे लोग वापस नहीं लौटे, लेकिन इसके बावजूद उनकी देशभक्ति में कोई अन्तर नहीं आया।

सन् १९४५ में सोवियत सेनाओं ने बुच (बर्लिन की उत्तरी पूर्वी उपनगरी) में प्रवेश किया और तिमोफिएव-रोसोवस्की तथा उनकी पूरी संस्था ने बड़े हर्ष से उनका स्वागत किया। : सब कुछ कितने अच्छे ढंग से हुआ है और अब उन्हें अपनी संस्था से अलग नहीं होना पड़ेगा ! सोवियत प्रतिनिधि इस संस्था का निरीक्षण करने आए और बोले : "ठीक

है ! ठीक है ! इन सब चीजों को पेटियों में बन्द करो और हम इन्हें मास्को ले जाएंगे।" "यह असम्भव है," तिमोफिएव ने आपत्ति की। "प्रत्येक वस्तु रास्ते में ही मर जायेगी इन चीजों को लगाने में वर्षों का समय लगा है।" "तो यह बात है !" सोवियत प्रतिनिधियों ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा। और इसके कुछ ही दिनों बाद तिमोफिएव और जारापकिन को गिरफ्तार कर मास्को पहुंचा दिया गया। वे लोग बचकानेपन से सोच रहे थे। उनका विचार था कि उनके बिना यह संस्था नहीं चल पाएगी। ठीक है, यदि यह संस्था चल भी नहीं पाती तो भी पार्टी की नीति की विजय होनी ही चाहिए ! विशाल लूबयांका में गिरफ्तार व्यक्तियों के समक्ष बड़ी आसानी से यह सिद्ध कर दिया जाता था कि वे मातृभूमि के द्रोही थे। और इस प्रकार इन लोगों को दस वर्ष की कैद की सज़ा सुनाई गई। और अब कोठरी संख्या ७५ की वैज्ञानिक और तकनीकी सभा का अध्यक्ष इस बात से उत्साहित था कि उसने कोई गलती नहीं की थी।

बुत्यर्की की कोठरियों में, जिन मेहराबदार धातु के फ्रेमों पर तख्ते लगे थे, वे बहुत-बहुत ऊंचे थे। जेल प्रशासन तक ने यह कल्पना नहीं की थी कि कैदियों को इन तख्तों के नीचे सोना होगा। तो इन तख्तों के नीचे घुसने से पहले आप अपना ओवरकोट अपने पड़ोसी के पास फेंकते, जो उसे आपके लेटने के लिये फैला देता और इसके बाद आप मुंह के बल फर्श पर लेटते और घिसट-घिसट कर तख्तों के नीचे पहुंच जाते। कैदी लोग तख्तों के बीच की खाली जगह में चलते फिरते थे शायद महीने में एक बार ही तख्तों के नीचे फर्श पर झाड़ू लगाई जाती थी और आप केवल शाम के समय शौचालय जाने पर ही अपने हाथ धो सकते थे और उस समय भी साबुन नहीं मिलता था—और इस प्रकार यह कहना असम्भव था कि आप अपने शरीर को एक दैविक पात्र मान सकें। लेकिन मैं खुश था ! तख्तों के नीचे तारकोल के फर्श पर, कुत्ते की मांद जैसी जगह में, ऊपर के तख्तों से आपकी आंतों में गिरने वाली धूल और रोटी के छोटे-छोटे टुकड़ों में मैं बेहद प्रसन्न था, मैं पूरी तरह प्रसन्न था। एपीक्यूरस ने सच ही कहा था : विभिन्नता के अभाव को भी सन्तोष माना जा सकता है यदि इससे पहले अनेक प्रकार के सन्तोष मौजूद रहे हों। शिविर के बाद, जो हमें अनन्त दिखाई पड़ता था, और हर रोज दस घण्टे के काम के बाद ठंड, वर्षा और भयंकर रूप से दर्द करती पीठ के बाद लगातार पूरे के पूरे दिन चुपचाप लेटा रहना, सो जाना, और इसके बावजूद डेढ़ पौंड रोटी तथा दिन में दो बार गर्म भोजन प्राप्त करना सुख ही सुख था। यद्यपि यह गर्म भोजन पशुओं के चारे अथवा डोलफिन के गोश्त से बनाया जाता था। बस इस शब्द में इसे "बुत्यूर" कहा जा सकता था, स्वास्थ्य घर कहा जा सकता था।

सोना बेहद महत्वपूर्ण था। मुंह के बल लेटे रहना, अपनी पीठ को कपड़े से ढक लेना और सोते रहना। सोते समय आप न तो अपनी शक्ति का व्यय करते हैं और न ही अपने हृदय को मथते हैं—और इस बीच आपकी सजा की अवधि बीतती रहती है, गुजरती रहती है। जब हमारा जीवन चहक उठता है और एक मशाल की तरह प्रज्ज्वलित हो उठता है तब हम आठ घंटे की नींद निकालने की आवश्यकता को कोसते हैं। लेकिन जब हमें हर वस्तु से वंचित कर दिया जाता है जब हमें आशा से वंचित कर दिया जाता है तब चौदह घण्टे की नींद वरदान सिद्ध होती है !

लेकिन उन लोगों ने मुझे उस कोठरी में दो महीने रखा और इस बीच मैंने पिछले साल की और अगले साल की भी नींद पूरी कर ली और इस अवधि में मैं तख्तों के नीचे

आगे बढ़ता हुआ खिड़की के पास जा पहुंचा और इसके बाद फिर पाखाने की बाल्टी के पास। लेकिन इस बार मैं तख्तों के ऊपर था। और फिर मैं तख्तों के ऊपर आगे बढ़ता हुआ मेहराब के नीचे जा पहुंचा। अब मैं अधिक समय नहीं सोता था, मैं जीवन के अमृत का पान कर रहा था और बड़ा आनन्दित था। सुबह के समय वैज्ञानिक और तकनीकी सभा बैठती, और इसके बाद शतरंज का खेल होता और पुस्तकों का अध्ययन भी। (हां, वे निरन्तर आगे बढ़ती रहने वाली पुस्तकें। आठ या दस लोगों के लिये केवल तीन या चार पुस्तकें होतीं और कोई न कोई व्यक्ति इनके लिए प्रतीक्षा करता रहता।) इसके बाद बाहर जेल के अहाते में बीस मिनट की चहलकदमी होती—यह एक बहुत बड़ा काम होता! भयंकर वर्षा में भी हम बाहर टहलने जाने से इनकार न करते। और सबसे प्रमुख बात थी लोग, लोग और लोग! निकोलाई आन्द्रेविच सेमियोनोव थे, जिन्होंने नीपर नदी का पनबिजली बांध और बिजलीघर बनाया था। उनके युद्धबन्दी साथी इंजीनियर एफ० एफ० कारपोव थे। हाजिर-जवाब और तीखा व्यंग्य करने वाले भौतिकी विज्ञानी विक्टर कगान भी थे। संगीतज्ञ और कंजरवेटरी के विद्यार्थी वोलोधा क्लेम्पोर भी थे, जो संगीत रचना करते थे। व्यातका के जंगलों में लकड़ी काटने और शिकार करने वाला एक व्यक्ति भी था जो जंगल की झील की तरह गम्भीर था। यूरोप के एक आर्थोडाक्स चर्च के उपदेशक एवजेनी आइवानोविच दिबनिच भी थे। वे स्वयं को केवल धर्मशास्त्र तक ही सीमित नहीं रखते थे बल्कि मार्क्सवाद की भर्त्सना भी करते थे। वे कहते थे कि यूरोप में लम्बी अवधि तक किसी ने भी मार्क्सवाद पर गम्भीरता से विचार नहीं किया। और मैं मार्क्सवाद का समर्थन करता, इसके पक्ष में बातें कहता क्योंकि आखिरकार मैं एक मार्क्सवादी था। और केवल एक वर्ष पहले ही मैं उदाहरण दे देकर बड़े आत्मविश्वास से उनके सब तर्कों को काट सकता था; कितने अपमानजनक ढंग से और घृणापूर्वक मैं उनकी खिल्ली उड़ाता; लेकिन कैदी के रूप में मेरे पहले वर्ष ने मेरे अन्तरतम पर गहरी छाप छोड़ी थी—और किस समय यह हुआ था? मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था: अनेक नई घटनाएं हुई थीं, अनेक नये दृश्य देखने को मिले थे, अनेक नए अर्थों का परिचय प्राप्त हुआ था और अब मैं यह नहीं कह सकता था: "कि यह बात नहीं है! यह बुर्जुआ लोगों का झूठ है!" और अब मुझे यह स्वीकार करना पड़ता: "हां, इन बातों का अस्तित्व है।" और तभी मेरी समस्त तर्क प्रक्रिया कमजोर पड़ने लगी और वे बिना किसी प्रयास के मेरे तर्कों को निरर्थक कर देते थे।

और फिर युद्धबन्दियों का आना शुरू हुआ। वे निरन्तर आते रहे, आते रहे—यह उनकी लहर का दूसरा वर्ष था, जो यूरोप से अबाध रूप से चली आ रही थी। और एक बार फिर रूसी प्रवासियों की लहर आनी शुरू हुई, यूरोप से मंचूरिया से। कैदी लोग इन प्रवासी कैदियों से अपने परिचितों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करते। वे सबसे पहले यह पूछते कि वे किस देश से आए हैं और इसके बाद यह सवाल उठाया जाता कि क्या वे अमुक व्यक्ति से परिचित हैं? हां, सचमुच वे उसे जानते हैं। (और इस प्रकार मुझे कर्नल यासेविच को गोली से उड़ाये जाने की जानकारी मिली।)

और वह वृद्ध जर्मन, वह मोटा तगड़ा जर्मन, जो अब दुर्बल और बीमार था, और जिससे एक समय मेरी मुलाकात पूर्वी प्रशा में हुई थी (क्या यह बात २०० वर्ष पहले की है?) और मैंने जिसे अपना सूटकेस उठाकर चलने के लिये बाध्य किया था। ओह, सचमुच यह दुनिया कितनी छोटी है! विलक्षण भाग्य ने हमें फिर एक साथ मिला दिया है। वह

वृद्ध मेरी ओर देख कर मुस्कराया। उसने भी मुझे पहचान लिया था और वह हमारी मुलाकात से प्रसन्न दिखाई पड़ता था। उसने मुझे क्षमा कर दिया था। उसे दस वर्ष की कैद की सजा दी गई थी लेकिन वह इतने वर्ष कहां जीवित रह सकता था। और वहां एक और जर्मन भी था—बहुत लम्बा और युवक, लेकिन मौन रहने वाला—शायद इसका कारण यह था कि वह रूसी भाषा का एक शब्द भी नहीं जानता था। पहली नजर में आप उसे जर्मन नहीं मान सकते थे : चोरों ने उसकी प्रत्येक जर्मन वस्तु उसके शरीर से उतार ली थी और उसके बदले एक पुराना सोवियत फौजी कमीज उसे दे दिया था। वह जर्मनी का एक प्रसिद्ध पायलेट था। उसने सबसे पहले बोलीबिया और पैरागुये के बीच हुये युद्ध में हिस्सा लिया था। दूसरी बार वह स्पेन में, तीसरी बार पोलैंड में चौथी बार इंगलैंड के ऊपर हवाई लड़ाई में और पांचवीं बार साइप्रस में तथा छठी बार सोवियत संघ में युद्ध में शामिल हुआ था। अब क्योंकि वह अत्यन्त कुशल हवाबाज था अतः वह अपने विमान से स्त्रियों और बच्चों पर गोली वर्षा करने से नहीं बच सकता था ! और इसके कारण वह एक युद्ध अपराधी बन गया और उसे कैद की सजा सुनाई गई तथा पांच और वर्ष की निष्कासन की सजा भी दी गई। और यह भी सच है कि कोठरी में (सरकारी वकील क्रेतोव जैसा) सही ढंग से सोचने वाला आदमी होना जरूरी था : "उन लोगों ने तुम सब क्रान्ति विरोधी हरामजादों को जेल में डाल कर ठीक ही किया है। इतिहास तुम्हारी हड्डियों को पीस कर खाद तैयार करेगा !" "तू खुद भी खाद बनेगा, कुत्ते कहीं के !" वे लोग चिल्लाकर मुंह तोड़ जवाब देते। "नहीं, वे लोग मेरे मामले पर फिर से विचार करेंगे मैं निर्दोष हूं !" और कोठरी के सब कैदी ठठा कर हंस पड़ते और हंसते-हंसते लोट पोट हो जाते। और सफेद बालों वाला रूसी भाषा का एक अध्यापक नंगे पांव ही तख्तों के ऊपर खड़ा हो गया और किसी भावी ईसा मसीह की तरह अपने हाथ मलता हुआ बोला : मेरे बच्चो, एक दूसरे के साथ शांति से रहो ! मेरे बच्चो ! "और वे लोग उसके ऊपर भी बरस पड़े :" तुम्हारे बच्चे ब्रीयांस्क जंगलों में हैं। हम किसी के बच्चे नहीं हैं। हम लोग तो केवल गुलाग के पुत्र हैं।

रात्रि के भोजन के बाद और शौचालय की यात्रा के बाद, रात का अंधेरा खिड़की पर लगी चादरों के ऊपर के खुले हिस्से से झांकने लगता और छत के नीचे रात भर जलने वाली बिजली की रोशनी चमक उठती। दिन का समय कैदियों को विभाजित करता और रात उन्हें एक दूसरे के समीप ले आती। सन्ध्या समय कोई झगड़ा न होता : भाषण होते और संगीत भी। और इस काम में भी तिमोफिएव-रेसोवस्की सबसे आगे रहते : उन्होंने पूरी सन्ध्याओं का समय इटली, डेनमार्क, नार्वे और स्वीडन के बारे में जानकारी देने में बिताया। प्रवासी रूसी बालकन देशों और फ्रांस के बारे में बताते। किसी व्यक्ति ने लकाबुंजिए पर भाषण दिया। किसी अन्य व्यक्ति ने मधु मक्खियों की आदतों के बारे में जानकारी दी। कोई व्यक्ति गोगोल के साहित्य पर बोला। यह वह समय होता था जब हम जी भर कर धूम्रपान करते थे। धुआं पूरी कोठरी में व्याप्त हो जाता था और कुहरे की तरह हवा में मंडराता रहता था और खिड़कियों पर लगी लोहे की चद्दरों के कारण हवा का झोंका उसे उड़ा कर बाहर नहीं ले जा सकता था। मेरा हमउम्र, गोल मटोल चेहरे, नीली आंखों, आनन्द देने वाली सीमा तक बेहूदा लगने वाला कोस्त्याकियूला मेज पर जा चढ़ा और उसने जेल में जिन कविताओं की रचना की थी उनका पाठ करने लगा।[२] उसकी आवाज भावावेश से भर कर भर्रा उठती, उसकी कविताओं के शीर्षक थे, "मेरा खाने की चीजों का पहला

पार्सल," "अपनी पत्नी से," "अपने पुत्र से"। जब आप जेल में उन कविताओं का पाठ सुनते हैं, जिन्हें, जेल में ही लिखा गया हो तो आप इस बात पर, यह सोचने पर, अपना समय बर्बाद नहीं करते कि कविता में सही छन्द का प्रयोग किया गया है अथवा नहीं, कि पंक्तियों की लयात्मकता एक-दूसरे से मेल खाती है अथवा नहीं। ये कविताएं स्वयं आप के हृदय का रक्त होती हैं, आपकी अपनी पत्नी के आंसुओं का परिणाम होती हैं, पूरी कोठरी रो उठी।

किसी कोठरी में मैंने भी जेल के बारे में पंक्तियां लिखनी शुरू कीं और यहीं मैंने येसिनिन की कविताओं का पाठ किया जो युद्ध से पहले प्रायः निषिद्ध सूची में पहुंच चुका था। और युद्धबन्दी युवक बुबनोव कवितापाठ करने वालों के मुख की ओर प्रार्थना के भाव से देखता और उसका चेहरा आलोकित हो उठता। युद्धबन्दी बनने से पहले वह एक विद्यार्थी था और उसकी शिक्षा पूरी नहीं हुई थी। वह तकनीकी विशेषज्ञ नहीं था और शिविर से वापस नहीं आया था। वह शिविर जा रहा था और उसके चरित्र की पवित्रता और स्पष्टता के कारण इस बात की पूरी संभावना थी कि शिविर में ही उसकी मृत्यु हो जाएगी। उस जैसे लोग शिविर में जीवित नहीं बचते। और उसके लिये तथा अन्य लोगों के लिए—जिनकी घातक यात्रा में कुछ क्षण के लिए ठहराव आ गया था—कोठरी संख्या ७५ की ये सन्ध्याएं उस सुन्दर संसार का अचानक साक्षात्कार थीं, जिसका अस्तित्व है, और जिसका अस्तित्व कायम रहेगा।

दरवाजे में बने छेद का तख्ता हटा और चाबीबरदार सन्तरी उसके भीतर अपना मुंह डाल कर चिल्लाया : "बिस्तर पर चलो :" युद्ध से पहले भी जब मैं दो उच्च शिक्षा संस्थाओं में साथ-साथ अध्ययन कर रहा था और अपने फालतू समय में विद्यार्थियों को पढ़ा कर अपनी आजीविका चला रहा था और कुछ लिखने के भरसक प्रयास में ही लगा था उस समय भी मैंने कभी इतनी सम्पूर्ण, हृदयस्पर्शी और फलदायी संन्ध्याओं का, दिनों का अनुभव नहीं किया जैसा मुझे उन गर्मियों में कोठरी संख्या ७५ में प्राप्त हुआ।

"जरा सुना," मैं जाराप्किन से बोला, "मैंने किसी ड्यूल नामक एक १६ वर्ष के लड़के के बारे में सुना है, जिसे पंजा थमा दिया गया (स्कूल की रिपोर्ट के कार्ड पर नहीं और उसे यह सजा "सोवियत विरोधी" प्रचार के लिए दी गई..."

"तो क्या तुम भी उसे जानते हो ? वह हमारे साथ करागंदा जाते समय था..."

"मैंने सुना है," मैंने अपनी बात जारी रखी, "कि तुम्हें प्रयोगशाला सहायक के रूप में चिकित्सा सम्बन्धी विश्लेषण का काम सौंपा गया था और तिमोफिएव-रेसोवस्की को निरन्तर सामान्य कार्य के लिए भेजा जाता था..."

"हां, और वे बेहद कमजोर हो गये थे। जब वे लोग उन्हें स्तोलिपिन रेल डिब्बे से बुत्यर्की लाये तो वे अर्धमृत थे। और वे आज भी यहां अस्पताल में पड़े हैं और चौथा विशेष विभाग[1] उन्हें क्रीम और यहां तक कि हल्की शराब भी दे रहा है। लेकिन यह कहना कठिन है कि वह कभी स्वस्थ हो सकेंगे अथवा नहीं।"

"क्या चौथे विशेष विभाग ने आपको भी बुलाया था ?"

"हां उन लोगों ने हमसे पूछा था कि क्या करागंदा में छह महीने का समय बिताने के बाद भी हमारे लिये यहां अपनी पितृभूमि में अपनी संस्था स्थापित करने का काम शुरू करना सम्भव है ?"

"और आप, सचमुच, बड़े उत्साह से इस बात पर सहमत हो गये।"

"हां, निश्चय ही ! आखिरकार हम लोग अपनी गलतियां समझने लगे हैं और इसके अलावा हमारी पुरानी संस्था से जो उपकरण छीन लिये गए थे और जिन्हें पेटियों में बन्द कर दिया गया था हमारी इच्छा के विरुद्ध ही यहां पहुंच गए हैं।"

"एम० वी० डी० में विज्ञान के प्रति कैसी गहरी निष्ठा है ! क्या मैं आपसे शूबर्ट का कोई और गीत सुनाने का अनुरोध कर सकता हूं ?"

और जाराप्किन बड़ी मीठी आवाज में गाने लगे, उनकी आंखें, उदासी भरी आंखें खिड़की पर लगी थीं। (उनके चश्मे के शीशों में खिड़कियों में लगी चद्दरों का अंधियारा हिस्सा और खिड़कियों का प्रकाशयुक्त थोड़ा सा खाली हिस्सा भी प्रतिबिम्बित हो रहा था।)



तोत्सतोए का स्वप्न सच्चा सिद्ध हुआ है : कैदियों को अब बुरा प्रभाव डालने वाली धार्मिक प्रार्थनाओं में हिस्सा लेने के लिए बाध्य नहीं किया जाता, जेलों के गिरजाघरों को बन्द कर दिया गया है। हां, इन गिरजाघरों की इमारतें मौजूद हैं लेकिन इन्हें बहुत कुशलतापूर्वक परिवर्तित करके जेल के विस्तार में प्रयुक्त किया गया है। इस प्रकार बुत्यर्की के गिरजाघर में दो हजार और कैदियों को रखने की व्यवस्था की जा सकी है। और यदि प्रत्येक कैदी के दो सप्ताह तक इस जेल में रहने का औसत लगाया जाये तो एक वर्ष की अवधि में उन कोठरियों में से होकर ५०,००० और कैदी गुजरेंगे, जो इमारत एक जमाने में गिरजाघर थी।

बुत्यर्की में चौथी या पांचवीं बार पहुंचने के बाद, अपनी निर्धारित कोठरी की ओर बड़े विश्वास से तेजी से बढ़ते हुये, जेल की इमारतों से घिरे आंगन को पार करते हुए और जेल के सन्तरी तक से आधा कदम आगे-आगे चलते हुए (एक ऐसे घोड़े की तरह जो चाबुक अथवा लगाम के इशारे के बिना ही अपने घर की ओर तेजी से बढ़ता है, जहां उसके लिए दाना रखा रहता है), मैं यदा कदा अठपहलू मैदान में निर्मित चौकोर गिरजाघर की ओर नजर डालना भी भूल जाता। यह गिरजाघर विशाल आंगन के मध्य अलग-थलग खड़ी दिखाई पड़ता था। जेल के प्रमुख हिस्से की तरह इसकी खिड़कियों पर लोहे की चद्दरें नहीं लगी थीं इन्हें गले सड़े खुरदरे और भूरे रंग के तख्तों से बन्द कर दिया गया था। और ये तख्ते इस जेल के निचले स्थान का द्योतक थे। वहां हाल में दण्डित कैदियों को रखा जाता था और जेल के प्रमुख हिस्से में स्थान खाली होने पर कैदियों को वहां भेज दिया जाता था। यह स्वयं बुत्यर्की जेल के भीतर बनी एक संक्रमण जेल थी।

और सन् १९४५ में किसी समय मैंने इसे एक बड़ा और महत्वपूर्ण स्थल समझा था। जब वे लोग हमें विशेष मण्डल द्वारा सजा सुनाये जाने के बाद इस गिरजाघर में ले गए थे (और यह इस कार्य के लिए उचित अवसर भी था ! —यह प्रार्थना का अच्छा समय था !) इस इमारत में हमें दूसरी मंजिल पर ले जाया गया (और तीसरी मंजिल को भी दीवार बनाकर अलग कर दिया गया था) और बीच के अठपहलू कमरे से हमें विभिन्न कोठरियों में भेजा गया। मेरी कोठरी दक्षिण पूर्व में थी।

यह एक विशाल चौकोर कोठरी थी और उसमें उस समय दो सौ कैदी बन्द थे। वे लोग सो रहे थे जैसा कि अन्य सब जगह होता है, यहां भी कैदी लोग तख्तों के ऊपर (और यहां इन तख्तों की केवल एक मंजिल ही थी), तख्तों के नीचे और बीच की खाली जगह में

टाईल के फर्श पर लेटे हुए थे। खिड़कियों पर लगे तख्ते ही घटिया किस्म के नहीं थे बल्कि अन्य सब वस्तुएं भी ऐसी थीं जो बुत्यर्की के सच्चे पुत्रों के लिए उपयुक्त नहीं थीं बल्कि इसके सौतेले पुत्रों के लिए थीं। पुस्तकें नहीं थीं, शतरंज नहीं थीं, चैकर्स भी नहीं थे। ऐसी कोई भी वस्तु कैदियों की इस अपार भीड़ को नहीं दी गई थी। अलमोनियम के कटोरे और लकड़ी की चमचें हर खाने के बाद इकट्ठा कर ली जाती थीं क्योंकि इस बात का भय था कि कहीं जल्दबाजी में ये चीजें भी कैदियों के साथ ही रेलगाड़ियों में सवार न हो जाएं। इतना ही नहीं वे इन सौतेले पुत्रों को मग देने में भी बेहद कंजूसी बरतते थे। खिचड़ी के बाद कटोरों को धो दिया जाता था और कैदियों को चाय नाम की वस्तु इन्हीं कटोरों में पीनी पड़ती थी। स्वयं अपनी तश्तरियों का अभाव उन लोगों को विशेष रूप से अखरता था, जिन्हें अपने परिवारों से खाने की चीजों का कोई पार्सल प्राप्त करने का मिश्रित वरदान प्राप्त हो जाता था (अपने अत्यन्त अल्पसाधनों के बावजूद, कैदियों के रिश्तेदार इस बात का विशेष प्रयास करते थे कि कैदियों की रेल गाड़ियां रवाना होने से पहले उनके पास खाने की चीजें पहुंचा दी जाएं।) स्वयं परिवारों को जेलों की परिस्थितियों के बारे में कोई शिक्षा प्राप्त नहीं हुई थी और उन्हें जेल के स्वागत कार्यालय से भी इस सम्बन्ध में कोई उपयोगी सलाह नहीं मिलती थी। और इस कारण से वे लोग प्लास्टिक की प्लेटें नहीं भेजते थे। क्योंकि केवल प्लास्टिक की प्लेटें ही कैदियों को दी जा सकती थीं। रिश्तेदार जानकारी न होने के कारण प्लास्टिक की प्लेटें न भेज कर कांच या धातु की प्लेटे भेजते थे। कैदियों के रिश्तेदार जो शहद, जैम, जमाया हुआ दूध भेजते थे उसे डिब्बे काट कर कोठरी के दरवाजे में बने छेद से अत्यन्त निर्ममतापूर्वक उलट दिया जाता था। अब कैदी के पास जो कुछ भी होता था उसमें वह उन चीज़ों को बटोरता था और इस गिरजाघर की कोठरियों में उसके पास कुछ भी नहीं होता था। इसका यह अर्थ होता था कि वह इन चीज़ों को स्वयं अपने हाथों में, अपने मुंह में, अपने रूमाल में, अपने कोट के पल्ले में लेता था—यह बात गुलाग में तो सामान्य थी लेकिन मास्को के मध्य में नहीं! और इतना ही नहीं इसके साथ ही जेल का सन्तरी कैदी को और जल्दी करने के लिए कहता रहता था मानो उसकी रेल गाड़ी छूटी जा रही हो। (सन्तरी कैदी को जल्दी-जल्दी ये चीजें बटोरने को इसलिये कहता था क्योंकि वह स्वयं इस ताक में लगा रहता था कि डिब्बों में बची सामग्री वह स्वयं चाट जायेगा।) गिरजाघर की कोठरियों में प्रत्येक वस्तु अस्थायी थी, यहां स्थायित्व की ऐसी कोई भ्रान्ति मौजूद नहीं थी जैसी पूछताछ की कोठरियों में और उन कोठरियों में मौजूद थी, जहां कैदी लोग सजा सुनाए जाने की प्रतीक्षा में बैठे रहते थे। ये कैदी लोग शिविरों में भेजे जाने वाले कीमे के अलावा अन्य कुछ नहीं होते, ये एक ऐसा अर्ध तैयार माल होते थे, जिसे आंशिक रूप से गुलाग के लिए तैयार किया जा रहा हो। कैदी लोग यहां केवल उतने दिन ही अनिवार्य रूप से रहते थे, जितने दिनों की आवश्यकता क्रासनाया प्रेसन्या में उनके लिए कुछ जगह निकालने के लिए होती थी। यहां उन्हें बस एक विशेषाधिकार प्राप्त था। दिन में तीन बार वे अपनी खिचड़ी लेने स्वयं जा सकते थे। (यहां ग्रिट नहीं दिया जाता था, लेकिन खिचड़ी दिन में तीन बार दी जाती थी और यह एक बड़ी दयापूर्ण बात थी क्योंकि यह खिचड़ी दिन में तीन बार मिलती थी, अपेक्षाकृत गर्म होती थी और पेट में कुछ अधिक देर तक ठहरती थी।) यह विशेषाधिकार इसलिए दिया गया था क्योंकि गिरजाघर में लिफ्ट नहीं थी—जिस प्रकार जेल के शेष भाग में थीं। और जेल कर्मचारी अपने को थका डालने के लिए तैयार नहीं थे। बड़ी-बड़ी

और भारी भरकम केतलियों को बहुत दूर से ग्रहाता पार कर लाना पड़ता और उसके बाद इन्हें खड़ी सीढ़ियों के ऊपर चढ़ाना पड़ता था। यह बहुत कठिन कार्य था ग्रौर कैदियों में यह काम करने की पर्याप्त शक्ति नहीं थी। पर इसके बावजूद वे लोग स्वेच्छा से इस काम के लिये जाने को तैयार रहते थे—बस उद्देश्य केवल यह था कि एक बार और हरे दालान में निकल सकें ग्रौर चिड़ियों को चहचहाते हुए सुन सकें।

गिरजाघर की कोठरियों की ग्रपनी हवा थी : इससे भावी संक्रमण जेलों के जबर्दस्त झोंकों और ग्रार्कटिक क्षेत्र के शिविरों की तेज हवाग्रों का ग्राभास मिल जाता था। गिरजाघर की कोठरियों में ग्राप किसी प्रकार काम चलाने की व्यवस्था करने के ग्रादी बनते—आप इस तथ्य के ग्रादी हो जाते कि ग्रापको सजा सुनाई जा चुकी है ग्रौर यह सब कोई मजाक नहीं हो रहा है। ग्राप इस तथ्य के ग्रादी हो जाते कि ग्रापके जीवन का नया दौर चाहे कितना भी क्रूर क्यों न हो आपके मस्तिष्क को इसे हर हालत में ग्रहण करना होगा, स्वीकार करना होगा। ग्रौर ग्राप इस निष्कर्ष पर बहुत कठिनाई से पहुंच पाते।

ग्रौर यहां पूछताछ की कोठरियों के तरह ग्रापके स्थायी साथी न होते—स्थायी साथियों के कारण पूछताछ की कोठरियां परिवार जैसा बन जाती थीं। यहां गिरजाघर की कोठरियों में रात-दिन लोगों को लाया ले जाया जाता। कभी एकाकी कैदी आता ग्रौर कभी दस दस की टोलियां। ग्रौर इसके परिणामस्वरूप कैदी लोग नीचे फर्श पर ग्रौर ऊपर तख्तों पर निरन्तर ग्रागे बढ़ते रहते ग्रौर ग्रपने किसी एक ही पड़ौसी के पास दो रात तक लेटे रहना एक दुर्लभ बात होती। आपको वहां जैसे ही कोई दिलचस्प व्यक्ति मिलता ग्रापको तुरन्त उससे बातें पूछनी शुरू कर देनी पड़ती क्योंकि ग्रन्यथा सदासर्वदा के लिए आप उसे खो सकते थे।

ग्रौर इसी प्रकार मैंने मोटर मकेनिक मेदवेदेव से बातचीत करने का अवसर खो दिया : जब मैंने उससे बात करनी शुरू की तो मुझे याद ग्राया कि सम्राट माइखेल ने उसके नाम का उल्लेख किया था। हां, वह माइखेल वाले मामले में ही फंसा था क्योंकि "रूस की जनता के नाम घोषणा पत्र" पढ़ने वाला वह पहला व्यक्ति था और यह घोषणा पत्र पढ़ने के बाद भी उसने पुलिस से इस बात की शिकायत नहीं की थी। मेदवेदेव को ग्रक्षम्य रूप से लज्जाजनक सीमा तक हल्की सजा सुनाई गई थी—तीन साल। ग्रौर ग्रनुच्छेद-५८ के ग्रन्तर्गत पांच वर्ष की कैद की सजा को बच्चों को दी जाने वाली सजा माना जाता था। इस बात से यह स्पष्ट होता था कि वे लोग इस निष्कर्ष पर पहुंच सके थे कि सम्राट सचमुच पागल था ग्रौर उन्होंने ग्रन्य लोगों को वर्ग हितों को ध्यान में रखते हुए हल्की सजाएं दी थीं। मैं मेदवेदेव से मुश्किल से यह पूछने जा ही रहा था कि वह इस पूरी घटना के बारे में क्या सोचता है कि उन लोगों ने उसे "उसकी सब चीजों के साथ" बाहर बुला लिया। कुछ परिस्थितियों के आधार पर हमने यह निष्कर्ष निकाला कि वे उसे रिहा करने के लिए ले गए हैं। ग्रौर इससे स्तालिनवादी क्षमादान की उन पहली ग्रफवाहों की पुष्टि हुई जो ग्रफवाहें उस गर्मी में हमारे कानों तक पहुंची थीं। वास्तव में यह क्षमादान किसी के लिए भी नहीं था, यह एक ऐसा क्षमादान था, जिसके बाद भी प्रत्येक जेल पहले की तरह ही खचाखच भरी रही—यहां तक कि कैदी लोग तख्तों के नीचे भी भरे पड़े रहे।

वे लोग मेरे पड़ौसी वयोवृद्ध शुट्जबंडलर को कैदियों की गाड़ी में सवार करने के लिए ले गए। (यहां विश्व सर्वहारा की भूमि में उन समस्त शुट्जबंडलरों को दस्सा थमा दिया

था जो पुरातनपंथी ग्रास्ट्रिया में दमघोट परिस्थितियों में पड़े हुए थे । और इसके बाद द्वीप-समूह के विभिन्न द्वीपों में इनका ग्रन्त हुग्रा ।) ग्रौर इसके ग्रलावा छोटे कद का कोयले जैसे काले बालों वाला तथा औरतों जैसी गहरे रंग की लाल आंखों वाला एक व्यक्ति भी था, जिसकी ग्रसाधारण रूप से चौड़ी ग्रौर लम्बी नाक थी ग्रौर जिसने उसके पूरे चेहरे को बर्बाद कर दिया था, इसे एक व्यंग्य चित्र बना दिया था । एक दिन तो वह ग्रौर मैं बराबर-बराबर चुपचाप लेटे रहे ग्रौर दूसरे दिन वह मुझसे बोला : "आपकी राय में मैं कौन हूं ?" वह रूसी भाषा सही ढंग से ग्रौर धाराप्रवाह बोलता था लेकिन उसका उच्चारण कुछ भिन्न किस्म का था । मैं हिचकिचाया । वह ट्रांसकाकेशस का निवासी जैसा लगता था । पर यह भी लगता था कि वह शायद ग्रार्मीनिया का हो । वह मुस्कराया : "मैं ग्रपने ग्रापको जार्जियावासी बता कर ग्रासानी से अपना काम चला लेता था । मेरा नाम याशा था । प्रत्येक व्यक्ति मुझ पर हंसता था । मैं मजदूर संघों का चन्दा इकट्ठा करता था ।" मैंने उसे ध्यान से देखा । वह सचमुच हास्यास्पद दिखाई पड़ता था : वह बहुत नाटा था, उसका चेहरा संतुलन के अभाव में बड़ा अजीब लगता था पर उसकी मुस्कराहट मित्रतापूर्ण थी । ग्रौर तभी ग्रचानक उसकी मुखाकृति कठोर हो उठी । उसकी आंखें ग्राधी भिच गईं और उसकी बेधक दृष्टि मुझे एक काली तलवार की तरह चीरने लगी ।

"मैं रूमानिया के जनरल स्टाफ का जासूसी अफसर हूं ! लैफ्टिनेंट व्लादिमीरेस्कू !"

मैं चौंक उठा—यह सचमुच भयंकर विस्फोट था । मेरी मुलाकात लगभग दो सौ झूठे जासूसों से हुई थी यानी इन लोगों को जबर्दस्ती जासूस घोषित कर दिया गया था और मैंने यह कल्पना नहीं की थी कि मेरी मुलाकात एक सच्चे जासूस से भी होगी । मैं सोचने लगा था कि सच्चे जासूस होते ही नहीं ।

उसकी ग्रपनी कहानी के ग्रनुसार वह एक ग्रभिजात वंश का था । तीन वर्ष की उम्र से ही यह निर्णय हो चुका था कि वह जनरल स्टाफ के ग्रधीन काम करेगा छह वर्ष की उम्र में वह जासूसी सेवा में स्कूल में भर्ती हुग्रा । बड़ा होने पर उसने अपनी भावी गतिविधि क्षेत्र के रूप में सोवियत संघ का चुनाव किया और यह चुनाव करते समय उसे इस बात से प्रेरणा मिली कि रूस में संसार भर में सबसे प्रबल जासूसी विरोधी संगठन मौजूद है । ग्रौर यहां इस कारण से काम करना विशेष रूप से कठिन है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे पर संदेह करता है ग्रौर ग्रब उसका निष्कर्ष था कि उसने यहां कोई बुरा काम नहीं किया, उसे अपने काम में काफी सफलता मिली । युद्ध से पहले के कई वर्ष उसने निकोलाएव में बिताये ग्रौर ऐसा लगता है कि उसने एक जहाज कारखाने पर रूमानिया की सेना के सफल ग्रधिकार की व्यवस्था कराई । इसके बाद वह स्तालिनग्राद ट्रैक्टर कारखाने में चला गया और उसके बाद यूराल भारी मशीनी कारखाने में । मजदूर संघों का चन्दा इकट्ठा करने के दौरान वह कारखाने के प्रमुख विभाग के सबसे बड़े ग्रफसर के कमरे में गया । भीतर जाकर दरवाजा बन्द कर लिया और उसकी मूर्खतापूर्ण मुस्कराहट तुरन्त उसके चेहरे से नदारद हो गई ग्रौर तलवार की नोक जैसी पैनी दृष्टि उभर आई : "पोनोमारएव [ग्रौर पोनोमारएव यूराल भारी मशीनी कारखाने में एक बिल्कुल भिन्न नाम का प्रयोग कर रहा था ।] हम लोग स्तालिनग्राद से ही तुम्हारा सुराग लगाने में लगे थे । तुमने वहां ग्रपनी नौकरी छोड़ दी । [वह स्तालिनग्राद ट्रैक्टर कारखाने में किसी बड़े पद पर था ।] ग्रौर यहां तुम एक जाली नाम से काम कर रहे हो । बस चुनाव तुम्हारे हाथ में है—स्वयं तुम्हारे अपने देश के लोग तुम्हें

गोली से उड़ा देंगे अथवा तुम हमारे लिए काम करो।" पोनोमारएव ने उन लोगों के लिए काम करना पसन्द किया और यह सचमुच उन आवश्यकता से अधिक सफल सुअरों की शैली के अनुरूप काम था। यह लैफ्टिनेंट उस समय तक पोनोमारएव के काम का निरीक्षण करता रहा जब तक स्वयं उसका तबादला मास्को में नियुक्त जर्मन जासूसी अफसर के अधिकार क्षेत्र में नहीं हो गया। इस जर्मन जासूसी अफसर ने उसे पोदोलस्क में अपनी विशेष रुचि के कार्य के लिए भेज दिया। जैसाकि मुझे व्लादिमीरेस्कू ने समझाया, जासूसी अफसरों और तोड़फोड़ करने वालों को सर्वांगपूर्ण प्रशिक्षण दिया जाता है। लेकिन उनमें से प्रत्येक का अपना विशिष्ट क्षेत्र होता है। और व्लादिमीरेस्कू का विशेष क्षेत्र पैराशूट की प्रमुख डोरी को भीतर से काटने का था। पोदोलस्क में पैराशूट के गोदाम में उसकी मुलाकात गोदाम की गारद के प्रमुख अधिकारी से हुई (वह कौन था? यह किस किस्म का आदमी था?) जिसने व्लादिमीरेस्कू को रात के समय आठ घंटे के लिए गोदाम में घुसा दिया। अपनी सीढ़ी के सहारे पैराशूट के ढेरों के ऊपर चढ़कर और इन ढेरों को उलटे-पुलटे बिना ही, व्लादिमीरेस्कू गुथी हुई प्रमुख डोरी को खींच कर बाहर निकाल लेता और एक विशेष कैंची की सहायता से इसके अधिकांश हिस्से को काट देता और थोड़ा सा हिस्सा ही इसमें जुड़ा रहता ताकि यह ऊपर आकाश में टूटे। व्लादिमीरेस्कू ने इसी एक रात के लिए कई वर्षों तक तैयारी की थी और अब, अन्धाधुन्ध काम में लगे रह कर उसने आठ घंटे की इस अवधि में स्वयं उसके विवरण के अनुसार, २,००० से अधिक पैराशूटों की डोरियां काट दीं। (प्रत्येक पैराशूट की डोरी काटने के लिए १५ सैकिंड का समय?) "मैंने एक पूरी सोवियत पैराशूट डिवीजन को नष्ट कर डाला!" उसकी चेरी जैसी लाल आंखें द्वेषभाव से चमक उठीं।

गिरफ्तारी के बाद पूरे आठ महीने तक वह बयान देने से इनकार करता रहा—वह बुत्यर्की में कैद था और उसने अपनी जबान से एक शब्द भी नहीं निकाला। "और क्या उन लोगों ने तुम्हें यातनाएं नहीं दीं?" "नहीं!" उसने इस नेकार अपने होंठ सिकोड़े मानो वह एक गैर सोवियत नागरिक के मामले में इस बात को सम्भव ही नहीं मानता। (अपने देश के लोगों को खूब मारो पीटो और विदेशी लोग आपसे और भयभीत हो उठेंगे! लेकिन वास्तविक जासूस सोने की खान होता है! आखिरकार, हमें अपने किसी जासूस को वापस लेने में उसकी आवश्यकता हो सकती है।) वह दिन भी आया जब उन्होंने उसे अखबार दिखाये: रूमानिया ने हथियार डाल दिये थे; ठीक है, अब बयान दो। वह फिर भी मौन रहा: अखबारों को जालसाजी से तैयार किया जा सकता था। उन लोगों ने उसे रूमानिया के जनरल स्टाफ का एक आदेश दिखाया: सन्धि की शर्तों के अन्तर्गत रूमानिया के जनरल स्टाफ ने अपने समस्त जासूसों को हुक्म दिया था कि वे अपना कार्य बन्द कर दें और आत्मसमर्पण कर दें। इसके बाद व्लादिमीरेस्कू ने पूरी निष्ठुरता के साथ अपना बयान दिया और अब जेल की कोठरी में धीरे-धीरे गुजरने वाले दिन की उदासीनता को ध्यान में रखते हुए इस बात का कोई महत्व नहीं था कि उसने मुझे अपने बयान का एक हिस्सा बता दिया। उन लोगों ने उसके ऊपर मुकदमा ही नहीं चलाया। उन्होंने उसे सजा भी नहीं सुनाई (आखिरकार, वह हमारा अपना आदमी नहीं था!) "मैं एक पेशेवर आदमी हूं—और अपनी मृत्यु के क्षण तक यही रहूंगा। और वे मुझे बर्बाद नहीं करना चाहेंगे।"

"लेकिन तुमने अपनी असलियत मुझे बता दी है," मैं बोला। "मैं तुम्हारा चेहरा याद रख सकता हूं। जरा कल्पना करो कि किसी दिन कहीं सार्वजनिक स्थान पर मेरी तुम्हारी

मुलाकात हो जाए।"

"यदि मैं इस बात से आश्वस्त हो जाऊं कि तुमने मुझे नहीं पहचाना है, तभी तुम जीवित रहोगे। यदि तुम मुझे पहचान लोगे तो मैं तुम्हें मार डालूंगा अथवा तुम्हें अपने लिए काम करने के लिए बाध्य करूंगा।"

अपनी कोठरी के पड़ौसी से अपने सम्बन्ध बिगाड़ने की उसकी जरा भी इच्छा नहीं थी। उसने यह बात बहुत सरल ढंग से और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कही थी। मैं सचमुच इस बात से आश्वस्त था कि वह किसी व्यक्ति को गोली मार देने अथवा गला काट देने से एक क्षण के लिए भी नहीं हिचकिचाएगा।

कैदियों के इस लम्बे इतिहास में हमारी मुलाकात फिर कभी ऐसे आदमी से नहीं होगी। मैंने जेल, शिविर और निष्कासन में ११ वर्ष का जो समय बिताया है उसमें मेरी मुलाकात केवल एकमात्र ऐसे जासूस से हुई और अन्य लोगों की मुलाकात तो किसी एक से भी नहीं हुई। और हमारे बड़ी संख्या में प्रचारित होने वाले कौमिक प्रकाशन लड़कों को यह विश्वास करने का झांसा देते हैं कि सुरक्षा संगठन केवल ऐसे लोगों को ही गिरफ्तार करते हैं।

गिरजाघर की जेल में परिवर्तित कोठरी में चारों ओर नजर डालकर यह समझ लेना बहुत आसान था कि सुरक्षा संगठन सबसे पहले नवयुवकों को ही गिरफ्तार कर रहे थे। युद्ध समाप्त हो चुका था और हम ऐसे किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करने की एयाशी कर सकते थे जिसकी ओर अंगुली उठाई गई हो: अब सैनिकों के रूप में मोर्चों पर लड़ने के लिए नौजवानों की आवश्यकता नहीं रह गई थी। उनका कहना था कि सन् १९४४ और १९४५ में एक तथाकथित "लोकतंत्रीय पार्टी" छोटी (मास्को प्रान्त) लूब्यांका की कोठरियों से गुजर चुकी थी। अफवाहों के अनुसार एक पूरी पार्टी की सदस्य संख्या कोई पचास थी और ये सब लड़के ही थे। इस पार्टी की अपनी नियमावली थी और सदस्यता के कार्ड भी इसके अपने थे। इस पार्टी के सदस्यों में सबसे अधिक उम्र का लड़का मास्को के एक स्कूल में दसवीं कक्षा में पढ़ता था और वही इसका "महासचिव" था। युद्ध के अन्तिम वर्ष में भी विद्यार्थियों को जेलों में यदाकदा देखा जा सकता था। स्वयं मेरी मुलाकात इन लोगों से कुछ जेलों में हुई। वैसे स्वयं मैं भी अधिक उम्र का नहीं था पर ये लोग तो बहुत कम उम्र थे।

चुपचाप, अनजाने में ही यह न जाने क्या वस्तु हमारे ऊपर हावी हो गई थी! जब कि हम—मैं, मेरे साथी प्रतिवादी, और हमारी उम्र के अन्य नवयुवक—चार वर्ष से मोर्चों पर लड़ रहे थे, यहां पीछे एक पूरी नई पीढ़ी तैयार हो गई थी। और क्या यह बात बहुत पुरानी थी कि स्वयं हम विश्वविद्यालय के बरामदों के फर्श पर चलते समय गर्व का अनुभव करते थे, स्वयं को सबसे कम उम्र और देश भर में ही नहीं बल्कि संसार भर में सबसे अधिक बुद्धिमान मानते थे? और तभी अचानक दुर्बल और पीले पड़ चुके युवकों ने जेलों की कोठरियों के ईंटों के फर्श को पार किया और हमारे पास अत्यन्त क्रोध से पहुंचे और हमें अत्यन्त आश्चर्यजनक रूप से यह जानकारी मिली कि अब हम सबसे कम उम्र और सबसे अधिक बुद्धिमान नहीं रह गये हैं—यह स्थान उन लोगों ने ले लिया है। लेकिन मैं इस बात पर क्रोधित नहीं हुआ। अब तक मैं इस स्थिति में पहुंच चुका था कि इन लोगों के लिये थोड़ी-सी जगह बनाने के लिये स्वयं कुछ सरक जाने में प्रसन्नता का अनुभव करता। मैं अच्छी तरह से जानता था कि प्रत्येक व्यक्ति से तर्क करने का इन लोगों का कैसा जोश है, यह

प्रत्येक बात को खोज निकालने के लिये कितने आतुर हैं। मैं उनके इस गर्व से भी परिचित था कि उन लोगों ने एक अच्छे काम को अपने हाथ में लिया है और वे जो कुछ कर चुके थे उसके लिये उन्हें कोई पश्चाताप नहीं था। जब मैं इन लड़कों के छोटे-छोटे चेहरों पर आत्म-सम्मोहन और बुद्धिमत्ता की छाप से युक्त छोटे-छोटे चेहरों पर जेल आ जाने के गर्व की आभा देखता तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते।

एक महीने पहले, बुत्यर्की जेल की एक अन्य कोठरी में, जो एक प्रकार से अस्पताल की कोठरी के रूप में भी प्रयुक्त होती थी मैंने तख्तों के बीच की जगह में अपना पहला कदम रखा था और अभी तक मैं पूरी कोठरी में कोई खाली स्थान खोज निकालने में सफल नहीं हुआ था। तभी मैंने देखा कि मेरी ओर एक पीला दुर्बल युवक जिसके चेहरे पर यहूदियों जैसी कोमलता थी और जिसने गर्मी के मौसम के बावजूद एक सैनिक का जर्जर ओवरकोट पहन रखा था और जिसमें गोलियों के न जाने कितने निशान बने थे मेरी ओर आया और उसकी मुझसे बहस करने की आतुरता व्यग्रता की सीमा तक प्रकट हो रही थी। इस लड़के का नाम बोरिस गामेरोव था। उसने मुझसे सवाल पूछने शुरू किये। वार्तालाप आगे बढ़ा। एक ओर हमारी जीवनी सम्बन्धी सवाल थे तो दूसरी ओर राजनीतिक विषयों की चर्चा। मैं यह तो नहीं कह सकता कि ऐसा क्यों हुआ पर मुझे अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति रूजवेल्ट की एक प्रार्थना का स्मरण हो आया, जो हमारे समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई थी। और मैंने वह बात कही जो मुझे इसका स्वयं सिद्ध मूल्यांकन लगता था :

"हां, वह सचमुच वंचना है।"

और तभी अचानक उस युवक के पीले माथे पर सलवटें पड़ गईं। उसके पीले होंठ सिकुड़ आये और ऐसा लगा कि वह अपने आपको जबर्दस्त संघर्ष के लिये तैयार कर रहा है और उसने सीधा मुझसे यह प्रश्न किया : "क्यों ? आप इस संभावना को क्यों स्वीकार नहीं करते कि कोई राजनीतिक नेता पूरी निष्ठा से ईश्वर में विश्वास कर सकता है ?"

और बस इसके अलावा कुछ नहीं कहा गया ? लेकिन यह प्रहार किस ओर से हुआ था ! सन् १९२३ में जन्मे एक लड़के के मुंह से ये शब्द सुनना कैसा लगता था ? मैं बड़ी दृढ़ता से उसे उत्तर दे सकता था, लेकिन जेल में मेरी निश्चितता को पहले ही समाप्त कर दिया था और प्रमुख बात यह थी कि हमारे भीतर कोई शुद्ध, पवित्र भावना मौजूद है, हमारे अन्य समस्त विश्वासों के बावजूद वह हमारे भीतर विद्यमान है और तभी मुझे लगा कि मैंने अपने आत्मविश्वास के आधार पर ये बातें नहीं कही थीं बल्कि ये बातें एक ऐसे विचार पर आधारित थीं, जिसे बाहर से मेरे मस्तिष्क पर आरोपित कर दिया गया था। और इस कारण से मैं उसे उत्तर नहीं दे सका और मैंने केवल यही पूछा : "क्या तुम ईश्वर पर विश्वास करते हो ?"

"हां, क्यों नहीं," उसनें अत्यन्त शांतिपूर्वक जवाब दिया।

हां, सचमुच ? हां सचमुच···हां, हां। युवक कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य अन्य सब लोगों के आगे चल रहे थे—सर्वत्र, लेकिन केवल एन० के० जे० बी० ने ही यह देखा था।

अपनी छोटी उम्र के बावजूद, बोरया गामेरोव ने केवल एक टैंक तोड़ यूनिट में सारजेंट के रूप में ही काम नहीं किया था बल्कि उसके फेफड़ों में घाव भी आए थे और ये घाव अभी तक ठीक नहीं हुए थे और इसके परिणामस्वरूप उसे तपेदिक हो गया था। इन टैंक तोड़ यूनिटों को जिन हथियारों से लैस किया गया था उन्हें सैनिकों ने "अलविदा, मातृ-

भूमि !" नाम दे दिया था। घायल होने के बाद गामेरोव को सेना से स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों के आधार पर सेवा मुक्त कर दिया गया था और इसके बाद वह मास्को विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग में भर्ती हो गया था। और इस प्रकार उसके व्यक्तित्व में दो धाराएं बहुत गहराई से मिली हुई थीं। एक धारा उसके सैनिक जीवन की थी और दूसरी धारा युद्ध के अन्त के उस विद्यार्थी जीवन से उत्पन्न हुई थी जिसे किसी भी रूप में मूर्खतापूर्ण और मृत नहीं कहा जा सकता था। जो लोग भविष्य के बारे में सोचते और बहस करते थे उन लोगों का एक समुदाय बन गया था (यद्यपि किसी ने उन्हें यह करने का निर्देश नहीं दिया था), और सुरक्षा संगठनों की अनुभवी आंखों ने इनमें से तीन को पहचान लिया और गिरफ्तार कर लिया। (सन् १९३७ में गामेरोव के पिता को जेल में मार डाला गया था या गोली से उड़ा दिया गया था और उनका पुत्र भी उसी मार्ग पर आगे बढ़ रहा था। पूछताछ के दौरान उसने अत्यन्त भावनापूर्वक तरीके से स्वयं कुछ अपनी कविताएं पूछताछ अधिकारी को सुनाई थीं और मुझे इस बात का अत्यन्त खेद है कि मैं इनमें से एक भी कविता को याद नहीं रख सका और आज इन्हें प्राप्त करने का कोई तरीका नहीं है अन्यथा मैं उनका यहां अवश्य उल्लेख करता।)

इसके बाद कई महीनों तक मेरी मुलाकात अकस्मात उक्त तीनों सहप्रतिवादियों से होती रही : बुत्यर्की जेल की कोठरी में ही मेरी मुलाकात व्याचेस्लाव डी०—से हुई और जब कभी युवकों की गिरफ्तारी होती है तो उस जैसा युवक अवश्य गिरफ्तार होता है : उसने अपनी टोली के भीतर बहुत ही दृढ़ दृष्टिकोण और रवैया अपनाया था लेकिन पूछताछ के दौरान वह आसानी से टूट गया। अपने अन्य साथियों की तुलना में उसे हल्की सजा मिली—पांच वर्ष—और ऐसा लगता था मानो वह अपने मन में चुपचाप यह सोचता रहता था कि उसका प्रभावशाली पिता उसे जेल से छुड़वा लेगा।

और इसके बाद बुत्यर्की के गिरजाघर में मेरी मुलाकात जार्जी इंगाल से हुई, जो इन तीनों युवकों में सबसे अधिक उम्र का था। अपनी युवावस्था के बावजूद वह सोवियत लेखक संघ का उम्मीदवार सदस्य था। उसकी लेखन शैली बड़ी साहसपूर्ण थी। उसकी शैली में आपको अत्यन्त तीखे विरोध के दर्शन होते थे। यदि वह राजनीतिक दृष्टि से शांति कायम करने के लिए तत्पर हो जाता तो वह साहित्य की प्रभावशाली और नई विधाओं के मार्ग पर आगे बढ़ सकता था। वह अब तक एक उपन्यास लिख चुका था जो बेबसी के बारे में था। लेकिन इस आरम्भिक सफलता ने उसे कायर नहीं बना दिया था और अपने शिक्षक यूरी तिनियानोव के अन्तिम संस्कार के समय उसने अपने भाषण में स्पष्ट रूप से यह बात कही कि तिनियानोव को सताया गया था। और उसका यह कथन ८ वर्ष की कैद की सजा दिलाने के लिए पर्याप्त था।

और तभी गामेरोव भी हमारे पास आ पहुंचा और क्रासनाया प्रेसन्या जाने की प्रतीक्षा करते समय मुझे इन दोनों के संयुक्त दृष्टिकोण का सामना करना पड़ा। मेरे लिए यह मुकाबला आसान नहीं था। उस समय मेरी निष्ठा उस विश्व दृष्टिकोण के प्रति थी, जिसमें किसी भी नये तथ्य को स्वीकार करने अथवा किसी भी नई विचारधारा का उसके लिए कोई नया नामकरण किए बिना मूल्यांकन करने की क्षमता नहीं होती। और यह नामकरण पहले से मौजूद शब्दावली के माध्यम से ही किया जाना चाहिए। इसे "क्षुद्र बुर्जुआ वर्ग की शंका-

पूर्ण दुरंगी चाल" अथवा "वर्ग भावना से वंचित बुद्धिवादी वर्ग का संघर्षशील हेत्वाभास" कहा जा सकता था। मुझे यह स्मरण नहीं है कि इंगाल और गामेरोव ने मेरी मौजूदगी में मार्क्स की आलोचना की हो। लेकिन मुझे यह स्मरण है कि उन्होंने किस प्रकार लेव तोल्स्तोए पर प्रहार किया और किस दिशा से यह हमला शुरू हुआ! तोल्स्तोये चर्च अथवा संगठित धर्म को अस्वीकार करते थे? लेकिन वे चर्च की रहस्यात्मक और संगठन सम्बन्धी भूमिका के महत्व को समझने में असफल रहे। उन्होंने बाइबिल के उपदेशों को ठुकरा दिया था? अधिकांशतया आधुनिक विज्ञान की शिक्षाओं के विपरीत नहीं है। यहां तक कि संसार की सृष्टि सम्बन्धी बाइबिल की आरम्भिक पंक्तियां भी आधुनिक विज्ञान के विपरीत नहीं हैं। उन्होंने राज्य को अस्वीकार किया? लेकिन राज्य के बिना सर्वत्र अव्यवस्था होगी। उन्होंने एक ही व्यक्ति के जीवन में मानसिक और शारीरिक श्रम के संगम का उपदेश किया? लेकिन यह क्षमताओं और प्रतिभाओं को विवेकहीन तरीके से एक ही स्तर पर ला पटकने का काम है। और अन्ततः, जैसाकि हम स्तालिन की हिंसा के रूप में देखते हैं, एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व सर्वशक्तिमान बन सकता है, और इसके बावजूद तोलसतोए इस विचार की खिल्ली उड़ाते थे।[४]

इन लड़कों ने स्वयं अपनी कविताएं मुझे सुनाईं और यह कहा कि मैं भी अपनी कविताएं उन्हें सुनाऊं और उस समय तक मैंने कोई कविता लिखी ही नहीं थी। वे पास्तरनेक का विशेष रूप से अध्ययन करते थे और उसकी प्रशंसा के पुल बांधते थे। एक बार मैंने "मेरी बहन का जीवन" शीर्षक कविता पढ़ी थी और मुझे यह पसन्द नहीं आई थी। मुझे यह कविता बड़ी जटिल, अमूर्त और सामान्य जीवन से बहुत दूर दिखाई पड़ी थी। लेकिन इन लोगों ने मुझे लैफ्टिनेंट शमित की अपने मुकदमे की अन्तिम अभियुक्ति का काव्यांश सुनाया और इसने बड़ी गहराई से मेरा हृदय छू लिया क्योंकि यह हम लोगों पर भी लागू होती थी :

३० वर्ष तक मैंने पाला पोसा
अपनी मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम,
और मैं तुम्हारी उदारता की
न तो अपेक्षा करता हूं और न ही मुझे इसका अभाव खटकेगा।

गामेरोव और इंगाल के मन में भी ठीक यही बात दृढ़ता से बैठी हुई थी : हमें तुम्हारी उदारता की आवश्यकता नहीं है! जेल में डाल दिये जाने का हमें पश्चाताप नहीं है; बल्कि हमें इस पर गर्व है। (लेकिन ऐसा कौन सा व्यक्ति है, जो जेल में निराश नहीं होता, पस्त नहीं होता? कुछ ही महीने बाद इंगाल की युवा पत्नी ने उसकी भर्त्सना की और सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। अपने क्रांतिकारी रुझान के कारण गामेरोव की तो अभी तक कोई प्रेमिका भी नहीं थी।) क्या यहीं, जेल की इन कोठरियों में ही महान् सत्य के दर्शन नहीं होते? कोठरी की परिधि बड़ी सीमित थी, लेकिन क्या स्वतंत्रता इससे कहीं अधिक सीमित नहीं थी? क्या स्वयं हमारे अपने देशवासी ही, यातनाओं और वंचना का कष्ट भोगते हुए हमारे बराबर सोने के तख्तों के नीचे और कोठरी के फर्श पर नहीं पड़े हुए थे?

अपने समस्त देश के साथ मिलकर उठ खड़ा न होना
कहीं अधिक कठोर बात होती,
और मैंने जिस मार्ग का अनुसरण किया है

मुझे उसके लिए कोई पश्चाताप नहीं है।

इन कोठरियों में कैद वे युवक जिन्हें दण्डसंहिता के राजनीतिक अपराधों सम्बन्धी अनुच्छेदों के अन्तर्गत दण्डित किया गया था, देश के सामान्य युवक नहीं थे बल्कि उनके और सामान्य युवकों के बीच एक बहुत बड़ी खाई थी। उन वर्षों में हमारे अधिकांश युवकों के सामने "विश्रृंखलित हो जाने," मोह भंग हो जाने, उदासीनता, सुखपूर्ण जीवन से प्रेम करने लगने की संभावनाएं मौजूद रहती थीं और इसके बाद, संभवतः एक बार फिर उन्हें उस छोटी सी सुखद घाटी से एक नई चोटी पर चढ़ने का कटु और श्रम साध्य कार्य करना पड़ता था—सम्भवतः और २० वर्ष बाद? लेकिन सन् १९४५ के युवा कैदियों ने, जिन्हें अनुच्छेद-५८-१० के अन्तर्गत दण्डित किया गया था, उदासीनता की समस्त भावी खाई को एक ही कूद में पार कर लिया था और वे कुल्हाड़े के नीचे बड़े गर्व से अपना सिर उठाये खड़े थे।

बुत्यर्की के गिरजाघर में मास्को के उन विद्यार्थियों ने जिन्हें सजाएं सुनाई जा चुकी थीं और जो प्रत्येक वस्तु से अलग और विमुख हो चुके थे, एक गीत लिखा था और गोधूली से पहले अपनी अनिश्चित आवाज में यह गीत गाते थे :

दिन में तीन बार हम खिचड़ी के लिए जाते हैं,
शाम का समय गीतों में बीत जाता है,
जेल की निषिद्ध सुई से
हम मार्ग के लिए अपने लिए बोरे सीते हैं
अब हमें अपने बारे में कोई चिन्ता नहीं है,
हमने हस्ताक्षर किए—ताकि सब कुछ जल्दी निबट जाएं!
और हम यहां फिर कब वापस आएंगे
सुदूर साइबेरिया के शिविरों से?

हे भगवान, हम इस समस्त घटनाक्रम के मुख्य मुद्दे की कैसे उपेक्षा कर सके? जब हम अग्रिम मोर्चों पर कीचड़ में चल रहे थे, जब हम तोपों के गोलों से बने गड्ढों में शत्रु की गोलाबारी से बचने के लिए छिप रहे थे और अपना वार करने के लिए झाड़ियों के ऊपर दूरबीनें निकाल कर शत्रु की टोह ले रहे थे, पीछे स्वदेश में एक नई पीढ़ी तैयार हो गई थी और आगे बढ़ चली थी। और क्या इस पीढ़ी ने एक दूसरी दिशा में आगे बढ़ना शुरू नहीं किया था? एक ऐसी दिशा में जिसमें आगे बढ़ने में सफलता नहीं मिली और जिस दिशा में आगे बढ़ने का हम साहस भी नहीं कर सकते थे? इन लोगों का पालन-पोषण हमारी तरह नहीं हुआ था।

हमारी पीढ़ी वापस आएगी—अपने हथियारों को वापस लौटा कर, बीरों के तमगों को अपनी छातियों पर लगाकर और युद्ध की कहानियों को बड़े गर्व से सुनाते हुए हमारी पीढ़ी वापस लौटेगी। और हमारे छोटे भाई हमारी ओर घृणाभाव से भर कर देखेंगे : ओह मूर्ख निकम्मे लोग!

भाग २ समाप्त

अनुवादक की टिप्पणी

अनुवादक की इस टिप्पणी का उद्देश्य स्वयं लेखक की टिप्पणियों और शब्दावली का स्थान लेना नहीं है, जो स्वयं अपने में बहुत विस्तृत तथा उपयोगी संदर्भ सामग्री करती हैं। अनुवादक की टिप्पणी में इस पुस्तक और इस पूरे ग्रन्थ के बारे में न्यूनतम तथ्य देने का प्रयास किया गया है, जिनके आधार पर पाठक सही परिप्रेक्ष्य में घटनाओं को समझ सके। इसके अलावा इसमें विशेष रूसी शब्दावली के कुछ विशिष्ट पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक के अन्त में जो शब्दावली दी गई है, वह बहुत उपयोगी है। इसमें सूक्ष्म रूप से व्यक्तियों, संस्थाओं और उनके संक्षिप्त नामों, राजनीतिक आंदोलनों और पुस्तक में वर्णित घटनाओं के बारे में बताया गया है।

रूसी भाषा में इस पुस्तक का शीर्षक आर्कीपेलाग गुलाग दिया गया है और इसकी रूसी भाषा की लयात्मकता को अनुवाद में उतार पाना सम्भव नहीं था।

इस नाम से जो तस्वीर सामने आती है, वह एक ऐसे विशाल "देश" की है, जिसके "निवासियों" की संख्या लाखों में है और जो अनेक द्वीपों से मिलकर निर्मित है। इनमें से कुछ द्वीप किसी रेलवे स्टेशन की हिरासत कोठरी जैसे सूक्ष्म द्वीप हैं, तो कुछ अन्य पश्चिम यूरोप के अनेक देशों जितने विशाल हैं। और ये देश एक दूसरे देश—सोवियत संघ—के भीतर विद्यमान हैं। यह द्वीपसमूह दंड-संस्थाओं के विशाल जाल से निर्मित है और इसके अन्तर्गत पुलिस के अत्याचारों और आतंक फैलाने में सहायक बनने वाले उन संगठनों का भी समावेश है, जिनका लेखक की रचना-प्रक्रिया की अवधि में समस्त सोवियत जीवन से सम्बन्ध था। गुलाग, श्रम से सुधार शिविरों के प्रमुख प्रशासन का संक्षेप है। यह प्रमुख प्रशासन उक्त शिविरों के अधिकांश भाग का निरीक्षण और संचालन करता था।

लेखक को अगस्त १९७३ की एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना के कारण इस पुस्तक को प्रकाशित करने का निर्णय लेना पड़ा : लेनिनग्राद की एक महिला, जिसे लेखक ने इस पुस्तक की पांडुलिपि का एक हिस्सा सुरक्षित रखने के लिए दे रखा था, सोवियत सुरक्षा अफसरों द्वारा लगातार एक सौ बीस घंटे की निद्राविहीन पूछताछ के बाद इस यातना को बर्दाश्त नहीं कर सकीं और उन्होंने वह स्थान बता दिया जहां पांडुलिपि का वह अंश छिपाकर रखा गया था और इस प्रकार पांडुलिपि का वह भाग पुलिस के हाथ में पहुंच गया। इसके बाद अत्यन्त निराशा और दुख के कारण एक महिला ने आत्महत्या कर ली। लेखक ने इस पुस्तक के पाठ के आरम्भ में इन पंक्तियों में इसी घटना का उल्लेख किया है : "अब जबकि यह पुस्तक राज्य सुरक्षा संगठन के हाथों में पड़ गई है, मेरे समक्ष इसे तुरन्त नेकाशित करने के अलावा दूसरा विकल्प

नहीं रह गया है।"

गुलाग द्वीपसमूह एक अत्यन्त विस्तृत और विराट रचना है, जिसके सात भागों को तीन खंडों में विभाजित किया गया है—प्रस्तुत पुस्तक पहला खंड है और इसमें दो भाग दिए गये हैं, जो पूरे ग्रन्थ का लगभग तिहाई हिस्सा है।

रूस के एक साहित्यकार के रूप में सोल्झेनित्सीन की रचना प्रक्रिया का एक प्रमुख पहलू यह है कि उन्होंने शिविरों, जेलों, पुलिस और अपराधियों के संसार में प्रयुक्त भाषा और शब्दावली से स्वयं अपने देशवासियों और विदेशियों को भी परिचित कराया है, और इस प्रकार रूस की साहित्यिक भाषा का नवीकरण और विस्तार किया है। लाखों सोवियत नागरिक कैद होने के बाद एक पूरी नई शब्दावली से परिचित हुए। लेकिन यह सोल्झेनित्सीन द्वारा इसका प्रयोग किए जाने तक रूसी साहित्य में नहीं पहुंची। और जब सोल्झेनित्सीन ने इस भाषा का प्रयोग किया, तो वे लोग भौंचक्के रह गये, जो अब तक इस भाषा और इन परिस्थितियों से अपरिचित थे।

गुलाग की दुनिया में एक विशेष किस्म का पुलिस अफसर होता था, जिसका खास महत्व था। यह अफसर था "ओपेरुपोलनोमोचेन्नी"—जिसे संक्षेप में "ओपर" कहा जाता था। शाब्दिक अर्थों में इसका अर्थ "कारवाई के बारे में सर्वाधिकार प्राप्त"—यहां कारवाई सुरक्षा सम्बन्धी कारवाई ही है, अक्सर इसका प्रयोग बलात् श्रम शिविरों में होता था और इन शिविरों में इस पुलिस अफसर को असीम सत्ता प्राप्त थी, क्योंकि वह आन्तरिक मामलों के मन्त्रालय के अधीन संचालित एक संस्था में राज्य सुरक्षा संगठन का प्रतिनिधित्व करता था। कैदी लोग उसे "कुम" नाम से पुकारते थे, जिसे आप एक ऐसा व्यक्ति कह सकते हैं, जो स्वीकारोक्ति कराता हो। शिविर के सब मुखबिरों का यही प्रमुख अफसर होता था और उसके ऊपर सब कैदियों के राजनीतिक निरीक्षण की भी जिम्मेदारी रहती थी। इस पूरी पुस्तक में इस अफसर को "सुरक्षा कारवाई अफसर" अथवा "सुरक्षा अफसर" कहा गया है।

रूस के चोर मामूली चोर नहीं हैं, बल्कि वे अपराधियों के संसार की एक समस्त संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। और इस पुस्तक में इनके ऊपर काफी ध्यान दिया गया है और उनका विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। रूसी भाषा में "वोरी" शब्द का अर्थ चोर होता है। इन्हें "ब्लातनिए" (बहुवचन) भी कहा जाता है। "ब्लातनोई" पुरुषवाचक एकवचन है और इसका प्रयोग विशेषण के रूप में भी किया जाता है। इसका अर्थ एक ऐसे व्यक्ति या वस्तु से होता है, जो अपराधियों के संसार से सम्बन्धित हो अथवा जिसका चोरों की बिरादरी से सम्बन्ध हो अथवा जो इन चोरों के नियमों का पालन करता हो।

रूसी चोरों के लिये "ब्लातारी" और "उर्की" शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। इन्हें "स्वेतनिए" के नाम से भी पुकारा गया है। इसका अर्थ "सवर्ण" होता है और "पोलुत स्वेतनोई" का अर्थ "अर्ध-सवर्ण" अथवा "दोगला" होता है। इस शब्द का प्रयोग एक ऐसे गैरचोर के लिए किया जाता है, जिसने चोरों के तौरतरीके अपना लिए हों।

जहां कहीं इस पुस्तक में ये और ऐसे ही अन्य शब्द प्रयुक्त हुए हैं, उन्हें अनुवाद में पर्याप्त स्पष्ट कर दिया गया है। लेकिन जहां कहीं "चोर" शब्द का प्रयोग हुआ है, उसका अर्थ "ब्लातनिए" बिरादरी के सदस्य से रहा है।

शिविरों में कैदियों का विभाजन दो श्रेणियों में किया गया है। एक श्रेणी के अन्त-

गंत वे कैदी आते हैं, जो प्रतिदिन सामान्य कार्य के लिये शिविर से बाहर जाते थे—और उसके परिणामस्वरूप अन्ततः उनकी मृत्यु हो जाती थी—और दूसरी श्रेणी के अन्तर्गत वे कैदी आते थे, जिन्हें शिविर के अहाते में ही "आरामदेह" काम दिये जाते थे—जैसे दफ्तर का काम, अस्पताल के अर्दली, रसोइए, रोटी काटने वाले, भोजन कक्ष के सहायक आदि। ये काम करने के कारण इन लोगों की जीवित बचे रहने की कहीं अधिक सम्भावना रहती थी। दूसरे कैदी घृणाभाव से इन कैदियों को "प्रियदुर्की" नाम से पुकारते थे। इसका सामान्य अर्थ एक ऐसा व्यक्ति होता है, जो सामान्य कार्य से बचता हो। इस पुस्तक में इन कैदियों के लिये "ट्रस्टी" अथवा 'शिविरों के अधिकारियों के भरोसे के आदमी" शब्दों का प्रयोग किया गया है।

जो पाठक रूस के चोरों और शिविरों में प्रयुक्त भाषा का और अधिक अध्ययन करना चाहते हों, वे "सोवियत प्रिज़न कैम्प स्पीच, ए सरवाइवर्स ग्लौसरी" का उपयोग कर सकते हैं। इस शब्दावली का संकलन मियरगालर और हारलन ई० मारक्वीज ने किया है और इसे १९७२ में यूनीवर्सिटी आफ विस्कोंसिन प्रैस ने प्रकाशित किया है।

मैं उन सब लोगों का धन्यवाद करना चाहता हूं, जिन्होंने इस अनुवाद में मूल्यवान सहायता दी है। पर इसके बावजूद यदि अनुवाद में कुछ त्रुटियां रह गई हैं, तो इसकी जिम्मेदारी केवल मेरी है।

टी० पी० डब्ल्यू०

शब्दावली

नाम

अबाकुमोव, विक्टर सेमियोनोविच(१८६४-१६५४): स्तालिन का राज्य सुरक्षा मन्त्री, १६४६-१६५२। दिसम्बक १६५४ में ख्रुश्चोव के शासनकाल में गोली से उड़ाया गया।

अग्रानोव याकोव साबलोविच (? १६३६) : यगोदा और येझोव के अधीर आंतरिक मामलों का उपजनवादी कमीसार। सन् १६३६-१६३८ के झूठे मुकदमों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आइखेनवाल्द, यूली आइसाएविच (१८७२-१६२८) : समालोचक और निबन्धकार, शापेनहावर की रचनाओं का रूसी भाषा में अनुवाद किया। सन् १६२२ में निष्कासित।

अखमातोवा (गोरेंको), अन्ना आन्द्रेएवना (१८८६-१६६७) : सर्वश्रेष्ठ कवियत्री, निकोलाइ गुमिलएव की पत्नी। सन् १६४६ में उनकी "सोवियत जनता से विमुख" कह कर भर्त्सना की गई। लम्बे अरसे तक सोवियत संघ में उनकी रचनाओं का प्रकाशन नहीं हुआ; कुछ रचनाएं १६५६ के बाद प्रकाशित हुईं।

अल्दानोव (लान्दो), मार्क अलैक्सान्द्रोविच (१८८६-१६५७) : ऐतिहासिक उपन्यासों के लेखक; सन् १६१६ में पेरिस प्रवास और बाद में न्यूयार्क को प्रस्थान।

अलदान-सेमियोनोव, आन्द्रेइ इगनातएविच (१६०८-) : सोवियत लेखक; सुदूर पूर्व के शिविरों में १६३८-१६५३ तक कैद। संस्मरणों के लेखक।

अलैक्सान्द्रोओव ए० आई० : विदेशों से सांस्कृतिक सम्बन्धों की अखिल संघ सोसाइटी के कला विभाग के अध्यक्ष; १६३५ में सफाया।

अलीलुएव : स्तालिन की दूसरी पत्नी नादेझदा सेरजेएवना का पारिवारिक नाम।

एम्फीतेत्रोव, अलैक्सान्द्र वालेन्तीनोविच (१८६२-१६३८) : रूसी लेखक; सन् १६२० में प्रवास।

एन्दर्स, ब्लादिस्लाव (१८६२-१६७०) : पोलैंड का जनरल; सोवियत संघ में पोलैंड निवासियों की सैनिक टुकड़ियों का गठन किया और सन् १६४३ में ईरान तक उनका नेतृत्व किया।

आन्द्रेएव, लियोनिद निकोलाएविच (१८७१-१६१६) : नाटककार और कहानी लेखक अभिव्यक्तिवाद के अत्यन्त समीप; फिनलैंड में मृत्यु।

आन्द्रे ल्युश्किन, पाखामी आइवानोविच (१८६५-१८८७) : नारोदनाया वोल्या नामक आतंकवादी टोली का सदस्य; सन् १८८७ में सम्राट अलैक्जेंडर तृतीय की हत्या करने के प्रयास के बाद मृत्युदण्ड।

अन्तोनोव-सरातोवस्की, व्लादिमिर पावलोविच (१८८४-१९६५) : पुराने बोलशेविक साख्ती (१९२८) और प्रोमपार्टी (१९३०) के मुकदमों में न्यायाधीश के रूप में काम किया।

एवर बाख, आई० एल० : सोवियत न्यायविद् वाइशिंस्की का सहयोगी।

बाबुश्किन, आइवन वासिलविच (१८७३-१९०६) : रूसी क्रांतिकारी।

बाख्तिन, माइखेल माइखेलोविच (१८९५-) : साहित्यिक विद्वान्, दोस्तोएवस्की के साहित्य के विशेषज्ञ। सोवियत संघ में १९३० से लेकर १९६३ तक कोई रचना प्रकाशित नहीं हुई।

बाकुनिन, माइखेल अलैक्सान्द्रोविच (१८१४-१८७६) : अराजकतावाद के एक संस्थापक।

बंदेरा, स्टीपान (१९०९-१९५९) : यूक्रेन के राष्ट्रवादी; दूसरे महायुद्ध के बाद सन् १९४७ तक यूक्रेन में सोवियत विरोधी सेनाओं का नेतृत्व किया; म्यूनिख में एक सोवियत जासूस ने उनकी हत्या की।

बेदनी, देमियान (१८८३-१९४५) : सोवियत कवि।

बेलिंस्की, विसारियों ग्रीगोरेविच (१८११-१८४८) : साहित्यिक समालोचक और कट्टर उदारतावादी, सामाजिक दृष्टि से चेतनायुक्त साहित्य के समर्थक।

बिनोइस, अलैक्सान्द्र निकोलाएविच (१८७०-१९६०) : प्राकृतिक दृश्यों के चित्रकार; सन् १९२६ में पेरिस प्रवास।

बर्दयाएव, निकोलाइ अलैक्सान्द्रोविच (१८७४-१९४८) : दार्शनिक, धार्मिक विचारक; अनीश्वरवाद और भौतिकतावाद के विरोधी। सन् १९२२ में निष्कासित; १९२४ से पेरिस में ही रहे।

बेरिया, लावरेंती पावलोविच (१८९९-१९५३) : जार्जिया का बोलशेविक, सन् १९३८ में स्तालिन का घनिष्ट सहयोगी बन गया और खुफिया पुलिस और राष्ट्रीय सुरक्षा विभागों का अध्यक्ष भी। स्तालिन की मृत्यु के बाद गोली से उड़ा दिया गया।

बाइरोन अथवा बीरेन : काउण्ड अर्नेस्ट जान बूरेन का रूसी नाम (१६९०-१७७२) : सम्राज्ञी अन्ना आइवानोवना का कृपाभाजन, जिसके अधीन उसने एक अत्यन्त क्रूर शासन का संचालन किया।

ब्लोक, अलैक्सान्द्र अलैक्सान्द्रोविच (१८८०-१९२१) : प्रतीकवादी कवि।

ब्लूचर, मार्शल वासिली कौंस्तांतिनोविच (१८९०-१९३८) : सुदूर पूर्व सैनिक जिले के कमाण्डर, १९२९-१९३८; शुद्धि अभियान में गोली से उड़ाया गया।

ब्ल्यूमकिन, याकोव ग्रीगोरेविच (१८९८-१९२९) : वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारी; सन् १९१८ में मास्को में जर्मन राजदूत मीरबाच की हत्या की; आगे चलकर चेका में भर्ती हुआ; ट्राटस्की का संदेश रादेक के पास पहुंचाने के कारण मृत्युदण्ड।

बोकी, ग्लेव आइवानोविच (१८७९-१९३१) : खुफिया पुलिस का अफसर; सन् १९२७ के बाद सर्वोच्च न्यायालय का सदस्य, सन् १९३३ में गिरफ्तार।

बोंच-ब्रूएविच, व्लादिमिर दमित्रीएविच (१८७३-१९५५) : बोलशेविक क्रांतिकारी; जनवादी कमीसार परिषद् का प्रशासनिक अफसर, १९१७-१९२०।

बुन्दारिन, सरगेई अलैक्सान्द्रोविच (१६०३-) : बाल साहित्य के लेखक ।

बुन्देन्नी, मार्शल सेमियोन माइखेलोविच (१८८३-१६७३) : गृहयुद्ध के वीर नायक; बोलशेविक घुड़सवार पलटन के कमांडर; दूसरे विश्व युद्ध के आरम्भिक दौर में दक्षिण पश्चिमी मोर्चे के कमांडर ।

बुखारिन, निकोलाई आइवानोविच (१८८८-१६३८) : पार्टी के प्रमुख पदाधिकारी और आर्थिक सिद्धांतकार; सन् १६२४ के बाद पोलित ब्यूरो के सदस्य और १६२६ के बाद कोमिन्टर्न के महासचिव; १६२६ में पार्टी से निष्कासित; १६३८ के सार्वजनिक रूप से चलाये गए झूठे मुकदमे के बाद मृत्युदण्ड ।

बुलगाकोव, सेरगेई निकोलाएविच (१८७१-१६४४) : धार्मिक दार्शनिक; १६२२ में निष्कासित पेरिस में रहे ।

बुलगाकोव, माइखेल अफानास्येविच (१८६१-१६४०) : व्यंग्यकार, जिनकी अधिकांश रचनाएं सोवियत संघ में प्रकाशित नहीं हुईं ।

बुनिन, आइवन अलैक्सेएविच (१८७०-१६६३) : लेखक; १६२० में फ्रांस प्रवास; १६३३ में नोबल पुरस्कार से पुरस्कृत ।

बुन्याचेंको, सेरगेई के० (?-१६४६): दूसरे महायुद्ध में व्लासोव की सेनाओं की पहली डिवीजन का कमांडर; १६४६ में सोवियत संघ में मृत्युदण्ड ।

चार्नोवस्की, एन० एफ० (१८६८-?) : सोवियत आर्थिक मामलों का अधिकारी; १६३० में प्रोम पार्टी के मुकदमे में प्रतिवादियों में शामिल ।

चेखोवस्की, व्लादिमिर मोएसेएविच (१८७७-?) : यूक्रेन के राष्ट्रवादी ।

चेरनोव, विक्टर माइखेलोविच (१८७३-१६५२) : समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी के नेता; १६२० में प्रवास ।

चूबार, व्लास याकोवलेविच (१८६१-१६३६) : यूक्रेन के उच्च सोवियत अधिकारी; शुद्धि अभियानों में गोली से उड़ाये गए ।

चुकोवस्काया, लीबिया कोरनेएवना (१६०७-) : सोवियत साहित्यिक समालोचक और लेखक (समिज्दात) ।

दाल, व्लादिमिर आइवानोविच (१८०१-१८७२ : शब्दकोषकार ।

दान (गुरविच), फ्योदोर इलिच (१८७१-१६४७) : मेनशेविक नेता, डाक्टर; १६२२ में निष्कासित ।

देनिकिन, एन्तन आइवानोएविच (१८७२-१६४७) : जारशाही के जमाने में सैनिक नेता; दक्षिण में १६१८-१६२० में बोलशेविक विरोधी सेनाओं का सचालन किया; विदेश प्रवास किया ।

देरझाविन, गावरील रोमानोविच (१७४३-१८१६) : बुलगारिया का कम्युनिस्ट नेता; लाइबजिग में १६३३ में रीहस्टेग के मुकदमे में प्रमुख प्रतिवादी ।

दोलगुन, अलैक्जेन्द्र एम० (अलैक्जेन्डर डी०) (१६२६-) अमरीका में जन्मा और मास्को स्थित सयुक्त राज्य अमरीका के दूतावास का भूतपूर्व कर्मचारी; सोवियत जेलों और श्रम शिविरों में आठ वर्ष (१६४८-१६५६) का समय बिताया; सन् १६७१ में सोवियत संघ छोड़ कर जाने की अनुमति दी गई ।

दोन्स्कोई, डी० डी० (१८८१-१६३६) : दक्षिणपंथी समाजवादी क्रांतिकारी ।

बोयारेको, अलैक्सेई जी० : सोवियत कृषि विज्ञानी; १९३१ में चलाए गए श्रमजीवी कृषक पार्टी के मुकदमे का एक प्रतिवादी।

दुखोनिन, निकोलाई निकोलाएविच (१८७६-१९१७) : ज़ार की सेना का कमांडर-इन-चीफ; सैनिकों ने उसकी हत्या कर डाली।

द्याकोव, बोरिस अलैक्सान्द्रोविच (१९०२-) : श्रम शिविरों के संस्मरणों के लेखक।

जेरझिस्की, फेलिक्स एडमैंडोविच (१८७७-१९२६) : खुफिया पुलिस (चेको-जी० पी० यू०-ओ० जी० पी० यू०) का पहला प्रधान अधिकारी; उसके स्थान पर मेनझिस्की नियुक्त हुआ।

एहरनबर्ग, इल्या ग्रीगोरेविच (१८९१-१९६७) : सोवियत लेखक और पत्रकार; पेरिस में अनेक वर्ष बिताये; स्तालिन के युद्ध के संस्मरणों के लेखक।

एतिंजर, वाई० जी० (?-१९५२) : सोवियत डाक्टर. १९५२ में तथाकथित "डाक्टरों के मामले" में गिरफ्तार। पूछताछ के दौरान मृत्यु।

फेदोतोव, ए० ए० (१८६४-?) : एक सोवियत अधिकारी; शाख्ती के मुकदमे में प्रतिवादी।

फिगनेर, वेरा निकोलाएवना (१८५२-१९४२) : नारोदनाया वोल्या नामक टोली के नेता सन् १८८१ में सम्राट इलैक्जेन्द्र द्वितीय की हत्या के सफल षड्यन्त्र में हिस्सा लिया।

फिलोनेंनको, माक्सिमिलियन माक्सिमिलियानोविच : दक्षिणपंथी समाजवादी क्रांतिकारी, १९१८ में आर्चएंजेल में बोलशेविक विरोधी सेनाओं का नेतृत्व किया।

फ्रांक, सेमियोन लियूदवीगोविच (१८७७-१९५०) : धार्मिक दार्शनिक, सोलोवएव के शिष्य; १९२२ में निष्कासित।

फ्योदोर आइवानोविच (१५५७-१५९८) : भयंकर आइवन का अर्ध पागल पुत्र जो भयंकर आइवन के बाद १५८४ में गद्दी पर बैठा उसकी ओर से शासन का अधिकार बोरिस गोदुनाव के हाथों में था, जिसने स्वयं जार सम्राट के रूप में १५९८-१६०५ तक शासन किया।

गाज़, फ्योदोर पेत्रोविच (हास, फ्रेड्रिक, जोसेफ) (१७८०-१८५३) : मास्को के जेल अस्पताल का जर्मनी में पैदा हुआ डाक्टर; दण्ड सम्बन्धी सुधारों का प्रयास किया।

गमारनिक, यान बोरिसोविच (१८९४-१९३७) : सोवियत सैनिक नेता जिसने शुद्धि अभियानों के दौरान आत्म हत्या कर ली।

गारिन, एन० (**माइखेलोवस्की, निकोलाई जार्जीएविच**) (१८५२-१९०६) : मार्क्सवादी लेखक; जिन्होंने जारशाही के जमाने के युवक इन्जीनियरों का चरित्र चित्रण किया।

जेरनेत, माइखेल निकोलाएविच (१८७४-?) : मृत्युदण्ड सम्बन्धी विषय के लेखक।

जिन्झबर्ग, एवजेनिया सेमियोनोवना (१९११-) : श्रम शिविरों के संस्मरणों की लेखिका-रचना : अन्धड़ की झपेट में।

जिप्पियस, जिनेदा निकोलाएवना (१८६९-१९४५) : लेखिका; मेरेझकोवस्की की पत्नी; १९२० में प्रवास।

गोलीकोव, मार्शल फिलिप आइवानोविच : (१९००-) : सोवियत सैनिक नेता; जर्मनी से लाल सेना के युद्धबन्दियों की वापसी का निरीक्षण किया।

गोल्याकोव, आइवन तेरेनतिएविच : स्तालिन के शासनकाल में सर्वोच्च न्यायालय का अध्यक्ष न्यायाधीश।

गोर्की, मैक्सिम (**पेशकोव, इलैक्सेई मैक्सिमोविच**) (१८६८-१९३६) : लेखक; आरम्भ में

बोलशेविकों का विरोध किया और विदेशों में रहे (१६२१-१६२८); १६३१ में रूस वापस लौटे; रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में मृत्यु।

गोट्स, एब्राम राफेलोविच (१८८२-१९४०) : दक्षिणपंथी समाजवादी क्रांतिकारी नेता, १६२२ के मुकदमे में एक प्रतिवादी।

गोबोरोव, मार्शल लियोनिद इलैक्सान्दोविच (१८६७-१९५५) : सोवियत सैनिक नेता।

ग्रीबोएदोव, अलैक्सान्द्र सरजेएविच (१७९५-१८२६) : नाटककार और राजनयज्ञ।

ग्रीगोरेंको, प्योत्र ग्रीगोरेविच (१६०७-) : लाल सेना के भूतपूर्व जनरल; १६६१ में विरोधी बन गए; सन् १६६६ से पागलखाने में।

ग्रीगोरीएव, आईओसिफ फाइओदोरोविच (१८६०-१९४६) : प्रसिद्ध सोवियत भू विज्ञानी।

ग्रीन (ग्रिनोवस्की), अलैक्सान्द्र स्टेपानोविच (१८८०-१६३२)। रूमानी अत्यन्त काल्पनिक साहसिक कहानियों के लेखक।

ग्रीनेवित्स्की, आइगनाती आइओखिमोविच (१८५६-१८८१) : नारोदनाया वोल्या क्रांतिकारी दल के सदस्य। १३ मार्च, १८८१ को अलैक्जेन्डर द्वितीय की बम फेंक कर हत्या कर दी और इसमें स्वयं भी घातक रूप से घायल हो गया।

ग्रोमन, व्लादिमिर गुस्तावोविच (१८७३-?) : उच्च सोवियत आर्थिक अधिकारी; मेनशेविकों के १६३१ के मुकदमे में एक प्रतिवादी के रूप में पेश।

ग्रोमिको, आन्द्रेई आन्द्रेएविच (१६०६-) : सोवियत राजनयज्ञ; संयुक्त राज्य अमरीका में सोवियत संघ के भूतपूर्व राजदूत और संयुक्त राष्ट्र में प्रतिनिधि; सन् १६५७ से विदेश मंत्री।

गुल (गोउल), रोमन बोरिसोविच (१८६६-) : ऐतिहासिक ग्रंथों के प्रवासी लेखक न्यूयार्क में प्रकाशित नोविझुरनल के सम्पादक।

गुमिलएव, निकोलाई स्तीपानोविच (१८८६-१६२१) : प्रसिद्धतम कवि, अखमातोवा के पहले पति; सोवियत विरोधी षड्यन्त्र का आरोप लगाया गया और मृत्युदण्ड दे दिया गया।

हरजेन, अलैक्सान्द्र आइवानोविच (१८१२-१८७०) : उदारतावादी लेखक इलिन, आइवन अलैक्सान्द्रोविच (१८८२-१९५४) : रहस्यवादी दार्शनिक, १६२२ में निष्कासित।

आइवन कालीता (?-१३४०) : मसकवि की ग्रैंड डची का संस्थापक।

आइवानोव राजुमुनिक (आइवानोव, राजुमुनिक वासिलएविच (१८७६-१९४६) : वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारी; ज़ारशाही की जेल में नौकरी की (१६०१) और सोवियत श्रम शिविरों में भी; १६४१ में जर्मनी चला गया।

इजगोएव (लान्दे), अलैक्सान्द्र सोलोमोनोविच (१८७२-लगभग १६३८) : वामपंथी कैडट पार्टी के लेखक; १६२२ में सोवियत संघ से निष्कासित।

इजमेलोव, निकोलाई वासिलएविच (१८९३-) : सोवियत साहित्यिक विद्वान्, पुष्किन वांगमय के सम्पादक।

कगानोविच, लजार मोइसेएविच (१८९३-) : स्तालिन का घनिष्ठ सहयोगी रेल विभाग का अध्यक्ष सन् १६५७ में नेतृत्व से हटा दिया गया।

कालिनिन, माइखेल आइवानोविच (१८७५-१९४६) : सोवियत संघ के नाममात्र के राष्ट्रपति (१६१६-१९४६); सन् १६२२ तक अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष, इसके

बाद सोवियत संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष, और १९३८ के बाद सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष मण्डल के अध्यक्ष।

कामेनेव (रोंजेनफेल्द), लेवबोरिसोविच (१८८३-१९३६) : प्रमुख बोलशेविक नेता, १९२७ में पार्टी से निष्कासित, फिर पार्टी में शामिल किए गए और फिर निष्कासित किए गए; सन् १९३६ के झूठे सार्वजनिक मुकदमे के बाद मृत्युदण्ड।

कापलान, फान्या (डोरा) (१८८८-१९१८) : वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारी; सन् १९१८ में लेनिन की हत्या करने के असफल प्रयास के बाद मृत्युदण्ड।

कराकोजोव, दमित्री व्लादिमीरोविच (१८४०-१८६६) : क्रांतिकारी; सन् १८६६ में सम्राट अलैक्जेंडर द्वितीय की हत्या के असफल प्रयास के बाद मृत्युदण्ड।

कारसाविन, लेवप्लातोनोविच (१८८२-१९५२) : रहस्यवादी दार्शनिक; मध्ययुगीन इतिहास के विशेषज्ञ; १९२२ में निष्कासित।

कासों, लेव अरस्तीदोविच (१८६५-१९४०) : सम्राट निकोलस द्वितीय के शासनकाल में प्रतिक्रियावादी शिक्षामंत्री।

कतानयान, रूबेनपावलोविच (१८८१-१९६६) : सन् १९२० और १९३० से आरम्भ दशकों में सोवियत सरकारी वकील; १९३८ में गिरफ्तार।

कजाकोव, इगनाती निकोलाएविच (१८९१-१९३८) : डाक्टर जिसके ऊपर यह अभियोग लगाया गया था कि उसने विषैली दवायें देकर सोवियत अधिकारियों की हत्या की; १९३८ के सार्वजनिक रूप से चलाये गए झूठे मुकदमे के बाद गोली से उड़ा दिया गया।

केरेन्स्की, अलैक्सान्द्र फ्योदोरोविच (१८८१-१९७०) : समाजवादी क्रांतिकारी नेता। जुलाई से नवम्बर १९१७ तक अस्थाई सरकार के प्रधानमंत्री; फ्रांस पलायन कर गए; न्यूयार्क में नियुक्ति।

ख्रस्तालेव-नोसार, जार्जी स्तीपानोविच (१८७७-१९१८) : सन् १९०५ में श्रमिकों के प्रतिनिधियों की सेन्ट पीटर्सबर्ग सोवियत के अध्यक्ष निर्वाचित; सन् १९१८ में यूक्रेन में बोलशेविकों का विरोध किया; बोलशेविकों ने गोली से उड़ा दिया।

कीरोव (कोस्त्रीकोव), सेरगेई मीरोनोवोविच (१८८६-१९३४): स्तालिन का घनिष्ठ सहयोगी; लेनिनग्राद में उसकी हत्या के बाद बड़े पैमाने पर प्रतिशोध की कारवाई की लहर शुरू हुई। यद्यपि यह विश्वास किया जाता है कि यह हत्या स्तालिन की प्रेरणा से की गई थी।

किश्किन, निकोलाई माइखेलोविच (१८६४-१९३०) : संवैधानिक लोकतंत्री पार्टी के एक नेता; अकाल सहायता समिति के सदस्यों पर १९२१ में चलाये गए मुकदमे का एक प्रतिवादी।

किजेवेत्तर (किसेवेत्तेर), अलैक्सान्द्र अलैक्सान्द्रोविच (१८८६-१९३३) : कैडट पार्टी का नेता और इतिहासकार, १९२२ में निष्कासित; प्राग में निवास।

क्ल्यूचेवस्की, निकोलाई अलैक्सेएविच (१८८७-१९३७) : कृषक कवि; प्राचीन रूस के मानव मूल्यों का गुणगान किया और पश्चिम के सांस्कृतिक प्रभावों का विरोध; १९३० के बाद आरम्भिक वर्षों में साइबेरिया निष्कासित।

कोलचाक, अलैक्सान्द्र वासलएविच (१८७३-१९२०) : जारशाही के जमाने का एडमिरल; १९१८-१९२० में साइबेरिया बोलशेविक विरोधी सेनाओं का नेतत्व किया; मृत्युदण्ड।

कोल्जसोर्व, निकोलाई कोंस्तांतिनोविच (१८७२-१९४०) : प्रमुख जीव विज्ञानी; रूसी जीव विज्ञान के प्रयोगात्मक स्कूल की स्थापना की।

कोंद्रातएव निकोलाई दमित्रीएविच (१८६२- ?) : कृषि अर्थशास्त्री; सन् १६३१ में श्रमिक किसान पार्टी के मुकदमे में शामिल।

कोर्नीलोव, लाव्र जार्जीएविच (१८७०-१६१८) : अस्थायी सरकार के अधीन रूसी सेनाओं का कमांडर-इन-चीफ; अगस्त १६१७ में केरेन्स्की के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया; दोन क्षेत्र में बोलशेविकों के विरुद्ध लड़ा; युद्ध में मृत्यु।

कोरोलेंको, व्लादिमिर गलाकतिनोविच (१८५३-१६२१) : कृषक लोकतंत्री लेखक, जारों के शासनकाल में सताया गया; बोलशेविकों ने बुर्जुआ बताया।

कोसारेव, अलैक्सान्द्र वासलएविच (१६०३-१६३६) : कोमसोमोल का नेता, १६२६-१६३८।

कोसीओर, स्तानीस्लाव विकेंतिएविच (१८८६-१६३६) : यूक्रेन का बोलशेविक नेता, शुद्धि अभियानों में गोली से उड़ा दिया गया।

कोजीरेव, निकोलाई अलैक्सान्द्रोविच (१६०८-) : ज्योतिविज्ञानी; जेल में, १६३७-१६४८।

क्रासीकोव, प्योत्र अनानएविच (१८७०-१६३६) : पुराना बोलशेविक; १६२० और १६३० से आरम्भ दशकों में सरकारी वकील और अदालत का अधिकारी।

क्रासनोव (लेवीतिन), अनातोली इमानूंएलोविच (१६१५-) : धार्मिक लेखक; स्तालिन के अधीन गिरफ्तार; सन् १६६० के बाद विरोध आंदोलन में शामिल।

क्रासनोव, प्योत्र निकोलाएविच (१८६६-१६४७) : दोन कज़्ज़ाक नेता; १६१६ में प्रवास किया; दूसरे महायुद्ध में जर्मन समर्थक रूसी सैनिक टुकड़ियों का नेतृत्व किया। युद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों ने उसे सोवियत संघ के हवाले कर दिया और सोवियत संघ में उसे मृत्युदण्ड दे दिया गया।

क्रेसतिन्स्की, निकोलाई निकोलाएविच (१८८३-१६३८) : बोलशेविक पार्टी का अधिकारी और राजनयज्ञ १६३८ के बाद के सार्वजनिक रूप से चलाए गए झूठे मुकदमे के बाद गोली से उड़ा दिया गया।

क्रुगलोव, सेरगेई निकिफोरोविच (१६०३-) : गृहमंत्री, १६४६-१६५६।

क्राइलेंको, निकोलाई वासलएविच (१८८५-१६३८) मुख्य सरकारी वकील, १६१८-१६३१; आगे चलकर न्याय विभाग का जनवादी कमीसार; १६३८ में गोली से उड़ाया गया।

क्राइलोव, आइवन आन्द्रेएविच (१७६६-१८४४) : विख्यात कथाकार।

कुइबाइशेव, वालेरियन व्लादिमीरोविच (१८८८-१६३५) : प्रमुख आर्थिक आयोजन अधिकारी; रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में मृत्यु।

कुप्रियानोव, जी० एन० कारेलियन पार्टी का पदाधिकारी : १६४६ में गिरफ्तार।

कुस्की, दमित्री आइवानोविच (१८७४-१६३२) : न्याय विभाग का जनवादी कमीसार, १६१८-१६२८; इटली में राजदूत, १६२८-१६३२।

कुसकोवा, येकातेरीना दमित्री एवना (१८६६-१६५८) : कैडट पार्टी का सदस्य, बाद में समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी में; १६२१ के अकाल सहायता मुकदमे में सम्मिलित; सन् १६२२ में निष्कासित।

कुजनित्सोव, अलैक्सेई अलैक्सान्द्रोविच (१६०५-१६५०) : लैफ्टिनेंट जनरल, लेनिनग्राद की रक्षा व्यवस्था का एक संगठनकर्ता, केन्द्रीय समिति का सचिव, लेनिनग्राद के मामले में दण्डित।

कुजनित्सोव, कर्नल जनरल वासली आइवानोविच (१८६४-१९६४) : दूसरे महायुद्ध में सोवियत सैनिक नेता।

लाप्शिन, आइवन आइवानोविच (१८७०-१९४८) : दार्शनिक; सन् १९२२ में प्राग में निष्कासित, जहां उसकी मृत्यु हो गई।

लारीचेव, विक्टर ए० (१८८७-?) : अध्यक्ष, प्रमुख इंधन समिति; सन् १९३० के क्रोम पार्टी के मुकदमे में शामिल।

लारिन, वाई० (**लुरये, माइखेल अलैक्सान्द्रोविच**) (१८८२-१९३२) : कृषि अर्थशास्त्री; भूतपूर्व मेनशेविक; सोवियत योजना प्रणाली की स्थापना में सहायता दी।

लातसिस (लासिस), मार्तिन आइवानोविच (सुद्राप्स, यान फ्रीदीकोविच) (१८८८-१९४१) : आरम्भिक चेका अधिकारी, १९१७-१९२१ निदेशक, प्लीखानोव अर्थशास्त्र संस्था, १९३२-१९३७; १९३७ में गिरफ्तार।

लेलयूशेंको, दमित्री दानिलोविच (१९०१-) : दूसरे महायुद्ध में सोवियत नेता।

लेरमोंतोव, माइखेल यूरएविच (१८१४-१८४१) : उदारतावादी कवि।

लेवीना, रेवेक्का सौलोवना (१८९९-१९६४) : सोवियत अर्थशास्त्री।

लेवीतान, यूरी वोरिसोविच (१९१४-) : सोवियत रेडियो अनाउंसर जो अपनी संगीतमय आवाज के लिए प्रसिद्ध था और जिसकी आवाज दूसरे महायुद्ध में सोवियत रूस की प्रमुख सफलताओं और अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रसारण के कारण प्रसिद्ध हुई।

लेवीतिन : देखिये क्रासनोव, ए० ई०।

लाईखाचेव, निकोलाई पेत्रोविच (१८६२-१९३५) : इतिहासकार, धार्मिक चित्रकारी का विशेषज्ञ।

लोमोनोसोव, माइखेल वासलएविच (१७११-१७६५) : प्रकांड विद्वान्; रूस के आध्यात्मिक इतिहास में इन्हें जन सामान्य के मध्य उत्पन्न एक वैज्ञानिक प्रतिभा का प्रमुख उदाहरण माना गया।

लोर्दकिपानीजे, जी० एस० (१८८१-१९३७) : जार्जियावासी लेखक; शुद्धि अभियान में मृत्यु।

लोरिस-मेलिकोव, माइखेल तारपेलोविच (१८२५-१८८८) : जार का शक्तिशाली गृहमन्त्री, १८८०-१८८१; ऐसे सुधारों का प्रस्तोता, जिन्हें लागू नहीं किया जा सका।

लोर्ख, अलैक्सान्द्र जार्जीएविच (१८८९-) : प्रमुख आलू उत्पादक।

लास्की, निकोलाई ओनूफ्रीएविच (१८७०-१९६५) : दार्शनिक; १९२२ में निष्कासित।

लोजोवस्की, ए० (द्रिदजो, सोलोमन एब्रामोविच (१८७८-१९५२) : क्रांतिकारी; ट्रेड यूनियन इन्टरनेशनल का अध्यक्ष, १९२१-१९३७; विदेशी मामलों का उपजनवादी कमीसार और दूसरे महायुद्ध में सोवियत सूचना कार्यालय का अध्यक्ष; यहूदी विरोधी अभियान में गोली से उड़ा दिया गया।

लूनाचारस्की, अनातोली वासलएविच (१८७५-१९३२) : मार्क्सवादी सांस्कृतिक सिद्धांतकार; शिक्षा विभाग का जनबादी कमीसार, १९१७-१९२९।

लुनिन, माइखेल सरजेएविच (१७८७-१८४५) : एक दिसम्बरवादी; साइबेरिया में निष्कासन के समय दार्शनिक और राजनीतिक निबन्ध लिखे।

लाइसेंको, त्रोफिम देनिसोविच (१८९८-) : कृषि जीव विज्ञानी; स्तालिन के शासन

काल में सन् १६४० के बाद सोवियत विज्ञान का प्राय: तानाशाह और १६६४ तक ख्रुश्चेव के शासनकाल में जीव विज्ञान का भी।

मेस्की, आइवन माइखेलोविच (१८८४-) : इतिहासकार और राजयनज्ञ; भूतपूर्व मेनशेविक, ब्रिटेन में राजदूत (१६३२-१६४३); उपविदेश कमीसार, १६४३-१६४६।

मकारेंको, एन्तन सेमीयोनोविच (१८८८-१६३६) : शिक्षाविद्; बाल अपराधियों के लिये पुनर्वास नगरों की स्थापना की।

मालीनोवस्की, रोमन वास्तलावोविच (१८७६-१६१८) : ज़ार की पुलिस का मुखबिर, जिसे बोलशेविकों में घुसा दिया गया था; १६१४ में प्रवास; १६१८ में स्वेच्छा से रूस वापस लौटा, मुकदमा चलाया गया और मृत्युदण्ड दे दिया गया।

मैंदेलसतम, **ओसिप एमिलएविच** (१८६१-१६३८) : प्रसिद्ध कवि; संक्रमण शिविर में मृत्यु।

मारिया, मदर, देखिये स्कोवत्सोवा।

मार्कोस, **जनरल वाफियादेंस** (१६०६-) : यूनान का वामपंथी विद्रोही नेता, १६४७-१६४८।

मार्तोव (**फेदेरबाम**), **यूरी ओसीपोविच** (१८७३-१६२३) : मेनशेविक नेता; १६२१ में लेनिन द्वारा निष्कासित।

मायाकोवस्की, व्लादिमिर व्लादिमीरोविच (१८६३-१६३०) : भविष्यवादी कवि; आत्महत्या।

मेख, निकोलाई कार्लोविच वान (१८६३-१६२६) : ज़ार के जमाने का रेल उद्योगपति; सन् १६१७ के बाद बोलशेविकों के लिए काम किया; क्रांतिकारी गतिविधियों का आरोप लगाया गया और गोली से उड़ा दिया गया।

मेलगुनोव, सेरगेई पेत्रोविच (१८७६-१६५६) : इतिहासकार और लोकप्रिय समाजवादी नेता १६२३ में निष्कासित; पेरिस में रहे।

मेनशिकोव, अलैक्सान्द्र दानीलोविच (१६७३-१७२६) : सैनिक नेता और राजनीतज्ञ; पीटर महान् और सम्राज्ञी कैथरीन प्रथम का कृपापात्र।

मेनझिंस्की, व्याचेस्लाव रुदोल्फोविच (१८७४-१६३४) : खुफिया पुलिस का अफसर; ओ० जी० पी० यू० का अध्यक्ष, १६२६-१६३४।

मेरेतस्कोव, मार्शल कीरिल अफानासएविच (१८६७-१६६८) : दूसरे महायुद्ध का नेता।

मेरेझकोवस्की, दमित्री सरजेएविच (१८६५-१६४१) : दार्शनिक और उपन्यासकार; प्रतीकवादी आंदोलन के संस्थापक; १६१६ में पेरिस प्रवास किया।

माइखेलोव, निकोलाई अलैक्सान्द्रोविच (१६०६-) : युवक कम्युनिस्ट पार्टी कोमसोमोल के अध्यक्ष, १६३८-१६५२; बाद में पोलैंड और इंदोनेशिया में राजदूत, संस्कृति मंत्री, राज्य प्रकाशन समिति के अध्यक्ष; १६७० में अवकाश प्राप्त।

माइकोलादीक स्तानिस्लाव (१६०१-१६६६) : पोलेंड का कृषक पार्टी का नेता; दूसरे महायुद्ध में निष्कासन में पोलैंड की सरकार में शामिल; पोलैंड की युद्धोत्तर सरकार में, १६४५-१६४७।

निकोयान-अनस्तास आइवानोविच (१८६५-) : स्तालिन के घनिष्ठ सहयोगी उपभोक्ता सामान सम्बन्धी विभाग के अध्यक्ष; ख्रुश्चेव के विदेश नीति सलाहकार; १६६६ में अवकाश प्राप्त।

मिल्युकोव, पावेल निकोलाएविच (१८५९-१९४३) : संवैधानिक लोकतंत्री पार्टी का नेता और इतिहासकार; १९२० में प्रवास; अमरीका में मृत्यु।
मीरोविच, वासली याकोवलेविच (१७४०-१७६४) : सम्राज्ञी कैथेरीन द्वितीय के शासनकाल में गद्दी के अधिकार का स्वांग रचने वाले आइवन चतुर्थ एन्तोनोविच के पक्ष में महल क्रांति का प्रयास।
मोलोतोव (स्क्रियाबिन), व्याचेस्लाव माइखेलोविच (१८९०-) : स्तालिन के घनिष्ठ सहयोगी; प्रधानमंत्री और विदेशमंत्री के रूप में काम किया; सन् १९५७ के तथाकथित पार्टी विरोधी सत्ता हथियाने के प्रयास के बाद ख्रुश्चेव द्वारा अपदस्थ; अवकाश प्राप्त।
मोनोमाख : देखिये व्लादिमिर द्वितीय।
म्याकोतिन, वेनेदिक्त अलेक्सान्द्रोविच (१८६७-१९३७) : इतिहासकार और लोकप्रिय समाजवादी पार्टी के संस्थापक; १९२२ में निष्कासित।
नाबोकोव (सिरिन), व्लादिमिर (१८९९-) : रूसी-अमरीकी लेखक; कडट पार्टी के एक नेता एफ० डी० सिरन के पुत्र जिन्होंने १९१९ में प्रवास किया था।
नारोकोव (मार्चेंको), निकोलाई व्लादिमीरोविच (१८८७-१९६९) : प्रवासी लेखक; दूसरे महायुद्ध के दौरान सोवियत संघ से प्रवास : मोनेतेरी, कैलीफोर्निया में निवास।
नतान्तसन, मार्क आन्द्रेएविच (१८५०-१९१९) : पोपुलिस्ट, आगे चल कर समाजवादी क्रांतिकारी; पहले विश्वयुद्ध के दौरान बोलशेविकों का समर्थन किया। स्विटजरलैंड में मृत्यु।
नेक्रासोव, निकोलाई अलेक्सेएविच (१८२१-१८७८) : कवि।
नोवीकोव, निकोलाई आइवानोविच (१७४४-१८१८) : लेखक और समाजवादी समालोचक; कैथेरीन द्वितीय के शासनकाल में शलूसेलबर्ग किले में कैद।
नोवोरुस्की, माइखेल वासलएविच (१८६१-१९२५) : क्रांतिकारी, अलैक्सान्द्र उल्यानोव के साथ दण्डित। सन् १८८७ में अलैक्जेंडर तृतीय की हत्या के असफल प्रयास के बाद यह दण्ड दिया गया; मृत्युदण्ड को शलूसेलबर्ग में कारावास में बदल दिया गया।
ओबोलेंस्की, एवजेनी पेत्रोविच (१७९६-१८६५) : एक दिसम्बरवादी; मृत्युदण्ड को साइबेरिया में २० वर्ष के निष्कासन में बदल दिया गया।
ओलीतस्काया, एकातेरीना एलवोवना (१८९८-) : सोवियत असंतुष्ट लेखिका जिनके जेल और शिविर सम्बन्धी संस्मरण समिजदात में प्रचारित होते रहे और १९७१ में फ्रैंकफर्ट, पश्चिम जर्मनी के रूसी भाषा प्रकाशनगृह कोसेव ने इन्हें प्रकाशित किया।
ओलमिन्स्की (अलैक्सन्द्रो), माइखेल स्तीपानोविच (१८६३-१९३३) : आरम्भिक पेशेवर क्रांतिकारी पत्रकार।
ओरझोनिकिजे ग्रिगरी (सरगो) कोंस्तांतीनोविच (१८८६-१९३७) : स्तालिन का घनिष्ठ सहयोगी, भारी उद्योग का अध्यक्ष; शुद्धि अभियानों के दौरान आत्महत्या।
ओसोर्जिन (इलिन), माइखेल आन्द्रेएविच (१८७८-१९४२) : लेखक; १९२२ में निष्कासित।
पार्लाचिस्की, प्योत्र अखिमोविच (१८७८-१९२९) : अर्थशास्त्री और खान इंजीनियर; १९२८ के शाख्ती के मुकदमे में प्रमुख प्रतिवादी; गोली से उड़ा दिया गया।
पास्त्रनेक, बोरिस लीयोनिदोविच (१८९०-१९६०) : कवि और उपन्यासकार; १९५८ में नोबल पुरस्कार।
पेरखूरोव, अलैक्सान्द्र पेत्रोविच (१८७६-१९२२) : बोलशेविक विरोधी सैनिक कमांडर;

यारोस्लावल में १९२२ में गोली से उड़ा दिया गया।

पेशेखोनोव, अलैक्सेई वासलएविच (१८६७-१९३३) : लेखक; १९२२ में निष्कासित।

पेशकोवा-विनावर, एकातेरीना पावलोवना (१८७६-१९६५) : मैक्सिम गोर्की की पहली पत्नी; राजनीतिक रैडक्रास की अध्यक्षा।

पेस्तेल, पावेल आइवानोविच (१७९३-१८२६) : एक दिसम्बरवादी, आमूल परिवर्तनवादी शाखा के नेता; फांसी पर लटका दिये गये।

पीटर्स, याकोव ख्रिस्तोफोरोविच (१८८६-१९४२) : लत्विया का क्रांतिकारी; १९२० के बाद के वर्षों में खुफिया पुलिस का उच्च अधिकारी; समाप्त कर दिया गया।

पेतल्यूरा, साइमन वासलएविच (१८७९-१९२६) : यूक्रेन का राष्ट्रवादी नेता; यूक्रेन में बोलशेविक विरोधी सेनाओं का नेतृत्व किया; १९१८-१९१९ पेरिस में निष्कास में हत्या कर दी गई।

पिलन्याक (बोगाऊ), बोरिस आन्द्रेएविच (१८९४-१९३७) : सोवियत लेखक क्रांतिकारी घटनाक्रम को विकृत बनाने का अभियोग लगाया गया; जेल में मृत्यु।

प्लातोंनोव, सेरगेई फ्योदोरोविच (१८६०-१९३३) : इतिहासकार; १९३० के बाद के आरम्भिक वर्षों में अधिकारियों का कोपभाजन।

प्लेखानोव जार्जी वालीनतीनोविच (१८५६-१९१८) : मार्क्सवादी दार्शनिक और इतिहासकार; मेनशेविक नेता बने, बोलशेविकों की १९१७ के सत्ता हथियाने की कारवाई का विरोध किया।

प्लेतनेव, दमित्री दमित्रीएविच (१८७२-१९५३) : डाक्टर, १९३८ के सार्वजनिक रूप से चलाये गये झूठे मुकदमे के बाद २५ वर्ष की कैद की सजा।

पोवेदोनोस्तसेव, कोंस्तांतिन पेत्रोविच (१८२७-१९०७) : वकील और राजनीतिज्ञ; पवित्र साइनोद का अधिधारी; उसके प्रतिक्रियाकादी रूसी राष्ट्रीय विचार अलैक्जेंडर तृतीय और निकोलस द्वितीय के शासनकाल के आरम्भिक दौर में प्रभावशाली रहे।

पोस्तीशेव, पावेल पेत्रोविच (१८८७-१९४०) : यूक्रेन का बोलशेविक नेता; १९३८ में गिरफ्तार; जेल में मृत्यु।

पोतेमकिन, ग्रिगरी अलैक्सान्द्रोविच (१७३९-१७९१) : सैनिक नेता और कैथेरीन महान् का कृपापात्र।

प्रोकोकोविच, सेरगेई निकोलाएविच (१८७१-१९५५) : अर्थशास्त्री और कैडट पार्टी का एक नेता; १९२१ के अकाल सहायता आयोग के मुकदमे में शामिल; १९२२ में निष्कासित।

पीतोखिन, लैफ्टिनेंट जनरल एवजेनी सावविच (१९००-१९४१) : सोवियत वायु सेना के कमाण्डर; सोवियत संघ पर जर्मनी के हमले के बाद मृत्युदण्ड।

पुगाचेव, येमेलयान आइवानोविच (१७४२-१७७५) : कैथेरीन द्वितीय के विरुद्ध एक बड़े किसान विद्रोह के नेता; मृत्युदण्ड।

रादेक, कार्ल बर्नगारदोविच (१८८५-१९३९) : कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल का अधिकारी, आगे चल कर पत्रकार; १९३७ के झूठे मुकदमे के बाद गोली से उड़ा दिये गये।

रादिश्चेव, अलैक्सान्द्र निकोलाएविच (१७४९-१८०२) : लेखक और समाजवादी समालोचक; कैथरीन द्वितीय द्वारा साइबेरिया में निष्कासित।

राकोवस्की, ख्रिस्तियन जार्जीएविच (१८७३-१९४१) : बोलशेविक अधिकारी जिसने १९१९

से १६२३ तक यूक्रेन के प्रधानमंत्री के रूप में और १६२३ से १६२७ तक राजनयज्ञ के रूप में काम किया; १६३८ के झूठे मुकदमे के बाद जेल में डाला गया; पुत्री येलीना को १६४८ में गिरफ्तार किया गया।

रामजिन, ल्योनिन कोंस्तांतीनोविच (१८८७-१६४८) : ताप इंजीनियर; १६३० के प्रोम पार्टी मुकदमे में प्रमुख प्रतिवादी; मृत्युदण्ड को १० वर्ष की कैद में बदल दिया गया। दूसरे महायुद्ध की अवधि में अपने पेशे सम्बन्धी कार्यों में सक्रिय।

रानसम, आर्थर (१८८४-१६६७) : ब्रिटिश पत्रकार; बोलशेविक क्रांति के बारे में लिखा।

रासकोलनिकोव (इलिन) फ्योदोर फ्योदोरोविच (१८६२-१६३६) : बोलशेविक राजनयज्ञ; फ्रांस में शरण ली; रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में मृत्यु।

रासपुतिन, ग्रिगरी येफीमोविच (१८७२-१६१६) : एक साहसिक जिसका निकोलस द्वितीय के परिवार पर गहरा प्रभाव था; सम्राट के दरबारियों ने हत्या कर दी।

राजिन, स्तीपान ताइमोफेएविच (स्तेंका) (१६३०-? १६७१) : वोल्गा के मध्य और दूसरे क्षेत्रों में कज्ज़ाकों और किसानों के विद्रोह का नेता, उसे पराजित कर दिया गया और मृत्युदण्ड दे दिया गया; रूस के राष्ट्रीय काव्य का एक वीर नायक।

रीली, सिडनी जार्ज (१८७४-१६२५) : ब्रिटिश जासूसी अफसर; सोवियत संघ और फिनलैंड की सीमा पार करते हुए मारा गया।

रेकिन, इल्या जेफीमोविच (१८४४-१६३०) : प्रमुख चित्रकार; उसका एक चित्र वोल्गा के मल्लाहों के बारे में है।

रोकोसोवस्की, मार्शल कोंस्तांतिन कोंस्तांतीनोविच (१६०६-१६६८) : दूसरे महायुद्ध का सोवियत नेता; पोलैंड में रक्षामंत्री, १६४६-१६५६।

रोमानोव, पैन्तेलीमोन सर्गेएविच (१८८४-१६३८) : सोवियत व्यंग्यकार।

राद्ज़ुताक, यान अर्नेस्तोविच (१८८७-१६३८) : स्तालिन का सहयोगी; १६३७ में गिरफ्तार, जेल में मृत्यु।

रियाबुशिंस्की, पावेल पावलोविच (१८७१-१६२४) : रूसी उद्योगपति और बोलशेविक विरोधी नेता; १६३० के प्रोम पार्टी के मुकदमे में उल्लेख।

राइकोव, अलेक्सेई आइवानोविच (१८८१-१६३८) : स्तालिन के घनिष्ठ सहयोगी; सोवियत संघ के प्रधानमंत्री; १६२४-१६३०; १६३८ के सार्वजनिक रूप से चलाये गये झूठे मुकदमे के बाद गोली से उड़ा दिया गया।

राइलेएव, कोंद्राती फ्योदोरोविच (१७६५-१८२६) : एक दिसम्बरवादी; फांसी की सजा।

राइसाकोव, निकोलाई आइवानोविच (१८६१-१८८१) : नारोदनाया वोल्या टोली का क्रांतिकारी; सन् १८८१ में अलेक्जेंडर द्वितीय की हत्या के बाद फांसी की सजा।

र्यूमिन, एम० डी० (? -१६५३) : खुफिया पुलिस का अफसर जिसने "डाक्टरों के मामले का षडयन्त्र रचा; १६५३ में मृत्युदण्ड।

र्यूरिक : वारानजियन का विख्यात राजा जो नौवीं शताब्दी के मध्य में नोवगोरेद आया और रूस के प्रथम राजवंश की स्थापना की।

सखारोव, कर्नल आइगोर के० : वह प्रवासी जिसने दूसरे महायुद्ध में जर्मन समर्थक रूसी सैनिक टुकड़ियों का नेतृत्व किया।

साल्तीचिखा (साल्तीकोवा, दारया निकोलाएवना) (१७३०-१८०१) : मास्को प्रान्त की

स्त्री जमींदार; गुलाम-किसानों के साथ क्रूरता के व्यवहार के लिए कुख्यात ।

समसोनोव, अलेक्सांद्र वासिलएविच (१८५९-१९१४) : जार का जनरल; पहले विश्वयुद्ध में उसकी सेनाओं के पूर्वी प्रशा में पराजित होने के बाद आत्महत्या ।

साविनकोव, बोरिस विक्तोरोविच (१८७९-१९२५) : समाजवादी क्रांतिकारी नेता; सन् १९२४ में गैर-कानूनी तरीके से रूस में प्रवेश के बाद गिरफ्तार ।

सव्वा : (१३२७-१४०६) : रूस की आर्थोडाक्स चर्च के सन्त; रादोनेझ के सर्जियस के शिष्य ।

सेदिन, आइवन के० : दूसरे विश्वयुद्ध में पेट्रोलियम विभाग का जनवादी कमीसार ।

सेलीवानोव, दमित्री फ्योदोरोविच (१८८५-?) : गणितज्ञ; १९२२ में प्रवास ।

सेरेब्रियाकोवा, गालीना आइसीफोवना (१९०५—) : लेखिका; शिविरों के संस्मरणों की लेखिका ।

सर्जियस, रादोनेझका (१३२१-१३९१) : रूसी संत; अनेक ईसाई मठों की स्थापना की, जिसमें उनके जन्म के नगर के पास का ज़गोरस्क स्थित ट्रीनिटी-सेंट सर्जियस का मठ भी शामिल है ।

सेरोव, आईवन अलेक्सांद्रोविच (१९०५-) : खुफिया पुलिस का अफसर; के०जी०बी० का अध्यक्ष, १९५४-१९५८ ।

शलामोव, वरलाम तिखोनोविच (१९०७-) : लेखक; कोलिमा शिविरों में सत्रह वर्ष का समय बिताया; कोलिमा स्टोरीज (पेरिस, १९६९) के लेखक ।

शचास्तनी, कैप्टेन अलेक्सेई माइखेलोविच (? -१९१८) : सोवियत बाल्टिक जहाजी बेड़े का कमांडर; मृत्युदण्ड ।

शचेरबाकोव, अलेक्सान्द्र सर्गेएविच (१९०१-१९४५) : स्तालिन का घनिष्ठ सहयोगी; मास्को नगर का सचिव, १९३८-१९४५; लाल सेना के राजनीतिक विभाग का अध्यक्ष, १९४२-१९४५ ।

शीनिन, लेव रोमानोविच (१९०६-१९६७) : इस्तगासा और पूछताछ सम्बन्धी सोवियत अधिकारी; सन् १९५० के बाद जासूसी कहानियां लिखीं ।

शेशकोवस्की, स्तीपान आइवानोविच (१७२७-१७९३) : कैथेरिन द्वितीय के शासन काल में पूछताछ अधिकारी; पूछताछ के भयंकर तरीके अपनाने के लिए कुख्यात ।

शमित, प्योत्र पेत्रोविच (१८६७-१९०६) : काला सागर जहाजी बेड़े में लेफ्टिनेंट; सेवास्तोपोल के विद्रोह के बाद मृत्युदण्ड ।

शोलोखोव, माइखेल अलेक्सांद्रोविच (१९०५-) : सोवियत लेखक; १९६५ में नोबल पुरस्कार ।

शुलजिन, वासिली वितालेविच (१८७८-१९६५) : राजतन्त्रवादी; १९१७ की क्रांति के बाद प्रवास; दूसरे महायुद्ध के अन्त में लाल सेना द्वारा युगोस्लाविया में पकड़ लिया गया; श्रम शिविर में १० वर्ष की कैद की सजा काटी ।

शवेरनिक, निकोलाई माइखेलोविच (१८८८-१९७०) : स्तालिन के सहयोगी; मजदूर-संघ के अध्यक्ष, १९३०-१९४४ और १९५३-१९५६; सोवियत संघ के राष्ट्रपति, १९४६-१९५३ ।

सिकोरस्की, व्लादिस्लाव (१८८१-१९४३) : निष्कासित पोलैंड निवासियों का सैनिक नेता ।

स्कोबतसोवा, एलिजावेता युरएवना (१८९२-१९४५) : श्रेष्ठ कवयित्री; पेरिस प्रवास, जहां

वे ईसाई सन्यासिनी बन गईं (मदर मारिया); नाज़ी शिविर में मृत्यु।

स्क्रिपनिक निकोलाई अलेक्सेईविच (१८७२-१९३३) : यूक्रेन के न्याय विभाग का जनवादी कमीसार (१९२२-१९२७) और शिक्षा विभाग का भी (१९२७-१९३३); आत्महत्या।

स्कुरातोव, माल्युता (बेलस्की, ग्रीगोरी लुकीय नोविच (? -१५७२) : भयंकर आइवन का विश्वासपात्र; आइवन की क्रूरताओं का प्रतीक; पुलिस जैसे संगठन ओप्रिचनीना का मुखिया।

स्मिरनोव, आइवन निकितोविच (१८८१-१९३६) : संचार विभाग का जनवादी कमीसार १९२३-१९२७; पार्टी से निष्कासित; १९३६ के मुकदमे के बाद गोली से उड़ा दिया गया।

स्मुशकेविच, याकोव व्लादिमीरोविच (१९०२-१९४१) : सोवियत वायुसेना का कमांडर; जर्मनी के हमले के बाद मृत्युदण्ड।

सोकोलनिकोव, ग्रिगोरी याकोवलेविच (१८८८-१९३९) : वित्त विभाग का सोवियत जनवादी कमीसार; ब्रिटेन में राजदूत, १९२९-१९३४; सन् १९३७ के सार्वजनिक रूप से चलाये गए झूठे मुकदमे के बाद १० वर्ष कैद की सज़ा; जेल में मृत्यु।

सोलोवएव, व्लादिमिर सेर्जेऐविच (१८५३ १९००) : धार्मिक दार्शनिक; रूस के आर्थोडाक्स चर्च की शिक्षाओं में विश्वास और पश्चिम के वैज्ञानिक विचारों तथा रोमन कैथोलिक धर्म का संश्लेषण करने का प्रयास किया।

स्तालिन, आइओसिफ विसारियोनोविच (१८७९-१९५३) : सोवियत राजनीतिक नेता; सन् १९२२ में कम्युनिस्ट पार्टी का महासचिव नियुक्त। सन् १९२४ में लेनिन की मृत्यु के बाद उसने धीरे-धीरे अपने राजनीतिक विरोधियों का सफाया शुद्धि अभियानों की श्रृंखला के माध्यम से करना शुरू किया और इन अभियानों परिणति १९३६-१९३८ के बड़े मुकदमों में हुई। उसका मूल पारिवारिक नाम झुगाशाविली था और पार्टी में प्रयुक्त क्रांतिकारी नाम कोबा।

स्तानिस्लावस्की, कोंस्तांतिन सेर्गेएविच (१८६३-१९३८) : मंच निर्देशक; सन् १८९८ में मास्को कला रंगशाला का सह-संस्थापक; पश्चिम में अभिनय की "स्तानिस्लावस्की शैली" के लिए विख्यात।

स्तीपन, फ्योदोर अगस्तोविच (१८८४-१९६५) : दार्शनिक; सन् १९२२ में निष्कासित।

स्तोलिपिन, प्योत्र अर्कादेविच (१८६२-१९११) : ज़ारशाही के जमाने का राजनीतिज्ञ; १९०६ के बाद गृहमंत्री के रूप में काम किया; कृषि सम्बन्धी सुधार किए जिनके अन्तर्गत गरीब किसानों को साइबेरिया में बसाया गया; एक समाजवादी क्रांतिकारी ने हत्या कर दी।

सूद्राब्स : देखिये लातसिस।

सुखानोव (गिमर), निकोलाई निकोलाएविच (१८८२-१९४०) : मेनशेविक इतिहासकार; अक्तूबर १९१७ में पेत्रोग्राद में उसके घर पर बोलशेविकों की एक बैठक में सशत्र विद्रोह करने का निश्चय किया गया; १९३१ के मेनशेविक मुकदमे में शामिल; भूख हड़ताल के बाद रिहा; चौथे दशक के अन्तिम वर्षों के शुद्धि अभियानों में फिर गिरफ्तार; बोलशेविक क्रांति के विस्तृत विवरण का लेखक।

सुरिकोव, वासिली आइवानोविच (१८४८-१९१६) : यथार्थवादी ऐतिहासिक चित्रकार।

सुवोरोव, अलेक्सांद्र वासिलएविच (१७२९-१८००) : सैनिक नेता; नेपोलियन के विरुद्ध इटली और स्विट्ज़रलैंड के अभियानों का नेतृत्व।

स्वेचिन, अलेक्सान्द्र आंद्रेविच (१८७८-१९३५) : सैनिक इतिहासकार; गोली से उड़ा दिया गया ।

स्वर्दलोव, याकोव माइखेलोविच (१८८५-१९१९) : पहले सोवियत राष्ट्रपति ।

तगांतसेव, निकोलाई स्तीपानोविच (१८४३-१९२३) : फौजदारी कानून के लेखक ।

तार्ले, एवजेनी विक्टोरोविच (१८७५-१९५५) : सोवियत इतिहासकार; १९३० के बाद के आरम्भिक वर्षों में अधिकारियों की कृपा से वंचित ।

तिखोन, पैट्रियार्क (१८६५-१९२५) : सन् १९१७ के बाद रूस की आर्थोडाक्स चर्च के सबसे बड़े पादरी; सरकार का विरोध करने के आरोप पर १९२२-१९२३ के बीच नजरबन्द ।

तिमोफेएव-रेसोवस्की, निकोलाई व्लादिमीरोविच (१९००-) : सोबियत रेडियो-जीव-विज्ञानी; जर्मनी में १९२४-१९४५ तक काम किया; सोवियत संघ वापस लौटने पर स्तालिन के शिविरों में दस वर्ष का समय बिताया ।

तोल्सतोय, अलेक्जेंद्रा एलवोवना (१८८४-) : लेव तोल्सतोय की सबसे छोटी पुत्री; अपने पिता की जीवनी की लेखिका; संयुक्त राज्य अमरीका में रहती हैं, जहां उन्होंने शरणार्थियों की सहायता के लिए तोलसागेय फाउन्डेशन की स्थापना की है ।

तोमस्की, माईखेल पावलोविच (१८८०-१९३६) : सन् १९२९ तक सोवियत मजदूर संघों के पहले अध्यक्ष; स्तालिन के शुद्धि अभियानों में आत्महत्या ।

ट्राटस्की (ब्रोंशटीन), लेव (लियोन) डेविडोविच (१८७९-१९४०) : लेनिन के सहयोगी; पहले सोवियत रक्षा कमीसार, १९२५ तक; १९२७ में पार्टी से निष्कासित; १९२९ में तुर्की में निष्कासित; एक सोवियत जासूस ने मेक्सिको नगर में हत्या कर दी ।

त्रुबेतस्कोई, सर्गेई पेत्रोविच (१७९०-१८६०) : एक दिसम्बरवादी; मृत्युदण्ड को निष्कासन में बदल दिया गया; १८५६ में क्षमादान ।

त्स्वेताएवा, मेरीना आइवानोवना (१८९२-१९४१) : कवयित्री; १९२२ से १९३९ तक विदेश में निवास; सोवियत संघ वापस लौटने के दो वर्ष बाद आत्महत्या ।

तुखाचेवस्की, माइखेल निकोलाएविच (१८९३-१९३७) : सोवियत सैनिक नेता; देशद्रोह के झूठे आरोप पर—१९३७ में गोली से उड़ा दिया गया ।

तुरभाई : जासूसी कहानियों और नाटकों के दो लेखकों का साहित्यक नाम : लियोनिद देविदोविच तुबेलस्की (१९०५-१९६१) और प्योत्र एलवोविच राइझी (१९०८-) ।

तिनियानोव, यूरीनिकोलाएविच (१८९५-१९४३) : सोवियत लेखक और साहित्यिक विद्वान ।

उल्लरिख, वासिली वासिलीएविच (१८८९-१९५१) : सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश; १९२० और १९३० के बाद के वर्षों के बड़े मुकदमों की अध्यक्षता की ।

उल्यानोव, अलेक्जेंडर इलिच (१८६६-१८८७) : लेनिन के बड़े भाई, सन् १८८७ में सम्राट अलेक्जेंडर तृतीय की हत्या के असफल षड्यन्त्र के बाद मृत्युदण्ड ।

उल्यानोवा (येलिज़ारोवा-उल्यानोवा), अन्ना इलिइनिच्ना (१८७४-१९३५) : लेनिन की बहन; पत्रकार और सम्पादक ।

उरितस्की, मोइसेई सोलोमोनोविच (१८७३-१९१८) : क्रांतिकारी; पेत्रोग्राद चेका का अध्यक्ष; एक समाजवादी क्रांतिकारी द्वारा उसकी हत्या के बाद लाल आतंक का समारम्भ ।

उत्योसोव, लियोनिद ओसियोविच (१८९५-) :सोवियत वाद्यवृन्द का नेता और रंग-

मंच अभिनेता।

वालेनतिनोव (वोलस्की), निकोलाई व्लादिस्लावोविच (१८७९-१९६४) : पत्रकार और दार्शनिक; भूतपूर्व बोलशेविक जो आगे चलकर मेनशेविक बन गए; १९३० में प्रवास।

वासिलएव-युझिन, माइखेल आइवानोविच (१८७६-१९३७) : क्रांतिकारी; खुफिया पुलिस और अदालत का अधिकारी।

वाविलोव, निकोलाई आइवानोविच (१८८७-१९४३) : प्रमुख पौधा प्रजनन विज्ञानी; व्यावहारिक वनस्पति विज्ञान संस्था (१९२४-१९४०) और प्रजनन विज्ञान संस्था (१९३०-१९४०) के निदेशक; १९४० में गिरफ्तार; कैद में मृत्यु।

वेरेशचागिन, वासिली वासिलएविच (१८४२-१९०४) : चित्रकार; युद्ध के दृश्यों के चित्रण के लिए प्रसिद्ध।

व्लादिमिर द्वितीय मोनोमाख : कीवान रूस का शासक, १११३-११२५।

व्लादिमिरोव (शेइर्नफिंकल), मीरोन कोंस्तांतिनोविच (१८७९-१९२५) : कृषि वित्त और आर्थिक प्रबन्ध का आरम्भिक सोवियत अधिकारी।

व्लासोव, ले० जनरल आंद्रेई आंद्रेएविच (१९००-१९४६) : लाल सेना का अफसर; जर्मनों ने १९४२ में युद्धबन्दी बना लिया; रूसी सेनाओं का सोवियत संघ के विरुद्ध नेतृत्व किया; युद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों द्वारा सोवियत संघ के हवाले कर दिया गया और मृत्युदण्ड दे दिया गया।

वोइकोव, प्योत्र लजारोविच (१८८८-१९२७) : बोलशेविक क्रांतिकारी; वारसा में सोवियत प्रतिनिधि, १९२४-१९२७; एक प्रवासी रूसी द्वारा हत्या कर दी गई।

वोलोशिन, मैक्सिमिलियन अलेक्सांद्रोविच (१८७८-१९३२) : प्रतीकवादी कवि और वाटरकलर चित्रकार; बोलशेविकों का विरोध किया।

वोरोशिलोव, क्लीमेंत येफ्रेमोविच (१८८१-१९६९) : स्तालिन के घनिष्ठ सहयोगी; लम्बे अरसे तक रक्षा विभाग के कमीसार; सोवियत राष्ट्रपति, १९५३-१९६०।

वाइशेस्लावतसेव, बोरिस पेत्रोविच (१८७७-१९५४) : दार्शनिक; १९२२ में निष्कासित।

वाइशिंस्की, आंद्रेई यानुआरेविच (१८८३-१९५४) : वकील और राजनयज्ञ; भूतपूर्व मेनशेविक जो बाद में बोलशेविक बन गया; सन् १९३६-१९३८ के सार्वजनिक रूप से चलाये गये झूठे मुकदमों में मुख्य सरकारी वकील; उप विदेश कमीसार और मंत्री, १९३९-१९४९ और १९५३-५४; विदेशमंत्री १९४९-१९५३।

व्रांगेल, प्योत्र निकोलाएविच (१८७८-१९२८) : ज़ार का सैनिक कमांडर; देनिकिन के बाद दक्षिण में १९२० में बोलशेविक विरोधी सेनाओं का नेतृत्व किया।

यागोदा, जेनरिख ग्रिगोरेविच (१८९१-१९३८) : खुफिया पुलिस का अफसर; आंतरिक मामलों का जनवादी कमीसार, १९३४-१९३६; सन् १९३८ के मुकदमे के बाद गोली से उड़ा दिया गया।

याकूबोविच, प्योत्र फिलिप्पोविच (१८६०-१९११) : कवि; बादलेयर के साहित्य के अनुवादक; ज़ारशाही के जमाने के अपने निष्कासन के बारे में संस्मरण लिखे।

यारोशेंको, निकोलाई अलेक्सांद्रोविच (१८४६-१८९८) : चित्रकार।

येनुकिज़े, आवेल सफ्रोनोविच (१८७७-१९३७) बोलशेविक अफसर; केन्द्रीय कार्यकारिणी का सचिव, १९१८-१९३५, शुद्धि अभियानों में गोली से उड़ा दिया गया।

येरमिलोव, व्लादिमिर व्लादिमीरोविच (१६०४-१६६५) : सोवियत साहित्यिक समालोचक।
येसेनिन, सेरगेई अलेक्सांद्रोविच (१८६५-१६२५) : बिम्बवादी कवि; आत्महत्या।
येझोव, निकोलाई आइवानोविच (१८६५-१६३६) : खुफिया पुलिस का अफसर; आंतरिक मामलों का जनवादी कमीसार, १६३६-१६३८।
युदेनिच, निकोलाई निकोलाएविच (१८६२-१६३३) : ज़ार का सैनिक कमांडर; एस्तोनिया में बोलशेविक विरोधी सेनाओं का नेतृत्व किया, १६१८-१६२०।
ज़ालिजिन, सेरगेई पावलोविच (१६१३-) : सोवियत लेखक।
ज़ाम्यातिन, एवजेनी आइवानोविच (१८८४-१६३७) : लेखक; सन् १६१७ में विदेश से लौटे और बोलशेविकों का विरोध किया; सन् १६३२ में प्रवास; उनका 'वी' [हम] शीर्षक उपन्यास १६२४ में लन्दन में प्रकाशन हुआ; हक्सले और ओरवेल को प्रभावित किया।
ज़ासुलिच, वेरा आइवानोवना (१८४६-१६१६) : क्रांतिकारी; सेंट पीटर्स बर्ग के मेयर की हत्या के प्रयास के बाद रिहा; सन् १८६८ में प्रवास; सन् १६०५ में वापस लौटीं, मेनशेविक पार्टी की सदस्या बनीं।
ज़ावालिशिन, दमित्री इरिनारखोविच (१८०४-१८६२) : एक दिसम्बरवादी, साइबेरिया में २० वर्ष का निष्कासन, सन् १८६३ के बाद पत्रकार के रूप में काम किया।
झदानोव, आंद्रेई अलेक्सांद्रोविच (१८६६-१६४८) : स्तालिन का घनिष्ठ सहयोगी, दूसरे महायुद्ध के बाद सांस्कृतिक नीति का निर्धारक।
झेब्राक, एन्तन रोमानोविच (१६०१-१६६५) : सोवियत प्रजनन विज्ञानी।
झेल्याबोव, आंद्रेई आइवानोविच (१८५१-१८८१) : क्रांतिकारी, सन् १८८१ में सम्राट अलेक्जेंडर की हत्या कर देने के बाद मृत्युदण्ड।
झुकोव, मार्शल जार्जी कोंस्तांतिनोविच (१८६६-) : दूसरे महायुद्ध के प्रमुख सैनिक नेता।
ज़िनोविएव (एपफेलबाम), ग्रीगारी एवसेएविच (१८८३-१६३६) : लेनिन का सहयोगी, सन् १६२७ में पार्टी से निष्कासित, सन् १६३६ के झूठे मुकदमे के बाद गोली से उड़ा दिया गया।

संस्थाएं और विशेष शब्द

अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी : देखिए वी.टी.एस.आई.के.।
अप्रैल सिद्धांत : अप्रैल १६१७ में लेनिन द्वारा घोषित एक कार्यक्रम जिसमें जर्मनी से युद्ध समाप्त करने और सोवियतों को सत्ता सौंपने की बात कही गई थी।
बासमाची : सन् १६१७ की क्रांति के बाद मध्य एशिया में बोलशेविक विरोधी सैनिक टुकड़ियों को दिया गया नाम।
ब्लैक हंडर्ड : जार के रूस में सशस्त्र प्रतिक्रियावादी गिरोह; यह गिरोह १६०५ से १६१७ तक सक्रिय थे और यहूदियों के व्यापक सफाये और उदार व्यक्तियों की राजनीतिक हत्याओं में लगे रहते थे।
बुत्यर्की : मास्को की एक बड़ी जेल, जिसका नाम मास्को के एक जिले के नाम पर रखा गया है; इसे अक्सर बुत्यर्का भी कहा जाता है।

कैडट : देखिए संवैधानिक लोकतंत्री पार्टी।

चेचेन : उत्तर काकेशस की एक जाति; स्तालिन ने इस पूरी जाति को जर्मन सेनाओं से सहयोग के अभियोग पर १९४४ में निष्कासित कर दिया था।

चेका : सोवियत खुफिया पुलिस का प्रारम्भिक नाम, १९१७-१९२२; इसके बाद जी० पी० यू० की स्थापना हुई।

चीनी पूर्वी रेलवे : मंचूरिया की रेल प्रणाली जिसका निर्माण (१८९७-१९०३) ट्रांस साइबेरियन रेलवे के एक भाग के रूप में किया गया था। सन् १९३५ तक इसका संचालन चीन और रूस की सरकारें संयुक्त रूप से करती रहीं। (इसके बाद इसे जापान के प्रभाव के अन्तर्गत रहने वाली मांचूकुओ सरकार को बेच दिया गया) और फिर १९४५-१९५० के बीच इसका संचालन चीन और रूस की सरकारों ने संयुक्त रूप से किया। रूसी भाषा में संक्षेप : कै० बी० भ० डी०।

दंड संहिताएं : सन् १९२६ की दंड संहिता और १९२३ की दंड प्रक्रिया संहिता को १९५८ में फौजदारी कानून और फौजदारी कानून प्रक्रिया के नए मूलभूत सिद्धांतों को अंगीकार करने के बाद र [illegible] कर दिया गया। सन् १९६० में इन मूलभूत सिद्धांतों को नई दंड संहिता और नई दंड प्र[illegible]ा संहिता में संकलित किया गया।

कालेजियम : [illegible] यत सरकारी विभागों और अन्य संस्थाओं का संचालकमण्डल।

कोमिन्टर्न : क[illegible] स्ट इन्टरनेशनल का संक्षेप; यह कम्युनिस्ट पार्टियों का विश्व संगठन था और १९१[illegible] १९४३ तक कायम रहा।

गरीबों की समि[illegible] : इसे रूसी भाषा में संक्षेप में कोमवेद भी कहा जाता था। यह बोलशेविकों से प्रभा[illegible] -गरीब किसानों का संगठन था। (१९१८)।

संविधान सभा : अनेक पार्टियों के सदस्यों से निर्मित विधान सभा जिसमें बोलशेविक विरोधी पार्टियों का विशाल बहुमत था। इसके सदस्यों का निर्वाचन नवम्बर १९१७ में बोलशेविक क्रांति के बाद हुआ था। इसकी बैठक जनवरी १९१८ में हुई और इसे बोलशेविकों द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों को अंगीकार करने से इनकार करने के कारण भंग कर दिया गया।

संवैधानिक लोकतंत्री पार्टी : सन् १९०५ में ज़ारों के अन्तर्गत स्थापित, संवैधानिक राजतंत्र की समर्थक; ज़ार के शासन को समाप्त कर दिए जाने के बाद इस पार्टी ने कट्टरपंथी भूमिका निभाई; इसके सदस्यों को पार्टी के नाम के रूसी भाषा के संक्षेप के आधार पर कैडेट कहा जाता था।

जनवादी कमीसार परिषद् : सन् १९४६ से पहले सोवियत मंत्रिमण्डल का नाम। इसके बाद इसे मंत्रिपरिषद् कहा जाने लगा; रूसी भाषा में इसे संक्षेप में सोवनारकोम भी कहा जाता है।

क्रीमिया के तातार : जर्मनों से सहयोग के अभियोग पर स्तालिन द्वारा सन् १९४४ में मध्य एशिया में निष्कासित।

दशनाक : सन् १९१७ की क्रांति के बाद आर्मीनिया में सक्रिय बोलशेविक विरोधी दल।

दिसम्बरवादी : रूसी अफसरों का एक दल; इन अफसरों ने दिसम्बर १८२५ में निकोलस प्रथम का तख्ता उलटने के लिए असफल उदार क्रान्ति करने का प्रयास किया था।

डाक्टरों का मामला : क्रेमलिन के प्रमुख डाक्टरों की गिरफ्तारी, जिनमें अधिकांश यहूदी

थे, इन्हें १९५२ में सोवियत नेताओं की हत्या करने का षड्यंत्र रचने के झूठे अभियोगों पर गिरफ्तार किया गया था। यह विश्वास किया जाता है कि इन डाक्टरों में कम से कम एक की, वाइ० जी० एतिंजर की, पूछताछ के दौरान मृत्यु हो गई थी; अन्य को १९५३ में स्तालिन की मृत्यु के बाद रिहा कर दिया गया था।

राज्य अकाल सहायता आयोग : सन् १९२१-२२ में स्थापित सोवियत सरकार का एक संगठन; इसे रूसी भाषा के संक्षिप्त नाम पोमगोल से भी पुकारा जाता है। जी० पी. यू सन् १९२२ में रखा गया सोवियत खुफिया पुलिस का नया नाम; रूसी भाषा के इस संक्षेप का अर्थ राज्य राजनीतिक प्रशासन है; सन् १९२२ के बाद इस नाम का व्यापक पैमाने पर उपयोग हुआ। इसके बाद इसे ओ० जी. पी. यू. नाम दे दिया गया। यह संयुक्त राज्य राजनीतिक प्रशासन का संक्षेप है।

गुलाग : स्तालिन के अधीन सोवियत दंड प्रणाली ; यह श्रम से सुधार शिविरों का प्रमुख प्रशासन का रूसी संक्षेप है।

हेहालुड्ज : यहूदीवादी आंदोलन जो युवक यहूदियों को पवित्र भूमि में बसने के लिए तैयार करता था; इसी ने किवुत प्रणाली का समारम्भ किया।

हीवी : दूसरे महायुद्ध के दौरान जर्मनी की सेनाओं में शामिल रूसी स्वयंसेवकों का जर्मन नाम ; यह हिप्सविलिजे का संक्षेप है।

उद्योग अकादमी : तीसरे दशक के अन्त में और चौथे दशक के आरम्भ में उद्योगों के मैनेजरों को ट्रेनिंग देने वाली संस्था।

उद्योग पार्टी : देखिए प्रोम पार्टी।

इनफार्म ब्यूरो : देखिए सोवइनफार्मब्यूरो।

इंगुश : उत्तर काकेशस की एक जाति ; जर्मनों से सहयोग करने के आरोप पर स्तालिन द्वारा १९४४ में निस्कासित।

तनहाई जेल : (१) बोलशेविक पार्टी के विरोधी गुटों और अन्य राजनीतिक शत्रुओं को रखने के लिए सोवियत शासन के आरम्भिक चरण में बनाई गई राजनीतिक जेल। (२) श्रम शिविर में यह नाम एक ऐसी इमारत को दिया जाता था, जिसमें सजा की कोठरियाँ भी होती थीं।

कालमिक : उत्तर काकेशस की एक जाति, जर्मन सेनाओं से सहयोग करने के आरोप पर स्तालिन द्वारा १९४३ में निष्कासित।

के जे बी : सन् १९५३ के बाद सोवियत खुफिया पुलिस का संक्षिप्त नाम ; यह राज्य सुरक्षा समिति का संक्षेप है।

खालखिन गोल : चीन और मंगोलिया की सीमावर्ती नदी। सन् १९३९ में वहीं सोवियत और जापानी सेनाओं की लड़ाई हुई थी।

खसान : सोवियत-चीन सीमा पर जापान सागर के समीप स्थित झील। सन् १९३८ में यहां सोवियत और जापानी सेनाओं की लड़ाई हुई थी।

कोलिमा : उत्तर पूर्व साइबेरिया का क्षेत्र : स्तालिन के शासनकाल में श्रम शिविरों का केन्द्र।

कोमसोमोल : युवक कम्युनिस्ट पार्टी का रूसी संक्षेप।

के वी इ डी : देखिए चीनी पूर्वी रेल।

श्रम दिन : सामूहिक खेतों पर मजदूरी की गणना में प्रयुक्त इकाई।

लूबयांका : मध्य मास्को में स्थित खुफिया पुलिस के मुख्यालय और जेल के लिए प्रयुक्त प्रचलित नाम; यह नाम पास की सड़क और चौक के नाम पर रखा गया था। (अब इसे जेरझिन्स्की सड़क और चौक कहा जाता है); सन् १९१७ की क्रांति से पहले इस इमारत में रशिया बीमा कम्पनी का कार्यालय था।

माखोरका : घटिया किस्म का तम्बाकू, जो मुख्यतः यूक्रेन में उगाया जाता है।

मेनशेविक : मार्क्सवादी समाजवादियों का लोकतंत्री गुट; सन् १९०३ में बोलशेविक बहुमत से अलग हो गया; सन् १९१७ की बोलशेविक क्रांति के बाद इस गुट का दमन कर दिया गया।

एम जी बी : सोवियत खुफिया पुलिस का संक्षेप, १९४६-१९५३; यह राज्य सुरक्षा मंत्रालय का संक्षेप था; इसके बाद के० जी० बी० नाम रखा गया।

एम वी डी : गृह मन्त्रालय का रूसी भाषा में संक्षेप; इसने सन् १९५३ में कुछ समय के लिए खुफिया पुलिस का काम भी किया।

नारोदनाया वोल्या : (शाब्दिक अनुवाद : जनता की इच्छा) : जारशाही का तख्ता उलटने के संकल्प से गठित गुप्त आतंकवादी संगठन; सन् १८७९ में गठित और अलेक्जेंडर द्वितीय की हत्या के बाद १८८१ में भंग।

नारोदनिक (पोपुलिस्ट) : जारों के शासनकाल में पोपुलिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन का सदस्य।

एन ई पी : नई आर्थिक नीति का संक्षेप। इस नीति के अंतर्गत १९२१-१९२८ में सीमित मात्रा में निजी व्यापार की अनुमति दी गई।

नौ ग्राम : पिस्तौल की गोली।

एन के जी बी : सन् १९४३-१९४६ में सोवियत खुफिया पुलिस का नाम; यह राज्य : सुरक्षा का जनवादी कमीसार कार्यालय का संक्षेप था।

एन के वी डी : सन् १९३४-१९४३ के बीच सोवियत खुफिया पुलिस का नाम; आंतरिक मामलों का जनवादी कमीसार कार्यालय का संक्षेप।

ओ जी पी यू : सोवियत खुफिया पुलिस का नाम १९२२-१९३४; संयुक्त राज्य राजनीतिक प्रशासन का संक्षेप।

ओखराना : सन् १८८१ और १९१७ के बीच जारशाही की खुफिया पुलिस का नाम; रूसी भाषा में इस शब्द का अर्थ "संरक्षण" होता है। इस शब्द का प्रयोग सम्बन्धित विभाग के इस पूरे नाम के स्थान पर किया जाता था—सार्वजनिक सुरक्षा और व्यवस्था के संरक्षण का विभाग।

ओ एस ओ : देखिए विशेष मंडल।

जनवादी कमीसार कार्यालय : सन् १९१७ से १९४६ तक सोवियत सरकार के विभागों का नाम। इसके बाद इन विभागों को "मंत्रालय" से पुकारा जाने लगा।

पेत्रोग्राद : लेनिनग्राद का अधिकृत नाम, १९१४-१९२४।

पोलीजी : पुलिस शब्द का जर्मन पर्याय; दूसरे महायुद्ध में जर्मन अधिकृत क्षेत्रों में पुलिस के रूप में काम करने वाले रूसियों का पदनाम।

पोमगोल : देखिए अकाल सहायता

लोकप्रिय समाजवादी पार्टी : सन् १९०६ में स्थापित। यह सामान्य लोकतंत्री सुधारों का समर्थन और आतंकवाद का विरोध करती थी।

प्रोम पार्टी : उद्योग पार्टी का रूसी और अंग्रेजी भाषा का मिला जुला संक्षेप (रूसी भाषा में इसका नाम था—प्रोमिशलेन्नाया पार्तिया)। वास्तव में इस नाम की कोई गुप्त पार्टी नहीं थी और सन् १९३० ने उद्योगों के मैनेजरों पर झूठा मुकदमा चलाने के लिए खुफिया पुलिस ने इस पार्टी की काल्पनिक ईजाद की थी।

अस्थायी सरकार : जारशाही की समाप्ति के बाद, मार्च से नवम्बर १९१७ तक रूस की मिली-जुली सरकार; पहले सरकार का प्रधानमंत्री राजकुमार जार्जी एलवोव था और बाद में केरेन्स्की ने यह पद ग्रहण किया। बोलशेविकों ने इस सरकार का तख्ता उलट दिया।

क्रांतिकारी अदालत : (रि ट्रिबुनल) : विशेष सोवियत अदालतें (१९१७-१९२२), जो क्रांति विरोधी मुकदमों की सुनवाई करती थी।

रुस्काया प्रावदा : दिसम्बरवादियों का राजनीतिक कार्यक्रम; यह कार्यक्रम पेसतेल ने तैयार किया था; रूसी भाषा में इसका अर्थ "रूसी सत्य" होता है।

सप्रोपेलाइट समिति : एक वैज्ञानिक अध्ययन टोली जिसने १९२० के आसपास झील की तली से निकलने वाले तारकोल जैसे पदार्थ अथवा साप्रोपेल को इंधन के रूप में प्रयुक्त करने का प्रयास किया।

शलूसेलबर्ग : लादोगा झील पर निर्मित किला। यह झील नेवा नदी पर है; जारों के शासन काल में राजनीतिक जेल के रूप में प्रयुक्त; अब इसे पेत्रोक्रेपोस्त के नाम से पुकारा जाता है।

शूडजबंड : आस्ट्रिया की समाजवादी लोकतंत्री पार्टी के सशस्त्र दस्ते; गृहयुद्ध में पराजय के बाद इसके सदस्यों ने सन् १९३४ में सोवियत संघ में आश्रय लेने का प्रयत्न किया।

शरासका : एक ऐसे विशेष अनुसंधान केन्द्र के लिए रूस की जेलों में प्रयुक्त नाम जिसमें अनुसंधान वैज्ञानिक, विशेषज्ञ और तकनीशियन सब कैदी ही होते थे और इन्हें जेल जैसे अनुशासन में ही रखा जाता था।

संक्षिप्त पाठ्यक्रम : सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास के स्तालिनवादी संस्करण का परिचित नाम; सन् १९३८ से १९५३ में स्तालिन की मृत्यु के बाद तक अधिकृत इतिहास और पाठ्यक्रम के रूप में प्रयुक्त।

स्मर्श : दूसरे महायुद्ध के दौरान सोवियत जासूसी विरोधी संगठन का संक्षिप्त नाम; इस शब्द का अर्थ "जासूसों की मौत" होता है।

समोलनी : लड़कियों का भूतपूर्व स्कूल; लेनिनग्राद में कम्युनिस्ट पार्टी का मुख्यालय।

समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी : समस्त सम्पत्ति पर जनता के अधिकार की मांग करने वाले कई पोपुलिस्ट दलों को मिलाकर १८९० में गठित; दिसम्बर १९०५ में फिनलैंड में आयोजित पहले सम्मेलन में ही यह दक्षिणपंथी गुट और वामपंथी गुट में विभाजित हो गई। दक्षिण पंथी गुट आतंकवाद का विरोध और वामपंथी गुट आतंकवाद का समर्थन करता था; समाजवादी क्रांतिकारियों ने अस्थायी सरकार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई; वामपंथी गुट ने क्रान्ति के बाद कुछ समय तक बोलशेविकों से सहयोग किया।

सोलोवेतस्की द्वीप (स्थानीय भाषा में इसे सोलोवकी कहा जाता है) : यह छोटा द्वीपसमूह

श्वेतसागर में स्थित है और इन द्वीपों पर ईसाई मठ हैं; मध्य युगों में विद्रोही पादरियों को यहां निष्कासित किया जाता था। १९१७ की क्रान्ति के बाद यहां आरम्भिक श्रम शिविर (एस एल ओ एन) की स्थापना की गई।

साबइनफार्मब्यूरो : दूसरे महायुद्ध में सोवियत सूचना कार्यालय।

सोवनारकोम : देखिए जनवादी कमीसार परिषद्।

विशेष मण्डल (रूसी संक्षेप : ओ एस ओ) : आं रिक मामलों के जनवादी कमीसार कार्यालय के तीन अधिकारियों के मण्डल। इन मण्डलों को "सामाजिक दृष्टि से खतरनाक" व्यक्तियों को बिना किसी मुकदमे के सजा सुनाने का अधिकार था; सन् १९५३ में भंग।

स्तोलिपिन रेल डिब्बा : कैदियों को लाने ले जाने में प्रयुक्त रेल डिब्बा, जिसका नाम पी०ए० स्तोलिपिन के नाम पर रखा गया है; जेल की प्रचलित भाषा में इसे वैगनजाक भी कहा जाता है यह वैगनजाकल्यू चेनिक (कैदियों का डिब्बा) का संक्षिप्त रूप है।

सर्वोच्च आर्थिक परिषद् : सोवियत शासन के आरम्भिक वर्षों में उद्योगों के प्रबन्ध की सर्वोच्च संस्था; १९१७ में स्थापित; १९३२ में उस समय भंग जब इसे उद्योग मन्त्रालयों में विभाजित कर दिया गया।

सर्वोच्च सोवियत : सोवियत संघ की राष्ट्रीय विधानसभा, सोवियत संघ के गणराज्यों में भी ऐसी ही विधानसभाएं हैं; सोवियत नेताओं के निर्णयों को अपनी सहमति देने के सामान्यतया वर्ष में दो बार इसकी बैठक बुलाई जाती है। इसका कानून बनाने का कार्य, सम्मेलनों की अवधि के बीच, सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमण्डल करता है; नाममात्र के लिए यह सोवियत संघ का सर्वोच्च राज्य संगठन है।

यूनियन कार्यालय : देखिए मेनशेविक।

यू० पी० के० : दंड प्रक्रिया संहिता। देखिए दंड संहिताएं।

वेर्खतृग : सर्वोच्च न्यायालय का रूसी भाषा में संक्षेप (१९१८-१९२२), जिसने सोवियत शासन के आरम्भिक वर्षों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुकदमों की सुनवाई की।

विकझेल : रेल मजदूरों की यूनियन जिसने १९१७ की क्रांति के बाद बोलशेविकों का विरोध किया; यह शब्द रेल मजदूर यूनियन की अखिल रूस कार्यकारिणी का संक्षेप है।

वी एस एन ख : देखिए सर्वोच्च आर्थिक परिषद्।

वी टी एस आई के : अखिल रूस केन्द्रीय कार्यकारिणी का संक्षेप; यह रूसी सोवियत संघीय समाजवादी गणराज्य की सर्वोच्च राज्य संस्था थी, जो १९१७ से १९३७ तक कायम रही और इसके बाद इसका स्थान गणराज्य की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल ने लिया। बी टी एस आई के का राष्ट्रीय स्तर पर समतुल्य संगठन टी एस आई के अर्थात् सोवियत संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी (१९२२-१९३८) था। जो आगे चलकर राष्ट्रीय सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमण्डल बना।

श्रमिकविपक्ष : यह बोलशेविक गुट जो उद्योगों पर मजदूर संघ का अधिक नियंत्रण और पार्टी के भीतर अधिक लोकतंत्र की मांग करता था; सन् १९२१ में पार्टी के १०वें अधिवेशन में इसकी निन्दा की गई। और आगे चलकर इसके कुछ नेताओं को पार्टी से निष्कासित कर गिरफ्तार कर लिया गया।

जेक : कैदी के लिए जेल में प्रयुक्त शब्द। यह शब्द जाकल्यूचेनी से बना है, जो रूसी भाषा में "कैदी" का पर्याय होता है।

जेमस्तवो : क्रांति से पहले के रूस में स्थानीय सरकार की इकाई।

पाद-टिप्पणियां

भाग—१

अध्याय-१

१—एन० एम० का कथन है कि यद्यपि यह नियम अपने आपमें उद्देश्यहीन है, पर इसका समारम्भ उस विचित्र युग में हुआ, जब नागरिकों से केवल यही अपेक्षा नहीं की जाती थी कि वे पुलिस के कार्यों की निगरानी करेंगे, बल्कि वे वास्तव में यह कार्य करते भी थे।

२—जब १९३७ में उन लोगों ने डाक्टर कज़ाकोव की संस्था का सफाया कर दिया, "आयोग" ने उन पात्रों को तोड़ डाला, जिनमें डाक्टर कज़ाकोव द्वारा विकसित लाइसेट रखे हुए थे। यद्यपि वे रोगी जिनकी चिकित्सा इन लाइसेटों के द्वारा की गई थी और जो स्वस्थ हो गए थे तथा जिन रोगियों की चिकित्सा चल रही थी, वे सब चारों ओर एकत्रित हो गए और यह याचना करने लगे कि इस चमत्कारी औषधि को सुरक्षित रखा जाए। (सरकारी वर्णन के अनुसार, इन लाइसेटों को विषाक्त बताया गया था। यदि वास्तविकता यही थी, तो इन्हें ठोस प्रमाण के रूप में सुरक्षित क्यों नहीं रखा गया?)

३—दूसरों शब्दों में, "हम ऐसी अभिशप्त परिस्थितियों में रहते हैं, जिनमें एक मनुष्य शून्य में नदारद हो सकता है और उसके निकटतम सम्बन्धी, यहां तक की उसकी माता और पत्नी तक को इसकी जानकारी नहीं मिल सकती...वर्षों तक उन्हें यह पता नहीं चल सकता किआखिर उसका क्या हुआ है।" यह सच है अथवा नहीं? लेनिन ने सन् १९१० में बाबुश्किन की मृत्यु के बाद अपने शोक संदेश में यह बात लिखी थी। पर इस सम्बन्ध में हम कुछ बातें स्पष्ट रूप से कहना चाहेंगे : बाबुश्किन एक विद्रोह के लिए हथियार ले जा रहा था और जब उसे गोली से उड़ाया गया, ये हथियार उसके पास थे। वह यह जानता था कि वह क्या कर रहा है। लेकिन आप यह बात हमारे जैसे असहाय खरगोशों के बारे में नहीं कह सकते।

४—और इसके अलावा तलाशियों का एक विज्ञान भी है। मुझे अलमा-अता में कानून के पत्राचार स्कूल के विद्यार्थियों के पास इस विषय पर एक पुस्तिका पढ़ने का अवसर मिला। इस पुस्तिका का लेखक उन पुलिस अफसरों की अत्यन्त प्रशंसा करता है, जिन्होंने तलाशियों के दौरान दो टन खाद, आठ घन गज ईंधन अथवा चारे के दो ढेरों को हटवाकर तलाशी ली; एक सामूहिक खेत के सब्जी के पूरे प्लाट से बर्फ हटवाया, ईंट के चूल्हों को तुड़वाया, गन्दे पानी के चौबच्चों को खुदवाया, शौचालय के बर्तनों की जांच कराई, कुत्ता घरों, मुर्गी घरों, चिड़ियाओं को रखने की जगहों की छानबीन की, गद्दों को चिथड़े-चिथड़े किया,

लोगों के शरीर पर हुई मरहम पट्टी को नोंच कर फेंका और यहां तक कि अत्यन्त सूक्ष्म फिल्म की तलाश में नकली धातु के दांतों तक को उखड़वा डाला। विद्यार्थियों को, इस पुस्तिका में यह सलाह दी गई है कि वह तलाशी का समारम्भ और अन्त सम्बन्धित लोगों के शरीर की तलाशी से करें (तलाशी के दौरान गिरफ्तार व्यक्ति किसी ऐसी चीज को उठा सकता था जिसकी पहले जांच की जा चुकी हो)। उन्हें यह भी सलाह दी गई थी कि वे तलाशी के स्थान पर दिन में किसी और समय फिर आयें तथा एक बार फिर बारीकी से तलाशी लें।

५—और आगे चल कर शिविरों में यह सोच-सोच कर हम किस प्रकार जलते रहते थे : वह परिस्थिति कैसी होती है यदि सुरक्षा संगठन के प्रत्येक कर्मचारी के मन में रात के समय लोगों को गिरफ्तार करने के लिए चलते समय यह बात होती कि वह जीवित वापस लौटेगा अथवा नहीं और उसे चलते समय अपने परिवार को अलविदा कहनी पड़ती। अथवा यदि, व्यापक पैमाने पर गिरफ्तारियों की अवधि में, उदाहरण के लिए लेनिनग्राद में, जब उन्होंने नगर की चौथाई आबादी को गिरफ्तार कर लिया, लोग चुपचाप अपने घरों में दुबक कर न बैठे रहते, और बाहर के दरवाजे पर होने वाली प्रत्येक दस्तक से भय के कारण कांपते न रहते, बल्कि यह समझ जाते कि अब उनके पास कुछ भी खोने को नहीं रह गया है और मकान के नीचे के बड़े कमरे में अचानक हमला करने के लिए आधे दर्जन लोगों को कुल्हाड़ियां, हथोड़े, सलाखें अथवा जो कुछ भी उपलब्ध होता, लेकर सुरक्षा कर्मचारियों की प्रतीक्षा में बिठा देते तो क्या होता ? आखिरकार, आपको पहले से ही इस बात की जानकारी थी कि वे नीली टोपी वाले रात के समय किसी अच्छे उद्देश्य के लिए बाहर नहीं निकलते हैं। और आप इस बात का निश्चय कर सकते थे कि आप एक गला काटने वाले की खोपड़ी अवश्य तोड़ेंगे। अथवा उस ब्लैकमारिया मोटर गाड़ी के बारे में आप क्या कहेंगे, जो सड़क पर केवल एक ड्राइवर सहित एकाकी खड़ी रहती थी—यदि लोग उसे वहां से उड़ा ले जाते अथवा उसके टायरों को फाड़ डालते तो क्या होता ? बहुत जल्दी ही सुरक्षा संगठनों के समक्ष अफसरों और यातायात के साधनों की कमी उत्पन्न हो जाती और, स्तालिन की पिपासा के बावजूद, यह अभिशप्त व्यवस्था निष्फल हो जाती, प्रभावहीन बन जाती !

यदि...यदि...हमें स्वतंत्रता से पर्याप्त प्यार नहीं है। और इतना ही नहीं—हमें सच्ची स्थिति की सही जानकारी भी नहीं थी। हमने सन् १९१७ में अपनी सारी शक्ति का अपव्यय कर डाला और इसके बाद हमने बहुत जल्दबाजी में घुटने टेक दिए। हमने बड़े आनन्द के साथ घुटने टेक दिए ! (आर्थर रैंसम ने यारोस्लावल में १९२१ में श्रमिकों की एक सभा का विवरण दिया है। मास्को स्थित केन्द्रीय समिति ने श्रमिकों के पास अपने प्रतिनिधि भेजे थे, जिन्हें मजदूर संघों सम्बन्धी विभिन्न प्रश्नों पर विचार करना था। क्योंकि इस सम्बन्ध में कुछ विवाद थे। विपक्ष के प्रतिनिधि, वाई० लारिन ने श्रमिकों को समझाया कि उनका मजदूर संघ प्रशासन के समक्ष उनकी प्रतिरक्षा व्यवस्था होनी चाहिए, कि उनके पास ऐसे अधिकार हैं, जिन्हें उन्होंने संघर्ष के द्वारा जीता है और इन अधिकारों को समाप्त करने अथवा सीमित बनाने का किसी भी व्यक्ति को अधिकार नहीं है। पर श्रमिक पूरी तरह से इन बातों के प्रति उदासीन थे, उनकी समझ में यह बात आ ही नहीं रही थी कि आखिर किससे उन्हें अपनी रक्षा करने की आवश्यकता है और उन्हें अब

अधिकारों की क्या जरूरत है। और जब पार्टी के प्रवक्ता ने मजदूरों को उनके आलसीपन के लिए बुरा भला कहा और बेकाबू होने के लिए भी और उनसे बलिदान की मांग की—बिना वेतन के अतिरिक्त समय में काम, भोजन में कमी, कारखाने के प्रशासन में सैनिक अनुशासन—इससे श्रमिक अत्यन्त उत्साहित हुए और करतल ध्वनि हुई।) इसके बाद जो कुछ हुआ हम शुद्ध और नितांत रूप से उसके योग्य थे।
६—यह सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात है : हर बात के बावजूद आप एक मनुष्य हो सकते हैं ! त्रावकिन का कुछ नहीं हुआ। कुछ समय पहले हम लोगों की बड़ी सहृदयतापूर्ण बात हुई और मैं पहली बार उसे सही अर्थों में समझ सका। वह एक अवकाश प्राप्त जनरल है और शिकारी संगठन का एक निरीक्षक।

अध्याय २

१—वेस्तनिर एन० के० वी० डी० (एन० के० वी० डी० हेराल्ड), १९१७, अंक १, पृष्ठ ४।
२—लेनिन, सोब्रान्नए सोचीनेनिया (सम्पूर्ण वांगमय), पांचवां संस्करण, खण्ड ३५, पृष्ठ ६८।
३ —वही, पृष्ठ २०४।
४—वही।
५—वही, पृ० २०३।
६—वेस्तनिक एन० के० वी० डी०, १९१८, अंक २१-२२ पृष्ठ १।
७—देक्रेती सोवेतस्कोई व्लास्ती (सोवियत शासन के आदेश), खंड ४, मास्को, १९६८, पृष्ठ ६२७।
८—एम० आई० लातसिस, दा गोदा बोर्बी ना वेनुत्रेनोम फ्रंत; पोपुलयार्नी ओबजोर दयातेलनोस्ती च के (घरेलू मोर्चे पर संघर्ष के दो वर्ष; चेका की गतिविधियों की लोकप्रिय समीक्षा), मास्को, जी० आई० जैड, १९२०, पृ० ६१।
९—वही, पृष्ठ ६०।
१०—लेनिन, पांचवां संस्करण, खण्ड ५१, पृष्ठ ४७, ४८।
११—वही, पृष्ठ ४८।
१२—वही, पृष्ठ ४७।
१३—वही, पृष्ठ ४९।
१४—"देश का सर्वाधिक कठोर परिश्रम करने वाला वर्ग निश्चित रूप से उजाड़ दिया गया। कोरोलिंको, गोर्की के नाम पत्र, १० अगस्त १९२१।
१५—तुखाचेवस्की, "बोर्बा एस कौंतरेवुल्यूश्योनिमी वोस्तानियामी" ("क्रांति विरोधी विद्रोहों के विरुद्ध संघर्ष"), वोइना आई० रेवोल्यूसिया में (युद्ध और क्रांति में), १९२६, अंक ८ अ, ७१८।
१६—कोरोलेंको का गोर्की को पत्र, १४ सितम्बर १९२१। कोरोलेंको हमें १९२१ में जेलों की एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण स्थिति का भी स्मरण दिलाते हैं : सर्वत्र टाइफस ज्वर

की भरमार है।" इस बात की पुष्टि स्क्रिपनिकोवा और उस समय कैद अन्य व्यक्तियों ने भी की है।

१७—वी० जी० कोरोलेंको ने गोर्की को लिखा, २९ जून, १९२१ : "एक दिन इतिहास इस बात का उल्लेख करेगा कि बोलशेविक क्रांति ने सच्चे क्रांतिकारियों और समाजवादियों से निपटने के लिए उसी माध्यम का प्रयोग किया, जिसका प्रयोग ज़ार के शासन ने किया था। दूसरे शब्दों में इनके विरुद्ध शुद्ध रूप से पुलिस का प्रयोग किया गया।"

१८—यदाकदा, किसी समाचारपत्र में कोई लेख पढ़कर आप अविश्वास की सीमा तक आश्चर्यचकित रह जाते हैं। २४ मई, १९६१ के इजवेस्तिया में हमने पढ़ा कि हिटलर के सत्तारूढ़ होने के एक वर्ष बाद मैक्सीमिलियन होक को केवल इसलिए गिरफ्तार कर लिया गया कि वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था। क्या उसे मार डाला गया? नहीं, उसे दो वर्ष की कैद की सजा दी गई। स्वाभाविक है कि इसके बाद उसे एक और सजा सुनाई गई होगी? नहीं, उसे रिहा कर दिया गया। आप जिस प्रकार चाहें इसकी व्याख्या कर सकते हैं! वह जीवित रहा और उसने एक गुप्त संगठन का गठन किया और इसी सम्बन्ध में उसके साहस का बखान करने के लिए इजवेस्तिया का उक्त लेख प्रकाशित हुआ था।

१९—स्पष्ट है कि इस राजतंत्रवादी ने एक निजी प्रतिशोध की कारवाई के रूप में वोईकोव की हत्या कर दी : कहा जाता है कि खाद्य सामग्री के यूराल प्रान्तीय कमीसार के रूप से पी० एल० वोईकोव ने जुलाई १९१८ में यह निर्देश दिया था कि जार के परिवार को गोली से उड़ाने के समस्त चिन्हों को समाप्त कर दिया जाए (शवों को भयंकर रूप से क्षत विक्षत करने, इन्हें जला डालने और राख तथा अस्थियों को इधर-उधर बखेर देने के समस्त चिन्हों को मिटा देने का निर्देश दिया था।)

२०—ए० एफ० वेलिचको, एक सैनिक इंजीनियर, जनरल स्टाफ की सेना अकादमी का भूतपूर्व प्रोफेसर और एक लैफ्टिनेंट जनरल। वह ज़ार के युद्ध मन्त्रालय में सैनिक परिवहन प्रशासन का अध्यक्ष था। उसे गोली से उड़ा दिया गया था। ओह, सन् १९४१ में वह कितना उपयोगी सिद्ध होता।

२१—उन लोगों का कहना है कि जब ओभोनिकिजे पुराने इंजीनियरों से बात करता था तो वह अपने दाहिने और बायें ओर मेज के ऊपर एक पिस्तौल रख लेता था।

२२—यहां जिस सुखानोव का उल्लेख किया गया है वह वही सुखानोव है जिसके पेत्रोग्राड के कारपोवका स्थित मकान पर और उसकी जानकारी से (और आजकल वहां नियुक्त मार्गदर्शक जब यह बात कहते हैं कि यह बैठक उसकी जानकारी के बिना हुई तो वे झूठ बोलते हैं) १० अक्तूबर १९१७ को बोलशेविक केन्द्रीय समिति की बैठक हुई और इस बैठक में बोलशेविकों ने सशस्त्र विद्रोह करने का निर्णय लिया।

२३—जिन लोगों ने अगले ४० वर्षों तक इस पद पर काम किया वह उनसे बेहतर सिद्ध हो सकता था! लेकिन मनुष्य का भाग्य कितना विचित्र है! एक सिद्धान्त के रूप में, दोयारेंको सदा राजनीति से दूर रहता था! जब उसकी पुत्री अपने साथ ऐसे विद्यार्थी घर ले आती थी जो ऐसे विचार प्रकट करते थे जिनसे समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी के विचार प्रकट होते थे तो वह उन्हें अपने घर से चले जाने को कहता था!

२४—कोन्द्रातएव को, तनहाई में कैद की सजा दी गई और इस स्थिति में मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गए और वहीं उनकी मृत्यु हो गई। यूरोवस्की की भी मृत्यु हो गई। चायानोव

को पांच वर्ष तक तनहाई में कैद रखने के बाद अलमा-अता में निष्कासित कर दिया गया और वहां फिर १९४८ में कैद कर लिया गया।

२५—इस प्रकार के किसान और उसकी नियति का चित्रण स्तीपान चोसोव के रूप में एस० यालीजिन के उपन्यास में अमर हो गया है।

२६—मुझे अच्छी तरह से याद है कि हमारी किशोरावस्था में यह शब्द बड़ा तर्कसंगत लगता था। इसमें कुछ भी अस्पष्ट नहीं था।

२७—यह विशेष रूप से प्रबल लहर किसी भी व्यक्ति को किसी भी क्षण अपनी लपेट में ले सकती थी। लेकिन जब १९३० के बाद के वर्षों में विशिष्ट बुद्धिवादियों की गिरफ्तारी का प्रश्न आया तो उन लोगों ने इस बात को अधिक चतुरतापूर्ण समझा कि किसी विशेष रूप से शर्मनाक उल्लंघन के आधार पर कोई झूठा मुकदमा तैयार किया जाए। (पेदेराफ्ती की तरह; अथवा, प्रोफेसर प्लेतनेव का मामला, जिसमें यह अभियोग लगाया गया था कि एक स्त्री रोगी के पास अकेला होने पर उसने इस रोगिनी की छाती पर काट खाया। एक राष्ट्रीय समाचारपत्र में इस घटना का प्रकाशन किया गया—और जरा इसका खंडन करने का तो प्रयास कीजिए!)

२८---ए० वाई० वाईशिस्की (संपादक), ओत त्यूरेन के० वोस्तपितातेलनिम उचरेझ्देनियाम (जेलों से पुनर्वास संस्थाओं तक), दंड नीति संस्था द्वारा प्रकाशित निबन्धों का संग्रह, मास्को, सोवियतस्कोए याकोनोदा तेलस्तवो प्रकाशनगृह, १९३४।

२९—और इस बात की भी बहुत संभावना है कि जासूसों सम्बन्धी उन्माद की सीमा तक बढ़ा हुआ भय केवल स्तालिन की संकीर्णता के ही कारण नहीं था। यह बात ऐसे प्रत्येक व्यक्ति उपयोगी थी जिसे कोई भी विशेषाधिकार प्राप्त था। यह निरंतर बढ़ती हुई और व्यापक बनती हुई गोपनीयता, जानकारी को रोक कर रखने, बन्द दरवाजों और सुरक्षा सम्बन्धी पासों, कांटेदार तारों से घिरे ग्राम्य आवासों तथा गोपनीय और प्रतिबंधित विशेष दुकानों का स्वाभाविक औचित्य सिद्ध हुई। लोगों के पास जासूसों के इस भय पर आधारित उन्माद के लौहकवच को बेधने का कोई साधन नहीं था और वे किसी भी प्रकार यह जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते थे कि नौकरशाह किस प्रकार अपने लिए आरामदेह जीवन की व्यवस्था कर रहे हैं, लोफरी कर रहे हैं, मूर्खतापूर्ण कार्य कर रहे हैं। अन्धाधुन्ध खा-पी रहे हैं और आनंद मना रहे हैं।

३०—लेनिन, पांचवां संस्करण, खण्ड ४५, पृष्ठ १९०।

३१—यह अत्यन्त बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बात और स्वांग भर दिखाई पड़ता है। लेकिन मैंने इस स्वांग का अनुसंधान नहीं किया था। मैं इन लोगों के साथ स्वयं जेल में था।

३२—इस बात का संदेह करने के मनोवैज्ञानिक आधार हैं कि अनुच्छेद—५८ की इस धारा के अन्तर्गत भी आई० स्तालिन को दण्ड दिया जा सकता था। इस प्रकार की सेवा से सम्बन्धित सब दस्तावेज फरवरी १९१७ के बाद सुरक्षित नहीं बचे ताकि लोगों को इस बात की पूरी जानकारी हो सके। जार के एक भूतपूर्व पुलिस निदेशक वी० एफ० झुनकोवस्की ने, जिसकी मृत्यु कोलिमा में हुई, बताया कि फरवरी क्रांति के आरम्भिक दिनों में पुलिस के महत्वपूर्ण कागजपत्रों को जला डालने का काम स्वयं कुछ विशेष दिलचस्पी रखने वाले क्रान्तिकारियों के संयुक्त प्रयास के आधार पर हुआ था।

३३—इसी प्रकार यह भी संयोग का विषय नहीं था कि लेनिनग्राद में १९३४ में 'बड़ाघर'

बन कर तैयार हो गया और यह कीरोव की हत्या के समय उपयोग के लिए उपलब्ध था।
३४—सन् १६४७ में क्रान्ति की तीसरी वर्षगांठ के अवसर २५ वर्ष की कैद की सजा की व्यवस्था कर दी गई।
३५—आजकल, जब हम चीन की सांस्कृतिक क्रान्ति को उसी चरण में देखते हैं—अंतिम विजय के बाद के सत्रहवें वर्ष में—तो हम इस बात की संभावना में विश्वास कर सकते हैं कि ऐतिहासिक विकास का एक बुनियादी कानून मौजूद है। और यहां तक कि स्वयं स्तालिन भी एक अन्धा और सामान्य अभिकर्ता दिखाई पड़ने लगता है।
३६—मुझे यह बात एन० जी—को ने बताई।
३७—इनमें से पांच मुकदमे से पहले ही मर गए। पूछताछ के दौरान उन्हें जो यातनाएं दी गई थीं वे उनकी मृत्यु का कारण बनीं। २४ की मृत्यु शिविरों में हुई। ३०वां व्यक्ति, आइवन अरिस्तलोविच पुनिच, अपनी रिहाई और अभियोग मुक्ति से बाद वापस लौटा। (यदि उसकी भी मृत्यु हो जाती तो हमें इन ३० व्यक्तियों के मामले के बारे में कुछ भी पता न चलता, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अन्य लाखों लोगों के बारे में कोई जानकरी नहीं है।) और वे अनेक 'गवाह' जिन्होंने इन लोगों के विरुद्ध बयान दिए थे आज भी स्वर्दलोवस्क में मौजूद हैं—समृद्धि का जीवन बिताते हुए, महत्वपूर्ण पदों पर आसीन अथवा विशेष पेंशनरों के रूप में जीवनयापन करते हुए। कैसा डार्विनवादी चुनाव है!
३८—किसे उनका स्मरण है? घंटों तक हर रोज वे चलते रहते थे! स्तम्भित रूप से समान! उद्घोषक लेवितान को संभवत: उन सबका स्मरण है: वह इन पत्रों को बड़े भावपूर्ण तरीके से पढ़ता रहता था।
३९—वाईशिस्की, ऊपर उद्धृत।
४०—स्वयं मैंने भी प्राय: इस आदेश के प्रभाव का अनुभव किया। मैं रोटी की दुकान पर लाईन में खड़ा हुआ था। एक पुलिसमैन ने मुझे बाहर बुलाया और अपनी गिनती पूरी करने के लिए मुझे एक ओर ले गया। यदि एक भाग्यशाली हस्तक्षेप न होता तो मैं युद्ध में हिस्सा न लेने जाकर तभी से गुलाग में पहुंच जाता।
४१—वे लोग पारिवारिक नाम के आधार पर जाति का निर्णय करते थे। डिजाईन इंजीनियर वासिलि ओकोरोकोव अपने वास्तविक नाम से अपने रेखाचित्रों पर हस्ताक्षर करना अधिक सुविधाजनक समझता था। इसके बाद, १९३० के बाद के वर्षों में, जब कानूनी रूप से अपना नाम बदल पाना सम्भव था उसने अपना नाम राबर्ट शतेकेर कर लिया। यह नाम बड़ा शानदार था और वह अपने रेखाचित्रों पर इस नाम के खूबसूरत हस्ताक्षर भी कर सकता था। अब इसी नाम के आधार पर उसे जर्मन मानकर गिरफ्तार कर लिया गया—और उसे यह सिद्ध करने का मौका नहीं दिया गया। कि वह जर्मन नहीं है। इस प्रकार उसे निष्कासित कर दिया गया "क्या यह तुम्हारा वास्तविक नाम है? फासिस्ट जासूसी सेवा ने उन्हें क्या-क्या काम सौंपे थे?" इसके अलावा ताम्बोव का वह निवासी भी था, जिसका वास्तविक नाम कावेर्जनेव था और जिसने १९१८ में अपना नाम बदल कर कोवे कर लिया था। किस समय उसे ओकोरोकोव जैसे भाग्य का सामना करना पड़ा।
४२—यह आरम्भ में ऐसा स्पष्ट निर्णय नहीं था। सन् १९४३ तक में ऐसी कुछ भिन्न लहरें थीं जो दूसरी लहरों से एकदम अलग थीं—तथाकथित "अफ्रीकावासियों" जैसी लहर लम्बे अरसे तक वोरकुता निर्माण योजनाओं में इस लहर के अन्तर्गत गिरफ्तार कैदियों को

इसी प्रचलित नाम में पुकारा जाता रहा। जर्मनों के कुछ ऐसे रूसी युद्धबन्दी भी थे, जिन्हें उस समय दूसरी बार बंदी बनाया गया जब अमरीकियों ने अफ्रीका में रोमेल की सेना के पास से उन्हें गिरफ्तार किया। ("ही वी") सन् १६४३ में उन्हें मिस्र, ईराक और ईरान होकर स्टुडीबेकर गाड़ियों में अपनी मातृभूमि भेजा गया और कैस्पियन सागर की एक रेगिस्तानी खाड़ी में उन्हें तुरन्त कांटेदार तारों के पीछे डाल दिया गया। जिस पुलिस ने इन कैदियों को अपनी निगरानी में लिया उसने इनके समस्त सैनिक पद चिह्नों को नोंच फेंका और उन समस्त वस्तुओं से भी मुक्त कर दिया जो उन्हें अमरीकियों ने दी थीं। (हां, पुलिस वालों ने इन चीजों को अपने पास रख लिया और राज्य के हवाले नहीं किया। इस के बाद उन लोगों को विशेष आदेशों की प्रतीक्षा करने के लिए बोरकुता भेज दिया और दंडसंहिता के किसी भी अनुच्छेद के अन्तर्गत किसी विशेष अवधि के लिए सजा सुनाए बिना ही (अनुभवहीनता के कारण) उन्हें वहां भेज दिया गया। ये "अफ्रीकी" बोरकुता में त्रिशंकु की स्थिति में रहते रहे। इनके ऊपर पहरा नहीं था, लेकिन इन्हें पास नहीं दिए गए थे और पासों के बिना वे बोरकुता में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकते थे इन लोगों को स्वतन्त्र मजदूरों की दर से ही मजदूरी दी जाती थी। लेकिन इनके साथ व्यवहार कैदियों जैसा होता था। और विशेष आदेश कभी भी नहीं आए। इन लोगों को भुला दिया गया था।

४३—इस टोली के साथ क्या हुआ यह आगे चलकर एक किस्सा बन गया। शिविर में इन लोगों ने स्वीडन के बारे में अपना मुंह पूरी तरह से बन्द रखा क्योंकि वे इस बात से भयभीत थे कि कहीं उन्हें एक और सजा न सुना दी जाए। लेकिन न जाने कैसे स्वीडन में लोगों को इनके साथ हुए व्यवहार का पता चल गया और समाचारपत्रों में इस सम्बन्ध मे बड़ी बदनामी हुई। इस समय तक इन लोगों को विभिन्न शिविरों में, दूर और समीप के शिविरों मे पहुँचाया जा चुका था। अचानक, विशेष आदेशों के बल पर, इन सब लोगों को शिविरों से निकाल कर लेनिनग्राद की क्रेस्ती जेल में पहुँचाया गया। यहां दो महीने तक इन लोगों को इतना अधिक खिलाया पिलाया गया जितना किसी बलि के बकरे को खिलाया पिलाया जाता है और इन्हें अपने बाल भी बढ़ाने की अनुमति दी गई। इसके बाद इन्हें खासे अच्छे कपड़े पहनाये गए। यह पूर्वाभ्यास कराया गया कि वे क्या बातें और किससे ये बातें कहेंगे। इसके साथ ही उन्हें यह भी चेतावनी दी गई कि यदि कोई हरामजादा इधर-उधर की बात करने का साहस दिखायेगा तो उसके सिर में गोली मार दी जायेगी—और इसके बाद इन लोगों को चुने हुए विदेशी पत्रदारों के सम्मेलन में पेश किया गया और यहां इस सम्मेलन में कुछ ऐसे दूसरे लोग भी मौजूद थे जिन्होंने स्वीडन में इन सब लोगों को देखा था। इन भूतपूर्व शिविर निवासियों ने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक बातचीत की, यह बताया कि वे लोग कहां रह रहे थे, पढ़ रहे थे और काम कर रहे थे। इन लोगों ने सोवियत संघ की बुर्जुआ लोगों द्वारा इस सम्बन्ध में बदामी बदनामी पर अत्यन्त क्रोध प्रकट किया जिस के बारे में उन्होंने कुछ ही समय पहले पश्चिम के समाचारपत्रों में पढ़ा था। (आखिरकार पश्चिम के समाचारपत्र सोवियत संघ में हर गली के नुक्कड़ की अखबार की दुकान पर बिकते हैं!) और इस प्रकार इन लोगों ने एक दूसरे को पत्र लिखे और लेनिनग्राद में एकत्रित होने का निश्चय किया। (यात्रा पर आने वाले खर्च की इन्हें जरा भी चिन्ता नहीं थी) इन लोगों की ताजगी और स्वास्थ्य ने समाचारपत्रों में प्रकाशित बातों को एकदम

झूठा साबित कर दिया। जिन पत्रकारों ने ये बातें लिखी थीं अब वे स्वदेश लौट कर क्षमायाचनापूर्ण समाचार लिखने लगे। यह बात पश्चिम के लोगों की कल्पना के बाहर थी कि इस बात का अन्य कोई स्पष्टीकरण हो सकता है। और जिन लोगों ने पत्रकारों से यह भेंट की थी उन्हें वापस एक स्नानघर में ले जाया गया। एक बार फिर उनके सिर मुंडवा दिए गए उनके पुराने चिथड़े पहनने को दे दिए गए और फिर उन्हीं शिविरों में वापस भेज दिए गए। अब क्योंकि इन लोगों ने अच्छा आचरण किया था अतः इन्हें एक और कैद की सजा नहीं सुनाई गई।

४४—यद्यपि मुझे सम्पूर्ण विवरण की जानकारी नहीं है फिर भी मैं इस बात से आश्वस्त हूं कि इनमें से अनेक जापानियों को कानून सम्मत तरीके से दण्ड नहीं दिया जा सकता था। यह एक प्रतिशोध की कारवाई थी और जब तक सम्भव हो मानव शक्ति के उपयोग का एक साधन भी था।

४५—यह बात अत्यन्त आश्चर्यजनक है कि पश्चिम में, जहां अधिक समय तक राजनीतिक रहस्य छिपे नहीं रहते, क्योंकि वे अनिवार्य रूप से किसी न किसी प्रकार प्रकाशित हो जाते हैं अथवा इन्हें प्रकट कर दिया जाता है, विश्वासघात की यह कारवाई ब्रिटेन और अमरीका की सरकारों ने बहुत अच्छी तरह से और सावधानी से छिपा कर रखी। यह सच है कि यह अन्तिम रहस्य है अथवा दूसरे महायुद्ध के अन्तिम रहस्यों में से है। शिविरों में इन लोगों का सामना अक्सर होने पर मुझे पूरी चौथाई शताब्दी तक इस बात पर विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि पश्चिम के लोगों को पश्चिम की सरकारों की कारवाई की कोई जानकारी नहीं थी, उन्हें इस बात का जरा भी ज्ञान नहीं था कि इतने बड़े पैमाने पर रूस के साधारण आदमियों को प्रतिशोध और मौत के मुंह में धकेल दिया गया था। १९७३ तक—२१ जनवरी के संडे ओकलाहोमन में —जूलियस एप्स्टीन का एक लेख प्रकाशित नहीं हो सका था और मैं यहां उन लोगों की ओर से, जो मौत के मुंह में चले गए हैं और जो गिने चुने लोग जीवित रह गए हैं इस समाचार के प्रकाशन के लिए अपना आभार प्रदर्शित करने का दुस्साहस करता हूं। सोवियत संघ को बलपूर्वक रूसियों को सौंप देने की व्यापक कारवाई के अब तक छिपे इतिहास का एक छोटा सा दस्तावेज प्रकट हुआ है। "ब्रिटेन में दो वर्ष तक बिना किसी परेशानी के रहने के बाद, ये लोग सुरक्षा की झूठी भावना के कारण अपनी सतर्कता खो बैठे थे और इस कारण से उनके सामने अचानक यह स्थिति आ खड़ी हुई...उन लोगों ने यह अनुभव नहीं किया था कि उन्हें वापस सोवियत संघ भेजा जा रहा है...ये लोग मुख्यतया सीधे सादे किसान थे और इनको बोलशेविकों के विरुद्ध व्यक्तिगत और कटु शिकायतें थीं।" इंगलैंड की सरकार ने उनके साथ जो व्यवहार किया वह "अन्य प्रत्येक देश के मामले में केवल युद्ध अपराधियों के लिए ही सुरक्षित था : अर्थात् अपनी इच्छा के विरुद्ध उन लोगों के हवाले कर देना जिनसे यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वे उनके ऊपर न्यायोचित तरीके से मुक़दमा चलायेंगे।" इन सब लोगों को उनके विनाश के लिए द्वीप समूह भेज दिया गया। (लेखक की टिप्पणी १९७३।)

४६—"धागे की गोली" के मुक़दमे के वास्तविक कागजपत्रों में उन लोगों ने "सिलाई का २०० मीटर सामान" लिखा। इससे यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि वे "धागे की एक गोली लिखने में शर्म का अनुभव करते थे।

४७—और मृत्युदण्ड को केवल एक बहुत छोटी अवधि के लिए ही पर्दे के पीछे छिपा कर

रखा गया; ढाई वर्ष बाद—जनवरी १९५० में—भयंकर नाखूनदार पंजों के प्रदर्शन के साथ इस पर्दे को हटा दिया गया।

४८—हमारे देश में कोई भी सत्य जानना हमेशा असम्भव रहा है—आज भी, और सदा ही, और एकदम आरम्भ से। पार मास्को की अफवाहों के अनुसार, स्तालिन की यह योजना थी: मार्च के आरम्भ में "डाक्टर हत्यारों" को लाल चौक में फांसी पर लटकाया जाना था (उत्तेजित देशभक्त, जो, जैसाकि स्वाभाविक था, प्रशिक्षकों द्वारा प्रेरित होते, यहूदियों के जाति विनाश के काम में जुट जाते। और तभी सरकार—और यहां स्तालिन के चरित्र का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है, क्या नहीं?—बहुत कृपापूर्वक हस्तक्षेप कर यहूदियों को जनता के क्रोध से बचाने के लिए कारवाई करती और उसी रात इन लोगों को मास्को से सुदूरपूर्व और साइबेरिया भेज दिया जाता—जहां पहले ही इन लोगों के लिए बैरकें तैयार कर दी गई थीं।

अध्याय—३

१—ए० पी० के०—वा के बयान के अनुसार, डाक्टर एस०

२—के० एस० टी—ई

३—इसी पुस्तक के भाग १ का अध्याय ८ देखिए।

४—ए० ए० अखमातोवा ने मुझे बताया कि वह इस बात से पूरी तरह आश्वस्त थीं। उन्होंने मुझे उस चेका कर्मचारी का नाम भी बताया जिसने यह झूठा मुकदमा तैयार किया था। उसका नाम शायद वाई० अग्रानोव था।

५—दंड प्रक्रिया संहिता के अनुच्छेद-९३ में यह कहा गया है: "एक अनाम घोषणा एक फौजदारी मामले का समारम्भ कराने का कारण बन सकती है।" (और यहां "फौजदारी" शब्द पर आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि संहिता के अन्तर्गत समस्त "राजनीतिक कैदी" फौजदारी कानून के अन्तर्गत आने वाले अपराधों के अपराधी ही माने जाते थे।)

६—एन० वी० क्राइलेंकों, जा प्यात लेत (१९१८-१९२२) अन्तिम ५ वर्ष (१९१८-१९२२) मास्को-पेत्रोग्राद, जी० आई० जैड १९२३, पृष्ठ ४०१।

७—वाई० जिम्फबर्ग लिखती हैं कि अप्रैल १९२९ में "कैदियों को राजी करने के लिए शारीरिक उपायों के इस्तेमाल" की अनुमति दे दी गई थी। वी० शलामोव का विश्वास है कि १९३८ के मध्य से कैदियों को यातनाएं देने की अनुमति दे दी गई थी। पुराने कैदी एम—च का विश्वास है कि "इस आशय का एक आदेश था जिसके द्वारा पूछताछ को सरल बनाया गया और इसके अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक तरीकों के स्थान पर शारीरिक यातना देने के तरीकों का इस्तेमाल किया जाने लगा।" आइवानोव-राजुमनिक सन् १९३८ के मध्य को ही "सर्वाधिक क्रूर पूछताछ की अवधि" बताते हैं।

८—अपने श्रोताओं की तरह ही संभवत:, वाईशिंस्की को उस समय इस सैद्धांतिक आश्वासन की आवश्यकता थी जब वह सरकारी वकील के प्लेटफार्म पर खड़ा होकर यह चिल्लाता था: "इन लोगों को पागल कुत्तों की तरह गोली से उड़ा दो!" कम से कम वह, क्योंकि वह दुष्ट विचारों का व्यक्ति होने के साथसाथ तेज दिमाग वाला भी था, यह अच्छी तरह से

जानता था कि अभियुक्त निर्दोष हैं। और इस बात की पूरी संभावना है कि उसने और मार्क्सवादी द्वन्द्वात्मक के उस विराट अध्येता, प्रतिवादी बुखारिन ने एक साथ मिल कर न्यायिक छूट के द्वन्द्वात्मक विस्तार का कार्य बड़े प्रबल उत्साह के साथ किया : बुखारिन के लिए उस स्थिति में मरना आवश्यकता से अधिक मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ होता यदि वे पूरी तरह से निर्दोष होते। (इस प्रकार उन्हें स्वयं अपने अपराध का अनुसंधान करने की आवश्यकता थी !) ; और वाइशिंस्की के लिए स्वयं को एक शुद्ध धूर्त के रूप में न देख कर एक तार्किक के रूप में देखना अधिक ग्राह्य था।

९—इसकी तुलना संयुक्त राज्य अमरीका के संविधान के पांचवें संशोधन से कीजिए : "किसी भी (व्यक्ति को) किसी भी फौजदारी मुकदमे में स्वयं अपने विरुद्ध बयान देने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा।" बाध्य नहीं किया जाएगा ! (यही बात सत्रहवीं शताब्दी के अधिकार विधेयक में भी शामिल है।

१०—आमतौर पर यह बात कही जाती है कि रोस्तोव-आन-दि-दोन और क्रासनोदर कैदियों को यातना देने की बर्बरता के लिए विशेष रूप से कुख्यात थे, लेकिन यह बात सिद्ध नहीं हुई है।

११ ज़ार साम्राज्य के कठोर कानूनों के अध्ययन भी घनिष्ठ सम्बन्धी बयान देने से इनकार कर सकते थे। और यदि आरम्भिक जांच के दौरान वे बयान भी देते थे तो वे अदालत में इस बयान से इनकार कर सकते थे और अदालत की कारवाई में इसका उपयोग रोक सकते थे। और, यह बड़ी विचित्र बात थी कि किसी अपराधी से रिश्तेदारी अथवा घनिष्ठता अपने आपमें कोई प्रमाण नहीं माना जाता था।

१२- आज वे कहती हैं : "११ वर्ष बाद, अभियोगमुक्त करने की कारवाइयों के दौरान उन लोगों ने मुझे वे "बयान" पढ़ने दिए और मैं आध्यात्मिक जुगुप्सा की प्रबल भावना से ग्रस्त हो गई। गर्व करने के लिए क्या शेष था ? "स्वयं मैंने भी, अभियोगमुक्ति की कारवाई के दौर में, अपने आरम्भिक बयानों के अंश सुन कर यही अनुभव किया। जैसे कि कहावत है : उन लोगों ने मुझे मोड़ कर कमान बना दिया और मैं कुछ और ही बन गया। अब मैं स्वयं को नहीं पहचान सकताथा—मैं इन बयानों पर इस प्रकार हस्ताक्षर कर सका और उसके बाद यह सोच सका कि मेरी हालत बहुत बुरी नहीं थी ?

१३—यह, स्पष्ट रूप से, मंगोलियाई विषय है। नाइवा पत्रिका में (१५ रार्च, १९१४, पृष्ठ २१८) मंगोलिया की एक जेल का रेखाचित्र दिया गया है : प्रत्येक कैदी को एक अलग ट्रंक में बंद कर दिया गया है और प्रत्येक ट्रंक के ऊपर एक छोटा सा छेद है, जो उसके सिर के लिए अथवा भोजन देने के लिए है। जेल का संतरी इन ट्रंकों के बीच पहरा देता हुआ चक्कर लगाता है।

१४- आखिरकार किसी व्यक्ति का कार्यकाल इसी प्रकार शुरू हुआ—घुटनों के बल बैठे हुए किसी कैदी के ऊपर पहरा देना। और अब इस बात की पूरी संभावना है कि यह व्यक्ति किसी ऊंचे पद पर पहुंच गया होगा और उसके बच्चे बड़े हो चुके होंगे।

१५ –जरा एक ऐसे विदेशी की कल्पना कीजिए, जो रूसी भाषा नहीं जानता और जिसे ऐसी उलझन की स्थिति में कोई कागज दस्तखत करने के लिए दे दिया जाता है : इन परिस्थितियों में बबेरिया वासी जुप अशचेन ब्रेनेर ने एक ऐसे कागज पर हस्ताक्षर किए जिसमें उसने इस बात पर सहमति प्रकट की थी कि उसने युद्धकाल में उसने जहरीली

गैस वाली गाड़ियों पर काम किया। शिविर में, १९५४ में ही वह यह सिद्ध करने में सफल हुआ कि उस समय वह म्यूनिक में था और बिजली से वैल्डिंग करने का काम सीख रहा था।

१६—जी० एम—च

१७—यह उल्लेखनीय है कि निरीक्षण पूरी तरह सम्भवत: और यह कभी भी इस सीमा तक नहीं हुआ था कि जब १९५३ में वास्तविक निरीक्षकों ने भूतपूर्व राज्य सुरक्षा मंत्री अबाकुमोव की जेल की कोठरी में प्रवेश किया, जब अमाकुमोव स्वयं कैदी था, तो वह हंसी के मारे लोटपोट हो गया क्योंकि वह यह सोच रहा था कि उसे उलझन में डालने के लिए झूठे निरीक्षकों को भेजा गया है।

१८—सन् १८४९ में गिरफ्तार कार्यलीयन प्रान्तीय पार्टी समिति के सचिव जी० कुप्रियानोव के मामले में उन लोगों ने जो दांत तोड़ डाले थे उनमें कुछ मामूली थे, और इनका कोई महत्व नहीं था लेकिन अन्य दांत सोने के थे। शुरू में उन लोगों ने उसे इस आशय की रसीद दी कि उसने सोने के दांत उसके लिए सुरक्षित रखे जा रहे हैं। और इसके बाद उन लोगों ने समय रहते इस रसीद को भी उससे छीन लिया।

१९—सन् १९१८ में मास्को क्रान्तिकारी अदालत ने ज़ार के भूतपूर्व जेलर बोनदार को दण्ड दिया। उसकी अत्यन्त क्रूरता का जो उग्रतम उदाहरण दिया गया था वह यह था कि "एक मामले में उसने एक राजनीतिक कैदी को इतरी जोर का थप्पड़ मारा कि उसका कान का पर्दा फट गया।" (क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृष्ठ १६ ।)

२०—एन० के० जी०

२१—जो लोग हमारे यहां व्याप्त संदेह के वातावरण से परिचित हैं वे यह बात समझ जाएंगे कि किसी जनवादी अदालत अथवा जिले की कार्यकारिणी में दंड संहिता की एक प्रति मांगना क्यों असम्भव था। दंड संहिता में आपकी दिलचस्पी एक असाधारण कार्य होती: इसका अर्थ यह होता कि आप या तो कोई अपराध करने की तैयारी कर रहे हैं अथवा अपने अपराध को छिपाने की कोशिश में लगे हैं।

२२—और वहां पूछताछ आठ से दस महीने तक चलती थी। "हो सकता है कि क्लिम। वोरोशलोव। ने स्वयं ऐसी किसी पूछताछ का अनुभव किया हो। "वहां लोग कहते थे। (क्या वह सचमुच कभी कैद हुआ था?)

२३—उसी वर्ष बुत्यर्की में, हाल में गिरफ्तार लोग, जिन्हें जेल के स्नान घर और अन्य बाक्सों से होकर गुजारा जा चुका था, लगातार अनेक दिनों तक सीढ़ियों पर इस प्रतीक्षा में बैठे रहते थे कि कैदियों की गाड़ी रवाना हो और उन्हें कोठरियों में स्थान मिले। त—व को बुत्यर्की में सात वर्ष पहले कैद किया गया था, यह १९३१ में हुआ था और उसका कथन है कि सोने के तख्तों के नीचे बेहद भीड़ थी और कैदी तारकोल के फर्श पर नीचे लेटे रहते थे। मैं स्वयं भी सात वर्ष बाद, १९४५ में यहां कैद रखा गया था और उस समय भी यही हाल था लेकिन हाल में मुझे एम०के० व—च से मूल्यवान व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त हुई है, जिससे १९१८ में बुत्यर्की में कैदियों की भयंकर भीड़ के बारे में बताया गया है। उस वर्ष अक्तूबर के महीने में—लाल आतंक के दूसरे महीने में—यह जेल इस सीमा तक खचाखच भर गई थी कि ७० स्त्री कैदियों को कपड़ा धोने के कमरे में बन्द रखा गया। तो बुत्यर्की जेल में कैदियों की भीड़ कब नहीं रही?

२४—लेकिन यह भी कोई चमत्कार नहीं है: सन् १९४८ में व्लादिमिर आंतरिक जेल में

३० कैदियों को १० फुट लम्बी और १० फुट चौड़ी कोठरी में लगातार खड़ा रहना पड़ा। (एस० पोतापोव)

२५—मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि आइवानोव-राजुमनिक की पुस्तक में ऐसी बहुत सी बातें हैं जो सतही और व्यक्तिगत हैं और बहुत से अत्यन्त ऊबा देने वाले मजाक भी हैं। लेकिन इस पुस्तक में १९३७-१९३८ की अवधि में जेल की कोठरियों के सच्चे जीवन का अच्छा चित्रण किया गया है।

२६—वास्तविकता यह है कि उसने परेड में अपनी ब्रिगेड का नेतृत्व किया था लेकिन न जाने क्यों उसने इस ब्रिगेड का इस्तेमाल सरकार के विरुद्ध नहीं किया। लेकिन इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इन अत्यंत भयंकर और विविध यातनाओं के बाद उसे विशेष मण्डल ने दस वर्ष की कैद की सजा सुना दी। इससे स्पष्ट होता है कि पुलिस वालों को अपनी उपलब्धियों में कोई विश्वास नहीं था।

२७—आंशिक रूप से, इसका भी वही कारण था, जो अनेक वर्ष बाद बुखारिन के मामले का था। आखिरकार इन लोगों से पूछताछ वे लोग कर रहे थे, जो सामाजिक दृष्टि से उसके समान स्तर के थे, जो उनके वर्गगत भाई थे और इस कारण से प्रत्येक वस्तु का स्पष्टीकरण देने की इच्छा स्वाभाविक थी।

२८—आर० पेरेसवेतोव नोवीमीर, अंक ४, १९६२।

२९—एस० पी० मेलगुनोव, वोसपो निनानिया आई० नेवनिकी, (संस्मरण और डाइरियां) खण्ड १, पेरिस, १९६४, पृष्ठ १३९।

३०—इस टोली के एक सदस्य आन्द्रेयुश्किन ने खारकोव में अपने एक मित्र को एक स्पष्ट पत्र लिखा : "मैं इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हूं कि एक अत्यन्त क्रूर आतंक शुरू होने जा रहा है—और यह बहुत निकट भविष्य में ही शुरू होगा...लाल आतंक मेरी रुचि का विषय है...मुझे अपने इस पत्र को प्राप्त करने वाले की चिन्ता है...यदि उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है, तो मैं भी नहीं बचूंगा और यह बात बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण होगी क्योंकि मैं अपने साथ बहुत से अत्यंत प्रभावशाली लोगों को भी घसीट ले जाऊंगा।" यह इस किस्म का पहला पत्र नहीं था! और इस पत्र के बाद बिना किसी जल्दबाजी के जो खोज शुरू हुई वह पांच सप्ताह तक जारी रही। खारकोव से इस खोज का समारम्भ हुआ और यह पता लगाने की कोशिश की गई कि सेंट पीटर्सबर्ग से किसने यह पत्र लिखा था। २८ फरवरी तक आन्द्रेयुश्किन का पता ठिकाना नहीं मिल सका। एक मार्च को, बम फैंकने वालों को, बमों सहित नेवस्की चौक में हत्या का प्रयास करने से कुछ ही क्षण पहले गिरफ्तार कर लिया गया।

३१—उन दिनों मेरे कारण मेरा एक स्कूल का मित्र प्रातः गिरफ्तार ही हो गया था बाद में यह सुन कर मुझे अत्यन्त राहत मिली कि वह अभी भी स्वतंत्र था! लेकिन इसके २२ वर्ष बाद उसने मुझे लिखा : "तुम्हारी प्रकाशित रचनाओं के आधार पर मैं यह निष्कर्ष निकालता हूं कि तुम जीवन का एकांगी रूप देखते हो...निरपेक्ष दृष्टि से कहा जाए तो तुम पश्चिम के देशों, पश्चिम जर्मनी और संयुक्त राज्य अमरीका के फासिस्ट प्रतिक्रियावादियों के भण्डाबरदार बन गए हो, उदाहरण के लिए लेनिन, और मैं इस बात से आश्वस्त हूं कि तुम उन्हें उसी प्रकार प्रेम और सम्मान की दृष्टि से देखते होगे जिस प्रकार पहले देखा करते थे, हां, और वृद्ध मार्क्स और एंजिल्ज भी, तुम्हारी कठोरतम शब्दों में

निन्दा करते, इस बारे में सोचना !" वस्तुतः, मैं इस बारे में सोचता हूं ; मुझे इस बात का कितना खेद है कि उस समय तुम गिरफ्तार नहीं हुए ! तुम कितनी बातों से वंचित रह गए !

३२—के० आर० डी० क्रान्ति विरोधी गतिविधि।

अध्याय-४

१—इस तुलना से बचने का कोई रास्ता नहीं है : वर्ष और तरीके दोनों अत्यन्त घनिष्ठता से सम्बद्ध हैं और यह तुलना उन लोगों को और भी अधिक स्वाभाविक लगी जो गेस्टापो और एम० जी० बी० दोनों के हाथों से गुजरे थे। इन लोगों में प्रवासी रूसी और आर्थोडॉक्स चर्च का उपदेशक एवजेनी आइवानोविच डिबनिच भी था। गेस्टापो ने उसके ऊपर जर्मनी में रहने वाले रूसी मजदूरों के मध्य कम्युनिस्ट गतिविधियों का अभियोग लगाया और एम० जी० बी० ने उसके ऊपर अन्तर्राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग से घनिष्ठ सम्बन्ध होने का। दिवनिच का निर्णय एन० जी० बी० के विरुद्ध था। दोनों संगठनों ने उसे यातनाएं दी थीं। लेकिन गेस्टापो सच्चाई जानने के प्रयास में लगा था और जब अभियोग सही सिद्ध नहीं हुआ तो दिवनिच को रिहा कर दिया गया। एम० जी० बी० की सच में कोई दिलचस्पी नहीं थी और एक बार गिरफ्तार हो जाने के बाद वह किसी को भी अपने शिकंजे से निकलने देने को तैयार नहीं थे।

२—यातना के लिए एक बेहतर शब्द।

३—स्पष्ट है कि इसका सम्बन्ध उनके अपने लोगों से है।

४—सन् १९३१ में इलिन

५—यारोस्लावल का उग्र पूछताछ अधिकारी वोकोपियालोव, जिसे मोलदाविया में चर्च के मामलों का सर्वाधिकार प्राप्त अधिकारी नियुक्त किया गया।

६—एक अन्य इलिन यह विक्टर निकोलाएविच था, जो राज्य सुरक्षा संगठन में लैफ्टि-नेंट जनरल रह चुका था।

७—"तू कौन है ?" बर्लिन में जनरल सेरोव ने विश्वविख्यात जीव विज्ञानी तिमोफेएव-रेसोवस्की से बड़े अपमानजनक तरीके से पूछा। और इस वैज्ञानिक ने, जो भयभीत नहीं हुआ था और जिसमें कज्जाकों का वंशानुगत साहस था इसी प्रकार उत्तर दिया और "तू कौन है ?" सेरोव ने अपनी गलती को सुधारा और इस बार भद्र शब्दावली का प्रयोग करते हुए पूछा : "क्या आप वैज्ञानिक हैं ?"

८—आइवन राजमुनिक के अनुसार वासिलएव के साथ यह हुआ।

९—एसफिर आर०, १९४७।

१०—पूछताछ अधिकारी पोखिलको, केमेरोवो राज्य सुरक्षा प्रशासन।

११—स्कूली लड़का मिशा बी०।

१२—बहुत लम्बे अर्से तक मैं "बर्बाद पत्नी" शीर्षक कहानी की कथावस्तु को अपने दिमाग में समेटे रहा। लेकिन अब लगता है कि मुझे यह कहानी लिखने का कभी मौका नहीं मिलेगा। तो यह कथावस्तु यहां प्रस्तुत है। कोरिया के युद्ध से पहले सुदूर पूर्व की किसी

विमान टुकड़ी में, एक लैफ्टिनेंट कर्नल जब छुट्टी पर घर वापस लौटा तो उसने अपनी पत्नी को अस्पताल में पाया। डाक्टरों ने उससे सच्चाई नहीं छिपाई : विकृतिपूर्ण मुद्राओं में सम्भोग के कारण इस स्त्री के गुप्तांग क्षतिग्रस्त हो गए थे। यह लैफ्टिनेंट कर्नल अपनी पत्नी से मिला और उससे यह स्वीकार कराया कि इसके लिए कौन उत्तरदायी हैं और उसे पता चला कि यह व्यक्ति उसकी अपनी यूनिट का एक ओसोबिस्त है जो वरिष्ठ लैफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त है।

(हां, यह स्पष्ट है कि यह घटना स्वयं स्त्री के कुछ सहयोग के बिना नहीं हो सकती थी।) क्रोध से पागल होकर यह लैफ्टिनेंट कर्नल दौड़ता हुआ ओसोबिस्त के दफ्तर में पहुंचा, अपनी पिस्तौल निकाली और उसे गोली मार देने की धमकी दी। लेकिन इस वरिष्ठ लैफ्टिनेंट जनरल ने बहुत जल्दी ही उसे पीछे हटने और अत्यन्त पराजित और दयनीय अवस्था में अपने दफ्तर से चले जाने के लिए बाध्य किया। उसने धमकी दी कि वह लैफ्टिनेंट कर्नल को सबसे भयंकर शिविरों में सड़ने के लिए भेज देगा जहां वह यह गिड़गिड़ा कर यह याचना करेगा कि उसे और अधिक कष्ट न देकर किसी प्रकार जान से ही मार डाला जाए। इतना ही नहीं उसने लैफ्टिनेंट कर्नल को यह भी हुक्म दिया कि वह अपनी पत्नी को वह जैसी अवस्था में है, वैसे ही घर ले जाए - एक ऐसे घाव सहित जो किसी सीमा तक कभी भी ठीक नहीं हो सकता था—उसके साथ रहे, तलाक देने का साहस न करे और शिकायत करने की बात भी न सोचे। और यह सब कीमत थी गिरफ्तार न होने की ! लैफ्टिनेंट कर्नल ने जैसा कहा गया था ठीक वैसा ही किया। (मुझे यह किस्सा इस ओसोबिस्त के ड्राइवर ने सुनाया था।)

ऐसे अन्य मामले भी रहे होंगे, क्योंकि इस क्षेत्र में सत्ता का दुरुपयोग विशेष रूप से आकर्षक था। सन् १९४४ में एक अन्य गेबिस्त ने—राज्य सुरक्षा अफसर—सेना के एक जनरल की पुत्री को यह धमकी देकर अपने साथ विवाह करने के लिए बाध्य किया कि यदि वह उससे विवाह नहीं करेगी तो वह उसके पिता को गिरफ्तार कर लेगा। इस लड़की का एक मंगेतर था लेकिन अपने पिता को बचाने के लिए उसने इस गेबिस्त से विवाह कर लिया। वह अपने संक्षिप्त विवाह के दौरान डायरी लिखती रही। इसे अपने सच्चे प्रेमी को दिया और इसके बाद आत्महत्या कर ली।

१३—सन् १९५४ में इस सक्रिय और दृढ़ स्त्री ने एक मुकदमे में क्रुभकोव के विरुद्ध बयान दिया। यद्यपि उसका पति उसे इस बात पर राजी करने के लिए निरन्तर प्रयत्न करता रहा कि वह इस मामले को आगे न बढ़ाये और स्वयं उसने इन लोगों के प्रत्येक अपराध को क्षमा कर दिया था, जिसमें स्वयं उसे सुनाया गया मृत्युदण्ड भी शामिल था, जिसे बाद में कैद की सजा में बदल दिया गया था। अब क्योंकि यह क्रुभकोव का पहला अपराध नहीं था, और क्योंकि सुरक्षा संगठनों के हितों का उल्लंघन किया गया था, उसे २५ वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई। क्या वह सचमुच इतनी लम्बी अवधि तक कैद रहा ?

१४—रोमन गुल, जेरभिस्की। मेनभिस्की-पीटर्स-लातसिस-यगोदा, पेरिस, १९३६।

१५—यह भी एक कहानी की कथावस्तु है और इस क्षेत्र में न जाने कितनी और कथावस्तु मौजूद हैं ! शायद किसी दिन कोई व्यक्ति इनका उपयोग करे।

१६—वी ओख : आर : सेना के समान संतरी सेवा, पहले गणराज्य की आन्तरिक संतरी सेवा।

१७—यह सच है कि समग्र दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि डी॰ तेरेखोव संकल्प शक्ति और साहस वाला असाधारण व्यक्ति है (एक अस्थिर स्थिति में बड़े-बड़े स्तालिनवादियों को न्याय के सुपुर्द करने के लिए इसी बात की जरूरत थी।) और यह भी स्पष्ट है कि वह बड़े जीवंत मस्तिष्क वाला भी व्यक्ति था। यदि ख्रुश्चेव के सुधार, और अधिक दूरगामी तथा निरन्तर जारी रहने वाले होते तो तेरेखोव ही इन्हें लागू करने में सर्वोपरि सिद्ध होता। हमारे देश में ऐतिहासिक नेता इसी प्रकार ठोस काम करने में असफल होते हैं।

१८—एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में उसके झक्कीपन का यह एक और उदाहरण है: वह नागरिक वस्त्र पहन लेता था और कुजनित्सोव के साथ मास्को में घूमता रहता था। कुजनित्सोव उसके अंगरक्षकों का मुखिया था और वह जब कभी तरंग में आता चेका के कोष से पैसा देता था। क्या इससे प्राचीन रूस की गन्ध नहीं आती—अपनी आत्मा की शान्ति के लिए दान?

१९—युद्ध के दौरान, लेनिनग्राद का एक विमान चालक, रियाजन में अस्पताल से छुट्टी पाने के बाद एक तपेदिक चिकित्सालय में पहुंचा और डाक्टरों से प्रार्थना की: "कृपा करके मेरे शरीर में कोई खामी ढूंढ़ निकालिए! मुझे सुरक्षा संगठनों में काम के लिए भेजा जा रहा है!" एक्सरे लेने वाले डाक्टरों ने यह लिख दिया कि उसे तपेदिक होने का संदेह है—और सुरक्षा संगठनों ने तुरन्त उसका नाम अपनी सूची से काट दिया।

२०—तेरेखोव के साथ घटी एक घटना: ख्रुश्चेव के अधीन न्याय प्रणाली की न्यायसंगतता को मेरे समक्ष सही प्रमाणित करने के प्रयास में उसने बड़े जोर से अपनी मेज़ के ऊपर रखे शीशे पर मुक्का दे मारा और उसकी कलाई कट गई। उसने सहायता के लिए टेलीफोन किया। उसके सहायक अधिकारी तुरन्त आए। ड्यूटी पर तैनात वरिष्ठ अफसर उसके लिए आइओडीन और हाइड्रोजन परआक्साईड लाया। वार्तालाप जारी रखते हुए, वह अपने घाव पर गीली रूई बड़ी असहाय अवस्था में रखे रहा: ऐसा लगता है कि उसका रक्त आसानी से जमता नहीं। और इस प्रकार ईश्वर ने उसके समक्ष मनुष्य की सीमाओं को स्पष्ट रूप से प्रकट किया! और उसने अन्य लोगों के विरुद्ध निर्णय सुनाए थे और मृत्युदण्ड तक दिया था।

२१—'वन डे इन दि लाईफ आफ आइवन डेनिसोविच' के प्रकाशन के सम्बन्ध तक में अवकाश प्राप्त नीली टोपी वालों ने जो पेन्शनों का आनन्द ले रहे थे इस आधार पर इस पुस्तक के प्रकाशन के प्रति आपत्ति उठाई कि इससे उन लोगों के घाव हरे हो जाएंगे, जो शिविर में कैद रहे थे। उनके इस कथन से यह लगता था कि वह स्वयं को ऐसा व्यक्ति मानते हैं जिनकी रक्षा की जरूरत है।

२२—इस बीच, पूर्व जर्मनी में, ऐसी कोई बात सुनने को नहीं मिली। जिसका यह अर्थ होता है कि अब इन्हें नए जूते पहना दिए गए हैं; इनका राज्य की सेवा में उपयोग किया जा रहा है।

अध्याय-५

१—के० पी० जैड=आरम्भिक हिरासत कोठरी। डी० पी० जैड=आरम्भिक हिरासत घर। दूसरे शब्दों में वे स्थान, जहां पूछताछ होती थी, वे स्थान नहीं, जहां सजा काटी जाती थी।

२—अलेक्जेंडर डी० ।
३—एकदम सही माप यह है कि इनकी चौड़ाई १५६ सेंटीमीटर और लम्बाई २०९ सेंटीमीटर थी। हमें कैसे मालूम ? यह जानकारी इंजीनियरी गणना और एक ऐसे सशक्त हृदय की विजय के परिणामस्वरूप प्राप्त हुई, जिसे सुखानोवका भी नहीं तोड़ सकी। यह पैमाइश अलेक्जेंडर डी० ने की थी, जो इस बात पर दृढ़ता से डटा हुआ था कि वह उन्हें स्वयं को पागल नहीं करने देगा और निराशा से भी ग्रस्त नहीं होगा। वह अपना दिमाग दूरी की माप करने में लगाए रखता था और इस प्रकार जेल की भयावह परिस्थितियों से अपने मस्तिष्क को सुरक्षित रखता था। लेफेरतोवो में उसने सीढ़ियों की गिनती की, इसे किलोमीटरों में परिवर्तित किया, एक नक्शे के आधार पर यह स्मरण रखा कि मास्को से सीमा की दूरी कितने किलोमीटर है और इसके बाद पूरे यूरोप की कितनी दूरी है और अटलांटिक सागर के पार तक की दूरी कितनी बैठती है। अमरीका वापस लौटने की आशा उसे इस काम में लगाए रखती थी। और लेफेरतोवो की तनहाई की कोठरी में एक वर्ष में उसने इतनी दूरी तय की जितनी दूरी आधे अटलांटिक सागर तक जाने में बैठती है। इसके बाद वे लोग उसे सुखानोवका ले गए। यहां, यह अनुभव करते हुए कि कितने गिने चुने लोग यह बताने के लिए जीवित रहेंगे—और हमारी यह सब जानकारी सिर्फ उससे प्राप्त होती है—उसने कोठरी को मापने का तरीका निकाला। उसके जेल के कटोरे की तली में १०-२२ संख्याओं की मोहर लगी थी। और उसने यह अनुमान लगा लिया कि "१०" इस कटोरे के पैंदे का व्यास है और "२२" इसके ऊपरी किनारे का व्यास। इसके बाद उसने एक तौलिए से एक धागा खींच कर निकाला, पैमाइश की एक टेप तैयार की और इसकी सहायता से प्रत्येक वस्तु को मापने लगा। इसके बाद उसने खड़े-खड़े सोने का तरीका निकालना शुरू किया। वह अपने घुटने छोटी कुर्सी के सहारे लगा देता और संतरी को यह झांसा देता कि उसकी आंखें खुली हैं। वह यह झांसा देने में सफल हुआ और यही कारण है कि जब र्‍यूमिन ने उसे एक महीने तक सोने नहीं दिया तब भी वह पागल नहीं हुआ।
४—और यदि यह स्थिति लेनिनग्राद में बड़े घर में जर्मनों के घेरे के दौरान थी तो आप ने मनुष्य भक्षी भी अवश्य देखे होंगे। जिन लोगों ने मनुष्य का मांस खाया था, जिन लोगों ने शल्यक्रिया के कक्षों से मनुष्य के जिगर को उड़ा कर व्यापार किया था उन्हें न जाने किस कारण से एम० जी० बी० ने राजनीतिक कैदियों के साथ ही रखा था।
५—दमन के नए उपाय, जेल के परम्परागत नियमों के अलावा, जी० पी० यू-एन के० वी० डी० एम० जी० बी० की आन्तरिक जेलों में धीरे-धीरे इजाद हुए। १९२० के बाद के आरम्भिक वर्षों में, कैदियों को इस प्रकार कष्ट नहीं दिया जाता था और सामान्य संसार की तरह रात के समय बत्ती बुझा दी जाती थी। लेकिन बाद में उन लोगों ने रात भर बत्ती जली रखनी शुरू की, जिसका तार्किक आधार यह था कि उन्हें कैदियों के ऊपर हर समय नजर रखना आवश्यक है। (जब वे जांच के लिए बत्ती जलाते थे तब स्थिति और भी बुरी होती थी।) कैदियों को अपनी बाहें कम्बल से बाहर रखनी पड़ती थीं, जिसका कारण यह बताया जाता था कि कहीं कम्बल के नीचे कैदी अपना गला न घोंट ले और इस प्रकार न्यायोचित पूछताछ से बच न निकले। यह बात प्रयोगात्मक तरीके से भी दर्शायी गई थी कि सर्दियों में मनुष्य स्वयं को गर्म रखने के लिए अपनी बाहें अपने ओढ़ने के कपड़ों के नीचे रखना चाहता है। इसके परिणामस्वरूप बाहें बाहर रखने का नियम स्थायी बना दिया।

६—मुझे यह कहते हुए प्रायः भय लग रहा है लेकिन ऐसा लगता है मानो ८वां दशक शुरू होने के अवसर पर ये लोग एक बार फिर सामने आने लगे हैं। यह बात आश्चर्यजनक है। इतनी आशा करना सचमुच बहुत अधिक था।

७—राज्य सुरक्षा मुख्यालय से सम्बद्ध।

८—हमारे मध्य ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा, जिसने हमारे स्कूलों के इतिहास के पाठ्यक्रमों में और सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास के संक्षिप्त पाठ्यक्रम के माध्यम से यह बात कंठस्थ न कर ली हो कि यह "उत्तेजनात्मक और गन्दा घोषणापत्र" स्वतंत्रता की मजाक था, कि ज़ार ने यह घोषणा की थी : "मृतकों के लिए स्वतंत्रता और जीवित लोगों के लिए जेल" लेकिन यह उक्ति झूठी थी। इस घोषणापत्र में यह कहा गया था कि सब राजनीतिक पार्टियों को काम करने की अनुमति होगी और यह भी कि राज्य द्यूमा अर्थात् संसद् का गठन होगा और इसमें एक क्षमादान की भी व्यवस्था की गई थी जो ईमानदारी पर आधारित और अत्यन्त व्यापक था। (यह तथ्य कि यह घोषणापत्र दबाव के अन्तर्गत जारी किया गया था, दूसरी बात है।) वस्तुतः, इस घोषणापत्र की शर्तों के अनुसार सब राजनीतिक कैदियों को, बिना किसी भेदभाव के रिहा कर दिया जाना था और राजनीतिक कैदियों की रिहाई में इस बात का कोई ध्यान नहीं रखा जाना था कि उन्हें कितनी लम्बी अवधि की और किस प्रकार की सजा सुनाई गई थी। केवल अपराधियों को ही जेलों में बन्द रखने की बात कही गई थी। स्तालिन ने ७ जुलाई, १९४५ को जो क्षमादान घोषित किया था, वह एकदम इसके विपरीत था। यद्यपि यह बात सच है कि इस क्षमादान की घोषणा किसी दबाव के अन्तर्गत नहीं की गई थी। इस क्षमादान के अन्तर्गत समस्त राजनीतिक कैदी जेलों और शिविरों में भी सड़ते रहे।

९—स्तालिन द्वारा घोषित क्षमादान के बाद, जैसा कि मैं आगे चलकर बताऊंगा जिन लोगों को क्षमादान प्राप्त हुआ उन्हें भी दो या तीन महीने तक जेलों में रखा गया और वे पहले की तरह ही सड़ते रहे। और किसी ने भी इस बात को गैर कानूनी नहीं समझा।

१०—फासतेंको के अपनी मातृभूमि लौटने के तुरन्त बाद, उसका एक कनाडियन परिचित भी मातृभूमि आया। यह कनाडियन युद्धपोत पोतेमकिन पर नाविक था और इसने विद्रोह में हिस्सा लिया था। यह उस विद्रोह के बाद भागकर कनाडा पहुंच गया था और वहां एक समृद्ध किसान बन गया था। युद्धपोत पोतेमकिन के इस भूतपूर्व नाविक ने कनाडा में अपना सर्वस्व बेच डाला। अपना खेत और जानवर सब कुछ बेच दिया और अपना सब धन तथा नया ट्रैक्टर लेकर स्वदेश लौट आया था कि पवित्र समाजवाद की स्थापना में सहायता दे सके। वह आरम्भिक कृषि कम्यून में शामिल हुआ और इस कम्यून को अपना ट्रैक्टर दान में दे दिया। इस ट्रैक्टर को जिसने चाहा उसने चलाया और बहुत जल्दी ही यह

बर्बाद हो गया। पिछले २० वर्ष से वह जो कल्पना करता आ रहा था अब परिस्थितियां उसके बिलकुल भिन्न रूप धारण कर रही थीं। जिन लोगों को कम्यून में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया गया था वह अकार्यकुशल थे, ऐसे आदेश देते थे जिन्हें कोई भी समझदार किसान पूरी तरह से मूर्खतापूर्ण समझता था। इसके अलावा वह निरन्तर अधिक से अधिक दुबला होता गया। और उसके कपड़े फट चले और उसने कनाडा के जिन डालरों को कागज के रूबलों से बदल लिया था उनका कोई अवशेष नहीं बचा। उसने यह प्रार्थना की कि उसे अपने परिवार सहित देश से चले जाने की अनुमति दी जाए और जब उसने सीमा

पार की वह उतना ही गरीब था जितना युद्धपोत पोतेमकिन से भागते समय। उसने पहले की तरह ही एक नाविक के रूप में काम करते हुए समुद्र पार किया। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार उसने विद्रोह के बाद भागने के समय किया था क्योंकि उसके पास टिकट खरीदने के लिए पैसा नहीं था। और कनाडा वापस लौटने पर एक खेत मजदूर के रूप में फिर अपना जीवन शुरू किया।

११--जी० वी० प्लीखानोव, "पेत्रोग्राद के श्रमिकों के नाम एक खुली चिट्ठी" २८ अक्तूबर १९१७ को येदिनस्तोवो नामक अखबार में प्रकाशित।

१२—यह स्तालिन का प्रिय विषय था—प्रत्येक गिरफ्तार बोलशेविक और सामान्य रूप से गिरफ्तार प्रत्येक क्रांतिकारी का ज़ार की खुफिया पुलिस ओखराना का जासूस बताना। क्या यह उसका असहिष्णुतापूर्ण संदेह भर था? अथवा यह उसका अनुमान भर था? अथवा यह, संभवत:, स्वयं अपने उदाहरण के आधार पर था?...

१३—रूस की अनेक जेलों में कोठरियों के दरवाजों में बना विशेष और बड़ा छेद। जिसे कैदी लोग "कौरमुश्की" चारा देने का रास्ता कहते थे। इन छेदों पर लगे ढक्कन खुल जाने पर एक छोटी-सी मेज बन जाती थी। जेल के सन्तरियों आदि से इन्हीं छेदों से बातचीत की जाती थी, भोजन प्राप्त होता था और कैदियों के हस्ताक्षर के लिए जेल के कागज़ अन्दर पहुंचाये जाते थे।

१४—मेरे समय में 'वेरतुखाई" शब्द का जेल कर्मचारियों के लिए व्यापक पैमाने पर प्रयोग होने लगा था। कहा जाता है कि यूक्रेन के सन्तरियों के कारण यह शब्द प्रचलित हुआ, जो हमेशा यह हुक्म लगाते रहते थे: "स्तोई, ताने वेरतुखाईज़!" और इसके बावजूद जेल के संतरी के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द "टर्न की" अर्थात् चाबी बरदार सन्तरी भी उल्लेखनीय है। इसके लिए रूसी भाषा में "वेर्ती क्लीयुच" शब्द का प्रयोग किया जाता है। संभवत: रूस में "वेरतुखाई" वह व्यक्ति भी है, जो "चाबी घुमाता है।"

१५—हमारे देश में कहाँ पर्ची निकालने का काम नहीं किया गया? यह हमारी सार्वभौम और कभी समाप्त न होने वाली भूख का परिणाम था। सेना में भी, पूरे राशन का विभाजन इसी प्रकार होता था। और जर्मन सैनिक, जो अपनी खंदकों से यह बात सुनते रहते थे, इस सम्बन्ध में हमारी मजाक उड़ाते थे। "किसे माल मिला? राजनीतिक कमीसार को!"

१६—बहुत जल्दी ही जीवविज्ञानी तिमोफिएव-रेसोवस्की को यहां बर्लिन से लाया जाएगा, जिसका मैं पहले ही उल्लेख कर चुका हूं। ऐसा लगता था कि लूबयांका में फर्श पर इस प्रकार चाय के गिरने से अधिक दूसरी बात उन्हें नाराज नहीं करती थी। वे इसे जेल कर्मचारियों में अपने पेशे के प्रति गर्व के अभाव का प्रमाण समझते थे और इसी प्रकार हम समस्त लोगों का अपनी वृद्धि के काम में गर्व का अभाव भी। उन्होंने एक जेल के रूप में लूबयांका के २७ वर्ष के अस्तित्व को ७३० से गुना किया (वर्ष के प्रत्येक दिन का दुगना करके) और फिर इस संख्या को १११ कोठरियों से गुणा किया--और इसके बाद २१,८८,००० का जो आंकड़ा आया वे उससे आग बबूला हो उठे। इस अवधि में इतनी बार फर्श पर खोलता हुआ पानी गिरा और इतनी ही बार इस पानी को कपड़े से पोंछने की व्यवस्था की गई लेकिन किसी भी व्यक्ति ने टोंटीदार बाल्टियां बनाने की बात नहीं सोची।

१७—डाक्टर एस० पी० गाज हमारे देश में कुछ भी अतिरिक्त नहीं कमा सकता था।
१८—इस कम्पनी ने मास्को की जमीन का एक ऐसा टुकड़ा ले लिया था जो रक्त से भली-भांति से परिचित था। सन् १८१२ में निर्दोष वेरेशचागिन को फुर्कासोवस्की में, रेस्तोपचिन के पास टुकड़े-टुकड़े कर डाला गया था। और हत्यारी तथा गुलाम-किसानों की मालिकन साल्तीचिखा—जो गुलाम किसानों की हत्याएं भी करती थी—बोलशाया लूबयांका के दूसरी ओर रहती थी। (पो मस्कवे (मास्को में) एन० ए० जीनिके और अन्य द्वारा संपादित, मास्को, सबाशनिकोव प्रकाशक, १९१७ पृष्ठ, २३१।)
१९—बाद में सूसी मेरा स्मरण एक मार्क्सवादी और लोकतंत्रवादी के विचित्र सम्मिश्रण के रूप में करते रहे। हां, उस समय मेरे मन में बहुत भयंकर उलझन थी।
२०—हमने सन् १९५५ तक सन् १९०७ के उस करार को स्वीकार नहीं किया। मेलगुनोव ने अपनी १९१५ की डायरी में इन अफवाहों का उल्लेख किया है कि रूस जर्मनी में अपने कैदियों को सहायता नहीं पहुँचने देगा और इन कैदियों की स्थिति मित्र राष्ट्रों के अन्य कैदियों से बहुत बुरी थी—इसका एकमात्र उद्देश्य यह था कि यदि युद्धबंदियों के अच्छे जीवन की अफवाह हमारे सैनिकों के कानों में पहुंचेगी तो वे बड़ी तत्परता से हथियार डाल देंगे। यहां विचारों की एक प्रकार की निरन्तरता थी। (मेलगुनोव, वोसपोमी नानिया आई नेवनिकी, खण्ड १, पृष्ठ १९९ और २०३।)
२१—हां, हमारे सोवियत पूछताछ अधिकारी इस तर्क प्रकिया को स्वीकार नहीं करते थे। उन लोगों को जीवित रहने की इच्छा करने का क्या अधिकार था—जबकि मोर्चों से बहुत पीछे के सोवियत इलाकों में विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्तियों के परिवार जर्मनों से सहयोग किए बिना ही अच्छी तरह से रह रहे थे? किसी भी व्यक्ति ने इस बात पर विचार करने का कष्ट नहीं उठाया कि इन नौजवानों ने स्वयं अपने देशवासियों के विरुद्ध जर्मनी की ओर से हथियार उठाने से इन्कार कर दिया था। जासूसी का नाटक करने के कारण इन लोगों के ऊपर सबसे बुरे और सबसे गम्भीर अभियोग लगाए गए थे—अनुच्छेद-५८-६ के अन्तर्गत और इसके साथ ही तोड़-फोड़ की कारवाई के इरादे की बात भी जोड़ दी गई थी। इसका अर्थ था: मृत्यु पर्यन्त कैद में रखा।
२२—वह यह बताया करता था कि अत्यन्त मोटा शचेरबाकोव इस बात से नफरत करता था कि जब वह अपने सूचना कार्यालय में पहुंचे तो लोग उसे चलता हुआ देखें। इस कारण से वे लोग उन सब कर्मचारियों को जो उसके दफ्तर में काम करते थे शचेरबाकोव के आने के समय एक ओर हटा देते थे। अपने मोटापे के कारण हांपता हुआ वह नीचे झुकता और कालीन का एक किनारा उलट कर देखता। यदि कालीन के नीचे जरा-सी धूल मिल जाती तो पूरे सूचना कार्यालय के कर्मचारियों की मुसीबत आ जाती।
२३—भविष्यवक्ता वृद्ध ने केवल एक गलती की। उसने ड्राइवर को उसका भूतपूर्व मालिक समझ लिया था।
२४—जब सन् १९६२ में उन्होंने मेरा परिचय ख्रुश्चेव से कराया तो मेरे मन में उनसे यह कहने की बात आई: "निकिता सरगेएविच! आपका और मेरा एक समान परिचित है।" लेकिन मैंने उनसे कुछ और ही बात कहीं, जो अधिक महत्वपूर्ण थी। यह बात भूतपूर्व कैदियों की ओर से मैंने कही थी।

अध्याय-६

१—इन कैदियों को बूचेन वार्ड में कैद रखा गया था और जीवित बच गए थे, उन्हें वस्तुतः इसी कारण से स्वयं हमारे शिविरों में कैद रखा गया : आप एक मृत्यु शिविर में कैसे जीवित बचे रह सकते हैं ? कुछ न कुछ गड़बड़ जरूर है !

२—अब, २० वर्ष बाद, इस विषय पर पहली ईमानदारी से तैयार रचना प्रकाशित हुई है—पी० जी० ग्रीगोरेंको, "एक पत्रिका के नाम पत्र, सोवियत संघ की कम्युनिष्ट पार्टी के इतिहास संबन्धी समस्याएं," समिजदात, १९६८—और इसके बाद ऐसी रचनाओं की संख्या निरन्तर बढ़ेगी। सब साक्षियों की मृत्यु नहीं हुई है और जल्दी ही वह समय आयेगा जब कोई भी व्यक्ति स्तालिन की सरकार को पागलपन और देशद्रोह की सरकार के अलावा अन्य कुछ नहीं कहेगा।

३—सबसे बड़े युद्ध अपराधियों में से एक कर्नल जनरल गोलीकोव को, जो लाल सेना के जासूसी विभाग का अध्यक्ष था, युद्धबंदियों को स्वदेश वापस लौटने और उन्हें शिविरों में फेंक देने का काम सौंपा गया था।

४—इस सम्बन्ध में वितकोवस्की ने, चौथे दशक के आधार पर अधिक सामान्य शब्दावली में लिखा है। यह बात बड़ी आश्चर्यजनक थी कि झूठे तोड़-फोड़ करने वाले, जो यह बात अच्छी तरह से जानते थे कि उन्होंने कोई तोड़-फोड़ की कारवाई नहीं की है, यह विश्वास करते थे कि सेना के लोगों और पादरियों के विरुद्ध कारवाई उचित रूप से ही की जा रही है। सेना के वे लोग जो यह जानते थे कि उन्होंने विदेशी जासूसी सेवाओं की ओर से काम नहीं किया है और लाल सेना को क्षति नहीं पहुंचाई है, बड़ी तत्परता से यह विश्वास कर लेते थे कि इंजीनियर तोड़फोड़ की कारवाई करने वाले हैं और यह भी कि पादरियों को अवश्य नष्ट किया जाना चाहिए। जेल में डाल दिए जाने के बाद, सोवियत व्यक्ति इस प्रकार तर्क करता था : मैं स्वयं निर्दोष हूं, लेकिन उन अन्य लोगों, शत्रुओं से निपटने के लिए हर तरीके का उपयोग उचित है। ऐसे लोगों को पूछताछ के दौरान प्राप्त सबक और कोठरियों का यथार्थ ज्ञान देने में असफल रहता था। जब स्वयं उन्हें सजा भी सुना दी जाती थी, तब भी वे अपनी स्वतंत्रता के दिनों के अन्धविश्वासों को अपने मन में समेटे रहते थे : सर्वव्यापी षड्यंत्रों, जहर देने की कारवाईयों तोड़-फोड़ और जासूसी में विश्वास।

५—हमारे साहित्यिक समालोचकों के लिए यह कथन एक स्वीकार्य तथ्य बन गया है कि शोलोखोव ने, अपनी अनश्वर कहानी "सुदबा चेलोवेका"—"एक आदमी का भाग्य"— में "हमारे जीवन के इस पक्ष" के बारे में "कटु सत्य" कहा है और उन्होंने इस समस्या का "रहस्योद्घाटन" किया है। लेकिन हमें कड़ाई से यह जवाब देना होगा कि इस कहानी में, जो बड़ी निम्न कोटि की है, और जिसमें युद्ध सम्बन्धी अंश प्रभावहीन और विश्वास योग्य नहीं हैं—क्योंकि लेखकको जैसा कि स्पष्ट है, पिछले युद्ध के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं है—और जर्मनों के विवरण किसी भी रूप में विश्वास न करने योग्य व्यंग्य चित्रणों में प्रयुक्त भाषा के समान हैं (केवल नायक की पत्नी का ही सफल चित्रण हुआ है—क्योंकि वह दोस्तो एवस्की के साहित्य से अवतरित एक शुद्ध ईसाई महिला है), एक युद्धबंदीसम्बन्धी इस

कहानी में, युद्धबंदियों की वास्तविक समस्या को या तो छिपाया गया अथवा उसे विकृत कर के प्रस्तुत किया गया :

१ - लेखक ने कैदी बनाए जाने की सबसे कम उलझी हुई स्थिति को चुना—यह सैनिक उस समय बन्दी बनाया गया था जब वह बेहोश था। इस प्रकार उसे विवाद से ऊपर उठा दिया गया है और इस समस्या की पूरी तीक्ष्णता की उपेक्षा कर दी गई है। (यदि बन्दी बनाए जाने के समय यह सैनिक होश में होता जैसा कि अक्सर हुआ, तो क्या होता ? उस स्थिति में इस सैनिक के साथ क्या व्यवहार होता ?)

२—युद्धबंदी की प्रमुख समस्या के इस तथ्य को पेश नहीं किया गया है कि मातृभूमि में हमें अकेला छोड़ दिया था, हमें त्याग दिया था, हमें भला बुरा कहा था। शोलोखोव इस सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कहते। जबकि इस विशेष तथ्य के कारण स्थिति से उबरने का कोई रास्ता शेष नहीं रह गया था। इसके विपरीत, वे हमारे मध्य देशद्रोहियों की मौजूदगी को एक समस्या बताते हैं। (यदि सचमुच यही प्रमुख बात थी, तो हम उनसे यह अपेक्षा कर सकते हैं कि वे इस मामले की आगे जांच करते और हमें यह बताते कि समस्त जनता का समर्थन क्रान्ति के पूरे २५ वर्ष बाद ये देशद्रोही कहां से आए!)

३—शोलोखोव ने एक अत्यन्त विचित्र और जासूसी कहानियों जैसी कैद से भाग निकलने की कथा रची है, जिसमें अनेक तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर ऐसी अनिवार्य व्यवस्थाओं की उपेक्षा की है, जो वापस लौटने वाले युद्धबंदी के लिए स्मर्श अर्थात् सोवियत जासूस विरोधी संगठन में अनिवार्य होती हैं। वापस लौटने वाले युद्धबंदी की पहचान और उसे जाँच पड़ताल के लिए शिविर में रखना। इस कहानी के नायक सोकोलोव को केवल कांटेदार तारों के पीछे रखने से ही छुट्टी नहीं मिली जबकि इस बात की नियमों में व्यवस्था है, बल्कि—और यह सचमुच एक जबर्दस्त मजाक है—उसे उसके कर्नल ने एक महीने की छुट्टी दे दी ! (दूसरे शब्दों में : उसे उन कार्यों को पूरा करने के लिए स्वतंत्रता दे दी गई, जो फासिस्ट जासूसी सेवा ने उसे सौंपे थे। इस प्रकार उसका कर्नल भी उसकी तरह ही जेल में पहुंचेगा।)

६—आयोसिप टीटो इससे बाल बाल बचे। दमित्रोव के लाइपजिग के मुकदमे में साथी प्रतिवादी पोपोव और तानेर दोनों को जेल की सजा दी गई। (स्वयं दमित्रोव के लिए स्तालिन ने किसी अन्य बात का ही निर्धारण किया था।

७ वास्तविकता यह है कि जब युद्धबंदियों को सचमुच यह पता चल गया कि उनके साथ क्या व्यवहार होगा फिर भी उन्होंने ठीक यही आचरण किया। वासिली अलैक्सान्द्रोव को फिनलैंड में बन्दी बना लिया गया था। वहां उसे पीटर्सबर्ग के किसी वयोवृद्ध व्यापारी ने खोज निकाला और उसका नाम तथा पारिवारिक नाम पूछ कर बोला : "सन् १९१७ में तुम्हारे दादा का मेरे ऊपर एक बड़ा ऋण था। और मुझे यह ऋण चुकाने का मौका नहीं मिला। अब जबकि तुम यहां मौजूद हो ऋण की यह राशि ले लो।" एक पुराना ऋण वापस मिलना छप्पर फाड़ कर धन मिलने के बराबर है। युद्ध के बाद, प्रावासी रूसियों ने अलैक्सान्द्रोव को अपने बीच स्वीकार किया और उसका विवाह एक ऐसी लड़की से निश्चित हो गया, जिससे वह प्रेम करने लगा था—और उनका यह प्रेम साधारण भी नहीं था। उसे शिक्षित बनाने के लिए, उसके भावी ससुर ने उसे प्रावदा की एक जिल्द बंधी पुस्तक दी थी, जिसमें प्रावदा के १९१८ से लेकर १९४१ तक के सब अंक थे और

इसमें कहीं कोई अंश काटा अथवा ठीक नहीं किया गया था। इसके साथ ही उसके ससुर ने उसे गिरफ्तारियों की लहरों का प्रायः पूरा इतिहास बताया, इसका विवरण हमने ऊपर अध्याय-२ में दिया है। और इसके बावजूद...अलैक्सान्द्रोव ने अपनी मंगेतर को त्याग दिया और अपनी सम्पत्ति को भी तथा सोवियत संघ वापस लौट आया। और उसे वहां, जैसाकि आप आसानी से अनुमान लगा सकते हैं, पुरस्कार में १० वर्ष की कैद और इसके बाद पांच वर्ष तक मतदान के अधिकार से वंचित रखने की सजा दी गई। सन् १९५३ में वह इस बात से प्रसन्न था कि किसी प्रकार वह एक विशेष शिविर में एक फोरमैन के रूप में काम प्राप्त कर सका।

८—जहां तक आज, इतने अधिक समय बाद, तथ्यों के आधार पर पता लगाया जा सका है, आन्द्रेई आन्द्रेएविच व्लासोव, जो क्रान्ति के कारण निझनी नोवगोरद धर्म-अध्ययन संस्था में अपना अध्ययन पूरा नहीं कर सका, सन् १९१९ में लाल सेना में सेवा के लिए अनिवार्य रूप से भर्ती किया गया और उसने युद्ध में हिस्सा लिया। दक्षिण के मोर्चे पर, देनिकिन और व्रांगेल के विरुद्ध, वह एक प्लाटून कमाण्डर बन गया और इसके बाद कम्पनी कमाण्डर। तीसरे दशक में उसने विस्त्रेल पाठ्यक्रम पूरे किए। १९३० में वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बन गया। सन् १९३६ में, रेजीमेंटिल कमांडर के पद पर पहुंचने के बाद, उसे एक सैनिक सलाहकार के रूप में चीन भेजा गया। स्पष्ट है कि उसका सेना और पार्टी के उच्चपदाधिकारियों से सम्बन्ध नहीं था और इसके परिणामस्वरूप, जैसा कि स्वाभाविक था, वह स्तालिन के उन "दूसरी कोटि" के अफसरों में पहुंचा, जिन्हें सेनाओं, डिवीजनों और ब्रिगेड़ों के शुद्धि अभियानों के शिकार बने कमांडरों का स्थान लेने के लिऐ पदोन्नति दी गई थी। सन् १९३८ से वह एक डिवीजन का कमांडर बन गया। और १९४० में, जब "नए" (दूसरे शब्दों में पुराने) अफसर के पदों का सिलसिला शुरू किया गया तो उसे मेजर जनरल का पद मिला। अतिरिक्त उपलब्ध जानकारी से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि नए जनरलों की जमात में, जिनमें अनेक पूरी तरह से मूर्ख और अनुभवहीन थे, व्लासोव सर्वाधिक प्रतिभावान जनरलों में था। उसकी ९९वीं इनफेन्टरी डिवीजन, जिसे उसने १९४० की गर्मियों से ही प्रशिक्षण देना शुरू किया था, जर्मनी के हमले के समक्ष विचलित नहीं हुई। इसके विपरीत, जबकि शेष सेना पीछे हटने लगी, उसकी डिवीजन आगे बढ़ी, परजेमिस्ल पर फिर से अधिकार कर लिया और छह दिन तक इस पर अपना अधिकार कायम रखा। बहुत जल्दी कोर कमाण्डर का पद प्राप्त कर, १९४१ में लैफ्टिनेंट जनरल व्लासोव कीव के समीप ३७वीं सेना का कमाण्डर बन गया। उसने कीव के जबर्दस्त घेरे से अपनी सेना को बाहर निकाला और दिसम्बर १९४१ में मास्को के समीप २०वीं सेना की कमान संभाली। इस सेना ने राजधानी की रक्षा के लिए (सोलनेचनोगोरस्क पर अधिकार) जो सफल जवाबी हमला किया उसका सोवियत सूचना कार्यालय की १२ दिसम्बर की प्रैस विज्ञप्ति में विशेष रूप से किया गया। इस विज्ञप्ति में जिन जनरलों के नाम गिनवाए गए थे, उनकी सूची इस प्रकार है: भुकोव, लेल्युशेंको, कुजनित्सोव व्लासोव, रोकोसोवस्की और गोगोरोव। उन महीनों में, जिस गति से अफसरों को पदोन्नति दी जा रही थी, उसके परिणामस्वरूप वह वोलखोव मोर्चे का उप-कमांडर बन गया (मेरेत्स्कोव के अधीन) और दूसरी सेना का कमांडर नियुक्त हुआ। ७ जनवरी १९४२ को इस सेना का नेतृत्व करते हुए उसने लेनिनग्राद की घेरेबंदी को तोड़ने का अभियान शुरू

किया—उसने उत्तर पश्चिमी में वोलखोव नदी के पार हमला किया। एक संयुक्त अभियान के रूप से इस हमले का आयोजन किया गया था और इसके अन्तर्गत अनेक दिशाओं और स्वयं लेनिनग्राद से जर्मन सेनाओं को पीछे धकेलने का काम शुरू हुआ। निश्चित अवधियों के बाद ५४ वीं, और ५२वीं सेनाओं को भी उस कारवाई में हिस्सा लेना था। लेकिन ये तीनों सेनाएं आगे नहीं बढ़ीं। शायद ये इस काम के लिए तैयार नहीं थीं अथवा ये थोड़ा-सा बढ़ने के बाद ही तुरन्त रुक गईं। उस दौर में हम लोगों में ऐसे जटिल संयुक्त अभियानों की योजना बनाने और इससे भी अधिक इन अभियानों में लगाई गई सेनाओं को आवश्यक सामग्री पहुंचाने की क्षमता नहीं थी। व्लासोव की दूसरी आक्रामक सेना अपने हमले में सफल हुई और फरवरी १९४२ तक यह जर्मन सेनाओं की पंक्तियों को पीछे धकेलती हुई ४६ मील तक आगे बढ़ गई। और इसके बाद स्तालिन की विवेकहीन सर्वोच्च कमान इन सैनिक टुकड़ियों की क्षति को पूरा करने के लिए न तो पर्याप्त सैनिक जुटा सकी और न ही गोला बारूद पहुंचा सकी। (इस प्रकार सुरक्षित सेना और गोला-बारूद रख कर इन लोगों ने जवाबी हमला शुरू किया था!) स्वयं लेनिनग्राद को भी जर्मनी की नाकेबंदी के पीछे भूखों मारने के लिए छोड़ दिया गया क्योंकि उसे नोवगोरोद से कोई आवश्यक जानकारी नहीं मिली थी। मार्च में भी सड़कों पर बर्फ जमा था। लकिन अप्रैल के महीने से वह समस्त दलदली क्षेत्र जिसके ऊपर से दूसरी सेना आगे बढ़ी थी पिघलना शुरू हुआ और वहां कीचड़ हो गया अब आवश्यक सामान की सप्लाई के लिए सड़कें उपलब्ध नहीं थीं और विमानों से भी सामान नहीं पहुंचाया गया। इस सेना को भोजन नहीं मिला और इसके साथ ही व्लासोव को पीछे हटने की अनुमति भी प्राप्त नहीं हुई। दो महीने तक यह सेना भुखमरी और शत्रु के हमले से अपने सैनिकों का विनाश सहती रही। बुत्यर्की जेल में इस सेना के सैनिकों ने मुझे बताया कि वे लोग किस प्रकार मरे हुए और सड़ते हुए घोड़ों के खुर काट लेते थे और इसे उबाल कर किस प्रकार खाते थे। इसके बाद १४ मई को चारों ओर से घिरी सेना के ऊपर जर्मनों का हमला शुरू हुआ। आकाश में जो विमान थे वे, जैसाकि स्पष्ट है, केवल जर्मनी के ही थे। और केवल तभी, जरा मजाक तो देखिए, इस सेना को वोलखोव के पीछे हट आने की अनुमति दी गई। इस सेना ने शत्रु का घेरा तोड़ कर बाहर निकल जाने के अनेक निरर्थक प्रयास किए और यह क्रम जुलाई के आरम्भ तक जारी रहा।

और इस प्रकार व्लासोव की दूसरी आक्रामक सेना नष्ट हुई, इसने शब्दशः पहले महायुद्ध में सैमसोनोव की दूसरी रूसी सेना के दुर्भाग्य की पुनरावृत्ति की, जिसे इसी प्रकार पागलपन से भरे तरीके के अनुसार शत्रु के घेरे में फेंक दिया गया था।

अब, जैसाकि स्पष्ट है, यह मातृभूमि से विश्वासघात था! यह, निश्चय ही, विद्वेषपूर्ण और सिर्फ अपनी भलाई से प्रेरित विश्वासघात था। लेकिन यह विश्वासघात स्तालिन का था। देशद्रोह का अर्थ केवल धन के बदले अपने आपको बेच डालना ही नहीं होता है। इसके अन्तर्गत युद्ध की तैयारी में अज्ञान और लापरवाही का प्रदर्शन, गड़बड़ और कायरता, सेनाओं और सैनिक कोरों की निरर्थक कुरबानी जिसका उद्देश्य स्वयं अपनी मार्शल की वर्दी को सुरक्षित रखना हो, भी आता है। वस्तुतः सर्वोच्च कमांडर इन चीफ का इससे अधिक भयंकर देशद्रोह क्या हो सकता है?

सैमसोनोव के विपरीत, व्लासोव ने आत्महत्या नहीं की। अपनी सेना के नष्ट हो जाने के बाद वह जंगलों और दलदलों में धक्के खाता रहा और ६ जुलाई को सिवेरस्काया

क्षेत्र में व्यक्तिगत रूप से आत्म समर्पण किया। उसे पूर्वी प्रशा में लुटजेन के पास जर्मन मुख्यालय में ले जाया गया, जहां अनेक गिरफ्तार जनरल और एक ब्रिगेड का राजनीतिक कमीसार जी० एन० झीलेनकोव पहले से ही कैद था। झीलेनकोव कम्युनिस्ट पार्टी का एक सफल पदाधिकारी रह चुका था और मास्को की एक जिला पार्टी समिति के सचिव पद पर भी काम कर चुका था। ये गिरफ्तार अफसर पहले ही स्तालिन सरकार की नीति से अपनी असहमति प्रकट कर चुके थे। लेकिन इनका कोई सच्चा नेता नहीं था। व्लासोव ने यह स्थान लिया।

९—वास्तविक अर्थों में युद्ध की प्रायः समाप्ति तक कोई रूसी मुक्ति सेना नहीं थी। यह नाम और इसका चिन्ह दोनों रूसी वंश के एक जर्मन कैप्टेन स्ट्राइक-स्ट्राइक-फेल्ट ने ईजाद की थी। वह ओस्त-प्रोपेगण्डा एवतीलुंग में काम करता था। यद्यपि उसका पद मामूली सा था लेकिन वह प्रभावशाली था और उसने हिटलर के नेतृत्व को इस बात से आश्वस्त करने का प्रयास किया कि जर्मनी और रूस की संधि आवश्यक है। और रूसियों को जर्मनी से सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह दोनों पक्षों के लिए एक निरर्थक प्रयास था। प्रत्येक पक्ष दूसरे का नाजायज फायदा उठाना और दूसरे को धोखा देना चाहता था। लेकिन तत्कालीन परिस्थिति में जर्मन शक्ति सम्पन्न थे—वे अपनी शक्ति के शिखर पर थे। और अत्यन्त गहरे गर्त के तल में पड़े व्लासोव के अफसर केवल उनकी कल्पना में ही स्थान रखते थे। ऐसी कोई सेना नहीं थी, लेकिन युद्ध के आरम्भ से ही सोवियत नागरिकों की सोवियत विरोधी सैनिक टुकड़ियां तैयार की गई थीं। सबसे पहले लिथुवानियावासियों ने जर्मनों को समर्पण दिया। लिथुवानिया में अपनी एक वर्ष की मौजूदगी में ही हमने यहां के लोगों में गहरा और क्रोधपूर्ण शत्रुभाव उत्पन्न कर दिया था! और इसके बाद यूक्रेनी स्वयंसेवकों की एस० एस०—गालीशिया डिवीजन तैयार की गई। और इसके बाद स्तोनियावासियों की टुकड़ियां। सन् १९४१ की वसंत ऋतु में बाइलो रूस में गार्ड कम्पनियां तैयार हुईं। और क्रीमिया में एक तातार बटालियन। स्वयं हमने ही ये सब बीज बोये थे! उदाहरण के लिए क्रीमिया में मुस्लिम मस्जिदों को बन्द और नष्ट करने की हमारी मूर्खतापूर्ण बीस वर्षीय नीति को लीजिए। और इसकी तुलना दूरदर्शी नेता कैथेरीन महान् की नीति को दीजिए जिसने क्रीमिया की मस्जिदों के निर्माण और विस्तार के लिए राज्य के कोष से धन दिया। और हिटलर की सेनाएं जब वहां पहुंची तो उन्होंने स्वयं को इन लोगों के रक्षक के रूप में पेश करने की चतुरता दिखाई। आगे चल कर, काकेशिया की सैनिक टुकड़ियां और कज्जाक सेनाएं जिनकी पूरी संख्या एक घुड़ सवार कोर से अधिक थी—जर्मनी के पक्ष में गठित हुई। युद्ध की पहली सर्दियों में, रूसी स्वयंसेवकों की प्लाटूनें और कम्पनियां गठित की जाने लगीं। लेकिन जर्मन कमान इन रूसी सैनिक टुकड़ियों पर जरा भी विश्वास नहीं करती थीं और इन टुकड़ियों के मास्टर सारजेंट और लेफ्टिनेंट जर्मन थे। सिर्फ नान कमीशण्ड अफसर वह भी मास्टर सारजेंट के नीचे के पद के गैर-कमीशण्ड अफसर ही रूसी थे। वे "अचतुंग!" "हाल्ट!" आदि जर्मन कमान शब्दों का इस्तेमाल करते थे। अधिक महत्वपूर्ण और पूरी तरह से रूसी यूनिटें निम्नलिखित ही थीं: लोकोत में एक ब्रिगेड, यह ब्रियान्स्क प्रान्त में स्थित थीं। इसका गठन नवम्बर १९४१ में हुआ था जब एक स्थानीय इंजीनियरी शिक्षक के० पी० वोस्कोनो गोकोव ने "रूस की राष्ट्रीय श्रमिक पार्टी" की घोषणा की और राष्ट्र के नागरिकों के नाम एक घोषणापत्र

जारी किया और सैंट जार्ज का झण्डा फहराया; ओर्शा के समीप ओसिन्तोर्क बस्ती में एक यूनिट, जिसका गठन प्रवासी रूसियों के नेतृत्व में १९४२ के आरम्भ में हुआ था। (यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रवासी रूसियों की एक छोटी सी टोली ने भी इस आंदोलन में हिस्सा लिया और उन्होंने भी अपनी जर्मन विरोधी भावनाओं को नहीं छिपाया। और सोवियत पक्ष से अनेक टुकड़ियों को मिल जाने दिया (जिनमें एक पूरी बटालियन भी शामिल थी) ...इसके बाद जर्मनों ने इन्हें अलग कर दिया); सन् १९४२ की गर्मियों में लुबलिन के पास जिल द्वारा गठित एक यूनिट। (वी० वी० झिल कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था और यह भी लगता है कि वह यहूदी था। अब वह एक युद्धबंद्धी के रूप में केवल जीवित ही नहीं रहा बल्कि उसने अन्य युद्धबंदियों की सहायता से सुवालकी के पास स्थित शिविर का नेतृत्व संभाल लिया और जर्मनों की सहायता के लिए "रूसी राष्ट्रवादियों के लड़ाकू संगठन" बनाने का प्रस्ताव किया) लेकिन अब तक, कोई रूसी मुक्ति सेना नहीं थी और कोई व्लासोव नहीं था। केवल आजमाइश के तौर पर जर्मन कमान के अधीन उक्त कम्पनियों को रूसी मोर्चों पर लगाया गया और रूसी सैनिक यूनिटों को ब्रियांस्क, ओर्शा और पोलैंड के गुरिल्लाओं के विरुद्ध लड़ने के लिए भेजा गया।

१०—ये अक्षर कहीं अधिक विख्यात हुए, यद्यपि, पहले की तरह ही, अभी तक कोई वास्तविक रूसी मुक्ति सेना नहीं थी। ये सब टुकड़ियां इधर-उधर फैली हुई थीं और इनका संचालन जर्मन अफसरों के आदेशों के अनुसार होता था। और व्लासोव के साथी जनरलों को बर्लिन के समीप डाहलेमडोर्फ में ताश खेलने के अलावा उन्हें कोई काम नहीं था। सन् १९४२ के मध्य तक वोसकोवोइनिको की ब्रिगेड में, जिसकी कमान उसकी मृत्यु के बाद अब कामीनस्की के हाथ में आ गई थी, ढाई हजार से तीन हजार सैनिकों की पांच इनफेंटरी रेजीमेंट थीं। इन रेजीमेंटों के साथ अपने अपने तोपखाने, दो दर्जन सोवियत टैंकों की एक टैंक बटालियन और तीन दर्जन तोपों वाली एक तोपखाना बटालियन भी सबद्ध थी। इनके कमांडिंग अफसर युद्ध बंद्धी अफसर थे और सामान्य सैनिकों में, अधिकांशतया, ब्रियांस्क के स्थानीय स्वयंसेवक थे। इस ब्रिगेड को गुरिल्लाओं से इस क्षेत्र की रक्षा करनी थी। १९४२ की गर्मियों में; जिल-व्लाझेविच की ब्रिगेड को इसी उद्देश्य से पोलैंड से भेजा गया, जहां यह मोगीलेव के आस पास के क्षेत्र में पोलैंड निवासियों और यहूदियों के ऊपर अत्याचार करने के लिए कुख्यात हुई थी। सन् १९४३ के आरम्भ में, इसकी कमान ने व्लासोव की सत्ता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, और यह मांग की कि व्लासोव यह स्पष्टीकरण दे कि उसने जिस कार्यक्रम की घोषणा की है उसमें "यहूदी समुदाय और यहूदी-प्रेमी कमीसारों के विरुद्ध विश्व व्यापी संघर्ष" का उल्लेख क्यों नहीं किया गया है। ये वही आदमी थे—जिन्हें रोदियोनोवादी कहा जाता था, क्योंकि जिल ने अपना नाम रोदियोनोव रख लिया था—जिन्होंने अगस्त १९४३ में जब हिटलर की पराजय निश्चित हो चुकी थी, अपने रुपहले खोपड़ी वाले काले झण्डे को बदल कर लाल झण्डा अपना लिया था और सोवियत सत्ता के प्रति निष्ठा की घोषणा की थी और वाइलो रूस से उत्तर पूर्वी कोने में सोवियत समर्थक विशाल "गुरिल्ला क्षेत्र" की घोषणा की थी।

उस समय, सोवियत समाचारपत्रों ने इस "गुरिल्ला क्षेत्र" के बारे में लिखना शुरू कर दिया था। लेकिन इसके उद्गम के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया था। आगे चल कर सब जीवित रोदियोनोवादियों को जेल में डाल दिया गया। और जर्मनों ने

रोदियोनोवादियों के विरुद्ध तत्काल किस सैनिक टुकड़ीको लगाया ? कामीनस्की ब्रिगेड को ! यह बात मई १९४४ की है और उन्होंने स्वयं अपनी १३ डिवीजनें भी इस "गुरिल्ला क्षेत्र" को समाप्त करने के लिए लगाई। जर्मन लोग तिरंगी कलगियों, सेंट जार्ज और सेंट एंड्यू की ढाल का अर्थ केवल इसी सीमा तक समझते थे। रूसी और जर्मन भाषाएं एक-दूसरे में अनूदित नहीं हो सकती थीं, इनकी अभिव्यक्ति और व्यंजना समान नहीं थी। इससे भी बुरा यह हुआ : अक्तूबर १९४४ में जर्मनों ने कामीनस्की ब्रिगेड को—उसकी मुस्लिम सैनिक टुकड़ियों सहित वारसा के विद्रोह को कुचलने के लिए लगाया। जिस समय रूसियों का एक दल अत्यन्त विश्वासघातपूर्ण तरीके से विस्तुला के उस पार ऊंघता हुआ बैठा था, वारसा की मृत्यु को अपनी दूरबीनों से देख रहा था, दूसरे रूसियों ने वारसा के विद्रोह को कुचल डाला ! क्या पोलैंड निवासियों ने १९वीं शताब्दी में रूसी धूर्तता का पर्याप्त कष्ट नहीं भोग लिया था कि उन्हें २०वीं शताब्दी में भी यह सब कुछ सहना पड़ा ? क्या दमन का यह अन्तिम दौर था ? संभवत: अभी ऐसे और दौर आने शेष थे। ओसिनतोर्फ बटालियन का कार्य प्रकट रूप से अधिक स्पष्ट था। इसमें ६०० सैनिक और दो सौ अफसर थे। इसकी कमान आई० के० सखारोव और लैम्सदोर्फ नामक प्रवासियों के हाथ में थी। ये रूसी वर्दियां पहने थे और इनका सफेद-नीला-लाल झण्डा था। इस बटालियन को पस्कोव के समीप झोंक दिया गया था। इसके बाद इस बटालियन का विस्तार कर इसे एक रेजीमेंट बना दिया गया, इसे वोलोगदा-आर्च एंजेल की पंक्ति के ऊपर पैराशूट से उतारने की तैयारी की गई। इसका उद्देश्य यह था कि इस क्षेत्र के यातना शिविरों के जमाव का उपयोग किया जा सके। पूरे १९४३ के वर्ष में, आइगोर सखारोव ने अपनी सैनिक टुकड़ी को गुरिल्लाओं के विरुद्ध लड़ने भेजने से रोकने में सफलता प्राप्त की। लेकिन इसके बाद उसे कमांडर के पद से हटा दिया गया। और पहले इस बटालियन के शस्त्र छीने गए और इसके सैनिकों को एक शिविर में कैद रखा गया। इसके बाद इसे पश्चिमी मोर्चे पर भेज दिया गया। इसके बाद १९४३ की वसंत ऋतु में, जर्मनों ने रूसी सैनिकों को गाजर मूली की तरह कटवाने के लिए अटलांटिक दीवार के क्षेत्र में और फ्रांसीसी तथा अटालियन गुरिल्लाओं के विरुद्ध लड़ने के लिए भेजा। जिस मूल उद्देश्य से इन रूसी सैनिक टुकड़ियों का गठन किया गया था उसे पूरी तरह भुला दिया गया। व्लासोव के अनुयायियों में जिन लोगों ने किसी प्रकार की राजनीतिक तर्क सम्मतता अथवा आशा को किसी प्रकार जीवित रखा था, वह इसके बाद समाप्त हो गई।

११—ये डिवीजनें थीं : पहली डिवीजन, जो एस० के० बुनियाचेंकों के अधीन थी और "कामीनस्की ब्रिगेड" पर आधारित थी; दूसरी डिविजन, जबेरेव के अधीन (खारकोव का भूतपूर्व सैनिक कमाण्डर); तीसरी आधी डिवीजन; चौथी डिवीजन का एक हिस्सा; और माल्तसेव की वायु सेना टुकड़ी। केवल चार डिवीजनों के गठन की अनुमति दी गई थी।

१२—इस कज्जाक कोर को सोवियत कमान के हवाले कर देने का कार्य, उस दुरंगी चाल के अनुरूप था, जो अंग्रेजों की परम्परागत कूट नीति से मेल खाती है। वास्तविकता यह है कि कज्जाक मृत्यु तक लड़ते रहने के लिए कृतसकल्प थे अथवा महासागर को पार कर जाना चाहते थे, वे यदि आवश्यक हो तो पैरागुए अथवा हिन्द चीन तक आगे जाने को तैयार थे...वे जीवित हथियार डालने के बजाय कुछ भी करने को तैयार थे। अत:, अंग्रेजों ने सबसे पहले यह प्रस्ताव किया कि कज्जाक अपने हथियार दे दें। उन्हें यह झांसा दिया

गया था कि उनके पुराने हथियारों के स्थान पर नए अच्छे हथियार दिए जाएंगे। इसके बाद अफसरों को - सामान्य सैनिकों के बिना ही—इस सेना के भविष्य के बारे में विचार करने के लिए अंग्रेजों के अधिकार क्षेत्र के जूडेनबर्ग नगर में कथित सम्मेलन के लिए बुलाया गया। लेकिन अंग्रेजों ने पिछली रात ही चुपचाप इस नगर को सोवियत सेनाओं के हवाले कर दिया था। इन अफसरों की ४० बसें, जिनमें कम्पनी कमाण्डरों से लेकर स्वयं जनरल क्रासनोव भी शामिल था, जैसे ही एक ऊंची पुलिया को पार कर आगे बढ़ीं, वे ब्लैक-मारिया गाड़ियों के अर्ध-वृत्ताकार घेरे में जा फंसी। इन गाड़ियों के बराबर हाथ में फह-रिस्त लिए गारद के सन्तरी खड़े थे। वापस लौटने की सड़क को सोवियत टैंकों ने घेर लिया था। इन अफसरों के पास ऐसी कोई चीज़ नहीं थी, जिससे वे स्वयं को गोली मार सकते अथवा ऐसा कोई छुरा या चाकू भी नहीं था कि अपने प्राण ले सकते, क्योंकि उनके हथियार पहले ही ले लिए गए थे। वे लोग पुलिया के ऊपर से नीचे पत्थरों पर कूदे। इसके तुरन्त बाद, और इसी प्रकार विश्वासघात से, अंग्रेजों ने रेल गाड़ियां भर-भर कर सामान्य सैनिकों को भी सोवियत कमान के हवाले कर दिया—इन सैनिकों को यह बताया गया था कि उन्हें अपने कमाण्डरों से नए हथियार लेने के लिए भेजा जा रहा है।

स्वयं अपने देशों में रूज़बेल्ट और चर्चिल का सम्मान दूरदर्शी राजनीतिज्ञों के प्रतीक के रूप में किया गया। पर हम लोगों को, हमारे रूसी जेलों के वार्तालाप में, उनकी निरन्तर कायम अदूरदर्शिता और मूर्खता आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। वे लोग, १९४१ से १९४५ की अवधि के दौर में, पूर्व यूरोप की स्वतंत्रता की गारंटी प्राप्त करने में क्यों असफल रहे? वे लोग सैक्सनी और थूरिज्या के विशाल इलाकों के बदले में चार क्षेत्रों में विभाजित बर्लिन का मूर्खतापूर्ण खिलौना लेने को कैसे तैयार हो गए? जो भविष्य में स्वयं उनकी सबसे बड़ी कमजोरी बना? और किस सैनिक अथवा राजनीतिक बुद्धिमत्ता के आधार पर, उन लोगों ने ऐसे लाखों सशस्त्र सोवियत नागरिकों को स्तालिन के हाथों विनाश के लिए सौंप दिया, जो हथियार न डालने के लिए कृतसंकल्प थे? उन लोगों का कहना है कि जापान के विरुद्ध युद्ध में शामिल होने पर स्तालिन की सहमति के लिए उन्होंने यह कीमत चुकाई थी। अपने हाथ में परमाणु बम रहते हुए, उन लोगों ने स्तालिन को मंचूरिया पर अधिकार करने से इनकार न करने, चीन में माओत्से-तुंग के हाथ मजबूत बनाने, और आधे कोरिया का नियंत्रण किम इल सुंग के हाथों में सौंप देने के लिए यह कीमत चुकाई। राजनीतिक विवेक का कैसा दिवालियापन है! और जब, आगे चलकर, रूसियों ने माईकोलाजीक को बाहर निकाल दिया, जब बेनीज़ और मसारीक को समाप्त कर डाला गया, जब बर्लिन की नाकेबन्दी कर दी गई और बुडापेस्ट जल उठा और शान्त हो गया, जब कोरिया में आग की लपटें दहकने लगीं, ब्रिटेन के कंजरवेटिव स्वेज से भाग निकले, क्या कोई इस बात पर सचमुच विश्वास कर सकता है कि इन लोगों के मध्य सर्वाधिक अच्छी स्मृति वाले लोगों ने कज्ज़ाकों के मामले का स्मरण नहीं किया होगा।

१३—वस्तुत: यह सोवियत नागरिकों की वह संख्या है, जो जर्मन सेना वेहरमाख्त में शामिल हो गये थे - व्लासोव से पहले की और व्लासोव की सैनिक टुकड़ियों में, कज्ज़ाक, मुस्लिम, बाल्टिक और यूक्रेनी टुकड़ियों में।

१४—इसके आधार पर अफ्रीका का एक भी नेता इस बात से आश्वस्त नहीं रह सकता कि हम, १० वर्ष बाद एक ऐसा कानून नहीं बना सकते, जिसके आधार पर उसके ऊपर

उसके आज के कार्यों के लिए मुकदमा न चलाया जा सके। हां ! वस्तुत: चीनी ठीक ऐसे ही कानून बनाएंगे—बस उन्हें वहां तक पहुंच जाने का मौका भर दीजिए।
१५—क्या कैदी का अल्ताई का सपना इस स्थान सम्बन्धी प्राचीन किसान स्वप्न को आगे नहीं बढ़ाता ? महामहिम सम्राट के मंत्रिमण्डल की तथाकथित भूमि, अल्ताई में थी और इसी कारण से साइबेरिया के शेष हिस्से की तुलना में इस क्षेत्र में बहुत समय तक बस्तियां बसाने की अनुमति नहीं मिली। जबकि किसान सबसे अधिक इसी क्षेत्र में बसना चाहते थे—और जहां वे वास्तव में बसे भी। क्या इसी कारण से यह पुराना किस्सा फिर नहीं जन्मा है ?
१६—वाइशिंस्की ने अपनी पुस्तक 'ओत न्यूरेम के वोसपितातेलनिम उचरेभ ड़ैनयाम, पृष्ठ ३९६ में ये आंकड़े दिए हैं। सन् १९२७ के क्षमादान में ७.३ प्रतिशत कैदियों को क्षमा किया गया था। यह एक विश्वासयोग्य संख्या है। १०वीं वर्षगांठ के लिए यह बहुत छोटी संख्या है। राजनीतिक कैदियों में, केवल बच्चों वाली स्त्रियों को और उन लोगों को जिन की सजा के कुछ ही महीने ही शेष रह गए थे, रिहा किया गया था। उदाहरण के लिए, वेरखने, उरालस्क तनहाई जेल में २०० में से १२ कैदियों को रिहा कर दिया गया था। लेकिन इस क्षमादान के दौर में ही उन लोगों ने इस पर पछताना शुरू कर दिया और क्षमादान के मार्ग में रुकावट डालनी शुरू कीं। उन्होंने कुछ लोगों की रिहाई में विलम्ब किया और कुछ ऐसे लोगों को जिन्हें रिहा कर दिया गया था, पूरी आजादी के स्थान पर पाबंदियां लगाकर रिहा किया गया।
१७—संभवत:, केवल २०वीं शताब्दी में ही, यदि उन किस्सों पर विश्वास किया जाए, जो हमें सुनाई पड़ते हैं, उन की समृद्धि नैतिक अजीर्ण का कारण बनी।
१८—वस्तुत:, यह हरामजादे केवल एक अंक की ही गलती गए थे ! ७ जुलाई १९४५ के स्तालिन के महान् क्षमादान के बारे में देखिए भाग --३, अध्याय—६।
१९—अनेक वर्ष बाद, इस बार एक पर्यटक के रूप में मैंने एक ऐसा ही और उद्यान देखा। बस अन्तर केवल इतना था कि यह इससे कही अधिक छोटा था। यह लेनिनग्राद के पीटर और पाल किले के त्रूवेत्स्कोई गुम्बद में था। अन्य पर्यटक बरामदों और कोठरियों के अन्धकार के बारे में बातें कर रहे थे। लेकिन मैं यही सोच रहा था कि घूमने के लिए जहां ऐसा उद्यान उपलब्ध था, वहां त्रूवेत्स्कोई गुम्बद में कैद कैदी प्रकृति के सम्पर्क में रह पाते होंगे। हमें जेल की कोठरियों जैसे निर्जीव पत्थर के अहातों में ही घूमने के लिए ले जाया जाता था।

अध्याय-७

१—वे लोग ठीक क्षमादान के दिन ही मुझे सजा देने के लिए एकत्रित हुए थे। काम तो जारी रहना ही चाहिए।
२—वाइशिंस्की की उक्त पुस्तक।
३—च-न की टोली।
४—ए० वाई० वाइशिंस्की द्वारा सम्पादित उक्त संकलन में ऐसी सामग्री उपलब्ध है, जिससे यह संकेत मिलता है कि मुकदमा शुरू होने से पहले ही सजा का निर्धारण बहुत पुरानी कहानी है। सन् १९२४-१९२९ की अवधि में सजा का निर्धारण प्रशासनिक और आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर लिया जाता था। सन् १९२४ के आरम्भ में, राष्ट्रीय बेरोजगारी को ध्यान में

रखते हुए, अदालतों ने ऐसे निर्णयों की संख्या में कमी की जिनके अन्तर्गत कैदी अपने घर पर रहते हुए श्रम से सुधार के अधीन काम करते थे और छोटी अवधि की कैद की सजाओं में वृद्धि की। हां, यह सच है कि ये मुकदमे केवल गैर राजनीतिक अभियुक्तों के ही होते थे। इसके परिणामस्वरूप, छह महीने की सजा तक के कैदियों से जेलें भर गईं और इनका श्रम बस्तियों में पर्याप्त उपयोग नहीं किया जा सका। सन् १९२९ के आरम्भ में, सोवियत संघ के न्याय विभाग के कमीसार कार्यालय ने अपने परिपत्र संख्या ५ में छोटी अवधि की सजाओं की भर्त्सना की और छह नवम्बर १९२९ को, अक्तूबर क्रान्ति की १२वीं वर्षगांठ के अवसर पर जब यह समझा जा रहा था कि देश समाजवाद के निर्माण के क्षेत्र में पदार्पण कर रहा है, केन्द्रीय कार्यकारिणी और जनवादी कमीसार परिषद् के एक आदेश के द्वारा एक वर्ष से कम अवधि की सजा देने पर पाबंदी लगा दी गई।

५—दक्षिण अफ्रीका गणराज्य में, हाल के वर्षों में आतंक इस सीमा तक आगे बढ़ गया है कि प्रत्येक संदिग्ध (एस० डी० ई०—सामाजिक दृष्टि से खतरनाक तत्व) अफ्रीकी को गिरफ्तार किया जा सकता है और बिना किसी पूछताछ या मुकदमे के तीन महीने तक जेल में रखा जा सकता है। कोई भी व्यक्ति इस निर्णय की खामी को देख सकता है : तीन वर्ष से १० वर्ष तक क्यों नहीं ?

६—यह एक ऐसी बात है जिसकी हमें जानकारी नहीं थी। यह बात हमें इजबेस्तिया में जुलाई १९५७ में बताई।

७—बाबाएव, जो वास्तव में एक गैर राजनीतिक कैदी था, चिल्लाकर बोला : "तुम मुझे ३०० साल तक कैद रख सकते हो ! लेकिन मैं तुम्हारे लिए काम करने के वास्ते अपना हाथ भी नहीं उठाऊंगा !"

८—इस प्रकार एक वास्तविक जासूस (१९४८ में बर्लिन में शुल्ट्ज को) १० वर्ष की सजा मिल सकती थी और एक ऐसे व्यक्ति को जो कभी भी जासूस नहीं रहा, (गुन्टर वाश्चकाऊ) २५ वर्ष की सजा दी गई। क्योंकि उसे १९४९ की लहर में गिरफ्तार किया गया था।

९—इजबेस्तिया, १० सितम्बर, १९५८।

१०—आज लोजोवस्की को चिकित्सा विज्ञान के उम्मीदवार की डिग्री प्राप्त है और वह मास्को में रहता है। उसका काम ठीक से चल रहा है। चुलपिनएव एक बस चलाता है।

११—विक्टर आन्द्रेएविच सेरएजिन आज मास्को में रहता है और उपभोक्ता सेवा संगठन में काम करता है, जो मास्को सोवियत से सम्बद्ध है। उसका रहन सहन अच्छा है।

१२—इजवेस्तिया, ९ जून १९६४। इससे सफाई पक्ष की कानूनी स्थिति संबंधी विचारों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है ! सन् १९१८ में वी० आई० लेनिन ने यह मांग की कि जो न्यायधीश कम अवधि की सजा सुनायें उन्हें पार्टी से निकाल देना चाहिए।

अध्याय-८

१—यह शिकारी पक्षी अब तक जिसकी चोंच कठोर नहीं हुई थी उसे ट्राटस्की ने साहस और प्रोत्साहन दिया : "आतंक नीतिका शक्तिशाली माध्यम है और जो व्यक्ति यह बात नहीं समझता वह निश्चय ही वंचक है।" और जिनोवीएव ने भी बड़े आनंद से, अब तक अपने अन्त का पूर्वा-

नुमान लगाए बिना ही, यह कहा : "वी—च के की तरह ही जी पीं यू के अक्षर संसार भर में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं।

२—लात्सिस, द्वा गोदा बोर्वी न वीनूत्रेनोम फ्रन्त।

३—वही, पृ० ७४। ४—वही, पृ० ७५। ५—वही, पृ० ७६।

६—एम० एन० जेरनेत (सम्पादक), प्रोतिवस्मर्तनोई काजनी (मृत्युदण्ड के विरुद्ध) दूसरा संस्करण, १६०७, पृष्ठ ३८५-४२३।

७—बाइलोए नामक पत्रिका, अंक २।१४, फरवरी १६०७।

८—देखिए खण्ड ३, अध्याय—१

९—लातसिस, ऊपर उद्धृत, पृ० ७५।

१०—वही, पृ० ७०। ११—वही, पृ० ७४।

१२—लेनिन, पांचवां संस्करण, खण्ड ३६, पृ० २१०।

१३—क्राइलेंको, जा प्यात लेत (१९१८-१९२२)। ७,००० प्रतियों का संस्करण मास्को और सर्वोच्च क्रांतिकारी अदालत में चले सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुकदमों में इस्तगासे के वकील के भाषण।

१४—वही, पृ० ४। १५—वही, पृ० ४-५। १६—वही, पृ० ७। १७—वही, पृ० ४४। १८—लातसिस, ऊपर उद्धृत, पृ० ४६। १९—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० १३। २०—वही, पृ० १४। २१—वही, पृ० ३। २२—वही, पृ० ४०८। २३—वही, पृ० २२। २४—वही, पृ० ५०५। २५—वही, पृ० ३१८। २६—वही, पृ० ७३। २७—वही, पृ० ८३। २८—वही पृ० ७९। २९—वही, पृ० ८१। ३०—वही, पृ० ५२४। ३१—वही, पृ० ८२। ३२—वही, पृ० २९६। ३३—वही, पृ० ५००। ३४—वही, पृ० ५०७। ३५—वही, पृ० ५१३।

३६—वही, पृ० ५०७।

३७—जोंक जैसे सांप याकुलोव के ऊपर पाठक के भयंकर क्रोध को संयत बनाने के लिए हम यह उल्लेख करना चाहेंगे कि कोसीरेव के मुकदमे के समय तक उसे गिरफ्तार कर लिया गया था और वह जेल में था। उन लोगों ने याकुलोव के लिए भी एक मुकदमे का अनुसंधान कर लिया था। उसे अदालत में बयान देने के लिए गारद के पहरे में बुलाया गया और हम यह आशा करने के अधिकारी हैं कि इसके तुरन्त बाद उसे गोली से उड़ा दिया गया होगा। (आज हमें आश्चर्य है : यह सब कार्य इस सीमा तक कानून विरुद्ध तरीकों से कैसे हो सकते थे? किसी ने भी कानून की इस प्रकार हत्या के विरुद्ध अभियान क्यों नहीं छेड़ा?)

३८—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० १४।

३९—ओह, यहां हमारे समक्ष कितनी कथावस्तुएं मौजूद हैं! ओह शेक्सपीयर कहां है? सोलोवएव दीवारों को बेध कर निकल आता है, कोठरी में कांपती हुई छायाएं दिखाई पड़ती हैं, गोदिलयुक कांपते हुए हाथों से अपने अपराधों की स्वीकारोक्ति करता है और हम अपने नाटकों और फिल्मों में क्रांति के वर्षों के बारे में कुछ सुनते हैं वह केवल सड़कों पर "विरोधी झंझावात" का गीत ही है।

४०—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० ५२२। ४१—वही। ४२—वही, पृ० ३३७। ४३—वही, पृ० ५०९। ४४—वही, पृ० ५०५-५१०। ४५—वही, पृ० ५११। ४६—वही। ४७—वही, पृ० १४।

४८—लेकिन अभियोक्ता क्राइलेंको समारिन और रास्पुतिन के बीच कोई अन्तर नहीं करता था

४९—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० ६१। ५०—वही, पृ० ८१।

५१—ज़ार की पारिवारिक घुड़सवार पलटन के एक भूतपूर्व अंगरक्षक अफसर फिरगुफ में

"अचानक आध्यात्मिक परिवर्तन आया, उसने अपनी सब भौतिक वस्तुएं गरीब लोगों में बांट दीं और एक ईसाई मठ में सन्यासी के रूप में प्रविष्ट हो गया, लेकिन मुझे इस बात की कोई वास्तविक जानकारी नहीं है कि उसने अपना सामान गरीबों में वितरित किया था अथवा नहीं।" हां, यदि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक परिवर्तन की संभावना को स्वीकार करता है तो वर्ग सिद्धान्त में फिर क्या शेष रह जाएगा ?

५२—लेकिन हम में से किस को ऐसे ही दृश्यों का स्मरण नहीं है ? मेरी एक ऐसी घटना की पहली स्मृति उस समय की है जब मैं संभवतः तीन अथवा चार वर्ष का था : ऊंची गोल टोपी वालों ने (उन दिनों चेका के आदमियों को उनकी ऊंची बूदेनी टोपियों के कारण इसी नाम से पुकारा जाता था) किसलोवोदस्क के एक गिरजाघर पर धावा बोला, वे स्तम्भित भक्तों की भीड़ को चीर कर भीतर घुस गए और बिना टोपी उतारे, पूजा की वेदी के पर्दे को पार करते हुए वेदी के ऊपर चढ़ गए और प्रार्थना रुकवा दी।

५३—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० ६१।

५४—पेट्रियार्क ने क्लयूचेवस्की का उद्धरण दिया : "संत के मठ के द्वार उस समय बन्द होंगे और पवित्र दीपक उस समय बुझा दिए जाएंगे जब हम उस समस्त आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति के अन्तिम कण से भी वंचित हो जाएंगे, जो हमें रूस की भूमि के संत सर्जियस जैसे महान् निर्माताओं से विरासत में मिली है।" क्लयूचेवस्की ने यह कल्पना नहीं की थी कि स्वयं प्रायः उनके ही जीवनकाल में यह हो जाएगा। पेट्रियार्क ने अनुरोध किया कि जनवादी कमीसार परिषद् के अध्यक्ष से भेंट करने का उन्हें अवसर दिया जाए। उन्हें यह आशा थी कि शायद वे अध्यक्ष को पवित्र मठों और पवित्र अवशेषों पर हाथ न डालने के लिए राजी कर सकें···क्योंकि आखिरकार चर्च राज्य से अलग होती है ! उन्हें उत्तर मिला कि अध्यक्ष महत्वपूर्ण बातों पर विचार में व्यस्त हैं और निकट भविष्य में भेंट की व्यवस्था कर पाना सम्भव नहीं है।

सुदूर भविष्य में भी नहीं।

५५—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० ३४। ५६—लेनिन, ५वां संस्करण, खण्ड ५१, पृ० ४८।
५७—वी० आई० लेनिन आई० ए० एम० गोर्की (वी० आई० लेनिन और ए० एम० गोर्की), मास्को, विज्ञान अकादमी का प्रकाशनगृह, १९६१, पृ० २६०।

५८—वही। ५९—लेनिन, चौथा संस्करण, खण्ड २६, पृ० ३७३। ६०—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० ५४। ६१—वही, पृ० ३८। ६२—वही। ६३—वही, पृ० १७। ६४—वही। ६५—वही, पृ० ८।
६६—बहुत जल्दी ही वह स्वयं अपना गला काट लेगा।

अध्याय-९

१—क्राइलेंको, जा प्यात लेत, पृ० ३८१। २—वही, पृ० ३८२-३८३।
३—रूसी समाजवादी संघीय गणराज्य के आदेशों का संकलन, १९२२, संख्या ४, पृ० ४२।
४—प्रावदा, १७ दिसम्बर १९२२। ५—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० ४३३। ६—वही, पृ० ४३४। ७—वही, पृ० ४३५। ८—वही, पृ० ४३८। ९—वही, पृ० ४५८।
१०—समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी के प्रान्तीय मुकदमे इससे पहले ही चले। एक ऐसा ही मुकदमा सरातोव में १९१९ में हुआ।

११—सन् १९२२ में पेरिस में और सन् १९६७ में समिजदात में सोवियत संघ में प्रकाशित।
१२—"सेरकोव आई गोलोद" (चर्च और अकाल) और "काक बुदुत इजयाती सेरकोवनिए सेनोस्ती" (चर्च की बहुमूल्य वस्तुओं का किस प्रकार अधिग्रहण किया जाएगा) शीर्षक लेख देखिए।
१३—मैंने यह सामग्री अनातोली लेवितिन द्वारा लिखित चर्च के संकटों के इतिहास सम्बन्धी निबन्ध, भाग १, समिजदात, १९२२ और पेट्रियार्क तिखोन से पूछे गए प्रश्नों के स्टेनोग्राफरों

द्वारा तैयार विवरण, मुकदमे के दस्तावेज, खण्ड ५ से ली है।

१४—दूसरे शब्दों में, वीबोर्ग की अपील की तरह, जार की सरकार के तीन महीने की कैद की सजा की व्यवस्था की थी।

१५—लेनिन, पांचवां संस्करण, खण्ड ४५, पृ० १८६।

१६—वही, खण्ड ३६, पृ० ४०४-४०५। १७—वही, खण्ड ४५, पृ० १६०।

१८—यह तथ्य कि इसकी रक्षा करने के उनके प्रयास बड़े क्षीण थे, कि वे दुविधा से ग्रस्त थे, और उन्होंने तुरन्त इसका परित्याग भी कर दिया एक भिन्न बात है। आखिरकार उनका अपराध कोई कम नहीं था।

१६—और यह वस्तुत: एक असफलता थी यद्यपि यह बात तुरन्त स्पष्ट नहीं हुई।

२०—इसी प्रकार, रूस की समस्त स्थानीय सरकारें, और बाहरी इलाकों की सरकारें भी—आर्च एंजिल, समारा, ऊफा अथवा ओमस्क, यूक्रेन, दोन, कुबान, यूराल अथवा टांस काकेशस की सरकारें—इस दृष्टि से गैर कानूनी थीं क्योंकि इन्होंने स्वयं को जनवादी कमीसार परिषद् सरकार घोषित करने के बाद सरकारें घोषित किया।

२१—अब उसका "सरकारी वकील" का पदनाम फिर दे दिया गया था।

२२—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० १८३।

२३—और इन बकवादियों ने जीवनकाल में क्या-क्या नहीं कहा था।

२४—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० २३६। (वाह क्या भाषा है!)

२५—दूसरे बन्धकों को गोली से उड़ा देना बड़ा सही लग रहा था।

२६—क्राइलेंको, ऊपर उद्धृत, पृ० २५१। २७—वही, पृ० २५३। २८—वही, पृ० २५८। २६—वही, पृ० ३०५। ३०—वही, पृ० १८५। ३१—वही, पृ० १०३। ३२—वही। ३३—वही, पृ० ३२५। ३४—वही। ३५—वही, पृ० २३८। ३६—वही, पृ० ३२२। ३७—वही, पृ० ३२६। ३८—वही, पृ० ३१६। ३६—वही, पृ० ४०७। ४०—वही, पृ० ४०६।

४१—उसकी वापसी के बारे में अनेक बातें कही जाती हैं। कुछ ही समय पहले अर्दामातस्की नाम के एक व्यक्ति ने, जो स्पष्ट रूप से राज्य सुरक्षा समिति के दस्तावेज संग्रह से सम्बन्धित और इस समिति का कर्मचारी था, एक कहानी प्रकाशित की, जो निरर्थक साहित्यिक मुलम्मे के बावजूद स्पष्टतया सत्य के बहुत समीप थी। (नेवा नामक पत्रिका, अंक ११, १६६७)। साविनकोव के कुछ एजेंटों को उसके साथ विश्वासघात करने के लिए राजी करने के बाद और अन्य को झांसा देने के बाद, जी० पी० यू० ने इन लोगों का इस्तेमाल साविनकोव को फंसाने के लिए किया। उसे इस बात में आश्वस्त कर दिया गया कि रूस के भीतर एक विशाल गुप्त संगठन काम कर रहा है और एक अच्छे नेता के अभाव में यह प्रभावशाली ढंग से काम नहीं कर पा रहा है। इससे अधिक प्रभावशाली जाल बिछाना असम्भव था। और साविनकोव के लिए, इतनी अधिक भ्रांतिपूर्ण और सनसनीखेज जिन्दगी बिताने के बाद, अपना शेष समय शांतिपूर्वक नाइस नामक स्थान पर गुजार देना असम्भव था। वह यह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था कि एक बार कुछ और दिखाने का प्रयास न करे और वह इस प्रकार रूस और अपनी मृत्यु के मुख में पहुंचने के लिए वापस न लौटे।

४२—और हम, बाद की लूबयांका के मूर्ख कैदी, बड़े आत्मविश्वास से तोतों की तरह एक-दूसरे को यही सुनाते रहते थे कि लूबयांका में सीढ़ियों के पास के खाली स्थान पर जो इस्पात की जालियां लगी हैं उन्हें साविनकोव की आत्महत्या के बाद लगाया गया था। तो क्या हम ऐसी शानदार कहानियों का इस सीमा तक शिकार बन जाते हैं कि हम यह तक भूल जाते हैं कि आखिरकार जेलरों का अनुभव अन्तर्राष्ट्रीय आयाम का है। ऐसी इस्पात की जालियां इस शताब्दी के आरम्भ में ही अमरीका की जेलों में लगी थीं—और सोवियत टेक्नालोजी को कैसे पिछड़ने दिया जा सकता था?

सन् १९३७ में एक भूतपूर्व चेका अधिकारी आर्थर प्रियुबेल ने कोलिमा के एक शिविर में दम तोड़ते समय अपने एक साथी कैदी को बताया कि जिन चार आदमियों ने साविनकोव को पांचवीं मंजिल की खिड़की से लूबयांका के अहाते में फेंक दिया था वह भी उनमें था। (और इस बयान तथा अर्दामातस्की के हाल के विवरण में कोई मतभेद नहीं है : खिड़की की सिल बहुत नीची थी; यह बरामदे में खुलने वाला एक दरवाजा दिखाई पड़ता था, खिड़की नहीं— उन लोगों ने सही कमरे का चुनाव किया था। अर्दामातस्की के अनुसार, केवल संतरी ही असावधान थे; प्रियुबेल के अनुसार, संतरियों ने मिलकर उसे नीचे धकेल दिया था।)

इस प्रकार दूसरी पहेली को, असाधारण रूप से हलकी सजा की पहेली को तीसरी भद्दी "पहेली" सुलझा देती है।

प्रियुबेल के उक्त कथन की पुष्टि नहीं की जा सकी लेकिन मैंने यह बात सुनी थी और १९६७ में मैंने यह बात एम० पी० याकुबोविच को बताई थी। उसने अपने किशोरों जैसे उत्साह से भरकर अपनी आंखें चमकाते हुए कहा था : "मैं इस बात पर विश्वास करता हूं। सब बातें ठीक दिखाई पड़ती हैं। और मैंने ब्ल्यूमकिन पर विश्वास नहीं किया था। मैं समझ गया था कि वह शेखी बघार रहा है।" उसने यह बात सुनी थी : तीसरे दशक के अन्त में, ब्ल्यूमकिन ने याकूबोविच को यह बात बताते हुए, और उससे गोपनीयता बनाए रखने की शपथ लेने के बाद यह कहा कि स्वयं उसने जी० पी० यू० के आदेश पर साविनकोव की आत्महत्या से पहले लिखी गई तथाकथित चिट्ठी तैयार की थी। स्पष्ट है कि ब्ल्यूमकिन को उस समय साविनकोव से लगातार मिलने की सुविधा दी गई थी जब वह जेल में था। सन्ध्या समय वह साविनकोव का मनोरंजन करता रहता था। (क्या साविनकोव यह अनुमान लगा सका कि मौत चुपचाप उसकी ओर बढ़ती चली आ रही है...धूर्ततापूर्ण मित्रता का स्वांग करती हुई मौत, जो आपको यह अनुमान लगाने का मौका नहीं देती कि आपका अन्त किस प्रकार होगा ?) और इस सम्पर्क ने ब्ल्यूमकिन को साविनकोव के बातचीत के ढंग और सोचने के तरीके को समझने में मदद दी। और वह इस प्रकार उसके अन्तिम विचारों के स्वरूप को समझ सका।

और वे पूछते हैं : उसे खिड़की से बाहर फेंकने की क्या ज़रूरत थी ? उसे जहर देकर मार डालना क्या अधिक आसान न होता ? शायद उन लोगों ने उसका शव किसी को दिखाया हो अथवा वे यह सोच रहे हों कि शायद यह शव दिखाने की आवश्यकता पड़े।

और स्वयं ब्ल्यूमकिन का क्या हुआ यह बताने के लिए इससे अधिक उपयुक्त स्थान और क्या हो सकता है ? जिसे मैंडेल शतम ने उसकी चेका का कर्मचारी होने की प्रभावशालिता के बावजूद निर्भयपूर्वक उजागर किया। एहरनबर्ग ने ब्ल्यूमकिन की कहानी कहनी शुरू की और अचानक वे लज्जा से भर उठे और इस विषय को यहाँ का तहाँ छोड़ दिया। और एक कहानी कहने की आवश्यकता भी है। सन् १९१८ में वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारियों के सफाए के बाद, जर्मन राजदूत मीरवाच का हत्यारा ब्ल्यूमकिन केवल सजा से ही नहीं बच निकला, उसे अन्य वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारियों जैसे दुर्भाग्य से ही मुक्ति नहीं मिली बल्कि जेरझिंस्की ने उसे संरक्षण दिया। ठीक उसी प्रकार जेरझिंस्की कोसीरेव को बचाना चाहता था। प्रकट रूप से ब्ल्यूमकिन बोलशेविकवाद का अनुयायी बन गया और उसे, जैसी कि जानकारी है, विशेषरूप से महत्वपूर्ण हत्याओं के लिए रखा गया। चौथे दशक के आसपास किसी समय उसे बाझेनोव की हत्या करने के लिए गुप्त रूप से पेरिस भेजा गया। बाझेनोव स्तालिन के सचिवालय का एक कर्मचारी था और उसने फ्राँस में शरण ले ली थी और एक रात ब्ल्यूमकिन को उसे चलती हुई रेलगाड़ी से नीचे धकेल देने में कामयाबी मिली। पर उसका जुआरी का खून अथवा ट्राटस्की के प्रति उसका आकर्षण, उसे तुर्की के प्रिंसेज द्वीप पर खींच ले गया जहां उन दिनों ट्राटस्की रह

रहे थे। उसने ट्राटस्की से पूछा कि क्या कोई ऐसा काम है जो वह उनके लिए सोवियत संघ में कर सकता है और ट्राटस्की ने रादेक के लिए उसे एक पैकेट थमा दिया। ब्ल्यूमकिन ने यह पैकेट रादेक के पास पहुंचा दिया और ब्ल्यूमकिन की ट्राटस्की से भेंट गुप्त ही रहती यदि स्वयं मेधावी रादेक एक मुखबिर न होता। रादेक ने ब्ल्यूमकिन को समाप्त करवा दिया और इस प्रकार ब्ल्यूमकिन को उस राक्षस ने अपने पंजों में दबोच लिया, जिसकी रक्त-पिपासा को भड़काने में स्वयं वह सहायक बना था।

अध्याय-१०

१—लेनिन, ५वां संस्करण, खण्ड ५४, पृ० २६५-२६६।

२—क्राइलेंको, जा प्यात लेत, पृ० ४३७।

३—और अदालत के सदस्य थे, पुराने क्रांतिकारी वासिलएव-यूझिन और एनतोनोवसरातोवस्की। इनके पारिवारिक नामों की अत्यन्त सरल लोक ध्वनि इनके प्रति अच्छी प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है। इन्हें आसानी से स्मरण रखा जा सकता है। और जब अचानक १९६२ में इजवेस्तिया में दमन के शिकार बने कुछ लोगों के मृत्यु-लेख प्रकाशित हुए तो इन लेखों के नीचे किस के हस्ताक्षर थे ? चिरजीवी एन्तोनोवसरातोवस्की के।

४—प्रावदा, २४ मई १९२८, पृ० ३। ५—इजबेस्तिया, २४ मई, १९२९।

६—और इस बात की पर्याप्त संभावना है कि उसकी यह असफलता उसे नेता की कृपा से वंचित कराने का कारण बनी और सरकारी वकील के प्रतीकात्मक विनाश का कारण भी—उसका भी उसी प्रकार अन्त हुआ, जिस प्रकार उन लोगों का, जिन्हें झूठे मुकदमों में उसने दण्डित कराया था।

७—प्रोतसेस प्रोम पार्टी (प्रोम पार्टी का मुकदमा), मास्को, सोवेतस्कोए जाकोनोदातेलस्तवो (सोवियत कानून प्रकाशन गृह), १९३१।

८—वही, पृ० ४५२। ९—वही, पृ० ४८८। १०—वही, पृ० ३२५। ११—वही, पृ० ३६५।

१२—वही, पृ० २०४। १३—वही, पृ० २०२। १४—वही, पृ० २०४। १५—वही, पृ० ४२५। १६—वही, पृ० ३५६।

१७—क्राइलेंको के लिए सिगरेट की डिब्बी पर तीर का निशान किसने बनाया था—क्या इस तीर के निशान को उसी हाथ ने अंकित नहीं किया था, जिसने सन् १९४१ में हमारी समस्त रक्षा व्यवस्था का विवरण तैयार किया था ?

१८—प्रोतसेस प्रोम पार्ती, पृ० ३५६। यह मजाक नहीं था।

१९—वही, पृ० ४०९। २०—वही, पृ० ४३७। २१—वही, पृ० २२८। २२—वही, पृ० ३५४। २३—वही, पृ० ४५२। २४—वही, पृ० ४५४।

२५—आइवानोव-राजुमनिक, त्युर्मी आई ससिलकी (जेल और निष्कासन) न्यूयार्क, चेखव प्रकाशन गृह, १९५३।

२६—रूस में रामजिन को अनुचित रूप से भुलाया और उपेक्षित किया गया है। मेरी राय में वह दूसरों के कष्टों की परवाह न करने वाले और जबर्दस्त देशद्रोही का सच्चा नमूना बनने के लिए पूरी तरह से योग्य है। विश्वासघात की भयंकर अग्नि ! इस युग का वही एकमात्र ऐसा धूर्त नहीं था लेकिन वह निश्चय ही इनमें प्रमुख था।

२७—प्रोतसेस प्रोम पार्ती, पृ० ५०४। और वे इसी प्रकार सोवियत संघ में, स्वयं हमारे देश में सन् १९३० में बातें कर रहे थे जब माओत्से तुंग एक मामूली-सा आदमी था।

२८—वही, पृ० ५१०। २९—वही, पृ० ४९। ३०—वही, पृ० ५०८।

३१—वही, पृ० ५०९। न जाने क्यों सर्वहारा वर्ग के बारे में, चाहे आप विश्वास करें अथवा नहीं प्रमुख वस्तु संवेदनशीलता है और यह संवेदनशीलता सदा नाक के रास्ते चलती है।

३२—उसे अभियोगमुक्त नहीं किया गया। आखिरकार, जिस मुकदमे के अन्तर्गत उसके मुकदमे की सुनवाई हुई थी, वह हमारे इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित हो चुका है। आखिरकार, आप एक भी पत्थर बाहर नहीं निकाल सकते क्योंकि इससे पूरी इमारत ही डह जाएगी। और इस प्रकार एम० पी० याकूबोविच के कागजपत्रों में उसे सजा दिए जाने का उल्लेख मौजूद है। पर, वह यह संतोष कर सकते हैं कि उन्हें अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए व्यक्तिगत पेन्शन दी गई है। हमारे देश में न जाने कैसे-कैसे राक्षसी कार्य होते हैं।

३३—एक ऐसा ही व्यक्ति था कुजमा ए० जीवोजदेव और इस व्यक्ति का भाग्य बड़ा भयंकर सिद्ध हुआ। यह वही जीवोजदेव है जो युद्ध उद्योग समिति के श्रमिक दल का अध्यक्ष रह चुका था, और जिसे जार सरकार ने, अपनी मूर्खता के अतिरेक में १९१६ में गिरफ्तार कर लिया था और जिसे फरवरी की क्रांति ने श्रम मंत्री बना दिया था। जीवोजदेव गुलाग का एक शहीद लम्बी अवधि की सजा काटने वाला बना। मुझे नहीं मालूम कि सन् १९३० से पहले वह कितनी लम्बी अवधि तक जेल में रहा था लेकिन १९३० के बाद वह निरन्तर कैद रहा और मेरे मित्रों ने उसे १९५२ तक में कजाकिस्तान के स्पास्क शिविर में देखा।

३४—यह जनरल स्टाफ का कर्नल याकूबोविच नहीं है। जिसने उसी समय और उसी बैठक में युद्ध मंत्रालय का प्रतिनिधित्व किया था।

३५—यहां दी गई सब जानकारी ग्रानात विश्वकोष के खण्ड ४१ से दी गई है, जिसमें रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) के नेताओं की आत्मकथा अथवा विश्वसनीय जीवनी सम्बन्धी निबन्ध दिए गए हैं।

३६—उसने केवल येफिम सीतलिन का ही समर्थन किया—वह भी अधिक समय तक नहीं।

३७—देखिए हम मोलोतोव की गरिमापूर्ण वृद्धावस्था को संरक्षण प्रदान कर स्वयं को जानकारी के रूप में कैसी अपार सम्पदा से वंचित कर रहे हैं।

३८—और इसने "भावी केन्द्रीय समिति" को भी नहीं झकझोरा।

३९—क्ल्यूजिन, बहुत जल्दी ही तुम्हारा खून भी बहेगा! गेबिस्ती के येझोव गिरोह में फंस जाने के बाद क्ल्यूजिन अपना गला मुखबिर गुबाईगुलिन से कटवा बैठेगा।

४०—सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि वह इस एक बात के सम्बन्ध में गलती पर था।

४१—८ वर्ष की जोया व्लासोवा के बारे में कुछ शब्द। वह अपने पिता से अत्यन्त प्यार करती थी। अब वह स्कूल नहीं जा पाती थी। (स्कूल में बच्चे उसे चिढ़ाते थे: "तुम्हारे पापा तोड़-फोड़ करने वाले हैं!" वह लड़ बैठती: "मेरे पापा अच्छे हैं!") मुकदमे के बाद वह केवल एक वर्ष जीवित रही। उस समय तक वह कभी भी बीमार नहीं पड़ी थी। इस पूरे वर्ष की अवधि में वह एक बार भी नहीं मुस्कुराई। वह निरन्तर अपना सिर झुकाए रहती थी और वृद्ध स्त्रियों ने भविष्यवाणी की: "वह लगातार जमीन की ओर ही देखती रहती है। वह जल्दी ही मर जाएगी।" उसकी मृत्यु मस्तिष्क के शोथ के कारण हुई और मरते समय भी वह यही पुकारती रही। "मेरे पापा कहां हैं? मुझे मेरे पापा दे दो!" जब हम शिविरों में मौत के मुंह में गए लाखों लोगों की गणना करते हैं तो हम इनकी संख्या को दो, अथवा तीन से गुणा करना भूल जाते हैं।

अध्याय-११

१—एन० एस० तगान्तसेव, स्मेर्तनाया काजन (मृत्युदण्ड), सेंट पीटर्सबर्ग, १९१३।

२—सन् १८८४ से लेकर १९०६ की अवधि में शलूसेलबर्ग में १३ आदमियों को मृत्युदण्ड दिया गया था। सम्भवतः स्विटजरलैंड के लिए यह एक भयंकर संख्या है।

३—लातसिस, द्वा गोदा बोर्बी ना वीनूंत्रेनोम फ्रंत, पृ० ७५।

४—अब जब कि हमने तुलना करनी शुरू कर दी है, तो यहां एक और पेश है : कैथोलिक धर्म की मान्यताओं के विरुद्ध आचरण करने वालों पर धार्मिक न्यायालयों में मुकदमा चलाने के ८० वर्षों में (१४२०—१४९८) पूरे स्पेन में १०,००० लोगों को जलाकर मार डालने का दण्ड दिया गया था—दूसरे शब्दों में हर महीने दस लोगों को इस प्रकार जलाया जाता था।

५—बी० का बयान, जो गोली से उड़ाये जाने का दण्ड प्राप्त कैदियों की कोठरी में खाना लाता था।

६—हमारे स्कूलों को जिस तथ्य की जानकारी नहीं है वह यह है कि साल्तीचिखा को स्वयं उसके राजा ने, अपने किसान-गुलामों के ऊपर अत्याचार करने के अभियोग पर मास्को के आइवानोवस्की ईसाई मठ की जमीन के भीतर बनी गुफा में ११ वर्ष तक कैद रखने की सजा दी थी। (प्रूगाविन, ईसाई मठों की जेलें, पोसरेदनिक प्रकाशक, पृ० ३९।)

७—सोवियत संघ के फौजदारी कानून के मूलभूत सिद्धांत, अनुच्छेद २२, सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत की पत्रिका, १९५९, अंक—१।

८—एन० नारोकोव, काल्पनिक मूल्य; दो भागों में विभाजित एक उपन्यास, न्यूयार्क, चेखव प्रकाशन गृह, १९५२।

९—स्त्राखोविच के पास जेल की अपनी समस्त नोटबुकें आज भी मौजूद हैं। और जेल के सीखचों के बाहर उसका ''वैज्ञानिक कार्यालय'' इन्हीं नोटबुकों से शुरू हुआ। आगे चलकर उसे सोवियत संघ में टर्बो जैट इंजन की पहली योजना की अध्यक्षता करने का अवसर मिला।

१०—उपभोक्ता सहकारियों के बारे में उसकी कहानियां विलक्षण हैं और अवश्य प्रकाशित होनी चाहिएं।

अध्याय-१२

१—त्युर्जाक=त्यू रेमनोए जाकल्यूचेनिये=जेल में कैद। त्युर्जाक सरकारी तौर पर प्रयुक्त शब्द है।

२—टी० ओ० एन०=त्यूर्मा ओसोबोगो नाजना चेनिया=विशेष उद्देश्य जेल। टी० ओ० एन० भी इसी प्रकार सरकारी तौर पर प्रयुक्त संक्षेप है।

३—वेरा फिगनेर, बलात श्रम : दो खण्डों में संस्मरण, मास्को, ''मिस्ल'', १९६४।

४—एम० नोवोरुस्की के विवरण के अनुसार, १८८४ से १९०६ तक शलूसेलबर्ग में तीन कैदियों ने आत्महत्या की और पांच अन्य पागल हो गए।

५—पी० ए० क्रासीकोव, जिसने, जैसा कि हम देख चुके हैं आगे चलकर मैट्रोपालिटन वेनियामिन को मृत्युदण्ड सुनाया था, मार्क्स के ग्रन्थ कैपिटल को पीटर और पाल किले में पढ़ा था। लेकिन वह वहां केवल एक वर्ष ही कैद रहा और बाद में उन लोगों ने उसे रिहा कर दिया।

६—वाईशिस्की, ओत त्यूरेम के वोसपितातेलनिम उचरेझदेनियम।

७—सन् १९१८ से उन लोगों ने समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की स्त्री सदस्यों को, गर्भावस्था तक में, जेल में डालने से हिचकिचाहट नहीं दिखाई।

८—यह कार्य कितना अधिक आइखमन जैसा है, क्यों नहीं क्या ?

९—सन् १९२५ में इस पत्थर को उलट दिया गया और इस पर उत्कीर्ण नाम भी दफन हो गए। आप में से जो कोई सोलोवकी जाए वह इस पत्थर को ढूंढ निकालने और इस पर नजर डालने का प्रयास करे।

१०—सावातएवस्की मठ में एक यूरी पोदवेलस्की नामक समाजवादी क्रांतिकारी भी था। उसने सोलोनेतस्की हत्याकाण्ड के बारे में डाक्टरी दस्तावेज एकत्रित किए। वह भविष्य में कभी इन्हें प्रकाशित करना चाहता था। लेकिन एक वर्ष बाद, सुवर्दलोवस्क संक्रमण जेल में उन लोगों ने उसके सूटकेस में एक छिपी हुई जेब को ढूंढ निकाला और वहां उसने जो सामग्री छिपा रखी थी उसे जब्त कर लिया। और इसी प्रकार रूस का इतिहास लड़खड़ाता है, नीचे गिर पड़ता है।

११—एम० एन० जेरनेत, स्टोरिया जारस्कोइ त्यूर्मी (जारशाही की जेलों का इतिहास), मास्को, यूरीदीचेस्काया लितेरातुरा (कानूनी साहित्य प्रकाशन), १९६०-१९६३, खण्ड ५, अध्याय ८।

१२—वही।

१३—लेकिन वे सदा समाजवादी क्रांतिकारियों और समाजवादी लोकतंत्रवादियों से समर्थन की मांग करते रहते थे। सन् १९३६ में करागंदा और कोलिमा जाने वाली कैलियनें की गाड़ी में, उन लोगों ने उन सब कैदियों को देशद्रोही और उत्तेजना फैलाने वाला कहा, जिन्होंने कालिनिन को भेजे जाने वाले इस तार पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिए थे कि "क्रांति के अग्रगामी नेताओं को (अर्थात् स्वयं उनको) कोलिमा न भेजा जाए।" (यह किस्सा माकोर्तिस्की ने बताया था।

१४—मुझे यह "वामपंथी" और "दक्षिणपंथी" वर्गीकरण पसन्द नहीं है। ये कुछ शर्तों पर आधारित संकल्पनाएं हैं, इन्हें सूक्ष्म अर्थों का ध्यान रखे बिना ही प्रयोग में लाया जाता है और इनसे सच्चा सार प्रकट नहीं होता।

१५—यह शब्द सचमुच मौजूद है और इन चद्दरों का रंग आसमानी रंग का होता है।

भाग-२

अध्याय-१

१—क्या इससे उन लोगों को संतोष मिलता है जो इस बात पर आश्चर्य करते थे और उलाहना देते थे कि लोग लड़े क्यों नहीं ?

२—जब वे मास्को पहुंचे तो चमत्कार के देश के नियमों के अनुसार एक चमत्कार हुआ। अफसरों ने तिमोफेएव-रेसोवस्की को कैदियों की गाड़ी से अपनी बांहों में उठा लिया और उन्हें ले जाकर एक सामान्य मोटर गाड़ी में बिठा दिया : वे अग्रिम विज्ञान के लिए जा रहे थे !

३—पी० एफ० याकूबोविच ने (वी मायर ओतवेरझेनिक [बहिस्कृत लोगों के संसार में], खण्ड—१, मास्को १९६४) ने पिछली शताब्दी के अन्तिम दशक के बारे में लिखते हुए बताया है कि उन भयंकर वर्षों में वे लोग साइबेरिया जाने वाली कैदियों की गाड़ियों में हर कैदी को भोजन के लिए प्रति दिन १० कोपेक देते थे, जबकि उस समय गेहूं के आटे की एक रोटी का दाम (जिसका वजन साढ़े १० ओंस होता था ?पांच कोपेक था; एक गिलास दूध (दो क्वार्ट ?) तीन कोपक में मिलता था। "कैदी लोग बहुत बुरी हालत में थे" वह लिखता है। लेकिन इरकुतस्क प्रान्त में दाम ऊंचे थे। वहां एक पोंड गोश्त १० कोपेक में मिलता था और "कैदी बस भूखे मरते थे !" प्रति व्यक्ति प्रति दिन एक पोंड गोश्त—यह आधी छोटी हेरिंग मछली के बराबर नहीं है, क्या है ?

४—लगता है सम्भवत: "स्तालिन की व्यक्ति पूजा" अभिव्यक्ति का यही अर्थ है ?

५—इस कारण से सामान्य अपराधी कैदी पेशेवर क्रांतिकारियों को बड़े आदमी कहा करते थे। (पी० एफ० याकूबोविच)

६—मैंने कुछ ऐसे मामलों के बारे में सुना है, जिनमें तीन साहसी, युवक और स्वस्थ आदमी चोरों के मुकाबले में उठ खड़े हुए।—उन्होंने न्याय की रक्षा के लिए यह कार्य नहीं किया बल्कि स्वयं अपने आप को बचाने के लिए, उन लोगों को बचाने के लिए नहीं, जिन्हें उनकी आंखों के सामने ही लूटा जा रहा था। दूसरे शब्दों में इसे सशस्त्र तटस्थता कहा जा सकता है।

७—वी० आई० आइवानोव (अब उख्ता में) को अनुच्छेद १६२ (चोरी) के अन्तर्गत नौबार और अनुच्छेद ८२ (भाग निकलना) के अन्तर्गत पांच बार, कुल मिलाकर ३७ वर्ष की कैद की सजा दी गई। और उसने इन सब सजाओं के अधीन केवल पांच या छः वर्ष का समय जेल में बिताया।

८—"फ्रेयर" अपराधियों की शब्दावली में एक गैर चोर होता है—दूसरे शब्दों में वह चेलोवेक नहीं होता। ("मनुष्य")। इसके अलावा फ्रेएरा शब्द का प्रयोग समस्त गैर चोरों के लिए, गैर अपराधी मानवता के लिए किया जाता है।

९—ए० एस० मकारेंको, फ्लेगी नाबाशन्याख (टावरों पर लगे झण्डे)।

१०—अपराधियों की शब्दावली में ऊदबिलाव शब्द का प्रयोग ऐसे किसी भी अमीर कैदी के लिए किया जाता था जिसके पास अच्छे कपड़े हों। अच्छे कपड़ों के लिए "ट्रैश" शब्द का और चर्बी, चीनी और खाने की अन्य स्वादिष्ट चीजों के लिए "वासिली" शब्द का प्रयोग किया जाता था।

११—इस प्रकार खर पतवार प्रसिद्धि की फसल में स्थान प्राप्त कर लेता है। पर क्या यह खर पतवार है ? आखिरकार, पुष्किन, गोगोल अथवा तोल्सतोये के नाम पर शिविर नहीं हैं—लेकिन गोर्की शिविर हैं, और इनकी संख्या कितनी बड़ी है ! हां, इसके अलावा एक खान का नाम भी मैक्सिम गोर्की के नाम पर रखा गया है। (यह खान कोलिमा क्षेत्र में एलजेन से २५ मील दूर है) ! हां, अलेक्सेई मैक्सिमोविच गोर्की···"तुम्हारे हृदय और राम सहित, कामरेड···" यदि शत्रु हथियार नहीं डालता···तो तुम एक विवेकहीन छोटा-सा शब्द कहते हो, और देखो—अब साहित्य में तुम्हारा कोई स्थान नहीं रह गया है।

१२—इसके बाद उसे एक और सजा काटनी थी—२५ साल की सजा—और यह सजा उसे शिविर में ही सुनाई गई थी, और वह सन् १९५७ तक ओजेरलाग से बाहर नहीं निकल सकेगा।

१३—वी० जी० कोरोलेंको, स्तोरिया मोएगो सोवरेमेनिका (मेरे समकालीन का इतिहास) मास्को, १९५५, खण्ड ३, पृ० १६६।

अध्याय-२

१—"और पीछे कोई न रहे !"—इस भयंकर आदेश का अक्षरश: पालन आवश्यक था। इसका अर्थ था : "और मैं पीछे रह जाने वाले आदमी को जान से मार डालूंगा।" (शब्दशः अथवा कम से कम एक मोटे डण्डे से उसकी चमड़ी को अवश्य गरम किया जाएगा।) और इस प्रकार सब कैदी एक साथ इस प्रकार बाहर निकल पड़ते कि पीछे कोई न रह जाए।

२—अरे, बर्ट्रेन्ड रसेल के "युद्ध अपराध न्यायाधिकरण" ! तुम इस सामग्री का उपयोग क्यों नहीं करते ? क्या यह तुम्हारे लिए सुविधाजनक नहीं है ?

३—मास्को निवासियों को इस गरिमापूर्ण क्रांतिकारी नाम वाली संक्रमण जेल की प्रायः कोई जानकारी नहीं है। यहां घूमने के लिए लोगों को नहीं ले जाया जाता और जब इसका उपयोग हो रहा हो तो यह कैसे हो सकता है ? लेकिन इसे ध्यान से देखने के लिए आपको कोई खास

यात्रा नहीं करनी पड़ती। यह सर्किल लाईन पर नोवोखोरोशेवो मार्ग के एकदम पास है।

४—समस्त संक्रमण जेलों में कारावास एक संग्रहालय बनने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त थी। पर दुर्भाग्यवश अब इसका अस्तित्व नहीं है : इसके स्थान पर अब वज्र कंक्रीट का सामान बनाने का एक कारखाना खड़ा हो चुका है।

५—गालीना सेरेब्रियाकोवा ! बोरिस द्याकोव ! अलदान-सेलियोनोव ! क्या आप लोगों ने कभी चिरमची से शोरबा पीने का प्रयास किया है, दस आदमियों ने एक साथ मिलकर चिरमची से शोरबा पीने की कोशिश की है और यदि आपने यह किया होता, तो आप कभी भी आइवन डेनिसोविच की "पशुवत आवश्यकताओं" के स्तर पर न आते, क्यों आप आते क्या ? और दस आदमियों से घिरी इस चिलमची के दृश्य के मध्य भी आप लोग केवल अपनी प्रिय पार्टी के बारे में ही सोचते रहते ?

६—आखिरकार, एक दिन हमारे द्वीपसमूह की छिपी हुई कहानी, इसके लुप्त अंशों को छोड़कर, स्मारकों में भी साकार होगी। उदाहरण के लिए, मैं एक ऐसे ही और स्मारक की कल्पना करता हूं : कोलिमा क्षेत्र में किसी ऊंचे स्थान पर स्तालिन की एक अत्यन्त विशाल प्रतिमा, उतने बड़े आकार की प्रतिमा जिसका वह स्वयं सपना देखा करता था, जिसकी मूंछें कई फुट लम्बी हों और एक शिविर के कमांडेंट के रक्तरंजित हाथ, जिनमें से एक में लगाम हो और दूसरे में भयंकर चाबुक। पांच-पांच की कतार में जुते हुए भारी भारी भार को खींचते हुए सैंकड़ों लोगों की टोली पर कोड़े बरसा रहा हो। बेरिंग समुद्र तट के बराबर चुकची अन्तरीप के किनारे यह विशाल मूर्ति बड़ी सुन्दर दिखाई पड़ेगी। (मैंने यह बात "चट्टान पर मूर्ति" पढ़ने से पहले लिखी थी और इसका यह अर्थ होता है कि यह विचार केवल मेरे मन में ही नहीं था। लोगों का कहना है कि वोलगा नदी पर झिगुली फाटकों के पास मोगुतोवा पहाड़ी के ऊपर, शिविर से एक मील दूर, स्तालिन का एक विशाल तेलचित्र अंकित रहता था। यह चित्र यहां से गुजरने वाले जहाजों के लोगों के दर्शन के लिए चट्टान पर अंकित किया गया था।)

७—उसके बाद से मैंने उन स्वीडन निवासियों से, जिनसे मेरी मुलाकात हुई है, अथवा स्वीडन जाने वाले यात्रियों से यह बात पूछी है कि उसके परिवार को कैसे ढूंढा जा सकता है ? क्या उन लोगों ने कभी ऐसे किसी लापता व्यक्ति के बारे में सुना है ? इसके उत्तर में मुझे केवल मुस्कराहट ही प्राप्त हुई। स्वीडन में एंडरसन नाम उसी प्रकार सर्वत्र व्याप्त है, जिस प्रकार रूस में आइवानोव—और वहां ऐसा कोई अरबपति नहीं है। और आज, २२ वर्ष बाद, इस पुस्तक को अन्तिम बार पढ़ते समय अचानक मैंने अनुभव किया : उन लोगों ने उससे कहा होगा कि वे किसी भी हालत में किसी व्यक्ति को अपना सच्चा नाम न बताए। अवाकुमोव ने उसे चेतावनी दी होगी कि यदि वह अपना सच्चा नाम किसी को बताएगा तो उसे मार डाला जाएगा। और इस प्रकार वह संक्रमण जेलों में एक स्वीडनवासी आइवानोव के रूप में यात्रा करता रहा। और केवल उन गौन तथा पाबंदी से मुक्त अपने जीवन सम्बन्धी विवरण के माध्यम से वह उन लोगों की स्मृति में अपने बर्बाद जीवन के कुछ अंश छोड़ सका जिनसे संयोगवश ही उससे मुलाकात हो गई थी। इस बात की भी बहुत संभावना है कि वह यह सोचता रहा हो कि अभी भी उसे बचाया जा सकता है—और यह एक मानवीय कमजोरी है—इस पुस्तक में वर्णित अन्य लाखों खरगोशों की तरह उसका भी यह सोचना अजीब नहीं था। वह सोचता था कि कुछ समय के लिए उसे कैद रखा जाएगा और इसके बाद पश्चिम के कुछ देश

उसे रिहा करा लेंगे। वह पूर्व की शक्ति को नहीं समझ पाया था। वह यह नहीं समझ पाया था कि उस जैसे एक साक्षी को, जिसने इतनी अधिक संकल्प शक्ति का प्रदर्शन किया था, जो मृदुल पश्चिम में अनजानी दृढ़ता थी, कभी भी रिहा नहीं किया जाएगा।

इसके बावजूद हो सकता है कि वह आज भी जीवित हो (लेखक की टिप्पणी, १९७२।)

८—जिन दिनों काम न हो उन दिनों गुलाग द्वारा दिया जाने वाला राशन।

९—"दोगले" वे कैदी थे जो आध्यात्मिक दृष्टि से चोरों के बहुत नजदीक पहुंच गए थे और जो उनका अनुकरण करने की कोशिश करते थे, लेकिन जिन्हें चोरों ने अपनी बिरादरी में स्वीकार नहीं किया था।

१०—और, जैसा कि पी० याकूबोविच लिखते हैं पिछली शताब्दी में भी अपनी कैद की सजा को बेचा जा सकता था। यह जेल की एक पुरानी चाल है।

अध्याय-३

१—२९ नवम्बर १९६३ के लितेरातुर्नाया गजेता में प्रकाशित मेरे नाम एक पत्र में।

२—ओ० एल० पी०=ओतदेलनी लाजेरनी पुंक्त=अलग शिविर का स्थान।

३—पी० एफ० याकूबोविच, वी मायर ओतवेरझेनिक।

४—और १८९७ में वी० आई० लेनिन यात्रियों के सामान्य बन्दरगाह में एक स्वतन्त्र व्यक्ति की तरह सेंट निकोलस नामक जहाज पर सवार हुए।

५—वी० शलामोव ने अपनी पुस्तक ओचेरकी प्रेस्तुपनोगो नीरा (अपराधी संसार के कुछ चरित्र) में इस बारे में विस्तार से बताया है।

६—इस घटना को कई दशक बीत गए हैं और इस अवधि में संसार के महासागरों पर सोवियत नागरिकों को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा—और ऐसी परिस्थितियों में भी जब इन जहाजों पर कैदी सवार नहीं थे—पर राष्ट्रीय गर्व के पर्दे के पीछे छिपी गोपनीयता के कारण उन लोगों ने सहायता लेने से इनकार कर दिया। कोई परवाह नहीं चाहे हमें शार्क मछलियां खा जाएं, पर हम आपकी सहायता नहीं लेंगे। गोपनीयता—यह हमारा कैंसर है।

अध्याय-४

१—समाजवादी लोकतंत्री पार्टी के निकोलाएवस्की और दालिन के अनुसंधानों के अनुसार शिविरों में एक करोड़ पचास लाख से लेकर दो करोड़ कैदी तक थे।

२—कोस्त्या किऊला से कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता। वह अन्तर्धान हो गया है। मुझे भय है कि वह अब जीवित लोगों के मध्य मौजूद नहीं है।

३—एम० वी० डी० के चौथे विशेष विभाग का काम कैदियों की सहायता से वैज्ञानिक समस्याओं को सुलझाना था।

४—अपने जेल से पहले के और जेल के वर्षों में स्वयं मैं भी बहुत लम्बे अरसे पहले इस निष्कर्ष पर पहुंच गया था कि स्तालिन ने सोवियत राज्य को एक निर्णायक दिशा दे दी है। लेकिन तभी स्तालिन चुपचाप मर गया—और क्या राज्य के जहाज ने अपने मार्ग में पर्याप्त परिवर्तन किया है? उसने घटनाक्रम पर जो व्यक्तिगत छाप छोड़ी है वह निन्दनीय मूर्खता, क्षुद्र अत्याचार और अपनी महिमा प्रदर्शन करने की है और शेष अंश में उसने उसी पुरानी पिटीपिटाई लीक का ही अक्षरशः अनुसरण किया।

